The Himalayan Astrological Research Institute's First Book:
श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिरस्याद्यपुष्पम्

विद्वद्वर्यश्रीमत्पण्डितमुकुन्ददैवज्ञप्रणीतम्

ज्योतिस्तत्त्वम्

(पूर्वार्द्धम्)

जोशीत्युपाह्वाचार्यपण्डितचक्रधरभट्टकृतभाषाटीकोदाहरण-
विवृत्तिकोष्ठकादिभिःसमलङ्कृतम्

तदेव

पुण्याख्यपत्तनस्थ प्रशान्तमुद्रणालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितम्

प्रथमावृत्तिः १०००

विक्रमाब्दाः २०१२
ख्रिष्टाब्दाः १९५५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकाशकः—
आचार्य पं. चक्रधर जोशी
श्रीलक्ष्मीधर-विद्यामंदिर
देवप्रयाग
(बदरीनाथ–हिमालय).
VIA HARDWAR.
उत्तर प्रदेश.

मुद्रकः—
श्री शिवप्रसाद मुंदडा
प्रशान्त प्रिन्टरी
९०५ सदाशिव पेठ,
लक्ष्मीपथ, पुण्यपत्तनम्

मूल्यम् २५ रु.

[ग्रन्थस्यास्य पुनर्मुद्रणाधिकारा ग्रन्थकर्त्रा स्वायत्तीकृताः]
All rights reserved by the author

प्राप्तिस्थानम्

श्री मुकुन्ददैवज्ञ
C/o आचार्य पं. चक्रधर जोशी,
श्रीलक्ष्मीधर–विद्यामन्दिर,
P. O. देवप्रयाग (गढवाल–उत्तरप्रदेश)

श्री मुकुन्ददैवज्ञ वडेथवाल
मु. खंड, पो. अमोल (पट्टी ढांगू)
(जि. गढवाल उ. प्र.)

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीहरिः

आमुख

कलाकाष्ठादिरूपेण निमेषघटिकादिना ।
यो वञ्चयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः ॥

संस्कृत वाङ्मय में ज्योतिर्विज्ञान–गणित, फलित- का विशेष स्थान है। यह महान् भारतीय विज्ञान शास्त्र प्रागैतिहासिककालमें ही सर्वाङ्ग पूर्ण हो चुका था। इसका साहित्य इतना विशाल और अगाध था कि सम्प्रति उपलब्ध ग्रन्थ उसके कुछ अंश मात्र ही कहे जा सकते हैं। इस शास्त्रकी निर्माण की दिशामें प्राचीन महर्षियों के अतिरिक्त आचार्यों एवं अधिकारी विद्वानोंने एकान्त साधना और आचूड परिश्रमपूर्वक इसकी सुरक्षा के सहित जो संशोधन कार्य किये उसके लिए सम्पूर्ण ज्योतिर्जगत् उन युगद्रष्टा मनीषियों का चिरकृतज्ञ रहेगा।

ज्योतिष शास्त्र मुख्यतः—(१) सिद्धान्त (तन्त्र), (२) संहिता और (३) होरारूप से स्कन्धत्रयोंमें विभक्त है। अर्थात् इस गहन विज्ञानके पूर्ण परिचयके लिए प्रधानतः यह उपर्युक्त तीन अङ्ग आधार माने गये है जिसमें सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्र अधिष्ठित है।

इस कालविधानशास्त्र के अङ्गत्रयों के अनेकविध उपाङ्गों को परिवर्तनशील काल के अनुरूप संशोधनपूर्वक अभिवृद्धि करने में प्रातः स्मरणीय महर्षियों के अतिरिक्त महामेधावी आचार्यों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिनमें लगध, मय, मणित्थ, आर्यभट्ट, आर्यभट्ट द्वितीय, लल्ल, वराहमिहिर, कल्याणवर्म, ब्रह्मगुप्त, (आर्यभट्ट द्वितीय?) श्रीधर, मुञ्जाल, महावीराचार्य्य, भट्टोत्पल, श्रीपति, भास्कर, वल्लालसेन, मकरन्द, केशवार्क, केशव, गणेश, नीलकण्ठ, रामदैवज्ञ, मल्लारि एवं विट्ठलदीक्षित प्रभृति विशेषतः उल्लेखनीय हैं। इन महामेधावी मानवों के तपः पूत साधनायुक्तजीवन से एवं इनकी विचारधारा के प्रतीक शिष्य-प्रशिष्यों के द्वारा यह भारतीय विज्ञानशास्त्र उत्तरोत्तर उन्नतिपूर्वक सुदीर्घकालतक सुव्यवस्थितरूपसे सञ्जीवन प्राप्त करता रहा।

विशेषतर आचार्य्यवराहमिहिर (५ वी शती) के कालसे भास्कराचार्य्य (१२ वी शती) के काल तक भारतीय ज्योतिष का स्वर्णयुग माना गया है। इन सातशतियों में ज्योतिष के क्षेत्र में अनेक अन्वेषणात्मक गवेषणात्मक रचनाओंकी अवतारणा हुई। उनमें विविध क्रान्तिमय विचारधाराओंका समावेश हुआ। इस उत्कर्षकालमें इसके तीनों अङ्गों—सिद्धान्त, संहिता और होरा-पर सहस्रों रहस्यमय ग्रन्थ लिखे गये। जिनमें अधिकांश ग्रन्थ नष्ट हो गये, कुछ प्रकाशमें ही न आ सके और बहुत से विदेशियोंके हाथ चले गये, जो आजभी लण्डनके इण्डिया ऑफिसमें तथा बर्लिन लाइब्रेरीमें एवं एशिया-योरोप के कई प्रदेशोंमें इतस्ततः पडे हैं। फिरभी १६ वीं, १७ वीं शताब्दि तक इसकी क्षीयमाण परम्परा बनी रही। इस अवसान कालमें भी देश के विभिन्न भागोंमें ग्रह-नक्षत्रोंके सूक्ष्मनिरीक्षणके लिए वेधशालाओंका निर्माण हुआ, जिनका अस्तित्व आजभी जयपुर, उज्जैन, काशी, दिल्लीप्रभृतिस्थलों मे देखने में आता है, तदुपरान्त १८ वीं शतीसे तो इसकी क्रमानुगत शोध

---

(१) सिद्धान्त (तन्त्र) स्कन्धे—" कतिपयसिद्धान्तकरणव्यक्ताव्यक्तचापज्याक्षेत्रगणितग्रन्थाः । "
(२) संहितास्कन्धे—" स्थलगगनजाताविविधप्राकृतिकलक्षणफलादेशकग्रन्थाः । "
(३) होरास्कन्धेः—" विविधजातकताजिकप्रश्नमुहूर्तप्रभृतिग्रन्थाः । "

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रणाली देशमें अनेक राजनैतिक विप्लवोंके कारण छिन्न-भिन्न होकर विलुप्त हो गयी । भारतीय इतिहासमें १८ वीं शती और १९ वीं शतीका मध्यकाल तो ज्ञान साधना की दृष्टि से अन्धकाराच्छन्न ही रहा । उस सङ्क्रमणकालमें विजेता विदेशियोंने देश को दासताकी शृङ्खलासे बद्धकर विज्ञान की समस्त साधनोंसे वञ्चित कर दिया, साथही उसकी दासताप्रताडित मानसिक दुर्बलताका अनुचित लाभ उठाकर अनेक रहस्यमय ग्रन्थों को भेदादिनीतिद्वारा अपहृतकर इस समृद्ध राष्ट्रको सर्वविध दीन-दरिद्र कर दिया, परिणामस्वरूप हम आत्मविस्मृत हो कर परावलम्बी हो गये और अपनी विविध विद्या-कला कौशल के साथ-साथ इस प्रत्यक्ष ज्योतिर्विज्ञान को भी भूल बैठे ।

इस ज्योतिर्विज्ञानके क्षेत्रमें तो हमारा अधःपात यहां तक पहुँच गया कि पञ्चाङ्ग एवं ग्रहस्पष्टीकरण जैसे ज्योतिषशास्त्रके मूलाधारभूत विषयोंको भी हम संस्कारहीन-शकान्तरोंमें स्थूल होने वाले करणग्रन्थों + से ही करते रह गये । इससे अधिक पतन क्या हो सकता है ? कहाँ हमारे प्राचीन आचार्य्योंका दृग्गणितैक्य का (१) आदेश और कहाँ हमारा वर्तमान प्रचलन ! इसीसे आज हमारा उपहास हो रहा है । क्यों न हो ? जब मूलाधार ही में दोष आगया तब तदाधारित होरा-संहितादिके फलनिर्देशमें स्थूलता आनी स्वाभाविक ही थी । अन्त्यमें इस उपेक्षाका यह परिणाम हुवा कि सर्वसाधारण जनतामें हमारे प्रमाद से इस " कालविधानशास्त्र " के प्रतिभी भ्रान्त धारणाएँ फैलने लगीं । चन्द्रार्कसाक्षि वाला यह प्रत्यक्ष शास्त्र मतभेद और विवादका विषय बन बैठा । हमारी इस मानसिक दुर्बलता का प्रभाव देशमें चतुर्दिक् अनेक भेदों वाले पञ्चाङ्गों के रूपमें स्पष्ट दिखायी देने लगा । ऐसी स्थिति को देख कर कुछ आधुनिक भारतीय विद्वानों का ध्यान इस दिशाकी ओर गया । जिनमें-केतकर, तिलक, दीक्षित, सुधाकर, बापुदेव, आप्टे और मालवीय प्रभृति मनीषियों का नाम विशेष उल्लेखनीय है । इन विद्वानोंने उस लुप्तप्राय शोध परम्परा को पुनरुज्जीवित करने का पूर्ण प्रयत्न किया । उनका मुख्य लक्ष्य था " सार्वभौमीय दृग्गणितैक्य पञ्चाङ्ग " का निर्माण । उन्होंने शताब्दियों से दासताग्रस्त दिङ्मूढ भारतीय मानसको इस दिशाकी ओर आकर्षित करने की पूर्ण चेष्टाभी की औरवह कुछ अंशो में सफल भी रहे किंतु स्वतन्त्रचिन्तनका अभ्यास छूट जाने से इस चिरन्तन सत्यको देश एकमतसे स्वीकार न कर सका, उसमें कुछ हेतु भी थे जिसमें मुख्यतः यहभी था कि उनके पास ग्रह-नक्षत्रों के वेध लेने के लिए कोईप्रसाधन न थे कोई वेधशालाएँ (OBSERVATORIES) न थीं, जिससे वह जनता को अपनी गवेषणाओं का प्रत्यक्ष प्रमाण दे सकते (२) तथापि ऐसी स्थितिमें भी उनके विचारोंने बडाकाम किया और देशके कुछ भागों में दृग्गणितैक्य के आधारपर कुछ पञ्चाङ्ग निकलने लगे, जो जनरुचि को अपना रहे हैं ।

+ शकादौ करणम् । सृष्ट्यादौ सिद्धान्तः ।

(१) वराहः— छायाजलयन्त्रदृग्गणितसाम्येन ।

केशवार्कः—" एवं बहुन्तरं भविष्ये सुगणकैर्नक्षत्रयोगग्रहयोगोदयास्तादिभिर्वर्तमानघटनामवलोक्य-न्यूनाधिकभगणाद्यैर्ग्रहगणितानि कार्याणीति ।

गणेशः— यान्ति दृक्तुल्यतां सिद्धैस्तैरिह पर्वधर्मनयसत्कार्यादिकं त्वादिशेदिति ।

(२) ·····हर्षकाविषय है कि हमारी गवर्मेण्ट इस अभाव की पूर्ति करने जा रही है और सारनाथ (काशी) में एक वृहद्वेधशाला के निर्माण की योजना बनगयी है । जिसका श्रेय उत्तरप्रदेशीय मुख्यमंत्री बाबू श्री. सम्पूर्णानन्दजी महोदय को है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

देशके स्वतन्त्र होने के बाद अब जनताका ध्यान इस (१) प्रत्यक्ष विज्ञान की ओर आकर्षित हो रहा है जो कुछ समयमें यथार्थता को स्वीकार कर लेगा ।

इस विवेचन से तात्पर्य यह है कि सद्वेध सिद्ध गणित ही ज्योतिषशास्त्र के संहिता-होराप्रभृति अङ्गों का मूल आधार है । इस प्रधान अङ्ग के परिशुद्ध हुये बिना जातकादि फलनिर्देश उपहास मात्र है (२) । इसीलिये प्राचीन आचार्य्योंने ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् ज्ञान के लिए ज्योतिर्विज्ञान के विद्यार्थीको ' त्रिस्कन्धविद्याकुशलः " अर्थात् सिद्धान्त, संहिता और होरा के ज्ञान में कुशल होने का आदेश दिया है । अन्यथा इनके अनुशीलन-परिशीलन के बिना इस प्रस्तुत शास्त्र के रहस्यमय तथ्यों से न वह साक्षात्कार ही कर सकता है न उसके अन्तर्भेद का ज्ञान हो । ऐसी अपूर्णस्थिति में उसका कथन मिथ्याप्रयुक्तहोगा, उसकी भारती वन्ध्या ही न रहेगी प्रत्युत उसका आदेश मात्र निष्फल होगा (३) ।

यह प्रत्यक्ष सत्य है कि सृष्टि के आरम्भ से इस अनन्त ज्योतिर्जगत् में मानवकी सूक्ष्मबुद्धि ने इस तत्त्वांशकी गवेषणा विश्वोपकार के लिये की । यह मानवीय बुद्धिवैभवका चमत्कृत मूर्तरूप है, उसने कालात्माके शुभाशुभ सङ्केत का ज्ञान प्राप्त करने के लिये इस प्रत्यक्ष शास्त्र का आधार लिया और अनेक युगों तक इसकी शोध चलती रही जो अन्त्य में ' स्कन्धत्रय ' के रूपमें हमारे समक्ष है । विविध मतान्तरों के बाद विश्वके निष्पक्षविद्वान भी आज एकमत से स्वीकार करने लग गये हैं कि ज्योतिषशास्त्र की गवेषणा का मूल श्रेय भारतीयों को है, यह सिद्धान्त निर्विवाद सिद्ध हो चुका है । इन महामेधावी मानवों ने खगोल, भूगोल से लेकर जातक, ताजिक, प्रश्न, नष्टजातक, वृष्टि, अद्भुतोत्पातदर्शन, वस्तु समर्घ--महर्घ, भूशोधन, वास्तु, शकुन प्रभृति अनेक रहस्यमय विषयोंपर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, जो अस्त–व्यस्त होते हुये भी अतुलनीय हैं । विषय विस्तार होने के कारण इस महाशास्त्र के समस्त अङ्गों का एकत्र समन्वय दुर्लभ है, इससे ज्योतिषशास्त्र के जिज्ञासुओं के समक्ष एक महान् समस्या सामने रहती थी । क्यों कि इस के सम्पूर्ण अङ्गों के ज्ञान के लिये सेकडों ग्रन्थोंकी आवश्यकता थी जो सर्वसाधारण के लिये दुरूहकल्पना जैसी ही मानी जा सकती है । इस अभाव को समक्ष रखकर हमारी अनेक अभ्यर्थनाओं के फलस्वरूप श्रीलक्ष्मीधर विद्यामन्दिर देवप्रयाग (बदरीनाथ-हिमालय) के संस्थापक ज्योतिष

---

(१) इस प्रत्यक्ष ज्योतिर्विज्ञानके अनुसन्धान के लिये हमने देवप्रयाग (बदरीनाथ-हिमालय) में श्री. लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर के अन्तर्गत **THE HIMALAYAN ASTROLOGICAL RESEARCH INSTITUTE**–(दी हिमालयन् ॲस्ट्रॉलॉजिकल रिचर्स इन्स्टिटयूट, नामक) एक शोध संस्थाकी स्थापना की है । जिसमें वेधसिद्ध प्रत्यक्षगणितद्वारा ग्रहों का अनुसन्धान किया जायगा और उसके परिणामस्वरूप भारतीय पद्धतिसे दृग्गणितैक्य पञ्चाङ्ग प्रकट किया जायगा ।

(२) श्री मुकुन्ददैवज्ञ— विना खगैः स्पष्टतरैर्दशानां भुक्त्यादिकानांच फलं बुधेन्द्राः ।
शुभाशुभं ये कथयन्ति नृणां मध्ये सदा यान्त्युपहास्यतां ते ॥

(३) श्री वराह— तन्त्रे सुपरिज्ञाते लग्ने छायाम्बुयन्त्रसम्विदिते ।
होरार्थे च सुरूढे नादेष्टुर्भारती वन्ध्या ॥

तथाहि— दशभेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्यनिरवशेषम् ।
यःकथयति शुभमशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणीति ॥

तथाहि— जगतिः प्रसारितमिवालिखितमिव मतौ निषिक्तमिव हृदये ।
शास्त्रं यस्य सभगणं नादेशानिष्फलास्तस्य ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शास्त्र के मर्मज्ञविद्वान् गुरुपाद आचार्य श्री. मुकुन्द दैवज्ञ बडेथवाल महोदय ने ' ज्योतिस्तत्त्व ' नामक इस नामानुरूप बृहद्ग्रन्थकी रचना की इस महान् ग्रन्थमें ४३ प्रकरण हैं, जिसमें लगभग ७ हजार श्लोक हैं। यह श्री गुरुदेव की मौलिक रचना है, जिसमें बृहज्जातक, सारावली, सर्वार्थचिन्तामणी, बृहत्संहिता सिद्धान्तशिरोमणि, लीलवती, केतकी प्रभृति अनेक प्रामाणिक ग्रन्थों का सार ग्रहण कर ज्योतिष के प्रायः सभी अङ्गों पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार का एकत्र समन्वय सर्वथा अपूर्व है। नूतन दृश्यगणित से ग्रहस्पष्टीकरण पूर्वक जन्मकुण्डली के द्वादशभावोंका जो सूक्ष्मतम फलविवेचन इसमें किया गया है वह तो अभूतपूर्व ही है।

यह मूलग्रन्थ संस्कृतमें होने से सर्व साधारण इसके ज्ञान से वञ्चित न रहें इसलिए पूज्यपाद गुरुदेव के आदेशानुसार उनकी सन्निधिमें अध्ययन-मनन पूर्वक इस बृहद्ग्रन्थ की राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद-टीका-उदाहरण, टिप्पणी प्रभृति करने का सौभाग्य मुझे मिला। इसे मैं जीवनका सर्वोत्कृष्ट काल मानता हूं, जिसमें मुझे शास्त्र सेवा का ऐसा इच्छित अवसर प्राप्त हुआ। अपनी पात्रता के अनुसार जिस कार्य को मै सर्वथा दुःसाध्य मानता आया था उसे मैं गुरुकृपाबलसेही सहज साध्य कर सका ऐसी मेरी मान्यता है। अन्यथा मेरे लिए तो यह ' उडुपेनास्मि सागरम् ' सदृश दुस्तर-संतरण जैसा ही था।

इस ग्रन्थके प्रकाशन सम्बन्धी कार्य में मुझे जिन विद्यानुरागी महानुभावोंका उत्साहयुक्त हार्दिक सहयोग मिला उनकी नामावली मैं अन्यत्र दे रहा हूं। साथ ही मैं पं. श्री. मधुकरशास्त्री ' पाठक ', का आभारी हूं जिन्होंने मेरी अनुपस्थिति में प्रूफ संशोधनादि कार्यों में बडी सहायता दी। इसके अतिरिक्त में अपने स्नेही बन्धु बम्बई निवासि सेठ विठ्ठलदास नारायणदासजीअधिकारीअमरेलीवालों का कृतज्ञ हूं जिनका सत्परामर्श मुझे सदैव उत्साहवर्धक रहा।

ग्रन्थ की विशालता देखकर इसके प्रकाशनमें अनेक त्रुटियाँ–अशुद्धियाँ सम्भावित हैं। सारग्राही विद्वज्जन शुद्धिपत्रानुसार संशोधनकर अध्ययन करेंगे। साथही अपना अभिप्राय भी व्यक्त करेंगे, जिसका पुनर्मुद्रणमें ध्यान रखा जायगा।

ज्योतिष शास्त्रके जिज्ञासुओंको यह कृति सन्तोष दे सकी तो हम अपने परिश्रमको धन्य समझेंगे और भविष्यमें अनेक रहस्यमय अप्रकाशित रचनाओं को प्रकाशमें ला सकने के लिये अपने को समर्थ बना सकेंगे।

इस महान् शास्त्रके मर्म को प्राप्त करना परम कठिन है, जिसके विषयमें आचार्य्य वराहमिहिर जैसे पारङ्गत विद्वान् भी यह कहते हैं कि—

" ज्योतिषमागमशास्त्रं धिप्रतिपत्तौ न योग्यमस्माकम्।
स्वयमेव विकल्पयितुं किन्तु बहूनां मतं वक्ष्ये ॥ "

तब वहां अपना अस्तित्व तो नगण्य है। अन्त्यमें इस महान् शास्त्रके निर्माताओं-रचयिताओं के प्रति श्रद्धानत हो कर अपने इस आवेदन को समाप्त करता हूं।

श्री लक्ष्मीधर–विद्यामन्दिर, देवप्रयाग
(बदरीनाथ–हिमालय)
श्री रामनवमी सं. २०१२

विदुषां वशम्वदः—
श्री मुकुन्ददैवज्ञान्तेवासी
चक्रधरजोशी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आभार-प्रदर्शन

जिन महानुभावों के हार्दिक सहानुभूति युक्त सहयोग और शुभाशीर्वाद की दिव्यशक्तिसे इस महान् ग्रन्थको प्रकाशमें ला सके उन विद्यानुरागी महाशयों की नामावली को हम साभार यहां प्रस्तुत करते हैं :—

अनन्त श्री विभूषित योगिराज काशीनाथजी (भैयाजी)
ब्रह्मचारी श्री. मङ्गलदेवजी महाराज
गोस्वामी श्री. गणेशदत्तजी महाराज
ज्योतिषाचार्य पं. सूर्यनारायणजी व्यास
भाई श्री. पं. वृन्दावनजी ध्यानी
श्री. अरविन्द नवीनचन्द्र मफतलाल
श्री. रमणीकलाल केशवलाल वाडीलाल
श्री. चिनुभाई चिमनलाल, मेयर-अहमदाबाद.
श्री. मथुरादास मङ्गलदास गिरधरदास पारीख
श्री. नवनीतलाल साकरलाल शोधन
श्री. इन्द्रजीत चिमनलाल पारीख
श्री. विश्वेश्वरदयाल मित्तल (मेसर्स जुगलकिशोरमुकुटलाल)
श्री. हाथीभाई गलालचन्द
श्री. बाबू व्रजनारायणजी वकीलसाहब
श्री. त्र्यंबकलाल त्रिभुवनदास शाह
श्री. बाबूराजा
श्री. विट्ठलदास नारायणदास सेठ

दादासाहब श्री. गणेश वासुदेव मावलङ्कर, अध्यक्ष, भारत-लोकसभा.
श्री. काकासाहेब कालेलकर
श्रीयुत पं. गोविन्दवल्लभपन्त, गृहमन्त्री, भारत गणतन्त्र
श्री. मोरारजीभाई देसाई, मुख्यमन्त्री, बम्बईराज्य
श्री. बाबू सम्पूर्णानन्दजी, मुख्यमन्त्री, उत्तर-प्रदेश
श्री. कुडीलाल गोविन्दरामजी सेक्सरिया
श्री. जगदीशबाबू सेक्सरिया
श्री. रामकृष्ण मेहता
श्री. भगवतीप्रसादजी खेतान
श्री. मणीलाल ह. पटेल
श्री. हीरालाल आदित्यराम दवे
श्री. रतीलाल बेचरदास मेहता
श्री. वल्लभदास मरीवाला
श्री. मनहरलाल मट्टूभाई
श्री. कानजी जेठाभाई मेहता
श्री. भगीरथजी तापडिया

आभारी
सञ्चालक—श्री लक्ष्मीधर-विद्यामंदिर.
देवप्रयाग
(बदरीनाथ-हिमालय)

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्नेहार्पण-पत्र

जिनके हार्दिक सहयोगसे इस ज्योतिष शास्त्रके रहस्यमय ग्रन्थ
'ज्योतिस्तत्त्व' को मैं प्रकाशमें ला सका उन विद्यानुरागी
श्री. रमणीकलाल शामलदास पारीख, श्री.
केशवलाल वीरचन्द सेठ, एवं श्री. वाडीलाल
मोहनलाल शाह, मालिक न्यू ईरा सौप
वर्क्स, मझगाँव, हाथीबाग लवलेन,
बम्बई निवासि बन्धुओंके पवित्र
करकमलोंमें इस अनुपम
कृतिको सादर समर्पित
करता हूं।

श्रीलक्ष्मीधर विद्यामन्दिर
देवप्रयाग
(बदरीनाथ-हिमालय)
उत्तर प्रदेश
चैत्र शुक्ल ९ सं. २०१२
रामनवमी

समर्पक
श्रीमुकुन्ददैवज्ञान्तेवासी—
आचार्य पं. चक्रधर जोशी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ ज्योतिस्तत्त्वान्तर्गतविषयाणामनुक्रमणिका

(१)

पञ्चाङ्गपरिचयप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मङ्गलाचरण	१
प्रभवादिसँव्वत्सरों के नाम	१
अयनपरिज्ञान	२
ऋतुपरिज्ञान तथा ऋतुओंके नाम	२
मासों के नाम	२
पक्षपरिज्ञान	२
तिथियों के नाम	३
वारों के नाम	३
नवग्रहों के नाम	३
राशियों के नाम	३
नक्षत्रों के नाम	३
विष्कम्भादि योगोंके नाम	४
करणसाधनरीति	४
करणोदाहरण	४
करणों के नाम	५
राशिनाम के लिए शतपदचक्रपरिज्ञान	५
नामके आद्य अक्षर जानने के लिए विशेषविचार	५

(२)

सङ्कलनादिप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
कालपरिमाणपरिभाषापरिज्ञान	६
सङ्कलनादिद्योतकचिह्नपरिभाषापरिज्ञान	६
चिह्नपरिचय	७
योग तथा अन्तरके पर्याय	७
विशोधनादियों (ऋण) के पर्याय	८
गुणन लब्धि तथा भजन (भाग) के पर्याय	८
धन तथा ऋणके पर्याय	८
संख्याके स्थानों की संज्ञाका परिज्ञान	८
संकलन, व्यवकलन तथा गुणन प्रकार	१०
सङ्कलन [योग] का उदाहरण	१०
व्यवकलन [अन्तर] का उदाहरण	१०
गुणनकर्मका उदाहरण	१०
भजनकर्म [भागदेनेका] प्रकार	११
भजनकर्मका उदाहरण	११
वर्गीकरण प्रकार तथा वर्गचिह्नपरिज्ञान	१२
वर्गमूलानयनविधिपरिज्ञान	१२
वर्गमूलोदाहरण	१३
अंशादि संख्याकी सूक्ष्मवर्गमूलानयनरीति	१४
प्रकारान्तरसे अंशादि संख्याका सूक्ष्मवर्गमूलानयनरीति	१५
गोमूत्रिका चक्रोद्धारपरिज्ञान	१५
गोमूत्रिकाद्वारागुणनफलसाधनरीति	१६
गोमूत्रिकोदाहरण	१६
त्रैराशिक [अनुपात] रीतिपरिज्ञान	१६
त्रैराशिकोदाहरण	१६
त्रैराशिकन्यास	१७

(३)

ग्रहस्पष्टीकरणप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सृष्ट्यादि गताब्दानयनपरिज्ञान	१८
विक्रमादिसँव्वत्सरानयनपरिज्ञान	१८
मकरन्दीय अयनांशानयनरीति	१९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मकरन्दीय अयनांशोदाहरण	१९
चैत्रपक्षीयादि अयनांशसाधनरीति	१९
चैत्रपक्षीयादि अयनांशोदाहरण	२०
प्रकारान्तरसे ग्रहलाघवीयायनांशसाधनरीति	२०
प्रकारान्तरसे ग्रहलाघवीयायनांश उदाहरण	२०
दिनगणसारणीप्रवेशरीति	२१
दिनगणसारणी उदाहरण-चक्रादि	२२
दिनगणसारणीप्रवेशरीति	२३
दिनगणोदाहरण	२३
रविमध्यमसारणीयम्	२३
चन्द्रमध्यमसारणीयम्	२५
चन्द्रोच्चमध्यमसारणीयम्	२६
राहुमध्यमसारणीयम्	२७
मङ्गलमध्यमसारणीयम्	२८
बुधमध्यमसारणीयम्	२९
गुरुमध्यमसारणीयम्	३१
शुक्रमध्यमसारणीयम्	३२
शनिमध्यमसारणीयम्	३३
मध्यमसारणीप्रवेशरीति	३४
मध्यमसारणी प्रवेशोदाहरण	३५
भुजसाधनरीति	३६
गुरु तथा शनिके आकर्षणसंस्कार की रीति	३६
भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तर-मक्षांशपलभादयश्चसन्तीमे	४१
यूरोप महाद्वीप के नगरनाम मयविभाग	७०
उत्तरीय अमेरिका महाद्वीपके नगरनाम	७९
एशिया महाद्वीपके नगरनाम	८१
आस्ट्रेलिया महाद्वीपके नगरनाम एवं निकटवर्तिद्वीप	८२
अफ्रिका महाद्वीपके नगरनाम	८२
भूपरिधिपरिज्ञान	८५
रेखांशसाधनरीति	८५
देशान्तरफलसाधनरीति	८६
प्रकारान्तरसे देशान्तरफलसाधनरीति	८६
सूर्यस्पष्टसारणी	८७
सूर्यस्पष्टसारणी प्रवेशरीति	९०
सूर्यस्पष्टसारणी प्रवेशोदाहरण	९०
रविमन्दस्पष्टगतिसाधनरीति	९०
अक्षांशसाधनरीति	९१
अक्षांशोंसे पलभासाधनरीति	९१
प्रकारान्तरसे पलभासाधनरीति	९१
पुनः प्रकारान्तरसे पलभासाधन तथा चरखण्डसाधनरीति	९२
चरसाधनरीति	९२
क्रान्ति तथा चरसाधन की रीति	९३
क्रान्तिसारणी	९४
क्रान्तिसारणीप्रवेशरीति	९६
चरसारणी	९७
चरसारणी प्रवेशरीति	१००
चरसारणी गढ़देशीया	१०१
चरसारणी प्रवेशरीति	१०१
निमेषादि चरसाधनोदाहरण	१०५
स्पष्ट चन्द्रसाधनरीति	१०५
चरान्तर संस्काररीति	१०५
भुजान्तर संस्काररीति	१०५
चन्द्रोदयान्तर संस्कारसारणी	१०६
उदयान्तरसंस्कारसारणी प्रवेशरीति	१०६
चन्द्रस्य च्युतिफलसंस्कारसारणी	१०७
च्युतिफलसंस्कारसारणी प्रवेशरीति	१११
तिथिफलसंस्कारसारणी प्रवेशरीति	११६
मन्दफलसारणी प्रवेशरीति	१२१
चन्द्रमन्दगतिफलसाधन	१२१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
राहुकलाफलसंस्कारसारणी	१२३
भौममन्दफलसारणी	१२४।५
भौममन्दफलसारणीप्रवेशरीति	१२४।७
बुधमन्दफलसारणी	१२४।११
गुरुमन्दफलसारणी	१२४।२०
शुक्रमन्दफलसारणी	१२४।२५
शनिमन्दफलसारणी	१२४।३१
भौम, गुरु तथा शनि पश्चिमास्तादि	
बुध तथा शुक्रके वक्रमार्गांशपरिज्ञान	१२४।३७
बुध तथा शुक्र के उदयास्तांश-परिज्ञान	१२४।३७
चन्द्रादियों के कालांश	१२४।३९
वैशाखादि मासोंमें सूर्य के उदयास्त लग्नोंका परिज्ञान	१२४।३९
मेषादि लग्नोंका सामान्य मानपरिज्ञान	१२४।३९
लङ्कोदय	१२४।४०
लङ्कोदय से स्वोदयसाधन	१२४।४०
स्वोदय मानसे लग्नसाधन	१२४।४१
भोग्यकाल की अपेक्षा अल्पेष्ट कालमें लग्नसाधनरीति	१२४।४२
लग्नसारणी से स्पष्टलग्नसाधन	१२४।४२
लवपुरे (लाहोर) २३ अयनांशीया लग्नसारणीयम्	१२४।४४
काशी लग्नसारणी	१२४।४५
गढवाल ,,	१२४।४६
दिल्ली ,,	१२४।४७
कलकत्ता ,,	१२४।४८
कराची ,,	१२४।४९
उज्जैन ,,	१२४।५०
पटना ,,	१२४।५१
बम्बई लग्नसारणी	१२४।५२
मद्रास ,,	१२४।५३
सायनलग्नमानसाधन	१२४।५४
गढदेशीय सायनलग्नपरिज्ञान	१२४।५४
गढदेशीय सायनलग्नसारणी	१२४।५५
गढदेशीय सायनलग्नसारणी	१२४।५८
लवपुरीय सायनलग्नसारणी	१२४।५९
वाराणसीय सायनलग्नसारणी	१२४।५९
दिनमानसाधन	१२४।६१
दिनमानसारणी	१२४।६३
सायनलग्नमान से दिनमानसाधन	१२४।६५
प्रकारान्तरसे दिनमानसाधन	१२४।६६
आर्क्षकाल तथा वेलान्तरसाधन	१२४।६६
सायनघटियोंसे आर्क्षकालसाधन	१२४।६७
वेलान्तर वा उदयान्तरसारणी	१२४।६९
दिनमानादि साधनकी सूक्ष्मरीति	१२४।७०
मध्यकाल से स्पष्टकाल और उससे मध्यकालसाधनरीति	१२४।७१
पश्चिम तथा पूर्वनतकालपरिज्ञान	१२४।७१
नतकालसाधनरीति	१२४।७१
द्वादशभावों के नाम	१२४।७२
ऋणरीतिसे दशमलग्नसाधन	१२४।७३
धनरीति से दशमलग्नसाधन	१२४।७४
विना नत दशमलग्नसाधन	१२४।७४
स्पष्टलग्नसे चरसाधन	१२४।७४
सारणीसे दशमलग्नसाधन (गढदेशीय)	२४।७५१
दशमलग्नसारणी	१२४।७७
धनादिभावसाधनरीति	१२४।७८
उपग्रहोंके नाम	१२४।७९
उपग्रहस्वामीपरिज्ञान	१२४।७९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
धूमादियों की स्पष्टीकरणरीति	१२४।८०
गुलिकस्पष्टीकरण	१२४।८०
मान्दीस्पष्टीकरण	१२४।८३
प्राणपदस्पष्टीकरण	१२४।८३

(४)

राशिशीलप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मेषादि राशियों का कालाङ्गविभाग	१२५
तथा उनके स्वरूप का परिज्ञान	१२५
मेषराशिके पर्य्याय	१२५
वृषराशिके पर्य्याय	१२५
मिथुनराशिके पर्य्याय	१२६
कर्कराशि के पर्य्याय	१२६
सिंहराशि के पर्य्याय	१२६
कन्याराशि के पर्य्याय	१२६
तुलाराशि के पर्य्याय	१२७
वृश्चिकराशि के पर्य्याय	१२७
धनूराशि के पर्य्याय	१२७
मकर तथा कुंभराशि के पर्य्याय	१२७
मीनराशि के पर्य्याय	१२८
राशिस्वामिपरिज्ञान	१२८
मेषराशिका नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१२८
वृषका नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१२८
मिथुनका नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१२९
कर्कका नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१२९
सिंहका नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञा परिज्ञान	१२९
कन्याराशिका नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१३०
तुलाराशिका नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१३०
वृश्चिकराशि का नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादि संज्ञापरिज्ञान	१३०
धनूराशि का नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१३१
मकरराशि का नक्षत्रविभाग और उसकी स्वाम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१३१
कुंभराशि का नक्षत्रविभाग और उसके स्वाम्यादि का परिज्ञान	१३१
मीनराशिका नक्षत्रविभाग और उसके स्वाम्यादिपरिज्ञान	१३१
मेषादि राशियोंकी सप्रजादिसंज्ञापरिज्ञान	१३२
मेषादि राशियोंकी ग्राम्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१३२
मेषादि राशियों का मानपरिज्ञान	१३२
मेषादि राशियोंकी पुष्करादिसंज्ञापरिज्ञान	१३२
मेषादि राशि तथा उनके नवांशोंका पुष्करांशपरिज्ञान	१३३
राशिदृष्टिपरिज्ञान	१३३
राशियोंका मित्रत्वादि तथा वश्यादि परिज्ञान	१३३
राशियोंकी सजलनिर्जलसंज्ञापरिज्ञान	१३३
राशियोंकी विषम, सम तथा धात्वादिसंज्ञा-परिज्ञान	१३३
अंधादिसंज्ञापरिज्ञान	१३४
राशिद्रव्यज्ञान	१३४
राशिध्रुवदिशाज्ञान	१३४
चन्द्रमा के मेषादि राशियोंमें मृत्यु-सूचकांशपरिज्ञान	१३५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
चंद्रमा के मेषादि राशियोंमें पुष्करांश-परिज्ञान	१३५
राशिदिग्बलपरिज्ञान	१३५
राशिकालबलपरिज्ञान	१३५
राशियों का सबलत्वपरिज्ञान	१३५
प्रकारान्तर से राशियोंका बल-निर्बलत्वपरिज्ञान	१३६
दशवर्गों के नामों का परिज्ञान	१३६
होरा, द्रेष्काण, नवांश तथा द्वादशांश साधनरीति	१३६
'होराचक्रम्'	१३७
'द्रेष्काणचक्रम्'	१३७
'नवांशचक्रम्'	१३७
'द्वादशांशचक्रम्'	१३८
सप्तांश, दशमांश, षोडशांश और त्रिंशांशसाधनरीति	१३८
'सप्तांशचक्रम्'	१३९
'दशमांशचक्रम्'	१३९
'षोडशांशचक्रम्'	१४०
षष्ट्यंशस्वामी	१४१
अशुभशुभ षष्ट्यंश	१४२
षष्ट्यंश स्वामिबोधकचक्रम्	१४३
षष्ट्यंशसाधन तथा गृहेशपरिज्ञान	१४४
सर्प तथा पक्षिद्रेष्काणपरिज्ञान	१४४
मतान्तर से क्रूर, सौम्य, विमिश्र तथा जलधर द्रेष्काणों का परिज्ञान	१४५
मतान्तर से पक्षिप्रभृति द्रेष्काणोंका परिज्ञान	१४५
वर्गोत्तमांशपरिज्ञान	१४६
राशिबलकी अपेक्षा अंशबलकी प्रधानता का परिज्ञान	१४६
प्रकारद्वयसे लग्नबलपरिज्ञान	१४६
पुनःप्रकारान्तरसे लग्नबलपरिज्ञान	१४६
पारिजातादिदशवर्गों का परिज्ञान	१४७
पारिजातादि दशवर्गोंकी साधनरीति	१४७
पारिजातादि दशवर्गजन्यफल के विनाश का परिज्ञान	१४७
लग्न के पर्य्याय	१४८
धनभावके पर्य्याय	१४८
सहजभाव के पर्य्याय	१४८
सुखभाव के पर्य्याय	१४८
सुतभाव के पर्य्याय	१४८
शत्रुभाव के पर्य्याय	१४९
जायाभाव के पर्य्याय	१४९
मृत्युभाव के पर्य्याय	१४९
भाग्यभाव के पर्य्याय	१४९
कर्मभाव के पर्य्याय	१४९
लाभभाव के पर्य्याय	१५०
व्ययभाव के पर्य्याय	१५०
केन्द्रादिसंज्ञापरिज्ञान	१५०
वृद्ध्यादिसंज्ञापरिज्ञान	१५०
आयुर्गृहादिसंज्ञापरिज्ञान	१५१
त्रिकादिसंज्ञापरिज्ञान	१५१
त्रिकोणादि संज्ञापरिज्ञान	१५१
दृश्यादृश्यार्द्ध तथा पूर्वार्द्धपरार्द्धसंज्ञा-परिज्ञान	१५१

(५)

ग्रहशीलप्रकरणे

कालपुरुष के शरीरमें ग्रहविन्यास-परिज्ञान	१५३
ग्रहों की आत्मादिसंज्ञा का परिज्ञान	१५३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
ग्रहों की राजादिसंज्ञाका परिज्ञान	१५३
रवि के पर्य्याय	१५४
चन्द्र के पर्य्याय	१५५
भौम के पर्य्याय	१५५
बुध के पर्य्याय	१५५
गुरु के पर्य्याय	१५६
शुक्र के पर्य्याय	१५६
शनि के पर्य्याय	१५६
राहु के पर्य्याय	१५७
केतु के पर्य्याय	१५७
गुलिक तथा प्राणपद के पर्य्याय	१५७
एक युक्ति से दो प्रभृति ग्रहों के पर्य्याय	१५८
उपग्रहों के नाम	१५८
ग्रहों की पुरुषसंज्ञा तथा तत्त्वाधिपत्य—परिज्ञान	१५८
ग्रहों के आकार का परिज्ञान	१५८
ग्रहों के धात्वादि स्वरूप का परिज्ञान	१५९
ग्रहों की प्रकृति का परिज्ञान	१५९
ग्रहों के कारण का परिज्ञान	१५९
ग्रहों की वसादि धातुका परिज्ञान	१५९
ग्रहों की कक्ष्याक्रमका परिज्ञान	१५९
ग्रहों की पृष्ठोदयादि संज्ञा तथा अयनादियोंके स्वामित्व का परिज्ञान	१६०
कालबोधकचक्रम्	१६०
रविस्वरूपपरिज्ञान	१६१
चन्द्रस्वरूपपरिज्ञान	१६१
भौमस्वरूपपरिज्ञान	१६१
बुधस्वरूपपरिज्ञान	१६१
गुरुस्वरूपपरिज्ञान	१६२
शुक्रस्वरूपपरिज्ञान	१६२
शनिस्वरूपपरिज्ञान	१६२
ग्रहों के वर्ण का परिज्ञान	१६२
ग्रहों के ताम्रादि वर्ण का परिज्ञान	१६२
ग्रहदिशापरिज्ञान	१६३
ग्रहों की द्विपदादि संज्ञा का परिज्ञान	१६३
ग्रहजातिपरिज्ञान	१६३
ग्रहगुणपरिज्ञान	१६३
ग्रहों का सुखदुःखकर्तृत्वपरिज्ञान	१६४
ग्रहों की स्थिरादि संज्ञा का परिज्ञान	१६४
ग्रहों के द्रव्य तथा अधिदेव का परिज्ञान	१६४
ग्रहों के रत्नवस्त्रों का परिज्ञान	१६४
ग्रहों के क्रीडास्थान का परिज्ञान	१६५
ग्रहों के प्रदेश का परिज्ञान	१६५
ग्रहों के रस का परिज्ञान	१६५
ग्रहों की अवस्था का परिज्ञान	१६५
प्रकारान्तर से ग्रहोंकी अवस्था का परिज्ञान	१६५
सजलनिर्जलग्रहका परिज्ञान	१६६
ग्रहोंकी उच्चनीचराशिका परिज्ञान	१६६
ग्रहोंकी मूलत्रिकोणराशिका परिज्ञान	१६६
राहु तथा केतुका स्वगृहादि परिज्ञान	१६६
ग्रहोंकी निसर्गमैत्रीका परिज्ञान	१६७
राहु-केतुकी निसर्गमैत्रीका परिज्ञान	१६७
ग्रहोंकी तत्कालमैत्रीका परिज्ञान	१६७
ग्रहोंकी पञ्चधामैत्रीका परिज्ञान	१६७
ग्रहोंकी एकपादादिदृष्टिका परिज्ञान	१६८
राहु तथा केतुकी दृष्टिका परिज्ञान	१६८
ग्रहोंकी ऊर्ध्वादिदृष्टिका परिज्ञान	१६८
ग्रहोंकी मुखदिशाका परिज्ञान	१६८
ग्रहोंके ऊर्ध्वमुखादिका परिज्ञान	१६९
ग्रहलोकपरिज्ञान	१६९
प्रभातादिसमयाधिपत्यपरिज्ञान	१६९
ग्रहोंकी ऋतुओंका परिज्ञान	१६९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
ग्रहोंके शुभाशुभत्वका परिज्ञान	१७०
चंद्रमाके पूर्णादिका परिज्ञान	१७०
ग्रहोंकी जागरूकादि संज्ञाका परिज्ञान	१७०
सूर्यके सुबलत्व का परिज्ञान	१७०
चन्द्रमाके सुबलत्वका परिज्ञान	१७०
भौमके सुबलत्वका परिज्ञान	१७१
बुधके सुबलत्वका परिज्ञान	१७१
गुरु के सुबलत्व का परिज्ञान	१७१
शुक्र के सुबलत्व का परिज्ञान	१७१
शनि के सुबलत्व का परिज्ञान	१७२
ग्रहों के दिग्बल का परिज्ञान	१७२
ग्रहों के युग्मायुग्मबल तथा द्रेष्काणबल का परिज्ञान	१७२
ग्रहों के केन्द्रादिबल का परिज्ञान	१७२
अहोरात्र त्रिभागबलपरिज्ञान	१७२
नतोन्नत तथा चेष्टाबल परिज्ञान	१७३
प्रकारान्तर से चेष्टाबल तथा निसर्गबल का परिज्ञान	१७३
राहु तथा केतु के सुबलत्व का परिज्ञान	१७३
ग्रहों के शुभाशुभ बल के प्रमाण का परिज्ञान	१७३
ग्रहों के सुबलत्वमान का परिज्ञान	१७४
ग्रहों के सामान्य बलाबलत्व का परिज्ञान	१७४
अन्य योग में ग्रहों की बुद्धिमत्ता का परिज्ञान	१७५
दोषशामकग्रह तथा विफलग्रहपरिज्ञान	१७५
ग्रहों के इष्टानिष्टफलका परिज्ञान	१७५
ग्रहों के चतुर्विधसम्बन्धका परिज्ञान	१७६
मतान्तर से पाँच प्रकारके संबन्ध का परिज्ञान	१७७
ग्रहों के भावेश के वश से शुभाशुभत्वका परिज्ञान	१७७
विनष्टग्रह के लक्षण का परिज्ञान	१७७

(६)

ग्रहावस्थाप्रकरणे

दीप्तादिदशअवस्थाओं के नाम	१७९
दीप्तादि दशअवस्थाओं के लक्षण का परिज्ञान	१७८
बालाद्यवस्थासाधनरीति	१७८
जाग्रदाद्यवस्था साधनरीति	१८०
शयनादिअवस्थाओं के नाम	१८०
शयनाद्यवस्था साधनरीति	१८०
दृष्टाद्यवस्था साधनरीति	१८१
लज्जितादिअवस्थाओं की साधनरीति	१८२

(७)

ग्रहदानप्रकरणे

रविदान	१८४
चन्द्रदान	१८४
भौमदान	१८४
बुधदान	१८४
गुरुदान	१८५
शनिदान	१८५
शुक्रदान	१८५
राहुदान	१८५
केतुदान	१८५
ग्रहों की जपसंख्या	१८६

त. स. धाम चित्रकोष
तपोवन संस्कार धाम
धारागिरि, कपीलपोर.
नवसारी-३९६४२४.
५८९५९, ५८९२४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(८)

संक्रान्तिप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
संक्रान्तियों की घोरादि संज्ञा का परिज्ञान	१८७
संक्रान्ति के लेपन तथा जातिपरिज्ञान	१८८
संक्रान्ति पुष्पपरिज्ञान	१८८
संक्रान्ति–भूषण–परिज्ञान	१८८
संक्रान्तियों की वय तथा अवस्था का परिज्ञान	१८९
संक्रान्तिवाहनपरिज्ञान	१८९
संक्रान्तिवस्त्रपरिज्ञान	१८९
संक्रान्तियों के भक्ष्य का परिज्ञान	१९०
संक्रान्तियों की सुप्तादि संज्ञाका परिज्ञान	१९०
संक्रान्तियों के जात्यादिफल का परिज्ञान	१९०
नक्षत्रों की जघन्यादि संज्ञा तथा संक्रान्तियों के मुहूर्त का परिज्ञान	१९०
चंद्रदर्शफल तथा वर्ष के विंशोपक का परिज्ञान	१९१

(९)

पञ्चाङ्गसाधनकप्रणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
प्रभवादिसंव्वत्सरानयनरीति	१९२
सारणीप्रवेशरीति	१९३
प्रभवादीनां संव्वत्सराणां नामादि बोधकचक्रम्	१९४
प्रकारान्तर से प्रभवादिसंवत्सरसाधनरीति	१९५
पुनः प्रकारान्तर से प्रभवादिसंव्वत्सर-साधनरीति	१९५
वैक्रमीयसंव्वत्सरतः प्रभवादिसंवत्सरानयन-सारणी	१९६
पुस्तकीयाल्पसंव्वत्सरोनशेषसंव्वत्सरफल-सारणी	१९६
सारणीप्रवेशरीति	१९६
मेषादिसंक्रान्तिसाधनरीति	१९७
चक्रध्रुवसारणीयम्	१९८
अङ्गध्रुवसारणीयम्	१९८
मेषादिसंक्रान्तीनां क्षेपका वाराद्याः	१९८
सारणीप्रवेशरीति	१९८
संक्रान्तियों के प्रवेशसमय की घटियों के वश से पुण्यकालपरिज्ञान	१९८
चान्द्रादिमासपरिज्ञान	१९९
विवाहादि कार्योंमें मासग्रहणपरिज्ञान	१९९
अधिमास तथा क्षयमासपरिज्ञान	२००
स्थूलरीतिसे अधिमासपरिज्ञान	२०१
सूक्ष्मरीति से अधिमासपरिज्ञान	२०१
प्राचीनमतेनाधिमासशकवर्षाणि	२०२
प्राचीनमतेन क्षयाधिमासास्तेषां शकवर्षाणि च	२०३
रैवतपक्षे क्षयाधिमासास्तेषां शकवर्षाणिच	२०३
चैत्रपक्षेक्षयाधिमासास्तेषां शकवर्षाणि च	२०३
रैवतपक्षे क्षयाधिमासवर्षाणि	२०४
चैत्रपक्षे क्षयाधिमासास्तेषां वर्षाणि च	२०५
स्थूलरीतिसे तिथिपरिज्ञान	२०६
स्थूलरीति से नक्षत्रपरिज्ञान	२०६
स्थूलरीति से योगपरिज्ञान	२०६
सूर्य और चन्द्रगति से तिथिनक्षत्र तथा योगसाधनरीति	२०७
प्रातःकालीन स्पष्ट सूर्य तथा स्पष्ट चन्द्र से तिथ्यादियों की साधनरीति	२०८
स्पष्टसूर्य तथा स्पष्टचंद्रसे तिथ्यादियों के गतगम्य घट्यादिसाधनरीति	२०९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
प्रसंगवशसे पञ्चाङ्गद्वारा तिथ्यादियों के भुक्त भोग्य साधन की रीति	२११
करणसाधनरीति	२१२
शुक्लपक्षस्य पूर्वदले करणानि	२१२
शुक्लपक्षस्य परदले करणानि	२१२
कृष्णपक्षस्य तिथीनां पूर्वदले करणानि	२१३
कृष्णपक्षस्य तिथीनां परदले करणानि	२१३
भद्रा स्पष्टीकरणरीति	२१३
शुक्लपक्षे भद्रातिथिबोधकचक्रम्	२१३
कृष्णपक्षे भद्रातिथिबोधकचक्रम्	२१३
विशेष द्रष्टव्यः	२१३
पंचांग-परिवर्तन-परिज्ञान	२१४
पञ्चाङ्गपरिवर्तनके स्पष्टनियम	२१४
चरान्तःपलसंस्कारनियम	२१५
देशान्तरसंस्कारनियम	२१५
तिथ्यादियों के घट्यादियों को स्पष्ट करने का नियम	२१५
भौमादियों की राशि, नक्षत्र तथा नक्षत्रपाद प्रवेशरीति	२१६
वक्री ग्रह की राश्यादि युति का उदाहरण	२१७
नक्षत्राणां राश्यादि ध्रुवकाः	२१८
वाक्रिणी ग्रहे नक्षत्राणां राश्यादि ध्रुवकाः	२१८
रविनक्षत्रक्षेपकाणि महानक्षत्रसंज्ञितानि तिथ्यादिकानि	२१९
स्थूलरीतिसे सूर्य के नक्षत्रप्रवेश का उदाहरण	२१९
भौमादियों की शीघ्रकेन्द्रगतिपरिज्ञान	२१९
भौमादिपंचताराओं के वक्रास्तादि के गतगम्य दिनादिसाधनरीति	२१९
प्रकारान्तर से भौमादियों के वक्रास्तादिके गतगम्य दिनादिसाधनरीति	२२०
भौमादियों के उदयादियों के स्थूल दिनोंकापरिज्ञान	२२०
भौमेज्येनीनामुदयादि दिनमास बोधकचक्रम्	२२१
बुधशुक्रयोरुदयादीनां दिनमासबोधक चक्रम्	२२१
अगस्त्योदयास्तसाधनरीति	२२१
प्रकारान्तरसे अगस्त्यास्तोदयसाधनरीति	२२२
स्थूलरीति से रात्रि में चन्द्रोदयास्तमान-परिज्ञान	२२३
केवल जन्मपत्री के ऊपर से ही जन्मशकादि जानने की रीति	२२३
गुरुराशिचारवशतो वर्षबोधकसारणी	२२४
शनिराशिचारवशतो वर्षबोधकसारणी	२२४
राहुराशिचारवशतो वर्षबोधकचक्रम्	२२५
मासपरिज्ञान	२२६
जन्मसौरमासबोधकचक्रम्	२२७
पक्ष, तिथि, दिवा, रात्रि तथा इष्टघटि-परिज्ञान	२२७
सूर्यचन्द्रान्तर्गतराशिवशेन तिथिबोधक-चक्रम्	२२७
लग्नमानबोधकचक्रम्	२२८
लग्नानां सायनघट्यादिमानबोधकचक्रम्	२२८

(१०)

गोचर--प्रकरणे

गोचरगत–रविफल	२३०
गोचरगत–चंद्रफल	२३०
गोचरगत–भौमफल	२३०
गोचरगत–बुधफल	२३१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
गोचरगत-गुरुफल	२३१
गोचरगत-शुक्रफल	२३१
गोचरगत-शनिफल	२३२
गोचरगत-राहुफल	२३२
जन्मादिस्थानों में भौमादिग्रहों का समुदायफल	२३२
प्रकारन्तर से गोचरगत चन्द्रफल	२३३
रव्यादि ग्रहोंका वेधजन्यफलपरिज्ञान	२३३
गन्तव्य राशिका फलदान कालपरिज्ञान	२३४
राशिगत ग्रहोंका फलपाक समयपरिज्ञान	२३४
ग्रहोंके एकराशि भोगदिन परिज्ञान	२३४
ग्रहों का भभ्रमणपरिवर्तनकालपरिज्ञान	२३५
प्रकारान्तर से भभ्रमणपरिवर्तनकाल	२३५
शनिपादपरिज्ञान	२३५
सुवर्णादिपादफलपरिज्ञान	२३५
प्रकारान्तर से शनि का गोचरफल	२३६
स्थानविशेष से गोचरगत ग्रहों का फल	२३६
ग्रहों का विफलत्वपरिज्ञान	२३६

(११)

अष्टवर्गप्रकरणे

सूर्याष्टकवर्गाङ्कपरिज्ञान	२३८
रवेरष्टकवर्गाङ्कचक्रम्	२३८
चन्द्राष्टकवर्गाङ्कपरिज्ञान	२४०
चन्द्राष्टकवर्गाङ्काः	२४१
भौमाष्टकवर्गाङ्क परिज्ञान	२४१
भौमाष्टकवर्गाङ्काः	२४१
बुधाष्टकवर्गाङ्कपरिज्ञान	२४१
बुधाष्टकवर्गाङ्काः	२४२
जीवाष्टकवर्गाङ्कपरिज्ञान	२४२
गुरोरष्टकवर्गाङ्काः	२४२
शुक्राष्टकवर्गाङ्कपरिज्ञान	२४३
शुक्राष्टकवर्गाङ्काः	२४३
शन्यष्टकवर्गाङ्क परिज्ञान	२४३
शनेरष्टकवर्गाङ्काः	२४३
लग्नाष्टकवर्गाङ्कपरिज्ञान	२४४
लग्नाष्टकवर्गाङ्काः	२४४
राह्वष्टकवर्गाङ्कपरिज्ञान	२४४
राह्वष्टकवर्गाङ्काः	२४४
अष्टकवर्गकेशुभाशुभस्थानोंका परिज्ञान	२४५
ग्रहोंकी रेखाओंकीसंख्याका परिज्ञान	२४५
अष्टकवर्गजन्यफलके शुभाशुभत्वका परिज्ञान	२४५

(१२)

सुदर्शनप्रकरणे

सुदर्शनचक्रनिर्माणविधिऔर उससे फल का परिज्ञान	२४६
तन्वादिभावों में विचारणीय तन्वादि वस्तुओं की हानिका परिज्ञान	२४६
तन्वादि भावों में विचारणीय वस्तुओं की वृद्धि तथा अन्यफल का परिज्ञान	२४७
ग्रहदृष्टिजन्यशुभाशुभफलका परिज्ञान	२४७
वर्षमासादियों में शुभफलका परिज्ञान	२४८
प्रत्यक वर्ष में दशा का परिज्ञान	२४९
प्रकारान्तर से प्रत्येक वर्ष के शुभाशुभ फलका परिज्ञान	२५०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(१३)

रश्मिप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
रश्मियों के स्पष्टीकरण का परिज्ञान	२५१
ग्रहाणां रश्मिगुणबोधकचक्रम्	२५१

(१४)

दशाप्रकरणे

स्पष्टचन्द्र से भुक्त तथा स्पष्टभोग्य साधनरीति	२५३
विंशोत्तरी तथा महादशा दशेश और उनके वर्षों का परिज्ञान	२५३
विंशोत्तरीमहादशादशेशतदब्दबोधक चक्रम्	२५४
विंशोत्तरीदशासाधनरीति	२५४
दशान्यासरीति	२५५
महादशासाधनरीति	२५६
सूर्यदशाफल	२५७
चन्द्रदशाफल	२५८
भौमदशाफल	२५८
राहुदशाफल	२५८
गुरुदशाफल	२५८
शनिदशाफल	२५८
बुधदशाफल	२५९
केतुदशाफल	२५९
शुक्रदशाफल	२५९
पापदशा में उच्चादिजन्यफल विभाग-परिज्ञान	२५९
शुभदशा में उच्चादिजन्यफलदान विभाग-परिज्ञान	२५९
शीर्षोदयादिराशिगतग्रहोंके फलदानसमय-विभागपरिज्ञान	२६०
आरोहिण्यादि दशाफलपरिज्ञान	२६०
चन्द्रमा की आरोहिणी तथा अवरोहिणी दशा का परिज्ञान	२६०
प्रकारान्तर से चन्द्रमा की आरोहिणी आदिदशा का परिज्ञान	२६१
खरग्रह परिज्ञान	२६१
छिद्रग्रह परिज्ञान	२६१
ग्रहों के मृत्युकारक स्थान का परिज्ञान	
योगिनियों के नाम	२६२
योगिनियों के स्वामियों का परिज्ञान	२६२
प्रथम दशेशानयन तथा दशेशों के वर्षों का परिज्ञान	२६२
योगिनीदशेशतदब्दबोधकचक्रम्	२६३
योगिनीदशासाधनरीति	२६३
मंगलादशाफल	२६४
पिंगलादशाफल	२६५
धान्यादशाफल	२६५
भ्रामरीदशाफल	२६५
भद्रिकादशाफल	२६५
उल्कादशाफल	२६५
सिद्धादशाफल	२६६
संकटादशाफल	२६६
रौद्राद्यष्टोत्तरीदशासाधनरीति	२६६
रौद्राद्यष्टोत्तरी दशेश तदूर्ध्वबोधकचक्रम्	२६७
शनिदशासाधन का विशेष नियम	२६८
चरदशासाधनरीति	२६८
दशालेखनरीति	२७१
चरदशा में विशेष नियम	२७१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
कालचक्रीदशासाधनरीति	२७२
सव्यनक्षत्रों में देहेश तथा जीवेश-परिज्ञान	२७४
अपसव्यनक्षत्रों में जीवेश तथा देहेश-परिज्ञान	२७४
कालचक्रीदशा में वर्षादियों के साधन की रीति	२७५
विंशोत्तरीप्रभृति दशाओं में अन्तर्दशा साधनरीति	२७६
चर तथा कालचक्रीदशा की अन्तर्दशा साधन रीति	२८०

(१५)

स्त्रीजातकप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
स्त्री के शरीर के शुभाशुभफल का परिज्ञान	२८२
मतान्तर से स्त्रियों के जन्माङ्गद्वारा शुभाशुभफलपरिज्ञान	२८२
पुनः मतान्तर से स्त्री के शुभाशुभफल का परिज्ञान	२८२
लग्न तथा चन्द्रमा के त्रिंशांश के द्वारा स्त्री के शुभाशुभ फल का परिज्ञान	२८३
स्त्री स्त्रीमैथुनयोग	२८५
व्यभिचारिणीयोग	२८५
परित्यागयोग	२८६
गतालकादियोग	२८६
पतिवैरिणीयोग	२८६
रुग्ण तथा सुन्दर भगवती योग	२८७
दुर्भगायोग	२८७
वन्ध्यायोग	२८७
गर्भस्रावादियोग	२८७
अनपत्यादियोग	२८७
कन्याप्रसूति तथा अल्पप्रसूतियोग	२८८
बहुपुत्रवतीयोग	२८८
सौख्ययोग	२८८
राजयोग	२९०
दास्यादियों से अलंकृतयोग	२९२
ब्रह्मवादिनीयोग	२९२
प्रव्रज्यायोग	२९२
दरिद्रयोग	२९३
वैधव्ययोग	२९३
उत्तमसहोदरयोग	२९६
कन्या के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति से पतिलक्षण	२९६
कापुरुषादियोग	२९७
स्त्रियों के भावगतग्रहों का संक्षिप्तफल	२९८
अष्टकूटों के नाम	२९८
राशियों के वर्ण का परिज्ञान	२९९
वर्णचक्रमिदम्	२९९
राशियों के वश्यावश्य का परिज्ञान	३००
मेषादीनां द्विपदादि संज्ञाबोधकचक्रम्	३००
ताराकूटपरिज्ञान	३०१
ताराचक्रम्	३०१
योनिकूटपरिज्ञान	३०१
योनितद्वैरबोधकचक्रम्	३०२
ग्रहमैत्रीकूटपरिज्ञान	३०३
निसर्गमैत्रीचक्रम्	३०४
गणकूटपरिज्ञान	३०४
गणबोधकचक्रम्	३०४
गणदोष परिहार तथा भकूटपरिज्ञान	३०५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
नाडीकूटपरिज्ञान	३०६
नाडीबोधकचक्रम्	३०६
नाडीदोषाभाव नक्षत्रपरिज्ञान	३०६
नाडी तथा गणके दोष का परिहार	३०७
वर्णभेद से नाडीप्रभृति कूटों के दोषका परिहार	३०७
वर्गपरिज्ञान	३०७
वर्गस्वामीबोधकचक्रम्	३०८
वर्गाणां मैत्रीबोधकचक्रम्	३०८
पूर्वभागादि नक्षत्र तथा तत्फल-परिज्ञान	३०९
वर-वधू मेलापके युजिभचक्रम्	३०९
नृदूरपरिज्ञान	३०९
आश्लेषा तथा मूल में उत्पन्न वर-वधू के दोष का परिज्ञान	३१०
विशाखा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या के दोष का परिज्ञान	३१०
विषाख्ययोग तथा उसमें उत्पन्न कन्या के दोष का परिज्ञान	३१०
वर तथा वधू के ग्रहों के मेलन का परिज्ञान	३११

(१६)

शुभाशुभप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
तिथियों के स्वामी तथा उनकी नन्दादि संज्ञा का परिज्ञान	३१२
तिथीनां स्वाम्यादिबोधकचक्रम्	३१३
तिथियों की विषादि संज्ञा	३१४
शुभ तथा अशुभ तिथिपरिज्ञान	३१४
पर्वादिनपरिज्ञान	३१४
सिद्धियोग	३१४
अमृतयोग	३१४
मृत्युयोग	३१५
रव्यादिवारों के अधिदेवताओंका परिज्ञान	३१५
रव्यादिवारों में कार्यसिद्धि का परिज्ञान	३१५
रात्रितथा दिन में वारदोषका परिज्ञान	३१५
रव्यादिवारों में तैलाभ्यङ्गजनितफल तथा उसके दोष का परिज्ञान	३१५
वारवेला परिज्ञान	३१६
दिन तथा रात्रि में कालवेलापरिज्ञान्	३१६
मतान्तर से कालवेलापरिज्ञान	३१६
द्युनिशोरष्टमांशवेलाचक्रम्	३१७
वारप्रवृत्तिसाधनरीति	३१८
कालहोरेश साधनरीति	३१८
कालहोरेशबोधकचक्रम्	३१९
अश्विन्यादि नक्षत्रों के स्वामी	३१९
अभिजित् नक्षत्र परिज्ञान	३२०
अश्विन्यादि नक्षत्रों के ताराओं का परिज्ञान	३२०
अश्विन्यादि नक्षत्रों की ध्रुवादि संज्ञा-का परिज्ञान	३२०
दग्धनक्षत्रादिसंज्ञापरिज्ञान	३२१
यमदंष्ट्रायोग	३२१
यमघंटयोग	३२२
सिद्धियोगों का तिथिविशेष से निन्द्यत्व-परिज्ञान	३२२
रवियोगः	३२२
सर्वार्थसिद्धियोग	३२३
अमृतसिद्धियोग	३२३
आनन्दादि अष्टाविंशति योगानयनरीति	३२३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
आनन्दादि योगोंके नाम	३२४
अशुभयोगों में वर्ज्यकाल	३२४
आनन्दादियोगसारणीयम्	३२५
त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्करयोगपरिज्ञान	३२६
पञ्चक (धनिष्ठादि पाँच नक्षत्र) में वर्जित कार्य परिज्ञान	३२६
मूलनक्षत्र में उत्पन्न बालक के जन्म का फल	३२६
नक्षत्र गंडान्तपरिज्ञान	३२६
तिथिगंडान्त तथा लग्नगण्डान्त परिज्ञान	३२७
गण्डान्तजनितफलपरिज्ञान	३२७
जन्मादितारा जानने की विधि उनके नाम तथा फल का विचार	३२७
विष्कंभादियोगों के मध्य में अशुभ योगों के वर्ज्य काल का परिज्ञान	३२७
भद्रातिथिपरिज्ञान	३२८
भद्रा का वासपरिज्ञान	३२८
भद्रा का फल तथा उसकी सम्मुखादि संज्ञापरिज्ञान	३२८
दिशा तथा विदिशाओंका परिज्ञान	३२८
पूर्वादि दिशाओं में भद्रावास कार्योंका परिज्ञान	३२९
भद्रा के मुख तथा पुच्छ में यात्रा का फल और उसमें करने योग्य कार्यों का परिज्ञान	३२९
मेषादिराशियों के वश से पूर्वादि दिशाओं में चन्द्रवास का परिज्ञान	३२९
सम्मुखादि चन्द्रमा के फल का विचार	३२९
मेषादि राशियों में घातचन्द्र का परिज्ञान	३३०
शुभकार्यादि में जन्मराशि का तथा सेवादि में नामराशि का प्राधान्य एवं जन्मचन्द्रफल का परिज्ञान	३३०
जन्मचन्द्र के अशुभत्व और द्वादशचन्द्र के शुभत्व का परिज्ञान	३३०
योगिनियों के वास और उनके फल का परिज्ञान	३३०
शुभकृत्य में वर्जितकालपरिज्ञान	३३१
सिंहराश्यंश तथा मकरराशिगतगुरुदोष-परिज्ञान	३३३
मासान्तादि में वर्ज्यकालपरिज्ञान	३३२
विवाहमें ज्येष्ठत्रयदोषपरिज्ञान	३३२
देशभेद होलाष्टक के अशुभत्व का परिज्ञान	३३३
विवाहादि शुभ कार्योंमें वर्ज्य दशदोषों के नाम	३३३
पञ्चशलाका वेधसाधनरीति	३३३
पञ्चशलाका वेधचक्रम्	३३४
सप्तशलाका वेधसाधनरीति	३३४
सप्तशलाकावेधचक्रम्	३३५
लत्तादोषपरिज्ञान	३३५
युति (ग्रहसंयोग) दोष	३३६
लत्तादोषबोधकचक्रम्	३३६
चन्द्रर्क्षोपरिग्रहवशतो युतिदोषफल-बोधकचक्रम्	३३६
वज्रपञ्चकदोष	३३७
बाणदोष	३३७
बाणबोधकचक्रम्	३३८
यामित्रदोष	३३८
जामित्रचक्रम्	३३८
पातदोष वा (चण्डीशचण्डायुध) दोष	३३९
प्रकारान्तरसे पातदोष परिज्ञान	३३९
चण्डीशचण्डायुध (पात) दोषबोधक-चक्रम्	३४०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
खार्जूरवेध (एकार्गल) दोष	३४१
खार्जूरवेधबोधकचक्रम्	३४१
दशयोगदोष	३४२
उपग्रहदोष	३४२
क्रान्तिसाम्यदोष	३४३
क्रान्तिसाम्यचक्रम्	३४३
मासदग्धदोष	३४३
मासदग्धतिथिचक्रम्	३४४
सर्वारम्भशुद्धि	३४४
सर्वकार्यारम्भ में लग्नशुद्धिपरिज्ञान	३४४
गृहारम्भादिकार्यों में सूर्यादिशुद्धि	३४४
वर, वटु तथा कन्याके सूर्य, गुरु तथा चन्द्रबलपरिज्ञान	३४५
वटु तथा कन्याकी जन्मराशि से गुरुके शुभाशुभत्वका परिज्ञान	३४५
गोचर शुद्धि के अभाव में अष्टकवर्ग शुद्धि की प्रधानताका परिज्ञान	३४६
कस्मिन्कर्मणि कस्य बलं ग्राह्यं तद्बलबोधक-चक्रम्	३४६
दन्तधावन का निषेध समय	३४७

(१७)

मुहूर्तप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
दिक्शूलपरिज्ञान	३४८
विदिक्शूल	३४८
दिक्शूलपरिहार	३४८
समयशूल	३४८
नक्षत्रशूल	३४९
कालवास	३४९
राहुवास	३४९
राहुवास का फल	३४९
दक्षिणादि शुक्र का फल	३५०
पूर्वादि दिशाओं में प्रस्थान के दिनादि का परिज्ञान	३५०
पितापुत्रादियों की एक साथ यात्रा का निषेध	३५०
मतान्तर से पूर्वादि दिशाओं में भौमादि वारोंका शुभत्व का परिज्ञान	३५०
यात्रामुहूर्त	३५१
यात्रा में तिथि तथा लग्नादि	३५१
समस्त दिशाओं की यात्रामें शुभनक्षत्रादि	३५१
स्त्री तथा पुरुषों के वस्त्रधारण तथा नवान्नभक्षणमुहूर्त	३५१
भूषण तथा शस्त्रघट्टनमुहूर्त	३५२
स्त्रियों के केशबन्धन का मुहूर्त	३५२
सूची कर्म तथा वस्त्रक्षालन	३५२
औषधभक्षणमुहूर्त	३५२
रोगीजनों के स्नान का मुहूर्त	३५३
शतभिषा में स्त्रीजन के स्नान का निषेध	३५३
वह्निवास	३५३
होमाहुति	३५३
सूर्यभाद् होमाहुतिचक्रम्	३५४
वाणिज्य (दुकान) मुहूर्त	३५४
पशुयात्रामुहूर्त	३५४
पशुओं के क्रयविक्रय का मुहूर्त	३५४
हलप्रवाहमुहूर्त	३५५
बीजवपन तथा फणीचक्रपरिज्ञान	३५५
बीजोप्तिचक्रम्	३५५
हलचक्र तथा धान्यच्छेदनादि मुहूर्त	३५५
प्रथम रजोवती स्त्री के स्नान का मुहूर्त	३५६
गर्भाधान का मुहूर्त	३५६
गर्भ के मासेश तथा स्त्री के चन्द्रबल का परिज्ञान	३५७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सीमन्तकर्म का मुहूर्त	३५७
पुंसवनकर्म विष्णुपूजा तथा सूतिका के स्नान का मुहूर्त	३५७
नामकर्ममुहूर्त	३५७
जलपूजन मुहूर्त	३५८
अन्नप्राशन मुहूर्त	३५८
कर्णवेधमुहूर्त	३५८
चूडाकर्ममुहूर्त	३५९
सामान्यक्षौरकर्म	३५९
रव्यादिवारों के वश से क्षौर कर्म का शुभाशुभफल	३५९
अक्षरारम्भ तथा विद्यारंभमुहूर्त	३६०
व्रतबन्धमुहूर्त	३६०
विवाहसमयनिरूपण	३६१
कन्यावरणका तथा वरवरण मुहूर्त	३६१
विवाहमुहूर्त	३६१
लग्नभङ्गपरिज्ञान	३६२
रव्यादिग्रहों के विंशोपक का परिज्ञान	३६२
रव्यादिग्रहों के विंशोपकप्रदस्थान	३६२
मेषादि राशियों में तैलादिलापनसंख्या का परिज्ञान	३६३
वधूप्रवेशमुहूर्त	३६३
द्विरागमनमुहूर्त	३६३
गृहपिण्डादिसाधन	३६४
प्रकारान्तर से वास्तुप्रभृतियों का साधन	३६५
गृहारम्भमुहूर्त	३६५
वत्सचक्र तथा द्वारचक्र	३६६
नूतनगृहप्रवेशमुहूर्त	३६६
जीर्णगृहप्रवेश	३६६
वास्तुसारणी	३६७
प्राचीन मत से वर्षप्रवेशसमयसाधन	३७१

(१८)

वर्षप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अर्वाचीनमत से वर्षप्रवेशसमयसाधन	३७२
वर्षध्रुवसारणीयम्	३७३
वर्षप्रवेशसमय में स्थूलरीति से योग-नक्षत्र तथा तिथिका परिज्ञान	३७५
वर्षमें लग्नसाधन	३७५
वर्षे तिथिनक्षत्रयोगलग्नबोधकसारणी	३७६
वर्षस्पष्टीकरण के लिये चालनसाधन	३७८
पञ्चाङ्गस्थ ग्रहों से स्पष्टग्रहसाधन	३७८
सूर्यमासगतिसे स्पष्टसूर्यसाधन	३७८
नक्षत्रस्पष्टभुक्तसे स्पष्टचन्द्रसाधन	३८०
चन्द्रस्पष्टसारणी	३८१
प्रकारान्तर से स्पष्टचन्द्रसाधन	३८२
स्पष्टचन्द्रसारणीयम्	३८३
ग्रहों की वार्षिक मध्यमगतिका परिज्ञान	३८४
रव्यादीनां वार्षिकक्षेपका	३८४
मुंथासाधन	३८५
राहुके मुखपृष्ठांशों का ज्ञान	३८५
प्रश्नलग्नद्वारा वर्षफल साधन में जन्म-लग्नेश और मुंथासाधनरीति	३८६
द्वादशवर्गों के नाम	३८७
गृहादि षड्वर्ग साधन तथा प्रकारान्तर से द्रेष्काणसाधन	३८७
द्रेष्काणस्वाभिबोधकचक्रम्	३८७
चतुर्थांशतथा पंचमांशसाधन	३८७
चतुर्थांशबोधकचक्रम्	३८८
विषमसमपंचमांशचक्रम्	३८८
षष्ठांश अष्टमांश दशमांश तथा एकाद-शांशेशसाधनरीति	३८९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
द्वादशवर्गीफलम्	३९०
द्वादशवर्गों में शुभ पापग्रहों के वशसे शुभाशुभत्व का परिज्ञान	३९१
ग्रहों के भेद से तथा शुभपापवर्गों के वश से फल का तारतम्य	३९१
द्वादशभावों के शुभाशुभ फलका ज्ञान	३९१
वर्ष में मित्र तथा दृष्टि का परिज्ञान	३९१
गणितागतदृष्टि	३९२
दृष्टिध्रुवाङ्काः सान्तराः	३९२
वर्ष में निसर्गमैत्री का ज्ञान	३९३
वर्ष में तात्कलिक मैत्री	३९४
वर्ष में स्त्रीपुरुषग्रह	३९४
सूर्यादि ग्रहों के दीप्तांश	३९४
दीप्तांशों का परिज्ञान	३९४
दीप्तांशों का प्रयोजन	३९५
इक्कवाल तथा इन्दुवारयोग	३९५
इत्थशालादियोगलक्षण	३९५
इत्थशालयोगभङ्गः	३९५
नक्तयोगपरिज्ञान	३९६
यमयायोग	३९६
उच्चबलसाधन	३९६
हद्देशपरिज्ञान	३९७
मेषादिराशिविभागयुक्ताहद्देशाः	३९८
पञ्चवर्गीबलसाधनरीति	३९८
पञ्चवर्गीबलबोधकचक्रम्	३९९
हर्षबलसाधन	४००
हर्षबलबोधकचक्रम्	४००
त्रैराशिकस्वामियों का ज्ञान	४०१
त्रैराशिकस्वामिबोधकचक्रम्	४०१
वर्ष में जन्मलग्नेशादि पंचाधिकारी	४०२
दृग्बल और पञ्चवर्गीबलके वश से वर्षेशनिर्णय	४०२
दृष्टिसाम्य में तथा मतान्तर से वर्षेशनिर्णय	४०२
पुण्यादि सहमसाधनरीति	४०३
मित्रादि सहमसाधन	४०५
कार्यादि सहमसाधन	४०८
शौर्य्यादि सहमसाधन	४०९
कन्या तथा अश्व सहमसाधन	४११
सहमों के फलपाक का समय	४११
सहमलग्नेश के बलाबलत्व	४१२
सहमेशके बलाबलसे सहम की वृद्धिह्रास	४१२
सहमों के फलाभाव के कारण	४१२
सहमसारणीयम्	४१३
ग्रहों का हीनीशसाधन	४१४
पापांशसाधन	४१५
दिनादिदशा साधन तथा दशेशनिर्णय	४१५
अन्तर्दशासाधनरीति	४१६
मुद्दादशा में दशेशों का ज्ञान	४१७
दशेशों के दिवस	४१७
मुद्दादशायाँ रव्यादीनां मासादयः	४१८
मुद्दादशा में मासदशा तथा दिनसाधन	४१८
मासप्रवेशमुद्दादशादिनादिचक्रम्	४१९
दिनप्रवेश मुद्दादशा दिनादिचक्रम्	४१९
मुद्दादशा में अन्तर्दशासाधन	४२०
मुद्दादशायामन्तर्दशासाधनचक्रम्	४२०
योगिनी मुद्दादशेशानयन	४२१
योगिनी मुद्दादशा के दिन	४२१
योगिनी मुद्दादशामासादिचक्रम्	४२२
त्रिपताकचक्रसाधनरीति	४२२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
त्रिपताकचक्र में ग्रहविद्धचन्द्रफल	४२३	पञ्चमगत भौमफल	४३१
मासप्रवेशदिनप्रवेशसाधन	४२३	षष्ठगत भौमफल	४३१
गतवर्ष से अग्रवर्षानयन	४२५	सप्तमगत भौमफल	४३१
लग्नगत रविफल	४२५	अष्टमगत भौमफल	४३१
धनगत रविफल	४२५	नवमगत भौमफल	४३१
सहजगत रविफल	४२५	दशमगत भौमफल	४३२
सुखगत रविफल	४२६	लाभगत भौमफल	४३२
सुतगत रविफल	४२६	व्ययगत भौमफल	४३२
षष्ठस्थ रविफल	४२६	लग्नगत बुधफल	४३२
सप्तमगत रविफल	४२६	धनगत बुधफल	४३२
अष्टमगत रविफल	४२६	सहजगत बुधफल	४३३
नवमगत रविफल	४२७	सुखगत बुधफल	४३३
दशमगत रविफल	४२७	सुतगत बुधफल	४३३
लाभगत रविफल	४२७	रिपुगत बुधफल	४३३
व्ययगत रविफल	४२७	जायागत बुधफल	४३३
लग्नगत चन्द्रफल	४२७	अष्टमगत बुधफल	४३४
धनगत चन्द्रफल	४२८	नवमगत बुधफल	४३४
तृतीयगत चन्द्रफल	४२८	दशमगत बुधफल	४३४
चतुर्थगत चन्द्रफल	४२८	लाभगत बुधफल	४३४
पञ्चमगत चन्द्रफल	४२८	व्ययगत बुधफल	४३४
षष्ठगत चन्द्रफल	४२८	लग्नगत गुरुफल	४३५
सप्तमगत चन्द्रफल	४२९	धनगत गुरुफल	४३५
अष्टमगत चन्द्रफल	४२९	सहजगत गुरुफल	४३५
नवमगत चन्द्रफल	४२९	सुखगत गुरुफल	४३५
दशमगत चन्द्रफल	४२९	सुतगत गुरुफल	४३५
लाभगत चन्द्रफल	४२९	रिपुगत गुरुफल	४३६
व्ययगत चन्द्रफल	४३०	जायागत गुरुफल	४३६
लग्नगत भौमफल	४३०	अष्टमगत गुरुफल	४३६
धनगत भौमफल	४३०	नवमगत गुरुफल	४३६
सहजगत भौमफल	४३०	दशमगत गुरुफल	४३६
चतुर्थगत भौमफल	४३०	लाभगत गुरुफल	४३७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
व्ययगत गुरुफल	४३७	सप्तमगत राहुफल	४४३
लग्नगत शुक्रफल	४३७	अष्टमगत राहुफल	४४३
धनगत शुक्रफल	४३७	नवमगत राहुफल	४४३
सहजगत शुक्रफल	४३७	दशमगत राहुफल	४४४
सुखगत शुक्रफल	४३८	लाभगत राहुफल	४४४
सुतगत शुक्रफल	४३८	व्ययगत राहुफल	४४४
षष्ठगत शुक्रफल	४३८	लग्नगत मुंथाफल	४४४
जायागत शुक्रफल	४३८	धनगत मुंथाफल	४४४
अष्टमगत शुक्रफल	४३८	सहजगत मुंथाफल	४४५
नवमगत शुक्रफल	४३९	सुखगत मुंथाफल	४४५
दशमगत शुक्रफल	४३९	सुतगत मुंथाफल	४४५
लाभगत शुक्रफल	४३९	षष्ठगत मुंथाफल	४४५
व्ययगत शुक्रफल	४३९	जायागत मुंथाफल	४४५
लग्नगत शनिफल	४३९	अष्टमगत मुंथाफल	४४६
धनगत शनिफल	४४०	नवमगत मुंथाफल	४४६
सहजगत शनिफल	४४०	दशमगत मुंथाफल	४४६
सुखगत शनिफल	४४०	लाभगत मुंथाफल	४४६
सुतगत शनिफल	४४०	व्ययगत मुंथाफल	४४६
षष्ठगत शनिफल	४४०	वर्षेशादिनिर्णय	४४७
सप्तमगत शनिफल	४४१	राजादिग्रहबलों का निर्णय	४४७
अष्टमगत शनिफल	४४१	बलीवर्षेशरविफल	४४७
नवमगत शनिफल	४४१	मध्यबलीवर्षेशसूर्यफल	४४८
दशमगत शनिफल	४४१	नष्टदग्धबलीवर्षेशसूर्यफल	४४८
लाभगत शनिफल	४४१	बलीवर्षेशचन्द्रफल	४४८
व्ययगत शनिफल	४४२	मध्यबलीवर्षेशचन्द्रफल	४४८
लग्नगत राहुफल	४४२	नष्टदग्धबलीवर्षेशचन्द्रफल	४४८
धनगत राहुफल	४४२	बलीवर्षेशभौमफल	४४९
सहजगत राहुफल	४४२	मध्यबलीवर्षेशभौमफल	४४९
सुखगत राहुफल	४४२	नष्टदग्धबलीवर्षेशभौमफल	४४९
सुतगत राहुफल	४४३	बलीवर्षेशबुधफल	४४९
षष्ठगत राहुफल	४४३	मध्यबलीवर्षेशबुधफल	४४९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
नष्टदग्धबलीवर्षेशबुधफल	४५०
बलीवर्षेशगुरुफल	४५०
मध्यबलीवर्षेशगुरुफल	४५०
नष्टदग्धबलीवर्षेशगुरुफल	४५०
बलीवर्षेशशुक्रफल	४५०
मध्यबलीवर्षेशशुक्रफल	४५१
नष्टदग्धबलीवर्षेशशुक्रफल	४५१
बलीवर्षेशशनिफल	४५१
मध्यबलीवर्षेशशनिफल	४५१
नष्टदग्धबलीवर्षेशशनिफल	४५१
लग्नकी शुभदशाका फल	४५२
लग्न की मध्यदशाका फल	४५२
लग्न की कष्टदशाका फल	४५२
क्रूरलग्नकी मध्यदशाका फल	४५२
पूर्णबलीसूर्यदशाका फल	४५२
मध्यबलीसूर्यदशाका फल	४५३
नष्टबलीरविदशाकाफल	४५३
दग्धबलीरविदशाकाफल	४५३
स्थानवंशसे रविदशाके विशेषफलका निर्णय	४५३
पूर्णबलीचन्द्रदशाका फल	४५३
मध्यबलीचन्द्रदशाका फल	४५४
नष्टबलीचन्द्रदशाका फल	४५४
दग्धबलीचन्द्रदशाका फल	४५४
स्थानवशसे चन्द्रदशाविशेष फल	४५४
पूर्णबलीभौमदशाका फल	४५४
मध्यबलीभौमदशाका फल	४५५
नष्टबलीभौमदशाका फल	४५५
दग्धबलीभौमदशाका फल	४५५
स्थानवशसेभौदशाके विशेष फल	४५५
पूर्णबलीबुधदशाका फल	४५५
मध्यबलीबुधदशाका फल	४५६
नष्टबलीबुधदशाका फल	४५६
दग्धबलीबुधदशाका फल	४५६
स्थानवशबुधदशाका विशेषफल	४५६
पूर्णबलीगुरुदशाका फल	४५६
मध्यबलीगुरुदशाका फल	४४७
नष्टबलीगुरुदशाका फल	४५७
दग्धबलीगुरुदशाका फल	४५७
स्थानवशगुरुदशाका विशेषफल	४५७
पूर्णबलीदशाशुक्रका फल	४५८
मध्यबलीशुक्रदशाका फल	४५८
नष्टबलीशुक्रदशाका फल	४५८
दग्धबलीशुक्रदशाफल	४५८
स्थानवशसेशुक्रदशा विशेषफल	४५८
पूर्णबलीशनिदशाका फल	४५८
मध्यबलीशनिदशाका फल	४५८
नष्टबलीशनिदशाका फल	४५९
दग्धबलीशनिदशाका फल	४५९
स्थानवशशनिदशाका विशेषफल	४५९
सूर्यमुद्दादशाका फल	४५९
चंद्रमुद्दादशाका फल	४६०
भौममुद्दादशाका फल	४६०
राहुमुद्दादशाका फल	४६०
गुरुमुद्दादशाका फल	४६०
शनिमुद्दादशाका फल	४६०
बुधमुद्दादशाका फल	४६१
केतुमुद्दादशाका फल	४६१
शुक्रमुद्दादशाका फल	४६१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(१९)

निषेकप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
ऋतुहेतुपरिज्ञान	४६२
ऋतुकालपरिज्ञान	४६२
पुत्रप्राप्तिकाल	४६३
मतान्तरसे सन्तानप्राप्तिका समय	४६५
गर्भाधानके मास तथा दिन	४६५
गर्भमें शीर्षादिअवयवोंका परिज्ञान	४६७
गर्भमासेश	४६७
मातृपितृग्रह	४६७
गर्भसौख्यके योग	४६८
गर्भग्रहण के अयोग्य स्त्री	४६८
गर्भाभावादिके योग	४६८
गर्भपतनके योग	४७०
गर्भपातसंख्यापरिज्ञान	४७१
आधानलग्नसे मातापिताके कष्ट और मृत्युके योग	४७१
गर्भवतीस्त्रीके मृत्युके योग	४७२
निषेककालीनलग्नसे पुत्र तथा कन्याजन्म योग	४७३
प्रश्नलग्नसे पुत्रपुत्रीपरिज्ञान	४७६
गर्भवतीस्त्रीके प्रसवअप्रसवका परिज्ञान	४७७
एवं मासपरिज्ञान	४७७
जन्मसमयपरिज्ञान	४७८
जन्मराशिपरिज्ञान	४७८
जन्मनक्षत्र तथा इष्टघट्यादिकी साधनरीति	४७८
प्रश्नेन्दोराधानेन्दोर्वाजनुर्भतत्स्पष्ट भुक्तघट्यादिस्पष्टीकरणसारणीयम्	४८१
अत्रोपकरणं चन्द्रस्पष्टः	४८२
गतद्वादशांशहीनावशिष्टचन्द्रकलाफल-सारणी	४८३
जन्मनक्षत्रादिस्पष्टीकरणसारणीप्रवेशः	४८४
निषेकप्रसवान्तरालवर्तीदिनगणपरिज्ञान	४८५
तीनवर्षमें अथवा बारहवेंवर्षमें प्रसवकेयोग	४८६

(२०)

लग्नेष्टशुद्धिप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
आधानलग्न के द्वारा जन्मलग्न	४८७
अर्द्धयामेश तथा दण्डेश साधनरीति	४८८
अर्द्धयामेशपरिज्ञान	४८९
दिनमानाधोऽर्धयाममानमिदम्	४९०
दिनमानाधोदण्डमानमिदम्	४९०
दिने रात्रौ वाऽर्धयाममिति	४९०
दिवार्द्धयामेशाः	४९१
नक्तमर्द्धयामेशाः	४९१
दिन में दण्डेशपरिज्ञान	४९१
दिनदण्डाधिपतयः	४९२
दिने प्रथमयामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
दिने द्वितीययामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
दिने तृतीययामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
दिने चतुर्थयामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
दिने पंचमयामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
दिने षष्ठयामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
दिने सप्तमयामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
दिनेऽष्टमयामार्द्धे दण्डेशाः	४९२
रात्रि में दण्डेशपरिज्ञान	४९२
रात्रिदण्डाधिपतयः	४९३
रात्रौ प्रथमयामार्द्धे दण्डेशाः	४९३
रात्रौ द्वितीययामार्द्धेदण्डेशाः	४९३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
रात्रौतृतीययामार्द्धेदण्डेशाः	४९३
रात्रौचतुर्थयामार्द्धेदण्डेशाः	४९३
रात्रौपंचमयामार्द्धेदण्डेशाः	४९३
रात्रौषष्ठयामार्द्धेदण्डेशाः	४९३
रात्रौसप्तमयामार्द्धेदण्डेशाः	४९३
रात्रावष्टमयामार्द्धेदण्डेशाः	४९३
मतान्तर से दण्डेशपरिज्ञान	४९४
पुनः प्रकारान्तर से दण्डेशपरिज्ञान	४९४
मतान्तर से लग्नशुद्धिपरिज्ञान	४९५
दिन में पुरुषजन्मपरिज्ञान	४९६
पुरुष तथा स्त्रीजन्मपत्रीपरिज्ञान	४९७
जन्मलग्न व जन्मचन्द्रमा से इष्ट शोधन	४९७
प्रकारान्तर से आधानलग्न और जन्म चन्द्रद्वारा इष्टशोधनरीति	५०१
आधानकाल और जन्मकाल के अन्तरालवर्ती दिनगणसाधनरीति	५०२
प्रकारान्तर से दिनगणानयन	५०२
पुनः प्रकारान्तर से दिनगणसाधन	५०२
आधानजन्मान्तरालवर्ति दिनगणसारणी	५०३
दिनगणसारणी प्रवेशरीति	५०५
तिथिगणसाधनरीति	५०५
आधानजन्मान्तरालवर्ति तिथिगणसारणी	५०५
तिथिगणसारणीप्रवेशरीति	५०७
पादच्छाया तथा अङ्गुलशङ्कुद्वारा इष्टकालसाधनरीति	५०७
द्वादशाङ्गुलशङ्कुद्वाराइष्टशोधनरीति	५०८
सप्ताङ्गुलशङ्कु के द्वारा गढ़देश में इष्टकालसाधनरीति	५०९
गढ़देशे सप्ताङ्गुलशङ्कुध्रुवाङ्काः	५१०
रात्रि में इष्टज्ञानार्थ नक्षत्रतारा	५१०
अश्विन्यादीनां ताराचक्रम्	५१०
नक्षत्रों की आकृति	५१०
नक्षत्रों का आकारबोधकचक्रम्	५११
नक्षत्रोंदयकाल में मेषादिराशियोंकी राश्यादिसंख्या	५११
अश्विन्यादीनां निरयनराश्यादि ध्रुवा	५१२
नक्षत्रध्रुव से रात्रिगतकालसाधन	५१२
श्रवणादि नक्षत्रों के आकाश के मध्यभाग में स्थित होनेपर मेषादियों के ध्रुवांक-परिज्ञान	५१२
आकाशमध्य (शिरोदेश) गतश्रवणादिषु मेषादिराशीनां राश्यादिध्रुवा	५१३
सूर्याक्रान्तनक्षत्र तथा आकाश के मध्य-भागमें स्थितनक्षत्र से रात्रिगतपरिज्ञान	५१३
शिरोगतनक्षत्रद्वारा उदयनक्षत्रज्ञान	५१४
शिरोदेशगतादि नक्षत्रोंसे स्पष्ट रात्रिगत घट्यादिपरिज्ञान	५१४
समय की परिभाषा	५१५
होरादि की परिभाषा	५१५
घट्यादि समय को होरादि बनानेकी रीति	५१५
चरान्तर साधन	५१६
रेखांश-परिज्ञान	५१६
रेखांशों से समयपरिज्ञान	५१७
पूर्व और पश्चिम का परिज्ञान	५१७
सूर्योदयपरिज्ञान	५१७
सूर्योदयास्तकालसाधन	५१७
प्रकारान्तर से सूर्य के उदय तथा अस्तकालसाधनरीति	५१८
ग्रीनविच् देशान्तरानयनरीति	५१८
स्टैण्डर्डरेखा देशान्तरसाधन	५१८
विभिन्नस्थानों के देशान्तर साधन	५१९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
देशान्तर के धन तथा ऋण का एवं समय का परिज्ञान	५१९
रेलवे का स्पष्टसमयसाधन	५१९
रेलवे समय से स्थानीय समयसाधनरीति	५२०
भारत के विभिन्न स्थानों के समय का परिज्ञान	५२१
गढ़वाल देशीयमध्याह्नकालतो भारतीय कतिपयस्थान समयबोधकसारणीयम्	५२२
गढ़वालदेशीय मध्याह्नकालतो भारतेतर कतिपयनगराणां समयबोधकसारणी	५२२
पाश्चात्यदेशीयघटिकायंत्र (रिष्टवॉच) द्वारा इष्टकालसाधन	५२४

(२१)

सूतिकाप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पिता के परोक्ष में बालकजन्मयोग	५२५
पिता के रोगग्रस्तयोग	५२६
पिता के मरण तथा कष्ट के योग	५२६
मातृकष्टयोग एवं सुख तथा कष्ट से प्रसवयोग	५२६
सीमन्तकर्मादिरहितबालकजन्मयोग	५२७
शीर्षादि अवयव से बालजन्मयोग	५२७
बालक की शिरपतनदिशा	५२७
मार्गादि में बालजन्मयोग	५२७
नाव में प्रसव के योग	५२७
जल में प्रसवयोग	५२८
कारागार व खड्ड में जन्मयोग	५२८
क्रीडागृहादि में प्रसवयोग	५२८
प्रसवगृहपरिज्ञान	५२९
प्रसवगृहद्वारपरिज्ञान	५२९
बालरोदनपरिज्ञान	५२८
नालवेष्टित बालकजन्म के योगपरिज्ञान	५३०
भूम्यादि में बालजन्म के योग तथा प्रसूतिशयन	५३१
रात्रिजन्म में दीपकके स्थान का परिज्ञान	५३१
दीपक में तेलज्ञान	५३२
प्रसूतिका के शयनगृह का परिज्ञान	५३२
सूतिकागृहस्थितवस्त्रभाण्डज्ञान	५३२
प्रसव से पूर्व मातृभोजनपरिज्ञान	५३३
उपसूतिका संख्यापरिज्ञान	५३३

(२२)

कारकप्रकरणे

भावकारकपरिज्ञान	५३७
सूर्यादिग्रहों के कारकत्व	५३७
नित्यकारकग्रह	५३८
चरकारक तथा कारकांशकुंडली-साधनरीति	५३८
सामान्यकारकग्रह	५३८
कारकग्रहों के भाग्योदयकारकवर्ष	५४०

(२३)

तनुभावचिन्तनप्रकरणे

तनुभावजन्य पदार्थ	५४१
देह तथा वर्णज्ञान	५४१
शरीरपुष्टियोग	५४१
शरीरदुर्बलयोग	५४२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
देहवैकल्य के योग	५४३	व्यसनरहितयोग	५५४
अङ्गविहीनयोग	५४३	प्रकृतिपरिज्ञान	५५४
अङ्गच्छेदयोग	५४३	वयोमान तथा जातिपरिज्ञान	५५४
देहदुर्गन्धयोग	५४४	पितामही व मातामह के सौख्यासौख्य	
मस्तकच्छेदयोग	५४४	योग	५५४
शिर के दीर्घादियोग	५४५	शुभजन्मयोग	५५५
शिरोरोगयोग	५४५	पिशाचजन्म तथा बहुस्वेदयोग	५५५
खल्वाट्योग	५४५	शुभयोग	५५५
शरीर में व्रण तथा लाञ्छनादि का		अनिष्टयोग	५५७
परिज्ञान	५४५	लग्नादि भावेशों के अन्योन्य राशिगत	
द्रेष्काणचक्रम्	५४६	फल	५५७
शरीर में चिन्ह के योग	५४७	द्वादशयोग	५५७
शरीरसौख्याभावयोग	५४७	लग्नगत रविफल	५५९
शरीरसौख्य के योग	५४८	लग्नगत चन्द्रफल	५५९
देहभानपरिज्ञान	५४८	लग्नगत भौमफल	५६०
दीर्घदेहयोग	५४८	लग्नगत बुधफल	५६०
वामनयोग	५४८	लग्नगत गुरुफल	५६१
कुब्जयोग	५४८	लग्नगत शुक्रफल	५६२
वासस्थानपरिज्ञान	५५०	लग्नगत शनिफल	५६२
आकृति तथा गुणपरिज्ञान	५५१	लग्नगत राहुफल	५६३
शीलयोग	५५१	लग्नगत केतुफल	५६३
क्रोधीयोग	५५१	लग्नगत रव्यादिग्रहों का संक्षिप्तफल	५६३
क्षमावानयोग	५५१	रविदृष्ट लग्नफल	५६३
लज्जायुक्तयोग	५५१	चन्द्रदृष्ट लग्नफल	५६४
विलज्जयोग	५५२	भौमदृष्ट लग्नफल	५६४
द्रोहीयोग	५५२	बुधदृष्ट लग्नफल	५६४
शिल्पी तथा दुर्जनयोग	५५२	गुरुदृष्ट लग्नफल	५६५
अलसयोग	५५३	शुक्रदृष्ट लग्नफल	५६५
कलहप्रिययोग	५५३	शनिदृष्ट लग्नफल	५६५
व्यसनीयोग	५५३	लग्नगत लग्नेशफल	५६५
अफीम व रसायनव्यसनीयोग	५५४	धनगत लग्नेशफल	५६६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सहजगत लग्नेशफल	५६६
सुतगत लग्नेशफल	५६७
सुखगत लग्नेशफल	५६७
षष्ठगत लग्नेशफल	५६७
सप्तमगत लग्नेशफल	५६८
अष्टमगत लग्नेशफल	५६८
नवमगत लग्नेशफल	५६८
दशमगत लग्नेशफल	५६९
एकादशगत लग्नेशफल	५६९
द्वादशगत लग्नेशफल	५६९
लग्नगत मेषराशिफल	५७०
लग्नगत वृषराशिफल	५७०
लग्नगत मिथुनराशिफल	५७०
लग्नगत कर्कराशिफल	५७०
लग्नगत सिंहराशिफल	५७०
लग्नगत कन्याराशिफल	५७१
लग्नगत तुलाराशिफल	५७१
लग्नगत वृश्चिकराशिफल	५७१
लग्नगत धनूराशिफल	५७१
लग्नगत मकरराशिफल	५७२
लग्नगत कुंभराशिफल	५७२
लग्नगत मीनराशिफल	५७२

(२४)

धनभाव-चिन्तनप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
धनभावजन्य पदार्थों का ज्ञान	५७३
धनगत रव्यादि ग्रहों से धनसंख्या-परिज्ञान	५७३
धनविचार में बलाबलत्वज्ञान	५७३
महाधनीयोग	५७४
बहुधनयोग	५७५
बाल्यकाल में बहुधनयोग	५७६
धनवानयोग	५७६
धनसंग्रहकर्त्तायोग	५७७
स्वल्पधनीयोग	५७८
नाम से धनीयोग	५७८
सद्योधनीयोग	५७८
आमरणान्तधनीयोग	५७८
प्रकारान्तरसे धनीयोग	५७८
धनभाग तथा दरिद्रभागज्ञान	५७९
सहस्रनिष्कधनीयोग	५७९
द्विसहस्रादि निष्कधनीयोग	५८०
लक्षाधीशयोग	५८०
दो व तीन लक्षधनस्वामी का योग	५८०
कोटिधनके योग	५८०
सम्पत्तिमानयोग	५८१
धनलाभ के कारणों का परिज्ञान	५८१
धनलाभ के योग	५८२
विनापरिश्रमधनलाभ	५८२
अपने बाहुबल से धनलाभके योग	५८३
भाई से धनप्राप्तियोग	५८३
माता से धनप्राप्ति के योग	५८४
बान्धवजन व कृषि से धनप्राप्तियोग	५८४
पुत्र से धनप्राप्ति के योग	५८४
शत्रु से धनप्राप्ति का योग	५८४
स्त्री से धनप्राप्ति के योग	५८५
धनवती स्त्रीप्राप्ति का योग	५८५
गुरुप्रभृति से धन के योग	५८५
पिता से धनलाभ के योग	५८५
तीन पुरुषके धनलाभ का योग	५८६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषया :	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
निधिप्राप्तिके योग	५८६	लोकापवाद से धनहानि के योग	६०१
निक्षेप धनलाभ के योग	५८६	भ्रातादियों के सम्बन्ध से धननाशयोग	६०१
धनलाभदिशापरिज्ञान	५८६	धननाशदशापरिज्ञान	६०१
धनलाभप्रददशा परिज्ञान	५८६	कुटुम्बीयोग	६०२
रेकायोगपरिज्ञान	५८७	बीस, पचास, तीनसों तथा सहस्र	
रेकायोगजन्यफल	५८८	जनपालकयोग	६०२
प्रेष्ययोग	५८८	परिवारक्षयके योग	६०३
प्रेष्ययोगजन्यफल	५८९	नेत्रविचार तथा उत्तम नेत्रयोग	६०३
भिक्षुकयोग	५८९	बुदबुदनेत्रयोग	६०४
प्रकारान्तर से भिक्षुकयोग	५९०	अल्पमध्यदृष्टियोग	६०४
दरिद्रयोग	५९१	नेत्रदोषविचार तथा विकलाक्षयोग	६०४
भिक्षुक व दरिद्रयोग	५९२	सूर्य तथा चन्द्रमा के अंधांश	६०४
प्रकारान्तर से दरिद्रयोग	५९२	क्षीण चन्द्रमा के अन्धांश	६०५
पुनः प्रकारान्तर से दरिद्रयोग	५९४	ताजिकमत से निर्बलदृष्टियोग	६०६
महादरिद्रयोग	५९४	वक्र तथा निमीलित नेत्रयोग	६०६
केमद्रुमयोग	५९५	चिपोटनेत्रयोग	६०६
केमद्रुमयोगभङ्गपरिज्ञान	५९५	नेत्र में चिह्न के योग	६०६
लक्षणसहितहृद्योग	५९५	नेत्रप्रमाद तथा नेत्रान्तरक्तयोग	६०७
लक्षणसहित फणियोग	५९६	नेत्ररोगयोग	६०७
लक्षणसहितकाकयोग	५९६	निशान्धयोग	६०८
मतान्तर से लक्षणसहितदरिद्रयोग	५९६	काणनेत्रयोग	६०८
लक्षणसहितहुताशनयोग	५९६	दम्पत्ति के काणयोग	६१०
निर्धनयोग	५९६	अन्धयोग	६१०
धन व सम्पत्तिहीनयोग	५९८	हेतुसहित अन्धयोग	६१२
धननाश के योग	५९९	जन्मान्धयोग	६१३
राजदण्ड से धनहानि योग	६००	पुत्रादियों का अन्धयोग	६१३
ज्ञातिविवादसे धनहानियोग	६००	नेत्रनाश के योग	६१३
परस्त्री की आसक्ति में तथा कुमार्ग में		वामनेत्र नाशयोग	६१४
धनहानि के योग	६००	राजा के द्वारा नेत्रोत्पाटनयोग	६१४
राजा, अग्नि तथा चोर से धनहानि		वाणी के शुभाशुभयोग	६१५
के योग	६०१	कफवाक् तथा उच्चारयोग	६१५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अस्फुटोक्तिप्रभृतियोग	६१५	रविदृष्ट धनभावफल	६२७
मूकस्वर के योग	६१६	चन्द्रदृष्ट धनभावफल	६२७
मूकयोग	६१६	भौमदृष्ट धनभावफल	६२७
वाग्मीयोग	६१६	बुधदृष्ट धनभावफल	६२८
मुखरयोग	६१७	गुरुदृष्ट धनभावफल	६२८
जिह्वावातके योग	६१७	शुक्रदृष्ट धनभावफल	६२८
जिह्वारोगयोग	६१८	शनिदृष्ट धनभावफल	६२९
प्रहसितमुखयोग	६१८	राहुदृष्ट धनभावफल	६२९
दुर्मुखयोग	६१८	लग्नगत धनेशफल	६२९
दीर्घमुखयोग	६१८	धनगत धनेशफल	६२९
मुखरोग	६१९	सहजगत धनेशफल	६२९
दन्तरोग	६१९	सुखगत धनेशफल	६३०
तालुरोग	६२०	सुतगत धनेशफल	६३०
नासाच्छेद	६२०	षष्ठगत धनेशफल	६३१
पीनसरोग	६२०	सप्तमगत धनेशफल	६३१
भुक्तिसौख्य	६२०	अष्टमगत धनेशफल	६३१
बहुतभोजन के योग	६२१	नवमगतधनेशफल	६३२
अल्पभोजी	६२१	दशमगत धनेशफल	६३२
भोजन के पात्र	६२२	लाभगत धनेशफल	६३२
लोह तथा धातुद्वयपात्रयोग	६२३	व्ययगत धनेशफल	६३२
सुन्दरपात्र में भोजनयोग	६२४	धनगत मेषराशिफल	६३३
धनभावगत रविफल	६२४	धनगत वृषराशिफल	६३३
धनभावगत चन्द्रफल	६२४	धनगत मिथुनराशिफल	६३३
धनगत भौमफल	६२५	धनगत कर्कराशिफल	६३४
धनगत बुधफल	६२५	धनगत सिंहराशिफल	६३४
धनगत गुरुफल	६२५	धनगत कन्याराशिफल	६३४
धनगत शुक्रफल	६२५	धनगत तुलाराशिफल	६३४
धनगत शनिफल	६२६	धनगत वृश्चिकराशिफल	६३४
धनगत राहुफल	६२६	धनगत धनूराशिफल	६३५
धनगत केतुफल	६२७	धनगत मकरराशिफल	६३५
धनगत रव्यादिग्रहोंका संक्षिप्तफल	६२७	धनगत कुंभराशिफल	६३५
		धनगत मीनराशिफल	६३५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(२५)

सहजभावचिन्तनप्रकरणे

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सहजभावजन्य पदार्थों का ज्ञान	६३६
भ्रातृसौख्ययोग	६३६
ज्येष्ठभ्रातृसौख्ययोग	६३६
भ्रातृदीर्घायुयोग	६३७
भ्राताओं के अल्प सौख्ययोग	६३७
सहजसुखाभावयोग	६३७
भ्रातृप्राप्तिसमयपरिज्ञान	६३८
भगिनीलाभयोग	६३९
सौतेलेभाइओं का योग	६३९
भ्रातृभगिनीसंख्यापरिज्ञान	६३९
भ्राताकी उत्पत्ति के समयका परिज्ञान	६४२
भ्राताओं की वृद्धि के अभावके योग	६४२
सहजाभावयोग	६४३
यशस्वी भ्राता का योग	६४३
रोगी भ्राता का योग	६४३
भ्रातृस्नेहास्नेहपरिज्ञान	६४३
भ्रातृहानिके योग	६४४
भ्रातृमरणकालपरिज्ञान	६४७
साहसीयोग	६४८
कर्णसौख्ययोग	६४८
कर्णभूषण योग	६४९
वस्त्र व भूषणप्राप्तियोग	६४९
उत्तम स्वर व गायनसौख्य योग	६४९
उत्तम कथाश्रवणादियोग	६४९
कर्णरोगयोग	६५०
कर्णपीडा व कर्णच्छेदयोग	६५०
बधिरयोग	६५१
हस्तनाशादियोग	६५१
हस्तच्छेदयोग	६५१
विक्रमीयोग	६५२
शूरयोग	६५२
धीरयोग	६५२
धैर्य्यनाशयोग	६५३
कातरयोग	६५३
भृत्तकयोग	६५३
राजप्रेष्य योग	६५३
दासयुक्तयोग	६५४
बहुदासयुक्तयोग	६५४
दास स्त्री के सहयोग का योग	६५४
सहजगत रविफल	६५४
सहजगत चन्द्रफल	६५४
सहजगत भौमफल	६५५
सहजगत बुधफल	६५५
सहजगत गुरुफल	६५५
सहजगत शुक्रफल	६५६
सहजगत शनिफल	६५६
सहजगत राहुफल	६५६
सहजगत केतुफल	६५७
सहजगत रव्यादियों का संक्षिप्त फल	६५७
रविदृष्ट सहजफल	६५७
चन्द्रदृष्ट सहजफल	६५७
भौमदृष्ट सहजफल	६५८
बुधदृष्ट सहजफल	६५८
गुरुदृष्ट सहजफल	६५८
शुक्रदृष्ट सहजशेफल	६५८
शनिदृष्ट सहजफल	६५९
लग्नगत सहजेशफल	६५९
धनगत सहजेशफल	६५९
सहजगत सहजेशफल	६६०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सुखगत सहजेशफल	६६०
सुतगत सहजेशफल	६६१
रिपुगत सहजेशफल	६६१
सप्तमगत सहजेशफल	६६१
अष्टमगत सहजेशफल	६६२
भाग्यगत सहजेशफल	६६२
दशमगत सहजेशफल	६६२
लाभगत सहजेशफल	६६३
व्ययगत सहजेशफल	६६३
सहजगत मेषराशिफल	६६३
सहजगत वृषराशिफल	६६४
सहजगत मिथुनराशिफल	६६४
सहजगत कर्कराशिफल	६६४
सहजगत सिंहराशिफल	६६४
सहजगत कन्याराशिफल	६६४
सहजगत तुलाराशिफल	६६५
सहजगत वृश्चिकराशिफल	६६५
सहजगत धनुराशिफल	६६५
सहजगत मकरराशिफल	६६५
सहजगत कुंभराशिफल	६६५
सहजगत मीनराशिफल	६६६

अथ
सुखभावचिन्तनप्रकरणं प्रारभ्यते

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सुखभावजन्यपदार्थोंका परिज्ञान	६६७
सुखभावमें विशेषविचार	६६७
सौख्यके योग	६६७
बाल्यकालमें सुखीयोग	६७०
१६।२०।३० वर्षोंके परे सुखके योग	६७०
प्रथमावस्था तथा यौवनमें सुखीयोग	६७०
मध्यावस्थामें सुखके योग	६७१
प्रथम तथा मध्यावस्थामें सौख्ययोग	६७१
मध्य, अंतिम तथा आमरणान्त सौख्य के योग	६७१
शैशवादि अवस्थामें सौख्यके योग	६७१
तीनों अवस्थाओंमें सौख्यके योग	६७२
सौख्याभावयोग	६७२
दुःखके योग	६७२
मातृदीर्घायुयोग	६७३
मातृसौख्यासौख्ययोग	६७४
मातृदुग्धशोषयोग	६७५
दो व तीन मातायोग	६७५
मातृस्नेहयोग	६७५
मातृवैरयोग	६७५
पतिव्रतामातृयोग	६७६
जारिणीमातृयोग	६७६
माता के साथ सहवास योग	६७६
माता को भय तथा रोगयोग	६७७
मातामृत्युयोग	६७८
अकस्मात गृहलाभयोग	६८२
गृहलाभ के योग	६८२
विचित्रहर्म्य (गृह) योग	६८३
दत्तक के गृहलाभ के योग	६८४
गृहनाश के योग	६८४
बहुगृह तथा स्थिरगृहवासयोग	६८५
वाहनचिन्तापरिज्ञान	६८५
वाहनसौख्ययोग	६८६
मनुष्यवाहन के योग	६८६
गजवाहन के योग	६८७
अश्ववाहन के योग	६८७
वाहनयुक्तयोग	६८७
दुर्वाहनयोग	६८९
वाहनप्राप्तिसमयपरिज्ञान	६९०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
वाहननाशयोग	६९०	रविदृष्ट सुखभावफल	७०१
वाद्यादिघोषयुक्त पुरुषजन्मयोग	६९०	चन्द्रदृष्ट सुखभावफल	७०२
बन्धुपूज्य के योग	६९१	भौमदृष्ट सुखभावफल	७०२
बंधुजनों का उपकारकर्त्तायोग	६९१	बुधदृष्ट सुखभावफल	७०२
बंधुत्याज्यादियोग	६९२	गुरुदृष्ट सुखभावफल	७०२
बहुक्षेत्रयुक्तयोग	६९२	शुक्रदृष्ट सुखभावफल	७०२
क्षेत्रप्राप्ति के योग	६९३	शनिदृष्ट सुखभावफल	७०३
माता तथा स्त्री से क्षेत्रप्राप्तियोग	६९३	राहुदृष्ट सुखभावफल	७०३
शत्रु से क्षेत्रप्राप्ति योग	६९३	लग्नगत सुखेशफल	७०३
क्षेत्रनाश के योग	६९३	धनगत सुखेशफल	७०४
राजाज्ञा से क्षेत्रनाश योग	६९४	सहजगत सुखेशफल	७०४
विशुद्ध हृदययोग	६९५	सुखगत सुखेशफल	७०५
निष्कपटीयोग	६९५	सुतगत सुखेशफल	७०५
मिश्रित हृदययोग	६९५	रिपुगत सुखेशफल	७०५
कपटीयोग	६९६	जायागत सुखेशफल	७०६
हृत्कपटी योग	६९६	अष्टमगत सुखेशफल	७०६
कठिन विरुद्ध चित्तयोग	६९६	नवमगत सुखेशफल	७०७
हृदयरोगयोग	६९६	दशमगत सुखेशफल	७०७
कृष्ण पित्तविकारसे व्रणयोग	६९७	लाभगत सुखेशफल	७०७
हृदयशूलयोग	६९७	व्ययगत सुखेशफल	७०८
बहुजन मैत्री तथा मित्रपोष्ययोग	६९७	सुखगत मेषराशिफल	७०८
सुखभावगत रविफल	६९८	सुखगत वृषराशिफल	७०८
सुखगत चन्द्रफल	६९८	सुखगत मिथुनराशिफल	७०८
सुखगत भौमफल	६९८	सुखगत कर्कराशिफल	७०९
सुखगत बुधफल	६९९	सुखगत सिंहराशिफल	७०९
सुखगत गुरुफल	६९९	सुखगत कन्याराशिफल	७०९
सुखगत शुक्रफल	७००	सुखगत तुलाराशिफल	७०९
सुखगत शनिफल	७००	सुखगत वृश्चिकराशिफल	७०९
सुखगत राहुफल	७००	सुखगत धनूराशिफल	७१०
सुखगत केतुफल	७००	सुखगत मकरराशिफल	७१०
सुखगत रव्यादियों का संक्षिप्तफल	७०१	सुखगत कुंभराशिफल	७१०
		सुखगत मीनराशिफल	७१०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

॥ श्रीबालकृष्णो विजयतेतराम् ॥

श्रीमत्पण्डितवर्य्यमुकुन्दरामप्रणीतं

ज्योतिस्तत्त्वम् ।

ज्यौतिषाचार्यपण्डितचक्रधरकृतभाषाटीकोदाहरणोपेतम् ।

अथ

पञ्चाङ्गपरिचयप्रकरणं प्रारभ्यते--

गोपानां बालवृन्दैः सह विपिनलतामण्डपे क्रीडयन्यो
विश्वात्मा मोहनार्थं कमनमुपगतं मोहयित्वाऽप्यगौप्सीत् ।
नत्वा तं बालकृष्णं विबुधजनकृतेः सारमुद्धृत्य सर्वं
ज्योतिस्तत्त्वं मुकुन्दो रचयति सरलं बालकानां हिताय ॥१॥

नत्वा गोपकुमारकेलिनिपुणं श्रीबालकृष्णं प्रभुं
ज्योतिस्तत्त्वमिदं सुबोधममरव्याहारविद्यावताम् ॥
ज्ञानायान्यजनस्य तत्सरलया हिन्दीति वाण्या गुरु-
प्रीत्यै चक्रधरो द्विजो विवृणुते लाक्ष्मीधरिर्ज्यौतिषः ॥

गोप बालक गणों के साथ वनलतामण्डपमें क्रीडा करते हुए और जिन्होंने मोहनके लिए उपस्थित हुए श्रीब्रह्माजीको मोहकर भी उनकी रक्षा की, उन विश्वात्मा श्रीबालकृष्णचन्द्रजीको प्रणाम करके बालकजनोंके हितके लिए प्राचीन महर्षियों की कृतिके सब सारको लेकर पण्डित मुकुन्दराम दैवज्ञजी 'ज्योतिस्तत्त्व' नामक ग्रन्थकी रचना करते हैं ।

प्रभवादि सँव्वत्सरों के नाम--

सँव्वत्सरान्प्रवक्ष्यामि प्रभवो विभवस्तथा ।
शुक्लश्चाथ प्रमोदश्च प्रजापतिस्तथाङ्गिराः ॥ २ ॥
श्रीमुखश्चाथ भावाख्यो युवा धातेश्वरस्तथा ।
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमः परतो वृषः ॥ ३ ॥
चित्रभान्वभिधश्चाथ सुभानुस्तारणस्तथा ।
पार्थिवाख्योऽव्ययः सर्वजिदाख्यः सर्वधारिकः ॥ ४ ॥
विरोधी विकृतिश्चैव परतः खरनन्दनो ।
विजयश्च जयश्चैव मन्मथो दुर्मुखाख्यकः ॥ ५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपरो हेमलम्बी च विलम्बाख्यविकारिणौ ।
शार्व्वरी च प्लवश्चाग्रे शुभकृच्छोभनोऽपरः ॥ ६ ॥
क्रोधी विश्वावसुश्चैव पराभवः प्लवङ्गकः ।
कीलकश्चापरः सौम्यस्तथा साधारणः स्मृतः ॥ ७ ॥
ततो विरोधकृन्नामा परिधाव्यभिधस्तथा ।
प्रमादी तत आनन्दो राक्षसो नलपिङ्गलौ ॥ ८ ॥
कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रो दुर्मतिदुन्दुभी ।
रुधिरोद्गारिरक्ताक्षौ क्रोधनश्च क्षयाभिधः ॥ ९ ॥

१ प्रभव, २ विभव, ३, शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति, ६ अङ्गिरस, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युवा, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृष, १६ चित्रभानु, १७ सुभानु, १८ तारण, १९ पार्थिव, २० अव्यय, २१ सर्वजित्, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी, २४ विकृति, २५ खर, २६ नन्दन २७ विजय, २८ जय, २९ मन्मथ, ३० दुर्मुख, ३१ हेमलम्बी, ३२ विलम्ब, ३३ विकारी, ३४ शार्वरी, ३५ प्लव, ३६ शुभकृत, ३७ शोभन, ३८ क्रोधी, ३९ विश्वावसु, ४० पराभव, ४१ प्लवङ्ग, ४२ कीलक, ४३ सौम्य ४४ साधारण, ४५ विरोधकृत्, ४६ परिधावी, ४७ प्रमादी, ४८ आनन्द, ४९ राक्षस, ५० नल, ५१ पिङ्गल, ५२ कालयुक्त, ५३ सिद्धार्थी, ५४ रौद्र, ५५ दुर्मति, ५६ दुन्दुभि, ५७ रुधिरोद्गारी, ५८ रक्ताक्ष, ५९ क्रोधन, ६० क्षय ये प्रभवादि साठ संवत्सर हैं।

अयनपरिज्ञान—

मासेषु माघादिषु षट्सु चोत्तरं विज्ञा वदेयुस्त्वयनं दिवौकसाम् ।
घस्रं तथा श्रावणिकादिषट्सु च याम्यायनं तत्पितृवासरं मतम् ॥१०॥

माघप्रभृति छः मासों में 'उत्तरायण' होता है। इसको देवताओंका दिन कहते हैं। श्रावणादि छ मासों में 'दक्षिणायन' होता है। इसको पितरों का दिन कहते हैं।

ऋतु परिज्ञान तथा ऋतुओंके नाम—

शैपो वसन्तोऽथ निदाघवर्षामेघात्ययाश्च प्रशलाभिधानः
नक्रादिगार्काद्दतवः षडेते द्वाभ्यां तु माभ्यां क्रमशः प्रवेद्याः ॥११॥

शैप (शिशिर), वसन्त, निदाघ (ग्रीष्म), वर्षा, मेघात्यय (शरद्) प्रशल (हेमंत) ये छ ऋतुमें मकर संक्रान्ति से दो दो मासोंके क्रमसे जाननी चाहिएँ।

मासों के नाम—

स्युर्द्वादशैते मधुमाधवाख्यौ शुक्रः शुचिश्चाथ नभा नभस्यः ।
तथाश्विनः कार्त्तिकमार्गपौषा माघस्तपस्यः क्रमतोऽत्र मासाः ॥१२॥

मधु (चैत्र), माधव (वैशाख), शुक्र (ज्येष्ठ), शुचि (आषाढ), नभस् (श्रावण), नभस्य (भाद्रपद), आश्विन, कार्तिक, मार्ग (मार्गशीर्ष), पौष, माघ और तपस्य (फाल्गुन) ये क्रमसे बारह मास हैं।

पक्षपरिज्ञान—

पक्षावुभौ मासदलक्रमेण पूर्वापराख्यौ च बलक्षकृष्णौ ।
दैवस्य पित्र्यस्य च तौ निरुक्तौ कार्य्ये शुभे सन् धवलोऽशुभेऽन्यः ॥१३॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रत्येक मासमें पूर्वार्ध और परार्ध के क्रमसे 'शुक्ल' तथा 'कृष्ण' ये दो पक्ष होते हैं। शुक्लपक्ष देवताओंका और कृष्णपक्ष पितरोंका होता है। शुक्लपक्ष में शुभकार्य और कृष्णपक्ष में अशुभ कार्य करना शुभ होता है।

तिथियों के नाम—

तिथयः क्रमशः पञ्चदशैताः प्रतिपत्तथा।
द्वितीया च तृतीया च चतुर्थी पञ्चमी ततः॥ १४॥
षष्ठी च सप्तमी चैव ह्यष्टमी नवमी तथा।
दशम्येकादशी चाथ द्वादशी च त्रयोदशी॥ १५॥
चतुर्दशी पौर्णमासी सिते पक्षे सितेतरे।
अमावास्या शुभे कार्ये चनचामा विवर्जयेत्॥ १६॥

१ प्रतिपदा, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चतुर्थी, ५ पञ्चमी, ६ षष्ठी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी, ९ नवमी, १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयोदशी, १४ चतुर्दशी, एवं शुक्लपक्षमें पूर्णिमा और कृष्णपक्षमें १० अमावास्या ये पन्दरह तिथियाँ हैं। च (चतुर्थी), न (नवमी), च (चतुर्दशी) और अमा (अमावास्या) इन चार तिथियोंको शुभकार्य में वर्जित करे।

वारों के नाम—

आदित्यचन्द्रौ रुधिरो बुधाख्यो वाचस्पतिः शुक्रशनी च सप्त।
वारा इमे भास्करिभानुभौमाः क्रूराः शुभाः सोमसितेज्यसौम्याः॥ १७॥

१ आदित्य (रवि), २ चन्द्र (सोम), ३ रुधिर (मङ्गल), ४ बुध, ५ वाचस्पति (गुरु), ६ शुक्र, ७ शनि ये क्रमसे सात वार हैं। भास्करि (शनि) भानु (रवि) और भौम (मङ्गल) ये तीन क्रूर वार हैं। सोम (चन्द्र), सित (शुक्र), इज्य (गुरु), और सौम्य (बुध) ये चार वार शुभ हैं।

नवग्रहों के नाम—

सूर्य्यस्ततः शीतकरो महीजः सौम्याभिधो निर्जरराजपूज्यः।
काव्याह्वयो मन्दगतिर्भुजङ्गः केतुर्नवैते ग्रहनामधेयाः॥ १८॥

सूर्य, शीतकर (चन्द्र) महीज (मङ्गल), सौम्याभिध (बुध), निर्जरराजपूज्य (गुरु), काव्याह्वय (शुक्र), मन्दगति (शनि), भुजङ्ग (राहु) और केतु ये नवग्रह हैं।

राशियों के नाम—

क्रियः ककुद्मानथ कामकर्कटौ कण्ठीरवश्चाथ कुमारिका वणिक्।
कौर्पी च कोदण्डकुरङ्गकुम्भभृन्मत्स्या इमे द्वादश राशयो मताः॥१९॥

क्रिय (मेष), ककुद्मान् (वृष), काम (मिथुन), कर्कट (कर्क), कण्ठीरव (सिंह), कुमारिका (कन्या), वणिक् (तुला), कौर्पिन् (वृश्चिक), कोदण्ड (धनुस्), कुरङ्ग (मकर), कुम्भभृत् (कुम्भ), मत्स्य (मीन) ये बारह राशियाँ हैं।

नक्षत्रों के नाम—

नक्षत्राण्यश्विनी चैव भरणी कृत्तिका तथा।
रोहिणी मृगशीर्षं च तथार्द्रा च पुनर्वसुः॥ २०॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पुष्याश्लेषामघाश्चाथ पूर्वाफाल्गुनिका ततः ।
उत्तराफाल्गुनी हस्तश्चित्रा स्वाती तथापरा ॥ २१ ॥
विशाखाख्याऽनुराधा च ज्येष्ठाऽथो मूलमेव च ।
पूर्वाषाढा ततो ज्ञेयोत्तराषाढाऽभिजिच्छ्रवः ॥ २२ ॥
धनिष्ठाऽथो शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा बुधैः ।
उक्तानि चोत्तराभाद्रपदतानि च रेवती ॥ २३ ॥

१ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिर, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा, 'अभिजित्' २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा, २५ पूर्वाभाद्रपदा, २६ उत्तराभाद्रपदा, २७ रेवती ये क्रमसे सत्ताईस नक्षत्र पण्डितजनों ने कहे हैं।

विष्कम्भादि योगों के नाम--

प्रोक्ता योगास्तु विष्कम्भः प्रीतिश्चायुष्मदाख्यकः ।
सौभाग्यः शोभनश्चाथातिगण्डाभिध एव च ॥ २४ ॥
सुकर्म्मधृतिशूलाख्या गण्डो वृद्धिर्ध्रुवस्तथा ।
व्याघातो हर्षणो वज्रः सिद्धिर्वै व्यतिपातकः ॥ २५ ॥
वरीयान् परिघश्चैव शिवाख्यः सिद्धसाध्यकौ ।
शुभः शुक्लस्ततो ब्रह्मा तथैन्द्राख्यश्च वैधृतिः ॥ २६ ॥

१ विष्कम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्मत्, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मन्, ८ धृति, ९ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ वरीयस्, १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्ध: २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र, २७ वैधृति ये क्रमसे विष्कम्भादि सत्ताईस योग हैं।

करण साधन रीति---

याता तिथिर्हता द्वाभ्यां शेषिता तुरगैर्ववात् ।
करणं प्राग्दले तिथ्याःसैकं तत्त्वपरार्द्धके ॥ २७ ॥

शुक्लप्रतिपदादि गततिथि की संख्या को २ से गुणकर ७ से तष्ट करे तब जो शेष बचे उसके तुल्य बवके क्रमसे तिथि के पूर्वार्ध में 'करण' होता है। पूर्वार्द्ध के करण की संख्यामें १ युक्त करने से तिथिके परार्द्ध (उत्तरार्द्ध) में 'करण' होता है। प्रत्येक तिथिमें दो दो करण होते हैं अर्थात् 'एक' तिथि के पूर्वदलमें और 'द्वितीय' तिथि के परदलमें होता है।

उदाहरण—

वर्तमान तिथि शुक्लत्रयोदशी है, अतः गततिथि शुक्ल द्वादशी की संख्या १२ को २ से गुणा तो २४ हुए इनमें ७ से भाग दिया तो ३ शेष बचे। शेष ३ के तुल्य बवके क्रमसे त्रयोदशी के पूर्वार्द्धमें 'कौलवकरण हुआ। इसमें १ युक्त किया तो ४ के तुल्य बवसे त्रयोदशी के उत्तरार्द्धमें 'तैतिलकरण' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

करणों के नाम—

बवाख्यो बालवश्चैव कौलवस्तैतिलो गरः ।
वणिजो विष्टिरेतानि चराणि करणानि च ॥ २८ ॥
शकुनिः कृष्णपक्षस्य चतुर्दश्या दलेऽपरे ।
चतुष्पात्प्राग्दलेऽमाया नागाख्यस्तत्परार्द्धके ॥ २९ ॥
चलक्षप्रतिपत्पूर्वदले किंस्तुघ्नसञ्ज्ञितः ।
स्थिराणीमानि चत्वारि करणानि विदुर्बुधाः ॥ ३० ॥

१ बव, २ बालव, ३ कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज, ७ विष्टि, ये सात चर करण हैं। कृष्ण चतुर्दशीके उत्तरार्द्ध में 'शकुनि' अमावास्या के पूर्वार्द्ध में 'चतुष्पद' उत्तरार्द्ध में 'नागकरण' एवं शुक्लप्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में 'किंस्तुघ्नकरण' होता है। ये चार स्थिरकरण हैं।

राशि नाम के लिए शतपद चक्र परिज्ञान—

भानां सञ्ज्ञा राशिनाम्नेऽत्रिभेदाच्चू चे चो ला दास्रधिष्ण्ये निरुक्ताः ।
ली लू ले लो याम्यभे आ इ ऊ ए आग्नेयाख्ये ओ व वी वू विधात्र्ये । ३१ ॥
वे वो का की चान्द्रभे कू घ ङा छा रौद्रे के को हा हि देवाम्बिकाभे ।
हू हे हो डा पुष्यभे डी डु डे डो भौजङ्गाख्ये मा मि मू मे मघाभे ॥ ३२ ॥
मो टा टी टू भाग्यभेऽथार्य्यमर्क्षे टे टो पा पी हस्तभे पू ष णा ठा ।
पे पो रा री त्वाष्ट्राधिष्ण्येऽथवाते रू रे रो ता द्वीशभे ती तु ते तो ॥३३॥
ना नी नू ने मित्रभे नो य यी यू शाक्रे ये यो भा भि मूलाभिधाने ।
भू धा फा ढाऽऽप्येऽथ भे भो ज जीति वैश्वे जू जे जो ख विध्याख्याधिष्ण्ये॥ ३४ ॥
खी खू खे खो विष्णुभे वासवर्क्षे गा गी गू गे वारुणे गो स सी सू ।
से सो दा दी छागपाद्धेऽथ बुध्न्ये दू था झा ञा पूष्णि दे दो च चीति ॥३५॥

चू, चे, चो, ला, 'अश्विनी'। ली, लू, ले, लो, 'भरणी'। आ, इ, ऊ, ए, 'कृत्तिका' ओ, वा, वी, वू, 'रोहिणी' वे, वो, का, की, 'मृगशिरा'। कू, घ, ङ,छ 'आर्द्रा'। के, को, हा, ही, 'पुनर्वसु'। हू, हे, हो, डा, 'तिष्य'। डी, डू, डे, डो, आश्लेषा'। मा, मी, मू, मे, 'मघा'। मो, टा, टी, टू, 'पूर्वाफाल्गुनी'। टे, टो, पा, पी, 'उत्तराफाल्गुनी'। पू, षा, णा, ठा, 'हस्त'। पे, पो, रा, री, 'चित्रा'। रू, रे, रो, ता, 'स्वाती'। ती, तू, ते, तो, 'विशाखा'। ना, नी, नू, ने, 'अनुराधा'। नो, या, यी, यू, 'ज्येष्ठा'। ये, यो, भा, भी, 'मूल'। भू, धा, फा, ढा, 'पूर्वाषाढा'। भे, भो, जा, जी, 'उत्तराषाढा'। जू, जे, जो, खा, अभिजित्' खी, खू, खे, खो, 'श्रवण'। गा, गी, गू, गे, 'धनिष्ठा'। गो, सा, सी, सू, 'शतभिषा'। से, सो, दा, दी, पूर्वाभाद्रपदा'। दू, था, झा, ञा, 'उत्तराभाद्रपदा'। दे, दो, चा, ची, 'रेवती' इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्रके चार चार चरणों के क्रमसे प्रत्येक चरण के एक एक अक्षर राशि नाम जाननेके लिए कहे हैं।

नाम के आद्य–अक्षर जाननेके लिए विशेष विचार—

अक्षरा ङञणा नोक्ता आदौ नाम्नो न सन्ति ते ।
यदा भवन्ति गजडा विज्ञेयास्ते यथाक्रमम् ॥ ३६ ॥

नामके आदि में 'ङ, ञ, ण' ये तीनों वर्ण नहीं होते हैं। नाम के आदिमें यदि उक्त वर्णों के मध्यमें किसी वर्ण का होना सम्भव हो तो ङ के स्थान में 'ग' और ञ के स्थान में 'ज' एवं ण के स्थान में 'ड' ग्रहण करके नाम रखना चाहिए।

इति पञ्चाङ्गपरिचयप्रकरणं प्रथममवसितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

सङ्कलनादिप्रकरणं प्रारभ्यते।

कालपरिमाण परिभाषा परिज्ञान—

विनाडी स्याद्रसैः प्राणैस्तासां षष्ट्यात्र नाडिका।
नाक्षत्रं नाडिका षष्ट्या तदहोरात्रकं मतम् ॥१॥
तास्त्रिंशता भवेन्मासः स्यात्तैर्द्वादशभिः शरत्।
काष्ठा धृत्या निमेषाणां तासां स्यात्त्रिंशता कला ॥ २ ॥
क्षणाख्यास्त्रिंशता तासां मुहूर्त्तस्तैरिनोन्मितैः।
द्युनिशं त्रिंशता तेषां पक्षस्तद्वासरप्रमैः ॥ ३ ॥

छ प्राणों की १ विनाडी (विघटी, पल), ६० विनाडियोंकी १ नाडी (घटी, कला), ६० नाडियों का १ नाक्षत्रकाल अर्थात् अहोरात्र (दिनरात), ३० अहोरात्र (दिनरात) का १ मास (महीना), १२ मासों का १ वर्ष (सँव्वत्सर) होता है। १८ निमेषों (पलक मारने) की १ काष्ठा, ३० काष्ठाओंकी १ कला, ३० कलाओंका १ क्षण, १२ क्षणों का १ मुहूर्त, ३० मुहूर्तोंका १ अहोरात्र (एक दिनरात) एवं १५ दिनोंका १ पक्ष होता है।

ततः षष्ट्या विदण्डानां दण्डःस्यादष्टभिश्च तैः।
यामस्तैरष्टभिश्चैवमहोरात्रं प्रकीर्तितम् ॥ ४ ॥
तैः सप्तभिश्च सप्ताहं चतुर्भिस्तैः सदोर्दिनैः।
मासः सावनसञ्ज्ञः स्याद्वर्षं द्वादशभिश्च तैः ॥ ५ ॥

६० विदण्डों का १ दण्ड, ८ दण्डों का १ याम (प्रहर), ८ याम का १ अहोरात्र (एक दिनरात), ७ अहोरात्र का १ सप्ताह, ४ सप्ताह और २ अहोरात्र का १ सावन मास अर्थात् ३० दिनका मास, १२ मासोंका १ वर्ष होता है।

कला षष्ट्या विलिप्तानां तासां षष्ट्या भवेल्लवः।
राशिस्तत्त्रिंशता भानां गणो द्वादशभिश्च तैः ॥ ६ ॥

६० विलिप्ता (विकला) ओंकी १ कला (लिप्ता), ६० कला (लिप्ता) ओंका १ अंश, ३० अंशोंकी १ राशि, १२ राशियोंका १ भगण होता है।

षष्ट्या तु विनिमेषाणां निमेषः कीर्त्तितो बुधैः।
तेषां षष्ट्या भवेद्धोराऽहोरात्रं तज्जिनैर्मतम् ॥ ७ ॥

६० विनिमेषों (सेकेण्डों) का १ एक निमेष (मिनट), ६० निमेषों (मिनटों) की १ होरा (घण्टा), २४ होरा (घण्टा) ओंका १ अहोरात्र होता है।

सङ्कलनादिद्योतकचिह्नपरिभाषापरिज्ञान—

एका रेखा तिरश्चीना भवेत्तद्दणलक्षणम्।
प्राक्प्रत्यग्रेखया भिन्नाऽन्तरे स्याद्धनाचिह्नकम् ॥ ८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दो संख्याओंके मध्यमें एक तिरश्चीन (तिरछी) अर्थात् उत्तर दक्षिणकी ओर रेखा— होतो वह 'ऋणचिन्ह' होता है। एवं पूर्व तथा पश्चिम की रेखा से जिसका मध्यभाग छिन्न + होतो वह 'धनचिह्न' होता है।

विदिक्स्थं चेद्यदास्वाङ्कं गुणाङ्कं तदुदाहृतम्।
चेदृणं बिन्दुसंयुक्त भाजकं पार्श्वकद्वये ॥ ९ ॥

यदि धन + चिह्न विदिशाओंकी ओर × होतो 'गुण चिह्न' होता है। एवं ऋण—चिह्नके दोनों पार्श्वों (बगलों) में बिन्दु ÷ होतो वह 'भाजकचिह्न' होता है।

रेखिके द्वे तिरश्चीने समचिह्नं समीरितम्।
संख्यायाम्यांसके सूक्ष्माङ्कास्तत्तत्समघातकम् ॥ १० ॥

दो तिरछी रेखाओंको = 'समचिह्न' कहते हैं। जिस संख्याके दाहिने कन्धेपर दो वा तीन सूक्ष्मअङ्क लिखे हों उनका उनके समान गुणन जानना चाहिए अर्थात् दो से वर्ग और तीन से घन जानना चाहिए।

गुणाङ्कोर्ध्वदल ह्यात्माग्न्याशायामृणलक्ष्मयुक्।
निजाधःस्थापिताङ्कानां वर्गमूलं तदङ्ककम् ॥ ११ ॥

गुण × चिह्नके ऊपर का आधा भाग अपनी दक्षिण दिशाकी ओर यदि ऋण – चिह्नसे युक्त होतो √ ऐसा चिह्न अपने नीचे की संख्या के वर्गमूल का चिह्न होता है।

पूर्णाङ्कान्विलिखेद्वामेतदग्रे बिन्दुपूर्वकान्।
पूर्णाङ्कात्परतो बिन्दुर्दशमांशाभिधो भवेत् ॥ १२ ॥

पूर्णाङ्क संख्याको बाईं ओर लिखे और उसके आगे बिन्दु आदि दशम लव संख्याको लिखे। पूर्णांक से परे जो बिन्दु हो तो वह 'दशमलव चिह्न' होता हैं।

निसृष्ट वह्निकाष्ठायां राशेः शून्यं लवार्थकम्।
कलायै तु विदिग्रेखा विलिप्तायै द्विरेखिके ॥ १३ ॥

संख्याके अग्निकोण की ओर यदि शून्य० होतो वह 'अंशचिह्न'। संख्याकी विदिशामें एक रेखा (') हो तो 'कला चिह्न' और दो रेखा (") हों तो 'विकला चिह्न' होता है।

चिह्न परिचय--

+ धन, सङ्कलन, योग जोड	√	वर्गमूल
– ऋण, व्यवकलन, वियोग, अन्तर (घटाना)	=	समान
× गुणन, गुणकर्म,	०	अंश
÷ भजन, भाग,	'	कला
² वर्ग, कृति, समद्विघात,	"	विकला
· दशमलव,	³	घन

योग तथा अन्तर के पर्याय--

योगो युतं सङ्कलनं समेतं युक्तान्विताढ्यं सहितं युतिर्युक्।
उच्छिष्टरन्ध्रोर्वरितावशिष्टच्छिद्राणि शेषो विवरं बिलाख्यम् ॥१४॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

योग, युत, सङ्कलन, समेत, युक्त, अन्वित, आढ्य, सहित, युति और युक् ये योग के पर्य्याय हैं। उच्छिष्ट रन्ध्र, उर्वरित, अवशिष्ट, छिद्र, शेष, विवर, और विल ये अंतर के पर्याय हैं।

विशोधनादियों के पर्याय--

विशोध्यापास्य रहितहीनोनवर्जितानि च।
संशोध्यमूनितं न्यूनो विहीनश्च विशोधनम् ॥ १५ ॥

विशोध्य, अपास्य, रहित, हीन, ऊन, वर्जित, संशोध्य, ऊनित, न्यून, विहीन और विशोधन ये विशोधन (घटानें) के पर्य्याय हैं।

अथो कृशाख्यकं तष्टस्तनु त्वष्टस्तनूकृतम्।
योज्याख्यो योजकश्चाथो वियोज्याख्यो वियोजकः ॥१६॥

कृशाख्यक, तष्ट, तनु, त्वष्ट और तनूकृत ये भक्तावशिष्टसंख्या के पर्याय हैं। जिस संख्यामें कोई अन्य संख्यायुक्त की जाय वह 'योज्य' कहलाती है। जो संख्या किसी अन्य संख्या में युक्त की जाय वह 'योजक' कहलाती है। जिस संख्यामें कोई अन्य संख्या घटाई जाय वह 'वियोजक' कहलाती है।

भाज्यो भाजकसञ्ज्ञोऽथ गुण्याख्यो गुणकस्ततः।
पर्यायाः शेषलब्ध्योर्ये युज्यन्ते भजनार्थकम् ॥ १७ ॥

जिस संख्या में किसी अन्य संख्या से भाग दिया जाय वह 'भाज्य' जिस संख्यासे किसी अन्य संख्या में भाग दिया जाय वह 'भाजक' कहलाती है। जिस संख्या का किसी अन्य संख्या से गुणन किया जाय वह 'गुण्य' और जिस संख्यासे किसी अन्य का गुणन किया जाय वह 'गुणक' कहलाती है। शेष तथा लब्धि के पर्यायोंका विभाजनके लिए भी प्रयोग किया जा सकता है।

गुणन, लब्धि तथा भजन (भाग) के पर्याय--

क्षुण्णंहतिस्ताडनघातनिघ्नवधा गुणाभ्यस्तहतानि गुण्यम्।
लब्ध्याप्तिलब्धाप्तफलान्यथो हृद्विभाजितं हार्य्यविभक्तभागाः॥ १८॥

क्षुण्ण, हति, ताडन, घात, निघ्न, वध, गुण, अभ्यस्त, हत और गुण्य ये गुणन के पर्याय हैं। लब्धि, आप्ति, लब्ध, आप्त और फल ये लब्धि के पर्याय हैं। हृत्, विभाजित, हार्य, विभक्त और भाग ये विभाजन के पर्याय हैं।

धन तथा ऋण के पर्याय--

स्वं धनं धनपर्यायौ क्षयर्णे ऋणवाचकौ।
स्वर्णयोरन्तरं योगः स स्वयोः क्षययोर्युतिः ॥ १९ ॥

स्व और धन ये धनके पर्याय हैं। क्षय और ऋण ये ऋण के पर्याय हैं। धन और ऋण का अन्तर 'योग' कहलाता है। एवं धन धन की और ऋण ऋण की युति भी 'योग' कहलाती हैं।

संख्याके स्थानोंकी संज्ञाका परिज्ञान —

क्रमादेको दश शतं सहस्रं ह्ययुतं ततः।
लक्षकं प्रयुतं कोटिरर्बुदं चाब्जखर्व्वके ॥ २० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

निखर्व्वाख्यं महापद्मं शङ्कुरब्धिस्ततोऽन्त्यकम् ।
मध्यस्ततः परार्द्धं च तथेति दिग्गुणोत्तरम् ॥ २१ ॥
संख्यास्थानविवादाय कृताःसञ्ज्ञा बुधोत्तमैः ।
वामतो गतिरङ्कानामथो सङ्कलनक्रिया ॥ २२ ॥

एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निखर्व, महापद्म, शंकु, जलधि अन्त्य, मध्य और पराई ये संख्याओंके स्थान के व्यवहारके लिए पूर्वाचार्योंने संख्याओं की संज्ञा कीई हैं। इस प्रकार उक्तस्थान उत्तरोत्तर दश गुण होते हैं। अङ्कोंकी गति बाईं तर्फसे होती हैं। इसके अनन्तर योग प्रभृति की क्रियाको कहते हैं।

'सञ्ज्ञा'	'द्योतकाङ्क'
एक (इकाई) ···	··· १
दश (दस वा दहाई) ···	··· १ ०
शत (सौ वा सैकडा) ···	··· १ ० ०
सहस्र (हजार) ···	··· १ ० ० ०
दशसहस्र (अयुत वा दशहजार)	··· १ ० ० ० ०
लक्ष (लाख) ···	··· १ ० ० ० ० ०
दशलक्ष (प्रयुत वा दशलाख)	··· १ ० ० ० ० ० ०
कोटि (करोड) ···	··· १ ० ० ० ० ० ० ०
दशकोटि (अर्बुद वा दशकरोड)	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ०
अब्ज (अरब) ···	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ०
दश अब्ज वा खर्व (दशअरब)	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
निखर्व (खर्व) ···	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
दशनिखर्व वा महापद्म (दस खर्व)	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
शङ्कु (पद्म) ···	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
दशशङ्कु वा जलधि (दसपद्म)	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
अन्त्य (शंख) ···	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
दशअन्त्य वा मध्य (दशशंख)	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
परार्द्ध (महाशंख) ···	··· १ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

४ ८ ५ १ ७ ३ ९ ६ ८ ४ २ ५

खरब, दश अरब, अरब, दश करोड, करोड, दशलाख, लाख, दश हजार, हजार, सैकडा, दहाई, इकाई,
(निखर्व) (खर्व) (अब्ज) (अर्बुद) (कोटि) (प्रयुत) (लक्ष) (अयुत) (सहस्र) (शत) (एक)
चार खर्व, पिचासी अरब, सत्रह करोड, उनतालीस लाख, अडसठ हजार, चारसौ, पच्चीस,
इस प्रकार स्थापित संख्याको पढना चाहिए।

ज्यो ...२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सङ्कलन, व्यवकलन तथा गुणन प्रकार

अङ्कयोगः क्रमात्कार्य्य उत्क्रमाद्वान्तरं तथा ।
यथास्थानमधो गुण्यान्त्याङ्कं गुणेन ताडयेत् ॥ २३ ॥
इति चोत्सारितेनात्रोपान्तिमादीन्प्रताडयेत् ।

तुल्य स्थानीय संख्याओंका क्रम वाउत्क्रमसे योग वा अंतर करना चाहिए अर्थात् योज्य संख्या में योजक संख्या को तुल्यस्थान के क्रमसे युक्तकरे तब अभीष्ट संख्या का 'योग' होता है। एवं वियोज्य संख्या में वियोजक संख्या को तुल्यस्थान के क्रमसे हीन करे तब अभीष्ट संख्या का 'अन्तर' होता है।

गुण्य संख्या के अन्तिम अङ्क (इकाई) को गुणक संख्या के अन्तिम अङ्क (इकाई) से गुणकर जो गुणन फल हो उसको गुणक के नीचे एक तिरछी रेखा खींचकर इकाई के स्थान मे रखदे, एवं गुण्य की दहाई की, संख्या को गुणक के अन्तिम अङ्क से गुणकर जो गुणन फल हो उसमें इकाई के हासिल को युक्तकरके गुणककी दहाईके नीचे रखदे, इसप्रकार गुणकके अन्तिम अङ्कसे गुण्यके सैकड़े इत्यादि अङ्कको गुणकर गुणकके सैकड़े इत्यादिके नीचे रखदे, तदनन्तर गुणककी दहाई से गुण्य की एकाई इत्यादि संख्याको गुणकर तब जो गुणनफल हो उसको गुणन फलकी दहाईके नीचेसे आरम्भ करके लिखे, एवं गुणक की सैकड़ा इत्यादि संख्या से, गुण्य की अन्तिम संख्यासे और आरम्भ संख्या पर्यन्त के सब अङ्कोंको गुणकर तब जो गुणन फल हो उसको गुणन फलके सैकड़े इत्यादि संख्याके नीचे रखदे तब सब अङ्कोंके योग करनेसे इष्टसंख्या का 'गुणनफल' होता है।

सङ्कलन (योग) का उदाहरण--सङ्कलनद्योतक + धन चिह्न

३			८२५	६८९४
४	१६ योज्य,	४७८ योज्य,	९९९ योज्य,	२४	२२७
२	५ योजक,	६ योजक,	४ योजक,	३१८	८
८	२१ योग,	४८४ योग,	१००३ योग,	२७४	५४०२
७				३९१२ योग,	१२५३१ योग,
२४ योग,					

व्यवकलन (अन्तर) का उदाहरण—व्यवकलनद्योतकऋण-चिन्ह ।

७ वियोज्य,	१२०८ वियोज्य,	१०००० वियोज्य,	८४९४ वियोज्य,	१६४२ वियोज्य,
३ वियोजक,	७९ वियोजक,	८ वियोजक,	२८० वियोजक,	७८१ वियोजक,
४ अन्तर,	११२९ अन्तर,	९९९२ अन्तर,	८२१४ अन्तर,	८६१ अन्तर,

गुणनकर्म का उदाहरण--गुणनकर्मद्योतक × गुणन चिह्न ।

२४ गुण्य,	४२ गुण्य,	५२६ गुण्य,	१२८७ गुण्य,	६०८२१ गुण्य,
५ गुणक,	८ गुणक,	७ गुणक,	९ गुणक,	५ गुणक,
१२० गुणन फल,	३३६ गुणन फल,	३६८२ गुणन फल,	११५८३ गुणन फल,	३०४१०५ गु. फ.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

२३८ गुण्य,	४६८० गुण्य,	५८९१ गुण्य,	१५६०४० गुण्य,
१० गुणक,	२० गुणक,	६१ गुणक,	२४५ गुणक,
०००	००००	५८९१	७८०२००
२३८	९३६०	३५३४६	६२४१६०
२३८० गु. फल,	९३६०० गुणन फल,	३५९३५१ गुणन फ.	३१२०८०
			३८२२९८०० गु. फ.

भजनकर्म (भागदेनेका) प्रकार

भागहारे तु भाज्यान्त्याङ्कतः शुद्ध्यति यद्गुणः ॥ २४ ॥
भाजकस्तत्फलं केन वाऽपवर्त्य समेन तौ ।

जिस संख्यामे भाग दिया जाय वह 'भाज्य' और जिस संख्यासे भाग दिया जाय वह 'भाजक' कहलाती हैं। भाज्य संख्या के अन्त्य अङ्कमें जितने गुणा भाजक घट जाय वह 'लब्धि' कहलाती है। इस प्रकार भाज्य संख्या के अन्त्य अंक से लेकर भाज्य की आरम्भसंख्या पर्यन्त उक्तक्रिया करनेपर जो संख्या मिले वह 'सम्पूर्णलब्धि' कहलाती है। भाज्य संख्या तथा भाजक संख्या ये दोनोंहीं किसी एक समान संख्याके भाग देनेसे यदि निःशेष हो जाँय तो वह 'अपवर्त्तन' कहलाती है। भाज्य तथा भाजक मे इष्टसंख्या से भागदेने पर जो लब्धि हो उसको पृथक् रखकर भागदे, अर्थात् भाज्य की लब्धि में भाजककी लब्धि से भागदेने पर जो संख्या मिले वह 'इष्टलब्धि' कहलाती है।

भजन कर्म का उदाहरण--भजनद्योतक ÷ चिह्न।

७६५÷५ 'उदाहरण'–

भाजक, भाज्य, लब्धि,	भाजक, भाज्य, लब्धि,	भाजक, भाज्य, लब्धि,	भाजक, भाज्य, लब्धि.
५) ७६५ (१५३	९) १३५ (१५	१०) १५१ (१५	२५) ३५८६ (१४३
५	९	१०	२५
२६	४५	५१	१०८
२५	४५	५०	१००
१५	००	१ शेष,	८६
१५			७५
००			११ शेष,

भाजक, भाज्य,	भाजक, भाज्य,	भाजक, भाज्य,
३५) ४२० (१२ लब्धि,	२४३) ५२६८० (२१६लब्धि.	३८७२) ९०८७४६ (२३४ लब्धि,
३५	४८६	७७४४
७०	४०८	१३४३४
७०	२४३	११६१६
००	१६५०	१८१८६
	१४५८	१५४८८
	१९२ शेष,	२६९८ शेष.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वर्गीकरणप्रकार तथा वर्गचिह्नपरिज्ञान—

यः समानाङ्कयोर्घातः स वर्गः समुदाहृतः ॥ २५ ॥
विषमस्तूर्ध्वरेखाङ्कः समोऽङ्को रेखिका समा ।
वर्गान्त्याङ्कात्क्रमात्कार्य्यो विषमोऽङ्कस्ततः समः ॥२६॥

समान दो संख्याओं के घात (गुणनफल) को 'वर्ग' वा 'कृति' कहते हैं। ऊर्ध्वरेखा वाला चिह्न(।) 'विषम,' समान रेखा वाला चिह्न(–)'सम' कहलाता है। वर्गके अन्त्य अङ्क के क्रमसे 'विषम'(।)'समचिह्न'(–)से वर्गसंख्याको 'अङ्कित' करे। तदनन्तर वक्ष्यमाण विधिसे विषमसम चिह्नाङ्कित वर्गसंख्या का 'मूल' ग्रहण करे।

वर्गकर्मका उदाहरण—वर्गद्योतक ^{२} चिह्न।

४२^{२} गुण्य,	११५^{२} गुण्य,	२०५१^{२} गुण्य,
४२ गुणक,	११५ गुणक,	२०५१ गुणक,
८४	५७५	२०५१
१६८	११५	१०२५५
१७६४ वर्ग,	११५	००००
	१३२२५ वर्ग,	४१०२
		४२०६६०१ वर्ग,

वर्गमूलानयन विधि परिज्ञान—

सन्त्यज्य विषमादन्त्याद्वर्गं द्विगुणयेत्पदम् ।
तदुद्धृते समे त्यक्त्वा तदाद्याद्विषमात्कृतिम् ॥२७॥
लब्धेर्द्विघ्नं फलं पंक्त्यां न्यसेत्पंक्तिहृते समे ।
त्यक्त्वान्त्यविषमादाप्तवर्गसञ्ज्ञं फलं सुधीः ॥२८॥
तल्लोचनगुणं पंक्त्यां न्यसेदिति मुहुर्मुहुः ।
पंक्त्यर्धं स्यात्पदं चाथ यत्र शेषं तदिन्दुना ॥२९॥
युक्तं षष्ट्या हतं पंक्त्या भक्तं लब्धं कलादिकम् ।

अन्त्य के विषम में से अर्थात् बायें ओर के विषम चिह्नके नीचेकी संख्या में से जिस अङ्कका वर्ग घट सके उसको घटादे और जिस अङ्कका वर्ग घटाया हो उसको द्विगुणित करके एकस्थान में स्थापितकरे उसे पंक्ति कहते हैं। वर्ग घटानेपर जो शेष संख्यावची हो उसकी दाहिनी ओर आगे का सम अङ्क उतार कर उसमें पंक्तिसे भागदे, तदनन्तर जो शेष रहा हो उसकी दाहिनी ओर आगेका विषम अङ्क उतार कर उसमें लब्धिके वर्गको घटा दे और उस लब्धिको द्विगुणित करके पहिले पंक्तिके नीचे दाहिनी ओर एकस्थान बढाकर स्थापित करे, तदनन्तर उसका योग करे तब वह द्वितीयपंक्ति होती है और जो शेषसंख्या वची हो उसकी दाहिनी ओर आगेका सम अङ्क उतार कर द्वितीय पंक्तिसे भागदे, तदनन्तर जो शेष रहा हो उसकी दाहिनी ओर आगेके विषम अङ्कको उतारकर उसमेंसे लब्धिकेवर्ग को घटादे और लब्धिको द्विगुणितकरके द्वितीय पंक्तिके नीचे दाहिनी ओर एक स्थान बढाकर स्थापित करे, तदनन्तर उसका योग करे तब वह तृतीय पंक्ति होती है। इसी प्रकार अन्ततक अर्थात् विषम (।) चिह्न की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

समाप्ति तक करते जाय तब जो अन्तिम पंक्ति हो उसका आधा करे तब वह इष्टसंख्या का वर्गमूल होता है। परन्तु जहां वर्गमूल के नीचे कलादि लानेकी आवश्यकता हो वहां अन्तिम शेष में १ युक्त करे, तदनंतर उसको ६० से गुणकर अन्तिम पंक्तिसे भाग दे लब्ध कलादि होते है॥

उदाहरण

विषमचिह्न।
समचिह्न—
न्यास—$\sqrt{८८२०९}$

पहिले ९ से आदि लेकर सम्पूर्ण अङ्कों पर समविषमका चिह्न लगाया फिर अन्त्य विषम ८ मे से २ का वर्ग घटाया शेष रहे ४ और २ मूल राशिको दूना करके ४ को पंक्तिनामसे एक स्थान पर स्थापित किया शेष ४ पर पासका अगला सम अङ्क ८ उतारा यह संख्या ४८ हुई इसमें पंक्ति ४ का भाग दिया लब्धि ९ आई शेष रहे १२ इसपर अगला विषम अङ्क २ उतारा तब १२२ हुये इसमें से ९ का वर्ग घटाया शेष रहे ४१ फिर ८ को दूना करके पंक्ति ४ के नीचे एकस्थान दाहिनी ओर बढाकर लिखा तो जोड़ा हुये ५८ अब शेष ४१ पर अगला सम अङ्क शून्य उतारा तो ४१० की संख्या हुई, इसमें ५८ का भाग दिया लब्धि मिली ७ और शेष रहे ४ इसपर अगला विषम ९ उतारा तो ४९ हुये, इसमें से ७का वर्ग घटाया शेष रहा०अब ७ को द्विगुण करके १४ को ५८ के नीचे एकस्थान बढाकर रखा और कुल पांक्ति संख्या ५९४ हुयी इसका आधा किया तो २९७ वर्गमूल इष्टसंख्या हुयी।

```
 ।-।-।
 ८८२०९        पंक्ति ४
२²=४            १८
 ४)४८(९        ५८
   ३६           १४
   १२२          ५९४
९²=  ८१
५८)४१०(७       ५९४÷२=२९७
    ४०६          वर्गमूल
     ४९
७²   ४९
      ०
```

लीलावतीके आधारपर

(१)
इष्टसंख्या—
५°, २५,' ३०"
वर्गमूल
२°, ३६', २२"
४ पंक्ति
१+१=२×६०=१२०
१२०+२५'=१४५
पंक्ति
४)१४५(३६'
१२
२५
२४
१×६०=६०+३०"=९०

(२)
इष्टसंख्या—
१०°, २५', ५०"
वर्गमूल
३°, २४', १८"
६
१+१=२×६०=१२०+२५'=१४५
पंक्ति
६)१४५(२४'
१२
२५
२४
१×६०=६०+५०"=११०

(३)
इष्टसंख्या—
१६°, ४७', ३६",
वर्गमूल,
४°, १३,' २७"
८ पंक्ति
०+१=१×६०=६०+४७'=१०७
पंक्ति
८)१०७(१३'
८
२७
२४
३×६०=१८०+३६"=२१६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पंक्ति
४) ९० (२२"
४
१०
८
२

पंक्ति
६) ११० (१८"
६
५०
४८
२

पंक्ति
८) २१६ (२७"
१६
५६
५६
०

अंशादि संख्याकी सूक्ष्मवर्गमूलानयन रीति--

लवानां विकलाः कार्यास्ताभ्यो ग्राह्यं पदं बुधैः ॥३०॥
भवेत्तल्लिप्तिकापूर्वं षष्ट्या भक्तं लवादिकम् ।

अभीष्ट अंशादि संख्याकी विकला करे अर्थात् अंश को ६० से गुणकर कलाको युक्त करके पुनः ६० से गुणे तब जो गुणन फल हो उसमें विकला को युक्त करने से 'विकलात्मक' इष्ट संख्या होती है। उस अभीष्ट विकलात्मक संख्या में से पूर्वोक्त नियम के द्वारा 'वर्गमूल' ग्रहण करे तब लब्ध 'कलादि वर्गमूल' होता हैं। कला को ६० से विभाजित करने पर 'अंशादि वर्गमूल' होता है।

अंशादि इष्टसंख्या—
५°, २५', ३०",
५°×६०=३००'+२५'=३२५'×६०=१९५००"
१९५००"+३०"=१९५३०" विकला
वर्गमूल
१—१—१
१९५३०
१
९
६
३५
९
२६३
२३४
२९०
८१
२०९ + १ = २१० × ६० = १२६००
पंक्ति
२७८) १२६०० (४५"
१११२
१४८०
१३९०
९०

वर्गमूल,
१३९', ४५"
२७८ पंक्ति,
१३९' ÷ ६० = २°, १९
इष्टसंख्या का वर्गमूल,
२°, १९', ४५",

अंशादि इष्टसंख्या--
१०°, २५', ५०",
१०°×६०=६००'+२५'=६२५'×६०=३७५००"
+५०"=३७५५० विकला
वर्गमूल,
१—१—१
३७५५०
१
२७
१८
९५
८१
१४५
११४
३१०
९
३०१+१=३०२×६०=१८१२०
पंक्ति
३८६) १८१२० (४६"+१=४७"
१५४४
२६८०
२३१६
३६४ शेष संख्या भाजक ३८६ के

१९३ ÷ ६० = ३°, १३
इष्टसंख्या का वर्गमूल,
३°, १३', ४७"

आधे १९३ से अधिक है अतः 'अर्द्धाधिके रूपं ग्राह्यम्' इस नियम से लब्धि ४६+१=४७" विकला हुई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकारान्तर से अंशादि संख्या का सक्ष्मवर्गमूलानयन रीति--

यद्वा ताः षष्टिवर्गघ्न्यस्तन्मूलं विकलादि तत् ॥३१॥
षष्ट्या हृतं फलं लिप्तास्ताः खषड्विहृता लवाः ।
कष्टेष्टादिविधौ कार्यारीतिरेषा मयोदिता ॥३२॥

अंशादि इष्ट संख्या की विकला को ६० के वर्ग ३६०० से गुणकर जो गुणन फल हो उसमें से पूर्वोक्त रीति के द्वारा मूल ग्रहण करे तब वह विकलादि वर्गमूल होता है। विकला में ६० से भाग दे लब्ध कला होती हैं। कलाओं में ६० से भाग दे लब्ध तब 'अंशादि वर्गमूल' होता है। उक्तविधि से इष्ट तथा कष्ट प्रभृतियों में वर्गमूल ग्रहण करे।

पूर्वागत विकलादि इष्टसंख्या--

(१९५३०")

१९५३०" × ३६०० = ७०३०८०००

७०३०८०००

६४ वर्गमूल,

६३ ८३६४",+१=८३६५"

४८ १६७२८ पंक्ति,

१५० ८३६५"÷६०=१३९',४५"

९

१४१८ १३९'÷६०=२°,१९'

१३२८ इष्ट संख्याका अंशादि वर्गमूल,

९०० २°,१९',४५",

३६

८६४०

६६८८

१९५२०

१६

१९५०४ शेष,

पूर्वागत विकलादि इष्टसंख्या--

(३७५५०)

३७५५० × ३६०० = १३५१८००००

१३५१८००००

१ वर्गमूल,

३

२ ११६२६"+१=११६२७

१५ २३२५२ पंक्ति,

१

१४१ ११६२७"÷६०=१९३', ४७"

१३२

९८

३६ १९३'÷६०=३°, १३,'

६२०

४६४ इष्टसंख्या का अंशादि वर्गमूल

१५६०

४ ३°, १३', ४७",

१५५६०

१३९४४

१६१६०

३६

१६१३४ शेष,

गोमूत्रिकाचक्रोद्धार परिज्ञान--

वसुन्धरोनितगुणसंख्यातुल्योर्ध्वरेखिका ।
एका कार्या समा रेखा सोक्ता गोमूत्रिका बुधैः ॥३३॥

यदि गुणक संख्या दो तीन इत्यादि जाति की हो तो गुणक की जातियोंकी संख्या में १ हीनकरे तब

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जितना शेष बचे उसके तुल्य ऊर्ध्व रेखाओंको खींचे अर्थात् दो जातिका गुणक हो तो एक ऊर्ध्व रेखा खींचे, ३ तीन जातिका गुणक होतो २ ऊर्ध्व रेखा, ४ जातिका गुणक होतो ३ ऊर्ध्व रेखा और ५ जातिका गुणक होतो ४ ऊर्ध्व रेखा करे। तदनन्तर ऊर्ध्व रेखाओंके ऊपरके भागमें एक तिरछी अर्थात् समान रेखाको खींचे तब उसका नाम पण्डित जनोंने 'गोमूत्रिकाचक्र' कहा है।

गोमूत्रिकाद्वारा गुणनफलसाधनरीति--

यत्र द्वित्र्यादिका संख्या भिन्नजातिर्गुणस्य चेत् ।
तत्र गोमूत्रिकारीत्या गुण्यं गुणेन ताडयेत् ॥३६॥

जहां गुणक संख्या भिन्न जाति की हो अर्थात् दो, तीन इत्यादि जाति की हो तो वहां उक्त 'गोमूत्रिका' न्यायसे गुण्य संख्या को गुणक संख्या से गुणकर तब इष्ट संख्याओंका 'गुणनफल' होता है।

उदाहरण --

गुणक संख्या २°, १९', ४५" है, यहां गुणक संख्या तीन जाति की है अतः ३ में १ घटाकर २ शेष बचे इसलिए शेष २ के समान २ ऊर्ध्वरेखा और उनके ऊपर एक समान (तिरछी) रेखा खींची तो 'गोमूत्रिका' का न्यास निम्न लिखित प्रकार जानना चाहिए।

गुणक	२°	१९'	४५"
गुण्य	२	२	२
	१९	१९	१९
	४५	४५	४५

२°	१९'	४५"
४	३८	९० + १४ = १०४ ÷ ६० = १ लब्धिः ४४ शेष,
३८	३६१	८५५ + ३४ = ८८९ ÷ ६० = १४ लब्धि, ४९ शेष,
९०	८५५	२०२५ ÷ ६० = ३४ लब्धि,

३८ + १ = ३९ + ७ = ४६ ÷ ६० = ० लब्धि, ६० शेष,

३६१ + ४४ = ४०५ + १५ = ४२० ÷ ६० = ७ लब्धि ० शेष

८५५ + ४९ = ९०४ ÷ ६० = १५ लब्धि,

४ + ० = ४ + १ = ५

३८ + ४६ = ८४ + १ = ८५ ÷ ६० = १ लब्धि,: २५ शेष

९० + ० = ९० ÷ ६० = १ लब्धि, ३० शेष

अतः ५, २५' ३०" इष्ट संख्या का गुणनफल हुआ।

त्रैराशिक (अनुपात) रीति परिज्ञान--

आदौ प्रमाणं चरमे तथेच्छा तौ तुल्यजाती फलमन्तराले ।
स्यादन्यजातीह तदन्त्यनिघ्नं विभक्तमाद्येन फलं स्पृहायाः ॥३७॥

'प्रमाण' और 'इच्छा' ये दोनो समान जाति अर्थात् एक जाति के होते हैं। 'फल' की अन्य जाति होती हैं। आदि में 'प्रमाण' मध्यमें 'फल' और अन्त्यमें 'इच्छा' को स्थापित करे और जाति के 'फल' और (मध्यगतसंख्या) को 'इच्छा' (अन्त्यगत संख्या) से गुणकर 'प्रमाण' (आदिगतसंख्या) से भाग दे लब्धि इच्छाका 'फल' होता है।

उदाहरण—

८ पलमें ६० कला, तो ५ पलमें कितनी कला ?

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

न्यास—

यहां ८ पल 'प्रमाण' ५ पल 'इच्छा' और ६० कला अन्य जाति हैं। इष्टसंख्या अन्य जाति की सजातीय राशि होगी। ऊपर लिखी रीति के अनुसार राशियोंको इसप्रकार रक्खा,

८ : ६० : : ५ : इष्ट.
(६० × ५) ÷ ८
३०० ÷ ८ = ३७
२४
६०
५६

४ × ६० = २४० ÷ ८ = ३० अर्थात् ३७' कला ३०" विकला यही 'इष्टराशि' हुई।

अन्य जाति के फल ६० कला को इष्ट पल ५ अथवा–(इच्छा) से गुणातो ३०० गुणन फल हुआ। इसमें ८ पल (प्रमाण) से भाग दियातो लब्ध ३७ कला हुई। शेष ४ को ६० से गुणातो २४० गुणन फल हुआ। इसमें पुनः ८ पल (प्रमाण) से भाग दियातो लब्ध ३० विकला हुई। इसप्रकार ३७ कला ३० विकला इष्ट संख्या का 'कलादिफल' हुआ।

इति ज्योतिस्तत्त्वे सङ्कलनादिप्रकरणं द्वितीयं समाप्तिमाप्तम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरणं प्रारभ्यते ।

सृष्ट्यादि गताब्दानयन परिज्ञान—

*कल्पाद्गताब्दाः खखखाब्धिषण्णभोगन्धर्वचन्द्रै रहिता गताः समाः ।
सृष्टेः खखाभ्राभ्रगजेभसायकेष्वङ्केन्दुहीना इतहायनाः कलेः ॥ १ ॥

इष्ट समय के कल्प गताब्दों में १७०६४००० को हीन करे तब शेष 'सृष्टिसौरगताब्द' होते हैं। उन सृष्टि सौर गताब्दों में १९५५८८०००० को हीन करे तब शेष कलियुग के आरम्भ काल से 'गताब्द' होते हैं।

उदाहरण

श्री शुभ वैक्रमीय सँव्वत्सर १९५४ आषाढ २३ प्रविष्ट, चन्द्रवार जन्मेष्ट ४६।१३ मे श्रीमान् ग्रन्थकार महोदय के भ्राता पण्डित उर्वीदत्त महोदय का जन्म हुआ। अतः जन्मसामयिक कल्पगताब्द १९७२९४८९९८ में १७०६४००० को हीन किया तो शेष १९५५८८४९९८ 'सृष्टिसौरगताब्द' हुए। इनमें १९५५८८०००० को हीन किया तो शेष ४९९८ 'कलिगताब्द' हुए।

विक्रमादिसँवत्सरानयन परिज्ञान—

वेदाब्धिखाग्निरहिताः कलिवत्सरा ये
सँवत्सरो भवति विक्रमनामधेयः ।
सोऽक्षानलैकरहितः शकवत्सरः स
ख्रिष्टाब्द उक्त इभशैलमितैः समेतः ॥ २ ॥

कलि सँव्वत्सर अर्थात् गत कलिमें ३०४४ को हीन करे तब जो शेष बचे वह 'विक्रम सँवत्सर' होता है। उसमें १३५ को हीन करे तब जो शेष बचे वह 'शालिवाहनीयशक सँवत्सर' होता है। उसमें ७८ को युक्त करे तब 'ख्रिष्ट सँव्वत्सर अर्थात् ईसवी सन्' होता है।

उदाहरण

गतकलि ४९९८४ में ३०४४ को हीन किया तो शेष १९५४ 'विक्रम सँव्वत्सर' हुआ। इसमें १३५ को हीन किया तो शेष १८१९ 'शालिवाहनीयशक सँव्वत्सर' हुआ। इसमें ७८ को युक्त किया तो १८९७ 'ख्रिष्ट सँव्वत्सर' (इसवी सन्) हुआ।

ख्रिष्टाब्दकस्त्रिगजबाणमितैर्वियुक्तः
सा कीर्त्तिता बुधवरै 'र्हिजरी' शरत्सा ।

*इह सूर्यसिद्धान्तकारमतेन कल्पगताब्दानयनमित्थम्– दिव्याब्दस्य सौरवर्षाणि ३६० द्वादशसहस्रगुणितानि ४३२०००० जातं महायुगम्। इदमेकसप्ततियुगं ३०६७२०००० जातं मनुमानम्। इदं षड्गुणितं १८४०१२०००० जातं षण्मनुमानम् इदं स्वसन्धिभिः कृतयुगप्रमाणैः सप्तभिरेभिः १२०९६००० सहितं १८५२४१६००० एतत्सप्तविंशतियुगमानैः ११६६४०००० सहितं १९६९०५६००० एतत्कृतत्रेताद्वापरयुगमानैः ३८८८००० सहितं जाताः कल्पतो द्वापरयुगान्ताब्दा १९७२९४४०००० इमे कलियुगारम्भतो गताब्दैः४९९८ सहिता १९७२९४८९९८ जाताः कल्पतो 'गताब्दाः'।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आकाशचन्द्ररहिता 'फसली' समा स्या-
देपामृतांशुरहिता यदि 'बङ्गलाब्दः' ॥ ३ ॥

ईसवी सन्में ५८३ को हीन करे शेष 'हिजरी सन्' होता है। उसमें १० को हीनकरे शेष 'फसली सन्' होता है। उसमें १ को हीन करे शेष 'बङ्गला सन्' होता है।

उदाहरण—

ईसवी सन् १८९७ में ५८३ को हीन किया तो शेष १३५७ 'हिजरी सन्' हुआ। इसमें १० को हीन किया तो शेष १३४७ 'फसली सन्' हुआ'। इसमें १ को हीन किया तो १३४६ 'बङ्गला सन्' हुआ।

मकरन्दीय अयनांशानयन रीति—

चन्द्राश्विवेदै रहितः शकाब्दः स्वाशांशहीनो विहृतोऽ*यनांशाः।
खाङ्गैस्त्रिनिघ्नेनगृहादिकं स्वार्द्धाढ्यं विलिप्ताश्च तदन्वितास्ते ॥४॥

इष्ट शक मे ४२१ को हीन करे तब जो शेष बचे उसको दो स्थान मे रखकर एकस्थानमें १० से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको द्वितीय स्थान में स्थित संख्या में हीन करे तब जो शेष बचे उसमे ६० से भाग दे तब जो लब्ध अंशादि हों उनको एकान्त मे रक्खे। तदनन्तर स्पष्ट सूर्य के राश्यादि को ३ से गुणकर अपने अर्द्ध से युक्त करे तब विकलादि होते हैं। उनको पूर्वागत अंशादि की विकला में युक्तकरे तब 'मकरन्दीयायनांश' होते हैं।

उदाहरण

इष्ट शक १८१९ में ४२१ को हीन किया तो १३९८ शेष बचे। इनको दो स्थानों मे रखकर एकस्थान मे १० से भाग दिया तो १३९।४८ लब्ध हुए। इनको पृथक् स्थित १३९८ मे हीन किया तो १२५८।१२ शेष बचे। इनमे ६० से भाग दिया तो लब्ध २०।५८।१२ अंशादि हुए। राश्यादि स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ को ३ से गुणा तो ८।४।२९।२७ हुए। इनका आधा कियातो ४।२।१४।४३ हुए। इनको त्रिगुणित सूर्य स्पष्ट ८।४।२९।२७ में युक्त किया तो १२।६।४४।१० विकलादि हुए। विकला १२ को पूर्वागत अंशादि २०।५८।१२ की विकला १२ में युक्त किया तो २०, ५८,' २४" 'मकरन्दीयायनांश' हुए।

चैत्रपक्षीयादि अयनांश साधन रीति—

विलिप्तिकाद्याः खशरास्त्रिचन्द्रा नाकास्त्रिनाकोनशकेन गुण्याः।
क्रमाद्गजाङ्काब्धिवियुक्छकेन पंक्त्याऽङ्कभूभिर्विकलाभिराढ्याः ॥५॥

---

*इह प्रकारान्तरेणायनांशानयनं ग्रन्थकारैर्ग्रन्थान्तरे प्रोक्तं 'तदित्थं'—शको विहीनः शशियुग्मसागरैर्यच्छेषकं तद्धतसागरेषवः। त्रिघ्नार्कभे खार्द्धयुतं तदन्विताः खदर्शनाप्ता अयनस्य लिप्तिकाः ॥१॥ खखाद्रिचन्द्रोनशको द्विधाऽऽहृतः खाक्षैः पतङ्गैर्विकलामुखा स्मृताः। ताभिर्नखा वेदकृता गुणेन्द्रिया युतालवाद्या अयनांशकाभिधाः ॥२॥ इह रैवतपक्षीयायनांशार्थं १६, ४६, ४५," एषु-लवादिपूर्वरीत्यागतविकला योज्यास्तदा रैवत पक्षीयायनांशाः स्युः। अस्मिन्ग्रन्थे सर्वत्र चैत्रपक्षीयायनांशवशेन गणितक्रियाङ्गेति "श्रीविक्रमाब्दोऽक्षगुणैकहीनः सम्वत्सरः स्याच्छकसप्तकोऽसौ। न्यूनोऽब्धिवेदाब्धिमिरम्बराङ्गैर्विभाजितास्तेऽयनभागकाः स्युः इत्य-नयारीत्या ग्रहलाघवीयायनांशा भवेयुः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लवादिकांस्तान्कुरु चैत्ररैवतायनांशकाः स्युः क्रमतः कलेर्गताः ।
समास्त्रियुग्माङ्गगुणैर्विवर्जिताः खरागभक्ता अयनांशकाः फलम्॥६॥

इष्ट शक को दो स्थानमें रखकर एकस्थानमें २१३ को हीन करे और द्वितीय स्थानमें ४९८ को हीनकरे तब जो दोनों स्थानोंमें शेष बचे उनसे ५०", १३''', २१'''' को पृथक् पृथक् क्रमसे गुणकरके जो गुणन फल हों उनमें १० और १९ विकला को युक्त करके अंशादि करे अर्थात् लब्ध विकलादियों में ६० से भाग दे लब्ध कलादि होते हैं। कलादियोंमें ६० से भाग दे लब्ध क्रमसे 'चैत्रपक्षीय' और 'रैवत पक्षीय अयनांश' होते हैं। गतकलिमें ३६२३ को हीन करे तब जो शेष बचे उसमें ६० से भाग दे लब्ध 'ग्रहलाघवीयायनांश' होते हैं।

उदाहरण

इष्ट शक १८१९ को दो स्थानमें रखकर एकस्थानमें २१३ को हीन किया तो १६०६ शेष बचे। द्वितीय स्थानमें ४९८ को हीन किया तो १३२१ शेष बचे। ५०। १३। २१ विकलादिको शेष १६०६ से गुणा तो ८०६५७। २०। ६ विकलादि हुए। लब्ध विकला ८०६५७ में १० विकला को युक्त किया को ८०६६७ विकला हुई। इनमें ६० से भाग दिया तो लब्ध १३४४ कला हुई और शेष २७ विकला हुई। लब्ध कला १३४४ में ६०से भाग दिया तो २२ अंश और शेष २४ कला हुई। इस प्रकार २२ अंश २४ कला २७ विकला 'चैत्रपक्षीयायनांश' हुए। एवं ५०।१३।२१ विकलादि को द्वितीय शेष १३२१ से गुणा तो ६६३४३।५५।२१ विकलादि हुए। पूर्वागत विकला ६६३४४ में १९ विकला को युक्त किया तो ६६३६३ विकला हुई। इनमें ६० से भाग दिया तो लब्ध ११०६ कला हुई और शेष ३ विकला हुई। लब्ध कला ११०६ में ६० से भाग दिया तो लब्ध १८ अंश और शेष २६ कला हुई। इस प्रकार १८ अंश २६ कला ३ विकला 'रैवतपक्षीयायनांश' हुए।

गतिकलि ४९९८ में ३६२३ को हीन किया तो १३७५ शेष बचे। इनमें ६० से भाग दिया तो लब्ध २२ अंश ५५ कला 'ग्रहलाघवीयायनांश' हुए।

प्रकारान्तरसे ग्रहलाघवीयायनांशसाधन रीति

शाकोऽब्धिवेदोदधिवर्जितोऽभ्रानेहोभिराप्तः फलमंशकाद्यः ।
अस्मिन् गृहाद्यो रविराशुगघ्नो योज्यो विलिप्तास्वयनांशकाः स्युः॥७॥

इष्ट शकमें ४४४ को हीन करे तब जो शेष बचे उसमें ६० से भाग दे लब्ध अंशादि होते हैं। तदनन्तर राश्यादि स्पष्ट सूर्यको ५ से गुणकर जो गुणन फल हो उसको पूर्वागत अंशादि की विकलाओंमें युक्तकरे तब 'ग्रहलाघवीयायनांश' होते हैं।

उदाहरण

इष्ट शक १८१९ में ४४४ को हीन किया तो १३७५ शेष बचे। इनमें ६० से भाग दिया तो लब्ध २२ अंश, शेष ५५ कला हुई। स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ को ५ से गुणा तो १३।१७।२९।५ विकलादि हुए। पूर्वागत अंशादि २२।५५।० में लब्ध विकला १४ को युक्त किया तो २२ अंश ५५ कला १४ विकला 'ग्रहलाघवीयायनांश' हुए।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'दिनगणसारणीयम्'। बुधतो वारा बोध्याः।

ल.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
शे०	वाराः०	३	६	२	५	१	४	०	३	६	२	५	१
०	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७
१	३७४	३७४	३७४	३७४	३७४	३७३	३७३	३७३	३७३	३७३	३७३	३७३	३७३
२	७३९	७३९	७३९	७३९	७३९	७३९	७३८	७३८	७३८	७३८	७३८	७३८	७३८
३	११०४	११०४	११०४	११०४	११०४	११०४	११०४	११०४	११०४	११०३	११०३	११०३	११०३
४	१४७०	१४७०	१४७०	१४६९	१४६९	१४६९	१४६९	१४६९	१४६९	१४६९	१४६९	१४६९	१४६८
५	१८३५	१८३५	१८३५	१८३४	१८३४	१८३४	१८३४	१८३४	१८३४	१८३४	१८३४	१८३४	१८३४
६	२२००	२२००	२२००	२२००	२२००	२२००	२१९९	२१९९	२१९९	२१९९	२१९९	२१९९	२१९९
७	२५६५	२५६५	२५६५	२५६५	२५६५	२५६५	२५६५	२५६५	२५६५	२५६४	२५६४	२५६४	२५६४
८	२९३१	२९३१	२९३१	२९३०	२९३०	२९३०	२९३०	२९३०	२९३०	२९३०	२९३०	२९३०	२९२९
९	३२९६	३२९६	३२९६	३२९६	३२९५	३२९५	३२८५	३२९५	३२९५	३२९५	३२९५	३२९५	३२९५
१०	३६६१	३६६१	३६६१	३६६१	३६६१	३६६१	३६६१	३६६०	३६६०	३६६०	३६६०	३६६०	३६६०
११	४०२७	४०२७	४०२६	४०२६	४०२६	४०२६	४०२६	४०२६	४०२६	४०२६	४०२५	४०२५	४०२५
१२	४३९२	४३९२	४३९२	४३९१	४३९१	४३९१	४३९१	४३९१	४३९१	४३९१	४३९१	४३९१	४३९१
१३	४७५७	४७५७	४७५७	४७५७	४७५६	४७५६	४७५६	४७५६	४७५६	४७५६	४७५६	४७५६	४७५६
१४	५१२२	५१२२	५१२२	५१२२	५१२२	५१२२	५१२२	५१२१	५१२१	५१२१	५१२१	५१२१	५१२१
१५	५४८८	५४८८	५४८७	५४८७	५४८७	५४८७	५४८७	५४८७	५४८७	५४८७	५४८६	५४८६	५४८६
१६	५८५३	५८५३	५८५३	५८५२	५८५२	५८५२	५८५२	५८५२	५८५२	५८५२	५८५२	५८५२	५८५२
१७	६२१८	६२१८	६२१८	६२१८	६२१७	६२१७	६२१७	६२१७	६२१७	६२१७	६२१७	६२१७	६२१७
१८	६५८३	६५८३	६५८३	६५८३	६५८३	६५८३	६५८३	६५८२	६५८२	६५८२	६५८२	६५८२	६५८२

मासक्षेपकाः।

मासाः	वैशाखे.	ज्ये.	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि	कार्ति.	मार्ग	पौ.	मा.	फा.	चै.
दिनानि	०	३१	६२	९४	१२५	१५६	१८७	२१७	२४७	२७६	३०५	३३५

दिनगण सारणी प्रवेशरीति--

इष्ट शकमें १८०० को हीन करे तब जो शेष बचे उसमें १९ से भाग दे तब जो लब्ध संख्या मिले और जो शेष संख्या बचे उन दोनो के समान समसूत्र कोष्ठमें जो संख्या मिले उसमें इष्टमासके क्षेपकांक को युक्त करे तब जो संख्या हो उसमें इष्ट मासके गत प्रविष्ट (इष्टमासकी संक्रान्तिसे गतदिन) को युक्त करे तब अभीष्ट दिन का 'केतकीय दिनगण' होता है। तदनन्तर लब्ध संख्याके तुल्य कोष्ठके नीचे जो वार कोष्ठमें वारांक हो उसको दिनगण में युक्त करके ७ से तष्ट करे यदि शेष शून्य बचे तो बुधवार, १ शेषमें गुरुवार, २ में शुक्र, ३ में शनि, ४ में रवि, ५ में सोम, ६ में मंगलवार जानना चाहिए। यदि उक्त प्रकार से मिले हुए दिनगण से वार न मिले तो पूर्वागत दिनगण में १ अथवा २ युक्त करे या १ वा २ हीन करने से जब इष्टदिन का वार मिल जाय तब 'दिनगण' शुद्ध जानना चाहिए।

उदाहरण --

इष्टशक १८१९ में १८०० को हीन किया तो १९ शेष बचे। इनमें १९ से भाग दिया तो १ लब्ध हुआ और ० शून्य शेष बचा। लब्ध १ के तुल्य दिनगणसारणी के सब से ऊपर के कोष्ठ के समसूत्र और शेष

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

० शून्य के तुल्य बाईं ओर सबसे प्रथम कोष्ठ के समसूत्र में ९ मिले इनमें इष्ट मास आषाढ के क्षेपकांक ६२ को युक्त किया तो ७१ हुए। इनमें अभीष्ट मास (आषाढ) के गतप्रविष्ट (आषाढ की संक्रान्ति से गतदिन) २२ को युक्त किया तो ९३ 'केतकीय दिनगण' हुआ। लब्ध संख्या १ के नीचे के वार कोष्ठ में ३ वारांक मिला इनको दिनगण ९३ में युक्त किया तो ९६ हुए। इनमें ७ से भाग दिया तो ५ शेष बचे यहां बुधवार की संख्या शून्य मानकर गुरुवार से गणना की तो ५ वां चंद्रवार इष्टदिन का वार हुआ। अतः अभीष्टदिनका चन्द्रवार मिल जाने से ९३ 'शुद्ध दिनगण' हुआ।

कोष्ट १ 'प्रकारान्तरेण दिनगणसारणीयम्' 'एकोनविंशतितष्टावशेषवर्षगणचक्रम्'। दिनादिकम्।

		शे. व.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
		दि.	०	३७४	७३९	११०४	१४७०	१८३५	२२००	२५६५	२९३१	३२९६	
		घ.	०	१६	३२	४७	३	१९	३५	५१	६	२२	
		शे. व.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
		दि.	३६६१	४०२६	४३९२	४७५७	५१२२	५४८७	५८५३	६२१८	६५८३	६९४०	
		घ.	३८	५४	९	२५	४१	५७	१३	२८	४४	०	

कोष्ट. २ 'गतमासफलचक्रम्' 'दिनादिकम्'। 'धनम्'

ग मा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दि.	०	२९	५५	८८	११८	१४७	१७७	२०६	२३६	२६५	२९५	३२४	३५४
घ.	०	३२	४	३५	७	२९	११	४२	१५	४७	१८	५०	२२

को. (३) 'गततिथिफलचक्रम्'। 'दिनादिकम्'। 'धनम्'।

ग. ति.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दि.	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
घ.	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
ग. ति.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
दि.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
घ.	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३२	

को. [४] 'विंशतिभक्तवर्षगणफलचक्रम्'। 'दिनादिकम्'। 'ऋणम्'।

ल. व.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दि.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
घ.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

को. [५] 'वारक्षेपचक्रमिदम्' 'एकोनविंशतिभक्तवर्षगण-फलचक्रम्'। बुधाद्वारोबोध्यः

ल.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
वाराः	०	३	६	२	५	१	४	०	३	६	२	५	१	४	०	३	६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दिनगण सारणी प्रवेश-रीती-

अभीष्ट शकमें १८०० को हीनकरे शेष 'वर्षगण' होता है। वर्षगण में १९ से भाग दे तब जो शेष बचे उसके तुल्य 'एकोनविंशति तष्टावशेष वर्षगणचक्र (कोष्ठ १) के दिनादिमें गतमासके तुल्य गतमास फलचक्र (कोष्ठ २) के दिनादि को युक्त करे तब जो संख्या मिले उसमें गत तिथि के तुल्य गततिथि फल चक्र (कोष्ठ ३) के दिनादि को युक्त करे तब जो संख्या मिले उसको एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर वर्षगणमें २० से भाग दे तब जो लब्ध हो उसके तुल्य 'विंशतिभक्तवर्षगणफलचक्र (कोष्ठ ४) की घटीको हटाकर दिनादिको एकान्तमें स्थित संख्यामें हीनकरके घटी को हटाकर शेष 'दिनगण' होता है। वर्षगणमें १९ से भाग दे तब जो लब्ध हो उसके तुल्य वारक्षेपक चक्र (कोष्ठ ५) के वारको दिनगणमें युक्त करके ७ से भाग दे यदि शेष ० शून्य बचे तो बुधवार, १ शेषमें गुरु, २ में शुक्र, ३ मे शनि, ४ में रवि, ५ मे सोम, ६ मे मंगलवार जानना चाहिए। यदि इष्टवार न मिले तो दिनगणमें १ या २ युक्त अथवा हीन करके जब इष्टवार मिल जाय तब दिन गण शुद्ध समझना चाहिए अर्थात् संशोधित दिनगणही अभीष्ट शुद्ध दिनगण होता है। यहां गतमास और गत-तिथि इसप्रकार जाननी चाहिए कि जिस पक्षकी जिस तिथिमें मेष संक्रान्ति हो दूसरे मासके उस पक्ष की उसी तिथिपर्यंत 'प्रथम गतमास' होता है। एवं तीसरे मासके उस पक्षकी उसी तिथिपर्यन्त 'द्वितीय गतमास' होता है। इसी प्रकार तृतीय प्रभृति गत मासोंको जानना चाहिए। अन्तिम गत मास से इष्ट दिनकी तिथिपर्यन्त-जितनी तिथि शेष हों उनमें एक घटाकार शेष 'गततिथि' होती हैं।

उदाहरण

इष्ट शक १८१९ में १८०० को हीन किया तो शेष १९ वर्षगण हुआ। इसमें १९ से भाग दिया तो ० शून्य शेष बचा इसके तुल्य कोष्ठ १ के दिनादि ९।० को एकान्तमें स्थापित कर दिया। यहां आषाढ शुक्ल पञ्चमीका जन्म है और इस वर्षकी मेष संक्रान्ति चैत्र शुक्ल नवमी में हुई अतः चैत्र शुक्ल नवमीसे आषाढ शुक्ल पञ्चमीपर्यंत २ 'गतमास' हुए और २६ गततिथि हुई। एकान्तमें स्थित दिनादि ९।० में गत मास २ के तुल्य कोष्ठ २ के दिनादि ५९।४ को और गततिथि २६ के तुल्य कोष्ठ ३ के दिनादि २५।३५ को युक्त किया तो ९३ ३९ दिनादि हुए। वर्षगण १९ तुल्य घटी को पूर्वागत दिनादि ९३।३९ में हीन किया तो ९३।२० दिनादि हुए घटी २० को हटाकर शेष ९३ दिनगण हुआ। वर्षगण १९ में १९ से भाग दिया तो लब्ध १ हुआ इसके तुल्य वारक्षेपक चक्र के ३ वारको ९३ दिनगणमे युक्त किया तो ९६ हुए इनमे ७ से भाग दिया तो ५ शेष बचे बुधवारको शून्य मानकर गिनातो अभीष्टवार 'चन्द्रवार' हुआ।

'रविमध्यमसारणीयम्'।

दि. ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
अं.	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१९	२९	९	१९	२९	८	१८	२८
क.	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	४२	३४	२५	१६	८	५९	५०	४२
वि.	०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	४३	५	२७	४९	११	३३	५५	१७
प्र.	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	५१	४६	४२	३८	३३	२९	२५	२०
वि.	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	३९	१८	५७	३६	१५	५४	३३	१२	५१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
											०	०	०	०	०	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(रविमध्यम सारणीयम्)

३	६	९	१	४	७	१०	२	५		८	५	२	११	८	५	५	१०	७	
८	१७	२५	४	१२	२१	२९	८	१७		२५	२१	१६	१२	८	३	२९	२४	२०	
३३	७	४०	१४	४८	२१	५५	२९	२		३६	१३	४९	२६	२	३९	१५	५२	२८	
३९	१८	५७	३७	१६	५५	३४	१४	५३		३२	५	३८	११	४३	१६	४९	२२	५४	
१६	३३	४९	६	२२	३९	५५	१२	२९		४५	३१	१६	२	४८	३३	१९	४	५०	
३४	७	४१	१४	४८	२२	५६	३०	२		३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	

'रवेःसक्षेपचक्रनिघ्नधृवकाः'। 'राश्यादयः'। 'धनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१
५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	६	१३	२१	२८	३६	४४	५१	५९	७	१४	२२	३०
०	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२६	४	४२	२०	५८	३६	१४	५२	३०	८	४६	२४	२

एवंघटीफलसारणी' 'अंशादिकं'धनंअतःफलमपिग्राह्यंतत्कलादिकंज्ञेयम्'

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४७	४६	४५	४४	४३
०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५
०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	५	१६	२८	३९
०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	३९	१३	४७	२१	५५	२९	१३	३७	११	४५

रविघटीफलसारणीयम्।

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९		
४२	४१	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२५		
४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५७	५	१३	२२	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७		
५१	२	१४	२६	३७	५९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२		
१८	५२	२६	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५७	३१	५	३९	१३	४७	२१	५५	२९	३	३६		
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०			
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०				
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९			
२४	२३	२२	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	९	८			
३५	४४	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४६	५५	३	११			
५४	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३			
१०	४४	१८	५२	२६	०	३४	८	४२	१५	४९	२३	५७	३१	५	३९	१३	४७	२१	५४			

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चन्द्रमध्यमसारणीयम्'।

दि. ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	८	१	५	९	२	६	११	३
अं.	०	१३	२६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२३	५	१७	२८	१०	२२	४	१५
क.	०	१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	३१	१७	३	४९	३४	२०	६	५२
वि.	०	३४	९	४४	१९	५४	२९	४	३९	१४	४८	३७	२६	१५	४	५३	४२	३१	२०
प्र. वि.	०	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	७	०	५३	४७	४१	३५	२९	२३	१७	११	५
वि.	०	२४	४७	११	३४	५८	२१	४५	९	३२	५६	५१	४७	४३	३८	३४	३०	२५	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	३	११	७	३	११	७	३	११			७	२	९	४	०	७	२	९	४
२७	२५	२२	२०	१८	१५	१३	११	८			६	१२	१९	२५	१	८	१४	२०	२७
३८	१६	५४	३२	१०	४८	२७	५	४३			२१	४२	४	२५	४७	८	३०	५१	१३
८	१७	२६	३५	४४	५३	२	११	२०			२९	५९	२९	५९	२९	५९	२९	५९	२८
५९	५८	५७	५७	५६	५५	५४	५४	५३			५२	४५	३८	३१	२४	१६	९	२	५५
१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१५	३१			४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

'चन्द्रस्य सक्षेपचक्रनिम्नध्रुवकाः' 'राश्यादयः। धनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
११	११	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
२५	२९	३	७	१०	१४	१८	२२	२६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	२	५	९	१३
१७	१२	८	३	५९	५५	५०	४६	४१	३७	३३	२८	२४	१९	१५	११	६	२	५७	५३	४९
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०

चन्द्रस्य घटीफलसारणी अंशादिकम्। धनम्। अतः पलफलमपिग्राह्यं तत्कलाद्यम्।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४
०	१३	२६	३९	५२	५	१९	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४	१७	३०	४३	५७	१०	२३
०	१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२१	३१
०	३४	९	४४	१९	५४	२९	४	३९	१४	४८	२३	५८	३३	८	४३	१८	५३	२८	२	३७
०	५३	४६	४०	३३	२७	२०	१३	७	०	५३	४७	४०	३४	२७	१	१४	७	१	५४	४७
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	५६	२०	४४	८	४२	६	३०	५४	१८	४२	५१
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
४	४	५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९
३६	४९	३	१६	२९	४२	५५	८	२२	३५	४८	१	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	४७	०
४२	५२	३	१३	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४२	५२	३	१३
१२	४७	२२	५७	३२	७	४२	१६	५१	२६	१	३६	११	४६	२१	५६	३०	५	४०	१५	५०
४१	३४	२८	२१	१४	८	१	५५	४८	४१	३५	२८	२१	१५	८	२	५५	४८	४२	३५	२९
१५	३९	३	२७	५१	१५	३९	३	२७	४७	११	३५	५९	२३	४७	११	३५	५९	२३	४३	७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०			
९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३			
१३	२६	३९	५२	६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०			
२४	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३४			
२५	०	३५	१०	४४	१९	५४	२९	४	३९	१४	४९	२४	५८	३३	८	४३	१८	५३			
२२	१५	९	२	५६	४९	४२	३६	२९	२३	१६	९	३	५६	५०	४३	३६	३०	२३			
३१	५५	१९	४३	७	३१	५५	१९	३८	२	२६	५०	१४	३८	२	२६	५०	१४	३४			

'उच्चमध्यमसारणीयम्'।

दि. ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	३	४	५	६	७	८	१०
क.	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१
वि.	०	४०	२१	२	४३	२४	५	४६	२७	८	४९	३८	२७	१६	५	५५	४४	३३	२२
प्र.	०	५५	५०	४५	४०	३५	३०	२५	२०	१६	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४०
वि.	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२५	३७	५०	२	१५	२७	४०	५२

०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	१	१	२	२	२	३			३	७	११	२	६	१०	१	५	९
११	२२	३	१४	२५	६	१७	२९	१०			२१	१२	४	२५	१६	८	२९	२०	१२
८	१६	२४	३३	४०	४९	५७	५	१३			२१	४३	५	२७	४९	११	३३	५५	१७
११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६			५८	५७	५६	५४	५३	५२	५०	४९	४८
५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८			४०	२१	२	४३	२४	४	४५	२६	७
५	१०	१४	१९	२४	२९	३४	३८	४३			४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

'चन्द्रोच्चस्यसक्षेपचक्रनिघ्रध्रुवकाः'। 'राश्यादयः'। 'धनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
१०	०	२	४	५	७	९	११	१	२	४	६	८	९	११	१	३	४	६	८
२७	२०	१३	६	२८	२१	१४	७	०	२३	१६	९	१	२४	१७	१०	३	२६	१९	१२
२२	१४	७	०	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२८	२१	१४	७
०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४

'चन्द्रोच्चस्य घटीफलसारणीयम्'। अंशादिकम्। धनम्। अतः पलफलमपिग्राह्यं तत्कलादिकंज्ञेयम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६
०	४०	२१	२	४३	२४	५	४६	२७	८	४९	३०	११	५१	३२	१३	५४	३५	१६	५७
०	५५	५०	४५	४०	३५	३०	२५	२०	१६	११	६	१	५६	५१	४६	४१	३७	३२	२७
०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चन्द्रोच्चस्य घटीफलसारणीयम्'।

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७
३८	१९	०	४१	२२	२	४३	२४	५	४६	२७	८	४९	३०	११	५२	३३	१३	५४	३५	१६
२२	१७	१२	७	२	५८	५३	४८	४३	३८	३३	२८	२३	१८	१४	९	४	५९	५४	४९	४४
२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४५	५२	५९	६	१४	२१	२८	३५	४३	५०

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
३३	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४	४०
५७	३८	१९	०	४१	२२	३	४४	२५	५	४६	२७	८	४९	३०	११	५२	३३	१४	५५
४९	३५	३०	२५	२०	१५	१०	५	०	५६	५१	४६	४१	३६	३१	२६	२१	१६	१२	७
५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५६	३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	०	७	१५

'राहुमध्यमसारणीयम्'।

दि. / ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४
क.	०	३	६	९	१२	१५	१९	२२	२५	२८	३१	३	३५	७	३८	१०	४२	१४	४६
वि.	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	३५	२३	१०	५८	४६	३४	२१	९
प्र. वि.	०	४६	३२	१९	५	५१	३८	४	१०	५७	४३	२७	१०	५४	३७	२१	५	४८	३२
वि.	०	२१	४३	४	२६	४७	९	३०	५२	१३	३५	१०	४५	२०	५५	३०	५	४०	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	१	१	१	१			१	३	५	७	८	१०	०	२	२
५	१०	१५	२१	२६	१	७	१२	१७			२२	१५	८	१	२४	१७	१०	३	२६
१७	३५	५३	११	२९	४७	५	२३	४१			५९	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६	५५
५७	५४	५१	४९	४६	४३	४०	३८	३५			३२	५	३७	१०	४३	१५	४८	२१	५३
१५	३१	४७	३	१९	३५	५०	६	२२			३८	१६	५५	३३	११	५०	२८	६	४५
५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०			२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

'राहोः सक्षेपचक्रमिन्नध्रुवकाः'। राश्यादयः'। भनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
९	९	९	९	८	८	८	८	७	७	७	७	६	६	६	६	५	५	५	५	४
२७	१९	१२	४	२६	१८	११	३	२५	१७	९	२	२४	१६	८	१	२३	१५	७	०	२२
३७	५०	४	१८	३२	४६	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६
०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'राहुघटीसारणीयम्'। 'अंशादिकम्'। ऋणम् अतः पलफलमपि ग्राह्यं तत्कलादिकं ज्ञेयम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
०	३	६	९	१२	१५	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३
०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५
०	४६	३२	१९	५	५१	३८	२४	१०	५७	४३	२९	१६	२	४८	३५	२१	८	५४	४०	२७
०	२१	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९	३५	५६	१७	३८	५९	२०	४१	२	२३	४४	१०

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
६	९	१३	१६	१९	२२	२५	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	०	४	७	१०
४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	१०	२१
१३	५९	४६	३२	१८	५	५१	३७	२४	१०	५७	४३	२९	१६	२	४८	३५	२१	७	५४	४०
३१	५२	१३	३४	५५	१६	३७	५८	१९	४५	६	२७	४८	९	३०	५१	१२	३३	३९	२०	४१

४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
१३	१६	१९	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०
३२	४३	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२४	२५	४६
२७	१३	५९	४६	३२	१८	५	५१	३७	२४	१०	५६	४३	२९	१६	२	४८	३५	२१
२	२३	४४	५	२६	४७	८	२९	५५	१६	३७	५८	१९	४०	१	२२	४३	४	३०

'मङ्गलमध्यमसारणीयम्'।

दि. ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
अं.	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	१०	१५	२०	२६	१	६	११	१७
क.	०	३१	२	३४	५	३७	८	४०	११	४२	१४	२८	४३	५७	१५	२६	४०	५५	९
वि.	०	२६	५३	१९	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५	५०	१५	४०	१५	३१	५६	२१	४६
प्र वि.	०	३१	२	३३	५	३५	६	३७	०	४०	११	२१	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१
वि.	०	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	८	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	३	५	६	८	१०	०	१	३			५	१०	४	९	३	८	२	७	१
२२	१४	७	२९	२२	१४	६	२९	२१			१४	२८	१२	२६	१०	२४	८	२२	६
२४	४८	१२	३६	०	२५	४९	१३	३७			१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७
११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४६			५८	५७	५६	५५	५३	५२	५१	५०	४८
५२	५५	३७	३०	२२	१५	८	०	५३			४५	३१	१७	३	४९	३५	२०	६	५२
३५	१०	४५	२०	५५	३०	५	४०	१५			५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'भौमस्य सक्षेपचक्रनिम्नध्रुवकाः' 'राश्यादयः। धनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२	३	४	५	७	८	९	१०	०	१	२	३	५	६	७	८	९	११	०	१
९	१५	२२	२९	६	१३	१९	२६	३	१०	१७	२३	०	७	१४	२१	२७	४	११	१८
१२	५९	४६	३४	२१	८	५६	४३	३०	१८	५	५२	४०	२७	१४	२	४९	३६	२४	११
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

'भौमघटी फलसारणी' 'अंशादि' धनम्। अतः
पलफलमपिग्राह्यं तत्कलादि'।

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९							
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९							
	०	३१	२	३४	५	३७	८	४०	११	४२	१४	४५	१७	४८	२०	५१	२३	५४	२५	५७							
	०	२६	५३	१९	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५	५१	१८	४४	११	३७	४	३०	५७	२३							
	०	३१	२	३३	४	३५	६	३७	९	४०	११	४२	१३	४४	१५	४६	१८	४९	२०	५१							
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७							
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०							
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०							
२८	०	३१	३	३४	६	३७	८	४०	११	४३	१४	४६	१७	४९	२०	२१	२३	५४	२६	५७							
५०	१६	४३	९	३६	२	२९	५६	२२	४९	१५	४२	८	३५	१	२८	५४	२१	४७	१४	४०							
२२	५३	२४	५५	२७	५८	२५	०	३१	२	३३	४	३६	७	३८	९	४०	११	४२	१३	४४							
३१	३९	४७	५५	३	११	१९	५७	३५	४३	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	२							
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०								
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०								
२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१								
२९	०	३२	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१४	४६	१७	४९	२०	५२	२३	५५	२६								
७	३३	०	२६	५३	१९	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५	५२	१८	४५	११	३८	४	३१								
१५	४६	१७	४८	१९	५०	२१	५३	२४	५६	२७	५८	२९	०	३१	३	३४	५	३६	७								
१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३३								

'बुधमध्यमसारणीयम्'।

दि. ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	४	५	६	८	९	१०	०
अं.	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	२	६	१०	२१	२१	३२	४	५१	६	२७	८
क.	०	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	५०	४६	४१	३७	३२	२७	२३	१८
नि.	०	३२	४	३७	९	४२	१४	४६	१९	५१	२४	४८	१२	३६	०	२५	४९	१३	३७
प्र.	०	२५	५०	१५	४०	५	३०	५६	२१	४६	११	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४
वि.	०	१०	१९	२९	३९	४८	५८	८	१७	२७	३७	१४	५०	२७	४	४१	१८	५४	३१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	३	४	६	८	९	११	१	२	४	८	१	५	१०	२	६	११	३
१९	८	२७	१६	६	२५	१४	३	२३	१२	२४	७	१९	११	१४	२६	८	२१
१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	४०	०	२१	४१	१	२२	४२	२
१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	३८	५८	१७	३६	५६	१५	३४	५४
५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२९	२५	२१	४२	४	२५	४६	८	२९	५०	१२
८	१६	२४	३३	४१	४९	५७	५	१३	२२	४३	५	२६	४८	१०	३१	५३	१४

'बुधस्य सक्षेपचक्रनिम्नध्रुवकाः'। 'राश्यादयः'। 'धनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
१	०	११	९	८	७	५	४	३	१	०	११	१०	८	७	६	४	३	२	०	११
२२	१३	४	२४	१५	६	२७	१८	९	२९	२०	११	२	२३	१४	४	२५	१६	७	२८	१९
३०	१९	९	५९	४९	३९	२९	१८	८	५८	४८	३८	२८	१७	७	५७	४७	३७	२७	१६	६
०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०

'बुधघटीफलसारणी' अंशादिकम् धनम्। अतः पलफलमपि ग्राह्यं तत्कलादिकं ज्ञेयम्।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५३	५७	१	५	९	१३	१७	२१
०	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	०	६	१२	१७	२३	२८	३४	३९	४५	५०
०	३२	४	३७	९	४२	१४	४६	१९	५१	२४	५६	२९	१	३३	६	३८	११	४३	१५	४८
०	२५	५०	१५	४०	५	३१	५६	२१	४६	११	३६	२	२७	५२	१७	४२	७	३३	५८	२३
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२५	३०	३४	३८	४२	४६	५०	५४	५८	२	६	१०	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७
५६	१	७	१२	१८	२४	२९	३५	४०	४६	५१	५७	२	८	१३	१९	२४	३०	३६	४१	४७
२०	५३	२५	५८	३०	२	३५	७	४०	१२	४५	१७	४९	२२	५४	२७	५९	३१	४	३६	९
४८	१३	३८	४	२९	५४	१९	४४	९	३५	०	२५	५०	१५	४०	६	३१	५६	२१	४६	११
३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०

४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४
५१	५५	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५३	५७	१	५
५२	५८	३	९	१४	२०	२५	३१	३७	४२	४८	५३	५९	४	१०	१५	२१	२६	३२
४१	१४	४६	१८	५१	२३	५६	२८	०	३३	५	३८	१०	४३	१५	४७	२०	५२	२५
३७	२	२७	५२	१७	४२	८	३३	५८	२३	४८	१३	३९	४	२९	५४	१९	४४	१०
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

તપોવન સંસ્કાર ધામ
ધારાગિરિ, કબીલપોર.
નવસારી-૩૯૬૪૨૪.
☎ ૫૮૯૫૯, ૫૮૯૨

ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरणं तृतीयम्

'गुरुमध्यमसारणीयम्'।

दि.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
ग.																			
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७
क.	०	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	३९	२९	१९	९	५९	४८	३८	२८
वि.	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	४२	३३	२५	१६	७	५९	५०	४१
प्र. वि.	०	७	१५	२३	३०	३८	४६	५४	१	९	१७	३४	५१	८	२५	४२	०	१७	३४
वि. प्र.	०	४३	२६	९	५१	३४	१७	०	४३	२६	९	१७	२६	३४	४३	५२	०	९	१७

०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८		९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	१	१	१	१	२	२		२	५	८	११	१	४	७	१०	०
८	१६	२४	३	११	१९	२८	६	१४		२३	१६	९	२	२५	१८	११	४	२७
१८	३७	५५	१४	३२	५१	९	२८	४६		५	१०	१६	२१	२७	३२	३८	४३	४९
३२	५	३८	११	४४	१७	५०	२२	५५		२८	५७	२५	५४	२२	५१	२०	४८	१७
५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२		३४	८	४२	१७	५१	२५	०	३४	८
२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४		१९	३८	५७	१६	३५	५४	१३	३२	५१

'गुरोः सक्षेपचक्रनिघ्नध्रुवकाः'। 'राश्यादयः'। 'धनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
९	४	११	६	२	९	४	११	६	२	९	४	११	७	२	९	४	११	७	२	९
५	१२	१८	२५	२	८	१५	२२	२८	५	१२	१८	२५	२	८	१५	२२	२८	५	१२	१८
४०	१९	५८	३७	१६	५६	३५	१४	५३	३२	१२	५१	३०	९	४८	२८	७	४६	२५	४	४४
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०

'गुरुघटीफलसारणी'। 'अंशादिकम्' 'धनम्' अतः पलफलमपिग्राह्यं तत्कलादिकं ज्ञेयम्।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१
०	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९
०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४६	४५	४४	४३	४२
०	७	१५	२३	३०	३८	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	४०	४८	५५	३	११	१८	२६	३४
०	४३	२६	९	५२	३५	१८	१	४४	२७	९	५२	३५	१८	१	१४	२७	१०	५३	३६	१७

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९
४१	४०	३९	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२६	२५
४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	०	८
०	४३	२६	९	५२	३५	१८	१	४४	२६	९	५२	३५	१८	१	४४	२७	१०	५३	३४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०											
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०											
३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४											
२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९											
२४	२३	२२	२१	२०	१९	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	१२	११	१०	९	८	७											
१६	२४	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२५	३३	४१	४८	५६	४	१२	१९	२७	३५	४२											
१७	०४	३२	६	९	५२	३५	१८	१४	३२	६	९	५२	३५	१८	१४	४२	७	१०	५२											

'शुक्रमध्यमसारणीयम्'।

दि.																														
ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०											
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४											
अं.	०	१	३	४	६	८	९	११	१२	१४	१६	२	१८	४	२०	६	२२	८	२४											
क.	०	३६	१२	४८	२४	-	०	३६	१२	४९	२५	१	२	३	५	६	७	८	१०	११										
वि.	०	७	१५	२३	३०	३८	४६	५३	१	९	१६	३३	५०	६	२३	४०	५६	१३	३०											
प्र.वि	०	४०	२०	०	४०	२१	१	४१	२१	१	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८											
वि.प्र.	०	१२	२४	३६	४८	१	१३	२५	३७	४९	२	४	६	७	९	११	१३	१५	१७											
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०											
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०											
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०											
०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०											
५	१०	४	९	२	८	१	६	०			५	१०	४	९	३	८	१	७	०											
१०	२०	०	१०	२१	१	११	२१	१			१२	२४	६	१८	०	१२	२४	७	१९											
१२	२५	३८	५१	३	१६	२९	४२	५५			७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०											
४७	३४	२१	८	५५	४२	२९	१६	३			५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०											
०	०	०	१	१	१	२	२	२			३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८											
१९	३७	५६	१४	३३	५२	११	२९	४८			७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३											

'शुक्रस्यसक्षेपचक्रनिघ्नध्रुवकाः'। 'राश्यादयः।' 'धनम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०										
६	५	३	२	१	१	१	१०	८	७	६	४	३	२	०	११	९	८	७	५	४	३									
१५	४	२३	११	०	१९	८	२६	१५	४	२३	१२	०	१९	८	२७	१६	४	२३	१२	१										
२८	१५	२	४९	३६	२३	११	५८	४५	३२	१९	६	५४	४१	२८	१५	२	४९	३७	२४	११										
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०										

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'शुक्रपतीफलसारणी'। अंशादि 'धनम' अतःपलफलमपिग्राह्यं तत्कलादि ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	३	४	६	८	९	११	१२	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३२	
३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४९	२५	१	३७	१३	४९	२५	१	३८	१४	५०	२६	२	
०	७	१५	२३	३०	३८	४६	५३	१	९	१६	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१८	२५	३३
०	४०	२०	०	४०	२१	१	४१	२१	१	४२	२२	२	४२	२२	३	४३	२३	३	४३	२४
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	
३३	३५	३६	३८	४०	४१	४३	४४	४६	४८	४९	५१	५२	५४	५६	५७	५९	०	२	४	
३८	१४	५०	२७	३	३९	१५	५१	२७	३	३९	१६	५२	२८	४	४०	१६	५२	२८	५	
४१	४८	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३६	४३	५१	५९	६	
४	४४	२४	४	४५	२५	५	४५	२५	६	४६	२६	६	४६	२७	७	४७	२७	७	४८	
१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
५	७	८	१०	१२	१३	१५	१६	१८	२०	२१	२३	२४	२६	२८	२९	३१	३२	३४	३६	
४१	१७	५३	२९	५	४१	१८	५४	३०	६	४२	१८	५४	३०	७	४३	१९	५५	३१	७	
१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३१	३८	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	४०	
२८	८	४८	२८	९	४९	२९	९	४९	३०	१०	५०	३०	१०	५१	३१	११	५१	३१	१२	
१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	

'शनिमध्यमसारणीयम'।

दि.ग.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	
क.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
वि.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४०	
प्र.वि.	०	२७	५४	२१	४९	१६	४३	११	३८	५	३२	५	३८	११	४४	१७	५०	२३	५५	
वि.प्र.	०	१७	३५	५२	९	२७	४४	१	१९	३६	५३	४६	४०	३३	२६	१९	१३	६	५९	

०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०		
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०		
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०		
०	०	०	०	०	०	०	०	१		१	२	३	४	५	६	७	८	१०		
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०		३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२७	१		
२०	४१	२	२३	४३	४	२५	४६	६		२७	५५	२२	५०	१७	४५	१३	४०	८		
४५	३०	१६	१	४७	३२	१८	३	४९		३४	९	४४	१९	५४	२८	३	३८	१३		
२८	५७	२६	५५	२४	५३	२२	५०	१९		४८	३७	२६	१४	३५	२४	१	२९	१८		
५	२४	५३	३७	२९	२२	१४	६	५९	५१		४३	२६	१०	५३	३६	१९	२	४६	२०	

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'शर्मेः सक्षेपचक्रनिघ्नध्रुवकाः' 'राश्यादयः' धनम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९		
११	७	२१	१०	६	१	९	५	१	८	४	०	८	३	११	७	३	१०	६	२		
८	०	२२	१४	७	२९	२१	१३	६	२८	२०	१२	४	२७	१९	११	३	२५	१८	१०		
२१	३३	४६	५८	११	२४	३६	४९	१	१४	२७	३९	५२	५	१७	३०	४२	५५	८	२०		
०	३७	१४	५१	२८	५४	२	१९	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३		

'शनिघटीफलसारणीयम्' । 'अंशादिकम्' । धनम् ।

'अतः पलफलमपिग्राह्यं तत्कलादि ज्ञेयम् ।'

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	
०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	
०	२७	५४	२१	४९	१६	४३	१०	३८	५	३२	०	२७	५४	२२	४९	१६	४३	११	३८	५	
०	१७	३४	५१	८	२५	४२	५९	१६	३३	५३	१०	२७	४४	१	१८	३५	५२	९	२६	४६	
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१		
४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०		
९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८		
३३	०	२७	५४	२२	४९	१६	४४	११	३८	५	३३	०	२७	५५	२२	४९	१६	४४	११		
३	२०	३७	५४	११	२८	४५	२	१९	४०	५७	१४	३१	४८	५	२२	३९	५६	१३	३३		
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२		
२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०		
१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२७		
३८	६	३३	०	२७	५५	२२	४९	१७	४४	११	३९	६	३३	०	२८	५५	२२	४९	१७		
५०	७	२४	४१	५८	१५	३२	४९	६	२६	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४२	५९	१७		

मध्यमसारणीप्रवेशरीति —

अभीष्ट दिनगण की इकाई इत्यादि जितनी संख्या हो उस संख्या के तुल्य कोष्ठ के नीचे के राश्यादिअंकोंका योग करे अर्थात् दिनगण की संख्या केवल इकाई हो तो इकाईके तुल्य कोष्ठके नीचे के राश्यादि 'दिनगणोत्पन्नग्रह' होता है। यदि दिनगणकी संख्या दहाई हो तो इकाईके नीचेके अंक और दहाई कोष्ठके नीचेके अंकोंका योग करे तब 'दिनगणोत्पन्नग्रह' होता है। दिनगण की संख्या सेकड़ा हो तो इकाई, दहाई और सेकड़ा इन तीनों संख्याओंके समान कोष्ठ के नीचे के अंकों का योग करे तब 'दिनगणोत्पन्नग्रह' होता है। एवं दिनगणकी संख्या हजार हो तो इकाई, दहाई, सेकड़ा और हजार इन चारों संख्याओंके समान कोष्ठके नीचेके राश्यादि अंकोंका योग करे तब 'दिनगणोत्पन्नग्रह' होता है। तदनन्तर दिनगणोत्पन्नग्रहमें सक्षेपचक्र (लब्ध) निघ्न ध्रुवकको युक्त करके जो राश्यादि हों

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उनमें इष्टकाल की घटी के तुल्य कोष्ठके अंशादि को युक्त करे और घटी कोष्ठमेंसे ही इष्टकाल के पलकी संख्याके तुल्यकोष्ठके अंकोंको कलादि में युक्त करे तब 'मध्यम ग्रह' होता है।

उदाहरण—

यहां दिनगण ९३ है यह दहाइ अर्थात् दो संख्याओंका है। इकाइ ३ के नीचेके रविमध्यम सारणी के कोष्ठके राश्यादि ०।२।५७।२४।३४।४२ में दहाई संख्या ९० के नीचेके राश्यादि २।२८।४२।१७।२०।५१ को युक्त किया तो ३।१।३९।४१।५५।३३ 'दिनगणोत्पन्न रवि' हुआ। वर्षगण ,१९ में १९ से भाग दिया तो १ लब्ध हुआ इसको चक्रमान कर १ इसके तुल्य रवि सक्षेपचक्रनिम्न ध्रुवक कोष्ठके राश्यादि ११।१९।१२।३८ को और इष्ट घटी ४६ के तुल्य रविघटी कोष्ठके अंशादि ०।४५।२०।१६।५२ को और इष्ट कालकी पल १३ के तुल्य घटी कोष्ठके नीचे के अंक ०।१२।४८।४६ को कलादि मानकर इन तीनों संख्याओंको पूर्वागत दिनगणोत्पन्न रवि ३।१।३९।४१।५५।३१ में युक्त किया तो २ राशि २१ अंश ३७ कला ५३ विकला 'तात्कालिकमध्यमरवि' हुआ। एवं मध्यम चन्द्रादियोंको साधे।

अथवा न्यास :—

दिनगण { ३=०।२।५७।२४।३४।४२
९०=+२।२८।४२।१७।२०।५१

९३=३। १।३९।४१।५५।३३ 'दिनगणोत्पन्न रवि'

चक्र { १=+११।१९।१२।३८।०।०

२।२०।५२।१९।५५।३३ 'सक्षेपचक्रनिम्न ध्रुवयुक्त दि. रवि'

इष्टकाल { घ. ४६= + ०।४५।२०।१६।५२
प. १३= +०।१२।४८।४६

२।२१।३७।५३।१।११ 'तात्कालिकमध्यमरवि'

चन्द्र, चन्द्रोच्च तथा राहुमें बीजसंस्कारकी रीति—

अभीष्ट शकमें १८०० को हीनकरे तब जो शेष बचे उसमें १०० से भाग दे तब जो लब्ध हो उसका वर्ग करे अर्थात् लब्धिको लब्धि से गुणे वह वर्ग होता है। तदनन्तर वर्ग में ७ से भाग दे लब्ध 'कलादि चान्द्र बीज' होता है। कलादि चान्द्रबीजको ४ से गुणकर जो गुणन फल हो तब वह 'कलादि चन्द्रोच्च बीज' होता है। एवं कलादि चान्द्रबीजको दो स्थानमें रखकर एकस्थानमें ४ से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको द्वितीय स्थानमें हीनकरे शेष 'कलादि राहुबीज' होता है। मध्यम चन्द्र, मध्यम चन्द्रोच्च तथा मध्यम राहु के कलादि में लब्ध कलादि बीजको सर्वदा धनकरे तब बीज संस्कृत मध्यम चन्द्रादि होते हैं।

उदाहरण—

अभीष्ट शक १८१९ में १८०० को हीन कियातो १९ शेष बचे। इनमें १०० से भाग दिया तो ०।११।२४ लब्ध हुए। इनका वर्ग किया अर्थात् गोमूत्रिकारीतिद्वारा गुणन किया तो ०।२।१० वर्ग हुआ इसमें ७ से भाग दिया तो लब्ध ०।०।१८।३४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'कलादि चान्द्रबीज' हुआ। इसको मध्यम चन्द्र ५।४।४५।३८।४२।२ में धन किया अर्थात् युक्त किया तो ५।४।४५।३९।०।३६ 'बीजसंस्कृत मध्यम चन्द्र' हुआ।

कलादि चान्द्रबीज ०।०।१८।३४ को ४ से गुणा तो ०।१।१४।१७ 'कलादि चन्द्रोच्च बीज' हुआ। इसको मध्यम चन्द्रोच्च १।०।४१।३०।१५।२१ में युक्त किया तो १।०।४१।३१।२९।३८ 'बीजसंस्कृतमध्यमचन्द्रोच्च' हुआ।

कलादि चान्द्रबीज ०।०।१८३४ को दो स्थानमें रखकर एकस्थानमें ४ से भाग दिया तो ०।०।४।३८ लब्ध हुए। इनको द्वितीय स्थानमें स्थित चान्द्रबीज ०।०।१८।३४ में हीन किया तो ०।०।१३।५६ 'कलादि राहुबीज' हुआ। इसको मध्यम राहु ९।१४।५२ ४९।११।४९ में युक्त किया तो ९।१४।५२।४९।२५।४५ 'बीज संस्कृत मध्यम राहु' हुआ।

भुजसाधनरीति —

केन्द्रं त्रिभोनं स्वयमेव दोः स्यात्त्रिभाधिकं तर्कमतो विशोध्यम्।
षड्भोनितं षड्गृहतोऽधिकं चेदङ्काधिकं चक्रमतो विशेष्यम् ॥ ८ ॥

'केन्द्र' यदि ३ राशिसे न्यून (अल्प) हो तो वह स्वयं 'भुज' होता है अर्थात् केन्द्र के राश्यादि के तुल्य भुजके राश्यादि जानने चाहिएँ। यदि केन्द्र के राश्यादि ३ राशि से अधिक और ६ राशिसे न्यून हों तो केन्द्रके छः राशि में अर्थात् ६।०।०।० में हीन करे शेष 'राश्यादिभुज' होता है। 'केन्द्र' छः राशि से अधिक और नौ राशिसे न्यून हो तो केवल केन्द्रकी राशि में छः राशिको हीनकरे शेष 'राश्यादि भुज' होता है। एवं केन्द्र ९ राशीसे अधिक और १२ राशिसे न्यून हो तो केन्द्र को १२।०।०।० में हीनकरे शेष 'केन्द्रका राश्यादि भुज' होता है। २।१५।५०।८ राश्यादि केन्द्र है यह ३ राशिसे न्यून है अतः यह केन्द्र २।१५।५०।८ 'स्वयं राश्यादि भुज' हुआ।

४।१५।२१।४० राश्यादि केन्द्र है। यह ३ राशिसे अधिक है अतः केन्द्र के राश्यादि को ६।०।०।० में हीन किया तो शेष १।१४।३८।२० 'राश्यादि भुज' हुआ। ७।२८।४।२५ राश्यादि केन्द्र है। यह ६ राशि से अधिक है अतः केन्द्रकी राशि ७ में ६ राशि को हीन किया तो शेष १।२८।४।२५ 'राश्यादि भुज' हुआ।

१०।१२।२४।४२ राश्यादि केन्द्र है। यह ९ राशिसे अधिक है इसलिए केन्द्र के राश्यादि को १२।०।०।० में हीन किया तो शेष १।१७।३५।१८ 'राश्यादि भुज हुआ।

गुरु तथा शनि के आकर्षण संस्कार की रीति—

अभीष्ट शक में १४८१ को हीनकरे तब जो शेष बचे उसमें ९१८ से भाग दे तब जो शेष बचे उसको २ से गुणकर १५३ से भाग दे लब्ध राश्यादि 'गुरु तथा शनिका आकर्षण केन्द्र' होता है। तदनन्तर आकर्षण केन्द्रका भुज बनाकर भुजांशों में ९ से भाग दे लब्ध अंशादि होते हैं। लब्ध अंशादि को दो स्थान में रखकर एकस्थान के अंशादिको २०।०।० में हीनकरके जो शेष बचे उससे द्वितीय स्थान में स्थापित अंशादियोंको गोमूत्रिका रीति से गुणकर तब जो गुणन फल हो उसको दो स्थान में रक्खे। तदनन्तर एकस्थान में ५ से भाग दे लब्ध 'गुरुका कलादि बीज' होता है। द्वितीय स्थानमें स्थित गुणन फलमें २ से भाग दे लब्ध 'शनिका कलादि बीज' होता है। पूर्वागत आकर्षण केन्द्र मेषादि ६ राशि में हो तो गुरुके कलादि बीजको धन और शनिके बीजको ऋण करे। यदि आकर्षण केन्द्र तुलादि छः राशिके अन्तर्गत हो तो गुरु के बीज को ऋण और शनि के बीज को धन करे तब बीज संस्कृत गुरु शनि होते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अभीष्टशक १८१९ में १४८१ को हीन किया तो ३३८ शेषवचे इनमें ९१८ से भाग दिया तो ३३८ शेषवचे । इनको २ से गुणा तो ६७६ हुए इनमें १५३ से भाग दिया तो लब्ध ४ राशि हुई । शेष ६४ को ३० से गुणा तो १९२० हुए इनमें १५३ से भाग दियातो लब्ध १२ अंश हुए । शेष ८४ को ६० से गुणातो ५०४० हुए इनमें १५३ से भाग दिया तो लब्ध ३२ कला हुई । शेष १४४ को पुनः ६० से गुणा तो ८६४० हुए इनमें १५३ से भाग दियातो लब्ध ५६ विकला हुई । इस प्रकार ४ राशि १२ अंश ३२ कला ५६ विकला 'गुरु शनिका आकर्षण केंद्र' हुआ । इस आकर्षण केन्द्र ४।१२।३२।५६ का पूर्वोक्तरीति से भुज किया अर्थात् यह केन्द्र ३ राशि से अधिक है अतः इसको ६।०।०।० में शोधन किया तो १।१७।२७।४ 'राश्यादि भुज' हुआ+ इसके अंशादि ४७।२७।४ में ९ से भाग दिया तो लब्ध ५।१६।२० अंशादि हुए । इनको दो स्थानमें रखकर एक स्थानके अंशादि ५।१६।२० को २०।०।० में हीन किया तो १४।४३।४० शेषवचे । इनसे द्वितीयस्थानमें स्थिर अंशादि ५।१६।२० को गोमूत्रिका रीतिके अनुसार गुणन किया तो ७७।३८।५३ गोमूत्रिका गुणन फल हुआ । इसको दो स्थानमें रखकर एक स्थानके गुणनफल ७७।३८।५३ में ५ से भाग दिया तो लब्ध १५।३२ 'गुरुका कलादि बीज हुआ । एवं द्वितीयस्थान में स्थित गुणनफल ७७।३८।५३ में २ से भाग दिया तो लब्ध ३८।४९ 'शनिका कलादि बीज' हुआ । यहां आकर्षणकेन्द्र ४।१२।३२।५६ मेषादि ६ राशिके अन्तर्गत है अतः गुरुका बीज धन और शनि का बीज ऋण हुआ । मध्यम गुरु ४।२०।६।४१ में कलादि बीज १५।३२ को धन किया तो ४।२०।२२।१३ 'बीजसंस्कृत मध्यम गुरु' हुआ । एवं मध्यम शनि ७।३।४१।५२ में कलादि बीज ३८।४९ को ऋण किया तो ७।३।३।३ 'बीज संस्कृत मध्यम शनि' हुआ ।

'रव्यादीनां कलाद्या मध्यमगतयः'।

	ग्र.	र.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	बु.	म.	बु.कें	बृ	शु.	म.	शु.कें.	श.
कलाः		५९	७९०		६	३३१		५९२	४५		५	५९	९६	२
विकलाः		८	३५	४१	११२६		८	३२	०		८		८	०

'भौमादीनां राश्यादयः पाताः'

	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
रा.	०	०	२	१	३
अं.	२६	२४	१७	२३	०
क.	२६	४५	४	२६	२९
वि.	०	०	०	०	०

'रव्यादीनां राश्यादीनि मन्दोच्चानि'।

	र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श
रा.	२	४	७	५	९	८
अं.	१८	११	२३	२०	१७	८
क.	४१	४१	२६	१३	४०	२७
विक.	०	०	०	०	०	०

'रव्यादीनां विकलाद्या मन्दोच्चगतयः'।

ग्रहाः	र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
विकलाः	२२५	३२१	११७	१२६	२८	३०३
प्र.वि.	०	०	०	०	३०	०

'रव्यादीनां राश्यादयो ध्रुवाः'।

	ग्र.	र.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
रा.	०	०	१	१	१	१	१०	७	१०	७
अं	०	३	२	२	२	६	२०	६	१८	२२
क.	७	५५	५२	१३	४७	४९	३९	४७	१२	
वि.	३८	३६	५६	५८	२०	५०	१२	१०	३७	

'रव्यादीनां राश्यादयः क्षेपकाः'।

	ग्र.	र.	चं.	चं उ.	रा.	म.	बु.	बृ.	शु.	श
रा.	१	१	१	१	१०	९	२	१	९	६	११
अं.	१९	२५	२७	२७	९	२२	५	१५	८	
क.	५	१७	२२	३७	१२	३०	४०	२८	२१	
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'ग्रहाणां चक्रहतमन्दोच्चगतियुक्तमन्दोच्चानि'।

चक्राणि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
सू.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
	४१	४४	४८	५२	५६	५९	३	७	११	१४	१८	२२	२६	२९	३३	३७
	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५
मं.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३
	४१	४६	५१	५७	२	७	१३	१८	२३	२९	३४	३९	४५	५०	५५	१
	०	२१	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९	३०	५१	१२	३३	५४	१५
बु.	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५
	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५
बृ.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३४	३६	३८	४०	४२	४४
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०
शु.	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४५	४५	४६	४६	४७
	०	२८	५७	२५	५४	२२	५१	१९	४८	१६	४५	१३	४२	१०	३९	७
श.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९
	२७	३२	३७	४२	४७	५२	५७	२	७	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२
	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५

'ग्रहाणां राश्याद्याः दैनिकगतयः ।

सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१३	०	०	०	४	०	१	०
५९	१०	६	३	३१	५	४	३६	२
८	३४	४०	१०	२६	३२	५९	७	०
१८	५३	५५	४६	३१	२५	७	४०	२७
३४	२४	७	२२	८	१०	४३	१२	१८

'ग्रहाणां राश्याद्याः साप्ताहिकगतयः'।

सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	३	०	०	०	०	०	०	०
६	२	०	०	३	२८	०	११	०
५३	१४	४६	२२	४०	३८	३४	१२	१४
५७	४	४६	१५	५	४६	५३	५३	३
२०	१३	२५	२४	३७	५६	५४	४१	११
५८	४५	५१	३०	५४	८	१२	६	२

'ग्रहाणां केन्द्रच्युतयः'।

र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श
१½	१४	८	२५	½	५४

'ग्रहाणां मध्यममन्दकर्णाः'।

र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१००	१५२	३९	५२०	७२	९५४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इष्ट चक्रमें मन्दोच्चसाधनरीति —

इष्ट शकमें १८०० को हीनकरे शेष ' वर्षगण ' होता है । वर्षगणमें १९ से भाग दे लब्ध ' चक्र ' होता है । चक्र से मन्दोच्चगति विकला को गुणकर जो गुणनफल हो उसको मन्दोच्चकी विकलामें युक्त करे तब इष्ट चक्रमें ' ग्रहका राश्यादि स्पष्टमन्दोच्च ' होता है ।

उदाहरण—

इष्ट शक १८१९ में १८०० को हीन किया तो १९ शेषबचे इनमें १९ से भाग दिया तो लब्ध १ ' चक्र ' हुआ । रविमन्दोच्चगति विकला २२५ को चक्र १ से गुणा तो २२५ विकला हुई । इनमें ६० से भाग दिया तो लब्ध ३ कला और शेष ४५ विकला हुई । इनको रविमन्दोच्च २।१८।४१।० में युक्त कियातो २।१८।४४।४५ इष्ट चक्र १ में , सूर्यका स्पष्ट राश्यादि मन्दोच्च हुआ ' । एवं भौमादियोंके स्पष्ट मन्दोच्च साधे ।

' बीजसंस्कृतास्तात्कालिकमध्यमग्रहाः ' ।

सू.	चं.	चं.उ.	रा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श
२	५	१	९	५	१	४	१०	७
२१	४	०	१४	५	७	२०	४	३
३७	४५	४१	५२	७	४	२२	२९	३
५३	३९	३१	४९	३९	१३	१३	६	३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

१	२	३		४		५ स्टैण्डर्ड-		६ मध्यरेखा-		७ भूमध्य		८ चन्द्रदेशा-		९		१०				११ स्वोदयाः					
नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		रेखान्तरम्		न्तर प.		रेखान्तर यो.		न्तरम्		पलभा		चरखण्डानि				मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.
		अंशा	कलाः	अंशाः	कलाः	निमेः	विनि.	पलानि	वि.	योजना	वि.	कलाः	विक.	अं.	व्यं.	प्र	द्वि.	तृ.	मी.	कुं.		म.	ध.	वृ.	तु.
अंजनगाँव	द्राविनकोर	८	४०	७६	४८	+२२	४८	+ १०	२०	१३पू.	४८	− २	१८	१	५०	१८	१५	६	२६	१	२८४	३१६	२२८	३१४	२९७
अंजार	भुज(कच्छ)	२३	७	७०	२	+४९	५२	− ५७	२०	७६पू	२४	+१२	४४	५	७	५१	४१	१७	२२	८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
अंदमान	बंगोपसागर	१२	०	९२	४०	−४०	४०	+१६९	०	२२५पू.	१८	−३७	३३	२	३३	२५	२०	८	२५	४	२७९	३१४	३३०	३१९	३०४
अंबाला	पञ्जाब	३०	२१	७६	५२	+२२	३२	+ ११	०	१४पू.	४२	− २	२७	७	१	७०	५६	२३	२०	९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
अंबूर	मद्रास	१२	५०	७८	४५	+१५	०	+ २९	५०	३९पू	४८	− ६	३८	२	४४	२७	२२	९	२५	२	२७७	३१३	३३१	३२१	३०६
अंहर्स्ट	ब्रह्मदेश	१६	४	९७	३५	−६०	२०	+२१८	१०	२९०पू.	५४	−४८	२९	३	२७	३४	२८	११	२४	५	२७१	३११	३३३	३२७	३१३
अक्कलकोट	बम्बई	१७	३३	७६	१५	+२५	०	+ ४	५०	६पू	२४	− १	४	३	४८	३८	३०	१३	२४	१	२६९	३०९	३३५	३२९	३१७
अजमेर	राजपुताना	२६	२८	७४	४०	+३१	२०	− ११	०	१४पू.	४२	+ २	२७	५	५८	६०	४८	२०	२१	९	२५१	३०२	३४२	३४०	३३९
अटक	पञ्जाब	३३	५३	७२	१७	+४०	५२	− ३४	५०	४६पू.	२४	+ ७	४४	८	३	८०	६४	२७	१९	६	२३५	२९५	३४९	३६३	३५९
अदवानी	मद्रास	१५	३७	७७	१९	+२०	४४	+ १५	३०	२०पू.	४२	− ३	२७	३	२१	३३	२७	११	२४	६	२७२	३११	३३३	३२६	३१२
अनन्तपुरम्	,,	१४	४१	७७	३९	+१९	२४	+ १८	५०	२५पू.	६	− ४	११	३	९	३१	२५	१०	२४	८	२७४	३१२	३३२	३२४	३१०
अनुराधापुर	राजपुताना	२९	७	७३	६	+३७	३६	- २६	४०	३५प.	३६	+ ५	५६	६	४१	६७	५३	२२	२१	२	२४६	३००	३४४	३५२	३४६
अनुराधापुर	लङ्का	८	२२	८०	२३	+ ८	२८	+ ४६	१०	६१पू.	३६	−१०	१६	१	४६	१८	१४	६	२६	१	२८५	३१६	३२८	३१३	२९७
अमरपुरा	ब्रह्मा	२१	५५	९६	४	−५४	१६	+२०३	०	२७०पू	४२	−४५	७	४	४९	४८	३९	१६	२३	१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
अमरावती	सी. पी.	२०	५५	७७	४५	+१९	०	+ १९	५०	२६पू.	२४	− ४	२४	४	३५	४६	३७	१५	२३	३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
अमरोहा	यू. पी.	२८	५४	७८	३१	+१५	५६	+ २७	३०	३६पू.	४२	− ६	७	६	३७	६६	५३	२२	२१	३	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
अमृतसर	पञ्जाब	३१	३९	७४	५२	+३०	३२	− ९	०	१२प.	०	+ २	०	७	२४	७४	५९	२५	२०	५	२४०	२९७	३४७	३५८	३५३
अमेठी	यू. पी.	२६	८	८१	५०	+ २	४०	+ ६०	४०	८०पू.	५४	−१३	२९	५	५३	५९	४७	२०	२२	०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८

१ भारतीय प्रसिद्ध नगराणां नामानि २ देशनामानि ३ भारतवर्षे अक्षांशा उत्तराः ४ ग्रीनविचनगरतो रेखांशाः ५ स्टैण्डर्ड रेखांशाः ८२° । ३० स्टैण्डर्डरेखान्तरनिमेषादयः ६ भूमध्य (अम्बन्तिका) रेखांशाः ७५°।४६' अम्बन्तिकातोरेखान्तरपलादयः ७ अम्बन्तिकातोरेखान्तरयोजनादयः ८ चन्द्रे देशान्तरं-कलादि ९ पलत्राभाङ्गुदिनि १० चरखण्डानि ११ स्वोदयाः। एषांमुपयोगो निजनिजस्थानेषुकर्त्तव्यं इति। अत्रस्थानीयकालः स्टैण्डर्डरेखान्तरनिमेषादिभिः संस्कृतः कार्यस्तदा स्टैण्डर्डाभिधकालः (रेल्वे टाइम) स्वस्थानस्य ज्ञेय इति। आँग्लभाषायां अक्षांशा लैटिट्यूडसंज्ञकाः रेखांशा लौंगिट्यूडसंज्ञका ज्ञेया इति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रेखान्तरम्		भूमध्य-रेखान्तर यो.		भूमध्य-रेखान्तर यो.		देशान्तरम		पलभा		चरखण्डानि				स्वोदयाः मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	निमे.	विनि.	पलानि	विप.	यो.	वि.	क.	विक.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मी.	कुं.	म.	ध.	वृ.	तु.
अयोध्या	यू. पी.	२६	४८	८२	१५	+ १	०	+ ६४	५०	८६पू.	२४	−१४	२४	६	४	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
अर्काट	मद्रास	१२	५८	७९	२४	+१२	२४	+ ३६	२०	४८पू.	२४	− ८	४	२	४६	२८	२२	९	२५१	२७७	३१३	३३१	३२१	३०७
अल्मोडा	यू. पी.	२९	३७	७९	४०	+११	२०	+ ३९	०	५२पू.	०	− ८	४०	६	४९	६८	५५	२३	२११	२४४	२९९	३४५	३५४	३४७
अलवर	राजपूताना	२७	३४	७६	३८	+२३	२८	+ ८	४०	११पू.	३६	− १	५६	६	१६	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
अलीगंज	यू. पी.	२७	३०	७९	११	+१३	१६	+ ३४	१०	४५पू.	३६	− ७	३६	६	१५	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
अलीगढ़	यू. पी.	२७	५३	७८	६	+१७	३६	+ २३	२०	३१पू.	६	− ५	११	६	२१	६३	५१	२१	२१६	२४८	३०१	३४३	३५०	३४२
अलीबाग	बम्बई	१८	३८	७२	५५	+३८	२०	− २८	३०	३८प.	०	+ ६	२०	४	३	४०	३२	१३	२३९	२६७	३०९	३३५	३३१	३१९
असायिपुर	निजाम	२०	१६	७५	५८	+२६	८	+ २	०	२पू.	४२	− ०	२७	४	२६	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
अहमदनगर	बम्बई	१९	७	७४	४८	+३०	४८	− ९	४०	१२प.	५४	+ २	९	४	९	४१	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०
अहमदाबाद	बम्बई	२३	२	७२	३६	+३९	३६	− ३१	४०	४२प.	१२	+ ७	२	५	६	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
आकोला	सी. पी.	२०	४२	७७	२	+२१	५२	+ १२	४०	१६पू.	५४	− २	४९	४	३२	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
आगरा	यू. पी.	२७	१०	७८	२	+१७	५२	+ २२	४०	३०पू.	१२	− ५	२	६	१०	६२	४९	२१	२१७	२५०	३०१	३४३	३४८	३४१
आजमगढ़	यू. पी.	२६	३	८३	१३	− २	५२	+ ७४	३०	९९पू.	१८	−१६	३३	५	५२	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
आरा	बिहार	२५	३४	८४	४०	− ८	४०	+ ८९	०	११८पू.	४२	−१९	४७	५	४४	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
आवा	ब्रह्मदेश	२१	५२	९६	१	−५४	४	+२०	२३०	२७०पू.	०	−४५	०	४	४९	४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
आबू	राजपूताना	२४	३३	७२	७	+४१	३२	− ३६	३०	४८प.	४२	+ ८	७	५	२९	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
आसनसोल	बंगाल	२३	४२	८७	१	−१८	४	+११	२३०	१५०पू.	०	−२५	०	५	१६	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२
आसाम	आसाम	२६	०	९३	०	−४२	०	+१७	२२०	२२९पू.	४८	−३८	१८	५	५१	५८	४७	१९	२२१	२५२	३०३	३४१	३४६	३३७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रेखा. नि.	स्टैण्डर्ड रेखा. विनि.	भूमध्यरेखा. प.	भूमध्यरेखा. विप	रेखान्तरयो. थो.	रेखान्तरयो. वियो.	देशान्तरम् क.	पलभा वि.	चरखण्डानि अं.	चरखण्डानि व्यं	स्वोदयाः प्र.	स्वोदयाः द्वि.	स्वोदयाः तृ.	मे. मी.	वृ कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. ध.
इगतपुरी	बम्बई	१९	४०	७३	३५	+३५	४०	२१	५०	२९प.	६	+ ४	५१	४	१७	४३	३४	१४	२३६	२६५	३०८	३३६	३३३	३२२
इच्छापुरम	उडीशा	१९	७	८४	४४	− ८	५६	+८९	४०	११९पू.	३६	−१९	५६	४	९	४१	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०
इटारसी	सी. पी.	२२	३७	७७	४६	+१८	५६	+२०	०	२६पू.	४२	− ४	२७	५	०	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
इटावा	यू. पी.	२६	४७	७९	२	+१३	५२	+३२	४०	४३पू.	३६	- ७	१६	६	३	५०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
इडर स्टेट	बम्बई	२३	५०	७३	२	+३७	५२	−२७	२०	३६प.	२४	+ ६	४	५	१८	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२
इन्दापुर	,,	१८	७	७५	०	+३०	०	− ७	४०	१०प	१२	+ १	४२	३	५६	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
इन्दूर	निजाम	१८	४०	७८	१०	+१७	२०	+२४	०	३२पू	०	- ५	२०	४	३	४०	३२	१३	२३९	२६७	३०९	३३५	३३१	३१९
इन्दौर स्टेट	सी. पी.	२२	४४	७५	५१	+२६	३६	+ ०	५०	१पू	६	− ०	११	५	२	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
इलाहाबाद	यू. पी.	२५	२५	८१	५२	+ २	३२	+६१	०	८१पू.	१८	−१३	३३	५	४२	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
इस्लामाबाद	कश्मीर	३३	४३	७५	१७	+२८	५२	- ४	५०	६प.	२४	+ १	४	८	०	८०	६४	२७	१९९	२३५	२९५	३४९	३६३	३५९
उज्जैन	गवालियर	२३	१०	७५	४६	+२६	५६	+ ०	०	०प.	०	+ ०	०	५	८	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
उटकमण्ड	मद्रास	११	२७	७६	४४	+२३	४	+ ९	४०	१२पू.	५४	- २	९	२	२६	२४	१९	८	२५५	२८०	३१४	३३०	३१८	३०३
उडीशा	उडीशा	२१	२२	८४	३०	८	०	+८७	२०	११६पू.	२४	−१९	२४	४	४२	४७	३८	१६	२३२	२६१	३०६	३३८	३३७	३२६
उडुप्पी	मद्रास	१३	२०	७४	४०	+३१	२०	-११	०	१४प.	४२	+ २	२७	२	५१	२८	२३	९	२५१	२७६	३१३	३३१	३२२	३०७
उदयपुर	मेवाड़	२४	३७	७३	४४	+३५	४	२०	२०	२७प.	६	+ ४	३१	५	३०	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
उन्नाव	यू. पी.	२६	४८	८०	४३	+ ७	८	+४९	३०	६६पू.	०	-११	०	६	४	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
उस्मानाबाद	निजाम	१८	८	७६	६	+२५	३६	+ ३	२०	४पू.	२४	− ०	४४	३	५६	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
एटा	यू. पी.	२७	३५	७८	४०	+१५	२०	+२९	०	३८पू.	४२	− ६	२७	६	१६	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
एप्टाबाद	सीमा प्रान्त	३४	९	७३	१५	+३७	०	-२५	१०	३३प.	३६	+ ५	३६	८	८	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशा पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रेखा.		भूमध्य रेखा.		रेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभा		चरखण्डानि				स्वोदयाः मे.		मि.		मि.		मि.	
		अं.	क.	अं.	क.	नि	विनि	प.	विप.	यो.	वियो.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र	द्वि.	तृ.	मी.	कुं.	बृ.	म.	ध.	बृ.	तु.	बृ.	तु.
एलिचपुर	सी. पी.	२१	१६	७७	३३	+१९	४८	+	१७	५०	२३पू	४८	− ३	५८	४४	०४७	३७	१६	२३	२२	२६	२	३०	६	३३	८	३३	६	३२	६
ओंकारेश्वर (मान्धाता)	,,	२२	१३	७६	६	+२५	३६	+	३	२०	४पू	२४	− ०	४४	४५	४४९	३९	१६	२३	०	२६	०	३०	६	३३	८	३३	८	३२	८
औंध स्टेट	बम्बई	१७	२४	७४	५४	+३०	२४	−	८	४०	११प	३६	+ १	५६	३४	६३८	३०	१३	२४	१	२६	९	३०	९	३३	५	३२	९	३१	७
औरंगाबाद	सी. पी.	१९	५२	७५	२३	+२८	२८	−	३	५०	५प.	६	+ ०	५१	४२	०४३	३५	१४	२३	६	२६	४	३०	८	३३	६	३३	४	३२	२
कच्छभुज	बम्बई	२४	०	७०	०	+५०	०	−	५७	४०	७६प.	५४	+१२	४९	५२	१५३	४३	१८	२२	६	२५	६	३०	४	३४	०	३४	२	३३	२
कच्छार	आसाम	२४	५०	९२	५१	-४१	२४	+१	७०	५०	२२७पू	४८	-३७	५८	५३	३५५	४४	१८	२२	४	२५	५	३०	४	३४	०	३४	३	३३	४
कटक	उडीशा	२०	२८	८५	५४	−१३	३६	+१	०१	२०	१३५पू.	६	−२२	३१	४२	९४५	३६	१५	२३	४	२६	३	३०	७	३३	७	३३	५	३२	४
कटणी	सी. पी.	२३	४७	८०	२७	+ ८	१२	+	४६	५०	६२पू	२४	-१०	२४	५१	७५३	४२	१८	२२	६	२५	७	३०	४	३४	०	३४	१	३३	२
कडपी	मद्रास	१४	२८	७८	५२	+१४	३२	+	३१	०	४१पू.	१८	− ६	५३	३	६३१	२५	१०	२४	८	२७	४	३१	२	३३	२	३२	४	३१	०
कन्नौज	यू. पी.	२७	३	७९	५८	+१०	८	+	४२	०	५६पू.	०	− ९	२०	६	८६१	४९	२०	२१	८	२५	०	३०	२	३४	२	३४	८	३४	०
कन्याकुमारी	मद्रास	८	४	७७	३६	+१९	३६	+	१८	२०	२४पू	२४	− ४	४	१४	२१७	१४	६	२६	२	२८	५	३१	६	३२	८	३१	३	२९	६
कमदम	,,	१५	३४	७९	९	+१३	२४	+	३३	५०	४५पू.	६	− ७	३१	३२	०३३	२७	११	२४	६	२७	२	३११	३३	३३	३	३२	६	३१	२
करनाल	पञ्जाब	२९	४२	७७	२	+२१	५२	+	१२	४०	१६पू.	५४	− २	४९	६५	१६८	५५	२३	२११	२	२४	४	२९९	३४	३५	४	३४	७		
कर्पूरथला	,,	३१	२३	७५	२५	+२८	२०	−	३	३०	४प.	४२	+ ०	४७	७१	९७३	५९	२४	२०	६	२४	०	२९८	३४	६	३५	८	३५	२	
कर्नूल	मद्रास	१५	४९	७८	५	+१७	४०	+	२३	१०	३०पू.	५४	− ५	९	३२	४३४	२७	११	२४	५	२७	२	३११	३३	३३	३	३२	६	३१	३
करांची	सिंध	२४	५१	६७	१	+६१	५६	−	८७	३०	१६प.	४२	+१९	२७	५३	३५५	४४	१८	२२	४	२५	५	३०	४	३४	०	३४	३	३३	४
* कलकत्ता	बगाल	२२	३४	८८	२१	−२३	२४	+१	२५	५०	१६७पू.	४८	−२७	५८	४४	९४८	३९	१६	२३	१	२६	०	३०	६	३३	८	३३	८	३२	७
कलबुर्गा (गुलबर्गा)	निजाम	१७	२०	७६	५२	+२२	३२	+	११	०	१४पू.	४२	− २	२७	३४	५३७	३०	१२	२४	२	२६	९	३१०	३३	४	३२	९	३१	६	

+ अस्यां नगर्यां साम्प्रतं स्थानीयसमयो (लोकल टाइम) वर्तते सतु स्टैण्डर्डसमयतो २३।२४ निमेषा विनिमेषा (मिनिट) अग्रे वर्तते इति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्देशान्तमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रे.		भूमध्य रे.		भूमध्य रे. यो.		देशान्त.		पलभा		चरखण्डानि				स्वोदयाः									
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	विनि	पला.	विप.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. भी.	वृ. कुं.	मि म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
कलात	बिलोचिस्तान	२५	२१	६४	३	+७३	४८	−११७	१०	१५६प.	१२	+२६	२	५४	१५	७४५	१९	२२	२२	२५४	३०३	३४१	३४४	३३६
कलिंगपट्टण	मद्रास	१८	२०	८४	१०	− ६	४०	+ ८४	०	११२पू.	०	−१८	४०	३५	८४	०३२	१३	२३	९२	६७	३०९	३३५	३३१	३१९
कल्लिकोट (कालीकट)	,,	११	१५	७५	४९	+२६	४४	+ ०	३०	०पू	४२	− ०	७	२२	३२	४१९	८	२५	५२	८०	३१४	३३०	३१८	३०३
कल्याण	बम्बई	१९	१३	७३	१०	+३७	२०	− २६	०	३४प.	४२	+ ५	४७	४१	१४	२३३	१४	२३	७२	६६	३०८	३३६	३३२	३२१
कन्हाड	,,	१७	१८	७४	१२	+३३	१२	− १५	४०	२०प.	५४	+ ३	२९	३४	३७	३०	१२	२४	२२	६९	३१०	३३४	३२९	३१६
कांकेर	सी. पी.	२०	१५	८१	३२	+ ३	५२	+ ५७	४०	७६पू.	५४	−१२	४९	४२	६४	४३	५१	२३	५२	६४	३०७	३३७	३३४	३२३
कांगडा	पञ्जाब	३२	५	७६	१८	+२४	४८	+ ५	२०	७पू	६	− १	११	७३	१५	६०	२५	२०	४२	३९	२९७	३४७	३५९	३५४
कागल	बम्बई	१६	३४	७४	१८	+३२	४८	१४	४०	१९प.	२६	+ ३	१६	३३	४३६	२९	१२	२४	३२	७०	३१०	३३४	३२८	३१५
कांचीपुरम (कांजीवरम)	मद्रास	१२	५०	७९	४५	+११	०	+ ३९	५०	५३पू.	६	− ८	५१	२४	४२७	२२	९	२५	२२	७७	३१३	३३१	३२१	३०६
कांची	,,	९	५६	७६	१२	+२५	१२	+ ४२	०	५पू.	४८	− ०	५८	२	६२	११७	७	२५	८२	८२	३१५	३२९	३१६	३००
काठमांडू	नेपाल	२७	४२	८५	१२	−१०	४८	+ ९४	२०	१२५पू.	४८	−२०	५८	६१	८६	३५०	२१	२१	६२	४९	३०१	३४३	३४९	३४२
काठियावाड़	बम्बई	२२	०	७१	०	+४६	०	४७	४०	६३प.	३६	+१०	३६	४५	३४९	३९	१६	२३	०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
कांडी	लङ्का	७	१८	८०	४०	+ ७	२०	+ ४९	०	६५पू.	१८	−१०	५३	१३	२१५	१२	५	२६	४	२८७	३१७	३२७	३११	२९४
कानपुर	यू. पी.	२६	२८	८०	२१	+ ८	३६	+ ४५	५०	६१पू.	६	−१०	११	५५	८६०	४८	२०	२१	९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
कावेरीपुरम्	मद्रास	११	२०	७७	५०	+१८	४०	+ २०	४०	२७पू.	३६	− ४	३६	२२	४२४	१९	८	२५	५	२८०	३१४	३३०	३१८	३०३
कामठी	सी. पी.	२१	१४	७९	१५	+१३	०	+ ३४	५०	४६पू.	२४	− ७	४४	४४	१४७	३७	१६	२३	२	२६२	३०६	३३८	३३६	३२६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः स्टैण्डर्डरे.				भूमध्यरे.		भूमध्यरे. यो.		देशान्त.		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. व.	सिं. वृ.	क. तु.
		अं.	क	अं.	क.	नि.	वि.	पला.	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	अं.	प्र.	द्वि	तृ.						
कामोरीन	मद्रास	८	४	७७	३६	+१९	३६	+ १८	२०	२४पू.	२४	− ४	४	१	४२	१७	·४	६	२६२	२८५	३१६	३२८	३१३	२९६
कालाबाग	पञ्जाब	३२	५८	७१	३६	+४३	३६	+ ४१	४०	५५प.	३६	+ ९	१६	७	४७	७८	६२	२६	२०१	२३७	२९६	३४८	३६१	३५७
कालिञ्जर	सी. पी.	२५	१	८०	३२	+ ७	५२	+ ४७	४०	६३पू.	३६	−१०	३६	५	३५	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०१	३४१	३४४	३३५
काल्पी	यू. पी.	२६	१०	७९	३७	+११	३२	+ ३८	३०	५१पू.	१८	− ८	३३	५	५४	·९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३२८
काशगंज	,,	२७	४७	७८	३७	+१५	३२	+ २८	३०	३८पू.	०	− ६	२०	६	१९	६३	५१	२१	२१६	२४८	३०१	३४३	३५०	३४२
* काशी	,,	२५	२०	८३	२	− २	८	+ ७२	४०	९६पू.	५४	−१६	९	५	४१	५७	४५	१९	२२२	२५४	३०३	३४१	३४४	३३६
काश्मीर	काश्मीर	३४	०	७७	०	+२२	०	+ १२	२०	१६पू.	२४	− २	४४	८	६	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०
किचूर	बम्बई	१५	३५	७४	४८	+३०	४८	− ९	४०	१२प	५४	+ २	९	३	२१	३३	२७	११	२४६	२७२	३११	३३३	३२६	३१२
किसनगढ़	राजपूताना	२७	५३	७०	४७	+४६	५२	− ४९	५०	६६प.	२४	+११	४	६	२१	६३	५१	२१	२१६	२४८	३०१	३४३	३५०	३४२
कूचविहार	बंगाल	२६	२०	८९	२९	−२७	५६	+१३७	१०	१८२पू.	५४	−३०	२९	५	५९	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
कुम्भकोणम्	मद्रास	१०	५७	७९	२२	+१२	३२	+ ३६	०	४८पू.	०	− ८	०	२	२०	२३	१९	८	२५६	२८०	३१४	३३०	३१८	३०२
कुर्ग	मैसूर	१२	२०	७६	१०	+२५	२०	+ ४	०	५पू.	१८	− ०	५३	२	३८	२६	२१	९	२५३	२७८	३१३	३३१	३२०	३०५
कुन्नूर	मद्रास	११	२०	७६	५०	+२२	४०	+ १०	४०	१४प	१२	− २	२२	२	२३	२४	१९	८	२५५	२८०	३१४	३३०	३१८	३०३
कुरुमण्डल	,,	१३	६	८०	३०	+ ८	०	+ ४७	२०	६३पू.	६	−१०	३१	२	४७	२८	२२	९	२५१	२७७	३१३	३३१	३२१	३०७
कुरुन्दवाड	बम्बई	१६	४१	७४	२४	+३२	२४	− १३	४०	१८प.	१२	+ ३	२	३	३६	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
कूर्म (कुरम)	सीमाप्रान्त	३३	४८	७०	१२	+४९	१२	− ५५	४०	७४प.	१२	+१२	२२	८	२	८०	६४	२७	१९९	२३५	२९५	३४९	३६३	३५९
कृष्णागिरि	मद्रास	१२	३२	७८	१६	+१६	५६	+ २५	०	३३प.	१८	− ५	३३	२	४०	२७	२१	९	२५२	२७८	३१३	३३१	३२०	३०६

* अस्यां नगर्यामधुना स्टैण्डर्डसमयो वर्ततेसतुस्थानीयसमयतो २ द्वौ निमेषौ ८ अष्ट विनिमेषाः पश्चाद्वर्त्तत इति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरणं तृतीयम्

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रे.		भूमध्य-रेखा.		भूमध्य-रेखा. यो.		देशान्त.		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	वि.	पला	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मी.	कुं.	म.	ध.	वृ.	तु.
कृष्णनगर	बंगाल	२३	२४	८८	३३	−२४	१२	+१२७	५०	१७०	पू.	२४	−२८	२४	५	११	५२	४१	१७	२२७	२५८	३०५	३३९	३४०	३३१
कृष्णराजपेट	मैसूर	१२	४०	७६	२८	+२४	८	+ ७	०	९	पू.	१८	− १	३३	२	४२	२७	२२	९	२५२	२७७	३१३	३३१	३२१	३०६
कैथल	पंजाब	२९	४८	७६	२६	+२४	१६	+ ६	४०	८	पू.	५४	− १	२९	६	५२	६९	५५	२३	२१०	२४४	२९९	३४५	३५४	३४८
कैमलपुर (कैम्पबेलपुर)	,,	३३	४७	७२	२३	+४०	२८	= ३३	५०	४५	प.	६	+ ७	३१	८	२	८०	६४	२७	१९९	२३५	२९५	३४९	३६३	३५९
कोकोनाडा	मद्रास	१६	५७	८२	१५	+ १	०	+ ६४	५०	८६	पू.	२४	−१४	२४	३	३९	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
कोचीन	कोचीन स्टेट	९	५८	७६	१७	+२४	५२	+ ५	१०	६	पू.	५४	− १	९	२	१२	२२	१८	७	२५७	२८१	३१५	३२९	३१७	३०१
कोटा	राजपूताना	२५	९	७५	५३	+२६	२८	− १	१०	१	पू.	३६	− ०	१६	५	३८	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
कोनवडे	बम्बई	१७	५	७३	१८	+३६	४८	− २४	४०	३२	प.	५४	+ ५	२९	३	४१	३७	२९	१२	२४२	२७०	३१०	३३४	३२८	३१६
कोदरू	मद्रास	१४	४९	७६	१६	+२४	५६	+ ५	०	६	पू.	४२	− १	७	३	१०	३२	२५	११	२४७	२७४	३११	३३३	३२४	३११
कोप्पले	निजाम	१५	२०	७६	१२	+२५	१२	+ ४	२०	५	पू.	४८	− ०	५८	३	१८	३३	२६	११	२४६	२७३	३११	३३३	३२५	३१२
कोमिल्ला	बंगाल	२३	२५	९१	१३	-३४	५२	+१५४	३०	२०	६	पू.	०	−३४	२०	५	११	५२	४१	१७	२२७	२५८	३०५	३३९	३४०	३३१
कोयमबतूर	मद्रास	१०	५९	७६	५८	+२२	८	+ १२	०	१६	पू.	०	− २	४०	२	२०	२३	१९	८	२५६	२८०	३१४	३३०	३१८	३०२
कोलम्बो	लङ्का	६	५६	७९	५६	+१०	१६	+ ४१	४०	५५	पू.	३६	− ९	१६	१	२७	१४	१२	५	२६५	२८७	३१७	३२७	३११	२९३
कोल्हापुर स्टेट	बम्बई	१६	४३	७४	१६	+३२	५६	− १५	०	२०	प.	०	+ ३	२०	३	३६	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
कोहाट	सीमा प्रान्त	३३	३६	७१	२९	+४४	४	− ४२	५०	५७	प.	६	+ ९	३१	७	५८	८०	६४	२७	१९९	२३५	२९५	३४९	३६३	३५९
क्वांगतुंग	ब्रह्मदेश	२१	७	१००	३७	−७२	२८	+२४८	३०	३३	पू.	१८	५५	१३	४	३८	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
क्वैटा	बिलोचीस्तान	३०	१२	६७	०	+६२	०	− ८७	४०	११६	प.	५४	+१९	२९	६	५९	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
खंडवा	सी. पी.	२१	५०	७६	२३	+२४	२८	+ ६	१०	८	पू.	१२	− १	२२	४	४८	४८	३८	१६	२३१	२६१	३०६	३३८	३३७	३१७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशा पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रेखा. नि.	स्टैण्डर्ड रेखा. विनि.	भूमध्य-रेखा. प.	भूमध्य-रेखा. विप.	भू. म. रेखान्तर यो.	भू. म. रेखान्तर वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
खंडवारा	उडीशा	२०	१६	८५	१३	−१०	५२	+	९४	३०	१२६पू.	०	−२१	०	४	२६	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
खानदेश	बम्बई	२०	४५	७५	०	+३०	०	−	७	४०	१०प.	१२	+ १	४२	४	३३	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
खामगाँव	सी. पी.	२०	४२	७६	३७	+२३	३२	+	८	३०	११पू.	१८	− १	५३	४	३२	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
खाशिया डोंगर	आसाम	२५	१०	९१	०	−३४	०	+	१५	२०	२०३पू.	६	−३३	५१	५	३८	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
खिलचीपुर	सी. पी.	२४	२	७६	३७	+२३	३२	+	८	३०	११पू.	१८	− १	५३	५	२१	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३२
खीरी	यू. पी.	२७	५४	८०	४८	+ ६	४८	+	५०	२०	६७पू.	६	−११	११	६	२१	६३	५१	२१	२१६	२४८	३०१	३४३	३५०	३४२
खुरजा	,,	२८	१५	७७	५०	+१८	४०	+	२०	४०	२७पू.	३६	− ४	३६	६	२७	६४	५२	२१	२१५	२४७	३०१	३४३	३५१	३४३
खुलना	बंगाल	२२	४९	८९	३७	−२८	२८	+	१३८	३०	१८४पू.	४२	−३०	४७	५	३	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
खुशालगढ़	पंजाब	३२	१८	७२	२४	+४०	२४	−	३३	४०	४४प	५४	+ ७	२९	७	३५	७६	६१	२५	२०३	२३८	२९७	३४७	३६०	३५५
खैरपुर	,,	२९	३४	७२	१७	+४०	५२	−	३४	५०	४६प.	२४	+ ७	४४	६	४९	६८	५५	२३	२११	२४४	२९९	३४५	३५४	३४७
खैरपुर स्टेट	सिन्ध	२७	२८	६८	४४	+५५	४	−	७०	२०	९३प.	४८	+१५	३८	६	१४	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
खैरागढ़	सी. पी.	२१	२६	८१	२	+ ५	५२	+	५२	४०	७०प.	१२	−११	४२	४	४३	४७	३८	१६	२३२	२६१	३०६	३३८	३३७	३२६
खैबरघाटी	सीमा प्रान्त	३४	६	७१	५	+४५	४०	−	४६	५०	६२पू.	२४	+१०	२४	८	७	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०
गंजाम	(उडीशा) मद्रास	१९	२२	८५	६	−१०	२४	+	९३	२०	१२४पू.	२४	−२०	४४	४	१३	४२	३४	१४	२३७	२६५	३०८	३३६	३३३	३२१
गंटूर	,,	१६	१५	८०	२५	+ ८	२०	+	४६	३०	६२पू.	०	−१०	२०	३	२९	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४
गढ़वाल	यू. पी.	३०	१५	७९	३०	+१२	०	+	३७	२०	४९पू.	४७	− ८	१८	६	५९	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
गढ़शङ्कर	पञ्जाब	३१	१३	७६	११	+२५	१६	+	४	१०	५पू.	३६	− ०	५६	७	१७	७३	५८	२४	२०६	२४१	२९८	३४६	३५७	३५२
गढवाल	निजाम	१६	१३	७७	४८	+१८	४८	+	२०	२०	२७पू.	६	− ४	३१	३	२९	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्य-रेखान्तर यो.		भूमध्य-रेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि					स्वोदयाः मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	निमे.	विनि	पलानि	विप.	यो.	वि.	क.	विक.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मी.	कुं.	म.	ध.	वृ.	बु.
गया	बिहार	२४	४६	८५	५	−१०	२०	+ ९३	१०	१२४पू.	१२	−२०	४२	५	३२	५५	४४	१८	२२	४	२५	५	३०	४	३४०	३४३	३३४
गाजीपुर	यू. पी.	२५	३५	८३	३५	− ४	२०	+ ७८	१०	१०४पू	१२	−१७	२२	५	४५	५७	४६	१९	२२	२	२५	३	३०	३	३४१	३४५	३३६
गाजीयाबाद	,,	२८	४०	७७	२८	+२०		८ + १७	०	२२पू.	४२	− ३	४७	६	३४	६६	५३	२२	२१	३	२४	६	३००	३४४	३५२	३४५
गिलगित	काश्मीर	३५	५५	७४	१८	+३२	४८	− १४	४०	१९प.	३६	+ ३	१६	८	४१	८७	६९	२९	१९	२	२३	०	२९	३	३५१	३६८	३६६
गुजरात	बम्बई	२३	०	७३	३०	+३६	०	− २२	४०	३०प.	१२	+ ५	२	५	६	५१	४१	१७	२२	८	२५	८	३०५	३३९	३४०	३३०
गुजरात	पञ्जाब	३२	३६	७४	५	+३३	४०	− १६	५०	२२प.	२४	+ ३	४४	७	४०	७७	६१	२६	२०	२	२३	८	२९६	३४८	३६०	३५६
गुजरांवाला	,,	३२	१०	७४	१४	+३३	४	+ १५	२०	२०प.	२४	+ ३	२४	७	३३	७५	६०	२५	२०	४	२३	९	२९७	३४७	३५९	३५४
गुड़गाँव	,,	२८	३७	७७	४	+२१	४४	+ १३	०	१७पू.	१८	− २	५३	६	३३	६५	५२	२२	२१	४	२४	७	३००	३४४	३५१	३४४
गुना	सी. पी.	२४	४०	७७	२०	+२०	४०	+ १५	४०	२०पू.	५४	− ३	२९	५	३१	५५	४४	१८	२२	४	२५	५	३०४	३४०	३४३	३३४
गुरुदासपुर	पञ्जाब	३२	३	७५	२७	+२८	१२	− ३	१०	४प.	१२	+ ०	४२	७	३१	७५	६०	२५	२०	४	२३	९	२९७	३४७	३५९	३५४
गुलबर्गा	निजाम	१७	१९	७६	५४	+२२	२४	+ ११	२०	१५पू.	६	− २	३१	३	३८	३६	२९	१२	२४	३	२७	०	३१०	३३४	३२८	३१५
गोकर्ण	बम्बई	१४	३२	७४	२९	+३२	४	− १२	५०	१७प.	६	+ २	५१	३	७	३१	२५	१०	२४	८	२७	४	३१२	३३२	३२४	३१०
गोकाक	,,	१६	११	७४	५२	+३०	३२	− ९	०	१२प.	०	+ २	०	३	२९	३५	२८	१२	२४	४	२७	१	३१०	३३४	३२७	३१४
गोंडा	यू. पी.	२७	९	८१	५८	+ २	८	+ ६२	०	८२पू.	४२	−१३	४७	६	९	६१	४९	२०	२१	८	२५	०	३०२	३४२	३४८	३४०
गोपालपुर	उडीशा	१९	१६	८४	५७	− ९	४८	+ ९१	५०	१२२पू	२४	−२०	२४	४	१२	४२	३४	१४	२३	७	२६	५	३०८	३३६	३३३	३२१
गोविन्दपुर	बिहार	२३	५१	८६	३४	−१६	१६	+१०	८	० १४४पू.	०	−२४	०	५	१८	५३	४२	१८	२२	६	२५	७	३०४	३४०	३४१	३३२
गोवे	पुर्तुगीज राज्य	१५	२७	७३	३०	+३६	०	− २२	४०	३०प.	१२	+ ५	२	३	१९	३३	२७	११	२४	६	२७	२	३११	३३३	३२६	३१२
गोरखपुर	यू पी.	२६	४४	८३	२४	− ३	३६	+ ७६	२०	१०१पू.	४८	−१६	५८	६	३६	०४	८२	०	२१	९	२५	१	३०२	३४२	३४७	३३९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		मध्यरेखान्तर प.		भूमध्यरेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि				स्वोदयाः मे. मी.		वृ. कुं.		मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
		अंशा	कलाः	अंशाः	कलाः	निमेः	विनि.	पलानि	वि.	योजना	वि.	कलाः	विक.	अं.	अं.	प्र.	द्वि.	तृ.									
गोलकुण्डा	निजाम	१७	४१	८२	३१	− ०		४+	६७	३०	९०पू.	०	−१५	०	३	४९	३८	३१	१३	२४१	२६८	३०९	३३५	३३०	३१७		
गौलाघाट	आसाम	२६	३०	९४	०	−४६		०+	१८२	२०	२४३पू	६	−४०	३१	५	५९	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९		
गोहाटी	,,	२६	१२	९१	४७	−३७		८+	१६०	१०	२१३पू.	३६	−३५	३६	५	५४	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८		
ग्वालियर स्टेट	सी. पी.	२६	१२	७८	१०	+१७		२०+	२४	०	३२पू	०	− ५	२०	५	५४	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८		
ग्वालपाडा	आसाम	२६	११	९०	४१	−३२		४४+	१४९	१०	१९८पू.	५४	−३३	९	५	५४	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८		
चटगाँव	बंगाल	२२	०	९२	०	−३८		०+	१६२	२०	२१६पू.	२४	−३६	४	४	५१	४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७		
चनाव	पञ्जाब	३२	०	७३	१४	+३७		४−	२५	२०	३३प.	४८	+ ५	३८	७	३०	७५	६०	२५	२०४	२३९	२९७	३४७	३५९	३५४		
चन्द्रनगर	बंगाल	२२	५२	८८	२५	−२३		४०+	१२६	३०	१६८पू.	४२	−२८	७	५	४	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०		
चन्देरी	ग्वालियर	२४	४२	७८	११	+१७		१६+	२४	१०	३२पू	१२	− ५	२२	५	३१	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४		
चन्दोसी	यू. पी.	२८	२७	७८	४७	+१४		५२+	३०	१०	४०पू.	१२	− ६	४२	६	३०	६५	५२	२२	२१४	२८७	३००	३४४	३५१	३४४		
चम्बलपुर	सी. पी.	२४	४८	७५	२०	+२८		४०−	४२	०	५प.	४८	+ ०	५८	५	३२	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४		
चम्बा	पञ्जाब	३२	२९	७६	१०	+२५		२०+	४	०	५पू.	१८	− ०	५३	७	३८	७६	६१	२५	२०३	२३८	२९७	३४७	३६०	३५५		
चमन	बिलोचीस्तान	३०	३५	६३	२८	+७६		८-१२३		०	१६४प.	०	+२७	२०	७	५	७१	५७	२४	२०८	२४२	२९८	३४६	३५६	३५०		
चरखारी	सी. पी.	२५	२४	७९	४६	+१०		५६+	४०	०	५३पू.	१८	− ८	५३	५	४२	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६		
चांदपुर	बंगाल	२३	१२	९०	४०	−३२		४०+	१४९	०	१९८पू.	४२	−३३	७	५	८	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०		
चान्दा	सी. पी.	१९	५७	७९	२१	+१२		३६+	३५	५०	४७पू.	४८	− ७	५८	४	२१	४३	३५	१४	२३६	२६४	३०८	३३६	३३४	३२२		
चामराज नगर	मैसूर	११	५६	७७	०	+२२		०+	१२	२०	१६पू.	२४	− २	४४	२	३२	२५	२०	८	२५४	२७९	३१४	३३०	३१९	३०४		

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः नि.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रेखांशाः प.	भूमध्य-रेखांशाः मि.	भूमध्य-रे. यो. यो.	भूमध्य-रे. यो. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
चालीसगाँव	बम्बई	२०	३३	७५	१०	+२९	२०	−	६	०	८प.	०	+ १	२०	४	३०	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५ ३२४
चिकम मसूर	मैसूर	१३	१९	७५	४७	+२६	५२	+	०	१०	०पू.	१२	− ०	२	२	५०	२८	२३	९	२५१	२७६	३१३	३३१	३२२ ३०७
चिखलदरा	सी. पी.	२१	२४	७७	२२	+२०	३२	+	१६	०	२१पू.	१८	− ३	३३	४	४२	४७	३८	१६	२३२	२६१	३०६	३३८	३३७ ३२६
चितकलदुर्ग	मैसूर	१४	१४	७६	२६	+२४	१६	+	६	४०	८पू.	५४	− १	२९	३	३	३०	२४	१०	२४९	२७५	३१२	३३२	३२३ ३०९
चित्तर	कोचीन	१०	४२	७६	४७	+२२	५२	+	१०	१०	१३पू.	३६	− २	१६	२	१६	२३	१८	८	२५६	२८१	३१४	३३०	३१७ ३०२
चित्तूर	मद्रास	१३	१३	७९	८	+१३	२८	+	३३	४०	४४पू.	५४	− ७	२९	२	४९	२८	२३	९	२५१	२७६	३१३	३३१	३२२ ३०७
चित्तोडगढ़	मेवाड	२४	५४	७४	४१	+३१	१६	−	१०	५०	१४प.	२४	+ २	२४	५	३४	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४ ३३५
चित्रकूट	यू. पी.	२५	१२	८०	४५	+ ७	०	+	४९	५०	६६पू.	२४	−११	४	५	३९	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४ ३३५
चित्राल	सीमा प्रान्त	३५	४९	७१	४६	+४२	५६	-	४०	०	५३प.	१८	+ ८	५३	८	४०	८७	६९	२९	१९२	२३०	२९३	३५१	३६८ ३६६
चिनसुरा	बंगाल	२२	५३	८८	२७	−२३	४८	+१२	६५०	१६९पू.	६	−२८	११	५		४	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४० ३३०
चिपलूण	बम्बई	१७	३१	७३	२९	+३६	४		२२	५०	३०प	२४	+ ५	४	३	४७	३८	३०	१३	२४१	२६९	३०९	३३५	३२९ ३१७
चुनार	यू. पी.	२५	८	८२	५६	− १	४४	+	७१	४०	९५पू.	३६	−१५	५६	५	३८	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४ ३३५
चुरू	राजपूताना	२८	१९	७४	५८	+३०	८		८	०	१०प.	४२	+ १	४७	६	३२	६५	५२	२२	२१४	२४७	३००	३४४	३५१ ३४४
चेरापुंजी	आसाम	२५	१७	९१	४७	−३७	८	+१	६०	१०	२१३पू.	३६	−३५	३६	५	४०	५७	४५	१९	२२२	२५४	३०३	३४१	३४४ ३३६
चोवासा	बिहार	२२	३३	८५	५१	−१३	२४	+१	००	५०	१३४पू.	२४	−२२	२४	४	५९	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९ ३२९
चोवीस प्रगना	बंगाल	२२	३०	८८	३०	−२४	०	+१	२७	२०	१६९पू.	४८	−२८	१८	४	५८	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९ ३२९
छत्तीस गढ़	सी. पी.	२१	३०	८२	०	+ २	०	+	६२	२०	८३पू.	६	−१३	५१	४	४४	४७	३८	१६	२३२	२६१	३०६	३३८	३३७ ३२६
छतपुर	,,	२४	५४	७९	३८	+११	२८	+	३८	४०	५१पू.	३६	− ८	३६	५	३४	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४ ३३५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः नि.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रेखांशाः प.	भूमध्य-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रे. यो. यो.	भूमध्य-रे. यो. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र	चरखण्डानि द्वि	चरखण्डानि तृ	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
छपरा	बिहार	२५	४७	८४	४५	− ९	०	+ ८९	५०	११९पू.	४८	−१९	५८	५	४८	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
छिन्दवाडा	सी. पी.	२२	३	७८	५९	+१४	४	+ ३२	१०	४२पू.	५४	− ७	९	४	५२	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
जगदलपुर	,,	१९	५	८२	४	+ १	४४	+ ६३	०	८४पू.	०	−१४	०	४	८	४१	३३	१४	२३६	२६६	३०८	३३६	३३२	३२२
जगन्नाथगंज	बंगाल	२४	३९	८९	५०	−२९	२०	+१४०	४०	१८७पू.	३६	−३१	१६	५	३०	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	२४३	३३४
जगन्नाथपुरी	उडीशा	१९	४६	८६	०	−१४	०	+१०२	२०	१३६पू.	२४	−२२	४४	४	१९	४३	३५	१४	२३६	२६४	३०८	३३६	२३४	३२२
जंजीरा	बम्बई	१८	१५	७३	०	+३८	०	२७४०	३६प.	५४	+ ६	९	३	५७	३९	३२	१३	२४०	२६७	३०९	३३५	३३१	३१८	
जश्र(जत)पुर	,,	१७	३	७५	१५	+२९	०	५१०	६प.	५४	+ १	९	३	३९	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५	
जनकपुर	बिहार	२३	४३	८१	५०	+ २	४०	+ ६०४०	८०पू.	५४	−१३	२९	५	१६	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२	
जबलपुर	सी. पी.	२३	९	७९	५७	+१०	१२	+ ४१५०	५५पू.	४८	− ९	१८	५	८	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०	
जमखण्डी	बम्बई	१६	३०	७५	२०	+२८	४०	४२०	५प.	४८	+ ०	५८	३	३३	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४	
जमरूद	सीमाप्रान्त	३४	२	७१	२४	+४४	२४	४३४०	५८प.	१२	+ ९	४२	८	६	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०	
जमालपुर	मैमनसीं (बंगाल)	२४	५६	८९	५७	−२९	४८	+१४१	५०	१८९पू.	६	३१	३१	५	३५	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
जम्मू स्टेट	कश्मीर	३२	४४	७४	५२	+३०	३२	९	०	१२प.	०	+ २	०	७	४३	७७	६२	२६	२०२	२३७	२९६	३४८	३६१	३५६
जयपुर	राजपूताना	२६	५६	७५	४९	+२६	४४	+ ०	३०	०पू.	४२	०	७	६	६	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
जलगाँव	बम्बई	२१	५	७५	४०	+२७	२०	१	०	०प	७८	+ ०	१३	४	३७	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
जलपाईगुडी	बंगाल	२६	३२	८८	४६	−२५	४	+१३०	०	१७३पू.	१८	−२८	५३	५	५९	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
जलालाबाद	सीमान्त (अफगान)	३४	२४	७०	२६	+४८	१६	५३२०	७१प.	६	+११	५१	८	१३	८२	६६	२७	१९७	२३२	२९५	३४९	३६५	३६१	
जव्हार	बम्बई	१९	५७	७३	१२	+३७	१२	२५४०	३४प.	१२	+ ५	४२	४	२१	४३	३५	१४	२३६	२६४	३०८	३३६	३३४	३२२	

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्य-रेखान्तरम्		भूमध्य रे. यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि.				स्वोदयाः					
																				मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.
		अं	क.	अं.	क.	नि.	वि.	प.	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.		भी.	कुं.	म.	घ.	वृ.	तु.
जाकोबाबाद	सिन्ध	२८	१७	६८	२५	+५६	२०	−७३	३०	९८प.	०	+१६	२०	६	२७	६४	५२	२१		२१५	२४७	३०१	३४३	३५१	३४३
जाफराबाद	बम्बई	२०	५२	७१	२५	+४४	२०	−४३	३०	५८प.	०	+ ९	४०	४	३४	४६	३७	१५		२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
जामनगर	,,	२२	२७	७०	७	+४९	३२	−५६	३०	७५प.	१८	+१२	३३	४	५७	४९	४०	१६		२३०	२५९	३०६	३३८	३३९	३२८
जालन्धर	पञ्जाब	३१	२१	७५	३४	+२७	४४	− २	०	२प.	४२	+ ०	२७	७	१८	७३	५८	२४		२०६	२४१	२९८	३४६	३५७	३५२
जालना	निजाम	१९	५१	७५	५६	+२६	१६	+ १	४०	२पू.	१२	− ०	२२	४	१५	४३	३५	१४		२४६	२६४	३०८	३३६	३३४	३२२
जालौन	यू. पी.	२६	८	७९	२३	+१२	२८	+३६	१०	४८पू.	१२	− ८	२	५	५४	५९	४७	२०		२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
जाबरा स्टेट	सी पी.	२३	३७	७५	९	+२९	२४	− ६	१०	८प	१२	+ १	२२	५	१५	५२	४२	१७		२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
जींद	पञ्जाब	२९	१९	७६	२३	+२४	२८	+ ६	१०	८पू.	१२	− १	२२	६	४४	६७	५४	२२		२१२	२४५	३००	३४४	३५३	३४६
जुन्नर	बम्बई	१९	१६	७३	५८	+३४	८	−१८	०	२४प.	०	+ ४	०	४	१२	४२	३४	१४		२३७	२६५	३०८	३३६	३३३	३२१
जूनागढ	,,	२१	२९	७०	३६	+४७	३६	−५१	४०	६८प	५४	+११	२९	४	४३	४७	३८	१६		२३२	२६१	३०६	३३८	३३७	३२६
जैसलमेर	राजपूताना	२६	५५	७०	५७	+४६	१२	−४८	१०	६४प.	१२	+१०	४२	६	६	६१	४९	२०		२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
जोधपुर	,,	२६	२०	७३	१	+३७	५६	−२७	३०	३६प.	४२	+ ६	७	५	५६	५९	४७	२०		२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
जौनपुर	यू. पी.	२५	४६	८२	४४	− ०	५६	+६९	४०	९२पू.	५४	−१५	२९	५	४५	५७	४६	१९		२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
झंग	पञ्जाब	३१	१८	७२	१९	+४०	४४	−३४	३०	४६प.	०	+ ७	४०	७	१८	७३	५८	२४		२०६	२४१	२९८	३४६	३५७	३५२
झाबुआ	मध्यप्रदेश	२२	४५	७४	३८	+३१	२८	−११	२०	१५प.	६	+ २	३१	५	२	५०	४०	१७		२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
झालरापाटन	राजपूताना	२४	३२	७६	१२	+२५	१२	+ ४	२०	५पू.	४८	− ०	५८	५	२९	५५	४४	१८		२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
झांसी	यू. पी.	२५	२७	७८	३४	+१५	४४	+२८	०	३७पू.	१८	− ६	१३	५	४३	५७	४६	१९		२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
झेलम	पञ्जाब	३२	५५	७३	४३	+३५	८	−२०	३०	२७प.	१८	+ ४	३३	७	४६	७८	६२	२६		२०१	२३७	२९६	३४८	३६१	३५७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रे.		भूमध्य रे.		भूमध्य रे. यो.		देशान्त.		पलभा.			चरखण्डानि			स्वोदयाः					
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	विनि.	पला.	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.		प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. घ.	सिं. वृ.	क. तु.
टिकारी	विहार	२४	५७	८४	५३	− ९	३२	+ ९१	१०	१२१प.	३६	−२०	१६	५	३५	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
टीकमगढ़	सी. पी.	२४	४५	७८	५१	+१४	३६	+ ३०	५०	४१पू.	६	− ६	५१	५	३२	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
टेहरी स्टेट	यू. पी.	३०	४२	७८	३०	+१६	०	+ २७	२०	३६पू.	२४	− ६	४	७	७	७१	५७	२४	२०८	२४२	२९८	३४६	३५६	३५०
टोंक स्टेट	राजपूताना	२६	११	७५	४७	+२६	५२	+ ०	१०	०पू.	१२	− ०	२	५	५४	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
ट्रावनकोर	मद्रास	९	०	७७	०	+२२	०	+ १२	२०	१६पू.	२४	− २	४४	१	५४	१९	१५	६	२६०	२८४	३१६	३२८	३१४	२९८
ठाणा	बम्बई	१९	१३	७३	२	+३७	५२	− २७	२०	३६प.	२४	+ ६	४	४	११	४२	३३	१४	२३७	२६६	३०८	३३६	३३२	३२१
ठानोवुले-खान	सिन्ध	२५	२२	६७	५२	+५८	३२	− ७९	०	१०५प.	१८	+१७	३३	५	४१	५७	४५	१९	२२२	२५४	३०३	३४१	३४४	३३६
डमडम	बंगाल	२२	३७	८८	२८	−२३	५२	+१२७	०	१६९पू.	१८	−२८	१३	५	०	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
डिब्रूगड	आसाम	२७	२९	९४	५६	−४९	४४	+१९१	४०	२५५पू.	३६	−४२	३६	६	१५	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
डुमराव	विहार	२५	३३	८४	२१	− ७	२४	+ ८५	५०	११४पू.	२४	−१९	४	५	४४	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
डेराइस्मा-इलखां	सीमाप्रान्त	३१	५१	७०	५६	+४६	१६	− ४८	२०	६४प.	२४	+१०	४४	७	२७	७४	६०	२५	२०५	२३९	२९७	३४७	३५९	४५३
डेरा गाजीखां	,,	३०	४	७०	४९	+४६	४४	− ४९	३०	६६प.	०	+११	०	६	५७	६९	५६	२३	२१०	२४३	२९९	३४५	३५५	३४८
डोंगरगढ़	सी. पी.	२१	१२	८०	५०	+ ६	४०	+ ५०	४०	६७पू.	३६	−११	१६	४	३९	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
डोंगरपुर	राजपूताना	२३	५०	७३	५०	+३४	४०	− १९	२०	२५प.	४८	+ ४	१८	५	१८	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२
ढाका	बंगाल	२३	४५	९०	२६	−३१	४४	+१४६	४०	१९५पू.	३६	−३२	३६	५	१७	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२
तंजावर	मद्रास	१०	४५	७९	१०	+१३	२०	+ ३४	०	४५पू.	१८	− ७	३३	२	१७	२३	१८	८	२५६	२८१	३१४	३३०	३१७	३०२
तक्षशिला	पञ्जाब	३३	४०	७२	५०	+३८	४०	− २९	२०	३९प.	६	+ ६	३१	८	०	८०	६४	२७	१९९	२३५	२९५	३४९	३६३	३५९
ताडपत्री	मद्रास	१४	५६	७८	६	+१७	३६	+ २३	२०	३१पू.	६	− ५	११	३	१२	३२	२६	११	२४७	२७३	३११	३३३	३२५	३११

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्य-रेखान्तर यो.		भूमध्य-रेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः					
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	नि.	विनि.	पलानि	विप.	यो.	वि.	क.	विक.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
तासगांव	बम्बई	१७	२	७४	३६	+३१	३६	− ११	४०	१५प.	३६	+ २	३६	३	४०	३७	२९	१२	२४२	२७०	३१०	३३४	३२८	३१६
तिनेवेल्ली	मद्रास	८	४४	७७	४४	+१९	४	+ १९	४०	२६पू.	१२	− ४	२२	१	५१	१८	१५	६	२६१	२८४	३१६	३२८	३१४	२९७
तिलहर	यू. पी.	२७	५०	८०	९	+ ९	२४	+ ४३	५०	५८पू.	२४	− ९	४४	६	२३	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
तुना	कच्छ	२३	३	७०	१०	+४९	२०	− ५६	०	७४प.	४२	+१२	२७	५	६	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
तुमकूर	मैसूर	१३	२०	७७	८	+२१	२८	+ १३	४०	१८पू.	१२	− ३	२	२	५०	२८	२३	९	२५१	२७६	३१३	३३१	३२२	३०७
तुमलुक	बंगाल	२२	१८	८७	५८	−२१	५२	+१२२	०	१६२पू.	४२	−२७	७	४	५५	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
त्रिचनापल्ली	मद्रास	१०	५४	७८	४६	+१४	५६	+ ३०	०	४०पू.	०	− ६	४०	२	१९	२३	१९	८	२५६	२८०	३१४	३३०	३१८	३०२
त्रिचेन्दूर	,,	८	३०	७८	११	+१७	१६	+ २४	१०	३२पू.	१२	− ५	२२	१	४७	१८	१४	६	२६१	२८५	३१६	३२८	३१३	२९७
त्रिपति	,,	१३	४०	७९	२०	+१२	४०	+ ३५	४०	४७पू.	३६	− ७	५६	२	५५	२९	२३	१०	२५०	२७६	३१२	३३२	३२२	३०८
त्रिवेन्द्रम्	,,	८	२९	७६	५६	+२२	१६	+ ११	४०	१५पू.	३६	− २	३६	१	४७	१८	१४	६	२६१	२८५	३१६	३२८	३१३	२९७
थानेसर (कुरुक्षेत्र)	पञ्जाब	२९	५८	७६	५६	+२२	१६	+ ११	४०	१५पू.	३६	− २	३६	६	५४	६९	५५	२३	२१०	२४४	२९९	३४५	३५४	३४८
दतिया	यू. पी.	२५	४०	७८	३०	+१६	०	+ २७	२०	३६पू.	२४	− ६	४	५	४६	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
दमण	बम्बई	२०	२५	७२	५३	+३८	२८	+ २८	५०	३८प.	२४	+ ६	२४	४	२८	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
दमोह	सी. पी.	२३	५०	७९	२९	+१२	४	+ ३७	१०	४९पू.	३६	− ८	१६	५	१८	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२
दरभंगा	बिहार	२६	८	८५	५३	−१३	३२	+१०१	१०	१३४पू.	५४	−२२	२९	५	५३	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
दारजिलिंग	बंगाल	२७	३	८८	१८	−२३	१२	+१२५	२०	१६७पू.	६	−२७	५१	६	८	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
दिनाजपूर	,,	२५	३७	८८	४०	−२४	४०	+१२९	०	१७२पू.	०	−२८	४०	५	४५	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्यरेखान्तर प.		भूमध्य-रेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि					स्वोदयाः					
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	नि.	विनि.	पलानि	वि.	योजना	वि.	कला.	विक.	अं.	अं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
दिल्ली	दिल्ली	२८	३९	७७	१३	+२१	८+	१४	३०	१९पू.	१८−	३	१३	६	३३	६५	५२	२२	२१४	२४७	३००	३४४	३५१	३४४
दीनापुर	बिहार	२५	३८	८५	५	−१०	२०+	९३	१०	१२४पू	२४−	२०	४४	५	४५	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
दुमका	,,	२४	३०	८७	२०	−१९	२०+	११५	४०	१५४पू.	१२−	२५	४२	५	२८	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
दुर्ग	सी. पी.	२१	०	८१	१८+	४	४८+	५५	२०	७३पू.	४८−	१२	१८	४	३६	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३८	३२५
दुरगाई	सीमाप्रान्त	३४	३१	७१	५३	+४२	२८−	३८	५०	५१प.	४८+	८	३८	८	१५	८२	६६	२७	१९७	२३३	२९५	३४९	३६५	३६१
दवगढ़	सी. पी.	२१	५१	७८	५०	+१४	४०+	३०	४०	४०पू.	५४−	६	४९	४	४९	४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
देवप्रयाग	यू. पी.	३०	९	७८	३६	+१५	३६+	२८	२०	३७पू.	४८−	६	१८	६	५८	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
देवलाली	सी पी.	२०	३९	७८	३२	+१५	५२+	२७	४०	३६पू.	५४−	६	९	४	३१	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
देववन्द	यू. पी.	२९	४२	७७	४३	+१९	८+	१९	३०	२६पू	०−	४	२०	६	५१	६८	५५	२३	२११	२४४	२९९	३४५	३५४	३४७
देवास स्टेट	मालवा (सी. पी.)	२२	५८	७६	४	+२५	४४+	३	०	४पू.	०−	०	४०	५	५५	४१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
देहरादून	यू. पी.	३०	१९	७८	३	+१७	४८+	२२	५०	३०पू.	२४−	५	४	७	१	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
दोहद (दाहोद)	बम्बई	२२	५३	७४	१९	+३२	४४−	१४	३०	१९प.	१८+	३	१३	५	४	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
दौलताबाद	निजाम	१९	५७	७५	१५	+२९	०−	५	१०	६प.	५४+	१	९	४	२१	४३	३५	१४	२३६	२६४	३०८	३६६	३३४	३२२
द्वारिका	काठियावाड	२२	१५	६८	५९	+५४	४−	६७	५०	९०प	२४+	१५	४	४	५५	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
धर्मपुर	,,	२०	३२	७३	१३	+३७	८−	२५	३०	३४प.	०+	५	४०	४	३०	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
धर्मशाला	पञ्जाब	३२	१६	७६	३३	+२३	४८+	७	५०	१०पू	२४−	१	४४	७	३४	७६	६१	२५	२०३	२३८	२९७	३४७	३६०	३५५
धार स्टेट	सी. पी.	२२	३६	७५	२०	+२८	४०−	४	२०	५प.	४८+	०	५८	५	०	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
धारवाड	बम्बई	१५	२६	७५	१	+२९	५६−	७	३०	१०प.	०+	१	४०	३	१९	३३	२७	११	२४६	२७२	३११	३३३	३२६	३१२
धुलीया	,,	२०	५३	७४	४७	+३०	५२−	९	५०	१३प.	६+	२	११	४	३६	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रे. नि.	स्टैण्डर्ड रे. वि.	भूमध्य-रेखा. पला.	भूमध्य-रेखा. वि.	भूमध्य-रेखा. यो. यो.	भूमध्य-रेखा. यो. वि.	देशान्त. क.	देशान्त. वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. भी.	स्वोदयाः वृ. कु.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
धुले	सी. पी.	२५	२८	७९	७	+१३	३२	+ ३३	३०	४४पू.	४२	− ७	२७	५	४३	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
धेनकानल	उडीशा	२०	४०	८५	३८	−१२	३२	+ ९८	४०	१३१पू.	३६	−२१	५६	४	३१	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
धौलपुर	राजपूताना	२६	४०	७७	५३	+१८	२८	+ २१	१०	२८पू.	११	− ४	४२	६	२	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
ध्रांगधरा स्टेट	बम्बई	२२	५९	७१	३१	+४३	५६	− ४२	३०	५६प.	४२	+ ९	२७	५	५	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
नगीना	यू. पी.	२९	२७	७८	२९	+१६	४	+ २७	१०	३६पू.	१२	− ६	२	६	४६	६८	५४	२३	२११	२४५	२९९	३४५	३५३	३४७
नडीयाद	बम्बई	२२	४१	७२	५५	+३८	२०	− २८	३०	३८प.	०	+ ६	२०	५	१	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
नन्दुरबार	बम्बई	२१	२१	७४	१८	+३२	४८	− १४	४०	१९प.	३६	+ ३	१६	४	४१	४७	३७	१६	२३२	२६२	३०६	३३८	३३६	३२६
नरपुर	उडीशा	२०	२८	८५	७	−१०	२८	+ ९३	३०	१२४पू.	४२	−२०	४७	४	२९	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
नरसिंहगढ़	सी. पी.	२३	४४	७७	८	+२१	२८	+ १३	४०	१८पू.	१२	− ३	२	५	१६	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२
नरसिंहपुर	,,	२२	५७	७९	१५	+१३	०	+ ३४	५०	४६पू.	२४	− ७	४४	५	५	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
नवलगढ़	राजपूताना	२७	५१	७५	१८	+२८	४८	− ४४	०	६प	१२	+ १	२	६	२०	६३	५१	२१	२१६	२४८	३०१	३४३	३५०	३४२
नवानगर	बम्बई	२२	२७	७०	७	+४९	३२	− ५६	३०	७५प.	१८	+१२	३३	४	५७	४९	४०	१६	२३०	२५९	३०६	३३८	३३९	३२८
नशीराबाद	अजमेर (मेरवाडा)	२६	१८	७४	४६	+३०	५६	− १०	०	१३प.	१८	+ २	१३	५	५६	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
नहाण स्टेट	पञ्जाब	३०	३	७७	२१	+२०	३६	+ १५	५०	२१पू	६	− ३	३१	६	५७	६९	५६	२३	२१०	२४३	२९९	३४५	३५५	३४८
नागपुर	सी. पी.	२१	९	७९	५	+१३	४०	+ ३३	१०	४४पू	१२	− ७	२२	४	३९	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
नागपुर छोटा	बिहार	२३	०	८५	०	−१०	०	+ ९२	२०	१२३पू.	६	−२०	३१	५	६	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
नागाहित्स पर्वत	आसाम	२६	०	९४	२०	−४७	२०	+१८५	४०	२४७पू.	३६	−४१	१६	५	१	५८	४७	१९	२२१	२५२	३०३	३४१	३४६	३३७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखांशाः		भूमध्य-रेखांशाः		भूमध्य-रे. यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः					
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	वि.	प.	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
नागौद	सी. पी.	२४	३३	८०	३५	+ ७	४०	+ ४८	१०	६४पू.	१२	−१०	४२	५	२९	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
नागौर	राजपूताना	२७	१३	७३	४४	+३५	४	− २०	२०	२७प.	६	+ ४	३१	६	१०	६२	४९	२१	२१७	२५०	३०१	३४३	३४८	३४१
नाथद्वारा	मेवाड़	२४	५६	७३	४९	+३४	४४	− १९	३०	२६प.	०	+ ४	२०	५	३८	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
नान्दगाँव	सी. पी.	२१	०	८०	४८	+ ६	४८	+ ५०	२०	६७पू.	६	−११	११	४	३६	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
नान्देड़	निजाम	१९	११	७७	१७	+२०	५२	+ १५	१०	२०पू.	१२	− ३	२२	४	१०	४२	३३	१४	२३७	२६६	३०८	३३६	३३२	३२१
नाभा	पञ्जाब	३०	२५	७६	९	+२५	२४	+ ३	५०	५पू.	६	− ०	५१	७	३	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
नारनौल	,,	२८	२	७६	१४	+२५	४	+ ४	४०	६पू.	१२	− १	२	६	२३	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
नारायण गञ्ज	बंगाल	२३	३७	९०	३२	−३२	८	+१४	७	४०	१९६पू.	५४	−३२	४९	५	१५	५२	४२	१७	२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
नालागढ़	पञ्जाब	३१	३	७६	४२	+२३	१२	+ ९	२०	१२पू.	२४	− २	४	७	१३	७२	५८	२४	२०७	२४१	२९८	३४६	३५७	३५१
नासिक	बम्बई	१९	५९	७३	४८	+३४	४८	− १९	४०	२६प.	१२	+ ४	२२	४	२२	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
निकोबार द्वीप	बँगोपसागर	८	०	९४	०	−४६	०	+१८	२२	२४३पू	६	−४०	३१	१	४१	१७	१३	६	२६२	२८६	३१६	३२८	३१२	२९६
निपाणी	बम्बई	१६	२५	७४	३६	+३१	३६	− ११	४०	१५प.	३६	+ २	३६	३	३२	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४
नीमच	मालवा	२४	२७	७५	०	+३०	०	− ७	४०	१०प.	१२	+ १	४२	५	२८	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
नीलगिरि	मद्रास	११	२४	७६	४७	+२२	५२	+ १०	१०	१३पू.	३६	− २	१६	२	२५	२४	१९	८	२५५	२८०	३१४	३३०	३१८	३०३
नेमवाडा	सी. पी.	२२	३०	७७	०	+२२	०	+ १२	२०	१४पू.	२४	− २	४४	४	५९	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
नैनीताल	यू. पी.	२९	२३	७९	३०	+१२	०	+ ३७	२०	४९पू	४८	− ८	१८	६	४५	६७	५४	२२	२१२	२४५	३००	३४४	३५३	३४६
नैपालगञ्ज	,,	२७	५९	८१	४०	+ ३	२०	+ ५९	०	७८पू.	४२	−१३	७	६	२३	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
नौगाँव	आसाम	२६	२१	९२	४५	−४१	०	+१६	९५०	२२६पू	२४	−३७	४४	५	५७	५९	४८	२०	२२०	२५१	३०२	३४२	३४७	३३८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रेखा.		भूमध्य-रेखा.		भू. म. रेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः					
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	विनि.	प.	विप.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
नौसेरा	सीमान्तदेश	३४	०	७२	२	+४१	५२	− ३७	२०	४९प.	४८	+ ८	१८	८	५	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०
पटना (बाकींपुर)	विहार	२५	३३	८५	८	−१०	३२	+ ९३	४०	१२४पू	५४	−२०	४९	५	४४	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
पटलाग	लङ्का	८	२	७९	५०	+१०	४०	+ ४०	४०	५४पू.	१२	− ९	२	१	४१	१७	१३	६	२६२	२८६	३१६	३२८	३१२	२९६
पटियाला	पञ्जाब	३०	१७	७६	२५	+२४	२०	+ ६	३०	८पू.	४२	− १	२७	७	०	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
पठानकोट	,,	३२	१७	७५	४२	+२७	१२	− ०	४०	०प.	५४	+ ०	९	७	३४	७६	६१	२५	२०३	२३८	२९७	३४७	३६०	३५५
पणजी	गोवा	१५	३०	७३	५५	+३४	२०	− १८	३०	२४प.	४२	+ ४	७	३	२०	३३	२७	११	२४६	२७२	३११	३३३	३२६	३१२
पणवेल	बम्बई	१८	५९	७३	८	+३७	२८	− २६	२०	३५प.	६	+ ५	५१	४	७	४१	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०
पण्ढरपुर	,,	१७	३९	७५	१९	+२८	४४	− ४	३०	६प.	०	+ १	०	३	४९	३८	३१	१३	२४१	२६८	३०९	३३५	३३०	३१७
पट्टूकोटा	मद्रास	१०	२०	७८	५२	+१४	३२	+ ३१	०	४१पू	१८	− ६	५३	२	११	२२	१७	७	२५७	२८२	३१५	३२९	३१६	३०१
पन्ना	सी. पी.	२४	४४	८०	१४	+ ९	४	+ ४४	४०	५९पू.	३६	− ९	५६	५	३२	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
पर्वणी	निजाम	१९	८	७६	५०	+२२	४०	+ १०	४०	१४पू.	१२	− २	२२	४	१०	४२	३३	१४	२३७	२६६	३०८	३३६	३३२	३२१
परशुराम	बम्बई	१७	३३	७३	३०	+३६	०	− २२	४०	३०प.	१२	+ ५	२	३	४८	३८	३०	१३	२४१	२६९	३०९	३३५	३२९	३१७
पलामू	विहार	२३	५२	८४	१७	− ७	८	+ ८५	१०	११३पू.	३६	−१८	५६	५	१९	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३२
पलासी	बंगाल	२३	४७	८८	१७	-२३	८	+१२५	१०	१६६पू	५४	−२७	४९	५	१७	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३२
पवना	,,	२४	०	८९	१८	−२७	१२	+१३५	२०	१८०पू.	२४	−३०	४	५	२१	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३२
पाचोरा	बम्बई	२०	३८	७८	२२	+१६	३२	+ २६	०	३४पू	४२	− ५	४७	४	३१	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
पाटण	,,	२१	४	७०	२६	+४८	१६	- ५३	२०	७१प.	६	+११	५१	४	३७	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
पाण्डुचेरी	मद्रास	११	५६	७९	५१	−२६	३०	+ ४०	५०	५४पू	२४	− ९	४	२	३२	२५	२०	८	२५४	२७९	३१४	३३०	३१९	३०४
पानीपत	पञ्जाब	२९	२३	७६	५८	+२२	८	+ १२	०	१६पू	०	− २	४०	६	४५	६७	५४	२२	२१२	२४५	३००	३४४	३५३	३४६
पालघाट	मद्रास	१०	४६	७६	४२	+२३	१२	+ ९	२०	१२पू.	२४	− २	४	२	१७	२३	१८	८	२५६	२८१	३१४	३३०	३१७	३०२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रे.		भूमध्य रे.		भूमध्य रे. यो.		देशान्त.		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः					
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	वि.	पला.	वि	यो.	वि.	क.	वि.	अं	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं वृ.	क. तु.
पालनपुर	बम्बई	२४	१२	७२	२८	+४०	८	− ३३	०	४४प.	०	+ ७	२०	५	२३	५४	४३	१८	२२५	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
पाली	राजपूताना	२५	४६	७३	२५	+३६	२०	− २३	३०	३१प.	१८	+ ५	१३	५	४७	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
पालीटाना	बम्बई	२१	३१	७१	५३	+४२	२८	− ३८	५०	५१प.	४८	+ ८	३८	४	४४	४७	३८	१६	२३२	२६१	३०६	३३८	३३७	३२६
पीलीभीत	यू. पी.	२८	३८	७९	५१	+१०	३६	+ ४०	५०	५४पू.	२४	− ९	४	६	३५	६६	५३	२२	२१३	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
पुञ्छ	कश्मीर	३३	४८	७४	५	+३३	४०	− १६	५०	२२प.	२४	+ ३	४४	८	२	८०	६४	२७	१९९	२३५	२९५	३४९	३६३	३५९
पुन्नूर	मद्रास	१३	२५	७८	३७	+१५	३२	+ २८	३०	३८पू.	०	− ६	२०	२	५२	२९	२३	१०	२५०	२७६	३१२	३३२	३२२	३०८
पुरनीया	बिहार	२५	४६	८७	३१	−२०	४	+११	७३०	१५६पू.	४२	−२६	७	५	४८	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
पुरुलिया	,,	२३	२०	८६	६	−१४	२४	+१०	३२०	१३७पू.	४८	−२२	५८	५	११	५२	४१	१७	२२७	२५८	३०५	३३९	३४०	३३१
पुलिकर	मद्रास	१३	२५	८०	२१	+ ८	३६	+ ४५	५०	६१पू.	६	−१०	११	२	५२	२९	२३	१०	२५०	२७६	३१२	३३२	३२२	३०८
पूना	बम्बई	१८	२९	७३	५२	+३४	३२	− १९	०	२५प.	१८	+ ४	१३	४	०	४०	३२	१३	२३९	२६७	३०९	३३५	३३१	३१९
पेगू	ब्रह्मा	१७	२०	९०	२९	−३१	५६	+१४	७१०	१९६पू.	१२	−३२	४२	३	४५	३७	३०	१२	२४२	२६९	३१०	३३४	३२९	३१६
पेण	बम्बई	१८	४३	७३	०	+३८	०	− २७	४०	३६प	५४	+ ६	९	४	४४	१३	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०
पेशावर	सीमा प्रान्त	३४	१	७१	३४	+४३	४४	− ४२	०	५६प.	०	+ ९	२०	८	५	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०
पैठाणी	निजाम	१९	३१	७५	२२	+२८	३२	− ४	०	५प.	१८	+ ०	५३	४	१५	४२	३४	१४	२३७	२६५	३०८	३३६	३३३	३२१
पोरबन्दर	बम्बई काठियावाड	२१	३९	६९	३७	+५१	३२	− ६१	३०	८२प.	०	+१३	४०	४	४६	४८	३८	१६	२३१	२६१	३०६	३३८	३३७	३२७
प्रतापगढ़	राजपूताना	२४	२	७४	४०	+३१	२०	− ११	०	१४प	४२	+ २	२७	५	२१	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३२
प्रतापगढ़ बेल्हा	यू. पी.	२५	३४	८१	५९	+ २	४	+ ६२	१०	८२पू	५४	−१३	४९	५	४४	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
प्रोम	ब्रह्मदेश	१८	४७	९५	२०	−५१	२०	+१९५	४०	२६०पू.	५४	−४३	२९	४	५	४१	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०
फगवाडा	पञ्जाब	३१	१३	७५	४६	+२६	५६	+ ०	०	०प	०	+ ०	०	७	१७	७३	५८	२४	२०६	२४१	२९८	३४६	३५७	३५२
फतेहगढ़	यू. पी.	२७	२३	७९	३५	+११	४०	+ ३८	१०	५०पू.	५४	− ८	२९	६	१३	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम् नि.	स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम् वि.	भूमध्य-रेखान्तरम् प.	भूमध्य-रेखान्तरम् वि.	भूमध्य रे. यो. यो.	भूमध्य रे. यो. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. अं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. घ.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
फतेहपुर	यू. पी.	२५	५५	८०	५२	+ ६	३२	+ ५१	०	६८पू.	०	−११	२०	५	५०	५८	४७	१९	२२१	२५२	३०३	३४१	३४६	३३७
फतेहपुर	राजपुताना	२८	०	७५	२	+२९	५२	− ७	२०	९प.	४८	+ १	३८	६	२३	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
फरीदकोट	पञ्जाब	३०	४०	७४	५७	+३०	१२	− ८	१०	१०प.	५४	+ १	४९	७	७	७१	५७	२४	२०८	२४२	२९८	३४६	३५६	३५०
फरीदपूर	बंगाल	२३	३६	८९	५३	−२९	३२	+१४१	१०	१८८पू	१२	−३१	२२	५	१४	५२	४२	१७	२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
फरुखाबाद	यू. पी.	२७	३	७९	३७	+११	३२	+ ३८	३०	५१पू.	१८	− ८	३३	६	१३	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
फलटण	बम्बइ	१८	०	७४	२९	+३२	४	− १२	५०	१७प.	६	+ २	५१	३	५४	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
फिरोजपुर	पञ्जाब	३०	५५	७४	४०	+३१	२०	− ११	०	१४प.	४२	+ २	२७	७	११	७२	५७	२४	२०७	२४२	२९८	३४६	३५६	३५१
फैजाबाद	यू. पी.	२६	४७	८२	८	+ १	२८	+ ६३	४०	८४पू.	५४	−१४	९	६	३	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
बक्सर	बम्बई	२१	३०	७०	५८	+४६	८	− ४८	०	६४प.	०	+१०	४०	४	४३	४७	३८	१६	२३२	२६१	३०६	३३८	३३७	३२६
बघेलखण्ड	सी. पी.	२४	१०	८२	०	+ २	०	+ ६२	२०	८३पू.	६	−१३	५१	५	२३	५४	४३	१८	२२५	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
बटाला	पञ्जाब	३१	४९	७५	१४	+२९	४	− ५	२०	७प.	६	+ १	११	७	२७	७४	६०	२५	२०५	२३९	२९७	३४७	३५९	३५३
बठिंडा	,,	३०	११	७४	५७	+३०	१२	− ८	१०	१०प	५४	+ १	४९	६	५९	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
बडोदास्टेट	बम्बई	२२	१९	७३	१३	+३७	८	− २५	३०	३४प.	०	+ ५	४०	४	५६	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
बदरीनाथ	यू. पी.	३०	४४	७९	३२	+११	५२	+ ३७	४०	५०पू.	१२	− ८	२२	७	८	७१	५७	२४	२०८	२४२	२९८	३४६	३५६	३५०
बन्नू	सीमाप्रांत	३३	०	७०	३९	+४७	२४	− ५१	१०	६८प.	१२	+११	२२	७	४७	७८	६२	२६	२०१	२३७	२९६	३४८	३६१	३५७
बदामी	बम्बई	१५	५५	७५	४५	+२७	०	− ०	१०	०प.	१२	+ ०	२	३	२७	३४	२८	११	२४५	२७१	३११	३३३	३२७	३१३
बदायूँ	यू. पी.	२८	२	७९	१५	+१३	०	+ ३४	५०	४६पू.	२४	− ७	४४	६	२३	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
बरमन	विलोचीस्तान	२९	५६	६९	३६	+५१	३६	− ६१	४०	८२प	१२	+१३	४२	६	५५	६९	५५	२३	२१०	२४४	२९९	३४५	३५४	३४८
बरद्वान (वर्धमान)	बंगाल	२३	१५	८७	५४	−२१	३६	+१२१	२०	१६१पू.	४८	−२६	५८	५	९	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु कर्णाचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्डरे.		भूमध्यरे.		भूमध्यरे. यो.		देशान्त.		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः					
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	वि.	पला.	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
बराकपुर	बंगाल	२२	४६	८८	२४	−२३	३६	+१२	६२०	१६८पू.	२४	−२८	४	५	२	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
बरेली	यू. पी.	२८	२२	७९	२४	+१२	२४	+ ३६	२०	४८पू.	२४	- ८	४	६	२९	६५	५२	२२	२१४	२४७	३००	३४४	३५१	३४४
बरोरा	सी. पी.	२०	१४	७९	२	+१३	५२	+ ३२	४०	४३पू.	३६	− ७	१६	४	२५	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
बरहाणपुर (बुरहाणपुर)	,,	२१	१८	७६	१३	+२५	८	+ ४३	०	६पू.	०	− १	०	४	४१	४७	३७	१६	२३२	२६२	३०६	३३८	३३६	३२६
बलरामपुर	यू. पी.	२७	२५	८२	९	+ १	२४	+ ६३	५०	८५पू.	६	−१४	११	६	१४	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
बलिया	,,	२५	४४	८४	११	− ६	४४	+ ८४	१०	११२पू.	१२	−१८	४२	५	४८	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
बसई	बिहार	२२	५२	८४	५३	− ९	३२	+ ९१	१०	१२१पू.	३६	−२०	१६	५	४	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
बस्तार	सी. पी.	१९	१०	८१	३०	+ ४	०	+ ५७	२०	७६पू.	२४	−१२	४४	४	१०	४२	३३	१४	२३७	२६६	३०८	३३६	३३२	३२१
बस्ती	यू. पी.	२६	४८	८२	४६	− १	४	+ ७०	०	९३पू.	१८	−१५	३३	६	४	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
बहराइच	,,	२७	३४	८१	३८	+ ३	२८	+ ५८	४०	७८पू.	१२	−१३	२	६	१६	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
बहावलपुर	पञ्जाब	२८	२४	७१	४७	+४२	५२	− ३९	५०	५३प.	६	+ ८	५१	६	२९	६५	५२	२२	२१४	२४७	३००	३४४	३५१	३४४
बाकरगञ्ज	बंगाल	२२	२९	९०	१८	−३१	१२	+१४	५०	१९३पू.	४८	−३२	१८	४	५८	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
बांकानेर	बम्बई	२२	३३	७१	०	+४६	०	− ४७	४०	६३प.	३६	+१०	३६	४	५९	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
बांकीपुर	बिहार	२५	४०	८५	१२	−१०	४८	+ ९४	२०	१२५पू.	४८	−२०	५८	५	४६	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
बांकुरा	बंगाल	२३	१४	८७	७	−१८	२८	+११	३०	१५१पू.	१८	-२५	१३	५	९	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
बागलकोट	बम्बई	१६	११	७५	४२	+२७	१२	− ०	४०	०प.	५४	+ ०	९	३	२९	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४
बान्दा	यू. पी.	२५	२८	८०	१९	+ ८	४४	+ ४५	३०	६०पू.	४२	−१०	७	५	४३	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रेखा.		भूमध्य-रेखा.		भू. म. रेखा-न्तर		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डाने			स्वोदयाः					
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	विनि.	प.	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
बारामूला	कश्मीर	३४	१०	७४	३०	+३२	०	−१२	४०	१६प.	५४	+२	४९	८	९	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०
बारहबंकी	यू. पी.	२६	५६	८१	१२	+५	१२	+५४	२०	७२पू.	२४	−१२	४	६	६	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
बारीसाल	बंगाल	२२	४३	९०	२४	−३१	३६	+१४६	२०	१९५पू.	६	−३२	३१	५	१	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
बालाघाट	सी. पी.	२१	५५	८०	१५	+९	०	+४४	५०	५९पू.	४८	−९	५८	४	५	०४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
बार्शी	बम्बई	१८	१३	७५	४४	+२७	४	−०	२०	०प.	२४	+०	४	३	५	७३	३२	१३	२४०	२६७	३०९	३३५	३३१	३१८
बासिम	सी. पी.	२०	५	७७	१०	+२१	२०	+१४	०	१८पू.	४२	−३	७	४	२	३४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
बांसी	यू. पी.	२७	१०	८२	५८	−१	५२	+७२	०	९६पू.	०	−१६	०	६	९	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
बिजनौर	,,	२९	२३	७८	११	+१७	१६	+२४	१०	३२पू.	१२	−५	२२	६	४	५६	७५	४२	२१२	२४५	३००	३४४	३५३	३४६
बिलासपुर	सी. पी.	२२	५	८२	१३	+१	८	+६४	३०	८६पू.	०	−१४	२०	४	५	२४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
बिलासपुर	पञ्जाब	३१	१९	७६	५०	+२२	४०	+१०	४०	१४पू.	१२	−२	२२	७	१	८७	३५	८२	४२०	६२४	१	२९८	३४६	३५७	३५२
बिलोचिस्तान	बिलोचिस्तान	२७	३०	६३	०	+७८	०	−१२७	४०	१७०प.	१२	+२८	२२	६	१	५६	२५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
बिसाऊ	राजपूताना	२८	१५	७५	४	+२९	४४	−७	०	९प.	१८	+१	३३	६	२	७६	४५	२१	२१५	२४७	३०१	३४३	३५१	३४३
बिहार	बिहार	२५	११	८५	३२	१२	८	+९७	४०	१३०पू.	१२	−२१	४२	५	३	८५	६४	५१	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
बीकानेर	राजपूताना	२८	१	७३	१८	+३६	४८	−२४	४०	३२प.	५४	+५	२९	६	२	३६	४५	१२	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
बीजापुर	बम्बई	१६	५०	७५	४४	+२७	४	−०	२०	०प.	२४	+०	४	३	३	७३	६२	९१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
बीड	सी. पी. (निजाम)	१८	५८	७५	४७	+२६	५२	+०	१०	०पू.	१२	−०	२	४	७	४१	३३	१४	२३८	२६६	३००	३३६	३३२	३२०
बीरभूम	बंगाल	२४	०	८७	४२	−२०	४८	+११९	२०	१५९पू.	६	−२६	३१	५	१	९५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३२
बुन्देलखण्ड	सी. पी. बुन्देलखण्ड	२४	४०	८०	०	+१०	०	+४२	२०	५६पू.	२४	−९	२४	५	३	०५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४

Jun Gun Aaradhak Trust
P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड रे.	भूमध्य रे.		भूमध्य रे. यो.		देशान्त.		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
		अं.	क.	अं.	क.	नि.	विनि.	पला.	वि.	यो.	वि.	क.	वि.	अं.	ब्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.						
बुलढाना	सी. पी.	२०	३२	७६	१४	+२५	४+	४४०	६पू.	१२−	१		२	४	२९	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
बुलन्दशहर	यू. पी.	२८	२४	७७	५४	+१८	२४+	२१२०	२८पू.	२४−	४		४४	६	२९	६५	५२	२२	२१४	२४७	३००	३४४	३५१	३४४
बून्दी	राजपूताना	२५	२७	७५	३७	+२७	३२−	१३०	२प.	०+	०		२०	५	४२	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
बेंगलोर	मैसूर	१२	५८	७७	३८	+१९	२८+	१८४०	२४पू.	५५−	४		९	२	४६	२८	२२	९	२५१	२७७	३१३	३३१	३२१	३०७
बेतीया	बिहार	२६	४८	८४	३०	−८	०+	८७२०	११६पू.	२४−	१९		२४	६	२	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
बेतूल	सी. पी.	२१	५१	७७	५८	+१८	८+	२२ ०	२९पू.	१८−	४		५३	४	४९	४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
बेदर	निजाम	१७	५५	७७	३२	+१९	५२+	१७४०	२३पू.	३६−	३		५६	३	५३	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
बेलगाँव	बम्बई	१५	५२	७४	३१	+३१	५६−	१२३०	१६प.	४२+	२		४७	३	२४	३४	२७	११	२४५	२७२	३११	३३३	३२६	३१३
बेल्लारी	मद्रास	१५	१५	७७	०	+२२	०+	१२२०	१४पू.	२४−	२		४४	३	१५	३२	२६	११	२४७	२७३	३११	३३३	३२५	३११
ब्रह्मपुरी	सी. पी.	२०	४०	७९	५६	+१०	१६+	४१४०	५५पू.	३६−	९		१६	४	३१	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
भज्जीस्टेट	पञ्जाब	३१	१२	७७	१२	+२१	१२+	१४२०	१९पू.	६−	३		११	७	१५	७२	५८	२४	२०७	२४१	२९८	३४६	३५७	३५१
भण्डारा	सी पी.	२१	९	७९	४२	+११	१२+	३९२०	५२पू.	२४−	८		४४	४	३९	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
भडोच	बम्बई	२१	४१	७२	५८	+३८	८−	२८ ०	३७प.	१८+	६		१३	४	४६	४८	३८	१६	२३१	२६१	३०६	३३८	३३७	३२७
भरतपुर	राजपूताना	२७	१४	७७	३०	+२०	०+	१७२०	२३पू.	६−	३		५१	६	१२	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
भागलपुर	बिहार	२५	१३	८७	२	−१८	८+	११२४०	१५०पू.	१२−	२५		२	५	३९	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
भातगाँव	नेपाल	२७	३९	८५	२२	−११	२८+	९६ ०	१२८पू.	०−	२१		२०	६	१७	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
भावनगर	काठियावाड	२१	४६	७२	११	+४१	१६−	३५५०	४७प.	४८+	७		५८	४	४७	४८	३८	१६	२३१	२६१	३०६	३३८	३३७	३२७
भिवाणी	पञ्जाब	२८	४६	७६	१८	+२४	४८+	५२०	७पू.	६−	१		११	६	३५	६६	५३	२२	२१३	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
भुसावल	सी. पी.	२१	३	७५	४८	+२६	४८+	०२०	०पू.	२४−	०		४	४	३७	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चमन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्य-रेखान्तर यो.		भूमध्य-रेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभाः		चरखण्डानि				स्वोदयाः					
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	नि.	विनि.	पलानि	विप.	यो.	वि.	क.	विक.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
भेरा	पञ्जाब	३२	२९	७२	५७	+३८	१२	−	२८	१०	३७प.	३६	+ ६	१६	७	३८	७६	६१	२५	२०३	२३८	२९७	३४७	३६०	३५५
भेल्सा	ग्वालियर	२३	३२	७७	५१	+१८	३६	+	२०	५०	२७पू.	४८	− ४	३८	५	१३	५२	४२	१७	२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३२१
भोपाल	सी. पी.	२३	१८	७७	२६	+२०	१६	+	१६	४०	२२पू.	१२	− ३	४२	५	९	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
भोर	बम्बई	१८	७	७३	५४	+३४	२४	−	१८	४०	२४प.	५४	+ ४	९	३	५६	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
मंगलूर	मद्रास	१२	५२	७४	५१	+३०	३६	−	९	१०	१२प.	१२	+ २	२	२	४५	२७	२२	९	२५२	२७७	३१३	३३१	३२१	३०६
मंगलवेडे	बम्बई	१७	३१	७५	३२	+२७	५२	−	२	२०	३प	६	+ ०	३१	३	४७	३८	३०	१३	२४१	२६९	३०९	३३५	३२९	३१७
मछलीपट्टण	मद्रास	१६	१२	८१	७	+ ५	३२	+	५३	३०	७१पू	१८	−११	५३	३	२९	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४
मझौली	यू. पी.	२६	३८	८३	४९	− ५	१६	+	८०	३०	१०७पू.	१८	−१७	५३	६	१६	०	४८	२०	२१६	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
मंटगुमरी	पञ्जाब	३०	५८	७३	२१	+३६	३६	−	२४	१०	३२प.	१२	+ ५	३२	७	१२	७२	५८	२४	२०७	२४१	२९८	३४६	३५७	३५१
मडकेरीपुर	मद्रास	१२	२४	७५	४३	+२७	८	−	०	३०	०प.	४२	+ ०	७	२	३८	२६	२१	९	२५३	२७८	३१३	३३१	३२०	३०५
मंडी	पञ्जाब	३१	४३	७६	५८	+२२	८	+	१२	०	१६पू.	०	− २	४०	७	२५	७४	५९	२५	२०५	२४०	२९७	३४७	३५८	३५३
मणिपुरस्टेट	आसाम	२४	४४	९३	५८	−४५	५२	+१८२	०	२४२पू.	४२	−४०	२७	५	३२	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
मथुरा	यू. पी.	२७	२८	७७	४१	+१९	१६	+	१९	१०	२५पू.	३६	− ४	१६	६	१४	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
मन्दसौर	सी. पी.	२४	३	७५	८	+२९	२८	−	६	२०	८पू.	२४	+ १	२४	५	२१	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३२
मद्रास	मद्रास	१३	६	८०	१७	+ ८	५२	+	४५	१०	६०पू.	१२	−१०	२	२	४७	२८	२२	९	२५१	२७७	३१३	३३१	३२१	३०७
मदुरा	,,	९	५६	७८	७	+१७	३२	+	२३	३०	३१पू.	१८	− ५	१३	२	५	२१	१७	७	२५८	२८२	३१५	३२९	३१६	३००
मधनापाली	,,	१३	३४	७८	३८	+१५	२८	+	२८	४०	३८पू.	१२	− ६	२२	२	५४	२९	२३	१०	२५०	२७६	३१२	३३२	३२२	३०८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्यरेखान्तर प.		भूमध्य-रेखान्तर धो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि				स्वोदयाः							
																				मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.		
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	नि.	विनि.	पला.	वि.	धो.	नि.	क.	वि.	अं.	व्य.	प्र.	द्वि.	तृ.		मी.	कुं.	म.	ध.	वृ.	तु.		
मधुवनी	बिहार	२६	२१	८६	७	−१४	२८	+१०	३३	३०	१३८पू.	०	−२३	०	५	५६	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८		
मनवाड़	बम्बई	२१	१५	७४	२९	+३२	४	−१२	५०	१७प	६	+२	५१	४	४०	४७	३७	१६	२३२	२६२	३०६	३३८	३३६	३२६			
मनोरा	सिन्ध	२४	५१	६७	६	+६१	३६	−८६	४०	११५प.	३६	+१९	१६	५	३३	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४			
मरी	पञ्जाब	३३	३	७१	३४	+४३	४४	−४२	०	५६प.	०	+९	२०	७	४८	७८	६२	२६	२०१	२३७	२९६	३४८	३६१	३५७			
मलेरकोटला	,,	३०	३१	७५	५९	+२६	४	+२१०		२पू	५४	−०	२९	७	४	७१	५७	२४	२०८	२४२	२९८	३४६	३५६	३५०			
मसूरी	यू. पी.	३०	२७	७८	६	+१७	३६	+२३	२०	३१पू.	६	−५	१२	७	३	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९			
महाबलीपुर	मद्रास	१२	२७	८०	१४	+९	४	+४४	४०	५९पू.	३६	−९	५६	२	३९	२६	२१	९	२५३	२७८	३१३	३३१	३२०	३०५			
महाड	बम्बई	१८	६	७३	२४	+३६	२४	−२३	४०	३१प	३६	+५	१६	३	५४	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८			
महुवा	यू. पी.	२५	१८	७९	५५	+१०	२०	+४१	३०	५५पू.	१८	−९	१३	५	४०	५७	४५	१९	२२२	२५४	३०३	३४१	३४४	३३६			
महुवा	बम्बई	२१	१०	७१	४५	+४३	०	−४०	१०	५३प.	३६	+८	५६	४	३९	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५			
मार्डन	सीमाप्रान्त	३४	१०	७२	३	+४१	४८	−३७	१०	४९प.	३६	+८	१६	८	९	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०			
मांडवी	कच्छ	२२	५१	६९	२२	+५२	३२	−६४	०	८५प.	१८	+१४	१३	५	४	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०			
मांडले	ब्रह्मा	२२	०	९६	८	−५४	३२	+२०	३४०	२७१पू	३६	−४५	१६	४	५१	४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७			
माथेरन	बम्बई	१८	५९	७३	१८	+३६	४८	−२४	४०	३२५.	५४	+५	२९	४	८	४१	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०			
माधोपुर	बिहार	२४	१८	८६	३७	−१६	२८	+१०	८३०	१४४पू.	४२	−२४	७	५	२५	५४	४३	१८	२२५	२५६	३०५	३४०	३४२	३३३			

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रे. नि.	स्टैण्डर्ड रे. वि.	भूमध्य-रेखा. पला.	भूमध्य-रेखा. वि.	भूमध्य-रेखा. यो.	भूमध्य-रेखा. वि.	देशान्त. क.	देशान्त. वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे मी.	स्वोदयाः वृ. कु.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
मानारगुंडी	मद्रास	१०	४०	७९	२९	+१२	४	+ ३७	१०	४९पू.	३६	− ८	१६	२	२६	२३	१८	८	२५६	२८१	३१४	३३०	३१७	३०२
मालदा	बंगाल	२५	३	८८	९	−२२	३६	+१२	३५०	१६५पू.	६	−२७	३१	५	३७	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
मालवण	बम्बई	१६	३	७३	३०	+३६	०	− २२	४०	३०प.	१२	+ ५	२	३	२७	३४	२८	११	२४५	२७१	३११	३३३	३२७	३१३
मालवा	सी. पी.	२४	०	७६	०	+२६	०	+ २	२०	३पू.	६	− ०	३१	५	२०	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
मिदनापुर	बंगाल	२२	२५	८७	२१	−१९	२४	+११	५०	१५४पू.	२४	−२५	४४	४	५७	४९	४०	१६	२३०	२५९	३०६	३३८	३३९	३२८
मिरज	बम्बई	१६	४९	७४	४३	+३१	८	− १०	३०	१४प.	०	+ २	२०	३	३७	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
मिर्जापुर	यू. पी.	२५	१०	८२	३७	− ०	२८	+ ६८	३०	९१पू.	१८	−१५	१३	५	३८	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
मीरपुर	पञ्जाब	३३	१२	७३	५१	+३४	३६	− १९	१०	२५प.	३६	+ ४	१६	७	५१	७८	६३	२६	२०१	२३६	२९६	३४८	३६२	३५७
मीरपुरस्टेट	सिन्ध	२५	३१	६९	३	+५३	४८	− ६७	१०	८९प.	३६	+१४	५६	५	४४	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६
मुगलसराय	यू. पी.	२५	१७	८३	११	− २	४४	+ ७४	१०	९८पू.	५४	−१६	२९	५	४०	५७	४५	१९	२२२	२५४	३०३	३४१	३४४	३३६
मुंगेर	बिहार	२५	२३	८६	२८	−१५	५२	+१०	७	१४२पू.	४२	−२३	४७	५	४१	५७	४५	१९	२२२	२५४	३०३	३४१	३४४	३३६
मुजफ्फरगढ़	पञ्जाब	३०	५	७१	१४	+४५	४	− ४५	२०	६०प.	२४	+१०	४	६	५७	६९	५६	२३	२१०	२४३	२९९	३४५	३५५	३४८
मुजफ्फर नगर	,,	२९	२८	७७	४४	+१९	४	+ १९	४०	२६पू	१२	− ४	२२	६	४७	६८	५४	२३	२११	२४५	२९९	३४५	३५३	३४७
मुदगल	निजाम	१६	१	७६	३०	+२४	०	+ ७	२०	९पू	४८	− १	३८	३	२७	३४	२८	११	२४५	२७१	३११	३३३	३२७	३१३
मुदफ्फरपुर	बिहार	२६	७	८५	२७	−११	४८	+ ९६	५०	१२९पू	६	−२१	३१	५	५३	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
मुधोल	बम्बई	१६	२०	७५	२०	+२८	४०	− ४	२०	५५प.	४८	+ ०	५८	३	३१	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१५
+मुम्बई	,,	१८	५८	७२	४९	+३८	४४	− २९	३०	३९प.	१८	+ ६	३३	४	७	४१	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०

+ अस्यांनगर्य्यांभिदानींस्टैण्डर्डसमयो वर्त्तते सतु स्थानीय समयतः ३८ निमेषाः ४४ विनिमेषा अग्रे वर्तत इति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः नि.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रेखांशाः प.	भूमध्य-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रे. यो. यो.	भूमध्य-रे. यो. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
मुरादाबाद	यु. पी.	२८	५१	७८	४९	+१४	४४	+ ३०	३०	४०	पू. ४२	− ६	४७	६	३७	६६	५३	२२	२१३	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
मुर्शीदाबाद	बंगाल	२४	११	८८	१९	−२३	१६	+१२५	३०	१६	७पू. १८	−२७	५३	५	३०	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
मुलतान	पञ्जाब	३०	१३	७१	२९	+४४	४	− ४२	५०	५७	६	+ ९	३१	६	५९	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
मेरट	यु. पी.	२८	५९	७७	४१	+१९	१६	+ १९	१०	२५	पू ३६	− ४	१६	६	३९	६६	५३	२२	२१३	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
मैनपुरी	,,	२७	१४	७९	३	+१३	४८	+ ३२	५०	४३	पू ४८	− ७	१८	६	१०	६२	४९	२१	२१७	२५०	३०१	३४३	३४८	३४१
मैमनसिंग	बंगाल	२४	४६	९०	२३	−३१	३२	+१४६	१०	१९४	पू. ५४	−३२	२९	५	३२	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
मेहर स्टेट	मी. पी.	२४	१६	८०	४९	+ ६	४४	+ ५०	३०	६७	पू. १८	−११	१३	५	२५	५४	४३	१८	२२५	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
म्हैसूर स्टेट	म्हैसूर	१२	१८	७६	३९	+२३	२४	+ ८	५०	११	पू ४८	− १	५८	२	३७	२६	२१	९	२५३	२७८	३१३	३३१	३२०	३०५
मोतीहारी	बिहार	२६	४०	८४	४४	− ८	५६	+ ८९	४०	११	पू. ३६	−१९	५६	६	२	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९
मोर्वी	बम्बई	२२	४९	७०	५४	+४६	२४	− ४८	४०	६४	प. ५४	+१०	४९	५	३	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
यवतमाल	सी. पी.	२०	०	७८	०	+१८	०	+ २२	२०	२९	पू. ४८	− ४	५८	४	२२	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
येवले	बम्बई	२०	४	७४	३१	+३१	५६	− १२	३०	१६	प. ४२	+ २	४७	४	२३	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
रंगपुर	बंगाल	२५	४५	८९	१८	−२७	१२	+१३५	२०	१८	पू. २४	−३०	४	५	४७	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
रंगून	ब्रह्मा	१६	४८	९६	१२	−५४	४८	+१०४	२०	२७	२पू. २४	−४५	२४	३	३७	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
रघुगढ	ग्वालीयर	२४	२६	७७	१२	+२१	१२	+ १४	२०	१९	पू. ६	− ३	११	५	२७	५४	४४	१८	२२५	२५५	३०४	३४०	३४३	३३३
रजमक	सीमाप्रान्त	३२	४०	६९	५६	+५०	१६	− ५८	२०	७७	प. ४८	+२२	५८	७	४२	७७	६२	२६	२०२	२७७	२९६	३४८	३६१	३५६
रतनगढ	राजपूताना	२८	५	७४	३९	+३१	२४	− ११	१०	१४	प. ५४	+ २	२९	६	२४	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
रतनपुर	सी. पी.	२२	१७	८२	११	+ १	१६	+ ६४	१०	८५	पू. ३६	−१४	१६	४	५५	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८

+ अस्य देशस्याक्षांशा उत्तराः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम् नि.	स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम् वि.	भूमध्य-रेखान्तरम् प.	भूमध्य-रेखान्तरम् वि.	भूमध्य रे. यो.	भूमध्य रे. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. घ.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
रत्नागिरी	बम्बई	१६	५९	७३	१९	+३६	४४	−	२४	३०	३२प.	४२	+ ५	२७	३	४०	३७	२९	१२	२४२	२७०	३१०	३३४	३२८	३१६
रत्नापुरा	सीलोन	६	४२	८०	२४	+ ८	२४	+	४६	२०	६१पू.	४८	−१०	१८	१	२५	१४	११	५	२६५	२८८	३१७	३२७	३१०	२९३
रतलाम	सी. पी.	२३	२१	७५	३	+२९	४८	−	७	१०	९प.	३६	+ १	३६	५	१८	५३	४२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३३
रांची	बिहार	२३	२३	८५	२१	−११	२४	+	९५	५०	१२७पू.	४८	−२१	१८	५	११	५२	४१	१७	२२७	२५८	३०५	३३९	३४०	३३१
राजकोट	गुजरात	२२	१८	७०	४९	+४६	४४	−	४९	३०	६६प.	०	+११	०	४	५५	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
राजगढ़	राजपुताना	२८	३९	७५	२६	+२८	१६	−	३	२०	४प.	२४	+ ०	४४	६	३३	६५	५२	२२	२१४	२४७	३००	३४४	३५१	३४४
राजगढ़	सी. पी.	२४	०	७६	४७	+२२	५२	+	१०	१०	१३पू.	३६	− २	१६	५	२०	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
राजपिपला	बम्बई	२१	५५	७३	२६	+३६	१६	−	२३	२०	३१प.	६	+ ५	११	४	५०	४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
राजमहल	बिहार	२५	३	८७	५३	−२१	३२	+१२१	१०	१६१पू.	३६	−२६	५६	५	३६	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
राजमहेन्द्री	मद्रास	१७	३	८१	४६	+ २	५६	+	६०	०	८०पू.	०	−१३	२०	३	४०	३७	२९	१२	२४२	२७०	३१०	३३४	३२८	३१६
राजापुर	बम्बई	१६	३९	७३	३३	+३५	५८	−	२२	१०	२९प.	३६	+ ४	५६	३	३५	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
राणीगञ्ज	बिहार	२५	५२	८७	५२	−२१	२८	+१२१	०	१६१पू.	१८	−२६	५३	५	४९	५८	४७	१९	२२१	२५२	३०३	३४१	३४६	३३७
राधनपुर	बम्बई	२३	५०	७१	३८	+४३	२८	−	४१	२०	५५प.	६	+ ९	११	५	१८	५३	५२	१८	२२६	२५७	३०४	३४०	३४१	३३३
रानपुर	उड़ीशा	२०	४	८५	२३	−११	३२	+	९६	१०	१२८पू.	१२	−२१	२२	४	२४	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
रानीखेत	यू. पी.	२९	४०	७९	३३	+११	४८	+	३७	५०	५०पू.	२४	− ८	२४	६	५०	६८	५५	२३	२११	२४४	२९९	३४५	३५४	३४७
रामगढ़	राजपुताना	२८	१०	७५	०	+३०	०	−	७	४०	१०प.	१२	+ १	४२	६	२५	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
रामगढ़	बिहार	२३	३८	८५	३४	−१२	१६	+	९८	०	१३०पू.	४२	−२१	४७	५	१४	५२	४२	१७	२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
रामदुर्ग	बम्बई	१५	५८	७५	२२	+२८	३२	−	४	०	५प.	१८	+ ०	५३	३	२६	३४	२७	११	२४५	२७२	३११	३३३	३२६	३१३
रामनगर	सी. पी.	२६	३६	८०	३३	+७	४८	+	४७	५०	६३पू.	४८	−१०	३८	६	०	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९

ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरणं तृतीयम्

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशा अं.	अक्षांशा क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्डरे. नि.	स्टैण्डर्डरे. वि.	भूमध्यरे. पला.	भूमध्यरे. वि.	भूमध्यरे. यो. यो.	भूमध्यरे. यो. वि.	देशान्त. क.	देशान्त. वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
रामनगर	मध्यदेश	२४	११	८१	१२+	५	१२+	५४	२०	७२पू.	२४−१२		४	५२	३५	४४	४३	१८	२२५	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
रामनगर	कश्मीर	३२	५२	७५	२२+	२८	३२−	४	०	५प.	१८+	०	५३	७४	५७	७६	२२	६२	०२	२३७	२९६	३४८	३६१	३५६
रामपुर वावल्या	बंगाल	२४	२२	८८	३९−	२४	३६+	१२८	५०	१७१पू.	४८−२८		३८	५२	६५	४४	३३	१८	२२५	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
रामपुर	उडीशा	२१	५	८४	२२−	७	२८+	८६	०	११४पू.	४२−१९		७	४३	८४	६३	७१	५२	३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
रामपुरस्टेट	यू. पी.	२८	४८	७९	३+	१३	४८−	३२	५०	४३प.	४८+	७	१८	६३	६६	६५	३२	२१	३२	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
रामपुरा-भानपुरा	सी. पी.	२३	२८	७५	३०+	२८	०−	२४	०	३८.	३६+	०	३६	५१	२५	२४	२१	७२	२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
रामेश्वरम्	मद्रास	९	१८	७९	१८+	१२	४८+	३५	२०	४७पू.	६−	७	५१	१५	७१	९१	६	६२	६०	२८३	३१६	३२८	३१५	२९८
रायगढ	सी. पी.	२१	५४	८३	२६−	३	४४+	७६	४०	१०२पू.	२−१७		२	४५	९४	८३	९१	६२	३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
रायचूर	निजाम	१६	१२	७७	२१+	२०	३६+	१५	५०	२१पू.	६−	३	३१	३३	३०	३५	२८	१२	२४	४२	७१	३१०	३३४	३२७	३१४
रामदुर्ग	बम्बई	१५	५७	७५	२२+	२८	३२−	४	०	५पू.	१८+	०	५३	३२	६३	४२	७	११	२४	५२	७२	३११	३३३	३२६	३१३
रायपुर	सी. पी.	२१	१५	८१	४१+	३	१६+	५९	१०	७८पू.	५४−१३		९	४४	०४	७३	७	१६	२३	२२६	२६२	३०६	३३८	३३६	३२६
रायपुर	बंगाल	२३	०	९०	५०−	३३	२०+	१५०	४०	२००पू.	५४−३३		२९	५	८	५१	४१	१७	२२	८२५	८३०	५३३	९३९	३४०	३३०
रायबरेली	यू. पी.	२६	१४	८१	१६+	४	५६+	५५	०	७३पू.	१८−१२		१३	५५	५५	९४	७१	२०	२२	०२५	२२०	३०२	३४२	३४६	३३८
रावलपिण्डी	पञ्जाब	३३	३७	७३	३+	३७	४८−	२७	१०	३६प	१२+	६	२	७५	९८	०६	४२	७१	९९	२३५	२९५	३४९	४६३	३५९
रियासी	,,	३३	५	७४	४९+	३०	४४−	९	३०	१२प.	४३+	२	७	७४	९७	८६	३३	२६	२०	१२३	६२९	३४८	३६२	३५७
रिवाडी	,,	२८	१२	७६	४०+	२३	२०+	९	०	१२पू.	०−	२	०	६२	६६	४५	१२	१२	१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
रिवाँ	सी. पी.	२४	३२	८१	१८+	४	४८+	५५	२०	७३पू	४८−१२		१८	५२	९५	५४	४१	८२	२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रेखा. नि.	स्टैण्डर्ड रेखा. विनि.	भूमध्य-रेखा. प.	भूमध्य-रेखा. वि.	भू. म. रेखा-न्तर यो. यो.	भू. म. रेखा-न्तर यो. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः मि. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
रुड़की	यू. पी.	२९	५२	७७	५३	+१८	२८	+ २१	१०	२८पू.	१२	− ४	४२	६	५३	६९	५५	२३	२१०	२४४	२९९	३४५	३५४	३४८
रुहेलखण्ड	,,	२८	३०	७९	०	+१४	०	+ ३२	२०	४३पू.	६	− ७	११	६	३४	६६	५३	२२	२१३	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
रोहतक	पञ्जाब	२८	५४	७६	३४	+२३	४४	+ ८	०	१०पू.	४२	− १	४७	६	३७	६६	५३	२२	२१३	३४६	३००	३४४	३५२	३४५
रोहरी	सिन्ध	२७	४१	६८	५७	+५४	१२	− ६८	१०	९०पू.	५४	+१५	९	६	१८	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
+लङ्का	सीलोन	७	०	८१	०	+ ६	०	+ ५२	२०	६९पू.	४८	−११	३८	१	२९	१५	१२	५	२६४	२८७	३१७	३२७	३११	२९४
लक्ष्मेश्वर	बम्बई	१५	७	७५	३०	+२८	०	− २४०		३प.	३६	+ ०	३६	३	१४	३२	२६	११	२४७	२७३	३११	३३३	३२५	३११
लखनऊ	यू. पी.	२६	५१	८०	५६	+ ६	१६	+ ५१	४०	६८पू.	५४	−११	२९	६	४	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
लखीमपुर	,,	२७	५७	८०	४९	+ ६	४४	+ ५०	३०	६७पू.	१८	−११	१३	६	२२	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
लंगले	आसाम	२२	५६	९२	४९	−४१	१६	+१७०	३०	२२७पू.	१८	−३७	५३	५	५	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
लदाख	कश्मीर	३५	०	७६	०	+२६	०	+ २२०		३पू.	६	− ०	३१	८	२४	८४	६७	२८	१९५	२३२	२९४	३५०	३६६	३६३
ललितपुर	यू. पी.	२४	२२	७८	२८	+१६	८	+ २७	०	३६पू.	०	− ६	०	५	२६	५४	४३	१८	२२५	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
लांडीकोटल	सीमाप्रान्त	३४	९	७१	८	+४५	२८	− ४६	२०	६१प.	४८	+१०	१८	८	८	८१	६५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	४६०
लाडकाणा	सिन्ध	२७	३३	६८	१५	+५७	०	− ७५	१०	१००प.	१२	+१६	४२	६	१६	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
लातूर	निजाम	१८	२४	७६	३६	+२३	३६	+ ८२	०	११पू.	६	− १	५१	३	५९	४०	३२	१३	२३९	२६७	३०९	३३५	३३१	३१९
लायलपुर	पञ्जाब	३१	२५	७३	५	+३७	४०	− २६	५०	३५प.	४८	+ ५	५८	७	२०	७३	५९	२४	२०६	२४०	२९८	३४६	३५८	३५२
लालामूसा	,,	३२	४०	७४	१	+३३	५६	− १७	३०	२३प.	१८	+ ३	५३	७	४२	७७	६२	२६	२०२	२३७	२९६	३४८	३६१	३५६
लाहौर	,,	३१	३५	७४	२०	+३२	४०	− १४	२०	१९प.	६	+ ३	११	७	२३	७४	५९	२५	२०५	२४०	२९७	३४७	३५८	३५३
लिंबडी	काठियावाड	२२	३४	७१	५३	+४२	२८	− ३८	५०	५१प.	४८	+ ८	३८	४	५९	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९

+ अस्य देशस्याक्षांशा उत्तराः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरणं तृतीयम् ।

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अ.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अ.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः नि.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रेखांशाः प.	भूमध्य-रेखांशाः वि.	भू. रे. यो. यो.	भू. रे. यो. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कु.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. घ.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
लुधियाना	पञ्जाब	३०	५५	७५	५४	+२६	२४	+ १	२०	१पू.	४८	− ०	१८	७	११	७२	५७	२४	२०७	२४२	२९८	३४६	३५६	३५१
छोहरदग्गा	बिहार	२३	२६	८४	४२	− ८	४८	+८९	२०	११९पू.	६	−१९	५१	५	१२	५२	४२	१७	२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
वर्धा	सी. पी.	२०	४५	७८	३९	+१५	२४	+२८	५०	३८पू.	२४	− ६	२४	४	३३	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
वांतवाल	मद्रास	१२	५३	७५	५	+२९	४०	− ६	५०	९१.	६	+ १	३१	२	४५	२७	२२	९	२५२	२७७	३१३	३३१	३२१	३०६
वांदीवास	,,	१२	३०	७९	३०	+१२	०	+३७	२०	४९पू.	४८	− ८	१८	२	४०	२७	२१	९	२५२	२७८	३१३	३३१	३२०	३०६
वाई	बम्बई	१७	५७	७३	५६	+३४	१६	−१८	२०	२४प.	२४	+ ४	४	३	५३	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
वादुला	लङ्का	६	४९	८१	५	+ ५	४०	+५३	१०	७०पू.	५४	−११	४९	१	२६	१४	११	५	२६५	२८८	३१७	३२७	३१०	२९३
वाराङ्गुल	निजाम	१७	५८	७९	४०	+११	२०	+३९	०	५२पू.	०	− ८	४०	३	५४	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
वांसवाड़ा	राजपूताना	२३	३०	७४	१९	+३२	४४	−१४	३०	१९प.	१८	+ ३	१३	५	१३	५२	४२	१७	२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
विंचरू	बम्बई	२०	८	७४	२४	+३२	२४	−१३	४०	१८प.	१२	+ ३	२	४	२४	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३
विजगापट्टम्	मद्रास	१७	४२	८३	२०	− ३	२०	+७५	४०	१००पू.	५४	−१६	४९	३	५०	३८	३१	१३	२४१	२६८	३०९	३३५	३३०	३१७
विजयदुर्ग	बम्बई	१६	३३	७३	२०	+३६	४०	−२४	२०	३२प.	२४	+ ५	२४	३	३४	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
विजय-नगरम्	मद्रास	१८	७	८३	२७	− ३	४८	+७६	५०	१०२पू.	२४	−१७	४	३	५६	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
विजयानगर	,,	१५	२०	७६	३०	+२४	०	+ ७	२०	९पू.	४८	− १	३८	३	१७	३३	२६	११	२४६	२७३	३११	३३३	३२५	३१२
विनांगुंटा	,,	१६	४	७९	४७	+१०	५२	+४०	१०	५३पू.	३६	− ८	५६	३	२७	३४	२८	११	२४५	२७१	३११	३३३	३२७	३१३
विरमगाँव	बम्बई	२३	८	७२	७	+४१	३२	−३६	३०	४८प.	४२	+ ८	७	५	८	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
विलूपुरम्	मद्रास	११	५७	७९	३२	+११	५२	+३७	४०	५०पू.	१२	− ८	२२	२	३२	२५	२०	८	२५४	२७९	३१४	३३०	३१९	३०४
वेंगुर्ले	बम्बई	१५	५२	७३	४०	+३५	२०	−२१	०	२८प.	०	+ ४	४०	३	२४	३४	२७	११	२४५	२७२	३११	३३३	३२६	३१३
वैजापुर	निजाम	१९	५९	७४	४८	+३०	४८	− ९	४०	१२प.	५४	+ २	९	४	२२	४४	३५	१५	२३५	२६४	३०७	३३७	३३४	३२३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्य-रेखान्तर		भूमध्य-रेखान्तर यो.	देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः						
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	नि.	विनि.	पलानि	विप.	यो.	वि.	क.	विक.	अं.	व्यं.	प्र.	द्वि.	तृ.	मे. मी.	वृ. कुं.	मि. म.	क. ध.	सिं. वृ.	क. तु.
वैद्यनाथ	बिहार	२४	३०	८६	१८	−१५	१२	+१०५	२०	१४०पू.	२४	−२३	२४	५	२८	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
वृन्दावन	यू. पी.	२७	३३	७७	४४	+१९	४	+ १९	४०	२६पू.	१२	−४	२२	६	१६	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
शक्ति	सी. पी.	२२	१	८३	०	− २	०	+ ७२	२०	९६पू.	२४	−१६	४	४	५१	४८	३९	१६	२३१	२६०	३०६	३३८	३३८	३२७
शहापुर	पञ्जाब	३२	१६	७२	३१	+३९	५६	− ३२	३०	४३प.	१८	+ ७	१३	७	३४	७६	६१	२५	२०३	२३८	२९७	३४७	३६०	३५५
शहापुर	बम्बई	१५	५०	७४	३४	+३१	४४	− १२	०	१६प.	०	+ २	४०	३	२८	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४
शहापुरा	सी. पी.	२३	१०	८०	४५	+ ७	०	+ ४९	५०	६६पू.	२४	−११	४	५	८	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
शहाबाद	यू. पी.	२७	३०	८०	५	+ ९	४०	+ ४३	१०	५७पू.	३६	− ९	३६	६	१५	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
शहाबाद	निजाम	१७	१०	७८	११	+१७	१६	+ २४	१०	३२पू.	१२	− ५	२२	३	४२	३७	३०	१२	२४२	२६९	३१०	३३४	३२९	३१६
शाहदरा	पञ्जाब	२८	४०	७७	२०	+२०	४०	+ १५	४०	२०पू.	५४	− ३	२९	६	३४	६६	५३	२२	२१३	२४६	३००	३४४	३५२	३४५
शाहबन्दर	सिन्ध	२४	१०	६७	५६	+५८	१६	− ७८	२०	१०४प.	२४	+१७	२४	५	२३	५४	४३	१८	२२५	२५६	३०४	३४०	३४२	३३३
शहाजहाँपुर	यू. पी	२७	५४	७९	५७	+१०	१२	+ ४१	५०	५५पू.	४८	− ९	१८	६	२१	६३	५१	२१	२१६	२४८	३०१	३४३	३५०	३४२
शिकारपुर	म्हैसूर	१८	१८	७५	२४	+२८	२४	− ३	४०	४प.	५४	+ ०	४९	३	३	३०	२४	१०	२४९	२७५	३१२	३३२	३२३	३०९
शिकारपुर	सिन्ध	२७	५७	६८	४०	+५५	२०	− ७१	०	९४प.	४२	+१५	४७	६	२२	६४	५१	२१	२१५	२४८	३०१	३४३	३५०	३४३
शिवसागर	आसाम	२६	५९	९४	३८	−४८	३२	+१८८	४०	२५१पू.	३६	−४१	५६	६	७	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
शिमोगा	म्हैसूर	१३	५६	७५	३८	+२७	२८	− १	२०	१प.	४८	+ ०	१८	२	५८	३०	२४	१०	२४९	२७५	३१२	३३२	३२३	३०९
शिरूड	बम्बई	१८	५०	७४	२३	+३२	२८	− १३	५०	१८प.	२४	+ ३	४	४	५	४१	३३	१४	२३८	२६६	३०८	३३६	३३२	३२०
शिलांग	आसाम	२५	३४	९१	५३	−३७	३२	+१६१	१०	२१४पू.	५४	−३५	४९	५	४४	५७	४६	१९	२२२	२५३	३०३	३४१	३४५	३३६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः		रेखांशाः		स्टैण्डर्ड-रेखान्तरम्		भूमध्यरेखान्तर प.		भूमध्यरेखान्तर यो.		देशान्तरम्		पलभा.		चरखण्डानि			स्वोदयाः मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.
		अंशाः	कलाः	अंशाः	कलाः	नि.	विनि.	पला.	वि.	यो.	नि.	क.	वि.	अं.	व्य.	प्र.	द्वि.	तृ.	मी.	कुं.	म.	ध.	वृ.	तु.
शिवपुर	सी. पी.	२५	४०	७७	४८	+१९	४	+१९	४०	२६पू.	१२	− ४	२२	५	४६	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
शेखूपुरा रेट	पञ्जाब	३१	३०	७४	०	+३४	०	−१७	४०	२३प.	३७	+ ३	५६	७	२१	७३	५९	२४	२०६	२४०	२९८	३४६	३५८	३५२
शेरकोट	,,	३०	५०	७२	६	+४१	३६	-३६	४०	४८प.	५४	+ ८	९	७	१०	७२	५७	२४	२०७	२४२	२९८	३४६	३५६	३५१
श्रीनगर	कश्मीर	३४	६	७४	४८	+३०	४८	− ९	४०	१२प.	५४	+ २	९	७	५४	७९	६३	२६	२००	२३६	२९६	३४८	३६२	३५८
श्रीनगर	यू. पी.	३०	९	७८	३६	+१५	३६	+२८	२०	३७पू.	४८	− ६	१८	६	५८	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
श्रीवर्द्धन	बम्बई	१८	२	७३	०	+३८	०	−२७	४०	३६प.	५४	+ ६	९	३	५४	३९	३१	१३	२४०	२६८	३०९	३३५	३३०	३१८
श्रीरंगपट्टण	मद्रास	१२	२६	७६	४३	+२३	८	+ ९	३०	१२पू.	४२	− २	७	२	३८	२६	२१	९	२५३	२७८	३१३	३३१	३२०	३०५
श्रीरंगम्	,,	१०	५२	७८	४४	+१५	४	+२९	४०	३९पू.	३६	− ६	३६	२	१८	२३	१८	८	२५६	२८१	३१४	३३०	३१७	३०२
शृङ्गेरीमठ	म्हैसूर	१३	२७	७५	१८	+२८	४८	− ४	४०	६प.	१२	+ १	२	२	५२	२९	२३	१०	२५०	२७६	३१२	३३२	३२२	३०८
सक्खर	सिन्ध	२७	४२	६८	५५	+५४	२०	-६८	३०	९१प	१८	+१५	१३	६	१८	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
सङ्गमनेर	बम्बई	१९	३५	७४	१३	+३३	८	−१५	३०	२०प.	४२	+ ३	२७	४	१६	४३	३४	१४	२३६	२६५	३०८	३३६	३३३	३२२
सम्मल	यू. पी.	२८	३५	७८	३७	+१५	३२	+२८	३०	३८पू.	०	− ६	२०	६	३२	६५	५२	२२	२१४	२४७	३००	३४४	३५१	३४४
सम्मलपुर	उडीशा	२१	२८	८४	१	− ६	४	+८२	३०	११०पू.	०	−१८	२०	४	४३	४७	३८	१६	२३२	२६१	३०६	३३८	३३७	३२६
सरगोधा	पञ्जाब	३२	६	७२	४०	+३९	२०	-३१	०	४१प.	१८	+ ६	५३	७	३२	७५	६०	२५	२०४	२३९	२९७	३४७	३५९	३५४
सवाई माधोपुर	राजपूताना	२५	५८	७६	३०	+२४	०	+ ७	२०	९पू.	४८	− १	३८	५	५१	५८	४७	१९	२२१	२५२	३०३	३४१	३४६	३३७
सहारणपुर	यू. पी.	२९	५८	७७	३२	+१९	५२	+१७	४०	२३पू.	३६	− ३	५६	६	५५	६९	५५	२३	२१०	२४४	२९९	३४५	३५४	३४८
सागर	निजाम	१६	३७	७६	५१	+२२	३६	+१०	५०	१४पू.	२४	− २	२४	३	३५	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
सागर	सी. पी.	२३	५०	७८	४५	+१५	०	+२९	५०	३९पू.	४८	− ६	३८	५	३८	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
सातारा	बम्बई	१७	४२	७४	२	+३३	५२	-१७	२०	२३प.	६	+ ३	५१	३	५०	३८	३१	१३	२४१	२६८	३०९	३३५	३३०	३१७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रे. नि.	स्टैण्डर्ड रे. वि.	भूमध्य-रेखा. पला.	भूमध्य-रेखा. वि.	भूमध्य-रेखा. यो. यो.	भूमध्य-रेखा. यो. वि.	देशान्त. क.	देशान्त. वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. घ.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
सांगली	बम्बई	१६	५२	७४	३६	+३१	३६	−	११	४०	१५प.	३६	+ २	३६	३	३८	३६	२९	१२	२४३	२७०	३१०	३३४	३२८	३१५
सांभर	राजपूताना	२६	५४	७५	१३	+२९	८	−	५	३०	७प.	१८	+ १	१३	६	५	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
सावंतवाडी	बम्बई	१५	५४	७३	५२	+३४	३२	−	१९	०	२५प.	१८	+ ४	१३	३	२५	३४	२७	११	२४५	२७२	३११	३३३	३२६	३१
सावनूर	,,	१४	५८	७५	२४	+२८	२४	−	३	४०	४प.	५४	+ ०	४९	३	१३	३२	२६	११	२४७	२७३	३११	३३३	३२५	३११
साहीवाल	पञ्जाब	३१	५८	७२	२२	+४०	३२	−	३४	०	४५प.	१८	+ ७	३३	७	२९	७५	६०	२५	२०४	२३९	२९७	३४७	३५९	३५४
सिकन्दराबाद	यू. पी.	२७	१३	७७	५८	+१८	८	+	२२	०	२९पू.	१८	− ४	५३	६	१०	६२	४९	२१	२१७	२५०	३०१	३४३	३४८	३४१
सिन्धखेड	बम्बई	२१	१८	७४	५०	+३०	४०	−	९	२०	१२प.	२४	+ २	४	४	४१	४७	३७	१६	२३२	२६२	३०६	३३८	३३६	३२६
सिमला	पञ्जाब	३१	६	७७	९	+२१	२४	+	१३	५०	१८पू.	२४	− ३	४	७	१४	७२	५८	२४	२०७	२४१	२९८	३४६	३५७	३५१
सिरगोजहा स्टेट	सी. पी.	२४	०	८३	२४	− ३	३६	+	७६	२०	१०१पू.	४८	−१६	५८	५	७	५१	४१	१७	२२८	२५८	३०५	३३९	३४०	३३०
सिंहगढ़ (साहगढ)	राजपूताना	२७	८	६९	५७	+५०	१२	−	५८	१०	७७प	३६	+१२	५६	६	९	६१	४९	२०	२१८	२५०	३०२	३४२	३४८	३४०
सिरसा	पञ्जाब	२९	३२	७५	७	+२९	३२	−	६	३०	८प	४२	+ १	२७	६	४८	६८	५४	२३	२११	२४५	२९९	३४५	३५३	३४७
सिरोहीस्टेट	राजपूताना	२४	५३	७२	५४	+३८	२४	−	२८	४०	३८प.	१२	+ ६	२२	५	३४	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
सिलचर	आसाम	२४	५०	९२	५१	−४१	२४	+१	७०	५०	२२७पू.	४८	−३७	५८	५	३३	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
सिलहट	,,	२४	५३	९१	५५	−३७	४०	+१	६१	३०	२१५पू.	१८	−३५	५३	५	३४	५६	४५	१९	२२३	२५४	३०३	३४१	३४४	३३५
सिलोन	लंका	७	०	८१	०	+ ६	०	+	५२	२०	६९पू.	४८	−११	३८	१	२८	१५	१२	५	२६४	२८७	३१७	३२७	३११	२९४
सीकर	राजपूताना	२७	३६	७५	१५	+२९	०	−	५	१०	६प.	५४	+ १	९	६	१६	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
सीतापुर	यू. पी.	२७	३२	८०	४३	+ ७	८	+	४९	३०	६६पू	०	−११	०	६	१५	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
सीतामढ़ी	बिहार	२६	३५	८५	३२	−१२	८	+	९७	४०	१३०पू.	०	−२१	४२	६	०	६०	४८	२०	२१९	२५१	३०२	३४२	३४७	३३९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्देशान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रे. नि.	स्टैण्डर्ड रे. विनि.	भूमध्य रे. पला.	भूमध्य रे. वि.	भूमध्य रे. यो. वि.	देशान्त. क.	देशान्त. वि.	पलभा. अं.	पलभा. अं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. भी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
सुकेत	पञ्जाब	३१	२४	७७	०+२२	०+१२	२०	१६पू.	२४−	२	४४	७	१९	७३	५९	२४	२०६	२४०	२९८	३४६	३५८	३५२
सुर्जानगढ़	राजपूताना	२७	४२	७४	२१+३२	३६−१४	१०	१८प.	५४+	३	९	६	१८	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
सुरगाणा	बम्बई	२०	३३	७३	२०+३६	४०−२४	२०	३२प.	२४+	५	२४	४	३०	८५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२५
सुरपुर	निजाम	१६	३१	७६	४८+२२	४८+१०	२०	१३पू.	४८−	२	१८	३	३३	३५	२८	१२	२४४	२७१	३१०	३३४	३२७	३१४
सुलतानपुर	पञ्जाब	३१	५८	७७	७+२१	३२+१३	३०	१८पू.	०−	३	०	७	३०	७५	६०	२५	२०४	२३९	२९७	३४७	३५९	३५४
सुलतानपुर	यू. पी.	२६	१६	८२	७+ १	३२+६३	३०	८४पू.	४२−	१४	७	५	५५	५९	४७	२०	२२०	२५२	३०२	३४२	३४६	३३८
सूरत	बम्बई	२१	१२	७२	५०+३८	४०−२९	२०	३९प.	६+	६	३१	४	३९	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
सेगाँव	सी. पी.	२०	४८	७६	४६+२२	५६+१०	०	१३पू.	१८−	२	१३	४	३३	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
सेलम	,,	२३	३१	७५	१+२९	५६− ७	३०	१०प.	०+	१	४०	५	१३	५२	४२	१७	२२७	२५७	३०५	३३९	३४१	३३१
सेवन	मद्रास	१२	३७	८०	१४+ ९	४+४४	४०	५९पू.	३६−	९	५६	२	४१	२७	२१	९	२५२	२७८	३१३	३३१	३२०	३०६
सोमनाथ	बम्बई	२१	४	७०	२६+४८	१६−५३	२०	७१प.	६+	११	५१	४	३७	४६	३७	१५	२३३	२६२	३०७	३३७	३३६	३२५
सोलापुर	,,	१७	४०	७५	५४+२६	२४+ १	२०	१पू.	४८−	०	१८	३	४९	३८	३१	१३	२४१	२६८	३०९	३३५	३३०	३१७
सोहावल स्टेट	सी. पी.	२४	३५	८०	५०+ ६	४०+५०	४०	६७पू.	३६−	११	१६	५	२९	५५	४४	१८	२२४	२५५	३०४	३४०	३४३	३३४
स्यालकोट	पञ्जाब	३२	३१	७४	३६+३१	३६−११	४०	१५प.	३६+	२	३६	७	३९	७६	६१	२५	२०३	२३८	२९७	३४७	३६०	३५५
स्यूणी	सी. पी.	२२	६	७९	३५+११	४०+३८	१०	५०पू.	५४−	८	२९	४	५२	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
स्वात	सीमाप्रात	३५	०	७२	३५+३९	४०−३१	५०	४२प.	२४+	७	४	८	२४	८४	६७	२८	१९५	२३२	२९४	३५०	३६६	३६३
हजारा	,,	३४	१८	७३	१२+३७	१२−२५	४०	३४प.	१२+	५	४२	८	११	८२	६५	२७	१९७	२३४	२९५	३४९	३६४	३६१
हजारीबाग	बिहार	२३	५९	८५	२५−११	४०+९६	३०	१२८पू.	४२−	२१	२७	५	२१	५३	४३	१८	२२६	२५६	३०४	३४०	३४२	३३२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड रे. नि.	स्टैण्डर्ड रे. वि.	भूमध्य-रेखा. पला.	भूमध्य-रेखा. वि.	भूमध्य-रेखा. यो. यो.	भूमध्य-रेखा. यो. वि.	देशान्त. क.	देशान्त. वि.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
हनुमानगढ़	राजपूताना	२९	३५	७४	२१	+३२	३६	− १४	१०	१८प.	५४	+ ३	९	६	४९	६८	५५	२३	२११	२४४	२९९	३४५	३५४	३४७
हंपी	मद्रास	१५	२०	७६	३०	+२४	०	+ ७	२०	९पू.	४८	− १	३८	३	१७	३३	३२	११	२४६	२७३	३११	३३३	३२५	३१२
हमीरपुर	यू. पी.	२५	५८	८०	१०	+ ९	२०	+ ४४	०	५८पू.	४२	− ९	४७	५	५१	५८	४७	१९	२२१	२५२	३०३	३४१	३४६	३३७
हर्णई	विलोची-स्तान	३०	८	६७	५७	+५८	१२	− ७८	१०	१०४प.	१२	+१७	२२	६	५८	७०	५६	२३	२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९
हरदा	सी. पी.	२२	१८	७७	८	+२१	२८	+ १३	४०	१८पू.	१२	− ३	२	४	५५	४९	३९	१६	२३०	२६०	३०६	३३८	३३८	३२८
हरदोई	यू. पी.	२७	२३	८०	१०	+ ९	२०	+ ४४	०	५८पू.	४२	− ९	४७	६	१३	६२	५०	२१	२१७	२४९	३०१	३४३	३४९	३४१
हरिद्वार	,,	२९	५८	७८	८	+१७	२८	+ २३	४०	३१पू.	३६	− ५	१६	६	५४	६९	५५	२३	२१०	२४४	२९९	३४५	३५४	३४८
हरिपुर	पञ्जाब	३४	०	७२	५८	+३८	८	− २८	०	३७प	१८	+ ६	१३	८	६८	१६	५५	२७	१९८	२३४	२९५	३४९	३६४	३६०
हरिहर	मैसूर	१४	३३	७५	४९	+२६	४४	+ ०	३०	०पू.	४२	− ०	७	३	७	३१	२५	१०	२४८	२७४	३१२	३३२	३२४	३१०
हलद्वानी	यू. पी.	२९	१५	७९	४३	+११	८	+ ३९	३०	५२पू.	४२	− ८	४७	६	४३	६७	५४	२२	२१२	२४५	३००	३४४	३५३	३८६
हंजा	कश्मीर	३६	२६	७४	२५	+३२	२०	− १३	३०	१८प.	०	+ ३	०	८	५१	८८	७१	२९	१९१	२२८	२९३	३५१	३७०	३६७
हाजीपुर	बिहार	२५	४१	८५	१४	−१०	५६	+ ९	४४	१२६पू.	१२	−२१	२	५	४७	५८	४६	१९	२२१	२५३	३०३	३४१	३४५	३३७
हाथरस	यू. पी.	२७	३६	७८	६	+१७	३६	+ २३	२०	३१पू.	६	५	११	६	१७	६३	५०	२१	२१६	२४९	३०१	३४३	३४९	३४२
हावड़ा	बंगाल	२२	३५	८८	२३	−२३	३२	+१२६	१०	१६८पू.	१२	−२८	२	४	५९	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
हिंगणघाट	सी. पी.	२०	३४	७८	५३	+१४	२८	+ ३१	१०	४१पू.	३६	− ६	५६	४	३०	४५	३६	१५	२३४	२६३	३०७	३३७	३३५	३२४
हिंसार	पञ्जाब	२९	१०	७५	४३	+२७	८	− ०	३०	०प.	४२	+ ०	७	६	४२	६७	५४	२२	२१२	२४५	३००	३४४	३५३	३४६
हुगली	बंगाल	२२	४५	८८	४५	−२५	०	+१२	५०	१७३पू.	६	−२८	५१	५	२	५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
हुशियारपुर	पञ्जाब	३१	३२	७५	५७	+२६	१२	+ १	५०	२पू.	२४	− ०	२४	७	२२	७४	५९	२५	२०५	२४०	२९७	३४७	३५८	३५३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

भरतखण्डे प्रसिद्धनगरेषु केषांचिद्रेखान्तरमक्षांशाः पलभादयश्चसन्तीमे

नगर नाम	प्रान्त	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः नि.	स्टैण्डर्ड-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रेखांशाः प.	भूमध्य-रेखांशाः वि.	भूमध्य-रे. यो. यो.	भूमध्य-रे. यो. वि.	देशान्तरम् क.	देशान्तरम् वि.	पलभा. अं.	चरखण्डानि व्यं.	चरखण्डानि प्र.	चरखण्डानि द्वि.	चरखण्डानि तृ.	स्वोदयाः मे. मी.	स्वोदयाः वृ. कुं.	स्वोदयाः मि. म.	स्वोदयाः क. ध.	स्वोदयाः सिं. वृ.	स्वोदयाः क. तु.
हुसंगाबाद	सी. पी.	२२	४६	७७	४३	+१९	८	+१९	३०	२६पू.	०	– ४	२०	५	२५०	४०	१७	२२९	२५९	३०५	३३९	३३९	३२९
हैदराबाद	निजाम	१७	२०	७८	२७	+१६	१२	+२६	५०	३५पू.	४८	– ५	५८	३	४४	३७	३०	१२	२४२	२६९	३१०	३३४	३२९	३१६
हैदराबाद	सिन्ध	२५	२१	६८	२२	+५६	३२	–७४	०	९८प.	४२	+१६	२७	५	४१	५७	४५	१९	२२२	२५४	३०३	३४१	३४४	३३६
होसपेट	मद्रास	१५	१६	७६	२६	+२४	१६	+ ६	४०	८पू.	५४	– १	२९	३	१५	३२	२६	११	२४७	२७३	३११	३३३	३२५	३११

" यूरोप महाद्वीपके नगरनाममय विभाग "

नगरनामानि	विभाग.	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	पलभा. अं.	पलभा. क.	स्टैण्डर्डरेखा नि.	स्टैण्डर्डरेखा वि.	भूमध्यरेखा. प.	भूमध्यरेखा. विप	नगरनामा.	विभाग.	अक्षांशाः अ.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	पलभा. अं.	पलभा. व्य.	स्टैण्डर्ड रेखा. नि.	स्टैण्डर्ड रेखा. वि.	भूमध्य रेखा. प.	भूमध्य रेखा. विप
*ग्रीनविच	इग्लैण्ड	५१	२९	०	०	१५	५	+३३०	०	–७५	७४०	ब्रुसेल्स	बेल्जियम	५०	५२	४२२	१४४४	+३१२	३२	–७१४	०		
लण्डन	,,	५१	३०	०	५	१५	५	+३२९	४०	-७५	६५०	हेग	हॉलैण्ड	५२	६	४२०	१५२५	+३१२	४०	–७१४	२०		
बकिंगघम	,,	५२	०	१	०	१५	२४	+३२६	०	–७४	७४०	कोपनहेगन	डेन्मार्क	५५	४०	१२३०	१७३४	+२८०	०	–६३२	४०		
लिवरपूल	,,	५३	२४	२	५८	१६	८	+३१८	८	–७२	८ ०	बर्लिन	जर्मनी	५२	३२	१३२५	१५३९	+२७६	२०	–६२३	३०		
मैनचेस्टर	,,	५३	२८	२	१२	१६	८	+३२१	१२	-७३	५४०	म्यूनिक	,,	४८	८	११३५	१३२३	+२८३	४०	–६४१	५०		
ग्लासगो	स्कॉटलैण्ड	५५	५२	४	१५	१७	४२	+३१३	०	–७१	५१०	हेम्बर्ग	,,	५३	३५	१०	०	१६	१५	+२९०	०	–६५	७४०
डबलिन	आयरिसफ्री-स्टेट	५३	२१	६	१६	१६	७	+३०४	५६	–६९	५ ०	लिसबन	पुर्तगाल	३८	४४	९	९	९	३८	+२९	३२४	–६६	१०
मेड्रिड	स्पेन	४०	२४	३	४२	१०	१२	+३१५	१२	–७२	०४०												

*अस्मिन्नगरे महती वेधशाला विद्यते । अस्मात्पूर्वपश्चिमरेखा निःसृता । युरोपमहाद्वीपस्थानां सर्वेषां नगराणामक्षांशा उत्तरावोध्याः । ग्रीनिचनगरतः १३ होरायां समस्तेषुद्वीपान्तरेषु समयो ज्ञायते । ग्रीनिचनगरस्य ब्रिटिशस्टैण्डर्ड समयस्यैका होरान्तरम् । फ्रान्सदेशेपेरिससमयोवर्त्तते । बेलजियमदेशे हालैण्डदेशेच ग्रीनिचसमयोवर्त्तते । स्विट्जरलैण्डेदेशे इटलीदेशे मध्यजर्मनीदेशेच 'मिडयुरोपियन' समयोवर्त्तते सतु ग्रीनिचसमयतो १ होराऽग्रेवर्ततेऽस्य सेण्ट्रलयुरोपियननामान्तरमप्युच्यते.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

यूरोप महाद्वीप के नगर नाम	विभाग	अक्षांशः अं.	अक्षांशः क.	रेखांशः अं.	रेखांशः क.	पलभा. अं.	पलभा. व्य.	स्टैण्डर्ड रेखा. निमे.	स्टैण्डर्ड रेखा. वि.	भूमध्य रेखा. प.	भूमध्य रेखा. वि.
प्राग	चेकोस्लोवाकिया	५०	५	१४	२५	१४	२०	+२७	२२	०	-६१ ३०
वियना	आस्ट्रिया	४८	१२	१६	२२	१३	२५	+२६	४३	२	-५९ ४ ०
बेर्न	स्विटजरलैण्ड	४६	५५	७	३०	१२	५०	+३००	०	०	-६८ २४०
रोम	इटली	४१	५५	१२	२८	१०	४७	+२८०	८	०	-६३ ३ ०
बेलग्रेड	यूगोस्लैविया	४४	५०	२०	३०	११	५६	+२४८	०	०	-५५ २४०
टिराना	अल्बानिया	४१	०	२०	०	१०	२६	+२५०	०	०	-५५ ७४०
एथेंस	ग्रीस	३७	५४	२३	५२	९	२०	+२३	४३	२	-५१९ ०
बुडापेस्ट	हंगरी	४७	२९	१९	३	१३	६	+२५	३४	८	-५६ ७ १०
बुखारेस्ट	रूमानिया	४४	२५	२६	७	११	४५	+२२	५३	२	-४९ ६ ३०
सोफिया	बल्गेरिया	४२	४०	२३	२०	११	३	+२३	६४	०	-५२ ४ २०
(कास्टिन्टीनो-पल) इस्ताम्बूल	यूरोपीय टर्की	४१	०	२९	०	१०	२६	+२१४	०	०	-४६ ७४०

यूरोप महाद्वीप के नगर नाम	विभाग	अक्षांशः अं.	अक्षांशः क.	रेखांशः अं.	रेखांशः क.	पलभा. अं.	पलभा. व्य.	स्टैण्डर्ड रेखा. नि.	स्टैण्डर्ड रेखा. वि.	भूमध्य रेखा. प.	भूमध्य रेखा. वि.
वारसा	पोलैण्ड	५२	१२	२१	०	१५	२८	+२४	६	०	-५४ ७ ४०
कोवनो	लिथूनिया	५४	५६	२३	५३	१७	६	+२३	४	२८	-५१ ८ ५०
रीगा	लैटविया	५६	५७	२४	९	१८	२६	+२३	३	२४	-५१ ६ १०
टॉलिन	इस्थोनिया	५९	२४	२४	४५	२०	१७	+२३	१	०	-५१ ० १०
हेलसींकी	फिनलैण्ड	६०	९	२४	५७	२०	५५	+२३	०	१२	-५० ८ १०
स्टाकहोम	स्वीडन	५९	२०	१८	०	२०	१४	+२५	८	०	-५७ ७४०
ओसलो	नार्वे	५९	५४	१०	४५	२०	४२	+२८	७	०	-६५ ० १०
लेलिन ग्रेड	यूरोपीयरूस	५९	५७	३०	२०	२०	४५	+२०	८	४०	-४५ ४ २०
मास्को	,,	५५	४५	३७	३७	१७	३७	+१७	९	३२	-३८ १ ३०
डैन्जिग	बाल्टिक तट	५४	२०	१८	४५	१६	४३	+२५	५	०	-५७ ० १०
आइसलैण्ड	आइसलैण्ड	६५	०	१७	०	२५	४४	+२६	२	०	-५८ ७ ४०

"उत्तरीय अमेरिका महाद्वीपके नगरनाम मय विभाग"

नगर नाम	विभाग	अक्षांशा	रेखांशाः	पलभा.	स्टैण्डर्ड रेखा.	भूमध्यरेखा.
*वाशींगटन	U. S. A.	३८ ५५	७७ ४	९ ४१	+८ १४	-२० ७ १४०
न्यूयार्क	,,	४० ४३	७४ १	१० २०	+८ १३	५६ -२१ ० २ १०
शिकागो	,,	४२ ०	८७ ४०	१० ४८	+७ ५९	२० -१९ ६ ५ ४०
फलेडेल्फिया	,,	३९ ५७	७५ १०	१० ३	+८ ० ९	२० -२० ९ ० ४०
डेट्रोइट	,,	४२ २१	८३ ३	१० ५६	+७ ७ ७	४८ -२० ११ ५०
लासऐन्जलैस	,,	३४ ३	११८ ३७	८ ७	+६ ३ ५	३२ -१६ ५ ६ १०

नगरनाम	विभाग	अक्षांशः	रेखांशाः	पलभा.	स्टैण्डर्ड रेखा.	भूमध्यरेखा.
ओटावा	कैनाडा	४५ २७	७५ ४२	१२ ११	+८ ० ७	१२ -२० ८ ५ २०
ग्वाटेमाला	ग्वाटेमाला	१४ ३६	९० ३०	३ ८	+७ ४८	० -१९ ३ ७ २०
पोर्टअउप्रिंस	हैटी	१८ ३२	७२ १९	४ १	+८ २०	४४ -२१ १ ९ १०
टेगूसीगल्पा	हण्डूरास	१४ ९	८७ ०	३ १	+७ ६२	० -१९ ७ २ २०
मैक्सिको	मैक्सिको	२६ ०	९२ ०	५ ५१	+७ ४२	० -१९ २२ २०
मांट्रियल	कैनाडा	४५ ३१	७३ ३४	१२ १३	+८ १५	४४ -२१ ० ६ ४०

* एषामुत्तरीयामेरिकास्थदेशानामुत्तरा अक्षांशाः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

दक्षिण अमेरिका महाद्वीपके नगरनाम	विभाग	अक्षांशाः अं.	अक्षांशाः क.	रेखांशाः अं.	रेखांशाः क.	पलभा. व्यं.	स्टैण्डर्डरेखा नि.	स्टैण्डर्डरेखा वि.	भूमध्यरेखा. प.	भूमध्यरेखा. वि.
बाहिवेलेन्स	अर्जेन्टाइन	द. ३८	४०	६२	१३	९३६	+८६१	८	−२२२०	१०
न्यूनस आयर्स (न्यूना जायर्सा)	,,	द. ३४	३५	५८	२०	८१६	+८७६	४०	−२२५९	०
एसन्सन	परागुवे	द. २५	४१	५७	३५	५४६	+८७९	४०	−२२६६	३०
काराकस	वेनेज्यूला	द. १०	३१	६७	५	२१४	+८४१	४०	−२१७१	३०
क्विटो	इक्वेडर	द. ०	१०	७८	३५	०	२	+७९५	४०	−२०५६	३०
बोगोटा	कोलम्बिया	द. ४	४३	७४	१२	०	५९	+८१३	१२	−२१००	२०
मान्टीवीडियो	यूरागुवे	द. ३४	५५	५६	११	८२३	+८८५	१६	−२२८०	३०
लापाज	बोलविया	द. १६	३१	६७	५८	३३३	+८३८	८	−२१६२	४०
रायोडी जेनीरो	ब्राजिल	द. २२	५५	४३	१२	५	४	+९३७	१२	−२४१०	२०
लिमा	पेरू	द. १२	२७	७	२	२३४	+८०१	५२	−२०७२	०
सेन्टियागो	चाइल	द. ३३	२४	७०	४५	७५५	+८२७	०	−२१३४	५०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

एशिया महाद्वीप के नगरनाम	विभाग	अक्षांशः अं.	अक्षांशः क.	रेखांशः अं.	रेखांशः क.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	स्टैण्डर्डरेखा. नि.	स्टैण्डर्डरेखा. वि.	भूमध्यरेखा. प.	भूमध्यरेखा. वि.
*अङ्कारा	टर्की	३९	५७	३२	५४	१०	३	+१९	८२४	-४२	८४०
कोनिया	,,	३७	५२	३२	२८	९	२०	+२००	८	-४३३	०
बगदाद	ईराक	३३	२०	४४	२७	७	५३	+१५२	१२	-३१३	१०
मक्का	अरब	२१	२९	३९	५४	४	४३	+१७०	२४	-३५८	४०
अदन	,,	१२	४६	४५	२	२	४३	+१४९	५२	-३०७	२०
मदीना	,,	२४	३३	३९	५३	५	२९	+१७०	२८	-३५८	५०
रियाधनज्दद्दजाज	,,	२४	३९	४६	४१	५	३१	+१४३	१६	-२९०	५०
असीर	,,	२०	०	४२	०	४	२२	+१६२	०	-३३७	४०
जेरूसलीम	पेलेस्टाईन	३१	४६	३५	१४	७	२६	+१८९	४	-४०५	२०
अस्फहान	ईरान फारस	३२	३७	५१	३८	७	४२	+१२३	२८	-२४१	२०
तेहरान	फारस	३५	४१	५१	२५	८	३७	+१२४	२०	-२४३	३०
काबुल	अफगान.	३४	३०	६९	१८	८	१४	+ ५२	४८	- ६४	४०
गजनी	,,	३३	३४	६८	१७	८	०	+ ५६	५२	- ७४	५०
कंधार	,,	३१	३७	६५	३०	७	२३	+ ६८	०	-१०२	४०
जलालाबाद	,,	३४	२४	७०	२६	८	१३	+ ४८	१६	- ५३	२०
ओमस्क	एशिआई रूस	५५	०	३७	३८	१७	८	+ ३५	२८	- २१	२०
यारकन्द	चीन (जिनकिंग	३८	२४	७७	१५	९	३१	+ २१	०	+ १४	५०

एशिया महाद्वीप के नगर नाम	विभाग	अक्षांशः अं.	अक्षांशः क.	रेखांशः अं.	रेखांशः क.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	स्टैण्डर्डरे. नि.	स्टैण्डर्डरे. वि.	भूमध्यरे. पला.	भूमध्यरे. वि.
पेकिंग (पेपिंग)	चीन	३९	५५	११६	२४	१०	२	-१३५	४८	+४०६	५०
नानकिंग	,,	३२	७	११८	४७	७	३२	-१४५	८	+४३०	१०
कैन्टन	,,	२३	११	११३	१४	५	८	-१२२	५६	+३७४	४०
संघाई	,,	३४	१५	१२१	२९	८	१०	-१५५	५६	+४५७	१०
हांगकांग	,,	२२	१२	११४	१२	५	५४	-१२६	४८	+३८४	२०
पनाखा	भूटान	२७	३२	८९	५३	६	१६	- २९	३२	+१४१	१०
ल्हासा	तिब्बत	२९	४०	९१	५	६	५०	- ३४	२०	+१५३	१०
स्याम	स्याम	१६	०	१०३	०	२	२६	- ८६	०	+२७२	२०
बैंकाक	,,	१३	४२	१००	३०	२	५६	- ७२	०	+२४७	२०
कम्बोडिया	फ्रेञ्चइण्डो चाइना	१२	०	१०५	०	२	३३	- ९०	०	+२९२	२०
मदुरा	जावा	६७	०	११३	०	१	२८	-१२२	०	+३७२	२०
सिंगापुर	मलयद्वीप	१	१७	१०३	५१	०	१६	- ८५	२४	+२८०	५०
मेडान	सुमात्रा	६	३४	०	९८	३८	०	४६	- ६४	३२	+२२८	४०
जेनसन	कोरिया	३९	११	१२७	३४	९	४७	-१८०	१६	+५१८	०
सांनासिंग	मञ्चूको	४६	१९	१२९	३२	१२	३४	-१८८	८	+५३७	४०
टोकियो	जापान	३५	४०	१३८	४५	८	३७	-२२५	०	+६२९	५०
ओसाका	,,	३४	३९	१३५	२७	८	१७	-२११	४८	+५९६	५०

* एषां देशानामक्षांशा उत्तराः । यत्र दकारो विद्यते तस्यैव दक्षिणा अक्षांशा ज्ञेयाः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

एशिया महाद्वीप के नगर नाम	विभाग	अक्षांशः अं.	अक्षांशः क.	रेखांशः अं.	रेखांशः क.	पलभा. अं.	पलभा. व्यं.	स्टैण्डर्ड रे. नि.	स्टैण्डर्ड रे. वि.	भूमध्य रे. प.	भूमध्य रे. विप	एशिया महाद्वीप के नगर नाम	विभाग	अक्षांशः अं.	अक्षांशः क.	रेखांशः अं.	रेखांशः क.	पलभा. अं	पलभा. व्यं	स्टैण्डर्ड रे. नि.	स्टैण्डर्ड रे. वि.	भूमध्य रे. पला.	भूमध्य रे. वि.
अण्डमान	वंगोपसागर	१२	०	९२	४०	२	३३	–	४०	४०	+१६९ ०	नीकोबार	वंगोपसागर	८	०	९४	०	१	४१	–	४६	०	+१८२२०

'आस्ट्रेलिया महाद्वीपके नगरनाम मय विभाग' तथा निकटवर्तिद्वीप।

फिजी	प्रशान्तसागर	१६	०	१८०	०	३	२६	–	३९०	०	१०४२२०	सीडनी	पू. आस्ट्रे.	द३३	५२	१५१	१२	८	३	–	२७४४८	+	७५४२०
पर्थ	प. आस्ट्रे.	द३२	०	११५	५०	७	५४	–	१३३२०	+	४००४०	मेलबोर्न	विक्टोरिया	द३७	५०	१४४	५९	९	११	–	२४९५६	+	६९२१०
कैनवेरा	पू. आस्ट्रे.	द३५	१७	१४९	१८	८	३०	–	२६७१२	+	७३५२०	वेलिंग्टन	न्यूजीलैण्ड	द४१	१६	१७४	४७	१०	३२	–	३६९	८	+९९०१०

'आफ्रिका महाद्वीपके नगरनाम मय विभाग'

नगरनामानि	विभाग	आक्षांशः	रेखांशः	पलभा.	स्टैण्डर्ड रेखा	भूमध्य रे.	नगर नामानि	विभाग	अक्षांशा	रेखांशः	पलभा	स्टैण्डर्ड रेखा	भूमध्यरेखा
जंजीबार	पूर्वी आफ्रिका	द. ५ ०	३८ ३०	१ ३	+१७६	० –३७२४०	लाइबेरिया	पश्चि. आफ्रि.	द. ६ ०	९ ०	११६	+२९४	० –६६७४०
एडिस अबाबा	अबिसीनिया	९ २	३८ ४४	१ ५४	+१७५	४ –३७०२०	डरबन	नैटाल	द२९ ५२	३१ १	६५३	+२०५५६	–४४७३०
खारतूम	सूडान	१५ ३५	३२ ३५	३ २१	+१९९४०	–४३१५०	लीबीरिया	पश्चि. अफ्रि.	द. ६ ०	९ ०	११६	+२९४	० –६६७४०
नैरोबी	कीनिया	द. ११ ८	३६ ५२	० १६	+१८२३२	–३८९ ०	फ़ेज	मोरक्को	३४ ८	५ ६	८ ८	+३०९३६	–७०६४०
न्यीसा	मध्य ,,	१२ ०	३४ ३०	२ ३३	+१९२	० –४१२४०	मनरोविया	लाइबेरिया	६ १८	१० ४५	११८	+२८७	० –६५०१०
ट्रान्सवाल	दक्षिणी ,,	द२५ ०	२९ ०	५ ३६	+२१४	० –४६७४०	कैरो	मिश्र	३० २	३१ १५	६५६	+२०५	० –४४५१०
केपऑफगुडहोफ	,,	द३३ ५६	१८ २५	८ ४	+२५६२०	–५७३३०	अलग्झेंड्रिया	,,	३१ १२	२९ ५३	७१५	+२१०२८	–४५८५०
(केप टाउन)	,,	द.,, ५६	१८ २५	८ ४	+२५६२०	–५७३३०	ट्रिपोली	उत्तरीलीबिया	३२ ४५	१३ १५	७४३	+२७७	० –६२५१०
कागोन	बेलजियमकांगो	द. २ ०	२० ४०	० २५	+२४७२०	–५५१ ०	स्वेज	मिश्र	३० ०	३२ ३०	६५५	+२००	० –४३२४०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

'भुजज्या स्पर्शज्या च' 'अत्रभुजज्यातो त्रिलोमाधिचिना कोटिज्यापि साध्या'

भुजांशाः	भुजज्या	स्पर्शज्या	भुजा	भुजज्या	स्पर्शज्या	भुजा	भुजज्या	स्पर्शज्या
०	००००.	००००.	३०	०००५.	६७७५.	६०	०३३७.	०८६७·४
१	५७४०.	५७४०.	३१	०५४५.	१००३.	६१	५५७७.	०५०७·४
२	६८५०.	५८६०.	३२	४४८५.	५५८३.	६२	०४४७.	३४३४·४
३	७४३०.	४४०४.	३३	३३७५.	५५७५.	६३	४४७७.	६०५०·८
४	८७३०.	४४३०.	३४	३०५५.	६०००७.	६४	६६६७.	६०५०·८
५	९७७०.	७७००	३५	३६६६.	८०००७.	६५	६६०४.	५५४४·८
६	०४०४.	५७०४.	३६	३७७५.	५५७३.	६६	५६४४.	०३५८·८
७	४४८४.	७८८४.	३७	३८६७.	३६५७.	६७	५०८४.	४५५६·८
८	८४६४.	५०५४.	३८	३९५५.	८७५७.	६८	८७८४.	४५७५·८
९	०४५५.	५४०५.	३९	४०७७.	६०००३.	६९	८४६४.	८६६३·७८
१०	०००००.	००००.	४०	०००५.	६७७५.	७०	०३३७.	०८६७·४
११	७५७५.	६५५५.	४१	८७५७.	६५३३.४	७१	७४४४.	००४८·७५
१२	५४३५.	७४६५.	४२	०७५७.	६००३.४	७२	५४४४.	८३६३·७८
१३	०५५५.	५४०५.	४३	७७६७.	४४६५.४	७३	७७४४.	४४७०·४४
१४	५७६५.	७७७५.	४४	५६६७.	६७६५.४	७४	६३४४.	७०७०·४
१५	८३८५.	६३३५.	४५	८४४७.	४७८५.४	७५	८४४४.	०८६५·४४
१६	७३०५.	८५५५.	४६	०४०७.	५३७६.४	७६	५५५४.	५५४५·४
१७	७०४६.	५५८५-	४७	३७४७.	५०५८.४	७७	६८४४.	६५५५·७
१८	३५७६.	०५०५.	४८	०७७७.	४४७८.४	७८	६०४४.	५५७६·७
१९	५७५६.	४६७६.	४९	४७७७.	५५६८.४	७९	७७७७.	६०५०·७
२०	०८५६.	०५३६.	५०	०३३७.	७४४.४	८०	७५७४.	६४७३·५
२१	३५८६.	६५५६.	५१	७५५७.	५०५४.४	८१	३४७४.	५५५४·५
२२	०४०६.	४५८६.	५२	४७७७.	५७७८.४	८२	४७४४.	०५०७·४
२३	४७८५.	७५०६.	५३	४४७७.	५५६८.४	८३	७७७४.	०८६७·४
२४	५७०६.	४७०६.	५४	६६७७.	६०००३.४	८४	६३३४.	८६६३·७८
२५	८७६६.	५०५६.	५५	८७५७.	६५३३.४	८५	८७८४.	४४७०·४४
२६	४४८६.	७८८६.	५६	०४०७.	६००३.४	८६	०४०४.	०८६७·४
२७	५७०६.	५०५६.	५७	३७४७.	५०५८.४	८७	३७४४.	०५०७·४
२८	०५५६.	५४०६.	५८	०७७७.	४४७८.४	८८	०७७४.	०८६७·४
२९	७५७६.	६५५६.	५९	४७७७.	५५६८.४	८९	४७४४.	६०५०·८
३०	०००५.	६७७५.	६०	०३३७.	०८६७·४	९०	०००००.४	००४८·७५
३१	७५७५.	६५५५.	६१	८७५७.	६५३३.४	९१	७४४४.	००४८·७५
३२	५४३५.	७४६५.	६२	०७५७.	६००३.४	९२	५४४४.	८३६३·७८
३३	०५५५.	५४०५.	६३	७७६७.	६६६५.४	९३	७७४४.	४४७०·४४
३४	५७६५.	७७७५.	६४	५६६७.	६७६५.४	९४	६३४४.	७०७०·४
३५	८३८५.	६३३५.	६५	८४४७.	४७८५.४	९५	८४४४.	०८६५·४४
३६	७३०५.	८५५५.	६६	०४०७.	५३७६.४	९६	५५५४.	५५४५·४
३७	७०४६.	५५८५-	६७	३७४७.	५०५८.४	९७	६८४४.	६५५५·७
३८	३५७६.	०५०५.	६८	०७७७.	४४७८.४	९८	६०४४.	५५७६·७
३९	५७५६.	४६७६.	६९	४७७७.	५५६८.४	९९	७७७४.	६०५०·८
४०	०३३५.	०५३६.	७०	०००५.	६७७५.	१००	०००००.४	००४८·७५
४१	०४०५.	५७०६.	७१	०५४५.	१००३.	१०१	७५७४.	०५०७·४
४२	४४८५.	५४६६.	७२	४४७५.	५५८३.	१०२	५४७४.	०८६७·४
४३	३३७५.	७४६६.	७३	३३७५.	७४६३.	१०३	७७७४.	६०५०·८
४४	३०५५.	५०५६.	७४	३०५५.	६०००७.	१०४	६३३४.	८६६३·७८
४५	३६६६.	८०००७.	७५	३६६६.	८०००७.	१०५	८४४४.	४४७०·४४
४६	३७७५.	५५७३.	७६	३७७५.	५५७३.	१०६	०४०४.	०८६७·४
४७	३८६७.	३६५७.	७७	३८६७.	३६५७.	१०७	३७४४.	०५०७·४
४८	३९५५.	८७५७.	७८	३९५५.	८७५७.	१०८	०७७४.	०८६७·४
४९	४०७७.	६०००३.	७९	४०७७.	६०००३.	१०९	४७४४.	६०५०·८

अक्षांशों के भुजांशोंकेतुल्य कोष्टकी भुजज्या वा स्पर्शज्या को ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करे तदनन्तर भुक्तभोग्यखण्डके अन्तरसे अक्षांशों की भुजकी कला को गुणकर ६० से भाग दे लब्धको एकान्त में स्थित भुजज्या वा स्पर्शज्या में युक्त करनेसे स्पष्ट भुजज्या अथवा स्पष्ट स्पर्शज्या होती हैं।

अक्षांशों को ९० अंश में घटाकर जो शेष बचे वे अक्षांशोंके कोटयंशादि होते हैं। कोटी के अंशोंके तुल्य भुजज्याकोष्ठसे ज्याको ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करे तदनंतर भुक्तभोग्यज्या खंडके अन्तरसे कोटी की कलाको गुणकर ६० से भाग दे लब्धको एकान्तस्थित ज्या में युक्तकरे तब कोटीज्या होती हैं ॥

उदाहरण

गढवालके अक्षांश ३०।१५ हैं ये स्वभुज हैं अतः अक्षांश ३० के तुल्य भुजज्या ५००० को ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करदिया। तदनन्तर मुक्तज्या खण्ड ५००० और भोग्यज्याखण्ड ५१५० का अन्तर किया तो १५०शेष रहे। इनसे अक्षांशों के भुजकी कला १५ को गुणातों २२५० हुए इनमें ६० से भागदिया तो लब्ध ३७ हुए इनको एकान्त में स्थितज्या ५००० में युक्त किया तो ५०३७ इष्ट अक्षांशोंकी इष्ट भुजज्या हुई।

अक्षांश ३०।१५ को ९० में हीन किया तो ५९।४५ अक्षांशों की कोटी हुई। कोटयंश ५९ के तुल्य भुजज्या खंड ८५७२ को ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करदिया। तदनंतर भुक्तज्याखंड ८५७२ भोग्यज्या खंड ८६६० का अन्तर कियातो ८८ शेषबचे इनसे कोटी की कला ४५ को गुणातो ३९६० हुए इनमें ६० से भागदिया तोलब्ध ६६ हुए इनकोएकान्त में स्थित ज्याखण्ड ८५७२ में युक्त कियातो ८६३८ इष्ट अक्षांशोंकी इष्ट कोटीज्या हुई। अक्षांश ३०।१५ के अंश ३० के तुल्य स्पर्शज्या खण्ड ५७७३ को एकान्तमें स्थापित करदिया। तदनंतर भुक्तस्पर्शज्या खण्ड ५७७३ का और भोग्यस्पर्शज्याखण्ड ६००९ का अन्तर किया तो २३६ शेष बचे इनसे अक्षांशों की कला १५ को गुणातो ३५४० हुए इनमें ६० से भागदियातो लब्ध ५९ हुए इनको एकान्तमें स्थित भुक्त स्पर्शज्या खंड ५७७३ में युक्त किया तो ५८३२ इष्ट अक्षांशों की इष्ट स्पर्शज्या हुई ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भूपरिधि प्रभृति परिज्ञानः—

शून्याभ्राभ्रशरोन्मितैः कुपरिधिः सङ्कीर्त्तितो योजनै-
श्चन्द्रेभाक्षभुवस्तु योजनमयी तद्विस्तृतिः संस्मृता ।
*रेखांशान्तरताडितः कुपरिधिः खाश्व्यद्रिभक्तः फलं
रेखायोजनमुच्यते निजनिजग्रामस्य पूर्वैर्बुधैः ॥ ९ ॥

पाँच हजार योजन ५००० भूपरिधि और एक हजार पाँचसौ इक्यासी योजन १५८१ 'भूविस्तृति' कही है। भूमध्य रेखांश और इष्ट ग्राम के रेखांशों के अन्तर से भूपरिधि को गुणकर ७२० से भाग दे लब्ध 'इष्ट ग्राम के रेखायोजन' होते हैं।

—: उदाहरण :—

७९°, ३०' गढवाल के रेखांश हैं। ७५°, ४६', मरुरेखा नगर उज्जयिनि के रेखांश हैं। इन दोनों का अन्तर किया तो ३°, ४४' शेष बचे। इन से ५००० भूपरिधि को गुणा तो १८६६६।४० गुणन फल हुआ। इस में ७२० से भाग दिया तो लब्ध २५ योजन हुए। शेष ६६६।४० को ५ से गुणा तो ३३३३।२० हुए। इन में पुनः ७२० से भाग दिया तो लब्ध ४$\frac{२}{३}$ मील हुए। इस प्रकार २५ योजन ४$\frac{२}{३}$ मील 'गढवाल के रेखा योजन' हुए।

* रेखांशसाधनरीतिः— +

स्पर्शेऽथ वान्त्ये ग्रहणस्य शीतगोर्ग्रामोज्जयिन्योर्नतसंज्ञकान्तरात् ।
गुहाननघ्नाद् घटिकाः क्रमान्मता रेखालवाः प्रागपरे धनाधनम् ॥ १० ॥

* इहोज्जयिनीरेखायाः ७५°, ४६', संनिहितानि नगराणि श्रीवेङ्कटेशाचार्य्य आह— जालन्धरं जयपुरं किल सौम्यदेशे टोकं च कोटपुरमुज्जयिनी च मध्ये । याम्ये तु भास्करपुरं दिडनामधेयं सोलापुरं नटनु दागलकोटपृश्च १ कर्णाटके हरिहरं मडकेरिनाम्नी मल्याल वारिधितटस्थितकालिकोटश्च मेरूज्जयिन्युपरिगप्रथमाख्यरेखोपान्ते स्थिता भरतखण्ड इमा नगर्य्यः २ इति ।

माक्षदेशत्वादुक्तनगरेषु भूमध्य रेखा नास्ति । दक्षिणध्रुवत उत्तरध्रुवपर्य्यन्तं या रेखा वर्त्तते सा भूमध्य रेखा ज्ञेया । स एव निरक्षदेशः ग्रीनिचनगराद् या रेखाऽऽगता सा पूर्वपश्चिमाभिधा मता । सैव जालन्धरादिषु विद्यते ततो देशान्तरं साध्यम् । भूमध्य रेखातोऽक्षाशाः साध्याः । तेभ्यश्चरान्तरं साध्यं तस्माद्याम्योत्तरलंघनकालः साध्यः इति ।

अत्रोज्जयिन्यामिष्टग्रामे च भानां याम्योत्तरलंघनकालमालोक्य मध्यकालः साध्यः। ततः उज्जयिन्यां प्रवर्त्तितं कालयंत्रं प्रयत्नेन स्वग्रामे नीत्वोभाभ्यां कालयंत्राभ्यां दर्शितयोः कालयोर्यावान्भेदस्तावत्तद्ग्रामे रेखान्तरम् । एवं विलोममनुलोमं चासकृते यानि रेखान्तराणि लभ्यन्ते तेषां मध्यममानं सूक्ष्मरेखान्तरं भवेत् उज्जयिन्याः कालापेक्षयेष्टग्रामीयः कालो यद्यधिकस्तर्हि रेखान्तरं पूर्वमन्यथा पश्चिममिति ज्ञेयम् । इह सर्वेषां नगराणां ग्रीनिचनगरात् (लन्दनसमीपस्थ स्थानात्) प्रभृतिरेखांशा बोध्याः। स्टैण्डर्डरेखा ८२°, ३०°, नतं निरक्षोदयादिकं स्थानीयार्कोदयहोरादिषु कोष्ठवद् धनर्णं विधेयं तदा स्टैण्डर्डकालः (रेलवे टाइम) भवेत् । तदनन्तरं स्टैण्डर्डकाले विलोमं देयं तदा स्थानीयकालो भवेत् ।

* ग्रन्थकारैरिह दिगंशसाधनमुक्तम्— द्युमानमेषाध्यगुणान्तरं भूधराविनिघ्नं दिवसेऽल्पपुष्टे । अयागुदक् स्यादनुदग् हि यंत्रभागापमः कीर्तित आर्य्यवर्य्यैः १ तत्संस्कृतिः कुञ्जन्ताडिता खगो ९० यंत्रभागान्तरजापमाप्ता । ततो भुजांशा हरिदंश-कारकास्त एव रेखालवका निरुक्ताः इति ।

+ 'श्रीगणेशाचार्य्यैर्नतांशसाधनमुक्तं' 'तदित्थम्'— यातः शेषः प्राक्परत्रोन्नतः स्यात्कालस्तेनोनं द्युखण्डं नतं स्या' दित्यनेन नतं साध्यम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चन्द्रग्रहण के स्पर्शकाल में अथवा मोक्ष काल में अभीष्ट ग्राम और उज्जयिनी की नत घटियों के अन्तर को ६ से गुणे तब अभीष्ट ग्राम के 'रेखांश' होते हैं। उज्जयिनी से अभीष्ट ग्राम पूर्व होतो रेखांश धन और पश्चिम हो तो रेखांश ऋण होते हैं।

—: उदाहरण :—

गढवाल में चन्द्रग्रहण के स्पर्श काल की नत घ. ८ प. २५ उज्जयिनी में नत घ. ९ प. २ हैं। इन दोनों का अन्तर किया तो ०।३७ घट्यादि हुए। इन को ६ से गुणातो ३°, ४२' गढवाल के मध्यम रेखांश हुए। उज्जयिनी से 'गढवाल पूर्व है अतः धन हुए। उज्जयिनी के ७५°, ४६', रेखांश में पूर्वागत ३°, ४२', रेखांश को युक्त किया तो ७९° २८' गढवाल के स्पष्ट रेखांश हुए।

देशान्तर फल साधन रीतिः—

रेखायोजनताडिता खगगतिस्तारापथेभोद्धृता
यल्लब्धं विकलादिकं भवति तद् ग्रामे परे प्राक् क्रमात्।
स्वर्णं मध्यखगे विधेयमथ वेन्दौ लिप्तिकायां तथा
रेखायोजनषड्लवो धनमृणं देयं गतेर्गौरवात् ॥ ११ ॥

रव्यादि ग्रहों की मध्यम गति को रेखा योजन से गुण कर ८० से भाग दे तब लब्ध 'विकलादि देशान्तर फल' होता है। यदि रेखा नगर (उज्जयिनी) से इष्ट ग्राम पश्चिम हो तो मध्यमग्रह में, ग्रह के विकलादि देशान्तर फल को धन और पूर्व होतो ऋण करे तब 'देशान्तर फलसंस्कृत मध्यम ग्रह' होता है। अथवा चन्द्र गति की अधिकता के कारण रेखा योजन में ६ से भाग दे लब्ध 'कलादि देशान्तर' होता है। मध्यम चन्द्र की कलादियों में कलादि देशान्तर को पश्चिम पूर्व के क्रम से धन ऋण करे अर्थात् रेखानगर (उज्जयिनी) से इष्ट ग्राम पश्चिम होतो धन और पूर्व हो तो ऋण करे तब 'देशान्तर फल संस्कृत मध्यम चन्द्र' होता है।

—: उदाहरण :—

सूर्य की मध्यम गति ५९।८ को गढवाल के रेखा योजन २५।४३ से गुणा तो १४९५।५ हुए। इन में ८० से भाग दियातो लब्ध १८।४१ 'सूर्य का विकलादि देशान्तर फल' हुआ। रेखा नगर (उज्जयिनी) से गढवाल पूर्व में है अतः सूर्य का देशान्तर फल विकलादि १८।४१ ऋण हुए। एवं चन्द्रादियों के देशान्तर फल को साधे।

अथवा रेखा योजन २५ में ६ से भाग दिया तो लब्ध ४।१० 'कलादि देशान्तर फल' हुआ। रेखा नगर से गढवाल पूर्व में है अतः ऋण हुआ। बीजसंस्कृत मध्यम चन्द्र ५।४।४५।३९ में कलादि देशान्तर फल ४।१० को ऋण किया तो ५।०।४१।२९ देशान्तर फल संस्कृत मध्यम चन्द्र' हुआ।

प्रकारान्तर से देशान्तर फल साधन रीति—

रेखान्तरांशाः खगभुक्तिनिघ्नाः खदृक्कुरङ्गैर्विहृताः फलं यत्।
प्राच्यां प्रतीच्यां क्रमतः क्षयं स्वं कलासु तन्मध्यखगे विधेयम् ॥ १२ ॥

मध्यरेखा नगर (उज्जयिनी) के रेखांशों और इष्ट ग्राम के रेखांशों के अन्तर को ग्रह की मध्यम गति से गुण कर ७२० से भाग दे लब्ध 'कलादि देशान्तर फल' होता है। मध्य रेखा नगर (उज्जयिनि) से इष्ट ग्राम पूर्व होतो 'ऋण' और पश्चिम हो तो देशान्तर फल धन होता है। मध्यम ग्रह की कलादियों में कलादि देशान्तर को ऋण होतो हीन और धन होतो युक्त करे तब 'देशान्तर फल संस्कृत मध्यम ग्रह' होता है।

—: उदाहरण :—

७९°, ३०' गढवाल के रेखांश हैं। ७५°, ४६' मध्य रेखा नगर (उज्जयिनि) के रेखांश हैं। इन दोनों का अन्तर कियातो ३°, ४४', शेष बचे। इनको सूर्य मध्य गति ५९,८ से गुणातो २२०।४६ हुए। इन में ७२० से भाग दियातो लब्ध ०।१८।२४ सूर्य का कलादि देशान्तर हुआ। एवं रेखान्तरांश ३, ४४ को चन्द्रगति ७९०।३५ से गुणातो २९५१।३१ हुए। इन में ७२० से भाग दिया तो लब्ध ४।६ चन्द्रमा का कलादि देशान्तर हुआ। मध्य रेखा नगर नगर (उज्जयिनि) से 'गढवाल' पूर्व में है अतः चन्द्रमा कलादि देशान्तर फल ऋण हुआ। एवं अन्य ग्रहों के देशान्तर फल को साधे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'सूर्य्यस्पष्टसारणीयम्'।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९		१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
अं.	०	०	०	०	०	८	०	०	०	०	गु. २	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. १९
	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	ध.	२०	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	धनं
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. १	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०
ग.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	गु. ३	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	गु. ३
	६	६	७	७	८	९	९	१०	१०	११	ध.	१२	१२	१३	१३	१४	१५	१५	१६	१६	१७	धनं
फ.	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९		३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ९	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. ८
	३९	४०	४२	४४	४६	४८	४९	५१	५३	५५	ध.	५७	५८	०	१	३	५	६	८	९	११	ध.
फ.	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
ग.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	गु. ३.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	गु. ६
	१८	१८	१९	१९	२०	२१	२१	२२	२२	२३	ध.	२४	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	ध.
फ.	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९		५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. ७	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. ६
	१३	१४	१५	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	ध.	२७	२८	२९	३०	३१	३३	३४	३५	३६	३७	ध.
फ.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
ग.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	गु. ६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	गु. ९
	३६	३७	३८	३९	४०	४२	४३	४४	४५	४६	ध.	४८	४९	५१	५३	५५	५७	५८	०	२	४	ध.
फ.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९		७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. १९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. १
	३९	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	ध.	४८	४८	४९	४९	५०	५०	५१	५१	५२	५२	ध.
फ.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २
ग.	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	गु. ९	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	गु. ९
	६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	ध.	२४	२५	२७	२९	३१	३३	३४	३६	३८	४०	ध.
फ.	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५

अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९		९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	२	१	गु. १	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. १
	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	ध.	५५	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	ध.
फ.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०
ग.	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	गु. १२	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	गु. ९
	४२	४४	४६	४९	५१	५४	५६	५८	१	३	ध.	६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	ध.
फ.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५

अं.	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९		११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. १.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. ४
	५४	५३	५३	५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	ऋ.	४९	४८	४७	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४१	ऋ.
फ.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
ग.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	गु. ९.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०	६०	गु. १२
	२४	२५	२७	२९	३१	३३	३४	३६	३८	४०	ध.	४२	४४	४६	४९	५१	५४	५६	५८	१	३	ध.
फ.	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९		१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. ६	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. ७
फ.	४१	३९	३८	३७	३६	३५	३३	३२	३१	३०	ऋ.	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१७	१६	ऋ.
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५	०	३६	१२	४८	३४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
ग.	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	गु. ९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	गु. ९
फ.	६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	ध.	२४	२५	२७	२९	३१	३३	३४	३६	३८	४०	ध.
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५

अं.	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९		१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. १६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. १९
फ.	१५	१३	११	१०	८	७	५	३	२	०	ऋ.	५९	५७	५५	५३	५१	४९	४७	४५	४३	४१	ऋ.
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. १०	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
ग.	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	गु. ६	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	गु. ३
फ.	४२	४३	४४	४५	४६	४८	४९	५०	५१	५२	ध.	५४	५४	५५	५५	५६	५७	५७	५८	५८	५९	ध.
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५

अं.	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९		१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. २	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० गु. २
फ.	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	ऋ.	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	० ऋ
	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. १	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०भा. १
ग.	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	गु. ३	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१ गु. ०
	०	०	१	१	२	३	३	४	४	५	ध.	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६ ध.
फ.	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०भा. ०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्यस्पष्टसारणी प्रवेश रीतिः—

तात्कालिक मध्यम रवि में रवि के राश्यादि स्पष्ट मन्दोच्च को हीन करे तब 'रविका मन्द केन्द्र' होता है। यदि रवि मन्द केन्द्र ६ राशि से न्यून होतो वह स्वयं 'षड्भाल्प केन्द्र' होता है। यदि रवि मन्द केन्द्र ६ राशि से अधिक होतो उस को १२ राशि में शोधन (हीन) करे तब 'षड्भाल्प केन्द्र' होता है। षड्भाल्प केन्द्र की राशि को ३० से गुणकर अंशोंको युक्त करे तब 'षड्भाल्प केन्द्रांश' होते हैं। तदनन्तर सूर्य स्पष्ट सारणी में से उन षड्भाल्प केन्द्रांशों के तुल्य कोष्ठ के नीचे के अंशादि फल को लेकर एकान्त में स्थापितकरे। इष्ट कोष्ठ के अंशादियों के और गम्य (अग्रिम) कोष्ठ के अंशादियों के अन्तर से षड्भाल्प केन्द्र की कला तथा विकला को गोमूत्रिका रीति से गुणकर तब जो गुणन फल हो उस में ६० से भाग दे लब्ध कलादियों को एकान्त में स्थित अंशादि फल में धन ऋण करे अर्थात् इष्ट (गत) कोष्ठके अंशादि फल से गम्य (अग्रिम) कोष्ठ का अंशादि फल अधिक होतो लब्ध कलादियों को एकान्त में स्थित अंशादि फल में धन करे और इष्ट (गत) कोष्ठके अंशादि फल से गम्य (अग्रिम) कोष्ठ का अंशादि फल न्यून (अल्प) होतो लब्ध कलादियों को एकान्त में स्थित अंशादि फल में ऋण करे तब 'अंशादि स्पष्ट रवि मन्द फल' होता है। रवि मन्द केन्द्र मेषादि ६ राशि के अन्तर्गत होतो मध्यम रवि में अंशादि रवि मन्द फल को ऋण (हीन) करे। यदि रवि मन्द केन्द्र तुलादि ६ राशि के अन्तर्गत होतो मध्यम रवि में अंशादि रवि मन्द फल को धन (युक्त) करे तब 'मन्द स्पष्ट रवि' होता है।

—: उदाहरण :—

तात्कालिक मध्यम रवि २।२१।३७।५३ में रवि के राश्यादि स्पष्ट मन्दोच्च २।१८।४४।४५ को हीन किया तो ०।२।५३।८ 'रवि मन्द केन्द्र' हुआ। यह केन्द्र ६ राशि से न्यून है अतः स्वयं ०।२।५३।८ 'षड्भाल्प केन्द्र' हुआ। इस की राशि ० को ३० से गुणा तो ० हुआ इस में २ अंश को युक्त किया तो २।५३।८ 'षड्भाल्प केन्द्रांशादि' हुए। स्पष्टसूर्य सारणी में २ अंश के तुल्य कोष्ठ के नीचे के अंशादि फल ०।४।० को लेकर एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर इष्ट २ (गत) कोष्ठ के अंशादि ०।४।० का और गम्य (अग्रिम) कोष्ठ ३ के नीचे के अंशादि फल ०।६।० का अन्तर किया तो २।० शेष बचे इन से षड्भाल्प केन्द्र के कलादि ५३।८ को गुणा तो १०६।१६ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ०।४६ कलादि फल हुआ। यहां इष्ट कोष्ठ के अंशादि फल ०।४।० से गम्य कोष्ठ ३ का अंशादि फल ०।६।० अधिक है अतः इष्ट कोष्ठ के अंशादि फल ०।४।० में लब्ध कलादि ०।४६ को युक्त किया तो ०।५।४६ 'रवि का अंशादि स्पष्ट मन्द फल' हुआ। यहां रवि मन्द केन्द्र ० राशि है यह मेषादि ६ राशि के अन्तर्गत है इसलिए ०।५।४६ अंशादि मन्द फल ऋण हुआ। मध्यम रवि २।२१।३७।५३ में मन्द फल ०।५४६ को ऋण (हीन) किया तो २ राशि २१ अंश ३२ कला ७ विकला 'मन्द स्पष्ट रवि' हुआ।

रविमन्द स्पष्ट गति साधन रीतिः—

षड्भाल्प केन्द्रांश के तुल्य कोष्ठ के नीचे के अंशादि फल के नीचे के कोष्ठ में से रविमन्द गति को लेकर एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर इष्ट कोष्ठ की गति के और गम्य (भोग्य) कोष्ठ की गति के अन्तर से षड्भाल्प केन्द्र की कला और विकला को गोमूत्रिका रीति से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध प्रति विकलादि होते हैं। उनको एकान्त में स्थित रविमन्द गति की प्रति विकलादियों में युक्त करे तब 'सूर्य की मन्दस्पष्टगति' होती है।

—: उदाहरण :—

षड्भाल्प केन्द्रांशादि २।५३।८ के अंश २ के तुल्य कोष्ठ के नीचे के अंशादि फल के नीचे की रवि मन्द गति ५७।७।१२ को लेकर एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर गत कोष्ठ की गति ५७।७।१ का और अग्रिम कोष्ठ की गति ५७।७।४८ का अन्तर किया तो ०।३६ शेष बचे। इन से षड्भाल्प केन्द्र के कलादि ५३।८ को गुणा तो १९१२।४८ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ३२ प्रतिविकला हुई। इनको एकान्त में स्थापित रविमन्द गति ५७।७।१२ की प्रति विकला १२ में युक्त किया तो ५७।७।४४ हुए। यहां प्रति विकला

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

४४ है यह ३० से अधिक है अतः 'अर्द्धाधिके रूपं ग्राह्यम्' इस न्याय्य से ७ विकला में १ युक्त किया तो ५७ कला ८ विकला रविमन्द गति हुई।

अक्षांश साधन रीतिः—

अक्षच्छाया बाणनिघ्नाक्षभाया वर्गांशांशप्रोज्झिता स्युः पलांशाः।
सौम्याशायास्तेभ्य आर्य्यैः पुराणैरक्षच्छाया साध्यते व्यस्तरीत्या ॥ १३ ॥

इष्ट ग्राम की अङ्गुलादि पलभा को ५ से गुणकर जो गुणन फल हो उस को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर पलभा का वर्ग कर के १० से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को एकान्त में स्थित पञ्चगुणित पलभा में हीन करे शेष 'उत्तर दिशा के अक्षांश' होते हैं। एवं उन अक्षांशों से विलोम विधि द्वारा पलभा का साधन करे।

—: उदाहरण :—

गढवाल की अङ्गुलादि पलभा ७।० को ५ से गुणा तो ३५।० हुए। इन को एकान्त में स्थापित कर दिया। तदनन्तर पलभा ७।० का वर्ग किया अर्थात् इष्ट संख्या ७।० को अपने ७।० से गुणा तो ४९।० हुए। इन में १० से भाग दिया तो लब्ध ४।५४ हुए। इन को एकान्त में स्थित पञ्चगुणित पलभा ३५।० में हीन किया तो ३०°।६' उत्तर दिशा के अक्षांश' हुए।

अक्षांशों से पलभा साधन रीतिः—

विहायसेलागुणितः पलांशैर्बाणाश्विरागा रहिता उतैभ्यः।
ग्राह्यं पदं तद्रहिताः समीरपरेतराजः पलभाऽङ्गुलाद्या ॥ १४ ॥

इष्ट ग्राम के अक्षांशों को १० से गुणकर जो गुणन फल हो उस को ६२५ में हीन करे तब जो शेष बचे। उन से वर्ग मूल लेकर २५ में हीन करे शेष 'अङ्गुलादि पलभा' होती है।

—:उदाहरणः —

गढवाल के अक्षांश ३०।६ को १० से गुणा तो ३०१।० हुए। इन को ६२५ में हीन किया तो ३२४ शेष बचे। इन से वर्गमूल लिया तो १८।० मिले। इन को २५ मे हीन किया तो ७।० 'अङ्गुलादि पलभा' हुई

प्रकारान्तर से पलभा साधन रीतिः—

या भास्करघ्नाक्षलवोत्थजीवा साऽक्षांशकोटच्युद्भवशिञ्जिनीहृत्।
फलं पलाभा भगताडिताक्षस्पर्शाख्यमौर्वी पलभा स्फुटा वा ॥ १५ ॥

अक्षांशों की भुजज्या को १२ से गुणकर अक्षांशों की कोटीज्या से भाग दे लब्ध 'अङ्गुलादि पलभा' होती है। अथवा अक्षांशों की स्पर्शज्या को १२ से गुणकर जो गुणन फल हो वह 'अङ्गुलादि पलभा' होती है।

—:उदाहरणः—

गढवाल के अक्षांश ३०°, १५' की भुजज्या ५०३७ को १२ से गुणा तो ६०४४४ हुए। इन में अक्षांश ३०°, १५' की कोटी ५९°, ४५' के अंशों की ज्या ८६३८ से भाग दिया तो लब्ध ७ 'अङ्गुल

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

० व्यङ्गुल गढवाल की पलभा' हुई। अथवा अक्षांश ३०°, १५' की स्पर्शज्या, ५८३२ को १२ से गुणा तो ६'९९८४ हुए। 'अर्द्धाधिके रूपं ग्राह्यम्' इस न्याय्य से '७ अङ्गुल ० व्यङ्गुल गढवाल की पलभा' हुई।

पुनः प्रकारान्तर से पलभा साधन तथा चरखण्ड साधन रीतिः—

चेत्सायनांशतपनेऽजघटादियाते
दीप्तिर्दिनार्द्धजनिता पलभेरिता सा।
त्रिष्ठा हरिद्भिराहिभिर्दशभिर्हृता स्यु-
रन्त्या कृशानुविहृता चरखण्डकानि ॥ १६ ॥

मन्द स्पष्ट सूर्य में अयनांश युक्त करे तब 'सायन सूर्य' होता है। 'सायन सूर्य' मेष के वा तुला के आरम्भ में हो अर्थात् जिस दिन सायन मेष विषुवत् वा सायन तुला विषुवत् हो उस दिन के मध्याह्न काल में द्वादशाङ्गुल शङ्कु की जो अङ्गुलादि छाया हो वह 'पलभा' होती है। पलभा को तीन स्थान में रखकर क्रम से १०।८।१० से गुणकर जो गुणन फल हों उन के अन्त्य गुणन फल में ३ से भाग दे लब्ध अन्त्य चरखण्ड होता है। इस प्रकार इष्ट देश के चर खण्ड होते हैं।

—:उदाहरणः—

गढवाल (श्रीनगर वा देवप्रयाग) में मेषविषुवति वा तुला विषुवति के दिन के मध्याह्न काल में द्वादशाङ्गुल शङ्कु की सात अङ्गुल छाया होती है अतः 'गढवाल की ७।० अङ्गुलादि पलभा' हुई। इस को तीन स्थान में क्रमसे रखकर १०।८।१० से गुणा तो ७०।५६।७० हुए। यहां अन्त्य के खण्ड ७० में ३ से भाग दिया तो लब्ध २३ हुए। इसप्रकार ७० प्रथम खण्ड, ५६ द्वितीयखण्ड, २३ अन्त्य खण्ड गढवाल के चरखण्ड हुए।

चर साधन रीतिः—

+सायनारुणदोराशितुल्या चरार्द्धसंयुतिः।
भागभोग्यहतेः खत्रिलब्ध्या युक्ता चरं भवेत् ॥ १७ ॥

सायन सूर्य का पूर्वोक्त प्रकार से भुज करे। तदनन्तर भुज की राशि की संख्या के समान चर खण्डों का योग करके एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर भुज के अंशादियों के और भोग्य खण्ड के परस्पर गुणनफल में ३० से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को एकान्त में स्थापित चर खण्डों के योग में युक्त करे तब 'पलात्मक चर' होता है।

+ 'सूक्ष्मचरसाधनमुक्तं' 'सर्वानन्दलाघवे' — क्रान्तिस्पृशज्ज्या ऽक्षलवस्पृशज्ज्याघातस्त्रिभज्याविहृते—प्सिता ज्या। धनुश्चरांशा अथ पूर्णचन्द्रा ऽभ्यस्ता लवास्ते चरजा विनाड्यः' इति।

अस्यार्थः— स्पष्टरविक्रान्त्यास्तथा निजदेशीयाक्षांशानां च ये स्पृशज्ज्ये तयोर्घातस्त्रिज्याहृत इष्टज्या स्यात्। अस्या धनुश्चरलवास्ते दशघ्नाश्चरोद्भवा विनाड्यः स्युरिति।

उदाहृतिः—

सायनस्पष्टार्कः ६।२।५३।२० अस्य भुजः ०।२।५३।२० अस्यांशाः २°, ५३,' २०'' अतः साधितांशादी रविक्रान्तिः १°, ९', २०'' सायनार्कस्य दक्षिणगोलत्वादृणम्। अस्याः स्पृशज्ज्या २०२ स्वदेशीयाक्षांशानां च ३०°, ९', स्पृशज्ज्या ५८०८ उभयोर्घातः ११७३२१६ त्रिज्या १०००० भक्तो जाताभीष्टज्या ११७। अस्या धनुः ०°।४१'।२१'' एते चरलवाः स्युः। इमे दशघ्ना ६।४३।३० जाताश्चरोत्था विनाड्यः स्युरिति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ में अयनांश २२।२४।२७ को युक्त किया तो ३।१३।५६।३४ 'सायन सूर्य, हुआ। इस का पूर्वोक्त रीति से भुज किया तो २।१६।३।२६ 'राश्यादि भुज' हुआ। यहां भुज की २ राशि हैं अतः दो राशि के तुल्य दो चर खण्ड ७० और ५६ का योग किया तो १२६ हुए। इन को एकान्त में स्थापित कर दिया। तदनन्तर भुज के अंशादि १६।३।२६ को भोग्य खण्ड २३ से गुणा तो ३६९।१८।५८- हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १२।१९ हुए। इन को एकान्त में स्थित चर खण्ड योग १२६ में युक्त किया तो १३८ पल १९ विपल 'चर' हुआ।

स्पष्ट सूर्य में चर देने की रीतिः—

सायन सूर्य मेषादि ६ राशि के अन्तराल में हो तो चर पल को मन्द स्पष्ट सूर्य की विकला में ऋण (हीन) करे। यदि सायन सूर्य तुलादि ६ राशि के अन्तर्गत हो तो चर पल को मन्द स्पष्ट सूर्य की विकला में धन (युक्त) करे तब 'स्पष्ट सूर्य' होता है।

—: उदाहरण :—

३।१३।५६।३४ सायन सूर्य है। यह मेषादि ६ राशि के अन्तर्गत है। इसलिए चर पल १३८ ऋण हुए। मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।३७ की विकला ७ में १३८ 'चर पल' हीन किये तो न घट सके अतः १३८ में ६० से भाग दिया तो लब्ध २ घटी शेष १८ पल हुए। इन को मन्दस्पष्ट रवि की ३२ कला ७ विकला में हीन किया तो २ 'राशि २१ अंश २९ कला ४९ विकला स्पष्ट सूर्य' हुआ।

क्रान्ति तथा चर साधन की रीतिः—

खं खाब्धयः खवसवोऽश्वशिवाः कृतिघ्नः
कष्टेन्दवो रसनखा गुणयुग्मपक्षाः
षट्त्र्यश्विनोऽम्बरजिना अथ सायनाच्च
खेटाद् भुजांशकदिगंशमितो गताङ्कः ॥ १८ ॥

तद्धीनभोग्यदलतः परिशेषनिघ्ना-
त्सोऽभ्रैकलब्धिसहितो दशभिर्विभक्तः।
क्रान्तिर्भवेल्लवमुखा निजदिक् खगस्य
ग्राह्यं चरं पललवात्तपनापमाच्च ॥ १९ ॥

०।४०।८०।११७।१५१।१८१।२०६।२२४।२३६।२४० ये क्रम से 'क्रान्ति खण्डांक' है सायन ग्रह के भुज के अंशों में १० से भाग दे लब्ध 'गताङ्क' होता है। गताङ्क के तुल्य क्रान्ति खण्ड को ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर दश से भाग देनेपर जो शेष अंशादि हों उनको गत खण्ड और भोग्य खण्ड के अन्तर से गुणकर १० से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको एकान्त में स्थितगतखण्ड में युक्त करके १० से भाग दे लब्ध 'अंशादि क्रान्ति' होती है। अभीष्ट नगर के अक्षांशों से और इष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य की क्रान्ति से २२ धारणी के द्वारा चर साधकर उस से दिन मानादि का साधन करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

० व्यङ्गुल गढवाल की पलभा' हुई। अथवा अक्षांश ३०°, १५' की स्पर्शज्या, ५८३२ को १२ से गुणा तो ६'९९८४ हुए। 'अर्द्धाधिके रूपं ग्राह्यम्' इस न्याय्य से '७ अङ्गुल ० व्यङ्गुल गढवाल की पलभा' हुई।

पुनः प्रकारान्तर से पलभा साधन तथा चरखण्ड साधन रीतिः—

चेत्सायनांशतपनेऽजघटादियाते
दीप्तिर्दिनार्द्धजनिता पलभेरिता सा।
त्रिष्ठा हरिद्भिरहिभिर्दशभिर्हृता स्यु-
रन्त्या कृशानुविहृता चरखण्डकानि ॥ १६ ॥

मन्द स्पष्ट सूर्य में अयनांश युक्त करे तब 'सायन सूर्य' होता है। 'सायन सूर्य' मेष के वा तुला के आरम्भ में हो अर्थात् जिस दिन सायन मेष विषुवत् वा सायन तुला विषुवत् हो उस दिन के मध्याह्न काल में द्वादशाङ्गुल शङ्कु की जो अङ्गुलादि छाया हो वह 'पलभा' होती है। पलभा को तीन स्थान में रखकर क्रम से १०।८।१० से गुणकर जो गुणन फल हों उन के अन्त्य गुणन फल में ३ से भाग दे लब्ध अन्त्य चरखण्ड होता है। इस प्रकार इष्ट देश के चर खण्ड होते हैं।

—:उदाहरणः—

गढवाल (श्रीनगर वा देवप्रयाग) में मेषविषुवति वा तुला विषुवति के दिन के मध्याह्न काल में द्वादशाङ्गुल शङ्कु की सात अङ्गुल छाया होती है अतः 'गढवाल की ७।० अङ्गुलादि पलभा' हुई। इस को तीन स्थान में क्रमसे रखकर १०।८।१० से गुणा तो ७०।५६।७० हुए। यहां अन्त्य के खण्ड ७० में ३ से भाग दिया तो लब्ध २३ हुए। इसप्रकार ७० प्रथम खण्ड, ५६ द्वितीयखण्ड, २३ अन्त्य खण्ड गढवाल के चरखण्ड हुए।

चर साधन रीतिः—

+सायनारुणदोराशितुल्या चरार्द्धसंयुतिः।
भागभोग्यहतेः खत्रिलब्ध्या युक्ता चरं भवेत् ॥ १७ ॥

सायन सूर्य का पूर्वोक्त प्रकार से भुज करे। तदनन्तर भुज की राशि की संख्या के समान चर खण्डों का योग करके एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर भुज के अंशादियों के और भोग्य खण्ड के परस्पर गुणनफल में ३० से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को एकान्त में स्थापित चर खण्डों के योग में युक्त करे तब 'पलात्मक चर' होता है।

+ 'सूक्ष्मचरसाधनमुक्तं' 'सर्वानन्दलाघवे' — क्रान्तिस्पृशज्ज्या ऽक्षलवस्पृशज्ज्याघातस्त्रिभज्याविहृते— प्सिता ज्या। धनुश्चरांशा अथ पूर्णचन्द्रा ऽभ्यस्ता लवास्ते चरजा विनाड्यः' इति।

अस्यार्थः— स्पष्टरविक्रान्त्यास्तथा निजदेशीयाक्षांशानां च ये स्पृशज्ज्ये तयोर्घातस्त्रिज्याहृत इष्टज्या स्यात्। अस्या धनुश्चरलवास्ते दशघ्नाश्चरोन्नवा विनाड्यः स्युरिति।

उदाहृतिः—

सायनस्पष्टार्कः ६।२।५३।२० अस्य भुजः ०।२।५३।२० अस्यांशाः २°, ५३,' २०'' अतः साधितांशादी रविक्रान्तिः १°, ९', २०'' सायनार्कस्य दक्षिणगोलत्वादृणम्। अस्याः स्पृशज्ज्या २०२ स्वदेशीयाक्षांशानां च ३०°, ९', स्पृशज्ज्या ५८०८ उभयोर्घातः ११७३२१६ त्रिज्या १०००० भक्तो जाताभीष्टज्या ११७। अस्या धनुः ०°।४१'।२१'' एते चरलवाः स्युः। इमे दशघ्ना ६।४३।३० जाताश्चरोत्था विनाड्यः स्युरिति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ में अयनांश २२।२४।२७ को युक्त किया तो ३।१३।५६।३४ 'सायन सूर्य, हुआ। इस का पूर्वोक्त रीति से भुज किया तो २।१६।३।२६ 'राश्यादि भुज' हुआ। यहां भुज की २ राशि हैं अतः दो राशि के तुल्य दो चर खण्ड ७० और ५६ का योग किया तो १२६ हुए। इन को एकान्त में स्थापित कर दिया। तदनन्तर भुज के अंशादि १६।३।२६ को भोग्य खण्ड २३ से गुणा तो ३६९।१८।५८- हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १२।१९ हुए। इन को एकान्त में स्थित चर खण्ड योग १२६ में युक्त किया तो १३८ पल १९ विपल 'चर' हुआ।

स्पष्ट सूर्य में चर देने की रीतिः—

सायन सूर्य मेषादि ६ राशि के अन्तराल में हो तो चर पल को मन्द स्पष्ट सूर्य की विकला में ऋण (हीन) करे। यदि सायन सूर्य तुलादि ६ राशि के अन्तर्गत हो तो चर पल को मन्द स्पष्ट सूर्य की विकला में धन (युक्त) करे तब 'स्पष्ट सूर्य' होता है।

—: उदाहरण :—

३।१३।५६।३४ सायन सूर्य है। यह मेषादि ६ राशि के अन्तर्गत है। इसलिए चर पल १३८ ऋण हुए। मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।३७ की विकला ७ में १३८ 'चर पल' हीन किये तो न घट सके अतः १३८ में ६० से भाग दिया तो लब्ध २ घटी शेष १८ पल हुए। इन को मन्दस्पष्ट रवि की ३२ कला ७ विकला में हीन किया तो २ 'राशि २१ अंश २९ कला ४५ विकला स्पष्ट सूर्य' हुआ।

क्रान्ति तथा चर साधन की रीतिः—

खं खाब्धयः खवसवोऽश्वशिवाः कृतिघ्नः
कष्टेन्दवो रसनखा गुणयुग्मपक्षाः
षट्त्र्यश्विनोऽम्बरजिना अथ सायनाज्ञ
खेटाद् भुजांशकदिगंशमितो गताङ्कः ॥ १८ ॥

तद्धीनभोग्यदलतः परिक्षेपनिघ्ना-
त्तस्मोऽभ्रैकलब्धिसहितो दशभिर्विभक्तः।
क्रान्तिर्भवेल्लवमुखा निजदिक् खगस्य
ग्राह्यं चरं पललवात्तपनापमाच्च ॥ १९ ॥

०।४०।८०।११७।१५१।१८१।२०६।२२४।२३६।२४० ये क्रम से 'क्रान्ति खण्डांक' है सायन ग्रह के भुज के अंशों में १० से भाग दे लब्ध 'गताङ्क' होता है। गताङ्क के तुल्य क्रान्ति खण्ड को ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर दश से भाग देनेपर जो शेष अंशादि हों उनको गत खण्ड और भोग्य खण्ड के अन्तर से गुणकर १० से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको एकान्त में स्थितगतखण्ड में युक्त करके १० से भाग दे लब्ध 'अंशादि क्रान्ति' होती है। अभीष्ट नगर के अक्षांशों से और इष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य की क्रान्ति से चर सारणी के द्वारा चर साधकर उस से दिन मानादि का साधन करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्रान्तिखण्डाङ्काः।										
क्रमाङ्काः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
खण्डाङ्काः	०	४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०
अन्तराङ्काः	४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४	

—: उदाहरण :—

सायन सूर्य ३।१३।५८।१६ को तीन राशि से अधिक होने के कारण छःराशि में शोधन किया तो २।१६।५।४४ 'राश्यादि भुज' हुआ। इस को अंशादि किया तो ७६।५।४४ 'भुजांश' हुए। ७६ अंश में १० से भाग दिया तो लब्ध '७ गताङ्क' हुआ। इस के तुल्य क्रान्ति खण्ड २२४ को ग्रहण कर के एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर गत खण्ड २५४ को भोग्य खण्ड २३६ में हीन किया तो शेष १२ 'गुणक' हुआ। शेष भुजांशादि ६।५।४४ को गुणक १२ से गुणा तो ७३।८।४८ हुए। इन में १० से भाग दिया तो लब्ध ७।१८।५३ हुए। इन को एकान्त में स्थित गत खण्ड २२४ में युक्त किया तो २३१।१८।५३ हुए। इन में १० से भाग दिया तो लब्ध २३।७।५३ 'सूर्य की अंशादि क्रान्ति' हुई। यहां सायन सूर्य मेषादि ६ राशि के अन्तर्गत है अतः 'उत्तर क्रान्ति' हुई।

'क्रान्तिलग्नीयिन'। अंशाद्या क्रान्तिः। 'उपकरणं सायनग्रहः'।											
अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
क्रान्तिः	० ० ०	० २४ ०	० ४८ ०	१ १२ ०	१ ३६ ०	२ ० ०	२ २४ ०	३ ४८ ०	३ १२ ०	३ ३६ ०	गु. २ भा. ५
अक्षभा.	० ० ०	० २३ ४८	० ४७ ३६	१ ११ २४	१ ३५ १२	१ ५९ ०	२ २२ ४८	२ ४६ ३६	३ १० २४	३ ३४ १२	गु. १।५१ भा. ५
अं	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
क्रा.	४ ० ०	४ २४ ०	४ ४८ ०	५ ०	५ ३६ ०	६ ० ०	६ २४ ०	६ ४८ ०	७ १२ ०	७ ३६ ०	गु. २ भा. ५
अ.	३ ५८ ०	४ २१ ६	४ ४४ १२	५ ७ १८	५ ३० २४	५ ५३ ०	६ १६ ३६	६ ३९ ४२	७ ८ ४८	७ २५ ५८	गु. ३।५१ भा. १८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
प्राचीना	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	गु.
	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	१।५१
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
अर्वाचीना	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	गु.
	४९	११	३३	५५	१७	३९	१	२३	४५	७	१।५०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ५
अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
प्राचीना	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	गु.
	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	४५	१।४२
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५
अर्वाचीना	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	गु.
	२९	४९	९	२९	४९	९	२९	४९	९	२९	१।४०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ५
अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
प्राचीना	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	गु.
	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	०।३
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा १०
अर्वाचीना	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	गु.
	४९	६	२४	४१	५९	१७	३४	५२	९	२७	१।२८
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
प्राचीना	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	गु. १
	३	२१	३९	५१	६	२१	३६	५१	६	२१	भा. ४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
अर्वाचीना	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	गु.
	४५	५९	१४	२८	४३	५७	१२	२६	४१	५५	२।२५
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. १०
अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
प्राचीना	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	गु.
	३६	४६	५७	८	१९	३०	४०	५१	२	१३	०।५४
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५
अर्वाचीना	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	गु.
	१०	२०	३१	४१	५२	२	१३	२३	३४	४४	१।४५
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. १०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९		
प्राचीना	२२ २४ ०	२२ ३१ १२	२२ ३८ २४	२२ ४५ ३६	२२ ५२ ४८	२३ ० ०	२३ ७ १२	२३ १४ २४	२३ २१ ३६	२३ २८ ४८	गु. ०।३६ भा	
अर्वाचीना	२१ ५५ ०	२२ ० २	२२ ९ ०	२२ १६ ०	२२ २३ ०	२२ ३० ०	२२ ३७ ०	२२ ४४ ०	२२ ५१ ०	२२ ५८ ०	गु. १।१० भा. ५	
अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
प्राचीना	२३ ३६ ०	२३ ३८ २४	२३ ४० ४८	२३ ४३ १२	२३ ४५ ३६	२३ ४८ ०	२३ ५० २४	२३ ५२ ४८	२३ ५५ १२	२३ ५७ ३६	२४ ० ०	गु. ०।१२ भा. १०
अर्वाचीना	२३ ५ ०	२३ ७ १२	२३ ९ २४	२३ ११ ३६	२३ १३ ४८	२३ १६ ०	२३ १८ १२	२३ २० २४	२३ २२ ३६	२३ २४ ४८	२३ २७ ०	गु. ०।११ भा. ५

क्रान्तिसारणी प्रवेश रीतिः—

सायन ग्रह के भुजांशों के तुल्य कोष्ठ के अंशादियों को एकान्त में स्थापित करे। तदन्तर सायन ग्रह के कलादि को उसी कोष्ठ के अन्तिमस्थ गुणक से गुणकर भाजक से भाग दे लब्ध कलादि होते हैं। उस लब्ध कलादि को एकान्त में स्थित अंशादि के कलादि में युक्त करे तब ग्रहकी अंशादि क्रान्ति होती है।

यहां क्रान्ति के प्राचीन तथा अर्वाचीन (नवीन) मत से कोष्ठक दिये हुए है। अतः कर्त्ता को जिस कोष्ठक से क्रान्ति साधन करना अभीष्ट हो उसी से क्रान्ति का साधन करे।

प्राचीन मत के कोष्ठ से क्रान्ति साधन का उदाहरणः—

सायन रवि ३।१३।५४।१६ का भुज किया तो २।१६।५।४४ राश्यादि भुज हुआ। इस के अंशादि किये तो ७६।५।४४ भुजांश हुए। यहां भुजांश ७६ के तुल्य कोष्ठक के नीचे के अंशादि २३।७।१२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर भुजांश के शेष कलादि ५।४४ को भुजांश ७६ के अन्तिम कोष्ठक के गुणक ०।३६ से गुणा तो ३।३६ गुणन फल हुआ इस में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध ०।४१ कलादि हुए। इन को एकान्त में स्थित अंशादि २३।७।१२ में युक्त किया तो २३।७।५३ 'सूर्य की अंशादि क्रान्ति हुई।

नवीन मत के कोष्ठक से क्रान्ति साधन का उदाहरणः—

सायन सूर्य के ७६।५।४४ भुजांशादि हैं। भुजांश ७६ के तुल्य कोष्ठक के अंशादि २२।३७।० को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर भुज के कलादि ५।४४ को गुणक १।१० से गुणा तो ६।४१ गुणन फल हुआ। इस में भाजक १० से भाग दिया तो लब्ध ०।४० कलादि हुए। इन को एकान्त में स्थित अंशादि २२।३७।० में युक्त किया तो २२।३७।४० नवीन मत से 'सूर्य की अंशादि क्रान्ति' हुई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चरसाणीयम्' 'द्वे उपकरणे'। 'रविक्रान्त्यंशा अक्षांशाश्च'। 'पलात्मं फलमेतत्'।

क्रान्ति	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
अक्षां. १	प. ०	प. ०	प. ०	प. १	प. १	प. १	प. १	प. १	प. १	प. २	प. २	प. २	प. २	प. २	प. २	प. ३	प. ३	प. ३	प. ३	प. ३	प. ४	प. ४	प. ४	प. ४	प. ४
२	०	०	१	१	२	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९
३	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	९	९	१०	१०	११	१२	१२	१३	१३
४	०	१	१	२	३	३	४	५	६	६	७	८	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१५	१६	१७	१८
५	०	१	२	३	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
६	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२६	२७
७	०	१	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२७	२८	२९	३१
८	०	१	३	४	६	७	८	१०	१२	१३	१५	१६	१७	१९	२१	२२	२४	२५	२६	२८	३०	३१	३३	३४	३६
९	०	१	३	४	६	८	१०	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२६	२८	२९	३१	३३	३५	३७	३८	४१
१०	०	२	४	५	७	९	११	१२	१४	१६	१८	२०	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
११	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४७	५०
१२	०	२	४	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५१	५४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

चरसारणी प्रवेश रीतिः—

अक्षांशादि सारणी से इष्ट स्थान के अक्षांशों को लेकर एकान्त में स्थापित करे ! तदन्तर इष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य से अंशादि क्रान्ति को साधकर एकान्त में स्थापित करे । इष्ट स्थान के अक्षांश और इष्ट दिन के क्रान्त्यंश कोष्ठक के समान सम सूत्र चर सारणी से जो पलात्मक संख्या मिले उसको एकान्त में स्थापित करे । एकान्त में स्थापित संख्या और भोग्य अंक्षांश के तुल्य कोष्ठ में स्थित संख्या के अन्तर को इष्टस्थान की अंक्षांशों की कला से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध को एकान्त में स्थित संख्या में युक्त करके जो संख्या हो उसको पुनः एकान्त में स्थापित करे । तदन्तर इष्टदेश के अक्षांश और इष्टदिन के क्रान्त्यंशों के तुल्य कोष्ठक की पलात्मक संख्या और क्रान्ति के भोग्यांश कोष्ठक के पलात्मक संख्या के अन्तर को क्रान्ति के कलादि से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध को पुनः एकान्त में स्थापित किई हुई संख्या में युक्त करे तब 'इष्टस्थान के इष्ट दिनका पलात्मक चर' होता है।

—:उदाहरणः—

३०°, ९' देवप्रयाग के अक्षांश है । यहां इष्ट दिन में प्राचीन मत से सूर्य की क्रान्ति २३°, ८' उत्तर है। अक्षांश ३० और क्रांत्यश २३ के तुल्य कोष्ठ का पलात्मक चर १४१ और ३१ अक्षांश २३ क्रात्यंश के तुल्य कोष्टक का १४७ पलात्मक चर है । इन दोनों का अन्तर किया तो ६ शेष बचे । इन से अक्षांश कला ९ को गुणा तो ५४ हुए । इन में ६० से भाग दिया तो ' अर्द्धाधिके रूप ग्राह्यं ' इस न्याय से लब्ध १ हुआ । इसको अक्षांश ३० और क्रात्यंश २३ के तुल्य कोष्ठक के पलात्मक चर १४१ में युक्त किया तो १४२ हुए । इन को एकान्त में स्थापित किया । तदनन्तर ३० अक्षांश २३ क्रान्त्यंश के तुल्य कोष्ठक का पलात्मक चर १४१ और ३० अक्षांक्ष २४ क्रान्त्यंश के तुल्य कोष्ठक का पलात्मक चर १४९ का अन्तर किया तो ८ शेष बचे । इन से क्रान्ति की कला ८ को गुणा तो ६४ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो १ लब्ध हुआ । इस को एकान्त में स्थापित संख्या १४२ में युक्त किया तो ' इष्ट दिन का १४३ पलात्मक चर ' हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चरसारणीय गढदेशीया'। उपकरणं सायनार्क भुजांशाः'। पलादिकं फलम्।'

भु अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
प.	०	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३
वि.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४६	४९	५१
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
५३	५६	५८	६०	६३	६५	६७	७०	७१	७३	७५	७७
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	५२	४४	३६	२८
३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
७९	८१	८३	८४	८६	८८	९०	९२	९४	९६	९८	९९
२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८
१०१	१०३	१०५	१०७	१०९	१११	११२	११४	११६	११८	१२०	१२२
४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६
५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
१२४	१२६	१२६	१२७	१२८	१२९	१२९	१३०	१३१	१३२	१३२	१३३
०	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०
७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२
१३४	१३५	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१३९	१४०	१४१	१४२	१४२
२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०				
१४३	१४४	१४५	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९				
३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०				

चरसारणी प्रवेश रीतिः—

सायन सूर्य के भुजांशों के समान कोष्ठक के पलादि को दो स्थान में रखकर एकस्थान के पलादि को भोग्य कोष्ठ के पलादि में हीन करे तब जो शेष बचे उस से सायन सूर्य के भुज के कलादि का गुणकर तब जो गुणन फल हो उस में ६० से भाग दे लब्ध पलादि होते है । तदनन्तर लब्ध पलादि को द्वितीय स्थान में स्थित पलादि में युक्त करे तब इष्ट समय का पलात्मक चर होता है ।

—: उदाहरण :—

सायन सूर्य ३।१३।५६।३४ का भुज किया तो २।१६।३।२६ 'राश्यादि भुज' हुआ । इस को अंशादि किया तो ७६।३।२६ भुजांश हुए । अंश ७६ के तुल्य कोष्ठ के पलादि १३८।१६ को दो स्थान में स्थापित करके एकस्थान के पलादि १३८।१६ को भोग्य भुजांश ७७ के नीचे के पलादि १३९।२ में हीन किया तो ०।४६ शेष बचे । भुज के कलादि ३।२६ को शेष ०।४६ से गुणा तो २।३८ हुए । इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ०।३ पलादि हुए । इन को द्वितीय स्थान में स्थित पलादि १३८।१६ में युक्त किया तो १३८।१९ 'इष्ट दिनका पलादि चर' हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चरसाणीयन्' 'निमेषादिका'। अस्थां द्वे उपकरणे'। 'रविकान्त्यंशा अक्षांशाश्च'। इयमर्कोदयादावुपयोज्या'

क्रां.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	क्रां. अं.
अ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	अ.
१	४	८	१३	१७	२१	२५	३०	३४	३८	४२	४६	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७	१
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	२
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४२	५१	०	८	१७	२६	३६	४५	५५	४	१४	२४	३४	
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	३
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५४	८	२२	३७	५१	६	२०	
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	४
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१५	३२	५०	७	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	०	२८	४८	८	
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	५
	२१	४२	३	२४	४५	६	२८	४९	११	३२	५४	१६	३८	०	२२	४५	७	३०	५४	१८	४२	६	३१	५६	
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	६
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१४	४१	७	३४	०	२७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४	
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	७
	२९	५०	२८	५८	२८	५८	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	०	४२	२५	४८	२१	५३	२६	
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	८
	३४	८	४१	१५	४९	२३	५७	३२	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२०	१	४३	२१	
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	९
	३८	१७	५४	३२	१०	४९	२७	६	४५	२४	३	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४०	२५	१०	
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१०
	४२	२४	७	५०	३१	१४	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२२	८	५५	४३	३२	२०	१०	०	
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	११
	४६	३३	२०	७	५४	४१	२८	१६	३	५१	४०	२८	१७	७	५६	४७	३८	२९	२१	१४	७	१	५६	५२	
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	१२
	५१	४२	३३	२४	१६	७	५९	५१	४३	३६	२८	२१	१५	९	४	५८	५४	५०	४७	४५	४३	४२	४२	४३	

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्रां.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	क्रां.अं.
अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	अं.
१३	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२७	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	१२	१४	१७	२०	२४	३०	३५	४६	१३
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५	१४
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२३	२९	३५	४१	४९	५७	८	१८	३०	
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७	१५
	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३८	४४	५०	५६	४	११	१९	२८	३८	४७	५८	१०	२२	३६	५२	७	२४	
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९	१६
	९	१८	२६	३६	४५	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	११	२४	३८	५२	७	२३	४०	५८	१६	३५	५८	२०	
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१	१७
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२२	३८	५४	१२	२९	४८	७	२७	४८	११	३४	५७	२३	५०	१९	
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	१८
	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	३०	५०	१२	३५	५९	२३	४८	१४	४२	८	३५	१०	४२	२०	
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५	१९
	२३	४५	८	३१	५४	१८	४२	६	३०	५५	२१	४६	१४	४१	१०	३९	९	४१	१४	४८	२४	५९	३७	१६	
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७	२०
	२७	५५	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	१८	५०	२३	५५	३०	८	४७	२७	८	५०	३३	१८	
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९	२१
	३२	४	३७	९	४२	१५	४८	२२	५६	३२	७	४३	२०	५८	३६	१६	५६	३७	१९	२	५०	४१	३०	२२	
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१	२२
	३७	१४	५१	२८	६	४४	२३	१	४०	२०	१	४२	२४	८	५२	३७	२३	१०	५८	५०	४१	३५	३०	२७	
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	२३
	४२	२४	६	४८	३१	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	७	५८	४९	४२	३७	३३	३०	२७	३०	३५	
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	२४
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	१०	०	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१९	२०	२१	२३	२५	२९	३४	४०	
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७	२५
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	२	५६	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५१	५८	५	१५	२६	४०	५६	

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

क्रां.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	क्रां.
अं.	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०	अं.
२६	१७	५४	५२	४५	४७	४५	४३	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१०	२८	४८	१०	२६
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४५	४७	४९	५२	२७
	२	५	७	१०	१३	१५	२१	२६	३१	३७	४४	५२	१	१२	२३	३६	५०	७	२५	४५	७	३२	५८	२७	
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४	२८
	७	१५	२३	३१	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	४	२५	४३	१२	३६	२	३७	११	४६	
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७	२९
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३६	५२	९	२६	४४	४	२४	४६	१०	३५	१	३०	०	३२	८	४३	२६	९	
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	३३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९	३०
	१८	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	५९	२२	४६	१२	३८	५	३७	७	४०	१५	५२	३१	१३	५८	४६	३५	
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२	३१
	२४	४८	१३	३८	३	२९	५६	२२	५०	२०	५०	२१	५४	२८	४	४१	२०	२	४६	३२	२०	१२	६	५	
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४	३२
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	९	४३	१८	५४	३२	११	५२	३३	१७	३	५२	४२	३५	३१	३०	३३	३७	
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२९	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७	३३
	३६	१२	४८	२४	१	३९	१८	५७	३८	१८	०	४४	३०	१३	५	५६	४३	४४	४१	४१	४४	५१	०	१४	
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९	३४
	४२	२४	६	४९	३२	१५	०	४६	३१	१९	८	५८	५०	४४	३९	३६	३६	३८	४३	५१	१	१५	३३	५४	
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२	३५
	४८	३६	२५	१४	३	५३	४४	३५	२८	२२	१७	१३	१३	१३	१५	२०	२७	३६	४७	०	२२	४४	१०	४०	
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५	३६
	५४	४९	४४	३९	३४	३१	२८	२६	२६	२७	२८	३२	३८	४४	५४	६	२०	३७	५७	२०	६६	१७	५१	३०	
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८	३७
	१	२	३	५	७	१०	१४	१९	२५	३२	४१	५२	४	१९	३६	५५	१७	५१	९	४०	१५	५४	३७	२५	
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३८	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१	३८
	८	१५	२३	३२	४१	५०	१	१३	२६	४०	५६	१४	३४	५५	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५	
३९	३	६	९	१२	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४३	४६	५०	५३	५७	६१	६४	६८	७२	७६	८०	८४	३९
	१४	२८	४४	५९	१५	३०	५२	८	२८	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	१	४६	३१	२६	२३	२५	३२	
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७	४०
	२१	४३	५	२७	५०	१०	३९	५	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	८	१०	१६	२८	४५	

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

निमेषादि चर साधनोदाहरणः—

३०°,९' अक्षांश हैं। २३ ,८' रविक्रान्ति है। अक्षांश ३० क्रान्त्यंश २३ के तुल्य कोष्ठ का निमेषादि चर ५६।४६ और ३१ अक्षांश २३ क्रान्त्यंश के तुल्य कोष्ठक का निमेषादि चर ५९।६ है। इन दोनों क अन्तर किया तो २।२० शेष बचे। इन को अक्षांश कला ९ से गुणा तो २१।० हुए। इन में ६० से भाग दिया तो ०।२१ लब्ध हुए। इन को अक्षांश ३० और क्रान्त्यंश २३ के तुल्य कोष्ठक के निमेषादि चर ५६ ४६ में युक्त किया तो ५७।७ निमेषादि हुए। इन को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर ३० अक्षांश २३ क्रान्त्यंश के तुल्य कोष्ठक का निमेषादि चर ५६।४६ और ३० अक्षांश २४ क्रान्त्यंश के तुल्य कोष्ठक का निमेषादि चर ५९।३५ का अन्तर किया तो २।४९ शेष बचे इन को क्रान्ति की कला ८ से गुणा तो २२।३२ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो ०।२३ लब्ध हुए। इन को एकान्त में स्थापित निमेषादि ५७।७ में युक्त किया तो ५७।३० 'इष्ट दिन का निमेषादि चर' हुआ। पूर्वागत निमेषादि ५७।३० को ५ से गुणा तो २८७।३० हुए। इन में २ से भाग दिया तो १४३।४५ 'पलादि सूक्ष्म चर' हुआ।

स्पष्ट चन्द्र साधन रीति—

अभीष्ट ग्राम में स्पष्ट सूर्योदय के समय मध्यम चन्द्रमा की योग्यता सिद्ध करने के लिए 'बीजसंस्कृतमध्यम चन्द्रमा' में रेखान्तर, चरान्तर, भुजान्तर और उदयान्तर ये चार संस्कार आवश्यक हैं। अतः बीज संस्कृत मध्यम चन्द्रमा में रेखान्तर संस्कार रीति इसी प्रकरण के ११ वें श्लोक में कही हुई है। अब उक्त तीनों संस्कारों की रीति को कहते हैं।

चरान्तर संस्कार रीति—

पूर्वागत पलादि चर को २ से गुण कर ९ से भाग दे लब्ध कलादि होते हैं। तदनन्तर उन कलादियों को रेखान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्रमा के कलादि में सूर्य के समान धन या ऋण करे अर्थात् सूर्य में चर पल धन किये हों तो लब्ध कलादि को चन्द्रमा में धन करे और सूर्य में ऋण किये हों तो लब्ध कलादि को चन्द्रमा में ऋण करे तब 'चरान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र' होता है।

—: उदाहरण :—

पलादि चर १३८।१९ को २ से गुणा तो २७६।३८ हुए। इन में ९ से भाग दिया तो लब्ध ३०।४४ कलादि हुए। यहां सूर्य में चर पल ऋण किये है अतः रेखान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्रमा ५।४।४१।२९ में लब्ध कलादि ३०।४४ को ऋण (हीन) किया तो ५।४।१०।४५ 'चरान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र' हुआ।

भुजान्तर संस्कार रीति—

पूर्वागत कलादि रवि मन्द फल में १६ से भाग दे लब्ध 'भुजान्तर कलादि' होते हैं। मध्यम रवि में यदि रवि मन्द फल धन किया हो तो चरान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र में भुजान्तर कलादियों को ऋण करे। यदि मध्यम रवि में रवि मन्द फल ऋण किया हो तो चरान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र में उन को धन करे तब 'भुजान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र' होता है।

—: उदाहरण :—

पूर्वागत रविमन्द फल कलादि ५।४६ में १६ से भाग दिया तो लब्ध ०।२२ 'भुजान्तर कलादि' हुए। यहां मध्यम रवि में रवि मन्द फल को ऋण किया है इस लिए चरान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।४।१०।४५ में भुजान्तर कलादि ०।२२ को धन किया तो ५।४।११।७ 'भुजान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चन्द्रोदयान्तरसंस्कारसारणी'। 'उपकरणं सायनसूर्यभुजांशाः'। कलादि फलम्।'

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	गु. १ ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	गु. १ ध.
०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	गु. १ ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२५	३६	४८	भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	गु. ० ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ०
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	गु. ० ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	गु. ० ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ०
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	गु. १ शृ.
०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
४	३	३	३	३	३	२	२	२	२	गु. १ शृ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९० भुजांशाः
२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	० गु. १ शृ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	० भा. ५

उदयान्तर संस्कार सारणी प्रवेश रीति—

मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक और धनु ये 'विषमपद' राशि हैं। कर्क, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ और मीन ये 'समपद' राशि हैं।

सायन सूर्य के भुजांशों के तुल्य कोष्ठ के नीचे कलादि फल को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर भुज के कलादि को गुणक से गुणकर भाजक से भाग दे गुणक धन हो तो लब्ध विकलादि को एकान्त में स्थित कलादि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

में धन करे। एवं गुणक ऋण हो तो लब्ध विकलादि को एकान्त में स्थित कलादि में ऋण करे तब स्पष्ट कलादि उदयान्तर फल होता है।

सायन सूर्य 'विषमपद' में हो तो भुजान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र में कलादि उदयान्तर फल को ऋण करे। एवं सायन 'सूर्य 'समपद' में हो तो भुजान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र में कलादि उदयान्तर फल को धन करे तब 'उदयान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र' होता है।

—:उदाहरणः—

सायन सूर्य ३।१३।५४।१६ को छः राशि में शोधन किया तो २।१६।५।४४ 'भुज' हुआ। इस के अंशादि किये तो ७६।५।४४ भुजांशादि हुए। भुजांश ७६ के तुल्य उदयान्तर संस्कार सारणी के कोष्ठ के नीचे के कलादि फल को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर भुज के कलादि ५।४४ को भुजांश तुल्य कोष्ठ के अन्त्य में स्थित ऋण गुणक १ से गुणा तो ५।४४ हुए। इन में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध १ विकला हुई। इस को एकान्त में स्थित २।४८ कलादि फल में गुणक ऋण होने के कारण हीन किया तो २।४७ 'उदयान्तर कलादि फल' हुआ। 'सायन सूर्य' कर्क राशि में होने के कारण 'समपद' में हुआ। अतः उदयान्तर कलादि फल २।४७ धन हुआ। भुजान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।४।११।७ में उदयान्तर कलादि फल २।४७ को धन किया तो ५।४।१३।५४ 'उदयान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र' हुआ।

'चन्द्रस्य च्युतिफलसंस्कारसारणी'। 'उपकरणं' षड्भाल्पच्युतिकेन्द्रांशाः'। 'अंशादि फलम्'।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. १३
फ.	०	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	ध.
	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	भा. १०
ग.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	गु. ०
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.
	ऋ.										भा. ०
अं.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ६
फ.	१३	१४	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	ध.
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
ग.	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	गु. १
फ.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	ऋ.
	ऋ										भा. १०
अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ११
फ.	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	ध.
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
ग.	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	गु. ०
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.
	ऋ.										भा. ०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ११
फ.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	ध.
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
ग.	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	गु. ३
फ.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	ऋ.
	ऋ.										भा. १०

अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ९ ध.
फ.	४७	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	भा. १०
	०	५४	४८	४२	३६	३०	५४	१८	१२	६	
ग.	११	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	गु. १
फ.	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ऋ.
	ऋ.										भा. ५

अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	गु. ४
फ.	५६	५६	५७	५८	५९	०	०	१	२	३	ध.
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५
ग.	९	८	८	८	७	७	७	६	६	६	गु. ३
फ.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	ऋ.
	ऋ.										भा. १०

अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. १
फ.	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	ध.
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २
ग.	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	गु. १
फ.	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ऋ.
	ऋ.										भा. ५

अं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. २
फ.	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	ध.
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५
ग.	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	गु. ३
फ.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	ऋ
	ऋ.										भा. १०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	
अं. फ.	१ १३ ०	१ १३ ६	१ १३ १२	१ १३ १८	१ १३ २४	१ १३ ३०	१ १३ ३६	१ १३ ४२	१ १३ ४८	१ १३ ५४	गु. १ ध. भा. १०
ग. फ.	१ ० शु.	० ४८ [illegible]	० ३६ शु.	० २४ शु.	० १२ शु.	० ० ध.	० १२ ध.	० २४ ध.	० ३६ ध.	० ४८ ध.	गु. १ शु. भा. ५
अं.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	
अं. फ.	१ १४ ०	१ १३ ५४	१ १३ ४८	१ १३ ४२	१ १३ ३६	१ १३ ३०	१ १३ २४	१ १३ १८	१ १३ १२	१ १३ ६	गु. १ शु. भा. १०
ग. फ.	१ ० ध.	१ १८	१ ३६	१ ५४	२ १२	२ ३०	२ ४८	३ ६	३ २४	३ ४२	गु. ३ ध. भा १०
अंशाः	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	
अं. फ.	१ १३ ०	१ १२ ४२	१ १२ २४	१ १२ ६	१ ११ ४८	१ ११ ३०	१ ११ १२	१ १० ५४	१ १० ३६	१ १० १८	गु. ३ शु. भा. १०
ग. फ.	४ ० ध	४ १८	४ ३६	४ ५४	५ १२	५ ३०	५ ४८	६ ६	६ २४	६ ४२	गु. ३ ध. भा. १०
अंशाः	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	
अं. फ.	१ १० ०	१ ९ ३०	१ ९ ०	१ ८ ३०	१ ८ ०	१ ७ ३०	१ ७ ०	१ ६ ३०	१ ६ ०	१ ५ ३०	गु. १ शु. भा. २
ग. फ.	७ ० [illegible]	७ १२	७ २४	७ ३६	७ ४८	८ ०	८ १२	८ २४	८ ३६	८ ४८	गु. १ ध. भा. ५
अंशाः	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	
अं. फ.	१ ८ [illegible]	१ ४ १२	१ ३ २४	१ २ ३६	१ १ ४८	१ १ ०	१ ० १२	० ५९ २४	० ५८ ३६	० ५७ ४८	गु. ४ शु. भा ५
ग. फ.	० ० शु.	९ १२	९ २४	९ ३६	९ ४८	१० ०	१० १२	१० २४	१० ३६	१० ४८	गु. १ ध. भ ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अंशाः	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	
अं. फ.	० ५७ ०	० ५६ ६	० ५५ १२	० ५४ १८	० ५३ २४	० ५२ ३०	० ५१ ३६	० ५० ४२	० ४९ ४८	० ४८ ५४	गु. ९ ऋ. भा. १०
ग. फ.	११ ० ध.	११ १२	११ २४	११ ३६	११ ४८	१२ ०	१२ १२	१२ २४	१२ ३६	१२ ४८	गु १ ध. भा. ५
अंशाः	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	
अं. फ.	० ४८ ०	० ४७ ०	० ४६ ०	० ४५ ०	० ४४ ०	० ४३ ०	० ४२ ०	० ४१ ०	० ४० ०	० ३९ ०	गु. १ ऋ. भा. १
ग फ.	१३ ० ध.	१३ ६	१३ १२	१३ १८	१३ २४	१३ ३०	१३ ३६	१३ ४२	१३ ४८	१३ ५४	गु. १ ध. भा. १०
अंशाः	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	
अ. फ.	० ३८ ०	० ३६ ४८	० ३५ ३६	० ३४ २४	० ३३ १२	० ३२ ०	० ३० ४८	० २९ ३६	० २८ २४	० २७ १२	गु. ३ ऋ. भा. ५
ग. फ.	१४ ० ध.	१४ १२	१४ २४	१४ ३६	१४ ४८	१५ ०	१५ १२	१५ २४	१५ ३६	१५ ४८	गु. १ ध. भा. ५
अंशाः	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	
अं. फ.	० २६ ०	० २४ ४२	० २३ २४	० २२ ६	० २० ४८	० १९ ३०	० १८ १२	० १६ ५४	० १५ ३६	० १४ १८	गु. १३ ऋ. भा. १०
ग. फ.	१६ ० ध.	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	गु. ० ध. भा. ०
अंशाः	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अं. फ.	० १३ ०	० ११ ४२	० १० २४	० ९ ६	० ७ ४८	० ६ ३०	० ५ १२	० ३ ५४	० २ ३६	० १ १८	गु. १३ ऋ. भा १०
ग. फ.	१६ ० ध.	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	१६ ०	गु. ० ध. भा. ० १६ ०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

च्युतिफलसंस्कारसारणी प्रवेश रीतिः—

उदयान्तरफल संस्कृत मध्यम चन्द्र में मध्यम चन्द्रोच्च को युक्त करे तब जो राश्यादि हों उन में द्विगुणित मध्यम सूर्य को हीन करे शेष 'च्युतिकेन्द्र' होता है। तदनन्तर च्युतिकेन्द्र को षड्भाल्प करे अर्थात् च्युतिकेन्द्र छः राशि से न्यून हो तो स्वयं 'षड्भाल्प' होता है। यदि च्युतिकेन्द्र छः राशि से अधिक हो तो १२ राशि में शोधन करे शेष 'षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र' होता है। यहां सर्वत्र च्युतिकेन्द्र के समान तिथि, मन्द तथा शीघ्र केन्द्र को षड्भाल्प करे। षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र की राशि को ३० से गुण कर अंशों को युक्त करे तब 'षड्भाल्प च्युतिकेन्द्रांशादि' होते हैं। षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के अंशों के तुल्य च्युतिफलसंस्कारसारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि फल को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के कलादि को अंशादि फल के अन्त्य कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुण कर भाजक से भाग दे लब्ध कलादि होते हैं। एकान्त में स्थित अंशादि फल में उन लब्ध कलादि को धन गुणक हो तो युक्त करे और ऋण गुणक हो तो हीन करे तब स्पष्ट अंशादि च्युति फल होता है। एवं तिथि, मन्द तथा शीघ्रफल को साधे। च्युतिकेन्द्र मेषादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो अंशादि च्युति फल को उदयान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र में ऋण करे। यदि च्युति केन्द्र तुलादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो अंशादि च्युति फल को उदयान्तर संस्कृत मध्यम चन्द्र में धन करे तब 'च्युति फल संस्कृत मध्यम चन्द्र' होता है।

—: उदाहरण :—

उदयान्तर फल संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।४।१३।५४ में मध्यम चन्द्रोच्च १।०।४१।३१ को युक्त किया तो ६।४।५५।२५ 'चन्द्रोच्च युक्त मध्यम चन्द्र' हुआ। तदनन्तर मध्यम सूर्य २।२१।३७।५३ को २ से गुणा तो ५।१३।१५।४६ 'द्विगुण मध्यम रवि' हुआ। चन्द्रोच्चयुक्त मध्यम चन्द्र ६।४।५५।२५ में द्विगुण मध्यम रवि ५।१३।१५।४६ को हीन किया तो शेष ०।२१।३९।३९ 'च्युतिकेन्द्र' हुआ। यह छः राशि से न्यून (अल्प) है अतः स्वयं 'षड्भाल्प' हुआ। इस की राशि ० को ३० से गुणा तो ० हुआ इस में २१ अंश को युक्त किया तो २१।३९।३९ 'षड्भाल्प च्युति केन्द्रांशादि' हुए। षड्भाल्प च्युति केन्द्र के २१ अंश के तुल्य च्युति फल संस्कार सारणी के कोष्ठ के नीचे के ०।२६।६ अंशादि फल को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के कलादि ३९।३९ को २१ अंश के अन्तिम कोष्ठ के धन गुणक ११ से गुणा तो ४३६।९ हुए। इस में भाजक १० से भाग दिया तो लब्ध ४३।३७ विकलादि हुए। इन को एकान्त में स्थित अंशादि फल ०।२६।६ में युक्त किया तो ०।२६।५० 'अंशादि च्युति फल' हुआ। यहां च्युतिकेन्द्र मेषादि छः राशि के अन्तर्गत है अतः अंशादि च्युति फल ऋण हुआ। उदयान्तर फल संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।४।१३।५४ में अंशादि च्युति फल ०।२६।५० को ऋण (हीन) किया तो ५।३।४७।४ 'च्युति फल संस्कृत मध्यम चन्द्र' हुआ।

चन्द्र की च्युतिगति साधन रीतिः—

षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के अंशों के तुल्य च्युतिफल संस्कार सारणी के कोष्ठ के नीचे जो अंशादि च्युतिफल है उस के नीचे जो कलादि च्युतिगतिफल हो उस को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के कलादि को इष्ट च्युति गति फल कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुण कर भाजक से भाग दे लब्ध विकलादि होते हैं। एकान्त में स्थापित किये कलादि में लब्ध विकलादि को धन गुणक हो तो युक्त करे और ऋण गुणक हो तो हीन करे तब स्पष्ट कलादि च्युतिगति फल होता है। यदि षड्भाल्प च्युति केन्द्र के अंश ८५ से अल्प होंगे चन्द्र मध्यमगति ७९०।३५ में च्युतिगति फल को ऋण (हीन) करे और षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के अंश ८५ से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अधिक होतो चन्द्रमध्यम गति ७९०।३५ में च्युतिगति फलको धन (युक्त) करे तब 'च्युति गति फल संस्कृत मध्यम चन्द्र गति' होती है।

—:उदाहरणः—

षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के २१।३९।३९ अंशादि हैं। अंश २१ के तुल्य च्युतिफलसंस्कारसारणी के कोष्ठ के अंशादि फल क. ज.चे के १४।० कलादि च्युतिगति फल को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प च्युतिकेन्द्र के कलादि ३९।३९ को उसी कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक ० से गुणा तो ०।० हुआ। इस में भाजक ० से भाग दिया तो लब्ध ०।० विकलादि हुआ। यहां गुणक धन है अतः लब्ध विकलादि ०।० को एकान्त में स्थित कलादि च्युतिगति फल १४।० में युक्त किया तो १४।० स्पष्ट कलादि च्युतिगतिफल हुआ। यहां कोष्ठ २१ के आरम्भ कोष्ठ में गति फल ऋण है - अथवा षड्भाल्प च्युति केन्द्र के अंश ८५ से अल्प हैं अतः १४।० कलादि गति फल ऋण हुआ। मध्यम चन्द्र गति ७९०।३५ में च्युतिगतिफल १४।० को ऋण (हीन) किया तो ७७६।३५ 'चन्द्र की च्युति गति फल संस्कृत मध्यम गति' हुई।

तिथिफलसंस्कारसारणीयम् '। 'उपरयं तिथिकेन्द्राशाः' 'अंशादि फलम्'।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
अं. फ.	० ० ०	० १ १२	० २ २४	० ३ ३६	० ४ ४८	० ६ ०	० ७ १२	० ८ २४	० ९ ३६	० १० ४८	गु. ६ ध भा. ६
ग. फ.	१४ ० ध	१३ ४८	१३ ३६	१३ २४	१३ १२	१३ ०	१२ ४८	१२ ३६	१२ २४	१२ १२	गु. १ ऋ. भा. ५
अं.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
अं. फ.	० १२ ०	० १३ ०	० १४ ०	० १५ ०	० १६ ०	० १७ ०	० १८ ०	० १९ ०	० २० ०	० २१ ०	गु. १ ध. भा. १
ग फ.	१२ ० ध.	११ ४२	११ २४	११ ६	१० ४८	१० ३०	१० १२	९ ५४	९ ३६	९ १८	गु. ३ ऋ. भा १०
अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
अं फ.	० २२ ०	० २२ ४८	० २३ ३६	० २४ २४	० २५ १२	० २६ ०	० २६ ४८	० २७ ३६	० २८ २४	० २९ १२	गु. ४ ध. भा ५
ग. फ.	९ ० ध.	८ ३०	८ ०	७ ३०	७ ०	६ ३०	६ ०	५ ३०	५ ०	४ ३०	गु. १ ऋ. भा. २

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. २
फ.	३०	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	ध.
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५
ग.	४	३	३	२	२	१	१	०	०	०	गु. १
फ.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ग्रह.
	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ग्रह.	ग्रह.	भा. २
अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ० ध.
फ.	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ०
ग.	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	गु. १
फ.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ध.
	ग्रह.										भा. २
अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. १
फ.	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२९	ग्रह.
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २
ग.	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	गु. २
फ.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ध.
	ग्रह.										भा. ५
अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
अं	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ४
फ.	२९	२८	२७	२६	२५	२५	२४	२३	२२	२१	ग्रह.
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
ग.	१०	१०	११	१०	१०	११	११	११	११	११	गु. १
फ.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.
	ग्रह.										भा. ५
अं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ११
फ.	२१	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	ग्रह.
	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०
ग.	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	गु. ३
फ.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	ध.
	ग्रह.										भा. १०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ६
फ.	१०	८	७	६	५	४	२	१	०	०	ग्रह.
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	४८ ध.	भा. ५
ग.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	गु. ०
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.
	ग्रह.										भा. ०
अं.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ६
फ.	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	ध.
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
ग.	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	गु. ३
फ.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	ग्रह.
	ग्रह.										भा. १०
अं.	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ११
फ.	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	ध.
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
ग.	१२	११	११	११	१०	१०	१०	९	९	९	गु. ३
फ.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	ग्रह.
	ग्रह.										भा. १०
अं.	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ४
फ.	२५	२५	२६	२७	२८	२९	२९	३०	३१	३२	ध.
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५
ग.	९	८	८	७	७	६	६	५	५	४	गु. १
फ.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ग्रह.
	ग्रह.										भा. २
अं.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ३
फ.	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५	ध.
	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	भा. १०
ग.	४	३	३	२	२	१	१	०	०	०	गु. १
फ.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ध.
	ग्र.	ग्रह.	ग्रह.	ग्रह.	ग्रह.	ग्रह	ग्रह.	ग्रह.	ध.	ध.	भा २

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	
अं. फ.	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	० ३६ ०	गु. ० ध. भा. ०
ग. फ.	१ ० ध.	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	गु. १ ध. भा. २
अं.	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	
अं. फ.	० ३६ ०	० ३५ ३६	० ३५ १२	० ३४ ४८	० ३४ २४	० ३४ ०	० ३३ ३६	० ३३ १२	० ३२ ४८	० ३२ २४	गु. २ग्रह. भा. ५
ग. फ.	६ ० ध.	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	गु. २ध. भा. ५
अं.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	
अं. फ.	० ३२ ०	० ३१ १२	० ३० २४	० २९ ३६	० २८ ४८	० २८ ०	० २७ १२	० २६ २४	० २५ ३६	० २४ ४८	गु. ४ ग्रह. भा. ५
ग. फ.	१० ० ध.	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	गु. २ ध. भा. ५
अं	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	
अं. फ.	० २४ ०	० २२ ५४	० २१ ४८	० २० ४२	० १९ ३६	० १८ ३०	० १७ २४	० १६ १८	० १५ १२	० १४ ६	गु. ११ ग्रह. भा. १०
ग. फ.	१४ ० ध.	१४ ६	१४ १२	१४ १८	१४ २४	१४ ३०	१४ ३६	१४ ४२	१४ ४८	१४ ५४	गु. १ ध. भा. १०
अं.	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
अं. फ.	० १३ ०	० ११ ४२	० १० २४	० ९ ६	० ७ ४८	० ६ ३०	० ५ १२	० ३ ५४	० २ ३६	० १ १८	० ० ०	गु. १३ ग्रह. भा. १०
ग. फ.	१५ ० ध.	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	गु. १५. भा. ०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तिथिफलसंस्कार सारणी प्रवेश रीतिः—

चुतिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र में मध्यम रवि को हीन करे तब शेष 'तिथिकेन्द्र' होता है। षड्भाल्प तिथि केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के नीचे के अंशादि फल को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प तिथि केन्द्र के कलादि को इष्ट कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुण कर भाजक से भाग दे लब्ध विकलादि को एकान्त में स्थित अंशादि फल में धन गुणक हो तो युक्त और ऋण गुणक हो तो हीन करे तब 'स्पष्ट अंशादि तिथि फल' होता है।

तिथि केन्द्र कर्कादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो चुति फल संस्कृत मध्यम चन्द्र में अंशादि तिथि फल को ऋण करे। यदि तिथि केन्द्र मकरादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो चुतिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र में अंशादि तिथि फल को धन करे तब 'तिथिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र' होता है।

—: उदाहरण :—

चुतिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।३।४७।४ में मध्यम रवि २।२१।३७।५३ को हीन किया तो शेष २।१२।९।११ 'तिथिकेन्द्र' हुआ। यहां तिथिकेन्द्र २।१२।९।११ यह स्वयं षड्भाल्प है अतः तिथि केन्द्र के अंशादि किये तो ७२।९।११ 'षड्भाल्प अंशादि तिथिकेन्द्र' हुआ। तिथि फल संस्कार सारणी के ७२ अंश के तुल्य कोष्ठ के नीचे के ०।१८।४८ अंशादि को एकान्त में स्थापित किया तदनन्तर षड्भाल्प तिथि केन्द्र के ९।११ कलादि को ७२ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित ऋण गुणक ११ से गुणा तो १०१।१ हुए। इन में भाजक १० से भाग दिया तो लब्ध १०।६ विकलादि हुए। यहां ऋण गुणक है अतः एकान्त में स्थित ०।१८।४८ अंशादि फल में लब्ध विकलादि १०।६ को ऋण (हीन) किया तो ०।१८।३८ स्पष्ट अंशादि तिथि फल हुआ। यहां तिथि केन्द्र २।१२।९।११ है। यह मकरादि छः राशि के अन्तर्गत है इसलिए अंशादि तिथि फल ०।१८।३८ धन हुआ। चुतिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।३।४७।४ में अंशादि तिथि फल ०।१८।३८ को धन (युक्त) किया तो ५।४।५।४२ 'तिथिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र' हुआ।

चन्द्र की तिथि गति साधन रीतिः—

षड्भाल्प तिथि केन्द्र के अंशों के तुल्य तिथि फलसंस्कार सारणी के कोष्ठ के नीचे जो अंशादि फल है उस के नीचे के कलादि गति फल को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प तिथि केन्द्र के कलादि को उसी कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुण कर भाजक से भाग दे लब्ध विकलादि होता है। एकान्त में स्थापित कलादि फल में धन गुणक हो तो लब्ध विकलादि को युक्त और ऋण गुणक हो तो हीन करे तब 'स्पष्ट कलादि तिथि गति फल' होता है। चुतिगतिफल संस्कृत चन्द्र मध्यम गति में तिथि गति फल को धन वा ऋण करे अर्थात् षड्भाल्प तिथि केन्द्रांशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में तिथि गति फल धन हो तो युक्त और ऋण हो तो हीन करे तब 'तिथि गति फल संस्कृत मध्यम चन्द्र गति' होती है।

अथवा षड्भाल्प तिथि केन्द्रांश १२८ अंश से और ३७ अंशों के अन्तर्गत हो तो तिथिगति फल धन होता है। एवं षड्भाल्प तिथि केन्द्रांश ३८ अंश से और १२७ अंशों के अन्तर्गत हो तो तिथि गति फल ऋण होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उदाहरण—

षड्भाल्पतिथि केन्द्र के ७२।९।११ अंशादि हैं। ७२ अंश के तुल्य तिथिफलसंस्कारसारणी के कोष्ठके नीचे जो अंशादि फल है उसके नीचे के कलादि तिथिगति फल १२।३६ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्पतिथि केन्द्र के ९।११ कलादि को ७२ अंश तुल्यकोष्ठ के अन्तिम कोष्ठमें लिखित धन गुणक ३ से गुणा तो २७।३३ हुए। इनमें भाजक १० भाग दिया तो लब्ध २।४५ विकलादि हुए। तदनन्तर एकान्त में स्थापित कलादि तिथिगति फल १२।३६ में धन गुणक होने के कारण लब्ध विकलादि २।४५ को युक्त किया तो १२।३९ 'स्पष्टकलादि तिथिगतिफल हुआ यहां ७२ अंश के आरंभ कोष्ठ ७० के नीचे तिथिगति फल ऋण है अतः १२।३९ तिथिगतिफल ऋण हुआ। अथवा षड्भाल्प तिथिकेन्द्रांश ७२ हैं ये ३८ अंश से अधिक और १३८ अंश से न्यून हैं अतः १२।३९ तिथिगति फल ऋण हुआ। च्युतिगतिफलसंस्कृतचन्द्र मध्यमगति ७७६।३५ में कलादि तिथिगति फल १२।३९ को ऋण किया तो ७६३।५६ 'तिथिगति फलसंस्कृत चन्द्र मध्यमगति' हुई।

'मन्दफलसंस्कारसारणीयम्'। 'उपकरणं मन्दकेन्द्रांशाः'। 'अंशादि फलमेतत्'।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ६
फ.	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	वद्य
	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा.१०
ग.	८०	७९	७९	७९	७९	७९	७८	७८	७८	७८	गु. १
फ.	०										ऋ.
	ऋ.	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५
अं.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	गु. ६
फ.	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५	ध.
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. १
ग.	७८	७७	७७	७६	७६	७६	७५	७५	७४	७४	गु. २
फ.	०										ऋ.
	ऋ.	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
अं.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	गु.५७
फ.	१	६	१२	१८	२३	२९	३५	४०	४६	५२	ध.
	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	भा.१०
ग.	७४	७३	७२	७१	७१	७०	६९	६९	६८	६७	गु. ७
फ.	०										ऋ.
	ऋ.	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	भा.१०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
अं.	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	गु. ५३
फ.	५८	३	८	१३	१९	२४	२९	३५	४०	४५	ध.
	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	भा. १०
ग.	६७	६६	६५	६४	६३	६३	६२	६१	६०	५९	गु. ४
	०										क.
फ.	क.	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अं.	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	गु. २३
फ.	५१	५५	०	४	९	१४	१८	२३	२७	३२	ध.
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
ग.	५८	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	गु. १
फ.	क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	क.
											भा. १
अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	गु. ३९
	३७	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	
फ.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०
ग.	४९	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	गु. ११
	०										क.
फ.	क.	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०
अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
अं.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	गु. ३१
	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	ध.
फ.	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
ग.	३८	३६	३५	३४	३३	३१	३०	२८	२७	२६	गु. १३
	०										क.
फ.	क.	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	भा. १०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अ.	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	गु. २
	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५	ध.
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. १
ग.	२५	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	गु. ७
											ऋ.
फ.	ऋ.	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५

अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	
अं.	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	गु. ११
	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	ध.
फ.	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
ग.	११	९	८	६	५	३	२	०	१	२	गु ३
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ऋ.
फ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	भा. २

अं.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	
अं.	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	गु. ९
	१८	१७	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	ऋ.
फ.	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	भा. ५
ग.	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	गु. ३
	०										ध.
फ.	ध.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २

अं.	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	
अं.	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	गु. १३
	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	ऋ.
फ.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	भा. १०
ग.	१९	२०	२२	२३	२५	२६	२८	२९	३१	३२	गु. ३
	०										ध.
फ.	ध.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २

अं.	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	
अं.	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	गु. १२
	३	०	५८	५५	५३	५१	४८	४६	४३	४१	ऋ.
फ.	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
ग.	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४३	४४	४६	४७	गु. ३
	०										ध.
फ.	ध.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	
अं.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	गु. १८
	३९	३५	३१	२८	२४	२१	१७	१३	१०	६	क्र.
फ.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५
ग.	४९	५०	५१	५३	५४	५६	५७	५८	६०	६१	गु. ७
	०										ध.
फ.	ध.	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	भा. ५
अं.	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	
अं.	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	गु ४१
	३	५८	५३	४८	४४	३९	३४	३०	२५	२०	क्र.
फ.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	भा. १०
ग.	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	गु. ११
	०										ध.
फ.	ध.	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा. १०
अं.	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	
अं.	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	गु. ११
	१६	१०	५	५९	५४	४८	४३	३७	३२	२६	क्र.
फ.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २
ग.	७४	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	गु. ९
	०										ऋ.
फ,	ध.	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा. १०
अं.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	
अं.	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	गु. ६३
	२१	१४	८	२	५५	५९	४३	२६	१०	२४	क्र.
फ.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	भा. १०
ग.	८३	८३	८४	८४	८५	८६	८६	८७	८७	८८	गु. ३
	०										ध.
फ.	ध.	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	भा. ५
अं.	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	
अं.	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	गु. ३४
	१८	११	४	५७	५०	४४	३७	३०	२३	१६	ऋ.
फ.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा.
ग.	८९	८९	८९	८९	९०	९०	९०	९१	९१	९१	गु. ३
	०										ध.
फ.	ध.	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	भा. १०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	
अं.	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ७
	१०	३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०	ऋ.
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. १
ग.	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	९२	गु. ०
	०											ध.
फ.	ध.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ०

मन्दफल संस्कारसारणी प्रवेशरीति—

तिथिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र में राश्यादि मध्यम चन्द्रोच्च को हीन करे तब 'चन्द्रमन्द' केन्द्र होता है। षड्भाल्प मन्द केन्द्र के अंशों के तुल्य मन्दफल संस्कार सारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि मन्दफल को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के कलादिको षड्भाल्प मन्द केन्द्र के अंशोके तुल्य कोष्ठके अन्तिम कोष्ठमें लिखित धन वा ऋण गुणक से गुणकर भाजक से भाग दे लब्ध विकलादि होते हैं। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि मन्दफलमें धन गुणक हो तो लब्ध विकलादि को युक्त करे और ऋण गुणक हो तो लब्ध विकलादि को हीन करे तब स्पष्ट अंशादि मन्द फल होता है। चन्द्र मन्द केन्द्र मेषादि छः राशिके अन्तर्गत हो तो अंशादि मंद फल ऋण और तुलादि छः राशिके अंतर्गत हो तो धन होता है। तिथिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र में मन्दफल धन हो तो युक्त और ऋण हो तो हीन करे तब 'विक्षेप वृत्तीय मन्द स्पष्ट चन्द्र' होता है।

उदाहरण—

तिथि फल संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।४।५।४२ में चन्द्र मन्दोच्च १।०।४१।३१ को हीन किया तो ४।३।२४।११ 'चन्द्र मन्द केन्द्र' हुआ। यह स्वतः षड्भाल्प है अतः इस के अंशादि किये तो १२३।२४।११ हुए। १२३ अंशके तुल्य मन्द फल संस्कार सारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि फल ५।२८।१२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के २४।११ कलादि को षड्भाल्प मन्द केन्द्र के १२३ अंश के तुल्य मन्द फल संस्कार सारणी के अन्तिम कोष्ठ में लिखित ऋण गुणक १८ से गुणा तो ४३५।१८ हुए। इन में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध ८७।४ विकलादि हुए। यहां गुणक ऋण है अतः एकान्त में स्थापित अंशादि मंदफल ५।२८।१२ में लब्ध विकलादिको हीन किया तो ५।२६।४५ 'स्पष्ट अंशादि चन्द्र मन्द फल हुआ। यहाँ चंन्द्र मन्द केन्द्र मेषादि ६ राशिके अन्तर्गत है इसलिए मन्दफल ऋण हुआ। तिथिफल संस्कृत मध्यम चन्द्र ५।४।५।४२ में अंशादि मन्दफल ५।२६।४५ को ऋण (हीन) किया तो ४।२८।३८।५७ 'विक्षेपवृत्तीय मन्दस्पष्ट चन्द्र' हुआ।

चन्द्रमन्दगतिफलसाधनरीतिः—

चन्द्र मन्द केन्द्र मेषादि ६ राशि के अन्तर्गत हो तो राशिको ३० से गुणकर अंशोको युक्त करे तब अंशादि मन्द केन्द्र होता है। मन्द केन्द्र के अंशों के तुल्य मन्द फल संस्कारसारणी के कोष्ठ के नीचे जो अंशादि फल है उस के नीचेके कलादि गति मन्द फलको एकान्त में स्थापित करें। तदनन्तर मन्द केन्द्र के कलादिको

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मन्द केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुणकर भाजक से भाग दे लब्ध विकलादि होते हैं। एकान्त में स्थापित कलादि मन्दगति फलमें धन गुणक हो तो लब्ध विकलादि को युक्त और ऋण गुणक हो तो हीन करे तब स्पष्ट कलादि मन्द गति फल होता है।

यदि चन्द्र मन्द केन्द्र तुलादि छः राशिके अन्तर्गत हो तो मन्द केन्द्र के अंशों में १३ अंश युक्त करके १२ राशिमें शोधन करे तब 'षड्भाल्प मन्द केन्द्र' होता है। तदनन्तर उस षड्भाल्प मन्द केन्द्र के अंशों से मन्दगति फल को साधे।

यदि 'चन्द्र मन्द केन्द्र' मकरादि छः राशिके अन्तराल में हो तो मन्दगतिफल 'ऋण' और कर्कादि छः राशिके अन्तराल में हो तो 'धन' होता है। तिथिगति फल संस्कृत मध्यम चन्द्रगति में मन्दगतिफल धन हो तो युक्त और ऋण हो तो हीन करे तब 'चन्द्र की कलादि स्पष्ट गति होती है।

उदाहरण—

४।३।२४।११ चन्द्र मन्द केन्द्र है। यह मेषादि छः राशि के अन्तर्गत है इसलिए मन्द केन्द्र ४।३।२४।११ के अंशादि १२३।२४।११ के अंश १२३ के तुल्य मन्दफल संस्कारसारणी के कोष्ठ के नीचे जो अंशादि फल है उसके नीचेके कलादि मन्दगति फल ५३।१२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर मन्द केन्द्र के २४।११ कलादि को १२३ अंशके अन्तिम कोष्ठमें लिखित धन गुणक ७ से गुणा तो १६९।५७ हुए। इनमें भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध ३३। ५१ विकलित हुए। एकान्त में स्थापित कलादि मन्द गतिफल ५३।१२ में धन गुणक होनेके कारण लब्ध विकलादि ३३।५१ को युक्त किया तो ५३।४६ 'स्पष्ट कलादि गति मन्द फल' हुआ। यहां चन्द्र मन्दकेन्द्र कर्कादि है अतः मन्द गतिफल 'धन' हुआ। अथवा मन्द केन्द्रांश १२३ के प्रथम कोष्ठ १२० अंशके नीचे मन्द गति फल 'धन' है अतः आगत मन्दगति फल ५३।४६ 'धन' हुआ। तिथिगति-फल संस्कृत चन्द्र मध्यम गति ७६३।५६ में कलादि मन्द गति फल ५३।४६ को युक्त किया तो ८।१७।४२ 'चन्द्र की स्पष्ट गति' हुई।

१०।१५।१०।० कल्पित चन्द्र मन्द केन्द्र है यह तुलादि छः राशिके अन्तराल में है अतः मन्द केन्द्र १०।१५।१०।० में १३ अंश युक्त किये तो १०।२८।१०।० 'षड्भाधिक मन्द केन्द्र' हुआ इसको १२ राशि में शोधन किया तो १।१।५०।० 'षड्भाल्प मन्द केन्द्र' हुआ। इसके अंशादि किये तो ३१।५०।० हुए। ३१ अंशके तुल्य मन्द फल संस्कार सारणी के कोष्ठके नीचे जो अंशादि फल है उसके नीचे के कलादि मन्दगतिफल ६६।१२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प केन्द्र के ५०।० कलादि को ३१ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित ऋण गुणक ४ से गुणा तो २००।० हुए। भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध ४०।० विकलादि हुए। एकान्त में स्थापित कलादि मन्द गति फल ६६।१२ में ऋण गुणक होने के कारण लब्ध विकलादि ४०।० को हीन किया तो ६५।३२ मन्द गति फल हुआ। यहां मन्दकेन्द्र मकरादि छः राशिके अन्तर्गत है अतः मन्दगति फल ६५।३२ ऋण हुआ। तिथि गति फल संस्कृत चन्द्र मध्यम गति ७७५।४० में मन्दगति फल ६५।३२ को हीन किया तो ७१०।८ 'चन्द्र की स्पष्टगति' हुई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'राहुकलाफलसंस्कारसारणीयम्'। 'उपकरणं व्यगुविधुभुजांशाः'। कलादिफलमेतत्'।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
क. फ.	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	गु.१ध. भा. ५
अं.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
क. फ.	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	३ ०	३ १२	३ २४	३ ३६	३ ४८	गु.१ध. भा. ५
अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
क. फ.	४ ०	४ १२	४ २४	४ ३६	४ ४८	५ ०	५ १२	५ २४	५ ३६	५ ४८	गु.१ ध. भा. ५
अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
क. फ.	६ ०	६ ६	६ १२	६ १८	६ २४	६ ३०	६ ३६	६ ४२	६ ४८	६ ५४	गु.१ध. भा.१०
अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
क. फ	७ ०	७ ०	७ ०	७ ०	७ ०	७ ०	७ ०	७ ०	७ ०	७ ०	गु.०ध. भा.०
अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
क. फ.	७ ०	६ ५४	६ ४८	६ ४२	६ ३६	६ ३०	६ २४	६ १८	६ १२	६ ६	गु.१क्र. भा.१०
अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
क. फ.	६ ०	५ ४८	५ ३६	५ २४	५ १२	५ ०	४ ४८	४ ३६	४ २४	४ १२	गु.१क्र. भा. ५
अं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
क. फ.	४ ०	३ ४८	३ ३६	३ ३६	३ १२	३ ०	२ ४८	२ ३६	२ २४	२ १२	गु.१क्र. भा. ५
अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
क. फ.	२ ०	१ ४८	१ ३६	१ २४	१ १२	१ ०	० ४८	० ३६	० २४	० १२	० ०	गु.१ क्र. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राहुकलाफलसंस्कारसारणी प्रवेशरीति—

मेषादि तीन राशि तथा तुलादि तीन राशि में ' विषम पद ' होता है। एवं कर्कादि तीन राशि तथा मकरादि तीन राशि में ' समपद ' होता है।

मन्द स्पष्ट चन्द्र में राहु को हीन करे शेष ' व्यगुविधु (विपातचन्द्र) होता है। तदनन्तर व्यगुविधुका भुज करके उसके भुजांशों के तुल्य राहुकलाफलसारणी के कोष्ठ के नीचे के कलादि फलको एकान्तमें स्थापित करे। तदनन्तर व्यगुविधु के भुजके कलादि को व्यगुविधु के भुजांशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुणकर भाजक के भाग दे लब्ध विकलादि होते हैं। तदनन्तर एकान्त में स्थापित कलादि फल में धन गुणक हो तो लब्ध विकलादि को युक्त और ऋण गुणक हो तो हीन करे तब ' स्पष्ट राहुकलाफल ' होता है। व्यगुविधु ' विषम पद ' में हो तो विक्षेपवृत्तीय मन्द स्पष्ट चन्द्र में ' राहुकलाफल ' को ग्रहण करे। यदि व्यगुविधु ' समपद ' में हो तो विक्षेपवृत्तीय मन्द स्पष्ट चन्द्र में ' राहु कला फल ' को धन करे तब ' क्रान्ति वृत्तीय स्पष्ट चन्द्र ' होता है।

उदाहरण—

मन्द स्पष्ट चन्द्र ४।२८।३८।५७ में राश्यादि राहु ९।१४।५२।४९ को हीन किया तो ७।१३।४६।८ व्यगुविधु (विपात चन्द्र) हुआ। इस ' में राशि को हीन किया तो १।१३।४६।८ ' व्यगुविधु का राश्यादि भुज ' हुआ। इस के अंशादि किये तो ४३।४६।८ ' भुजांश ' हुए। भुजांश ४४ के तुल्य राहु कला फल संस्कार सारणी के कोष्ठ के कलादि ७।० को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर व्यगुविधु के भुज के कलादि ४६।८ को भुजांश ४४ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में गुणक तथा भाजक शून्य गुणक से गुणकर शून्य है। अतः शून्य गुणक से गुणकर शून्य भाजक से भाग दिया तो लब्ध ०।० विकलादि हुआ। इस को एकान्त में स्थित राहु कला ७।० लब्ध में धन गुणक होने से युक्त किया तो ७।० स्पष्ट राहुकलाफल हुआ। यहां व्यगुविधु विषम पद में है अतः राहु कला फल ऋण हुआ। विक्षेप वृत्तीय मन्द स्पष्ट चन्द्र ४।२८।३८।५७ में राहु कला फल ७।० को हीन किया तो ४।२८।३१।५७ ' क्रान्तिवृत्तीय स्पष्ट चन्द्र ' हुआ।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
अं.	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	गु. ०ध
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा.०
शी.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु.१ध-
क.	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	भा.१०
अं.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
मं.	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	१६६	गु.०ध.
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ०
शी.	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	गु.१ध.
क.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	भा. ५
अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
मं.	१६६	१६५	१६५	१६५	१६५	१६५	१६५	१६५	१६५	१६५	गु.१ऋ
क.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	भा.१०
शी.	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	गु.१ध.
क.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा. २

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
मं. क.	१६५ ०	१६४ ५४	१६४ ४८	१६४ ४२	१६४ ३६	१६४ ३०	१६४ २४	१६४ १८	१६४ १२	१६४ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
शी. क.	८ ०	८ ४८	९ ३६	१० २४	११ १२	१२ ०	१२ ४८	१३ ३६	१४ २४	१५ १२	गु. ४ ध. भा. ५
अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
मं. क.	१६४ ०	१६३ ४८	१६३ ३६	१६३ २४	१६३ १२	१६३ ०	१६२ ४८	१६२ ३६	१६२ २४	१६२ १२	गु १ ऋ. भा. ५
शी. क.	१६ ०	१६ ३६	१७ १२	१७ ४८	१८ २४	१९ ०	१९ ३६	२० १२	२० ४८	२१ २४	गु. ३ ध. भा. ५
अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
मं. क.	१६२ ०	१६१ ४८	१६१ ३६	१६१ २४	१६१ १२	१६१ ०	१६० ४८	१६० ३६	१६० २४	१६० १२	गु. १ ऋ. भा. ५
शी. क.	२२ ०	२३ ०	२४ ०	२५ ०	२६ ०	२७ ०	२८ ०	२९ ०	३० ०	३१ ०	गु. १ ध. भा. १
अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
मं. क.	१६० ०	१५९ ४८	१५९ ३६	१५९ २४	१५९ १२	१५९ ०	१५८ ४८	१५८ ३६	१५८ २४	१५८ १२	गु. १ ऋ. भा. ५
शी. क.	३२ ०	३३ ६	३४ १२	३५ १८	३६ २४	३७ ३०	३८ ३६	३९ ४२	४० ४८	४१ ५४	गु. ११ ध. भा. १०
अं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
मं. क.	१५८ ०	१५७ ४८	१५७ ३६	१५७ २४	१५७ १२	१५७ ०	१५६ ४८	१५६ ३६	१५६ २४	१५६ १२	गु. १ ऋ भा. ५
शी. क.	४३ ०	४४ १८	४५ ३६	४६ ५४	४८ १२	४९ ३०	५० ४८	५२ ६	५३ २४	५४ ४२	गु. १३ ध. भा. १०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	
मं. क.	१५६ ०	१५५ ४८	१५५ ३६	१५५ २४	१५५ १२	१५५ ०	१५४ ४८	१५४ ३६	१५४ २४	१५४ १२	गु. १ क. भा. ५
शी. क.	५६ ०	५७ २४	५८ ४८	६० १२	६१ ३६	६३ ०	६४ २४	६५ ४८	६७ १२	६८ ३६	गु. ७ ध. भा. ५
अं	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	
मं. क.	१५४ ०	१५३ ४२	१५३ २४	१५३ ६	१५२ ४८	१५२ ३०	१५२ १२	१५१ ५४	१५१ ३६	१५१ १८	गु. ३ ऋ. भा. १०
शी. क.	७० ०	७१ ३०	७३ ०	७४ ३०	७६ ०	७७ ३०	७९ ०	८० ३०	८२ ०	८३ ३०	गु. ३ ध. भा. २
अं.	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	
मं. क.	१५१ ०	१५० ४८	१५० ३६	१५० २४	१५० १२	१५० ०	१४९ ४८	१४९ ३६	१४९ २४	१४९ १२	गु. १ ऋ. भा. ५
शी. क.	८५ ०	८६ ३६	८८ १२	८९ ४८	९१ २४	९३ ०	९४ ३६	९६ १२	९७ ४८	९९ २४	गु. ८ ध. भा. ५
अं.	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	
मं. क.	१४९ ०	१४८ ४२	१४८ २४	१४८ ६	१४७ ४८	१४७ ३०	१४७ १२	१४६ ५४	१४६ ३६	१४६ १८	गु. ३ ऋ. भा. १०
शी. क.	१०१ ०	१०२ ४२	१०४ २४	१०६ ६	१०७ ४८	१०९ ३०	१११ १२	११२ ५४	११४ ३६	११६ १८	गु. १७ ध. भा. १०
अं.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	
मं. क.	१४६ ०	१४५ ४८	१४५ ३६	१४५ २४	१४५ १२	१४५ ०	१४४ ४८	१४४ ३६	१४४ २४	१४४ १२	गु. १ ऋ. भा ५
शी. क.	११८ ०	११९ ४२	१२१ २४	१२३ ६	१२४ ४८	१२६ ३०	१२८ १२	१२९ ५४	१३१ ३६	१३३ १८	गु. १७ ध. भा. १०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अं.	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	
मं. क.	१४४ ०	१४३ ४८	१४३ ३६	१४३ २४	१४३ १२	१४३ ०	१४२ ४८	१४२ ३६	१४२ २४	१४२ १२	गु. १ ऋ. भा. ५
शी. क.	१३५ ०	१३६ ४८	१३८ ३६	१४० २४	१४२ १२	१४४ ०	१४५ ४८	१४७ ३६	१४९ २४	१५१ १२	गु. ९ ध. भा. ५
अं.	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	
मं. क.	१४२ ०	१४१ ४८	१४१ ३६	१४१ २४	१४१ १२	१४१ ०	१४० ४८	१४० ३६	१४० २४	१४० १२	गु. १ ऋ. भा. ५
शी. क.	१५३ ०	१५४ ३६	१५६ १२	१५७ ४८	१५९ २४	१६१ ०	१६२ ३६	१६४ १२	१६५ ४८	१६७ २४	गु. ८ ध. भा. ५
अं.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	
मं. क.	१४० ०	१३९ ५४	१३९ ४८	१३९ ४२	१३९ ३६	१३९ ३०	१३९ २४	१३९ १८	१३९ १२	१३९ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
शी. क.	१६९ ०	१७० ३०	१७२ ०	१७३ ३०	१७५ ०	१७६ ३०	१७८ ०	१७९ ३०	१८१ ०	१८२ ३०	गु. ३ ध. भा. २
अं.	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	
मं. क.	१३९ ०	१३८ ५४	१३८ ४८	१३८ ४२	१३८ ३६	१३८ ३०	१३८ २४	१३८ १८	१३८ १२	१३८ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
शी. क.	१८४ ०	१८५ ६	१८६ १२	१८७ १८	१८८ २४	१८९ ३०	१९० ३६	१९१ ४२	१९२ ४८	१९३ ५४	गु. ११ ध. भा. १०
अं.	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
मं. क.	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	१३८ ०	गु. ० ऋ. भा. ०
शी. क.	१९५ ०	१९५ ३०	१९६ ०	१९६ ३०	१९७ ०	१९७ ३०	१९८ ०	१९८ ३०	१९९ ०	२०० ३०	गु. १ ध. भा. २

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भौम स्पष्ट मन्दकर्ण सारणी प्रवेश रीतिः—

राश्यादि मध्यम भौम में भौम के राश्यादि स्पष्ट मन्दोच्च को हीन करे तब 'भौम का मन्द केन्द्र' होता है। मन्द केन्द्र वा शीघ्र केन्द्र छः राशि से अल्प हो तो स्वयं 'षड्भाल्प' होता है। यदि मन्द केन्द्र वा शीघ्र केन्द्र छः राशि से अधिक हो तो १२ राशि में शोधन करे तब 'षड्भाल्प केन्द्र' होता है। षड्भाल्प भौम मन्द केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के नीचे के स्पष्ट मन्द कर्णाङ्क को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के कलादि को षड्भाल्प मन्द केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित ऋण गुणक से गुणकर भाजक से भाग दे लब्ध को एकान्त में स्पष्ट मन्द कर्णांक के नीचे के अंक में हीन करे तब 'भौम का स्पष्ट मन्द कर्ण' होता है।

—: उदाहरण :—

राश्यादि मध्यम भौम ५।५।७।३९ में भौम के राश्यादि स्पष्ट मन्दोच्च ४।११।४६।२१ को हीन किया तो ०।२३।२१।१८ 'भौम का मन्द केन्द्र' हुआ। यह केन्द्र छः राशि से अल्प है इसलिए स्वतः 'षड्भाल्प' हुआ। इस के अंशादि किये तो २३।२१।१८ हुए। २३ अंश के तुल्य भौम स्पष्ट मन्द कर्ण सारणी के नीचे के स्पष्ट मन्द कर्णांक १६५।४२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के २१।१८ कलादि को २३ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित ऋण गुणक १ से गुणा तो २१।१८ हुए। भाजक १० से भाग दिया तो लब्ध २ हुए। इन को एकान्त में स्थित स्पष्ट मन्द कर्णांक १६५।४२ में हीन किया तो १६५।४० हुए। 'अर्द्धाधिके रूपं ग्राह्यं' इस नियम से १६६ 'भौम का स्पष्ट मन्द कर्ण' हुआ।

भौम स्पष्ट शीघ्रकर्ण साधन रीतिः—

मन्द स्पष्ट भौम में मन्दस्पष्ट रविको हीन करे तब 'भौमका शीघ्र केन्द्र' होता है। षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्रांशों के तुल्य शीघ्रकर्णांक सारणी के कोष्ठ के नीचे के अङ्गुलादि मध्यम शीघ्रकर्णांक को एकान्त में स्थापित करे। तदन्तर षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्र के कलादि को षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक से गुणकर भाजक से भाग दे लब्ध व्यङ्गुलादि होते हैं। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अङ्गुलादि मध्यम शीघ्रकर्णांक में लब्ध व्यङ्गुलादि को युक्त करे तब 'भौम का मध्यम शीघ्र कर्ण' होता है।

भौम के मध्यम मन्दकर्ण १५२ में १०० को युक्त कर के अर्थात् २५२ में भौम के मध्यम शीघ्र कर्ण को हीन करे तब 'भौम का स्पष्ट शीघ्र कर्ण' होता है।

—: उदाहरण :—

मध्यम भौम ५।५।७।३९ में भौममन्द फल ३।४८।१२ को हीन किया तो ५।१।१९।२७ 'मन्द स्पष्ट भौम' हुआ। इस में मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ को हीन किया तो २।९।४७।२० 'भौम का शीघ्र केन्द्र' हुआ। यह स्वतः षड्भाल्प है इस लिए इस के अंशादि किये तो ६९।४७।२० हुए। ६९ अंश के तुल्य भौम मध्यम शीघ्र कर्णांक सारणी के कोष्ठ के ४१।५४ अङ्गुलादि को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के कलादि ४७।२० को ६९ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक ११ से गुणा तो ५२०।४० हुए। इन में भाजक १० से भाग दिया तो लब्ध ५२ व्यङ्गुल हुए। एकान्त में स्थापित ४१।५४ अङ्गुलादि में लब्ध ५२ व्यङ्गुल को युक्त किया तो ४२।४६ 'अङ्गुलादि मध्यम शीघ्र कर्ण' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भौम का मध्यम मन्दकर्ण १५२ है इस में १०० को युक्त किया तो २५२ हुए। इन में अङ्गुलादि मध्यम शीघ्र कर्ण ४२।४६ को हीन किया तो २०९।१४ 'अङ्गुलादि स्पष्ट शीघ्र कर्ण' हुआ।

भौम भाजक साधन रीतिः—

भौम के अङ्गुलादि स्पष्ट मन्द कर्ण में भौम के अङ्गुलादि स्पष्ट शीघ्र कर्ण को युक्त कर के जो संख्या हो उस में भौम के १५२ मध्यम मन्द कर्ण को हीन करे तब 'भौम का भाजक' होता है।

—:उदाहरणः—

भौम का अङ्गुलादि स्पष्ट मन्द कर्ण १६६ है इस में भौम के स्पष्ट शीघ्र कर्ण २०९ को युक्त किया से ३७५ हुए। इन में भौम के मध्यम मन्द कर्ण १५२ को हीन किया तो २२३ 'भौम का भाजक' हुआ।

'भौममन्दफलसारणीयम्'। 'उपकरणं पङ्गुलाल्पमन्दकेन्द्राशाः'। अंशादि फलमेवम्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	मं. ग.	
० ० ०	० १० १२	० २० २४	० ३० ३६	० ४० ४८	० ५१ ०	१ १ १२	१ ११ २४	१ २१ ३६	१ ३१ ४८	२५ ४६	गु. ५१ ध. भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	मं. ग.	
१ ४२ ०	१ ५१ ३६	२ १ १२	२ १० ४८	२ २० २४	२ ३० ०	२ ३९ ३६	२ ४९ १२	२ ५८ ४८	३ ८ २४	२६ ६	गु. ४८ ध. भा. ५
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मं. ग.	
३ १८ ०	३ २७ ०	३ ३६ ०	३ ४५ ०	३ ५४ ०	४ ३ ०	४ १२ ०	४ २१ ०	४ ३० ०	४ ३९ ०	२६ २६	गु. ४ ध. भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	मं. ग.	
४ ४८ ०	४ ५७ ०	५ ६ ०	५ १५ ०	५ २४ ०	५ ३३ ०	५ ४२ ०	५ ५१ ०	६ ० ०	६ ९ ०	२६ २६	गु. ४ ध. भा. ५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	मं. ग.	
६ १८ ०	६ २५ ४८	६ ३३ ३६	६ ४१ २४	६ ४९ १२	६ ५७ ०	७ ४ ४८	७ १२ ३६	७ २० २४	७ २८ १२	२७ ६	गु. ३९ ध. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	९	मं. ग.	
७	७	७	७	८	८	८	८	८	८		गु. ३३
३६	४२	४९	५५	२	९	१५	२२	२८	३५	२७	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	४६	भा. ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	मं. ग.	
८	८	८	८	९	९	९	९	९	९		गु. २७
४२	४७	५२	५८	३	९	१४	१९	२५	३०	२८	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	२६	भा. ५
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	मं. ग.	
९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०		गु. २१
३६	४०	४४	४८	५२	५७	१	५	९	१३	२९	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	६	भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	मं. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०		गु. ९
१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३४	३०	ध.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	२६	भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	मं. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०		गु. ३
३३	३६	३७	३७	३८	३९	३९	४०	४०	४१	३१	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	६	भा. ५
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	म. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०		गु. ९
४२	४०	३८	३६	३४	३३	३१	२९	२७	२५	३२	ऋ.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	२६	भा. ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	मं. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९		गु. १८
२४	२०	१६	१३	९	६	२	५८	५५	५१	३३	ऋ.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	२६	भा. ५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	मं. ग.	
९	९	९	९	९	९	९	९	९	८		गु. ३०
४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	३४	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४६	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	मं. ग.	
८	८	८	८	८	८	८	७	७	७		गु. ३९
४८	४०	३२	२४	१६	९	१	५३	४५	३७	३५	भु.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	४६	भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	मं. ग.	
७	७	७	७	६	६	६	६	६	६		गु. ४८
३०	२०	१०	१	५१	४२	३२	२२	१३	३	३६	भु.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	४६	भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	मं. ग.	
५	५	५	५	५	५	४	४	४	४		गु. ५४
५४	४३	३२	२१	१०	०	४९	३८	२७	१६	३७	भु.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	२६	भा. ५
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	मं. ग.	
४	३	३	३	३	३	२	२	२	२		गु. १२
६	५४	४२	३०	१८	६	५४	४२	३०	१८	३८	भु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	६	भा. १
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८० मं. ग.	
२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	गु. ६३
६	५३	४०	२८	१५	३	५०	३७	२५	१२	०	३८	भु.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२६	भा. ५

भौम मन्द फल सारणी प्रवेश रीतिः—

राश्यादि मध्यम भौम में भौम के राश्यादि स्पष्ट मन्दोच्च को हीन करे तब 'भौम का मन्द केन्द्र' होता है। एवं बुधादियों के मन्द केन्द्र को साधे।

यदि मन्द केन्द्र मेषादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो मन्द फल 'ऋण' और तुलादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो मन्द फल 'धन' होता है।

षड्भाल्प मन्द केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के नीचे के अंशादि मन्द फल को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के कलादि को षड्भाल्प मन्द केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुण कर भाजक से भाग दे लब्ध विकलादि होते हैं। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि मन्द फल में लब्ध विकलादि को धन गुणक हो तो युक्त और ऋण गुणक हो तो हीन करे तब 'स्पष्ट मन्द फल' होता है। मध्यम भौम (ग्रह) में अंशादि मन्द फल को मेषादि मन्द केन्द्र होने पर ऋण और तुलादि मन्द केन्द्र होने पर धन करे तब 'मन्द स्पष्ट भौम' होता है। एवं मन्द स्पष्ट बुधादियों को साधे।

—: उदाहरण :—

मध्यम भौम ५।५।७।३९ में भौम के स्पष्ट मन्दोच्च ४।११।४६।२१ को हीन किया तो ०।२३।२१।१८ 'भौम का मन्द केन्द्र' हुआ। यह छः राशि से अल्प है इस लिए स्वतः षड्भाल्प हुआ। इस के अंशादि किये

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ले २३।२१।१८ हुए। २३ अंश के तुल्य भौम मन्द फल सारणी के कोष्ठ के नीचे का अंशादि मन्द फल ३।४५।० को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के कलादि २१।१८ को षड्भाल्प केन्द्र के २३ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक ४५ से गुणा तो ९५८।३० हुए। इन में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध १९१।४२ विकलादि हुए। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि मन्द फल ३।४५।० में धन गुणक होने के कारण लब्ध विकलादि १९१।४२ को युक्त किया तो ३।४८।१२ 'स्पष्ट अंशादि मन्द फल' हुआ। यहां मन्द केन्द्र मेषादि छः राशि के अन्तर्गत है इस लिए मन्द फल ऋण हुआ। मध्यम भौम ५।५।७।३९ में अंशादि मन्द फल ३।४८।१२ को हीन किया तो ५।१।१९।२७ 'मन्द स्पष्ट भौम' हुआ।

षड्भाल्प भौम मन्द केन्द्र के २३ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में भौम की कलादि २६।२६ मन्द स्पष्ट गति है। इस में शीघ्र गति फल के संस्कार करने से स्पष्ट गति होती है।

'भौमशीघ्रफलसारणीयन्'। 'उपकरणं षड्भाल्पभौमशीघ्रकेन्द्राशाः'। अंशादि फल

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	शी. ग.	
० ० ०	० २४ ०	० ४८ ०	१ १२ ०	१ ३६ ०	२ ० ०	२ २४ ०	२ ४८ ०	३ १२ ०	३ ३६ ०	११ ७ ध.	गु. २४ ध. भा. १
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	शी. ग.	
४ ० ०	४ २३ २४	४ ४६ ४८	५ १० १२	५ ३३ ३६	५ ५७ ०	६ २० २४	६ ४३ ४८	७ ७ १२	७ ३० ३६	१० ५० ध.	गु. ११७ ध. भा. ५
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	शी. ग.	
७ ५४ ०	८ १७ २४	८ ४० ४८	९ ४ १२	९ २७ ३६	९ ५१ ०	१० १४ २४	१० ३७ ४८	११ १ १२	११ २४ ३६	१० ५० ध.	गु. ११७ ध. भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	शी. ग.	
११ ४८ ०	१२ ११ २४	१२ ३४ ४८	१२ ५८ १२	१३ २१ ३६	१३ ४५ ०	१४ ८ २४	१४ ३१ ४८	१४ ५५ १२	१५ १८ ३६	१० ५० ध.	गु. ११७ ध. भा. ५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	शी. ग.	
१५ ४२ ०	१६ ४ ४८	१६ २७ ३६	१६ ५० २४	१७ १३ १२	१७ ३६ ०	१७ ५८ ४८	१८ २१ ३६	१८ ४४ २४	१९ ७ १२	१० ३३ ध.	गु. ११७ ध. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	शी. ग.	
१९ ३० ०	१९ ५२ १२	२० १४ २४	२० ३६ ३६	२० ५८ ४८	२१ २१ ०	२१ ४३ १२	२२ ५ २४	२२ २७ ३६	२२ ४९ ४८	१० १७ ध.	गु. १११ ध. भा. ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	शी. ग.	
२३ १२ ०	२३ ३३ ०	२३ ५४ ०	२४ १५ ०	२४ ३६ ०	२४ ५७ ०	२५ १८ ०	२५ ३९ ०	२६ ८ ०	२६ २१ ०	१ ४३ ध.	गु. २१ ध. भा. १
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	शी. ग.	
२६ ४२ ०	२७ २ २४	२७ २२ ४८	२७ ४३ १२	२८ ३ ३६	२८ २४ ०	२८ ४४ २४	२९ ४ ४८	२९ २५ १२	२९ ४५ ३६	९ २७ ध.	गु. १०२ ध. भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	शी. ग.	
३० ६ ०	३० २५ १२	३० ४४ २४	३१ ३ ३६	३१ २२ ४८	३१ ४२ ०	३२ १ १२	३२ २० २४	३२ ३९ ३६	३२ ५८ ४८	८ ५३ ध.	गु. ९३ ध. भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	शी. ग.	
३३ १८ ०	३३ ३४ ४८	३३ ५१ ३६	३४ ८ २४	३४ २५ १२	३४ ४२ ०	३४ ५८ ४८	३५ १५ ३६	३५ ३२ २४	३५ ४९ १२	७ ४७ ध.	गु. ८४ ध. भा. ५
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	शी. ग.	
३६ ६ ०	३६ २० २४	३६ ३४ ४८	३६ ४९ १२	३७ ३ ३६	३७ १८ ०	३७ ३२ २४	३७ ४६ ४८	३८ १ १२	३८ १५ ३६	६ ४० ध.	गु. ७२ ध. भा. ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	शी. ग.	
३८ ३० ०	३८ ४० १२	३८ ५० २४	३९ ० ३६	३९ १० ४८	३९ २१ ०	३९ ३१ १२	३९ ४१ २४	३९ ५१ ३६	४० १ ४८	४ ४३ ध.	गु. ६१ ध. भा. ५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	शी. ग.	
४० १२ ०	४० १६ ४८	४० २१ ३६	४० २६ २४	४० ३१ १२	४० ३६ ०	४० ४० ४८	४० ४५ ३६	४० ५० २४	४० ५५ १२	० १३ ध.	गु. [illegible] ध. भा. ५
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	शी. ग.	
४१ ० ०	४० ५५ ४८	४० ५१ ३६	४० ४७ २४	४० ४३ १२	४० ३९ ०	४० ३४ ४८	४० ३० ३६	४० २६ २४	४० २२ १२	१ ५७ ऋ	गु. २१ ऋ भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	शी.ग.	
४० १८ ०	३९ ५९ २४	३९ ४० ४८	३९ २२ १२	३९ ३ ३६	३८ ४५ ०	३८ २६ २४	३८ ७ ४८	३७ ४९ १२	३७ ३० ३६	८ ३७ ऋ.	गु.९३ ऋ. भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	शी.ग.	
३७ १२ ०	३६ ३१ १२	३५ ५० २४	३५ ९ ३६	३४ २८ ४८	३३ ४८ ०	३३ ७ १२	३२ २६ २४	३१ ४५ ३६	३१ ४ ४८	१८ ५३ ऋ.	गु.२०४ ऋ. भा. ५
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	शी.ग.	
३० २४ ०	२९ ९ ०	२७ ५४ ०	२६ ३९ ०	२५ २४ ०	२४ ९ ०	२२ ५४ ०	२१ ३९ ०	२० २४ ०	१९ ९ ०	३४ ४३ ऋ.	गु.३८५ ऋ. भा.५
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	शी.ग.	
१७ ५४ ०	१६ ६ ३६	१४ १९ १२	१२ ३१ ४८	१० ४४ २४	८ ५७ ०	७ ९ ३६	५ २२ १२	३ ३४ ४८	१ ४७ २४	० ० ०	४९ ३३ ऋ.	गु.५३७ ऋ. भा.५

भौम शीघ्र फल सारणी प्रवेश रीतिः—

मन्द स्पष्ट भौम (ग्रह) में मन्दस्पष्ट रवि को हीन करे तब 'भौम (ग्रह) का शीघ्र केन्द्र' होता है। षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के अंशों के तुल्य कोष्ठ के नीचे के अंशादि शीघ्र फल को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के कलादि को षड्भाल्प शीघ्र केन्द्रांशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन वा ऋण गुणक से गुणकर भाजक से भाग दे लब्ध विकलादि होते हैं। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि शीघ्र फल में धन गुणक होतो लब्ध विकलादि को युक्त और ऋण गुणक होतो लब्ध विकलादि को हीन करे तब 'भौम का मध्यम शीघ्र फल' होता है।

—:उदाहरणः—

मन्द स्पष्ट भौम ५।१।१९।२७ में मन्दस्पष्ट रवि २।२१।३२।७ को हीन किया तो २।९।४७।२० 'भौम का शीघ्र केन्द्र' हुआ। यह स्वतः षड्भाल्प है इसलिए इस के अंशादि किये तो ६९।४७।२० हुए। ६९ अंश के तुल्य भौम शीघ्र फल सारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि शीघ्र फल २६।२१।० को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के ४७।२० कलादि को षड्भाल्प शीघ्र केन्द्रांश ६९ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक २१ से गुणा तो ९९४।० हुए। इन में भाजक १ से भाग दिया तो ९९४।० विकलादि हुए। विकला ९९४ में ६० से भाग दिया तो लब्ध १६ कला और शेष ३४ विकला हुई। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि शीघ्र फल २६।२१।० में लब्ध कलादि १६।३४ को धन गुणक होने के कारण युक्त किया तो २६।३७।३४ 'भौमका अंशादि मध्यम शीघ्र फल' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.　　Jun Gun Aaradhak Trust

भौम शीघ्र फल स्पष्ट करने की रीतिः—

भौम के अंशादि मध्यम शीघ्र फलको भौम के अङ्गुलादि स्पष्ट शीघ्र कर्ण से गुणकर भाजक से भाग दे अर्थात् भौम के स्पष्टमन्दकर्ण और स्पष्ट शीघ्रकर्ण के योग में १५२ को हीन करने से जो संख्या मिले उस (भाजक) से भाग दे लब्ध भौम का अंशादि स्पष्ट शीघ्र फल होता है। भौम, गुरु तथा शनिका शीघ्रकेन्द्र मेषादि छःराशिके अन्तर्गत होतो शीघ्र फल ऋण होता है। यदि भौम, गुरु तथा शनिका शीघ्र केन्द्र तुलादि छः राशिके अन्तर्गत हो तो शीघ्र फल धन होता है। मन्द स्पष्ट भौम, मन्द स्पष्ट गुरु तथा मन्द स्पष्ट शनि में अंशादि शीघ्र फलको यथागत धन ऋण करे तब स्पष्ट भौम, गुरु तथा शनि होते हैं।

बुध तथा शुक्र का शीघ्रकेन्द्र मेषादि राशि के अन्तर्गत हो तो शीघ्रफल 'धन' और तुलादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो शीघ्रफल 'ऋण' होता है।

मन्द स्पष्ट रवि में बुध तथा शुक्र के अंशादि शीघ्रफल को पृथक् पृथक् यथागत धन ऋण करे तब स्पष्ट बुध तथा स्पष्ट शुक्र होता है।

बुध के अंशादि मध्यम शीघ्रफल को वक्ष्यमाण रीति से स्पष्ट करे और गुरु, शुक्र तथा शनि का यथागत अंशादि मध्यम शीघ्रफल ही उनका स्पष्ट शीघ्रफल होता है।

—: उदाहरण :—

भौम के अंशादि मध्यम शीघ्रफल २६।३७।३४ को भौम के स्पष्ट शीघ्रकर्ण २०९ से गुणा तो ५५६४।५१।२६ हुए। इन में भौम के पूर्वागत भाजक २२३ से भाग दिया तो लब्ध २४।५७।१६ 'भौम का अंशादि स्पष्ट शीघ्रफल' हुआ। यहां भौम का शीघ्रकेन्द्र २।९।४७।२० मेषादि छःराशि के अन्तर्गत है इस लिए अंशादि स्पष्ट शीघ्रफल २४।५७।१६ 'ऋण' हुआ। मन्दस्पष्ट भौम ५।१।१९।२७ में अंशादि स्पष्ट शीघ्रफल २४।५७।१६ को हीन किया तो '४ राशि ६ अंश २२ कला ११ विकला स्पष्ट भौम' हुआ।

भौम की स्पष्ट गति साधनोदाहरणः—

षड्भाल्प भौम शीघ्रकेन्द्र २।९।४७।२० के अंश ६९ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में ९।४३ धन शीघ्र गति फल है। भौम की मन्द स्पष्ट गति २६।२६ में ९।४३ शीघ्रगतिफल को धन होने के कारण युक्त किया तो ३६।९ 'भौम की कलादि स्पष्ट गति' हुई।

'बुधमन्दफलसारणीयम्'। 'उपकरणं षड्भाल्पबुधमन्दकेन्द्रांशाः'। 'अंशादि फलनेतृ'।											
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	मं.ग.	
० ० ०	० १९ १२	० ३८ २४	० ५७ ३६	१ १६ ४८	१ ३६ ०	१ ५५ १२	२ १४ २४	२ ३३ ३६	२ ५२ ४८	१६५ ३२	गु.९६ ध. भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	मं. ग.	
३ १२ ०	३ ३१ ४८	३ ५१ ३६	४ ११ २४	४ ३१ १२	४ ५१ ०	५ १० ४८	५ ३० ३६	५ ५० २४	६ १० १२	१६३ २	गु.९९ ध. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मं. ग.	
६ ३० ०	६ ४८ ३६	७ ७ १२	७ २५ ४८	७ ४४ २४	८ ३ ०	८ २१ ३६	८ ४० १२	८ ५८ ४८	९ १७ २४	१६८ २	गु. ९३ ध. भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	मं. ग.	
९ ३६ ०	९ ५३ २४	१० १० ४८	१० २८ १२	१० ४५ ३६	११ ३ ०	११ २० २४	११ ३७ ४८	११ ५५ १२	१२ १२ ३६	१७३ २	गु. ८७ ध. भा. ५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	मं. ग.	
१२ ३० ०	१२ ४६ ४८	१३ ३ ३६	१३ २० २४	१३ ३७ १२	१३ ५४ ०	१४ १० ४८	१४ २७ ३६	१४ ४४ २४	१५ १ १२	१७५ ३२	गु. ८४ ध. भा. ५
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	मं. ग.	
१५ १८ ०	१५ ३३ ०	१५ ४८ ०	१६ ३ ०	१६ १८ ०	१६ ३३ ०	१६ ४८ ०	१७ ३ ०	१७ १८ ०	१७ ३३ ०	१८३ २	गु. १२ ध. भा. १
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	मं. ग.	
१७ ४८ ०	१८ ० ३६	१८ १३ १२	१८ २५ ४८	१८ ३८ २४	१८ ५१ ०	१९ ३ ३६	१९ १६ १२	१९ २८ ४८	१९ ४१ २४	१९३ २	गु. ६३ ध. भा. ५
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	मं. ग.	
१९ ५४ ०	२० ४ ४८	२० १५ ३६	२० २६ २४	२० ३७ १२	२० ४८ ०	२० ५८ ४८	२१ ९ ३६	२१ २० २४	२१ ३१ १२	२०७ ३२	गु. ५८ ध. भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	मं. ग.	
२१ ४२ ०	२१ ४९ १२	२१ ५६ २४	२२ ३ ३६	२२ १० ४८	२२ १८ ०	२२ २५ १२	२२ ३२ २४	२२ ३९ ३६	२२ ४६ ४८	२१५ ३२	गु. ३६ ध. भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	मं. ग.	
२२ ५४ ०	२२ ५८ १२	२३ २ २४	२३ ६ ३६	२३ १० ४८	२३ १५ ०	२३ १९ १२	२३ २३ २४	२३ २७ ३६	२३ ३१ ४८	२२८ ०	गु. २१ ध. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	म. ग.	
२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२३ ३६ ०	२४५ ३२	गु. ० ध. भा. ०
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	म. ग.	
२३ ३६ ०	२३ ३१ १२	२३ २६ २४	२३ २१ ३६	२३ १६ ४८	२३ १२ ०	२३ ७ १२	२३ २ २४	२२ ५७ ३६	२२ ५२ ४८	२६५ ३२	गु. २४ ऋ. भा. ५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	म. ग.	
२२ ४८ ०	२२ ३७ ४८	२२ २७ ३६	२२ १७ २४	२२ ७ १२	२१ ५७ ०	२१ ४६ ४८	२१ ३६ ३६	२१ २६ २४	२१ १६ १२	२८८ २	गु. ५१ ऋ. भा. ५
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	म. ग.	
२१ ६ ०	२० ५० २४	२० ३४ ४८	२० १९ १२	२० ३ ३६	१९ ४८ ०	१९ ३२ २४	१९ १६ ४८	१९ १ १२	१९ ४५ ३६	३१० ३२	गु. ७८ ऋ. भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	म. ग.	
१८ ३० ०	१८ ८ २४	१७ ४६ ४८	१७ २५ १२	१७ ३ ३६	१६ ४२ ०	१६ २० २४	१५ ५८ ४८	१५ ३७ १२	१५ १५ ३६	३३५ ६२	गु१०८ ऋ. भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	म. ग.	
१५ ५४ ०	१४ २७ ३६	१४ १ १२	१३ ३४ ४८	१३ ८ २४	१२ ४२ ०	१२ १५ ३६	११ ४९ १२	११ २२ ४८	१० ५६ २४	३५५ ३२	गु१३२ ऋ. भा. ५
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	म. ग.	
१० ३० ०	९ ४९ २४	९ २८ ४८	८ ५८ १२	८ २७ ३६	७ ५७ ०	७ २६ २४	६ ५५ ४८	६ २५ १२	५ ५४ ३६	३७३ २	गु१५३ ऋ. भा. ५
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	म. ग.
५ २४ ०	४ ४१ ३६	४ १९ १२	३ ४६ ४८	३ १४ २४	२ ४२ ०	२ ९ ३६	१ ३७ १२	१ ४ ४८	० ३२ २४	० ० ०	३८० ३२	गु१६२ ऋ. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

मध्यम बुध १।७।४।१३ में बुध के स्पष्टमन्दोच्च ७।२३।२७।५७ को हीन किया तो ५।१३।३६।१६ 'बुध का मन्द केन्द्र' हुआ। यह छःराशि से न्यून है इसलिए स्वतः षड्भाल्प हुआ। इसके अंशादि किये तो १६३।३६।१६ हुए। १६३ अंशके तुल्य बुध मन्द फल सारणी के कोष्ठके नीचे का अंशादि मन्द फल ८।५८।१२ को एकान्त मे स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के कलादि ३६।१६ को षड्भाल्प मन्द केन्द्र के १६३ अंश के तुल्य कोष्ठके अन्तिम कोष्ठमें लिखित ऋण गुणक १५३ से गुणा तो ५५४८।४८ हुए। इनमें भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध ११०९।४६ विकलादि हुए। विकला १११० में ६० से भाग दिया तो लब्ध १८ कला और शेष ३० विकला हुई। एकान्त में स्थापित अंशादि मन्द फल ८।५८।१२ में ऋण गुणक होने के कारण लब्ध कलादि १८।३० को हीन किया तो ८।३९।४२ बुध का स्पष्ट अंशादि मन्द फल हुआ। यहां बुध मन्द केन्द्र मेषादि छः राशि के अन्तर्गत है इसलिए मन्द फल ऋण हुआ। मध्यम बुध १।७।४।१३ मे अंशादि मन्द फल ८।३९।४२ को हीन किया तो ।०।२८।२४।३१ 'मन्द स्पष्ट' हुआ।

षड्भाल्प बुध मन्द केन्द्र के १६३ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में ३७३।२ बुध की कलादि मन्द स्पष्ट गति है। इस मे शीघ्र गति फल का संस्कार करे तब बुध की स्पष्ट गति होती है।

बुधस्य स्पष्टमन्दकर्णसारणीयम्।उपकरणं षड्भाल्यबुधमन्दकेन्द्रांशाः। अङ्गुलादि फलमंतत्।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
४७ ०	४७ ०	४७ ०	४७ ०	४७ ०	४७ ०	४७ ०	४७ ०	४७ ०	४७ ०	गु. ० ऋ. भा. ०
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
४७ ०	४६ ५४	४६ ४८	४६ ४२	४६ ३६	४६ ३०	४६ २४	४६ १८	४६ १२	४६ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
४६ ०	४६ ०	४६ ०	४६ ०	४६ ०	४६ ०	४६ ०	४६ ७	४६ ०	४६ ०	गु. ० ऋ. भा. ०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
४६ ०	४५ ५४	४५ ४८	४५ ४२	४५ ३६	४५ ३०	४५ २४	४५ १८	४५ १२	४५ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
४५ ०	४५ ०	४५ ०	४५ ०	४५ ०	४५ ०	४५ ०	४५ ०	४५ ०	४५ ०	गु. ० ऋ. भा. ०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
४५ ०	४४ ५४	४४ ४८	४४ ४२	४४ ३६	४४ ३०	४४ २४	४४ १८	४४ १२	४४ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
४४ ०	४३ ५४	४३ ४८	४३ ४२	४३ ३६	४३ ३०	४३ २४	४३ १८	४३ १२	४३ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
४३ ०	४२ ५४	४२ ४८	४२ ४२	४२ ३६	४२ ३०	४२ २४	४२ १८	४२ १२	४२ ६	गु१५३ ऋ. भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	
४२ ०	४१ ४८	४१ ३६	४१ २४	४१ १२	४१ ०	४० ४८	४० ३६	४० २४	४० १२	गु. १ ऋ. भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	
४० ०	३९ ५४	३९ ४८	३९ ४२	३९ ३६	३९ ३०	३९ २४	३९ १८	३९ १२	३९ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	
३९ ०	३८ ५४	३८ ४८	३८ ४२	३८ ३६	३८ ३०	३८ २४	३८ १८	३८ १२	३८ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	
३८ ०	३७ ५४	३७ ४८	३७ ४२	३७ ३६	३७ ३०	३७ २४	३७ १८	३७ १२	३७ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	
३७ ७	३६ ४८	३५ ३६	३६ २४	३६ १२	३६ ०	३५ ४८	३५ ३६	३५ २४	३५ १२	गु. १ ऋ. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	
३५ ०	३४ ४८	३४ ३६	३४ २४	३४ १२	३४ ०	३३ ४८	३३ ३६	३३ २४	३३ १२	गु. १ ऋ. भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	
३३ ०	३२ ५४	३२ ४८	३२ ४२	३२ ३६	३२ ३०	३२ २४	३२ १८	३२ १२	३२ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	
३२ ०	३२ ०	३२ ०	३२ ०	३२ ०	३२ ०	३२ ०	३२ ०	३२ ०	३२ ०	गु. ० ऋ. भा. ०
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	
३२ ०	३१ ५४	३१ ४८	३१ ४२	३१ ३६	३१ ३०	३१ २४	३१ १८	३१ १२	३१ ६	गु. १ ऋ. भा. १०
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	
३१ ०	३१ ०	३१ ०	३१ ०	३१ ०	३१ ०	३१ ०	३१ ०	३१ ०	३१ ०	गु. ० ऋ. भा. ०

बुध स्पष्ट मन्द कर्ण साधनोदाहरणः—

बुध मन्द केन्द्र ५।१३।३६।१६ के अंशादी किये तो १६३।३३।१६ हुए। १६३ अंश के तुल्य बुध स्पष्टमन्द कर्णसारणी के नीचे के अङ्गुलादि ३१।४२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प बुधमन्द कन्द्र के कलादि ३६।१६ को षड्भाल्प बुध मन्द केन्द्र के १६३ अंशों के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित ऋण गुणक १ से गुणा तो ३६।१६ हुए। इन में भाजक १० से भाग दिया तो लब्ध ४ व्यङ्गुल हुए। इन के एकान्त में स्थापित ३१।४२ अङ्गुलादि में हीन किया तो ३१।३८ हुए। यहां व्यङ्गुल ३० है अतः अर्द्धाधिके रूपं ग्राह्यम्' इस नियम से ३२ अङ्गुल 'बुध का स्पष्ट मन्द कर्ण' हुआ।

'बुधशीघ्रफलसारणीयम्'। उपकरणं षड्भाल्पबुधशीघ्रकेन्द्रांशाः'। 'अंशादि फलमेतत्'।											
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	शी. ग.	
० ० ०	० १६ ४८	० ३३ ३६	० ५० २४	१ ७ १२	१ २४ ०	१ ४० ४८	१ ५७ ३६	२ १४ २४	२ ३१ १२	५१ ५१ धन	गु. ८४ ध. भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	शी.ग.	
२ ४८ ०	३ ४ १२	३ २० २४	३ ३६ ३६	३ ५२ ४८	४ ९ ०	४ २५ १२	४ ४१ २४	४ ५७ ३६	५ १३ ४८	५० ० ध.	गु. ८१ ध. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	शी. ग.	
५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	५०	गु. ८१
३०	४६	२	१८	३४	५१	७	२३	३९	५५	०	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	धनं	भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	शी. ग.	
८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	५०	गु. ८१
१२	२८	४४	०	१६	३३	४९	५	२१	३७	०	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.	भा. ५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	शी. ग.	
१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	४६	गु. १५
५४	९	२४	३९	५४	९	२४	३९	५४	९	१८	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	शी. ग.	
१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	४२	गु. ६९
२४	३७	५१	५	१९	३३	४६	०	१४	२८	३५	धन
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ध.	भा. ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	शी. ग.	
१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	३८	गु. ६३
४२	५४	७	१९	३२	४५	५७	१०	२२	३५	५३	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ध.	भा. ५
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	शी. ग.	
१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	३५	गु. ५७
४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	११	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ध.	भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	शी. ग.	
१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२७	गु. ९
४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	४७	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	शी. ग.	
२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	१८	गु ६
१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	३१	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	शी. ग.	
२२ १२ ०	२२ १५ ०	२२ १८ ०	२२ २१ ०	२२ २४ ०	२२ २७ ०	२२ ३० ०	२२ ३३ ०	२२ ३६ ०	२२ ३९ ०	९ १५ ध.	गु. ३ ध. भा. १
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	शी. ग.	
२२ ४२ ०	२२ ४१ २४	२२ ४० ४८	२२ ४० १२	२२ ३९ ३६	२२ ३९ ०	२२ ३८ २४	२२ ३७ ४८	२२ ३७ १२	२२ ३६ ३६	१ ५१ कर्ण	गु. ३ क. भा. ५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	शी. ग.	
२२ ३६ ०	२२ २९ २४	२२ २२ ४८	२२ १६ १२	२२ ९ ३६	२२ ३ ०	२१ ५६ २४	२१ ४९ ४८	२१ ४३ १२	२१ ३६ ३६	२० २२ क.	गु. ३३ क. भा. ५
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	शी. ग.	
२१ ३० ०	२१ १८ ०	२१ ६ ०	२० ५४ ०	२० ४२ ०	२० ३० ०	२० १८ ०	२० ६ ०	१९ ५४ ०	१९ ४२ ०	३७ २ क.	गु. १२ क. भा. १
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	शी. ग.	
१९ ३० ०	१९ १० १२	१८ ५० २४	१८ ३० ३६	१८ १० ४८	१७ ५१ ०	१७ ३१ १२	१७ ११ २४	१६ ५१ ३६	३१ ४८	६१ ७ क.	गु. ९९ क. भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	शी. ग.	
१६ १२ ०	१५ ४५ ३६	१५ १९ १२	१४ ५२ ४८	१४ २६ २४	१४ ० ०	१३ ३३ ३६	१३ ७ १२	१२ ४० ४८	१२ १४ २४	८१ २९ क.	गु. १३२ क. भा. ५
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	शी. ग.	
११ ४८ ०	११ १४ २४	१० ४० ४८	१० ७ १२	९ ३३ ३६	९ ० ०	८ २६ २४	७ ५२ ४८	७ १९ १२	६ ४५ ३६	१०३ ४२ क.	गु. १६८ क. भा. ५
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	शी. ग.	
६ १२ ०	५ ३४ ४८	४ ५७ ३६	४ २० २४	३ ४३ १२	३ ६ ०	२ २८ ४८	१ ५१ ३६	१ १४ २४	० ३७ १२	० ० ०	११४ ४९ कर्ण	गु. १८६ कर्ण. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बुध मध्यम शीघ्रफल साधनोदाहरणः—

मन्द स्पष्ट बुध ०।२८।२४।३१ में मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ को हीन किया तो १०।६।५२।२४ 'बुध का शीघ्र केन्द्र' हुआ। यह छः राशिसे अधिक है अतः इस शीघ्र केन्द्र १०।६।५२।२४ को १२ राशि में शोधन किया तो १।२३।७।३६ 'बुध का षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र' हुआ। इस को अंशादि किया तो ५३।७।३६ हुए। ५३ अंश के तुल्य बुधशीघ्रफलसारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि शीघ्र फल १४।५।२४ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के ७।३६ कलादि को षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के ५३ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धनगुणक ६९ से गुणा तो ५२४।२४ हुए। इन में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध १०५ विकला हुई। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध १ कला और शेष ४५ विकला हुई। एकान्त में स्थापित अंशादि शीघ्र फल १४।५।२४ में धनगुणक होने के कारण लब्ध कलादि १।४५ को युक्त किया तो १४।७।९ 'बुध का अंशादि मध्यम शीघ्र फल' हुआ।

बुधशीघ्रफल स्पष्टकरने की रीतिः—

बुधके अंशादि मध्यम शीघ्रफल को बुधके अङ्गुलादि स्पष्ट मन्दकर्ण से गुणकर बुध के मध्यम मन्दकर्ण ३९ से भाग दे लब्ध 'बुधका अंशादि स्पष्ट शीघ्रफल' होता है।

उदाहरण—

बुधके अंशादि मध्यम शीघ्रफल १४।७।९ को बुधके स्पष्ट मन्दकर्ण ३२ से गुणा तो ४५१।४८।४८ हुए। इनमें बुधके मध्यम मन्दकर्ण ३९ से भाग दिया तो लब्ध ११।३५।६ 'बुधका अंशादि स्पष्ट शीघ्रफल' हुआ। यहां बुध शीघ्रकेन्द्र १०।६।५२।२४ तुलादि छः राशिके अन्तर्गत है अतः अंशादि स्पष्ट शीघ्रफल ११।३५।६ 'ऋण' हुआ। मन्दस्पष्ट रवि २।२१।३२।७ में शीघ्रफल ११।३५।६ को हीन किया तो २।९।५७।१ 'राश्यादि स्पष्ट बुध' हुआ।

बुधगतिसाधनरीतिः—

बुधकी स्पष्टमन्दगति में सूर्य की स्पष्टगतिको हीन करे तब जो शेष बचे उसको बुधके शीघ्रगति फलसे गुणकर १८६ से भाग दे लब्ध 'बुधका स्पष्ट गति शीघ्रफल' होता है। रवि की स्पष्टगति में बुध के स्पष्ट गति शीघ्र फल को धन हो तो युक्त और ऋण हो तो हीन करे तब बुधकी स्पष्ट गति होती है। यदि रवि की स्पष्टगति में बुधका स्पष्टगति शीघ्रफल न घट सके अर्थात् रवि की स्पष्ट गतिसे बुध का ऋणगतिशीघ्रफल अधिक हो तो बुध के ऋणगतिशीघ्रफल में सूर्य की स्पष्ट गति को हीन करे शेष बुध की वक्रगति होती है।

उदाहरण—

बुधके षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्रांश ५३ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में ४२।३५ धनशीघ्रगति फल है इस को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर बुध की मन्दस्पष्टगति ३७३।२ में रवि की स्पष्ट गति ५७।८ को हीन किया तो ३१५।५४ शेष बचे इनको धन गति शीघ्र फल ४२।३५ से गुणा तो १३।४५२।४ हुए। इनमें १८६ से भाग दिया तो लब्ध ७२।१९ कलादि स्पष्टशीघ्रगतिफल धन हुआ। रविकी स्पष्टगति ५७।८ में कलादि स्पष्टशीघ्रगति फल ७२।१९ को धन होनेके कारण युक्त किया तो १२९।२७ 'बुध की स्पष्टगति' हुई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'गुरुमन्दफलसारणीयम्' । 'उपकरणं षड्भाल्पमन्दकेन्द्रांशाः' । 'अंशादि फलमेतत्' ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	मं. ग.	
० ० ०	० ५ २४	० १० ४८	० १६ १२	० २१ ३६	० २७ ०	० ३२ २४	० ३७ ४८	० ४३ १२	० ४८ ३६	४ ३३	गु. २७ ध. भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	मं. ग.	
० ५४ ०	० ५९ २४	१ ४ ४८	१ १० १२	१ १५ ३६	१ २१ ०	१ २६ २४	१ ३१ ४८	१ ३७ १२	१ ४२ ३६	४ ३३	गु. २७ ध. भा. ५
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मं. ग.	
१ ४८ ०	१ ५२ ४८	१ ५७ ३६	२ २ २४	२ ७ १२	२ १२ ०	२ १६ ४८	२ २१ ३६	२ २६ २४	२ ३१ १२	४ ३६	गु २४ ध. भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	मं. ग.	
२ ३६ ०	२ ४० ४८	२ ४५ ३६	२ ५० २४	२ ५५ १२	३ ० ०	३ ४ ४८	३ ९ ३६	३ १४ २४	३ १९ १२	४ ३६	गु. २४ ध. भा. ५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	मं. ग.	
३ २४ ०	३ २८ १२	३ ३२ २४	३ ३६ ३६	३ ४० ४८	३ ४५ ०	३ ४९ १२	३ ५३ २४	३ ५७ ३६	४ १ ४८	४ ३९	गु. २१ ध. भा. ५
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	मं. ग.	
४ ६ ०	४ ९ ०	४ १२ ०	४ १५ ०	४ १८ ०	४ २१ ०	४ २४ ०	४ २७ ०	४ ३० ०	४ ३३ ०	४ ४५	गु. ३ ध. भा. १
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	मं. ग.	
४ ३६ ०	४ ३८ ०	४ ४२ ०	४ ४५ ०	४ ४८ ०	४ ५१ ०	४ ५४ ०	४ ५७ ०	५ ० ०	५ ३ ०	४ ४५	गु. ३ ध. भा. १

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	मं. ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५		गु. ९
६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	४	ध.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	५१	भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	मं. ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५		गु. ३
२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	४	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	५७	भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	मं. ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५		गु. ०
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	५	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा. ०
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	मं. ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५		गु. ६
३०	२८	२७	२६	२५	२४	२२	२१	२०	१९	५	क्र.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	६	भा ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	मं. ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	४	४		गु. १२
१८	१५	१३	१०	८	६	३	१	५८	५६	५	क्र.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	१२	भा. ५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	मं. ग.	
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		गु. ३
५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	५	क्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१५	भा. १
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	मं. ग.	
४	४	४	४	४	४	३	३	३	३		गु. २१
२४	१९	१५	११	७	३	५८	५४	५०	४६	५	क्र.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	२१	भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	मं. ग.	
३	३	३	३	३	३	३	३	३	२		गु. २४
४२	३७	३२	२७	२२	१८	१३	८	३	५८	५	क्र.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	२४	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	मं. ग.	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२		गु. २१
५४.	४८	४३	३७	३२	२७	२१	१६	१०	५	५	क.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	२७	भा. ५
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	मं. ग.	
२	१	१	१	१	१	१	१	१	१		गु. ६
०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	५	क.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	भा. १
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	मं. ग.	
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ६
०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५	क.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	भा. १

उदाहरण—

राश्यादि मध्यम गुरु ४।२०।२२।१३ में राश्यादि स्पष्ट मन्दोच्च ५।२०।१५।६ को हीन किया तो ११।०।७।७ 'गुरु का मन्द केन्द्र' हुआ। यह छः राशि से अधिक है अतः इस को १२ राशि में शोधन किया तो ०।२९।५२।५३ 'गुरु का षड्भाल्प मन्द केन्द्र' हुआ। इस के अंशादि किये तो २९।५२।५३ हुए। २९ अंश के तुल्य गुरु मन्दफलसारणी के कोष्ठ के अंशादि मन्द फल २।३१।१२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के ५२।५३ कलादि को षड्भाल्प मंद केन्द्र के २९ अंशके तुल्य कोष्ठ के अन्तिमकोष्ठ में लिखित धनगुणक २४ से गुणा तो १२६९।१२ हुए। इन में ५ से भाग दिया तो लब्ध २५४ विकला हुई। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ४ कला और शेष १४ विकला हुई। एकान्त में स्थापित अंशादि मन्द फल २।३१।१२ में धन गुणक होने के कारण युक्त किया तो २।३५।२६ 'स्पष्ट अंशादि मन्द फल' हुआ। यहाँ गुरु का मन्दकेन्द्र तुलादि छः राशिके अन्तर्गत है अतः मन्द फल 'धन' हुआ। मध्यम गुरु ४।२०।२२।१३ में अंशादि मन्द फल २।३५।२६ को धन होने के कारण युक्त किया तो ४।२२।५७।३९ 'मन्द स्पष्ट गुरु' हुआ। एवं ४।३६ 'गुरु की मन्द स्पष्ट गति' हुई।

'गुरुशीघ्रफलसारणीयम्'। 'उपकरणं षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्रांशाः'। 'अंशादि फलमेतत्।'											
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	शी. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	८	गु. ४८
०	९	१९	२८	३८	४८	५७	७	१६	२६	५३	ध. भा.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	धनं	५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	शी. ग.	
१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	८	गु.४८
३६	४५	५५	४	१४	२४	३३	४३	५२	२	५३	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ध.	भा. ५
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	शी. ग.	
३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	८	गु. ९
१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	२०	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	शी. ग.	
४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	८	गु. ९
४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	२०	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	शी. ग.	
६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	गु. ३९
१२	१९	२७	३५	४३	५१	५८	६	१४	२२	१३	ध.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ध.	भा. ५
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	शी. ग.	
७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	६	गु. ३३
३०	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२२	२९	६	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ध.	भा. ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	शी. ग.	
८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	५	गु. ६
३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३३	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	शी. ग.	
९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	४	गु. २४
३६	४०	४५	५०	५५	०	४	९	१४	१९	२६	ध.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ध.	भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	शी. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	गु. ३
२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	४६	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	शी. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१	गु. ६
५४	५५	५६	५७	५८	०	१	२	३	४	६	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.	भा. ५
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	शी. ग.	
११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१	गु. ६
६	४	३	२	१	०	५८	५७	५६	५५	६	क्र.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	क्रणं	भा. ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	शी. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	गु. ३
५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	४६	क्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	क्रणं	भा. १
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	शी. ग.	
१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	५	गु. २७
२४	१८	१३	७	२	५७	५१	४६	४०	३५	०	क्र.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	क्र.	भा. ५
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	शी. ग.	
९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	७	गु. ३९
३०	२२	१४	६	५८	५१	४३	३५	२७	१९	१३	क्र.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	क्र.	भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	शी. ग.	
८	८	७	७	७	७	७	७	६	६	८	गु. ४८
१२	२	५२	४३	३३	२४	१४	४	५५	४५	५३	क्र.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	क्र.	भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	शी. ग.	
६	६	६	६	५	५	५	५	५	४	११	गु. १२
३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	६	क्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	क्र.	भा. १
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	शी. ग.	
४	४	४	३	३	३	३	३	२	२	१२	गु. ६६
३६	२२	९	५६	४३	३०	१६	३	५०	३७	१३	क्र.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	क्र.	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	शी. ग.	
२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	०	१३	गु. १२
२४	९	५५	४०	२६	१२	५७	४३	२८	१४	०	२०	क.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	क.	भा. ५

उदाहरण—

मन्द स्पष्ट गुरु ४।२२।५७।३९ में मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ को हीन किया तो २।१।२५।३२ 'गुरु का शीघ्र केन्द्र' हुआ। यह छः राशि से न्यून है इस लिए स्वतः षड्भाल्प हुआ। इस के अंशादि किये तो ६१।२५।३२ हुए। ६१ अंश के तुल्य गुरुशीघ्रफलसारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि शीघ्र फल ८।४२।० को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के कलादि २५।३२ को षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र ६१ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धनगुणक ६ से गुणा तो १५३।१२ हुए। इन में भाजक १ से भाग दिया तो लब्ध १५३ विकला हुई। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध २ कला और शेष ३३ विकला हुई। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि फल ८।४२।० में धनगुणक होने के कारण युक्त किया तो ८।४४।३३ 'गुरु का स्पष्ट अंशादि शीघ्रफल' हुआ। यहां गुरु का शीघ्र केन्द्र २।१।२५।३२ मेषादि छः राशि के अन्तर्गत है इस लिए शीघ्रफल 'ऋण' हुआ। मन्द स्पष्ट गुरु ४।२२।५७।३९ में अंशादि शीघ्र फल ८।४४।३३ को हीन किया तो ४।१४।१३।६ 'स्पष्ट गुरु' हुआ।

गुरु की मन्द स्पष्ट गति ४।३६ में षड्भाल्प गुरुशीघ्रकेन्द्रके ६१ अंश के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन-शीघ्रगतिफल ५।३३ को युक्त किया तो १०।९ 'गुरु की स्पष्टगति' हुई।

'शुक्रमन्दफलसारणीयम्'। 'उपकरणं षड्भाल्पमन्दकेन्द्रांशाः'। 'अंशादिफलमेतत्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
०	०	१	१	२	३	३	४	४	५	९५	श.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	८	भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ६
६	७	८	९	१०	१२	१३	१४	१५	१६	९४	श.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	८	भा. ५
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
१८	१८	१९	१९	२०	२१	२१	२२	२२	२३	९५	श.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	८	भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	९५	श.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	८	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
३०	३०	३१	३१	३२	३३	३१	३४	३४	३५	९५	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	८	भा. ५
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
३६	३६	३७	३७	३८	३९	३९	४०	४०	४१	९५	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	८	भा ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ०
४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	९६	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	भा. ०
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
४२	४२	४३	४३	४४	४५	४५	४६	४६	४७	९५	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	८	भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ०
४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	९६	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	भा. ०
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ०
४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	९६	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	भा. ०
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
४८	४७	४६	४६	४५	४५	४४	४३	४३	४२	९७	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	८	भा ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ०
४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	९६	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	भा. ०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	मं. गं	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
४२	४१	४०	४०	३९	३९	३८	३७	३७	३६	९७	क.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	८	भा. ५
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ०
३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	९६	क.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	८	भा. ०
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	म. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ३
३६	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३१	३१	३०	९७	क.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	८	भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ६
३०	२८	२७	२६	२५	२४	२२	२१	२०	१९	९८	क.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	८	भा. ५
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	मं. ग	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ६
१८	१६	१५	१४	१३	१२	१०	९	८	७	९८	क.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	८	भा. ५
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	मं. ग.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ३
६	५	४	४	३	३	२	१	१	०	०	९७ क.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	८ भा. ५

उदाहरण—

मध्यम शुक्र १०।४।२९।६ में शुक्र के राश्यादि स्पष्ट मन्दांश ९।१७।४०।२८ को हीन किया तो ०।१६ ४८।३८ ' शुक्र का मन्द केन्द्र हुआ । यह छः राशिसे अल्प है इसलिए स्वतः षड्भाल्प हुआ । इसके अंशादि किये तो १६।४८।३८ हुए । १६ अंश के तुल्य शुक्रमन्दफलसारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि मन्द फल ०।१३।१२ को एकान्तमें स्थापित किया । तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के कलादि ४८।३८ को षड्भाल्प मन्द केन्द्र के अंश १६ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक ६ से गुणा तो २९१।४८ हुए । इनमें भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध ५८ विकला हुई । एकान्तमें स्थापित अंशादि मन्द फल ०।१३।१२ को धन गुणक होनेके कारण लब्ध विकला ५८ को युक्त किया तो ०।१४।१० ' स्पष्ट अंशादि मन्द फल ' हुआ । यहां शुक्र मन्द केन्द्र ०।१६।४८।३८ है । यह मेषादि छः राशि के अन्तर्गत है इसलिए मन्द फल ' ऋण ' हुआ । मध्यम शुक्र १०।४।२९।६ में अंशादि मन्दफल ०।१४।१० को हीन किया तो १०।४।१४।५६ ' शुक्रका मन्द स्पष्ट ' हुआ । शुक्रके षड्भाल्प मन्द केन्द्रांश १६ के तुल्य कोष्ठके अन्तिम कोष्ठमें ' ९४।८ शुक्रकी मन्दस्पष्ट गति ' है । किन्तु शुक्रकी स्पष्टगति के लिए मन्द स्पष्ट गति की कोई आवश्यकता नहीं है अतः शुक्रकी मन्द स्पष्ट गति को न साधें ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'शुक्रशीघ्रफलस्मारणीयम्' उपकरणं शीघ्रकेन्द्रांशाः 'अंशादिफलमेतत्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	शी. ग.	
०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	१५	गु १२६
०	२५	५०	१५	४०	६	३१	५६	२१	४६	३३	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	धन	भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	शी. ग.	
४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	१५	गु. १२६
१२	३७	२	२७	५२	१८	४३	८	३३	५८	२३	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.	भा. ५
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	शी. ग.	
८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१५	गु. १२३
२४	४८	१३	३७	२	२७	५१	१६	४०	५	११	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ध.	भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	शी. ग.	
१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१५	गु. १२६
३०	५५	२०	४५	१०	३६	१	२६	५१	१६	३३	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.	भा. ५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	शी. ग.	
१६	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	१९	२०	१४	गु. ११७
४२	५	२८	५२	१५	३९	२	२५	४९	१२	२७	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ध.	भा. ५
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	शी. ग.	
२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	१५	गु. १२३
३६	०	२५	४९	१४	३९	३	२८	५२	१७	११	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ध.	भा. ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	शी. ग.	
२४	२५	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२७	२८	१४	गु. ११७
४२	५	२८	५२	१५	३९	२	२५	४९	१२	२७	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ध.	भा. ५
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	शी. ग.	
२८	२८	२९	२९	३०	३०	३०	३१	३१	३१	१३	गु ११९
३६	५८	२०	४२	४	२७	४९	११	३३	५५	४२	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	शी.ग.
३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	१३ गु.१०८
१८	३९	१	२२	४४	६	२७	४९	१०	३२	२० ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ध. भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	शी.ग.
३५	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३८	३८	३८	१२ गु. ९२
५४	१३	३३	५३	१३	३३	५२	१२	३२	५२	१३ ध.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ध. भा. ५
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	शी.ग.
३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	१० गु. ८७
१२	२९	४६	४	२१	३९	५६	१३	३१	४८	४४ ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	धनं भा. ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	शी.ग.
४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	८ गु. ७२
६	२०	३४	४९	३	१८	३२	४६	१	१५	५३ ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ध. भा.५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	शी.ग.
४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	५ गु. ९
३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	३३ ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध. भा १
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	शी.ग.
४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	० गु ६
०	१	२	३	४	६	७	८	९	१०	४४ ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध. भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	शी.ग.
४६	४५	४५	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४४	७ गु. ६३
१२	५९	४६	३४	२१	९	५६	४३	३१	१८	४७ ऋ.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ऋणं भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	शी.ग.
४४	४३	४२	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३८	२३ गु.१९२
६	२७	४९	१०	३२	५४	१५	३७	५८	२०	४२ ऋ.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ऋ. भा ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	शी.ग.	
३७	३..	३४	३३	३२	३०	२९	२७	२६	२५		गु.४२३
४२	१७	५२	२८	३	३९	१४	४९	२५	०	+	ऋ
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६		भा. ५
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	शी. ग.
२३	२२	१८	१६	१४	११	९	७	४	२	०	गु.७०८
३६	१४	५२	३२	९	४८	२६	४	४३	२१	०	+
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	भा. ५

—: उदाहरण :—

मन्द स्पष्ट शुक्र १०।४।१४।५६ में मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ को हीन किया तो ७।१२।४२।४९ 'शुक्र का शीघ्र केन्द्र' हुआ। यह छः राशि से अधिक है इसलिए इस को १२ राशि में शोधन किया तो ४।१७।१७।११ 'शुक्र का षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्र' हुआ। इस के अंशादि किये तो १३७।१७।११ हुए। १३७ अंश के तुल्य शुक्र शीघ्रफलानयनी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि शीघ्रफल ४६।८।२४ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के १७।११ कलादि को षड्भाल्प केन्द्र के १३७ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक ६ से गुणा तो १०३।६ हुए। इन में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध २१ विकला हुई। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि शीघ्रफल ४६।८।२४ में धन गुणक होने के कारण लब्ध विकला २१ को युक्त किया तो ४६।८।४५ 'शुक्र का स्पष्ट अंशादि शीघ्रफल' हुआ। यहां शुक्र शीघ्र केन्द्र ७।१२।४२।४९ है, यह तुलादि छः राशि के अन्तर्गत है इसलिए शीघ्रफल 'ऋण' हुआ। मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ में अंशादि शीघ्रफल ४६।८।४५ को गत्यादि कर के १।१६।८।४५ का हीन किया तो १।५।२३।२२ 'सत्यादि स्पष्ट शुक्र' हुआ। षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्रांश १३७ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में शुक्र का ० ४४ धन गति शीघ्र फल है। इस को रवि की स्पष्ट गति ५७।८ में धन किया तो ५७।५२ 'शुक्र की स्पष्ट गति' हुई।

शुक्र की शीघ्रगति फल में विशेष संस्कार:—

शुक्र के षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्रांश १६० से १८० पर्यंत हो तो निम्न लिखित कोष्ठों में शुक्र की शीघ्रगति फलको साधे अर्थात् शुक्र के षड्भाल्प शीघ्रकेन्द्रांशों के तुल्य कोष्ठ के नीचे के कलादि शीघ्रगति फलको एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्रके कलादि को गत गम्य कोष्ठों के अन्तर से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध कलादि को एकान्त में स्थापित कलादि में युक्त करे तब शुक्र का स्पष्टशीघ्र गति फल होता है। सूर्य की स्पष्ट गति में शीघ्र गति फलको हीन करे तब शुक्रकी स्पष्ट गति होती है। यदि रवि की स्पष्ट गति से शुक्र का शीघ्रगति फल अधिक हो तो शुक्र की शीघ्रगति फल में रवि की स्पष्ट गति को हीन करे शेष शुक्रकी वक्र गति होती है। एवं भौम, बुध, गुरु और शनि की मन्द स्पष्ट गति से उन का शीघ्र गति फल अधिक हो तो उनकी मन्द स्पष्ट गति को उन के शीघ्र गति फल में हीन करे शेष उनकी वक्र गति होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'शुक्रषड्भाल्पशीघ्रकेन्द्रस्य १६० अंशतो गतिशीघ्रफलसारणीयम्'।

१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०
३६	३९	४२	४५	४८	५१	५५	५९	६३	६६	७०
०	०	०	०	०	४५	३०	१५	०	४५	३०

१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
७४	७८	८१	८४	८७	९१	९२	९३	९४	९६
१५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०

'शीघ्रमन्दफलसारणीयम्'। 'उपकरणं षड्भाल्पमन्दकेन्द्रांशाः'। 'अंशादि फलमेतत्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	मं. ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		गु. ६
०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	१	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४८	भा. १

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	मं. ग.	
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१		गु. ३३
०	६	१३	१९	२६	३३	३९	४६	५२	५९	१	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	४७	भा. ५

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मं. ग.	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२		गु. २७
६	११	१६	२२	२७	३३	३८	४३	४९	५४	१	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	४९	भा. ५

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	मं. ग.	
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३		गु. २७
०	५	१०	१६	२१	२७	३२	३७	४३	४८	१	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	४९	भा. ५

४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	मं. ग.	
३	३	४	४	४	४	४	४	४	४		गु. २४
५४	५८	३	८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	१	ध.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	५०	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	मं. ग.	
४ ४२ ०	४ ४६ १२	४ ५० २४	४ ५४ ३६	४ ५८ ४८	५ ३ ०	५ ७ १२	५ ११ २४	५ १५ ३६	५ १९ ४८	१ ५२	गु. २१ ध. भा. ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	मं. ग.	
५ २४ ०	५ २७ ०	५ ३० ०	५ ३३ ०	५ ३६ ०	५ ३९ ०	५ ४२ ०	५ ४५ ०	५ ४८ ०	५ ५१ ०	१ ५४	गु. ३ ध. भा. १
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	मं. ग.	
५ ५४ ०	५ ५६ २४	५ ५८ ४८	६ १ १२	६ ३ ३६	६ ६ ०	६ ८ २४	६ १० ४८	६ १३ १२	६ १५ ३६	१ ५५	गु. १२ ध. भा. ५
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	मं. ग.	
६ १८ ०	६ १८ ३६	६ १९ १२	६ १९ ४८	६ २० २४	६ २१ ०	६ २१ ३६	६ २२ १२	६ २२ ४८	६ २३ २४	१ ५९	गु. ३ ध. भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	मं. ग.	
६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	६ २४ ०	२ ०	गु. ० ध. भा. ०
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	मं. ग.	
६ २४ ०	६ २२ ४८	६ २१ ३६	६ २० २४	६ १९ १२	६ १८ ०	६ १६ ४८	६ १५ ३६	६ १४ २४	६ १३ १२	२ २	गु. ६ ऋ. भा. ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	मं. ग.	
६ १२ ०	६ ९ ३६	६ ७ १२	६ ४ ४८	६ २ २४	६ ० ०	५ ५७ ३६	५ ५५ १२	५ ५२ ४८	५ ५० २४	२ ५	गु. १२ ऋ. भा. ५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	मं. ग.	
५ ४८ ०	५ ४४ २४	५ ४० ४८	५ ३७ १२	५ ३३ ३६	५ ३० ०	५ २६ २४	५ २२ ४८	५ १९ १२	५ १५ ३६	२ ७	गु. १८ ऋ. भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	मं. ग.	
५	५	५	४	४	४	४	४	४	४		गु. २१
१२	७	३	५९	५५	५१	४६	४२	३८	३४	२	ऋ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	८	भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	मं. ग.	
४	४	४	४	४	३	३	३	३	३		गु. ३३
३०	२३	१६	१०	३	५७	५०	४३	३७	३०	२	ऋ.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	१३	भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	मं. ग.	
३	३	३	३	३	२	२	२	२	२		गु. ६
२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१२	भा. १
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	मं. ग.	
२	२	२	२	१	१	१	१	१	१		गु. ३६
२४	१६	९	२	५५	४८	४०	३३	२६	१९	२	ऋ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	१४	भा. ५
१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	मं. ग.
१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु. ३६
१२	४	५७	५०	४३	३६	२८	२१	१४	७	०	ऋ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	१५ भा. ५

—: उदाहरण :—

मध्यम शनि ७।३।३।३ में शनि के राश्यादि स्पष्ट मन्दोच्च ८।८।३२।३ को हीन किया तो १०।२४।३१।० 'शनि का मन्द केन्द्र' हुआ। यह छः राशि से अधिक है अतः इसको १२ राशि में शोधन किया तो २।५।२९।० 'शनि का षड्भाल्प मन्द केन्द्र' हुआ। इसके अंश किये तो ३५।२९।० हुए। ३५ अंश के तुल्य शनि मन्द फल सारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि मन्द फल ३।२७।० को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प मन्द केन्द्र के २९।० कलादि को षड्भाल्प केन्द्र के ३५ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित धन गुणक २७ से गुणा तो ७८३।० हुए। इन में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध १५७ विकला हुई। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध २ कला और शेष ३७ विकला हुई। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि मन्द फल ३।२७।० में धन गुणक होने के कारण लब्ध कलादि २।३७ को युक्त किया तो ३।२९।३७ 'शनि का स्पष्ट अंशादि मन्द फल' हुआ। यहां शनि का मन्द केन्द्र तुलादि छः राशि के अन्तर्गत है इसलिए मन्द फल 'धन' हुआ। मध्यम शनि ७।३।३।३ में स्पष्ट अंशादि मन्द फल ३।२९।३७ को युक्त किया तो ७।६।३२।४० 'शनि का मन्द स्पष्ट' हुआ। षड्भाल्प मन्द केन्द्र के ३५ अंश के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में १।४९ शनि की कलादि स्पष्ट मन्द गति है इस में शीघ्रगति फल के संस्कार करने से शनि की स्पष्ट गति होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'शनिशीघ्रफलसारणीयम्'। 'उपकरणं शीघ्रकेन्द्रांशाः'। 'अंशादि फलमेनत्'।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	शी.ग.	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५	गु.२७
०	५	१०	१६	२१	२७	३२	३७	४३	४८	०	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ध.	भा. ५
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	शी.ग.	
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	गु. ६
५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	३३	ध.
०	०	२४	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	शी.ग.	
१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	५	गु.२७
५४	५९	४	१०	१५	२१	२६	३१	३७	४२	०	ध.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ध.	भा. ५
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	शी.ग.	
२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	गु.२४
४८	५२	५७	२	७	१२	१६	२१	२६	३१	२६	ध.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ध.	भा. ५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	शी.ग.	
३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	३	गु.२१
३६	४०	४४	४८	५२	५७	१	५	९	१३	५३	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.	भा. ५
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	शी.ग.	
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	गु.१८
१८	२१	२५	२८	३२	३६	३९	४३	४६	५०	२०	ध.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ध.	भा. ५
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	शी.ग.	
४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	२	गु. ३
५४	५७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	४६	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. १
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	शी.ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	२	गु.१२
२४	२६	२८	३१	३३	३६	३८	४०	४३	४५	१३	ध.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	शी.ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	१	गु. ६
४८	४९	५०	५१	५२	५४	५५	५६	५७	५८	६	ध.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ध.	भा. ५
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	शी.ग.	
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	०	गु. ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ध.	भा. ०
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	शी.ग.	
६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	१	गु. ६
०	५८	५७	५६	५५	५४	५२	५१	५०	४९	६	ऋ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ऋ.	भा. ५
११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	शी.ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	१	गु. ०
४८	४६	४४	४२	४०	३९	३७	३५	३३	३१	४०	ऋ.
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	ऋ.	भा. ५
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	शी.ग.	
५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	गु. १८
३०	२६	२२	१९	१५	१२	८	४	१	५७	२०	ऋ.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ऋ.	भा. ५
१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	शी.ग.	
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	३	गु. २१
५४	४९	४५	४१	३७	३३	२८	२४	२०	१६	५३	ऋ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	ऋ.	भा. ५
१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	शी.ग.	
४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	५	गु. २७
१२	६	१	५५	५०	४५	३९	३४	२८	२३	०	ऋ.
०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	ऋ.	भा. ५
१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	शी.ग.	
३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	५	गु. ६
१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	३३	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ऋ.	भा. ५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	शी.ग.
२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	६ गु. ३३
१८	११	४	५८	५१	४५	३८	३१	२५	१८	६ ऋ.
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	ऋ. भा. ५

१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	शी.ग.
१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	६ गु. ३६
१२	४	५७	५०	४३	३६	२८	२१	१४	७	०	४० ऋ.
०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	ऋ. भा. ५

—: उदाहरण :—

मन्द स्पष्ट शनि ७।६।३२।४० में मन्द स्पष्ट रवि २।२१।३२।७ को हीन किया तो ४।१५।०।३३ 'शनि का शीघ्र केन्द्र' हुआ। यह छः राशि से न्यून है इसलिए स्वतः षड्भाल्प हुआ। इस के अंशादि किये तो १३५।०।३३ हुए। १३५ अंश के तुल्य शनि शीघ्र फल सारणी के कोष्ठ के नीचे के अंशादि शीघ्रफल ४।३३।० को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर षड्भाल्प शीघ्र केन्द्र के ०।३३ कलादि को षड्भाल्प शीघ्र केन्द्रांश १३५ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में लिखित ऋण गुणक २१ से गुणा तो ११।३३ हुए। इन में भाजक ५ से भाग दिया तो लब्ध २ विकला हुई। तदनन्तर एकान्त में स्थापित अंशादि शीघ्र फल ४।३३।० में ऋण गुणक होने के कारण लब्ध विकला २ को हीन किया तो ४।३२।५८ 'शनि का स्पष्ट अंशादि शीघ्र फल' हुआ। यहां शनि का शीघ्र केन्द्र ४।१५।०।३३ है यह मेषादि छः राशि के अन्तर्गत है इसलिए शीघ्र फल 'ऋण' हुआ। मन्द स्पष्ट शनि ७।६।३२।४० में अंशादि शीघ्र फल ४।३२।५८ को हीन किया तो ७।१।५९।४२ 'राश्यादि स्पष्ट शनि' हुआ।

शनि के षड्भाल्प शीघ्र केन्द्रांश १३५ के तुल्य कोष्ठ के अन्तिम कोष्ठ में ३।५३ शनि का कलादि ऋण शीघ्र गति फल है। शनि की मन्द स्पष्ट गति १।४९ में शनि के कलादि ऋण शीघ्रगति फल ३।५३ को हीन किया तो मन्द स्पष्ट गति से ऋण शीघ्रगति फल अधिक होने के कारण न घट शका इसलिए ऋण शीघ्रगति फल ३।५३ में ही मन्द स्पष्ट गति १।४९ को हीन किया तो शेष २।४ 'शनि की स्पष्ट वक्रगति' हुई।

'स्पष्टग्रहाः सजवाः सन्ति'। 'उदाहरणमेतत्'।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	४	४	२	४	१	७	९	३
अं.	२१	२८	६	९	१४	५	१	१४	१४
क.	२९	३१	२२	५७	१३	२३	५९	५२	५२
वि.	४९	५७	११	१	६	२२	४२	४९	४९
गतयः	५७ ८	८१७ ४२	३६ ९	१२९ २७	१० ९	५७ ५२	२ ४	३ ११	३ ११
उदया.	शीघ्रम्	शीघ्रम्	मार्गी	मार्गी	मार्गी	मार्गी	वक्री	वक्री	वक्री

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भौम, गुरु तथा शनि के पश्चिमास्तादि बुध तथा शुक्र के वक्रमार्गांशपरिज्ञानः—

भौमो भोगिभुजैर्गुरुः कृतकुभिर्मेघैर्यमोऽस्तं परे
गच्छेदग्निनृपैः समीरमिहिरै रामेन्दुचन्द्रैर्ऋजुम् ।
ते द्राक्केन्द्रलवैर्नगाङ्कविधुभिर्भूतानलौष्ठैः कुभृत्-
सिद्धैर्यान्त्यनृजुं द्विरामदहनैस्ते रागवेदानलैः ॥ २० ॥
रामाम्भोधिगुणैर्व्रजेयुरुदयं प्राच्यां प्रतीपादथो
आम्नायाब्धिकुभिस्तुरङ्गमनृपैर्द्राक्केन्द्रभागैः क्रमात् ॥
गच्छेतामनृजुं सितांशुतनुभूदैतेयराजार्चितौ
रागेलायमलैस्त्रिगोशशधरैर्मार्गं व्रजेतामुभौ ॥ २१ ॥

मङ्गल २८, गुरु १४ और शनि १७ शीघ्रकेन्द्रांशों की व्यस्तविधि से पश्चिमास्त को प्राप्त होते हैं। मङ्गल १६३, गुरु १२५, और शनि ११३ शीघ्रकेन्द्रांशकों के व्यत्यय से मार्ग को प्राप्त होते हैं। मङ्गल १९७, गुरु २३५ और शनि २४७ शीघ्र केन्द्रांशों के व्यत्यय से वक्र को प्राप्त होते हैं। मङ्गल ३३२, गुरु ३४६ और शनि ३४३ शीघ्र केन्द्रांशों के व्यत्यय से पूर्व दिशा में उदय को प्राप्त होते हैं। बुध १४४ और शुक्र १६७ शीघ्र केन्द्रांशों के क्रम से वक्र को प्राप्त होते हैं। एवं बुध २३६ और शुक्र २१६ शीघ्र केन्द्रांशों के क्रम से मार्ग को प्राप्त होते हैं।

बुध तथा शुक्र के उदयास्तांशपरिज्ञानः—

* खाक्षैर्जिनैर्ज्ञसितयोरुदयः परेऽस्तो-
ऽक्षाक्षेन्दुभिर्नगघनैरुदयस्तयोः प्राक् ।
प्राणाभ्रदोर्भिरनलेभकुभिस्तथास्तः
काष्ठागुणैं रसुरौर्दिशि वासवस्य ॥ २२ ॥

बुध ५० और शुक्र २४ शीघ्र केन्द्रांशों के क्रम से पश्चिम दिशा में उदय होते हैं। बुध १५५ और शुक्र १७७ शीघ्र केन्द्रांशों के क्रम से पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं। बुध २०५ और शुक्र १८३ शीघ्र केन्द्रांशों के क्रम से पूर्व दिशा में उदय होते हैं। एवं बुध ३१० और शुक्र ३३६ शीघ्र केन्द्रांशों के क्रम से पूर्व दिशा में अस्त होते हैं।

---

* इह श्रीमद्गणेशदैवज्ञैर्गुरुशुक्रयोरुदयास्तज्ञानं प्रकारान्तरेणोक्तम् । तद्यथा—कृशिक्षिपुत्रिक्षितिषड्विद्याम्र युग् दिग्लवैरूनगुरुः क्रमेण । नक्रादिगार्काद्युदयं प्रयाति कीटादिगार्काद्यधिकोऽस्तमेतीति । इह ११, १३, ११, १५, १३, ११, १०, १०, १०, १०, १०, १० मृगादिगार्कादेभिरंशैर्यदा गुरुर्न्यूनस्तदोदयं गच्छेत् । एवं कीटादिगार्कादेभिरंशैर्यदा गुरुरधिकस्तदास्तमेतीति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'भौमास्तादिबोधकचक्रम्'				'गुर्वस्तादिबोधकचक्रम्'।				'शन्यस्तादिबोधकचक्रम्'।			
प. अ.	मार्गः	वक्रः	पू. उ.	प. अ.	मार्गः	वक्रः	पू. उ.	प. अ.	मार्गः	वक्रः	पू. उ.
०	५	६	११	०	४	७	११	०	३	८	११
२८	१३	१७	२	१४	५	२५	१६	१७	२३	७	१३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

'मेषार्कतो गुरोरुदयास्तबोधकचक्रमिदम्'।

रविराशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
उदयांशा न्यूनाः	१५	१३	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	१३	११
अस्तांशा अधिकाः	१०	१०	१०	११	१३	११	१५	१३	११	१०	१०	१०

एवं सितस्योदयास्तज्ञानमुक्तम्—षडिषुरसगजार्केन्द्वार्कनागाङ्कपञ्चाङ्क ऋतुभिरजतोऽर्कात्योधिकोऽशैःपरास्तम् भृगुरथयमवेदाङ्काङ्कषड्बाणबाणाक्षशरयुगगुणत्र्यंशैः कृशः प्रागुदेति १ नगषडगगजाङ्काशाङ्कशैलाङ्कषट्काङ्कऋतुभिरजतोऽर्कात्पुष्ट शुक्रःपरेऽशैः । उदयति दिगिभाद्रङ्गर्त्वगाश्वर्तुषट्काद्रिगजदशभिरंशैरेति पूर्वास्तमूनः इत्यत्र ६, ५, ६, ८, १२, १४, १२, ८, ६, ५, ६, ६, मेषार्कात् क्रमाद्यदा शुक्र एभिरंशैरधिकस्तदा परेऽस्तमेति । २, ४, ६, ६, ६, ५, ५, ५, ५, ४, ३, ३ मेषार्कात् क्रमाद्यदा शुक्र एभिरंशैरूनस्तदा प्रागुदेति ७, ६, ७, ८, ९, १०, ९, ७, ६, ६, ६, ६, मेषार्कात् क्रमाद्यदा शुक्र एभिरंशैरधिकस्तदा पर उदयति । एवं १०, ८, ७, ६, ६, ७, ७, ६, ६, ७, ८, १० मेषार्कात् क्रमाद्यदा शुक्र एभिरंशैरूनस्तदा पूर्वास्तमेतीति ।

'मेषार्कतः शुक्रोदयास्तोनाधिकांशबोधकचक्रमिदम्

रविराशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पश्चिमास्तांशाः	६	५	६	८	१२	१४	१२	८	६	५	६	६
पूर्वोदयांशाः	२	४	६	६	६	५	५	५	५	४	३	३
पश्चिमोदयांशाः	७	६	७	८	९	१०	९	७	६	६	६	६
पूर्वास्तांशाः	१०	८	७	६	६	७	७	६	६	७	८	१०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'बुधस्य पश्चिमोदयादिबोधकचक्रम्'।						'शुक्रस्य पश्चिमोदयादिबोधकचक्रम्'।					
प. उ.	वक्रः	प.अ.	पू.उ.	मार्गः	पू.अ.	प. उ.	वक्रः	प.अ.	पू.उ.	मार्गः	पू.अ.
१	४	५	६	७	१०	०	५	५	६	६	११
२०	२४	५	२५	६	१०	२४	१७	२७	३	१३	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण—

२।९।४७।२० भौम शीघ्र केन्द्र है। यह मार्ग राश्यादि ५।१३।०।० से अल्प है। अतः भौम मार्गी हुआ।

१०।६।५२।२४ बुध शीघ्र केन्द्र है। यह मार्ग राश्यादि ६।१३ से अधिक है। अतः बुध मार्गी हुआ।

२।१।२५।३२ गुरु शीघ्र केन्द्र है। यह मार्ग राश्यादि ४।५ से अल्प है। अतः गुरु मार्गी हुआ।

७।१२।४२।४९ शुक्र शीघ्र केन्द्र है। यह मार्ग राश्यादि ६।१३ से अधिक है इसलिए शुक्र भी मार्गी हुआ।

४।१५।०।३३ शनि शीघ्र केन्द्र है। यह वक्र राश्यादि ८।७ से अल्प है इस लिये शनि वक्री हुआ।

भौम, गुरु तथा शनिका शीघ्रकेन्द्र पश्चिमास्तादियों में से जिससे अल्प हो वह उसी को प्राप्त होता है। एवं बुध तथा शुक्र का शीघ्रकेन्द्र पश्चिमोदयादियों के मध्य में जिससे अधिक हो वह उसी को प्राप्त होता है। यह विधि पूर्वोक्त उदाहरण से समझ लेनी चाहिए।

चन्द्रादियों के कालांशपरिज्ञानः—

इना घना विश्वमिताः शिवा नव मरुन्मृगाङ्काः समयांशका विधोः।
पुरातनैर्ज्योतिषिकैरुदाहृता ऋजूशनश्चन्द्रजयोः कुसंयुताः ॥ २३ ॥

चन्द्रके १२, मङ्गल के १७, बुध के १३, गुरु के ११, शुक्र के ९ और शनि के १५, कालांश प्राचीन ज्योतिषियोंने कहे हैं। यदि शुक्र और बुध मार्गी हो तो उन के उक्त कालांशों में १ अंश युक्त करें तब उनके स्पष्ट कालांश होते हैं।

वैशाखादि मासों में सूर्य के उदयास्त लग्नों का परिज्ञानः—

मासेषु वैशाखमुखेष्वजादिषु सूर्यः क्रमेणोदयमेति मूर्त्तिषु।
स्वीयोदयाङ्गादिह सप्तमोदये सोऽस्तं समेतीति वदेद्विचक्षणः ॥ २४ ॥

वैशाखादि द्वादश मासों में क्रम से मेषादि द्वादश लग्नों में 'सूर्य' उदय होता है। एवं प्रत्येक मास में अपने उदय लग्न से सातवें लग्न में 'सूर्य' अस्त होता है। इस प्रकार पण्डितजन कहते हैं।

मेषादि लग्नों का सामान्यमानपरिज्ञानः—

पञ्चैणद्वन्द्वयोः सार्द्धतिस्रो नाड्योऽजमीनयोः।
घट्यो गोकुम्भयोर्वेदा अन्येषां विरसांशपट् ॥ २५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मकर और मिथुन की पाँच घटी, मेष और मीन की साढ़ेतीन घटी, वृष और कुम्भ की चार घटी एवं अन्य लग्नों (कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और धनु) की षष्ठांशरहित छः घटी अर्थात् पाँच घटी और पचास पल होते हैं ।

मेषादिलग्नानां सामान्यमानचक्रम् ।

ल.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
प.	३०	०	०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	०	०	३०

लंकोदयपरिज्ञानः—

व्यक्षोदया विनाड्यो गोतारा नन्दनवाश्विनः ।
दोर्दन्ताः क्रमतो मेषादुत्क्रमात्कर्कतो मताः ॥ २६ ॥

मेष के २७९ वृषके २९९ और मिथुन के ३२२ पलात्मक व्यक्षोदय (लङ्कोदय) हैं । ये ही उत्क्रम से कर्कादि तीन राशियों के लङ्कोदय होते हैं। अर्थात् कर्क के ३२२, सिंह के २९९ और कन्या के २७९ लङ्कोदय हैं । एवं उक्त राशियों के उदयमान उत्क्रम से तुलादि छः राशियों के लङ्कोदय होते हैं ।

'मेषादिलग्नानां लंकोदयमानचक्रम्' ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
२७९	२९९	३२२	३२२	२९९	२७९	२७९	२९९	३२२	३२२	२९९	२७९

लंकोदय से स्वोदयसाधनरीतिः—

क्रमोत्क्रमगता एतैः क्रमोत्क्रमस्थितैश्चरैः ।
खण्डैरूनान्विता मेषात्स्वोदया उत्क्रमाद् घटात् ॥ २७ ॥

मेषादि छः लग्नों के क्रमोत्क्रमसे रक्खे हुए लंकोदय खण्डों में क्रमोत्क्रमसे रक्खे हुए स्वदेशीय चरखण्डों को हीन और युक्त करें अर्थात् मेषादि तीन राशियों के लंकोदय में चरखण्डों को हीन करें और कर्कादि तीन राशियों के लङ्कोदय में चरखण्डों को युक्त करें तब मेषादि छः राशियों के स्वोदय होते हैं । इन ही मेषादि छः राशियों के स्वोदयों को उत्क्रमसे स्थापित करें तब तुलादि छः राशियों के स्वोदय होते हैं ।

'मेषादिलग्नानां गदेशीयपलात्मकस्वोदयमानचक्रम्' ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
२०९	२४३	२९९	३४५	३५५	३४९	३४९	३५५	३४५	२९९	२४३	२०९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उदाहरण—

मेष के २७९, वृषके २९९, मिथुन के ३२२, कर्क के ३२२, सिंह के २९९ और कन्या के २७९ ये क्रमोत्क्रमसे स्थापित किये हुए 'लङ्कोदय' हैं। गढदेशीय चरखण्ड ७०।५६।२३ को भी क्रमोत्क्रम से स्थापित किया तो ७०।५६।२३। २३।५६।७० इस प्रकार न्यास हुआ। इन को क्रमसे मेषादि तीन रशियों के लङ्कोदयों में हीन किया तो मेषके २०९, वृषके २४३ और मिथुन के २९९ स्वोदय हुए। एवं कर्क के ३२२, सिंह के २९९ और कन्या के २७९ लङ्कोदय में उत्क्रम से स्थापित चरखण्ड २३।५६।७० को क्रम से युक्त किया तो कर्क के ३४५, सिंह के ३५५ और कन्या के ३४९ स्वोदय हुए। इन मेषादि छः लग्नों के स्वोदयों को उत्क्रम से स्थापित किया तो तुला के ३४९, वृश्चिक के ३५५, धनु के ३४५, मकर के २९९, कुम्भ के २४३ और मीन के २०९ पलात्मक गढदेश (गढवाल) के स्वोदय हुए। एवं अन्य स्थानों के स्वोदयों को साधे।

स्वोदयमान से लग्नसाधनरीतिः—

इष्टो रविः सायन एष्यभागास्ते स्वोदयघ्ना गगनानलाप्ताः ।
स्याद्भोग्यकालः स विशोध्य इष्टनाडीपलेभ्यः परिशेषतोऽत्र ॥ २८ ॥
संशोधयेद्राश्युदयाँश्चशेषं नभोऽनलैर्निघ्नमशुद्धभुक्तम् ।
लवाद्यजाद्यैस्तशुद्धपूर्वैर्युक्तं तनुः स्यादयनांशहीनम् ॥ २९ ॥

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में अयनांश युक्त करे तब 'सायन सूर्य' होता है। सायन सूर्यकी राशिको हटा कर अंशादियों को ३०।०।० में हीन करे शेष 'सायन सूर्य के भोग्यांश' होते हैं। उन भोग्यांशों को सायन सूर्य की राशिके स्वोदय से गुणकर ३० से भाग दें लब्ध 'सूर्यका पलात्मक भोग्यकाल' होता है। इष्ट कालकी घटी को ६० से गुणकर पलको युक्त करे तब 'पलात्मक इष्ट काल' होता है। उस पलात्मक इष्ट काल में सूर्य के पलात्मक भोग्यकाल को हीन करे तब जो शेष बचे उस में सायन सूर्य की राशि के आगे की राशियों के स्वोदयों को जहाँ तक घटना संभव हो वहां तक घटावे जिस राशिका स्वोदय न घट सके वह 'अशुद्धोदय' होता है। स्वोदयोंके घट जाने के पश्चात् जो शेष पलादि बचें उनको ३० से गुणकर अशुद्धोदय से भाग दे लब्ध अंशादि होते हैं।

उन लब्ध अंशादियों के ऊपर के स्थानमें अर्थात् राशि के स्थानमें मेषादि अशुद्ध राशिकी गत संख्याको रखकर अयनांश को हीन करे तब 'राश्यादि स्पष्ट लग्न' होता है।

उदाहरण—

तात्कालिक स्पष्टसूर्य २।२१।२९।४९ में अयनांश २२।२४।२७ को युक्त किया तो ३।१३।५४।१६ 'सायन सूर्य' हुआ। इसकी राशि ३ को हटाकर युक्त अंशादि १३।५४।१६ को ३०।०।० में शोधन किया तो १६।५।४४ 'सायन सूर्य के भोग्यांश' हुए। इनको सायन सूर्य की राशि कर्क के स्वोदय पल ३४५ से गुणा तो ५५५२।५८।० हुए। इनमें ३० से भाग दिया तो लब्ध १८५।५।५६ 'सायन सूर्य का पलात्मक भोग्यकाल' हुआ। इष्टकाल ४६ घटी १३ पल है। यहाँ इष्टकालकी ४६ घटी को ६० से गुणा तो २७६० हुए। इनमें १३ पलको युक्त किया तो २७७३ 'पलात्मक इष्टकाल' हुआ। इस पलात्मक इष्टकाल २७७३ में सूर्य के पलात्मक भोग्य काल १८५।५।५६ को हीन किया तो २५८७।५४।४ शेष पलादि बचे। यहां सायन सूर्य की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राशि कर्क है इस के आगे की राशि सिंह का स्वोदय ३५५ कन्या का ३४९ तुला का ३४९ वृश्चिक का ३५५ धनु का ३४५ मकर का २९९ कुम्भ का २४३ और मीन का २०९ स्वोदय है। इन सब का योग किया तो २५०४ पल हुए। तदनंतर पूर्वागत शेष पलादि २५८७।५४।४ में सायन सूर्य की राशिके आगे की राशियोंके पलात्मक योग २५०४ को हीन किया तो ८३।५४।४ शेष पलादि बचे। इनको ३० से गुणा तो २५१७।२।० गुणनफल हुआ। यहां सायन सूर्य की राशि कर्क के आगेकी राशि सिंह से मीनपर्यंत राशियों के स्वोदयों के योग को शोधन किया और मेष का स्वोदय २०९ न घट सका इस लिए मेष अशुद्धोदय हुआ। पूर्वागत गुणन फल २५१७।२।० में अशुद्ध राशि मेष के स्वोदय २०९ से भाग दिया तो लब्ध १२।२।३६ अंशादि हुए। इनके उपरिस्थान में अशुद्ध राशि मेष की गत संख्या० को स्थापित किया तो ०।१२।२।३६ 'सायन लग्न' हुआ। इसमें अयनांश २२।२४।२७ को हीन किया तो ११।१९।३८।९ 'राश्यादि स्पष्ट लग्न' हुआ।

भोग्यकाल की अपेक्षा अल्पेष्टकाल में लग्नसाधनरीतिः—

सूर्य्यैष्यकालतोऽल्पेष्टकालात्खानलताडितात्।
स्वोदयाप्तांशकोपेतः सप्तसप्तिः स्फुटा तनुः ॥ ३० ॥

इष्ट काल की पलों से सायन सूर्यका पलात्मक भोग्यकाल अधिक हो अर्थात् भोग्यकाल इष्टकाल के पलों में न घट सके तो इष्टकाल के पलों को ३० से गुणकर सायन सूर्य की राशि के स्वोदय से भाग दे लब्ध अंशादि होते हैं। तदनन्तर तात्कालिक स्पष्टसूर्य में लब्ध अंशादि को युक्त करें तब 'राश्यादि स्पष्ट लग्न' होता है।

कल्पित उदाहरणः—

३।२८।२४।२७ कल्पितसायन स्पष्ट सूर्य है। इससे भोग्य काल साधन किया तो १८।१८।४९ पलादि हुए। इष्टकाल ० घटी १५ पल है। इसके पल किये तो १५ हुए। इनमें पलात्मक भोग्यकाल न घट सका तो इष्टकालके १५ पल को ३० से गुणा तो ४५० हुए। इनमें सायन सूर्य की राशि कर्क के स्वोदय ३४५ से भाग दिया तो लब्ध १।१८।१६ अंशादि हुए। तदनन्तर स्पष्ट सूर्य ३।६।०।० लब्ध अंशादि १।१८।१६ को युक्त किया तो ३।७।१८।१६ 'स्पष्टलग्न' हुआ।

लग्नसारणी से स्पष्टलग्नसाधनरीतिः—

नाड्याद्यभिष्टेनभभागनिम्नगं तत्स्वेष्टनाड्यादियुतं ययोश्चतत्।
राश्यंशयोर्निम्नगतं तदुन्मितौ भांशौ विलग्नस्य कलानुपाततः ॥ ३१ ॥

अभीष्ट देश की लग्नसारणीमें इष्ट सूर्य की राशि और अंशके समान कोष्ठ के नीचे जो घटी और पल स्थित हों उनको एकान्त में स्थापित करके उनमें इष्टकालकी घटी और पलको युक्त करें तब जो घट्यादि संख्या हो उसके समान अथवा उससे न्यून संख्या लग्नसारणी में जिस राशि और अंश के नीचे के कोष्ठ में मिलें उस राशि और अंशके तुल्य लग्न की राशि और अंश होते हैं अर्थात् उसी कोष्ठ के समसूत्र में स्थित राशि तथा अंश लग्न की राशि और अंश जानने चाहिएँ। लग्न के कलादियों को अनुपात (त्रैराशिक) रीति से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

साधे अर्थात् इष्टसंख्या जिस कोष्ठ की संख्या के तुल्य हो वा जिस कोष्ठ की संख्यासे न्यून हो उस कोष्ठ के घट्यादि को दो स्थानमें स्थापित करे तदनन्तर इष्टसंख्या में एक स्थान के घट्यादि को हीन करे तब जो शेष पल बचे उनको ६० से गुणकर जो गुणनफल हो वह ' भाज्य ' होता है। सारणी के अग्रिम (भोग्य) कोष्ठ के घट्यादि में दूसरे स्थान स्थापितसारणी के अंकोंको हीन करें तब जो शेष बचें वह ' भाजक ' होता है। पूर्वागत भाज्य में भाजक से भाग दे लब्ध ' कला ' होती है। शेष को ६० से गुणकर पुनः भाजकसे भाग दें लब्ध ' विकला ' होती है। इस प्रकार सारणी से राश्यादि स्पष्ट लग्न होता है।

कल्पित उदाहरण—

२।२१।३४।२५ कल्पित सूर्य स्पष्ट है। यहां सूर्य की २ राशि और २१ अंश हैं। अतः इनके तुल्य लग्नसारणी के कोष्ठ के नीचे घट्यादि १५।१२ को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर भोग्य (अग्रिम) कोष्ठ के नीचे घट्यादि १५।२४ में एकान्त में स्थित घट्यादि१५।१२ को हीन कियातो १२ पल शेष बचे। स्पष्ट सूर्य के कलादि ३४।२५ को शेष पल १२ से गुणा तो ४१३।० हुए, इनमें ६० से भाग दिया तो लब्ध ७ पल हुए। एकान्त में स्थित घट्यादि १५।१२ में लब्ध पल ७ को युक्त किया तो१५।१९ घट्यादि हुए। इनमें इष्ट घट्यादि ४६।१३ को युक्त किया तो १।३२ घट्यादि हुए। इनको लग्नसारणी के कोष्ठ में देखा तो ११ राशि २० अंशके समान कोष्ठ के नीचे १।३० पूर्वागत घट्यादिसे न्यून घट्यादि मिले। इनको दो स्थानमें स्थापित किया। तदनन्तर अभीष्ट संख्या १।३२ में एक स्थानके घट्यादि १।३० को हीन किया तो २ शेष बचे। इनको ६० से गुणा तो १२० भाज्य हुआ। भोग्य (अग्रिम) कोष्ठ के घट्यादि १।३७ में द्वितीय स्थानमें स्थित घट्यादि ९।३० को हीन किया तो शेष ७ ' भाजक ' हुआ। भाज्य १२० में भाजक ७ से भाग दिया तो लब्ध १७ ' कला ' हुई। शेष को ६० से गुणा तो ६० हुए। इनमें पुनः भाजक ७ से भाग दिया तो लब्ध ९ विकला हुई। इसप्रकार ११ राशि, २० अंश, १७ कला और ८ विकला स्पष्ट लग्न हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लवपुरे (लाहौरनगरे) त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसारणीयम्, 'उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः'। क्रयनांशाः २३, ०", ०,"

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
०	३७	४३	५०	५७	४	११	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०
वृ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
१	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३
मि.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
२	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७
क.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२
३	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३
सिं.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	४५	५७	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
५	३८	५०	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	६	१८
तु.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४
वृ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५
ध.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४६	५६	६	१६
म.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
कुं.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	४९	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	६
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
११	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२२	२८	३५	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	३०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

'काश्या (वनारसे) त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसारणीयम्' 'उपकरणं त्वष्टाकेराश्यंशाः'। अयनांशाः २३°, ०', ०",

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	४९	५७	४	१२	१९	२६	३४	४१	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१३	२१	३०	३८	४७
वृ.	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५५	३	१२	२०	२९	३७	४६	५४	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१५	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७
मि.	११	११	१२	१२	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४७	५७	७	१७	२८	३८	४८	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९
क.	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३
सिं.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४२	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६
तु.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
६	१७	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
वृ.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
७	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५१	८	१९	३१
ध.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
८	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१२	२२	३२	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१५	२५	३५	४५
म.	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
९	५५	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१४	२३	३१	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३८	४६	५५	३	१२
कुं.	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५५	२	९	१७	२४	३२	३९	४६	५४	१
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	८	१६	२३	३०	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५८	५	१३	२०	२७	३५	४२

Jun Gun Aaradhak Trust

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

गढदेशे (गढवाले) त्रयोविंशत्पयनांशीया लग्नसारणीयम् '। ' उपकरणं स्पष्टार्कैरास्यंशाः '। ' अपनांशाः २३°,०',०'',

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	५	६	६	६	६
	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३६	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६
	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	३४	४२	५१	५५	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	५१	३१	४०	५१	१	११	२१	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५
		१७	१८	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
		८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७
ल.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१६	२७
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
१	३९	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	[illegible]	[illegible]	४०	५२	४	१५
तु.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	[illegible]	[illegible]	३९	३९	३९	४०
६	२७	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५७	[illegible]	[illegible]	३३	४५	५६	८
वृ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	[illegible]	[illegible]	४५	४५	४५	४५
७	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	[illegible]	[illegible]	२२	३४	४५	५७
	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	[illegible]	[illegible]	५०	५०	५०	५१
८	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	३९	४९	५९	९	१०	२०	३०	४०	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	[illegible]	[illegible]	३९	४९	५९	९
	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	[illegible]	[illegible]	५५	५५	५५	५५
	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३७	४५	५३	१	९	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	[illegible]	[illegible]	३	११	१९	२७
	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	[illegible]	[illegible]	५८	५८	५८	५९
	३५	४३	५१	०	८	१६	२४	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	[illegible]	[illegible]	४४	५१	५८	५
	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	[illegible]	[illegible]	२	२	२	२
	११	१८	२५	३९	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	[illegible]	[illegible]	१२	१९	२	३३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

'इन्द्रप्रस्थे हस्तिनापुरे वा (देहल्यां) त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसाधनीयम्' । 'उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः'। अयनांशाः २३°, ०', ०",

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	४४	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५
वृ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	४३	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३
क.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२
सिं.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
५	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२
तु.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
६	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१
वृ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
७	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७
ध.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९
म.	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०
कुं.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२८	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	१०	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७

Jun Gun Aaradhak Trust
P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

'कलिकातायां (कलकत्तायां) वङ्गदेशे वा त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसारणीयम्'। 'उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः'। 'अयनांशाः २३°,०',०",

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
०	५४	३	११	१८	२६	३४	४१	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५	२४	३३	४१	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५०	५९
वृ.	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११
१	८	१६	२५	३३	४२	५१	५९	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५२
मि.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२	२	१२	२२	३२	४२	५३	३	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२२
क.	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३	३३	४४	५५	७	१८	२५	४१	५२	३	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	८	२०	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१
सिं.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१
तु.	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
६	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८
वृ.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७
ध.	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
८	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२८	३८	४८	५८	८	१८	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१
म.	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
९	४१	५१	०	११	२१	३२	४२	५२	१	०	१८	२७	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३६	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४५	५३	२
कुं.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	११	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	१९	२६	३४	४२	४९	५७	४	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४	५१	५९
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	७	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३१	३८	४६	५३	१	९	१६	२४	३२	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४०	८४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

कराच्यां (सिन्धुदेशे) त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसारणीयम् ' । ' उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः ' । अयनांशाः २३°, ०', ०",

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	१	९	१८	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०
वृ.	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
१	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	८	१८	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
मि.	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११
क.	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
३	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४
सिं.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४
५	४२	५३	४	१५	२७	३८	४९	०	११	२२	२३	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३	५४	५
तु.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
६	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	१५	२३	३५	४६
वृ.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
७	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७
ध.	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	८	१८	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
म.	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
९	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१०	१९	२७	३६	४४	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४३	५१	०	८
कु.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४

Jun Gun Aaradhak Trust
P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

'उज्जयिन्यां अवन्तिकायां वा (मालवदेशे) त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसारणीयम्'। 'उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः'। 'अयनांशाः २३°,०',०",

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
०	५५	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२३	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७
वृ.	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
१	६	१४	२३	३२	४०	४५	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०
मि.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४०	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०
क.	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
३	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९
सिं.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	११	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२
तु.	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
६	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९
वृ.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
७	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१९
ध.	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
८	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१२	२२	३३
म.	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
९	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५४	३	१२	२०	२९	३७	४६	५५	३
कुं.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	१२	२०	२९	३८	४६	५५	३	१२	२०	२७	३५	४२	५०	५८	५	१३	२०	२८	३६	४३	५१	५८	६	१४	२१	२९	३६	४४	५२	५९
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	७	१४	२२	३०	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३०	३८	४६	५३	१	८	१६	२४	३१	३९	४६	५४	२	९	१७	२४	३२	४०	४७

Jun Gun Aaradhak Trust

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

पाटलीपुत्रे (पटनायां) मागधे विहारप्रान्ते वा त्रयोविंशत्ययनांशया लग्नसारणीयम् ' । ' उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः ' । अयनांशाः २३°, ०', ०",

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५०	५८	५	१२	२०	२७	३५	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	३९	४८
वृ.	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५६	४	१३	२१	३०	३८	४७	५५	५	१५	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि.	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४७	५७	७	१८	२८	३८	४८	५८	९	२१	३२	४३	५४	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८
क.	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
सिं.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४२	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६
तु.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
वृ.	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
७	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
ध.	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
८	४२	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४
म.	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
९	५४	४	१४	२५	३५	४५	५५	५	१३	२२	३०	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३८	४६	५६	३	११	२०	२८	३७	४५	५४	२	११
कु.	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	१९	२७	३६	४४	५३	१	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५५	२	१०	१७	२५	३२	३९	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५३	१
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	८	१६	२३	३०	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४४	५२	५९	७	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२१	२८	३५	४३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

'मोहमय्यां (वम्बय्यां) कोङ्कणदेशे वा त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसारणीयम्'। 'उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः'। 'अयनांशाः २३°,०',०",

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
०	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३
वृ.	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
१	२२	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	०	१०
मि.	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
२	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८
क.	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
३	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१६	२७	३८	४९	०	११
सिं.	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	२५	३४	४५	५६	७	१८	२५	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३
५	४५	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५
तु.	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९
६	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३
वृ.	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४
७	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८
ध.	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०
८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५३	४	१४
म.	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४
९	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१
कुं.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	०	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५

Jun Gun Aaradhak Trust
P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

'मद्रासे (दक्षिणदेशे) त्रयोविंशत्ययनांशीया लग्नसारणीयम्' । 'उपकरण स्पष्टार्कराश्यंशाः' 'अयनांशाः २३°०' ०''

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७
०	१२	२१	२९	३८	४६	५४	३	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४३	५३	२	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४
वृ.	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	११	११	११	१२	१२	१२	१२
१	४३	५३	२	११	२०	३०	३९	४८	५८	९	१९	३०	४०	५१	१	११	२२	३२	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८
मि.	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८
२	४८	५८	९	१९	३०	४०	५१	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४०	५३	४
क.	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
३	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२७
सिं.	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	३८	४९	५९	१०	२१	३२	४२	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३८	४७	५७	७	१८	२८	३८
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५	४८	५९	९	१०	२९	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३२	४२	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	४	१४	२५	३५	४५
तु.	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९
६	५५	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१८	२८	३९	५०	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	२
वृ.	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४
७	१३	२४	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१
ध.	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९
८	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	९	२०	३०	४१	५१	२	१२	२२	३३	४३	५४	४	१५	२५	३५	४६	५६	७	१७	२८	३८	४९
म.	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४
९	५९	९	२०	३०	४१	५१	२	१२	२१	३०	४०	४९	५८	७	१७	२६	३५	४४	५४	३	१२	२१	३०	४०	४९	५८	७	१७	२६	३५
कुं.	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	४४	५४	३	१२	२१	३१	४०	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३८	४६	५४	३	११	२०	२८	३६	४५	५३
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
११	१	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५९	७	१५	२४	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

सायन लग्नमान साधन रीति :—

स्वस्वोदया अयनभागहताः खरामै-
भक्ताः फलं विघटिकादि गतं तथैष्यम् ।
कार्य्यैष्ययातवपुषोर्गतगम्यकाल-
युक्तिः क्रमाद् भवति सायनलग्नमानम् ॥ ३२ ॥

अभीष्ट समय के अयनांश को प्रत्येक मेषादि लग्नों के स्वोदयमान से गुणकर ३० से भाग दे लब्ध प्रत्येक मेषादि लग्नों का भुक्तकाल होता हैं । तदनन्तर अभीष्ट समय के अयनांश को ३० अंश में घटाकर शेष भोग्यांश होते हैं । उन भोग्यांशों को प्रत्येक मेषादि लग्नों के स्वोदयमान से गुणकर ३० से भाग दे लब्ध ' प्रत्येक मेषादि लग्नों का भोग्य काल ' होता है । भोग्य (गम्य) लग्न का भुक्तकाल और गत (यान) लग्न का भोग्यकाल उक्त रीति से जो लब्ध हो उन दोनों का योग करे तब ' प्रत्येक मेषादि लग्नका सायनमान ' होता है ।

उदाहरण —

वर्तमान अयनांश २३ के सायनलग्नमानसाधन करते हैं अतः गढदेशीय मेष लग्न के स्वोदय २०९ को भोग्य अयनांश ७ से गुणा तो १४६३ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध ४८।४६ ' मेष का पलादि भोग्य काल ' हुआ । एवं वृष के स्वोदयमान २४३ को भुक्तायनांश २३ से गुणा तो ५५८९ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १८६।१८ ' वृष का पलादि भुक्त काल ' हुआ । मेष का भोग्य काल ४८।४६ और वृष का भुक्त काल १८६।१८ इन दोनों का योग किया तो २३५।४ ' मेष का पलादि सायनमान ' हुआ । एवं वृष के स्वोदयमान २४३ को भोग्यायनांश ७ से गुणा तो १७०१ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध ५६।४२ ' वृष का पलादि भोग्यकाल ' हुआ । मिथुन के स्वोदय २९९ को भुक्तायनांश २३ से गुणा तो ६८७७ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध २२९।१४ ' मिथुन का पलादि भुक्त काल ' हुआ । वृष का भोग्य काल ५६।४२ और मिथुन का भुक्त काल २२९।१४ इन दोनों का योग किया तो २८५।५६ ' वृष का पलादि सायनमान ' हुआ । एवं मिथुनादियों के सायनमान को साधे ।

गढदेशीय सायनलग्नमान परिज्ञान —

* मेषे समुद्राग्नियमाः खसायका उक्षण्यरिव्यालयमा यमाब्धयः ।
युग्मेऽक्षवैश्वानरपावका नृपाः कर्के करेष्वग्निमिता युगेषवः ॥ ३३ ॥
सिंहे विहङ्गाब्धिगुणा गजाग्नयः पाथोनभेऽष्टाब्ध्यनला विहायसः ।
जूके कृशान्वक्षगुणाः कराश्विनः कीटे भुजङ्गाम्बुधिवह्नयो रसाः ॥ ३४ ॥
चापेऽम्बरज्यादहना युगार्णवा नक्रेऽङ्गनाराचयमाः करीन्दवः ।
कुम्भे रसक्षोणिदृशो दिशो झषेऽष्टाभ्राश्विनः खं पलपूर्वमानकम् ॥ ३५ ॥

उक्त श्लोकों का अर्थ निम्नलिखित चक्र में समझना चाहिए ।

---

* इहातःपरं सायनलग्नमानज्ञानार्थे ये श्लोकाः प्रोक्तास्तेषु मेषादिलग्नानां यानि सायनमानपलान्युक्तानि तानि ग्रहलाघवोक्तस्वोदयैः साधिता ये स्वोदयास्तैर्विरचितानि सन्तीति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'गढदेशीयसायनलग्नमानचक्रम्'।

लग्नानि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पलानि	२३४	२८६	३३५	३५२	३४९	३४८	३५३	३४८	३१०	२५६	२१६	२०८
विपलानि	५०	४२	१६	५४	३८	०	२२	६	४४	१८	१०	०

(को. १) 'गढवाले सायनलग्नमानारम्भावसानबोधकसारणीयम्'। 'धस्यादिका'। 'उपकरणमिष्टलग्नमिष्टमासश्च'।

लग्नानि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी
वैशाखे		४	१०	१६	२२	२७	३३	३९	४४	४९	५२	५६
		४६	२१	१४	४	५२	४५	३३	४४	१	१७	५
		४२	५८	५२	३०	३०	५२	५८	४२	०	१०	१०
	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.
ज्येष्ठे		५	११	१७	२३	२८	३४	३९	४४	४४	५१	५५
		३५	२८	१७	५	५९	४७	५८	१४	५०	१८	१३
		१६	१०	४८	४८	१०	१६	०	१८	२८	२८	१८
	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.
आषाढे		५	११	१७	२३	२८	३४	३८	४२	४५	४९	५४
		५२	४२	३०	२३	१२	२२	३९	१५	४३	३८	२४
		५४	३२	३२	५४	०	४४	२	१२	१२	२	४४
	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.
श्रावणे		५	११	१७	२३	२८	३२	३६	३९	४३	४८	५४
		४९	३७	३१	१९	२९	४६	२२	५०	४५	३१	७
		३८	३८	०	६	५०	८	१८	१८	८	५७	६
	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क
भाद्रपदे		५	११	१७	२२	२६	३०	३४	३७	४२	४८	५४
		४८	४१	२९	४०	५६	३२	०	५५	४२	१७	१०
		०	२२	२८	१२	३०	४०	४०	३०	१२	२८	२२
	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.
आश्विने		५	११	१६	२१	२४	२८	३२	३६	४२	४८	५४
		५३	४९	५२	९	४४	१२	७	५४	२९	२२	१२
		२२	२८	१२	३०	४०	४०	३०	१२	२८	२२	०
	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ	मि.	क.	सिं.	क.
कार्तिके		५	१०	१५	१८	२२	२६	३१	३६	४२	४८	५४
		४९	५८	१५	५९	१९	१४	०	३६	२९	१८	६
		६	५०	८	१८	१८	८	५०	६	०	३८	३८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.
मार्गशीर्षे		५	९	१३	१६	२०	२५	३०	३६	४२	४८	५४
		१०	२७	३	३१	२६	१२	४८	४०	३०	१८	११
		४४	२	१२	१२	२	४४	०	५४	३२	३२	५४

	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.
पौषे		४	७	११	१५	२०	२५	३०	३६	४२	४८	५४
		१६	५२	२०	१५	२	३७	३०	१९	७	१	४९
		१८	२८	२८	१८	०	१६	१०	४८	४८	१०	१६

	म.	कु.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.
माघे		३	७	१०	१५	२१	२७	३३	३८	४४	५०	५५
		३६	४	५९	४५	१०	१३	३	५१	४४	३२	४३
		१०	१०	०	४२	२८	५२	३०	३०	५२	५८	४२

	कुं.	मा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.
फाल्गुने		३	७	१२	१७	२३	२९	३५	४१	४६	५२	५६
		२८	२२	९	४४	३७	२७	१५	८	५६	७	२३
		०	५०	३२	४८	४२	२०	२०	४२	४८	३२	५०

	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.
चैत्रे		३	८	१४	२०	२५	३१	३७	४३	४८	५२	५६
		५४	४१	१६	९	५८	४७	४०	२८	३९	५५	३२
		५०	३२	४८	४२	२०	२०	४२	४८	३२	५०	०

(को. २) 'गदव.ले सायनलग्नानां घट्यादिकं दैनिकमानम्'। उपकरणं स्पष्टा[illegible]शाः'।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वै.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
मे.	०	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२६	३३	४१	४९
०	०	४९	३९	२९	१८	८	५८	४७	३७	२७	१६	६	५६	४५	३५
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
ज्ये.	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२
वृ.	०	९	१९	२८	३८	४७	५७	६	१६	२६	३५	४५	५४	४	१३
१	०	३३	६	४०	१३	४७	२०	५३	२७	०	३४	७	४१	१४	४७
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वै.	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३
मे.	५७	५	१३	२०	२८	३६	४४	५२	०	७	१५	२३	३१	३९	४७
०	२५	१४	४	५४	४३	३३	२३	१२	२	५२	४१	३१	२१	१०	०
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
ज्ये.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
वृ.	२३	३२	४२	५२	१	११	२०	३०	३९	४९	५८	८	१८	२७	३७
१	२१	५४	३७	१	३४	८	४१	१४	४८	२१	५५	२८	९	३५	८
	०	२५	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(को. २) गढवाले सायनलग्नानां घट्यादिकं दैनिकमानम्' । 'उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः' ।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
आ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५
मि.	०	११	२२	३३	४४	५५	[illegible]	१८	२९	४०	५१	०	१८	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४
२	०	१०	२१	३१	४२	५२	३	१३	२८	३४	४०	५५	६	१६	२७	३८	४८	५९	९	२०	३०	४१	५१	२	१२	२३	३३	४४	५४	५
	०	३२	४	३६	८	४०	२	४०	१६	४८	३२	१२	२४	५०	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	१२	२४	५६	२८
आ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५
क.	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५०	५	१७	२९	४१
३	०	४५	३१	१७	३	४९	३४	२०	६	५२	३८	२३	९	५५	४१	२७	१२	५८	४४	३०	१६	१	४७	३३	१९	५	०	३६	२२	८
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
आ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५
सि.	०	११	२३	३४	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७
४	०	३९	१८	५७	३७	१६	५५	३४	१४	५३	३२	११	५१	३०	९	४२	२८	७	४६	२६	५	४४	२३	३	४२	२१	०	४०	१९	५८
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
आ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५
क.	०	११	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६
५	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
का.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५
तु.	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	२०	३२	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	२९	४१
६	०	४६	३२	२०	६	५३	४०	२७	१३	०	४७	३४	२०	७	५४	४१	२७	१४	१	४७	३४	२१	८	५४	४१	२८	१५	१	४८	३५
	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

(को. २) गढवाले सायनलग्नानां घट्यादिकं दैनिकमानम् ' । ' उपकरणं स्पष्टार्कराश्यंशाः ' ।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मार्ग.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५
वृ.	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६
७	०	१६	३२	४८	४	२१	३७	५३	९	२५	४२	५८	१४	३०	४६	३	१९	३५	५१	७	२४	४०	५६	१२	२८	४५	१	१७	३३	४९
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
पौ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५
ध.	०	१०	२०	३१	४१	५१	२	१२	२२	३३	४३	५३	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४७	५८	८	१८	२९	३९	५०	०
८	०	२१	४२	४	२५	४७	८	३०	५१	१३	३४	५६	१७	३९	०	२२	४३	४	२६	४७	९	३०	५२	१३	३५	५६	१८	३९	१	२२
	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
म.	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७
९	०	३२	५	३७	१०	४३	१५	४८	२०	५३	२६	५८	३१	३	३६	९	४१	१४	४६	१९	५२	२४	५७	२९	२	३५	७	४०	१२	४५
	८	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४
फा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
कृ.	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४८	५५	२	९	१६	२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८
१०	०	१२	२४	३७	४९	१	१४	२६	३८	५१	३	१५	२८	४०	५२	५	१७	२९	४२	५४	६	१९	३१	४३	५६	८	२०	३३	४५	५७
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
चै.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
मा.	०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१
११	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

सायनलग्नमानारम्भावसानसारणीरीतिः—

इष्ट मास और इष्ट लग्न के नीचे के घट्यादि [को. १] में से लेकर एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर इष्ट सूर्य की राशि और भोग्य अंश के समसूत्र [को. २] के घट्यादि को एकान्त में स्थित घट्यादि में युक्त करे तब इष्ट लग्न के अवसान के घट्यादि होते हैं। इष्ट मास में गत लग्न के नीचे के घट्यादि [को. १] में से जो मिले उन में इष्ट सूर्य की राशि और भोग्यांश के नीचे के घट्यादि को युक्त करे तब इष्ट लग्न के आरम्भकाल के घट्यादि होते हैं। एवं सूर्योदय लग्न के भोग्यघट्यादि का और सूर्यास्त लग्न के भुक्त घट्यादि का योग करे। तदनन्तर उदय तथा अस्त लग्न के अन्तरालवर्त्ती लग्नों के घट्यादि को युक्त करे तब इष्ट दिन का दिनमान होता है।

—: उदाहरण :—

२।२१।२९।४९ स्पष्ट सूर्य है। इष्ट मास आषाढ और इष्ट लग्न मीन है। यहां इष्ट मास आषाढ और गत लग्न कुम्भ के नीचे के घट्यादि [को. १] ४२।१५।१२ में सूर्य राश्यंश २।२१ के भोग्यांश ९ के तुल्य [को. २] के घट्यादि १।४०।३५ को युक्त किया तो ४३।५५।४७ मीन लग्न के आरम्भ काल के घट्यादि हुए। एवं अवसान काल के घट्यादि तथा दिनमान को भी साधे।

लव पुरीय सायनलग्नमान परिज्ञानः—

मेषे धराज्याशयमा रसाग्नय उक्षण्युदध्यष्टयमा इभाश्विनः।
युग्मे द्विपद्रामगुणा वियत्कराः कर्केऽक्षनाराचगुणा वियत्कृताः ॥ ३६ ॥
हरौ कृशान्वक्षगुणा युगाश्विनः स्त्रियां श्रवःसायकवह्नयो नभः।
तुले षडक्षज्वलनाः षडग्नयः सरीसृपे खाक्षगुणा नभःकराः ॥ ३७ ॥
चापे खगाकाशगुणाः खसागरा नक्रे त्रितत्त्वानि कृतान्तवह्नयः।
कुम्भे दिवानाथदृशः कृताश्विनो मीनेऽब्धिखौष्ठा गगनं पलाननम् ॥ ३८ ॥

उक्त श्लोकों का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए।

'लग्नपुरे सायनलग्नमानचक्रमिदम्'।

लग्नानि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पलानि	२३१	२८४	३३६	३५५	३५३	३५२	३५६	३५०	३०९	२५३	२१२	२०४
विपलानि	३६	२८	२०	४०	२४	०	३६	२०	४०	३२	२४	०

वाराणसीयसायनलग्नमान परिज्ञानः—

मेषे तर्कजिना रदा गवि कुगोदोंष्यब्धिरामा युगे।
दोर्वैश्वानरपावका विषधराःकर्के त्रिवेदाग्नयः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व्यालैके हरिभे नगाग्निदहनाश्चक्षुःसमीराः स्त्रियां
रागाग्निज्वलना नभो वणिजि दोर्वेदाग्नयः कुञ्जराः ॥ ३९ ॥
कीर्प्ये कब्धि हुताशना यमयुगाश्चापे महेशाग्नयो
दोर्बाणा मकरे शराङ्गयमलाः षट्छ्राद्धदेवा घटे ।
गोचक्षुर्यमला भुजङ्गमभुजा मत्स्ये द्विजात्युन्मिताः
शून्यं शूलिपुरे पलात्मकमिदं मानं मतं सायनम् ॥ ४० ॥

उक्त श्लोकों का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए।

'कदर्या सायनलग्नमानचक्रमिदम्'।

लग्नानि	मे.	वृ.	मि.	कं	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पलानि	२४६	२९१	३३२	३४३	३३७	३३६	३४२	३४१	३११	२६५	२२९	२२२
विपलानि	३२	३४	८	१८	५२	०	८	४२	५२	२६	२८	०

गोल परिज्ञानः—

सायने द्युचरेऽजादिषड्के गोलः स उत्तरः ।
तुलादिरसभे गोलो ज्ञेयो दक्षिणसञ्ज्ञितः ॥ ४१ ॥

सायन ग्रह मेषादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो उत्तरगोल और तुलादि छः राशि के अन्तर्गत हो तो दक्षिण-गोल होता है।

—:उदाहरणः—

३।१३।५४।१६ सायन सूर्य है, यह मेषादि छः राशि के अन्तराल में है अतः उत्तरगोल में 'सूर्य' हुआ।

दिन रात्रि दल साधन रीतिः—

तिथिनाड्यश्चरपलैर्युक्तोना गोलयोः क्रमात् ।
दिनार्द्धं रहितास्तेन वियद्भामास्तमीदलम् ॥ ४२ ॥

सूर्य उत्तर गोल में हो तो १५ घटी में चरपलों को युक्त करे। एवं सूर्य दक्षिण गोल में हो तो १५ घटी में चरपलों को हीन करे तब 'दिनार्द्ध' होता है। ३० घटी में दिनार्द्ध को हीन करे तब 'रात्र्यर्द्ध' होता है। दिनार्द्ध तथा रात्र्यर्द्ध को पृथक् पृथक् २ से गुणकर दिनमान तथा रात्रिमान होता है।

—: उदाहरण :—

यहां 'सूर्य' उत्तरगोल में है अतः १५ घटी ० पल में चरपल १३८ को युक्त किया तो १५।१३८ हुए। यहां १३८ पल ६० से अधिक हैं इसलिए १३८ पल में ६० से भाग दिया तो लब्ध २ घटी और शेष

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१८ पल हुए। लब्ध २ को १५ घटी में युक्त किया तो १७ हुए। इस प्रकार १७ घटी १८ पल दिनार्द्ध हुआ। इस को ३०।० में हीन किया तो १२ घटी ४२ पल रात्र्यर्द्ध हुआ। १७।१८ दिनार्द्ध को २ से गुणा तो ३४ घटी ३६ पल 'दिनमान' हुआ। एवं १२।४२ रात्र्यर्द्ध को २ से गुणा तो २५ घटी २४ पल 'रात्रिमान' हुआ।

स्वदेशीय लग्नसारणी से दिनमानादियों की साधन रीतिः—

इष्टेनराश्यंशतलस्थनाडिकाः स्वसप्तमस्थानगनाडिकादितः।
शोध्या दिनं तेन विहीनशून्यपट् तमी निशीथं द्युदलं नभोग्नियुक् ॥ ४३ ॥

अभीष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य की राशि और अंश के समान कोष्ठ के नीचे की घटी और पलों को अपने समसूत्र सप्तम राशि में स्थित घटी पलों में हीन करे शेष 'दिनमान' होता है। दिनमान को ६०।० में हीन करे तब 'रात्रिमान' होता है। दिनार्द्ध में ३० घटी ० पल को युक्त करे तब 'मिश्रमान' होता है।

—:उदाहरणः—

२।२१।-९।४९ स्पष्ट सूर्य है। लग्नसारणी में २ राशि २१ अंश के तुल्य कोष्ठ के नीचे के घट्यादि १५।१२ को अपने समसूत्र सप्तम राशि में स्थित अर्थात ६ राशियुक्त सूर्य ८।२१ के तुल्य कोष्ठ के नीचे के घट्यादि ४९।४९ में हीन किया तो ३४।३७ 'घट्यादि दिनमान' हुआ। इस को ६०।० में हीन किया तो २५।२३ 'रात्रिमान' हुआ। ३४।३७ दिनमान में २ से भाग दिया तो लब्ध १७।१८ 'दिनार्द्ध' हुआ। इस में ३०।० को युक्त किया तो ४७।१८ घट्यादि मिश्रमान (अर्द्धरात्रि वा निशीथ) हुआ।

गढदेशीय दिनमान खण्डों के द्वारा दिनमान साधन रीतिः—

तत्स्वदभ्राः शराक्षीणीभाब्धयो भानि खाब्धयः।
त्रिंशच्छून्यं रदा व्योमपक्षा वेदाग्नयो भगाः ॥ ४४ ॥
कृताग्नयो भुजङ्गाक्षाः सत्रिभः सायनो रविः।
षड्भाधिको भशुद्धश्चेद्भतुल्योऽङ्को गतस्त्वसौ ॥ ४५ ॥
तद्नैष्यो लवादिघ्नो व्योमपावकभाजितः।
यल्लब्धं तेन संयुक्तोऽहर्मानं स्यात्परिस्फुटम् ॥ ४६ ॥

०	१	२	३	४	५	६
२५।२,	२५।४८,	२७।४०,	३०।०,	३२।२०,	३४।१२,	३४।५८,

ये गढदेशीय दिनमान खण्डांक हैं। तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में अयनांश को युक्त करे तब 'सायन सूर्य' होता है। सायन सूर्य की राशि में ३ राशि को युक्त करे तब 'सत्रिभ सायन रवि' होता है। यदि सत्रिभ सायन रवि ६ राशि से न्यून हो तो उस राशि के तुल्य दिनमान खण्ड को ग्रहण कर के एकान्त में स्थापित करे। यदि सत्रिभ सायन रवि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

की राशि ६ से अधिक हो तो सत्रिभ सायन सूर्य को १२ राशि में शोधन करे तब जो शेष राश्यादि बचे उस की राशि के तुल्य दिनमान खण्ड को ग्रहण कर के एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर गतखण्ड और भोग्यखण्ड के अन्तर को शेष अंशादि से गुणकर ३० से भाग दे तब जो लब्ध घट्यादि हों उन को एकान्त में स्थित दिनमान खण्ड के घट्यादि में युक्त करे तब 'अभीष्ट दिन का घट्यादि दिनमान' होता है।

—: उदाहरण :—

३।१३।५४।१६ सायन सूर्य है। इस में ३ राशि को युक्त किया तो ६।१३।५४।१६ 'सत्रिभ सायन सूर्य' हुआ। यह छः राशि से अधिक है इसलिए इस को १२ राशि में हीन किया तो ५।१६।५।४४ 'चक्र शुद्ध सत्रिभ सायन सूर्य' हुआ। इस की राशि ५ के तुल्य दिनमान खण्डांक ३४।१२ को ग्रहण कर के एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर गतखण्ड ३४।१२ को भोग्य खण्ड २४।५८ में हीन किया तो ४६ शेष बचे। इन को चक्रशुद्ध सत्रिभ सायन सूर्य के ५।५।१६ अंशादि से गुणा तो ७४०।२।१६ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध २४।४० पलादि हुए। इन को एकान्त में स्थित गतखण्ड ३४।१२ में युक्त किया तो ३४ घटी ३७ पल 'दिनमान' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'गढवाले दिनमानसारणीयम्' 'घट्यादि फलमेतत्'। 'उपकरणं सायनार्कराश्यंशाः'।

	अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	०	३० ० ०	३० ४ ४०	३० ९ २०	३० १४ ०	३० १८ ४०	३० २३ २०	३० २८ ०	३० ३२ ४०	३० ३७ २०	३० ४२ ०	३० ४६ ४०	३० ५१ २०	३० ५६ ०	३१ ० ४०	३१ ५ २०	३१ १० ०	३१ १४ ४०	३१ १९ २०	३१ २४ ०	३१ २८ ४०	३१ ३३ २०	३१ ३८ ०	३१ ४२ ४०	३१ ४७ २०	३१ ५२ ०	३१ ५६ ४०	३२ १ २०	३२ ६ ०	३२ १० ४०	३२ १५ २०
वृ.	१	३२ २० ०	३२ २३ ४४	३२ २७ २८	३२ ३१ १२	३२ ३४ ५६	३२ ३८ ४०	३२ ४२ २४	३२ ४६ ८	३२ ४९ ५२	३२ ५३ ३६	३२ ५७ २०	३२ १ ४	३२ ४ ४८	३३ ८ ३२	३३ १२ १६	३३ १६ ०	३३ १९ ४४	३३ २३ २८	३३ २७ १२	३३ ३० ५६	३३ ३४ ४०	३३ ३८ २४	३३ ४२ ८	३३ ४५ ५२	३३ ४९ ३६	३३ ५३ २०	३३ ५७ ४	३४ ० ४८	३४ ४ ३२	३४ ८ १६
मि.	२	३४ १२ ०	३४ १३ ३२	३४ १५ ४	३४ १६ ३६	३४ १८ ८	३४ १९ ४०	३४ २१ १२	३४ २२ ४४	३४ २४ १६	३४ २५ ४८	३४ २७ २०	३४ २८ ५२	३४ ३० २४	३४ ३१ ५६	३४ ३३ २८	३४ ३५ ०	३४ ३६ ३२	३४ ३८ ४	३४ ३९ ३६	३४ ४१ ८	३४ ४२ ४०	३४ ४४ १२	३४ ४५ ४४	३४ ४७ १६	३४ ४८ ४८	३४ ५० २०	३४ ५१ ५२	३४ ५३ २४	३४ ५४ ५६	३४ ५६ २८
क.	३	३४ १८ ०	३४ ६ २८	३४ ५ ५६	३४ ५३ २४	३४ ५१ ५२	३४ ५० २०	३४ ४८ ४८	३४ ४७ १६	३४ ४५ ४४	३४ ४४ १२	३४ ४२ ४०	३४ ४१ ८	३४ ३९ ३६	३४ ३८ ४	३४ ३६ ३२	३४ ३५ ०	३४ ३३ २८	३४ ३१ ५६	३४ ३० २४	३४ २८ ५२	३४ २७ २०	३४ २५ ४८	३४ २४ १६	३४ २२ ४४	३४ २१ १२	३४ १९ ४०	३४ १८ ८	३४ १६ ३६	३४ १५ ४	३४ १३ ३२
सिं	४	३२ १२ ०	३२ ८ १६	३२ ४ ३२	३२ ० ४८	३२ ५७ ४	३२ ५३ २०	३२ ४९ ३६	३२ ४५ ८	३२ ४२ २४	३२ ३८ ४०	३२ ३४ ५६	३२ ३० १२	३२ २७ २८	३२ २३ ४४	३२ १९ ०	३२ १६ १६	३२ १२ ३२	३२ ८ ४८	३२ ४ ४	३२ १ २०	३२ ५७ ३६	३२ ५३ ५२	३२ ४९ ८	३२ ४६ २४	३२ ४२ ४०	३२ ३८ ५६	३२ ३४ १२	३२ ३१ २८	३२ २७ ४४	३२ २३ ०
क.	५	३२ २० ०	३२ १५ १०	३२ १० ६	३२ ६ १	३२ १ ५६	३१ ५२ ४७	३१ ४२ ३८	३१ ३३ २८	३१ २४ १९	३१ १४ १०	३१ ५ ०	३१ ५६ ५१	३१ ४६ ४२	३१ ३७ ३२	३१ २८ २३	३१ १८ १४	३१ ९ ४	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०	३० २० ४०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

'गढवाले दिनमानसारणीयम्'। घट्यादि फलमेतत् 'उपकरणं सायनार्कराश्यंशाः'।

अंशाः		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
तु.	६	३०	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२०	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२७
		०	५५	५०	४६	४१	३६	३२	२७	२२	१८	१३	८	४	५९	५४	५०	४५	४०	३६	३१	२६	२२	१७	१२	८	३	५८	४९	४९	४०
		०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
वृ.	७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२५	२५	२५
		४०	३६	३२	२८	२५	२१	१७	१३	१०	६	२	५८	५५	५१	४७	४४	४०	३६	३२	२९	२५	२१	१७	१४	१०	६	२	५९	५५	५१
		०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
ध.	८	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
		४८	४६	४४	४३	४१	४०	३८	३७	३५	३४	३२	३१	२९	२८	२६	२५	२३	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१२	११	९	८	६	५	३
		०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२
म.	९	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
		२	३	५	६	८	९	११	१२	१४	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	२९	३१	३२	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४३	४४	४६
		०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	५६	२८
कु.	१०	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
		४८	५१	५५	५९	२	६	१०	१४	१७	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५८	२	६	१०	१३	१७	२१	२५	२८	३२	३६
		०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	०	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४४	३२	१६
मी.	११	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९
		४०	४४	४९	५४	५८	३	८	१२	१७	२१	२६	३१	३६	४०	४५	५०	५४	५९	४	८	१३	१८	२२	२७	३२	३६	४१	४६	५०	५५
		०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

दिनमान सारणी प्रवेश रीतिः—

सायन सूर्य की राशि और अंश के तुल्य समसूत्र कोष्ठ के नीचे जो घट्यादि मिलें उन को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर सायन सूर्य के कलादि को गत गम्य कोष्ठों के अन्तर से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध पलादि होते है। उन को एकान्त में स्थित घट्यादि के पलादि में युक्त करे तब 'इष्ट दिन का घट्यादि दिनमान' होता है।

—: उदाहरण :—

३।१३।५४।१६ सायन सूर्य है। ३ राशि १३ अंश के समसूत्र कोष्ठ के नीचे के ३४।३८।४ घट्यादि को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर गत कोष्ठ के ३४।३८।४ घट्यादि और भोग्य कोष्ठ के ३४।३६।३२ घट्यादि का अन्तर किया तो १।३२ पलादि शेष बचे। सायन सूर्य के ५४।१६ कलादि को गोमूत्रिका रीतिद्वारा १।३२ अन्तर से गुणा तो ८३।१३ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध १।२३ पलादि हुए। यहां भुक्त खण्ड ३४।३८।४ की अपेक्षा भोग्य खण्ड ३४।३६।३२ न्यून है अतः लब्ध पलादि 'ऋण' हुए। एकान्त में स्थित ३४।३८।४ घट्यादि में लब्ध १।२३ पलादि को ऋण किया तो ३४।३६।४१ 'इष्ट दिन का घट्यादि दिनमान' हुआ।

सायन लग्नमान से दिनमान साधन रीतिः—

आदित्यभागहतरब्युदयास्तलग्न-
नाड्यो वियत्त्रिविहृता गतनाडिकाः स्युः।
अत्रोदयास्ततनुगम्यकयातनाडी-
योगस्तु मध्यगभमानयुतो दिनं स्यात् ॥ ४७ ॥

सूर्य के उदय कालीन लग्न की तथा अस्तकालीन लग्न की सायन घटियों को सूर्य के अंशों से गुणकर ३० से भाग दे लब्ध 'उदय लग्न तथा अस्त लग्न की गत घटी' होती हैं। उन गत घटियों को उदय लग्न तथा अस्त लग्न के समस्त सायनमान घटियों में शोधन करे तब 'उदय लग्न तथा अस्त लग्न की भोग्य घटी' होती हैं। उदय लग्न की भोग्य घटी और अस्त लग्न की गत घटी इन दोनों का योग कर के एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर उदय लग्न और अस्त लग्न के सायन मान घटियों को छोडकर उन दोनों के मध्यवर्ती लग्नों के सायन मान घट्यादियों का योग कर के जो संख्या हो उस को एकान्त में स्थित संख्या में युक्त करे तब 'अभीष्ट दिन का घट्यादि दिनमान' होता है।

—: उदाहरण :—

सूर्योदयकालीन लग्न वृश्चिक के सायन मान घट्यादि ५।४८।६ को तात्कालिक स्पष्ट सूर्य के २० अंश से गुणा तो ११६।२।० गुणनफल हुआ। इस में ३० से भाग दिया तो लब्ध ३।५२।४ उदय लग्न वृश्चिक के गत घट्यादि हुए। इन को वृश्चिक के सर्व सायन मान घट्यादि ५।४८।६ में शोधन किया तो १।५६।२ उदय लग्न वृश्चिक के भोग्य घट्यादि हुए। एवं सूर्य के अस्त लग्न वृष के सायनमान घट्यादि ४।४६।४२ को सूर्य के २० अंश से गुणा तो ९५।३४।० गुणनफल हुआ। इस में ३० से भाग दिया तो लब्ध ३।११।८ सूर्यास्त लग्न वृष

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

के गत घट्यादि हुए। इन गत घट्यादि ३।११।८ और उदय लग्न वृश्चिक के भोग्य घट्यादि १।५६।२ का योग किया तो ५।७।१० उदयास्त लग्न का गतगम्य घट्यादि योग हुआ। इस को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर सूर्योदय लग्न वृश्चिक को छोड़कर उस से आगे के लग्नों के और अस्तलग्न वृष को छोड़कर उस से पीछे के लग्नों के अर्थात् धनु के ५।१०।४४, मकर के ४।१६।१८, कुम्भ के ३।३६।१०, मीन के ३।२८।० और मेष के ३।५४।५० सायनमान घट्यादियों का योग किया तो २०।२६।२ घट्यादि हुए। इन को एकान्त में स्थित उदयास्त लग्नों की गम्य गत घटियों के योग ५।७।१० में युक्त किया तो २५।३३।१२ 'इष्ट दिन का घट्यादि दिनमान' हुआ।

प्रकारान्तर से सायनलग्नमान के द्वारा दिनमान साधन रीतिः—

इष्टप्रविष्टगुणितान्यरुणोदयास्त-
राश्योः पलानि विहृतानि च मासमित्या।
याता विनाड्य उदयास्तभयोरयाते-
तैक्यं तु मध्यगभमानयुतं द्युमानम् ॥ ४८ ॥

इष्ट कालीन सूर्य के उदय और अस्तलग्न के सायन पलादियों को इष्ट प्रविष्ट से गुणकर मासमिति से भाग दे लब्ध उदय और अस्तलग्न के गत पलादि होते हैं। तदनन्तर उदय लग्न के गम्य पलादि और अस्तलग्न के गत पलादियों के योग में उदय लग्न और अस्तलग्न के अन्तरालवर्त्ती लग्नों के सायनमान पलादियों को युक्त करे तब पलादि दिनमान होता है। पलों में ६० से भाग दे लब्ध घट्यादि दिनमान होता है।

—: उदाहरण :—

२।२१।२९।४९ इष्टकालीन सूर्य है अर्थात् २३ प्रविष्ट आषाढ का जन्म है और सूर्योदय राशि मिथुन है। इस के सायनमान ३३५।१६ को इष्ट प्रविष्ट २३ से गुणा तो ७७११।८ हुए। इन में मासमिति अर्थात् समस्त आषाढ के दिन ३२ से भाग दिया तो लब्ध २४०।५८ उदयलग्न मिथुन का पलादि भुक्तमान हुआ। इस को मिथुन के उदयमान ३३५।१६ में हीन किया तो ९४।१८ मिथुन का पलादि भोग्यमान हुआ। सूर्य का अस्त लग्न धनु है अतः धनु के सायनमान ३१०।४४ को इष्टप्रविष्ट २३ से गुणा तो ७१४६।५२ हुए। इन में समस्त आषाढ के दिनों (मासमिति) से अर्थात् ३२ से भाग दिया तो लब्ध २२३।२० धनु लग्न का पलादि भुक्तमान हुआ। इस में उदय लग्न मिथुन के पलादि भोग्यमान ९४।१८ को युक्त किया तो ३१७।३८ पलादि हुए। यहां उदयलग्न मिथुन और अस्तलग्न धनु है इन दोनों के अन्तरालवर्त्ती लग्न कर्क, सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक के सायनमान पलादियों का योग किया तो १७५२।१० पलादि हुए। इन में उदयास्त लग्न के गम्यगत पलादियों के योग ३१७।३८ को युक्त किया तो २०६९।४८ पलादि हुए। २०६९ पल में ६० से भाग दिया तो लब्ध ३४ घटी और शेष २९ पल ४८ विपल अभीष्ट दिन का दिनमान हुआ।

आर्क्षकाल तथा वेलान्तर साधन रीतिः—

सम्पातखेचरपतिस्तदितांशकाः स्व-
लङ्कोदयैर्विनिहताः खजगद्विभक्ताः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कालो गतः पलमुखः क्रियपूर्वयात-
लङ्कोदयैः सहित उष्णकरार्क्षकालः ॥ ४९ ॥
मध्यद्युनायकलवा ऋतुभिर्हृतास्तद्
विश्लेषकं भवति पूर्वफलेऽधिकेऽल्पे ।
वेलान्तरं धनमृणं क्रमशः पुराणा
ज्योतिर्विदः सुनिपुणा इति सङ्गिरन्ते ॥ ५० ॥

सायन सूर्य के भुक्तांशों को सायन सूर्य की राशि के लङ्कोदय से गुणकर ३० से भाग दे लब्ध पलादि 'गतकाल' होता है। तदनन्तर उस पलादि गत काल में सायन सूर्य की राशि के पूर्व मेषादि गत राशियों के लङ्कोदयों को युक्तकरे तब जो संख्या हो उसमें ६० से भाग दे लब्ध 'स्पष्ट सूर्य का घट्यादि आर्क्षकाल' होता है। एवं सायन मध्यम सूर्य की राशिको ३० से गुणकर अंशों को युक्त करके ६ से भागदे लब्ध 'मध्यम सूर्य का घट्यादि आर्क्षकाल' होता है। स्पष्ट सूर्य के आर्क्षकाल का और मध्यम सूर्य के आर्क्षकाल का अन्तर करे तब शेष 'वेलान्तरफल' होता है। मध्यम सूर्य के आर्क्षकाल से यदि स्पष्ट सूर्य का आर्क्षकाल अधिक हो तो वेलान्तर धन और मध्यम सूर्य के आर्क्षकाल से स्पष्ट सूर्य का आर्क्षकाल न्यून (अल्प) हो तो वेलान्तर ऋण होता है।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ में अयनांश २२।२४।२७ को युक्त किया तो ३।१३।५४।१६ 'सायन सूर्य' हुआ। इसके भुक्तांश १३।५४।१६ को सायन सूर्य की राशि कर्क के लङ्कोदय ३२२ से गुणा तो ४४७७।१३।५२ हुए। इनमें ३० से से भाग दिया तो लब्ध १४९।१४।२८ भुक्त पलादि हुए। सायन सूर्य की राशि कर्क से पूर्व मेषादि गत राशियों के लङ्कोदयों का योग किया अर्थात् मेष के २७९, वृष के २९९ और मिथुन के ३२२ लङ्कोदयों का योग किया तो ९०० पल हुए। इनमें पूर्वागत कर्क के भुक्त पलादि १४९।१४।२८ को युक्त किया तो १०४९।१४।२८ पलादि हुए। १०४९ पल में ६० से भाग दिया तो लब्ध १७ घटी २९ पल स्पष्ट सूर्य का आर्क्षकाल हुआ। मध्यम सूर्य २।२१।३७।५३ में अयनांश २२।२४।२७ को युक्त किया तो ३।१४।२।२० 'सायनमध्यम सूर्य' हुआ। इसके अंशादि १०४।२।२० में ६ से भाग दिया तो लब्ध १७ घटी २० पल मध्यम सूर्य का आर्क्षकाल हुआ। इसका और स्पष्ट सूर्य के आर्क्षकाल १७ घटी २९ पल का अन्तर किया तो ९ पल 'वेलान्तर' हुआ। यहां स्पष्ट सूर्य का आर्क्षकाल अधिक है अतः वेलान्तर धन हुआ। जन्मकालीन सावन घ. ४६ प. १३ में वेलान्तर ९ पल को युक्त किया तो ४६।२२ आर्क्ष काल हुआ।

सावन घटियों से आर्क्षकाल साधन रीतिः—

* आर्क्ष्यो भवेत्सावननाडिकाख्याः पलैः स्वषष्ठांशमितैः समेताः ।
स्युः सावनाख्या घटिकाः पलैस्तैरार्क्ष्यो वियुक्तः सुगमा क्रियैषा ॥ ५१ ॥

---

* इह चतुर्विधः कालः कथितः स तु शकलोदिते दिनभर्त्तरि सलिलपूर्णपात्रे घटिकापात्रं निधाय यः कालो मीयते स 'सावनः' यज्ञादिकर्मसु विहितः। उन्मण्डलासक्ते स्पष्टसमसमौ यः काल आरभ्यते स 'स्पष्टः कालः'। पूर्वबिन्दुगते सायने मध्यममिहिरे यः काल आरभ्यते स 'मध्यमः कालः' पूर्वबिन्दुलग्ने क्रान्तिपाते यः काल आरभ्यते स नाक्षत्र आर्क्षो वा। एवं चतुर्विधोऽनेहा प्राक्तनैः पण्डितैरुक्त इति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अभीष्ट समय की सावन घटियों को दो स्थान में रखकर एक स्थान में ६ से भाग दे लब्ध को द्वितीय स्थान के पलों में युक्त करे तब 'आर्क्ष्यकाल' होता है। एवं आर्क्ष्य घटियों को दो स्थान में रखकर एक स्थान में ६ से भाग दे लब्ध को द्वितीय स्थान के पलों में हीन करे शेष सावन घट्यादि होते हैं।

—: उदाहरण :—

जन्मकालीन सावन घ. ४६ प. १३ को दो स्थान में रखकर एकस्थान में ६ से भाग दिया तो लब्ध ८ पल हुए। इन को द्वितीयस्थान में युक्त किया तो घ. ४६ प. २१ 'आर्क्ष्यकाल' हुआ। आर्क्ष्यकाल ४६।२१ में ६ से भाग दिया तो लब्ध ८ पल हुए। इन को आर्क्ष्यकाल ४६।२१ में हीन किया तो घ. ४६ प. १३ 'सावन काल' हुआ

* 'उदयान्तरसारणीयम्'। 'उपकरणं सायनार्कराश्यंशाः'। 'पलात्मकं फलमेतत्'।

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
राश्यः ०	१८ +	१७	१६	१५	१४	१३	१२	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६
१	४ −	४	४	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	९
२	९ −	९	९	९	८	८	८	८	७	७	७	६	६	५	५	४
३	३ +	४	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
४	१५ +	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४
५	७ +	६	६	५	४	४	३	२	१ +	०	१ −	२	२	३	४	५
६	१७ −	१८	१९	२०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	२९	३०
७	३८ −	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४०	४०
८	३५ −	३४	३३	३३	३२	३१	३०	२९	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२
९	४ −	३	२ −	०	२ +	३	४	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५
१०	२९ +	३०	३१	३१	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३६	३६
११	३५ +	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९	२८

* मयैषा श्रीवेङ्कटेशकृतज्योतिर्गणितग्रन्थादुद्धृता। इहेमं संस्कारं कालभेदः कालसमीकरण वेलासमीकरणं उदयान्तरं वेति वदन्ति। 'वेलान्तरसाधनमुक्तं श्रीमद्भिः सदाशिवापटदैवज्ञैः'—मध्यार्कयुङ् नवहृयां ७९ शगुणघ्नसप्त

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'उदयान्तरसारणीयम्'। 'उपकरणं सायनार्कराश्यंशाः'। 'पलात्मकं फलमेतत्'।

अंशाः	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
राश. ०	५ +	४	३	३	२	२	१ +	०	० −	१	१	२	२	३ −
१	९ −	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९ −
२	४ −	३	३	२	२	२	१	१ −	०	०	१ +	२	२	३ +
३	११ +	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५ +
४	१३ +	१३	१३	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	८	८	७ +
५	५ −	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१५	१५	१६ −
६	३१ −	३१	३२	३२	३३	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३७	३७	३८ −
७	४० −	४०	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३८	३८	३७	३७	३६	३५ −
८	२१ −	२०	१९	१८	१६	१५	१४	१३	१२	१०	९	८	७	६ −
९	१६ +	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२७	२८ +
१०	३६ +	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३६	३६	३६	३६	३६ +
११	२७ +	२७	२६	२६	२५	२४	२४	२३	२२	२२	२१	२१	२०	१९ +

वेलान्तर वा उदयान्तर सारणी प्रवेश रीतिः—

इष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य में अयनांश को युक्त करे तब 'सायन सूर्य' होता है। सायन सूर्य की राशि और अंश के समान समसूत्र कोष्ठ के पलों को ग्रहण कर के एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर सायन सूर्य के कलादि को गतगम्य कोष्ठ के पलों के अन्तर से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध पल को एकान्त में स्थित पलों में भोग्य कोष्ठ के पल अधिक हों तो धन और न्यून हों तो ऋण करे, तब स्पष्ट उदयान्तर (वेलान्तर) पल होते हैं। अपने कोष्ठ से पूर्व लिखित धन वा ऋण चिह्न के समान धन वा ऋण जानने चाहिएँ।

७ र्णे जूकषट्क इह हग्भरविज्यका स्यात्। गोऽद्यन्यथाऽत्र मिनिटानि च संस्कृतिः स्याद्वेलान्तरं स्वदशमांशयुताऽयुता १०००० सा' इति। मध्यार्के ७९ अंशा योज्या अतो ज्या साध्या साद्रिभा। अत्र मध्यार्कस्य ७९ अंशानां योगो यदि तुलादिषट्के तदा गुणनफलमृणं तन्मेषादि षट्के स्वम्। द्विगुणितमध्यार्कज्या नवघ्ना। यदि द्विगुणमध्यार्के तुलादिषट्के धनं मेषादिषट्के ऋणं गुणनफलं मतम्। अनयोः संस्कृतिः स्वदशमांशयुताऽयुता (त्रिज्या १००००) ऽऽप्ता फलं निमेषादिकं वेलान्तरं भवेत्। चेदृणं फलमधिकमृणं वेलान्तरं, धनंफलमधिकं धनं वेलान्तरं, ज्ञेयमिति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

२।२६।२८।५७ सायन सूर्य है। २ राशि २६ अंश के समान समसूत्र कोष्ठ के १ पल को लेकर एकान्त में स्थापित किया। भुक्त कोष्ठ के १ पल का और भोग्य कोष्ठ के २ पल का अन्तर किया तो १ शेष बचा। सायन सूर्य के २८।५७ कलादि को १ शेष से गुणा तो २८।५७ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ० पल हुआ। इस को एकान्त में स्थित १ पल में भोग्य कोष्ठ के पल अधिक होने के कारण धन किया तो १ पल स्पष्ट उदयान्तर हुआ। यहां कोष्ठ में धन चिह्न लिखा हुआ है अतः + १ पल उदयान्तर (वेलान्तर) हुआ।

दिनमानादि साधन की सूक्ष्म रीतिः—

स्याद्गोलयोर्द्विघ्नचरोनसंयुताः स्वाज्याशतुल्या घटिका युताः पलैः।
दिनैर्भ्रमानं गगनाङ्गनाडिकास्तत्संविहीना रजनीमितिर्भवेत् ॥ ५२ ॥

घटी ३०, पल १०, में उत्तरगोल हो तो द्विगुणित चरपलों को युक्त और दक्षिणगोल हो तो हीन करे तब 'अभीष्ट दिन का स्पष्ट घट्यादि दिनमान' होता है। ६० घटी ० पल में घट्यादि दिनमान को हीन करे तब 'घट्यादि रात्रिमान' होता है।

—: उदाहरण :—

पूर्वानीत चरपल १३८ को २ से गुणा तो २७६ द्विगुणित चरपल हुए। यहां जन्म समय में 'सूर्य' उत्तर गोल में है अतः ३० घटी १० पल में द्विगुणित चरपल २७६ को युक्त किया तो ३०।२८६ हुए। २८६ पल में ६० से भाग दिया तो लब्ध ४ घटी हुई और शेष ४६ पल हुए। लब्ध ४ को ३० घटी में युक्त किया तो ३४ घटी ४६ पल अभीष्ट दिन का दिनमान हुआ। ३४।४६ दिनमान को ६०।० में हीन किया तो २५ 'घटी १४ पल रात्रिमान' हुआ।

माध्याह्निक तथा सूर्योदयास्तकालीन मध्यमकाल साधन रीतिः—

वेलान्तरेणेषुकुतुल्यनाडिकाः संस्कारिता माध्यमिका दिवादले।
ता वासरार्द्धोनयुताः स्फुटोदयास्ते मध्यकालौ स्वपुरस्य भास्वतः ॥ ५३ ॥

१५ घटियों में वेलान्तर पलों को यथागत धन ऋण करे तब 'घट्यादि माध्याह्निक मध्यमकाल' होता है। माध्याह्निक मध्यमकाल में दिनार्द्ध को हीन युक्त करे तब क्रम से सूर्योदयकालीन और सूर्यास्तकालीन मध्यमकाल होता है।

—: उदाहरण :—

यहां सूर्य का वेलान्तर धन ९ पल है। इन को १५ घटी ० पल में युक्त किया तो १५ घटी ९ पल माध्याह्निक मध्यमकाल हुआ। इस में १७।२३ दिनार्द्ध को हीन किया तो ५७ घ. ४६ प. सूर्योदय में मध्यमकाल हुआ। एवं माध्याह्निक मध्यमकाल १५।९ में १७।२३ दिनार्द्ध को युक्त किया तो ३२ घ. ३२ प. सूर्यास्तसमय में मध्यम काल हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मध्यम काल से स्पष्टकाल और उस से मध्यमकाल साधन रीतिः—

व्यत्यस्तवेलान्तमक्षरेखिकाचराणि मध्ये परियोजयेत्स्फुटः ।
कालोऽथ वेलान्तरकं विपर्ययरेखाचराक्षाणि च मध्यमाप्तये ॥ ५४ ॥

मध्यमकाल में वेलान्तर (उदयान्तर) पलों को विपरीत धन ऋण करे अर्थात् वेलान्तर धन हो तो मध्यम काल में ऋण करे और ऋण हो तो मध्यमकाल में धन करे । तदनन्तर किरण वक्रीभवन के ५ पल को युक्त करे तब जो संख्या हो उस में रेखान्तर पलों को यथागत धन ऋण करे तब जो संख्या हो उस में चरपलों को यथागत धन ऋण करे तब 'स्थानिक स्पष्टकाल' होता है । स्थानिक स्पष्टकाल में वेलान्तर को यथागत धन ऋण करे तब जो संख्या हो उस में रेखान्तर पल और चरान्तर पल को विपरीत धन ऋण करे तब जो संख्या हो उस में ५ पल को हीन करे तब 'स्थानिक मध्यमकाल' होता है ।

—: उदाहरण :—

सूर्योदयकाल से स्पष्ट इष्टकाल ४६ घटी १३ पल है अर्थात् यह स्थानिक स्पष्टकाल हुआ । इस में वेलान्तर ९ पल को धन (युक्त) किया तो ४६ घ. २२ प. वेलान्तर संस्कृत काल हुआ । इस में स्थानिक + २८ देशा (रेखा) न्तर पल को व्यस्त संस्कार (ऋण) किया तो ४५ घ. ५४ पल रेखान्तर (देशान्तर) संस्कृतकाल हुआ । इस में ऋण चरपल १३८ को व्यस्त संस्कार (धन) किया तो ४८ घ. १२ प. चरान्तर संस्कृतकाल हुआ । इस में किरणवक्रीभवन के ५ पल को ऋण किया तो ४८ घ. ७ प. 'स्थानिक मध्यमकाल' हुआ ।

स्थानिक मध्यमकाल ४८ घ. ७ प. में धन वेलान्तर ९ पल को व्यस्त संस्कार (ऋण) किया तो ४७ घ. ५८ प. वेलान्तर संस्कृतकाल हुआ । इस में किरणवक्रीभवन के ५ पल को युक्त किया तो ४८ घ. ३ पल किरण-वक्रीभवन संस्कृतकाल हुआ । इस में धन देशान्तर २८ पल को युक्त किया तो ४८ घ. ३१ प. देशान्तर संस्कृत-काल हुआ । इस में धन चरपल १३८ को व्यस्त संस्कार (ऋण) किया तो ४६ घ. १३ प. 'स्थानिक स्पष्ट काल' हुआ ।

पश्चिम तथा पूर्व नतकाल परिज्ञानः—

दिनार्द्धकालाद्रजनीदलान्तं यावन्नतः पश्चिम एष कालः ।
निशीथतो घस्रदलावसानं यावत्स पूर्वोन्नत उक्त आर्य्यैः ॥ ५५ ॥

दिनार्द्ध (मध्यान्ह) से अर्द्धरात्रपर्यन्त जो समय हो वह 'पश्चिम नत संज्ञक' होता है । एवं निशीथ (अर्द्धरात्र) से दिनार्द्ध पर्यन्त जो समय हो वह 'पूर्वोन्नतसंज्ञक' होता है । इस प्रकार पण्डितजनोंने कहा है ।

नतकाल साधन रीतिः—

अभीष्टकालो द्युदलेन वर्जितोऽथो त्रिंशतश्चेदधिकः खपट्च्युतः ।
नतं परं प्राक् खगुणाल्पकाधिके ताभ्यां विहीनाः खगुणा इहोन्नते ॥ ५६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दिनार्द्ध घट्यादि में इष्टकाल के घट्यादि को हीन करे यदि शेष ३० घटी ० पल से अल्प हो तो घट्यादि पश्चिमनत होती है और शेष ३० घटी ० पल से अधिक हो तो शेष घट्यादि को ६० घटी ० पल में हीन करे तब शेष घट्यादि पूर्वनत होती है। पूर्वनत, तथा पश्चिमनत को ३० घटी ० पल में हीन करे तब पूर्वोन्नत तथा पश्चिमोन्नत होती हैं।

—: उदाहरण :—

जन्मेष्टकाल ४६ घटी १३ पल है। एवं ३४।३६ दिनमान, १७।१८ दिनार्द्ध, ४७।१८ मिश्रमान, २५।२४ रात्रिमान और १२।४२ रात्र्यर्द्ध है। यहां जन्मेष्टकाल ४६।१३ यह दिनार्द्ध १७।१८ और मिश्रमान ४७।१८ के अन्तर्गत का है इसलिए जन्म समय में 'पश्चिमनत' हुआ। जन्मेष्टकाल ४६।१३ में १७।१८ दिनार्द्ध को हीन किया तो २८ घटी ५५ पल 'पश्चिमनत' हुआ। इस को ३० घटी ० पल में हीन किया तो १ घटी ५ पल 'पश्चिमोन्नत' हुआ।

द्वादश भावों के नामः—

कायः कुटुम्बं सहजो जनित्री पुत्रो विपक्षो वनिता विनाशः।
भाग्यं ततः कर्म भवोऽवसानं भावा इमे द्वादश सद्भिरुक्ताः ॥ ५७ ॥

काय (लग्न), कुटुम्ब (द्वितीय), सहज (तृतीय), जनित्री (चतुर्थ), पुत्र (पञ्चम), विपक्ष (षष्ठ), वनिता (सप्तम), विनाश (अष्टम), भाग्य (नवम), कर्म (दशम), भव (एकादश) और अवसान (द्वादश) ये बारह भाव पण्डितजनोंने कहे हैं।

दशमभाव तथा सुखभाव साधन रीतिः—

लङ्कोदयार्द्धैः करणोक्तरीत्या प्रत्यङ्नतात्पिङ्गलतो यदङ्गम्।
तत्स्वं रवेः प्राङ्नततो विलोमात्पदं तदङ्गर्क्षयुतं सुखं स्यात् ॥ ५८ ॥

करणग्रंथों [ग्रहलाघवादियों] में कथित रीति से लङ्कोदयखण्डों के द्वारा पश्चिमनत और स्पष्ट सूर्य से जिस लग्न का साधन हो वह 'दशमलग्न' होता है। एवं स्पष्ट सूर्य और पूर्वनत से ऋण रीति द्वारा जिस लग्न का साधन हो वह 'दशमलग्न' होता है। दशमलग्न में ६ राशि को युक्त करे तब 'सुख [चतुर्थ] भाव' होता है।

—: उदाहरण :—

३।१३।५४।१६ सायन सूर्य है। इस के भोग्यांश १६।५।४४ को सायन सूर्य की राशि कर्क के लङ्कोदय ३२२ से गुणा तो ५१८२।४६।८ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १७२।४५।३२ 'सूर्य का पलादि भोग्यकाल' हुआ। पश्चिमनत २८।५५ के पल १७३५ में भोग्यकाल १७२।४५।३२ को हीन किया तो १५६२।१४।२८ पलादि शेष बचे। इन में सायन सूर्य की राशि कर्क के आगे की सिंह राशि के लङ्कोदय २९९, क-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

के २७९ तुला के २७९ वृश्चिक के २९९ और धनु के ३२२ इन सब के योग १४७८ को हीन किया तो ८४।१४।२८ शेष बचे। इन में मकर के लङ्कोदय ३२२ न घट शके अतः मकर अशुद्धोदय हुआ। शेष पलादि ८४।१४।२८ को ३० से गुणा तो २५२७।१४।० हुए। इन में अशुद्धोदय मकर के लङ्कोदय ३२२ से भाग दिया तो लब्ध ७।५०।५५ अंशादि हुए। इन के ऊपर (राशिस्थान) में अशुद्धोदय मकर की गतराशि ९ को स्थापित किया तो ९।७।५०।५५ 'सायन दशमलग्न' हुआ। इस में अयनांश २२।२४।२७ को हीन किया तो ८।१५।२६।२८ 'स्पष्ट दशमलग्न' हुआ। इस में ६ राशि को युक्त किया तो २।१५।२६।२८ 'सुख भाव' हुआ।

अग्रिम रीति से दशमलग्न साधन परिज्ञानः—

तत्कालभास्वानयनांशकान्वितो लङ्कोदयैः स्वैस्तदितांशका हताः।
हृताः खलोकैः समयो गतो रवेः शोध्यस्त्वसौ पूर्वनतात्पलीकृतात् ॥ ५९ ॥
जहीहि शेषात्तदधःस्थभोदयान् खत्रिघ्नमुच्छिष्टमशुद्धभोजितम्।
लवादि तद्धीनमशुद्धपूर्वभैर्मेषूरणं स्यादयनांशकोनितम् ॥ ६० ॥

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में अयनांश को युक्त करे तब 'सायन सूर्य' होता है। सायन सूर्य के भुक्तांशादि को सायन सूर्य की राशि के लङ्कोदय से गुणकर ३० से भाग दे लब्ध 'सूर्य का पलात्मक भुक्तकाल' होता है। पूर्वनत के पलों में पलात्मक भुक्तकाल को हीन करे तब जो शेष बचे उन में सायन सूर्य की राशि के पीछे के लङ्कोदयों को जहां तक घट शके घटा दे, जिस राशि का लङ्कोदय न घटे वह अशुद्धोदय होता है। तदनन्तर शेष पलादि को ३० से गुणकर अशुद्धोदय से भाग दे लब्ध अंशादि होते हैं। तदनन्तर लब्ध अंशादियों को अशुद्धोदय की भोग्यराशि में हीन करे तब सायन दशमलग्न होता है। उस में अयनांश को हीन करे तब 'स्पष्ट दशमलग्न' होता है।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट सूर्य ७।१९।४७।७ में अयनांश २३।२१।३७ को युक्त किया तो ८।१३।८।४४ 'सायन सूर्य' हुआ। इस के भुक्तांशादि १३।८।४४ को सायन सूर्य की राशि धनु के लङ्कोदय ३२२ से गुणा तो ४२३२।५२।८ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १४१।५।४४ 'सूर्य का पलात्मक भुक्तकाल' हुआ। पूर्वनत ११।५४ के पल ७१४ में भुक्तकाल १४१।५।४४ को हीन किया तो ५७२।५४।१६ शेष पलादि बचे। इन में सायन सूर्य की राशि धनु के पीछे की राशि वृश्चिक के लङ्कोदय २९९ को हीन किया तो २७३।५४।१६ शेष पलादि बचे। इन में तुला के लङ्कोदय २७९ न घट शके अतः तुला अशुद्धोदय हुआ। शेष पलादि २७३।५४।१६ को ३० से गुणा तो ८२१७।८।० हुए। इन में अशुद्धोदय २७९ से भाग दिया तो लब्ध २९।२७।८ अंशादि हुए। अशुद्धोदय तुला की भोग्यराशि वृश्चिक अर्थात् ७।०।०।० में लब्ध अंशादि २९।२७।८ को हीन किया तो ६।०।३२।५२ 'सायन दशमलग्न' हुआ। इस में अयनांश २३।२१।३७ को हीन किया तो ५।७।११।१५ 'स्पष्ट दशमलग्न' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन रीति से दशमलग्न साधन परिज्ञानः—

कृत्वोन्नतं प्राङ्नतकं सषड्भं भानुं च लङ्कोदयकैः स्वरीत्या ।
स्पष्टं स्वभं मध्यदिने निशीथे तत्कालजो भारविरेवखाम्बे ॥ ६१ ॥

पूर्वनत को पूर्वोन्नत कर के अर्थात् पूर्वनत को ३० घटी ० पल में शोधन करे तब पूर्वोन्नत होता है । एवं स्पष्ट सूर्य में ६ राशि युक्त कर के धन रीति द्वारा लङ्कोदय खण्डों से स्पष्ट दशम लग्न को साधे । मध्याह्न में तात्कालिक सूर्यही दशमलग्न होता है । एवं निशीथ (अर्द्धरात्र) में तात्कालिक सूर्यही चतुर्थ लग्न होता है ।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट सूर्य ७।१९।४७।७ में अयनांश २३।२१।३७ को युक्त किया तो ८।१३।८।४४ ' सायन सूर्य ' हुआ । इस में ६ राशि को युक्त किया तो २।१३।८।४४ ' सषड्भ सायन सूर्य ' हुआ । इस के अंशादि १३।८।४४ को ३०।०।० में शोधन किया तो १६।५१।१६ ' भोग्यांशादि ' हुए । इन को सषड्भ सायन सूर्य की राशि मिथुन के लङ्कोदय ३२२ से गुणा तो ५४२७।७।५२ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १८०।५४।१६ ' सूर्य का पलात्मक भोग्य काल ' पूर्वनत १।५४ को ३० घटी ० पल में शोधन किया तो २८।६ पूर्वोन्नत हुआ । इस के पल १६८६ में भोग्यकाल १८०।५४।१६ को शोधन किया तो १५०५।५।४४ शेष पलादि बचे । इन में सषड्भ सायन सूर्य की राशि मिथुन के आगे की राशि कर्क के लङ्कोदय ३२२, सिंह के २९९, कन्या के २७९, तुला के २७९ और वृश्चिक के २९९ के योग १४७८ को शोधन किया तो २६।५४।१६ शेष पलादि बचे । इन में धनु के लङ्कोदय ३२२ न घट शके अतः ' धनु अशुद्धोदय ' हुआ । शेष पलादि २६।५४।१६ को ३० से गुणा तो ८०७।८।० हुए । इन में अशुद्धोदय ३२२ से भाग दिया तो लब्ध २।३०।२४ अंशादि हुए । इन के ऊपर (राशिस्थान) में अशुद्धोदय धनु की गतराशि ८ को स्थापित किया तो ८।२।३०।२४ ' सायन दशमलग्न ' हुआ । इस में अयनांश २३।२१।३७ को हीन किया तो ७।९।८।४७ ' स्पष्ट दशमलग्न ' हुआ ।

विनानत दशमलग्न साधन रीतिः—

कृत्वोद्गमात्तापनवत्तमीदलं व्यक्षैः पुनस्तद्घटिकाभिरुद्गमः ।
तौ व्यङ्गराशी भवतां क्रमेण तत्कालेऽस्तमध्याह्नविलग्नसञ्ज्ञके ॥ ६२ ॥

लग्न से सूर्य के समान चर को साधकर उस से राश्यर्द्ध को कर के फिर उन राश्यर्द्ध घटियों से लङ्कोदयों के द्वारा लग्न को साधे तब वह चतुर्थलग्न होता है । तदनन्तर लग्न तथा चतुर्थलग्न में छः छः राशि को हीन करे तब इष्टसमय में क्रम से अस्तलग्न और माध्याह्निक लग्न अर्थात् सप्तमलग्न तथा दशमलग्न होते हैं ।

स्पष्टलग्न से चरसाधन रीतिः—

सायनलग्नभुजर्क्षसंख्यचरार्द्धकयोगः ।
अंशकभोग्यवधात्तवत्र्याप्तियुतस्तु चरं स्यात् ॥ ६३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सायन सूर्य के भुज के तुल्य सायन लग्न के भुज की राशि के तुल्य चरखण्डों का योग कर के एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर सायनलग्न के अंशादियों को चरखण्डों के भोग्यखण्ड से गुणकर ३० से भाग दे लब्ध पलादि होते हैं। उन पलादियों को एकान्त में स्थित चरखण्डों के योग में युक्त करे तब लग्न का पलादि चर होता है।

—: उदाहरण :—

स्पष्टलग्न ११।१९।३८।९ में अयनांश २२।२४।२७ को युक्त किया तो ०।१२।२।३६ 'सायनलग्न' हुआ। यह तीन राशि से न्यून है। इसलिए 'स्वल्प भुज' हुआ। भुज की राशि ० के तुल्य चरखण्डों का योग किया तो ० हुआ। इस को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर भुज के अंशादि १२।२।३६ को भोग्यखण्ड ७० से गुणा तो ८४३।२।० हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध २८।६ पलादि हुए। इन को एकान्त में स्थित चरखण्ड योग ० में युक्त किया तो २८।६ पलादि चर हुआ। यहां सायन लग्न उत्तरगोल में है अतः १५ घटी ० पल में २८ चरपल को युक्त किया तो १५।२८ 'लग्नका दिनार्द्ध' हुआ। इस को ३० घटी ० पल में हीन किया तो १४।३२ 'लग्नका रात्र्यर्द्ध' हुआ।

सायनलग्न ०।१२।२।३६ है। इस के भुक्तांशादि १२।२।३६ को ३०।०।० में शोधन किया तो १७।५७।२४ सायनलग्न के भोग्यांशादि हुए। इनको सायनलग्न की राशि मेष के लङ्कोदय २७९ से गुणा तो ५००९।५४।३६ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १६६।५९।४९ 'सायनलग्नका पलात्मक भोग्यकाल' हुआ। लग्नका १४।३२ रात्र्यर्द्ध है। इस के पल किये तो ८७२ हुए। इन में भोग्यकाल १६६।५९।४९ को हीन किया तो ७०५।०।११ शेष पलादि बचे। इन में सायनलग्न की राशि मेष के आगे की राशि वृष के लङ्कोदय २९९ और मिथुन लङ्कोदय ३२२ के योग ६२१ को हीन किया तो ८४।०।११ शेष पलादि बचे। इन में कर्क के लङ्कोदय न घट शके अतः 'कर्क' अशुद्धोदय हुआ। शेष पलादि ८४।०।११ को ३० से गुणा तो २५२०।५।३० हुए। इन में अशुद्धोदय ३२२ से भाग दिया तो ७।४९।३५ अंशादि हुए। इन के ऊपर (राशिस्थान) में अशुद्धोदय कर्क की गतराशि ३ को स्थापित किया तो ३।७।४९।३५ 'सायन चतुर्थलग्न' हुआ। इस में अयनांश २२।२४।२७ को हीन किया तो २।१५।२५।८ 'स्पष्ट चतुर्थलग्न' हुआ। इस में ६ राशि को हीन किया तो ८।१५।२५।८ 'स्पष्ट दशमलग्न' हुआ। स्पष्ट लग्न ११।१९।३८।९ में ६ राशि को हीन किया तो ५।१९।३८।९ 'स्पष्ट सप्तमलग्न' हुआ।

स्वदेशीय दशमलग्न सारणी से दशमलग्न साधन रीतिः—

भास्वद्भभागप्रमकोष्ठके यन्नाड्यादि पूर्वेण नतेन हीनम्।
तत्पश्चिमेनेह नतेन युक्तं विधेयमन्यत्समममङ्गवत्स्वम् ॥ ६४ ॥

इष्ट सूर्य की राशि और अंश के तुल्य दशमलग्न सारणी के कोष्ठ में जो घट्यादि मिलें उन में घट्यादि पूर्वनत को हीन और घट्यादि पश्चिमनत को युक्त करे। शेष क्रिया लग्नानयन रीति के समान करे 'तब 'स्पष्ट राश्यादि दशमलग्न' होता है।

—: उदाहरण :—

इष्ट कालीन स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ की २ राशि २१ अंश के समसूत्र में दशमलग्न सारणी के कोष्ठ के घट्यादि १७।३१ को दो स्थान में स्थापित कर के एकस्थान के घट्यादि १७।३१ को भोग्य कोष्ठ के घट्यादि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१७।४१ में हीन किया तो १० शेष बचे। इन से सूर्य के कलादि २९।४९ को गुणा तो २९८।१० हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ५ पल हुए। इन को द्वितीयस्थान में स्थित घट्यादि १७।३१ में युक्त किया तो १७।३६ स्पष्ट घट्यादि हुए। इन में पश्चिमनत घट्यादि २८।५५ को युक्त किया तो ४६।३१ हुए। इन को दशमलग्न सारणी के कोष्ठ में देखा तो ८ राशि १५ अंश के समसूत्र कोष्ठ के नीचे इन से आसन्न न्यून ४६।२६ घट्यादि मिले। इन को दो स्थान में स्थापित कर के एकस्थान के घट्यादि ४६।२६ को इष्ट संख्या ४६।३१ में हीन किया तो ५ शेष बचे इन को ६० से गुणा तो ३०० 'भाज्य' हुआ। तदनन्तर द्वितीयस्थान में स्थित घट्यादि ४६।२६ को भोग्य कोष्ठ के घट्यादि ४६।३७ में हीन किया तो शेष ११ 'भाजक' हुआ। भाज्य ३०० में भाजक ११ से भाग दिया तो लब्ध २७।१६ कलादि हुए। पूर्वागत ८ राशि १५ अंश के नीचे लब्ध कलादि २७।१६ को स्थापित किया तो ८ राशि १५ अंश २७ कला १६ विकला 'स्पष्ट दशमलग्न' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'गढदेशे देशान्तरे वा त्रयोविंशत्ययनांशीयदशमलग्नसारणीयम्'। 'उपकरणं सूर्यराश्यंशाः'। 'घट्यादिकमिदम्'।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
मे.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	मे.
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	०
वृ.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	वृ.
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	४२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	१
मि.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	मि.
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	२
क.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	क.
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	३
सिं.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	सिं.
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	४
क.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	क.
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	५
तु.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	तु.
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	६
वृ.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	वृ.
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	७
ध.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	ध.
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
म.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	म.
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	९
कुं.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	कुं.
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	१०
मी.	५८	५९	५९	५९	५५	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	मी.
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	११

Jun Gun Aaradhak Trust
P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

सप्तम और चतुर्थलग्न साधन रीतिः—

षड्गृहयुक्तं लग्ननिकेतम् । व्योमनिशान्तं कामकभे स्तः ॥ ६५ ॥

लग्न में और दशमलग्न में ६ राशि को युक्त करे तब क्रम से सप्तमलग्न और चतुर्थलग्न होते हैं ।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट लग्न ११।१९।३८।९ में ६ राशि को युक्त किया तो ५।१९।३८।९ 'सप्तमलग्न' हुआ । दशमलग्न ८।१५।२६।२८ में ६ राशि को युक्त किया तो २।१५।२६।२८ 'चतुर्थलग्न' हुआ ।

धनादि भाव साधन रीतिः—

खस्यास्तहीनस्य रसांशको ध्रुवो भाद्यो मुहुस्तं परियोजयेत्तनौ ।
यावत्सुखं स्यादथ वित्तसोदरौ वेदाश्विभाढ्यौ भवतोऽरिनन्दनौ ॥ ६६ ॥

भावौ क्रमेणेषुगुणैकभान्वितं सन्धित्रयं सन्धिररेः सुतस्य च ।
स्यादम्बुनः साङ्गगृहाः ससन्धयो भावाः समस्ता इतरे स्फुटास्तदा ॥ ६७ ॥

दशमभाव में सप्तमभाव को हीन करे तब जो शेष बचे उस में ६ से भाग दे लब्ध राशि होती है । शेष राशि को ३० से गुणकर अंश युक्त कर के ६ से भाग दे लब्ध अंश होते हैं । पुनः शेष को ६० से गुणकर कला युक्त कर के ६ से भाग दे लब्ध कला होती हैं । पुनः शेष को ६० से गुणकर विकला युक्त कर के ६ से भाग दे लब्ध विकला होती हैं । पुनः शेष को ६० से गुणकर ६ से भाग दे लब्ध प्रति विकला होती हैं । इस प्रकार लब्ध हुए राश्यादि ध्रुव को लग्न में युक्त करे तब 'लग्नधन की सन्धि' होती है । उस में ध्रुव को युक्त करने से 'धनभाव' होता है । उस में ध्रुवयुक्त करने से 'धन सहज की सन्धि' होती है । उस में ध्रुवयुक्त करने से 'सहजभाव' होता है । उस में ध्रुव युक्त करने से 'सहज सुख की सन्धि' होती है । उस में ध्रुवयुक्त करने से 'सुखभाव' होता है । धनभाव में ४ राशि युक्त करने से 'रिपुभाव' होता है । सहजभाव में २ राशियुक्त करने से 'पुत्रभाव' होता है । लग्नधन की सन्धि में ५ राशियुक्त करने से 'षष्ठ सप्तम की सन्धि' होती है । धन सहज की सन्धि में ३ राशि युक्त करने से 'पुत्र रिपु की सन्धि' होती है । सहज सुख की सन्धि में १ राशि युक्त करने से 'सुखपुत्र की सन्धि' होती है । तदनन्तर प्रत्येक लग्नादि सन्धि सहित भावों में ६ राशि युक्त करने से अपने से सप्तमभाव सन्धि सहित होते हैं ।

—: उदाहरण :—

दशमभाव ८।१५।२६।२८ में सप्तमभाव ५।१९।३८।९ को हीन किया तो २।२५।४८।१९ शेषराश्यादि बचे । इन में ६ से भाग दिया तो लब्ध ०।१४।१८।३।१० 'राश्यादि ध्रुव' हुआ । स्पष्ट लग्न ११।१९।३८।९ में राश्यादि ध्रुव ०।१४।१८।३।१० को युक्त किया तो ०।३।५६।१२।१० 'तनुधन की सन्धि' हुई । इस में ध्रुव ०।१४।१८।३।१० को युक्त किया तो ०।१८।१४।१५।२० 'धनभाव' हुआ । इस में ध्रुव ०।१४।१८।३।१० को युक्त किया तो १।२।३२।१८।३० 'धन सहज की सन्धि' हुई । इस में ध्रुव ०।१४।१८।३।१० को युक्त किया तो १।१६।५०।२१।४० 'सहजभाव' हुआ । इस में ध्रुव ०।१४।१८।३।१० को युक्त किया तो २।१।८।२४।५० 'सहजसुख की सन्धि' हुई । इस में ध्रुव ०।१४।१८।३।१० को युक्त किया तो २।१५।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

२६।२८।० 'सुखभाव' हुआ। धनभाव ०।१८।१४।१५।२० में ४ राशि को युक्त किया तो ४।१८।१४।१५।२० 'रिपुभाव' हुआ। सहजभाव १।१६।५०।२१।४० में २ राशि को युक्त किया तो ३।१६।५०।२१।४० 'पुत्रभाव' हुआ। तनु धन की सन्धि ०।३।५६।१२।१० में ५ राशि को युक्त किया तो ५।३।५६।१२।१० 'रिपु सप्तम की सन्धि' हुई। धन सहज की सन्धि १।२।३२।१८।३० में ३ राशि को युक्त किया तो ४।२।३२।१८।३० 'पञ्चम रिपु की सन्धि' हुई। सहज सुख की सन्धि २।१।८।३४।५० में १ राशि को युक्त किया तो ३।१।८।३४।५० 'सुखपुत्र की सन्धि' हुई। तनुधन सन्धि ०।३।५६।१२।१० में ६ राशि को युक्त किया तो ६।३।५६।१२।१० 'सप्तम अष्टम की सन्धि' हुई। धनभाव ०।१८।१४।१५।२० में ६ राशि को युक्त किया तो ६।१८।१४।१५।२० 'अष्टमभाव' हुआ। एवं शेष सन्धि तथा भावों को साधे।

'तन्वादयो द्वादशभावाः ससन्धयः सन्ति'। 'उदाहरणमेतत्'।

भा.	त.	.	ध.	.	स.	.	सु.	.	पु	.	रि.	.
ध्रुवः	.	.	.	.	शु.	.	बु.	सू.	के.	.	मं.बृ.	चं.
०	११	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५
१४	१९	३	१८	२	१६	१	१५	१	१६	२	१८	३
१८	३८	५६	१४	३२	५०	८	२६	८	५०	३२	१४	५६
३	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	२४	२१	१८	१५	१२
१०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	५०	४०	३०	२०	१०
भावाः	जा.	.	मृ.	.	ध.	.	क.	.	ला.	.	व्य.	.
ग्रहाः	.	.	.	श.	.	.	.	.	रा.	.	.	.
	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११
	१९	३	१८	२	१६	१	१५	१	१६	२	१८	३
	३८	५६	१४	३२	५०	८	२६	८	५०	३२	१४	५६
	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	२४	२१	१८	१५	१२
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	५०	४०	३०	२०	१०

उपग्रहों के नामः—

क्रमेण कालः परिवेषधूमार्द्धयामसंज्ञा यमघण्टकाख्यः।
धनुर्यमोत्थौ व्यतिपातकश्चोपकेतुनामोपखगा इमे स्युः॥ ६८॥

काल, परिवेष (परिधि), धूम, अर्द्धयाम (अर्द्धप्रहर), यमघण्टक (यमकण्टक), धनु (इन्द्रधनु), यमोत्थ (गुलिक तथा मान्दि), व्यतीपात (व्यतिपात) और उपकेतु (ध्वज) ये दश उपग्रह हैं।

उपग्रह स्वामी परिज्ञानः—

रव्यंशकः काल इलासुतांशो मृत्युस्तपोंऽशो यमकण्टकाख्यः।
यामार्द्धसञ्ज्ञो द्विजराजजांशो भास्वत्सुतांशौ गुलिकश्च मान्दिः॥ ६९॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्य का अंश ' काल ' मङ्गल का अंश ' मृत्यु ' गुरु का अंश ' यमघण्ट ' बुध का अंश ' अर्द्धयाम ' (यामार्द्ध), शनि के अंश ' गुलिक और मान्दि ' हैं।

धूमादियों की स्पष्टीकरण रीतिः—

युगास्त्रिचन्द्रा नखरा गृहाद्यः क्षेपस्तदाढ्यः सवितेह धूमः।
स चक्रशुद्धो व्यतिपातसञ्ज्ञः सोऽङ्गर्क्षयुक्तः परिवेष उक्तः॥७०॥
भचक्रशुद्धः स सुरेशचापरुयंशोनमेघांशयुतः स केतुः।
इहोपकेतुर्यदि रूपभाढ्यः स्फुटस्तदा पूर्ववदेव भानुः॥७१॥

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में ४ राशि, १३ अंश, २० कला युक्त करे तब ' राश्यादि धूम ' होता है। धूम को १२ राशि में शोधन करे तब ' व्यतीपात ' होता है। व्यतीपात में ६ राशि युक्त करे तब ' परिवेष ' होता है। परिवेष को १२ राशि में शोधन करे तब ' इन्द्रधनु ' होता है। इन्द्रधनु में १६ अंश ४० कला युक्त करे तब ' उपकेतु ' होता है। उपकेतु में १ राशि युक्त करे तब पूर्ववत् ' स्पष्ट सूर्य ' होता है।

' अप्रकाशग्रहाणां क्षेपकाः सन्तीमे '।

धूमः	व्यतीपातः	परिवेषः	इन्द्रधनुः	ध्वजः
४	१२	६	१२	०
+ १३	− ०	+ ०	− ०	+ १६
२०	०	०	०	४०
०	०	०	०	०

—: उदाहरण :—

स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ में धूम के क्षेपक ४।१३।२०।० को युक्त किया तो ७।४।४९।४९ ' राश्यादि स्पष्ट धूम ' हुआ। स्पष्ट धूम ७।४।४९।४९ को १२ राशि में हीन किया तो ४।२५।१०।११ ' व्यतीपात ' हुआ। व्यतीपात ४।२५।१०।११ में ६ राशि को युक्त किया तो १०।२५।१०।११ ' परिवेष ' हुआ। परिवेष १०।२५।१०।११ को १२ राशि में शोधन किया तो १।४।४९।४९ ' इन्द्रधनु ' हुआ। इन्द्रधनु १।४।४९।४९ में ०।१६।४०।० को युक्त किया तो १।२१।२९।४९ ' ध्वज ' हुआ। ध्वज १।२१।२९।४९ में १ राशि को युक्त किया तो २।२१।२९।४९ पूर्ववत् ' स्पष्ट सूर्य ' हुआ।

गुलिकस्पष्टीकरण रीतिः—

घस्रक्षपाभुजगभागमितः स खण्डो
मार्त्तण्डपूर्वदिवसक्रमतो दिवेह।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शैलाङ्कबाणयुगरामगमैकतुल्यो
मन्दांशको निगदितो गुलिको रजन्याम् ॥ ७२ ॥

वारेशपञ्चमसुखाब्धियमेन्दुशैल-
पद्सायकश्रुतिमितो दिवसस्य रात्र्याः ।
मानं भुजङ्गविहृतं च फलं स्वखण्ड-
सन्ताडितं भवतु मन्दसुतेष्टकालः ॥ ७३ ॥

भानूदयात्स दिवसे निशि घस्रमाना-
द्व्योऽतश्च सायनपतङ्गनिजोदयाभ्याम् ।
आने यमङ्कवदिहोदयमार्किपुत्रः
कालादयो गुलिकवत्परिसाधनीयाः ॥ ७४ ॥

दिनमान तथा रात्रिमान के अष्टमांश तुल्य गुलिक खण्ड होता है । दिन में सूर्यादि वारों के क्रम से ७, ६, ५, ४, ३, २, १ ये खण्ड शनैश्चरांश हैं । रात्रि में दिनेश (दिन के वार) से गिनकर जो पञ्चमवार हो उस के क्रम से ३, २, १, ७, ६, ५, ४ ये खण्ड शनैश्चरांश हैं । इन हीं को गुलिक खण्ड कहते हैं । दिन का जन्म हो तो अभीष्ट वार के दिन के खण्ड से घट्यादि दिनमान को गुणकर ८ से भाग दे लब्ध 'घट्यादि' होते हैं । दिन में सूर्योदयकाल से वे गुलिक के 'इष्टघट्यादि' होते हैं । रात्रि का जन्म हो तो अभीष्ट दिन के वार से जो पाँचवां वार हो उस से गिनकर जो शनि का अंश हो उस खण्ड से रात्रिमान को गुणकर ८ से भाग दे तब जो लब्ध घट्यादि हों उन को इष्टदिन के घट्यादि दिनमान में युक्त करने से रात्रि में गुलिक के इष्ट घट्यादि होते हैं । तदनन्तर उस गुलिक के इष्ट घट्यादि से और सायन सूर्य से स्वोदयोंद्वारा स्पष्टलग्न साधन रीति के समान सायन गुलिक को साधकर उस में अयनांश को हीन करे तब 'राश्यादि स्पष्ट गुलिक' होता है । गुलिक के समान कालादियों को भी साधे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'दिने गुलिकादीनां गुणाङ्काः'।

दिनेशवाराः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.	.
कालः	१	७	६	५	४	३	२	सू.
०	२	१	७	६	५	४	३	चं.
मृत्युः	३	२	१	७	६	५	४	मं.
यामार्द्धः	४	३	२	१	७	६	५	बु.
यमघण्टः	५	४	३	२	१	७	६	बृ.
०	६	५	४	३	२	१	७	शु.
गुलिकः	७	६	५	४	३	२	१	श.
निरीशः	८	८	८	८	८	८	८	.

'दिनेशात् क्रमाद् रात्रौ गुलिकादीनां गुणाङ्काः'।

रात्रीश-वाराः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	.
कालः	४	३	२	१	७	६	५	सू.
०	५	४	३	२	१	७	६	चं.
मृत्युः	६	५	४	३	२	१	७	मं.
यामार्द्धः	७	६	५	४	३	२	१	बु.
यमघण्टः	१	७	६	५	४	३	२	बृ.
०	२	१	७	६	५	४	३	शु.
गुलिकः	३	२	१	७	६	५	४	श.
निरीशः	८	८	८	८	८	८	८	.

—: उदाहरण :—

सोमवार के दिन ४६।१३ इष्ट घट्यादि हैं। यहां रात्रि का जन्म है इसलिए रात्रिमान २५।२४ को इष्ट दिन के वार चन्द्र की रात्रि के गुलिक गुणक २ से गुणा तो ५०।४८ हुए। इन में ८ से भाग दिया तो लब्ध ६।२१ घट्यादि हुए। यहां रात्रि में जन्म होने के कारण लब्ध घट्यादि ६।२१ को दिनमान ३४।३६ में युक्त किया तो ४०।५७ 'गुलिक का स्पष्ट इष्टकाल' हुआ। इस गुलिकेष्ट घट्यादि ४०।५७ से और सायन सूर्य ३। १३।५४।१६ से इष्टदेश गढवाल के स्वोदयोंद्वारा स्पष्टलग्न साधन विधि से सायनलग्न साधन किया तो १०।२७।८। ५४ 'सायन गुलिक' हुआ। इस में अयनांश २२।२४।२७ को हीन किया तो १०।४।४४।२७ 'राश्यादि स्पष्ट गुलिक हुआ।

यमघण्टस्पष्टीकरण का उदाहरण:—

यहां रात्रि का जन्म है इसलिए रात्रिमान २५।४८ को इष्टदिन के वार चन्द्र की रात्रि के यमघण्ट गुणक ७ से गुणा तो १७७।४८ हुए। इन में ८ से भाग दिया तो लब्ध २२।१३।३० घट्यादि हुए। इन को रात्रि के जन्म होने के कारण दिनमान ३४।३६ में युक्त किया तो ५६।४९।३० यमघण्ट का घट्यादि इष्टकाल हुआ। इस यमघण्टेष्टकाल ५६।४९।३० से और सायन सूर्य ३।१३।५४।१६ से गढवाल के स्वोदयोंद्वारा लग्नानयनविधि से सायनलग्न साधन किया तो २।२६।५५।४८ 'सायन यमघण्टक' हुआ। इस में अयनांश २२।२४।२७ को हीन किया तो २।४।३१।२१ 'राश्यादि स्पष्ट यमघण्टक' हुआ। एवं काल, मृत्यु यामार्द्ध का भी साधन करना चाहिए।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मान्दि स्पष्टीकरण रीतिः—

उत्कृतिर्यमयमा धृतिशक्राः पङ्क्तिदर्शनयमास्तपनात्स्युः ।
नाडिका दिनतमीमितिनिघ्नाः खत्रिभिः परिहृता जनिरार्केः ॥ ७५ ॥

२६, २२, १८, १४, १०; ६, ४, २ ये रविवार के क्रम से 'मान्दि घटी' हैं। इन को दिनमान तथा रात्रिमान से गुणे अर्थात् दिन का जन्म हो तो दिनमान से इष्टवार की उक्त घटियों को गुणे और रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान से इष्टवार की उक्त घटियों को गुणे तब जो गुणनफल हो उस में ३० से भाग दे लब्ध घट्यादि होते हैं। दिन का जन्म हो तो सूर्योदय से मान्दि इष्ट घट्यादि होते हैं। यदि रात्रि का जन्म हो तो दिनमान में लब्ध घट्यादि को युक्त करे तब मान्दि इष्ट घट्यादि होते हैं। इन से और सायन सूर्य से स्वोदयों के द्वारा राश्यादि स्पष्ट मान्दि को साधे।

—: उदाहरण :—

यहां सोमवार की रात्रि का जन्म है इसलिए सोमवार की २२ घटियों को रात्रिमान २५।२३ से गुणा तो ५५८।४८ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १८।३७।३६ घट्यादि हुए। इन को दिनमान ३४।३६ में युक्त किया तो ५३।१३।३६ मान्दि इष्ट घट्यादि हुए। इन से और सायन सूर्य ३।१३।५४।१६ से गढवाल के स्वोदयोंद्वारा लग्नानयन विधि से सायनलग्न साधन किया तो २।५।१६।३ 'सायनमान्दि' हुआ। इस में अयनांश २२।२४।२७ को हीन किया तो १।१२।५१।३६ 'राश्यादि स्पष्टमान्दि' हुआ।

प्राणपद स्पष्टीकरण रीतिः—

पलीकृताभीष्टघटी दिनैर्हृता गृहादिकः प्राणपदोऽस्फुटोऽर्कयुक् ।
चरे स्थिरे द्वन्द्वगृहे गते रवौ क्रमाद्युतो भैः खगजाब्धिसम्मितैः ॥ ७६ ॥

इष्टकाल की घटी को ६० से गुणकर पलों को युक्त करे तब 'पलीकृत इष्ट घटी' होती है। उस पलीकृत इष्ट घटी में १५ से भाग दे लब्ध 'राशि' होती है। शेष को ३० से गुणकर १५ से भाग दे लब्ध 'अंश' होते हैं। शेष को ६० से गुणकर १५ से भाग दे लब्ध 'कला' होती हैं। इस प्रकार राश्यादि मध्यम प्राणपद होता है। उस मध्यम प्राणपद में अभीष्ट कालीन स्पष्ट सूर्य को युक्त कर के एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर अभीष्ट सूर्य चरराशि में हो तो उस एकान्त में स्थित सूर्य युक्त मध्यम प्राणपद की राशि में शून्य युक्त करे तब 'स्पष्टप्राण-पद' होता है। यदि इष्ट कालीन सूर्य स्थिर राशि में हो तो उस एकान्त में स्थित सूर्य युक्त मध्यम प्राणपद की राशि में ८ राशि को युक्त करे तब 'स्पष्ट प्राणपद' होता है। एवं इष्ट कालीन सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तो उस एकान्त में स्थित सूर्य युक्त मध्यम प्राणपद की राशि में ४ राशि को युक्त करे तब 'स्पष्ट प्राणपद' होता है।

—: उदाहरण :—

४६ घटी १३ पल इष्टकाल है। घटी ४६ को ६० से गुणा तो २७६० हुए। इन में १३ पल को युक्त किया तो २७७३ 'पलीकृत इष्टघटी' हुई। इस पलीकृत इष्टघटी २७७३ में १५ से भाग दिया तो लब्ध १८४ राशि हुई। शेष १३ को ३० से गुणा तो ३९० हुए। इन में १५ से भाग दिया तो लब्ध २६ अंश हुए। शेष शून्य होने के कारण कलादि शून्य हुए। यहां लब्ध राशि १८४ हैं ये १२ से अधिक हैं अतः इन को १२ से तष्ट

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किया तो शेष ४ राशि हुई। इस प्रकार ४ राशि २६ अंश ० कला ० विकला 'मध्यम प्राणपद' हुआ। इस मध्यम प्राणपद ४।२६।०।० में स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ को युक्त किया तो ७।१७।२९।४९ 'सूर्य युक्त मध्यम प्राणपद' हुआ। यहां इष्टकालीन सूर्य मिथुनराशि में है यह द्विस्वभावराशि है अतः सूर्ययुक्त मध्यम प्राणपद ७।१७।२९।४९ में ४ राशि को युक्त किया तो ११।१७।२९।४९ 'राश्यादि स्पष्ट प्राणपद' हुआ।

'स्पष्टा उपरवगाः'। 'उदाहरणमेतत्'।

धूमः	व्य. पा.	प. वे.	इं. ध.	उ. के.	कालः	मृत्युः	यामार्द्धः	य. घं.	गुलिकः	मान्दिः	प्राणपदम्
७	४	१०	१	१				२	१०	१	११
४	२५	२५	४	२१				४	४	१२	१७
४९	१०	१०	४९	२९				३१	४४	५१	२९
४९	११	११	४९	४९				२१	२७	३६	४९

इति ज्योतिस्तत्त्वे ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरणं तृतीयं समाप्तिमाप्तम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

राशिशील प्रकरणं प्रारभ्यते ।

मेषादि राशियों का कालाङ्ग विभाग तथा उनके स्वरूप का परिज्ञान—

कालस्य मूर्धा क्रिय आननं गौर्वक्षो नृयुग्मं हृदयं कुलीरः ।
क्रोडो मृगेन्द्रोऽम्बरभृत्कुमारी बस्तिस्तुला मेहनमस्य कौर्पिः ॥१॥
इष्वास ऊरू मकरस्तु जानू जंघे घटोंऽघ्रिद्वयमन्त्यराशिः ।
सस्यानलाढ्या प्रमदा प्लवस्था युग्मं सवीणं सगदं मृगास्यः ॥२॥
नक्रो झषौ कुम्भधरो नरस्तु तौली धनुर्भृज्जघनो हयस्य ।
शेषो भसंघो निजनामतुल्यः स्वदेशचारी स्वगुणी निरुक्तः ॥३॥

मेष राशि काल पुरुषका शिर, वृष मुख, मिथुन वक्षःस्थल (दोनों भुजाओंका अन्तरालवर्ती प्रदेश), कर्क हृदय, सिंह क्रोड (उदर), कन्या अम्बरभृत् (कटि या कमर), तुला बस्ति (नाभि प्रदेश), वृश्चिक मेहन (लिङ्ग), धनु ऊरु, मकर जानु, कुम्भ जंघा और मीन चरण (पैर) जानना चाहिएँ। कन्या राशि का स्वरूप (आकार) धान्य तथा अग्नि सहित नावमें स्थित स्त्री के समान है। मिथुन राशि का स्वरूप वीणा और गदायुक्त दो स्त्री पुरुषों के समान है। मकर राशि का आकार मृग के समान मुखवाले नक्र (नाकू) का है। मीन राशि का आकार विपरीत भाव से पुच्छ मस्तक युक्त दो मछलियों के समान है। कुम्भ राशि का स्वरूप जलग्रहण की इच्छा युक्त कन्धे में घट धारण किये हुए पुरुष के समान है। तुला राशि का आकार हाथ में तुला (तराजू) लिए हुए वैश्य के सदृश है। धनु का स्वरूप घोड़े के समान जंघायुक्त धनुष धारी पुरुष के समान है। अन्य राशियों के आकार अपने अपने गुण और नाम के समान हैं। एवं सब राशि अपने अपने देश के आश्रयवाली हैं

मेष राशि के पर्य्याय—

मेषः क्रियो मुख्यतमोऽजवृष्णी ऊर्णायुराद्योरणतुम्बुराख्याः ।
उरभ्रमेढ्रैडकविश्ववस्ताश्छागादिमाख्यौ प्रथमः शुभावी ॥४॥

मेष, क्रिय, मुख्यतम, अज, वृष्णि, ऊर्णायु, आद्य, उरण, तुम्बुर, उरभ्र, मेढ, एडक, विश्व, वस्त, छाग, आदिम, प्रथम, शुभ और अवि ये मेष राशि के पर्याय हैं।

वृष राशि के पर्य्याय—

वृषर्षभोस्रा वृषभाभिधानोऽनड्वान्बलीवर्दकसौरभेयौ ।
भद्रः ककुद्मान् मम पुङ्गवौ गोपतिर्द्वितीयोक्षकगोपगावः ॥५॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वृष, ऋषभ, उक्ष, वृषभ, अनड्वान्, बलीवर्द, सौरभेय, भद्र ककुद्मत्, गम, पुङ्ख, गोपति, द्वितीय, उक्षन् गोप और गो ये वृष राशि के पर्याय हैं।

मिथुन राशि के पर्याय—

द्वन्द्वो नृयुग्ममिथुने यमजित्मवीणा-
वादा नृयुङ् नृमिथुनं जितुमं तृतीयम्।
वीणाधरं युगलवैणिकयुग्मसंज्ञ-
स्त्रीपुंसकामयुगमन्मथवल्लकीयुक् ॥६॥

द्वन्द्व, नृयुग्म, मिथुन, यम, जित्म, वीणावाद, नृमिथुन, जितुम, तृतीय, वीणाधर, युगल, वैणिक, युग्म स्त्रीपुंस, काम युग, मन्मथ, वल्लकी और युक् ये मिथुन राशि के पर्याय हैं।

कर्क राशि के पर्याय—

कका कुलीरः कटकश्चतुर्थः कर्काटकः कर्कटकर्ककूर्म्माः।
शशाङ्कभं कर्कटकश्च चान्द्रं जम्बालनीडाभिधषोडशांघ्री ॥७॥

कर्किन्, कुलीर, कटक, चतुर्थ, कर्काटक, कर्कट, कर्क, कूर्म्म शशाङ्कभ कर्कटक चान्द्र, जम्बालनीड और षोडशांघ्रि मे कर्क के पर्याय हैं।

सिंह राशि के पर्य्याय

पञ्चास्यपञ्चनखकेसरिपुण्डरीक-
पञ्चाननाः करिरिपुर्हरिचित्रकायौ।
हर्य्यक्षसिंहमृगदृष्टिमृगेन्द्रलेयाः
कण्ठीरवेनभमृगाशनकाननेशाः ॥८॥

पञ्चास्य, पञ्चनख, केसरिन्, पुण्डरीक, पञ्चानन, करिरिपु, हरि, चित्रकाय, हर्य्यक्ष, सिंह, मृगदृष्टि मृगेन्द्र लेय, कण्ठीरव, इनभ, मृगाशन और काननेश ये सिंह राशि के पर्याय हैं।

कन्या राशि के पर्याय—

कन्यास्त्रीप्रमदाङ्गनायुवतयो बाला कुमारी वधूः
पाथोनो मृगलोचनैणनयना तन्वी वशा कामिनी।
वामाषष्ठसुताकुरङ्गनयनाः कन्यात्मको योषिता
योषिद्वामविलोचनाहरिणदृग्रामाभिरामाबलाः ॥९॥

कन्या, स्त्री, प्रमदा, अङ्गना, युवति, बाला, कुमारी, वधू पाथोन, मृगलोचना, एणनयना, तन्वी, वशा, कामनी, वामा, षष्ठ, सुता, कुरङ्गनयना, कन्यात्मक, योषिता, योषित्, वामविलोचना, हरिणदृश्, रामा, अभिरामा और अबला ये कन्या राशि के पर्याय हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तुला राशि के पर्य्याय—

तौली तुली घटतुलावणिजास्तुलाभृ-
ज्जूकस्तुलाधरपिचुक्रयविक्रयाख्याः ।
वैदेहकापणिकसप्तमसार्थवाहा-
स्तूलो वणिग्घटगतिस्तुलनैगमाख्यौ ॥१०॥

तौलिन्, तुलिन् घट, तुला, वणिज, तुलाभृत्, जूक, तुलाधर, पिचु, क्रयविक्रय, वैदेहक, आपणिक, सप्तम, सार्थवाह, तूल, वणिज्, घटगति, तुल और नैगम ये तुला राशि के पर्याय हैं।

वृश्चिक राशि के पर्याय—

वृश्चिकः कौर्पिकः कीटः कौर्प्यः कौजं सरीसृपः ।
द्विरेफो भ्रमरो भृङ्गश्चञ्चरीकाष्टमालिनः ॥११॥

वृश्चिक, कौर्पिक, कीट, कौर्प्य, कौज, सरीसृप, द्विरेफ, भ्रमर, भृङ्ग, चञ्चरीक, अष्टम और अलिन् ये वृश्चिक राशि के पर्याय हैं।

धनु राशि के पर्याय—

धन्वी चापधरस्तुरङ्गजघनो तौक्षी धनुः कामुक
कोदण्डं विशिखासनं गुरुगृहं धानुष्कधन्वास्त्रिणः ।
सारङ्गाश्वतनूनिषङ्गितुरगाः कोदण्डभृत्तौक्षिक-
श्चापी कार्मुकभृद्धनुर्धरहयाविष्वासनं चापभृत् ॥१२॥

धन्विन्, चापधर, तुरङ्गजघन, तौक्षिन्, धनुस्, कार्मुक, कोदण्ड, विशिखासन, गुरुगृह, धानुष्क, धन्वन्, अस्त्रिन्, सारङ्ग, अश्वतनू, निषङ्गिन्, तुरग, कोदण्डभृत्, तौक्षिक, चापिन्, कार्मुकभृत्, धनुर्धर, हय, इष्वासन और चापभृत् ये धनु राशि के पर्याय हैं।

मकर तथा कुम्भ राशि के पर्य्याय—

नक्रः शार्ङ्गरवः कुरङ्गहरिणौ वातायुरेणानन
आर्कोकेरमृगौ मृगास्यमकरावेणः कुरङ्गास्यकः ।
कुम्भः कुम्भधरो घटो घटधरश्चेतोगदः कुम्भभृद्
हृद्रोगः कलशः कुटः कलशभृच्चित्तामयस्तोयभृत् ॥१३॥

नक्र, शार्ङ्गरव, कुरङ्ग हरिण, वातायु, एणानन, आर्कोकेर, मृग, मृगास्य, मकर, एण और कुरङ्गास्य ये मकर के पर्याय हैं। कुम्भ, कुम्भधर, घट, घटधर, चेतोगद, कुम्भभृत, हृद्रोग, कलश, कुट, कलशभृत्, चित्तामय, और तोयभृत् ये कुम्भ राशि के पर्याय हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मीन राशि के पर्याय—

मीनः शकुल्यनिमिषौ पृथुरोमशक्ति-
वैसारिणास्तिमिविसारझषान्तिमान्त्याः ।
प्रोष्ठ्यण्डजेत्थसिशफर्य्यवसानमत्स्याः
क्षेत्रर्क्षराशिगृहभानि भसञ्ज्ञितानि ॥१४॥

मीन, शकुलिन्, अनिमिष, पृथुरोमन्, शक्ति, वैसारिण, तिमि, विसार, झष, अन्तिम, अन्त्य, प्रोष्ठिन् अण्डज, इत्थसि, शफरिन्, अवसान और मत्स्य ये मीन राशि के पर्याय हैं। क्षेत्र, ऋक्ष, राशि, गृह और भ ये राशिवाचक शब्द हैं।

राशि स्वामि परिज्ञान—

हरेरविः कर्किण इन्दुरिज्यश्चापान्त्ययोर्वैणिककन्ययोर्ज्ञः ।
कुम्भैणयोरार्किरजालिराश्योः पतिः कुजो गोधटयोः सितः स्यात् ॥१५॥

सिंह राशि का स्वामी सूर्य, कर्क का स्वामी चन्द्र, धनु तथा मीन का स्वामी गुरु, मिथुन और कन्याका स्वामी बुध, कुम्भ, और मकर का स्वामी शनि, मेष और वृश्चिक का स्वामी मङ्गल एवं वृष और तुला का स्वामि शुक्र होता है।

मेष राशि का नक्षत्र विभाग और उसकी स्वाम्यादि संज्ञा परिज्ञान—

सर्वे दास्रभयाम्येचवन्द्याद्यांघ्रिसमन्विते ।
राशिर्मेषः पतिर्भौमो नाऽनृपः पूर्वपश्चरः ॥१६॥
पित्तोऽग्निरतिशब्दोऽद्री रक्तः पृष्ठोदयी निशा ।
क्रूरश्चतुष्पदो रूक्ष उष्णश्च विषमो लघुः ॥१७॥

समस्त अश्विनी और समस्त भरणी तथा कृत्तिका के प्रथम पाद पर्यन्त 'मेषराशि' होती है अर्थात अश्विनी के आरम्भ से कृत्तिका के प्रथम चरण तक 'मेषका चन्द्रमा' होता है। इसका मङ्गलस्वामी, यह राशि पुरुष, क्षत्रिय जाति, पूर्वदिशा निवासी, चरसंज्ञक, पित्तप्रकृति, अग्नितत्त्व, महाशब्दकारी, पर्वतचारी, रक्तवर्ण, पृष्ठोदयी, रात्रिबली, क्रूरसंज्ञक, चतुष्पाद (चौपाया), रूक्षकान्ति (तेजहीन), उष्ण (गर्म), स्वभाव, विषम (उदय) और लघु (ह्रस्वमान) है।

वृष का नक्षत्र विभाग और उसकी स्वाम्यादि संज्ञा का परिज्ञान—

दहनस्य त्रयः पादा धातृचान्द्रार्द्धसंयुताः ।
वृषराशिर्भृगुर्भर्त्ता याम्येशो विट् स्थिरोऽबला ॥१८॥
मरुद्भिर्महाशब्दः सुभूः श्वेतः समो निशा ।
पृष्ठोदयी चतुष्पाच्च रूक्ष उष्णो लघुः शुभः ॥१९॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कृत्तिका के तीन चरण, समस्त रोहिणी और मृगशिर के दो पाद पर्यन्त 'वृषराशि' होती है। इसका शुक्र स्वामी, यह राशि दक्षिण दिशा निवासी, वैश्यजाति, स्थिरसंज्ञक, स्त्री राशि, वात प्रकृति, भूमितत्त्व, महाशब्दकारी, सुन्दरभूमिचारी, श्वेतवर्ण, सम उदय, रात्रिबली, पृष्ठोदयी, चतुष्पाद, रूक्षकान्ति, उष्ण स्वभाव, ह्रस्वमान, और शुभ संज्ञक है।

मिथुन का नक्षत्र विभाग और उसकी स्वाम्यादि संज्ञा का परिज्ञान—

ऐन्दवार्धं समग्रैशादित्यत्र्यंघ्रिसमन्वितम्।
नृयुग् बुधः पतिः प्रत्यक्स्वामी द्वन्द्वो नरोऽघ्रिजः ॥२०॥
ओजः क्रूरो हरिद्वायुः समः स्निग्धो बहुस्वनः।
द्विपदः कोदयी वन्य उष्णो धातुसमो दिवा ॥२१॥

मृगशिर के अन्त्य के दोपाद, समस्त आर्द्रा और पुनर्वसु के तीन पाद पर्यन्त 'मिथुनराशि' होती है। इसका बुध स्वामी, यह राशि पश्चिम दिशा निवासी, द्विस्वभाव संज्ञक, पुरुष राशि, शूद्रजाति, विषम उदय, क्रूर संज्ञक, हरितवर्ण, वायुतत्त्व, सम मान, स्निग्धकान्ति, महाशब्दकारी, दो पाद, शीर्षोदयी, वनचारी, उष्ण स्वभाव धातु सम (वात पित्त कफ मिश्रित) प्रकृति और दिन बली है।

कर्क का नक्षत्र विभाग और उसकी स्वाम्यादि संज्ञाका परिज्ञान—

आदित्यस्यान्तिमः पादः सर्वपुष्याहिसंयुतः।
कुलीरोऽब्जः प्रभुः सौम्याशेशो विप्रोऽचला चरः ॥२२॥
समोऽम्बु बहुपाच्छीतो रवोनः पाटलः कफी।
समः स्निग्धो जलसौम्यः पृष्ठोदयी निशाबली ॥२३॥

पुनर्वसुका चतुर्थ चरण, समस्त पुष्य तथा समस्त आश्लेषा पर्यन्त 'कर्क राशि' होती है। इसका चन्द्रमा स्वामी, यह राशि उत्तर दिशा निवासी, ब्राह्मण जाति, स्त्री राशि, चरसंज्ञक, सम उदय, जलतत्त्व, बहुत पाद, शीतल स्वभाव, शब्द रहित, पाटल (श्वेतरक्त मिश्रित) वर्ण, कफ प्रकृति, सम मान, स्निग्ध कान्ति (चिकना शरीर) जलचारी, सौम्य राशि, पृष्ठोदयी और रात्रिबली राशि है।

सिंह का नक्षत्र विभाग और उसकी स्वाम्यादि संज्ञाका परिज्ञान—

अखिले पित्र्यभाग्याख्ये अर्यमाद्यांघ्रिणा युते।
सिंहोऽर्कोऽस्येश्वरः पूर्वपतिः स्थास्नु विराट् पुमान् ॥२४॥
विषमोऽग्निर्दिवा रूक्षः पित्तः क्रूरो बहुध्वनिः।
चतुष्पात्कोदयी दीर्घः पीतधूम्रोष्णपर्वतः ॥२५॥

समस्त मघा तथा समस्त पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी के प्रथम पाद पर्यन्त 'सिंहराशि' होती है, इसका सूर्य स्वामी, यह राशि पूर्व दिशा निवासी, स्थिर संज्ञक, क्षत्रिय जाति, पुरुष राशि, विषम

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उदय, अग्नि तत्त्व, दिन बली, रूक्ष कान्ति, पित्त प्रकृति, क्रूरराशि, महाशब्दकारी, चतुष्पाद, शीर्षोदयी, दीर्घमान पीतधूम्र (पीला और धूमिला मिश्रित) वर्ण, उष्ण स्वभाव और पर्वत चारी है।

कन्या राशि का नक्षत्र विभाग और उसके स्वाम्यादि का परिज्ञान—

अर्य्यमत्यंघ्रयो हस्त चित्रापूर्वदलान्विताः ।
कन्याराशिः पतिर्ज्ञः स्त्रीव्यङ्गं विड् दक्षिणाधिपः ॥२६॥
पाण्डुः शीर्षोदया रूक्षा दीर्घा भूमिर्मरुद्दिवा
शीतोष्णा खण्डशब्दाच समा सौम्या द्विपात्सुभूः ॥२७॥

उत्तराफाल्गुनी के तीन चरण, समस्त हस्त और चित्राके दो चरण पर्यन्त ' कन्या राशि ' होती है। इस का बुध स्वामी, यह राशि स्त्री संज्ञक, द्विस्वभाव, वैश्यजाति, दक्षिण दिशा निवासी, पाण्डु (पीतश्वेत मिश्रित) वर्ण, शीर्षोदय, रूक्षकान्ति, दीर्घमान, भूमितत्त्व, वात प्रकृति, दिन बली, शीतोष्णस्वभाव, खण्डितशब्द, सम उदय सौम्य राशि, दो पाद और सुन्दर भूमि चारी है।

तुला राशि का नक्षत्र विभाग और उसके स्वाम्यादि का परिज्ञान—

चित्रापरदलं सर्वस्वातीद्वीशत्रिपादयुक् ।
घटोऽस्येशः सितः शूद्रश्चरो ना पश्चिमेश्वरः ॥२८॥
क्रूर ओजो दिवा स्निग्धो धातुतुल्यो द्विपान्मरुत् ।
निःशब्दः कोदयी दीर्घ उष्णश्चित्रो वनेचरः ॥२९॥

चित्रा के अन्त्य के दो पाद, समस्त स्वाती और विशाखा के तीन पाद पर्यन्त ' तुला राशि ' होती है। इसका शुक्र स्वामी, यह राशि शूद्र जाति, पुरुष संज्ञक, पश्चिम दिशा निवासी, क्रूर स्वभाव, दिन में बली, स्निग्ध शरीर, धातु सम प्रकृति, दो पाद, वायुतत्त्व, शब्दरहित, शीर्षोदयी, दीर्घमान, उष्णस्वभाव, विचित्रवर्ण और वनचारी है।

वृश्चिक राशिका नक्षत्र विभाग और उसके स्वाम्यादिका परिज्ञान—

विशाखान्तिमपादश्च सर्वमैत्रेन्द्रभान्वितः ।
वृश्चिकोमङ्गलोऽस्येशो विप्रःस्त्री स्थिर उत्तरेद् ॥३०॥
दीर्घः सौम्यो जलं कृष्णं स्निग्धः शीर्षोदयी समः ।
कफी कीटोऽम्बु निःशब्दो दिवाबली च शीतलः ॥३१॥

विशाखा का चौथा चरण, समस्त अनुराधा और समस्त ज्येष्ठा पर्यन्त ' वृश्चिक राशि ' होती है। इसका मङ्गल स्वामी, यह राशि ब्राह्मण जाति, स्त्री संज्ञक, स्थिर राशि, उत्तर दिशा निवासी, दीर्घमान, सौम्य राशि, जल तत्त्व, कृष्ण (काला) वर्ण, स्निग्धकान्ति, शीर्षोदयी, सम उदय, कफ प्रकृति, कीट (बिलवासी), जलचारि शब्द रहित, दिनबली और शीतल स्वभाववाली है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धनू राशि का नक्षत्र विभाग और उसके स्वाम्यादिका परिज्ञान—

मूलं तोयं समस्तं च वैश्वस्याद्यांघ्रिणान्वितम् ।
धनूराशिर्गुरुःस्वाम्यैन्द्रीशो द्वन्द्वो नृपो नरः ॥३२॥
स्वर्णाभोऽग्निर्निशा रूक्षो द्वितुर्यांघ्रिगिरिः समः ।
पृष्ठोदयः पित्त उष्ण ओजः क्रूरो बहुस्वनः ॥३३॥

समस्त मूल तथा समस्त पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा के प्रथम चरण पर्यन्त ' धनू राशि ' होती है। इसका बृहस्पति स्वामी, यह राशि पूर्व दिशा निवासी, द्विस्वभाव संज्ञक, क्षत्रिय जाति, पुरुष राशि, स्वर्ण (सोने के समान पीला) वर्ण, अग्नितत्त्व, रात्रिबली, रूक्षकान्ति, पूर्वार्द्ध में द्विपद और उतरार्द्ध में चतुष्पद, पर्वत चारी सममान, पृष्ठोदयी, पित्त प्रकृति, उष्ण स्वभाव, विषम उदय, क्रूर राशि और महाशब्दकारी है।

मकर राशिका नक्षत्र विभाग उसके स्वाम्यादिका परिज्ञान—

वैश्वस्य त्र्यंघ्रयः श्रुत्या वस्वर्द्धेनान्विताश्च ते ।
मकरोऽस्याधिपो मन्दो वामा विड् याम्यपश्चरः ॥३४॥
तुर्य्यांघ्र्यम्भाः समो नक्तं रूक्षः पिङ्ग समः सुमूः ।
शीतोष्णोः खण्डशब्दो भूः पृष्ठोदयो मरुच्छुभः ॥३५॥

उत्तराषाढा के तीन चरण, समस्त श्रवण और धनिष्ठा के दो चरण पर्यन्त ' मकर राशि ' होती है। इसका शनि स्वामी, यह राशि स्त्रीसंज्ञक, वैश्यजाति, दक्षिण दिशा निवासी, चरसंज्ञक, पूर्वार्द्ध में चतुष्पद और उत्तरार्द्ध में जलचर, सम उदय, रात्रिबली, रूक्ष कान्ति, पिङ्ग (पिङ्गल पक्षी के समान) वर्ण, सम मान, सरल भूमिचारी, शीतोष्णस्वभाव, खण्डित स्वर, भूमि तत्त्व, पृष्ठोदयी, वात प्रकृति और सौम्य राशि है।

कुम्भ का नक्षत्र विभाग और उसके स्वाम्यादि का परिज्ञान—

धनिष्ठार्द्धं शतभिषाऽजैकपादत्रिपादयुक् ।
कुम्भः पतिः शनिः शूद्रः प्रतीचीशो नरः स्थिरः ॥३६॥
कर्बुरोऽर्द्धरवो वायुर्दिवा शीर्षोदयी द्विपात् ।
वन्यो धातुसमः स्निग्धः क्रूरोष्णो विषमो लघुः ॥३७॥

धनिष्ठा के अन्त्य के दो चरण, सम्पूर्ण शतभिषा और पूर्वाभाद्रपदा के तीन चरण पर्यन्त ' कुम्भ राशि ' होती है। इसका शनि स्वामी, यह राशि शूद्र जाति, पश्चिम दिशा निवासी, पुरुष राशि, स्थिरसंज्ञक, कर्बुर (विचित्र) वर्ण, अर्द्ध शब्दकारी, वायुतत्त्व, दिनबली, शीर्षोदयी, दो पाद, वनचारी धातुसम अर्थात् त्रिदोष प्रकृति, स्निग्धकान्ति, क्रूर राशि उष्णस्वभाव, विषम उदय और लघुमानवाली है।

मीन का नक्षत्र विभाग और उसके स्वाम्यादि का परिज्ञान—

अन्त्यपादोऽजपादस्याहिर्बुध्न्यरेवतीयुतः ।
मीनोऽस्येशो गुरुर्द्वन्द्वो विप्रो वामोत्तरेश्वरः ॥३८॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वभ्रुर्जलं दिनं स्निग्धो ह्रस्वः पीतः कफी समः
उभयोदग्यपत्सौम्यो वाश्वरः शब्दवर्जितः ॥३९॥

पूर्वाभाद्रपदाका चौथा पाद, समस्त उत्तराभाद्रपदा और रेवती की समाप्ति पर्यन्त 'मीन राशि' होती है। इसका बृहस्पति स्वामी, यह राशि द्विस्वभावसंज्ञक, ब्राह्मण जाति, स्त्री राशि, उत्तर दिशा निवासी, वभ्रु (न्यौला सदृश) वर्ण, दिनबली, स्निग्धकान्ति, ह्रस्वमान, शीतल स्वभाव, कफ प्रकृति, सम उदय, उभयोदयी (मुखपृच्छोदयी) पाद रहित, सौम्य राशि, जलचारी और शब्दरहित है।

मेषादि राशियों की सप्रजादिसंज्ञा परिज्ञान--

प्रजान्विताः कुम्भभवालिकर्कनक्रा वशाः स्त्रीहययुग्मसिंहाः।
अल्पप्रजा गोऽजघटास्तुलाल्योः क्रमेण दग्धे परपूर्वखण्डे ॥४०॥

कुम्भ, मीन, वृश्चिक, कर्क और मकर ये प्रजायुक्त राशि हैं। कन्या, धनु, मिथुन और सिंह ये वन्ध्या राशि हैं। वृष, मेष, और तुला ये अल्पप्रजा राशि हैं। तुला का परार्द्ध और वृश्चिक का पूर्वार्द्ध दग्ध हैं। अर्थात् बीज हीन हैं।

मेषादि राशियों की ग्राम्यादि संज्ञा परिज्ञान--

पौरा धनुस्त्रीवणिजो मृगाद्यसिंहावरण्यौ घटगोऽजयुग्माः।
ग्राम्याः कुरङ्गान्त्यविसारकर्काः पाथश्चरा वृश्चिक एव कीटः ॥४१॥

धनु, कन्या और तुला ये पौर (नगरवासी) राशि हैं। मकर का पूर्वार्द्ध और सिंह ये वनचर राशि हैं। कुम्भ, वृष, मेष और मिथुन ये ग्राम्य राशि हैं। मकर का उत्तरार्द्ध, मीन और कर्क ये जलचर राशि हैं। एवं वृश्चिक ही कीट राशि हैं।

मेषादि राशियों का मान परिज्ञान--

खोष्ठाः सिद्धा दन्तिदस्रारदाः षड्ग्रामा मेषाध्वाकुपाराः क्रमण।
मेषादीनां षड्ङ्गहाणां प्रमाणं तौल्यादीनामीर्य्यते व्यस्तमार्द्धैः ॥४२॥

मेष का २०, वृष का २४, मिथुन का २८, कर्क का ३२, सिंह का ३६ और कन्या का ४० राशि मान है। तुलादि छः राशियों का मान पूर्वाचार्योंने विपरीत कहा है अर्थात तुला का ४०, वृश्चिक का ३६, धनु का ३२, मकर का २८, कुम्भ का २४ और मीन का २० राशिमान है।

मेषादि राशियों की पुष्करादिसंज्ञा परिज्ञान--

मेषतश्चतुरावृत्या पुण्याख्य पुष्कराभिधः।
आधानः क्रमशो धीरैर्वेद्या द्वादश राशयः ॥४३॥

मेष के क्रम से चार आवृति कर के 'पुण्य' 'पुष्कर' और 'आधान' इस क्रम से पण्डितजनोंने बारह राशियों की पुण्यादि संज्ञा जाननी।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मेषादि राशि तथा उनके नवांशों का पुष्करांश परिज्ञान—

चतुर्षु मेषु क्रियसिंहकार्मुकपूर्वेषु नाकेन्द्रजिनाद्रिसम्मिताः ।
स्युःपुष्करांशा अपि गोऽशकानगाङ्का बाणरामा गजषड् महीगुणाः ॥४४॥

मेष, सिंह और धनु इन तीन राशियों के क्रमसे चार चार राशियों में २१।१४।२४।७ ये 'पुष्करांश' हैं अर्थात् मेष, सिंह और धनु के २१। वृष, कन्या और मकर के १४। मिथुन, तुला और कुम्भ के २४। कर्क वृश्चिक और मीन के ७ पुष्करांश हैं। एवं मेष, सिंह धनु में सप्तम और नवम नवांश, वृष कन्या मकर में पञ्चम और तृतीय नवांश, मिथुन तुला कुम्भ में षष्ठ और अष्टम नवांश, कर्क वृश्चिक मीन में प्रथम और तृतीय नवांश पुष्करसंज्ञक होते हैं। ये निन्दित नवांश हैं।

राशि दृष्टि परिज्ञान—

भुजङ्गमेष्वीशगृहांश्चराख्याः स्वतः स्थिरा गोगुणरागराशीन् ।
विलोकयन्ति क्रमतो द्विदेहाः पूर्णं तुरङ्गश्रुतिपंक्तिभानि ॥४५॥

चर राशि अपने से अष्टम, पञ्चम और एकादश राशि को पूर्ण दृष्टि से देखती हैं। स्थिर राशि अपनेसे नवम, तृतीय और षष्ठ राशिको पूर्ण दृष्टिसे देखती हैं। एवं द्विस्वभाव राशि अपनेसे सप्तम, चतुर्थ और दशम राशि को पूर्ण दृष्टि से देखती हैं।

राशियों का मित्रत्वादि तथा वश्यादि परिज्ञान—

वर्गे हुताशानिलयो र्वसुन्धराकीलालयोः स्यात्सखिताऽन्यथाऽरिता ।
हित्वा हरिं मर्त्यवशा अनूनकाः सिंहस्यनिघ्ना निखिला अलिं विना ॥४६॥

अग्नि तत्त्व (मेष, सिंह तथा धनु) और वायुतत्त्व (मिथुन, तुला और कुम्भ) की परस्पर मित्रता होती है। एवं जलतत्त्व (कर्क, वृश्चिक तथा मीन) और पृथ्वीतत्त्व (वृष, कन्या तथा मकर) की परस्पर मित्रता और उक्त प्रकार से विपरीत तत्त्व के वर्ग में शत्रुता होती है। सिंह को छोडकर शेष राशि मनुष्य राशि के वश में होती हैं। एवं वृश्चिक को छोडकर अन्य सब राशि सिंह राशि के वश में होती हैं।

राशियों की सजल निर्जल संज्ञा परिज्ञान—

कुलीरकुम्भान्त्यकुरङ्गकौर्पितुलाधराः सोदकराशयोऽमी ।
पञ्चास्यपाथोनहयाङ्गयुग्माजपुङ्गवा निर्जलराशयःस्युः ॥४७॥

कर्क, कुम्भ, मीन, मकर, वृश्चिक और तुला ये सजल राशि हैं। सिंह, कन्या, धनु, मिथुन, मेष और वृष ये निर्जल राशि हैं।

राशियों की विषम, सम तथा धात्वादि संज्ञा परिज्ञान—

सञ्ज्ञे स्यातामोजयुग्मे गृहाणां छागादीनां छागतो धातुमूले ।
जीवो जीवो जीवयुङ् मृत्तिकान्तं हेम्नो धातुर्मूलमूक्तं तृणान्तम् ॥४८॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मेषादि राशियों के क्रमसे ओज (विषम) युग्म (सम) ये दो संज्ञायें हैं। अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ ये विषम राशि हैं। वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन ये सम राशि हैं। एवं मेषादि राशियों के क्रम से धातु, मूल और जीव ये तीन संज्ञायें हैं अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर ये धातु राशि हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ ये मूल राशि हैं। मिथुन, कन्या, धनु और मीन ये जीव राशि हैं। सब प्रकार की जाति के प्राणी जीवसंज्ञक होता है। वृक्ष से तृण पर्यन्त मूलसंज्ञक होता है। एवं सुवर्ण से मृत्तिका (मट्टी) पर्यन्त धातुसंज्ञक होता है।

अन्धादि संज्ञा परिज्ञान—

अन्धाख्या अजहरिपुङ्गवा निशीथे
मध्याह्ने नरमिथुनाङ्गनाकुलीराः।
पूर्वाह्णे विनिगदितौ तुलाधराली
एडाख्यौ हरिणहयौ तथाऽपराह्णे ॥४९॥
सन्धिद्वये कार्मुकभृत्कुरङ्गौ पङ्गू प्रदिष्टौ विबुधैर्भसन्धिः।
कर्कीटकाल्यन्तिमभावसानं गण्डान्तमाहुस्तमिति ग्रहज्ञाः ॥५०॥

मेष, सिंह और वृष ये अर्द्ध रात्रि में अन्ध होते हैं। मिथुन, कन्या और कर्क ये मध्यान्ह में अन्ध होते हैं तुला और वृश्चिक ये दोनों पूर्वाह्ण में बधिर होते हैं। एवं मकर और धनु अपराह्णकाल में बधिर होते हैं। मकर और धनु ये दोनों प्रातःसन्ध्या तथा सायं सन्ध्या में पङ्गु होते हैं। कर्क, वृश्चिक और मीन इन तीनों राशियोंका अवसानकाल राशिसन्धि संज्ञक होता है। उसको पण्डितजन 'गण्डान्त' कहते हैं।

राशि द्रव्य परिज्ञान—

वस्त्रादि शाल्याद्यटवीप्रजातफलं ततः कन्दलिकादि धान्यम्।
त्वक्सारकं मुद्गमुखंच वस्त्रतैलादि लोहेक्षुमुखं समस्तम् ॥५१॥
तुरङ्गशस्त्रं तपनीयपूर्वं कीलालजातं निखिलं प्रसूनम्।
पानीयजं मेषमुखेषु भेषु द्रव्याणि वेद्यानि बुधैः क्रमेण ॥५२॥

मेष का वस्त्रादि, वृष का चावल इत्यादि पूर्वधान्य, मिथुन का वन में उत्पन्न फल, कर्क का केला इत्यादि सिंह का गेहूं इत्यादि पश्चिम धान्य, कन्या का त्वक्सार (चमड़ा गूंद) इत्यादि, तुला का मूंग इत्यादि तथा तिल वस्त्रादि, वृश्चिक का लोह, ऊख तथा उस के समस्त पदार्थ, धनु का घोडा शस्त्रादि, मकर का सुवर्णादि, कुम्भ का जल में उत्पन्न पुष्प और मीन का समस्त जलजन्य पदार्थ द्रव्य जानने चाहिएँ।

राशि ध्रुव दिशा परिज्ञान—

प्रश्नाङ्गराशीशदिशोऽभिधानं ध्रुवः प्रदिष्टो यवनैः पुराणैः।
धराधिपस्तत्ध्रुवगोऽचिरेण नूनं तदानीं स्वरिपुं निहन्यात् ॥५३॥

प्रश्न समय में जो लग्न हो उस राशि के स्वामी की दिशा का नाम 'ध्रुव' कहा है। यदि राजा ध्रुव दिशा की ओर अपनी सेना का सञ्चालन करे तो वह निश्चयसे अपने शत्रुको मारता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चन्द्रमा के मेषादि राशियों में मृत्युसूचकांश परिज्ञान—

भुजङ्गमाः पञ्चकृतिस्तथा ऽऽ कृती स्वर्गाधरित्री श्रुतयो जगद्यमाः।
स्मृतिः कृती शून्यभुवोविधोर्लवामेषादिके मृत्युकरा जनुर्मुखे ॥५४॥

जन्म समय में वा मुहूर्त समय में मेषादि राशियोंमें क्रम से २०, २५, २२, २२, १, ४, २३, १८, २०, २०, १० ये चन्द्रमा के मृत्युसूचकांश हैं।

चन्द्रमा के मेषादि राशियों में पुष्करांश परिज्ञान—

त्रिविष्टपेन्द्रा धृतिरष्ट गोऽब्जा गोसिद्धरुद्रा विकृतिर्युगैके।
नन्देन्दवोऽङ्काः शशिनः क्रियादौ स्युः पुष्करांशाः शुभदा भवादौ ॥५५॥

जन्म समय में वा मुहूर्त समय में मेषादि राशियोंमें क्रमसे २१, १४, १८, ८, १९, ९, २४, ११, २३, १४, १९, ९ ये चन्द्रमा के पुष्करांश हैं।

राशिदिग्बल परिज्ञान—

प्राच्यां सवीर्याद्विपदाः पुरस्थाश्चतुष्पदाः कर्म्मणि दक्षिणस्थाः।
प्रत्यक्स्थितोऽलिः सबलः स्मरस्थोऽम्भस्यम्बुजाता दिशि यक्षराजः ॥५६॥

द्विपद राशि (मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ और धनु का पूर्वार्द्ध। पूर्व दिशा में तथा लग्न में बलवान् होती हैं। चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, धनुका उत्तरार्द्ध और मकर का पूर्वार्द्ध) दशमभावमें तथा दक्षिण दिशा में बलवान् होती हैं। वृश्चिक राशि पश्चिम दिशामें और सप्तमस्थान में बली होती है। एवं जलचर राशि (कर्क, मीन और मकर का उत्तरार्द्ध) चतुर्थभाव में और उत्तर दिशामें बलवान् होती हैं।

राशि काल बल परिज्ञान—

चतुष्टयस्था बलसंयुता मनुभुवोऽह्नि कीटा सहसा समन्विताः।
सन्धिद्वये कण्टकगाश्चतुष्पदाः स्युर्यामवत्यां बलिनश्चतुष्टये ॥५७॥

केन्द्र और दिन में मनुष्य राशि बली होती हैं। केन्द्र और दोनों सन्धियों में कीट राशि बली होती हैं। एवं केन्द्र और रात्रि में चतुष्पद राशि बली होती हैं।

राशियों का सबलत्व परिज्ञान—

यो राशिरीशेन निजेन दृष्टयुक्तो विदा वाक्पतिनेक्षितः सः।
वेद्यो बली नो सहितेक्षितो ऽन्यैः स्वीयस्य शीलात्स्वफलं दिशेद्यः ॥५८॥
राशिर्न रवेरीक्षित संयुतःस सन् सौम्ययुक्तेक्षित उग्रराशिः।
सद्राशिरुग्रान्वित लोकितो ऽसन् केन्द्रादिगः पूर्णसमोनवीर्यः ॥५९॥

जो राशि अपने स्वामी से दृष्ट वा युक्त हो और बृहस्पति तथा बुध से दृष्ट हो एवं अन्य ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट न हो वह राशि बली जाननी चाहिए। जो राशि ग्रह से दृष्ट वा युक्त न हो वह राशि अपने स्वभाव से ही अपने शुभाशुभ फलको देती है। जो रवि राशि शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो वह शुभ होती है। एवं जो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सौम्य राशि पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो वह अशुभ होती है। केन्द्र (१।४।७।१०) पणफर (२।५।८।११) और आपोक्लिम (३।६।९।१२) स्थान में स्थित राशि क्रम से पूर्ण, मध्यम और हीन बली होती है अर्थात् केन्द्र गत राशि का ६० सम्पूर्ण बल, पणफर गत राशि का ३० अर्द्धबल और आपोक्लिम गत राशिका १५ पादबल होता है।

प्रकारान्तर से राशियों का सबल निर्बलत्व परिज्ञान—

यो राशिः स्वपतीक्षितान्वित उताचार्य्येन्दु विद्वीक्षितः
सौम्यस्थानगतो बली यदि तथा सनाथमित्रोच्चगैः ।
दृष्टाढ्यो ऽल्पबलो ऽपरैर्दिविचरैर्मिश्रग्रहैर्मध्यमो
नो दृष्टःसहितः समस्तखचरै राशिर्मतः सो ऽबलः ॥ ६० ॥

जो राशि अपने पति से दृष्ट वा युक्त हो अथवा गुरु, चन्द्र और बुध से दृष्ट हो एवं सौम्य स्थान (१, २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११) में हो वह राशि बली होती है। अथवा जो राशि शुभग्रह, स्वामी, स्वामी के मित्र तथा उच्चगत ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो वह राशि बली होती है। जो राशि अन्य ग्रहों से दृष्ट वा युक्त हो वह 'अल्पबली' जो राशि मिश्र (शुभाशुभ) ग्रहों से दृष्ट वा युक्त हो वह 'मध्यबली' और जो राशि समस्त ग्रहों से दृष्ट वा युक्त न हो वह 'निर्बल' कही है।

दश वर्गों के नामों का परिज्ञान—

गेहं होरा त्र्यंशकःसप्तमांश शेवध्यंशो दिग्लवो द्वादशांशः ।
पृथ्वीपांशस्त्रिंशदंशो ऽम्बराङ्गभागो वर्गाः स्युर्दशैते क्रमेण ॥ ६१ ॥

गृह, होरा, द्रेष्काण, सप्तांश, नवांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, त्रिंशांश और षष्ट्यंश ये क्रम से दशवर्ग हैं।

होरा, द्रेष्काण, नवांश तथा द्वादशांश साधन रीति:—

होरे रवीन्द्वोरसमे ऽब्जरव्योः समे दृगाणाः स्वशराङ्कपानाम् ।
भेषात्त्रिरव्येगतुलाब्जभेभ्यो ऽङ्कांशाःस्वभाद्या भगभागपाः स्युः ॥ ६२ ॥

राशि के दो भागों का नाम होरा है। विषम राशि में ० शून्य अंश से १५ अंश पर्यन्त सूर्य की होरा और १५ अंश से ३० अंश पर्यन्त चन्द्रमा की होरा होती है। एवं सम राशि में ० अंश से १५ अंश पर्यन्त चन्द्रमा की होरा और १५ अंश से ३० अंश पर्यन्त सूर्य की होरा होती है। राशि के तीन भाग को द्रेष्काण कहते हैं। प्रत्येक राशि में अर्थात् विषम वा सम राशि में ० शून्य अंश से १० अंश पर्यन्त जिस राशि में ग्रह हो उसी राशि का स्वामी प्रथम द्रेष्काणेश होता है। १० अंश से २० अंश पर्यन्त जिस राशि में ग्रह हो उस से पञ्चम राशि का स्वामी द्वितीय द्रेष्काणेश होता है। एवं २० अंश से ३० अंश पर्यन्त जिस राशि में ग्रह हो उस से नवम राशि का स्वामी तृतीय द्रेष्काणेश होता है। राशि के नौ भाग को नवांश कहते हैं। मेष, सिंह और धनु राशि में मेष से नवांश को गिने। वृष, कन्या और मकर में मकर से नवांश को गिने। मिथुन, तुला और कुम्भ में तुला से नवांश को गिने। एवं कर्क, वृश्चिक और मीन में कर्क से नवांश को गिनना चाहिए। राशि के बारह भागों को द्वादशांश कहते हैं। ग्रह जिस राशि में स्थित हो उस राशि से द्वादशांश को गिने।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'होराचक्रम्'।

अंशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामिनः
१५।०	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	देवाः
३०।०	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५	पितरः

'द्रेष्काणचक्रम्'

अंशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामिनः
१०।०	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	ब. ९	श. १०	श. ११	ब. १२	नारदः
२०।०	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	अगस्त्यः
३०।०	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	दुर्वासाः

'नवांशचक्रम्'

अंशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामिनः
३।२०	मं. १	श. १०	शु. ७	चं. ४	मं. १	श. १०	शु. ७	चं. ४	मं. १	श. १०	शु. ७	चं. ४	देवताः
६।४०	शु. २	श. ११	मं. ८	सू. ५	शु. २	श. ११	मं. ८	सू. ५	शु. २	श. ११	मं. ८	सू. ५	नगाः
१०।०	बु. ३	बृ. १२	बृ. ९	बु. ६	बु. ३	बृ. १२	बृ. ९	बु. ६	बु. ३	बृ. १२	बृ. ९	बु. ६	राक्षसाः
१३।२०	चं. ४	मं. १	श. १०	शु. ७	चं. ४	मं. १	श. १०	शु. ७	चं. ४	मं. १	श. १०	शु. ७	देवताः
१६।४०	सू. ५	शु. २	श. ११	मं. ८	सू. ५	शु. २	श. ११	मं. ८	सू. ५	शु. २	श. ११	मं. ८	नगाः
२०।०	बु. ६	बु. ३	ब. १२	बृ. ९	बु. ६	बु. ३	ब. १२	बृ. ९	बु. ६	बु. ३	बृ. १२	बृ. ९	राक्षसाः
२३।२०	शु. ७	चं. ४	मं. १	श. १०	शु. ७	चं. ४	मं. १	श. १०	शु. ७	चं. ४	मं. १	श. १०	देवताः
२६।४०	मं. ८	सू. ५	शु. २	श. ११	मं. ८	सू. ५	शु. २	श. ११	मं. ८	सू. ५	शु. २	श. ११	नराः
३०।०	बृ. ९	बु. ६	बु. ३	बृ. १२	बृ. ९	बु. ६	बु. ३	बृ. १२	बृ. ९	बु. ६	बु. ३	बृ. १२	राक्षसाः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'द्वादशांशचक्रम्'।

अंशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामिनः
२।३०	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	गणेशः
५।०	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	नासत्यौ
७।३०	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	यमः
१०।०	चं. ४	सू. ५	बु. ६	श. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	अहिः
१२।३०	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बु. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	गणेशः
१५।०	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	नासत्यौ
१७।३०	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	यमः
२०।०	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	अहिः
२२।३०	बृ. ९	श. १०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु ६	शु ७	मं. ८	गणेशः
२५।०	श. १०	श ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	नासत्यौ
२७।३०	श. ११	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	यमः
३०।०	बृ. १२	मं. १	शु. २	बु. ३	चं. ४	सू. ५	बु. ६	शु. ७	मं. ८	बृ. ९	श. १०	श. ११	अहिः

सप्तांश, दशमांश, षोडशांश और त्रिंशांश साधन रीतिः—

सप्तांशपा ओजगृहे स्वभाद्याः समेऽस्तभाद्या अथ दिग्लवेशाः ।
समेऽङ्कभाद्या विषमे स्वभाद्या अथो चरेऽजात्स्थिरभे मृगेन्द्रात् ॥ ६३ ॥
द्वन्द्वेऽश्विभात्षोडशभागनाथा अथौजभेऽसार्किगुरुज्ञशुक्राः ।
शरेष्विभागाक्षमितांशकानांत्रिंशांशपास्ते समभे विलोमात् ॥ ६४ ॥

राशिके सात भाग को सप्तांश कहते हैं। 'ग्रह' विषम राशिमें होतो उसी राशिसे सप्तांश को गिने। यदि 'ग्रह' सम राशिमे होतो जिस राशिमें ग्रहस्थित हो उससे जो सातवीं राशि हो उससे सप्तांश को गिनना चाहिये। राशिके दशभाग को दशमांश कहते हैं। 'ग्रह' समराशिमें होतो जिस राशिमें ग्रह स्थित हो उससे जो नवम राशि हो उससे दशमांश को गिने। यदि 'ग्रह' विषम राशिमें स्थित होतो उसी राशिसे दशमांश का गिनना चाहिए। राशिके सोलहवें भागको षोडषांश कहते हैं। 'ग्रह' चर (मेष, कर्क, तुला और मकर) राशिमें होतो मेषसे षोडषांश को गिने। 'ग्रह' स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) राशिमें होतो सिंहसे षोडषांश को गिने।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

एवं 'ग्रह' द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु और मीन) राशिमें होतो धनुमे षोडशांश को गिनना चाहिए। विषम (१।३।५।७।९।११) राशिमें ५, ५, ८, ७, ५ इन अंशोंके क्रमसे मंगल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र ये त्रिंशांशक के स्वामी होते हैं। एवं सम (२।४।६।८।१०।१२) राशिमें व्यस्त (विलोम) विधिमे त्रिंशांशक के स्वामी होते हैं अर्थात् ५, ७, ८, ५, ५, इन अंशोंके शुक्र, बुध, गुरु, मंगल और शनि ये त्रिंशांशके स्वामी होते हैं।

'समांशचक्रम्'।

अंशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामिनः
४।१७।०	मं. १	मं ८	बु. ३	श. १०	सू. ५	बृ. १२	शु. ७	शु. २	बृ. ९	चं. ४	श. ११	बु. ६	क्षारन
८।३४।१७	शु. २	बृ. ९	चं. ४	श. ११	बु. ६	मं. १	मं. ८	बु. ३	श. १०	सू. ५	बृ. १२	शु. ७	क्षीरज
१२।५१।२६	बु. ३	श. १०	सू. ५	बृ. १२	शु. ७	शु. २	बृ. ९	चं. ४	श. ११	बु. ६	मं. १	मं. ८	दंधि
१७।८।३४	चं. ४	श. ११	बु. ६	मं. १	मं. ८	बु. ३	श. १०	सू. ५	बृ. १२	शु. ७	शु. २	बृ. ९	आज्यज
२१।२५।४३	सू. ५	बृ. १२	शु. ७	शु. २	बृ. ९	चं. ४	श. ११	बु. ३	मं. १	मं. ८	बु. ३	श. १०	इक्षुः
२५।४२।५१	बु ६	मं. १	मं. ८	बु. ३	श. १०	सू. ५	बृ. १२	शु. ७	शु. २	बृ. ९	चं. ४	श. ११	मधुः
३०।०।०	शु. ७	शु. २	बृ. ९	चं. ४	श. ११	बु. ६	मं. १	मं. ८	बु. ३	श. १०	सू. ५	बृ. १२	शुद्धाम्बु

'दशमांशचक्रम्'।

अंशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	नि. स्वा.	ग. स्वा.
३।०	मं. १	श. १०	बु. ३	बृ. १२	सू. ५	शु. २	शु. ७	सू. ५	बृ. ९	बु. ६	श. ११	मं. ८	इन्द्रः	अनन्तः
६।०	शु. २	श. ११	चं. ४	मं. १	बु. ६	बु. ३	मं. ८	सू. ५	श. १०	शु. ७	बृ. १२	बृ. ९	आप्तः	ब्रह्मा
९।०	बु. ३	बृ. १२	सू. ५	शु. २	शु. ७	चं. ४	बृ. ९	बु. ३	श. ११	मं. ८	मं. १	श. १०	यमः	ईशानः
१२।०	चं. ४	मं. १	बु. ६	बु. ३	मं. ८	सू. ५	श. १०	शु. ७	बृ. १२	बृ. ९	शु. २	श. ११	राक्षसः	कुबेरः
१५।०	सू. ५	शु. २	शु. ७	चं. ४	बृ. ९	बु. ६	श. ११	मं. ८	मं. १	श. १०	बु. ३	बृ. १२	वरुणः	वायुः
१८।०	बृ. ६	बु. ३	मं. ८	सू. ५	श. १०	शु. ७	बृ. १२	बृ. ९	शु. २	श. ११	चं. ४	मं. १	वायुः	वरुणः
२१।०	शु. ७	चं. ४	बृ. ८	बु. ६	श. ११	मं. ८	मं. १	श. १०	बु. ३	बृ. १२	सू. ५	शु. २	कुबेरः	राक्षसः
२४।०	मं. ८	सू. ५	श. १०	शु. ७	बृ. १२	बृ. ९	शु. २	श. ११	चं. ४	मं. १	बु. ६	बु. ३	ईशानः	यमः
२७।०	बृ. ९	बु. ६	श. ११	मं. ८	मं. १	श. १०	बृ. ३	बृ. १२	सू. ५	शु. २	शु. ७	चं. ४	ब्रह्मा	आप्तः
३०।०	श. १०	शु. ७	बृ. १२	बृ. ९	शु. २	श. ११	चं. ४	मं. १	बु. ६	बु. ३	मं. ८	सू. ५	अनन्तः	इन्द्रः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'षोडशांशचक्रम्'।

अंशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	वि.स्वा.	स.स्वा.
१।५२।३०	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	ब्रह्माः	सूर्यः
३।४५।०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	विष्णुः	शिवः
५।३७।३०	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	शिवः	विष्णुः
७।३०।०	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	सूर्यः	ब्रह्मा
९।२२।३०	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	ब्रह्मा	सूर्यः
११।१५।०	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	विष्णुः	शिवः
१३।७।३०	शु. ७	श ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शिवः	विष्णुः
१५।०।०	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	सूर्यः	ब्रह्मा
१६।५२।३०	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	ब्रह्मा	सूर्यः
१८।४५।०	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	चं. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	विष्णुः	शिवः
२०।३७।३०	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	शिवः	विष्णुः
२२।३०।०	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	सूर्यः	ब्रह्मा
२४।२२।३०	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	मं.	सू. ५	बृ. ९	मं. १	सू. ५	बृ. ९	ब्रह्मा	सूर्यः
२६।१५।०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	शु. २	बु. ६	श. १०	विष्णुः	शिवः
२८।७।३०	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	बु. ३	शु. ७	श. ११	शिवः	विष्णुः
३०।०।०	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	चं. ४	मं. ८	बृ. १२	सूर्यः	ब्रह्मा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'विषमत्रिंशांशचक्रम् ।'								'समत्रिंशांशचक्रम् ।'							
अंशाः	मे.	मि.	सिं.	तु	ध.	कुं.	स्वामिनः	अंशाः	वृषः	कर्कः	कन्याः	वृश्चिकः	मकरः	मीनः	स्वामिनः
५।०	मं. १	मं. १	मं. १	मं. १	मं. १	मं. १	वन्हिः	५।०	शु. २	शु २	शु. २	शु. २	शु. २	शु. २	जलदः
१०।०	श. ११	श. ११	श. ११	श. ११	श. ११	श. ११	वायुः	१२।०	बु ६	बु. ६	बु ६	बु ६	बु. ६	बु. ६	धनदः
१८।०	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९	इन्द्रः	२०।०	बृ. १२	बृ. १२	बृ. १२	बृ. १२	बृ. १२	बृ. १२	इन्द्रः
२५।०	बु. ३	बु. ३	बु ३	बु. ३	बु. ३	बु. ३	धनदः	२५।०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	वायुः
३०।०	शु. ७	शु. ७	शु. ७	शु. ७	शु ७	शु. ७	जलदः	३०।०	मं. ८	मं. ८	मं. ८	मं. ८	मं. ८	मं. ८	वन्हिः

षष्ठ्यंशस्वामी परिज्ञानः—

घोरांशो दनुजः सुरोधनपतिर्यक्षावलिः किन्नरो
अष्टांशोऽथ कुलघ्नसञ्ज्ञगरलाबाज्याशमायांशकौ ।
प्रेतानां नगरीश्वरोऽम्बुपसुरौघेशो च कालोरग—
पीयूषैणभृदंशका मृदलवोऽथो कोमलः सारसः ॥ ६५ ॥
भेशो वाक्पदिगम्बरा दितिसुताद्रांशाः कलिध्वंसको
भूनाथः कमलाकरश्च गुलिकान्तौ कालदावानलौ ।
घोरांशो यमकण्टकामृतसुधापूर्णात्रिजन्मांशकाः
क्ष्वेडप्लुष्टकुलान्तमुख्यकलवा वंशक्षयोत्पातकौ ॥ ६६ ॥
करालसौम्यौ मृदुशीतलांशकौ दंष्ट्राकरालः शशभृन्मुखः कृती ।
कालानलो दण्डकशस्त्रनिर्मलौ शुभाशुभौ शीतसुधार्णवांशकाः ॥ ६७ ॥
भ्रमणः शशाङ्करेखिका खरसांशनायकाः क्रमात् ।
असमे गृहे भवन्त्यमी सममे विपर्ययाम्मताः ॥ ६८ ॥

घोर १–६० राक्षस २–५९ देव ३–५८ कुबेर ४–५७ यक्षगण ५–५६ किन्नर ६–५५ भ्रष्ट ७–५४ कुलघ्न ८–५३ गरल ९–५२ अग्नि १०–५१ माया ११–५० प्रेतपुरीश १२–४९ वरुण १३–४८ इंद्र १४–४७ काल १५–४६ अहि १६–४५ अमृत १७–४४ चन्द्र १८–४३ मृदु १९–४२ कोमल २०–४१ पद्म २१–४० लक्ष्मीश २२–३९ वागीश २३–३८ दिगम्बर २४–३७ देव २५–३६ आर्द्र २६–३५ कलिनाश २७–३४ क्षितीश २८–३३ कमलाकर २९–३२ गुलिक ३०–३१ मृत्युकर ३१–३० काल ३२–२९ दावाग्नि ३३–२८ घोर ३४–२७ यमकण्टक ३५–२६ अमृत ३६–२५ सुधा ३७–२४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

परिपूर्णचंद्र ३८–२३ विषदग्ध ३९–२२ कुलनाश ४०–२१ मुख्य ४१–२० वंशक्षय ४२–१९ उत्पात ४३–१८ कराल ४४–१७ सौम्य ४५–१६ मृदु ४६–१५ शीतल ४७–१४ दंष्ट्राकराल ४८–१३ इन्दुमुख ४९–१२ प्रवीण ५०–११ कालाग्नि ५१–१० दण्डायुध ५२–९ निर्मल ५३–८ शुभ ५४–४ अशुभ ५५–६ शीत ५६–५ सुधा ५७–४ पयोधि ५८–३ भ्रमण ५९–२ इन्दुरेखा ६०–१ ये क्रमसे विषम राशिमें षष्ठ्यंशेश होते हैं। येही उत्क्रम (उलटे) से समराशिमें षष्ठ्यंशेश होते हैं।

अशुभ शुभ षष्ठ्यंशेश परिज्ञान :—

* पीनं खिन्नसनं दिनंधननटं रूपं मयं चेटिना
नागं योगरवगं बलं भगमलं धूलिर्नवं प्रस्वनम् ।
लाभं भावजवं यशः खशशमं धर्म्मं खतर्काशपाः
क्रूरा ओजगृहे तएव समभे व्यत्यस्ततोऽन्ये शुभाः ॥ ६९ ॥

१, २, ७, ८, ९, १०, १२, १५, १६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४८, ५१, ५२, ५५, ५९, ये क्रमसे विषम राशिमें क्रूरषष्ठ्यंश हैं। २, ६, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ४५, ४६, ४९, ५१, ५२, ५३, ५४, ५९, ६० ये क्रमसे सम राशिमें क्रूर षष्ठ्यंश हैं।

' षष्ठ्यंशस्वामिबोधक चक्रम् । '

क्रमा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अं.	०	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६
क.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
विषमे	घोरांशः	राक्षसांशः	देवांशः	कुबेरांशः	यक्षगणांशः	किन्नरांशः	भ्रष्टांशः	कुलक्षांशः	गरलांशः	अन्त्यांशः	मायांशः	प्रेतपुरीशः
शुभा.	क्रू.	क्रू.	शु.	शु.	शु.	शु.	क्रू.	क्रू.	क्रू.	क्रू.	शु.	क्रू.
समे	इन्दुरेखांशः	भ्रमणांशः	पयोध्यंशः	सुधांशः	शीतांशः	अशुभांशः	शुभांशः	निर्मलांशः	दण्डायुधांशः	कालाग्न्यंशः	प्रवीणांशः	इन्दुमुखांशः
शुभा.	शु.	क्रू.	शु.	शु.	शु.	क्रू.	शु.	शु.	क्रू.	क्रू.	शु.	शु.

* इह क ट प य सञ्ज्ञा केनचिदुक्ता—" क-ट-प-य-वर्गभवैरह पिण्डान्त्यैरक्षरैरङ्काः । नि-ञि—च शून्यं ज्ञेयं तथा स्वरे केवले कथितम् " इति। कादि नव ९ टादि नव, पादिपञ्च याद्यष्टौ (८) शून्याक्षराणि ञ १० न १० ञ १० दशसंख्यकानि, ३ कपयस्येत्याद्य एकादशसंख्यानि, श्रीरत्र द्वादशसंख्यानि, ' अन्यैस्तु प्रकारान्तरेणोक्ता —कखगघङचछजझञ एकादि संख्यया । टठडढणतथदधनाश्चैकादि संख्यया । पफबभम एतत्तु चन्द्रद्वित्रिचतुःशराः । यरलवशषसह एकादि क्रमतोऽन्यमी । दशमाङ्केऽपितस्याग्रे वर्णश्चैकादि संख्यया इति । अत्र सर्वत्र न = १०. ण = ५ ष = ६ ल = ९ श्री = १२ द्वितीयावृत्तौ दशमस्थानाङ्कोऽनुमेयः इति परिभाषा आदृता । द्वितीयावृत्तौ क = ११ ख = १२ इत्यादि।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्रमा.	अं.	क.	वि.	विषमभे	शुभा.	समभे	शुभा.	क्रमा.	अं.	क.	वि.	विषमभे	शुभा.	समभे	शुभा.	क्रमा.	अं.	क.	वि.	विषमभे	शुभा.	समभे	शुभा.
१३	६	३०	०	अर्यमांशः	शु.	दंष्ट्राकरांशः	अ.	३७	१८	३०	०	सुधांशः	शु.	दिगम्बरांशः	शु.	४१	२०	३०	०	अमृतांशः	शु.	मृद्वंशः	अ.
१४	७	०	०	देवगणेशः	शु.	शीतलांशः	शु.	३८	१९	०	०	पूर्णचन्द्रांशः	शु.	वागीशांशः	शु.	४२	२०	०	०	चन्द्रांशः	अ.	वंशक्षयांशः	अ.
१५	७	३०	०	कालांशः	अ.	मृद्वंशः	शु.	३९	१९	३०	०	विषदग्धांशः	अ.	लक्ष्मीशांशः	अ.	४३	२०	३०	०	उत्पातांशः	अ.	उत्पातांशः	अ.
१६	८	०	०	अर्यमांशः	अ.	शौम्यांशः	शु.	४०	२०	०	०	कुलनाशांशः	अ.	पद्मांशः	अ.	४४	२२	०	०	करालांशः	अ.	करालांशः	अ.
१७	८	३०	०	अमृतांशः	शु.	करालांशः	अ.	४१	२०	३०	०	मुख्यांशः	शु.	कोमलांशः	शु.	४५	२२	३०	०	सौम्यांशः	शु.	अमृतांशः	शु.
१८	९	०	०	चन्द्रांशः	शु.	उत्पातांशः	अ.	४२	२१	०	०	वंशक्षयांशः	अ.	मृद्वंशः	अ.	४६	२३	०	०	मृद्वंशः	अ.	कालांशः	शु.
१९	९	३०	०	मृद्वंशः	शु.	वंशक्षयांशः	अ.	४३	२१	३०	०	उत्पातांशः	अ.	चन्द्रांशः	अ.	४७	२३	३०	०	शीतलांशः	शु.	देवगणेशांशः	शु.
२०	१०	०	०	कोमलांशः	शु.	मुख्यांशः	शु.	४४	२२	०	०	करालांशः	अ.	अमृतांशः	शु.	४८	२४	०	०	दंष्ट्राकरांशः	अ.	अर्यमांशः	शु.
२१	१०	३०	०	पद्मांशः	शु.	कुलनाशांशः	अ.	४५	२२	३०	०	सौम्यांशः	शु.	अर्यमांशः	अ.	४९	२४	३०	०	अमृतांशः	शु.	देवांशः	शु.
२२	११	०	०	लक्ष्मीशांशः	शु.	विषदग्धांशः	अ.	५०	२५	०	०	देवांशः	शु.	कालांशः	अ.	५१	२५	०	०	कमलाकरांशः	शु.	कमलाकरांशः	शु.
२३	११	३०	०	वाणीशांशः	शु.	पूर्णचन्द्रांशः	शु.	५१	२५	३०	०	आर्द्रांशः	शु.	कालांशः	अ.	५२	२६	०	०	गुलिकांशः	अ.	गुलिकांशः	अ.
२४	१२	०	०	दिगम्बरांशः	शु.	मुधांशः	शु.	५२	२६	०	०	कलिनाशांशः	अ.	आर्द्रांशः	शु.	५३	२६	३०	०	मृत्युकरांशः	अ.	मृत्युकरांशः	अ.
२५	१२	३०	०	देवांशः	शु.	अमृतांशः	शु.	५३	२६	३०	०	आर्द्रांशः	शु.	कलिनाशांशः	अ.	५४	२७	०	०	कालांशः	अ.	गुलिकांशः	अ.
२६	१३	०	०	आर्द्रांशः	शु.	यमकण्टकांशः	शु.	५४	२७	०	०	कलिनाशांशः	अ.	घोरांशः	अ.	५५	२७	३०	०	दावाग्न्यंशः	अ.	कमलाकरांशः	अ.
२७	१३	३०	०	कलिनाशांशः	शु.	घोरांशः	शु.	५५	२७	३०	०	घोरांशः	अ.	दावाग्न्यंशः	अ.	५६	२८	०	०	क्षितीशांशः	अ.	क्षितीशांशः	अ.
२८	१४	०	०	क्षितीशांशः	शु.	दावाग्न्यंशः	अ.	५६	२८	०	०	यमकण्टकांशः	शु.	यमकण्टकांशः	शु.	५७	२८	३०	०	कलिनाशांशः	अ.	कलिनाशांशः	अ.
२९	१४	३०	०	कमलाकरांशः	शु.	कालांशः	अ.	५७	२८	३०	०	अमृतांशः	शु.	अमृतांशः	शु.	५८	२९	०	०	आर्द्रांशः	शु.	आर्द्रांशः	शु.
३०	१५	०	०	गुलिकांशः	शु.	मृत्युकरांशः	अ.	५८	२९	०	०	देवांशः	शु.	देवांशः	शु.	५९	२९	३०	०	देवांशः	शु.	देवांशः	शु.
३१	१५	३०	०	मृत्युकरांशः	अ.	गुलिकांशः	अ.	५९	२९	३०	०												
३२	१६	०	०	कालांशः	अ.	कमलाकरांशः	शु.																
३३	१६	३०	०	क्षितीशांशः	अ.	क्षितीशांशः	अ.																
३४	१७	०	०	घोरांशः	अ.	कलिनाशांशः	अ.																
३५	१७	३०	०	यमकण्टकांशः	शु.	आर्द्रांशः	शु.																
३६	१८	०	०	अमृतांशः	शु.	देवांशः	शु.																

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्रमा.	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं.	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०
क.	३०	८	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
विषमे	इन्दुमुखांशः	प्रवीणांशः	कालाग्न्यंशः	दण्डायुधांशः	निर्मलांशः	शुभांशः	अशुभांशः	शीतांशः	सुधांशः	पयोधरांशः	भ्रमणांशः	इन्दुरेखांशः
शुभा.	शु.	शु.	क्रू.	क्रू.	शु.	शु.	क्रू.	शु.	शु.	शु.	क्रू.	शु.
समे	प्रेतपुरीशांश	मायांशः	अन्त्यंशः	गरलांशः	कुलक्षयांशः	भ्रमांशः	किन्नरांशः	यक्षगणांशः	कुबेरांशः	देवांशः	राक्षसांशः	घोरांशः
शुभा	क्रू.	शु.	क्रू.	क्रू.	क्रू.	क्रू.	शु.	शु.	शु.	शु.	क्रू.	क्रू.

षष्ठ्यंशसाधन तथा गृहेश परिज्ञानः—

हित्वा गृहं भागमुखं यमाहतं भानूद्धृतं शेषमिलायुतं स्वभात् ।
षष्ठ्यंशपो यस्य गृहस्य यः पतिः क्षेत्रं तदाकाशचरस्य तत्स्मृतम् ॥ ७० ॥

स्पष्ट लग्न तथा ग्रह की राशिको त्याग (हटा) कर शेष अंशादि को २ से गुणकर जो गुणाङ्क फल हो उसके ऊपर के अंकमें १२ से भाग दे तब जो शेष बचे उसमें १ युक्त करे तदनंतर लग्न तथा ग्रह जिस राशिमें स्थित हो उसमें एकयुक्त संख्यापर्यंत गिनकर जो राशि मिले उसका स्वामी षष्ठ्यंशेश होता है अर्थात् षष्ठ्यंश कुण्डली में उसी राशि में लग्न तथा ग्रह को लिखे । ग्रह के समानही लग्नके ग्रहादि वर्गोंका साधन करे और जिस राशिका जो ग्रह स्वामी हो वही उसका क्षेत्र (गृह) जानना चाहिए ।

उदाहरणः—

राश्यादि स्पष्ट लग्न ११।१९।३८।९ की राशि ११ को त्याग (हटा) कर शेष अंशादि १९।३८।९ को २ से गुणा तो ३९।१६।१८ हुए । ऊपर के अंक ३९ में १ युक्त किया तो ४० हुए । यहां लग्न स्थान में मीन राशि है यह सम संज्ञक है अतः सम राशि के कोष्ठमें इष्ट संख्या ४० के तुल्य वर्तमान समय में अर्थात् लग्नमें 'पद्मांश' हुवा । यह शुभ षष्ठ्यंश है इसलिए लग्न शुभफलप्रद हुवा । इष्ट संख्या ४० को १२ से तष्ट कियातो ४ शेष बचे । यहां लग्नमें मीन राशि वर्तमान है अतः मीनसे ४ मेषपर्यंत गिना तो षष्ठ्यंश कुंडली में 'मिथुन' लग्न हुवा ।

एवं राश्यादि स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।३४ की राशि का त्याग (हटा) कर शेष अंशादि २१।२९।३४ को २ से गुणा तो ४२।५८।६८ हुए । उपर के अंक ४२ में १ युक्त कियातो ४३ हुए । यहां सूर्य की मिथुन राशि विषम है अतः विषम राशिके कोष्ठ में इष्ट संख्या ४३ के तुल्य 'उत्पातांश' में 'सूर्य' हुवा । यह क्रूरषष्ठ्यंशमें है अतः सूर्य अशुभ फलप्रद हुवा । तदनंतर इष्ट संख्या ४३ को १२ से तष्ट किया तो ७ शेषबचे, सूर्य की वर्तमान राशि मिथुन से शेष संख्या ७ पर्यंत गिना तो षष्ठ्यंश कुंडली में 'धनु का सूर्य' हुवा । एवं चंद्रादियों के षष्ठ्यंशका साधन करे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सर्प तथा पक्षि द्रेष्काण परिज्ञानः—

कर्कान्त्यमध्यावलिमध्यपूर्वौ मीनान्त्य उक्ता भुजगास्त्रिभागाः ।
त्र्यंशास्तुलावैणिकयोर्द्वितीयौ हृद्रोगहर्य्योः प्रथमौ विहङ्गाः॥ ७१ ॥

कर्क का अन्त्य और मध्य तथा वृश्चिकका मध्य और प्रथम एवं मीन का अन्त्य ये पाँच द्रेष्काण सर्पसंज्ञक हैं । तुला और मिथुन का मध्य द्रेष्काण तथा कुंभ और सिंह का प्रथम ये चार द्रेष्काण पक्षिसंज्ञक हैं ।

आद्यस्त्रिभागो निगडो मृगार्य्योद्यतायुधा नक्रतुलातृतीयौ ।
कन्याद्वितीयो धनुरन्त्यपूर्वौ तृतीयमध्यौ मिथुनाभिधस्य ॥ ७२ ॥
मेषान्त्यपूर्वौ मृगपान्त्यमध्यौ अंशा निरुक्ता अथ तुर्यपादाः ।
मेषद्वितीयो वृषभान्त्यमध्यौ कर्कादिमश्चापधरस्य पूर्वः ॥ ७३ ॥
सिंहाद्यमध्यान्त्यभवा दृगाणास्त्र्यंशौतुलाल्योश्चरमौ भवन्ति ।
मृगेन्द्रकुम्भादिमतौलिमध्यो गृद्धाननाः कोलमुखोऽब्जभाद्यः ॥ ७४ ॥

मकर का प्रथम द्रेष्काण, निगडसंज्ञक है । मकर तथा तुला का तृतीय द्रेष्काण, कन्या का द्वितीय, धनुका तृतीय तथा प्रथम, मिथुन का तृतीय द्वितीय, मेषका अन्त्य तथा प्रथम, सिंहका तृतीय तथा मध्य, ये ग्यारह द्रेष्काण, उद्यतायुध संज्ञक है । मेषका द्वितीय वृषका अन्त्य तथा मध्य, कर्कका प्रथम, धनूका प्रथम, सिंह के आदि मध्य, अन्त्य एवं तुला तथा वृश्चिकका अन्त्य द्रेष्काण ' नतुण्डसंज्ञक ' हैं । सिंह तथा कुंभ का प्रथम एवं वृश्चिक का मध्य ये तीन द्रेष्काण ' गृध्रमुखसंज्ञक ' हैं । कर्क का प्रथम द्रेष्काण ' कोलमुखसंज्ञक ' है ।

कुलीरपूर्वः फलपुष्पयुक्तस्तुलादिमश्चापधरस्य मध्यः ।
तौ रत्नभाण्डप्रयुतौ त्रिभागौ पाशोऽलिमध्यस्त्विति कैश्चिदुक्तम् ॥ ७५ ॥

कर्कका प्रथम द्रेष्काण ' फलपुष्पयुक्त संज्ञक ' है । तुला का प्रथम और धनु का मध्य ये दो द्रेष्काण ' रत्नभाण्डसंज्ञक ' है । मतान्तर से वृश्चिक का मध्य द्रेष्काण ' पाशसंज्ञक ' है ।

सतां दृगाणाः सलिलाभिधाःस्युरसत्त्रिभागा दहनाभिधानाः ।
ते पापसौम्यैः सहिता विमिश्रा धीरैः पुराणैः परिवेदितव्याः ॥ ७६ ॥

शुभ ग्रहोंके द्रेष्काण ' जलसंज्ञक ' होते हैं । पाप ग्रहोंके द्रेष्काण ' दहनसंज्ञक ' होते हैं । शुभ ग्रहोंके द्रेष्काण में पाप ग्रह हों और पाप ग्रहोंके द्रेष्काण में शुभ ग्रह हों तो वे मिश्रसंज्ञक द्रेष्काण होते हैं ।

मतान्तरसे क्रूर, सौम्य, विमिश्र तथा जलधर द्रेष्काणों का परिज्ञान—

क्रूरा दृगाणा हरिकुम्भनक्राजालयादिमा वृश्चिककर्कमध्यौ ।
मृगेन्द्रमीनालि तुलाधरान्त्याः सौम्या घटैणाश्विवृषाजमध्याः ॥ ७७ ॥
कोदण्डकन्याकलशान्तिमाख्यास्तुलाधरस्त्रीमिथुनादिमाः स्युः ।
विमिश्रसंज्ञा हरितौलियुग्ममध्याः कुरङ्गक्रियकर्कटान्त्याः ॥ ७८ ॥
गोऽश्वादिमौ तोयधरास्त्रिभागाः कुलीरमीनप्रथमात्रिभागौ ।
मध्यत्रिभागौ प्रमदाविसारराश्योर्नृयुग्मोचरमौ पडेते ॥ ७९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सिंह, कुम्भ, मकर, मेष तथा वृश्चिकका प्रथम द्रेष्काण, वृश्चिक तथा कर्कका मध्य एवं सिंह, मीन, वृश्चिक तथा तुलाका अन्त्य द्रेष्काण 'क्रूरसंज्ञक' हैं। कुम्भ, मकर, धनु, वृष तथा, मेषका मध्य, धनु, कन्या, तथा कुम्भका अन्तिम, तुला, कन्या तथा मिथुन का प्रथम द्रेष्काण 'शुभसंज्ञक' हैं। सिंह, तुला तथा मिथुन का मध्य, धनु, मेष तथा कर्क का अन्त्य, एवं वृष तथा धनु का प्रथम द्रेष्काण 'मिश्रसंज्ञक' हैं। कर्क तथा मीनका प्रथम द्रेष्काण कन्या तथा मीन का मध्य, मिथुन तथा वृषका अन्त्य ये छ द्रेष्काण 'जलधर संज्ञक' हैं।

मतान्तरसे पक्षिप्रभृति द्रेष्काणों का परिज्ञानः—

पञ्चाननाद्यत्रिलवो विहङ्ग एणाननाद्यो निगडस्त्रिभागः ।
पाशो द्वितीयस्त्रिलवोऽलिराशेस्ततो भुजङ्गा स्त्रिलवाद्यपस्य ॥ ८० ॥
अन्त्यत्रिभागः कुलिराख्यकस्य मध्यो दृगाणः प्रथमत्रिभागः ।
अलेस्ततो वृश्चिककर्किणोस्त्रिभागौ द्वितीयप्रथमौ तिमेश्च ॥ ८१ ॥
अन्त्यो दृगाणो भुजगा इमेस्युर्वृषादिमत्र्यंशक एणभस्य ।
आद्यान्तिमौ पाशभृतस्त्रिभागौ केचित्सुधीन्द्रा इति सङ्गिरन्ते ॥ ८२ ॥

सिंह का प्रथम द्रेष्काण 'पक्षिसंज्ञक' है। मकरका प्रथम द्रेष्काण 'निगडसंज्ञक' है। वृश्चिकका द्वितीय द्रेष्काण 'पाशसंज्ञक' है। मीनका अन्त्य द्रेष्काण' कर्कका द्वितीय द्रेष्काण वृश्चिकका प्रथम द्रेष्काण ये तीन 'सर्पसंज्ञक' है। अथवा वृश्चिक तथा कर्कके द्वितीय प्रथम द्रेष्काण, एवं मीन का अन्त्य द्रेष्काण ये पांच 'सर्पसंज्ञक' हैं। वृषका प्रथम द्रेष्काण एवं मकर के प्रथम तथा तृतीय द्रेष्काण ये तीन 'पाशधरसंज्ञक' हैं। इस प्रकार कोई आचार्य कहते हैं।

वर्गोत्तमांश परिज्ञानः—

वर्गोत्तमाख्यश्चर आद्यभागो मध्यांशकः स्थास्नुगृहे द्विदेहे ।
अन्त्यांशकः कीर्त्तित आर्यवर्य्यैस्तत्रोद्भवश्चेद्यदि शोभनः स्यात् ॥ ८३ ॥

चर (मेष, कर्क, तुला तथा मकर) राशिमें प्रथम नवांश, स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुंभ) राशि में पञ्चम नवांश एवं द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन) राशि में अन्तिम नवांश अर्थात् नवम नवांश 'वर्गोत्तमसंज्ञक' होता है। यदि वर्गोत्तमांश में जन्म हो तो 'शुभ' होता है।

राशिबलकी अपेक्षा अंशबलकी प्रधानता परिज्ञानः—

यस्य क्षेत्रस्य यो भागो बल्यंशस्तद्बलान्मतः ।
अबलस्तस्य दौर्बल्ये मध्यमे मध्यमः स्मृतः ॥ ८४ ॥

जिस राशि का जो 'नवांश' है वह उस राशि के बल से 'अधिक बली' होता है। राशि की दुर्बलता से नवांशक भी निर्बल होता है। यदि राशि मध्यम बली हो तो नवांश भी 'मध्यबली' होता है।

प्रकार द्वयसे लग्नबल परिज्ञानः—

सत्स्वामिभिर्बलयुतैः परिलोक्यमानं
लग्नं सवीर्यमघसंयुतलोकितं नो ।
आदौ त्रिलग्नमिह पूर्णफलप्रदं स्या-
न्मध्ये तु मध्यफलदं यदि तुच्छमन्त्ये ॥ ८५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बली शुभग्रह तथा बलवान् स्वामी से दृष्ट एवं पाप ग्रहों से अयुक्त और अदृष्ट लग्न बलवान् होता है। यदि 'लग्न' राशि के दश अंश के अन्तराल में हो तो पूर्ण फलको देने वाला होता है। राशि के मध्यभाग में अर्थात् दश से बीस अंश के अन्तराल में लग्न हो तो मध्यम फल एवं अन्त्यभाग में अर्थात् बीस से तीस अंशके अन्तर्गत लग्न हो तो लग्न जन्य फल स्वल्प जानना चाहिए।

पुनः प्रकारान्तरसे लग्नबल परिज्ञान :—

कीटेंऽघ्रिर्नखिलं बलं मनुजभेऽन्येष्वर्द्धमोजस्तनोः ।
साम्यं कान्तबलेन वृद्धिगृहगे प्राणेशि शक्त्युत्कटम् ॥
साच्छेयुक्तविलोकिते सबलवित्सूरीश्वरैर्नापरैः—
दृष्टाढ्ये दिनराशयोऽह्नि सबला अन्ये रजन्यां मताः ॥ ८६ ॥

लग्नगत कीट (वृश्चिक) राशि का चतुर्थांश बल लग्नगत द्विपद राशि का पूर्णबल एवं लग्नगत अन्त्य-राशि (चतुष्पद वा जलचर) का अर्ध बल होता है। स्वामी के बल के तुल्य लग्न का बल होता है। यदि लग्नेश उपचय (३, ६, १०, ११) स्थानों में हो और शुभसे युक्त हो तथा बलवान भावेश, बुध और गुरुसे युक्त दृष्ट हो एवं अन्य ग्रहोंसे दृष्ट या युक्त न हो तो 'लग्न' अत्यंत बलवान होता है। दिनबली राशि (सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक तथा कुम्भ) दिन में बली होती है। एवं रात्रिबली राशि (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु तथा मकर) रात्रि में बलवान होती है।

पारिजातादि दशवर्गोंका परिज्ञानः—

ये दिग्वर्गाः प्राक्तनार्यैः प्रदिष्टास्तेषां योगे पारिजातादिकाः स्युः ।
योगे दोषोर्वर्गयोः पारिजातः स्याद्वर्गाणामुत्तमांशस्त्रयाणाम् ॥ ८७ ॥
स्याद्गोपुरं वर्गचतुष्कयोगे सिंहासनांशो गणपञ्चकैक्ये ।
पारावतांशो रसवर्गयोगेऽद्रिवर्गयोगे त्रिदिवेशलोकम् ॥ ८८ ॥
स्याद् ब्रह्मलोकं गजवर्गयोग ऐरावतं स्याद् बृहतीगणैक्ये ।
श्रीधामभागो दशवर्गयोगे पृथक् पृथक् स्यात्फलमत्र तेषाम् ॥ ८९ ॥

प्राचीन महर्षियोंने जो गृहादि दश वर्ग कहे हैं उनके योग होनेपर पारिजातादि वर्ग होते हैं। दो वर्ग के योग होनेपर 'पारिजातसंज्ञक वर्ग' होता है। तीन वर्गों के योग होनेपर 'उत्तमांश' होता है। चार वर्ग के योग में 'गोपुरांश' पाँच वर्गों के योग में 'सिंहासनांश' छः वर्गों के योग में 'पारावतांश' सात वर्गों के योग में 'देवलोकांश' आठ वर्गों के योग में 'ब्रह्मलोकांश' नौ वर्गों के योग में 'ऐरावतांश' एवं दश वर्गों के योग होनेपर 'श्री धामांश' (वैशेषिकांश) होता है। उक्त दश वर्गों का पृथक् पृथक् फल होता है

पारिजातादिदशवर्ग साधनरीतिः—

दिग्वर्गजानामधिमित्रवर्गमूलत्रिकोणस्वभतुङ्गगानाम् ।
ये सम्भवा योगवशेन वेद्यास्ते पारिजातादिविशेषितांशाः ॥ ९० ॥

गृहादि दश वर्गों के मध्य में जिस वर्ग में 'ग्रह' अपने अधिमित्र की राशि में, मूलत्रिकोण राशि में स्वगृह में तथा स्वोच्च राशिमें हो तो उन वर्गों के योग से उत्पन्न हुए जो पारिजातादि अंश हैं वे वैशेषिकांश जानने चाहिएँ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पारिजातादिदशवर्गजन्यफलके नाशका परिज्ञान:—

खेटैर्नीचास्तारिदुःस्थैर्विनाशावस्थां यातैः क्रूरषष्ठ्यंशगैर्वा ।
षड्वर्गोनैः पारिजातादिकानां नाशोऽशानां कीर्त्यते जातकज्ञैः ॥ ९१ ॥

पारिजातादि दश वर्गों में स्थित ग्रह यदि अपनी नीच राशि में, अस्तगत, शत्रु राशिमें, त्रिकस्थान में मृत्युअवस्थामें, क्रूरषष्ठ्यंश में अथवा षड्वर्गों से रहित हों तो उक्त पारिजातादि वर्गों का नाश कहा है ।

लग्नके पर्याय:—

लग्नं लेखा शरीरं वपुरुदयगिरिर्विग्रहः कल्पशक्ती
होरालेखाङ्गहोरोदयशिखरितनूवर्ष्मदेहाद्यकायाः ।
गात्रं भूकेन्द्रमूर्ती उदयपुरघना उद्गमश्चोद्गतारूयं
सामर्थ्यादी विलग्नं प्रथमतनुशिरोवर्त्तमानानि रूपम् ॥ ९२ ॥

लग्न, लेखा, शरीर, वपुस्, उदयगिरि, विग्रह, कल्प, शक्ति, होरालेखा, अङ्ग, होरा, उदयशिखरि, तनू, वर्ष्मन्, देह, आद्य, काय, गात्र, भूकेंद्र, मूर्ति, उदय, पुर, घन, उद्गम, उद्गत, सामर्थ्य, आदि, विलग्न, प्रथम तनु, शिरस्, वर्तमान और रूप ये तनु भाव के पर्याय हैं ।

धनभावके पर्याय:—

धनं स्ववित्तार्थगिरः कुटुम्बदक्षाक्षिकोशा वदनं द्वितीयम् ।
द्रव्यान्नपानद्रविणानि भुक्तिर्द्युम्नं हिरण्यं वसु पत्रिका वाक् ॥ ९३ ॥

धन, स्व, वित्त, अर्थ, गिर, कुटुम्ब, दक्षिणनेत्र, कोश, वदन, द्वितीय, द्रव्य, अन्नपान, द्रविण, भुक्ति, द्युम्न, हिरण्य, वसु, पत्रिका और वाच् ये धन भाव के पर्याय हैं ।

सहज भाव के पर्याय:—

दुश्चिक्यशौर्ये सहजो भुजो दोः पराक्रमो विक्रमदक्षकर्णौ ।
धैर्य्यं च वीर्य्यं गलहस्तयौध विक्रान्तसेनाबलपौरुषाणि ॥ ९४ ॥

दुश्चिक्य (दुश्चिक्य) शौर्य, सहज, भुज, दोस्, पराक्रम, विक्रम, दक्षकर्ण, धैर्य्य, वीर्य, गल, हस्त, यौध, विक्रांत, सेना, बल और पौरुष ये सहज भाव के पर्याय है ।

सुख भाव के पर्याय:—

सुखं कमम्बा हिबुकं सुहृद् हृत् पातालबन्धुक्षितिमन्दिराणि ।
क्षेत्रं जलं वाहनतुर्य्यबाह्यसरित्तुरीयाञ्चलसौख्यदायाः ॥ ९५ ॥

सुख, क, अम्बा, हिबुक, सुहृद, हृद, पाताल, बन्धु, क्षिति, मन्दिर, क्षेत्र, जल, वाहन, तुर्य्य, बाह्य, सरित्, तुरीय, अञ्चल, सौख्य, और दाय ये सुख भाव के पर्याय हैं ।

सुत भाव के पर्याय:—

पुत्रप्रभावोदरधीभविष्यज्ज्ञानासुराजाङ्कविवेकदेवाः ।
श्रुतिः स्मृतिः पञ्चममंत्रमेधाः सन्तान आत्मा पितृनन्दनश्च ॥ ९६ ॥

पुत्र, प्रभाव, उदर, धी, ज्ञान, भविष्यत्, असु, राजचिन्ह, विवेक, देव, श्रुति, स्मृति, पञ्चम, मंत्र, मेधा सन्तान, आत्मन्, और पितृनन्दन ये सुत भाव के पर्याय हैं ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शत्रुभावके पर्याय—

शत्रुर्गदो ज्ञात्यघभीत्यवज्ञाश्चोरव्रणास्त्रर्णरिपुक्षतानि ।
क्लेशोदरोदुष्कृतिमातुलाज्यायुधांशविघ्नव्यसनानि दस्युः ॥ ९७ ॥

शत्रु, गद (रोग) ज्ञाति, पाप, भीति, अवज्ञा, चोर, व्रण, अस्त्र, ऋण, रिपु, क्षत, क्लेश, दर, दुष्कृति मातुल, आज्य, आयुध, अंश, विघ्न, व्यसन और दस्यु ये शत्रु भावके पर्याय हैं।

जायाभावके पर्याय—

जायास्तजामित्रकलत्रदारस्त्रीमन्मथद्यूनमदद्युनानि ।
चित्तोत्थकामौ मुहिरो विवाहो लोकं पतिर्मारमनोजभार्याः ॥ ९८ ॥

जाया, अस्त, जामित्र, कलत्र, दार, स्त्री, मन्मथ, द्यून, मद, द्युन, चित्तोत्थ, काम, मुहिर, विवाह, लोक, पति, मार, मनोज और भार्या ये जाया भाव के पर्याय हैं।

मृत्युभावके पर्याय—

मृत्युर्मृतिः परिभवाधिपराभवायु-
र्निर्य्याणयाम्यमरणात्ययनैधनानि ।
पञ्चत्वगुह्यमलिनक्षयकालरन्ध्र-
च्छिद्रापवादलयगुह्यवधान्तनाशाः ॥ ९९ ॥

मृत्यु, मृति, परिभव, आधि, पराभव, आयुस्, निर्याण, याम्य, मरण, अत्यय, नैधन, पञ्चत्व, गुह्य, मलिन, क्षय, काल, रन्ध्र, छिद्र, अपवाद, लय, गुह्य, वध, अन्त, और नाश ये मृत्यु भाव के पर्याय हैं।

भाग्यभावके पर्याय—

भाग्यं तपोदानदयार्जितानि पुण्यंगुरुर्दैवतपौत्रपूजाः
आचार्य्यधर्म्मायनदीक्षणाध्वशुभानि मार्गः सुकृतं विधिः शम् ॥ १०० ॥

भाग्य, तपस्, दान, दया, अर्जित, पुण्य, गुरु, दैवत, पौत्र, पूजा, आचार्य, धर्म्म, अयन, दीक्षण, अध्वन् शुभ, मार्ग, सुकृत, विधि और शं ये भाग्य भावके पर्याय हैं।

कर्म्मभावके पर्याय—

कर्मास्पदं जनकवंशपदाम्बराभ्र-
व्यापारराज्यजयमाननभस्तलानि ।
मेपूरणाच्युतनभोऽमरवर्त्मशिष्टि
सत्कीर्त्तिकृत्यकुलमध्यमजीवनानि ॥ १०१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर्म, आस्पद, जनक, वंश, पद, अम्बर, अभ्र, व्यापार, राज्य, जय, मान, नभस्तल, मेपूरण, अच्युत नभस, अमरवर्त्मन, शिष्टि, सत्कीर्त्ति, कृत्य, कुल, मध्यम और जीवन ये कर्म भाव के पर्याय हैं।

लाभभावके पर्याय—

एकादशो लभनलब्धिभवागमायो-
पान्त्यान्ययानमधिकाप्ति फलानि लाभः।
आकर्णनं विभवसिद्धिरसा अवाप्ति-
वामश्रवोऽग्रजजनो भवभावसञ्ज्ञाः ॥ १०२ ॥

एकादश, लभन, लब्धि, भव, आगम, आय, उपान्त्य, अयात, अधिक, आप्ति, फल, लाभ, आकर्णन, विभव, सिद्धि, रस, अवाप्ति, वामश्रवस् और अग्रजन ये लाभ भाव के पर्याय हैं।

व्ययभावके पर्याय—

व्ययान्तिमद्वादशवामनेत्र दारिद्र्यरिःफापचयान्त्यपीडाः।
प्रान्त्यावसानक्षतिहानिदुःखापाया व्यथार्त्ती शयनाकबन्धाः ॥ १०३ ॥

व्यय, अन्तिम, द्वादश, वामनेत्र, दारिद्र्य, रिःफ, अपचय, अन्त्य, पीडा, प्रान्त्य, अवसान, क्षति, हानि, दुःख, अपाय, व्यथा, आर्त्ति, शयन, अक और बन्ध ये व्यय भाव के पर्याय हैं।

केन्द्रादिसंज्ञा परिज्ञान—

केन्द्राख्यकण्टकचतुष्टयकीचकाख्य-
चातुष्टयानि वपुरम्बुमदाभ्रभानि।
तस्मात्परं पणफरं च ततः परं स्या-
दापोक्लिमं हरहिते चतुरस्रसञ्ज्ञे ॥ १०४ ॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम इन चारों स्थानों के एक युक्ति से केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय, कीचक और चातुष्टय ये पर्याय हैं। केन्द्रसंज्ञक स्थानों से परे पणफर संज्ञक स्थान होते हैं अर्थात् द्वितीय, पञ्चम, अष्टम और लाभ इन चारों स्थानों का 'पणफर' पर्याय है। एवं पणफर संज्ञक स्थानों से परे आपोक्लिम संज्ञक स्थान होते हैं अर्थात् तृतीय, षष्ठ नवम और द्वादश इन चारों स्थानों का 'आपोक्लिम' पर्याय है। अष्टम और चतुर्थ ये दो स्थान 'चतुरस्र संज्ञक' होते हैं।

वृध्यादिसञ्ज्ञा परिज्ञान—

वृध्याख्यकोपचयभे त्रिखषड्भवानां
सञ्ज्ञे स्मृते तादितराणि तु पीडभानि।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सङ्कीर्तितान्यपचयान्यखिलानितानि
ज्ञानाभिधानि धिषणाधनधोरणानि ॥ १०५ ॥

तृतीय, दशम, षष्ठ और एकादश इन चार स्थानों के एक युक्ति से ग्रंथि और उपचय ये दो पर्याय हैं। १।२।४।५।६।७।८।९।१२ इन अन्य आठ स्थानों के पीड़, अपचय और अनुपचय ये तीन पर्याय हैं। पञ्चम, द्वितीय और चतुर्थ इन तीन स्थानों का 'ज्ञान' यह एक पर्याय है।

आयुर्गृहादिसञ्ज्ञा परिज्ञान—

आयुर्गृहे त्रिनिधनं अथ मारकाख्ये
जायाधने व्ययधने नयनाभिधे स्तः।
लीनाह्वयान्यपचितिग्रलयाभिधानि-
दुश्चिक्यभानि कथितानि बुधाग्रगण्यैः ॥ १०६ ॥

तृतीय और अष्टम ये दो आयु के स्थान हैं। सप्तम और द्वितीय ये दो मारक स्थान हैं। द्वादश और द्वितीय ये नौ नेत्र स्थान हैं। व्यय, अष्टम, षष्ठ और तृतीय ये चार 'लीन स्थान' श्रेष्ठ पण्डितजनोंने कहे हैं।

त्रिकादिसञ्ज्ञा परिज्ञान—

बाधादुःस्थानाख्यदुष्टत्रिकाणि षड्रिःफायुर्भान्यथो सत्प्रदानि।
सुस्थानानि त्र्यङ्गरवास्ताङ्कमन्त्रपातालाथद्रव्यभानि स्मृतानि ॥ १०७ ॥

षष्ठ, द्वादश और अष्टम इन तीन स्थानों के बाधा, दुःस्थान, दुष्ट और त्रिक ये चार पर्याय हैं। तृतीय षष्ठ दशम, सप्तम, नवम, पञ्चम, चतुर्थ, एकादश और द्वितीय इन नौ स्थानों के सत्प्रद और सुस्थान ये दो पर्याय हैं।

त्रिकोणादिसञ्ज्ञा परिज्ञान—

शस्तं त्रिकोणं तप आत्मजाख्यं स्यात्त्रित्रिकोणं गुरुभं सुधीभिः।
प्रोक्तं तु षट्कोणगृहं क्षतारव्यं सषड्रिःफं पतिताह्वये स्तः ॥ १०८ ॥

नवम और पञ्चम इन दोनों स्थानों के शस्त और त्रिकोण ये दो पर्याय हैं। नवम स्थान का त्रित्रिकोण पर्याय पण्डितजनों ने कहा है। षष्ठस्थानका षट्कोण पर्याय है। षष्ठ और व्यय इन दोनों स्थानों का पतित पर्याय है।

दृश्यादृश्यार्द्ध तथा पूर्वापरार्द्ध परिज्ञान—

कामस्यैष्यलवाद्यमङ्गभगतां शान्तं समस्तं दलं
दृश्यं वामवपुस्तथोदितमथादृश्यार्द्धमन्यत्समम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दक्षाङ्गं च तथा बुधैरनुदितं मानैष्यभागादिकं
पातालस्य गतांशकान्तमखिलं पूर्वार्द्धमन्यत्परम् ॥ १०९ ॥

सप्तम भाव के भोग्यांश से लेकर लग्न के भुक्तांश पर्यंत यह समस्त भाग 'दृश्यार्द्ध, वामाङ्ग और उदित संज्ञक' होता है। एवं अन्य समस्त भाग अर्थात् लग्न के भोग्यांश से लेकर सप्तम के भुक्तांश पर्यंत यह समस्त भाग अदृश्यार्द्ध, दक्षिणाङ्ग और अनुदित संज्ञक' होता है। दशमभाव के भोग्यांश से चतुर्थ भाव के भुक्तांश पर्यन्त यह समस्त भाग 'पूर्वार्द्ध संज्ञक' होता है। एवं शेषभाग अर्थात् चतुर्थभाव के भोग्यांश से दशम भाव के भुक्तांश पर्यन्त यह समस्त भाग 'परार्द्ध संज्ञक' होता है।

इति ज्योतिस्तत्त्वे राशिशीलप्रकरणं चतुर्थमवसितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

ग्रहशील प्रकरणं प्रारभ्यते ।

काल पुरुषके शरीरमें ग्रह विन्यास परिज्ञान—

शीर्षे मुखेऽर्को हृदये गले ऽब्जः पृष्ठोदरेऽस्रो विबुधः करेऽघ्रौ ।
जीवश्च कट्यां जघनेऽथ गुह्ये मुष्केकविर्जानुविभाग आर्किः ॥ १ ॥
कुर्यात्प्रभुत्वं जननेऽनुयोगे गोचारके यः खचरः प्रसव्यः ।
तदा निजाङ्गे निजदोषतः स पीडां ततस्तंपरिपूजयेत्सन् ॥ २ ॥

काल पुरुष के शिर तथा मुखप्रदेश में सूर्य, हृदय तथा गलप्रदेश में चन्द्रमा, पृष्ठ (पीठ), उदर (पेट) में मङ्गल, हाथ और पाँव मे बुध, कटि (कमर) और जघन प्रदेश में गुरु, गुप्तस्थान (लिङ्ग) और मुष्क (अण्डकोश) में शुक्र एवं जानुप्रदेश में शनि का अधिकार है। प्रश्नसमय जन्म समय वा गोचर में जब जो ग्रह प्रतिकूल हो तब वह ग्रह अपने कथित अङ्ग प्रदेश में अपने वक्ष्यमाण दोष से पीडा को करता है । अत एव उस पीडाप्रद ग्रह को पूजे ।

ग्रहोंकी आत्मादि संज्ञाका परिज्ञान—

आदित्य आत्मा हिमगुर्हृदिज्यो ज्ञानं सुखं दैत्यगुरुर्मदो ज्ञः ।
गीः सत्त्वमसृग् रविजोऽतिदुःखमात्मादयो व्योमचरा बलिष्ठाः ॥ ३ ॥
यद्यात्मपूर्वा बलवत्तरानुस्ते निर्बला आत्ममुखा बलोनाः ।
व्यत्यासमार्केः फलमत्र चिन्त्यं पूज्यामुरेज्यारबुधाः श्रुतीशाः ॥ ४ ॥

काल पुरुष की 'सूर्य' आत्मा, 'चन्द्रमा' मन (हृदय), 'गुरु' ज्ञान तथा सुख, 'शुक्र' कामदेव, 'बुध' वाणी, 'भौम' सत्त्व (पराक्रम) एवं 'शनि' दुःख है। पुरुष के जन्मसमय में यदि आत्मादि ग्रह बलिष्ठ हो तो पुरुष के आत्मादि बलवान् होते हैं। एवं आत्मादि ग्रह निर्बल हों तो आत्मादि निर्बल होते हैं। यहां शनि का फल विपरीत होता है अर्थात् शनि बली हो तो दुःख की वृद्धि और निर्बल हो तो दुःख की हानि सुख की वृद्धि होती है। ऋग्वेद का स्वामी गुरु, यजुर्वेद का स्वामी शुक्र, सामवेद का स्वामी और अथर्ववेद का स्वामी बुध होता है। इनको शास्त्रेश भी कहते हैं।

इत्यादि ग्रहोंकी राजादि संज्ञाका परिज्ञान—

राजानौ रविहिमदीधिती अमात्यौ
पूज्यौ स्तो विधुतनयः कुमार आरः ।
सेनेशः सवितृसुतस्तु किङ्करो यो
व्योमौकाः सबल उपैति तस्य वृत्तिम् ॥ ५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'सूर्य' और 'चन्द्रमा' ये दोनों राजा, 'गुरु' और 'शुक्र' ये दोनों मंत्री, 'बुध' युवराज, 'मङ्गल' सेनाध्यक्ष और 'शनि' दास है। पुरुष के जन्म समय में जो ग्रह सब ग्रहों से अधिक बली हो मनुष्य उसकी वृत्ति को पाता है।

रवि के पर्याय—

सूर्य्यः सूरः सवितृमिहिरौ द्वादशात्मा विवस्वान्
पप्यादित्यार्यमरविभगा भानुमान् सप्तसप्तिः।
हेलिश्छायाद्युचरदिनगोपद्मिनीनायकोऽर्को
मार्त्तण्डेनौ तरणितपनौ चित्रभानुःखमित्रौ ॥ ६ ॥
विभावसुध्वान्तरिपुत्रयीतनुरंश्वब्जहस्तोऽम्बरमार्गगध्वजौ।
विभाप्रभाभादिवसद्युवासरदिवाकरः पूषविरोचनारुणाः ॥ ७ ॥
चक्राम्बुजाहर्दिनलोकबान्धवो हंसश्च साक्षी जगतां च कर्म्मणाम्।
तेजोमहोराशिरशीतदीधितिः खद्योतपद्माक्षपतङ्गपिङ्गलाः ॥ ८ ॥
प्रद्योतनो धामनिधिर्हरिद्धयोंऽशुमालिसूनू द्युमणिर्विकर्त्तनः।
सहस्रतिग्मोष्णघृणिः सदागतिः खगांशुभान्ताः शनिकर्णकालसूः ॥ ९ ॥

सूर्य, सूर, सवितृ, मिहिर, द्वादशात्मन्, विवस्वत्, पपी, आदित्य, अर्यमन्, रवि, भग, भानुमत् सप्तसप्ति, हेलि। छाया, द्युचर (ग्रह), दिन, गो (किरण) और पद्मिनी (कमलिनी) इन शब्दों के साथ नायक (पति) शब्द का योग हो अर्थात् उक्त शब्दों का उत्तरपद पति शब्द हो तो सूर्यवाचक होते हैं। जैसे छायापति, ग्रहपति, दिनपति, गोपति, पद्मिनीपति। अर्क, मार्त्तण्ड, इन, तरणि, तपन, चित्रभानु, ख, मित्र, विभावसु, ध्वान्तरिपु, त्रयीतनु। अंशु और अब्ज इन शब्दों के साथ पाणि (हस्त) शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं। जैसे—अंशुपाणि (अंशुहस्त), अब्जपाणि (अब्जहस्त)। अम्बर (आकाश) शब्द के साथ मार्ग और ध्वज शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं। जैसे—अम्बरमार्ग, अम्बरध्वज, नभकेतन, नभपान्थ, इत्यादि। विभा, प्रभा, भास् 'दिवस' द्यु, वासर और दिवा इन शब्दों के साथ में कर शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं। जैसे—विभाकर, प्रभाकर, भास्कर, दिवसकर (दिवसकृत्) द्युकृत् वासरकर (वासरकृत्) और दिवाकर इत्यादि। पूषन्, विरोचन, अरुण। चक्र, अम्बुज, अहन्, दिन और लोक इन शब्दों के साथ में बन्धु शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं। यथा—चक्रवाकबन्धु, पद्मबन्धु और दिनबन्धु इत्यादि। हंस। जगत् और कर्म शब्द के साथ साक्षी शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं। यथा—जगत्साक्षी, कर्मसाक्षी, इत्यादि। तेजस् और महस् इन शब्दों के साथ राशि शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं। यथा—तेजोराशि महोराशि इत्यादि। अशीतदीधिति, खद्योत, पद्माक्ष, पतङ्ग, पिङ्गल, प्रद्योतन, धामनिधि, हरिद्धय, अंशुमालिन्, सूनु, द्युमणि, विकर्त्तन। सहस्र, तिग्म, उष्ण इन शब्दों के साथ घृणि (रश्मि) शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं। यथा—सहस्ररश्मि, तिग्मरश्मि, उष्णरश्मि, इत्यादि। सदागति, खग अंशु, भान्त। शनि, कर्ण, काल इन शब्दों के साथ सू (जनक) शब्द का योग हो तो सूर्यवाचक होते हैं यथा—शनिसू, कर्णसू और कालसू इत्यादि ये सब सूर्य के पर्याय हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चन्द्र के पर्याय—

चन्द्रः सोमो हिमसितसुधाशीतदीप्तिः सुधाम्
राजा छायाशशहरिणमृल्लक्ष्णौ ग्लौः सुधाङ्गः ।
राकारात्रीद्विजकुमुदिनीकौमुदीकौषधीभ-
तारास्वामी दशसितहयश्चन्द्रमा अत्रिदृग्जः ॥ १० ॥
कलानिधी रत्नकरौ निशो विधुर्जैवातृकोऽब्जः कुमुदस्य बान्धवः ।
तिथिप्रणीर्दर्शविपत्तमोनुद इन्दुः कलावान् शशिमाःसमुद्रजाः ॥ ११ ॥

चन्द्र, सोम । हिम, सित, सुधा और शीत इन शब्दों के साथ में दीप्ति शब्द का योग होतो चन्द्रवाचक होते हैं यथा—हिमदीप्ति, सितदीप्ति, सुधादीप्ति और शीतदीप्ति इत्यादि । सुधाम्, राजा । छाया, शश, मृग और कला इन शब्दों के साथ में लक्ष्म तथा मृत् शब्दका योग होतो चन्द्रवाचक होते हैं, यथा— छायामृत शशमृत् हरिणामृत्, छायाङ्क, शशाङ्क हरिणाङ्क मृगाङ्क, इत्यादि । ग्लौ, सुधाङ्क । राका, रात्री, द्विज, कुमुदिनी, कौमुदी, क, ओषधी, भ, तारा इन शब्दों के साथ में स्वामी (पति) शब्द का संयोग होतो चन्द्रवाचक होते हैं । यथा— राकास्वामी, रात्रिस्वामी, द्विजस्वामी, राकापति, रात्रिपति, द्विजपति कुमुदिनीपति, कौमुदीपति, कपति ' रोहिणीपति ' ओषधीपति, भपति, तारापति प्रभृति । दश और सित (श्वेत) शब्द के साथमें हय (अश्व) शब्दका योग होतो चन्द्रवाचक होते हैं । यथा:— दशहय (दशाश्व), सितहय, श्वेताश्व प्रभृति । चन्द्रमस्, अत्रिदृग्ज, कलानिधि । निशाशब्द के साथ रत्न तथा कर शब्द का योग होतो चन्द्रवाचक होते हैं। यथा— निशारत्न, निशाकर प्रभृति । विधु, जैवातृक, अब्ज, कुमुदबान्धव, तिथिप्रणी, दर्शविपद्, तमोनुद, इन्दु, कलावान्, शशिन्, मास् और समुद्रज ये चन्द्र के पर्याय हैं ।

भौमके पर्याय—

भौमोऽङ्गारः क्षितिसुतकुजौ मङ्गलो लोहिताङ्ग
आषाढाभूरवनितनयोऽङ्गारकःखोल्मुकोऽस्रः ।
रक्तो वक्रो रुधिरकुटिलावावनेयो नवार्चि-
र्माहेयारौ रुधिर किरणः पाप्यसृक् क्रूरनेत्रः ॥ १२ ॥

भौम, अङ्गार, क्षितिसुत, कुज; मङ्गल, लोहिताङ्ग, आषाढाभू, अवनितनय, अङ्गारक, खोल्मुक, अस्र, रक्त वक्र, रुधिर, कुटिल, आवनेय, नवार्चिस्, माहेय, आर, रुधिरकिरण, पापिन्, असृक्, और क्रूरनेत्र ये मङ्गल के पर्याय हैं ।

बुध के पर्याय—

चान्द्रीरोधनबोधनौ विधुसुतो हेम्नः श्रविष्ठाभवः
पञ्चार्चिर्विबुधो प्रहर्षुलबुधौ सौम्यः कुमारोऽब्जभूः ।
श्यामाङ्गो ज्ञविदौ प्रहर्षणविभूत्थौ कोविदः पण्डित-
स्तारानन्दनपौरिकेयशशिजाः सन् रौहिणेयैन्दवौ ॥ १३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चान्द्रि, रोधन, बोधन, विधुसुत, हेम्न, श्रावितामन, पञ्चार्चिस्, त्रिबुध, प्रहर्षुल, बुध, सौम्य, कुमार, अब्जभू, श्यामाङ्ग, ज्ञ, विद्, प्रहर्षण, विधूत्थ, कोविद, पण्डित, तारानन्दन, पौरिकेय, शशिज, सन, रौहिणेय और ऐन्दव ये बुध के पर्य्याय हैं ।

गुरू के पर्याय—

बृहस्पतिर्वाक्पतिगीष्पतीज्या वागीश्वरश्चित्रशिखण्डिसूनुः ।
पारुष्यगौराङ्गिरसाः प्रचक्षा यूपध्वजः सुरिसुरेयजीवाः ॥ १४ ॥
अर्च्योऽङ्गिराः सुरसुरेड्मरुतां नमस्यो—
पाध्याययाजकपुरोहितपूज्यवन्द्याः ।
आचार्य्यवन्दितपदार्य्यनुताधिदेव-
मंत्र्यर्चितेज्यगुरवो धिषणः प्रशान्तः ॥ १५ ॥
गीरथो पूजितः प्रख्या दीदिविः फाल्गुनीभवः ।
वाग्वाग्मी गोपतिश्चारुर्द्वादशार्चिर्महामतिः ॥ १६ ॥

बृहस्पति, वाक्पति, गीष्पति, इज्य, वागीश्वर, चित्रशिखण्डिसूनु, पारुष्य, गौर, आङ्गिरस, प्रचक्षस्, यूपध्वज, सुरिसुरेय, जीव, अर्च्य, अङ्गिरस् । देव, इन्द्र और मरुद्गण इनतीन शब्दोंके उत्तरपद नमस्य, उपाध्याय, याजक, पुरोहित, पूज्य, वन्द्य, आचार्य, वन्दितपद, आर्य, नुत, अधिदेव, मंत्रिन्, अर्चित, ईड्य और गुरु ये शब्द होंतो गुरुवाचक होते हैं यथा-सुरनमस्य, सुरेशनमस्य, मरुन्नमस्य इत्यादि । धिषण, प्रशान्त, गीरथ, पूजित, प्रख्यस्, दीदिवि, फाल्गुनीभव, वाग्वाग्मिन्, गोपति, चारु, द्वादशार्चिस् और महामति ये गुरुके पर्याय हैं ।

शुक्र के पर्याय—

शुक्रः काव्यो दनुजसचिवः षोडशार्चिर्मघाभू—
दैत्यामात्यो भृगुसुतकवी आस्फुजिद् भार्गवोऽच्छः ।
काणो दैत्यर्त्विगसुरगुरुर्दानवेन्द्रार्चितांघ्रि-
र्दैतेयेड्यो भृगुजनिसितौ दानवाचार्य्यधिष्ण्यौ ॥ १७ ॥
दैत्यार्चितः पूर्वसुरेज्यशुक्रासुरप्रिया दैत्यसुहृद् भृगुर्भः ।
भृगोरपत्यं दयितोऽसुराणां बलेः पुरोधाः शतपर्वनाथः ॥ १८ ॥

शुक्र, काव्य, दनुजसचिव, षोडशार्चिस्, मघाभू, दैत्यामात्य, भृगुसुत, कवि, आस्फुजित, भार्गव, अच्छ, काण, दैत्यर्त्विज, असुरगुरु, दानवेन्द्रार्चितांघ्रि, दैतेयेड्य, भृगुजनि, सित, दानवाचार्य, धिष्ण्य, दैत्यार्चित, पूर्वसुरेज्य, शुक्र, असुरप्रिय, दैत्यसुहृद्, भृगु, भ, भृग्वपत्य, असुरदयित, बलिपुरोधस् और शतपर्वनाथ ये शुक्र के पर्याय हैं ।

शनि के पर्याय—

सौरिः सौरोऽसितशनियमाः पङ्गुसप्तार्चिरार्कि-
कोलाः कोणः कपिलनयनः क्रोडकृष्णनिमन्दाः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

छायासञ्ज्ञातपनतनयो भास्करी रेवतीभृ-
ध्वान्तद्विड्भूरसितवसनो मन्दगो मन्दगामी ॥ १९ ॥
शनैश्चरो मन्दचरः कृशाङ्गः पातङ्गिर्दैवाकरिकालनीलाः ।
प्राभाकरिर्मन्दगतिर्घटेशश्छायेय मैत्री मृदुनीलवस्त्रौ ॥ २० ॥

सौरि, सौर, असित, शनि, यम, पङ्गु, सप्तार्चिस् आर्कि, कोल, कोण, कपिलनयन, क्रोड, कृष्ण, ऐनि, मन्द। छाया, सञ्ज्ञा तथा तपन इन तीन शब्दों के साथ में तनय (पुत्र) वाचक शब्द का योग हो तो शनिवाचक होते हैं। यथा—छायातनय, सञ्ज्ञा तनय, सूर्यतपन इत्यादि। भास्करि, रेवतीभृ, ध्वान्तद्विड्भृ, असितवसन, मन्दग, मन्दगामिन, शनैश्चर, मन्दचर, कृशाङ्ग, पातङ्गि, दैवाकरि, काल, नील, प्राभाकरि, मन्दगति, घटेश, छायेय-मैत्रि, मृदु, और नीलवस्त्र ये शनि के पर्याय हैं।

राहु के पर्याय—

राहुर्भोगी तिमिरदनुजो सिंहिकागर्भभृत-
श्चक्री व्यालो हिमकरिपुः सैंहिकेयागुसर्पाः ।
भोगीशोऽहिर्विषधरतमौ पन्नगश्चन्द्रमर्दी
सिंहीसूनुर्दनुजभरणीसम्भवौ देवशत्रुः ॥ २१ ॥
शिरोग्रहः स्वर्गदिवामणिस्तमः स्वर्भाणुर्दैत्यामृतचौरदानवाः ।
विधुन्तुदोऽरश्मिभुजङ्गमोरगाः फणी फणीन्द्राभ्रपिशाचकासुराः ॥ २२ ॥

राहु, भोगिन्, तिमिर, दनुज, सिंहिकागर्भभृत, चक्रिन, व्याल, हिमकरिरिपु, सैंहिकेय, अगु, सर्प, भोगीश, अहि, विषधर, तम, पन्नग, चन्द्रमर्दिन, सिंहीसूनु, दनुज, भरणीसम्भव, देवशत्रु, शिरोग्रह, स्वर्गदिवामणि, तमस्, स्वर्भाणु, दैत्य, अमृतचौर, दानव, विधुन्तुद, अरश्मि, भुजङ्म, उरग, फणिन, फणीन्द्र, अभ्रपिशाचक और असुर ये राहुके पर्याय हैं।

केतु के पर्याय—

केतुः शिखावाननिलध्वजाख्याश्चेषाभवा ऊर्ध्वकचः पताकः
ज्योतीरथो मृत्युसुतः कबन्धखगः शिखी केतवराहुपुच्छौ ॥ २३ ॥

केतु, शिखावान्, अनिल ध्वज, आश्लेषाभव, ऊर्ध्वकच, पताक, ज्योतीरथ, मृत्युसुत, कबन्धखग, शिखिन् केतव और राहुपुच्छ ये केतु के पर्याय हैं।

गुलिक तथा प्राणपद के पर्याय—

शनेस्तनूजो गुलिको ऽतिपापी यमात्मजः प्राणहरश्च मान्दिः ।
भास्वज्जभूः प्रेतपुरीशजोऽथो प्राणस्त्वसुः प्राणपदाभिधानः ॥ २४ ॥

शनितनुज, गुलिक, अतिपापिन्, यमात्मज, प्राणहर, मान्दि, भास्वज्जभू तथा प्रेतपुरीशज ये गुलिकके पर्याय हैं। प्राण, असु और प्राणपद ये प्राणपद के पर्याय हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

एक युक्ति से दो प्रभृति ग्रहोंके पर्याय—

पुष्पवन्तौ हरी पीतू एकयुक्त्येनशीतगू ।
सितेज्यौ मंत्रिणौ विप्रौ गुरू पूज्यावथो अही ॥ २५ ॥
सूर्यासुरौ बुधौज्ञेन्दू राहुकेतू उपग्रहौ ।
तमोग्रहावथेज्येन्दू सिन्धुजावथ गोपती ॥ २६ ॥
सूर्याचार्यौ ततो राजखगौ भानुकुजावथो ।
द्विजराजग्रहा भौमभानुभार्गव गीरथाः ॥ २७ ॥

पुष्पवत्, हरि और पीतु ये एकयुक्ति से सूर्यचन्द्रके पर्याय हैं। मंत्रिन्, विप्र, गुरु और पूज्य ये एकयुक्ति से शुक्र गुरु के पर्याय हैं। 'अहि' यह एक युक्ति से सूर्य राहुका पर्याय है। 'बुध' यह एक युक्ति से चन्द्र बुधका पर्याय है। उपग्रह और तमोग्रह ये एक युक्ति से राहुकेतुके पर्याय हैं। 'सिन्धुज' यह एक युक्ति से गुरुचन्द्र का पर्याय है। 'गोपति' यह एक युक्तिसे सूर्य शुक्रका पर्याय है। 'राजखग' यह सूर्य मङ्गलका पर्याय है। 'द्विजराजग्रह' यह मङ्गल सूर्य शुक्र गुरु का पर्याय है।

मन्दमाहेयमार्तण्डा विषमाम्बर चारिणः ।
शुक्राशुक्रौ समाख्यातौ भार्गवाशुभ्रगोचिषौ ॥ २८ ॥

'विषमग्रह' यह शनि मङ्गल सूर्य का पर्याय है। 'शुक्राशुक्र' यह शुक्र शनिका पर्याय है।

उपग्रहों के नाम—

क्रमेण कालःपरिवेषधूमार्द्धयामसंज्ञा यमकण्टकाख्यः ।
कोदण्डमान्दिव्यतिपातकाश्चोपकेतुनामोपरगा इमे स्युः ॥ २९ ॥

काल, परिवेष, धूम, अर्द्धयाम, यमकण्टक, इन्द्रधनु, गुलिक, व्यतिपात और उपकेतु ये क्रमसे उपग्रह हैं।

ग्रहोंकी पुरुषसंज्ञा तथा तत्त्वाधिपत्य परिज्ञान—

शार्की नपुंसकरवगौ युवति सितेन्दू
आदित्यवाक्पतिधरातनयाः पुमांसः ।
तेजोनभोवसुमतीसलिलानिलेशा ।
माहेयजीववुधभार्गवसौर्यः स्युः ॥ ३० ॥

बुध, शनि, नपुंसक, शुक्र, चन्द्र स्त्री, सूर्य, गुरु, मङ्गल पुरुषसंज्ञक ग्रह हैं। मङ्गल का अग्नि, गुरु का आकाश, बुध का पृथ्वी, शुक्र का जल और शनि का वायुतत्त्व है।

ग्रहों के आकार का परिज्ञान—

दीर्घो बुधोऽर्कश्चतुरस्र आस्फुजिद् दीर्घोऽतिसूक्ष्मःसुतनुर्विधुर्विलः ।
वृत्तो महीजः परिवर्त्तुलो गुरुरादित्यसूनुः सुषिरान्तरायतम् ॥ ३१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'बुध' दीर्घ, 'सूर्य' चतुरस्र, 'शुक्र' दीर्घ अतिसूक्ष्म सुन्दर शरीर, 'चन्द्र' त्रिकोणाकार, 'भौमवृत्ताकार, 'गुरु' परिवर्तुल, एवं 'शनि' दीर्घ मध्यरन्ध्र आकार वाला है।

ग्रहोंके धात्वादि स्वरूप का परिज्ञान--

धातुस्वरूपौ रविरोहितद्युती मूलस्वरूपावसितक्षपाकरौ।
जीवौ सुरेशार्चितषोडशार्चिषौ विद्यो विमिश्रो विबुधैर्बुधग्रहः ॥ ३२ ॥

सूर्य, मङ्गल धातुस्वरूप, चन्द्र, शनि मूल संज्ञक, गुरु, शुक्र जीवसंज्ञक, एवं बुध मिश्रसंज्ञक जानना चाहिए।

ग्रहोंकी प्रकृतिका परिज्ञान—

पित्तं पतङ्गस्य मरुत्कफौ विधोर्विदस्त्रिदोषः पवनः पपीजनेः।
मायुः कुजस्यास्फुजितः कफानिलौ श्लेष्मा गुरोर्धातुरिति स्मृतो बुधैः ॥ ३३ ॥

सूर्य की पित्त, चन्द्रमा की वातकफ, बुध की त्रिदोष, शनि की वात, भौम की पित्त, शुक्र की कफवात एवं गुरु की कफ प्रकृति है।

ग्रहोंके कारण का परिज्ञान--

महीकुमारो मिहिरश्च पित्तसञ्ज्ञौ समीरौ तमतापनौ च।
समानधातू धिषणेन्दुसूनू श्लेष्मारव्यकौ काव्यकलाधिनाथौ ॥ ३४ ॥

सूर्य, मङ्गलका पित्त, राहुका शनिका वात, गुरु, बुध का समानधातु एवं शुक्र, चन्द्रमा का श्लेष्म कारण जानना चाहिए।

ग्रहों की वसादि धातुका परिज्ञान—

वसा गुरोरस्थि रवेर्विदस्त्वक् छुक्रस्य शुक्रं रुधिरं हिमांशोः।
स्नायुः शनेर्भूतनयस्य मज्जा स्वधातुदोषेण रुजं विधत्ते ॥ ३५ ॥

गुरु की वसा (चर्बी), सूर्य की अस्थि (हड्डी), शुक्र की शुक्र (वीर्य) चन्द्रमा की रुधिर (खून), शनिकी स्नायु (नाडी), एवं भौमकी मज्जा (अस्थिसार) धातु है। प्रत्येक ग्रह अपनी धातु के दोष से रोगको करता है।

ग्रहोंकी कक्ष्याक्रम का परिज्ञान—

कक्ष्यारव्यायां कोणवागीशवक्रभास्वद्दैत्याचार्य्यविच्छर्वरीशाः।
ज्योतिस्तारा चक्रयाताः क्रमेण संस्थोऽहिर्भूमण्डलस्योत्तमाङ्गे ॥ ३६ ॥

शनि, गुरु, भौम, रवि, शुक्र, बुध और चन्द्र यथाक्रमसे कक्ष्यामें स्थित होकर ज्योतिस्ताराचक्र में प्राप्त हैं। एवं ' राहु ' भूमण्डल के शिर में स्थित है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहोंकी पृष्ठोदयादि संज्ञा तथा अयनादियोंके स्वामित्व का परिज्ञान —

उद्यन्ति पृष्ठत इनारयमोरगा ग्लौ-
काव्येन्दवास्तु शिरसोभयतोऽमरेज्यः ।
पक्षक्षणर्त्वयनमासदिनाब्दनाथाः
काव्येन्दुकोविदरवीज्यमहीजमन्दाः ॥ ३७ ॥

सूर्य, भौम, शनि और राहु ये चारों पृष्ठ (पीठ) से उदय होते हैं। चन्द्र, शुक्र तथा बुध ये तीनों शिरसे उदय होते हैं। एवं गुरु शिर तथा पृष्ठसे उदय होता है। 'शुक्र' पक्ष, 'चन्द्रमा' क्षण (मुहूर्त), 'बुध' ऋतु, 'रवि' अयन, 'गुरु' मास, 'भौम' दिन एवं 'शनि' वर्ष का स्वामी है।

'कालबोधकचक्रप्रदर्शन'।

ग्रहाः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
कालाः	अयनम् १	क्षणः १	दिनम् १	ऋतुः १	मासः १	पक्षः १	वर्षम् १	मासाः ८	मासाः ३
गुणकाः	१८०	२	६०	६०	३०	१५	३६०	२४०	९०
कालसंज्ञाः	दिनानि	घट्यौ	घट्यः	दिनानि	दिनानि	दिनानि	दिनानि	दिनानि	दिनानि

—: उदाहरण :—

प्रश्न लग्न राश्यादि ०।२।०।० में मेषका नवांश है इसके स्वामी मङ्गलका दिनात्मक काल है अतः स्पष्ट लग्नके भुक्त अंशादि २।०।० को प्रथम नवांश ३।२०।० में हीन किया तो १।२०।० शेष बचे। इनकी कला ८०।० को वर्तमान नवांश मङ्गल के घट्यात्मक गुणक ६० से गुणाते ४८००।० हुए। इनमें एकनवांश की कला २०० से भाग दियातो लब्ध २४।० घट्यादि हुए। यहां स्पष्ट लग्न में प्रथम नवांश वर्तमान है उसकी संख्या ० को भौम के गुणक ६० से गुणातो ० गुणन फल हुआ। इसको पूर्वोक्त घट्यादि २४।० में युक्त किया तो २४।० घट्यादि काल हुआ अर्थात् २४ घटियों में इष्टकार्य की सिद्धि होगी। अथवा 'मङ्गल' प्रश्नलग्न का स्वामी है और प्रश्नलग्न में प्रथम नवांश है अतः एक दिनमें कार्यसिद्धि होगी।

मतान्तर से उदाहरण—

प्रश्नलग्न राश्यादि ०।२।०।० में मेष नवांश वर्तमान है इसका स्वामी मङ्गल है इसका स्पष्ट राश्यादि ०।८।०।० है यहां दो नवांशक भुक्त होगये हैं तृतीय नवांशक वर्तमान है अतः मङ्गल के ८।०।० अंशादि को तृतीयनवांश के १०।०।० अंशादि में हीन किया तो २।०।० शेष अंशादि बचे। इनकी कला १२० को मङ्गल के गुणक ६० से गुणातो ७२०० हुए। इनमें एक नवांशक की कला २०० से भाग दियातो लब्ध ३६।० घट्यादि हुए। यहां २ नवांश गत हैं अतः इनको मङ्गल के गुणक ६० से गुणातो १२० हुए। इनमें लब्ध

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

घट्यादि ३६।० को युक्त किया तो १५६।० घट्यादि हुए। इनमें ६० से भागा दिया तो लब्ध २ दिन ३६ घटी ० पल हुए। इनमें अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी।

—: द्वितीयोदाहरण :—

प्रश्न लग्न राश्यादि ४।८।२५।० में मिथुन नवांश वर्त्तमान है। इसके स्वामी बुधका ऋत्वात्मक काल है। यहां प्रश्न लग्नमें २ नवांश गत हुए। प्रश्न लग्नके अंशादि ८।२५।० को तृतीय नवांश के अंशादि १०।०।० में हीन किया तो १।३५।० शेष अंशादि बचे। इनकी कला ९५।० को बुधके दिनात्मक गुणक ६० से गुणा तो ५७००।० हुए। इनमें एक नवांश की कला २०० से भाग दिया तो लब्ध २८।३०।० दिनादि हुए। यहां प्रश्न लग्नमें २ नवांश भुक्त हुए हैं। इसलिए भुक्त नवांश २ को बुधके दिनात्मक गुणक ६० से गुणा तो १२० दिन हुए। इनमें पूर्वागत दिनादि २८।३०।० को युक्त किया तो १४८।३०।० दिनादि हुए। इनमें ऋतुमान ६० से भाग दिया तो लब्ध २ ऋतु २८ दिन ३० घटी में अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी।

रविस्वरूप परिज्ञान---

शूरो गभीरश्चतुरस्रमूर्त्तिर्नातिप्रचण्डः श्यामललोहिताङ्गः।
पृथुः प्रचण्डो मधुपिङ्गलाक्षः कौसुम्भवासास्तपनोऽल्पकेशः ॥ ३८ ॥

शूर, वीर, गम्भीर, चतुरस्त्रशरीर, मध्यमाकार, रक्त श्यामवर्ण, दीर्घ, प्रचण्डस्वभाव, शहद के समान पीले नेत्र, कौसुम्भवस्त्र और अल्पकेश ऐसा सूर्य का स्वरूप है।

चन्द्रस्वरूप परिज्ञान—

प्राज्ञः सुवक्ता मृदुवाग् युवाच गौरोऽतिलोलस्तनुवृत्तदेहः।
शुभ्राम्बरः कुञ्चितनीलबालो घृणी सुनेत्रः सुभगः सुधाङ्गः ॥ ३९ ॥

पण्डित, उत्तमवक्ता, कोमलवाणी, युवावस्था, गौरवर्ण, अतिचञ्चलस्वभाव, लघुवृत्ताकार शरीर, श्वेतवस्त्रवान्, कुंचित काले बाल वाला, दयावान्, सुन्दरनेत्र और सज्जन ऐसा चन्द्रमा का स्वरूप है।

भौमस्वरूप परिज्ञान--

ह्रस्वः प्रचण्डोऽग्निनिभोऽप्युदारः शूरो युवा लोहितगौर वर्णः।
हिंस्रोऽस्रवासाश्चपलश्च पीताक्षः क्रूरदृष्टिः कृशमध्य आरः ॥ ४० ॥

लघु आकार, प्रचण्डस्वभाव, अग्निके समान कान्ति, उदार, शूरवीर, युवावस्था, रक्त--गौरवर्ण, हिंसक स्वभाव, रक्तवस्त्र, चञ्चलप्रकृति, पीलेनेत्र, क्रूरदृष्टि और कृशकटी ऐसा भौमका स्वरूप है।

बुध स्वरूप परिज्ञान--

दूर्वादलश्यामतनुः कृशाङ्गः स्फीतः कुमारः स्फुटवाक् सुहृष्टः।
रक्तेक्षणो हास्यरुचिः कलाज्ञः पालाशवासाः शशिजः शिरालः ॥ ४१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दूर्वादल के समान श्यामवर्ण, कृश शरीर, दीर्घाकार, कुमारावस्था, स्पष्टवक्ता, अति प्रसन्न हृदय, लालनेत्र, हसने में रुचि, कलाओंका जाननेवाला, हरितवस्त्र और शिरानाडी वाला ऐसा बुधका स्वरूप है।

गुरु स्वरुप परिज्ञान—

पिङ्गाक्षकेशो मतिमान् सुवृद्धो ह्रस्वो विनीतो गुणवांश्च मान्यः।
पीनोन्नताङ्गस्तपनीयवर्णः पीताम्बरः सिंहरवः सुरेज्यः ॥ ४२ ॥

पिङ्गल नेत्र और केश, बुद्धिमान्, अतिवृद्धावस्था, ह्रस्वाकार, विनीत (नम्रस्वभाव) गुणवान, मान्य, स्थूल और ऊंचा शरीर, सुवर्ण के समान वर्ण, पीतवस्त्र और सिंह के समान शब्दवाला ऐसा गुरुका स्वरूप है।

शुक्र स्वरूप परिज्ञान--

मनोहराङ्गो मधुवाक् सुनेत्रः स्थूलांशदेशोऽसितवक्रकेशः।
कामीच दूर्वादलनीलदेहश्चित्राम्बरो मध्यवया मघाभूः ॥ ४३ ॥

मनोहर शरीर, मधुरवाणी, सुन्दरनयन, स्थूलस्कन्ध, काले टेढे शिरके बाल, कामासक्त, दूर्वादल के समान कृष्ण शरीर, चित्रवस्त्र वाला और मध्यमावस्था ऐसा शुक्रका स्वरूप है।

शनिका स्वरूप परिज्ञान—

दीर्घोऽलसः कपिलदृङ् मलिनः शिरालः
कृष्णाम्बरोऽसिततनुः पृथुदन्तबालः।
रूक्षोऽशुचिः कृशतनुः स्थविरोऽतिमूर्खः
क्रोधी पतङ्गतनयः पिशुन स्वभावः ॥ ४४ ॥

दीर्घाकार, आलसी, कपिलनेत्र, मलिन, शिरानाडी, कृष्णवस्त्रवाला, कृष्णशरीर, स्थूलदन्त और बाल, रूक्षकान्ति, अपवित्र, कृशशरीर, वृद्धावस्था, अतिमूर्ख, क्रोधवाला और पिशुन (निन्दक) स्वभाव ऐसा शनिका स्वरूप है।

ग्रहोंके वर्णका परिज्ञान—

भानो रक्तो रोहितो रोहितांशोः पङ्गोः श्यामो ज्ञस्य पालाशवर्णः।
पीयूषांशोः पाण्डरो भार्गवस्य गौरो वर्णः पीत इन्द्रार्चितस्य ॥ ४५ ॥

सूर्य और मङ्गलका लालवर्ण, शनि का काला, बुधका हरित (हरा) गुरुका पीत (पीला) शुक्रका तथा चन्द्रमा का श्वेत वर्ण है।

ग्रहोंके ताम्रादि वर्ण का परिज्ञान—

ताम्रः श्वेतो रक्तपालाशवर्णौ पीतो वर्णः कर्बुरः कृष्णाकान्तिः।
प्रश्ने नष्टादौ क्रमेण ग्रहाणां वर्णानाहुर्वासरेशादिकानाम् ॥ ४६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नष्ट तथा हृतादि प्रश्नमें ताम्र, श्वेत, रक्त, हरित, पीत, कर्बुर और कृष्ण ये क्रमसे सूर्यादि ग्रहोंके वर्ण हैं।

ग्रहदिशा परिज्ञान —

प्राच्यादितः पपीः काव्यो माहेयो भुजगो यमः।
कलेशः कोविदो गौरो गदिताः पतयो दिशाम् ॥ ४७ ॥

पूर्वादि के क्रमसे सूर्य, शुक्र, भौम, राहु, शनि, चन्द्र बुध और गुरु ये दिशा ओं के स्वामी कहे हैं।

ग्रहों की द्विपदादि संज्ञाका परिज्ञान—

विहङ्गमौ वित्तपनौ सरीसृपाकारः कलावान द्विपदौ सितार्चितौ।
पशू कुजार्कौ वनशैलचारिणो मार्त्तण्डमाहेय मृदुध्वजाहयः ॥ ४८ ॥
विद्वद्गृहग्रामचरौ ज्ञगीष्पती जडांशुकाव्यौ जलचारिणौ मतौ।
तुषारदीप्तिद्युमणी प्रकाशकौ स्युःपञ्च ताराखचराः कुजादयः ॥ ४९ ॥
भुजङ्गकेतू तिमिरस्वरूपिणौ धरासुराणां सितवाक्पती पती।
विशां विधुर्बाहुभुवां कुजारुणौ ज्ञः शूद्रनाथो रविजोऽन्त्यजेश्वरः ॥ ५० ॥

बुध और सूर्य का पक्षियों के समान आकार, चन्द्रमा का सरीसृपाकार अर्थात् बिल वासियों के सदृश आकार, शुक्र और गुरु द्विपद, मङ्गल और शनि चतुष्पद हैं। सूर्य, भौम, शनि केतु और राहु ये पाँचों वनपर्वत-चारी, बुध और गुरु ये दोनों पण्डितग्रह तथा ग्रामचारी एवं चन्द्रमा और शुक्र जलचारी हैं। चन्द्रमा और सूर्य दोनों प्रकाशकग्रह हैं। भौमादि पाँच ताराग्रह हैं। एवं राहु और केतु अन्धकार स्वरूप हैं। शुक्र और गुरु ब्राह्मणों के स्वामी, चन्द्रमा वैश्यों का स्वामी, मङ्गल और सूर्य क्षत्रियों के स्वामी, बुध शूद्रों का स्वामी एवं शनि अन्त्यजों का स्वामी है।

ग्रहजाति परिज्ञान—

भूपो भगः शीतकरस्तपस्वी सुवर्णकारो रुधिरो द्विजोवित्।
वैश्योऽसुरेज्यो वृषलोऽर्कपुत्रो वणिग्गुरुर्व्यालपतिर्निषादः ॥ ५१ ॥

'सूर्य' क्षत्रिय, 'चन्द्रमा' तपस्विन्, 'भौम' सुवर्णकार (सुनार), 'बुध' ब्राह्मण, 'शुक्र' वैश्य, 'शनि' वृषल (शूद्र) 'गुरु' वणिज् (व्यापारी) 'राहु' निषाद (मल्लाह) जातिका स्वामी है।

ग्रहगुण परिज्ञान—

सत्त्वप्रधाना रविसोमसूरयो रजोगुणौ सौम्यसितौ तमोगुणाः।
मन्दोरगास्त्रास्तरणिर्यदभ्रगात्त्रिंशांशके तस्य गुणो निगद्यते ॥ ५२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्य, चन्द्र और गुरु ये तीनों सत्त्वगुण प्रधान, बुध और शुक्र रजोगुण वाले एवं शनि, राहु और मङ्गल ये तीनों तमो गुणवाले ग्रह हैं। जन्म समय में सूर्य. जिस ग्रह के त्रिंशांशक में हो मनुष्य में उसी ग्रह का सत्त्वादि गुण होता है।

ग्रहोंका सुखदुःखकर्तृत्व परिज्ञान—

भोगीनभूमीभवभानुपुत्रा दुःखप्रदा देहभृतां प्रकृत्या।
सौख्यप्रदाः स्युः शिशिरांशुसूनुसुधामयूखामरमंत्रिकाव्याः ॥ ५३ ॥

राहु, सूर्य, भौम और शनि ये प्रकृति से मनुष्यों को दुःख दायक हैं। बुध, चन्द्र, गुरु और शुक्र ये मनुष्यों को सुख देने वाले हैं।

ग्रहों की स्थिरादि संज्ञा का परिज्ञान—

स्थिरो द्युतीनां पतिरिन्दुनन्दनो मिश्रश्चरः कैरवबन्धुरास्फुजित्।
लघुर्मृदुर्निर्जरराजपूजित उग्रः कुजस्तीक्ष्ण इनात्मजः स्मृतः ॥ ५४ ॥

'सूर्य' स्थिर, 'बुध' मिश्र, चन्द्रमा, चर, 'शुक्र' लघु, 'गुरु' मृदु, 'भौम' उग्र और 'शनि' तीक्ष्ण संज्ञक जानना चाहिए।

ग्रहों के द्रव्य तथा अधिदेव का परिज्ञान—

ताम्रं मणिर्हाटकशुक्तिरौप्यमुक्ताफलायांसि धनानि भानोः।
सूर्यात्स्युरग्न्यम्बुविशाखविष्णुशक्रेन्द्रपत्नीविधयोऽधिदेवाः ॥ ५५ ॥

ताम्र (ताम्बा), मणि (रत्न), हाटक (सुवर्ण), शुक्ति (सिप्पी), रौप्य (चान्दि), मुक्ताफल (मोती), अयस् (लोह), ये क्रम से सूर्यादि ग्रहों के द्रव्य हैं। अग्नि, जल, कार्तिकेय, विष्णु, इन्द्र, शची और ब्रह्मा ये क्रमसे सूर्यादि ग्रहों के अधिदेव हैं।

ग्रहों के रत्न तथा वस्त्रों का परिज्ञान—

इन्दोर्मुक्ताऽर्कस्य माणिक्यमार्केर्नीलं वज्रं भार्गवस्य प्रवालम्।
पृथ्वीसूनोर्गीष्पतेः पुष्परागं रत्नंज्ञेयं ज्ञस्य गारुत्मताख्यम् ॥ ५६ ॥
वैदूर्य्यरत्नं शिखिनः प्रभोरहेर्गोमेदरत्नं वसनं विकर्त्तनात्।
स्थूलाभिधं रम्यनवं कृशानुनाऽम्बुनाहते मध्यदृढे जरत्क्रमात् ॥ ५७ ॥

चन्द्रमा का मुक्ताफल, सूर्य का माणिक्य, शनिका नील, शुक्र का वज्र (हीरा) मङ्गलका प्रवाल (मुंगा) गुरु का पुष्पराग (पुखराज) बुधका गारुत्मत (मरकतमणि) राहु का गोमेद (मणि विशेष). एवं केतु का वैदूर्य रत्न हैं। स्थूल, सुन्दर नव, अग्निहत, जलहत, मध्यम, दृढ और जीर्ण ये क्रमसे सूर्यादि ग्रहों के वस्त्र हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहों के क्रीडास्थान का परिज्ञान—

गीर्वाणाम्भस्तीरमग्निर्विहारकोशस्वापा उकरराख्यप्रदेशः ।
क्रीडास्थानान्याहुरार्याः खरांशो राहोः केतोर्वेश्म तत्कोणमेवम् ॥ ५८ ॥

देवालय, जलतट, अग्निस्थान, विहारस्थान, कोश (खजाना) स्थान, शयन स्थान और उत्कर (उखर) प्रदेश ये क्रमसे सूर्यादि ग्रहों के क्रीडा स्थान हैं । एवं राहु और केतुका गृह तथा गृहकोण क्रीडा स्थान हैं ।

ग्रहों के प्रदेश का परिज्ञान—

आरो लङ्कापूर्वतः कृष्णिकान्तं गौतम्यन्तं यावदच्छस्ततो वित् ।
जाह्नव्यन्तं विन्ध्यगोत्रान्तमिज्यः प्रालेयागान्तं विवस्वत्तनूजः ॥ ५९ ॥

लङ्कासे कृष्णानदी पर्यन्त भौम, कृष्णानदी से गौतमी (गोदावरी) नदी पर्यन्त शुक्र, गौतमी (गोदावरी) से गङ्गापर्यन्त बुध, गङ्गासे विन्ध्याचल पर्यन्त गुरु और विन्ध्याचल से हिमालय पर्यन्त शनि का प्रदेश है ।

ग्रहों के रसका परिज्ञान—

विदः कषायः कटुकोऽस्रभान्वोस्तीक्ष्णोऽगुपङ्ग्वोर्मधुरोऽर्चितस्य ।
क्षारंविधोरास्फुजितोऽम्लनामा रसः सवीर्य्यस्य रसस्य सौख्यम् ॥ ६० ॥

बुधका कषाय (कशैल), मङ्गल तथा सूर्यका कटुक (कडवा), राहु तथा शनि का तीक्ष्ण (तेजरसवाला), गुरु का मधुर (मीठा), चन्द्रमा का क्षार (लवण) और शुक्र का अम्ल (खट्टा) रस है । जन्मसमय वा प्रश्न-समय में जो ग्रह सब से अधिक बली हो उसके रसका सौख्य कहे ।

ग्रहों की अवस्था का परिज्ञान —

शिशुस्तुषारांशुसुतः कुजो युवा मध्यौ सुधादीधितिदानवार्चितौ ।
छायाधिनाथामरमंत्रिपन्नगच्छायातनूजाः स्थविरा नभश्चराः ॥ ६१ ॥

बुध बालक, मङ्गल युवा (जवान), चन्द्र तथा शुक्र मध्यावस्था एवं सूर्य, गुरु राहु तथा शनि ये चार ग्रह वृद्धावस्था वाले हैं ।

प्रकारान्तर से ग्रहों की अवस्था का परिज्ञान—

चान्द्रिः कुमारः कुटिलाभिधः शिशुः पञ्चाशदर्कोऽत्रिसुतोऽब्दसप्ततिः ।
त्रिंशद्गिरीशोऽहिशिखीनजाः शतं सँव्वत्सराणां भृगुजोऽष्टिवत्सरः ॥ ६२ ॥

बुध, कुमार, मङ्गल शिशु, सूर्य पंचाशवर्ष, चन्द्रमा सत्तरवर्ष, गुरु तीसवर्ष, राहु, केतु तथा शनि सौवर्ष एवं शुक्र सोलहवर्ष की अवस्था वाला है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सजल निर्जल ग्रह का परिज्ञान—

शुष्कग्रहाः शोणितधामधामनीलाम्बराश्वित्रशिखण्डिजज्ञौ ।
पाथोभयातौ सजलौ मतौ तौ समेधपुष्पौ सितरोहिणीशौ ॥ ६३ ॥

मङ्गल, सूर्य और शनि ये तीनों शुष्क (निर्जल) ग्रह हैं । गुरु और बुध ये दोनों सजल राशियों सजल और निर्जल राशी में निर्जल (शुष्क) होते हैं । एवं शुक्र और चन्द्रमा ये दोनों सजल (आर्द्र) ग्रह हैं ।

ग्रहों की उच्च नीच राशिका परिज्ञान—

यान्त्युच्चतां रविमुखाः क्रियगोमृगस्त्री-
कर्कान्त्यतौलिषु लवैर्दशभिर्हुताशैः ।
व्यालाश्विभिस्तिथिमरुद्भमितैर्नगेन्द्रैस्ते
नीचत्वमुच्चभवनान्मदशेषु यान्ति ॥ ६४ ॥

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन और तुला राशि में दश, तीन, अट्ठाईस, पन्द्रह, पांच, सत्ताईस, और बीस इन उक्तांशों से सूर्यादि ग्रह क्रमसे उच्चत्वको प्राप्त होते हैं । एवं प्रत्येक सूर्यादि ग्रह अपनी उच्च राशि से सप्तम राशिमें उक्त अंशकों से नीचत्व को प्राप्त होते हैं ।

ग्रहों की मूलत्रिकोण राशिका परिज्ञान—

भानोस्त्रिकोणभवनानि हरिर्वृषोऽज्ञो
योषा धनुर्घटघटा नरवभार्कबाणैः ।
काष्ठाद्युविंशतिमितैः क्रमतो लवैः स्व—
तुङ्गांशतो निगदितः परतस्तदंशाः ॥ ६५ ॥

सिंह, वृष, मेष कन्या, धनु, तुला और कुम्भ ये क्रमसे सूर्यादि ग्रहोंकी मूलत्रिकोण राशि हैं । बीस, सत्ताईस, बारह, पाँच, दश पन्द्रह और बीस ये क्रमसे मूलत्रिकोणांश हैं । चन्द्रमाके वृषराशि में उच्चांश तीन से परे २७ अंश मूलत्रिकोणांश होते हैं । एवं बुध की कन्या राशि में उच्चांश पन्द्रह से पाँच अंश अर्थात बीस अंश पर्यन्त मूलत्रिकोणांश होते हैं और मूल त्रिकोणांश २० से परे ३० अंश पर्यन्त स्वगृहांश होते हैं । शेष ग्रहों के उक्त मूलत्रिकोणांशों से परे सब शेष अंश स्वगृहांश होते हैं ।

राहु तथा केतुका स्वगृहादि परिज्ञान—

राहोर्गृहं स्त्री घटभं त्रिकोणं तुङ्गो नृयुक् तुङ्गलवा नखाः स्युः ।
केतोर्झषो वेश्म हरिस्त्रिकोणमुच्चं धनुस्तुङ्गलवाः खयुग्माः ॥ ६६ ॥

राहु का कन्या गृह, कुम्भ मूलत्रिकोण; मिथुन उच्च और बीस उच्चांश है । एवं केतुका मीन गृह, सिंह मूलत्रिकोण धनु उच्च और बीस उच्चांश हैं ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहोंकी निसर्ग मैत्रीका परिज्ञान—

सूनोः सखायः शशिसूरिशोणिताः सौम्यः समः सौरिसितौ रिपू विधोः
भित्रे विदर्कावितरे समा मता भूजस्य भित्राणि शशीनसूरयः ॥ ६७ ॥
हेम्नो ऽहितो हेलिजभौ समौ विदो धिष्ण्योष्णभानौ सुहृदावरिर्विधुः ।
मध्या महीजार्यमा गुरो रवीन्द्वारा हिता भार्गवरोधनौ रिपू ॥ ६८ ॥
सौरिः समो ऽथास्फुजितो द्विपावितोपेशौ विदैनी सुहृदौ परौ समौ ।
पङ्गोर्हितौ पण्डितभावसूक्ष्मशिसूराः सपत्नाः सुरपूजितः समः ॥ ६९ ॥

सूर्य के चन्द्र, गुरु और मङ्गल मित्र; बुध सम एवं शनि तथा शुक्र शत्रु हैं। चन्द्रमा के बुध तथा सूर्य मित्र और अन्य सब ग्रह अर्थात् मङ्गल, गुरु, शुक्र तथा शनि सम हैं। मङ्गलके चन्द्र, सूर्य तथा गुरु मित्र; बुध शत्रु एवं शनि तथा शुक्र सम हैं। बुधके शुक्र तथा सूर्य मित्र; चन्द्रमा शत्रु एवं मङ्गल गुरु तथा शनि सम है। गुरु के रवि, चन्द्र तथा मङ्गल मित्र; शुक्र तथा बुध शत्रु एवं शनि सम हैं। शुक्र के सूर्य तथा चन्द्र शत्रु; बुध तथा शनि मित्र एवं अन्यग्रह अर्थात् भौम और गुरु सम हैं। शनि के बुध तथा शुक्र मित्र; मङ्गल, चन्द्र तथा सूर्य शत्रु एवं गुरु सम है।

राहु तथा केतुकी निसर्गमैत्री का परिज्ञान—

मित्राण्यगोर्मैत्रि भसूरयः समौ चूडीन्दुजौ शत्रव इन्द्विनासृजः ।
केतोर्हिता हेलिहिमांशिलासुता ज्ञेज्यौ समौ भार्गवभास्करौ द्विपौ ॥ ७० ॥

राहु के शनि, शुक्र तथा गुरु मित्र; केतु तथा बुध सम एवं चन्द्र, सूर्य तथा मङ्गल शत्रु हैं। केतु के सूर्य, चन्द्र तथा भौम मित्र; बुध तथा गुरु सम एवं शुक्र तथा शनि शत्रु हैं।

ग्रहोंकी तत्कालमैत्री का परिज्ञान—

स्वान्त्यायसोत्थास्पद सौख्यसंस्था ये ऽभीष्टकाले सुहृदः खगास्ते ।
ये खेचरा एकभगाः सुतार्य्यस्तायुर्नवस्था रिपवस्तथा ते ॥ ७१ ॥

द्वितीय; द्वादश, एकादश, तृतीय, दशम और चतुर्थ में स्थित ग्रह परस्पर तात्कालिक मित्र होते हैं। एवं एकस्थान, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और नवम में स्थित ग्रह परस्पर तात्कालिक शत्रु होते हैं।

ग्रहों की पञ्चधा मैत्री का परिज्ञान—

द्विधेष्टता स्यादधिमित्रता चेद् द्विधारिता यद्यतिशत्रुता स्यात् ।
समानमित्रं सुहृदेव मित्रारिता समः शत्रुसमो ऽरिरेव ॥ ७२ ॥

किसी ग्रह का कोई ग्रह निसर्ग और तत्काल इन दोनों मैत्रियों में मित्र होतो पञ्चधा मैत्री में उस ग्रह का वह ग्रह 'अधिमित्र' होता है। एवं निसर्ग और तत्काल दोनों मैत्रियों में यदि शत्रु होतो पञ्चधा में 'अधि-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शत्रु ' होता है। निसर्ग में सम और तत्काल में मित्र होतो पञ्चधा में ' मित्र ' होता है। निसर्ग और तत्काल इन दोनों मैत्रियोंके मध्यमें एकमें शत्रु और दूसरी में मित्र होतो पञ्चधा में ' सम ' होता है। एवं निसर्ग में सम और तत्काल में शत्रु होतो पञ्चधा में ' शत्रु ' होता है।

ग्रहोंकी एकपादादिदृष्टि का परिज्ञान—

पाताङ्गिः सहजपदे गुरुस्त्रिकोणं।
वीक्षेत प्रलयजले इलाभवोऽस्तम्।
पश्येयुः सकलखगाः समस्तभावान्।
यौधादीन् क्रमश इहैकपादवृद्ध्या ॥ ७३ ॥

तृतीय तथा दशम को शनि, त्रिकोण (पञ्चम तथा नवम) को गुरु, अष्टम तथा चतुर्थ को भौम और सप्तम भावको सब ग्रह पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। तृतीय दशम को शनि के अतिरिक्त सब ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। पञ्चम् नवम को गुरुके अतिरिक्त सब ग्रह दो पाद दृष्टिसे देखते हैं। एवं अष्टम चतुर्थ को मङ्गल के अतिरिक्त तीन पाद दृष्टि से देखते हैं।

राहु तथा केतु की दृष्टिका परिज्ञान—

दृष्टिः सुतेऽस्ते तमसः समग्रा स्वर्भेऽधिहीना गगने कुटुम्बे।
द्विपाददृष्टिः सहजे सपत्ने पादोन्मिता दृक् छिकिनोऽगुवद् दृक् ॥ ७४ ॥

राहुकी पञ्चम तथा सप्तम स्थानपर सम्पूर्णदृष्टि, स्वाधिष्ठित, राशिपर तीनपाददृष्टि, दशम तथा द्वितीयपर दोपाददृष्टि एवं तृतीय तथा षष्ठपर एकपाददृष्टि होती है। राहुके समान ही केतु की दृष्टि जाननी चाहिए।

ग्रहों की ऊर्ध्वादि दृष्टिका परिज्ञान—

स्यादूर्ध्वदृष्टिः क्षितिसूनुमन्त्रोः कटाक्षदृक् काव्यकलेशजन्योः।
समानदृष्टिः सरपूजितेन्द्वोरधोदृगादित्यसुताहिराजोः ॥ ७५ ॥

मङ्गल सूर्य की ऊर्ध्वदृष्टि, शुक्र बुध की कटाक्षदृष्टि, गुरुचन्द्रकी समान दृष्टि एवं शनि राहु की अधोदृष्टि होती है।

ग्रहों की मुखदिशा का परिज्ञान—

पूर्वाननौ भार्गवभानुमन्तावुदङ्मुखौ बोधनदेववन्द्यौ।
प्रत्यङ्मुखौ पङ्गुतुषाररश्मी याम्याननौ पन्नगलोहिताङ्गौ ॥ ७६ ॥

शुक्र सूर्य का पूर्वमुख, बुध गुरु का उत्तर मुख, शनि चन्द्रका पश्चिम मुख एवं राहु और मङ्गलका दक्षिण मुख है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहों के ऊर्ध्व मुखादिका परिज्ञान—

अधोमुखास्तिग्मकरस्य पूर्वषट्कोपयाता गगनेचरा ये ।
ऊर्ध्वाननाख्या अपरार्द्धयाता भवन्ति सौख्यद्रविणप्रदास्ते ॥ ७७ ॥

सूर्याक्रान्त राशि से छः राशिके अन्तराल में स्थित ग्रह 'अधोमुख' होते हैं। एवं सूर्याक्रान्त राशि से जोग्रह छः राशिसे अधिक हों अर्थात् अपरार्द्ध में स्थित हों वे ऊर्ध्वमुखवाले सुखधन देने वाले होते हैं।

ग्रह लोक परिज्ञान—

पुंलोकपौ पङ्कजिनीशभौमौ जैवातृकाच्छौ पितृलोकनाथौ ।
नीलाम्बरो नारकनायको वित्तिर्य्यक्पतिः स्वर्गपतिः सुरेज्यः ॥ ७८ ॥
केचिद्वदेयुः पितृलोकपौ सितसोमौ यमज्ञौ नरकाधिनायकौ ।
त्रिविष्टपेशस्त्रिदिवेशवन्दितस्तिर्य्यग्विभू मङ्गललोकबान्धवौ ॥ ७९ ॥

मनुष्यलोकके सूर्य भौम, पितृलोकके चन्द्र शुक्र, नरक का शनि, तिर्यग् लोकका बुध एवं स्वर्गका गुरुस्वामी है। पितृलोक के चन्द्र शुक्र, नरक के शनि बुध, स्वर्गका गुरु एवं तिर्यक् लोकके मङ्गल शुक्र स्वामी हैं। इस-प्रकार कोई आचार्य कहते हैं।

प्रभातादिसमयाधिपत्य परिज्ञान—

मध्याह्नमादित्यमहीकुमारौ निलिम्पमन्त्रीन्दुजनी प्रभातम् ।
विभावरीशोशनसौ पराह्णं सन्ध्या ऽन्धकारोष्णमरीचिजातौ ॥ ८० ॥

मध्याह्न के सूर्य भौम, प्रभात के गुरु बुध, पराह्ण के शुक्र एवं सन्ध्याकाल के राहु शनि स्वामी हैं।

ग्रहों की ऋतुओंका परिज्ञान—

हेमन्त इन्द्रसचिवस्य शरद्बुधस्य ।
ग्रीष्मो ऽर्कभौमतमसां शिशिरो ऽसितस्य ।
प्रावृड् विधोः सुरभिरास्फुजितो ऽङ्गगस्य ।
खेटस्य * वर्त्तुरुदयस्थदृगाणपस्य ॥ ८१ ॥

गुरुकी हेमन्त, बुधकी शरद् भौम, सूर्य और राहुकी ग्रीष्म, शुक्रकी वसन्त, शनिकी शिशिर और चन्द्रमाकी वर्षा ऋतु है। नष्टजातक वा हृतनष्टादि प्रश्न में लग्न गत ग्रहों के मध्यमें जो अधिक बली ग्रह हो उसकी ऋतु को कहे : यदि लग्न में ग्रह न होता लग्नगत द्रेष्काण राशिके स्वामी की ऋतु में हृत नष्टादि वस्तुके लाभ को कहे।

* वर्त्तुरित्यत्र वा+ऋतुः 'आद्गुण इत्यनेन गुणः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहोंके शुभाशुभत्व का परिज्ञान—

पापाःखपान्था गलितेन्दुहीनाराकिध्वजास्तत्सहितो बुधोऽपि ।
सन्तोऽखिलग्लौसितसूरिसौम्याः क्रूरा यमारा शुभदा सितेज्या ॥ ८२ ॥

क्षीणचन्द्र, राहु, सूर्य, भौम, शनि और केतु ये पापग्रह हैं । पापग्रहों से युक्त बुध भी पाप होता है । पूर्णचन्द्र, शुक्र, गुरु और बुध ये शुभ ग्रह है । शनि मङ्गल क्रूर एवं शुक्र गुरु शुभ फल प्रद होते हैं ।

चन्द्रमाके पूर्णादिका परिज्ञान—

मध्यो मृगाङ्कः सितपक्षपक्षतेः कालस्य तिथ्यन्तमथाखिलः शशी ।
एकादशीतोऽनिलभुक्कलान्तिमं कृष्णस्य षष्ठ्याः कृशइन्दुरुच्यते ॥ ८३ ॥

शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा से दशमी पर्य्यन्त ' मध्यचन्द्र ' शुक्ल एकादशी से कृष्ण पञ्चमी पर्यन्त ' पूर्णचन्द्र ' एवं कृष्ण षष्ठीसे अमावास्या पर्यन्त ' क्षीणचन्द्र ' होता है ।

ग्रहोंकी जागरूकादि संज्ञाका परिज्ञान—

जागरूकउदितः स्वनवांशः स्वीयतुङ्गलवको ऽपि तथा स्यात् ।
मित्रखेचरलवः शयनाख्यः सुप्तकस्त्वधरशावत्तभागः ॥ ८४ ॥

स्वनवांश तथा उच्चनवांश ' जागरूक ' मित्रनवांश ' शयन ' एवं नीचनवांश तथा शत्रुनवांश ' सुप्तसंज्ञक ' होता है ।

सूर्य के सुबलत्व का परिज्ञान—

स्वोच्चे स्वराशौ निजवारभागहोरात्रिभागेषु गृहप्रवेशे ।
सौम्यायने खे दिनमध्यभागे सुहृल्लवादौ सबलोऽशुमाली ॥ ८५ ॥

अपनी उच्चराशि (मेष) में, अपनी राशि (सिंह) में, अपने वार, नवांश, होरा और द्रेष्काण में, राशि के आरम्भ में, उत्तरायण में, दशमस्थान में, दिनके मध्यभाग में और मित्रांशादि में ' सूर्य बलवान् ' होता है ।

चन्द्रमा के सुबलत्वका परिज्ञान—

कर्के वृषेऽमृतकरोभवनावसाने
याम्यायने तमिमुखेऽखिलखेटदृष्टः ।
सद्दीक्षितः स्वदिनभार्द्धदगाणभागे
सन्धिं विनाऽखिलकलासहितो बलीयान् ॥ ८६ ॥

कर्क में, वृषमें, राशिके अन्त्य में, दक्षिणायन में रात्रिके आरम्भ में, समस्त ग्रहों से दृष्ट, शुभ दृष्ट, अपने

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दिन, होरा, द्रेष्काण और नवांश में, सन्धिको छोड़कर सम्पूर्णकला युक्त 'चन्द्रमा बलवान्' होता है।

भौमके सुबलत्वका परिज्ञान--

भूनन्दनो निजदृगाणनवांशवर्ग--
वारेष्वलिक्रियकुरङ्गघटान्त्यभेषु ।
तस्यां निकेतवदने कुटिले च याम्या--
शायां बली नभसि नेमिगृहेऽपि वेद्यः ॥ ८७ ॥

अपने द्रेष्काण, नवांश, वर्ग और वार में, वृश्चिक, मेष, मकर, कुम्भ और मीन राशि में, रात्रि, में राशि के आरम्भ में, वक्रगति में, दक्षिण दिशा में और दशमभावमें कर्क राशिगत मङ्गल भी बलवान् होता है।

बुध के सुबलत्व का परिज्ञान—

हेलिं विना हयतनौ युवतौ विपञ्च्यां
स्वत्र्यंशके निजनवांशकवर्गवारे ।
देहे सदोदगयने गृहमध्ययाते
नक्तं दिवा तुहिनदीधितिजो बलीयान् ॥ ८८ ॥

सूर्य के बिना धनु, कन्या और मिथुन राशि में, अपने द्रेष्काण, नवांश, वर्ग और वार में, लग्न में उत्तरायण में, राशि के मध्यभाग में रात्रि तथा दिनमें 'बुध बली' होता है।

गुरु के सुबलत्व का परिज्ञान—

जीवो बलीत्थस्थली चापकर्के मध्यंदिने सौम्यपथे भमध्ये ।
स्वांशे स्ववर्गे स्वदिने कुरङ्गे कुम्भेऽपि खेऽङ्गे हृदि वित्तदाता ॥ ८९ ॥

मीन, वृश्चिक, धनु और कर्क में, मध्याह्न में, उत्तरायण में, राशिके मध्यभाग में, अपने नवांश, वर्ग और वार में गुरु बली होता है। एवं मकर तथा कुम्भ राशि गत गुरुभी दशम लग्न वा चतुर्थ में हो तो धन देने वाला होता है।

शुक्र के सुबलत्व का परिज्ञान—

कविर्बली स्वोच्चगृहे निजाहे स्ववर्गभांशे कुटिलेऽब्जसङ्गे ।
युद्धे भमध्ये पुरतः खरांशोर्व्यये ऽनुजेऽरौ भुवने पराह्णे ॥ ९० ॥

स्वोच्चराशि में, अपने वारमें, अपनेवर्ग, राशि और नवांश में, वक्रगति में, चन्द्रमा के साथ में, युद्ध में, राशि के मध्यभाग में, सूर्य से आगे, व्यय, तृतीय, षष्ठ और चतुर्थ भाव में एवं पराह्णकाल में 'शुक्रबली' होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शनि के सुबलत्व का परिज्ञान--

तुलैणकुम्भेषु मदे गृहान्ते याम्यायने सर्वगृहेषु वक्रे ।
स्वकीयवारे स्वदृगाणवर्गेऽसिते दले ब्रध्नजनिर्बलिष्ठः ॥ ९१ ॥

तुला, मकर और कुम्भ राशि में सप्तमस्थान में राशि के अन्त्य में, दक्षिणायन में, वक्र होनेपर सब राशियों में अपने वार में, अपने द्रेष्काण और वर्ग में, एवं कृष्णपक्ष में 'शनि बलवान्' होता है ।

ग्रहों के दिग्बल का परिज्ञान--

प्राच्यां बलिष्ठावुदये विदिज्यौ याम्येऽम्बरे वीर्ययुतौ कुजेनौ ।
पतङ्गजोऽस्ते बलवान् प्रतीच्यां सौम्ये सुखे सोमसितौ ससारौ ॥ ९२ ॥

पूर्वदिशा में तथा लग्न में बुध तथा गुरु बलवान् होते हैं । दक्षिण दिशा तथा दशम में मङ्गल और सूर्य बली होते हैं । पश्चिम तथा सप्तम में शनि बली होता है । एवं उत्तर तथा चतुर्थ में चन्द्र और शुक्र बलवान् होते हैं ।

ग्रहों के युग्मायुग्मबल तथा द्रेष्काण बल का परिज्ञान--

योपाभगौ भेशभृगू बलान्वितौ परेऽभ्रपान्थाः सबला नृराशिगाः ।
आद्ये दृगाणे बलिनो नरग्रहा मध्ये नपुंसौ चरमेऽङ्गनाग्रहौ ॥ ९३ ॥

सम राशि में चन्द्र तथा शुक्र बलवान् होते हैं । एवं अन्यग्रह विषम राशि में बलवान् होते हैं । आद्य-द्रेष्काण में पुरुषग्रह, मध्यद्रेष्काण में नपुंसकग्रह एवं अन्त्य द्रेष्काण में स्त्री ग्रह बलवान् होते हैं ।

ग्रहों के केन्द्रादिबल का परिज्ञान--

श्रेष्ठः समोऽल्पो त्रऽचतुष्टयादिगोऽखिलाः सवीर्या निजवारपूर्वगाः ।
बलक्षपक्षे सुकृताः सहोऽन्विताः पक्षेऽसिते पामरनाकचारिणः ॥ ९४ ॥

केन्द्र में स्थितग्रह का 'रूपबल', पणफर में स्थित ग्रहका 'अर्द्धबल' एवं आपोक्लिम में स्थित ग्रहका 'पादबल' होता है । शुक्लपक्ष में शुभग्रह और कृष्ण पक्षमें पापग्रह बलवान् होते हैं ।

अहोरात्र त्रिभागबल परिज्ञान—

हिमांशुजन्मा द्युमुखे द्युनाथो मध्यंदिने मन्दगतिर्दिनान्ते ।
तन्मानने ऽब्जः सबलः सदार्क्य उपान्त आरो भृगुजोऽर्द्धरात्रे ॥ ९५ ॥

दिनके आरम्भ में बुध, दिन के मध्य में सूर्य, दिन के अन्त में शनि, रात्रि के आरम्भ में चन्द्रमा, मध्य-रात्रि में शुक्र, रात्रिके अन्त में मङ्गल एवं दिन तथा रात्रि में गुरु बली होते हैं ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नतोन्नत तथा चेष्टाबल परिज्ञान--

कुजेन्दुमन्दाः सबला निशीन्दुजः सदा ऽह्निहेलीज्यसिता अथाहवे ।
उदग्गतो वक्रग ओपधीश्वरसङ्गे ऽपि कुर्याद्बलमत्र चैष्टिकम् ॥ ९६ ॥

रात्रिमें भौम, चन्द्र तथा शनि बलवान् होते हैं। बुध नित्य बली होता है। एवं दिनमें सूर्य गुरु तथा शुक्र बलवान् होते हैं। युद्ध के समय उत्तर दिशा में स्थित जयी ग्रह, वक्र गति ग्रह, एवं चन्द्रमा के साथमें स्थित ग्रह चेष्टाबल को करता है।

प्रकारान्तरसे चेष्टाबल तथा निसर्गबल परिज्ञान--

सौम्यायने भपभगौ बलिनौ तु शेषा
वक्रेतियुध्दजयिभूरिकरप्रदीप्ताः ।
वृद्ध्या निसर्ग बलिनः क्रमतः कृशाङ्ग
माहेयहेम्नगुरुकाव्यहिमांशुहंसाः ॥ ९७ ॥

चन्द्रमा तथा सूर्य की उत्तर क्रान्ति होतो चेष्टा बली होते हैं। शेष ग्रह वक्रगति वाले युद्धमें विजयी, अधिक रश्मिवाले तथा प्रदीप्तावस्था अर्थात् उच्चराशि में होंतो 'चेष्टाबली' होते हैं। शनि, मङ्गल, बुध गुरु, शुक्र, चन्द्र और सूर्य रूपबल ६० के अष्टमांश ८।३४।१७ की वृद्धि के क्रमसे 'निसर्गबली' होते हैं।

राहु तथा केतु के सुबलत्व का परिज्ञान--

गोकर्ककन्याल्यजकुम्भराशिषु विहायसे ऽहिर्बलसंयुतस्ततः ।
नक्तं धनुर्गो ऽनिमिपाङ्गनागृहे शिखावदुत्पातभवे शिखी बली ॥ ९८ ॥

वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मेष तथा कुम्भ राशिमें तथा दशम स्थानमें राहु बलवान् होता है। रात्रि में धनु, वृष, मीन और कन्याराशि में केतु के त्रिविधोत्पातों के उत्पन्न समय में 'केतु' बलवान् होता है।

ये व्योमगेहा गदितप्रकारबलान्वितास्ते यदि मूलगाः स्युः ।
वीर्य्योज्झिता भावदशासु योगे सम्यङ्न सन्त्युक्तफलानि यानि ॥ ९९ ॥

पूर्वोक्त प्रकार से जो ग्रह बली हों यदि वे ग्रह राशि तथा भावके आरम्भ में हों तो तो निर्बल होते हैं। निर्बल ग्रहों के जो उक्त फल हों वे भाव, दशा तथा योग में उत्तम नहीं होते हैं।

ग्रहों के शुभाशुभ बल के प्रमाण का परिज्ञान--

पूर्णं शुभं तुङ्गगृहे ऽघ्रिहीनं कोणे स्वभे ऽर्द्धं सखिभे ऽघ्रितुल्यम् ।
फलं गजांशः समभे ऽरिनीचमौढ्ये ऽफलं दुष्टफलं प्रतीपात् ॥ १०० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपनी उच्च राशि में ग्रहका शुभफल पूर्ण मूलत्रिकोण राशि में चतुर्थांशहीन, स्वराशि में अर्द्ध, मित्र राशि में चतुर्थांश, समग्रहकी राशि में अष्टमांश एवं शत्रु राशि में, नीच राशि में तथा अस्तगत होने पर शून्य शुभफल होता है। अशुभफल विलोम विधि से होता है। अर्थात् उच्चराशि में शून्य अशुभफल और मूलत्रिकोण राशि में एकपाद अशुभफल होता है। इस प्रकार अन्यराशियों के फलका भी विचार करे।

ग्रहों के सुबलत्वमानका परिज्ञान—

षट्कं च सार्द्धं बलमार्यहेल्योः षट्कं विधोः सप्तकमिन्दुसूनोः।
बलं मरुद्रूपमितिः कुजार्क्योः स्यात्पञ्चरूपं सदलं सितस्य ॥ १०१ ॥

गुरु तथा सूर्य का ६।३० पूर्णबल, चन्द्रमा का ६ पूर्णबल, बुध का ७ पूर्णबल, भौम तथा शनि का ५ पूर्णबल एवं शुक्र का ५।३० पूर्णबल है।

ग्रहों के सामान्य बलाबलत्व का परिज्ञान—

स्वोच्चत्रिकोणनिजभांशदृगाणपूर्वे
वर्गोत्तमाधिसखिगेहमुखे स्थितो यः।
सेन्दुः सदीक्षितयुतो बलवान् विहङ्गो
नोक्रूरखेचरनिरीक्षितसंयुतः सः ॥ १०२ ॥

जो ग्रह अपनी उच्चराशि मूलत्रिकोण राशि स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काणादिमें वा वर्गोत्तमांश में अधिमित्रादि राशि में वा चन्द्रमा से युक्त, शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त एवं पापग्रह से दृष्ट वा युक्त न होता वह ग्रह बलवान् होता है।

स्वोच्चादिगाः कुजमुखाः कुटिलास्त्रयाता
मिश्रं फलं परिदिशन्त्यधिवैरिभस्थः
युद्धे पराजित इनस्य कराभितप्तो
यद्वाऽधरालयगतो विफलो विहङ्गः ॥ १०३ ॥

स्वोच्चादि राशि में प्राप्त हो कर भौमादि पञ्च तारा ग्रह यदि वक्रगति को प्राप्त हों वा अस्तगत हों तो मिश्रफल को देते हैं। अधि शत्रुकी राशि में स्थित युद्धमें पराजित अस्तगत वा नीचराशिगत ग्रह विफल (फलरहित) होता है।

महाबली वक्रग उच्चगोग्रहो मूलत्रिकोणस्वभतुङ्गराशिगः
नानिष्टदोऽर्कांशकतोऽशषट्कगः पूर्णं फलं यच्छति सन्ततं, खगः ॥ १०४ ॥

वक्रगति में प्राप्त तथा उच्च राशिगत ग्रह 'महाबली' होता है। मूलत्रिकोण राशिगत, स्वराशि गत तथा उच्चराशिगत ग्रह अशुभ फल नहीं देता है। यदि ग्रह प्रत्येक राशि में १२ अंश से १८ अंश के अन्तर्गत हो तो वह राशिजन्य पूर्ण फल को देता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

योऽनन्तपान्थो गुरुपूर्णदृष्ट्या दृष्टः सनानिष्टफलप्रदाता ।
सर्वेषु कार्येषु जडांशुजन्मा मिश्रः स्मृतो मिश्रफलप्रदश्च ॥ १०५ ॥

जो ग्रह गुरु से पूर्ण दृष्ट हो वह अशुभ फल नहीं देता है। सब कार्यों में 'बुध' मिश्र जानना चाहिए। एवं वह मिश्रफल देने वाला होता है।

अन्य योगमें ग्रहों की बुद्धिमत्ता का परिज्ञान—

यमः पतङ्गेन यमेन भूजनिरार्य्योऽसृजा वाक्पतिना हिमद्युतिः
कविः कलेशेन सितेन बोधनः सुधामयूखो विबुधेन वर्द्धते ॥ १०६ ॥

सूर्य से शनि, शनि से मङ्गल, मङ्गल से गुरु, गुरु से चन्द्रमा, चन्द्रमा से शुक्र, शुक्र से बुध और बुध से चन्द्रमा बढता है।

दोषशामकग्रह तथा विफलग्रह परिज्ञान—

निहन्ति हेम्नो भुजगेन्द्रदोषं मन्दोद्वयोर्भूतनयस्त्रयाणाम् ।
दोषं चतुर्णां भृगुजस्तु पञ्चदोषं गुरुर्गौ विनिहन्ति षण्णाम् ॥ १०७ ॥

सौम्यायने सप्तविहङ्गदोषं हंसो निहन्यादथ सेन इन्दुः ।
जीवोऽङ्गजे ज्ञोऽम्भसि मन्दगोऽस्तेऽच्छोऽरौ कुजोऽर्थे विफलास्तनोऽस्ते ॥ १०८ ॥

राहु के दोषको चन्द्रमा, बुध राहु के दोष को शनि, बुध राहु शनि के दोष को मङ्गल, बुध राहु शनि मङ्गल के दोष को शुक्र, बुध, राहु, शनि, मङ्गल शुक्र के दोष को गुरु, बुध, राहु, शनि, मङ्गल, शुक्र, गुरु के दोष को चन्द्रमा और बुध, राहु, शनि, मङ्गल, शुक्र, गुरु तथा चन्द्रमा के दोष को विशेषतः उत्तरायण में 'सूर्य' नाश करता है। सूर्य से युक्त चन्द्रमा, लग्न से पञ्चम में गुरु, चतुर्थ में बुध, सप्तम में शनि, षष्ठ में शुक्र और द्वितीय में भौम हो तो उक्त लक्षण युक्त ग्रह विफल होते हैं।

ग्रहों के इष्टानिष्ट फल का परिज्ञान—

इष्टप्रदो मन्दगतिर्मृतिस्थोऽरिष्टप्रदो मन्मथगो मघाभूः ।
प्रबन्धयातो पुरुहूतपूज्यः पातालगः पर्वरिदेहजातः ॥ १०९ ॥

अष्टम में 'शनि' शुभ फल दायक होता है। सप्तम में शुक्र, पञ्चम में गुरु एवं चतुर्थ में बुध अरिष्टप्रद होता है।

दीप्तिपतिः पथि पाथसि सोम ओजसि भूजनिरात्मनि जीवः ।
भोमदने मृदुरायुषि कुर्यादास्रवकं मुनयो जगुरन्ये ॥ ११० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नवम में सूर्य, चतुर्थ में चन्द्रमा, तृतीय में मङ्गल, पञ्चम में गुरु, सप्तम में शुक्र और अष्टम में शनि होता दुःख को करता है। इस प्रकार अन्य मुनिजन कहते हैं।

चरस्थिरद्वन्द्वभतः क्रमेणायाङ्कास्तगा वाथ तदीश्वरा ये।
जातित्रिभागाधिपमान्दिभेशा येऽनन्तवासा अतिदुःखदाः स्युः ॥ १११ ॥

चर राशि से लाभ में, स्थिर राशि से नवम में और द्विस्वभाव राशि से सप्तम में स्थित ग्रह अथवा उक्त भावों के स्वामी, बाईसवें द्रेष्काण का स्वामी और मान्दि राशिका स्वामी ये सब ग्रह अत्यन्त दुःख देने वाले होते हैं।

रोगे भगोऽखिलविधुर्वनगस्त्रिकोणे
गौरोऽसितः सहजगः सित उद्गमस्थः।
लाभेऽखिलाः शुभकरास्त्रिकगा न शस्ताः
स्वोच्चाः स्वनीचगृहगा दुरिता न शस्ताः ॥ ११२ ॥

षष्ठ में सूर्य, चतुर्थ में पूर्ण चन्द्रमा, त्रिकोण में गुरु, तृतीय में शनि, लग्नमें शुक्र और लाभ में सब ग्रह शुभ होते हैं। त्रिकस्थान में उच्चराशिगत ग्रह शुभ नहीं होते हैं। एवं नीचराशि गत पापग्रह शुभ नहीं होते हैं।

पूर्वार्द्धगाः पुष्करगाः पुरस्याऽपरोक्षकं ते स्वफलं दिशन्ति।
दधुः परोक्षं च फलं परार्द्धषट्कोपगा येऽम्बरचारिणस्ते ॥ ११३ ॥

लग्न के पूर्वार्द्ध में स्थित ग्रह प्रत्यक्ष रूप से अपने फल को देते हैं। एवं लग्न के परार्द्ध में स्थित ग्रह परोक्ष रूप से अपने फलको देते हैं।

ग्रहों के चतुर्विध सम्बन्धका परिज्ञान--

+ बन्धश्चतुर्विधोऽन्योन्यभस्थौ पूर्णेक्षितौ मिथः।
स्थित्यैकभे तदीयेशलोकनादेकभे स्थितिः ॥ ११४ ॥

+ इह ग्रन्थान्तरे सम्बन्धलक्षणमुक्तं ' ' तदित्थम् '–व्यत्यस्ताश्रयसम्बन्धश्चान्योन्यालोकसम्भवः। एकस्य राशौ संस्थित्या तदीशा लोकनादपि। सहवासाच्च सम्बन्धा इत्ये ते स्युश्चतुर्विधाः। अत्रापि पूर्वपूर्वाः स्युः सम्बन्धा बलवत्तराः। ' तथाहि'–प्रथमःस्थानसम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयकः। तृतीयस्त्वेकतो दृष्टिः स्थित्यैकत्र चतुर्थकः। अन्योन्यगो तथा स्वे स्वे संयुतावन्यभे स्थितौ। पूर्णेक्षितौ मिथोवापि चैकवर्गगतौ यदा ' इति। यथा– मेषोदये हरौ हिमांशु; कर्के कर्मसाक्षीः इति सुखधीशयोः परस्पर स्थानसम्बन्धः। वृषाङ्के वनितागृहगो वक्रो वैणिके,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रव्यादि सात ग्रहों के मध्य में यदि कोई दो ग्रह परस्पर एक दूसरे की राशि में होंतो ' प्रथमसम्बन्धच ' किन्ही दो ग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि होंतो ' द्वितीयसम्बन्ध ' एकग्रह की दृष्टि न हो और दूसरा ग्रह अपनी राशि में स्थित हुए ग्रह को पूर्ण दृष्टि से देखता होंतो ' तृतीयसम्बन्ध ' एवं कोई दो ग्रह एकराशि में स्थित होंतो ' चतुर्थ सम्बन्ध ' होता है। इस प्रकार सम्बन्ध चतुष्टय महर्षि पराशर ने कहा है।

मतान्तर से पाँचप्रकार के सम्बन्ध का परिज्ञान—

परस्परं स्थिती राशौ दृग्योगौ कण्टके स्थितिः।
त्रिकोणयोः स्थितिर्वापि बन्धः पञ्चविधो मतः ॥ ११५ ॥

दो ग्रह परस्पर एक दूसरे की राशि में स्थित हों तो ' प्रथम सम्बन्ध ' दो ग्रहों की परस्पर पूर्णदृष्टि होंतो, ' द्वितीय सम्बन्ध ' दो ग्रह एक ही राशि में स्थित होंतो ' तृतीय सम्बन्ध ' दो ग्रह परस्पर एक दूसरे से केन्द्र में होंतो ' चतुर्थ सम्बन्ध ' एवं दो ग्रह परस्पर एक दूसरे से त्रिकोण में होंतो ' पञ्चम सम्बन्ध ' होता है। इस प्रकार पञ्चविध सम्बन्ध मतान्तर से जानना चाहिए।

ग्रहों के भावेश के वश से शुभाशुभत्व का परिज्ञान—

दारद्रव्यागारपौ मारकौस्तः सर्वेऽसन्तोऽर्याययाम्यानुजेशाः।
सन्तः सर्वे कोणपाः केन्द्रपालाः सन्तोऽसन्तः शोभनाः शोभनान्ये ॥ ११६ ॥

सप्तम और द्वितीय स्थान के स्वामी ' मारक ' होते हैं। षष्ठ, लाभ, अष्टम और तृतीय इन चार स्थानों के स्वामी सब (शुभाशुभ) ग्रह ' अशुभ ' होते हैं। त्रिकोण (५।९) के स्वामी सब (शुभाशुभ) ग्रह ' शुभ ' होते हैं। केन्द्र (१।४।७।१०) के स्वामी शुभग्रह ' अशुभ ' होते हैं। एवं केन्द्र स्वामी पापग्रह ' शुभ ' होते हैं।

विनष्ट ग्रह के लक्षण का परिज्ञान—

क्रूराक्रान्तोपेतदृष्टो विनष्टस्तद्वत्तेष्टो व्यंशुतांयः प्रपन्नः।
यः खेटोऽसत्खौकसा जीयमानः क्रूराक्रान्तो राहुपार्श्वे यथार्कः ॥ ११७ ॥
समेऽशके क्रूरयुतः खगोयः क्रूरेक्षितोयः परिपूर्णदृष्टः।
यः कालकृम्दे प्रविविक्षुरेष किंवा प्रविष्टो द्युचरो गतांशुः ॥ ११८ ॥

कल्याणेशः कालः कुमार्य्यौ तयोर्मिथोदृष्टि सम्बन्धः। कामोदये कर्मेशगुरो राशौ काव्यः कामुके, कर्मेशार्यस्तु क्रियंगतस्तमीक्षते इति धीखेशमोरन्य तरस्थान दृष्टि सम्बन्धः। कुलीरोदये कुजेज्ययोः कर्म्मकल्याणेशयोः कन्द (मीन) स्थितयोः सहावस्थान सम्बन्धः। इति चतुर्विध सम्बन्धः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जो 'ग्रह' क्रूरग्रह से आक्रान्त हो, क्रूरग्रह से युक्त हो, क्रूरग्रह से दृष्ट हो वह ग्रह 'विनष्ट संज्ञक' होता है। एवं जो ग्रह रश्मियों से रहित हो वह ग्रह भी 'विनष्ट संज्ञक' होता है। ग्रह युद्ध में पापग्रह से पराजित ग्रह 'कूरक्रमन्त संज्ञक' होता है। जैसे राहु के पार्श्व में 'सूर्य' क्रूराक्रान्त होता है क्रूरग्रह से युक्त हुआ ग्रह यदि 'एकही नवांश में हो तो वह 'क्रूरयुक्त' होता है। क्रूरग्रह से पूर्णदृष्ट हुआ ग्रह 'क्रूरदृष्ट' होता है। एवं जो ग्रह सूर्याक्रान्त राशि में प्रवेश करने की इच्छा करता हो अथवा सूर्य के साथ प्रविष्ट होगया हो वह ग्रह 'विरश्मि' जानना चाहिए। इस प्रकार विनष्ट ग्रह के क्रूराक्रान्तादि चार लक्षण होते हैं।

इति ज्योतिस्तत्त्वे ग्रहशीलप्रकरणं पञ्चममवसितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

ग्रहावस्थाप्रकरणं प्रारभ्यते ।

दीप्तादि दश अवस्थाओं के नाम—

दीप्तः स्वस्थो मुदितः शान्तः शक्तः प्रपीडितो दीनः ।
खलविकलभीताख्यकाः स्युरवस्था दशैताः क्रमतः ॥ १ ॥

दीप्त, स्वस्थ, मुदित, शान्त, शक्त, प्रपीडित, दीन, खल, विकल और भीत ये क्रम से ग्रहों की दश अवस्था में हैं।

दीप्तादि दश अवस्था ओं के लक्षण का परिज्ञान—

स्वस्थः स्वभे सखिगृहे मुदितः प्रदीप्तो
मूलत्रिकोणनिजतुङ्गगतोऽथ शक्तः ।
शुद्धः प्रदीप्तकिरणैः शुभवर्गगो यः
शान्तोऽरिराशिलवगः स खगोऽतिदीनः ॥ २ ॥

विकलोऽस्तगतो भीतो नीचगः पापवर्गगः ।
खलः पराजितश्चातिपीडितः कीर्त्यते बुधैः ॥ ३ ॥

स्वराशिगत ग्रह की 'स्वस्थावस्था' मित्रराशिगत ग्रह की 'मुदितावस्था' मूलत्रिकोण तथा उच्चराशिगत ग्रहकी 'दीप्तावस्था' उच्चरश्मि तथा चेष्टारश्मियों से शुद्ध ग्रह की 'शक्तावस्था' शुभग्रह के वर्ग में स्थित ग्रह की 'शान्तावस्था' शत्रुराशि तथा शत्रु नवांश में स्थित ग्रह की 'दीनावस्था' अस्तगत ग्रह की 'विकलावस्था' नीचगत ग्रह की 'भीतावस्था' पापवर्गगत ग्रह की 'खलावस्था' और युद्ध में पराजित ग्रह की 'अतिपीडावस्था' पण्डित जनों ने कही है।

बालाद्यवस्था साधन रीति—

क्रमेण बालोऽथ कुमारनामा युवा च वृद्धोऽथ मृतो रसांशैः ।
ओजे गृहे चोत्क्रमतः समर्क्षेऽवस्थाः खगानामिह बालपूर्वाः ॥ ४ ॥

बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत ये पाँच बालादि अवस्थायें हैं : विषम राशि में छः छः अंशों के क्रमसे बालादि अवस्थायें होती हैं। एवं सम राशि में छः छः अंशों करके उत्क्रमसे अर्थात् मृतादि के क्रम से ग्रहों की बालाद्यवस्था यें होती हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—:उदाहरणः—

२।२१।२९।४९ स्पष्ट सूर्य है। यह मिथुन राशि विषम संज्ञक है। यहां सूर्य २२ वें अंशमें वर्त्तमान है। विषम राशि में १८ अंश से २४ अंश पर्यन्त वृद्धावस्था होती है। इस लिये 'सूर्य' वृद्धावस्था में हुआ। एवं वृष राशि के ६ ठे अंशपर 'शुक्र' वर्तमान है। यह समराशि है इस में ० अंश से ६ अंश पर्यन्त मृतावस्था होती है। इस लिये 'शुक्र' मृतावस्था में हुआ।

जाग्रदाद्यवस्था साधन रीति—

तिस्रोऽवस्था ओजराशौ निकेतव्यंशे जाग्रत्स्वप्नसंज्ञा सुषुप्तिः।
प्रोक्ताः पूर्वाचार्य्यवर्यैः क्रमेण युग्मे राशौ व्यत्ययात्ताः प्रकल्प्याः ॥ ५ ॥

विषम (१, ३, ५, ७, ९, ११) राशि में राशि के तृतीयांश १० अंश के क्रमसे अर्थात् प्रत्येक दशक में जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्थायें होती हैं। एवं सम (२. ४, ६, ८, १०, १२) राशि में राशि के तृतीयांश के उत्क्रमसे प्रत्येक दशक में सुषुप्ति, स्वप्न और जाग्रत् ये तीन अवस्थायें होती हैं।

—: उदाहरण :—

यहां सूर्य मिथुन राशि के २२ वें अंश पर वर्त्तमान है। यह विषम राशि है। इस में २० अंश से ३० अंश पर्यन्त सुषुप्ति अवस्था होती है। इस लिए 'सूर्य' सुषुप्ति अवस्था में हुआ। एवं 'शुक्र' वृष राशि के ६ ठे अंश पर वर्त्तमान है। यह समराशि है इसमें ० अंश से १० अंश पर्यन्त सुषुप्ति अवस्था होती है। इस लिए 'शुक्र' सुषुप्ति अवस्था में हुआ।

शयनादि अवस्थाओं के नाम—

शयनं तत उपवेशं नेत्रपाणिः प्रकाशाख्यं च।
तथा च गमनागमने ततः सभायां वसतिश्चैव ॥ ६ ॥
तत आगमो भोजनं नृत्यलिप्सा कौतुकं चाथ।
निद्राऽवस्थाः क्रमशो द्वादशैता द्युसदां ज्ञेयाः ॥ ७ ॥

शयन १, उपवेशन २, नेत्रपाणि ३, प्रकाशन ४, गमन ५, आगमन ६, सभायां वसति ७, आगम ८, भोजन ८, नृत्यलिप्सा १०, कौतुक ११, निद्रा १२ ये क्रम से शयनादि द्वादश अवस्थायें हैं।

शयनाद्यवस्था साधन रीति—

विहङ्गमानेन हता विहङ्गताराभितिः खेचरभागमित्या।
हता निजेष्टोद्भवभाङ्गमानान्वितेनतष्टा शयनाद्यवस्था ॥ ८ ॥

जन्म समय में प्रत्येक रव्यादि ग्रह जिस नक्षत्र में स्थित हो उस नक्षत्र की अश्विन्यादि संख्या को प्रत्येक ग्रहकी रव्यादि संख्या से गुणकर तब जो गुणनफल हो उसको ग्रह के गणितागत स्पष्टांशक संख्यासे गुणे। तदनन्तर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उस गुणन फल में जन्मेष्ट काल की घटी की संख्या को, जन्मनक्षत्र की संख्या को और जन्मलग्न की संख्या को युक्तकरके १२ से तष्ट करे तब जो शेषबचे उसके तुल्य ग्रहकी शयनादि अवस्था होती है।

—: उदाहरण :—

यहां जन्म समय में 'सूर्य' पुनर्वसु नक्षत्रपर है उसकी अश्विन्यादि संख्या ७ सात है। इसको सूर्य की संख्या १ से गुणातो ७ हुए। इनको सूर्य के स्पष्टांश संख्या २१ से गुणातो १४७ हुए। जन्मेष्ट घटी संख्या ४६ को, जन्मनक्षत्र उत्तराफल्गुनी की संख्या १२ को और जन्मलग्न मीन की संख्या १२ को एकत्र किया अर्थात् उक्त तीनों संख्याओंका योग किया तो ७० हुए। इनको पूर्वागत गुणनफल १४७ में युक्त कियातो २१७ हुए। इन में १२ से भाग दियातो १ शेषबचा। इसके तुल्य शयनादि अवस्था ओंकी गणनाकीतो 'सूर्य' शयनावस्था 'में हुआ' एवं चन्द्रमा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में है। उसकी संख्या १२ को चन्द्रमा की संख्या २ से गुणातो २४ हुए। इन को चन्द्रमा के स्पष्टांश २९ से गुणातो ६९६ गुणनफल हुआ। जन्मेष्टघटी ४६, जन्मनक्षत्र संख्या १२ और जन्मलग्न संख्या १२ इन सबका योग कियातो ७० हुए। इन को पूर्वागत गुणनफल ६९६ में युक्त कियातो ७६६ हुए। इन में १२ से भाग दियातो १० शेषबचे। यहां शेष १० के तुल्य शयन से अवस्थाओंकी गणना कीतो 'चन्द्रमा' मृत्यविसावस्था में हुआ। एवं भौमादियों की शयनादि अवस्था को साधे।

दृष्ट्याद्यवस्था साधन रीति—

बाणद्विद्वित्र्यक्षरामाग्निवेदवेदाः क्षेपा भास्कराच्छेषवर्गः।
स्वक्षेपाढ्यः सस्वराङ्कस्त्रितष्टस्तिस्रोऽवस्था दृष्टिचेष्टाविचेष्टाः ॥ ९ ॥

५, २, २, ३, ५, ३, ३, ४, ४ ये सूर्यादि ग्रहों के क्रम से क्षेपक हैं। प्रत्येक रव्यादि ग्रहकी शयनादि अवस्था के साधन में जितना शेषबचा हो अर्थात् प्रत्येक रव्यादि ग्रह की शयनादि अवस्था की संख्या का वर्ग करे। तदनन्तर उस वर्ग में अपने अपने उक्त क्षेपकांक और नामके प्रथम वर्ण के स्वरांक की संख्या को युक्तकरे। तब जो संख्या हो उसमें ३ से भाग दे तब जो शेषबचे उसके तुल्य क्रमसे दृष्टि १, चेष्टा २, विचेष्टा ३ ये तीन अवस्था ये होती हैं।

'नामाद्यक्षर (वर्ण) स्वरसंख्या चक्रमिदम्'।								ग्रहाणां क्षेपकाङ्काः।				
१	अ	क	छ	ड	ध	भ	व	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.
२	इ	ख	ज	ढ	न	म	श	५	२	२	३	५
३	उ	ग	झ	त	प	य	ष	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः
४	ए	घ	ट	थ	फ	र	स	३	३	४	४	क्षेपकाङ्काः
५	ओ	च	ठ	द	ब	ल	ह					

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

सूर्यकी पूर्वागत शयनादि अवस्था ओं में प्राप्त हुई शयन नामक अवस्था की संख्या १ को वर्गीकृत किया अर्थात् १ को १ से गुणातो १ गुणनफल (वर्ग) हुआ, यहां प्रसिद्ध नाम का आद्याक्षर 'रकार' है यह 'एकार स्वर' के उत्तर में है अतः एकार स्वर की पार्श्ववर्ती संख्या ४ को उस वर्गीकृत संख्या १ में युक्त कियातो ५ हुए। इन में सूर्य के क्षेपक ५ को युक्त कियातो १० हुए। इन में ३ से भाग दियातो १ शेष बचा। यहां दृष्टि के क्रमसे शेष संख्या १ पर्यन्त गिनातो 'सूर्य' दृष्टयवस्था में हुआ, एवं चन्द्रमा नृत्यलिप्सावस्था में है। इसकी संख्या १० है। इसका वर्ग किया अर्थात् नृत्यलिप्सा की संख्या १० को १० से गुणातो १०० वर्गीकृत संख्या हुई। इस में नाम के आद्याक्षर रकार एकार स्वर के उत्तर में है अतः एकार स्वर की पार्श्ववर्ती संख्या ४ को उस वर्गीकृत संख्या १०० में युक्त कियातो १०४ हुए। इन में चन्द्रमा के क्षेपक २ को युक्त कियातो १०६ हुए। इन में ३ से भाग दियातो १ शेषबचा। दृष्टि के क्रमसे शेष संख्या १ पर्यन्त गिणातो 'चन्द्रमा' दृष्टयवस्था में हुआ। एवं भौमादियों की अवस्था को साधे।

लज्जितादि अवस्थाओंके साधन की रीति—

तुङ्गत्रिकोणोपगतः स खेचरो यो गर्वितो मित्रविलोकितान्वितः।
सख्यालये सूरिसमन्वितश्चयः सव्योमचारी मुदितोऽथ पुत्रगः ॥ १० ॥

योऽहीनभौमार्कियुतः स लज्जितो भास्वद्युतः पापसपत्नलोकितः।
संक्षोभितोऽरीनजयुक्तवीक्षितः प्रत्यर्थिभस्थः क्षुधितोऽथ तोयभे ॥ ११ ॥

पापारियुक्तेक्षित ईक्षितो न सत्खेटै स्तृपार्त्तः पडिमे नभःसदाम्।
भावाः सगर्वो मुदितोऽथ लज्जितः संक्षोभितोऽथ क्षुधितस्तृपार्त्तकः ॥ १२ ॥

संक्षोभितो वा क्षुधितो विहङ्गमो यस्मिन् गृहे तिष्ठति तद्विनाशयेत्।
पुष्णातिभावं मुदितश्च गर्वितो यस्योद्भवे कर्म्मगतस्तृपार्तकः ॥ १३ ॥

संक्षोभितो वा क्षुधितश्च लज्जितो मर्त्यो दरिद्रः सुतगे तु लज्जिते।
हानिः सुतस्यास्तमये तृपार्त्तके संक्षोभिते वा ललना न जीवति ॥ १४ ॥

जन्म समय में जोग्रह उच्चराशि में वा मूलत्रिकोण राशि में हो वह 'गर्वितावस्था' में होता है। जो 'ग्रह' मित्र राशि में हो, मित्रग्रह से दृष्ट वा युक्त हो वा बृहस्पति से युक्त हो वह 'मुदितावस्था' में होता है। जो 'ग्रह' पञ्चमस्थान में स्थित होकर राहु, सूर्य, भौम तथा शनि से युक्त होतो वह 'लज्जितावस्था में होता है। जो 'ग्रह' सूर्य से युक्त होकर पापग्रह तथा शत्रु ग्रह से दृष्ट होतो वह 'संक्षोभितावस्था' में होता है। जो 'ग्रह'

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शत्रुराशि में स्थित होकर शत्रुग्रह तथा शनि से युक्त वा दृष्ट होता वह 'क्षुधितावस्था' में होता है। जो 'ग्रह' जलराशि में स्थित हो और पापग्रह तथा शत्रु ग्रह से युक्त वा दृष्ट होकर शुभग्रह से दृष्ट न हो वह 'तृषार्त्तावस्था' में होता है। सगर्व, मुदित, लज्जित, संक्षोभित, क्षुधित और तृषार्त्तक ये ग्रहों की लज्जितादि छः अवस्थायें हैं। संक्षोभित अथवा क्षुधित ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भावका नाश करता है। जिस भाव में मुदित तथा गर्वित ग्रह हो वह उस भावकी पुष्टि को करता है। जिसके जन्मसमय में तृषार्त्तक संक्षोभित क्षुधित वा लज्जित ग्रह दशम स्थान में हो वह मनुष्य दरिद्र होता है। पञ्चम भाव में लज्जित ग्रह हो तो पुत्र की हानि होती है। एवं सप्तम भाव में तृषार्त्तक वा संक्षोभित ग्रह हो तो स्त्री की हानि होती है।

इति ज्योतिःतत्त्वे ग्रहावस्थाप्रकरणं षष्ठं समाप्तिमगमत्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

ग्रहदानादिप्रकरणं प्रारभ्यते ।

रविदान—

गोधूमताम्राज्यमसूरिकान्नकौसुम्भवासोगुडकुङ्कुमानि ।
धेनुं सवत्सां कमलं सुवर्णं दुष्टाय दद्याद्दिननायकाय ॥ १ ॥

गेहूं, ताम्बा, घी, मसूर, कौसुम्भवस्त्र, गुड, कुङ्कुम, सवत्सगौ, कमल और सुवर्ण ये द्रव्य दुष्टफलप्रद सूर्य के लिए दान देवे।

चन्द्रदान—

श्वेताम्बरं मौक्तिकमाज्यपूर्णकुम्भं सुवर्णं रजतं च शङ्खम् ।
वृषं च शुभ्रं लवणं दधीक्षू दद्यात्सुधी रात्रिकरस्य तुष्ट्यै ॥ २ ॥

श्वेतवस्त्र, मोती, घृतकलश, सोना, चान्दी, शंख, श्वेतवृषभ, नमक, दही और ऊख ये द्रव्य चन्द्रमा की तुष्टिके लिए देवे।

भौमदान—

ताम्रं प्रवालं करवीरपुष्पं मसूरिकान्तं वृषभं च रक्तम् ।
गोधूमकं कुङ्कुमरक्तवस्त्रगुडानि दद्याद्बुधिरस्य तुष्ट्यै ॥ ३ ॥

ताम्बा, मूंगा, कनेर के फूल, मसूर, लाल बैल, गेहूं, केसर, लालकपड़ा और गुड़ ये द्रव्य दुष्टफलप्रद भौमकी तुष्टि के लिए देवे।

बुधदान—

रूप्यं सुवर्णं कुसुमं च दासीं मारुत्मतं रत्नमिभस्य दन्तम् ।
मेषं च कांस्यं हरितां शुकाज्यगुडानि मुद्गं विबुधाय दद्यात् ॥ ४ ॥

चाँदी, सोना, पुष्प, दासी, मरकतमणि, हाथी दाँत, मेंढा, कांस्यपत्र, हरितवस्त्र, घी, गुड़ और मूँग ये द्रव्य दुष्टफलप्रद बुधकी तुष्टि के लिए देवे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गुरुदान—

पीतान्नपीताम्बरशर्कराश्वान्पुष्पं हरिद्रां लवणं सुवर्णम् ।
मुक्ताफलाख्यं मृगनाभिपुष्परागे प्रदद्याद् धिषणस्य तुष्ट्यै ॥ ५ ॥

पीला धान्य, पीला कपड़ा, शक्कर, घोड़ा, फूल, हल्दी, नमक, सोना, मोती, कस्तूरी और पुखराज ये द्रव्य गुरु की तुष्टि के लिए देवे।

शुक्रदान—

चित्राम्बरं कनकतण्डुलवज्ररत्न-
रूप्याणि पाण्डरहयं धवलां सवत्साम् ।
धेनुं घृतं परिमलं च सुगन्धपुष्पं
कस्तूरिकामुशनसः प्रददातु तुष्ट्यै ॥ ६ ॥

चित्रवस्त्र, सोना, चावल, हीरा, चाँदी, सफेद घोड़ा सवत्सश्वेतगौ, घी, चन्दन, सुगन्धित-पुष्प और कस्तूरी ये द्रव्य दुष्टफलप्रद शुक्र की शान्ति के लिए देवे।

शनिदान—

धेनुं च कृष्णां तिलतैललोह कुलत्थमापान्नतिलत्रपूनि ।
कृष्णं च वासो महिषीं च नीलं सत्कम्बलं सूनुसुताय दद्यात् ॥ ७ ॥

काली गौ, तिल का तेल, लोहा, कुलत्थ (गहत), उड़द, तिल, रांग, काला कपड़ा, भैंस, नीलम और उत्तम कम्बल ये शनि के लिए देवे।

राहुदान—

गोमेदरौप्यौर्णिकमापक्षेपान् लोहं तिलैः पूरितताम्रभाण्डम् :
नीलाम्बरं काञ्चनपन्नगं च दुष्टाय दैत्याधिभुवे प्रदद्यात् ॥ ८ ॥

गोमेदमणि, चाँदी ऊनीकपडा, उडद, मेंढा, लोहा; तिलसे भरा हुआ ताम्रपात्र, कालाकपडा, सोने का साँप ये द्रव्य दुष्टफलप्रद राहुकी शान्ति के लिए देवे।

केतुदान—

गोधूमवैदूर्य्यतिलोर्णवस्त्रकस्तूरिकाकम्बलतैलकानि ।
वासश्च नीलं हरिचन्दनं च च्छागं प्रदद्याच्छिखिनोऽतितुष्ट्यै ॥ ९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गेहूं, लसुनिया, तिल, ऊनी कपडा, कस्तूरी, कम्बल, तेल, नीलवस्त्र, कपिलवर्ण का चन्दन और बकरा ये द्रव्य दुष्टफलप्रद केतु की शान्ति के लिए देवे।

ग्रहों की जपसंख्या—

भानोः सहस्राणि नगोन्मितानीन्दोः शम्भुतुल्यानि महीसुतस्य।
आशासहस्राणि गजोन्मितानि विदो गुरोर्गोशशिसम्मितानि ॥ १० ॥
कवेः सहस्राणि शिवोन्मितानि त्रिदोर्मितानीनसुतस्य राहोः।
पुराणतुल्यानि नगोन्मितानि जपस्य संख्या शिखिनो निरुक्ताः ॥ ११ ॥

रविका ७०००; चन्द्रमा का ११०००, भौम का १००००, बुध का ८०००, गुरु का १९००० शुक्र का ११०००, शनि का २३०००, राहु का १२०००० और केतु की शान्ति के लिए ७००० जपसंख्या पण्डितजनों ने कही है।

इति ज्योतिस्तत्त्वे ग्रहदानादिप्रकरणं सप्तममवसितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

संक्रान्तिप्रकरणं प्रारभ्यते ।

संक्रान्तियों की घोरादिसंज्ञा का परिज्ञान—

भास्वत्सङ्क्रमणं यदोग्रभरवौ घोरांघ्रिजान् क्षिप्रभे—
न्दौ ध्वांक्षी च विशः सदेह सुखयेत्तद्वच्चरर्क्षासृजि ।
चौरान् सा च महोदरा मृदुबुधे मन्दाकिनी भूपतीन्
मन्दाख्या स्थिरवाक्यतौ क्षितिसुरान्मिश्राच्छमिश्रे पशून् ॥ १ ॥

जब (उग्रसंज्ञक तीनपूर्वा, भरणी और मघा) नक्षत्र तथा रविवार में सूर्य संक्रान्ति हो तब वह ' घोरनामवाली संक्रान्ति ' शूद्रों को सुखदायक होती है । क्षिप्रसंज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित्) नक्षत्र तथा सोमवार में संक्रान्ति हो तो वह ' ध्वांक्षी नामवाली संक्रान्ति ' वैश्यों को सुखदायक होती है । चरसंज्ञक (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, और शतभिषा) नक्षत्र भौमवार में संक्रान्ति हो तो वह ' महोदरा नामवाली संक्रान्ति ' चोरों को सुखदायक होती है । मृदुसंज्ञक (मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा) नक्षत्र तथा बुधवार में संक्रान्ति हो तो वह ' मन्दाकिनी नामवाली संक्रान्ति ' राजाओंको सुखदायक होती है । स्थिरसंज्ञक (तीनों उत्तरा और रोहिणी) (नक्षत्र तथा गुरुवार में संक्रान्ति होतो वह ' मन्दा, नामवाली संक्रान्ति ' ब्राह्मणों को सुखदायक होती है मिश्रसंज्ञक (विशाखा और कृत्तिका) नक्षत्र तथा शुक्रवार में संक्रान्ति होतो वह ' मिश्रनामवाली संक्रान्ति ' पशुओंको सुखदायक होती है ।

तीक्ष्णादित्यसमुद्भवेऽन्त्यजसुखा सा राक्षसी कीर्त्तिता
त्र्यंशेऽह्नः प्रथमे निहन्ति नरपान्मध्ये धरादेवताः ।
वैश्यांश्चापरके भगास्तसमये शूद्रान्निहन्यान्निशा—
यामेषु क्रमतः पिशाचकमुखान्नक्तंचरान्नर्त्तकान् ॥ २ ॥

तीक्ष्णसंज्ञक (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और आश्लेषा) नक्षत्र तथा शनिवार में संक्रान्ति होतो वह ' राक्षसी नामवाली ' अन्त्यज जाति को सुखदायक होती है । दिन के पूर्वाह्ण में संक्रान्तिका प्रवेश होतो राजाओंको मध्याह्ण में ब्राह्मणों को, अपराह्ण में वैश्यों को, सूर्यास्त समय में शूद्रों को, रात्रि के पूर्वभाग में पिशाचादियों को, रात्रि के मध्यभाग में रात्रिचरों को और रात्रि के तृतीय भाग में नर्त्तकों को मारती है ।

आभीरांस्तपनोदये च सकलान् पाखण्डकान् हन्ति सा
संक्रान्तौ द्युकृतः पतङ्गरविजासृग्वासरे चेद्यदा ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तन्मासे कफवातपित्तरुजनावृष्टिक्षमेड्विग्रहं
झेज्याच्छेन्दुदिने नृणां विगदता क्षेमं तथा भूभृताम् ॥ ३ ॥

रात्रि के चतुर्थभाग में गोपों को मारती है एवं सूर्योदयकाल में संक्रान्ति का प्रवेश होतो समस्त पाखण्डियों को मारती है। रवि, शनि तथा भौम वार में संक्रान्ति का प्रवेश होतो उस मास में कफ, वात तथा पित्तजन्म रोज, खण्डवृष्टि और राजा ओंमें कलह होता है। एवं बुध, गुरु, शुक्र तथा सोमवार में संक्रान्ति का प्रवेश होतो मनुष्यों के मध्य में नीरोगता और राजा ओंके मध्य में कुशलता होती है।

संक्रान्ति के लेपन तथा जाति परिज्ञान—

कस्तूरी कुङ्कुमं लेपं पाटीरं मृच्च रोचनम्।
यावौतुमदयामिन्यञ्जनान्यगुरुचन्द्रकौ ॥ ४ ॥
बवादिषु सुरो भूतोऽहिर्विः पक्षिणवाडवाः।
क्षत्री वैश्योऽधिसम्भूतो जातिः शङ्करसम्भवः ॥ ५ ॥

बवादि करणों में क्रमसे कस्तूरी, कुङ्कुम (केशर), पाटीर (चन्दन), मृद् (मिट्टी), रोचन (गोरोचन) याव (लाक्षारस), ओतुमद (बिडालमद वा मार्जारघर्म), यामिनी (हल्दी), अञ्जन (कज्जल), अगुरु (अगुरु चन्दन) और चन्द्र (कपूर) ये संक्रान्तियों के लेप हैं। एवं बवादि करणों में क्रमसे देवता, भूत, सर्प, पक्षिन्, पशु, मृग, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अन्त्यज ये संक्रान्तियों की जाती हैं।

संक्रान्ति पुष्प परिज्ञान—

पुष्पाणि पुन्नागजातिबाकुलसुकेतकान्यंशुमतो बवादिषु।
बिल्वार्कदूर्वाम्बुजमल्लिकाः क्रमात्प्रोक्तानिवै पाटलिका जपाभिधा ॥ ६ ॥

सूर्यसंक्रान्ति प्रवेश समय के बवादि करणों के क्रमसे पुन्नागक (श्वेतकमल), जाति (चमेली), बाकुल (मौलसरी), केतकी, बिल्व (बेल), अर्क (आँक), दूर्वा (दूब), अम्बुज (कमल), मल्लिका (बेला), पाटलिका (गुलाब) जपा ये संक्रान्तियों के पुष्प हैं।

संक्रान्ति–भूषण–परिज्ञान—

बवादितो नूपुरकं च किङ्किणी मुक्ताफलं विद्रुमकङ्कणे मणिः।
गुञ्जा कपर्दाख्यकनीलहीरकं विभूषणा न्यम्बुजिनीपतेः क्रमात् ॥ ७ ॥

सूर्यसंक्रान्ति प्रवेश समय के बवादि करणों के क्रमसे नूपुरक (नेउर या बिछुवा), किङ्किणी (कटिभूषण), मुक्ताफल (मोती), विद्रुम (मूंगा), कङ्कण, मणि, गुञ्जा, (रत्ती) कपर्द (कौडी), नीलक (नीलमणि), हीरक (हीरा) ये संक्रान्तियों के भूषण हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

संक्रान्तियों की वय तथा अवस्थाका परिज्ञान—

बवतः संक्रमे भानोर्बाला कन्या गतालका ।
यूती प्रौढा प्रगल्भा च वयांसि स्थविरा वशा ॥ ८ ॥
अतिवन्ध्या तथा पुत्रार्थिनी प्रव्राजिका बुधैः
अवस्था बवतो हेलेः पन्था भोगो रतिः क्रमात् ॥ ९ ॥
हास्या च दुर्मुखी ज्वरियुक्ता भुक्ता सुकम्पिता ।
ध्यानास्था कर्कशा वृद्धा कीर्त्तिता मुनिपुङ्गवैः ॥ १० ॥

सूर्यसंक्रान्ति प्रवेश समय के बवादि करणों के क्रमसे बाला (५ वर्ष पर्यन्त, कन्या १२ वर्ष पर्यन्त), गतालका (१२ से १६ वर्ष पर्यन्त), युती (तरुणी), प्रौढा (३० से ५५ वर्ष पर्यन्त), प्रगल्भा (प्रौढा), वृद्धा, वशा (वन्ध्या) अतिवन्ध्या, पुत्रार्थिनी और प्रव्राजिका (संन्यासिनी) ये संक्रान्तियों की वय हैं। एवं सूर्य संक्रान्ति प्रवेश समय के बवादि करणों के क्रमसे पन्था, भोग, रति, हास्या, दुर्मुखी, ज्वरयुक्ता, भुक्ता, अतिकम्पिता, ध्यानस्था, कर्कशा और वृद्धा ये संक्रान्तियों की अवस्थायें हैं ।

संक्रान्ति–वाहन–परिज्ञान—

सिंहो द्विपी सूकरो रासभाख्यो दन्त्यारव्यः स्युः कासरो वाजिनामा ।
श्वा मेषो गौः कुक्कुटाख्यो बवाख्यादह्नोभर्त्तुः संक्रमे वाहनानि ॥ ११ ॥

सूर्यसंक्रान्ति प्रवेश समय के बवादि करणों के क्रमसे सिंह (शेर), द्वीपिन् (व्याघ्र वा बाघ) रासभ (गधा), दन्तिन् (हाथी), कासर (भैंस), वाजिन् (घोडा), श्वन् (कुत्ता), मेष (मेण्ढा), गौ, और कुक्कुट (मुर्गा) ये संक्रान्तियों के वाहन हैं ।

संक्रान्ति–वस्त्र–परिज्ञान—

शुभ्रं पीतं हारितं पाण्डुराख्यं रक्त श्यामं कज्जलाभं विचित्रम् ।
वस्त्राण्येवं कम्बलं दिग्घनाभं पूर्वाचार्यैः कीर्त्तितानि क्रमेण ॥ १२ ॥

सूर्य संक्रांति प्रवेश समय के बवादि करणों के क्रमसे श्वेत (सफेद), पीत (पीला), हरित, पाण्डुर (श्वेतपीतमिश्रितवर्ण), रक्त (लाल), श्याम (काला), कज्जलाभ (कज्जलसमानकान्ति), विचित्र, कम्बल, दिशा (विवास), घनाभ (मेघसमानवर्ण) ये संक्रान्तियोंके वस्त्र हैं ।

संक्रान्ति–शस्त्र–परिज्ञान—

भुशुण्डी च गदा खड्गो दण्डं कोदण्डतोमरे ।
कुन्तः पाशोऽङ्कुशोऽस्त्रेषू शस्त्राणि बवतः क्रमात् ॥ १३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भुशुण्डी (बन्दूक), गदा, खड्ग (तलवार), दण्ड (लाठी), कोदण्ड (धनुष), तोमर (रायबास), कुन्त (प्रास वा बरच्छा), पाश (फांसी), अस्त्र (आयुध), इषु (बाण) ये बवादि करणों में क्रमसे संक्रान्तियों के शस्त्र हैं।

संक्रान्तियों के भक्ष्य का परिज्ञान—

अन्नपायसभैक्षाण्यपूपं दुग्धं बवाद् दधि ।
चित्रितान्नं गुडं भक्ष्यं मधु सर्पिश्च शर्करा ॥ १४ ॥

अन्न, पायस (खीर), भिक्षान्न, अपूप (पुवा), दुग्ध (दूध), दधि (दही), चित्रितान्न गुड, मधु (शहद), सर्पिस् (घी), शर्करा (शक्कर) ये बवादि करणों में क्रमसे संक्रान्तियों के भक्ष्य हैं।

संक्रान्तियों की सुप्तादि सञ्ज्ञा का परिज्ञान—

नागे तैतिलके चतुष्पद इनः सुप्तस्तथोर्ध्वस्थितः
किंस्तुघ्ने यदि कौलवे सशकुनावेवं विनष्टो बवे ।
विष्ट्यां बालवके गरे च वणिजे नेष्टस्तथा श्रेष्ठता
मध्योऽर्धेऽपि च वर्षणे मुनिवरा आहुः पुराणा इति ॥ १५ ॥

नाग, तैतिल और चतुष्पद इनकरणों में संक्रान्ति ' सुप्त ' होती है। किंस्तुघ्न, कौलव और शकुनि इनकरणों में संक्रान्ति ' ऊर्ध्वस्थ ' होती है। बव, विष्टि, बालव, गर और वणिज इनकरणों में संक्रान्ति ' निविष्ट ' होती है। सुप्त, ऊर्ध्वस्थ और निविष्ट ये संक्रान्तियां क्रमसे नेष्ट, श्रेष्ठ तथा मध्यम होती हैं। एवं अर्ध (भाव) में तथा वर्षण में भी प्राचीन मुनियोंने नेष्ट श्रेष्ठ और मध्यमफल कहा है।

संक्रान्तियों के जात्यादिफल का परिज्ञान—

सङ्क्रान्तियानकुसुमाशनशस्त्रजात्य-
वस्थावयोऽशुकमुखस्य विनाशमाहुः ।
तद्वृत्तिजीविभविनां क्षय ऊर्ध्व संस्थः
सुप्तोपविष्टभविनामपि नाश उक्तः ॥ १६ ॥

अभीष्ट संक्रान्तिके जो वाहन, पुष्प, भोजन, शस्त्र, जाति, अवस्था, वय और वस्त्रादि कहे हुए हैं। अभीष्ट मास में उन वस्तुओंके और उक्त वस्तुओंकी वृत्ति से जीविका करनेवाले प्राणियों के नाश को कहे। एवं ऊर्ध्वस्थ, सुप्त और उपविष्ट प्राणियों के नाश को कहे।

नक्षत्रोंकी जघन्यादिसञ्ज्ञा तथा संक्रान्तियों के मुहूर्त्त का परिज्ञान—

याम्यैन्द्राम्बुपवातसार्पशिवभं प्रोक्तं जघन्यं बृहद्
द्वीशं सध्रुवभं पुनर्वसुयुतं शेषं समं वासराः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बाणाम्भोधिमिता नभोऽनलमितास्तज्ज्ञैर्मुहूर्त्ताः क्रमात्
प्रोक्ताः संक्रमणे जघन्यभमुखेऽर्घे नेष्टसत्साम्यकम् ॥ १७ ॥

भरणी, ज्येष्ठा, शतभिषा, स्वाती, आश्लेषा और आर्द्रा ये 'जघन्य नक्षत्र' हैं। विशाखा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और पुनर्वसु ये 'बृहत्संज्ञक नक्षत्र' हैं। एवं शेषनक्षत्र 'समसंज्ञक' जानने। जघन्य नक्षत्र में संक्रान्तिका प्रवेश हो तो 'संक्रान्तिके १५ मुहूर्त्त' होते हैं। बृहत्संज्ञक नक्षत्र में संक्रान्ति का प्रवेश होतो 'संक्रान्ति के ४५ मुहूर्त्त' होते हैं। एवं समसंज्ञक नक्षत्र में संक्रान्तिका प्रवेश हो तो 'संक्रान्ति के ३० मुहूर्त्त' होते हैं। अर्घ (भाव) में १५ मुहूर्त्तवाली सक्रान्ति नेष्ट होती है और ४५ मुहूर्त्त वाली संक्रान्ति श्रेष्ठ होती है। एवं ३० मुहूर्त्तवाली संक्रान्ति मध्यमफल देनेवाली होती है।

चन्द्रदर्शफल तथा वर्ष के विंशोपक का परिज्ञान--

ग्लौदर्शनेऽप्येवमिनादिवासरे कुलीरसङ्क्रान्तिदिने विशोपकाः
वर्षस्य काष्ठानखरेभभास्करा धृतिः पुराणाः पवनाः क्रमान्मताः ॥ १८ ॥

एवं जघन्यादि नक्षत्रों में चन्द्र दर्शन हो तो क्रमसे अर्घ में नेष्ट (महार्घता) श्रेष्ठ (समर्घता) और मध्यमत्व (समत्व) होता है। १०।२०।८।१२।१८।१८।५ ये कर्क संक्रान्ति के दिनके रव्यादि वारों के क्रमसे वर्ष के विंशोपक हैं।

सङ्क्रान्तिभाधरभतो निजभे त्रिभे चेद्
यात्रा ततोऽङ्गमितभेऽत्र सुखं त्रिधिष्ण्ये।
पीडाङ्गभे वसनलब्धिरथानलर्क्षे
द्रव्यक्षयं च रसभे द्रविणाप्तिरुक्ता ॥ १९ ॥

संक्रान्ति प्रवेश समय के नक्षत्र से पीछे (नीचे) की ओर के तीन नक्षत्रों के अन्तराल में जन्मनक्षत्र होतो यात्रा, छः नक्षत्रों में सुख, तीन नक्षत्रों में पीडा, छः नक्षत्रों में वस्त्रलाभ, तीन नक्षत्रों में धननाश एवं छः नक्षत्रों के अन्तराल में जन्मनक्षत्र हो तो द्रव्य की प्राप्ति को कहे।

--: उदाहरण :--

मेषसंक्रान्ति का प्रवेश धनिष्ठा में हुआ है। जन्मनक्षत्र आश्लेषा है। संक्रान्ति प्रवेश समय के धनिष्ठा नक्षत्र से पीछे की ओर गिना तो ३ नक्षत्र में यात्रा, ६ नक्षत्र में सुख, ३ नक्षत्र में पीडा और ६ नक्षत्र में वस्त्र प्राप्ति है। यहां धनिष्ठा से पीछे की ओर गिनातो आश्लेषा नक्षत्र १५ वां हुआ। १२ से १८ पर्यन्त वस्त्र प्राप्ति फल है। अतः इष्टमास में उक्तफल होता।

इति ज्योतिस्तत्त्वे संक्रान्तिप्रकरणमष्टममवसितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

पञ्चाङ्गसाधनप्रकरणं प्रारभ्यते ।

प्रभवादि सँव्वत्सरानयन रीति—

पृथक्छको जातिहतो ऽब्जगोक्षिवेदैर्युतो ऽक्षाद्रिपुराणभक्तः ।
लब्धेनयुक्तः खरसाप्तशेषे सँव्वत्सराः स्युः प्रभवात्क्रमेण ॥ १ ॥

अभीष्ट शालिवाहनीयशक को दो स्थान में रखकर एकस्थान में २२ से गुणे तब जो गुणनफल हो उस में ४२९१ को युक्त करके १८७५ से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको द्वितीयस्थान में स्थित अभीष्ट शक में युक्त करे तब जो संख्या हो उस में ६० से भाग दे शेषप्रभवादि के क्रम से 'गत सँव्वत्सर' होता है। तदनन्तर १८७५ के भागदेनें से जो शेषबचा हो उसको १२ से गुणकर १८७५ से भाग दे लब्ध 'मास' होते हैं। शेषको ३० से गुणकर १८७५ से भाग दे लब्ध 'दिन' होते हैं। शेषको ६० से गुणकर १८७५ से भाग दे लब्ध 'घटी' होती हैं। शेषको पुनः ६० से गुणकर १८७५ से भाग दे लब्ध 'पल' होते हैं। इस प्रकार गत सँवत्सर के भुक्त मासादि होते हैं। उन भुक्त मासादियोंको १२।०।०।० में हीनकरे शेष वर्तमान सँव्वत्सर के भोग्य मासादि होते हैं।

—: उदाहरण :—

वर्त्तमान वैक्रमीय सँव्वत्सर १९९७ में १३५ को हीन किया तो १८६२ 'शालिवाहनीयशक' हुआ। इसको दो स्थान में रखकर एकस्थान के शक १८६२ को २२ से गुणातो ४०९६४ हुए। इनमें ४२९१ को युक्त किया तो ४५२५५ हुए। इनमें १८७५ से भाग दियातो लब्ध २४ हुए। शेष २५५ को १२ से गुणातो ३०६० हुए। इनमें १८७५ से भाग दियातो लब्ध १ मास हुआ। शेष ११८५ को ३० से गुणातो ३५५५० हुए। इनमें १८७५ भाग दिया तो लब्ध १८ दिन हुए। शेष १८०० को ६० से गुणातो १०८००० हुए। इनमें १८७५ से भाग दियातो लब्ध ५७ घटी हुई। शेष ११२५ को पुनः ६० से गुणातो ६७५०० हुए। इनमें १८७५ से भाग दियातो लब्ध ३६ पल हुए। इसप्रकार २४ सँवव्वत्सर १ मास १८ दिन ५७ घटी ३६ पल मिले। सँवत्सर २४ को पृथक् स्थित शक १८६२ में युक्तकिया तो १८८६ हुए। इनमें ६० से भाग दियातो २६ शेष बचे। प्रभवादि के क्रमसे २६ वां 'नन्दन' गतसंवत्सर और २७ वां 'विजय' वर्तमान संवत्सर हुआ। लब्ध भुक्त मासादि १।१८।५७।३६ को १२।०।०।० में हीन कियातो वर्त्तमान विजय संवत्सर के १० मास ११ दिन २ घटी २४ पल भोग्य मासादि हुए।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'शेषसँव्वत्सराः'।											'लब्ध सँवत्सराः'।															
शे. सं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ल.
सं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	सं.
मा.	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	१	२	४	५	७	८	९	११	०	२	३	४	६	७	मा.
दि.	२३	२७	१	५	१०	१४	१८	२२	२७	१	१२	२४	६	१८	१	१३	२५	७	२०	२	१४	२६	९	२१	दि.
घ.	१६	३०	४३	५७	१०	२४	३७	५०	४	१७	१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	९	२४	३८	५२	७	२१	घ.
प.	४८	१४	४०	७	३३	०	२६	५२	१९	४५	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	प.
वि.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	वि.

सारणी प्रवेश रीति—

वर्त्तमान वैक्रमीय संवत्सर में १९२७ को हीन करे तब जो शेषबचे उनमें १० से भाग दे तब जो लब्ध और शेष संवत्सर हों उनके तुल्य सारणी के कोष्ठके संवत्सरादियोंका योग करे तब गत संवत्सरादि होते हैं। यदि संवत्सर की संख्या ६० से अधिक हो तो ६० से तष्ट करे तब गत संवत्सरादि होते हैं। गत संवत्सर के मासादि को १२।०।०।० में हीनकरे तब जो शेषबचे वे वर्त्तमान संवत्सर के भोग्य मासादि होते हैं।

—:उदाहरणः—

वर्तमान संवत् १९९७ में १९२७ को हीन कियातो ७० शेष बचे। इनमें १० से भाग दियातो लब्ध ७ संवत्सर हुए और शेष० संवत्सर हुआ। शून्य शेष के नीचे के १५।३।२३।१६।४८।० में लब्ध ७ के नीचेके १०।९।२५।४०।४८।० सँव्वत्सरादि को युक्त कियातो २६।१।१८।५७।३६।० गत संवत्सरादि हुए। भुक्त मासादि १।१८।५७।३६ को १२।०।०।० में हीन कियातो १०।१।२।२४ वर्त्तमान विजय संवत्सर के भोग्य मासादि हुए।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'प्रभवादीनां संवत्सराणां नामादिबोधकचक्रम्'।

संवत्सरस्वामिनः	विष्णुः	जीवः	शक्रः	दहनः	त्वष्टा	अहिर्बु.	पितरः	विश्वेदेवाः	सोमः	अग्निः	नासत्यौ	भगः		
द्वादशयुगानि	प्रथमयुगे	द्वितीययुगे	तृ. यु.	च. यु.	पं. यु.	ष. यु.	स. यु.	अ. यु.	न. यु.	द. यु.	ए. यु.	द्वा. यु.		
त्रिदुगानि-	उत्तमयुगे	उत्त. यु.	उत्त. यु.	उत्त. यु.	मध्यम यु.	म. यु.	म. यु.	म. यु.	अधमयुगे	अ. यु.	अ. य.	अ. यु.	वर्षः	
(अधिदेवताः) संवत्सरवह्निदेवतम्	प्रभवः १	अङ्गिराः ६	ईश्वरः ११	चित्रभानु १६	सर्वजि. २१	नन्दनः २६	हेमलम्बी ३१	शुभकृत् ३६	क्रोधन ४१	परिधा. ४६	पिङ्गलः ५१	दुन्दुभिः ५६	वृष्टिः समर्घ्यं च	
परिवत्सरार्कदेवतम्	विभवः २	श्रीमुखः ७	बहुधान्यः १२	सुभानुः १७	सर्वधा. २२	विजयः २७	विलम्बी ३२	शोभनः ३७	कीलकः ४२	प्रवादी ४७	कालयुक्तः ५२	रुधिरोद्गारी ५७	प्रमुखावृष्टिः'	
इडावत्सर-चन्द्रदेवतम्	शुक्लः ३	भावः ८	प्रमाथी १३	तारणः १८	विरोधः २३	जयः २८	विकारी ३३	क्रोधी ३८	सौम्य ४३	आनन्दः ४८	सिद्धार्थी ५३	रक्ताक्षी ५८	प्रभूतं जलम्	
अनुवत्सर-ब्रह्मदेवतम्	प्रमोदः ४	युवा ९	विक्रमः १४	पार्थिवः १९	विक्रु. २४	मन्मथः २९	शार्वरी ३४	विश्वाव. ३९	साधार. ४४	राक्षसः ४९	रौद्रः ५४	क्रोधनः ५९	पश्चाज्जलं भूरि'	
उद्वत्सरशिवदेवतम्	प्रजापतिः ५	धाता १०	वृषः १५	व्ययः २०	खरः २५	दुर्मुखः ३०	प्लवः ३५	पराभवः ४०	विरोधकृ. ४५	नलः ५०	दुर्मतिः ५५	क्षयः ६०	स्वल्पं जलम्'	

Jun Gun Aaradhak Trust

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

प्रकारान्तर से प्रभवादि संवत्सर साधन रीति—

इष्टः शकोऽब्धीन्दुसमीरचन्द्रैर्हीनो गताब्दाः स्युरगैर्हृतास्ते ।
शून्याभ्रषड्भिर्विहृता भपूर्वं फलं गताब्दाब्धिगुणान्वितं तत् ॥ २ ॥

गताब्दयुग्भूपकुतः खचन्द्रभागाप्तलिप्तासहितं खतर्कैः ।
तष्टं गताद्राः प्रभवाद्रविघ्नं शेषं दिनाद्यं क्रियभानुतः प्राक् ॥ ३ ॥

पुनः प्रकारान्तर से प्रभवादि संवत्सर साधन रीति—

व्यालाङ्गमेघोनशको गताद्रास्तेशैलनिघ्नाः खखतर्कभक्ताः ।
भाद्यं फलं यातसमाखचन्द्रभागाप्तलिप्तासहितं खबाणैः ॥ ४ ॥

नन्दाश्विभिश्चन्द्रगुणैश्च खेन भाद्यैर्गताद्रैश्च युतं खतर्कैः ।
तष्टं गताद्राः प्रभवाद्रविघ्नं शेषं दिनाद्यं क्रियभानुतः प्राक् ॥ ५ ॥

इष्ट शकमें १७६८ को हीनकरे शेष 'गतवर्ष' होते हैं। उन गत वर्षोंको ७ से गुणकर ६०० से भाग दे लब्ध 'राश्यादि' होते हैं। तदनन्तर गत वर्षोंमें १० से भाग दे लब्ध 'कलादि' होते हैं। उन लब्ध कलादियों को पूर्वागत लब्ध राश्यादि के कलादिमें युक्त करे तब जो राश्यादि संख्या हो उस में ५०।२९।३१।० को युक्त करके और राशि स्थानमें गत वर्षोंको युक्त करे तब जो राश्यादि हों उनके ऊपरके राशि के अङ्कमें ६० से भाग दे शेष 'प्रभवादि गतसंवत्सर' होता है। शेष अंशादि को १२ से गुणकर दिनादि होते हैं। दिनोंमें ३० से भाग दे लब्ध वर्त्तमान संवत्सर के भुक्तमासादि होते हैं। उनको १२।०।०।० में हीनकरे शेष वर्त्तमान संवत्सर के भोग्यमासादि होते हैं।

—: उदाहरण :—

इष्ट शक १८६२ में १७६८ को हीन किया तो शेष ९४ 'गतवर्ष' हुए। इनको ७ से गुणातो ६५८ हुए। इनमें ६०० से भाग दिया तो लब्ध १ राशि हुई। शेष ५८ को ३० से गुणातो १७४० हुए। इनमें ६०० से भाग दिया तो लब्ध २ अंश हुए। शेष ५४० को ६० से गुणातो ३२४०० हुए। इनमें ६०० से भाग दिया तो लब्ध ५४ कला हुई। शेष शून्य होने के कारण ० विकला हुई। तदनन्तर गतवर्ष ९४ में १० से भाग दिया तो लब्ध ९ कला हुई। शेष ४ को ६० से गुणातो २४० हुए। इनमें १० से भाग दिया तो लब्ध २४ विकला हुई। लब्ध कलादि ९।२४ को पूर्वागत लब्ध राश्यादि १।२।५४।० के कलादि में युक्त किया तो १।३।३।२४ राश्यादि हुए। इनमें राश्यादि क्षेपक ५०।२९।३१।० का युक्त किया तो ५२।२।३४।२४ राश्यादि हुए। राशि ५२ में गतवर्ष ९४ को युक्त किया तो १४६ हुए। इनमें ६० से भाग दिया तो शेष २६ के तुल्य प्रभवसे 'नन्दन गत संवत्सर' हुआ और २७ वां 'विजय वर्त्तमान संवत्सर' हुआ। अंशादि २।३४।२४ को १२ से गुणातो ३०।५२।४८ दिनादि हुए। दिन ३० में ३० से भाग दिया तो लब्ध १ मास हुआ और शेष ० दिन हुआ। इस प्रकार १।०।५२।४८ वर्त्तमान विजय संवत्सरके भुक्त मासादि हुए। इनको १२।०।०।० में हीन

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किया तो १० मास २९ दिन ७ घटी १२ पल वर्त्तमान विजय संवत्सर के भोग्य मासादि हुए अर्थात् फाल्गुन में २९।७।१२ सूर्य के अंशादि समाप्त होनेपर वर्त्तमान विजय संवत्सर भी समाप्त होगा। तदनन्तर जय नामक संवत्सर आरम्भ होगा। इस प्रकार प्रत्येक वर्षमें वर्त्तमान संवत्सर और आगामी संवत्सर इन दोनोंका फल लिखना चाहिए।

वैक्रमीयसंवत्सरतः प्रभवादिषष्ठिसंवत्सरानयनसारणी, पुस्तकीयाल्पसंवत्सरोनशेषसंवत्सरफलसारणी

| | | |

मेषादसंक्रान्तिसाधन रीतिः—

पञ्चाङ्गमेघोनशको ऽष्टिहृत्फलं चक्रारव्यकं स्वादवशेषमङ्गकम् ।
षट्काष्टसिद्धाभ्रमथो विधुःशरैके कग्रयो व्योमगुणा ध्रुवौ तयोः ॥ ६ ॥

अभीष्ट शक में १७६५ को हीनकरे शेष में १६ से भाग दे लब्ध, 'चक्र' होता है । शेष 'अङ्ग' होता है । ६।८२४।० चक्रका वारादि ध्रुव है । १।१५।३१।३० अङ्गका वारादि ध्रुव है ।

चक्राङ्गनिघ्नौ ध्रुवकौ स्वकीयकौ योगस्तयोर्वारमुखो ऽब्दपोभवेत् ।
क्षेपो गुणाः नेत्रशरा धृतिः क्रिये भद्रेरसा नन्दयुगा नवेन्दवः ॥ ७ ॥
युग्मे गुणाः पञ्चभुवो ऽङ्करात्रिपाः कर्केरसा रामशरा नभश्चराः ।
वारादिकरुयाकृतिजातयो हरौ स्त्रियां रसा युग्मकरा नगाग्नयः ॥ ८ ॥
ज़के विधुः कुञ्जरसागरा रसा कौर्प्ये गुणाः शून्यकृता नवाब्धयः ।
धनुर्धरे ऽक्षाः खचराः खगाश्विनो नक्रेरसा नागयमाः करान्तकाः ॥ ८ ॥
कुम्भे ऽम्बरं बाणशरा द्विपावका मत्स्ये यमौ तर्कपयोधयः खगाः ।
भक्षेपयुक्तो ऽद्रपतिः क्रियात्तदा सङ्क्रान्तिवेशः कथितो ऽतिपुण्यदः ॥ १० ॥

चक्रके उक्त वारादि ध्रुव ६।८।२४।० को चक्र की संख्यासे गुणकर जो गुणन फल हो उसको एकान्त में स्थापित करे । तदनन्तर अङ्गके उक्त वारादि ध्रुव १।१५।३१।३० को अङ्गकी संख्यासे गुणकर जो गुणन फल हो उसको एकान्त में स्थित गुणन फल में युक्त करे तब 'वारादि अद्रपति' होता है । 'क्षेपो गुणा नेत्रशराः' इत्यादि संक्रान्तियोंके वारादि क्षेपक हैं । उक्त श्लोकोंका अर्थ निम्नलिखित चक्र में समझना चाहिए । अद्रपति में प्रत्येक मेषादि संक्रान्ति के क्षेपक को पृथक् पृथक युक्त करे तब प्रत्येक मेषादि संक्रान्ति के प्रवेश समय के वारादि होते है । संक्रान्ति प्रवेश समयकी घटियों में स्नानदानादि करने से अतीव पुण्य होता है ।

—: उदाहरण :—

इष्ट शक १८६२ में १७६५ को हीन किया तो ९७ शेष बचे । इनमें १६ से भाग दिया तो लब्ध६ चक्र और शेष १ अङ्ग हुआ । चक्रके वारादि ध्रुव ६।८।२४।० को चक्र ६ से गुणातो ३६।५०।२४।० वारादि हुए । इनको एकान्त में स्थापित किया । तदनन्तर अङ्गके वारादि ध्रुव १।१५।३१।३० को अङ्ग १ से गुणा तो १।१५।३१।३० वारादि हुए । इनको एकान्त में स्थितवारादि ३६।५०।२४।० में युक्त कियातो ३८।५।५५।३० वारादि हुए । यहां वारकी संख्या ३८ है यह ७ से अधिक है अतः ३८ को ७ से तष्ट कियातो शेष ३ वार बचे । इस प्रकार ३ वार ५ घटी ५५ पल ३० विपल इष्टसंवत्सर का 'वारादि अद्रपति' हुआ । इसमें मेषसंक्रान्ति के वारादि क्षेपक ३।५२।१८।० को युक्त कियातो ६।५८।१३।३० मेष संक्रान्ति प्रवेशकाल के वारादि हुए । एवं अद्रपति ३।५।५५।३० में वृष संक्रान्ति के वारादि क्षेपक ६।४९।१९।० को युक्त कियातो २।५५।१४।३० वृष-संक्रान्ति प्रवेशसमय के वारादि हुए । इस प्रकार मिथुनादि संक्रान्तियों के प्रवेश समय के वारादि को साधे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चक्रध्रुवसारणीयम्' । 'वारादिकं फलमेतत्' ।

क्रम.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
वा.	०	६	५	४	३	२	१	०	०	६	५	४	३	२	१	१	०	६	५
घ.	०	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४०	४९	५७	६	१४	२२	३१
प.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२
विप.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

'अङ्कध्रुवसारणीयम्' 'वारादिकं फलमेतत्' ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६
०	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८
०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मेषादिसंक्रान्तीनां क्षेपका वाराद्याः ' ।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
वा.	३	६	३	६	३	६	१	३	५	६	०	२
घ.	५२	४९	१५	५३	२२	२२	४८	४०	९	२८	५५	४६
प.	१८	१९	१९	९	२२	३७	६	४९	२९	२२	३२	९
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सारणी प्रवेश रीति

चक्रकी संख्या के समान चक्रध्रुव सारणी के कोष्ठके वारादि में अङ्क संख्या के तुल्य कोष्ठके अङ्क ध्रुव सारणी के वारादि को युक्तकरे तब ' वारादि अहस्पति ' होता है । इसमें मेषादि संक्रान्तियों के वारादि क्षेपकों को युक्तकरे तब मेषादि संक्रान्तियों के प्रवेश समय के वारादि होते हैं ।

—: उदाहरण :—

यहां ६ चक्र है इसके तुल्य कोष्ठके वारादि १।५०।२८।० में अङ्क संख्या १ के तुल्य कोष्ठके वारादि १।१५।३१।३० को युक्त कियातो ३।५।५५।३० हुए । इनमें मेषसंक्रान्ति के क्षेपक ३।५२।१८।० को युक्त कियातो ६।५८।१३।३० मेषसंक्रान्ति प्रवेश समय के वारादि हुए ।

संक्रान्तियों के प्रवेशसमय की घटियोंके वशसे पुण्यकाल परिज्ञान—

अथार्द्धरात्राद्रविसङ्क्रमः प्राक् तदा भवेत्तद्दिनमेव पुण्यम् ।
ततो निशीथोपरि सङ्क्रमश्चेद्दिनद्वयं पुण्यमुदीरितं च ॥ ११ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यदि अर्द्धरात्र से पूर्व संक्रान्तिका प्रवेशकाल हो तो उसी दिन संक्रान्ति का पुण्यकाल होता है। अर्द्धरात्र से पश्चात् संक्रान्तिका प्रवेशकाल हो तो पूर्व और पर दोनों दिन संक्रान्तिका पुण्यकाल होता है।

सङ्क्रान्तिकालतो भानोर्नाड्यः षोडश षोडश।
पुण्यप्रदा भवन्ति प्राक् पश्चात्प्राज्ञो वदेदिति ॥ १२ ॥

क्रमात्सौम्येऽयने याम्ये रवेरस्तात्तथोद्गमात्।
घटीत्रयं परे प्राक् च सन्ध्ये ज्ञेये बुधोत्तमैः ॥ १३ ॥

सन्ध्योपरिच संक्रान्त्योः प्रवेशः प्रभवेत्तयोः।
तदा दिनद्वयं पुण्यं तद्दिनं त्वन्यथा यदि ॥ १४ ॥

सूर्यसंक्रान्ति प्रवेश कालसे १६ घटी प्रथम और १६ घटी पश्चात् पुण्यदायक होती हैं। इसप्रकार ३२ घटीका प्रत्येक संक्रान्ति में 'पुण्यकाल' होता है। मकर संक्रान्तिके दिन सूर्यास्तकाल से ३ घटी पश्चात् और कर्कसंक्रान्ति के दिन सूर्योदय कालसे ३ घटी पूर्व 'सन्ध्याकाल' जानना चाहिए। यदि उक्त संक्रान्तियोंका प्रवेश-काल सन्ध्याकाल से पश्चात् होतो पूर्वापर दोनों दिन पुण्यदायक होते हैं। यदि उक्तकाल सन्ध्याकाल से पूर्व होतो केवल प्रथम दिन में ही संक्रान्तिका पुण्यकाल होता है।

चान्द्रादि-मास-परिज्ञान—

शाशाङ्कमासं कथयन्त्यमावधिं नाक्षत्रमासं विधुभौघसंश्रयात्।
सौरं दिवानायकराशिभोगत आहुर्बुधाः खाग्निदिनं तु सावनम् ॥ १५ ॥

शुक्लपक्षकी प्रतिपदा से लेकर अमावास्या पर्यन्त 'चान्द्रमास' होता है। चन्द्रमा के अश्विन्यादि २७ नक्षत्र भोगने का समय 'नाक्षत्र मास' होता है। सूर्यकी एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति पर्यन्त भोगने का समय 'सौर मास' होता है। एवं ३० अहोरात्र का 'सावनमास' होता है।

विवाहादि कार्यों में मासग्रहण परिज्ञान—

* उद्वाहादौ गृह्यते सौरमासश्चान्द्रो मासो वार्षिकेष्वादिजानाम्।
कार्य्येष्वेवं सप्ततन्त्वादिकेषु ग्राह्यो मासः सावनः कोविदेन्द्रैः ॥ १६ ॥

विवाहादि शुभकार्यों में 'सौरमास' ग्रहण करे। वार्षिक कार्यों में और पितरों के कार्य में 'चान्द्रमास ग्रहण करे। एवं यज्ञादि कार्यों में 'सावनमास' ग्रहण करना चाहिए।

* इह चान्द्रादीनां मासानां भेदा ग्रन्थान्तरे उक्ताः— मासो दर्शावधिश्चान्द्रः सौरः संक्रामणाद्रवेः। त्रिंशद्दित्, सावनको नाक्षत्रो विधुसम्भ्रमात् १ चान्द्रस्तु द्विविधोमासो दर्शान्तः पूर्णिमान्तिकः इति।

'अथवा'— त्रिंशद्दिनैर्वेभन्मासश्चतुर्धा सोऽपि कीर्त्तितः। दर्शाद्दर्शावधिश्चान्द्रः संक्रान्त्या सौर उच्यते १ नाक्षत्रो भदिनैरेवं सावनः। सावनैर्दिनैः मेषादिस्थे रवौ यो यो मासश्चान्द्रः प्रपूर्यते राशीनां द्वादशत्वात्ते चैत्राद्या द्वादशैव हि' इति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अधिमास तथा क्षयमास परिज्ञान—

+ सङ्क्रान्त्यूनो मास एवाधिमासो द्वे संक्रान्ति यत्र चेन्मूनसञ्ज्ञः ।
मासो ज्ञेयः कार्त्तिकादित्रये स भव्ये ऽद्रस्यात्राधिमासद्वयं स्यात् ॥ १७ ॥

सूर्याचन्द्रमसोरेकस्मात्सङ्गमात्पुनरन्यसङ्गमावधिकालश्चान्द्रमासः, तस्यचमध्यमं मानं २९ दि० ३१ घ० ५०·११९३७४ पलानि । तथाच सूर्यो मासमानगत्या पृथ्वी परितः क्रान्तिवृत्ते भ्रमन् कस्मिंश्चित्नक्षत्रे समागत्य पुनर्यावता कालेन तत्रैवाऽऽगच्छति तन्नाक्षत्रं वर्षम् । तस्य मध्यममानं साम्प्रतं ३६५ दि०, १५ घ०, २२·९ पला० । तथैव सूर्यो यावता कालेनैकंराशिं पर्यटति स सौरमासः । यस्मिंश्चान्द्रमासे सूर्यो मेषराशौ प्रविशति स चैत्रः । तस्य शुक्लपक्षे प्रतिपदि शालिवाहनशकवर्षस्यारम्भः । यस्मिन्मासे वृषराशिं प्रविशति स वैशाखः । यस्मिन्मासे मिथुनराशिं प्रविशति स ज्येष्ठः । एवमग्रेऽपि ।

सूर्याचन्द्रमसोर्नीचोच्चवशाच्चान्द्रमासावधिर्न्यूनाधिको भवति । लघुतमचान्द्रमासः २९ दि०, १८ घ०, महत्तमः २९ दि०, ४६ घ० । एवं लघुतमं सौरमासमानं २९ दि०, २७ घ०, महत्तमं ३१ दि०, २७ घ०, अत्र केनचित्संक्रान्तिलक्षणमुक्तम्'—पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः । स राशिः संक्रमाख्यः स्यान्मासस्त्र्ययन-द्वायने । इह सौरमासहेतुरुक्तः श्रीभास्कराचार्यैः—अद्वायनर्तुतिथिपूर्वकमत्र सौरान्मासास्तथाच तिथयस्तुहिनांशुमानात् । यत्कृच्छ्रसूतकचिकित्सितवासराद्यं तत्साधनाच्च घटिकादिकमार्क्षमानादिति ।

+ अत्राधिमासलक्षणमुक्तं ग्रन्थान्तरे'—स्पष्टार्कसंक्रान्तिविहीनचान्द्रमासाने ऽधिमासो ऽग्रिममासनामा । यत्रेन्दु-मासे रविसंक्रमस्य द्वयं भवेत्तत्क्षयमासमाहुः १ ' अथवा'---कृष्णपक्षे चतुर्थ्यांतु संक्रान्तिर्यदि जायते । मलमासोऽत्रविज्ञेय आगामी वत्सरे खलु २ ' 'अथवा'--सवितृमण्डलमेति यदा शशी तदनु संक्रमणं कुरुते रविः। मरत्नमहोत्सवनाशकर स्तदा मुनिवरैः कथितो ऽधिकमासकः ३ 'अथवा'--यस्मिन्वर्षे शुद्धाङ्कः एकविंशतिमारभ्य त्रिंशत्पर्यन्त समायाति तस्मिन्वर्षे ऽधिमासो ज्ञेयः। सयथा—इष्टशकः १८६१ एतन्मध्ये तिथिकेन्द्रे पुस्तकीयशके १८४८ शोधिते शेषं १३ शेषादधस्थातिथिः २३ शकादधस्था तिथिः० अनयोर्योगः २३ अयं विंशत्यधिकस्तस्मादस्मिन्वर्षे ऽधिमासो ज्ञेयः स च संक्रमणवशान्मासो ज्ञेयः। यस्मिंश्चान्द्रमासे संक्रान्तिर्न भवति सो ऽधिमास इति । एवविधिर्मकरन्दपुस्तके द्रष्टव्य इति ।

यदा चान्द्रमासः सौरमासान्तः पाती भवति तदा स चान्द्रमासोऽधिक इत्युच्यते । तस्मिन् संक्रमणाभावात् तथैव कदाचित्सौरमासोऽपि चान्द्रमासान्तः पाती भवति । तेन तन्मासस्य द्वे नामनी सम्भवेते । तयोरादिमं स्वीकृत्य द्वितीयं निराकुर्वन्ति । एवं निराकृतमास एवं क्षयमास इति ।

सहेतुर्मलमासनिर्णय उच्यते'— यस्मिंश्चाद्रे न संक्रान्तिः सोऽधिमासो निगद्यते । तत्र मङ्गलकार्याणि नैव कुर्यात्कदाचन १ द्वात्रिंशता गतैमासैर्दिनैः षोडशभि साधा । घटिकानां चतुष्केण पतत्योकोऽधिमासकः २ यस्मिन्मासे द्विसंक्रान्तिः क्षयमासः स कथ्यते । तस्मिन् शुभानि कार्याणि यत्नतः परिवर्जयेत् ३ ' अत्र विशेषः'—तिथ्यर्द्धे प्रथमे पूर्वो द्वितीयेऽर्द्धे तथोत्तरः । मासाविति बुधैर्ज्ञेयौ क्षयमासस्य मध्यगौ ४ यदि क्षयमासे तिथेः पूर्वार्द्धे कस्यचिन्मरणं

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिस चान्द्रमास में सूर्य संक्रान्ति नहो वह ' अधिमास संज्ञक ' होता है जिस चान्द्रमास में दो संक्रान्ति हों वह ' क्षयमास संज्ञक ' होता है । वह क्षयमास कभी कभी होता है । क्षयमास केवल कार्तिकादि तीन मासों में ही पडता है । जिसवर्ष में क्षयमास पडता है उसवर्ष के भीतर दो अधिमास होते हैं ।

स्थूलरीति से अधिमास परिज्ञान--

यातैर्युग्मगुणैर्मासैः रसचन्द्रमितैर्दिनैः ।
नाडीभिर्वेदतुल्याभिः पतत्यधिकमासः सदा ॥ १८ ॥

बत्तीस मास, सोलह दिन और चारघटी एक अधिमास से उक्त समय व्यतीत होनेपर नित्य दूसरा अधिमास पडता है ।

सूक्ष्मरीति से अधिमास परिज्ञान—

तत्त्वाङ्कवर्जितशकेऽङ्कशशाङ्कभक्ते
शेषे शुचौ नृप इषे नयने नमस्ये ।
विश्वे शरे नभसि माधव ईशतुल्ये
शुक्रे गजे दिवि मधौ दहनेऽधिमासः ॥ १९ ॥

अभीष्टशक में ९२५ कोहीन करे तब जो शेषबचे उस में १९ से भाग दे यदि १६ शेषबचें तो ' आषाढ ' में ' अधिमास ' (लौंद) होता है शून्य० और आठ ८ शेषबचे तो ज्येष्ठ में, ग्यारह शेषबचे तो वैशाख में, दो शेषबचे तो आश्विन में, तेरह शेषबचे तो भाद्रपद में, तीन शेषबचे तो चैत्र में और पाँच शेषबचे तो श्रावण में अधि (मल) मास होता है ।

—: उदाहरण :—

अभीष्ट शक १८६१ में ९२५ को हीनकियातो ९३६ शेष बचे । इनमें १९ से भाग दियातो ५ शेष बचे । यहां शेष पाँच हैं इसलिए श्रावण में अधिमास हुआ ।

भवेत्तस्यैकोद्दिष्टादि क्रिया पूर्वमासे कर्त्तव्या । एवं तिथिपरार्द्धे मरणं चेत्तर्हि तस्यैकोद्दिष्टक्रियाद्याग्रिममासे कर्त्तव्येति ।

इह प्रसङ्गाज्जन्ममासनिर्णय उच्यते-- आरभ्य जन्मदिवसं यावत्त्रिंशद्दिनं भवेत् । जन्ममासः सविज्ञेयो गर्हितः सर्वकर्मसु १ ' अथवा ' यस्मिंश्चन्द्रमसो गारो जन्म कृष्णादिके भवेत् । स जन्ममासो विज्ञेयश्चौलादौ तं विवर्जयेत् '। इति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'प्राचीनमतेनाधिमासशकवर्षाणि'।

ज्ये. १६०१	चै. १६०४	श्राव. १६०६	आषा. १६०९	वै. १६१२	आ. १६१४	आषा. १६१७	ज्ये. १६२०
आषा. १६२२	श्रा. १६२५	आषा. १६२८	वै. १६३१	भाद्र. १६३३	आषा. १६३६	ज्ये. १६३९	आषा. १६४१
श्रा. १६४४	आषा. १६४७	वै. १६५०	आ. १६५२	आषा. १६५५	ज्ये. १६५८	आषा. १६६०	आ. १६६३
आषा. १६६६	चै. १६६९	भा. १६७१	आषा. १६७४	ज्ये. १६७७	आषा. १६७९	श्रा. १६८२	ज्येष्ठ १६८५
चै. १६८८	श्रा. १६९०	आषा. १६९३	वै. १६९६	भा. १६९८	श्रा. १७०१	ज्ये. १७०४	चै. १७०७
श्रा. १७०९	आषा. १७१२	वै. १७१५	भा. १७१७	श्रा. १७२०	ज्ये. १७२३	चै. १७२६	श्रा. १७२८
आषा. १७३१	वै. १७३४	भा. १७३६	श्रा. १७३९	ज्ये. १७४२	चै. १७४५	श्रा. १७४७	आषा. १७५०
वै. १७५३	भा. १७५५	आषा. १७५८	ज्ये. १७६१	आश्वि. १७६३	श्रा. १७६६	ज्ये. १७६९	चै. १७७२
भा. १७७४	आषा. १७७७	ज्ये. १७८०	आश्वि. १७८२	श्रा. १७८५	ज्ये. १७८८	चै. १७९१	भा. १७९३
आषा. १७९६	ज्ये. १७९९	आश्वि. १८०१	श्रा. १८०४	ज्ये. १८०७	चै. १८१०	भा. १८१२	आषा. १८१५
ज्ये. १८१८	आश्वि. १८२०	श्रा. १८२३	ज्ये. १८२६	चै. १८२९	श्रा. १८३१	आषा. १८३४	वै. १८३७
भा. १८३९	श्रा. १८४२	ज्ये. १८४५	चै. १८४८	श्रा. १८५०	आषा. १८५३	वै. १८५६	भा. १८५८
श्रा. १८६१	ज्ये. १८६४	चै. १८६७	श्रा. १८६९	आषा. १८७२	वै. १८७५	भा. १८७७	श्रा. १८८०
ज्ये. १८८३	चै. १८८६	श्रा. १८८८	आषा. १८९१	वै. १८९४	भा. १८९६	आषा. १८९९	ज्ये. १९०२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आश्वि.१९०४	आ. १९०७	ज्ये. १९१०	वै. १९१३	भा. १९१५	आषा. १९१८	ज्ये. १९२१	आश्वि. १९२३
श्रा. १९२६	ज्ये. १९२९	वै. १९३२	भा. १९३४	आषा. १९३७	ज्ये. १९४०	आश्वि. १९४२	श्रा. १९४५
ज्ये. १९४८	वै. १९५१	भा. १९५३	आषा.१९५६	ज्ये. १९५९	आश्वि.१९६१	आषा. १९६४	ज्ये. १९६७
फा. १९६९	श्रा. १९७२	आषा.१९७५	वै. १९७८	भाद्र. १९८०	आषा.१९८३	ज्ये. १९८६	फाल्गु. १९८८
श्रा. १९९१	आषा.१९९४	वै. १९९७	भा. १९९९	आषा. २००२	ज्ये. २००५	फा. २००७	श्रा. २०१०
आषा.२०१३	वै. २०१६	भा. २०१८	आषा.२०२१	ज्ये. २०२४	आश्वि.२०२६	श्रा. २०२९	आषा.२०३२
वै. २०३५	भा. २०३७	आषा.२०४०	वै. २०४३	भा. २०४५	श्रा. २०४८	ज्ये. २०५१	वै. २०५४
भा. २०५६	आषा.२०५९	ज्ये. २०६२	भा. २०६४	श्रा. २०६७	ज्ये. २०७०	वै. २०७३	

प्राचीनमतेन क्षयाधिमासाः तेषां शकवर्षाणि च' ।

मलमासाः	आश्वि. १६०३	आश्वि. १७४४	आश्वि. १८८५	आश्वि. १९०४	कार्ति. १९५०	मार्ग. १९६९	कार्ति. २००७	आश्वि. २०२६	भाद्र. २०४५	कार्ति. २०९१	कार्ति. २११०
क्षयमासाः	मार्ग. १६०३	मार्ग. १७४४	मार्ग. १८८५	पौष. १९०४	मार्ग. १९५०	मार्ग. १९६९	कार्ति. २००७	मार्ग. २०२६	पौष. २०४५	मार्ग. २०९१	पौष. २११०
मलमासाः	वैशाख १६०४	चैत्र. १७४५	चैत्र. १८८६	फाल्गु. १९०४	चैत्र. १९५१	फाल्गु. १९६९	फाल्गु. २००७	चैत्र. २०२७	फाल्गु. २०४५	चैत्र. २०९२	फाल्गु. २११०
मलमासाः	कार्तिक २१४८	आश्वि. २१६७	आश्वि. २२३२	आश्वि. २३७३	आश्वि. २५१४	आश्वि. २५३३	आश्वि. २६५५	आश्वि. २६७४	आश्वि. २७९६	आश्वि. २८१५	कार्ति. २८६१
क्षयमासाः	मार्ग. २१४८	मार्ग. २१६७	मार्ग. २२३२	मार्ग. २३७३	मार्ग २५१४	पौष. २५३३	पौष. २६५५	मार्ग. २६७४	पौष २७९६	मार्ग २८१५	मार्ग. २८६१
मलमासाः	फाल्गु. २१४८	फाल्गु. २१६७	चैत्र. २२३३	चैत्र. २३७४	चैत्र. २५१५	फाल्गु. २५३३	चैत्र. २६५६	फाल्गु. २६७४	चैत्र. २७९७	फाल्गु. २८१५	चैत्र. २८६२

रैवतपक्षेक्षयाधिमासाः, तेषां शकवर्षाणि च ।

अधिकः	क्षयः	अधिकः	क्षयः	अधिकः	क्षयः
कार्तिकः १८२३ आश्विनः १९८३	मार्गः १८२३ पौषः १९८३	कार्तिकः २१२४ आश्विनः २१४३	कार्तिकः २१२४ पौषः २१४३	कार्तिकः २२८४ कार्तिकः २४४४	मार्गः २२८४ मार्गः २४४४

चैत्रपक्षे क्षयाधिमासाः, तेषां शकवर्षाणि च '।

अधिकः	क्षयः	अधिकः	क्षयः
कार्तिकः १८८५ फाल्गुनः १९०४	कार्तिकः १८८५ पौषः १९०४	आश्विनः २०४५ आश्विनः २०६४	मार्ग. २०४५ पौषः २०६४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रैवतपक्षे ऽधिमासवर्षाणि ।

ज्येष्ठः	१८०२	चैत्रः	१८०५	श्रावणः	१८०७	आषाढः	१८१०	वैशाख	१८१३	भाद्र-	१८१५
श्रावणः	१८१८	ज्ये-	१८२१	चै.	१८२४	श्रा.	१८२६	आषा.	१८२९	वै.	१८३२
भा.	१८३४	श्रा-	१८३७	ज्ये-	१८४०	आश्वि-	१८४२	श्रा.	१८४५	ज्ये.	१८४८
वै.	१८५१	भा.	१८५३	आषा.	१८५६	ज्ये-	१८५९	आश्वि-	१८६१	श्रा-	१८६४
ज्ये.	१८६७	वै.	१८७०	भा.	१८७२	आषा.	१८७५	ज्ये.	१८७२	आश्वि-	१८८०
श्रा-	१८८३	ज्ये-	१८८६	वै.	१८८९	भा.	१८९१	आषा.	१८९४	ज्ये.	१८९७
आश्वि.	१९००	श्रा-	१९०२	आषा-	१९०५	वै-	१९०८	भाद्र.	१९१०	आषा.	१९१३
वै.	१९१६	आश्वि.	१९१८	श्रा.	१९२१	ज्ये-	१९२४	फाल्गु-	१९२६	श्रा-	१९२९
आषा.	१९३२	वै.	१९३५	आ.	१९३७	श्रा.	१९४०	ज्ये.	१९४३	चै-	१९४६
श्रा-	१९४८	आषा-	१९५१	वै.	१९५४	भा.	१९५६	श्रा.	१८०९	ज्ये.	१९६२
चै.	१९६५	श्रा-	१९६७	आषा-	१९७०	वै-	१९७३	भा.	१९७५	श्रा.	१९७८
ज्ये.	१९८१	चैत्र	१९८४	भा-	१९८६	आषा-	१९८९	वै-	१९९२	भाद्र-	१९९४
श्रा.	१९९७	ज्ये.	२०००	आश्वि.	२००२	श्रा.	२००५	ज्ये-	२००८	वै-	२०११
भा-	२०१३	आषा-	२०१६	ज्ये.	२०१९	आश्वि.	२०२१	श्रा.	२०२४	ज्ये.	२०२७
वै-	२०३०	भा-	२०३२	आषा-	२०३५	ज्ये-	२०३८	आश्वि.	२०४०	श्रा.	२०४३
आषा.	२०४६	चै.	२०४९	भा-	२०५१	आषा-	२०५४	ज्ये-	२०५७	आश्वि-	२०५९
श्रा.	२०६२	आषा.	२०६५	चै.	२०६८	भा.	२०७०	आषा-	२०७३	वै-	२०७६
आश्वि-	२०७८	श्रा-	२०८१	ज्ये.	२०८४	चै.	२०८७	श्रा.	२०८९	आषा.	२०९
वै-	२०९५	भा-	२०९७	श्रा-	२१००	ज्ये-	२१०३	चै.	२१०६	श्रा.	२१०८
आषा.	२१११	वै.	२१११	भा-	२११६	श्रा-	२११९	ज्ये-	२१२२	चै-	२१२५
श्रा.	२१२७	आषा.	२१३०	वै.	२१३३	भा.	२१३५	श्रा-	२१३८	ज्ये-	२१४१
चै.	२१४४	भा-	२१४६	आषा.	२१४९	वै.	२१५२	भा.	२१५४	श्रा.	२१५७
ज्ये-	२१६०	आश्वि-	२१६२	श्रा-	२१६५	आषा-	२१६८	वै.	२१७१	भा.	२१७३
आषा-	२१७६	ज्ये.	२१७९	आश्वि-	२१८१	श्रा-	२१८४	आषा.	२१८७	वै-	२१९०
भा.	२१९२	आषा.	२१९५	ज्ये.	२१९८	का.	२२००	श्रा-	२२०३	आषा-	२२०६
चै.	२२०८	भा-	२२११	आषा.	२२१४	ज्ये.	२२१७	आश्वि.	२२१९	भा.	२२२२
आषा-	२२२५	चैत्रः	२२२८	भा-	२२३०	आषा-	२२३३	वै.	२२३६	आश्वि.	२२३८
श्रा.	२२४१	ज्ये.	२२४४	चै.	२२४७	श्रा-	२२४९	आषा-	२२५२	वै-	२२५५
भा.	२२५७	श्रा.	२२६०	ज्ये.	२२६३	चै.	२२६६	श्रा-	२२६८	आषा-	२२७१
वै-	२२७४	भा-	२२७६	श्रा.	२२७९	ज्ये.	२२८२	चै.	२२८५	भा.	२२८७
आषा-	२२९०	वै-	२२९३	भा-	२२९५	श्रा-	२२९८	ज्ये.	२३०१	आश्वि.	२३०३
भा.	२३०६	आषा-	२३०९	वै-	२३१२	भाद्र-	२३१४	आषा-	२३१७	ज्ये.	२३२०
आश्वि.	२३२२	श्रा.	२३२५	आषा.	२३२८	वै-	२३३१	भा-	२३३३	आषा-	२३३६
ज्ये-	२३३९	कार्ति.	२३४१	श्रा.	२३४४	आषा.	२३४७	चै.	२३५०	भा-	२३५२
आषा-	२३५५	ज्ये-	२३५८	का-	२३६०	श्रा-	२३६३	आषा.	२३६६	चै.	२३६९
भा.	२३७१	आषा-	२३७४	ज्ये-	२३७७	आश्वि	२-७३९	श्रा-	२३८२	आषा.	२३८५
चै.	२३८८	भा.	२३९०	आषा.	२३९३	वै-	२३९६	आश्वि-	२३९८	श्रा-	२४०१
ज्ये-	२४०४	चै-	२४०७	भा.	२४०९	आषा.	२४१२	वै.	२४१५	भा-	२४१७
श्रा-	२४२०	ज्ये-	२४२३	चै-	२४२६	भा.	२४२८	आषा.	२४३१	वै.	२४३४
भा.	२४३६	आ-	२४३९	ज्ये-	२४४२	चै-	२४४५	भा-	२४४७	आषा-	२४५०
वै.	२४५३	भा.	२४५५	श्रा,	२४५८	ज्ये-	२४६१	कार्ति-	२४६३	भा-	२४६६
आषा.	२४६९	वै-	२४७२	आश्वि.	२४७४	आषा.	२४७७	ज्ये,	२४८०	कार्ति-	२४८२
श्रा-	२४८५	आषा-	२४८८	वै-	२४२१	भा,	२४९३	आषा.	२४९६	ज्ये.	२४९९
का.	२५०१										

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चैत्रपक्षेऽधिमासाः, तेषां वर्षाणि च ।

आश्वि.१८०१	श्रा.१८०४	ज्ये. १८०७	चै. १८१०	भाद्र. १८१२	आषा. १८१५	ज्ये. १८१८
१८२०	१८२३	१८२६	फाल्गु.१८२८	श्रा.१८३१	१८३४	वैशा. १८३७
१८३९	१८४२	१८४५	१८४७	१८५०	१८५३	१८५६
१८५८	१८६१	१८६४	चै. १८६७	१८६९	१८७२	१८७५
१८७७	१८८०	१८८३	१८८६	१८८८	१८९१	१८९४
१८९६	१८९९	१९०२	आश्वि.१९०४	१९०७	ज्ये. १९१०	१९१३
१९१५	आषा.१९१८	१९२१	१९२३	१९२६	१९२९	१९३२
१९३४	१९३७	१९४०	१९४२	१९४५	१९४८	चै. १९५१
१९५३	१९५६	१९५९	१९६१	१९६४	१९६७	१९७०
१९७२	१९७६	चै. १९७८	१९८०	१९८३	१९८६	१९८९
भाद्र. १९९१	१९९४	१९९७	१९९९	२००२	२००५	२००८
२०१०	२०१३	२०१६	भा. २०१८	२०२१	२०२४	२०२७
२०२९	२०३२	२०३५	२०३७	२०४०	२०४३	२०४६
२०४८	२०५१	२०५४	२०५६	२०५९	२०६२	२०६५
२०६७	२०७०	२०७३	२०७५	आषा. २०७८	२०८१	आश्वि.२०८३
२०८६	२०८९	२०९२	२०९४	२०९७	२१००	२१०२
२१०५	२१०८	चै. २१११	२११३	२११६	२११९	२१२१
२१२४	२१२७	२१३०	२१३२	२१३५	चै. २१३८	२१४०
२१४३	२१४६	२१४९	श्रा. २१५१	२१५४	२१५७	२१५९
२१६२	२१६५	२१६८	२१७०	२१७३	२१७६	२१७८
२१८१	२१८४	२१८७	२१८९	२१९२	२१९५	२१९७
२२००	२२०३	२२०६	२२०८	२२११	२२१४	२२१६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्थूल रीती से तिथिपथिपरिज्ञानः--

मासाभिधानादुडुतः शशाङ्कभं यावत्कृतीन्द्रो गणयेद्यदुन्मिताः ।
तावत्तु तारा गणनात्तदुन्मिता भवन्ति तिथ्यो ऽसितपक्षपक्षतः ॥ २० ॥

अभीष्ट मासके नाम वाले नक्षत्र से वर्त्तमान दिन के चन्द्रनक्षत्र पर्यन्त गिनती करने से जो संख्या मिले उस संख्या के समान कृष्ण प्रतिपदा से गिनकर वर्त्तमान दिन की तिथि होती है।

—उदाहरण—

संवत् १९९७ वैशाख ११ प्रविष्ट की तिथि जानने के लिए वैशाख मास के नाम नक्षत्र विशाखा में वर्त्तमान दिन के विशाखा नक्षत्र पर्यन्त गिनातो १ मिला। इसके तुल्य कृष्ण प्रतिपदा से गिनातो वर्त्तमान दिन ११ प्रविष्ट को कृष्ण प्रतिपदा वर्त्तमान तिथि हुई।

वैशाख का नाम नक्षत्र विशाखा, ज्येष्ठ का ज्येष्ठा, आषाढ का पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा, श्रावणका श्रवण भाद्रपद का पूर्वाभाद्रपदा तथा उत्तराभाद्रपदा, कार्तिक का कृतिका, मार्गशीर्ष का मृगशीर्ष, पौष का पुष्य माघ का मघा, फाल्गुन का पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी एवं चैत्रमास का नाम नक्षत्र चित्रा जानना चाहिए।

स्थूल रीति से नक्षत्र परिज्ञान—

मासस्य संख्या द्विहता कुहीना तिथ्यान्विता भोर्वरिता भवेद्भम् ।
मासो बलक्षाभिधपक्षपूर्वात्कृष्णे यमाभ्यां रहिता विधेया ॥ २१ ॥

वैशाखादि मासों की संख्याको २ से गुणकर जो गुणन फल हो उसमें शुक्लपक्ष होतो १ को और कृष्ण पक्ष होतो २ को हीनकरे तब जो संख्या हो उसमें शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि के क्रमसे वर्त्तमान तिथि की संख्या को युक्तकरे तब वर्त्तमान दिनका नक्षत्र होता है यदि पूर्वागत संख्या २७ से अधिक होतो २७ से तष्टकरे शेष इष्टदिन का नक्षत्र होता है।

—: उदाहरण :—

इष्टमास वैशाख की संख्या १ को २ से गुणातो २ हुए। इनमें कृष्णपक्ष होने के कारण २ को हीन किया तो० शेषबचा। इसमें इष्टदिन की तिथि कृष्णप्रतिपदा की संख्या १६ को युक्त कियातो १६ हुए। अश्विनी से गिनातो इष्टदिनमें १६ वां विशाखा नक्षत्र हुआ।

स्थूलरीति से योग परिज्ञान—

जैवादिनर्क्षं गणयेत्तथा श्रुतेश्चान्द्रं तदैक्यं च भशेषितं युतिः ।
भयोर्ययोस्तिष्ठत इन्दुभास्करौ योगे यातेर्भूहिते ऽथवा युतिः ॥ २२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पुष्य नक्षत्र से सूर्याक्रान्त नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसको एकान्त में स्थापित करे तदनन्तर श्रवण से इष्टदिन के नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसको एकान्त में स्थापित संख्या में युक्तकर तब इष्टदिन का विष्कम्भादि योग होता है। अथवा इष्टदिन में चन्द्रमा और सूर्य जिस जिस नक्षत्र में हों उनदोनों के आक्रान्त नक्षत्रों की अश्विन्यादि संख्याओंका योग करे तब जो संख्या हो उसके तुल्य विष्कम्भसे इष्टदिन का विष्कम्भादि योग होता है।

—: उदाहरण :—

इष्टदिन में सूर्य अश्विनी नक्षत्र में है और चन्द्रमा विशाखा में है। पुष्य से सूर्या (धिष्ठित) क्रान्त अश्विनी पर्यन्त गिनातो २१ हुए। एवं श्रवण से चन्द्राधिष्ठित विशाखा नक्षत्र पर्यन्त गिनातो २२ हुए। इनदोनों का योग कियातो ४३ हुए। इनको २७ से तष्ट कियातो १६ शेषबचे। विष्कम्भ से १६ शेष पर्यन्त गिनातो वर्त्तमान सिद्धि योग हुआ। अथवा सूर्याधिष्ठित नक्षत्र अश्विनी की संख्या १ और चन्द्राधिष्ठित नक्षत्र विशाखा की संख्या १६ इन दोनों का योग कियातो १७ हुए। इन में १ को हीन कियातो १६ शेष बचे। विष्कम्भ से गिनातो वर्त्तमान १६ वां सिद्धि योग हुआ।

सूर्य और चन्द्र गति से तिथि, नक्षत्र तथा योग साधन रीतिः—

+ खाभ्राम्बराश्विखगबाणयमा रवीन्द्वो-
भुक्तान्तरस्य विकलाभिरिहोध्दृतास्ते।
लब्धं तिथेर्निखिलभोग्यघटीमुखं यत्
पूर्णाभ्रखाम्बरगजेभयमाः क्रमाच्च ॥ २३ ॥

इन्दोर्गतेर्विकलिकाभिरिनेन्दुभुक्ति-
योगस्य या विकलिका विहृताश्च ताभिः।
सर्वैष्यनाडिवदनं फलमृक्षयुत्यो-
रेषा क्रिया तिथिपटाय मया निरुक्ता ॥ २४ ॥

+ इह ग्रहलाघवोक्तरीत्या चन्द्रमन्दगतिफलपूर्णाङ्काः ६८'।१५" एवं रविमन्दगतिफलपूर्णाङ्काः २'।१५" तत्रेन्दुगतेः परमवृद्धिः ८५८'।५०" रविगते परमवृद्धिः ६१'।२३" एवमिन्दुगतेः परमहानिः ७२२'।२०" रविगतेः परमहानिः ५६'।५३" तिथिपरमहानिः ८०१'।५७" अत्र भाज्यः २५९२००० भाजकः ४८११७ अनेन घट्यादिलब्धिर्जाता तिथिहानिः ६।८ षष्टेः शोध्या शेषं ५३।५२ एवं तिथिपरमवृद्धिः ६६५'।२७" अत्र भाज्यः २५९२००० भाजकः ३९९२७ अनेन घट्यादिलब्धिर्जाता तिथिवृद्धिः ४।५५ इयं षष्ठ्यां योज्या ६४।५५ ततो नक्षत्रपरमहानिः ८५८'।५०" अत्र भाज्यः २८८०००० भाजकः ५१५३० अनेन घट्यादिलब्धिर्जाता नक्षत्रहानिः ४।७ षष्टेः शोध्या शेषं ५५।५३, एवं नक्षत्रपरमवृद्धिः ७२२'।२०" अत्र भाज्यः २८८०००० भाजकः ४३३४० अनेन घट्यादिलब्धिर्जाता नक्षत्रवृद्धिः ६।२७ इयं षष्ठ्या योज्या ६६।२७ अथ योगस्य परमहानिः ९२०।१३ अत्र भाज्यः२८८०००० भाजकः ५५२१३ अनेन घट्यादिलब्धिर्जाता योगपरमहानिः ७।५१ इयं षष्ठ्यां वियोज्या जाता योगहानिघट्यः ५२।९ एवं योगपरमवृद्धिः ७७९'।१३" अत्र भाज्यः २८८०००० भाजकः ४६७५३ अनेन घट्यादिलब्धिर्जाता योगवृद्धिः१।३६ एवं षष्ठ्यां योज्या जाता योगस्य घट्याद्या परमार्द्धिः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

२५९२००० में सूर्यचन्द्रकी गतिके अन्तरकी विकलासे भागदे लब्ध अभीष्ट तिथि के सर्वभोग्य घट्यादि होते हैं। २८८०००० में चन्द्रगतिकीविकला से भाग दे लब्ध अभीष्ट नक्षत्र के सर्वभोग्य घट्यादि होते हैं। एवं २८८०००० में सूर्यचन्द्रकीगति के योग की विकला से भाग दे लब्ध अभीष्ट योग के सर्व भोग्य घट्यादि होते हैं। अभीष्ट तिथ्यादियों की सर्वभोग्य घट्यादियोंको गततिथ्यादियों के सर्वभोग्य घट्यादि में युक्त करे तब अभीष्ट दिनमें अभीष्ट तिथ्यादियों की समाप्ति के घट्यादि होते हैं। यह क्रिया मैंने पञ्चाङ्ग बनाने के लिए कही है।

—:उदाहरणः—

संवत् १९६८ वैशाख कृष्णदशमी ग्रहलाघवीय दिनगण २२७५ से साधित मध्यम सूर्य ०।८।१४।२५ मध्यमचन्द्र १०।१३।२१।३४ मध्यम चन्द्रोच्च ७।२४।३२।१० सूर्यगति ५'८।२०" चन्द्रगति ७७६'।३४" सूर्यचन्द्र की गति के अन्तर ७१८।१४ की विकला ४३०९४ 'भाजक' हुआ। भाज्य २५९२००० में भाजक ४३०९४ से भागदिया तो लब्ध ६० घटी ९ पल 'वर्त्तमान तिथि दशमी का घट्यादि सर्वभोग्य' हुआ। इसको गत तिथि नवमी की समाप्ति की १० घटी ० पलमें युक्त कियातो १० घटी ९ पल में 'वर्त्तमान तिथि दशमी की समाप्ति' हुई।

चद्रगति ७७६।३४ की विकला ४६५९४ 'भाजक' हुआ। भाज्य २८८०००० में भाजक ४६५९४ से भाग दियातो लब्ध ६१ घटी ४८ पल 'वर्त्तमान नक्षत्र शतभिषा का घट्यादि सर्व भोग्य' हुआ। इसको गतनक्षत्र धनिष्ठाकी समाप्ति की ५३ घटी २६ पल में युक्त कियातो ५५ घटी १४ पल में 'वर्त्तमान नक्षत्र शतभिषा की समाप्ति' हुई। एवं सूर्य चन्द्रकी गति के योग ८३४'।५४" की विकला ५००९४ 'भाजक' हुआ। भाज्य २८८०००० भाजक ५००९४ से भाग दियातो लब्ध ५७ घटी २९ पल 'वर्त्तमान शुक्ल योग का घट्यादि सर्वभोग्य' हुआ। इसको शुभयोग की समाप्ति की ८ घटी ५० पल में युक्तकियातो ६ घटी १९ पल में 'वर्त्तमान शुक्ल योग की समाप्ति' हुई। एवं प्रत्येक दिन के तिथ्यादियों के घट्यादियों का साधन करे।

प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य तथा स्पष्ट चन्द्रसे तिथ्यादियों की साधन रीति—

प्राता रवीन्दुस्फुटतः प्रसाध्यास्तिथेर्भयुत्योर्घटिका अयाताः।
भवन्ति तिथ्याद्यवसानकालघट्यो विलेख्यास्तिथिपत्रके ताः ॥ २५ ॥

प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य तथा स्पष्ट चन्द्रसे तिथि, नक्षत्र और योगके भोग्य घट्यादियों का वक्ष्यमाण रीति से साधन करे तब वे तिथ्यादियोंके समाप्ति के घट्यादि होते हैं। उन तिथ्यादियोंकी समाप्ति काल के घट्यादिको पञ्चाङ्ग में लिखकर पञ्चाङ्ग निर्माण करे।

६१।३६, इह तिथ्यादीनां क्षयवृद्धिप्रमाणमुक्तं ' 'ग्रन्थान्तरे '—सांघ्रिसिन्धुरसांसिन्धुरप्रमा तारकातिथियुजां क्षयप्रमा नाडिकासु सदलाङ्गमार्गणव्यांघ्रिलोचनमिता मता चितिः ' इति। चितिर्वृद्धिः। तिथिवृद्धिः ५ घ० तिथिक्षयः ६ घ० नक्षत्रवृद्धिः ६ घ० ३० प०। नक्षत्रक्षयः ४.घ० १५ प०। योगवृद्धिः १ घ० ४५ प०। योगहानिः ८ घ० इति। ज्योतिर्गणिते तु तिथिरवधि—५० घटीभ्यः ६७ घटीपर्यन्तं वर्द्धते। नक्षत्रावधिः ५२ घटीभ्यः ६८ घटीपर्यन्तम्, योगावधिः ४९ घटीभ्यः ६३ घटीपर्यन्तं भिद्यते।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

इष्टदिनमें प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य रहित स्पष्ट चन्द्रसे वक्ष्यमाण भुक्त भोग्यानयन विधि द्वारा तिथिका घट्यादि भोग्य साधन किया तो इष्ट तिथि त्रयोदशी की भोग्य घटी ३२ पल ५७ मिले। ये ही इष्ट दिनमें त्रयोदशीके पञ्चाङ्गस्थ घट्यादि हुए।

इष्टदिनमें प्रातः कालीन स्पष्टचन्द्रसे वक्ष्यमाण भुक्त भोग्यानयन विधि द्वारा नक्षत्र का घट्यादि भोग्य साधन कियातो इष्ट नक्षत्र शतभिषा की भोग्य घटी ४६, पल ४० मिले। ये ही इष्टदिन में शतभिषा नक्षत्र के पञ्चाङ्गस्थ घट्यादि हुए।

एवं इष्टदिन में प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य और स्पष्ट चन्द्र के योग से वक्ष्यमाण भुक्त भोग्यानयनाविधि द्वारा योग का घट्यादि भोग्य साधन किया तो इष्ट योग शूलकी भोग्य घटी ४०, पल १ मिले। ये ही इष्ट दिनमें शूल योग के पञ्चाङ्गस्थ घट्यादि हुए।

स्पष्टसूर्य तथा स्पष्ट चन्द्रसे तिथ्यादियों के गतगम्य घट्यादि साधन रीति—

वीनेन्दुलिप्ता नखवसुभक्ताः सैकं फलं स्यात्तिथिरिन्दुलिप्ताः।
सार्केन्दुलिप्ताश्च खखेभभक्ताः सैके फलेभ्तो भयुती च शेषम् ॥ २६ ॥
भुक्तं तु तत्स्वस्वहराद्विशोध्यं भोग्यं तयोर्या विकलाः खपद्घ्नाः।
भुक्त्यन्तरेणेन्दुजवेन गत्योर्योगेन भक्ता गतगम्यनाड्यः ॥ २७ ॥

स्पष्टचन्द्र में स्पष्टसूर्य को हीन करे तब 'व्यर्कविधु' होता है। व्यर्क विधुकी राशिको ३० से गुणकर अंशों को युक्तकरे तब अंशादि होते हैं। अंशोंको ६० से गुणकर कलाको युक्तकरे तब 'कलादि पिण्ड' होता है। उसमें ७२० से भागदे लब्ध 'गत तिथि' होती है। उसमें १ को युक्तकरे तब 'वर्त्तमान तिथि' होती है। स्पष्टचन्द्र की राशिको ३० से गुणकर अंशोंको युक्त करे तब अंशादि होते है। अंशोंको ६० से गुणकर कला को युक्तकरे तब कलादि पिण्ड होता है। उसमें ८०० से भागदे लब्ध 'गतनक्षत्र' होता है। उसमें १ को युक्तकरे तब। वर्त्तमान नक्षत्र' होता है। एवं स्पष्ट सूर्य में स्पष्ट चन्द्रको युक्तकरे तब 'सार्क चन्द्र' होता है। तदनन्तर सार्कचन्द्र का चन्द्रमा के समान कलापिण्ड करके ८०० से भागदे लब्ध 'गत योग' होता है। उसमें १ को युक्तकरे तब 'वर्त्तमान योग' होता है। व्यर्कविधु के कलादिपिण्डमें ७२० से भाग देनेपर जो शेष कलादि बचे वह तिथिका 'कलादि-भुक्त' होता है। उसको हर (भाजक) ७२० में हीनकरे तब शेष तिथिका 'कलादि भोग्य' होता है। तिथिके कलादि भुक्त और भोग्यकी विकला को ६० से गुणकर सूर्य चन्द्रमाकी गतिके अन्तर से भाग दे लब्ध क्रमसे तिथिके भुक्त और भोग्य घट्यादि होते हैं। स्पष्ट चन्द्रके कलादि पिण्डमें ८०० से भाग देनेपर जो शेषबचे वह नक्षत्रका 'कलादि भुक्त' होता है। उसको नक्षत्र के हर (भाजक) ८०० में हीनकरे तब शेष 'नक्षत्रका कलादि भोग्य' होता है। नक्षत्रके कलादि भुक्त और भोग्य की विकला को ६० से गुणकर चन्द्रगति की विकला से भाग दे लब्ध क्रमसे नक्षत्र के भुक्त और भोग्य घट्यादि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

होते हैं। एवं सार्क चन्द्र के कलादि पिण्डमें ८०० से भाग देनेपर जो शेष बचे वह 'योग का कलादि भुक्त' होता है। उसको योग के हर (भाजक) ८०० में हीनकर तब शेष योग का कलादि भोग्य होता है। योग के कलादि भुक्त और भोग्य की विकला को ६० से गुणकर जो गुणन फल हो उसमें सूर्य चन्द्रकी गतिके योग की विकलासे भाग दे लब्ध क्रमसे योगके भुक्त और भोग्य घट्यादि होते हैं।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट चन्द्र १०।९।२५।३० में स्पष्ट सूर्य ५।१०।२१।८ को हीन किया तो ४।२९।४।२२ 'व्यर्क विधु' हुआ। इसकी राशि ४ को ३० से गुणातो १२० हुए। इनमें २५ अंशको युक्त किया तो १४९ हुए। इनको ६० से गुणातो ८९४० हुए। इनमें ४ कला को युक्त किया तो ८९४४।२२ 'कलादि पिण्ड' हुआ। इस में ७२० से भाग दिया तो लब्ध १२ 'शुक्लद्वादशीगततिथि' हुई। इसमें १ को युक्त किया तो 'शुक्ल त्रयोदशी वर्त्तमान तिथि' हुई। शेष ३०४।२२ 'वर्त्तमान तिथिका कलादि भुक्त' हुआ। इसको हर (भाजक) ७२० में हीन किया तो ४१५।३८ 'वर्त्तमान तिथिका कलादि भोग्य हुआ। भुक्त कला ३०४ को ६० से गुणातो १८२४० हुए। इनमें २२ विकला को युक्त किया तो १८२६२ विकला हुई। इनको ६० से गुणातो १०९५७२० 'भाज्य' हुआ। चन्द्रगति ८१५।५० में सूर्यगति ५८।५४ को हीन किया तो ७५६।५६ शेष बचे। इनको ६० से गुणातो ४५४१६ 'भाजक' हुआ। भाज्य १०९५७२० में भाजक ४५४१६ से भाग दियातो लब्ध २४।८ 'वर्त्तमान तिथि त्रयोदशी का घट्यादि भुक्त' हुआ। तिथिके कलादि भोग्य ४१५।३८ की विकला २४९३८ को ६० से गुणातो १४९६२८० 'भाज्य हुआ। इस में भाजक ४५४१६ से भाग दिया तो लब्ध ३२।५७ 'वर्त्तमान तिथि त्रयोदशी का घट्यादि भोग्य' हुआ। घट्यादि भुक्त २४।८ में घट्यादि भोग्य ३२।५७ को युक्तकियातो ५७ घटी ५ पल त्रयोदशी का सर्व भोग्य' हुआ।

स्पष्ट चन्द्र १०।९।२५।३० के कलादि पिण्ड १८५६५।३० में ८०० से भाग दियातो लब्ध २३ वां 'गतनक्षत्र धनिष्ठा, हुआ। इस में १ को युक्त कियातो २४ वां 'वर्त्तमान शतभिषा नक्षत्र' हूआ। शेष १६५।३० कलादि भुक्त हुआ। इसको हर (भाजक) ८०० में हीन कियातो ६३४।३० कलादि भोग्य हुआ। कलादि भुक्त १६५।३० की विकला ९९३० को ६० से गुणातो ५९५८०० 'भाज्य' हुआ। चन्द्रगति ८१५।५० को ६० से गुणातो ४८९५० 'भाजक' हुआ। भाज्य ५८५८०० में भाजक ४८९५० से भाग दियातो लब्ध १२ घटी १० पल 'वर्त्तमान शतभिषा नक्षत्र का भुक्त' हुआ। कलादि भोग्य ६३४।३० की विकला ३८०७० को ६० से गुणातो २२८४२०० 'भाज्य' हूआ। इन में भाजक ४८९५० से भाग दिया तो लब्ध ४६ घटी ५० पल 'वर्त्तमान शतभिषा नक्षत्र का भोग्य' हुआ : इसमें भुक्त १२।१० को युक्त कियातो ५० घटी ५० 'वर्त्तमान शतभिषा नक्षत्र का सर्व भोग्य' हुआ।

स्पष्ट चन्द्र १०।९।२५।३० में स्पष्ट सूर्य ५।१०।२१।८ को युक्त कियातो ३।२०।१६।३८। 'सार्कचन्द्र' हुआ। इसके कलादि ६६१६३८ में ८०० से भाग दियातो लब्ध ८ वां 'धृति गतयोग' हुआ। इसमें १ को युक्त कियातो ९ वां 'वर्त्तमान शूल योग' हुआ। शेष २१६।३८ कलादि भुक्त हुआ। इसको हर (भाजक) ८०० में हीन कियातो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

५८३।२२ कलादि भोग्य हुआ। कलादि भुक्त २१६।३८ की विकला १२९९८ को ६० से गुणातो ७७९८८० 'भाज्य' हुआ। सूर्यगति ५८।५४ में चन्द्रगति ८१५।५० को युक्त कियातो ८७४।४४ गति योग हुआ। इसको ६० से गुणातो ५२४८४ 'भाजक' हुआ। भाज्य ७७९८८० में भाजक ५२४८४ से भाग दियातो लब्ध १४ घटी ५२ पल 'वर्त्तमान शूल योग का भुक्त' हुआ। कलादि भोग्य ५८३।२२ की विकला ३५००२ को ६० से गुणातो २१००१२० 'भाज्य' हुआ। इसमे भाजक ५२४८४ से भाग दिया तो लब्ध ४० घटी १ पल 'वर्त्तमान शूल योग का भोग्य' हुआ। इसमें भुक्तको युक्त कियातो ५४ घटी ५३ पल 'शूल योग का सर्व भोग्य' हुआ।

प्रसङ्ग वशसे पञ्चाङ्ग द्वारा तिथ्यादियों के भुक्त भोग्य साधन की रीतिः—

वेतोडुघट्यो वियदङ्गशुद्धा द्विष्ठाः क्रमादिष्टघटीसमेताः।
इष्टर्क्षनाडीसहिता भयातसर्वर्क्षघट्योऽथ यदीष्टघस्रे ॥ २८ ॥

अस्तीतभं यत्र गतोडुहीनमिष्टं भवेद् भुक्तमदोऽभ्रपड्भिः।
निघ्नं समस्तर्क्षहृतं स्फुटेतं षष्ठेर्विहीनं स्फुटमेतदेष्यम् ॥ २९ ॥

पञ्चाङ्गस्थ गतनक्षत्र (तिथि वा योग) की घटी को ६०।० में शोधन करके दो स्थान में स्थापित करे। एक स्थान में इष्ट घटी पल को युक्त करे और द्वितीय स्थान में इष्ट नक्षत्र (तिथि वा योग) की घटी पल को युक्त करे तब क्रमसे भुक्त और सर्व भोग्य घटी पल होते हैं। जहां इष्टदिन में गतनक्षत्र (तिथि वा योग) हो। अर्थात् गत-नक्षत्र की समाप्ति हुई हो वहां गतनक्षत्र (तिथि वा योग) की घटी तथा पल को इष्ट घटी पलमें हीन करे तब भुक्त होता है। किन्तु सर्वभोग्य को पूर्वोक्त प्रकारसेही साधना चाहिए। नक्षत्र भुक्त के पलको ६० से गुणकर नक्षत्र के सर्वभोग्य पलसे भाग दे लब्ध घट्यादि स्पष्ट भुक्त होता है। उसको ६०।० में हीन करे तब नक्षत्र का घट्यादि स्पष्ट भोग्य होता है।

—: उदाहरण :—

संवत् १९९७ वैशाख ११ प्रविष्ट भौमवार इष्टघटी १० पल ३० में नक्षत्र के भुक्तादि का साधन करते हैं यहां इष्टदिन मे गतनक्षत्र स्वाती है। उसकी घटी ५७ पल २ को ६० घटी ० पल में हीन कियातो २।५८ शेष बचे। इनको दो स्थान में स्थापित किया। तदनन्तर एकस्थान में स्थापित घट्यादि २।५८ में इष्टघटी १० पल ३० को युक्त कियातो १३ घटी २८ पल 'वर्त्तमान विशाखा नक्षत्र का भुक्त' हुआ। द्वितीय स्थान में स्थित घट्यादि २।५८ में वर्त्तमान विशाखा नक्षत्र की घटी ५४ पल २५ को युक्त कियातो ५७ घटी २३ पल 'वर्त्तमान विशाखा नक्षत्र का सर्व भोग्य' हुआ। भुक्त घटी १३ को ६० से गुणातो ७८० हुए। इनमें २८ पल को युक्त कियातो ८०८ पल हुए। इनको ६० से गुणातो ४८४८० 'भाज्य' हुआ। सर्व भोग्य घटी ५७ को ६० से गुणातो ३४२० हुए। इनमें २३ पलको युक्त कियातो ३४४३ 'भाजक' हुआ। भाज्य ४८४८० में भाजक ३४४३ से भाग दियातो लब्ध १४ घटी ५ पल स्पष्ट भुक्त हुआ। इसको ६० घटी ० पल में हीन कियातो ४५ घटी ५५ पल 'वर्त्तमान विशाखा नक्षत्र का स्पष्ट भोग्य' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

करण साधन रीति

यातातिथिर्हता द्वाभ्यां शेषिता तुरगैर्ववात् ।
करणं प्राग्दले तिथ्याः सैकं तच्चापरार्द्धके ॥ ३० ॥

शुक्लप्रतिपदादि गततिथि की संख्या को २ से गुणकर ७ से तष्टकरे शेष तुल्य बव से तिथि के पूर्वार्द्ध का 'करण' होता है। पूर्वार्द्ध के करण की संख्या में १ को युक्तकरे तब तिथि के परार्द्ध का 'करण' होता है।

—: उदाहरण :—

गततिथि शुक्ल द्वादशी की संख्या १२ को २ से गुणातो २४ हुए। इनको ७ से तष्ट कियातो ३ शेषबचे। शेष ३ के तुल्य बव से त्रयोदशीको के पूर्वार्द्ध में कौलव करण' हुआ। इसमें १ को युक्त कियातो ४ हुए। इनके तुल्य बव से त्रयोदशी के उत्तरार्द्ध में 'तैतिल करण' हुआ।

भूतोत्तरार्द्धे शकुनिस्त्वमायाश्चतुष्पदः पूर्वदलेऽपरार्द्धे ।
नागो बलक्षप्रथमाद्यभागे किंस्तुघ्ननामा स्थिरसञ्ज्ञितानि ॥ ३१ ॥

कृष्ण चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुनि, अमावास्या के पूर्वार्द्ध में चतुष्पद और उस के उत्तरार्द्ध में 'नागकरण' होता है। एवं शुक्ल प्रतिपद के पूर्वार्द्ध में किंस्तुघ्नकरण' होता है। ये चार स्थित करण हैं।

'शुक्लपक्षस्य पूर्वदले करणानि'।

तिथयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
करणानि	किंस्तुघ्नः	बालवः	तैतिलः	वणिजः	बवः	कौलवः	गरः	विष्टिः	बालवः	तैतिलः	वणिजः	बवः	कौलव	गरः	विष्टिः

'शुक्लपक्षस्य परदले करणानि'।

तिथयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
करणानि	बवः	कौलवः	गरः	विष्टिः	बालवः	तैतिलः	वणिजः	बवः	कौलवः	गरः	विष्टिः	बालवः	तैतिलः	वणिजः	बवः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'कृष्णपक्षस्य तिथीनां पूर्वदले करणानि'।

तिथयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
करणानि	बालवः	तैतिलः	वणिजः	बवः	कौलवः	गरः	विष्टिः	बालवः	तैतिलः	वणिजः	बवः	कौलवः	गरः	विष्टिः	चतुष्पदः

'कृष्णपक्षस्य तिथीनां परदले करणानि'।

तिथयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
करणानि	कौलवः	गरः	विष्टिः	बालवः	तैतिलः	वणिजः	बवः	कौलवः	गरः	विष्टिः	बालवः	तैतिलः	वणिजः	शकुनिः	नागः

भद्रा–स्पष्टीकरण–रीति—

राकाष्टम्योः प्राग्दले शुक्लपक्षे ऽन्त्ये ऽर्द्धे भद्रैकादशीभास्यातिथ्योः।
कृष्णे गौर्य्या अन्तकस्यान्त्यभागे तिथ्योर्भास्वद्भूततिथ्योर्दले प्राक्॥ ३२॥

शुक्लपक्ष की पौर्णमासी तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में 'भद्रा' और शुक्लपक्ष की एकादशी तथा चतुर्थी के उत्तरार्द्ध में 'भद्रा' होती है। एवं कृष्णपक्ष की तृतीया तथा दशमी के उत्तरार्द्ध में 'भद्रा' और कृष्णपक्ष की सप्तमी तथा चतुर्दशी के पूर्वा 'में भद्रा' होती है।

'शुक्लपक्षे भद्रातिथिबोधकचक्रम्'।

तिथयः	चतुर्थ्याम्	अष्टम्याम्	एकादश्याम्	पौर्णमास्याम्
दलानि	परार्द्धे	पूर्वार्द्धे	परार्द्धे	पूर्वार्द्धे

'कृष्णपक्षे भद्रातिथिबोधकचक्रम्'।

तिथयः	तृतीयायाम्	सप्तम्याम्	दशम्याम्	चतुर्दश्याम्
दलानि	परार्द्धे	पूर्वार्द्धे	परार्द्धे	पूर्वार्द्धे

विशेषद्रष्टव्यः—

शुक्ल वा कृष्णपक्ष की जिस तिथि की भद्राका साधन करना हो उसकी पूर्ववर्त्तिनी (गत) तिथि की घटी और पल को ६० घटी० पल में शोधनकरे तब जो शेष बचे उसमें भद्रावाली तिथि की घटी तथा पलको युक्त करे तब भद्रावाली तिथि का सर्वभोग्य होता है। तदनन्तर उस सर्वभोग्य में २ से भाग दे लब्ध 'तिथ्यर्द्ध' होत

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

है। गततिथि की घटी और पलमें तिथ्यर्द्ध को युक्त करे तब पूर्वदल सम्बन्धिनी भद्राका यावत् (समाप्तिकाल) और परदल सम्बन्धिनी भद्राका उपरान्त (आरम्भकाल) होता है। एवं गततिथि की पञ्चाङ्गस्थ घटी तथा पल पूर्वदल सम्बन्धिनी भद्राका उपरान्त (आरम्भकाल) होता है। भद्रा सम्बन्धिनी तिथि की पञ्चाङ्गस्थ घटी तथा पल परदल सम्बन्धिनी भद्राका यावत् (समाप्तिकाल) होता। है

—: उदाहरण :—

वैशाख कृष्णपक्ष की तृतीया की भद्रा का आरम्भकाल (उपरान्त) तथा समाप्तिकाल (यावत्) साधन करना है अतः कृष्णपक्ष की गततिथि द्वितीयाकी ० घटी ३९ पल को तृतीया की ५६ घटी ५९ पलमें हीन कियातो शेष ५६ घटी २० पल तृतीया का सर्वभोग्य हुआ। इसमें २ से भाग दिया तो २८ घटी १० पल 'तिथ्यर्द्ध' हुआ। इसको गततिथि द्वितीया की ० घटी ३९ पल में युक्त कियातो २८ घटी ४९ पल परदल सम्बन्धिनी भद्रा होने के कारण उक्त घटी पल में भद्रा का आरम्भ (उपरान्त) हुआ और भद्रा सम्बन्धिनी तृतीया तिथि की पञ्चाङ्गस्थ ५६ घटी ५९ पल भद्रा का समाप्तिकाल (यावत) हुआ।

वैशाख शुक्लाष्टमी की भद्रा का साधन करना है इसलिए गततिथि सप्तमी की १६ घटी ५४ पलको ६० घटी ० पल में हीन कियातो ४३।६ शेषबचे। इनमें भद्रावाली तिथि अष्टमी की ११ घटी ३६ पल को युक्त किया तो ५४ घटी ४२ पल अष्टमी का सर्वभोग्य हुआ। इसमें २ से भाग दिया तो लब्ध २७ घटी २१ पल तिथ्यर्द्ध हुआ। इसको गततिथि सप्तमी की १६ घटी ५४ पल में युक्त किया तो ४४ घटी १५ पल पूर्वदल सम्बन्धिनी भद्रा होने के कारण उक्त घटी पल में भद्राका अवसान (समाप्ति वा यावत्) हुआ और भद्रा सम्बन्धिनी अष्टमी तिथि की पञ्चाङ्गस्थ १६ घटी ५४ पल भद्रा का आरम्भकाल (उपरान्त) हुआ।

पञ्चाङ्ग–परिवर्त्तन–परिज्ञान—

तिथ्यादिकानां घटिकादिकं निजरेखान्तराख्येन चरान्तरेण च।
तथा विलोमोदयकान्तरेण च संस्कारितं साक्षपलं स्वदेशजम् ॥ ३३ ॥

जिस रेखांश (स्थान) का पञ्चाङ्ग बना हुआ हो उसके रेखांश तथा अक्षांशोंको अक्षांशादि सारणी से लेकर एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर इष्टदिन के पञ्चाङ्गस्थ तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान के घटयादि को एकान्त में स्थापित करके उसको रेखान्तर, चरान्तर, व्यस्तोदयान्तर से संस्कारित करके जो घटी तथा पल मिलें उनमें किरणवक्रीभवन के ५ पल को युक्त करे तब तिथ्यादि के स्वदेशीय घटयादि होते हैं।

पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन के स्पष्ट नियम—

जिस स्थानके पञ्चाङ्गस्थ तिथ्यादिको अपने स्थान के तिथ्यादि में परिवर्त्तन करना हो उस पञ्चाङ्ग के स्थान के अक्षांश और जिसदिन के पञ्चाङ्ग का परिवर्त्तन करना हो उस दिनके स्पष्टसूर्य की क्रान्ति का साधन करके एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर इष्टस्थान के अक्षांश और इष्टदिन के रविक्रान्त्यंश कोष्ठक के समान समसूत्र के चरपल को ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरणोक्त विधि से स्पष्टचरपल को साधे। एवं पञ्चाङ्गस्थान के अक्षांश और इष्ट दिनक रविक्रान्त्यंशोंसे पञ्चाङ्गस्थान के चरपलोंका साधन करे। तदनन्तर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पञ्चाङ्गस्थान के चर पलोंका और इष्टस्थान के चर पलोंका अन्तर करे तब वह 'चरान्तर' होता है। यदि इष्टदिन की सूर्य क्रान्ति उत्तर हो और पञ्चाङ्गस्थान के अक्षांशोंसे अपने नगर के अक्षांश अधिक हों तो 'चरान्तर पलधन' और पञ्चाङ्गस्थान के अक्षांशों से अपने नगर के अक्षांश न्यून (अल्प) होतो 'चरान्तरपल' ऋण, होते हैं। एवं इष्टदिन की सूर्य क्रान्ति दक्षिण हो और पञ्चाङ्गस्थान के अक्षांशोंसे अपने नगर के अक्षांश अधिक होंतो 'चरान्तर पल ऋण' और पञ्चाङ्ग स्थानके अक्षांशोंसे अपने नगर के अक्षांश न्यून हों तो 'चरान्तरपलधन' होते हैं।

चरान्तरपल संस्कार नियम—

इष्टदिन के पञ्चाङ्गस्थ तिथि, नक्षत्र, योग और करण के घट्यादि में चरान्तरपलधन हों तो युक्तकरे और ऋण हों तो हीनकरे तब चरान्तर पल संस्कृत तिथ्यादि के घट्यादि होते हैं।

पूर्वागत चरान्तर पलको २ से गुणकर इष्टदिन के पञ्चाङ्गस्थ दिनमानके पलों में चरपल धन हों तो युक्त और ऋण हों तो हीनकरे तब अपने नगर का घट्यादि दिनमान होता है।

देशान्तर संस्कार नियम—

पञ्चाङ्गस्थान के देशान्तर पलोंका और अपने नगर के देशान्तर पलोंका अन्तर करे। यदि पञ्चाङ्गस्थान के रेखांशोंसे अपने नगर के रेखांश अधिक हों तो 'देशान्तर पलधन' और पञ्चाङ्ग स्थान के रेखांशों से अपने नगर के रेखांश न्यून हों तो 'देशान्तरपल ऋण' होते हैं।

पूर्वागत चरान्तरपल संस्कृत तिथ्यादि के घट्यादि में देशान्तर पलधन हो तो युक्त और ऋण हों तो हीनकरे तब अपने नगर के तिथ्यादि के समाप्तिकालके मध्यम घट्यादि होते हैं।

तिथ्यादीयों के घट्यादियों को स्पष्ट करने का नियम—

इष्ट दिन के साधन सूर्य से ग्रहादिस्पष्टीकरणप्रकरण में लिखित वेलान्तर (उदयान्तर) सारणी द्वारा वेलान्तर पलों को साधकर यदि वेलान्तर पल धन हों तो तिथ्यादि के पूर्वागतमध्यम घट्यादि में ऋण करे और वेलान्तर पल ऋण हों तो धन करे तब जो तिथ्यादि के घट्यादि हों उन में ५ पलको युक्त करे तब अपने नगर के तिथ्यादि के समाप्ति काल के स्पष्ट घट्यादि होते हैं।

—: उदाहरण :—

काशी के ज्ञानमण्डल सौरपञ्चाङ्ग संवत् १९९६ आषाढ शुक्लप्रतिपदा गुरुवार के दिन के तिथ्यादि के घट्यादि को गढवाल के तिथ्यादि के घट्यादि में परिवर्त्तन करना है अतः ग्रहादिस्पष्टीकरण प्रकरणोक्त विधि द्वारा इष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य से क्रान्तिका साधन किया तो २३°।२४' सूर्य की अंशादि उत्तर क्रान्ति, हुई। ३०°।१५ गढवाल के अक्षांश हैं और २३°।२४' इष्ट दिन के सूर्य क्रांत्यंश हैं। इन से ग्रहादिस्पष्टीकरण प्रकरणोक्त रीति द्वारा चरसारणी से चरपल साधन किये तो गढवाल के १४५ चरपल हुए। एवं काशी के अक्षांश २५°।२०' और इष्ट दिन के सूर्य क्रांत्यंश २३°।२४' से चरपल साधन किया तो ११८ चरपल हुए। गढवाल के चरपल १४५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

और काशी के चरपल ११८ का अन्तर किया तो २७ पल इष्ट दिन का चरान्तर हुआ। यहां इष्ट दिन में सूर्य क्रान्ति उत्तर है और पञ्चाङ्गस्थान काशी के अक्षांश २५°।२० से इष्टस्थान गढवाल के अक्षांश ३०°।१५' अधिक हैं अतः चरान्तर पल २७ धन हुए।

+ ३७।२० पलादि इष्टस्थान गढवाल का देशान्तर है। + ७२।४० पलादि पञ्चाङ्गस्थान काशी का देशान्तर है। इन दोनोंका अन्तर किया तो ३५।२० देशान्तर पलादि हुए। पञ्चाङ्गस्थान काशी के रेखांश ८३°।२' से इष्ट स्थान गढवाल के रेखांश ७९°।३० न्यून हैं अतः पलादि देशान्तर ३५।२० ऋण हुआ। चरान्तरपल + २७ रेखान्तर पल—३५ किरणवक्रीभवनपल + ५ हैं। यहां दोनों धनपलोंका योग किया तो ३२ पल हुए। इन का और ऋण पल ३५ का अन्तर किया तो—३ पल शेष बचे। इस दिन के वेलान्तर + १ पल को विपरीत * धन ऋण किया तो—१ पल वेलान्तर हुआ। इस को पूर्वागत—३ पल में ऋण होने के कारण युक्त किया तो—४ संस्कार पल हुए।

न्यासः—

	प्रतिपदा तिथिः			आर्द्रा नक्षत्रम्			गण्डयोगः		
	वा.	घ.	प.	वा.	घ.	प.	वा.	घ.	प.
काशीसूर्योदयकालीनाः....	१	३०	१२	१	५०	३२	१	९	३२
संस्कारः—४ पलानिः....	०	०	४	—०	०	४	—०	०	४
गढवाले सूर्योदयात्....	१	३०	८	१	५०	२८	१	९	२८

	घ.	प.
ज्ञानमण्डलरपञ्चाङ्गे आषाढशुक्लप्रतिपदि दिनमानम्	३३	५६
द्विगुणितचरान्तरम् +	०	५४
द्विगुणितकि. व प +	०	१०
इष्टदिने गढवाले दिनमानम्..	३५,	०

भौमादियों की राशि, नक्षत्र तथा नक्षत्रपादप्रवेश रीतिः—

नभोगताराध्रुवकान्तरं यत्कलादिकार्य्यं खगभुक्तिभक्तम्।
फलैर्दिनैर्गम्यगतैः खगेऽल्पाऽधिके युतिर्वक्रिणि सा विलोमा ॥ ३४ ॥

अवधिस्थ स्पष्टग्रह और राशि, नक्षत्र तथा नक्षत्रपादके राश्यादि ध्रुवका जो राश्यादि अन्तर हो उसके कलादि पिण्ड को ६० से गुणकर अवधिस्थ स्पष्ट ग्रह की गति की विकला से भाग दें लब्ध 'दिनादि' होते हैं। राशि, नक्षत्र तथा नक्षत्रपाद के राश्यादि ध्रुव से स्पष्ट ग्रह के राश्यादि अल्प हों तो ग्रह और राशि नक्षत्र वा

* अत्र विधिः सङ्कलनादिप्रकरणे प्रागेवोक्तः 'ग्रन्थान्तरेऽपि'—'योगे युतिः स्यात्क्षय ः स्वयोर्वा धनर्णयोरन्तरमेवयोग' इत्यत्र द्वयोर्धनयोर्योगोधनम्। द्वयोर्ऋणयोर्योग ऋणम्। धनर्णयोरन्तरमेव योगः, धनेऽधिकेऽन्तरं धनम्, ऋणेऽधिके न्तरमृणं ज्ञेयमिति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नक्षत्र पाद की युति 'गम्य' होती है। यदि राश्यादियों के ध्रुव से स्पष्ट ग्रह के राश्यादि अधिक हों तो ग्रह राश्यादि की युति 'गत' होती है। यदि 'ग्रह' वक्री हो तो ग्रह राश्यादि की युति विपरीत होती है अर्थात् राश्यादियों के ध्रुव से स्पष्ट ग्रह के राश्यादि अल्प हों तो 'गत युति' और अधिक हों तो 'गम्ययुति' होती है। यदि 'ग्रह' राश्यादियों की 'युति' 'गम्य' होतो इष्ट अवधि के प्रविष्टादि में लब्ध दिनादि को युक्त करे और 'गत' 'युति' होतो अवधिके प्रविष्टादि में लब्ध दिनादि को हीन करे तब ग्रह और राश्यादियों का स्पष्ट युति समय होता है।

—: उदाहरण :—

वैशाख १५ प्रविष्ट की अवधि है अतः अवधिस्थ भौम ०।७।२।१० का और नक्षत्र ध्रुव ०।६।४०।० का अन्तर किया तो ०।०।२२।१० राश्यादि अन्तर हुआ। इसकी कला २२।१० को ६० से गुणा तो १३३० 'भाज्य' हुआ। अवधिस्थ भौमगति २५'।१०' को ६० से गुणातो १५१० 'भाजक' हुआ। भाज्य १३३० में भाजक १५१० से भाग दिया तो लब्ध ०।५२।५१ युति दिनादि हुए। यहां नक्षत्र ध्रुव से स्पष्ट ग्रह अधिक है इस लिए 'गतयुति' हुई। अवधि के दिनादि १५।०।० में गतयुति होने के कारण युति दिनादि को हीन किया तो शेष १४।७।९ प्रविष्टादि ग्रहनक्षत्र युति समय हुआ। यहां अवधिस्थ भौम आश्विनी नक्षत्र के तृतीय पादमें है अतः वैशाख १४ प्रविष्ट ७ घटी ९ पलमें मङ्गलने अश्विनी नक्षत्र के तृतीय पाद में प्रवेश किया। एवं अन्य ग्रहों के राशि-नक्षत्र-पाद-प्रवेश को साधे।

वक्री ग्रह की राश्यादि युतिका उदाहरण —

वैशाख ८ प्रविष्ट की अवधि है अतः अवधिस्थ राहु ५।२६।४३।२ का और चित्रा के प्रथम पादके राश्यादि ध्रुव ५।२६।४०।० का अन्तर किया तो ०।०।३।२ राश्यादि अन्तर हुआ। इसकी कला ३१२ को ६० से गुणातो १८२ 'भाज्य' हुआ। अवधिस्थ राहु गति ३'।११" को ६० से गुणातो १९१ 'भाजक' हुआ। भाज्य १८२ में भाजक १९१ से भाग दिया तो लब्ध ०।५७।१० युति दिनादि हुए। यहां नक्षत्र ध्रुव से अवधिस्थ राहु अधिक है और यह वक्री है अतः 'गम्य युति' हुई। अवधि के दिनादि ८।०।० में गम्ययुति होने के कारण लब्ध दिनादि ०।५७।१० को युक्त किया तो ८।५७।१० प्रविष्टादि ग्रहनक्षत्र युति समय हुआ यहां अवधिस्थ राहु चित्रा के प्रथम पाद में है अतः वैशाख ८ प्रविष्ट ५७ घटी १० पलमें राहुने चित्राके प्रथम पाद में प्रवेश किया। एवं अन्य वक्री ग्रहों के राशि-नक्षत्र-पाद-प्रवेश को साधे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'नक्षत्राणां राश्यादिध्रुवकाः'

पादाः	नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुनर्व.	पुष्यः	आश्ले.	मघा.	पू. फा.	उ. फा.	हस्तः	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूले	पू. षा.	उ. षा.	श्रवण.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमपादः	रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११
	अं.	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६
	क.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
द्वितीयपादः	रा.	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११
	अं.	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०
	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
तृतीयपादः	रा.	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
	अं.	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३
	क.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चतुर्थपादः	रा.	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११
	अं.	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६
	क.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

'वक्रिणि ग्रहे नक्षत्राणां राश्यादिध्रुवकाः'

पादाः	नक्षत्राणि	अश्वि.	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुनर्व.	पुष्यः	आश्ले.	मघा.	पू. फा.	उ. फा.	हस्त.	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल.	पू. षा.	उ. षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
चतुर्थपादः	रा.	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११
	अं.	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
तृतीयपादः	रा.	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११
	अं.	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६
	क.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
द्वितीयपादः	रा.	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
	अं.	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३
	क.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रथमपादः	रा.	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११
	अं.	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०
	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

' रविनक्षत्रक्षेपकाणि महानक्षत्रसंज्ञितानि तिथ्यादिकानि '

नक्ष.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा.	पुनर्व.	पुष्य.	आश्ले.	मघा.	पू.फा.	उ.फा.	हस्त.	चित्रा.	स्वाती.	विशा.	अनुरा.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	श्रवि.	शत.भि.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती.
तिथ्य.	०	१४	२८	१२	२६	१०	२५	९	२३	७	२१	५	१९	३	१७	०	१४	२७	१०	२३	७	०	२०	३	१६	०	१४	२७
वा.प्र.प.	०	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	४	३	३	२	१	०	६	२	५	४	३	२	२	१
	०	४१	३०	२४	२३	२४	२९	३२	३२	३०	१९	५४	४३	११	३५	५३	५	१२	१७	२१	१९	९	२६	३०	४०	४९	१३	४२
	०	३४	२४	३५	३६	३७	३८	३९	४	५	४१	४२	४३	४३	४१	४६	४७	४८	११	४२	५०	२७	३०	५०	४२	५१	५१	५२

स्थूल रीति से सूर्य के नक्षत्र प्रवेश का उदाहरण :—

चैत्र शुक्ल पञ्चमी शुक्रवार ५८ घटी १४ पल में सूर्यकी मेषसंक्रान्ति अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश हुआ। इसमें भरणी नक्षत्र का क्षेपक १४ तिथि, ६ वार, ४१ घटी, ३४ पल को युक्त कियाती वैशाख कृष्ण पञ्चमी, शुक्रवार, ३९ घटी, ४८ पल में सूर्य का भरणी नक्षत्र में प्रवेश हुआ। मेषसंक्रान्ति प्रवेश की तिथि ५, वार ६, घटी ५८, पल १४ में कृत्तिका क्षेपक २८ तिथि, ६ वार, ३० घटी, ३४ पल को युक्त कियाती वैशाख शुक्ल तृतीया, शुक्रवार, २८ घटी, ३८ पल में सूर्यका कृत्तिका नक्षत्र में प्रवेश हुआ। एवं शेष नक्षत्रों में सूर्य प्रवेश समय को साधे। किन्तु यह प्रकार स्थूल है अतः पूर्वोक्तविधि से सूर्य नक्षत्र प्रवेश समय को साधना चाहिए।

भौमादियों की शीघ्रकेन्द्रगति परिज्ञानः —

भौमस्य भानि यमलश्रुतयः कलाद्या
केन्द्रस्य भुक्तिररिनागकवोऽब्धियुग्माः।
चान्द्रेर्गुरोर्युगशराः फणिनोऽद्रिरामाः
शून्यं भृगो रविसुतस्य नगेषवोऽष्टौ ॥ ३५ ॥

२७'। ४२" मङ्गलकी, १८६'। २४" बुधकी, ५४'। ८" गुरुकी, ३७'। ०" शुक्रकी और ५७'। ८' शनि की कलादि शीघ्रकेन्द्रगति है।

भौमादि पञ्चताराओंके वक्रास्तादि के गतगम्यदिनादि साधन रीति—

वक्रादिकानां कथिता लवा ये तेभ्योऽधिकाल्या यदि केन्द्रभागाः।
केन्द्रेतिभक्ताः कलिकाश्च तेषां वक्राद्यमाप्तद्युमुखैर्गतैष्यम् ॥ ३६ ॥

ग्रहादि स्पष्टीकरण प्रकरणोक्त वक्रादियों के अंशोंका और उनके आसन्नवर्ती इष्टशीघ्रकेन्द्रांशों का अन्तरकरे। तदनन्तर अन्तर की कलाओंको ६० से गुणकर शीघ्रकेन्द्रगति की विकला से भाग दे लब्ध दिनादि होते हैं। वक्रादियोंके उक्तांशोंसे आसन्नवर्ती इष्टशीघ्रकेन्द्रांश अधिक हों तो ' गतदिनादि ' और अल्प हो तो ' गम्यदिनादि ' होते हैं। अवधि के दिनादियों में गतदिनादि को हीन और गम्य दिनादिको युक्त करे तब वक्रगत्यादिका प्रविष्टादि समय होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कल्पित उदाहरण—

वैशाख ८ प्रविष्ट में २६।२०'।५०" भौमका अंशादि शीघ्रकेन्द्र है। २८°।०'।०" भौमके पश्चिमास्तांश हैं इनदोनों का अन्तर कियातो १।३९।१० शेष बचे। इनके कलादि ९९।१० को ६० से गुणातो ५९५० 'भाज्य' हुआ। भौमकेन्द्रगति २७।४२ को ६० से गुणातो १६६२ 'भाजक' हुआ। भाज्य ५९५० में भाजक १६६२ से भाग दियातो लब्ध ३।३४।४८ दिनादिहुए केन्द्रांशों से अस्तांश अधिक हैं अतः गम्य दिनादि हुए। अवधि के दिनादि ८।०।० में गम्य होने के कारण लब्ध ३।३४।४८ दिनादि को युक्त कियातो ११।३४।४८ भौमास्त के प्रविष्टादि हुए अर्थात् वैशाख ११ प्रविष्ट, ३४ घटी, ४८ पल में 'भौम' पश्चिम दिशा में 'अस्त' हुआ।

प्रकारान्तर से भौमादियों के वक्रास्तादि के गतगम्य दिनादि साधन रीति—

वक्रादिकोक्तलवतो यदि केन्द्रभागाः
पुष्टाल्पका यमहतास्त्रिहृताः सगोंऽशाः।
बाणघ्नलोकविहृताः कुहृता गतैष्यं
वाऽऽरात्क्रमात्कुटिलपूर्वकमाप्तघस्रैः॥ ३७॥

अथवा भौमादियों के उक्त वक्रांशोंका और उक्तांशों के आसन्नवर्ती शीघ्रकेन्द्रांशों के अन्तर में क्रमसे मङ्गलके शेषअंशादि को २ से, बुध के ३ से भागदे, गुरु के अंशादि को दो स्थान में रखकर एक स्थान में ९ से भाग दे लब्ध को द्वितीय स्थान में युक्तकरे। शुक्र के शेष अंशादि को ५ से गुणकर ३ से भाग दे एवं शनि के शेष अंशादि में १ से भाग दे लब्ध वक्रादियों के गत गम्य दिनादि होते हैं। वक्रादियोंके पूर्वोक्त अंशोंसे आसन्न शीघ्रकेन्द्रांश अधिक हों तो गत और अल्प हों तो गम्य दिनादि होते हैं। अवधि के दिनादियों में गतदिनादियोंको हीन और गम्य दिनादियों को युक्तकरे तब वक्रगत्यादियों का प्रविष्टादि आरम्भ समय होता है।

कल्पित उदाहरण—

वैशाख ८ प्रविष्ट में १।२१।१५।३० बुधका राश्यादि शीघ्रकेन्द्र है। इसके अंशादि किये तो ५१।१५। ३० हुए। ५०।०।० बुधके पश्चिमोदयांश हैं। इनदोनों का अन्तर कियातो १।१५।३० शेष अंशादि बचे। इनमें ३ से भाग दियातो लब्ध ०।२५।१० दिनादि हुए। यहां बुध के पश्चिमोदयांश ५० से अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रांश अधिक हैं अतः लब्ध ०।२५।१० गतदिनादि हुए। इस अवधि के दिनादि ८।०।० में गत होने के कारण लब्ध गतदिनादि को हीन कियातो शेष ६।३४।५० प्रविष्टादि बचे अर्थात् वैशाख ६ प्रविष्ट, ३४ घटी, ५० पल में बुध का पश्चिम दिशा में उदय हुआ। एवं शेष ग्रहोंके उदयादि के प्रविष्टादि समय को साधे।

भौमादियोंके उदयादियों के स्थूल दिनों का परिज्ञान—

पूर्वास्ततो ज्ञस्य रदैः रदैः पुरैर्भूपैः पुरैर्दन्तमितैर्दिनैः परे।
स्यादुद्गमो वक्रगतिः परेऽस्तकं पूर्वोद्गमो मार्गगतिर्हरेर्दिशि॥ ३८॥
अस्तः क्रमात्तत्परतत्परं भृगोर्जनेर्द्विमास्या प्रभवेद् भुजङ्गमैः।
मासैस्तथा व्यंघ्रिभुवांघ्रिणा क्रमाद्विपादचन्द्रेण मतङ्गजैस्तथा॥ ३९॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अस्तात्कुजस्योदयवक्रमार्गमौढ्यं समुद्रैर्गगनेन्दुतुल्यैः ।
क्रमेण मासैर्यमलोन्मिताभ्यां दिग्भिर्बलारातिगुरोस्तथोर्व्या ॥ ४० ॥

मासैः सपादाब्धिमितैः समुद्रैः सपादवेदैरथ भानुजस्य ।
मासेन सांघ्रीन्दुमितेन सार्द्धैर्मासैः कृशानूदधिवीतिहोत्रैः ॥ ४१ ॥

उक्त श्लोकोंका अर्थ निम्नलिखित चक्रमें समझना चाहिए ।

'भौमेज्यनीनामुदयादि दिनमासबोधकचक्रम्' ।					'बुधशुक्रयोरुदयादीनां दिनमासबोधकचक्रम्' ।						
उदया-	पूर्वोदयः	वक्रम्	मार्गः	पश्चिमास्तः	उदया.	प. उ.	व.	प. अ.	पू. उ.	मार्गः	पू. अ.
भौमस्यः	४ मासाः	१० मासाः	२ मासाः	१० मासाः	बुधस्य	३२दि.	३२दि.	३ दि.	१६दिना.	३ दि.	३२दि.
गुरोः	१ मासः	४$\frac{1}{2}$ मासाः	४ मासाः	४$\frac{1}{2}$ मासाः	शुक्रस्य	२मासौ	८मासाः	$\frac{3}{2}$मासः	$\frac{9}{2}$मासः	$\frac{3}{2}$मासः	८मासाः
शनेः	१$\frac{1}{2}$ मासः	३$\frac{1}{2}$ मासाः	४$\frac{1}{2}$ मासाः	३$\frac{1}{2}$ मासाः							

अगस्त्योदयास्त साधन रीतिः--

आद्यं फलं भागमुखं त्रिहीनाऽक्षभाद्रिनिघ्नाऽथ पलप्रभायाः ।
वर्गस्य नाराचलवो द्वितीयं फलं सुरांशास्त्रितयं फलं च ॥ ४२ ॥

योगस्त्रयाणां कथिताः फलानां क्षेत्रांशकास्तद्रहितान्वितेषु ।
द्विसप्तभागेषु भगागमेऽस्तः स्याद्दर्शनं कुम्भजनेः क्रमेण ॥ ४३ ॥

इष्ट स्थान की अङ्गुलादि पलभामें ३ अङ्गुलको हीन करे तब जो शेष बचे उसको ७ से गुणकर 'अंशादि-प्रथमफल' होता है । पलभा के वर्ग का पञ्चमांश 'द्वितीय फल' होता है । एवं ३३ अंश 'तृतीयफल' होता है । उक्त रीति से आये हुए तीनों फलों का योग करे तब वे 'क्षेत्रांश' होते हैं । उक्त क्षेत्रांशों को ७२ अंश में हीन करे तब जो शेष बचे उसके तुल्य सूर्य होनेपर अगस्त्यका लोप (अस्त) होता है । एवं उक्त क्षेत्रांशोंको ७२ अंश में युक्त करने से जो अंशादि हों उसके तुल्य सूर्य होनेपर अगस्त्य का उदय (दर्शन) होता है ।

गढवाल की अङ्गुलादि पलभा ७।० में ३ अङ्गुल को हीन किया तो ४।० शेष बचे इन को ७ से गुणा तो २८।० 'अंशादि प्रथम फल' हुआ । ७।०अङ्गुलादि पलभा का ४९।० वर्ग हुआ ।इस में ५ से भाग दिया तो लब्ध ९।४८ 'अंशादि द्वितीय फल' हुआ । एवं ३३ 'अंश तृतीय फल' हुआ । इन तीनों फलों का योग किया तो ७०।४८ 'क्षेत्रांश' हुए । इन को ७२ अंश में हीन किया तो १°।१२' अंशादि सूर्य होनेपर अगस्त्य का लोप (अस्त) होगा । एवं ७२ अंश में ७०।४८ क्षेत्रांशों को युक्त किया तो १४२°।४८' अंशादि सूर्य होनेपर अगस्त्य का दर्शन (उदय) होगा । अगस्त्यास्तसमय के सूर्य के अंशादि १।१२।० और आसन्नवर्ती अवधिस्थ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्य के अंशादि ०।१।४ का अन्तर किया तो १।१०।५६ शेष बचे इसके कलादि ७०।५६ में अवधिस्थ सूर्य गति ५८।४४ से भाग दिया तो लब्ध १।१२।२८ दिनादि हुए। अगस्त्यास्त कालीन सूर्य के अंशादि से अवधिस्थ सूर्य के अंशादि अल्प हैं अतः लब्ध १।१२।२८ गम्य दिनादि हुए। अवधिके प्रविष्टादि १।०।० में गम्य दिनादि १।१२।२८ को युक्त किया तो वैशाख २ प्रविष्ट,-१२ घटी, २८ पल में अगस्त्य--अस्त हुआ। एवं उदयसमय को साधे।

प्रकारान्तर से अगस्त्यास्तोदयसाधन रीतिः—

स्वीयदिग्लवयुताक्षभयोना घस्रतुल्यघटिका गुणरामैः।
संयुता विरहिता घटजस्य स्तोऽवधी तु तदितं कुरु लग्ने ॥ ४५ ॥
भास्करक्रियभसङ्क्रमयस्रेऽन्यद् घटाह्वयजनेर्दिननाथः।
उद्गमे त्विह भवेदथ लोपे षड्दिनांशकमितादिमसञ्ज्ञम् ॥ ४६ ॥

पलभाको दो स्थान में रखकर एकस्थान में १० से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को द्वितीय स्थान में युक्त करे तब जो संख्या हो उस को १५ घटियों में हीन कर के दो स्थान में स्थापित करे। तदनन्तर एकस्थान की संख्या को ३३ घटी में युक्त करे तब अगस्त्यास्त समय का घट्यादि इष्ट काल होता है। एवं द्वितीय स्थान में स्थित संख्या को ३३ घटी में हीन करे तब अगस्त्योदय समय का घट्यादि इष्ट काल होता है। अगस्त्यास्त कालीन इष्ट काल से और सायन मेषारम्भ कालीन सूर्य ०।०।०।० से लग्नानयन विधि द्वारा लग्नसाधकर उस में १५६ अंश अर्थात् ५ राशि ६ अंश को युक्त करे तब अगस्त्यास्त कालीन सूर्य होता है। उस से और अवधिस्थ सूर्य से अगस्त्यास्त समय के प्रविष्टादि को साधे। एवं अगस्त्योदयकालीन इष्ट कालसे और सायन मेषारम्भ कालीन सूर्य ०।०।०।० से लग्नानयन विधि द्वारा लग्न साधे तब वह अगस्त्योदयकालीन सूर्य होता है। उस से और अवधिस्थ सूर्य से अगस्त्योदय समय के प्रविष्टादि को साधे।

* उदाहरण :—

गढवाल की अङ्गुलादि पलभा ७।० को दो स्थान में रखकर एकस्थान में १० से भाग दियातो लब्ध ०।४२ हुए। इनको द्वितीय स्थान में युक्त कियातो ७।४२ हुए। इनको १५ घटियों में हीन कियातो ७।१८ शेषबचे। इनको दो स्थान में स्थापित किया। तदनन्तर ३३ घटियों मे एक स्थान की शेष संख्या ७।१८ को युक्त कियातो ४०।१८ अगस्त्यास्त कालीन घट्यादि इष्टकाल हुआ। एवं ३३ घटियों में द्वितीय स्थान में स्थित शेष संख्या ७।१८ को हीन कियातो २५।४२ अगस्त्योदयकालीन घट्यादि इष्टकाल हुआ। तदनन्तर सायन मेषारम्भ कालीन सूर्य ०।०।०।० की० राशि ० अंश के तुल्य कोष्ठके घट्यादि ०।० में अगस्त्यास्त कालीन घट्यादि इष्टकाल ४०।१८ को युक्त कियातो ४०।१८ घट्यादि हुए। इन घट्यादियों के तुल्य लग्नसारणी से राश्यादिलग्न ६।२९।२०।१ मिला। इसमें ५ राशि ६ अंश को युक्त कियातो ०।५।२०।१ अगस्त्यास्तकालीन सूर्य हुआ। इससे और अवधिस्थ सूर्य ०।५।२९।२ से वैशाख ७ प्रविष्ट, ६ घटी, ५४ पलमें अगस्त्यास्त हुआ।

एवं सायन मेषारम्भ कालीन सूर्य ०।०।०।० की० राशि० अंश के तुल्य कोष्ठके घट्यादि ०।० में अगस्त्यो-

* संवत् १९८८ वैक्रमीयवर्षेऽगस्त्योदयास्तसाधनमुदाहरणं तत्रायन लग्नाः २३°।२९' मार्त्तण्ड पञ्चाङ्गस्थार्कतः साधनं कृतमिति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दयकालीन घट्यादि इष्टकाल २५।४२ को युक्त कियातो २५।४२ घट्यादि हुए। इन घट्यादियोंके तुल्य लग्न-सारणीसे लग्न साधन कियातो ४।१४।१६।३१ राश्यादि लग्न अर्थात् अगस्त्योदयकालीन सूर्य हुआ। इससे और अवधिस्थ सूर्य ४।१४।३५।२४ से भाद्रपद १५ प्रविष्ट, ५६, घटी २० पल में अगस्त्योदय हुआ।

स्थूल रीति से रात्रि में चन्द्रोदयास्तमान-परिज्ञान—

मानं रजन्यास्तिथिताडितं यमहीनान्वितं श्यामलशुक्लपक्षयोः।
शरैकभक्तं फलमेतयोर्विधूदयास्तमानं निशि सूरिभिर्मतम् ॥ ४६ ॥

कृष्णपक्ष में या शुक्लपक्ष में प्रतिपदादि तिथि की जो संख्या हो उस से इष्टदिनके रात्रिमान को गुणे तब जो संख्या हो उसमें कृष्णपक्ष होतो २ को हीन और शुक्लपक्ष होतो २ को युक्तकरे तब जो संख्या हो उसमें १५ से भाग दे लब्ध घट्यादि होते हैं। कृष्णपक्षमें लब्ध घट्यादि चन्द्रोदयमान और शुक्लपक्ष में लब्ध घट्यादि चन्द्रास्तमान होता है।

—: उदाहरण :—

इष्टदिन में कृष्णपक्षकी अष्टमी है अतः इष्टदिन के रात्रिमान २५।८ को इष्ट तिथि अष्टमी की संख्या ८ से गुणातो २०१।४ हुए। इन में कृष्णपक्ष होनेके कारण २ को हीन किया तो १९९।४ शेषबचे। इनमें १५ से भाग दियातो लब्ध १३ घटी १६ पल रात्रिगत होनेपर 'चन्द्रोदय' हुआ।

एवं इष्टदिन में शुक्लपक्ष की षष्ठी है अतः इष्टदिन के रात्रिमान ३२।५ को इष्टतिथि षष्ठी की संख्या ६ से गुणा तो १९२।३० हुए। इनमें शुक्लपक्ष होनेके कारण २ को युक्त कियातो १९४।३० हुए। इनमें १५ से भाग दियातो लब्ध १२ घटी ५८ पल रात्रिगत होनेपर 'चन्द्रास्त हुआ।

केवल जन्मपत्री के ऊपर से ही जन्म शकादि जानने की रीति—

यद्भे तिष्ठति जन्मनीनतनयस्तस्माच्छनेर्गोचर-
र्क्षान्तं संगणयेत्तदा भवति या संख्याक्षनिघ्ना हृता।
युग्माभ्यां फलमब्दका इति गुरोर्भाद्वर्षमेकं स्मृतं
सार्द्धं हायनमेकमिन्दुरिपुभाद्गोचारभान्तं तथा ॥ ४७ ॥

जन्म समय में 'शनि' जिस राशि में हो उससे गोचरगत शनि की राशि पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसको ५ से गुणकर २ से भाग दे लब्ध वर्ष होते हैं। जन्म समय में 'गुरु' जिस राशि में हो उससे गोचर गत गुरु की राशि पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उस के तुल्य प्रत्येक राशिको १ वर्ष मानकर वर्ष होते हैं। एवं जन्म समय में राहु जिस राशि में हो उससे गोचरगत राहुकी राशिपर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उस के तुल्य प्रत्येक राशि को १॥ वर्ष मानकर वर्ष होते हैं। अथवा उक्तविधि से जितनी संख्या लब्ध हो उसको ३ से गुणकर २ से भाग दे लब्ध वर्ष होते हैं। जब उक्त तीनों से वर्षोंकी समान संख्या मिल जाय तब उस संख्या को इष्ट शक में हीनकरे शेष जन्म शक होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'गुरुराशिचारवशतो वर्षबोधकसारणी'।

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

रा.	ब.	मा.	दि.	ब.
१	०	०	०	०
२	०	०	०	०
३	०	०	०	०
४	०	०	०	०
५	०	०	०	०
६	०	०	०	०
७	०	०	०	०
८	०	०	०	०
९	०	०	०	०
१०	०	०	०	०
११	०	०	०	०
१२	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

' शनिराशिचारवशतो वर्षबोधक सारणी '।

रा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
व.	२	४	७	५	१२	१४	१७	१९	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५६	५९	६१
मा.	५	११	४	१०	३	९	२	८	१	७	०	६	११	५	१०	४	९	३	८	२	७	१	६	०	५
दि.	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५

रा.	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
व.	६३	६६	६८	७१	७३	७६	७८	८१	८३	८६	८८	९०	९३	९५	९८	१००	१०३	१०५	१०८	११०	११३	११५	११८	१२०	१२२
मा.	११	४	१०	३	९	२	८	१	७	०	६	११	५	१०	४	९	३	८	२	७	१	६	०	५	११
दि.	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०

राहुराशिचारवशतो वर्षबोधकचक्रम् '।

रा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
व.	१	३	५	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२४	२६	२७	२९	३१	३२	३४	३५	३७	३८
मा.	६	१	७	२	९	३	१०	४	११	६	०	७	१	८	३	९	४	१०	५	०	६	१	७	२	९
दि.	१८	६	२४	१२	०	१८	०	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०

रा.	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
व.	४०	४१	४३	४४	४६	४८	४९	५१	५२	५४	५५	५७	५८	६०	६२	६३	६५	६६	६८	६९	७१	७२	७४	७५
मा.	३	१०	४	११	६	०	७	१	८	३	९	४	१०	५	०	६	१	७	२	९	३	१०	४	११
दि.	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२

रा.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३
व.	७७	७९	८०	८२	८३	८५	८६	८८	८९	९१	९३	९४	९६	९७	९९	१००	१०२	१०३	१०५	१०६	१०८	११०	१११	११३
मा.	६	०	७	१	८	३	९	४	१०	५	०	६	१	७	२	९	३	१०	४	११	६	०	७	१
दि.	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

—:उदाहरणः—

'जन्मकालीनकुण्डलीयम्'।	'इष्टकालीनकुण्डलीयम्'।
	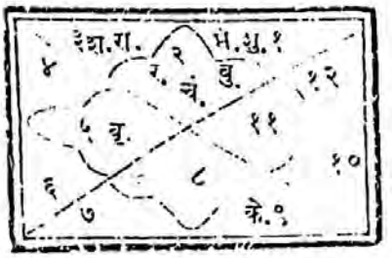
शके १८१९ आषाढशुक्लपष्ठ्यां चन्द्रेष्टम् ४६। १३ तैतिलकरणे जनिरभूत। तत्र दिनम् ३४।३६	शके १८६७ ज्येष्ठ २७ प्रविष्टशनिवारे, प्रातः अभीष्ट समयः।

जन्मसमय में 'गुरु' सिंहराशि में है और इष्ट समय में 'गुरु' कन्या में वक्र होकर सिंह में आया है यहां अनुमान से गुरु की पञ्चमावृत्ति का आरम्भ प्रतीत होता है अतः ४८ 'गताब्द' हुए। अथवा गुरु की ४९ गत राशिकेतुल्य ४८ वर्ष हुए। जन्मसमय में 'शनि' वृश्चिकराशि के आरम्भ में है और इष्ट समय में 'शनि' मिथुन में है। यहां अनुमान से शनि की द्वितीयावृत्ति है क्योंकि प्रथमावृत्ति की समाप्ति में शनि वृश्चिक के आरम्भ में है अतः प्रथमावृत्ति के ३० वर्ष और द्वितीयावृत्ति के आरम्भ से इष्ट समय तक ७½ राशि भुक्त कर चुका इस के तुल्य १८ वर्ष ४ मास गत हुए। इन को प्रथमावृत्ति के वर्ष ३० में युक्त किया तो ४८ 'गताब्द' हुए अथवा शनि की १९½ गतराशि के तुल्य ४८ गत वर्ष हुए। एवं जन्म समय में 'राहु' मकर राशि में है और इष्ट समय में 'राहु' मिथुन राशि में है। यहां अनुमान से राहु को तृतीयावृत्ति है अतः दो आवृत्ति के ३६ वर्ष और तृतीयावृत्ति के आरम्भ से इष्ट समय तक ८ राशि के कुछ न्यूनांश भुक्त कर चुका। इस के तुल्य १२ वर्ष हुए। अथवा राहु की आक्रान्त राशि मकर से इष्ट कालीनराशि मकरपर्यन्त ३० राशि भुक्त होगई। इस के तुल्य ४८ गताब्द हुए। इन को इष्ट शक १८६७ में हीन किया तो १८१९ जन्म शक हुआ।

मास परिज्ञान—

राधे मासे स्थापयेन्मेषराशिं यावत्सूर्यो गण्यते तावदेव।
तस्मिन्मासे कल्पनीयं नराणां जन्म प्राहुः प्राक्तना एवमार्य्याः ॥ ४८ ॥

मेषराशि को वैशाख मान कर सूर्याधिष्ठित राशिपर्यन्त वैशाखादि मासों को गिने अर्थात् सूर्य की मेषादि राशियों की संख्या के समान वैशाखादि मासों को गिनकर जो मास आवे वह 'जन्म सौरमास' होता है। इस प्रकार मनुष्यों के जन्म सौरमास की कल्पना करने को प्राचीन आचार्य कहते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'जन्मसौरमासबोधकचक्रम्'।

स.क्रां.रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मासा	वैशाख.	ज्येष्ठ.	आषाढ.	श्रावण.	भाद्रपद.	आश्विन.	कार्तिक.	मार्गशीर्ष.	पौष.	माघ.	फाल्गुन.	चैत्र.

—: उदाहरण :—

यहां जन्म समय में 'सूर्य मिथुन राशि में है। यह मेष से तृतीय राशि है अतः वैशाख से तृतीयमास 'आषाढ' 'जन्मसौरमास' हुआ।

पक्ष, तिथि, दिवा, रात्रि तथा इष्टघटी परिज्ञानः—

यस्मिन् राशौ जन्मकाले पतङ्गस्तस्मात्सप्तर्क्षान्तरे पक्षजन्मा।
शुक्ले जन्म त्वन्यथा नीलपक्षे यत्रार्केन्द्वोः संयुतिस्तत्रदर्शः॥ ४९॥
मित्रान्मारे चन्दिरस्तत्र राका भानेर्भात्सार्द्धयुग्मे तिथी स्तः।
यावद्रात्रीनाथभं चाथ लग्नमेवं सप्तर्क्षान्तरे भान्तराशेः॥ ५०॥
वाच्यं घस्रे जन्म पुंसां विलग्ने पुष्टेऽगर्क्षाद्भानुराशेः क्षपायाम्।
यावल्लग्नं गण्यते पञ्च पञ्च मार्त्तण्डर्क्षात्संस्मृता नाडिकारव्याः॥ ५१॥

जन्म समय में जिस राशि में सूर्य हो उस से सात राशि के अन्तराल में 'चन्द्रमा' हो तो शुक्ल पक्षमें जन्म और सात राशि के अन्तर्गत 'चन्द्रमा' न हो तो कृष्णपक्ष में जन्म कहे। जहां सूर्य और चन्द्रमा एकत्र (एक साथ) हों वहां अमावास्या में जन्म कहे। एवं सूर्य से सप्तम राशि में चन्द्रमा हो तो पौर्णमासी में जन्म कहे। सूर्य से चन्द्रमा पर्यन्त गिनकर जितना राशि हों उनको प्रत्येक राशि की २५ तिथि मान कर शुक्लप्रतिपदासे तिथि होती हैं। अथवा सूर्य चन्द्रमा की अन्तराल की राशियों की संख्या को ५ से गुणकर २ से भाग दे लब्ध शुक्लप्रतिपदा से जन्मकालीन तिथि होती हैं।

सूर्याधिष्ठित राशिसे सातराशिके अन्तर्गत लग्न हो तो दिनमें जन्म और सातराशि से अधिक हों तो रात्रिमें जन्म कहे। एवं सूर्याक्रान्त राशिसे लग्नराशि। सप्तम हो तो सन्ध्याकाल में जन्म कहे। सूर्य की राशिसे लग्नराशि पर्यन्त गिनकर जितनी संख्या हो उसको ५ से गुणकर जो गुणनफल हो वह जन्म समयका घट्यादि इष्टकाल होता है।

सूर्यचन्द्रान्तर्गतराशिवशेन तिथिबोधकचक्रम्।

रा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ति.	२½	५	७½	१०	१२½	१५	२½	५	७½	१०	१२½	३०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्नमानबोधकचक्रम्

रा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
घ.	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०

लग्नानां सायनघट्यादिमानबोधकचक्रम् ।

रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
प.	३०	०	०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	०	०	३०

—: उदाहरण :—

यहां 'सूर्य' मिथुन राशि में है और 'चन्द्रमा' सिंह राशि में है। सूर्य से चन्द्रमा तृतीय राशिमें है अतः 'शुक्लपक्षका जन्म' हुआ। यहां सूर्य से गिनकर चन्द्रमा २ रे स्थान में है अतः २ को ५ से गुणातो १०। हुए इनमें २ से भाग दियातो लब्ध ५ हुए। इनके तुल्य पञ्चमी गतातिथि हुई और 'षष्ठी में जन्म' हुआ सूर्याक्रान्त मिथुन राशि से लग्नराशि मीन सातसे अधिक है अतः रात्रिमें जन्म हुआ।

एवं सूर्याधिष्ठित राशि मिथुन से लग्न राशि मीन ९ स्थान की दूरीपर है अतः ९ को ५ से गुणातो ४५ इष्ट घटी हुई।

इति ज्योतिस्तत्त्वे पञ्चाङ्गसाधनप्रकरणं नवममयसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

गोचरप्रकरणं प्रारभ्यते ।

गोचर-गत-रवि-फल—

खव्यायारिगतो रविर्नृपतिभिर्मानं स्वबन्ध्वात्मज-
सौख्यं चाखिलकार्यसिद्धिसुमती स्वर्क्षात्स्वलाभं यशः ।
पुण्यर्द्धिं कथितेतरालयगतो रोगं स्वहानिं भयं ।
शोकं वह्निनिपीडनं वितनुते व्याधिप्रवासौ स च ॥ १ ॥

यदि मनुष्यकी जन्म चन्द्र राशि से दशम, तृतीय, एकादश और षष्ठ स्थान में 'सूर्य' होतो राजाओंसे सन्मान, अपने बन्धुजन तथा पुत्रों का सुख, समस्त कार्यों की सिद्धि, निर्मल बुद्धि, धनलाभ, यश और पुण्यवृद्धि को करता है। उक्त स्थानोंके अतिरिक्त स्थान अर्थात् तनु, धन, सुख, सुत, जाया, मृत्यु, धर्म्म और व्यय इन स्थानों में 'सूर्य' होतो रोग, धनहानि, भय, शोक, अग्निपीडा, व्याधि और प्रवास को करता है।

गोचर गत-चन्द्र फल—

ग्लौर्जन्मायखषट्त्रिकोणमदगो लाभं हिरण्यागमं
स्वर्क्षान्मित्रसमागमं शुभमतिं भूदेवताखौकसाम् ।
भक्तिं प्रोक्तगृहेतरस्थित इह द्रव्यार्थहानिं वध-
बन्धाढ्यं तनुतेऽग्नितस्करभयं दुःख वियोगं भयम् ॥ २ ॥

जन्म चन्द्र राशि से जन्म (प्रथम) एकादश, दशम, षष्ठ, तृतीय, द्वितीय और सप्तम इन स्थानों में यदि 'चन्द्रमा' वर्त्तमान हो तो लाभ, सुवर्ण की प्राप्ति, मित्रों से मिलाप, निर्मलबुद्धि, ब्राह्मण और देवताओं की भक्ति को करता है। यदि उक्त स्थानों के अतिरिक्त स्थानों में अर्थात् चतुर्थ, पञ्चम, अष्टम, नवम और द्वादश इन स्थानों में 'चन्द्रमा' हो तो द्रव्य तथा अर्थ की हानि, वध (मरण) बन्ध (बन्धन कैद), अग्निभय, चोरभय, दुःख, वियोग (विछोह) और भय को करता है।

गोचरगत भौम फल----

द्वेष्यायानुजगः कुजः कनकगोभूवस्त्रलाभं रिपु-
नाशं राजकृपां करोति विविधं चारोग्यसौख्यं ततः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चेत्प्रोक्तेतरभावगो जनिभतथारे विदेशाटनं
व्याधिं मित्रविरोधमत्र सततं कुर्यादनन्ताजनिः ॥ ३ ॥

जन्म चन्द्र राशि से षष्ठ, एकादश और तृतीय इन स्थानों में 'मङ्गल' वर्त्तमान हो तो सुवर्ण, गौ, भूमि और वस्त्र का लाभ करता है। एवं शत्रुओं का नाश, राजा की कृपा, आरोग्य और अनेक प्रकार के सुख को करता है। यदि उक्त स्थानों से अतिरिक्त स्थानों में हो अर्थात् जन्म, द्वितीय, चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और द्वादश इन स्थानों में 'मङ्गल' वर्त्तमान हो तो विदेश भ्रमण, व्याधि तथा नित्य मित्रजनों से विरोध को करता है।

गोचरगत बुध फल—

स्वार्थायाम्बुविनाशगो विधुजनिर्जन्मर्क्षतो गोचरे
द्रव्यर्द्धिं द्रविणागमं च मनसो हर्षं च लाभं सुखम्।
सौभाग्यं गदितेतरस्थ इह स व्याधिं वियोगं तनौ
कष्टं भ्रातृविरोधशोककुभयं भीतिं रिपोः स्वक्षयम् ॥ ४ ॥

जन्म चन्द्र राशि से दशम, द्वितीय, लाभ, चतुर्थ और अष्टम इन स्थानों में गोचर से 'बुध' वर्त्तमान होतो द्रव्यकी वृद्धि, द्रव्यका लाभ, चित्त में हर्ष, लाभ, सुख और सौभाग्य को करता है। यदि उक्त स्थानों को छोडकर अन्य स्थानों में हो तो व्याधि, वियोग, शरीरकष्ट, भाईयों में विरोध, शोक, निन्दितभय, शत्रुभय और द्रव्य का नाश करता है।

गोचरगत गुरुफल—

कोणार्थायमनोजगोऽमरगुरुः कुर्यान्प्रातिष्ठामति-
वृद्धिं वै सुखसम्पदोऽत्र विभवप्राप्तिं क्रये विक्रये।
लाभं खत्रिसुखत्रिकप्रथमगो मित्रैर्विरोधं समं
व्याधिं चातनुते विदेशगमनं चेद्गोचरे जन्मभात् ॥ ५ ॥

जन्म चन्द्र राशि से पञ्चम, नवम, द्वितीय, एकादश और सप्तम इन स्थानों में 'गुरु' गोचर से वर्त्तमान हो तो प्रतिष्ठा, बुद्धिवृद्धि, सुख, सम्पत्ति, ऐश्वर्यप्राप्ति एवं क्रय विक्रय से लाभको करता है। यदि दशम, तृतीय, चतुर्थ, त्रिक (षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश) और जन्म में गोचर से 'गुरु' वर्त्तमान होतो मित्रोंसे विरोध, व्याधि और विदेश भ्रमण को करता है।

गोचरगत शुक्र फल—

जन्मव्यन्त्यसुखाष्टलाभधनश्रीभाग्योपगो भार्गवो
गोचारे जनिभात्समागममिहात्मोद्भूतपूर्वात्सदा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सौख्यं मन्मथमानमान्यगृहगो ज्ञेयोऽशुभो रोगतां
स्त्रीवैरं च महापदं गदशुचौ कुर्वीत कार्यक्षयम् ॥ ६ ॥

जन्म चन्द्र से जन्म, तृतीय, द्वादश, चतुर्थ, अष्टम एकादश, द्वितीय, पञ्चम और नवम इन स्थानों में गोचर से 'शुक्र' वर्त्तमान हो तो सज्जनों से समागम और पुत्रादि से सौख्य को करता है। यदि सप्तम, दशम और षष्ठ स्थान में गोचर से 'शुक्र' होतो अशुभ जानना चाहिए। रोगता, स्त्री जनोंसे वैर, महापत्ति, रोग, शोक और कार्य का नाश करता है।

गोचरगत शनि फल----

षट्त्र्यायालयगो जयं नृपजनान्मित्राच्च सौख्यप्रदो
गाङ्गेयांशुकलाभकृन्मृदुगतिः सौख्यं तथा सम्पदम् ।
इष्टार्थाप्तिमथो यदोदितगृहान् हित्वाऽन्यभावोपगः
स्वैर्लोकैः कलहं स्वजन्मविधुभान्कुर्यात्स्वयत्नक्षयम् ॥ ७ ॥

जन्म चन्द्र राशि से षष्ठ, तृतीय और लाभ में गोचर से 'शनि' वर्त्तमान होतो राजाओंसे विजय, मित्र जनों से सौख्य, सुवर्ण और वस्त्र का लाभ, सौख्य, सम्पत्ति और मनोरथ की सिद्धि को करता है। यदि 'शनि' उक्त स्थानों को छोडकर अन्य स्थानों में हो तो अपने लोगोंसे कलह, द्रव्य और यत्न का नाश करता है।

गोचरगत राहु फल---

आज्ञात्रिपण्णवभवोदयगोऽहिनाथो
दद्यात्कलत्रजनपुत्रहिरण्यलाभम् ।
धीरन्ध्रधामधन मानसजक्षतिस्थ—
श्चेद्गोचरे जनिभतो ध्रुवमेति मृत्युम् ॥ ८ ॥

जन्म चन्द्र राशि से दशम, तृतीय, नवम, षष्ठ, प्रथम और एकादश में गोचर से 'राहु' वर्त्तमान होतो स्त्रीजन, पुत्रजन और सुवर्ण की प्राप्तिको करता है। यदि अष्टम, व्यय, पञ्चम, द्वितीय, चतुर्थ और सप्तम में 'राहु' हो तो निश्चय से मृत्यु को करता है।

जन्मादि स्थानों में भौमादि ग्रहों का समुदाय फल----

जन्मार्थकोणवधबन्धुवधव्ययस्था
भूनन्दनार्कतनयेनभुजङ्गमेशाः
येषां जनुर्विधुभतो यदि गोचराङ्गे
प्राणार्थधान्यकनकक्षयमेति तेषाम् ॥ ९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिन मनुष्योंकी जन्म चन्द्र राशि से जन्म (प्रथम), द्वितीय, कोण (पञ्चम तथा नवम), चतुर्थ, अष्टम, सप्तम, और द्वादश में भौम, शनि, सूर्य और राहु ये चारों गोचर से वर्तमान हों तो उन के प्राण, धन, धान्य और सुवर्ण नाश को प्राप्त होते हैं।

प्रकारान्तर से गोचरगत चन्द्र फल---

जन्मस्थो हिमगुः श्रियं यदि मनस्तोषं द्वितीये ऽनुजे
सम्पत्तिं द्रविणं सुखे कलिमथो ज्ञानस्य वृद्धिं सुते।
षष्ठश्चेदतिसम्पदं स्मरगतः सन्मानमुर्वीशतो
मृत्युं मृत्युगतः करोति पथिगः पुण्यस्य लाभं तथा ॥ १० ॥
विधत्ते सर्वदा सोमो मानगो मानसेप्सितम्।
लाभगः सर्वलाभंस्वजन्मभाद् व्ययगः क्षतिम् ॥ ११ ॥

जन्म चन्द्र राशि से जन्म (प्रथमस्थान) गत ' चन्द्रमा ' लक्ष्मी को देता है। द्वितीय में चित्त को सन्तोष, तृतीय में सम्पत्ति तथा द्रव्य का लाभ, चतुर्थ में कलह, पञ्चम में ज्ञानकी वृद्धि, षष्ठ में उत्तम सम्पत्ति, सप्तम में राजा ओंसे सम्मान, अष्टम में मृत्यु और नवम में धर्म के लाभको करता है। एवं दशम में नित्य मनोरथ की सिद्धि, एकादश में सब वस्तुओंका लाभ और द्वादश में हानि को करता है।

रव्यादि ग्रहोंका वेधजन्य फल परिज्ञान---

खाब्धौ रुद्राक्षे त्रिखेटे रसान्त्ये ऽर्को ऽह्यार्यारास्तर्कनन्दे गुणान्त्ये।
लाभाक्षे ग्लौः खाम्बुधावाद्यबाणे ऽङ्गान्त्ये व्यङ्के ऽद्रिद्वये रुद्रनागे ॥ १२ ॥

जन्मचन्द्र राशि से १०, ११, ३, ६, स्थान में ' सूर्य ' हो तो ' शुभ ' होता है किन्तु ४, ५, ९, १२, स्थानमें क्रमसे शनि को छोड़कर और कोई ग्रह नहो अर्थात् १०,४,११,५,३,९,६,१२ स्थानों का परस्पर ' वेध होता है। यदि राहु, शनि और मङ्गल ये तीनों ६,३,११ स्थान में हों तो ' शुभ ' होते हैं परन्तु ९,१२,५ स्थान में क्रमसे कोई ग्रह नहो। एवं ४,५,१२,९,२,८ स्थान मे क्रमसे बुधको छोड़कर कोई ग्रह न हो तो १०,१,६, ३,७,११ स्थान में ' चन्द्रमा ' ' शुभ ' होता है।

ज्ञो लाभान्त्ये षट्खगे नागचन्द्रे ऽब्ध्यर्गौ द्वीपौ पंक्ति नागे गिरीशः।
द्व्यन्त्ये ऽक्षाब्धौ खेटखे शम्भुसर्प ऽग्न्यर्गौ शुक्रो वेदखे दोस्तुरङ्गे ॥ १३ ॥
त्र्येके ऽङ्केशे पञ्चखेटे गजाक्षे मार्त्तण्डाङ्के रुद्ररामे कुनागे।
शस्तो ऽविद्धश्चेति खेटः क्रमेण वेधं नेहाहुः पितुर्नन्दनस्य ॥ १४ ॥
वेधं प्राहुर्जन्मराशेः सकाशाद् दुष्टः खेटो व्यस्तवेधाच्छुभः स्यात्।
शुक्रे सोमो बाणवेदे ऽङ्कनागे त्र्यङ्के शस्तः स्यात् क्रमाद् विद्ध इत्थम् ॥ १५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१२,९,१,३,५,८ स्थान में क्रमसे चन्द्रमा को छोड़कर कोई ग्रह न हो तो ११,६,८,४,२,१० स्थान में 'बुध' 'शुभ' होता है : १२,४,१०,८,३, स्थान में क्रमसे कोई ग्रह न होतो २,५,९,११,७, में 'गुरु शुभ' होता है। १०।७।१।११,९,५,१,३,८ स्थान में क्रमसे कोई ग्रह न हो तो ४,२,३,९,५,८,१२,११,१ स्थान में 'शुक्र' 'शुभ' होता है। इस प्रकार क्रमसे 'अविद्धग्रह' 'शुभ' होता है। यहां पिता और पुत्र का वेध नहीं होता है अर्थात् सूर्य शनि का, चन्द्र बुधका, शनि सूर्य का तथा बुध चन्द्रमा का 'वेध' नहीं होता है। अपनी जन्म राशि से उक्त स्थानों में ग्रहों का वेध कहा है। विपरीत वेध से दुष्टग्रह शुभ होता है शुक्लपक्षमें ५, ९, २ स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है किन्तु ४, ८, १ स्थान में क्रमसे कोई ग्रह नहो।

गन्तव्य राशिका फलदानकाल परिज्ञान--

आदित्यवित्कुजसिताः क्रमतः समीर-
सप्तेभसप्तदिवसान सितगुस्त्रिनाडीः।
मासान द्विषड्गुणमितान गुरुमन्ददैन्या
गन्तव्यभस्य पुरतः फलदाः भवन्ति ॥ १६ ॥

'सूर्य' ५ दिन पूर्व, 'बुध' ७ दिन पूर्व, 'मङ्गल' ८ दिन पूर्व 'शुक्र' ७ दिन पूर्व, 'चन्द्रमा' ३ घटी पूर्व, 'गुरु' २ मास पूर्व, 'शनि' ६ मास पूर्व और राहु ३ मास पूर्व गन्तव्य राशि के गोचरजन्य फल को देते हैं।

राशि गत ग्रहों का फलपाक समय परिज्ञान--

भादिगौ भगकुजौ भपेनजावन्त्यगौ निगदितौ फलप्रदौ।
मध्यगौ मघवमंत्रिभार्गवौ सर्वदा स्वफलदः शशाङ्कजः ॥ १७ ॥

राशि प्रवेश समय में सूर्य मङ्गल, राशि के अन्त्य भाग में चन्द्र शनि, राशि के मध्यभाग में गुरु शुक्र अपने राशिजन्य फलको देते हैं। एवं 'बुध' समस्त राशि में अपने फलको देता है।

ग्रहों के एकराशिभोगदिन परिज्ञान--

सूर्यादिद्युमदां वियद्गुणमिताः सांघ्रिद्वयं सायका-
म्नाया भूयमला वियत्खगगुणागन्धर्वयुग्माः क्रमात्।
आकाशाम्बरखेचरा अथ वियद्वेदाशुगा वासराः
प्राचीनैर्बुधपुङ्गवैर्निगदिता एकर्क्षभोगा इमे ॥ १८ ॥

३० दिन सूर्य के, २५ दिन चन्द्रमा के, ४५ दिन भौम के, २१ दिन बुध के, ३९० दिन गुरु के, २७ दिन शुक्र के, ९०० दिन शनि के और ५४० दिन राहुके एकराशि भोग के हैं। इसप्रकार प्राचीन आचार्यों ने कहा है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहों का भभ्रमण परिवर्त्तनकाल परिज्ञान--

गोचन्द्रैः परिवर्त्तते दिनकरो वर्षैर्युगैर्यामिनीड्
नन्दाब्जैरुधिरो बुधः खशशिभिर्मार्त्तण्डतुल्यैर्गुरुः ।
नागाद्रैर्भृगुजः शनिः खदहनैर्वेदैरगैर्हर्शल ।
आयातिस्वगृहं गृहभ्रमवशाद्राहुः पुराणैः पुनः ॥ १९ ॥

१९ वर्ष सूर्य के, ४ वर्ष चन्द्र के, १९ वर्ष भौम के, १० वर्ष बुध के, १२ गुरु के ८ वर्ष शुक्र के ३० वर्ष शनि के ८४ वर्ष हर्शल के और १८ वर्ष राहु के भभ्रमण के हैं

प्रकारान्तर से भभ्रमण परिवर्त्तन काल परिज्ञानः—

त्रिण्यैर्भानुः षड्युगैर्विड् भयुग्मैः शुक्रो गो ऽगैर्वेन्मैरर्भौम इज्यः ।
त्रीभैस्त्र्यङ्कैः राहुरार्किर्नवाक्षैरायान्ति स्वर्क्षं पुनर्भभ्रमेण ॥ २० ॥

२७ वर्ष रवि के, ४६ वर्ष बुध के, २२० वर्ष शुक्र के, ७९ वर्ष भौम के, ८३ वर्ष गुरु के ९३ वर्ष राहु के और ५९ वर्ष शनि के भभ्रमण के हैं।

शनिपादपरिज्ञानः—

जन्मारिलाभगृहगः कनकस्य पादं
पङ्क्तुर्द्विपञ्चपथिगो रजतस्य पादम् ।
मेपूरणत्रिमदगः स तु ताम्रपादं
मित्रान्त्यमृत्युगृहगस्त्वयसो ऽघ्रिमाहुः ॥ २१ ॥

जन्मचन्द्रराशि से जन्म (प्रथम) षष्ठ तथा एकादश में गोचर से 'शनि' हो तो 'सुवर्णपाद' द्वितीय, पञ्चम तथा नवम में 'शनि' हो तो रजत (चान्दी) पाद। दशम, तृतीय और सप्तम में 'शनि' हो तो ताम्रपाद। चतुर्थ द्वादश तथा अष्टम में 'शनि' हो तो 'लोहपाद' होता है।

सुवर्णादि पादफल परिज्ञान :—

हिरण्यपादे सकलं सुखं चाश्मसारपादे द्रविणस्य नाशम् ।
कुर्यात्समत्वं यदि ताम्रपादे सौभाग्यमार्की रजतस्य पादे ॥ २२ ॥

सुवर्णपादमें 'शनि' होतो समस्त सुख, लोहपादमें धनका नाश, तामपादमें मध्यम फल और रजतपाद में सौभाग्य को करता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकान्तरसे शनिका गोचर फल :—

स्वजन्मराशेर्यदि गोचरेऽसितोऽपायोपगः के जननोपगो हृदि ।
पादे द्वितीये पशुनन्दनक्षयं रुग्घानिभीतीः कुरुते कगः कलिम् ॥ २३ ॥

जन्म चन्द्र राशिसे गोचरगत 'शनि' द्वादश हो तो 'शिर' में, जन्म (प्रथम) में शनि होतो हृदयमें, द्वितीय में शनि हो तो पादमे होता है। उक्त स्थानों में स्थित 'शनि' पशु तथा पुत्रों का नाश, रोग, हानि और भय को करता है। यदि गोचरगत 'शनि' चतुर्थ में हो तो कलह और द्रव्य का नाश करता है।

द्रव्यक्षयं मृत्युगतो मृतिं लयाम्बुस्थोऽथवा स्त्रीमरणं धनक्षयम् ।
देशाटनं बन्धुविरोधमामयं चिन्ताधिकं क्लेशमुदीरयन्ति हि ॥ २४ ॥

'अष्टमस्थ शनि' मृत्यु को करता है। अथवा अष्टम वा चतुर्थगत शनि स्त्रीकी मृत्यु धनका नाश, देश भ्रमण, बन्धुजनोंके साथ विरोध, रोग, आधिक चिन्ता और क्लेश को करता है। इसप्रकार पण्डितजन कहते हैं।

स्थान विशेषसे गोचरगत ग्रहोंका फल :—

अङ्गारको यद्भगतो जनौ ततस्तुर्य्येऽनृजुर्भूफलदो विशेषतः ।
मूरिः स्वतः सूनुफलं सुते दिशेज्ञः स्वाम्बुभे सौख्यफलं मघाभवः ॥ २५ ॥
कान्ताफलं कामगृहे शनैश्चरः स्वतः शुभे गोचरके विधेः फलम् ।
विधुः स्वतोऽर्थेऽर्थफलं तु वैपुवे फलं खगानां बलतारतम्यतः ॥ २६ ॥

जन्म समय में जिस राशि में 'मङ्गल' हो उससे चतुर्थ राशिमें विशेषतः जब वक्रगतिवाला मङ्गल आवे तब वह भूमि को देता है। निजाक्रान्त राशिसे पांचवीं राशि में जब गोचर से 'गुरु' आवे तब वह पुत्रको देता है। निजाधिष्ठित राशि से चतुर्थ राशि में जब गोचर से 'बुध' आवे तब सौख्यदायक होता है। निजाधिष्ठित राशिसे सप्तम राशि में जब गोचर से 'शुक्र' आवे तब विवाह को करता है। निजाक्रान्त राशिसे नवम राशि में जब गोचर से 'शनि' आवे तब भाग्योदय को करता है। एवं जन्म समय में जिस राशिमें चन्द्रमा हो उससे द्वितीय राशिमें वा वैपुवकाल में जब गोचरसे वह आवे तब धनको देता है। ग्रहोंका उक्तफल बलतारतम्य (बलाबलके विवेक) से कहना चाहिए।

ग्रहोंका विफलत्व परिज्ञान :—

सौम्यव्योमचरेक्षितोऽशुभफलो यः खेचरः सत्प्रदो—
ऽप्युग्राकाशचरेक्षितो जनिमुखे तौ निःफलौ द्वावपि ।
खेटो यः परिलोकितः स्वरिपुणा नीचंगतोऽस्तंगतो
वैरिक्षेत्रगतश्च यो दिविचरस्तेऽनूनका निःफलाः ॥ २७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जन्म समय में अथवा गोचर से जो 'ग्रह' अशुभफल कारक हो वह शुभग्रहों से दृष्ट हो, अथवा जो 'ग्रह' शुभफल कारक हो वह पापग्रहों से दृष्ट हो तो वे दोनों 'ग्रह' विफल होते है। अर्थात अपने राशि-जन्य तथा स्थानजन्य फल को नहीं देते हैं वे केवल दृष्टिफल को देते हैं। एवं जो 'ग्रह' अपने नैसर्गिक शत्रु से दृष्ट हो या अपनी नीच राशि में हो या अस्तंगत हो या शत्रु क्षेत्र में हो तो वे सब ग्रह विफल होते है अर्थात् अपने स्थान राशिजन्य फल को नहीं देते हैं।

सुस्थानदुःस्थानगतौ क्रमेण खेचारिणौ पापशुभैः प्रदृष्टौ।
तौ निःफलौ द्वौ सदसद्गृहेभ्योऽन्यत्र स्थितो मध्यफलः प्रदिष्टः ॥ २८ ॥

शुभ (१।४।५।७।९।१०) स्थान में स्थित ग्रह यदि पाप ग्रह से दृष्ट हो और अशुभ (६।८।१२) स्थान में स्थितग्रह शुभग्रहसे दृष्ट हो तो ये दोनों निष्फल होते हैं। एवं 'ग्रह' शुभाशुभ स्थानों को छोड़कर अन्य (२।३।११) स्थान में हो तो मध्यमफलदायक कहा है।

इति ज्योतिस्तत्त्वे गोचरप्रकरणं दशममवसितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

अष्टकवर्गप्रकरणं प्रारभ्यते ।

सूर्याष्टकवर्गाङ्क परिज्ञान--

रविःस्वात्केन्द्राष्टार्थनवभवगः स्वादिव कुजात्
तथा मन्दाच्चेन्दोरुपचयगतः सान्त्यसुखगः ।
तनोः शस्तो ज्ञात्सान्तिमनवमधीस्थः सुरगुरो--
स्तपोध्यायारिस्थो ऽन्त्यरिपुमदगो दैत्यसचिवात् ॥ १ ॥

उक्त श्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'रवेरष्टकवर्गाङ्काः' ४८

रा.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
	१	३	१	३	५	६	१	३
	२	६	२	५	६	७	२	४
	४	१०	४	६	०	१२	४	६
	७	११	७	०	११		७	१०
	८		८	१०			८	११
	९		९	११			९	१२
	१०		१०	१२			१०	
	११		११				११	

—: उदाहरण :—

यहां 'सूर्य' मिथुनराशि में है अतः मिथुन से १।२।४।७।८।९।१०।११ इन स्थानों में अर्थात् मिथुन, कर्क, कन्या, धनु, मकर, कुम्भ, मीन और मेष राशि में 'सूर्य' रेखाप्रद होता है इसलिए उक्त राशियों के नीचे रेखाओंको स्थापित किया और शेष (सिंह तुला, वृश्चिक और वृष) राशियों के नीचे शून्यस्थापित किया । इस प्रकार सूर्याष्टकवर्ग में सूर्य के रेखाबिन्दु हुए । एवं सूर्याष्टकवर्ग में 'चन्द्रमा' अपनी अधिष्ठित सिंहराशि से ३।६।१०।११ इन स्थानों में अर्थात् तुला, मकर, वृष और मिथुनराशि में चन्द्रमा रेखाप्रद होता है इसलिए उक्त राशियों के नीचे रेखाओंको स्थापित किया और शेष (सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु कुम्भ, मीन, मेष और कर्क) राशियों में रेखा का अभाव होने से उक्त राशियों के नीचे शून्य स्थापित किये । इसी प्रकार सूर्याष्टकवर्ग में भौमादियों के रेखाबिन्दुओंका साधन करे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'रवेरष्टकवर्गः'। 'उदाहरणमेतत्'।

राशयः	मि.	वृ.	मि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.
ग्रहाः	सू. बु.	.	चं. मं. बृ.	.	.	शु.	.	.	.	ल.	.	शु.
रविः	1	1	.	1	.	.	1	1	1	1	1	.
चन्द्रः	1	.	.	.	1	.	.	1	.	.	.	1
भौमः	1	.	1	1	.	1	.	.	1	1	1	1
बुधः	.	.	1	.	1	1	.	.	1	1	1	1
गुरुः	1	.	.	.	.	.	1	1	.	.	1	.
शुक्रः	.	.	.	.	1	1	.	.	.	.	1	.
शनिः	1	1	1	1	.	1	1	.	1	.	.	1
लग्नं.	1	.	1	.	.	.	1	1	1	.	.	1
रे. यो.	६	२	४	३	३	४	४	४	५	३	५	५
रवि. यो.	२	६	४	५	५	४	४	४	३	५	३	३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'प्रकारान्तरेण रवेरष्टकवर्गः'! 'उदाहरणमेतत्'!

राशयः	मे.	वृ.	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
ग्रहाः	.	शु.	सू, बु.	.	चं.मं. बृ.	.	.	श.	.	.	.	ल.
श.	.	1	1	1	1	1	.	1	1	.	1	1
बृ.	1	.	1	.	.	.	.	.	1	1	.	.
मं.	1	1	1	.	1	1	.	1	.	.	1	1
र.	1	.	1	1	.	1	.	.	1	1	1	.
शु.	1	.	.	.	.	.	1	1	.	.	.	.
बु.	1	1	.	.	1	.	1	.	.	.	1	1
चं.	.	1	1	.	1	.	.	1	.	1	.	1
ल.	.	1	1	.	1	.	.	.	1	1	1	1
रे. यो.	५	५	६	२	४	३	३	४	४	४	५	५
त्रि. यो.	३	३	२	६	४	५	५	४	४	४	३	३

चन्द्राष्टकवर्गाङ्क परिज्ञान—

शशीज्यात्सन्केन्द्रान्त्यभवमरणे सत्रितनये
त्रिरिःफे ज्ञाच्छुक्रात्त्रिखसुखतपोधीमदभवे ।
शनेः षट्त्रिध्याये ऽङ्कत उपचये सात्मजतपो-
धने ऽस्रात्स्वात्सास्तोदयगृह इनात्साष्टममदे ॥ २ ॥

उक्तश्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चन्द्राष्टकवर्गाङ्काः' ४९

चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	र.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	९			१०
११	१०	८	११	१०			११
	११	१०	१२	११			
		११					

भौमाष्टकवर्गाङ्क परिज्ञान—

कुजः स्वात्केन्द्रायस्वमृतिषु शनेः कण्टकतपो--
भवाष्टस्थो ज्ञात्षट्त्रिसुतभवगो ऽच्छात्रिकभवे ।
रवेः षट्खव्याये ससुतसदने ऽब्जात्खत्रिफले
तनोः साङ्गे रिःफायखरिपुषु शस्तो ऽमरगुरोः ॥ ३ ॥

उक्त श्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'भौमाष्टकवर्गाङ्काः' । ३९

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	११	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

बुधाष्टकवर्गाङ्क परिज्ञान—

तपःकेन्द्राष्टार्थाप्तिषु विदसृजाक्योस्त्रिकभवे
गुरोश्चन्द्रात्स्वार्यायखमृतिसुखे ऽङ्गात्सवपुषि ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शुभो ऽथापुत्राष्टायनवसु कवेर्धीव्ययतपो–
भवारिस्थो ऽर्कात्स्वात्सुतनवमवृद्ध्यन्त्यतनुगः ॥ ४ ॥

उक्तश्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'बुधाष्टकवर्गाङ्का.' ५४

बु.	गु.	शु.	श.	ल.	र.	चं.	मं.
१	६	१	१	१	५	२	१
३	८	२	२	२	६	४	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९		५	८	८	१२	१०	८
१०		८	९	१०		११	९
११		९	१०	११			१०
१२		११	११				११

जीवाष्टकवर्गाङ्क–परिज्ञान—

शनेः षड्धीव्यन्त्ये ऽम्बरितनुखकोणार्थभवगो
विदो ऽङ्गात्सास्तस्थो गुरुररिखधीस्वायशुभगः ।
कवेरिन्दोर्ध्यायार्थनवमदगो ऽ स्राङ्गवमृति–
स्वकेन्द्रस्थः स्वात्सानुजगत इनात्सत्रिगुरुगः ॥ ५ ॥

उक्तश्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'गुरोरष्टकवर्गाङ्काः' ५६.

बृ.	शु.	श.	ल.	र.	चं.	मं.	बु.
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	९
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शुक्राष्टकवर्गाङ्क-परिज्ञानः—

व्ययायाष्टस्थो ऽर्कात्स्वमृतिभवकोणेषु गुरुतः
सितः सौरेः सव्यम्बुषु भवतपोधीत्रिरिपुगः ।
विदो भूपुत्रात्सान्त्यगत उदयादासुतशुभा—
युरायस्थो ऽब्जात्सान्तिसगृहगतः स्वात्सपदगः ॥ ६ ॥

उक्तश्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'शुक्राष्टकवर्गाङ्काः' ५२.

शु.	श.	ल.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		११		११			
११				१२			

शन्यष्टकवर्गाङ्क-परिज्ञान—

शनिः शस्तो ऽब्जात्पद्सहजभवगः स्वात्ससुतगः
सधीरवान्त्यस्थो ऽस्वात्सखसुखतनुस्थस्तनुभतः ।
रवेः केन्द्राष्टार्थाप्तिषु भृगुजतो ऽन्त्यारिभवगः
सधीस्थो जीवाज्ज्ञात्सनिधनतपोव्योमगृहगः ॥ ७ ॥

उक्तश्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'शनेरष्टकवर्गाङ्काः' ३९

श.	ल.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३	१	१	३	३	६	५	६
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	११		
	११	१०		१२	१२		
		११					

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्नाष्टकवर्गाङ्क-परिज्ञान —

तनुः काव्यादाधीनवमृतिषु शस्ता ऽऽयनवपट्
स्वधीकेन्द्रस्थेज्यात्स्वत उपचयस्था दिनकरात् ।
सबन्ध्वन्त्यस्था ऽऽर्कः सतनुसुखगा ऽस्वात्सतनुगा
विधोः सान्त्यस्था ज्ञात्स्वतनुमृतिखाग्न्यग्निसुखगा ॥ ८ ॥

उक्तश्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'लग्नाष्टकवर्गाङ्काः' ४९.

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११	१२	११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	०	०	
					१०		
					११		

राह्वष्टकवर्गाङ्क-परिज्ञान—

शस्तो ऽहिस्त्रिचतुष्टयस्वमृतिगो ऽर्काज्ज्ञाद् व्ययाम्ब्यष्टम—
स्वास्तेषु त्रिधनान्त्यधीषु कुजतो ऽङ्गात्व्यङ्कधीकान्त्यगः ।
द्वेष्यास्तान्त्यभवेषु भात्त्रिनिधनाम्बाङ्गारिगो वाक्पतेः
सौरेः प्रान्त्यखसोदरास्तमयधीलाभेषु रेखा अगोः ॥ ९ ॥

उक्तश्लोक का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'राहोरष्टकवर्गाङ्काः' ४३.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	१	२	२	१	६	३	३
२	३	३	४	३	७	५	४
३	५	५	७	४	११	७	५
४	७	१२	८	६	१२	१०	९
७	८		१२	८		११	१२
८	९					१२	
१०	१०						

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अष्टकवर्ग के शुभाशुभस्थानों का परिज्ञान—

उक्तानि यानीह गृहाणि तानि तु ज्ञेयानि सौम्यान्यपराणि यानि च ।
अशोभनान्यत्र तदन्तराद्धि यत्पुष्टं फलं यच्छति खेचरः स्वभात् ॥ १० ॥

रव्यादि ग्रहों की स्वाधिष्ठित राशि से जो पूर्वोक्त स्थान हैं वे शुभ (रेखायुक्त) और शेषस्थान (बिन्दुयुक्त) अशुभ जानने चाहिएँ। शुभ (रेखा) अशुभ (बिन्दु) के अन्तर करने से जो अधिक हो उस के फलको ग्रह देता है अर्थात् रेखा अधिक हों तो शुभ फल और बिन्दु अधिक हों तो 'ग्रह' अशुभ फलको देता है। एवं रेखा तथा बिन्दु समान हों तो 'ग्रह' मिश्र फलको देता है।

ग्रहों की रेखाओंकी संख्या का परिज्ञान—

नानाब्धयो नन्दकृता नवाग्नयः पयोधिबाणा रसमारुता रवेः ।
युग्मेषवो गोशिखिनो ऽङ्कसागरास्त्रिसागरा अष्टकवर्गरेखिकाः ॥ ११ ॥

४८ सूर्य की, ४९ चन्द्रमा की, ३९ भौम की, ५४ बुध की, ५६ गुरु की, ५२ शुक्र की, ३९ शनि की, ४९ लग्न की, और ४३ राहुकी रेखायें हैं।

अष्टकवर्गजन्य शुभाशुभत्व का परिज्ञान —

यो वृद्धिगो ऽङ्कविधुतः खचरः स्वभोच्च—
मित्रत्रिकोणभवने ऽष्टकवर्गजन्यम् ।
यत्सत्फलं तदखिलं सममत्र दुष्टं
पीडर्क्षगस्य शुभमल्पमसत्प्रपुष्टम् ॥ १२ ॥

लग्न तथा चन्द्रमासे वृद्धि (३-६-१०-११) स्थान में स्थित हुआ 'ग्रह' यदि स्वराशि स्वोच्चराशि मित्र राशि वा मूलत्रिकोण राशि में स्थित हो तो उस का जो अष्टकवर्गजन्य शुभ फल हो वह सम्पूर्ण और दुष्ट फल मध्यम होता है। एवं लग्न तथा चन्द्रमासे जो ग्रह पीडा (१-२-४-५-७-८-९-१२) स्थान में स्थित हो उसका अष्टकवर्गजन्य शुभफल 'अल्प' और अशुभफल अधिक होता है।

इति ज्योतिस्तत्त्वेऽष्टकवर्गप्रकरणमेकादशमवसितम् ।

———

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

सुदर्शनप्रकरणं प्रारभ्यते ।

सुदर्शनचक्रनिर्माणविधि और उससे फलका परिज्ञान--

* यद् द्वादशारं हि सुदर्शनाख्यं चक्रं सुवृत्तैस्त्रिभिरान्वितं तत् ।
आद्ये ऽत्र वृत्ते जनिलग्नराशेर्भावाः सखेटास्तु तदूर्ध्ववृत्ते ॥ १ ॥
सखेटभावा विधुभाद्विलेख्या वृत्ते तदूर्ध्वे रविभात्तथैव ।
वृत्तत्रये ये ग्रहसदो ऽपि यत्र राशौ स्थितास्तत्र तु तत्र लेख्याः ॥ २ ॥
विलोकयेच्चद्गृहतो ऽथ जन्माङ्केन्द्वर्कभेभ्यो निधने त्रिकोणे ।
केन्द्रे भुजङ्गो दुरितग्रहाश्च दुःखाय सौख्याय शुभग्रहाः स्युः ॥ ३ ॥

सुन्दर तीन वृत्तों से युक्त द्वादशदलवाले सुदर्शननामकचक्रके प्रथम वृत्त में जन्मलग्नराशिसे राशिविन्यास करके उनद्वादशभावो में यथा स्थान ग्रहों को लिखे। तदनन्तर उस के ऊपर के वृत्त में जन्म चन्द्रराशि से आरम्भकर ग्रहसहित भावों को लिखे। एवं उस के ऊपर के वृत्त में जन्मकालीन रविराशि से आरम्भकर ग्रहसहित भावों को लिखे। जन्म समय में जिन राशियों में जोग्रह स्थित हो उन को तीनोंवृत्तों में उनही राशियों में लिखे और उनही स्थानों को उन ग्रहों के लग्नको मानकर उससे द्वादश भावों को देखे अर्थात् अवलोकन करे। जन्मराशि जन्मचन्द्र राशि वा जन्म रविराशि से अष्टम त्रिकोण वा केन्द्र में यदि 'राहु' स्थित हो वा पापग्रह स्थित हों तो 'दुःख और उक्तस्थानों में शुभग्रह स्थित हो तो सुखको करते हैं।

तन्वादि भावों में विचारणीय तन्वादि वस्तुओंकी हानि का परिज्ञान—

यद्यद्वृत्तयद्गृहान्मृत्युभावे केन्द्रे कोण ऽगुः स्थितो वा बहूग्राः ।
तद्भावानां नाशमाहुर्हि यत्र भावे राहुस्तस्य हानिस्त्ववश्यम् ॥ ४ ॥

जिस जिस वृत्त में जिस जिस स्थान से अष्टम केन्द्र वा त्रिकोण में राहु या बहुत पापग्रह स्थित हों तो उन भावों के नाश को कहे। जिस भाव में राहु हो उसकी अवश्य 'हानि' होती है।

---

* इह प्रकरान्तेण सुदर्शनचक्रवेधमाह' 'कश्चिदाचार्य्यः'-- सुदर्शनं द्वादशारं जन्ममेन्द्वर्कराशितः। मध्ये मीनस्तत्र पाके राशिवेधे भयावहे १ केन्द्रकोणाष्टमे राहुः पापा अर्त्थे शुभा मुदे। जन्मभात्सूर्यभं यावत्सुदर्शनफलं भवेत् २ मीनालिकर्कटे वेधो मेषसिंह धनुर्धराः। वृषे स्त्रियां तथा नक्रे युग्मे घटतुलाख्ययोः। वेधान्येतानि सर्वाणि वर्जनीयानि यत्नतः नक्षत्राद्वर्षमर्कान्मासं चन्द्राद्दिनं सूर्यसंक्रान्तिनक्षत्रपर्यन्तं गणयेदिति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तन्वादि भावों में विचारणीय तन्वादि वस्तु ओंकी वृद्धि तथा अन्य फलका परिज्ञान--

यस्माद्भावात्केन्द्रकोणाष्टमे ऽसँस्तद्भावर्द्धिः स्यात्त्रिवृत्ते ऽपि सौम्याः ।
केन्द्रारिस्थाः सत्फलाधिक्यमाहुः कष्टाधिक्यं तत्र याताः खलाश्चेत् ॥ ५ ॥

जिस भावसे केन्द्र' त्रिकोण और अष्टम में शुभग्रह हों उस भावकी वृद्धि को कहे । यदि उक्त तीनों वृत्तों में भी केन्द्र तथा शत्रुस्थान में 'शुभग्रह' हों तो अधिक शुभफल और उक्तस्थानों में पापग्रह हों तो अधिक कष्ट को कहे ।

ग्रहदृष्टिजन्य शुभाशुभफलका परिज्ञान—

शुभेक्षितं यद्भवनं तु तस्य सौम्यं फलं पापखगेक्षितं यत् ।
तस्यैव गेहस्य फलं न शस्तं वृत्तत्रये दृक्फलमेवमाहुः ॥ ६ ॥

शुभग्रह में दृष्टस्थान का 'शुभफल' होता है पापग्रह दृष्टस्थान का शुभफल नहीं होता है । इसप्रकार तीनों वृत्तों में आचार्यों ने दृष्टिके फलको कहा है ।

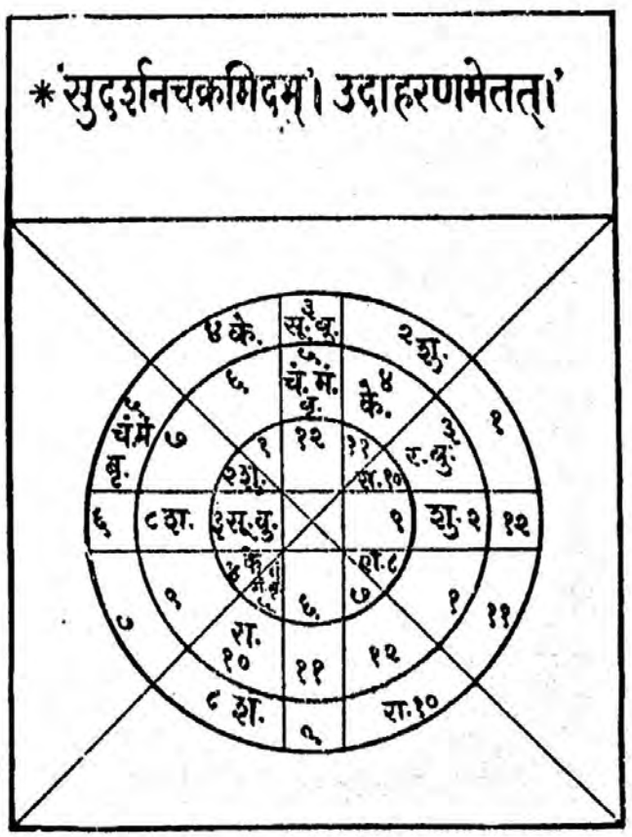

* अत्रोदाहरणं प्रदर्शयति—इह वृत्तत्रये तनुभवनेऽर्कारेज्यगलौग्ना वर्त्तन्ते तेषु द्वौ पापग्रहौ, त्रयः शुभग्रहाः सन्ति तेन शुभग्रहाधिक्यात्तनौ बलहर्षादेराधिक्यम् एवमग्रेऽपि चिन्त्यम् । तत्रापि स्वतुङ्गस्वगृहस्वहितमादपि खचरो विशेषतः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वर्ष मासादियों में शुभफल का परिज्ञान--

+ होराननैर्हायनमः सार्द्धकयुग्मैकघस्रान् क्रमशः प्रवर्त्तयेत् ।
सौम्यैर्विरिःफारिगतैः शुभं फलं तथाऽऽयरोगानुजगैरशोभनैः ॥ ७ ॥

सत्फलप्रदः । निम्नरिपुमृदगोऽल्पं शुभं, पुष्टं दुष्टं फलं वितरति । एवं सत्सुहृत्खलाद्वेक्षितोऽपि विज्ञातव्यः तत्रापि सदीक्षणांघ्रीन् गणयित्वा सद्दृक्छेषे सत्फलोदयः । असौम्यवीक्षणशेषे दौष्ट्याधिक्यं मतम् ।

इह विलग्नवृत्ते लग्ने भौमदृष्टिश्चतुरष्टमदृष्टित्वाच्चतुश्चरणमिता ४, रविदृष्टिरेकांघ्रिमिता १, त्रिकोणदृष्टित्वाच्चरणद्वयंशनिदृष्टिः २, इह दृक्चरणत्रयैक्यम् ७, ततो बुधदृष्टिरेकांघ्रिमिता १, चन्द्रदृष्टिस्त्रिचरणमिता ३, गुरुदृष्टिरपि त्रिचरणमिता ३, शुक्रस्य दृष्टिर्नास्ति ०, अत्र दर्शनचरणत्रयैक्यम् ७, शुभाशुभान्तरेकृते सति शुभाशुभवीक्षणाभावः । तस्माच्छरीरसम्भवसौख्यं समत्वमेव संस्मृतम् ।

एवं लग्नावृत्तादुपरि विधुवृत्ते तनौ तपनदर्शनमेकचरणमितम् १, शनिदृष्टिस्त्रिदशेत्यादि उक्त्या पूर्णा ४, एकभस्थत्वाद्भौमदृष्टिरपि पूर्णा ४, आसामैक्यम् ९; तथा तनौ तारातनयदर्शनमेकचरणमितम् १, सितदर्शनं त्रिपादोन्मितं ३, एकर्क्षस्थत्वाद्गुरुदृष्टिरखिला ४, आसामैक्यम् ८, शुभाशुभान्तरम् १, खलवीक्षणावशिष्टत्वाद् विधोश्चेतः खचरत्वाच्च चेतस्यतिदुःखं भवेत् ।

तथा विधोर्वृत्तत उपरि विरोचनवृत्तं तत्र विलग्ने विद् एकभगत्वाज्ज्ञेक्षणं चतुश्चरणमितं ४, सोमसूरिसितानां दर्शनाभावः । इह सदृग्योगः ४। तथा तनौ तपनतनयदर्शनं चरणत्रयमितं: ३, भौमस्यदृष्टिर्नास्ति । शुभाशुभान्तरे कृते सति सद्दृग्योगशेषः १ सौम्येक्षणावशिष्टत्वादात्मवान्महीपाद्, अतः कालात्मेत्यादि शुभाशुभफलं चिन्त्यम् । विशेषतस्तु सूक्ष्मफलाय दृक्कला आनीय शुभाशुभंफलं बोध्यमिति ।

+ 'अथ तात्कालिकविमर्शः-- '. 'तन्वाद्यैर्वर्षमासार्द्धद्वयैकघस्रान् प्रवर्त्तयेत्' इति । तन्वाद्यैर्द्वादशभावैः प्रत्येकं जनिवर्षमारभ्यैकैकं वर्षं प्रकल्प्यमेवं द्वादश वर्षाणि स्युः । ततो द्वितीयपर्यये (द्वितीयपरिवर्त्तने) तनुभावे त्रयो दशं वर्षं, धनभावे चतुर्दशं वर्षं, एवं दशभिः परिवर्त्तनैर्विंशाधिकशताब्दमायुर्भवेत् । एवं प्रत्यब्दभावं तनुभावं प्रकल्प्य ततस्तस्मिन्वर्षे प्रतिभावं पतिसत्सुहृद्वीक्षितान्वितं सत्तद्भावभवं शुभं फलं कथनीयम् खलारिनीचारिभस्थास्तगदृष्टयुक्तं सद्दृष्टं फलं कथितव्यम् । ततो यस्मादब्दाङ्गात्त्रिकोणकण्टकाष्टमेषु सत्वर्गाः स्युस्तद्वर्षमिष्टं ज्ञेयम् । तत्र लग्नाष्टमे चन्द्रस्तु जन्यनेहसि नेष्टः । एवमन्यत्रापि प्रतिवर्षं तद्भावेशस्य दशायांच एवं मासेषु दिनेष्वपि ज्ञेयम् ।

'अथमासफलविमर्शः—' वर्त्तमानाब्दभावाविलग्नाद्या द्वादश मासा मताः । य एवाब्दादौ तनुभावः स एव प्रथमो मासः, द्वितीयभावो द्वितीयमासः, एवं द्वादश मासा भवेयुः । तत्र द्युचरविचारोऽब्दोक्तिवद्बोध्यः । इति ।

'अथ दिनफलविमर्शः—' 'सार्द्धद्वये २॥ क १ घस्रान्वर्द्धयेत्' इति, तस्मात्सार्द्धद्विघस्रान्वेति विकल्पः, इष्टमासभावादितः सार्द्धद्विद्वि दिवसान् प्रत्येकं द्वादशभावेषु जानीयात्, यथा वर्त्तमानमासतनुभावे सार्द्धदिनद्वयं, एवं गणनया द्वादशभावेषु त्रिंशद्दिनानि पूर्णानि स्युः । तत्र दिनभावं तनुभावं विधायाब्दोक्तिवद् द्वादशभावफलं कथितव्यम् । तत्रापि वर्षमासदिभावेषु यस्य यस्य सौम्यासौम्यस्य योगोदृग्वा स्यात्तद्दिविचरस्य रसाशन स्वप्नचेष्टा पूर्वं निजगुरुचरणोपदेशाद्वाच्यम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तन्वादि द्वादश भावों को क्रमसे प्रत्येक को एकवर्ष, एकमास, अढाई २॥ दिन, एक दिन और पाँच घटियों मे परिवर्तन करे। जिस स्थानसे द्वादश तथा षष्ठ स्थान को छोडकर शेषस्थान में शुभग्रह हों और तृतीय, षष्ठ तथा लाभस्थान में पापग्रह हों उसस्थान का शुभफल होता है।

तत्राभिकेतं तनुभं प्रकल्प्यतत्तत्तानुपूर्वभवं फलं यत्।
वाच्यं बुधैन्द्रैः स्वगुरूपदेशात्स्वप्नादिकं भोजननामधेयम् ॥ ८ ॥

जिन जिन वर्षों का विचार करना अभीष्ट हो उन उन भावों को 'लग्न' कल्पना करके उनके लग्नादि जन्य फल को पण्डितजन कहे। एवं अपने गुरुजनों के उपदेशसे उक्तस्थानों के द्वारा स्वप्नादि तथा भोजन का विचार करना चाहिए।

भावेशाद्या द्वादशो येऽत्र भावाः प्रत्येकं तान् कल्पयेद्वत्सरेषु।
दिक्ष्वाचार्यस्तन्मुखा भुक्तयः स्युस्तद्वन्मासादौ शुभास्तद्बलैस्ताः ॥ ९ ॥

प्रत्येक तन्वादि भावों के भावेशादि द्वादश भावों के स्वामियों के दश दश वर्षों की दशा की कल्पना करे तब प्रत्येक भाव की आयुर्दाय होती है। एवं भावेशादियों की दश दश मासों की अंन्तर्दशाओंकी कल्पना करे। भावेशों के बली होनेसे मासादि में उनकी अन्तर्दशायें 'शुभ' होती हैं।

प्रत्येक वर्ष में दशा का परिज्ञानः—

आरभ्य जन्मोदयभं गताद्राः शाध्याः समाभ्योऽभिमताभिधाभ्यः।
तन्वादिषु द्वादशभावकेषु स्थितैर्नभोगैः सदसत्फलं हि ॥ १० ॥

जन्म लग्न से लेकर बारह स्थानों को बारह वर्ष कल्पना करे। पुनः द्वितीयावृत्ति में चौबीस और तृतीयावृत्ति में छत्तीस वर्ष इत्यादि कल्पना करे। अथवा इष्ट वर्षों में बारह बारह वर्षों की एक एक आवृत्ति के आसन्न गत वर्षों को शोधकर जो शेष बचे वह तन्वादिभाव होता है। उस भाव में स्थित शुभाशुभ ग्रहों से शुभाशुभ फल कहना चाहिए।

'अथैकघस्रानिति' इष्टमासभावादेकैकं दिनं एकैकभावे बोध्यम्। एवं सार्द्धदिनद्वये २॥ परिवर्तितेन द्वादशभावेषु त्रिंशद्दिनानि भवेयुः। तत्रापि सार्द्धदिनद्वयद्वादशांशेन घटी १२, पल ३०, घटिकाफलम्। एकदिनस्य द्वादशांशेन घटी ५, घटिकाफलम् अब्द निवेशकालत इति वेद्यम्।

'अथ देहभावस्य विशेषविचारार्थं उदाहरणं प्रदर्श्यते—' इहोदयवृत्ते कपि (र.), कोविदौ (बु.) केन्द्रे केतुकोणौ त्रिकोणे स्तः। अत्र केन्द्रस्थो बुध एव शुभः, केन्द्रकोणगाः पतङ्गपङ्गुपताकाः पापाः सन्ति। चन्द्रवृत्ते सर्वसहासूनुसूरिसितासिताश्चतुष्टयोपगास्तेषु द्वौ शुभौ द्वौ पापौ स्तः। तथा ब्रध्नवृत्ते केन्द्रे कोविदो, रन्ध्रे राहुरस्ति। इह बुधः शुभो राहुः पापोऽस्ति। अत्र शुभयोगः ४, पापयोगः ६ शुभाशुभान्तरेकृते सति पापावधिष्ठत्वात् काये कष्टाधिक्यम्, स्वल्पमेव शुभफलं ज्ञेयम्। इहार्कवृत्ते राहुरष्टमभावगस्तस्मादपि देहकष्टं भवेत्, अत्र लग्नवृत्ते स्वभानुर्भवभावगः स भावस्तु ज्येष्ठ सोदरसञ्ज्ञकस्तेन तद्धानिर्वाच्या। एवं प्रथमत्रयोदशपञ्चविंशतिप्रभृतिवर्षाणां फलमपि बोध्यम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकारान्तर से प्रत्येक वर्ष के शुभाशुभ फलका परिज्ञानः—

जन्यङ्गभास्त्वद्विधुकुण्डलीनां भावेषु तन्वादिषु खेचराणाम् ।
निवेशनाच्चालनतश्च वाच्यं ज्ञानं कृतीन्द्रैः सदसत्फलस्य ॥ ११ ॥

जन्म लग्न, जन्म सूर्य और जन्म चन्द्र इन तीनों कुण्डलियों के तन्वादिभावों में ग्रहों की स्थापना तथा चालन से ग्रहों के शुभाशुभ फल के ज्ञान को कहना :

प्रत्यब्दमाकाशचरास्तु तासां त्रिकस्थिता दुष्टफलप्रदाः स्युः ।
स्थिता यदा तासु खगा असन्तोऽत्यनिष्टदाः कण्टककोणयाताः ॥ १२ ॥
किमाप्तियाताः सदसत्फलानि यच्छन्ति नित्यं समुदायलग्नात् ।
फलं प्रवेद्यं प्रतिवत्सरादि तत्तन्निकेतोद्भवलग्नतोऽत्र ॥ १३ ॥

उन जन्मलग्नादि तीनों कुण्डलियों के मध्य में जिस किसी के लग्न भाव से त्रिकस्थान में यदि 'शुभ ग्रह' हों तो वे दुष्टफल को देते हैं और उक्त स्थान में पाप ग्रह हों तो अत्यन्त अशुभ फल को देते हैं। यदि समुदाय लग्न से अर्थात् तीनों कुण्डलियों के लग्न से केन्द्र, त्रिकोण और लाभ स्थान में शुभग्रह हों तो 'शुभफल' और पाप ग्रह हों तो अशुभ फल को देते हैं। यहां सुदर्शन प्रकरण में प्रत्येक स्थान से जो लग्न उत्पन्न हो उस से वर्षादि में शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

शुभाशुभं भावपपुण्यपामरयोगेक्षणाभ्यां विबुधा जगुः फलम् ।
तातम्बिकादेहसमुत्थयोषितां तत्तत्समास्त्वेव शुभाशुभाह्वयम् ॥ १४ ॥
फलं तु तेषां समुदायलग्नतस्तस्मात्समानां परिवर्त्तनं तनोः ।
वर्षस्य मासां परिवर्त्तनं ततो मासस्य लग्नाल्लवपर्त्तनं कुरु ॥ १५ ॥

प्रत्येक वर्ष में शुभभावेश तथा पापभावेश के योग और दृष्टि से शुभाशुभ फल को कहना चाहिए। सामुदायक लग्न से पिता, माता, स्त्री पुत्रादियों के लिए उन उनके वर्षों में उन के शुभाशुभफल कहे। उन के उन सामुदायक लग्नों से वर्षों का परिवर्त्तन करे। वर्ष के मध्य में मासों का परिवर्त्तन करे। एवं उन सामुदायक लग्नों से मासके मध्य में सूर्य के अंशो का अर्थात् प्रविषों का परिवर्त्तन करे तब प्रत्येक वर्ष, मास और दिन के शुभाशुभ फल को कहे।

इति ज्योतिस्तत्त्वे सुदर्शनप्रकरणं द्वादशमवसितम् ।

———

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

रश्मिप्रकरणं प्रारभ्यते ।

रश्मियों के स्पष्टीकरण का परिज्ञानः—

दिग्गोऽक्षभूतर्षिगजेषवः स्युः करा: चतुर्ज्ञेष्विनपूर्वकेषु ।
खगो विनीचोऽङ्गगृहाधिकश्चेत्संशोध्य चक्रान्निजरश्मिनिघ्नात् ॥ १ ॥
तर्कोध्दृताद् दीधतयः स्युरस्मान्मित्रार्कभागे द्विगुणास्त्रिनिघ्नाः ।
स्वके मयूखाः कुटिले निजोच्चे स्वभे तु दोः सङ्गुणिताः कराः स्युः ॥ २ ॥
नीचे सपत्नार्कलवे महीपभागेन हीना विकरोऽस्तयातः ।
विनाऽऽर्किकार्व्या कुटिलावसानेऽहिभागहीनाः स्फुटरश्मयः स्युः ॥ ३ ॥

१० सूर्य की, ९ चन्द्रमा की, ५ मङ्गल की, ५ बुध की, ७ गुरु की, ८ शुक्र की और ५ शनि की अपने परमोच्च में प्राप्त होनेपर रश्मि होती हैं। राश्यादि स्पष्ट ग्रह में अपने राश्यादि नीच को हीन करे तब शेष राश्यादि को षड्भाल्प करे अर्थात् शेष राश्यादि ६ राशि से अल्प (न्यून) हों तो स्वतः षड्भाल्प होता है। यदि शेष राश्यादि ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में हीन करे तब 'षड्भाल्प ग्रह' होता है। उस को अपने पूर्वोक्त रश्मिमान से गुणकर ६ से भाग दे लब्ध 'ग्रह की प्रथम रश्मि' होती हैं। यदि 'ग्रह' मित्रग्रह के द्वादशांश में हो तो मध्यम रश्मि को २ से और अपने द्वादशांश में ३ से गुणे तब स्पष्ट रश्मि होती हैं। एवं 'ग्रह' वक्रगति में हो वा स्वोच्चराशि में हो वा स्वराशि में हो तो उस की मध्यम राशि को २ से गुणे तब स्पष्ट रश्मि होती हैं। यदि 'ग्रह' अपनी नीच राशि में वा शत्रुग्रह की राशि के द्वादशांश में हो तो उस की मध्यम रश्मि के षोडशांश को हीन करे अर्थात् उस ग्रहकी मध्यम रश्मि को दो स्थान में स्थापित कर के एक स्थान में १६ से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को द्वितीय स्थान में ही करे शेष स्पष्ट रश्मि होती है। शनि तथा शुक्र को छोडकर यदि 'ग्रह' अस्तंगत हो तो उस की मध्यम रश्मि की तीनों संख्याओंको शून्य करे अर्थात् अस्त गत ग्रह की रश्मि का अभाव होता है। किन्तु शनि तथा शुक्र के अस्त होने पर भी उन की रश्मि का अभाव नहीं होता है अर्थात् उन की रश्मि में अस्तगत हानि नहीं होती है यदि ग्रहने वक्रत्व के त्याग का आरम्भ कर दिया हो अर्थात् अल्प काल में ग्रह की वक्र गति की समाप्ति हो तो उस की रश्मि को दो स्थान में स्थापित कर के एक स्थान में ८ से भाग दे लब्ध को द्वितीय स्थान में हीन करे शेष ग्रह की स्पष्ट रश्मि होती है।

'ग्रहाणां रश्मिगुणबोधकचक्रम्'।

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१०	९	५	५	७	८	५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

स्पष्ट सूर्य २।२१।३४।२५ में सूर्य के राश्यादि नीच ६।१०।०।० को हीन किया तो ८।११।३४।२५ 'नीचोन रवि' हुआ। यहां नीचोन रवि ६ राशि से अधिक है अतः शेष राश्यादि ८।११।३४।२५ को १२ राशि में हीन किया तो ३।१८।२५।३५ 'षड्भाल्प नीचोन रवि' हुआ। इस को सूर्य की रश्मि १० से गुणा तो ३६।४।१५।५० हुए। इन में ६ से भाग दिया तो लब्ध ६ हुए। शेष ० को ६० से गुणा तो ० हुआ। इस में शेष अंश ४ को दो से गुणकर ८ को युक्त किया तो ८ हुए। इन मे ६ से भाग दिया तो लब्ध १ हुआ। शेष २ को ६० से गुणा तो १२० हुए। इन में शेष कला १५ को २ से गुणकर ३० को युक्त किया तो १५० हुए। इन में ६ से भाग दिया तो लब्ध २५ हुए। इस प्रकार ६।१।२५ 'सूर्य की मध्यम रश्मि' हुई। यहां 'सूर्य कुम्भ राशि के द्वादशांश में है उस का शनि' स्वामी है वह सूर्य का शत्रु है। इसलिये सूर्य की पूर्वागत मध्यम रश्मि ६।१।२५ को दो स्थान में रखकर एक स्थान में १६ भाग दिया तो लब्ध ०।२२।३५ हुए। इन को द्वितीय स्थान में स्थित मध्यम रश्मि ६।१।२५ में हीन किया तो ५।३८।५० सूर्य की स्पष्ट रश्मि' हुई।

इति ज्योतिस्तत्त्वे रश्मिप्रकरणं त्रयोदशमवाशीतम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

दशाप्रकरणं प्रारभ्यते ।

स्पष्ट चन्द्र से भभुक्त तथा स्पष्ट भोग्य साधन रीति—

इन्दोः कलाः खाभ्रभुजङ्गतष्टाः पष्ट्या हता व्योमनभोऽष्टभक्ताः ।
लब्धं भभुक्तं तदनन्तपड्भ्यः शुद्धं स्फुटष्यं घटिकादिकं स्यात् ॥ १ ॥

राश्यादि स्पष्ट चन्द्र की कला में ८०० से भाग दे तब जो शेष बचे उस को ६० से गुणकर ८०० से भाग दे लब्ध 'नक्षत्र का घटयादि भुक्त' होता है। उसको ६०।० में घटा कर जो शेष बचे वह 'नक्षत्र का घटयादि स्पष्ट भोग्य' होता है।

—:उदाहरणः—

४।२८।३१।५७ स्पष्ट चन्द्र है। इस की राशि ४ को ३० से गुणा तो १२० हुए। इन में २८ अंश को युक्त किया तो १४८ हुए। इन को ६० से गुणा तो ८८८० हुए। इन में ३१ कला को युक्त किया तो ८९११।५७ कलादि हुए। इन को ८०० से तष्ट किया तो १११।५७ शेष कलादि बचे। इन को ६० से गुणा तो ६७१७ हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध ८।२३।४६।३० 'नक्षत्र का घटयादि स्पष्ट भुक्त हुआ। इस को ६० घटी में शोधन किया तो ५१।३६।१३।३० जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी का स्पष्ट भोग्य हुआ।

विंशोत्तरी तथा महादशा में दशेश और उनके वर्षोंका परिज्ञान—

वह्नेस्त्रिरर्केन्दुकुजाहिगीष्पतिकोणज्ञकेतूशनसो दशेश्वराः ।
अब्दाः षडाशास्तुरगा धृतिर्नृपा गोऽब्जा हयैकेमुनयो वियद्यमाः ॥ २ ॥

कृत्तिका से तीन बार गिनकर सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र ये विंशोत्तरी-दशा में और महादशा में 'दशेश' हैं अर्थात कृत्तिका से गिनकर जन्म नक्षत्र पर्यन्त जितनी संख्या हो उस को ९ से तष्ट करे शेष तुल्य सूर्यादि ग्रह प्रथम दशेश होता है। परन्तु यहां स्मरण रखना चाहिए कि नक्षत्रों की गणना में अभिजित् को न गिने। तदनन्तर प्रथम दशेश के क्रम से अन्य दशेशों को स्थापित करे। ६ सूर्य के, १० चन्द्रमा के, ७ भौम के, १८ राहु के, १६ गुरु के, १९ शनि के, १७ बुध के, ७ केतु और २० शुक्र के वर्ष हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

' विंशोत्तरीमहादशादशेशतदब्दबोधकचक्रम् ' ।

दशेशाः	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्षाणि	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
नक्षत्रा.	कृतिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुनर्व.	पुष्यः	आश्ले.	मघा.	पू. फा.
नक्षत्रा.	उ. फा.	हस्त.	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूळ.	पू. षा.
नक्षत्रा.	उ. षा.	श्रव.	धन.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.	आश्वि.	भरणी

—: उदाहरण :—

यहां उत्तराफाल्गुनी जन्म नक्षत्र है। कृत्तिका से गणना की तो पूर्वाफाल्गुनी पर्यन्त सूर्यादि दशेशों की प्रथमावृत्ति ' हुई। उत्तराफाल्गुनी से द्वितीयावृत्ति को आरम्भ किया तो ' प्रथम दशेश सूर्य ' हुआ। अथवा कृत्तिका से गिनकर जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी पर्यन्त १० हुए इन को ९ से तष्ट किया तो १ शेष बचा इस के तुल्य दशेशों की गणना की तो ' प्रथम दशेश सूर्य ' हुआ। आद्यदशेश सूर्य के क्रम से अन्य दशेशों की स्थापना की तो सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध केतु, शुक्र इसप्रकार विंशोत्तरीदशा में और महादशा में दशेशों का न्यास हुआ।

विंशोत्तरीदशा साधन रीति—

स्वर्क्षस्य भोग्यघटिका निजहायनघ्न्यो—
ऽनेहोहताः पुनरहः प्रमुखा दशा स्यात् ।
अब्दादिकां ज्ञ, कुरु तां द्युसदां परेषां
यास्ताः समा निखिलकाः क्रमशः प्रयोज्याः ॥ ३ ॥

अपने जन्म नक्षत्र के घट्यादि स्पष्ट भोग्य को प्रथम दशेश के पूर्वोक्त वर्षों से गुणकर जो गुणन फल हो उस को पुनः ६ से गुणे तब ' दिनादि दशा ' होती है। तदनन्तर उस दिनादि दशा को वर्षादि करे अर्थात् दिन में ३० से भाग दे लब्ध ' मास ' और शेष ' दिन ' होते है। मास में १२ से भाग दे लब्ध 'वर्ष ' और शेष ' मास ' होते हैं। इसप्रकार आद्य दशेश की वर्षादि विंशोत्तरी दशा होती है। शेष ग्रहों के जो पूर्वोक्त सम्पूर्ण वर्ष हैं उन को क्रम से युक्त करे तब शेष ' ग्रहों की वर्षादि विंशोत्तरी दशा ' होती है।

—: उदाहरण :—

जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी के घट्यादि स्पष्ट भोग्य ५१।३६।१३।३० को आद्य दशेश सूर्य के ६ वर्ष से गुणा तो ३०९।३७।२१।० हुए। इन को पुनः ६ से गुणा तो १८५७।४४।६ दिनादि हुए। दिन १८५७में

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

३० से भाग दिया तो लब्ध ६१ मास और शेष २७ दिन हुए। मास ६१ में १२ से भाग दिया तो लब्ध ५ वर्ष और शेष १ मास हुआ। इस प्रकार ५ वर्ष १ मास २७ दिन ४४ घटी ६ पल आद्यदशेश सूर्य की वर्षादि विंशोत्तरी दशा हुई। इस के ५ वर्ष में चन्द्रमा के १० वर्ष को युक्त किया तो १५ वर्ष १ मास २७ दिन ४४ घटी ६ पल चन्द्रमा की वर्षादि विंशोत्तरी दशा हुई। एवं भौमादियों की दशा का साधन करे।

'विंशोत्तरीदशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

दशेशाः	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
व.	५	१५	२२	४०	५६	७५	९२	९९	११९
मा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१
दि.	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
घ.	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४
प.	६	६	६	६	६	६	६	६	६

दशान्यासरीति—

शको जन्मनः स्थाप्य ऊर्ध्वं शकाधो जनुःस्पष्टभानुस्तदा स्थापनीयः।
दशाद्यद्रपूर्वं तदाढ्यं शकोऽर्कः स्फुटो जायते तद्दशायाः समाप्तौ ॥ ४ ॥

जन्म कालीन शक को वर्ष मान कर वर्ष के स्थान (ऊपर) में स्थापित करे। एवं जन्म के राश्यादि स्पष्ट सूर्य को मासादि मानकर जन्म शक के नीचे स्थापित करे तब तब वह आद्यदशेश के दशाप्रवेश समय के शकादि होता है। तदनन्तर उस आद्यदशेश के संवत्सरादि प्रवेश समय में आद्यदशेश की वर्षादि दशा को युक्त करे तब आद्यदशेश की दशा के समाप्तिकालका शक और स्पष्ट सूर्य होता है। इसी को द्वितीय दशा प्रवेशकालीन शक और मासादि जानना चाहिए। उस द्वितीय दशेश के दशा प्रवेश कालीन शकादि में द्वितीय दशेश की वर्षादि दशा को युक्त करे तब तृतीय दशेश के दशा प्रवेश कालीन शक तथा स्पष्ट सूर्य होता है। एवं अन्य दशेशों के दशाप्रवेश समय को साधे।

—: उदाहरण :—

जन्म शक १८१९ को वर्ष कल्पना किया और राश्यादि स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ को मासादि कल्पना किया। तदनन्तर कल्पित वर्षादि १८१९।२।२१।२९।४९ में आद्यदशेश सूर्य की वर्षादि दशा ५।१।२७।४४।६ को युक्त कियातो १८२४ शक और ४।१९।१३।५५ आद्यदशेश सूर्य की दशा समाप्ति के समय का 'स्पष्ट सूर्य' हुआ। इस में आद्यदशेश के आसन्न अग्रस्थ ग्रह चन्द्रमा के सम्पूर्ण वर्ष १० को युक्त किया तो १८३४ चन्द्र

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दशा के अन्त का 'शक' हुआ और सूर्य दशा समाप्ति कालीन स्पष्ट सूर्य ४।१९।१३।५५ यही 'चन्द्रदशा समाप्ति काल का स्पष्ट सूर्य' हुआ। एवं अन्यग्रहों के दशा समाप्ति काल का शक और राश्यादि स्पष्ट सूर्य को साधे।

'प्रकारान्तरेण विंशोत्तरीदशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

दशेशाः	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
जन्म शकादि	५	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
	१	०	०	०	०	०	०	०	०
	२७	०	०	०	०	०	०	०	०
	४४	०	०	०	०	०	०	०	०
	६	०	०	०	०	०	०	०	०
१८१९	१८२४	१८३४	१८४१	१८५९	१८७५	१८९४	१९११	१९१८	१९३८
२	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२१	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
२९	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
४९	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५

महादशा साधन रीतिः—

त्रिघ्नं खषड्युक्तभभोगसञ्ज्ञं त्रिधा हतं शीतकराङ्गदिग्भिः।
दशा दिनाद्याः क्रमशो ध्रुवेनग्लावां समाद्या बुध, ता विधेहि ॥ ५ ॥

ध्रुवेनयोगोऽवनिजोऽनिलः स्यादिलाजवज्जीव इनेन्दुयोगः।
वक्रेन्दुयोगो विबुधो यमघ्नविधुः कविस्त्रिघ्नभगो भुजङ्गः ॥ ६ ॥

ध्रुवागुयोगो मृदुगो नवानां रव्यादयोऽग्न्यर्यमवैश्वभानाम्।
नाथा रसाशाद्रिपुराणभूपा गोऽब्जाः पयोदाद्रिनखाः समाः स्युः ॥ ७ ॥

जन्म नक्षत्र के घट्यादि स्पष्ट भोग्य में ६० घटीको युक्त कर के ३ से गुणे। तदनन्तर उस गुणन फल को तीन स्थानमें रखकर १,६,१० से पृथक् पृथक् गुणे तब क्रमसे ध्रुव, सूर्य और चन्द्रमाकी दिनादि दशा होती हैं। उन दिनादि दशाओंको वर्षादि करे। ध्रुव और सूर्य के योग से 'मङ्गल' और उसीके समान 'केतु' भी होता है। सूर्य और चन्द्रमा के योग से 'गुरु' होता है भौम और चन्द्रमा के योग से 'बुध' होता है। चन्द्रमाकी वर्षादि दशाको २से गुणकर शुक्रकी वर्षादि दशा होती है। सूर्यकी वर्षादि दशाको ३से गुणकर राहुकी वर्षादि दशा होती है। ध्रुव और राहुके योग करनेसे 'शनि' होता है। कृत्तिकादि, उत्तराफाल्गुन्यादि और उत्तराषाढादि नौ नौ नक्षत्रोंके सूर्यादि नौ ग्रह दशेश होते है। ६, १०, ७, १८, १६, १९, १७, ७, २० ये उन दशेशोंके वर्ष है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी का भयादि स्पष्ट भोग्य ५१।३६।१३।३० की घटी ५१ में ६० को युक्त कियातो १११। ३६। १३।३० हुए। इनको ३ से गुणातो ३३४। ४८। ४०।३० हुए। इनको तीन स्थानमें स्थापित करके क्रमसे एक, छः और दशसे गुणातो ३३४।४८।४०।३० ध्रुव की २००८।५२।३।० सूर्यकी ३३४८।६।४५।० चन्द्रमाकी दिनादि दशा हुई। इनको वर्षादि कियातो ०।११।४।४८।४०।३०: वर्षादिध्रुव ५।६।२८।५२।३।० सूर्यकी वर्षादिदशा ९।३।१८।६।४५।० चन्द्रमाकी वर्षादिदशा हुई। वर्षादि सूर्यदशा ५।६।२८।५२।३।० में ध्रुव ०।११।४।४८।४०।३० को युक्त कियातो ६।६।३।४०।४३।३० भौम और केतुकी वर्षादि दशा हुई। सूर्यकी वर्षादि दशा ५।६।२८।५२।३० में चन्द्रमाकी वर्षादि दशा ९।३।१८। ६।४५।० को युक्त कियातो १४।१०।१६।५८।४८।० गुरुकी दशा हुई। चन्द्रदशा ९।३।१८।६।४५।० में भौम दशा ६।६।३।४०।४३।३० को युक्त कियातो १५।९।२१।४७।२८॥३० बुधदशा हुई। चन्द्रदशा ९।३।१८।६।४५ ० को २ से गुणातो १८।७।६।१३।३०।० शुक्रदशा हुई। सूर्यदशा ५।६।२८।५२।३।० को ३ से गुणातो १६।८।२६।३६।९।० राहु दशा हुई। इसमें ध्रुव ०।११।४।४८।४०।३० को युक्त कियातो १७।८।१।२४।४९ ।३० 'शनि की वर्षादि दशा' हुई।

'महादशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

दशेशाः	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
	६	३	६	८	१०	८	९	६	७
जन्म शकादि	२८	१८	३	२६	१६	१	२१	३	६
	५२	६	४०	३६	५८	२४	४७	४०	१२
	३	४५	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०
	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०
१८१९	१८२४	१८३४	१८४०	१८५७	१८७२	१८८९	१९०५	१९१२	१९३०
२	९	१	७	४	२	१०	८	२	९
२१	२०	८	१२	८	२५	२७	१८	२२	२८
२९	२१	२८	९	४५	४४	९	५६	३७	५०
४९	५२	३७	२०	२९	१७	७	३५	१९	४९
०	०	०	३०	३०	३०	०	३०	०	०

सूर्यदशा फल—

भानोर्दशायां स्वजनैर्वियोग उद्विग्नहृद्देहगदः प्रवासः।
वित्तक्षयं भूपजनैर्व्यथापघातो भवेत्तस्करजा प्रपीडा ॥ ८ ॥

सूर्यकी दशा में निजजनों से वियोग, चित्तमें उद्विग्नता, शरीर में रोग, प्रवास, धननाश, राजाओंसे पीडा, अपघात भय और चोरों से कष्ट होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चन्द्रदशा फल—

विधोर्दशायां प्रभवन्ति दन्तितुरङ्गरत्नानि महाप्रतापः ।
अनेकसौख्यं सकलानुरागः सदन्नपानं विगदं शरीरम् ॥ ९ ॥

चन्द्रमा की दशामें हाथी, घोडे,और रत्नोंका लाभ, महाप्रताप, बहुत प्रकार का सुख, सम्पूर्णजनों से अनुराग, उत्तम अन्नपान और शरीर रोग रहित होता है।

भौमदशा फलः——

शस्त्रप्रहारो द्रविणस्य हानिः कार्य्यस्य नाशो धरणीशपीडा ।
गदः शरीरे भयमग्निचौरैर्दैन्यं दशायामसृजो नरस्य ॥ १० ॥

मङ्गल की दशा में मनुष्य के शरीर में शस्त्र से प्रहार, धनकी हानि, कार्य का नाश, राजा से पीडा, शरीर में रोग, अग्नि तथा चोरों से भय और स्वभाव में दीनता होती है।

राहुदशा फल—

विदेशवासः सुकृतस्य हानिर्ज्ञानप्रणाशो विविधोपतापाः ।
नुर्देहसन्देह इहाखिलेषु कार्य्येषु शून्यत्वमगोर्दशायाम् ॥ ११ ॥

राहु की दशा में विदेश में वास, पुण्यकी हानि, ज्ञानका नाश, अनेक प्रकार के रोग, मनुष्य के शरीर में सन्देह और सम्पूर्ण कार्यों में शून्यता होती है।

गुरु दशा फल—

रोगैर्विमुक्तो विनयार्थयुक्तो भूपप्रतापैः सहितो जयी ना ।
पुण्यार्थकामप्रमुखैः समेतः कान्तासुताढ्यो धिषणस्य दाये ॥ १२ ॥

गुरु की दशामें रोगों से रहित, विनय तथा अर्थ से युक्त एवं राजप्रतापसे युक्त, युद्ध में विजयी, पुण्यार्थ कामादियों से युक्त, स्त्री तथा पुत्रों से भी युक्त होता है।

शनिदशा फल—

अर्थस्य हानिश्च मृषापवादो व्याधिः स्वबन्धोर्विमुखो वधश्च ।
दुःखानि कार्येषु च शून्यता स्यात्पाके पतङ्गात्मभवस्य पुंसाम् ॥ १३ ॥

शनि की दशामें धन की हानि, मिथ्या अपवाद, रोग, अपने बन्धु जनोंसे विमुखता, वध, दुःख और कार्यों में शून्यता होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बुध दशा फल--

चान्द्रेर्दशायां सकलार्थसिद्धिः क्रीडासुखं दिव्यनितम्बिनीनाम् ।
नानाप्रकारद्रविणस्य लाभो भवेद्विलासो विविधं च मानम् ॥ १४ ॥

बुधकी दशा में समस्त अर्थोंकी सिद्धि, उत्तम स्त्रियों के साथ क्रीडासुख, अनेक प्रकार के धन का लाभ, विलास और अनेक प्रकार का मान होता है।

केतु दशा फल--

स्यान्मानभङ्गो धरणीशतः स्त्रीविपद्विरोधः सखिभिः कुटुम्बैः ।
देहव्यथा वित्तविनाशनं च तापः सदा नुः शिखिदायकाले ॥ १५ ॥

केतु की दशा में राजा से मानभङ्ग, मित्रजन तथा कुटुम्बियों से विरोध, शरीर में पीडा धन का नाश और ताप होता है।

शुक्र दशा फल--

भृगोर्दशायां मनुजेन्द्रमान्यो योषानुरक्तो धनधान्ययुक्तः ।
तुरङ्गदन्तावलयुक् प्रमेयो मंत्रे प्रवीणः कुशलस्तु शास्त्रे ॥ १६ ॥

शुक्र की दशा में राजाओंसे मान्य, स्त्रीजनों में अनुरक्तता, धन तथा धान्य से युक्त, घोडे तथा हाथियों से युक्त, प्रमेय (जानने योग्य), मंत्र में प्रवीणता और शास्त्र में कुशलता होती है।

पापदशा में उच्चादि जन्य फल विभाग परिज्ञान--

दशाप्रवेशे निजतुङ्गपूर्वजन्यं फलं स्यात्कलुषग्रहाणाम् ।
भावादिजन्यं किल दायमध्ये दायान्त ईक्षोत्थफलं प्रवाच्यम् ॥ १७ ॥

पापग्रहों की दशाके आरम्भ में उच्चादि राशि जन्य फल, दशा के मध्य में भावादि जन्य फल और दशाके अन्तमें दृष्टिजन्य फल होता है।

शुभदशा में उच्चादि जन्य फलदान विभाग परिज्ञान--

दायादिमे भावसमुद्भवं यन्मध्येदशाया गृहधामजातम् ।
दशावसाने फलमीक्षणोत्थं विज्ञेयमार्य्यैः सकलोत्तमानाम् ॥ १८ ॥

शुभ ग्रहोंकी दशा के आरम्भ में भाव जन्य फल, दशा के मध्य में राशि तथा स्थान जन्य फल और दशाके अन्त में दृष्टि जन्य फल होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शीर्षोदयादिराशिगत ग्रहों के फलदान समय विभाग परिज्ञान--

यदा खगः कोदयराशियातो दिशेत्फलं स्वस्य दशादिमे सः ।
पृष्ठोदयस्थः खचरो दशान्ते सदा प्रदद्यादुभयोदयस्थः ॥ १९ ॥

शीर्षोदय राशिगत ग्रह अपनी दशाके फलको दशाके आरम्भ में देता है। पृष्ठोदय राशिगत ग्रह अपनी दशाके फलको दशाके अन्त में देता है। एवं उभयोदय (मीन) राशिगत ग्रह अपनी दशाके फलको नित्य देता है।

आरोहिण्यादि दशाफल परिज्ञान--

उच्चच्युतस्य खचरस्य दशावरोहि-
सञ्ज्ञा समा भवति सा हिततुङ्गभागे।
आरोहिणी निगदिता ऽधरवर्जितस्य
मध्या मता ऽधरसपत्नगृहांशके सा ॥ २० ॥

उच्च राशि परिच्युत ग्रह की अवरोहसंज्ञक (अशुभ) दशा होती है। यदि वह ग्रह मित्रांश वा उच्चांश में हो तो उसकी दशा मध्यम होती है। एवं नीचराशि परिच्युत ग्रह की आरोहिणी संज्ञक (शुभ) दशा होती है। यदि वह ग्रह नीचराशि वा शत्रु राशि में हो अथवा नीचांश वा शत्रु-नवांश में हो तो उसकी दशा मध्यम होती है।

सूर्याद्यषट्कगृहगा अवरोहसञ्ज्ञा
आरोहका दिविचराः परषट्कयाताः ।
आरोहिणी दिविपदस्त्वनुलोमभुक्ते-
र्ज्ञेया दशा ऽनृजुगतेरवरोहिणी सा ॥ २१ ॥

जो ग्रह सूर्य के प्रथम षट्क में हो अर्थात् सूर्य से छः राशि के अन्तराल में हो तो उसकी दशा अवरोहसञ्ज्ञक होती है। एवं जो ग्रह सूर्य के परषट्क में हो अर्थात् सूर्याधिष्ठित राशि से जो सप्तम राशि हो उस से छः राशि के अन्तराल में हो तो उसकी दशा आरोहिणी-संज्ञक होती है। एवं अनुलोम (मार्ग) गतिवाले ग्रह की दशा आरोहिणी सञ्ज्ञक होती है।

चन्द्रमा की आरोहिणी तथा अवरोहिणी दशा का परिज्ञान--

वार्द्धेर्जयोत्थावसरे सुधांशोर्दशा तु पुंसामुदयाह्वयोक्ता ।
सा रोहिणी स्यादिह तद्विलोमाज्ज्ञेया पुराणैरवरोहिणी सा ॥ २२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

समुद्रजपोत्थ (ज्वारभाट) के समय में चन्द्रमाकी उदयसन्ज्ञक अर्थात् आरोहिणीदशा होती है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो अर्थात् समुद्रजपोत्थके अतिरिक्त समयमें चन्द्रमाकी अवरोहिणीदशा होती है।

प्रकारान्तर से चन्द्रमाकी आरोहिणी आदि दशा का परिज्ञान—

आरोहिणी दशा ग्लावो राकान्तं सितपक्षतेः ।
दर्शान्तं कृष्णपक्षाद्यतिथेः स्यादवरोहिणी ॥ २३ ॥

शुक्ल प्रतिपदाके आरम्भ काल से पौर्णमासी की समाप्ति पर्यन्त चन्द्रमाकी आरोहिणीदशा होती है। एवं कृष्ण प्रतिपदा के आरम्भ कालसे अमावास्या की समाप्ति पर्यंत चन्द्रमाकी अवरोहिणी दशा होती है।

खरग्रह परिज्ञानः—

जन्मोदयत्रिभागाद्यः खरो द्वाविंशतिर्लवः ।
शशाङ्कस्थांशराशेर्यो ऽष्टयंङ्गांशेशो मृतिप्रदः ॥ २४ ॥

जन्म लग्न में जिसराशि का द्रेष्काण वर्त्तमान हो उस से बाईसवी राशि का द्रेष्काण अर्थात् अष्टम भाव में जिस राशि का द्रेष्काण वर्त्तमान हो वह 'खरसंज्ञक' होता है। एवं जन्म समय में 'चन्द्रमा' जिस राशि के नवांश में हो उस से चौसठ वीं राशि का नवांश अर्थात् अष्टम भाव में जिस राशि का नवांश वर्त्तमान हो वह 'खर संज्ञक' अर्थात् मृत्यु देने वाला होता है।

छिद्र ग्रह परिज्ञानः—

छिद्रग्रहा मृतिपयुक् मृतिगो विनाश-
नाथाध्यरिर्मृतिपतिः खरपः स्युरेते ।
रन्ध्रेक्षको ऽब्धिरसभागपतिर्यएषु
प्राणी खगो मरणमेति तदीयदाये ॥ २५ ॥

अष्टमेश से युक्त ग्रह, अष्टमस्थ ग्रह, अष्टमेश का अधि शत्रु ग्रह अष्टमेश बाईस वें द्रेष्काण का स्वामी, अष्टम दर्शी और चौसठ वें नवांश का स्वामी ये 'सात छिद्र ग्रह' हैं' इन सात छिद्र ग्रहों के मध्य में जो 'ग्रह' सब से अधिक बली हो उस की दशा में मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है।

ग्रहों के मृत्युकारक स्थान का परिज्ञानः—

सूरिः शौर्यगतो ऽस्तगः कुज इनो ऽन्त्यस्थः शशी मृत्युगो-
मन्दो मूर्तिगतो बुधो मदनगो ऽहिर्भाग्यगो ऽच्छो ऽरिगः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मृत्युस्थानमितीरितं दिविपदां तस्मिन्खलाढ्येक्षिते
किंवा नीचसपत्नराशिसहिते किं दुर्बले दुःखभाक् ॥ २६ ॥

तृतीयस्थान गत गुरु, सप्तम गत भौम, द्वादशस्थ सूर्य, अष्टमस्थ चन्द्रमा, लग्नगत शनि, सप्तमस्थ बुध, नवमस्थ राहु और षष्ठ गत शुक्र मृत्युप्रद होता है। ये ग्रहों के मृत्युस्थान कहे हैं। मृत्युस्थान गत ग्रह यदि पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो अथवा नीचराशि वा शत्रु राशि में हो अथवा दुर्बल हो तो वह दुःख देने वाला होता है।

योगिनियों के नामः—

मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्राम्या भद्रोल्किका ततः।
सिद्धाख्या सङ्कटा चैता योगिन्योऽष्टौ बुधैः स्मृताः ॥ २७ ॥

मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और सङ्कटा ये आठ योगिनी पण्डितोंने जाननी।

योगिनियों के स्वामियों का परिज्ञान—

क्षपानाथो दिवानाथो जीवारज्ञपतङ्गजाः।
सितोऽगुः क्रमतस्त्वेते योगिनीनामधीश्वराः ॥ २८ ॥

चन्द्र, सूर्य, गुरु, भौम, बुध, शनि, शुक्र और राहु ये क्रम से मङ्गलादि आठ योगिनियों के स्वामी हैं।

प्रथम दशेशानयन तथा दशेशों के वर्षों का परिज्ञान—

जन्मोडुसंख्या सगुणाऽष्टतष्टा स्यान्मङ्गलायाः क्रमतो दशाऽब्दाः।
भूनेत्ररामाब्धिशराङ्गशैलव्यालाः क्रमाद्योगिनिकाभिधानाम् ॥ २९ ॥

जन्म नक्षत्र की संख्या में ३ युक्त कर के ८ से भाग दे तब जो शेष बचे उस के तुल्य मङ्गला से योगिनीदशा में प्रथम दशेशा होती है। १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ ये क्रम से मङ्गलादि योगिनियों के वर्ष हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'योगिनीदशेशतदब्दबोधकचक्रम्'।

योगिनि	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	म.	उ.	सि.	सं.
स्वामिनः	चं.	सू.	बृ.	मं.	बु.	श.	शु.	रा.
वर्षाणि	१	२	३	४	५	६	७	८
नक्षत्रा.	आर्द्रा	पुनर्व.	पुष्यः	आश्ले.	मघा.	पू. फा.	उ. फा.	हस्त.
नक्षत्रा.	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूलम्	पू. षा.	उ. षा.
नक्षत्रा.	श्रव.	धन.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेवति	.	.
नक्षत्रा.	.	.	.	अश्वि.	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृग

—: उदाहरण :—

यहां जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी है उस की संख्या १२ में ३ युक्त किये तो १५ हुए। इन में ८ से भाग दिया तो ७ शेष बचे। मङ्गला से शेष संख्या ७ पर्यन्त गिना तो योगिनी दशा में सिद्धा की आद्य दशा हुई।

योगिनीदशा साधन रीति—

जन्मर्क्षगम्यघटिकाः स्वशरद्विनिघ्न्यः
पङ्क्तिः पुनर्विनिहता द्युमुखा दशा ताम्।
अब्दाननां कुरु समा अखिलाः परासां
योज्याः क्रमाद् भवति योगिनिका दशेति ॥ ३० ॥

जन्म नक्षत्र के घट्यादि स्पष्ट भोग्य को आद्यदशेशा के पूर्वोक्त वर्षों से गुणकर जो गुणन फल हो उसको पुनः ६ से गुणे तब 'दिनादि दशा' होती है। उसे दिनादि दशा को वर्षादि करे तब 'आद्यदशेशा की वर्षादि दशा' होती है। उस वर्षादि दशा में अन्ययोगिनियों के पूर्वोक्त सम्पूर्ण वर्षों को क्रमसे युक्त करे तब 'वर्षादि योगिनी दशा' होती है।

—: उदाहरण :—

जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी का घट्यादि स्पष्ट भोग्य ५१।३६।१३।३० को आद्यदशेशा सिद्धा के ७ वर्षों से गुणा तो ३६१।१३।३४।३० हुए। इनको पुनः ६ से गुणा तो २१६७।२१।२७ 'दिनादिदशा' हुई। दिन २१६७ में ३० से भाग दिया तो लब्ध ७२ 'मास' और शेष ७ 'दिन' हुए। मास ७२ में १२ से भाग

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दिया तो लब्ध ६ 'वर्ष' और शेष ० 'मास' हुआ। इस प्रकार ६ वर्ष ० मास ७ दिन २१ घटी २७ पल 'आद्यदशेशा सिद्धा की वर्षादि दशा' हुई। सिद्धा के ५ वर्ष में सिद्धा के अग्रस्थ सङ्कटा के ८ वर्ष को युक्त किया तो १३ वर्ष ० मास ७ दिन २१ घटी २७ पल सङ्कटा की वर्षादि दशा हुई। एवं शेष योगिनियों की वर्षादि दशा को साधे।

'योगिनीदशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

योगिन्यः	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	ध.	उ.
	६	८	१	२	३	४	५	६
	०	०	०	०	०	०	०	०
	७	०	०	०	०	०	०	०
	२१	०	०	०	०	०	०	०
	२७	०	०	०	०	०	०	०
१८१९	१८२५	१८३३	१८३४	१८३६	१८३९	१८४३	१८४८	१८५४
२	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८
२९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१
४९	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
	७	८	१	२	३	४	५	६
	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०
१८५४	१८६१	१८६९	१८७०	१८७२	१८७५	१८७९	१८८४	१८९०
२	२	२	२	२	२	२	२	२
२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८
५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६

मङ्गलादशा फल—

मङ्गला द्रविणरत्न धोरणलाभदा रिपुविपत्तिनाशिनी।
मन्दिरात्मजनिताम्बिनीजनलाभदा ऽखिलशुभोदया सदा ॥ ३१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'मङ्गला दशा' धन, रत्न तथा वाहन का लाभ देने वाली, शत्रु तथा विपत्ति को नाश करने वाली एवं गृह, पुत्र तथा स्त्री जन का लाभ देने वाली और समस्त मङ्गलोंका उदय करने वाली होती है।

पिङ्गला दशा फल--

पिङ्गला वितनुते ऽन्तिमे व्यथां सम्मदं प्रथमके कुलामयम् ।
व्यग्रतां निजजनैश्च विग्रहमामनन्त्यमिह शोकमङ्गिनाम् ॥ ३२ ॥

'पिङ्गला दशा' दशा के अन्त्य समय में पीडा और आरम्भ समय में हर्ष को करती है। तदनन्तर कुलरोग, चित्त में व्यग्रता, अपने लोगों से कलह, कष्ट और शोक को करती है।

धान्या दशा फल----

चित्रवस्त्रधनधान्यसंयुतं धीरतां तनयकामिनीसुखम् ।
राजमान्यमथ मित्रसौख्यकं धान्यिका प्रकुरुते जयं रणे ॥ ३३ ॥

'धान्या दशा' विचित्रवस्त्र, धन तथा धान्य से युक्त, धैर्यवान, पुत्र तथा स्त्रीके सुख, राजासे सम्मान, मित्रजनोंका सुख और सङ्ग्राम में विजय को करती है।

भ्रामरी दशा फल----

भ्रामरी जनरुपं सुखोज्झितं हानिमामयमृणं विदेशकं ।
वा भ्रमं युवतिविग्रहे व्यथां भ्रामयेत्सकलदेशमुद्भ्रमम् ॥ ३४ ॥

'भ्रामरीदशा' लोगों से रोष, सुख से वर्जित, हानि, रोग ऋण, विदेश में भ्रमण, स्त्रीजनोंके कलह में पीडा और समस्त देशमें उद्भ्रम (भ्रमण) को करती है।

भद्रिका दशा फल----

करोति भद्रा वसुधेशमान्यं गुणप्रकाशं धनमोदवृद्धिम् ।
भद्रं समीचीनविभूषणस्य वस्त्रस्य लाभं सुवधूविलासम् ॥ ३५ ॥

'भद्रिकादशा' राजा से मान्यता, गुणका प्रकाश, धन तथा हर्षकी वृद्धि, कल्याण, उत्तमभूषण और वस्त्र का लाभ एवं उत्तम स्त्रियोंके विलास को करती है।

उल्का दशा फल—

ज्वरप्रकोपं सखिबन्धुवैरं तथोपतापं स्वजनैर्विवादम् ।
कष्टं स्वदेशप्रमदावियोगं करोत्यनर्थं सततं दशोल्का ॥ ३६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

' उल्का ' दशा ज्वर का प्रकोप, मित्र तथा बन्धु जनों से वैर, ज्वरताप (रोग) निजजनोंसे विवाद, कष्ट धन, देश और स्वजनों का वियोग एवं नित्य अनर्थ को करती है)

सिद्धा दशा फल—

सिद्धादशा नन्दनवृद्धिसौख्यं सिद्धं च सौख्यं स्वजनादिकानाम् ।
यशोगुणं भूपजनाभिमानं राज्यस्य लाभं प्रकरोति सिद्धिम् ॥ ३७ ॥

' सिद्धादशा ' पुत्र वृद्धि का सुख, सिद्धत्व, निजजनादियों का सौख्य, कीर्ति, गुण, राजाओं से सम्मान, राज्य का लाभ और सिद्धि को करती है ।

सङ्कटा दशा फल—

प्रवासकामं चतुरंघ्रिसंक्षयं ज्वरस्य कोपं वसुधेशसङ्कटम् ।
जनैर्विवादं युवतिप्रसूतिजं गृहेऽल्पवासं वितनोति सङ्कटा ॥ ३८ ॥

' सङ्कटादशा ' प्रवास की अभिलाषा, पशुओं का नाश ज्वर का प्रकोप राजा से सङ्कट, निजजनों से कलह स्त्रियों के लिए कष्ट और गृह में अल्पवास को करती है ।

रौद्राद्यष्टोत्तरी दशा साधन रीति—

चतुस्त्रिभेष्वीशमघार्कमैत्राम्बुवस्वहिर्बुध्न्ययकृशानुभेभ्यः ।
दशा रवीन्द्वारबुधार्किजीवतमःकवीनां रसवासरेभाः ॥ ३९ ॥
मेघा दिशो गोवसुधाः पतङ्गाः स्वर्गास्तदब्दाः क्रमशः शुभस्य ।
खेटस्य यातर्क्षघटीगणोनाः खाष्टेन्दवः स्वाब्दहता विभक्ताः ॥ ४० ॥
खाहीन्दुभिः सौम्यदशा ग्रहस्योग्रस्येंततारावटिकौघहीनाः ।
खाब्ध्यश्विनः स्वाब्दगुणाः खसिद्धभक्ता दशाऽद्युसदः समाद्या ॥ ४१ ॥

आर्द्रादि चार, मघादि तीन हस्तादि चार, अनुराधादि तीन, पूर्वाषाढादि चार, धनिष्ठादि तीन, उत्तराभाद्रपदादि चार और कृत्तिकादि तीन नक्षत्रों में क्रम से सूर्य, चन्द्र भौम, बुध, शनि गुरु, राहु और शुक्र की दशा होती है । ६, १५, ८, १७, १०, १९, १२, २१ ये क्रम से उक्त दशेशों के वर्ष हैं । यदि जन्म समय (आरम्भ) में शुभ ग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र) की प्रथम दशा हो तो दशेश के जितने नक्षत्र भुक्त हो गये हों उन सब की (प्रत्येक की) साठ साठ घटियों के योग में जन्म नक्षत्र की भुक्त घटियोंको युक्त करे तब नक्षत्र भुक्त घटीगण होता है । तदनन्तर उस नक्षत्र भुक्त घटीगण को १८० में हीन करे तब जो शेष बचे उस को दशेश के वर्षोंसे गुणकर १८० से भाग दे लब्ध शुभ ग्रह की वर्षादि दशा होती है । एवं पाप ग्रह (रवि, मङ्गल शनि, और राहु) की प्रथम दशा हो तो नक्षत्र भुक्त घटीगण को २४० में हीन करे तब जो शेष बचे उसको आद्यदशेश के वर्षों से गुणकर २४० से भाग दे लब्ध ' पापग्रह की वर्षादि दशा ' होती है । तदनन्तर शुभ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वा पाप आद्यदशेशकी वर्षादि दशा में आद्यदशेश के अग्रस्थ ग्रहों के पूर्वोक्त समस्त वर्षों को क्रमशः युक्त करे तब 'रौद्राद्यष्टोत्तरीदशा' होती है।

'रौद्राद्यष्टोत्तरीदशाशतदूरुवर्षबोधकचक्रम'।

दशेशाः	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बृ.	रा.	शु.
वर्षाणि	६	१५	८	१०	१०	१९	१२	२१
ध्रुवाङ्काः	२४०	१८०	२४०	१८०	२४०	१८०	२४०	१८०
नक्ष.	आर्द्रा ६०	मघा. ६०	हस्तः ६०	अनुरा. ६०	पू. षा. ६०	अभि. ६०	उ. भा. ६०	कृत्तिका ६०
नक्ष.	पुनर्व. ६०	पू. फा. ६०	चित्रा ६०	श्रवि. ६०	उ. षा. ६०	धनि. ६०	स्वाति. ६०	रोहिणी ६०
नक्ष.	पुष्यः ६०	उ. फा. ६०	स्वाती ६०	मूले. ६०	अभि. ६०	पू. भा. ६०	अश्विनी ६०	मृग. ६०
नक्ष.	आश्ले. ६०	.	विशा. ६०	.	श्रव. ६०	.	भरणी ६०	.

—: उदाहरण :—

यहां उत्तराफाल्गुनी जन्म नक्षत्र है। मघा से तीन नक्षत्रों में 'चन्द्रमा की दशा' होती है अतः 'आद्यदशेश चन्द्रमा' हुआ। यहां आद्यदशेश चन्द्रमा के मघा और पूर्वाफाल्गुनी ये दो नक्षत्रगत होगये हैं। प्रत्येक नक्षत्र की ६० घटी परम मान होने से दोनों गत नक्षत्रों की परम मान घटियों का योग किया तो १२० हुए। इन में वर्त्तमान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के धन्यादि स्पष्ट भुक्त ८।२३।४६।३० को युक्त किया तो १२८।२३।४६।३० 'नक्षत्र भुक्त घटी गण' हुआ। इसको चन्द्रमा के ध्रुवांक १८० में तीन किया तो ५१।३६।१३।३० शेष बचे। इनको आद्यदशेश चन्द्रमा के १५ वर्ष से गुणा तो ७७४।३।२२।३० हुए। इन में १८० से भाग दिया तो लब्ध ४ वर्ष ३ मास १८ दिन ६ घटी ४५ पल 'आद्यदशेश चन्द्रमा की वर्षादि रौद्राद्यष्टोत्तरीदशा' हुई। इस में चन्द्रमा का अग्रस्थ ग्रह भौम के ८ वर्ष को युक्त किया तो १२ वर्ष ३ मास १८ दिन ६ घटी ४५ पल भौमकी दशा हुई। एवं अन्य ग्रहों के दशा को साधे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'रौद्राद्यष्टोत्तरीदशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

दशेशाः	चं.	मं.	बु.	श.	सू.	रा.	शु.	गु.
	४	८	१७	१०	१९	१२	२१	६
	३	०	०	०	०	०	०	०
जन्मशकादि	१८	०	०	०	०	०	०	०
	६	०	०	०	०	०	०	०
	४५	०	०	०	०	०	०	०
१८१९	१८२३	१८३१	१८४८	१८५८	१८७७	१८८९	१९१०	१९१६
२	६	६	६	६	६	६	६	६
२१	९	९	९	९	९	९	९	९
२९	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६
४९	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४

शनि दशा साधनका विशेष नियम—

यदि जन्म समय में पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो पूर्वोक्त क्रिया से शनिकी दशाका साधन करे। उत्तराषाढा तथा श्रवण नक्षत्र में जन्म हो तो वक्ष्यमाण विधिसे शनि की वर्षादि दशा को साधे। यदि उत्तराषाढाकी स्पष्ट भुक्त घटी ४५।० से न्यून हो तो उनको ४ से गुणकर ३ से भागदे लब्ध उत्तराषाढा की स्पष्ट भुक्त घटी होती हैं। यदि उत्तराषाढाकी स्पष्ट भुक्त घटी ४५।० हों या इन से अधिक हों तो उनमें ४५।० को घटाकर तब जो शेष बचे उसको ६० से गुणकर १९ से भाग दे लब्ध अभिजित् नक्षत्रका घट्यादि स्पष्ट भुक्त होता है। यदि 'श्रवण' जन्म नक्षत्र हो और उसका घट्यादि स्पष्ट भुक्त ४।० सेन्यून हो तो उसमें १५।० को युक्तकरके ६० से गुणकर १९ से भाग दे लब्ध अभिजित् नक्षत्र का घट्यादि स्पष्ट भुक्त होता है। यदि श्रवण नक्षत्र का स्पष्ट भुक्त घट्यादि ४।० हों या इनसे अधिक हों तो उनमें ४।० को घटाकर जो शेषबचे उसको ६० से गुणकर ५६ से भाग दे लब्ध श्रवण नक्षत्र का घट्यादि स्पष्ट भुक्त होता है। उक्त विधि से लब्ध हुए उत्तराषाढा अथवा श्रवण के घट्यादि स्पष्ट भुक्त को ६०।० में घटाकर जो शेषबचे वह अभीष्ट नक्षत्र का घट्यादि स्पष्ट भोग्य होता है। तदनन्तर उस घट्यादि स्पष्ट भोग्य को १५ से गुणकर जो गुणन फल हो वह दिनादि दशा होती है। उस दिनादि दशा को वर्षादि करें तब वह मध्यम वर्षादि दशा होती है। तदनन्तर शनि के भोग्य नक्षत्रों की संख्या से १५ को गुणकर तब जो गुणन फल हो उसको २ से गुणकर पूर्वागत मध्यम वर्षादि दशा के मासों में युक्त करके १२ से भाग दे लब्ध को वर्षों में युक्तकरे और शेष मास होते हैं। इस प्रकार शनि की स्पष्ट वर्षादि रौद्राद्यष्टोत्तरी दशा होती है।

चरदशा साधन रीति—

ओजास्त्रयोऽजाद् घटतोऽथ कर्कात्त्रिकात्त्रयो वत्सरका अमीषु।
क्रमोत्क्रमाज्ज्ञेर्गणना विधेया विधिर्दशाब्दानयने विधेयः॥ ४२॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मेष और तुलासे तीन तीन राशियां 'विषम' होती हैं। कर्क और मकर से तीन तीन राशियां 'सम' होती हैं। विषम राशियों में क्रमसे वर्षगणना को करे और सम राशियों में उत्क्रम से वर्ष गणना को करे।

स्वात्स्वाधिपान्ताः शरदः सनाथराशेर्महाराशिमिताः समाः स्युः।
राशीश्वरश्चेन्निजतुङ्गनीचगतस्तदब्दाः सधरा विरूपाः॥ ४३॥

इष्ट राशि से इष्ट राशि के स्वामी पर्यन्त गिनकर जितनेस्थान हों उतने ही इष्ट राशि के वर्ष होते हैं। यदि राशिका स्वामी अपनी ही राशि में स्थित हो तो 'राशि के १२ वर्ष' होते हैं। जिस राशिका स्वामी अपनी उच्च राशि में स्थित हो उसके पूर्वोक्त रीति से लब्ध हुए वर्षों में १ युतकरे तब राशि के स्पष्टवर्ष होते हैं। एवं जिस राशिका स्वामी अपनी नीच राशि में हो उस के पूर्वोक्त रीति से लब्ध हुए वर्षों में १ को हीनकरे तब राशि के स्पष्ट वर्ष होते हैं।

अलेः पती केतुकुजौ घटस्य तमोमृद् द्वीशयुतौ यदा तौ।
तदा समाः सूर्यमिता न तत्रैकश्चेत्तदैकद्युचरः स्वभस्थः॥ ४४॥
अन्यः परत्रस्थ इहान्यभस्थं नाथं गृहीत्वा तु दशां नयेत।
द्वावन्यभस्थौ बलवांस्तयोर्यः स स्यात्तदीशो विषमात्सखेटः॥ ४५॥
प्राणी सखेटादधिकग्रहो बली बलस्य साम्ये सति खेटयोर्यदा।
चिन्त्यं तदा राशिबलाद्बलं चरस्थास्नुद्विदेहा बलिनस्तदौजसः॥ ४६॥
तुल्ये तदा चेद्बहुवर्षदो बली त्वेको ग्रहः स्वोच्चगतोऽन्यखेचरः।
अन्यत्र संस्थो निजतुङ्गसंस्थितोगृहाण तंचान्यभगं विहाय वित्॥ ४७॥
परत्र संस्थो बहुवर्षदोऽपि चेदन्यत्रगःस्तुङ्गगतोऽल्पवर्षदः।
गृह्णातु तुङ्गंगतमल्पवर्षदं दशा चरारव्या कथिता विचक्षणैः॥ ४८॥

वृश्चिक राशिके केतु और मङ्गल दो स्वामी हैं। कुम्भ राशि के राहु और शनि दो स्वामी हैं। यदि ये दोनों राशियां अपने २ दोनों ही स्वामियों से युक्त हों तो इन दोनों राशियों के १२।१२ वर्ष होते हैं। यदि उक्त राशियां एक ही स्वामी से युक्त हो तो इनके १२ वर्ष नहीं होते हैं। उन दोनों स्वामियोंमें से एक ग्रह अपनी राशिमें हो और दूसरा ग्रह अन्य की राशि में हो तो अन्य ग्रह की राशि में स्थित ग्रह को ग्रहण करके दशा के वर्षों को साधे अर्थात् उस राशि से अन्यग्रह की राशि में स्थित स्वामी पर्यन्त की गणना को करे। यदि दोनों ग्रह अन्य ग्रह की ही राशि में स्थित हों तो उन दोनों में जो अधिक बलीग्रह हो वह 'राशि स्वामी' होता है। यहां बलका विचार इस प्रकार करना चाहिए कि ग्रहसे अयुक्त ग्रहकी अपेक्षा 'ग्रहयुक्त ग्रह' बलवान् होता है। ग्रहयुक्त ग्रह की अपेक्षा 'अधिक ग्रहयुक्त ग्रह' बलवान् होता है। यदि दोनों स्वामियों का बल समान हो तो राशि के बल से बल का विचार करे। चर राशि की अपेक्षा स्थिर राशि बलवान् और स्थिर राशि की अपेक्षा द्विस्वभाव राशि बलवान् होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यदि राशियोंका बल समान होतो ' बहु वर्ष प्रद ग्रह ' बलवान् होता है। उन दोनों स्वामियों में से एक ग्रह अपनी उच्चराशि में स्थित हो और दूसरा ग्रह अन्य ग्रह की राशि में स्थित होतो उच्च राशिगत ग्रह को ग्रहण करे और अन्य राशि में स्थित ग्रह को त्याग दे। यदि अन्य ग्रह की राशि में स्थित ग्रह बहु वर्षप्रद भी होतो उच्चराशिगत स्वल्प वर्ष प्रद ग्रह को ही ग्रहण करे इस प्रकार पण्डितजनोंने चरदशा कही है।

—: उदाहरण :—

' जनुलानुरेखा '।

तनु भाव में मीन राशि है यह समसञ्ज्ञक है अतः उत्क्रमसे वर्षगणना करनी--चाहिये । मीन राशिका स्वामी गुरु है। यह सिंह राशिमें स्थित है। मीन राशिसे उत्क्रम के नियम से स्वामी स्थित राशि सिंह पर्यन्त वर्ष-गणना करनी है अतःमीनको छोडकर कुम्भ १, मकर २, धनु ३, वृश्चिक ४, तुला ५, कन्या ६, सिंह ७, हुए। इस प्रकार मीन राशिके ७ वर्ष हुए। धन भाव में मेष राशि है। यह विषम है। विषम होने के कारण क्रमसे गणना करनी है। यहां मेष राशिका स्वामी मङ्गल सिंह राशि में है अतः मेष को छोडकर वृष १, मिथुन २, कर्क ३, सिंह ४, हुए। इस प्रकार मेष राशिके ४ वर्ष हुए। सहज भावमें वृष राशि है। इसका स्वामी शुक्र इसी में स्थित है इसलिए वृष राशिके १२ वर्ष हुए। एवं शेष राशियोंके वर्षों को साधे।

वृश्चिक राशि के केतु और मङ्गल ये दो स्वामी हैं। यहां वृश्चिक राशि दोनों स्वामियोंसे युक्त नहीं है ये दोनों स्वामी अन्य ग्रहों की राशि में स्थित हैं अतः इन दोनोंके मध्य में जो बली हो वही राशिस्वामी होगा। केतु कर्क में है और मङ्गल सिंह में है। यहां केतु ग्रह रहित है और मङ्गल ग्रह सहित है अतः केतुकी अपेक्षा मङ्गल अधिक बली हुआ। मङ्गल बलवान् होनेसे मङ्गल ही वृश्चिक राशिका स्वामी हुआ। वृश्चिक राशि विषम है इस, लिए क्रमसे धनु १, मकर २, कुम्भ ३, मीन ४, मेष ५, वृष ६, मिथुन ७, कर्क ८, सिंह ९, हुए। इस प्रकार वृश्चिक राशिके ९ वर्ष हुए।

कुम्भ राशिके राहु और शनि ये दो स्वामी हैं। यहां कुम्भ राशि के दोनों स्वामी अन्य ग्रहोंकी राशियों में स्थित हैं। यहां शनि वृश्चिक राशि में है और राहु मकर राशि मे स्थित है ये दोनों ग्रह रहित हैं। ' राहु ' चरराशिमें और ' शनि ' स्थिर राशि में है अतः राहुकी अपेक्षा ' शनि ' बलवान् हुआ। शनिके बलवान् होने के कारण कुम्भ राशिका स्वामी ' शनि ' हुआ। कुम्भ राशि सम है अिसलीए उत्क्रमसे शनि पर्यन्त गिनातो मकर १, धनु २, वृश्चिक ३, हुए। इस प्रकार कुम्भ राशिके ३ वर्ष हुए।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

न्यासारव्ययोः पुष्कर वासहीनयोरेकस्य वान्येन युतौ खगोनितः।
ग्राह्यः सराशिर्यदि तत्पतिर्निजतुङ्गगतोऽथैकगृहेस्वराशिगः ॥ ४९ ॥
नभश्चरोऽन्यत्र यदि ग्रहौ द्विकौ युतिं विहायाम्बरचरिणोर्द्वयोः।
सङ्ग्राहयेत्पूर्वगृहं समं समालोच्यैवमाहुर्निधनं दशासु हि ॥ ५० ॥

न्यास सञ्ज्ञक (लग्न और सप्तम) स्थान में कोई ग्रह न हो अथवा लग्न और सप्तम स्थान के मध्यमें कोई एक स्थान स्वामी को छोडकर किसी अन्य ग्रहसे युक्त हो तो ग्रह रहित राशि ग्रहण करनी चाहिए अर्थात् यह राशि बलवान् होती है। अथवा लग्न और सप्तम के मध्य में जिस राशिका स्वामी अपनी उच्च राशि में हो वह राशि बलवान होती है। अथवा लग्न और सप्तमके मध्य में एक राशि अपने स्वामी से युक्त हो और दूसरी राशि दो ग्रहों करके युक्त हो तो अपने स्वामी से युक्त राशि ग्रहण करनी चाहिए। प्रकान्तर से यह ' राशिबल ' पण्डित जनों ने कहा है। परन्तु यह मत गौण और पूर्वोक्त मुख्य मत जानना चाहिए। इस प्रकार राशियों समस्त बला बल को विचार कर राशि दशाओं में मृत्युको कहे।

योगे ग्रहाणामसतां खलानां दृष्ट्याऽथवा यस्य खला नभोगाः।
प्रबन्धगाः पुण्यगृहोपगाश्च तेषां दशायां विधिनाऽन्त उक्तः ॥ ५१ ॥

जो राशि पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो अथवा जिसके जन्म समय में पञ्चम वा नवम में पापग्रह हों उनको दशा में मरण कहे।

दशा लेखन रीति—

पौरगेहात्पार्थिस्थान ओजराशिर्भवेद्यदि।
लग्नात्क्रमाद् दशा लेख्या समस्तत्वोत्क्रमात्तदा ॥ ५२ ॥

लग्नसे नवम स्थान में यदि विषम राशि हो तो लग्न के क्रमसे दशा को लिखे। एवं लग्न से नवम स्थान मे सम राशि हो तो लग्न के उत्क्रम से दशा को लिखे।

चरदशा में विशेष नियम—

यदि चरदशा में राशियों पर शूल लगाना अभीष्ट हो तो अष्टमेश जिस राशि में हो उस में ' प्रथमशूल ' अष्टमेश से पञ्चम राशिपर ' द्वितीयशूल ' और अष्टमेश से नवम राशि पर ' तृतीयशूल ' होती है शूलसहित राशि की दशा अशुभ होती है।

—: उदाहरण :—

' मीन ' जन्मलग्न है, लग्नसे नवमस्थान में वृश्चिक राशि है, यह विषम राशि है अतः लग्न के क्रमसे दशा स्थापन की तो मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर कुम्भ इस प्रकार दशाक्रम हुआ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चरदशाक्रमः' । 'उदाहरणमेतत्' ।

राशयः	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	योगः
	७	४	१२	१२	११	२	३	७	९	८	२	३	८०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
जन्मशकादि	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८१९	१८२६	१८३०	१८४२	१८५४	१८६५	१८६७	१८७७	१८७७	१८८६	१८९४	१८९६	१८९९	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	
२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	
४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	

कालचक्रीदशा साधन रीति—

दस्रान्तकाग्न्यदितिभेज्यभुजङ्गभानु-
चित्रानभस्वदसुरोदकवैश्वदेवाः ।
रेवत्युभाजचरणा इह सव्यभानि
केन्द्वीशपैत्र्यभगभार्यममैत्रराधाः ॥ ५३ ॥
वस्वैन्द्रकर्णवरुणा अपसव्यभानि
सूर्यात्समा विषयनाकतुरङ्गगावः ।
काष्ठाकुनाथनिगमाः स्फुटचन्द्रलिप्ताः
खानन्तलोचनहताः कुयुता लवाप्ते ॥ ५४ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, रेवती, उत्तराभाद्रपदा और पूर्वाभाद्रपदा ये 'सव्य नक्षत्र' हैं। रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, अनुराधा, विशाखा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, श्रवण और शतभिषा ये 'अपसव्य नक्षत्र' हैं। ५ सूर्य के, २१ चन्द्रमा के, ७ मङ्गल के, ९ बुध के, १० गुरु के, १६ शुक्र के, ४ शनि के वर्ष हैं। स्पष्ट चन्द्र की कला में २०० से भाग दे तब जो लब्ध हो उस में १ युक्त करके १२ से तष्टकर शेष चन्द्रमा की वर्त्तमान नवांश राशि होती है।

—: उदाहरण :—

उत्तराफाल्गुनी जन्मनक्षत्र है। यह अपसव्यसंज्ञक है। राश्यादि स्पष्ट चन्द्र ४।२८।३१।५७ की कला ८९११।५७ में २०० से भाग दियातो लब्ध ४४ हुए। इनमें १ युक्त कियातो ४५ हुए। इनको १२ से तष्ट

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कियातो ९ शेषबचे । मेष से गणना की तो धनुराशि के नवांश में 'चन्द्रमा' हुआ । अथवा गतनक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी की संख्या ११ को ४ से गुणातो ४४ हुए । इनमें वर्तमान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम पादको युक्त कियातो ४५ हुए । इनको १२ तक कियातो ९ शेषबचे । अतः 'चन्द्रमा' धनु के नवांश में हुआ ।

सव्येऽजे कुजकाव्यविद्विधुरविज्ञाच्छारसौरा वृषे
कालार्कीज्यकुजास्फुजिद्बुधविधुध्वान्तारिराज्या युगे ।
भाराचार्य्ययमासितार्य्यरुधिरेन्द्वारीज्यसौम्यास्ततः
कर्के राजरविज्ञभार्गवकुजार्य्यार्कीनजेज्याः क्रमात् ॥ ५५ ॥

एवं मृगार्य्यंशकतो हयाङ्गाज्ज्ञेया दशेशास्त्रिरजाच्छनं च ।
शराहयो ग्रामगजा रसेभाः परायुषोऽद्रा हयभादिकेषु ॥ ५६ ॥

अश्विन्यादि सव्य नक्षत्रगत चन्द्रमा यदि मेषांशक में वर्तमान हो तो मङ्गल, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मङ्गल, गुरु ये दशेश होते हैं । यदि सव्य नक्षत्रगत चन्द्रमा वृषांशक में वर्तमान हो तो शनि, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, बुध ये दशेश होते हैं । सव्यनक्षत्रगत चन्द्रमा मिथुनांश में हो तो शुक्र, मङ्गल, गुरु, शनि, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र, बुध ये दशेश होते हैं ।

सव्य नक्षत्र गत चन्द्रमा कर्कांश में हो तो चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मङ्गल, गुरु, शनि, शनि, गुरु ये दशेश होते हैं । यदि अश्विन्यादि सव्यनक्षत्रगत 'चन्द्रमा' सिंहांश और धनु अंश में हो तो मेषांश के समान दशेश होते हैं । एवं वृषांश के तुल्य कन्यांश और मकरांशमें; मिथुनांश के तुल्य, तुलांश और कुम्भांश में; कर्कांश के तुल्य; वृश्चिकांश और मीनांश में दशेश होते हैं । यदि सव्यनक्षत्रगत चन्द्रमा मेष, सिंह और धनु के नवांश में हो तो १०० वर्ष की परमायु; वृष, कन्या और मकरांश में ८५ वर्ष की परमायु; मिथुन, तुला और कुम्भांश में ८३ वर्ष की परमायु एवं कर्क, वृश्चिक और मीनांश में ८६ वर्ष की परमायु होती है ।

छागे मंत्रियमेनभृगुरुकुजाच्छज्ञेनचन्द्रा वृषे
सौम्याच्छारसुरेज्यसौरिरविजेज्याराम्फुजित्का यमे ।
चान्द्रीनेन्दुबुधाच्छभौमधिपणार्क्यर्कात्मजाः कर्कटे
ऽसव्ये भूरिकुजासुरेज्यविदिनेन्दुज्ञाच्छभौमाः क्रमात् ॥ ५७ ॥

अभी दशेशा इति सिंहतोऽश्वात्स्मृता अजात्रिः षडिभा गुणाष्टौ ।
नाराचनागाः शतमायुषोऽद्रा त्रिधात्र्यपूर्वेष्वपसव्यभेषु ॥ ५८ ॥

रोहिण्यादि अपसव्य नक्षत्रगत 'चन्द्रमा' मेषांश में हो तो गुरु, शनि, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र, बुध, सूर्य, चन्द्रमा ये दशेश होते हैं । यदि अपसव्य नक्षत्रगत चन्द्रमा वृषांश में हो तो बुध, शुक्र, मङ्गल, गुरु, शनि, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र ये दशेश होते हैं । अपसव्य नक्षत्रगत 'चन्द्रमा' मिथुनांश में हो तो बुध, सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, मङ्गल, गुरु, शनि, शनि ये दशेश होते हैं अपसव्य नक्षत्रगत चन्द्रमा कर्कांश में हो तो गुरु, मङ्गल, शुक्र, बुध, सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, मङ्गल ये दशेश होते हैं । यदि रोहिण्यादि अपसव्य नक्षत्रगत 'चन्द्रमा' सिंहांश, धनु अंश में हो तो मेषांश के समान दशेश होते हैं । कन्यांश और मकरांश में वृषांश के तुल्य; तुलांश और कुम्भांश

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

में मिथुनांशके तुल्य; वृश्चिकांश और मीनांश में कर्कांश के समान दशेश होते हैं। यदि अपसव्यनक्षत्रगत 'चन्द्रमा' मेष, सिंह और धनुर्नवांश में हो तो ८६ वर्ष की परमायु; वृष, कन्या और मकरांश में ८३ वर्ष की परमायु, मिथुन, तुला और कुम्भांश में ८५ वर्ष की परमायु एवं कर्क, वृश्चिक और मीनांश में १०० वर्ष की परमायु होती है।

—: उदाहरण: —

यहां अपसव्य नक्षत्रगत चन्द्रमा धनुर्नवांश में है अतः गुरु, शनि, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र, बुध, सूर्य, चन्द्रमा ये दशेश हुए और इनके १०, ४, ८, १०, ७, १६, ९, ५, २१ वर्षों का योग कियातो ८६ 'वर्ष की परमायु' हुई।

सव्य नक्षत्रों में देहेश तथा जीवेश परिज्ञान- —

सव्येऽजतोऽस्रयमभेन्दुकुजार्किकाव्ये—
न्द्वारेनभूभविधवस्तनुपाः क्रमेण।
जीवाधिपा धिपणविज्ञसुरेज्यजीव—
विज्ञेज्यजीवबुधबोधनवासवेज्याः ॥ ५९ ॥

सव्य नक्षत्रों में मेषादि अंशों के क्रमसे मङ्गल, शनि, शुक्र, चन्द्र, भौम, शनि, शुक्र, चन्द्र, भौम, शनि शुक्र, चन्द्रमा ये 'देहेश' होते हैं। गुरु, बुध, बुध, गुरु, गुरु, बुध, बुध, गुरु, गुरु, बुध, बुध, गुरु ये 'जीवेश' होते है।

अपसव्य नक्षत्रों में जीवेश तथा देहेश परिज्ञान—

जीवेश्वरा गुरुबुधेन्दुजमंत्रिजीव—
विज्ञार्य्यमंत्रिबुधविद्गुरवोऽपसव्ये।
देहेश्वरा विधुसितार्किकुजेन्दुशुक्र
मन्दारचन्द्रभृगुजार्किकुजाः क्रियात्स्युः ॥ ६० ॥

अपसव्य नक्षत्रों में मेषादि अंशों के क्रमसे गुरु, बुध, बुध, गुरु, गुरु, बुध, बुध, गुरु, गुरु बुध, बुध, गुरु, गुरु, बुध, बुध, गुरु ये 'जीवेश' होते हैं। चन्द्र, शुक्र, शनि, मङ्गल, चन्द्र, शुक्र, शनि, मङ्गल, चन्द्र, शुक्र, शनि, मङ्गल ये 'देहेश' होते हैं:

—: उदाहरण :—

अपसव्य नक्षत्रगत 'चन्द्रमा' धनुर्नवांश में है अतः 'गुरु जीवेश' और 'चन्द्रमा देहेश' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कालचक्री दशा में वर्षादियों के साधन की रीति—

पूर्वागतं भस्फुटभोग्यकं यत्तद्घस्रतष्टं स्वभपादभोग्यम् ।
तत्स्वायुषा सङ्गुणितं समीरशशाङ्कभक्तं शरदादिकं स्यात् ॥ ६१ ॥
स्पष्टायुरेतत्परमायुषो वियुग् भुक्तायुरत्राद्यदशाधिपाददः ।
यावद्ग्रहाणां च शरत्सु शुद्ध्यति तावद्ग्रहाब्देषु विशोधितं ततः ॥ ६२ ॥
यस्य खेटस्य वर्षाणि शोध्यान्यशिष्टानि जन्मनि
वर्षादिका कालचक्री दशा तस्य प्रजायते ॥ ६३ ॥

जन्म नक्षत्र के घट्यादि स्पष्ट भोग्यको १५ से तष्ट करे शेष जन्म नक्षत्रके वर्त्तमान पाद का घट्यादि स्पष्ट भोग्य होता है। उस पादके घट्यादि स्पष्ट भोग्यको अपनी पूर्वागत परमायु से गुणकर १५ से भागदे लब्ध वर्षादि स्पष्टायु होती है। उस वर्षादि स्पष्टायु को अपनी परमायु में से हीनकरे शेष भुक्तायु होती है। उस भुक्तायु को आद्य दशेश से आदि जितने ग्रहों के वर्षों में शोधनकिया जासके उतने ही ग्रहोंके वर्षों में शोधनकरे शेष 'अन्तिम ग्रहकी वर्षादि कालचक्रीदशा' होती है। उस अन्तिम ग्रहसे जितने अग्रस्थ ग्रह हों उनके सम्पूर्ण वर्षोंका योग करे। अन्तिम ग्रह के नीचे का योग स्पष्टायु के तुल्य होता है। परन्तु यहां स्मरण रखना चाहिए कि यदि स्पष्टायु के वर्षादि जीवन के पूर्व ही समाप्त होगये हों अथवा समाप्त होने की सम्भावना हो तो स्पष्टायु में आद्यदशेशादि ग्रहोंके सम्पूर्ण वर्षों को युक्त करके यावज्जीवन पर्यन्त की वर्षादि दशाको साधे।

—: उदाहरण :—

जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी के घट्यादि स्पष्ट भोग्य ५१।३६।१३।३० की घटी ५१ को १५ से तष्ट किया तो ६।३६।१३।३० शेष उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम पाद का घट्यादि स्पष्ट भोग्य हुआ। इस घट्यादि पाद भोग्य ६।३६।१३।३० को पूर्वागत परमायु के ८६ वर्षों से गुणातो ५६७।५५।२१।० हुए। इनमें १५ से भाग दिया तो लब्ध ३७ वर्ष हुए। शेष १२।५५।२१ को १२ से गुणातो १५५।४।१२ हुए। इनमें १५ से भाग दिया तो लब्ध १० मास हुए। शेष ५।४।१२ को ३० से गुणातो १५२।६।० हुए। इनमें १५ से भाग दिया तो लब्ध १० दिन हुए। शेष २।६ को ६० से गुणातो १२६ हुए। इनमें १५ से भाग दियातो लब्ध ८ घटी हुई। शेष ६ को पुनः ६० से गुणातो ३६० हुए। इनमें १५ से भाग दिया तो लब्ध २४ पल हुए। इस प्रकार ३७ वर्ष १० मास १० दिन ८ घटी २४ पल स्पष्टायु हुई। इस स्पष्टायु ३७।१०।१०।८।२४ को परमायु के वर्ष ८६ में से हीन किया तो ४८ वर्ष १ मास १९ दिन ५१ घटी ३६ पल भुक्तायु हुई। इस भुक्तायु ४८।१।१९।५१।३६ को आद्यदशेश गुरु के १० वर्ष, शनिके ४ वर्ष, गुरुके १० वर्ष मङ्गलके ७ वर्ष और शुक्रके १६ वर्षोंके योग ५१ वर्ष में हीन किया तो २ वर्ष १० मास १० दिन ८ घटी २४ पल अन्तिमग्रह शुक्र की वर्षादि कालचक्री दशा हुई। इस में शुक्र के अग्रस्थ ग्रह बुधके ९ वर्षको युक्त किया तो ११ वर्ष १० मास १० दिन ८ घटी २४ पल बुध की दशा हुई। एवं अन्य ग्रहों की दशाको साधना चाहिए।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'कालचक्रीदशाक्रमः'। 'उदाहरणगेतम्'।

दशेशाः	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सू.	चं.
	१०	४	४	१०	७	३	०	५	२१
	०	०	०	०	०	१०	०	०	०
जन्मशकादिः	०	०	०	०	०	१०	०	०	०
	०	०	०	०	०	८	०	०	०
	०	०	०	०	०	२४	०	०	०
१८१९	.	.	.	.	.	१८२२	१८३१	१८३६	१८५७
२						१	१	१	१
२१						१	१	१	१
२९	.	.	.	.	.	३८	३८	३८	३८
४९						१३	१३	१३	१३
१८५७	१८६७	१८७१	१८७५	१८८२	१८९२	१९०८	.	.	.
१	१	१	१	१	१	१			
१	१	१	१	१	१	१			
३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	.	.	.
१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३			
.	४७	५१	५५	६५	७२	२	११	१६	३७
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४

विंशोत्तरी प्रभृति दशाओंमें अन्तर्दशा साधन रीति—

स्वस्वाब्दघ्न्यो दशेशानां दशाः खार्कै रसाग्निभिः ।
नागाभ्रैकैः क्रमाद् भक्ता भुक्तयः स्युः समादिकाः ॥ ६४ ॥

विं, यो, रौ, नामधेयानां भक्ता खेनैर्महादशा ।
स्वब्दघ्नी भुक्तिरित्याभ्यः संसाध्या विदशादिकाः ॥ ६५ ॥

विंशोत्तरी, योगिनी और रौद्राद्यष्टोत्तरी इन तीन दशाओंके दशेशों की वर्षादि दशाको अपने २ वर्षोंसे पृथक २ गुणकर १२०,३६,१०८ से भाग दे अर्थात् विंशोत्तरी दशा की अन्तर्दशाके लिए १२० से योगिनी अन्तर्दशा के लिए ३६ से रौद्राद्यष्टोत्तरी दशाकी अन्तर्दशा के लिए १०८ से भाग दे लब्ध उक्त दशाओंकी वर्षादि अन्तर्दशा होती हैं।प्रत्येक ग्रह की वर्षादि महादशा को प्रत्येक ग्रह के सम्पूर्ण वर्षों से पृथक् २ गुणकर १२० से भागदे लब्ध प्रत्येक ग्रह की वर्षादि अन्तर्दशा होती है। इन पूर्वागत वर्षादि अन्तर्दशाओंसे पूर्वोक्त प्रकारके समान विदशाओंको साधे, विदशाओंसे सूक्ष्म दशा और उनसे प्राण दशाओंको साधे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

यहां वर्त्तमान दशा गुरु की है अतः गुरु की वर्षादि दशा १६।०।०।०।० को गुरु के १६ वर्ष से गुणा तो २५६ हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध २ वर्ष हुए। शेष १६ को १२ से गुणा तो १९२ हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध १ मास हुआ। शेष ७२ को ३० से गुणा तो २१६० हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध १८ दिन हुए। इसप्रकार २ वर्ष १ मास १८ दिन ० घटी ० पल गुरु दशा में गुरु की अन्तर्दशा हुई। एवं गुरु की वर्षादि दशा १६।०।०।०।० को शनि के १९ वर्ष से गुणा तो ३०४ हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध २ वर्ष हुए। शेष ६४ को १२ से गुणा तो ७६८ हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध ६ मास हुए। शेष ४८ को ३० से गुणा तो १४४० हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध १२ दिन हुए। इस प्रकार २ वर्ष, ६ मास, १२ दिन, ० घटी, ० पल गुरु दशा में शनि की अन्तर्दशा हुई। एवं शेष ग्रहों की अन्तर्दशा को साधे।

'विंशोत्तरीदशायां' 'गुरोरन्तर्दशाक्रमः' 'उदाहरणमेतत्'।

	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
	२	२	२	०	२	०	१	०	२
	१	६	३	११	८	९	४	११	४
	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८५९	१८६१	१८६४	१८६६	१८६७	१८६९	१८७०	१८७२	१८७२	१८७५
४	६	०	३	३	११	८	०	११	४
१९	७	१९	२५	१	१	१९	१९	२५	१९
१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५

—: उदाहरण :—

यहां वर्त्तमान दशा सङ्कटा है अतः सङ्कटा की वर्षादि दशा ८।०।०।०।० को सङ्कटा के ८ वर्ष से गुणा तो ६४ हुए। इनमें ३६ से भाग दिया तो लब्ध १ वर्ष हुआ। शेष २८ को १२ से गुणा तो ३३६ हुए। इनमें ३६ से भाग दिया तो लब्ध ९ मास हुए। शेष १२ को ३० से गुणा तो ३६० हुए। इनमें ३६ से भाग दिया तो लब्ध १० दिन हुए। इस प्रकार १ वर्ष ९ मास १० दिन ० घटी ० पल सङ्कटादशा में सङ्कटाकी अन्तर्दशा हुई। एवं सङ्कटादशा के वर्षादि ८।०।०।०।० को मङ्गला के १ वर्ष से गुणा तो ८ हुए। इनमें ३६ से भाग दिया तो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लब्ध ० वर्ष हुआ। शेष ८ को १२ से गुणातो ९६ हुए। इनमें ३६ से भाग दिया तो लब्ध २ मास हुए। शेष २४ को ३० से गुणा तो ७२० हुए। इनमें ३६ से भाग दियातो लब्ध २० दिन हुए। इस प्रकार ० वर्ष ० मास २० दिन ० घटी ० पल सङ्कटा दशा में मङ्गलान्तर्दशा हुई। एवं शेष योगिनियों की अन्तर्दशा को साधे।

'योगिनीदशायां' 'सङ्कटान्तर्दशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
	१	०	०	०	०	१	१	१
	९	२	५	८	१०	१	४	६
	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०
	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०
१८६१	१८६३	१८६३	१८६३	१८६४	१८६५	१८६६	१८६७	१८६९
२	०	२	८	४	२	४	८	२
२८	८	२८	८	८	२८	८	८	२८
५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६

—: उदाहरण :—

यहां गुरु की दशा वर्त्तमान है अतः गुरु की वर्षादिदशा १९।०।०।०।० को गुरु के १९ वर्ष से गुणा तो ३६१ हुए। इनमें १०८ से भाग दिया तो लब्ध ३ वर्ष ४ मास ३ दिन २० घटी ० पल रौद्राद्यष्टोत्तरी दशा में गुरु की अन्तर्दशा हुई। एवं गुरु की वर्षादि दशा १९।०।०।०।० को राहुके १२ वर्ष से गुणा तो २२८ हुए। इनमें १०८ से भाग दियातो लब्ध २ वर्ष १ मास १० दिन ० घटी ० पल गुरु दशा में राहुकी वर्षादि अन्तर्दशा हुई। इस प्रकार अन्य ग्रहों की वर्षादि अन्तर्दशा को साधे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'रौद्राद्यष्टोत्तरीदशायां' 'गुरोरन्तर्दशाक्रमः' 'उदाहरणमेतत्'।

	बृ.	रा.	शु.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.
	३	२	३	१	१	१	२	१
	४	१	८	०	७	४	११	९
	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३
	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०
	०	०	०	०	०	०	०	०
१८५८	१८६१	१८६३	१८६७	१८६८	१८७१	१८७२	१८७५	१८७७
६	१०	११	८	८	४	९	९	६
९	१२	२२	२	२२	१२	९	६	९
३६	५६	५६	५६	५६	५६	३६	१६	३६
३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४

—: उदाहरण :—

यहां महादशा में गुरुकी दशा वर्तमान है अतः गुरुकी वर्षादि दशा १४।१०।१६।५८।४८।० को गुरु के १६ वर्षसे गुणातो २३८।१।२।४०।४८।० हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध १ वर्ष ११ मास २४ दिन १५ घटी ५० पल २४ विपल गुरु दशा में गुरु की वर्षादि अन्तर्दशा हुई। एवं गुरु की वर्षादि दशा १४।१०।१६।५८।४८।० को शनि के १९ वर्ष से गुणा तो २८२।८।२२।३७।१२।० हुए। इनमें १२० से भाग दिया तो लब्ध २ वर्ष ४ मास ८ दिन ११ घटी १८ पल ३६ विपल गुरुदशामें शनिकी वर्षादि अन्तर्दशा हुई। इसी प्रकार गुरुदशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा को साधे।

'महादशायां' 'गुरोरन्तर्दशाक्रमः। 'उदाहरणमेतत्'।

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.
	१	२	२	०	२	०	१	०	२
	११	४	१	१०	५	८	२	१०	२
	२४	८	८	१२	२२	२७	२६	१२	२३
	१५	११	५४	२९	४९	५०	२४	२९	३२
	५०	१८	१९	२५	४८	५६	५४	२५	४९
	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
१८५७	१८५९	१८६१	१८६३	१८६४	१८६७	१८६७	१८६९	१८७०	१८७२
४	४	८	९	८	१	१०	१	०	२
८	६	११	२०	२	२५	२३	१९	२	२५
४५	१	१२	६	३६	२६	१७	४२	११	४४
२९	१९	३८	५८	९४	१२	८	२	२८	१८
३०	५४	३०	१८	६	६	३०	३०	१८	३०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चर तथा कालचक्रीदशा की अन्तर्दशा साधन रीति—

स्वस्वाब्दनिघ्ने चरकालचक्रीदशेतु युत्या परमायुषा च ।
क्रमाद्विभक्ते शरदादिके स्तो भुक्ती तथाभ्यां विदशादिकाः स्युः ॥ ६६ ॥

चरदशा तथा कालचक्रीदशा के वर्षादि को अपने २ वर्षोंसे गुणकर क्रमसे दशाके योग से और परमायु से भाग अर्थात चरदशा की अन्तर्दशा के लिए चरदशाके योग से और कालचक्री दशा की अन्तर्दशा के लिए कालचक्री दशा की परमायु से भाग दे तब लब्ध चर और कालचक्रीदशाकी वर्षादि अन्तर्दशा होती है। इसी प्रकार इन अन्तर्दशाओंसे विदशादियों को साधे ।

—: उदाहरण :—

यहां कर्क राशि की दशा वर्त्तमान है अत. कर्क राशि की वर्षादि दशा ११।०।०।०।० को कर्क राशि के ११ वर्ष से गुणातो १२१ हुए। इन में दशा योग ८० से भाग दिया तो लब्ध १ वर्ष ६ मास ४ दिन ३० घटी ० पल कर्क राशि की दशा में कर्क राशि की वर्षादि अन्तर्दशा हुई। एवं कर्क राशि की वर्षादि दशा ११।०।०।०।० को सिंह राशि के २ वर्ष से गुणा तो २२ हुए। इनमें दशा के योग ८० से भाग दिया तो लब्ध ० वर्ष ३ मास ९ दिन ० घटी ० पल कर्क राशि की दशा में सिंह राशि की वर्षादि अन्तर्दशा हुई। इसी प्रकार अन्य राशियों की अन्तर्दशा को साधे ।

'चरदशायां' कर्कराशेरन्तर्दशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
	१	०	०	०	१	१	०	०	०	०	१	१
	६	३	४	११	२	१	३	४	११	६	७	७
	४	९	२८	१६	२५	६	९	२८	१६	१८	२४	२४
	३०	०	३०	३०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८५४	१८५५	१८५६	१८५६	१८५७	१८५८	१८५९	१८६०	१८६०	१८६१	१८६१	१८६३	१८६५
२	८	०	५	४	७	८	०	४	४	११	६	२
२१	२५	४	३	१९	१५	२१	०	२८	१५	३	२७	२१
२९	५९	५९	२९	५९	२९	२९	२९	५९	२९	२९	२९	२९
४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९

यहां कालचक्रीदशा में गुरुदशा वर्त्तमान है अतः गुरु की वर्षादि दशा १०।०।०।०।० को गुरु के १० वर्ष से गुणा तो १०० हुए। इनमें परमायु ७६ से भाग दिया तो लब्ध १ वर्ष १ मास २८ दिन ३६ घटी १६ पल ४५ विपल गुरु की कालचक्री दशा में गुरु की वर्षादि अन्तर्दशा हुई। एवं गुरु की वर्षादि दशा १०।०।०।०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

० को शनि के ४ वर्ष से गुणा तो ४० हूए। इनमें परमायु ८६ से भाग दिया तो लब्ध ० वर्ष ५ मास १७ दिन २६ घटी ३० पल ४२ विपल गुरु दशा में शन्यन्तर्दशा हुई ! इसी प्रकार अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा को साधे।

'कालचक्रीदशायां गुर्वन्तर्दशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

	गु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	सू.	च.
	१	०	०	१	०	१	१	०	२
	१	५	५	१	९	१०	०	६	५
	२८	१७	१७	२८	२३	९	१६	२९	९
	३६	२६	२६	३६	१	४६	४४	१८	४
	१६	३०	३०	१६	२३	२	३९	८	११
	४५	४२	४२	४५	४३	४७	४	२२	१०
१८५७	१८५८	१८५८	१८५९	१८६०	१८६१	१८६३	१८६४	१८६४	१८६७
१	३	८	२	४	१	०	०	७	१
१	०	१७	५	३	२६	६	२३	२२	१
३८	१४	४१	७	४३	४५	३१	१५	३४	३८
१३	२९	०	३१	४७	११	१४	५३	१	१३
०	४५	२७	१	१४	३७	२४	२८	५०	०

इति ज्योतिस्तत्त्वे दशाप्रकरणं चतुर्दशमवाप्तितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

स्त्रीजातकप्रकरणं प्रारभ्यते ।

स्त्री के शरीर के शुभाशुभ फल का परिज्ञान—

पुंयोग्यमुक्तं प्रमदाजनुःफलं यत्तत्पतौ ज्यौतिषिको नियोजयेत् ।
वीर्याधिकादुद्गमशर्व्वरीशयोस्तस्याः शरीरस्य शुभाशुभं फलम् ॥ १ ॥
तद्भर्तुरस्तालयतो गुणागुणं तस्यात्ययो नैधनगेहतो मतः ।
बलाबलेनाघशुभाभ्रगामिनामेतद्विचिन्त्याखिलमादिशेत्फलम् ॥ २ ॥

स्त्री की जन्म कुण्डली में जो फल पुरुष के ही लिए सम्भव हो वह उसके पतिके लिए कहे । लग्न और चन्द्रमा के मध्य में जो अधिक बली हो उसी को लग्नमानकर उससे स्त्री के शरीर के शुभाशुभ फलको कहे । एवं उस निर्णीत लग्न से जो सप्तमस्थान हो उससे उसके पतिके गुण तथा अवगुण को और अष्टम स्थान से पति की मृत्यु को कहे । पाप तथा शुभग्रहों के बलाबल से यह सब फल विचारकर कहे ।

मतान्तर से स्त्रियों के जन्माङ्ग द्वारा शुभाशुभ फल परिज्ञान —

मध्येऽङ्गविध्वोर्ललनाजनौ बली योऽतस्तदङ्गालयतस्तु सम्पदम् ।
पुत्रायवृद्धिं बलरूपपूर्वकं वदन्ति सौभाग्यमनिष्टमष्टमात् ॥ ३ ॥
पतिश्रियं सप्तमतोऽथ कैचनेच्छन्तीशितुर्भाग्यगृहाच्छुभाशुभम् ।
शेषं फलं भावजयोगसम्भवं सर्वं समं पञ्चजनाङ्गनारव्ययोः ॥ ४ ॥

स्त्री की जन्म कुण्डली मे लग्न और चन्द्रमा के मध्य जो बली हो उस को लग्न मानकर उससे जो नवम स्थान हो उस के द्वारा सम्पत्ति, पुत्र, लाभ, वृद्धि, बल तथा रूप का विचार करे । अष्टम से सौभाग्य तथा अनिष्ट का एवं सप्तमसे पति की श्रीका विचार करे नवम से पति से शुभाशुभ फल का विचार करे । इस प्रकार कोई आचार्य कहते है । शेष भावजन्य तथा योगजन्य सब फल स्त्री तथा पुरुष का समान होता है ।

पुनः मतान्तर से स्त्री के शुभाशुभ फलका परिज्ञान—

केचिद्विदुः पतिसुखं मदनेन मृत्यो—
र्वैधव्यमात्मजगृहात्तनयं विलग्नात् ।
तेजोशयः श्रियमथातिसुखं प्रव्रज्या—
मप्यङ्कयातखचरैर्मृगलोचनानाम् ॥ ५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्त्रियोंके जन्म लग्न से जो सप्तमस्थान हो उससे पति का सुख, अष्टम से वैधव्य, पञ्चम से पुत्र, लग्न से तेज यश तथा श्रीको कहे। एवं नवम गत ग्रहों से अतिसुख तथा प्रव्रज्या को कोई आचार्य कहते है।

वामाजनौ तनुविधू समभे तु रूप—
शालान्विता वरवधूः शुभदृष्टयुक्तौ।
सम्पद्युता गुणवती च पतिव्रता सा
तावोजभेऽतिचपला पुरुषाकृतिः स्यात् ॥ ६ ॥
पुंचेष्टिता सदुरिता यदि पापखेट।
युक्तेक्षितौ भवति दुष्टचरित्रयुक्ता।
ओजर्क्षगौ शुभविहङ्गयुतेक्षितौ तौ
मिश्राकृतिर्गुणसुचित्स्थितिसंप्रयुक्ता ॥ ७ ॥
यदि तौ समराशिस्थौ पापयुक्तेक्षितौ तथा।
तद्भेशेक्षकयुक्खेटबलात्सर्वं बुधा विदुः ॥ ८ ॥

जिस स्त्रीके जन्म समय लग्न तथा चन्द्रमा ये दोनों समराशि में हों वह स्त्री रूप, शील युक्त तथा श्रेष्ठ होती है। यदि लग्न तथा चन्द्रमा शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त हों तो वह स्त्री सम्पत्ति से युक्त, गुणवती तथा पतिव्रता होती है। एवं लग्न तथा चन्द्रमा विषम राशि में हों तो वह स्त्री अति चञ्चल, पुरुष के समान आकृति वाली, पुरुष के समान चेष्टावाली तथा पापयुक्त होती है यदि विषम राशिगत लग्न तथा चन्द्रमा पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह स्त्री दुष्टचरित्र वाली होती है। यदि लग्न तथा चन्द्रमा विषम राशि में स्थित होकर शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह स्त्री मिश्र आकृति वाली, गुण, बुद्धि तथा स्थिति से युक्त होती है। एवं समराशि गत लग्न तथा चन्द्रमा पाप-ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हों तो भी मिश्राकृति, गुण, बुद्धि तथा स्थिति से युक्त होती है। लग्न तथा चन्द्र राशि के स्वामी के, उनके दर्शीग्रह और उनसे युक्त ग्रह के बल से पण्डितजन सबफल को कहते हैं।

लग्न तथा चन्द्रमा के त्रिंशांश के द्वारा स्त्रीके शुभाशुभ फल का परिज्ञान—

भौमर्क्षगे शीतकरेऽथवाङ्गे त्रिंशांशकेऽस्रस्य भवाऽबला या।
भवेद्दुराचारयुता यमांशे प्रेष्या बुधांशे मलिनेज्यभागे ॥ ९ ॥
साध्वी गुणाढ्या भृगुजस्य भागे जारव्रताचारिणिका प्रदिष्टा।
लग्नेऽच्छभस्थे कलिकृच्च दुष्टा कुजांशके जीवलव सपुत्रा ॥ १० ॥
साध्वी पुनर्भू रविजस्य भागे शुक्रस्य भागे बुधवल्लभा च।
लोकप्रिया स्यात्सुभगाऽथ वाद्यसङ्गीतसक्ता सकला बुधांशे ॥ ११ ॥

जिस स्त्रीके जन्म समय में मङ्गलकी राशि में स्थित लग्न वा चन्द्रमा यदि मङ्गल के त्रिंशांश में हो तो वह स्त्री दुराचार युक्त, शनि के त्रिंशांश में दासी, बुध के त्रिंशांश में मलिन, गुरु के त्रिंशांश में पतिव्रता तथा गुणवती और शुक्र के त्रिंशांश में जार से समागम करने वाली होती है। जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न में शुक्र (वृष वा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तुला) की राशि हो और उसमें मंगल का त्रिंशांश हो तो वह स्त्री कलह करने वाली तथा दुष्ट, गुरु के त्रिंशांश में पुत्रवती, शनि के त्रिंशांश में पुनर्भू (द्वितीय बार विवाह करने वाली), शुक्र के त्रिंशांश में पण्डित तथा लोगों की प्यारी और सज्जन, बुध के त्रिंशांश में वाद्य वा सङ्गीत विद्या में निरत और कलावती होती है ।

देहे ज्ञभेऽस्त्राभ्रगुणांशकोद्भवा पुत्रैर्विहीना तपनात्मजांशके ।
क्लीबाकृतिस्थाऽसतिका धवोनिता मृतात्मजा जीवलवे पतिप्रिया ॥ १२ ॥
शौक्रे प्रसिद्धा वर वस्त्रभूषणगोविचयुक्ता तुहिनांशुजांशके ।
विख्यातनाम्नी तरुणी च तेजसां युतोदये चन्द्रगृहंगते विधा ॥ १३ ॥
आग्नेयदृष्टेऽस्त्रलवे तु [illegible]रिणी भाग्यस्य भागे विधवा गुरोर्लवे ।
अल्पायुरल्पात्मभवा बुधांशके कलावती शिल्पयुता सितांशके ॥ १४ ॥
स्यात्काशुका भानुभगे तनौ विधौ नराकृतिस्था कुलटा कुजांशके ।
मन्दांशके दुःखयुताऽमरार्चितभागे धरित्रीशप्रिया गुणान्विता ॥ १५ ॥
ज्ञांशे तु दुष्टा नरचेष्टिता सितभागे कुनाथप्रियतायुता तथा ।
स्याद्रोगिणी वाक्पतिभोदये कुजांशोत्था प्रसिद्धा परिवारिणी शनेः ॥ १६ ॥
भागे दरिद्रेज्ज्वलवे धनाम्बराविभूषणाढ्या ज्ञलवे समर्चिता ।
साध्वी सितांशेऽम्बरभूषणात्मजयुतोदये वीर्यवतीनजालये ॥ १७ ॥
स्याच्छोकिनी भौमलव रवैः सुतांशे दुर्भगा देव पुरोहितांशके ।
निजान्वयाचारयुता मृगाङ्कजांशेऽनूनकज्ञा कुलटाऽऽस्फुजिल्लवे ॥ १८ ॥
वन्ध्या सती भवेन्नारी देहाब्जस्फुटयोगतः ।
निःशेषं खगुणांशोत्थं फलं ब्रूथाद्विचक्षणः ॥ १९ ॥

लग्नमें बुधकी (मिथुन वा कन्या) राशि हो और उसमें मङ्गल का त्रिंशांश हो तो पुत्र रहित, शनिका त्रिंशांश होनो नपुंसक के समान आकृतिवाली, दुराचारिणी, पति रहित तथा मृतप्रजा, गुरु के त्रिंशांश में पातकी प्यारी, शुक्रके त्रिंशांश में विख्यात, उत्तमवस्त्र, भूषण गौ तथा धन से युक्त, बुधके त्रिंशांश में विख्यात नाम वाली, तरुण अवस्थावाली और तेजस्विनी होती है । लग्न में कर्क राशि हो वा चन्द्रमा कर्क में हो वह पाप ग्रह से दृष्ट हो और उसमें मङ्गल का त्रिंशांश होतो जारिणी शनिके त्रिंशांशमें विधवा, गुरु के त्रिंशांश में अल्पायु तथा अल्प पुत्रिणी, बुधके त्रिंशांश में कलावती तथा शिल्पकला युक्त, शुक्र के त्रिंशांश हो तो पुरुषाकृति तथा व्यभिहो वा चन्द्रमा सिंह राशि में हो और उसमें मङ्गल का त्रिंशांश हो तो पुरुषाकृति तथा व्यभिचारिणी, शनि के त्रिंशांश में दुःखित, गुरु के त्रिंशांश में राजप्रिया तथा गुणवती, बुध के त्रिंशांश में दुष्टा, पुरुष चेष्टावाली, शुक्र के त्रिंशांश में दुष्टा, पुरुष चेष्टावाली, शुक्रके त्रिंशांश में राजा की प्रीती से युक्त तथा रोगिणी होती हैं । लग्न वा चन्द्रमा गुरु की (धनु वा मिन) राशि में हो और उसमें मङ्गल का त्रिंशांश हो तो विख्यात तथा परिवारवाली, शनिके त्रिंशांश में दरिद्रा, गुरुके त्रिंशांश में धन, वस्त्र तथा भूषणयुक्त, बुधके त्रिंशांश में पूजनी तथा पतिव्रता, शुक्रके त्रिंशांश में वस्त्र, भूषण तथा पुत्र से युक्त होती है । शनिकी (मकर वा कुम्भ) राशि चली हो कर लग्नमें हो और

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उसमें मङ्गल का त्रिंशांश हो तो शोकवती, शनिके त्रिंशांश में दुर्भगा, गुरुके त्रिंशांश में कुलाचार से युक्त, बुधके त्रिंशांश में समस्त विषय जाननेवाली तथा व्यभिचारिणी, शुक्रके त्रिंशांश में वन्ध्या (बांझ) सती (पतिव्रता) होती है। स्पष्ट लग्न तथा स्पष्ट चन्द्र का योग करे तब जो राश्यादि हो उसमें जो त्रिंशांश हो उससे समस्त शुभाशुभ फल को कहे।

स्त्री स्त्री मैथुन योग—

परस्परांशेऽच्छयमौ विलोकनसंस्थायुताङ्गे सितमे घटांशके।
शान्तिं प्रकुर्यान्मदनस्य कामिनी सार्कं युवत्या पुरुषाकृतिस्थया ॥ २० ॥

शनिके नवांश में 'शुक्र' और शुक्रके नवांश में शनि हो एवं वे दोनों परस्पर देखते हों (१) अथवा लग्नमें शुक्र की (वृष वा तुला) राशि हो और उसमें कुम्भ राशिका नवांश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न स्त्री पुरुषाकृति में प्राप्त होकर स्त्रियोंके साथ कामाग्नि की शान्तिको करती है।

व्यभिचारिणी योग—

ज्ञेन्दूच्चैर्विबलैर्यमे समबले शेषैः सवीर्यैस्तना-
वोजर्क्षे बहवो यथा बहुखगैर्युक्तेऽस्तपे स्यात्तथा।
योषाजाररता कुमुनुसितयोरन्योन्यभागस्थयो-
स्तद्वद् भूतनये बलास्तनिधनप्रान्त्याङ्गगेऽग्यान्विते ॥ २१ ॥
किं कर्के सरवौ स्मरेऽपिरुधिरे वास्त्रे स्वभेऽस्ते तथा
काव्येन्द्वोःखलदृष्टयोस्तनुगयोर्मन्दारराशिस्थयोः।
मात्रा साकमिहाबला परतास्तेऽब्जे समं दुश्चरी
पत्याऽस्तेऽस्रसितौ यदा ससितगू भर्त्राज्ञया दुश्चरी ॥ २२ ॥

बुध, चन्द्र, तथा शुक्र ये तीनों निर्बल हों, 'शनि' सम बली हो और शेष ग्रह बलवान् हों एवं लग्न में विषम राशि हो तो स्त्री के बहुत पति होते हैं। यदि सप्तमेश बहुत ग्रहोंसे युक्त हो तो भी स्त्रीके बहुत पति होते हैं। मङ्गल तथा शुक्र ये दोनों परस्पर एक दूसरे के नवांश में हों (१) अथवा सुख सप्तम अष्टम व्यय वा लग्नमें मङ्गल स्थित हो और वह पापसे युक्त हो तो (२) कर्क में सूर्य और सप्तम में मङ्गल हो अथवा स्वराशिगत मङ्गल सप्तम में हो तो वह स्त्री जारिणी होती है। शनि तथा मङ्गल की राशि लग्न में हो और उसमें शुक्र तथा चन्द्रमा ये दोनों स्थित हों वे पापग्रह से दृष्ट हों तो वह स्त्री तथा उसकी माता परगामिनी (व्यभिचारिणी) होती है। यदि सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तो वह स्त्री पति सहित व्यभिचारिणी होती है। चन्द्रमा से युक्त होकर मङ्गल और शुक्र ये दोनों सप्तम स्थान में हों तो वह स्त्री पतिकी आज्ञा से व्यभिचारिणी होती है।

कामस्थौ विधुभास्करौ यदि तथा पौरे स्मरे भास्करौ
स्याद्योषा कुलटा कुजे कलहगे तद्वच्चनूनाथकः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वास्तेशोऽघगणेऽथवा खलगणा द्यूने घने बन्धकी
दुःखार्त्ता कुलदोषदाऽस्त उरगे वंशद्वयघ्नी मृता ॥ २३ ॥

सप्तम में चन्द्रमा तथा सूर्य हों लग्न में वा सप्तम में शनि हो तो (१) अष्टम में मङ्गल हो तो (२) सप्तम भाव में पापवर्ग हों तो (३) लग्न तथा सप्तम में पापवर्ग हों तो उक्तयोगों में उत्पन्न स्त्री व्यभिचारिणी होती है। सप्तम में राहु हो तो दुःखसे पीडित और वंश को दोष देने वाली होती है। एवं अष्टम में राहु हो तो दोनों कुलों का नाश करने वाली होती है।

यदोदये चोडुपतौ खलद्वयमध्यास्थिते शोभनलोकनोज्झिते।
कन्दर्पलोला खलसङ्गमेन हि कुलद्वयंहन्ति कुरङ्गलोचना ॥ २४ ॥

लग्न और चन्द्रमा ये दोनों पापग्रहों के अन्तराल में हों और शुभ ग्रहों से अदृष्ट हों तो कामदेव से चञ्चल हुई स्त्री दुर्जन के सङ्गम से दोनों कुलों का नाश करती है।

परित्याग योगः—

उत्सृष्टाऽस्तमयगतेऽरिखेटदृष्टे मार्त्तण्डे स्वयमथ मारमन्दिरस्थे।
शक्त्यूने दुरितखगे सदभ्रवासैः संदृष्टे निजविभुना वधूर्विमुक्ता ॥ २५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय में शत्रुग्रह से दृष्ट हुआ 'सूर्य' सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री स्वयं त्याग दी जाती है। सप्तम में निर्बल पापग्रह हो और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो वह स्त्री पति से परित्याग की जाती है।

गतालकादि योग—

गतालकाऽस्ते दुरितैर्द्युनाश्रितैर्मिश्रैः पुनर्भू रमणी रणे रवौ।
सन्तापिताऽऽर्कौ मदगे खलेक्षिते जरां कुमार्य्येव समाप्नुयात्तदा ॥ २६ ॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम में पापग्रह हों वह स्त्री 'गतालका' (नष्टचरणवाली) अर्थात् उसकी मंगनी टूटजाती है एवं सप्तम में मिश्र (शुभ पाप) ग्रह हों तो वह स्त्री पुनर्भू (दोबार विवाह संस्कारवाली) होती है। अष्टम में सूर्य हो तो सन्तापवाली होती है। पापदृष्ट शनि सप्तम में हो तो वह कन्या ही वृद्धावस्था को प्राप्त होती है अर्थात् उसका विवाह संस्कार नहीं होता है।

पति वैरिणी योग—

नीचारिभस्थे दुरिते स्मरस्थले स्याद्वैरिणी स्त्री सितशीतदीधिती।
वसुन्धरानन्दनभार्गवसंश्रितौ तदा भवेत्सा वरवैरिणी वधूः ॥

सप्तम में नीच वा शत्रुराशिगत पापग्रह हो तो वह स्त्री पति की वैरिणी होती है। लग्न में मङ्गल की राशि हो और उसमें शुक्र तथा चन्द्रमा हो तो भी स्त्री पति की वैरिणी होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रुग्ण तथा सुन्दर भगवती योग—

कौजेऽस्तभागे त्रयमेनलोकिते वारे हरौ वास्तभगौ स्वभागगौ ।
स्याद् व्याधियोनिः शुभभांशके स्मरे सल्लोकिते चारुभगा पतिप्रिया ॥ २८ ॥

जिस स्त्रीके जन्म समय में लग्न से सप्तमें मङ्गल का नवांश हो और वह बुध, शनि तथा सूर्य से दृष्टहो अथवा सिंह में मङ्गल हो अथवा मङ्गल और सूर्य ये दोनों अपने २ नवांश में हों तो उस स्त्रीकी योनि रोग से युक्त होती है। सप्तम में शुभ ग्रह का नवांश हो और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो वह स्त्री सुन्दर योनि वाली और पति की प्यारी होती है।

दुर्भगा योग—

अङ्गारके कोणविलोकिते स्मरराश्यंशगे दुर्भगमेति कन्यका ।
असन्नभोगस्य नवांशके यदि चित्तोत्थगेहोपगते तु दुर्भगा ॥ २९ ॥

सप्तम भाव मे जो राशि तथा नवांश हो वह मङ्गल से युक्त होकर शनि से दृष्ट हो तो वह स्त्री दुर्भगत्व को प्राप्त होती है। सप्तम में पापग्रह का नवांश हो तो वह स्त्री दुर्भगा अर्थात् पति से प्रेम नकरने वाली होती है।

वन्ध्या योग—

कालेऽर्ककोणौ किमु राजकाणौ कोणारभाङ्गोपगतौ मतिस्थे ।
असद्विहङ्गे युवतिर्वशा ज्ञे कालोपगे काकवशा प्रजाता ॥ ३० ॥

अष्टम में सूर्य तथा शनि हों अथवा लग्नगत शनि मंगल की राशि में शुक्र तथा चन्द्रमा हों और पञ्चम में पापग्रह हो तो वह स्त्री वन्ध्या (बाँझ) होती है। अष्टम में बुध हो तो काकवन्ध्या होती है।

गर्भस्रावादि योग—

अङ्गारकेऽनङ्गभ ऐनिलोकिते गर्भस्रवा स्यात्रमणी रणोपगौ ।
आचार्य्यकाव्यौ सकुजौ तथा भवेद्यमेऽस्तगौ रोगयुतप्रजावती ॥ ३१ ॥

सप्तम गत मङ्गल यदि शनि से दृष्ट हो तो वह स्त्री गर्भस्रवा होती है। अष्टम में गुरु तथा शुक्र हों और वे मङ्गल से हों तो भी गर्भस्रवा होती है। सप्तम में शनि हो तो रोगयुक्त सन्तान वाली होती है।

अनपत्यादियोग—

कलत्रगेहे खलभे खलेक्षिते तदाऽनपत्याऽस्त इने किमूरगे ।
मृतप्रजा मृत्युगृहे सितार्चितौ विनष्टगर्भेह मृतप्रजाऽथ वा ॥ ३२ ॥

सप्तम में पापराशि हो और वह पापसे दृष्ट हो तो वह स्त्री अनपत्या (सन्तान हीन) होती है। सप्तम में सूर्य वा राहु हो तो मृतप्रजा मृतापत्या होती है। अष्टम में शुक्र गुरु हो तो विनष्ट गर्भा वा मृतप्रजा होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कन्याप्रसूति तथा अल्पप्रसूति योग—

भेकोविदे वा मदने कुमारिकाजन्मप्रदा गोहरिकन्यकालिषु ।
सोमेऽल्पपुत्रा सुतगे सुधाकरे मृगेन्द्रकौर्प्यक्षिवधूदये तथा ॥३३॥
सन्ततौ शीतगो काव्ये सुतासुखवती भवेत् ।
पापोपेते यदा तत्र वधूः सन्तानवर्जिता ॥ ३४ ॥

सप्तम में शुक्र वा बुध हो तो वह स्त्री कन्या उत्पन्न करने वाली होती है। वृष सिंह कन्या वा वृश्चिक में चन्द्रमा हो तो (१) अथवा पञ्चम में चन्द्रमा और लग्न में सिंह वृश्चिक वृष वा कन्या राशि हो तो उक्त योगों में उत्पन्न स्त्री अल्पपुत्रवाली होती है। पञ्चम में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो वह स्त्री कन्या उत्पन्न करने वाली होती है। यदि पञ्चम में पाप हो तो वह स्त्री सन्तान रहित होती है।

बहुपुत्रवती योग—

पुत्राणां बहुता तनूजनिलये सौम्यैर्युते लोकिते ।
कोणे वाथ चतुष्टये मतिपतौ दृष्टे शुभैरात्मजे ।
तद्वत्सन्ततिगौ सितेन्द्रसचिवौ पुत्रैः प्रभूतैर्युता
जानीज्या सुभगा च सुव्रतगुणैः सीमन्तिनी संयुता ॥ ३५ ॥

पञ्चम स्थान शुभग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो तो बहुत पुत्र होते हैं। त्रिकोण वा केन्द्र में पञ्चमेश हो और पञ्चम शुभग्रहों से दृष्ट हो तो बहुत पुत्र होते हैं। पञ्चम में शुक्र तथा गुरु हों तो वह स्त्री बहुत पुत्रोंसे युक्त, पतिसे सम्मानित, पति की प्यारी और उत्तम व्रतगुणोंसे युक्त होती है।

सुते ससत्त्वे सुरराजवन्दिते सपञ्चपुत्रा सबलेऽस्तपे तनौ ।
द्यूनेऽङ्गपे वा दूरितैर्हितोपगैर्बहून्यपत्यानि भवन्ति योषिताम् ॥ ३६ ॥

जिसके पञ्चम में बलवान गुरु हो तो वह स्त्री पांच पुत्रों से युक्त होती है। बली सप्तमेश लग्नमें और लग्नेश सप्तम में अथवा चतुर्थस्थान में पापग्रह हों तो स्त्रियों को बहुत सन्तान होती हैं।

सीमन्तिनीसद्मगतग्रहेषु पुत्रा बलिष्ठाभ्रचरांशतुल्या ।
केन्द्रोपगे कान्तपतौ प्रभूतकल्याणकालोत्सवमेति कान्ता ॥ ३७ ॥

सप्तमगत ग्रहों के मध्य में जितने ग्रह बलवान् हों उनके नवांश के तुल्य पुत्र होते हैं। जिस स्त्री का सप्तम का स्वामी केन्द्र में हो वह बहुत मङ्गल कार्यों को प्राप्त होती है।

सौख्य योग—

केन्द्रे सुते सुकृतभे सचित्रे स्वतुङ्गा-
दिस्थेऽन्वयेद्वयपृथून्नतिकारिणी स्त्री ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शीलान्विता गुणयुता च सुनन्दनाम्बा
साध्वी विभूतिसहिता सुखिनी सुरूपा ॥ ३८ ॥

स्वोच्चादिराशि गत गुरु यदि केन्द्र पञ्चम वा नवम में हो तो वह स्त्री दोनों कुलों की बड़ी उन्नति करने वाली, शील तथा गुण युक्त, उत्तम पुत्रोंकी माता, पतिव्रता, ऐश्वर्ययुक्त, सुखयुक्त और सुन्दररूपवती होती है।

ज्ञेन्दू भौमगृहाङ्गगौ तु कुशला वेदान्तवादे ऽबला
भोगाढ्या कुजकोविदौ यदि तथा राजास्फुजित्कोविदाः।
कायागारगताः सुखार्थसहिता गीर्वाणराजार्चिते
मूर्तिस्थे यदि बुद्धिभूषणयुता जाता सुपुत्रान्विता ॥ ३९ ॥

बुध और चन्द्रमा ये दोनों मङ्गल की राशि में स्थित होकर लग्न में हों तो वह स्त्री वेदान्तवाद में चतुर होती है। बुध और मङ्गल ये दोनों मङ्गल की राशि में स्थित हो कर लग्न में हों तो भोग युक्त होती है। चन्द्र, शुक्र और बुध ये तीनों लग्न में हों तो सुख तथा धन से युक्त होती है। लग्न में गुरु हो तो बुद्धि, भूषण तथा उत्तम पुत्रों से युक्त होती है।

माहेये सितभागगे शुभदृशा युक्ते कलत्रालये
नारी नायकवल्लभा शुभखगाः शस्तांपगा गर्हिते।
कामस्थे किमु कालगे निजपतिश्रीसौख्यवित्तात्मजैः
साकं जीवति सा चिरं शुभकरैश्छिद्रास्तभाग्याङ्गगैः ॥ ४० ॥

जाता श्रीशुभसंयुता भवमतो भार्यास्थलस्थो ऽमलो
यच्छेद्राज्यपदं ततस्तुहिनगौ कालपोपगे कर्किणि।
आचार्य्यास्फुजिदैन्दवामृतकरैर्वीर्यान्वितैस्तेजसा
संयुक्ता प्रथिता कलासु निपुणा शास्त्रेषु सीमन्तिनी ॥ ४१ ॥

शुक्र नवांश गत मङ्गल यदि शुभ से दृष्ट होकर सप्तम में हो तो वह स्त्री पति की प्यारी होती है। नवम में शुभग्रह, सप्तम वा अष्टम में पापग्रह हो तो वह स्त्री अपने पति, शोभा, सौख्य, धन तथा पुत्रों के साथ दीर्घकाल पर्यन्त जीवित रहती है। अष्टम, सप्तम, नवम और लग्नमें शुभग्रह हो तो वह स्त्री श्री तथा कल्याणयुक्त होती है। चन्द्रमा से सप्तम में शुभग्रह हो तो राज्यपद को देता है। लग्न में कर्कका चन्द्रमा हो एवं गुरु, शुक्र, बुध तथा चन्द्रमा बलवान् हों तो वह स्त्री तेजस्विनी, प्रसिद्ध, कला तथा शास्त्रों में चतुर होती है।

सोमे ऽङ्गे सुखसंयुता गतरतिह्यो ऽ ऽस्फुजिच्छीतगू
होरागौ प्रतिघान्विता सुखयुता ऽङ्गस्थाः सितेज्यैन्दवाः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ख्याता सर्वगुणान्विता ऽच्छसितरुग्भाङ्गे सुरूपा गुणै-
र्युक्ता ऽयेह कलावती भवति विद्गीर्वाणवन्द्योदये ॥ ४२ ॥

लग्न में चन्द्रमा हो तो सुख युक्त, रति रहित तथा पतिकी प्यारी होती है। लग्न में शुक्र तथा चन्द्र हो तो क्रोधिनी तथा सुख से युक्त होती है। लग्न में शुक्र गुरु तथा बुध हों तो प्रसिद्ध तथा सब गुणों से युक्त होती है। लग्न में शुक्र वा चन्द्रमा की राशि हो तो सुन्दर रूपवती तथा गुणोंसे युक्त होती है। लग्न में बुध वा गुरु की राशि हो तो वह स्त्री कलावती होती है।

सद्भिर्दृष्टे ऽङ्गे सलज्जा सुपुत्रा शुद्धस्वान्ता शिल्पिनी कान्तकाया।
सौख्यार्थाढ्या पात्रतां सच्छतानां नारी नाथे वल्लभत्वं प्रयाति ॥ ४३ ॥

यदि जन्मलग्न शुभग्रहोंसे दृष्ट हो तो वह स्त्री लज्जावती, सुपुत्रवती; शुद्धहृदयवाली, शिल्पकला जाननेवाली मनोहर शरीर, सौख्य तथा धन से युक्त, सौ शुभ पात्रता को तथा स्वामी को प्रियताको प्राप्त होती है।

पिता के घर में सौख्य योग—

शुभग्रहोदये सोमे सशुक्रे तातसद्मनि।
सर्वदा सुखिनी जाता कन्यका ऽस्थिरचारिणी ॥ ४४ ॥

लग्न में शुभ राशियत चन्द्रमा हो और वह शुक्रसे युक्त हो तो वह स्त्री पिताके घरमें नित्य सुखसे युक्त तथा अस्थिर चारिणी होती है।

राजयोगः—

जीवे ऽङ्गे शशिनि स्मरे भृगुसुते माने स्ववर्गे ततः
केन्द्रे शीतकरेक्षिते सुरगुरौ षड्वर्गशुद्धे किमु।

सद्भिः कण्टकसंस्थितैरघखगैरायानुजारातिगै
रस्ते मानुषभं ततो भवगते सोमे सिते सूरिणा ॥ ४५ ॥

दुष्टे मन्मथगे बुधेन सहिते वा कर्कटाङ्गे स्मरे
चन्द्रे केन्द्रचतुष्टयं खलखगैर्हीनं ततो ऽच्छे तनौ।
हेम्ने सोदरराशिगे हिबुकगे षड्वर्गशुद्धे गुरौ
देहे स्वोच्चगते बुधे ऽमरगुरौ लाभे ऽथ तुङ्गाश्रिते ॥ ४६ ॥

पूर्णे ऽब्जे सुखगे सुरेन्द्रगुरुणा दृष्टे किमङ्गे स्थिरे;
साचार्य्ये ऽर्य्यनुजे कुजे भगभवे षड्वर्गशुद्धे भवे।

किं नीरे निजराशिगे विधुसुते षड्वर्गशुद्धे ऽमर
पूज्ये काव्यनिरीक्षिते ऽथ तपने स्वोच्चस्थिते शान्तगे ॥ ४७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्णाङ्के हिमगौ तनौ दिवि बुधे वाङ्के स्थिरे पर्वरौ
स्वोच्चे सौम्ययुतेक्षिते सितखगे लाभेऽथ लाभे विधौ ।
काव्ये वाक्यतिवीक्षिते सविबुधे नारीनिकेतेऽथवा
मान्द्ये मन्दगतौ सहोदर इने षड्वर्गशुद्धे ततः ॥ ४८ ॥

सौम्याभ्यां सहिते सिते स्मरगृहे यद्वैणभेऽस्रे गुरौ
मीनेऽच्छे किमु बान्धवेऽत्र मिलिते छायातनूजेन वा ।

अब्जे कर्किणि कल्पगे मनसिजे जीवज्ञभौमैस्तथा
रवेशेऽङ्गाम्बुखधीस्वधर्म्मभवगे सत्त्वान्विते कामगे ॥ ४९ ॥

वागीशेऽतिबलेऽथ वा भृगुजनौ राज्ञोऽङ्गना जायते
यस्या जन्मनि खेचरैर्गुणमितैः षड्वर्गशुद्धैर्यदि ।

सा नारी सचिवाङ्गना विभुवधूः खेटैश्चतुर्भिस्तथा
खेटैः पञ्चमुखैस्तथा यदि भवेत्त्रैलोक्यनाथाङ्गना ॥ ५० ॥

(१) लग्न में गुरु, सप्तम में चन्द्रमा और दशम में अपने षड्वर्ग में स्थित हुआ शुक्र हो तो (२) षड्वर्ग शुद्ध गुरु केन्द्र में स्थित होकर चन्द्रमा से दृष्ट हो तो (३) केन्द्र में शुभग्रह, लाभ, तृतीय तथा षष्ठ में पापग्रह और सप्तम में मनुष्य राशि हो तो (४) लाभ में चन्द्रमा और सप्तमगत शुक्र यदि गुरु से दृष्ट होकर बुध से युक्त हो तो (५) लग्न में कर्क राशि हो, सप्तम मे चन्द्रमा और चारों केन्द्र पापग्रहों से रहित हो तो (६) लग्न मे शुक्र, तृतीय में बुध और चतुर्थ में षड्वर्गशुद्ध गुरु हो अथवा लग्न में स्वोच्चराशिगत बुध और लाभ में गुरु हो तो (७) उच्चराशिगत पूर्ण चन्द्रमा चतुर्थ में स्थित होकर गुरु से दृष्ट हो तो (८) लग्न में स्थिर राशिगत गुरु, षष्ठ वा तृतीय में मङ्गल तथा लाभ में षड्वर्गशुद्ध शनि हो तो (९) चतुर्थ में स्वराशिगत बुध, षड्वर्गशुद्ध गुरु यदि शुक्र से दृष्ट हो तो (१०) अष्टम में उच्चराशि गत सूर्य, लग्न में पूर्णचन्द्रमा और दशम में बुध हो तो (११) लग्न में स्थिर राशि, स्वोच्चराशिगत चन्द्रमा यदि बुध से युक्त वा दृष्ट हो और लाभ में शुक्र हो तो (१२) लग्न में चन्द्रमा और सप्तमगत शुक्र यदि गुरु से दृष्ट होकर बुध से युक्त हो तो (१३) षष्ठ में शनि और तृतीय में षड्वर्ग शुद्ध सूर्य हो तो (१४) सप्तमगत शुक्र यदि दो शुभ ग्रहों से युक्त हो तो (१५) मकर में मङ्गल, मीन में गुरु वा शुक्र अथवा चतुर्थगत शुक्र शनि से युक्त हो तो (१६) लग्न में कर्कराशि का चन्द्रमा हो एवं सप्तम में गुरु, बुध तथा भौम हों तो (१७) लग्न चतुर्थ दशम पञ्चम द्वितीय धर्म वा एकादश में बलवान् दशमेश हो और सप्तम में बलवान् गुरु वा शुक्र हो तो उक्त योगों में उत्पन्न कन्या राजाकी पत्नी होती है । जिस के जन्म समय में तीनग्रह षड्वर्ग शुद्ध हों वह मंत्रीकी पत्नी, चारग्रह षड्वर्ग शुद्ध हों वह प्रभु (समर्थवान् पुरुषकी वा राजाकी) पत्नी एवं पाँच ग्रह षड्वर्ग शुद्ध हों तो वह कन्या तीन लोक के स्वामी की पत्नी होती है ।

द्यूने सौम्ये यदैकस्मिन्भूपामात्यवराङ्गना ।
सत्रयेऽस्ते गुणैर्युक्ता राज्ञी स्याद्वसुधापतेः ॥ ५१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सप्तम में एक शुभग्रह हो तो प्रधान मंत्री की पत्नी होती है। सप्तम में तीन शुभग्रह हो तो राजाकी गुणवती राणी होती है।

कन्यास्थे विदि मदने मृगे महीजे
कर्केऽब्जे सुरगुरुणोदये सितेन।
वाऽऽक्रान्तेऽथ गवि सिते झषेऽङ्ग इज्ये
पुत्रेऽब्जे विदि युवतौ नरेन्द्रपत्नी ॥ ५२ ॥

(१) सप्तम में कन्या राशिगत बुध, मकर में मङ्गल, कर्क में चन्द्रमा और लग्न में गुरु या शुक्र हो तो (२) वृष में शुक्र, मीनलग्न में गुरु, पञ्चम में चन्द्रमा और कन्या में बुध हो तो उक्त योगों में उत्पन्न कन्या राजा की पत्नी होती है।

दास्यादियों से अलङ्कृत योगः—

काव्येन्दुसौम्यैः किमु षोडशार्चिः सुरेज्यतारातनयैस्तनुस्थैः।
जातेह दासीभिरलङ्कृता स्याद्युक्ता प्रभूतैर्गुणसौख्यपूर्वैः ॥ ५३ ॥

लग्न में शुक्र चन्द्र बुध ये तीनों हों अथवा शुक्र गुरु बुध ये तीनों हों तो उक्त योगों में उत्पन्न कन्या बहुत गुण सौख्यादि से युक्त होकर दासियोंसे सुशोभित होती है।

ब्रह्मवादिनी योगः—

चेद्युग्मभेऽङ्गोसबलेषु यत्र तत्रोपगेष्विज्यसितारवित्सु।
कौ सम्भवा ब्रह्मविचारसक्ता ख्याता च शास्त्रेष्वखिलेषु विज्ञा ॥ ५४ ॥

जिस कन्या के लग्न में समराशि हो उस में बलवान् गुरु, शुक्र, मङ्गल और बुध हों तो उक्त योग में उत्पन्न हुई कन्या पृथ्वी में ब्रह्मविचार में आसक्त, विख्यात तथा समस्त शास्त्रों में विज्ञ होती है।

कुलाढ्या ब्रह्मवादज्ञा देहगौ विधुबोधनौ।
कुलाढ्यता विलग्नस्थौ सौम्यस्थाने ज्ञभार्गवौ ॥ ५५ ॥

जिस के लग्न में चन्द्र और बुध हों वह स्त्री कुलवती तथा ब्रह्मवाद जानने वाली होती है। लग्न में शुभ राशिगत बुध और शुक्र हो तो वह स्त्री कुलवती होती है।

प्रव्रज्या योगः—

प्रागुल्लग्नाद् गगनचरैरनङ्गसंस्थै-
र्धर्मस्थैः किमु जनिताऽङ्गना समेति।
प्रव्रज्यामुत शुभगाभ्रगस्य तुल्यां
ग्रूनस्थेऽसति जननादिके विचिन्त्यम् ॥ ५६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिस कन्या के जन्मलग्न से सप्तम वा नवम में चार पांच इत्यादि ग्रह हों तो वह कन्या प्रव्रज्या (संन्यासत्व) को प्राप्त होती है। अथवा सप्तम में पापग्रह हो तो नवम गत ग्रह के समान प्रव्रज्या को प्राप्त होती है। जन्मादि में यह सब विचारना चाहिए।

दरिद्र योगः —

कर्काश्विभाङ्गे जनिता धवात्मजप्राप्त्या दरिद्रेण युता ऽथ पामरैः।
छिद्रास्तपुण्योदयगैस्तु दुर्विधशोकाकुला मिश्रफलिन्यमच्छुभैः ॥ ५७ ॥

जो कन्या कर्क वा मेष लग्नमें उत्पन्न हो वह पति पुत्र की प्राप्तिसे दरिद्र युक्त होती है। अष्टम, सप्तम, नवम तथा लग्नमें पापग्रह हों तो वह कन्या दरिद्र तथा शोकसे व्याकुल होती है। जिस के उक्त स्थानों में मिश्र (पाप शुभ) ग्रह हों तो वह कन्या मिश्र फलवाली होती है।

अनङ्गगे पापखगे गतौजसि स्खलेक्ष्यमाणे पतिसौख्यवर्जिता।
होराङ्गतैर्भूमिजभोगिभानुभिर्द्व्यङ्गते भे ऽन्यपतिं चिकीर्षति ॥ ५८ ॥

सप्तम में निर्बल पापग्रह हो और वह पापग्रह से दृष्ट हो तो वह स्त्री पतिके सौख्य से हीन होती है। लग्न में सूर्य, राहु और मङ्गल हों, धनस्थान में शुक्र हो तो वह स्त्री अन्य पतिको करने की इच्छा करती है।

वैधव्य योगः—

मूर्त्तीन्द्वन्यतरान्मृतौ किमु मदे षड्भिर्बलैर्वर्जिताः
पापाः पापभगा न शोभनखगैर्दृष्टाः किमुग्रैः समैः।
कामस्थैस्त्वनुतो ऽथ शीतकरतः कामोपगे कल्मषे
यद्वा गर्हितभे कलत्रभवने कोणेन युक्ते ऽथवा ॥ ५९ ॥
शत्रुक्षेत्रगतैर्लयाङ्गलग्नास्थानस्थितैः पामरै—
र्नारी स्याद्विधवोरगे ऽशुभयुते ऽस्तर्क्षे लये ऽन्त्ये तथा।
रण्डा ऽर्कास्ततमोभिरुद्रमगृहे ऽथो पापदृष्टे कुजे
मारस्थे महिलेह बालविधवा होराविदा कीर्त्तिता ॥ ६० ॥

लग्न वा चन्द्रमा के मध्य में जो बलवान् हो उससे सप्तम वा अष्टम में पापराशिगत निर्बलपापग्रह हों और वे शुभ ग्रहोंसे दृष्ट न हों तो (१) लग्न से सप्तम में पापग्रह हों तो (२) चन्द्रमा से सप्तम में पापग्रह हों तो (३) सप्तम स्थान में पापग्रह की राशि हो और उस में शनि हो तो (४) लग्न, सप्तम तथा अष्टम में शत्रुराशिगत पापग्रह हो तो उक्त योगों में उत्पन्न कन्या विधवा होती है। अष्टम वा व्यय में मङ्गल राशि गत राहु यदि पाप युक्त हो तो भी वह कन्या विधवा होती है। लग्न में सूर्य, मङ्गल तथा राहु हों तो रण्डा होती है। सप्तम में पाप दृष्ट मङ्गल हो तो वह कन्या बाल विधवा होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आग्नेये महिलालये घनगते रण्डा बभूः सप्तमे—
ऽब्दे पाणिग्रहणोत्तरं हिमकरे ऽरं नैधने ऽष्टोन्मिते।
वर्षे तद्वदथो कुजे सदुरिते रिःफे ऽष्टमे ऽहौ पुरे
रण्डा ऽङ्गे सकुजे रवौ यदि तथा सार्की भवेद्दुर्भगा॥६१॥

सप्तम तथा लग्न में पापग्रह हों तो विवाह के पश्चात् सातवें वर्ष रण्डा होती है। षष्ठ वा अष्टम में चन्द्रमा हो तो आठवें वर्ष रण्डा होती है। व्यय वा अष्टम में पापयुक्त मङ्गल और लग्न में राहु हो तो रण्डा होती है। लग्न में सूर्य हो और वह मङ्गल से युक्त हो तो रांड होती है। लग्न में सूर्य हो और वह शनिसे युक्त हो तो दुर्भगा अर्थात् पतिसे प्रेम न करनेवाली होती है।

याम्ये ऽस्तपे ऽस्ते मृतिपे खलेक्षणयुतादथो वैरिणि वा व्ययालये।
आयुःस्मरेशौ खलखेटपीडितौ रण्डा नवोढा रमणी भवेत्तदा॥६२॥

अष्टम में सप्तमेश और सप्तम में अष्टमेश हो एवं पापदृष्ट हो तो (१) षष्ठ वा व्ययमें सप्तमेश और अष्टमेश हों एवं ये दोनों पाप ग्रहोंसे पीडित हों तो नव विवाहित स्त्री रांड होती है।

कान्तातनोः खलखगो मृतिगो ऽरिनीचा—
सद्वर्गगो विधवतां कुरुते ऽष्टमेशः।
यस्यांशके समधिगो हि तदीयदाय—
भुक्तौ च तद्वयसि वा तुलिते धवोना॥६३॥

अष्टम में शत्रु वा नीच राशिगत पापग्रह हो और वह पापग्रहों के वर्ग में हो तो वह उस कन्या को विधवा करता है। अष्टमेश जिसके नवांश में हो उसकी दशा वा अन्तर्दशा में अथवा उसकी अवस्था के वर्षों के तुल्य काल में वह कन्या विधवा होती है।

कामस्थे कुतनुभवे सपल्लदृष्टे
विश्वस्ता किमुत मिथो भवेद्विरोधः।
दम्पत्योरथ विधवा विनाशनाथ—
गों ऽशेशे दुरितखगे न संशयः स्त्री॥६४॥

जिसके सप्तम स्थान गत मङ्गल यदि शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो वह कन्या विधवा होती है। अथवा दोनों स्त्री पुरुषों का परस्पर विरोध होता है। अष्टमेश यदि पापनवांश में हो तो विधवा होती है।

निजोच्चगाः शुभग्रहाः सगर्हिते विनाशभे।
असद्गृहे ऽशुभेक्षिते गतप्रिया नितम्बिनी॥६५॥

शुभग्रह अपनी उच्चराशि में हों और पापराशि गत पापग्रह अष्टम स्थान में स्थित होकर यदि पापग्रह से दृष्ट हो तो वह कन्या विधवा होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यस्याः स्त्रिया मन्मथगे खलद्वये मनस्विनी स्याद्विधवा च कामुकी ।
पापत्रये सप्तमभे तु बन्धकी पश्चात्स्वनाथस्य वधं करोति सा ॥ ६६ ॥

जिस के सप्तम में दो पाप हों वह स्त्री मनस्विनी (स्वेच्छाचारिणी) विधवा वा कामातुरा होती है । सप्तम में तीन पापग्रह हों तो व्यभिचारिणी और पश्चात् अपने पति का वध करती है ।

खाम्बाश्रितौ रविकुजौ यदि पर्वताग्र—
पातान्मृतिः शशिभतोऽथ कुजार्कजाब्जैः ।
कोशाम्बुकामगृहगैः क्रमशोऽङ्गनानां
वाप्यन्धुतो मरणमुग्रयुतेक्ष्यमाणौ ॥ ६७ ॥
कन्याश्रितौ शशिभगौ किमु बन्धनान्त—
श्चन्द्रारुणौ द्वितनुभोदयगौ कबन्धे ।
मृत्युः स्वतो हिमगुरुग्रखगान्तरस्थो—
ऽस्त्रर्क्षे करोति मरणं दहनायुधाभ्याम् ॥ ६८ ॥

चन्द्राक्रान्त राशि से दशम तथा चतुर्थ में सूर्य और मङ्गल हों तो पर्वतके अग्र भाग से मृत्यु होती है । द्वितीय में मङ्गल, चतुर्थ में शनि और सप्तम में चन्द्रमा हो तो तालाब (बावड़ी) वा कूप (कूए) में मृत्यु होती है । कर्क वा कन्या में सूर्य चन्द्र ये दोनों हों और वे पापग्रहों से दृष्ट युक्त हों तो बन्धन से मृत्यु होती है । मङ्गलकी राशि में स्थित चन्द्रमा यदि पापग्रहों के अन्तराल में हो तो अग्नि वा शस्त्र से मृत्यु को करता है ।

प्रबन्धपे गंदोपगे सपत्नपेऽङ्गमाश्रिते ।
कुरङ्गलोचनात्ययो भवेत्तदाऽऽयुधोद्भवः ॥ ६९ ॥

षष्ठ में पञ्चमेश और लग्न में षष्ठेश हो तो शस्त्र से स्त्रीकी मृत्यु होती है ।

कर्के दिवाकरसुते मकरे हिमांशौ
वाच्या जलोदरभवा मृतिरङ्गनानाम् ।
सौम्यग्रहे निधनगे मरणं धवाग्रे
स्वस्थैः शुभैर्मरणगैर्दुरितैस्तथैव ॥ ७० ॥

कर्क में शनि, मकर में चन्द्रमा हो तो जलोदर रोग से स्त्रियों की मृत्यु होती है । अष्टम में शुभग्रह हो तो पति के आगे स्त्री की मृत्यु होती है । एवं द्वितीय में शुभग्रह और अष्टम में पापग्रह हो तो भी पति के आगे स्त्री की मृत्यु होती है ।

कोशाश्रितैः शुभकरैः स्वयमेव मृत्यु—
र्यद्भागगो मरणपो मरणं च तस्य ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दाये विधौ विगलिते निधनेऽम्य पाके
याम्यस्थतत्पतितदंशपदायकाले ॥ ७१ ॥

द्वितीय में शुभग्रह हों तो स्त्री की स्वयं मृत्यु होती है। जिसग्रह के नवांश में अष्टमेश हो उसकी दशा में मरण होता है अष्टम में क्षीण चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में मरण होता है। अथवा अष्टमस्थ ग्रह की दशा में वा अष्टमेश की दशा में वा अष्टमेश के नवांशेश की दशा में स्त्री का मरण होता है।

एकस्थौ स्मरतनुपौ किमन्तपेऽङ्गे--
ऽङ्गेशेऽस्ते शुभदयुतेऽथ मिश्रवीर्ये।
नैर्याणेऽघशुभविहङ्गयुक्तदृष्टे
जम्पत्योः समसमये ऽन्तमाहुरार्याः ॥ ७२ ॥

सप्तमेश और लग्नेश ये दोनों एकस्थान मे हों अथवा लग्न में सप्तमेश और सप्तम मे लग्नेश हो और शुभग्रहसे युक्त हो अथवा अष्टम स्थान मिश्रबली हो और पाप शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो तो पण्डित जन एक ही समय में स्त्री और पुरुष की मृत्यु को कहते हैं।

उत्तम सहोदर योगः —

शौर्य्येशे नृखगे नरग्रहगृहे पुंखेटयुक्तेक्षिते
केन्द्रेऽर्थे नियतौ मतौ बलयुते सत्सोदरं प्राप्नुयात्।
धीयातौ सहजायपौ प्रथमतो जाताऽबला सोदरं
सम्प्राप्नोति गुणैर्युतं क्षितिपतिं तेजः सुरूपान्वितम् ॥ ७३ ॥

तृतीय का स्वामी पुरुष ग्रह हो और वह पुरुष ग्रह की राशि में स्थित हो, पुरुष ग्रह से युक्त दृष्ट हो एवं बलवान् होकर केन्द्र द्वितीय नवम वा पञ्चम में हो तो वह कन्या उत्तम सहोदर (भाई) को पाती है। कन्या के जन्म लग्न से सहजेश लाभेश ये दोनों पञ्चम में हों तो वह कन्या गुणी, पृथ्वीका स्वामी, तेज तथा सुन्दर रूप युक्त सहोदर को पाती है।

कन्या के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति से पतिलक्षणः—

गौराङ्गो रमण इने द्युने सरोष —
दृक् कामी शशिनि गदी गुणी सुरूपः।
भोगाढ्यो हि तनुतनुः कुजे विनम्रः
क्रूरः स्यात्पटुवचनश्च रक्तकान्तिः ७४
ज्ञे विद्याद्रविणगुणप्रपञ्चयुक्तो
वागीशे नृपतिसमः स्मरी च बाल्ये।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दीर्घायुर्भृगुतनये कविर्विनोदी
कान्तः स्यात् क्षितिरमणः सुकेन्द्रिदक्षः ॥ ७५ ॥

जिस कन्या के सप्तम में सूर्य हो तो उसका पति गौर वर्ण, क्रोध युक्त नेत्र तथा कामी होता है। सप्तम में चन्द्रमा हो तो रोगी, गुणवान्, सुन्दररूपयुक्त; मङ्गल हो तो विनम्र, क्रूरस्वभाव, चतुर वचन तथा रक्तकान्ति बुध हो तो विद्या, धन, गुण तथा प्रपञ्च से युक्त, गुरु हो तो राजाके समान धनी, बाल्य काल में कामी, शुक्र हो तो कवि, विनोदी, मनोहर शरीर, भूमिका स्वामी और क्रीडा में चतुर होता है।

मारे मन्दे स्थिराङ्गः स्यात्पापी वृद्धकलेवरः।
ध्वजेऽर्हौ तत्रनीचस्तत्समः कचरचेतनः ॥ ७६ ॥

जिस कन्या के सप्तम में शनि हो तो उसका पति स्थिर शरीर, पापात्मा तथा वृद्धतुल्य शरीर वाला होता है। सप्तम में केतु या राहु हो तो नीच वा उसके समान वा मलिन प्राणी होता है।

स्वांशेऽरुणे मृदुरतिर्मदगे विनोदी
क्रीडायुतः शशिनि सौख्यमुपैति नाथः।
जीवे जितेन्द्रियवरो रुधिरे तु जारः
स्त्रीलोलुपो भवति सोमसुते मनीषी ॥ ७७ ॥
शुक्रे सुखी सुषमदेह इनस्य सूनौ
मूर्खो जरन्मदभभागभवो युवत्याः।
स्वामी गुणी मृदुतनुः प्रभवेत्प्रगल्भो
वृद्धोऽतिमूर्ख इनजे स्वभभागगेऽस्ते ॥ ७८ ॥

सप्तम गत सूर्य अपने नवांश में हो तो कोमल रतिवाला, विनोदी तथा क्रीडा युक्त होता है। सप्तम में स्वनवांशगत चन्द्रमा हो तो उसका पति सौख्य को प्राप्त होता है। एवं गुरु हो तो जितेन्द्रियों में प्रधान, मङ्गल हो तो जार और स्त्रियों के मध्य में चञ्चल, बुध हो तो विद्वान्, शुक्र हो तो सुखी तथा सुन्दर शरीर एवं शनि हो तो मूर्ख तथा वृद्ध होता है। कन्या के जन्म लग्न से सप्तम स्थान में जो राशि हो वा जिस राशि का नवांश हो उसमें जिसके पतिका जन्म हो उसका पति गुणवान्, कोमलशरीर और धृष्ट होता है। यदि सप्तम गत शनि स्वराशि में तथा स्वनवांश में हो तो उसका पति वृद्ध तथा मूर्ख होता है।

कापुरुषादि योगः—

शून्येऽवदृष्टे विबले स्मरे शुभैरनीक्षिते कापुरुषः पतिर्भवेत्।
षण्ढः पतिर्ज्ञे सयमे स्मरे वशा वा दुर्भगा सा वनिता यदुद्भवे ॥ ७९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिसके जन्म लग्न से सप्तम स्थान ग्रहोंसे रहित हो पापदृष्ट, निर्बल तथा शुभग्रहोंसे दृष्ट न हो तो उसका पति कापुरुष (कायर) होता है। सप्तमभाव गत बुध यदि शनिसे युक्त हो तो उसका पति षण्ढ (नपुंसक) और वह स्त्री वन्ध्या अथवा दुर्भगा अर्थात् पतिसे प्रेम न करने वाली होती है।

नित्यं प्रवासी मदने चरे पतिः स्थिरे गृहस्थो द्विरुचिर्द्विदेहभे।
स्याद्राजपूज्यो रमणः शुभेक्षितयुक्ते समर्क्षे यदि मन्मथालये ॥ ८० ॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम में चर राशि हो उसका पति निरन्तर प्रदेश में निवास करने वाला होता है। एवं सप्तम में स्थिर राशि हो तो घरमें रहनेवाला और द्विस्वभाव राशि हो तो दोरुचि वाला होता है। सप्तम में समराशि हो और वह शुभग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो उसका पति राजासे सम्मानित होता है।

एकत्र याताः शशिसौम्यसौराश्चेत्काव्यदृष्टा रमणोऽविवेकी।
भ्रमेणयुक्तस्तरलस्वभावो लोलो नितान्तं चपलः प्रदिष्टः ॥ ८१ ॥

चन्द्र बुध शनि ये तीनों एकस्थान में स्थित होकर शुक्र से दृष्ट हों तो उसका पति अविवेकी, भ्रमसे युक्त, कामविकारस्वभाव वाला, लालची और अत्यन्त अशिक्षित होता है।

भर्त्ता दुःस्थौ दैवपेज्यौ गतायुः केन्द्रे कोणे तौ सवित्ताश्चिरायुः।
दुष्टः साही मोपकः सारिपौसन् साम्बेशज्ञौ कर्षकः सारसौरी ॥ ८२ ॥

जिस के त्रिक (६।८।१२ स्थान में भाग्येश तथा गुरु हों उस के पति की अल्पायु होती है। यदि वे दोनों केन्द्र वा त्रिकोण में हों तो उसका पति धनवान् तथा दीर्घायु वाला होता है। यदि वे दोनों राहु से युक्त हों तो दुष्टस्वभाववाला, षष्ठेश से युक्त हों तो चोर, बुध तथा चतुर्थेश से युक्त हों तो पण्डित एवं मङ्गल तथा शनि से युक्त हों तो कर्षक (किसान) होता है।

स्त्रीणां पुञ्जातके धर्म्मकर्म्मजन्यगुणाः स्थितिः।
दिग्देशौ योजिता नाथे स्त्रीजातकेऽत्र तत्त्वतः ॥ ८३ ॥

पुरुष जातक में स्त्रियों के जो धर्म्म कर्म्म जन्य गुण स्थिति दिग्देश कहे हुए हैं उनका स्त्रीजातक में तत्त्वरूप से उनके पतियों में आयोजन करे।

स्त्रियों के भावगत ग्रहों का संक्षिप्त फल--

कोणाह्वाराः कोणकेन्द्रेषु शस्ताः शस्तश्चन्द्रस्तेषु भावेषु नित्यम्।
शस्ताः सर्वागारयातेषु चान्द्रिकाव्याचार्या जन्मकाले युवत्याः ८४

स्त्री के जन्म लग्न से त्रिकोण तथा केन्द्र में शनि, राहु तथा मङ्गल ये तीनों शुभ होते हैं। उक्त भावों में चन्द्रमा भी नित्य शुभ होता है। बुध शुक्र गुरु ये तीनों सब भावों में शुभ होते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अष्ट कूटों के नाम—

* वर्णोऽथवश्यं क्रमशोऽथ तारा योनिस्ततः पुष्करचारिमैत्रम् ।
मैत्रं गणानामथ राशिकूटं स्युर्नाडिकैकादिगुणाधिकास्ते ८५

वर्ण, वश्यावश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री गणमैत्री, राशिकूट तथा नाडी ये क्रमसे अष्टकूट हैं। उक्त अष्टकूट एक से एक अधिक गुणवाले होते हैं अतः नाडीकूट के आठ गुण होते हैं।

राशियों के वर्णका परिज्ञान—

विप्राःसरीसृपकुलीरझषा मृगेन्द्र-
चापावयो नृपतयो मृगगोकुमार्य्यः ।
वैश्या नृयुग्घटश्वटाः पदजाः प्रदिष्टाः
पुंवर्णतो यदि वधूरधिका न शस्ताः ॥ ८६ ॥

वृश्चिक, कर्क तथा मीन 'ब्राह्मणवर्ण' सिंह, धनु तथा मेष 'क्षत्रिय वर्ण' मकर, वृष तथा कन्या 'वैश्य' वर्ण' एवं मिथुन, कुम्भ तथा तुला ये शूद्रवर्ण वाले होते हैं। वरके वर्ण से कन्या का वर्ण अधिक (श्रेष्ठ) हो तो उनका मेलन शुभ नहीं होता है।

'वर्णचक्रमिदम्'।

ब्राह्मणाः	कर्कः	वृश्चि.	मीनः
क्षत्रियाः	मेषः	सिंहः	धनुः
वैश्याः	वृषः	कन्या	मकरः
शूद्राः	मिथुनः	तुला	कुम्भः

'विवाहे वर्णगुणाः'।

कन्यायाः — 'वरस्य'। वर्णाः	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्रह्म.	१	०	०	०
क्षत्रि.	१	१	०	०
वैश्य.	१	१	१	०
शू.	१	१	१	१

* इह वरवधूजन्मपत्री मेलापके ग्रन्थान्तरे विशेषः प्रोक्तः सतुयथा--अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्निभं परिकल्पयेत् । तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् १ जन्मभं जन्माधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नाम्भम् । व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेदिति २

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राशियों के वश्यावश्य का परिज्ञान--

नरा धनुःपूर्वदलाबलातुलायुगानि कीटः कथितः कुलीरकः ।
सरीसृपो ऽलिः पशवो हयोत्तरदलैणपूर्वार्द्धमृगेन्द्रगोक्रियाः ॥ ८७ ॥
नक्रान्तिमार्द्धान्त्यघटा जलोत्था वश्या विहायैणरिपुं नृभानाम् ।
भक्ष्या इहैषां जलजा विनालिं सर्वे ऽपि बोध्या मृगराजवश्याः ॥ ८८ ॥

धनु का पूर्वार्द्ध, कन्या, तुला तथा मिथुन ये द्विपद (मनुष्य) राशि हैं। कर्क कीट सञ्ज्ञक है। वृश्चिक सरीसृप (बिलवासी) है। धनु का उत्तरार्द्ध, मकर का पूर्वार्द्ध, सिंह वृष, तथा मेष ये चतुष्पद (पशु) राशि हैं। मकर का उत्तरार्द्ध, मीन तथा कुम्भ ये जलचर राशि हैं सिंह को छोड़कर शेषराशि मनुष्य के वश्य हैं जलचरराशि मनुष्यके भक्ष्य है। वृश्चिक को छोडकर शेष राशि सिंह के वश्य हैं।

मेषादीनां द्विपदादिसञ्ज्ञाबोधकचक्रम्[1]।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.
द्विपदा.	चतुष्पदः	चतुष्पदः	द्विपदः	कीटः	चतुष्पदः	द्विपदः
राशयः	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
द्विपदा.	द्विपदः	सरीसृपः	द्विपदः चतुष्पदः	चतुष्पदः जलचरः	जलचरः	जलचरः

वश्यगुणाः[2]।

		वरस्य				
		चतु.	मनु	जलः	वन.	कीट.
कन्यायाः[1]	चतु.	२	१	२	॥	१
	मनु	१	२	१	०	१
	जल.	१	१	२	१	१
	वन.	०	०	१	२	०
	कीट.	१	१	१	०	२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तारांकूटं परिज्ञान--

विद्वान्वधूभाद्वरभं वरर्क्षतो यावद्वधूभं गणयेत्परस्परम् ।
तारा भवेत्खेटहृतावशेषिते रामाक्षसप्तोन्मितभं परित्यजेत् ॥ ८९ ॥

कन्या के जन्म नक्षत्र से वरके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो, एवं वरके जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उन दोनों को पृथक् रखकर ९ से तष्टकरे शेष तारा होती है । यदि शेष संख्या ३, ५, ७ बचे तो 'अशुभ तारा' होती हैं । वर वधू के जन्मपत्री मेलन में अशुभ तारा ओं को त्याग दे ।

'ताराचक्रमदम्' ।

तारा:	१	२	३	४
तारानाम	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम:
५	६	७	८	९
प्रत्यरि:	साधक:	वध:	मैत्र	अतिमैत्र:

'तारागुणा:' ।

'वरस्य' ।

कन्यायाः	ता. १	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनिकूट परिज्ञानः—

दास्राम्बुपत्योस्तुरगो ऽनलेज्ययोर्मेषो ऽर्कवाग्योर्महिषो ऽस्रपेशयोः ।
श्वा तोयहग्योः कपिरैन्द्रमैत्रयोरेणो ऽथ पौष्णान्तकयोः करी भगः ९०
द्वीपी तु चित्राद्विपयोस्तथा ऽर्य्यभबुध्न्यर्क्षयोर्गोर्वसुभाजपादयोः ।
सिंहो ऽथ वभ्रुर्विधिवैश्वयोर्मघायोन्योरिहाखुर्भुजगः कचान्द्रयोः ९१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आदित्यभौजङ्गभयोर्बिडालको बभ्रूरगं श्वैणमजप्लवबङ्गकम् ।
गोव्याघ्रमारब्वोतुकमश्वकासरं वैरं नसत्सिंहगजं नृकन्ययोः ९२

शतभिषा तथा अश्विनी की अश्व (घोडा) योनि, कृत्तिका तथा पुष्यकी मेष (मेंढा) योनि, हस्त तथा स्वाती की महिष (भैंस) योनि, मूल तथा आर्द्रा की श्वान (कुत्ता) योनि, पूर्वाषाढा तथा श्रवण की कपि (वानर) योनि, ज्येष्ठा तथा अनुराधा की मृग योनि, रेवती तथा भरणी की करी (हाथी) योनि, चित्रा तथा विशाखा की व्याघ्र (बाघ) योनि, उत्तराफाल्गुनी तथा उत्तराभाद्रपदा की गौयोनि, धनिष्ठा तथा पूर्वाभाद्रपदा की सिंह योनि, अभिजित् तथा उत्तराषाढा की नकुल (नेवला) योनि, मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी की मूषक (मूसा) योनि, रोहिणी तथा मृगशीर्ष की सर्प (साँप) योनि एवं आश्लेषा तथा पुनर्वसु की मार्जार (बिल्ला) योनि है। नकुल सर्पका, श्वान मृगका, मेंढा वानरका, गौ व्याघ्र का, मूषक मार्जार का, अश्व महिष का और सिंह गज का परस्पर वैर है। अत एव वर वधू की यदि उक्त वैर योनि हो तो उनका मेलन शुभ नहीं होता है।

'योनिवैरबोधकचक्रमिदम्'।

नक्ष.	अश्वि.	भर.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	ति.	आश्ले.	
यो.	अश्वः	गजः	मेषः	सर्पः	सर्पः	श्वानः	बिडालः	मेषः	बिडालः	
वै.	महिषः	सिंहः	वानरः	नकुलः	नकुलः	मृगः	मूषकः	वानरः	मूषकः	
नक्षत्रा	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	कन्यायाः
यो.	मूषकः	मूषकः	गौः	महिषः	व्याघ्रः	महिषः	व्याघ्रः	मृगः	मृगः	
वै.	बिडालः	बिडालः	व्याघ्रः	अश्वः	गौः	अश्वः	गौः	श्वानः	श्वानः	
नक्ष	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
यो.	श्वानः	वानरः	नकुलः	नकुलः	वानरः	सिंहः	अश्वः	सिंहः	गौः	गजः
वै.	मृगः	मेषः	सर्पः	सर्पः	मेषः	गजः	महिषः	गजः	व्याघ्रः	सिंहः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'योनिगुणाः'

'वरस्य'।

योनयः	अश्वः	गजः	मेषः	सर्पः	श्वानः	मार्जारः	मूषकः	गौः	महिषः	व्याघ्रः	मृगः	वानरः	नकुलः	सिंहः
अश्वः	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	३	१
गजः	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेषः	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्पः	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वानः	२	२	२	२	४	१	२	२	२	२	०	२	२	२
मार्जारः	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषकः	३	३	३	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गौः	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिषः	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्रः	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	३
मृगः	३	३	३	०	२	३	३	३	३	१	४	२	२	१
वानरः	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुलः	३	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंहः	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

ग्रहमैत्रीकूट परिज्ञानः—

मैत्री ग्रहाणां गदिताऽपरत्रान्योन्यं सुहृत्त्वं शुभदं नृनाथ्योः ।
राश्यंशपत्यो रिपुतामिथश्चेद्दिष्टान्तदा स्यात्समता समोक्ता ॥ ९३ ॥

सूर्यादि ग्रहों की मैत्री अन्यत्र (ग्रहशील प्रकरण के श्लोक २२, २३, २४ में) कही है। यदि वर तथा कन्या की राशि तथा नवांश राशि स्वामियों की परस्पर मित्रता हो तो वर वधू की जन्मपत्री का मेलन शुभ, उन दोनों की शत्रुता हो तो मृत्युदायक और समता हो तो सम फल कहा है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'निसर्गमैत्रीचक्रमिदम्'

ग्रहाः	सू.	चं	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्राणि	चं. मं. बृ.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. चं. म.	बृ. श.	बु. शु.
समाः	बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ श.	श.	मं. बृ.	बृ.
शत्रवः	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

'ग्रहमैत्रीगुणाः'

'वरस्य'

कन्यायाः	ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
र.	५		५	५	४	५	०	०
चं.	५		५	४	१	४	॥	॥
मं.	५		४	५	॥	५	३	॥
बु.	४		१	॥	५	॥	५	४
गु.	५		४	५	॥	५	॥	३
शु.	०		॥	३	५	॥	५	५
श.	०		॥	॥	४	३	५	५

गण कूट परिज्ञानः—

रक्षोनृगीर्वाणगणा मघाम्बुपमिश्रैन्द्र चित्रोरगवासवास्रपाः ।
पूर्वाध्रुवेशान्तकभानि मारुतेन्द्वन्त्यादितिक्षिप्रजिनानुराधिकाः ॥ ९४ ॥

प्रीतिर्गणैक्ये कथितोत्तमा समा मर्त्यासुराख्यो नररक्षसोर्मृतिः ।
प्रोक्तः कली राक्षसदेवयोर्वधूः स्यान्मानुषी ना यदि यातु सौख्यकृत् ॥ ९५ ॥

मघा, शतभिषा, मिश्र (कृत्तिका तथा विशाखा) नक्षत्र, ज्येष्ठा, चित्रा, आश्लेशा, धनिष्ठा तथा मूल ये राक्षस गण के नक्षत्र है। तीनों पूर्वा, ध्रुव (उ, ३ रो,) नक्षत्र, आर्द्रा तथा भरणी ये मनुष्यगण के नक्षत्र है। स्वाती, मृगशिरा, रेवती, पुनर्वसु, क्षिप्र (ह. अश्वि. ति. अभि.) नक्षत्र, श्रवण तथा अनुराधा ये देवगण के नक्षत्र हैं। वर तथा वधूका एक ही गण हो तो उन दोनों में परस्पर उत्तम प्रीति होती है। मनुष्य तथा देवगण में मध्यम प्रीति होती है। मनुष्य तथा राक्षस गण में मृत्यु और राक्षस तथा देवगण में कलह होता है। यदि कन्याका मनुष्य गण और वर का राक्षस गण हो तो उनका मेलन सुखकारक होता है।

'गणबोधकचक्रमिदम्'।

देवगणः	अश्व.	मृ.	पुन.	ति.	ह.	स्वा.	अनु.	श्र.	रे.
मनुष्यगणः	भर.	रो.	आर्द्रा	पू. फा	उ. फा.	पू. षा.	उ. षा	पू. भा.	उ. भा.
रक्षोगणः	कृत्ति.	श्ले.	म.	चि.	वि.	ज्ये.	मू.	ध.	शत.

'गणगुणाः':

'वरस्य'।

कन्यायाः	गणाः	देव.	मनु.	राक्ष.
	देव.	६	५	१
	मनु.	६	६	०
	राक्ष.	०	०	६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गणदोषपरिहार तथा भकूट परिज्ञानः—

मैत्र्यां भभागाधिपयोर्नृनार्य्यो गणस्य दोषो न भवेत्त्रिकोणे ।
अपत्यहानिर्मृतिरष्टषट्के द्विर्द्वादशे निर्धनताद्वयोः स्यात् ॥ ९६ ॥
अन्यत्र सौख्यप्रदमङ्गनाभात्षष्ठं यदौजान्न षडष्टकं सत् ।
युग्मर्क्षतः षष्ठमुदीरितं सत्तदष्टमं चेद्विपरीतमस्मात् ॥ ९७ ॥

वर तथा कन्या की राशि और नवांशराशि के स्वामियों की मित्रता हो तो 'गणका दोष' नहीं होता है वर वा कन्या की राशि से यदि दोनों की राशि नवम तथा पञ्चम हो तो सन्तान की हानि, अष्टम तथा षष्ठ हो तो मृत्यु, द्वितीय तथा द्वादश हो तो 'दरिद्रता' होती है। यदि अन्य संख्यक (१।३।४।७।१०।११)राशि हो तो वर वधू का मेलन सौख्यप्रद होता है। कन्या की विषम राशिसे यदि वर की राशि छठी हो तो मेलन अशुभ होता है। कन्या की सम राशिसे यदि वर की राशि छठी हो तो मेलन शुभ होता है। एवं कन्या की विषम राशि से वर की आठवीं राशि शुभ और कन्या की सम राशि से वर की आठवीं राशि हो तो मेलन अशुभ होता है।

'भकूटगुणाः'।

'वरस्य'।

ग.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नाडी कूट परिज्ञानः —

दास्रादित्येशार्यमाजांघ्रिमूलपाथोनाथेन्द्रार्कभान्याद्यनाडी ।
चित्रा पाथो वासवं मैत्रभाग्ये बुध्न्यं याम्यं जैवचान्द्रे च मध्या॥ ९८ ॥

स्वात्याश्लेषावैश्वमिश्रश्रवांसि ब्राह्मं पित्र्यं पौष्णभं चान्त्यनाडी ।
कन्यांमध्या ऽऽद्यापुमांसं निहन्यादन्त्या तुभौ मध्यमा ऽतीव निन्द्या॥ ९९॥

अश्विनी, पुनर्वसु, आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, मूल, शतभिषा, ज्येष्ठा और हस्त इननक्षत्रों में 'आद्यनाडी' होती है। चित्रा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा, भरणी, पुष्य और मृगशिरा इननक्षत्रों में 'मध्यनाडी' होती है। स्वाती, आश्लेषा, उत्तराषाढा, मिश्र (विशाखा तथा कृतिका) नक्षत्र, श्रवण, रोहिणी, मघा और रेवती इननक्षत्रों में अन्त्यनाडी, होती है मध्यनाडी में कन्याकी मृत्यु, आद्यनाडी में वर की मृत्यु और अन्त्यनाडी में वर तथा वधू की मृत्यु होती है। किन्तु मतान्तर से सर्वत्र 'मध्यनाडी' अत्यन्त निन्दित अर्थात् अग्राह्य होती है।

'नाडीबोधकचक्रमिदम्'। * नाडीगुणाः'।

											वरस्य'।			
आद्यना.	अश्वि.	आर्द्रा	पुन.	उ. फा.	ह.	ज्ये.	मू.	श.	पू. भा.	कन्यायाः'।	ना.	आ.	म.	अं.
मध्यनाडी	भर.	मृग.	पुष्य.	पू. फा.	चि.	अनु.	पू. षा.	ध.	उ. भा.		आ.	०	८	८
अन्त्यनाडी	कृत्ति.	रोहि.	आश्ले.	म.	स्वा.	विशा.	उ. षा.	श्र.	रेवती		म.	८	०	८
											अं.	८	८	०

नाडीदोषाभाव नक्षत्र परिज्ञान—

विधातृपौष्णैन्दवपुष्यवह्निबुध्न्यश्रवःशङ्करशक्रभानाम् ।
नाडीजदोषो न भवेद्विवाहे विज्ञाः पुराणा इति केचिदूचुः ॥ १०० ॥

* इह ग्रन्थान्तरे तु गुणैक्यग्राह्याग्राह्यमुक्तं ' 'तदित्थम्'—गुणैः षोडशाभिर्निन्द्यं मध्यमा विंशतिस्तथा श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्तत्परैस्तूत्तमोत्तमम् १ सद्रकूटे इति ज्ञेयं दुष्टकूटे तु कथ्यते । निन्द्यं गुणैर्विंशतिभिर्मध्यंत्राणाधिकं स्मृतम् । तत्परैः पञ्चभिः श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठतरं गुणैः ' इति ।

इहावश्यके परिहारमाह '— व्दयर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थाङ्कके रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिगोस्वर्णादि दत्वोद्वहेद् ' इति ।

यदि कन्याराशितो वरस्य राशिः सप्तमः स समसप्तको दोषः सोऽपि विवाहे वर्ज्यः ' इति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रोहिणी, रेवती, मृगशिरा, पुष्य, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपदा, श्रवण, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा, इननक्षत्रों का नाडी जन्य दोष विवाह में नहीं होता है। इसप्रकार कोई प्राचीन आचार्य कहते हैं।

नाडी तथा गण के दोष का परिहार—

राशिद्वयं भैक्य इहोडुभिन्नं राश्यैक्य एवं वरकन्ययोश्चेत्।
दोषोन नाड्या न गणस्य दोषो भैक्येप्रशस्तं चरणान्तरे स्यात्॥ १०१॥

वर तथा कन्या की भिन्न राशि हों और नक्षत्र एकही हो अथवा उनदोनों के नक्षत्र भिन्न हों और राशि एकही हो तो नाडी तथा गण का दोष नहीं होता है। यदि वर तथा कन्या का एकही नक्षत्र हो किन्तु उस के चरण भिन्न हों तो वर वधूका मेलन शुभ होता है।

वर्णभेद से नाडी प्रभृति कूटों के दोष का परिहार--

नाड्युत्थदोषो मुखसम्भवानां वर्णोद्भवो दोष इलापतीनाम्।
स्याद्रुजानां हि गणस्य दोषो योन्युत्थदोषश्चरणोत्थितानाम्॥ १०२॥

ब्राह्मणों के लिए नाडीजन्य दोष, क्षत्रियों के लिए वर्ण जन्य दोष, वैश्यों के लिए गणजन्य दोष और शूद्रजनों के लिए योनिवैर से उत्पन्न दोष मुख्य कहा है। किन्तु उक्त मत सर्व सम्मत नहीं है।

वर्ग परिज्ञान--

वीशौतुकेसरिश्वाह्याख्वेणमेषाः क्रमादमी।
अष्टौ वर्गाधिनाथाः स्युः पञ्चमोऽरिः स्वतो न सन्॥ १०३॥

अवर्ग का गरुड, कवर्ग का बिडाल, चवर्ग का सिंह, टवर्ग का श्वान, तवर्ग का सर्प, पवर्ग का मूषक, यवर्ग का मृग और शवर्ग का मेष ये क्रमसे अकारादि आठवर्गों के स्वामी हैं। अपने वर्ग से पञ्चम वर्ग शत्रु होता है वह विवाह में शुभ नहीं होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'वर्गस्वामिबोधकचक्रम्'।

गरुडः	अ	इ	उ	ऋ ऌ	ए. ओ.
बिडालः	क.	ख	ग	घ	ङ
सिंहः	च	छ	ज	झ	ञ
श्वानः	ट	ठ	ड	ढ	ण
सर्पः	त	थ	द	ध	न
मूषकः	प	फ	ब	भ	म
मृगः	य	र	ल	व	.
मेषः	श	ष	स	ह	.

वर्गाणां मैत्रीबोधकचक्रम्'।

वर्गाः	गरुडः	मार्जारः	सिंहः	श्वानः	सर्पः	मूषकः	मृगः	मेषः
मित्राणि	श्वानः	सर्पः	मूषकः	मृगः	मेषः	गरुडः	मार्जारः	सिंहः
समाः	सिंहः	श्वानः	सर्पः	मूषकः	मृगः	मेषः	गरुडः	मार्जारः
शत्रवः	सर्पः	मूषकः	मृगः	मेषः	गरुडः	मार्जारः	सिंहः	श्वानः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्वभागादि नक्षत्र तथा तत्फल परिज्ञान---

पूर्वार्द्धयुक् पौष्णभतो ऽङ्गभानि मध्यार्द्धयुग्मं रविभानि रौद्रात् ।
गोभानि शाक्रादपरार्द्धमीशः प्रियो द्वयोः प्रेम नरप्रिया स्त्री ॥ १०४ ॥

रेवती से ६ नक्षत्र पूर्वभाग, आर्द्रा से १२ नक्षत्र मध्यभाग और ज्येष्ठा से ९ नक्षत्र परभाग में होते हैं। पूर्व भाग में पति श्रेष्ठ, मध्यभाग में परस्पर दो नों की प्रीति और परभाग में कन्या श्रेष्ठ होती है।

'वर-वधू मेलापके युजिभचक्रमिदम्'।

पूर्व भागः ६	मध्यभागः १२	परभागः ९
रे. अश्वि. भ. कृ. रो. मृ.	आ. पुन. ति. श्ले. म. पू. फा. उ. फा. ह. चि. स्वा. वि. अनु.	ज्ये. मू. पू. षा. उ. षा. श्र. ध. श. पू. भा. उ. भा.
पतिः श्रेष्ठः	द्वयोः सुमतिः	कन्या श्रेष्ठा

नृदूर परिज्ञान--

* स्त्रिया जनुर्भात्पतिजन्मभं चेद्यदा द्वितीयं नहि मङ्गलाय ।
भवेदृणग्राहकभाच्चदासभतस्तथा ग्रामभतो ऽपि चिन्त्यम् ॥ १०५ ॥

कन्या के जन्म नक्षत्र से यदि वर का जन्म नक्षत्र दूसरा हो तो उन दोनों का मेलन शुभ नहीं होता है। ऋणग्राहक के नक्षत्र से ऋण दाता का नक्षत्र दितीय हो तो शुभ नहीं होता है। दास के नक्षत्र से स्वामी का नक्षत्र द्वितीय हो तो शुभ नहीं होता है। एवं ग्राम के नक्षत्र से ग्राम में बसने वाले का नक्षत्र द्वितीय हो तो शुभ नहीं होता है।

* एतद् ब्रह्मयामले ऽप्युक्तम्'— 'भामिनीजन्मनक्षत्राद् द्वितीयं पतिजन्मभम्। न शुभं भर्तृनाशाय इत्युक्तं ब्रह्मयामले' इति। 'अस्य परिहारः—' भिन्नर्क्षराश्येकर्क, भिन्नांघ्र्येकभमेतयोर्गणखगौ नाडीनृदूरं नच इति। 'नृदूरदोषो मध्यदेशे न चिन्त्यः।' दक्षिणदेशे त्याज्य इति। अन्यद्विशेषः---- 'नश्याभावे तथाऽन्योन्यं ताराशुद्धौ परस्परम्। नचेत्षष्ठाष्टमो दोष स्तदा शुभः। हीनवर्णो यदा राशी राशीशो वर्ण उत्तमः। तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेद्' इति।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आश्लेषा तथा मूल में उत्पन्न वर वधू के दोषका परिज्ञान----

श्वश्रूं हतो व्यालभवौ सुतासुतौ मूलर्क्षजातौ श्वशुरं हतस्तयोः ।
मूलावसानांघ्रिभवौ शुभावुभौ तद्वद् भुजङ्गादिमपादजावपि ॥ १०६ ॥

आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न वर तथा वधू श्वश्रू (सास) का विनाश करते हैं । मूल नक्षत्र में उत्पन्न वर तथा वधू श्वशुर (ससुर) का विनाश करते हैं । मूल नक्षत्र के अन्त्य चरण में तथा आश्लेषा के प्रथम चरण में उत्पन्न वर तथा वधू, ससुर और सास का विनाश नहीं करते अर्थात् उनके लिए वे सुखदायक होते हैं ।

विशाखा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या के दोष का परिज्ञान----

द्वीशोद्भवा हन्ति स्वदेवरं सुता पत्यग्रजं शक्रभजाऽऽत्मजा तथा ।
राधाद्यपादत्रयसम्भवा च या सा देवराणां सुखदायिनी भवेत् ॥ १०७ ॥

विशाखा नक्षत्र में ' उत्पन्न कन्या ' देवर (पति के छोटे भाई) का विनाश करती है । ज्येष्ठा नक्षत्र मे ' उत्पन्न कन्या ' पतिके अग्रज (जेठ) का नाश करती है । विशाखा नक्षत्र के प्रथम द्वितीय तृतीय पादमें उत्पन्न हुई कन्या देवरों के लिए सौख्य दायक होती है ।

विषारव्य योग तथा उस में उत्पन्न कन्या के दोषका परिज्ञान---

सर्पे वह्नौ कार्यभेऽर्कार्किभौमवारे तिथ्यां भद्रिकायां कुमार्य्याः ।
यस्या जन्मोतोदयस्थौ शुभौ द्वौ द्वेष्ये पापावेकपापः पदस्थः ॥ १०८ ॥

वार्कौ व्याले चेद् द्वितीया ततोऽर्के द्वादश्यां द्वीशर्क्षमारे शतर्क्षम् ।
सप्तम्यां वाथार्कजो लग्नगोऽर्के पुत्रे भौमो भाग्यगः सा विषारव्या ॥ १०९ ॥

एषाऽनपत्या विधवा योऽङ्गलग्नतः कलत्रपः ।
सोऽनङ्गस्थः शुभोऽस्ते वा विषारव्या नाहि दोषभाक् ॥ ११० ॥

आश्लेषा कृत्तिका वा शतभिषा नक्षत्र में, रवि शनि वा मङ्गल वार में भद्रा (२, ७, १२) तिथि में जिस कन्या का जन्म हो वह ' विषकन्या ' होती है। अथवा जिस के जन्मलग्न में दो शुभग्रह हों तथा दो पापग्रह षष्ठस्थान में हों और एक पापग्रह दशम में हो तो वह भी ' विषकन्या ' होती है । अथवा शनिवार, आश्लेषा नक्षत्र तथा द्वितीया तिथि में, अथवा रविवार, द्वादशीतिथि तथा विशाखा नक्षत्र में, भौमवार, शतभिषा नक्षत्र तथा सप्तमी तिथि में जिस कन्या का जन्म हो वह ' विषकन्या ' होती है । जिस के जन्म लग्न में शनि, पञ्चम में सूर्य तथा नवम में मङ्गल हो तो वह भी ' विषकन्या ' होती है ।

विषाख्य योग में उत्पन्न कन्या अनपत्या (सन्तान हीन) अथवा विधवा (राण्ड) होती है । जिस कन्या के जन्म लग्न से वा जन्म चन्द्र राशि से जो सप्तम भाव का स्वामी हो वह ग्रह यदि सप्तम भाव में हो अथवा शुभ-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रह सप्तम भाव में हो तो उक्त विषाख्य योग में उत्पन्न कन्या का विषाख्य दोष नहीं होता है अर्थात् वह कन्या सन्तानवती तथा सौभाग्यवती होती है।

वर तथा वधू के ग्रहों के मेलन का परिज्ञान :----

यदा महीजो वरकन्ययोर्जनौ वधावसानास्तधनाम्बुभावगः।
वरो वधूं हन्ति वरं वधूस्तथा जनेर्विलग्नादुभयोर्यदार्किजः॥ १११॥
विनाशजायाङ्गरसातलान्तिमसमाश्रितोऽङ्गारजदोषनाशकृत्।
कौजे कलत्रे कुजयुक्तलोकिते तदा न दोषः कुजसम्भवो भवेत्॥ ११२॥

वर तथा वधू की जन्मपत्री मेलन में यदि वर के जन्म लग्न से अष्टम, द्वादश सप्तम लग्न वा चतुर्थस्थान में 'मङ्गल' हो तो वह 'वर' कन्या का नाश करता है। एवं कन्या के जन्म लग्न से उक्त स्थानों में 'मङ्गल' हो तो वह 'कन्या' वर का विनाश करती है। वर वा कन्या के जन्म लग्न से यदि अष्टम सप्तम लग्न चतुर्थ वा व्ययभाव में 'शनि' हो तो भौम जनित दोष का नाश करता है। एवं सप्तम स्थान में मङ्गल की (१।८) राशि हो और वह भौमसे युक्त वा दृष्ट हो तो भी भौम जन्य दोष नहीं होता है।

जामित्रमित्रार्थनिमीलनोदयाश्रिता असौम्या वरकन्ययोस्तनोः।
तज्जन्मचन्द्रादिति वित्तभामिनीभाग्येश्वरा दुष्टगता न शर्म्मणे॥ ११३॥

वर तथा वधू के जन्म लग्न से सप्तम, चतुर्थ, द्वितीय, अष्टम, तथा लग्न में यदि पापग्रह स्थित हों तो मेलन शुभ प्रद नहीं होता है। एवं जन्म चन्द्र राशि से उक्त स्थानों में पापग्रह हों तो भी मेलन शुभ नहीं होता है। द्वितीय, सप्तम तथा नवम के स्वामी यदि त्रिक स्थान में हों तो मेलन शुभ नहीं होता है।

पुंजन्मकाले कविरुग्रमध्यग उग्रान्वितो वा मृतिमारमित्रगाः।
काव्यात्खलाश्चेदुशना शुभग्रहैर्नोयुक्तदृष्टो ललनालयो भवेत्॥ ११४॥

वर के जन्म समय में 'शुक्र' यदि पापग्रहों के अन्तराल में हो वा पापग्रह से युक्त हो वा शुक्र से अष्टम सप्तम तथा चतुर्थ में पापग्रह हो और 'शुक्र' शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट न हो तो 'स्त्री की मृत्यु होती है।

इति ज्योतिस्तत्त्वे स्त्रीजातकप्रकरणं पञ्चदशमवसितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

शुभाशुभप्रकरणं प्रारभ्यते ।

तिथि यों के स्वामी और उनकी नन्दादिसञ्ज्ञा का परिज्ञान:—

वह्निर्धाता तथा गौरी गणेशो भुजगो गुहः ।
रविर्महेश्वरो दुर्गा यमो विश्वे हरिः स्मरः ॥ १ ॥

ईश्वरश्चन्द्रमाश्चैते पितरस्तिथिनायकाः ।
तिथेः प्रतिपदो गण्या त्रिरावृत्त्या च नन्दिका ॥ २ ॥

भद्राभिधा जया चाथ रिक्ता पूर्णाह्वया क्रमात् ।
शुक्लपक्षेऽशुभा मध्या शस्ता ज्ञेया विचक्षणैः ॥ ३ ॥

एवं श्यामल पक्षे तु शस्ता मध्या तथा शुभा ।
सर्वेषु शुभकार्येषु रिक्ताऽमा नहि शोभना ॥ ४ ॥

अग्नि, ब्रह्मा, गौरी, गणेश, सर्प कार्तिकेय, रवि, महेश्वर, दुर्गा, यम, विश्वेदेव, विष्णु, कामदेव, शिव, चन्द्रमा और पितर ये क्रमसे प्रतिपदादि तिथियोंके स्वामी हैं। प्रतिपदा तिथिके क्रमसे नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये संज्ञायें तीन बार गिननी चाहिए। शुक्ल पक्ष में प्रतिपदादि पाँच तिथि अशुभ, षष्ठी आदि पाँच तिथि मध्यम और एकादशी आदि पाँच तिथि शुभ होती है। एवं कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा से पाँच तिथि शुभ, षष्ठी से पाँच तिथि मध्यम और एकादशी से पाँच तिथि अशुभ होती हैं। समस्त शुभ कार्यों में रिक्ता (४।९।१४) तिथि में और अमावास्या शुभ नहीं होती हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'तिथीनां स्वाम्यादिबोधकचक्रम्'।

तिथयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
स्वामिनः	अग्निः	ब्रह्मा	गौरी	गणेशः	सर्पः	कार्त्तिके	सूर्यः	महेशः	दुर्गा	यमः	विश्वेदे.	विष्णुः	कामः	शिवः	चन्द्रः	पितरः
नन्दादिसंज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	पूर्णा
शुक्लेऽशु.	अशुभा	अशुभा	अशुभा	अशुभा	अशुभा	मध्या	मध्या	मध्या	मध्या	मध्या	शुभा	शुभा	शुभा	शुभा	शुभा	•
कृष्णेशुभा	शुभा	शुभा	शुभा	शुभा	शुभा	मध्या	मध्या	मध्या	मध्या	मध्या	अशुभा	अशुभा	अशुभा	अशुभा	•	अशुभा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

तिथि यों की विषादि संज्ञाः—

युगर्त्तुशैलाक्षिभुजङ्गगोहयाः पतङ्गतर्काग्न्यहिगोदशेश्वराः ।
रवीशबाणत्रिषडष्टखेचरा विषाग्निदग्धास्तिथयोऽर्कवारतः ॥ ५ ॥

चतुर्थी, षष्ठी, सप्तमी, द्वितीया अष्टमी, नवमी, और दशमी ये रविवार के क्रमसे 'विषतिथि हैं। द्वादशी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी और एकादशी ये रविवार के क्रमसे 'अग्नि तिथि' हैं। एवं द्वादशी, एकादशी, पञ्चमी, तृतीया, षष्ठी, अष्टमी और नवमी ये रविवार के क्रमसे 'दग्ध तिथि' हैं।

शुभ तथा अशुभ तिथि परिज्ञानः—

अमावास्याष्टमी षष्ठी द्वादशी रिक्तिकाभिधा ।
इमाः स्युरशुभास्तिथ्य इतरास्तिथयः शुभाः ॥ ६ ॥

अमावस्या, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी, और रिक्ता (४।९।१४) ये 'अशुभ तिथि' हैं। शेष (१।२।३।५।५।७।१०।११।१३।१५) 'शुभ तिथि' है।

पर्वदिन परिज्ञानः—

भूतकृष्णाष्टमीदर्शराकाः सङ्क्रान्तिवासरः ।
भानोरेतानि पर्वाणि पञ्चसत्सु विवर्जयेत् ॥ ७ ॥

चतुर्दशी, कृष्णाष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा और रविसङ्क्रान्ति का दिन ये 'पाँच पर्व दिन' हैं। इनको शुभ कार्यों में वर्जित करे।

सिद्धि योगः—

जीवे पूर्णा सिते नन्दा भद्रा सौम्ये जयाऽसृजि ।
मन्दवारे तु रिक्तेते सिद्धियोगा उदीरिताः ॥ ८ ॥

गुरुवार में पूर्णा, शुक्र में नन्दा, बुध में भद्रा, मङ्गल में जया और शनिवार में रिक्ता तिथि हो तो 'सिद्धि योग' कहे हैं।

अमृत योगः—

भद्रा भौमे जया जीवे पूर्णा सोमे रवौ तथा ।
सिते रिक्ता तथा नन्दा बुधे मन्देऽमृता मता ॥ ९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भौमवार में भद्रातिथि, गुरु में जया, सोम और रवि में पूर्णा, शुक्र में रिक्ता एवं बुध और शनिवार में नन्दातिथि हो तो ' अमृत योग होता है।

मृत्यु योगः—

पूर्णा पङ्गावसृग्भान्वोर्नन्दा भद्रेन्दुशुक्रयोः।
बोधने च जया जीवे रिक्तिका मृत्युदा स्मृता ॥ १० ॥

शनिवार में पूर्णा, रवि तथा मङ्गल में नन्दा, सोम तथा शुक्र में भद्रा, बुध में जया और गुरुवार में रिक्ता तिथि हो तो ' मृत्यु योग होता है।

रव्यादि वारों के अधिदेवता ओंका परिज्ञानः—

रवेः शिवोऽब्जस्य शिवा कुजस्य षडाननः सोमसुतस्य विष्णुः।
पितामहो देवगुरोः सितस्य शचीश ऐनः शमनोऽधिनाथः ॥ ११ ॥

सूर्य का शिव, चन्द्रमा की पार्वती, भौमका कार्तिकेय, बुधका विष्णु, गुरु का ब्रह्मा, शुक्र का इन्द्र और शनि का यम अधिदेवता है।

रव्यादि वारों में कार्य सिद्धि का परिज्ञानः—

ग्राह्या वाराः सत्सु कार्येषु सौम्या वाराः क्रूराः क्रूरकृत्ये तथैव।
प्रोक्तं कर्म्मैवासतां वासरेषु सिद्ध्येत्सर्वं कर्म्म सद्वासरेषु ॥ १२ ॥

शुभ (चन्द्र, बुध, गुरु, तथा शुक्र) वार शुभ कार्यों में ग्रहण करने चाहिए। क्रूर (रवि, मङ्गल तथा शनि) वार क्रूर कार्य में ग्रहण करने चाहिएँ। क्रूर वारों में कथित, कर्म ही सिद्ध होता है। एवं शुभ वारों में सब कर्म्म अर्थात् अनुक्त कर्म्म भी सिद्ध होता है।

रात्रि तथा दिन में वार दोष का परिज्ञानः—

काव्याचार्यद्वादशात्मग्रहाणां नक्तं नस्युर्वारदोषा दिवा न।
मन्दक्षोणीनन्दनोपाधिपानां सर्वत्रासन् सौम्यवारस्य दोषः ॥ १३ ॥

शुक्र, गुरु और रविवार का दोष रात्रि में नहीं होता है। शनि, मङ्गल और चन्द्रवार का दोष दिनमें नहीं होता है। रात्रि तथा दिन में बुधवार का दोष होता है।

रव्यादि वारों में तैलाभ्यङ्ग जनित फल तथा उस के दोष का परिज्ञानः—

ज्ञेऽर्थायेज्ये हानिरिन्दौ तु शोभाऽऽरेन्तायाच्छे दुःखमार्कौ सुसौख्यम्।
तैलाभ्यङ्गः पूष्णि तापोऽथ दोषनाशायारे मृत्तिकां गोमयं मे ॥ १४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्षिप्त्वा जीवे भार्गवीं पुष्यमर्के भूताष्टम्योर्दर्शषष्ठ्योः क्रमेण ।
क्षौरं मांसं ग्राम्यधर्म्मं च तैलं नोसेवेतोक्तायुषो हानिरार्य्यैः ॥ १५ ॥

बुधवार में तैलाभ्यङ्ग करने पर धन लाभ, गुरु में धन हानि, सोम में शोभा (कान्ति) भौम में मृत्यु, शुक्र में दुःख, शनि में सौख्य और रविवार में ताप (ज्वर) होता है। मङ्गल वार में तैल में मिट्टी, शुक्र में गोमय (गोवर), गुरु में दूर्वा (दूब) और रविवार के दिन तैल में पुष्प (फूल) मिलाकर तैलाभ्यङ्ग करे तो उक्त दोष नहीं होता है। चतुर्दशी में क्षौर, अष्टमी में मांस भक्षण, अमावास्या में मैथुन और षष्ठी में तैलका सेवन न करे। यदि उक्त तिथियों में उक्त कार्य को करे तो आयुकी हानि होती है।

वार वेला परिज्ञानः—

वेदशैलद्विबाणाहित्र्यङ्गपूष्णांशुतः क्रमात् ।
यामार्द्धे वार वेला स्याच्छुभे कार्ये न शोभना ॥ १६ ॥

रविवार के दिन चतुर्थ यामार्द्धमें, सोमको सप्तम में, भौम को द्वितीय में, बुधको पञ्चम में, गुरु को अष्टम में, शुक्र को तृतीय में और शनिवार के दिन षष्ठ यामार्द्ध में ' वार वेला ' होती है अर्थात् अर्द्धप्रहर नामक दोष होता है।यह वार वेला शुभ कार्य में अशुभ होती है।

दिन तथा रात्रि में काल वेला परिज्ञानः—

स्यात्कालवेला क्रमतोऽहि भानोरक्षाश्विपट्त्र्यद्रियुगाः करीन्द्र ।
रात्रौ रसाम्भोधियमागबाणरामाः कही सा सति नो शुभा स्यात् ॥ १७ ॥

रविवार के दिन में पञ्चम, सोम में द्वितीय, भौम में षष्ठ, बुध में तृतीय, गुरु में सप्तम, शुक्र में चतुर्थ और शनिवार के दिन अष्टम तथा प्रथम यामार्द्ध में ' काल वेला ' होती है। एवं रविवार की रात्रि में षष्ठ, सोम में चतुर्थ, भौम में द्वितीय, बुध में सप्तम, गुरु में पञ्चम, शुक्र में तृतीय और शनिवार की रात्रि में प्रथम तथा अष्टम यामार्द्ध में ' काल वेला ' होती है। यह शुभ कार्य में शुभ नहीं होती है।

मतान्तर से काल वेला परिज्ञानः--

कालस्य वेलाब्धिगुणाश्विभूनगार्य्यक्षा उतार्कौ द्विमिता ज्ञ अदिमा ।
जीवे चतुर्थ्यद्रिमिता सिते कुजे षष्ठ्यष्टमीने हिमगौ तृतीयिका ॥ १८ ॥

रविवार के दिन चतुर्थ यामार्द्ध में, सोम को तृतीय में, भौम को द्वितीय में, बुध को प्रथम में, गुरु को सप्तम में, शुक्र को षष्ठ में, और शनिवार के दिन पञ्चम यामार्द्ध में ' कालवेला ' होती है। अथवा शनिवार के दिन द्वितीय यामार्द्ध में बुध को प्रथम में गुरु को चतुर्थ में, शुक्र को सप्तम में, मङ्गल को षष्ठ में, रवि को अष्टम में और सोमवार के दिन तृतीय यामार्द्ध में ' काल वेला ' होती है। यह शुभ कार्य में शुभ नहीं होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'द्युनिशोरष्टमांशवेलाचक्रम्'।

वाराः	रवौ		चन्द्रे		भौमे		बुधे		गुरौ		शुक्रे		शनौ	
दिवा रात्रौ	दि.	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.	दि.	रा.
३।४५	उद्वेगः	चरम्	अमृतम्	कालः	रोगः	उद्वेगः	लाभः	अमृतम्	शुभम्	रोगः	चरम्	लाभः	कालः	शुभम्
७।३०	चरम्	लाभः	कालः	शुभम्	उद्वेगः	चरम्	अमृतम्	कालः	रोगः	उद्वेगः	लाभः	अमृतम्	शुभम्	रोगः
११।१५	लाभः	अमृतम्	शुभम्	रोगः	चरम्	लाभः	कालः	शुभम्	उद्वेगः	चरम्	अमृतम्	कालः	रोगः	उद्वेगः
१५।०	अमृतम्	कालः	रोगः	उद्वेगः	लाभः	अमृतं	शुभम्	रोगः	चरम्	लाभः	कालः	शुभम्	उद्वेगः	चरम्
१८।४५	कालः	शुभम्	उद्वेगः	चरम्	अमृतम्	कालः	रोगः	उद्वेगः	लाभः	अमृतम्	शुभम्	रोगः	चरम्	लाभः
२२।३०	शुभम्	रोगः	चरम्	लाभः	कालः	शुभम्	उद्वेगः	चरम्	अमृतम्	कालः	रोगः	उद्वेगः	लाभः	अमृतम्
२६।१५	रोगः	उद्वेगः	लाभः	अमृतम्	शुभम्	रोगः	चरम्	लाभः	कालः	शुभम्	उद्वेगः	चरम्	अमृतम्	कालः
३०।०	उद्वेगः	चरम्	अमृतम्	कालः	रोगः	उद्वेगः	लाभः	अमृतम्	शुभम्	रोगः	चरम्	लाभः	कालः	शुभम्

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

वार प्रवृत्ति साधन रीतिः—

बाणाब्धिघट्यो द्युदलेन संयुताः स्वांघ्न्यूनदेशान्तरयोजनैः पलैः
क्रमात्परे प्राग्रहिताः समन्वितास्ताभिर्दिनेशस्य भवेत्प्रवेशनम् ॥ १९ ॥

४५ घटी ० पल में इष्ट दिन के दिनार्द्ध घटी तथा पल को युक्त करके एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर देशान्तर योजनों को दो स्थान में रखकर एक स्थान में ४ से भाग दे। तब जो लब्ध हो उस को द्वितिय स्थान में हीन करे तब जो शेष बचे वे 'पादोनरेखापल' होते हैं। यदि रेखानगर से स्वदेश पश्चिम हों तो एकान्त में स्थित घट्यादि में रेखा पलों को हीन करे तब 'वार प्रवृत्ति के घट्यादि' होते हैं। एवं रेखानगर से स्वदेश पूर्व हो तो एकान्त में स्थित घट्यादि में रेखा पलों को युक्त करे तब 'वार प्रवृत्ति के घट्यादि' होते हैं। यदि लब्ध घट्यादि ६० घटी से न्यून हों तो पूर्वदिन मे सूर्योदय से पूर्व 'वार प्रवृत्ति' होती है। एवं लब्ध घट्यादि ६० से अधिक हों तो अभीष्ट दिन में सूर्योदय के अनन्तर 'वार प्रवृत्ति' होती है।

—: उदाहरण :—

इष्ट दिन के दिनार्द्ध १७ घटी १८ पल को ४५ घटी ० पल में युक्त किया तो २ घटी १८ पल हुए इनमें इष्ट स्थान के पादोन रेखा पल २८ को रेखानगर (कुरुक्षेत्र) से स्वदेश (गढवाल) पूर्व होने के कारण युक्त किया तो २ घटी ४६ पल सूर्योदय के पश्चात् 'चन्द्र वार की प्रवृत्ति' हुई।

काल होरेश साधन रीतिः—

वारप्रवृत्तिरहिताः स्वजनीष्टनाड्यो
द्वाभ्यां हता निजमरुद्धृतशेषहीनाः
सैकास्तुरङ्गममितोर्वरिता अनेहो-
होरेश्वरा दिनपतेः क्रमतो भवन्ति ॥ २० ॥

इष्ट काल की घटी तथा पल में वार प्रवृत्ति की घटी तथा पल को हीन करे तब जो शेष बचे उस को २ से गुणकर दो स्थान में स्थापित करे। एक स्थान में ५ से भाग दे तब जो शेष बचे उसको द्वितीय स्थान में हीन करे तब जो शेष बचे उसमे १ युक्त करके ७ से भाग दे तब जो शेष बचे उसके तुल्य दिनके वार के क्रमसे गिनकर 'कालहोरेश' होते हैं।

—:उदाहरणः—

४६ इष्ट घटी १३ पल में वारप्रवृत्ति की २ घटी ४६ पल को हीन किया तो शेष ४३ घटी २७ पल बचे। इनको २ से गुणातो ८६।५४ गुणन फल हुआ। इसको दो स्थान में स्थापित करके एकस्थान में ५ से भाग दिया

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तो शेष १।५४ बचे। इनको द्वितीय स्थान में स्थित संख्या ८६।५४ में हीन किया तो ८५।० शेष बचे। इन में १ युक्त किया तो ८६ हुए। इनको ७ से तष्ट किया तो २ शेष बचे। इष्ट दिनके वार चन्द्र से शेष २ पर्यन्त गिना तो दूसरा 'मङ्गल' हुआ। अतः इष्ट समय में 'मङ्गल काल होरेश' हुआ।

कालहोरेशबोधकचक्रम्'।

का. हो.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
घ.	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३२	३५	३७	४०	४२	४५	४७	५०	५२	५५	५७	६०
प.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
वाराः	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
वा.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
वा.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
वा.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
वा.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
वा.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
वा.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.

अश्विन्यादि नक्षत्रों के स्वामीः--

नासत्यश्चान्तको वह्नि र्धाता चन्द्रः शिवोऽदितिः।
इज्यः सर्पोऽथ पितरो भगाख्यश्चार्य्यमा रविः ॥ २१ ॥
त्वष्टा वातोऽनलेन्द्रौ च मित्रोऽथो देवराट् ततः।
निर्ऋतिः सलिलं विश्वे विधिर्विष्णुस्तथा वसुः ॥ २२ ॥
कपोऽजपादहिर्बुध्न्यः पूषाभेशाः क्रमान्मताः।
स्वस्वामिनः प्रतिष्ठांच पूजां कुर्यात्स्वभे सुधीः ॥ २३ ॥

अश्विनी का स्वामी नासत्य (अश्विनी कुमार), भरणी, का यम, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा, मृग शिरा का चन्द्रमा, आर्द्रा का शिव, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य का गुरु, आश्लेषा का सर्प, मघा के पितर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्वाफाल्गुनी का भग (सूर्य विशेष), उत्तराफाल्गुनी का अर्यमा (सूर्य विशेष), हस्त का रवि, चित्रा का त्वष्टा, स्वाती का वायु, विशाखा के अग्नि और इन्द्र ये दोनों, अनुराधा का मित्र (सूर्य विशेष), ज्येष्ठा का इन्द्र, मूलका निर्ऋति (राक्षस), पूर्वाषाढा का जल, उत्तराषाढा का विश्वेदेव, अभिजित् का विधि (ब्रह्मा), श्रवण का विष्णु, धनिष्ठा का वसु, शतभिषा का वरुण, पूर्वाभाद्रपदा का अजपाद (अजैकपादनामक ऋषि) उत्तराभाद्रपदा का अहिर्बुध्न्य (शिव विशेष) रेवती का पूषा (सूर्य विशेष) स्वामी है। अश्विन्यादि नक्षत्रों में अपने अपने स्वामियों की प्रतिष्ठा तथा पूजा को करे।

अभिजित् नक्षत्र परिज्ञानः--

वैश्वभस्यान्तिमः पादः कर्णस्य तिथिभागयुक्।
अभिजिन्नाम नक्षत्रं शुभमेतत्सुकर्म्मसु ॥ २४ ॥

उत्तराषाढा का चतुर्थ भाग और श्रवण का पन्दरहवां भाग इन दोनों को मिलाकर अभिजित् नामक नक्षत्र, होता है यह शुभ कार्यों में शुभ होता है।

अश्विन्यादि नक्षत्रों के ताराओं का परिज्ञानः—

दास्रात्क्रमात्त्रिगुणतर्कशरत्रिरूपा-
ब्ध्यग्नीपुसायकयमाश्विशरेन्दुचन्द्राः।
वेदोदधित्रिशिवयुग्मयमाग्निवह्नि-
वेदाः शताश्वियमदन्तमिता भतागः ॥ २५ ॥

तीन, तीन, छः, पाँच, तीन, एक, चार, तीन, पाँच, पाँच, दो, दो, पाँच, एक, एक, चार, चार, तीन, ग्यारह, दो, दो, तीन, तीन चार, सौ, दो, दो और बत्तीस ये क्रमसे अश्विन्यादि नक्षत्रों के तारे हैं।

अश्विन्यादि नक्षत्रों की ध्रुवादि संज्ञा का परिज्ञानः--

ध्रुवं तथा स्थिरं भानू रोहिणी चोत्तरात्रयम्।
चन्द्रश्चरं चलं त्रीणिश्रुतेरादित्यवायुभे ॥ २६ ॥

रोहिणी तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी,) उत्तराषाढा और उत्तराभाद्रपदा) तथा रविवार ये 'ध्रुव' और 'स्थिर सञ्ज्ञक' हैं। श्रवण से तीन नक्षत्र (श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा), पुनर्वसु, स्वाती तथा सोमवार ये 'चर' और 'चलसञ्ज्ञक' हैं।

उग्रं क्रूरं कुजो याम्यमघे पूर्वात्रयं स्मृतम्।
मिश्रं साधारणं सौम्यः कृत्तिका च विशाखिका ॥ २७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भरणी, मघा, तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, तथा पूर्वाभाद्रपदा) एवं मङ्गलवार ये उग्र और ' क्रूर संज्ञक ' हैं। कृत्तिका, विशाखा और बुधवार ये ' मिश्र ' और ' साधारण ' हैं।

लघु क्षिप्रं गुरुर्दास्राभिजित्पुष्यार्कतारकाः ।
मृदु मैत्रं मृगश्चित्राऽनुराधा रेवती सितः ॥ २८ ॥

अश्विनी अभिजित्, पुष्य, हस्त और गुरुवार ये ' लघु ' तथा ' क्षिप्रसञ्ज्ञक ' हैं। मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती और शुक्रवार ये ' मृदु ' तथा ' मैत्रसञ्ज्ञक ' है।

मन्दोऽहीशेन्द्रमूलानि तीक्ष्णाभिधं च दारुणम् ।
उर्ध्वास्यं ध्रुवमीशेज्यौ श्रवस्त्वयमधोमुखम् ॥ २९ ॥
मूलं सार्पं च मिश्रोग्रं तिर्य्यङ्मुखं मरुन्मृदु ।
करादीत्यैन्द्रदास्राणीदृश्यकृत्यमिहैषु सत् ॥ ३० ॥

आश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, मूल और शनिवार ये ' तीक्ष्ण ' तथा ' दारुणसञ्ज्ञक ' हैं। ध्रुव (तीनों उत्तरा तथा रोहिणी) नक्षत्र, आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा ये ऊर्ध्वास्य (ऊर्ध्व मुख) नक्षत्र हैं। मूल आश्लेषा, मिश्र (कृत्तिका, विशाखा) नक्षत्र तथा उग्र (तीनों पूर्वा भरणी तथा मघा) नक्षत्र ' अधोमुख सञ्ज्ञक ' हैं। स्वाती मृदु (मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा तथा रेवती) नक्षत्र, हस्त, पुनर्वसु, ज्येष्ठा और अश्विनी ये ' तिर्य्यङ् मुखसञ्ज्ञक ' हैं। उक्त ऊर्ध्वमुखादि कार्य शुभ होता है।

दग्धनक्षत्रादिसंज्ञा परिज्ञानः--

सूर्य्याद्याम्यत्वाष्ट्रवैश्वश्रविष्ठाऽऽर्यम्णेन्द्रान्त्यं दग्धभंस्यात्क्रमेण ।
षष्ठ्याद्याः स्युस्तिथ्य आर्कैर्विलोमं निन्द्या आद्या ज्ञे रवौ सप्तमी च ॥ ३१ ॥

रविवार में भरणी, सोम में चित्रा, मङ्गल में उत्तराषाढा, बुध में धनिष्ठा, गुरु में उत्तराफाल्गुनी, शुक्र में ज्येष्ठा और शनिवार में रेवती हो तो ' दग्धसञ्ज्ञक नक्षत्र होता है। शनिवार में षष्ठी, शुक्र में सप्तमी, गुरु में अष्टमी, बुध में नवमी, भौम में दशमी, सोम में एकादशी और रविवार में द्वादशी हो तो ये ' क्रकच (वारदग्ध) योग ' है।

यमदंष्ट्रा योगः--

भौमेऽश्वियाम्ये धिषणेऽन्त्यदास्रभे ज्ञेऽन्त्यादिती पित्र्यधने रवौ विधौ ।
द्वीशास्रपौ मित्रकभे सिते यमदंष्ट्रा न शस्ता हरिपाशिभे शनौ ॥ ३२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मङ्गल वार में कृत्तिका तथा भरणी गुरु में रेवती तथा अश्विनी, बुध में रेवती तथा पुनर्वसु, रवि में मघा और धनिष्ठा, सोम में विशाखा तथा मूल, शुक्र में अनुराधा तथा रोहिणी एवं शनिवार में श्रवण तथा शतभिषा हो तो ' यमदंष्ट्रा ' होती हैं। ये शुभ कार्य में त्याज्य हैं।

यमघण्ट योगः—

क्रमाद्रवेः पित्र्यविशाखिकार्द्रास्त्रपानलब्राह्मपतङ्गभानि ।
मनीषिणोक्ता यमघण्टयोगा विवर्जयेत्सत्सु किल प्रयाणे ॥ ३३ ॥

रविवार में मघा, सोम में विशाखा, भौम में आर्द्रा, बुध में मूल, गुरु में कृत्तिका, शुक्र में रोहिणी और शनिवार में हस्त नक्षत्र हो तो ' यमघण्ट योग ' होते हैं। उक्त योगों को शुभ कार्य में वर्जित करे। यात्रा में तो अवश्य वर्जित करे।

सिद्धि योगों का तिथि विशेष से निन्द्यत्व परिज्ञानः —

हस्तारुणं सर्पतिथौ कुजाश्विनीं भानोस्तिथौ स्कन्दतिथौ शशीन्दुभम् ।
ब्राह्मार्कजं विश्वतिथौ त्यजेच्छुभेऽष्टम्यां ज्ञमैत्रं तत इज्यपुष्यभम् ॥ ३४ ॥

दुर्गातिथौ कालतिथौ सितान्त्यभं पाणिग्रहे वाक्पतिभं बृहस्पतौ ।
गेहप्रवेशेऽवनिनन्दनेऽश्विनीं छायाजनौ कं गमने विवर्जयेत् ॥ ३५ ॥

पञ्चमी तिथि में हस्त नक्षत्र रविवार, सप्तमी तिथि में अश्विनी नक्षत्र भौमवार, षष्ठी तिथि में मृगशिर नक्षत्र सोमवार, एकादशी तिथि में रोहिणी नक्षत्र शनिवार, अष्टमी में अनुराधा नक्षत्र बुधवार, नवमी तिथि में पुष्य नक्षत्र गुरुवार और दशमी तिथि में रेवती नक्षत्र शुक्रवार को सब शुभ कार्यों में वर्जित करे। विवाह में गुरुवार के पुष्य को गृह प्रवेश में मङ्गल वार की अश्विनी को और यात्रा में शनिवार को रोहिणी को वर्जित करें।

रवि योगः—

अम्भोजिनीस्वामिभतः समुद्रगोतर्ककाष्ठाकृतिविश्वतुल्ये ।
शीतांशुविष्ण्ये दिनभर्तृयोगा एते हि दोषौघविनाशकाः स्युः ॥ ३६ ॥

इष्टदिन में ' सूर्य ' जिस नक्षत्रपर हो उससे चन्द्रमा के नक्षत्र पर्यन्त गिनकर यदि ४।९।६।१०।२०।६२ संख्या के तुल्य चन्द्र नक्षत्र हों तो ' रवियोग होते हैं। ये शुभ कार्यों में दोषों के समूह को नाश करते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सर्वार्थ सिद्धि योगः--

मूलोत्तरादास्त्रकरेज्यभं रवौ चन्द्रे श्रवोमैत्रकपुष्यचान्द्रभम् ।
बुध्न्याग्निदास्रोरगभं महीसुते सौम्ये ऽर्कमैत्रानलरोहिणीन्दुभम् ॥ ३७ ॥
मैत्रादितीज्यान्त्यहयं बृहस्पतौ आदित्यमैत्रान्त्यहयश्रवः सिते ।
ब्राह्मश्रवोमारुतभानि भास्करौ योगा इमे स्युः सकलार्थसिद्धये ॥ ३८ ॥

रविवार में मूल, तीनों उत्तरा, अश्विनी, हस्त और पुष्य, सोमवार में श्रवण, अनुराधा, रोहिणी, पुष्य और मृगशिरा, भौमवार में उत्तराभाद्रपदा, कृत्तिका, अश्विनी, और आश्लेषा, बुधवार में हस्त, अनुराधा, कृतिका, रोहिणी और मृगशिरा, गुरुवार में अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती और अश्विनी, शुक्रवार में पुनर्वसु, अनुराधा, रेवती, अश्विनी और श्रवण एवं शनिवार में रोहिणी, श्रवण और स्वाती नक्षत्र ये सर्वार्थ सिद्धिदायक योग हैं ।

अमृत सिद्धियोगः--

हस्तः पतङ्गे मृगभं मृगाङ्के दास्रं कुजे मित्रभमिन्दुपुत्रे ।
सिध्यः सुरेज्ये भृगुनन्दने ऽन्त्यं कं मित्रपुत्रे ऽमृतसिद्धियोगाः ॥ ३९ ॥

रविवार में हस्त, सोमवार में मृगशिरा, मङ्गलवार में अश्विनी, बुधवार में अनुराधा, गुरुवार में पुष्य, शुक्रवार में रेवती और शनिवार में रोहिणी ये 'अमृतसिद्धियोग' होते हैं ।

आनन्दादि अष्टाविंशति योगानयन रीतिः--

भानौ दास्रभतः सोमे सौम्याद्भौमे ऽहिभाद्बुधे ।
हस्तान्मैत्राद्गुरौ गण्याः सिते वैश्वाच्छताच्छनौ ॥ ४० ॥

रविवार में अश्विनी आदि अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों में क्रमसे आनन्दादि २८ योग होते हैं अर्थात् रविवार के दिन अश्विनी से वर्तमान नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसके तुल्य इष्टदिन में आनन्दादि योग होता है । एवं सोमवार में मृगशिरासे, मङ्गल में आश्लेषा से, बुध में हस्तसे, गुरु में अनुराधा से शुक्र में उत्तराषाढा से और शनिवार में शतभिषा से गणना करनी चाहिए ।

—: उदाहरण :—

इष्टदिन में चन्द्र वार और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र है अतः मृगशिरा से उत्तराफाल्गुनी पर्यन्त गिनातो ८ मिले । आनन्द योग से लब्ध ८ पर्यन्त गिना तो इष्ट समय में 'श्रीवत्स योग' हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आनन्दादि योगों के नामः—

अथानन्दाभिधः कालदण्डो धूम्रः प्रजापतिः ।
सौम्यो ध्वांक्षो ध्वजश्चैते योगाः श्रीवत्सवज्रके ॥ ४१ ॥

मुद्गरच्छत्रमित्राणि क्रमान्मानसपद्मकौ ।
लुम्बोत्पातौ तथा मृत्युः काणः सिद्धिस्ततः शुभः ॥ ४२ ॥

अमृतं मुसलं चाथ गदमातङ्गराक्षसाः ।
चरः स्थिरो वर्द्धमानः स्वनाम्ना फलदा मताः ॥ ४३ ॥

आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, प्रजापति, सौम्य, ध्वांक्ष, ध्वज, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातङ्ग, राक्षस, चर, स्थिर, वर्द्धमान ये २८ अट्ठाईस योग अपने नाम के तुल्य फल देनेवाले होते हैं ।

अशुभयोगों में वर्ज्य कालः—

पद्मलुम्बे युगास्त्याज्याः काणे द्वे मुसले तथा ।
एका धूम्रे शरा घट्यो ध्वांक्षे वज्रे च मुद्गरे ॥ ४४ ॥

समस्ता राक्षसोत्पातमृत्युकाला विवर्जिताः ।
तथा वर्ज्या असद्योगाः कुलिकप्रमुखाः शुभे ॥ ४५ ॥

पद्म तथा लुम्ब योग के आरम्भ की ४ घटी । काण तथा मुसल के आरम्भ की २ घटी । धूम्र की १ घटी ध्वांक्ष, वज्र तथा मुद्गर की ५ घटी । राक्षस, उत्पात, मृत्यु तथा कालदण्ड की समस्त घटी शुभ कार्य में वर्जित करे । कुलिकादि अशुभयोग भी शुभ कार्य मे वर्जित करने चाहिएँ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'आनन्दादियोगसारणीयम्' 'उपकरणे द्वे' 'इष्टवारनक्षत्रे'

योगाः	आनन्दः	कालदं.	धूम्रः	प्रजाप.	सौम्यः	ध्वांक्षः	ध्वजः	श्रीवत्सः	वज्रम्	मुद्गरम्	छत्रम्	मित्रम	मानसम	पद्मः
रविः	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृगः	आर्द्रा	पुन.	तिष्यः	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्तः	चित्रा
चन्द्रः	मृगः	आर्द्रा	पुन.	तिष्य.	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्तः	चित्रा	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.
भौमः	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्तः	चित्रा	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.
बुधः	हस्तः	चित्रा	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.
गुरुः	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रे.	आश्वि.	भर.
शुक्रः	उ. षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.	आश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृगः	आर्द्रा
शनिः	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृगः	आर्द्रा	पुन.	तिष्यः	आश्ले.	मघा
योगाः	लुम्बः	उत्पातः	मृत्युः	काणः	सिद्धिः	शुभः	अमृतम्	मुसलम्	गदः	मातङ्गः	राक्षसः	चरः	स्थिरः	वर्द्धमा.
रविः	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.
चन्द्रः	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.	आश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.
भौमः	श्र.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेव.	आश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृगः	आर्द्रा	पुन.	तिष्य.
बुधः	उ. भा.	रेव.	आश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृगः	आर्द्रा	पुन.	तिष्य.	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.
गुरुः	कृत्ति.	रोहि.	मृग	आर्द्रा	पुन.	तिष्य.	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा.	विशा.
शुक्रः	पुन.	तिष्यः	आश्ले.	मघा.	पू. फा.	उ. फा.	हस्तः	चित्रा	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.
शनिः	पू. फा.	उ. फा.	हस्तः	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रव.	धनि.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग परिज्ञानः—

वह्निद्वीशार्य्यमादिज्याजांघ्रिर्वैश्वे च वासरे ।
भौमार्किभास्वतां भद्रातिथिस्त्रैपुष्करो भवेत् ॥ ४६ ॥

विनाशवृद्धिदिष्टान्ते बुधैस्त्रैगुण्यदो मतः ।
द्वैपुष्करो द्विगुणदश्चित्रावासवसौम्यभे ४७ ॥

कृत्तिका, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराषाढा नक्षत्र, मङ्गल, शनि तथा रविवार एवं भद्रा (द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी) तिथि इन तीनों का यदि एक ही समय में संयोग हो तो 'त्रिपुष्कर-योग' होता है। उक्त योग विनाश (नष्ट) वृद्धि और मृत्यु में तिगुना फल देता है। भद्रा तिथि, शनि भौम रवि-वार एवं चित्रा, धनिष्ठा तथा मृगशिरा नक्षत्र इनदोनों का एक ही समय में संयोग हो तो 'द्विपुष्कर योग' होता है। यह द्विगुना फल देनेवाला होता है।

पञ्चक (धनिष्ठादि पाँच नक्षत्र) में वर्जित कार्य परिज्ञानः—

यमाशागमनं गेहगोपनं तृणकाष्ठयोः ।
सङ्ग्रहं प्रेतदाहं च त्यजेत्कुंभान्त्यगे विधौ ॥ ४८ ॥

कुम्भ तथा मीन के चन्द्रमा में अर्थात् पञ्चक (धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्र-पदा तथा रेवती) में दक्षिण दिशा की यात्रा, घरका आच्छादन लेपन इत्यादि, तृण (घास) तथा काष्ठ, (लकडी) का संग्रह और प्रेतदाह को न करे।

मूलनक्षत्र-में उत्पन्न बालक के जन्म का फलः—

आद्यांघ्रिर्निर्ऋतेर्दिने यदि भवेत्तत्सम्भवोबालको
नाशाय स्वपितुर्द्वितीयचरणो रात्रौ शिशुस्तद्भवः ।
तद्वन्मातृविनाशहेतुरुदितो व्यस्तं जनुश्चेच्छिशो-
स्तुर्यांघ्रौनहिदोषभाग् गुणमिते पादेस्वहानिर्भवेत् ॥ ४९ ॥

मूल का प्रथम चरण दिन में हो तो उस में उत्पन्न हुआ बालक पिताका नाश करने वाला होता है। एवं मूल नक्षत्र का द्वितीय चरण रात्रि में हो तो उस में उत्पन्न हुआ बालक माता का नाश करने वाला होता है। मूल नक्षत्र का प्रथम पाद रात्रि में और द्वितीय पाद दिन में हो तो उस में उत्पन्न बालक दोष दायक नहीं होता है। एवं मूल के चतुर्थ चरण में उत्पन्न बालक भी दोष दायक नहीं होता है। यदि मूल के तृतीय चरण में बालक हो तो धनका नाश होता है।

नक्षत्र गण्डात परिज्ञानः—

प्रान्त्ये ऽन्त्यभौजङ्गमशाक्रभानां नाडीद्वयं दास्रमघास्रपानाम् ।
आरम्भकाले घटिकाद्वयं च गण्डान्तकालो गदितः सुधीभिः ॥ ५० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रेवती, आश्लेषा और जेष्ठा के अन्त्य की दो घटी एवं अश्विनी, मघा और मूल के आरम्भ की दो घटी इस प्रकार पण्डित जनों ने 'चार घटीका नक्षत्र गण्डातन्तकाल' कहा है।

तिथिगण्डान्त तथा लग्नगण्डान्त परिज्ञानः----

तिथ्योः पूर्णानन्दयोर्नाडिके द्वे मध्ये गण्डान्तं तथा नाडिकैका।
राश्योर्मीनाव्योः कुलीरेभशत्र्वोर्मध्येगण्डान्तारव्यमल्पश्चतन्वोः ॥ ५१ ॥

पूर्णा (५।१०।१५) तिथि के अन्त्य की एक घटी और नन्दा (१।६।११) तिथि के आरम्भ की एक घटी इसप्रकार पूर्णा और नन्दातिथि के मध्य में दो घटी का तिथिगण्डान्त' होता है। मीन लग्न के अन्त्य की आधी घटी और मेष लग्न के आरम्भ की आधी घटी, कर्क लग्न के अन्त्य की आधी घटी और सिंह लग्न के आरम्भ की आधी घटी एवं वृश्चिक लग्न के अन्त्य की आधी घटी और धनु लग्न के आरम्भ की आधी घटी इस प्रकार उक्त लग्नों के मध्य में 'एक घटी का लग्नगण्डान्त काल' होता है।

गण्डान्तजनित फल परिज्ञानः----

गण्डान्तमेतदुत्पत्तौ त्रिविधं मातृतातहृत्।
विवाहे मृत्युदं प्रोक्तं वित्तहानिकरं गमे ॥ ५२ ॥

उक्त तीनों गण्डातों में यदि बालक का जन्म हो तो वह माता पिता का नाश करनेवाला होता है। एवं गण्डान्त में विवाह हो तो वर कन्या की मृत्यु और गण्डान्त काल में यात्रा करे तो धन की हानि होती है।

जन्मादि तारा जानने की विधि उनके नाम तथा फलका विचारः----

जन्मभाद् दिनभं यावद् गणयेन्नवशेषिते।
त्रीष्वाद्रिभं शुभंनस्याज्जन्म सम्पद्विपत् क्रमात् ॥ ५३ ॥

क्षेमाख्यः प्रत्यरिश्चैव साधको वधमैत्रकौ।
अतिमैत्र इमास्तारा नामवत्फलदायकाः ॥ ५४ ॥

जन्म नक्षत्र से इष्ट नक्षत्र पर्य्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसको ९ से तष्टकरे। यदि ३, ५, ७ शेषबचें तो अशुभतारा होती हैं। जन्म, सम्मद्, विपद्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र ये क्रमसे ९ तारा हैं। उक्त तारा नाम के समान फल देते हैं।

विष्कम्भादियोगों के मध्यमें अशुभयोगों के वर्ज्यकाल का परिज्ञानः---

व्याघातयोगे नव सत्सु षड् घटीर्गण्डे ऽतिगण्डे परिघार्द्धमुत्सृजेत्।
विष्कम्भवज्राभिधयोर्गुणाः शराः शूलेसमस्ते व्यतिपातवैधृती ॥ ५५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व्याघात योग के आरम्भ की नौ घटी, गण्ड तथा अतिगण्ड योग के आरम्भ की छः घटी, परिघयोग का आधा भाग, विष्कम्भ तथा वज्रयोग के आरम्भ की तीन घटी, शूलयोग के आरम्भ की पाँचघटी एवं व्यतिपात तथा वैधृतियोग इनदोनों योगों की समस्त घटियों को शुभ कार्यों में वर्जित करे ।

भद्रा तिथि परिज्ञानः----

राकाष्टम्योः प्राग्दले शुक्लपक्षे ऽन्त्ये ऽर्द्धे भद्रैकादशीभास्यतिथ्योः ।
कृष्णे गौर्य्या अन्तकस्यान्त्यभागे तिथ्योर्भास्वद्भूततिथ्योर्दले प्राक् ॥ ५६ ॥

शुक्ल पक्षकी पौर्णमासी तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में एवं एकादशी तथा चतुर्थी के उत्तरार्द्ध में 'भद्रा' होती है । कृष्णपक्षकी तृतीया तथा दशमी के उत्तरार्द्ध में एवं सप्तमी तथा चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में 'भद्रा' होती है ।

भद्रा का वास परिज्ञानः----

स्वर्गेवसेद्विष्टिरजात्रये ऽलौ चन्द्रे ऽथ कर्के हरिमे घटे ऽन्त्ये ।
मर्त्ये तुलास्त्रीमृगकार्मुके ऽधस्तत्रैव तस्याः फलमाहुरार्य्याः ॥ ५७ ॥

मेष से तीन राशि अर्थात् मेष, वृष तथा मिथुन एवं वृश्चिक के चन्द्रमा में स्वर्गलोक में भद्रा । कर्क, सिंह, कुम्भ तथा मीन के चन्द्रमा में मनुष्य लोक में भद्रा एवं धनु, मकर, कन्या तथा तुला के चन्द्रमा में पाताल लोक में भद्रा का वास होता है । जिस लोक में भद्रा का वास हो उसी लोक में भद्रा का फल होता है ।

भद्राका फल तथा उसकी सम्मुखादिसञ्ज्ञा का परिज्ञानः----

विष्टिः शुभास्यात्त्रिदिवे नृलोके सम्पूर्णकार्य्यस्य विनाशिनी सा ।
नागे ऽर्थ लब्ध्यै त्रिदिवे यदोर्ध्वास्या मर्त्यलोके यदि सम्मुखा सा ॥ ५८ ॥

इलातले ऽधोवदनाभवेत्सा या सम्मुखा सा मरणप्रदास्यात् ।
शस्ता दिने या परखण्डजाता तस्यां शुभा पूर्वदलोत्थिता या ॥ ५९ ॥

भद्राका वास यदि स्वर्ग में हो तो शुभफलप्रद, मर्त्यलोक में सर्वकार्यविनाशप्रद और पाताललोक में धनदायक होता है । मर्त्य लोक की भद्रा सम्मुख, स्वर्ग की भद्रा ऊर्ध्वमुख और पाताल की भद्रा अधोमुखी होती है । सम्मुख भद्रा मृत्यु देनेवाली होती है । दिन में परार्द्ध की भद्रा और रात्रि में उत्तरार्द्ध की भद्रा शुभ होती है ।

दिशा तथा विदिशाओं का परिज्ञानः----

काष्ठाश्चतस्रः क्रमशो ऽत्र पूर्वो ऽथो दक्षिणः पश्चिम उत्तरो ऽथो ।
आग्नेयनैर्ऋत्यसमीरणाः स्युरीशान एता विदिशः क्रमेण ॥ ६० ॥

पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर ये सव्य क्रमसे चार दिशायें हैं । एवं आग्नेय नैर्ऋत्य, वायव्य तथा ईशान ये सव्य क्रमसे चार विदिशायें हैं ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्वादि दिशाओं में भद्रावास का परिज्ञानः----

प्राच्याः क्रमाद् वसेद् भद्रा तिथ्योः शिवमहेशयोः ।
रविचन्द्रगणेट्कालविश्वेशानां तिथीषु च ॥ ६१ ॥

चतुर्दशी की भद्रा पूर्व में, अष्टमी की आग्नेय में, सप्तमी की दक्षिण में, पौर्णमासी की नैर्ऋत्य में, चतुर्थी की पश्चिम में, दशमी की वायव्य में, एकादशी की उत्तर में और तृतीया की भद्रा का वास ईशान में जानना चाहिए।

भद्रा के मुख तथा पुच्छ में यात्रा का फल और उस में करने योग्य कार्यों का परिज्ञानः----

गच्छेन्न विष्ट्या वदने शुभेच्छुस्तल्लाङ्गुले गच्छतु पूरुषो यः ।
कल्याणमाप्नोत्यथ शात्रवाणामुच्चाटने भूपतिदर्शने च ॥ ६२ ॥

पाठे हठे ऽम्भस्तरणे च घाते वैद्यागमे साध्वस आहवे च ।
भद्रा ऽङ्गनानामृतुमज्जनेषु सेवासु तासां शकटस्य कृत्याम् ॥ ६३ ॥

वातायुवीतिद्विपतांहयानां पञ्चाननानां मयरासभानाम् ।
छागादिकानां निलयागमे हि ग्राह्या बुधैः कर्मसु नेतरेषु ॥ ६४ ॥

शुभफल की इच्छा रखनेवाला मनुष्य भद्रा के मुख (आरम्भकाल) में यात्रा नकरे। एवं भद्रा के पुच्छ (अवसानकाल) में यात्रा करने वाला पुरुष शुभफल को प्राप्त होता है। शत्रुओंके उच्चाटन में, राजदर्शन में, पाठ में, हठयोग के आरम्भ में, जलतरण में, प्रहार में, वैद्य के आगमन में भय में, सङ्ग्राम में, स्त्रियों के ऋतु काल के स्नान तथा सेवाओं मे, गाडी के निर्माण कार्य में, मृग, महिषी, अश्व (घोडा), सिंह, उष्ट्र (ऊंट), गर्दभ और छागादियों को घर में लाने के कार्य में भद्रा ग्रहण करनी चाहिए। शेष कार्यों में भद्रा को ग्रहण न करे।

मेषादि राशियों के वश से पूर्वादि दिशाओं में चन्द्र वास का परिज्ञानः—

प्राच्यां वसेच्चापहरिक्रियेषु चन्द्रो ऽङ्गनागोहरिणेष्ववाच्याम् ।
कामे तुलायां कलशे प्रतीच्यां कर्कालिमीनेषु वसेदुदीच्याम् ॥ ६५ ॥

धनु, सिंह तथा मेष राशिगत चन्द्रमा पूर्व दिशा में, कन्या, वृष तथा मकर राशिगत चन्द्रमा दक्षिण में मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशि गत चन्द्रमा पश्चिम में एवं कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशिगत चन्द्रमा उत्तर में वास करता है।

सम्मुखादि चन्द्रमा के फल का विचारः—

वित्ताप्त्यै सम्मुखे सोमे पृष्ठे पञ्चत्वमादिशेत् ।
वामे क्षमाय वित्तस्य सुखं सम्पच्च दक्षिणे ॥ ६६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सम्मुख चन्द्रमा में धन लाभ, पृष्ठ चन्द्रमा में मृत्यु, वाम चन्द्रमा में धन की हानि एवं दक्षिण चन्द्रमा में सुख और सम्पत्ति होती है।

मेषादि राशि यों में घात चन्द्र का परिज्ञानः--

घातेन्दवः कक्षभवाश्विषड्दिशस्त्र्यग्न्यब्धिनागेशभगा भवन्त्यजात् ।
भङ्गोरणे ऽन्तो रुजि बन्धनं गमे वैधव्यमेवं करपीडने भवेत् ॥ ६७ ॥

प्रथम, पञ्चम, एकादश, द्वितीय, षष्ठ, दशम तृतीय, सप्तम, चतुर्थ, अष्टम, एकादश और द्वादश चन्द्रमा मेषादि राशि यों के क्रमसे 'मेषादि राशि यों के घात चन्द्रमा' हैं। घात चन्द्रमा में युद्धारम्भ हो तो पराजय, रोग हो तो मृत्यु, यात्रा हो तो बन्धन और विवाह हो तो कन्या विधवा होती है।

शुभ कार्यादि में जन्म राशि का तथा सेवादि में नाम राशि का प्राधान्य एवं जन्म चन्द्र फल का परिज्ञानः--

कार्य्येषु सर्वेषु करग्रहादिषु शस्तेषु नित्यं ग्रहगोचरे गमे ।
राशिं विपश्चिज्जनुषो विचिन्तयेत्सेवासु नूनं व्यवहार आहवे ॥ ६८ ॥

देशे गृहे संवसथे ऽपि चिन्तयेद्राशिं स्वनाम्नो मनुसम्भवस्य च ।
अन्धादिकृत्ये करपीडने व्रतबन्धे शुभो ऽन्नाशन उद्भवोडुपः ॥ ६९ ॥

विवाहादि सब शुभ कार्यों में, ग्रह गोचर में और यात्रा में मनुष्य की जन्म राशि से शुभाशुभ फलका विचार सेवा, व्यवहार, युद्ध, देश, गृह, तथा ग्रामसम्बन्धी कार्य में मनुष्य की नाम राशि से शुभाशुभ फलका विचार करे। कूपादि के निर्माण कार्य, विवाह, व्रतबन्ध, तथा अन्नप्राशन में 'जन्म राशि का चन्द्रमा शुभ' होता है।

जन्म चन्द्र के अशुभत्व और द्वादश चन्द्र के शुभत्व का परिज्ञानः---

याने क्षौरे नो शुभो जन्मचन्द्रो गर्भाधाने जन्मकाले विवाहे ।
यात्राकाले चोपवीते ऽभिषेके नक्षत्रेशः शोभनो द्वादशस्थः ॥ ७० ॥

यात्रा तथा क्षौर में 'जन्म राशिगत चन्द्रमा शुभ' नहीं होता है। आधानकाल, जन्म काल, विवाह, यात्रा काल, यज्ञोपवीत और राज्याभिषेक में गोचर में 'द्वादश चन्द्रमा शुभ होता है'।

योगिनियों के वास और उन के फल का परिज्ञानः –

प्राच्यां वसेद्योगिनिका ऽऽदिमातिथौ तिथ्यां नवम्यामथ वह्निकोणके ।
गौरीतिथौ विश्वतिथा वथोरग चित्तोत्थतिथ्योः समवर्त्तिनो दिशि ॥ ७१ ॥

नैर्ऋत्यभागे ऽच्युतविघ्नराजयोस्तिथ्योः प्रतीच्यां शिवबाहुलेययोः ।
तिथ्योर्हिमांशूष्णरुचोर्मरुद्दिशि कालस्य तिथ्यां कतिथौ च सौत्तरे ॥ ७२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दर्शे महेशस्य तिथौ च शाम्भवे सा सम्मुखे चेन्मृतिदा सुखप्रदा ।
वामेऽथ पृष्ठे कथितेप्सितप्रदा वित्तस्य हानिर्यदि दक्षिणे वसेत् ॥ ७३ ॥

प्रतिपदा तथा नवमी में योगिनी का वास पूर्वदिशा में, तृतीया तथा एकादशी में योगिनी का वास अग्निकोण में पञ्चमी तथा त्रयोदशी में योगिनी का वास दक्षिण में चतुर्थी तथा द्वादशी में योगिनी का वास नैर्ऋत्य में, षष्ठी तथा चतुर्दशी में योगिनी का वास पश्चिम में, पौर्णमासी तथा सप्तमी में योगिनी का वास वायु कोण में, द्वितीया तथा दशमी में योगिनी का वास उत्तर में एवं अष्टमी और अमावास्या में योगिनी का वास ईशान कोण में, जानना चाहिए। यात्रा के समय में यदि योगिनी सम्मुख भाग में हो तो मृत्यु, वामभाग में सुखप्रद, पृष्ठ भाग में वाञ्छित वस्तुप्रद एवं दक्षिण भाग में योगिनी हो तो धन की हानि होती है।

शुभकृत्य में वर्जित काल परिज्ञानः—

वर्षावसानाश्वयुजोश्च मेचकौ पक्षौ च भीष्मस्य यमस्य पञ्चके ।
वैश्वानरेन्दून्मितघस्रपक्षको गुर्वर्कयोगो ग्रहणस्य वासरः ॥ ७४ ॥

उत्पातकाहानि तिथिक्षयार्द्धके न्यूनाधिमासौ दिवसः पितुर्मृतेः ।
भद्रा जनेर्मासतिथी च तारका वर्ज्या इमे सत्सु समेषु कर्म्मसु ॥ ७५ ॥

सँवत्सर का अन्तिम (चैत्रकृष्ण) पक्ष, आश्विन कृष्ण (महालय) पक्ष, भीष्म पञ्चक अर्थात् माघ शुक्ल एकादशी से पौर्णमासी पर्यन्त, यम पञ्चक अर्थात् कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल द्वितीया पर्यन्त, विश्व घस्र (तेरह दिनका) पक्ष गुर्वादित्य (गुरु सूर्य का एक राशि में) योग, ग्रहण दिन, त्रिविधोत्पातदिन, तिथिहानि तथा तिथिवृद्धि का दिन, क्षय मास, मलमास, माता पिता का श्राद्ध दिन, भद्रा (विष्टि करण) जन्म मास, जन्म तिथि और जन्म नक्षत्र ये सब अशुभ काल समस्त शुभ कार्यों में वर्जित करे।

शीतांशुपापैः सहितौ तनूलवौ तौ वर्जितौ सर्वशुभेषु कर्म्मसु ।
उद्वाहसीमन्तगमेऽशुभा जनुस्तारा व्रतेऽन्नाशन एव सा शुभा ॥ ७६ ॥

लग्न में तथा लग्न की नवांश राशि में यदि चन्द्रमा और पाप ग्रह हों तो उस में समस्त शुभ कर्मों को न करे। विवाह, सीमन्तकर्म और यात्रा में जन्म तारा अशुभ होती है। व्रतबन्ध तथा अन्न प्राशन में 'जन्म तारा शुभ' होती है।

काव्येज्ययोः शैशववार्द्धके तन्मौढ्येऽथ गीर्वाणगुरौ मृगस्थे ।
पञ्चाननस्थेऽनृजुगेऽतिचारे विद्वँस्त्यजानूनकमङ्गलानि ॥ ७७ ॥

शुक्र तथा गुरु के शिशुत्व, वृद्धत्व तथा अस्तंगत में एवं मकरगतगुरु, सिंह गत गुरु, वक्रगत गुरु तथा अतिचार गुरु में समस्त शुभ कार्यों को न करे।

गुर्वादित्योऽधिमासाख्यो मूढता भार्गवेज्ययोः ।
मासोक्तेषु प्रशस्तेषु कार्येष्वेव न दोषभाक् ॥ ७८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गुर्वादित्य (गुरु सूर्य का एक राशि में योग), मलिन मास (अधिक मास या लौन्द) गुर्वस्त और शुक्रास्त ये सब दोष मासोक्त शुभ कार्य (सीमन्त कर्मादि) में दोषप्रद नहीं होते हैं ।

सिंहराश्यंश तथा मकरराशिगत गुरु दोष परिज्ञानः—

लेये लेयलवे सुरेशसचिवे गोदावरीगङ्गयो—
मध्ये पाणिग्रहो भवेन्न शुभदो दोषस्तदा नो भवेत् ।
देशेऽन्यत्र तथा भगेऽप्यजगते पित्र्यादिपञ्चांघ्रिषु
सर्वत्रैव विनिन्दितः सुरगुरुर्मौर्ह्यर्किकः कीर्त्तितः ॥ ७९ ॥

पादेपूर्वरितेषु जह्नुतनयागोदावरीमध्यगं
हित्वादोषकरो नहि क्रियगतेऽर्के सन्विवाहादिकम् ।
गोदाजह्नुसुतान्तरेऽपि निखिलो वर्ज्यो मृगेन्द्रस्थितः
पर्जन्यार्चितपत्कलिङ्गविषये गौडाभिधे गुर्जरे ॥ ८० ॥

सिंह राशिगत गुरु यदि सिंहांश में हो तो उस समय में विवाह करना शुभ नहीं होता है । गोदावरी नदी के उत्तर तट से भागिरथी के दक्षिणतट पर्यन्त के देश में विवाहकृत्य में सिंह राशिगत गुरु का दोष होता है । उक्त देश के अतिरिक्तदेशों में दोष नहीं होता है । मेषराशिगत सूर्य में भी अन्यदेशों में सिंहराशिगत गुरु का दोष नहीं होता है । मघा के प्रथम चरण से पूर्वाफाल्गुनी के प्रथमचरण पर्यन्त अर्थात् उक्त पाँच चरणों के मध्य में गुरु हो तो सर्वत्र (सबदेशों में) दोष होता है । सिंह राशि के शेष चरणों में अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण से उत्तराफाल्गुनी के प्रथमचरण पर्यन्त अर्थात् इनचार शेष चरणों में गुरु हो तो गङ्गागोदावरी के अन्तरालवर्ती देशों को छोडकर अन्य देशों में दोष दायक नहीं होता है । मेष के सूर्य होने पर अर्थात् सौर वैशाख में गङ्गागोदावरी के मध्यवर्त्ती देशों में विवाहादि शुभ कार्य में सिंह राशिगत गुरु भी ' शुभ ' होता है । कलिङ्ग ( ), गौड ( ), गुर्जर (गुजरात)देश में समस्त सिंह राशिगत गुरु अशुभ होता है अर्थात उक्त देशों में सिंह के गुरु में विवाहादि शुभ कार्य न करे ।

मासान्तादि में वर्ज्यकाल परिज्ञानः—

मासावसाने दिवसं किलैकं घटीद्वयं तिथ्यवसानकाले ।
नाडीत्रयं भस्य समाप्तिकाले विवर्जयेद्वित्करपीडनाख्ये ॥ ८१ ॥

मास का अन्तिम दिन (मासान्त), तिथि के अन्त की दो घटी (तिथ्यन्त) एवं नक्षत्र के अन्त की तीन घटी (नक्षत्रान्त) इन तीनों दोषों को पण्डित जन विवाह में वर्जित करे ।

विवाह में ज्येष्ठत्रय दोष परिज्ञानः—

ज्येष्ठत्रयं सन्नहि पाणिपीडने माणिग्रहो ज्येष्ठसुतस्य नो शुभः ।
ज्येष्ठे जनुर्भे नहि जन्मवासरे कुर्य्यान्नमासे जनुषः करग्रहम् ॥ ८२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या का ज्येष्ठ मास (तीनों ज्येष्ठों) में विवाह शुभ नहीं होता है। एवं ज्येष्ठ मास ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ पुत्र का विवाह भी शुभ नहीं होता है। जन्म नक्षत्र, जन्म वार और जन्म मास में विवाह न करे।

देश भेदसे होलाष्टक के अशुभत्व का परिज्ञानः—

शुतुद्र्वाश्च विपाशाया इरावत्यास्तटे तथा।
त्रिपुष्करे शुभे कार्ये नेष्टं होलाष्टकाभिधम् ॥ ८३ ॥

शुतुद्रु (सतलज) विपाशा, (व्यासा), इरावती (रावी) नदी के तटवर्ती देशों में और त्रिपुष्कर (पुष्कर राज) में होलाष्टक (फाल्गुन शुक्लाष्टमी से पूर्णिमान्त) शुभ कार्यों को न करे।

विवाहादि शुभ कार्यों में वर्ज्य दश दोषों के नामः—

* वेधो लत्ताऽथो युतिर्वज्रबाणौ यामित्राख्यः पातखार्जूरवेधौ।
दिग्योगश्चोपग्रहाख्यो दशैते दोषा होराविद्भिरुक्ता विवाहे ॥ ८४ ॥

वेध १ (पञ्चशलाका और सप्तशलाकाजन्य), लत्ता २ (लात), युति ३ (ग्रहसंयोग). वज्र४, बाण (मृत्यु-पञ्चक), यामित्र ६ (जामित्र), पात ७, खार्जूरवेध ८, दिग्योग ९, उपग्रह १० में दश दोष विवाहादि शुभ कार्यों में विचारणीय है।

पञ्चशलाका वेध साधन रीतिः—

मूलादित्योर्ब्राह्मविध्योर्जलेशस्वात्योर्विश्वेन्द्वोरुफापौष्णयोश्च।
पित्र्यश्रुत्योर्याम्यमैत्रर्क्षयोश्च चित्राजांघ्र्योर्वासवव्यालराजोः ॥ ८५ ॥
भाग्याश्विन्योर्बुध्न्यर व्योर्द्विदैववह्न्योरार्द्रातोययोः शक्रगुर्व्योः।
तुर्य्याद्यांघ्र्योर्वा तृतीयद्वयोर्वा खेटे तत्रैवाश्रिते वेध उक्तः ॥ ८६ ॥

मूल पुनर्वसुका, रोहिणी अभिजित् का, शतभिषा स्वाती का, उत्तराषाढा मृगशिरा का, उत्तराफाल्गुनी रेवती का, मघा श्रवण का, भरणी अनुराधा का, चित्रा पूर्वा भाद्रपदा का, धनिष्ठा आश्लेषा का, पूर्वाफाल्गुनी अश्विनी का, उत्तराभाद्रपदा हस्त का, विशाखा कृत्तिका का और ज्येष्ठा पुष्य का परस्पर वेध होता है। उक्त वेधज नक्षत्रों में स्थित दोनों ग्रहों के मध्य में एक ग्रह वेधज नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और द्वितीय ग्रह वेधज नक्षत्र के, प्रथम चरण में हो अथवा एक ग्रह वेधज नक्षत्र के तृतीय चरण में और द्वितीय ग्रह वेधज नक्षत्र के द्वितीय चरण में हो तो ' उन दोनों ग्रहों का परस्पर पञ्चशलाका वेध ' होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

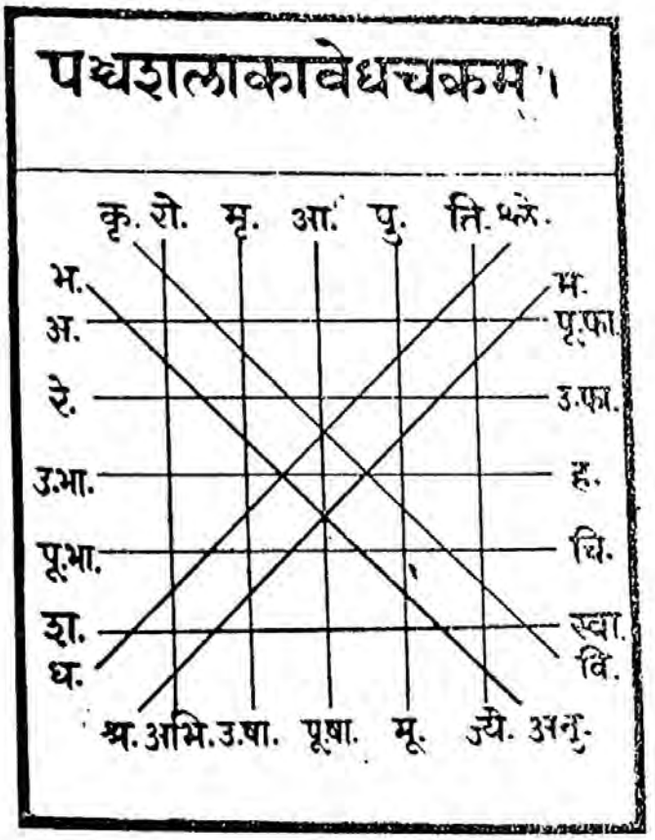

—: उदाहरण :—

संवत् १९९७ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी तिथि, रविवार और रेवती नक्षत्र में विवाह मुहूर्त्त का निश्चय करना है अतः दश दोषों में वेधदोष मुख्य होने के कारण प्रथम उसका विचार करते हैं । यहां इष्ट दिन में रेवती विवाहोक्त नक्षत्र है । रेवती और उत्तराफाल्गुनी का परस्पर वेध होता है । अतः इष्टदिन में ग्रहों की स्थिति इसप्रकार है कि रोहिणी में सूर्य, आर्द्रा में भौम, मृगशिरा में बुध, अश्विनी में गुरु, पुनर्वसु में शुक्र, भरणी में शनि, चित्रा में राहु और रेवती में केतु है । यहां विवाह नक्षत्र रेवती का परस्पर वेध नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी है उस में कोईग्रह स्थित नहीं है । इसलिए विवाह नक्षत्र (रेवती) पञ्चशलाका वेध से शुद्ध है इस में विवाह कियाजाना सर्वथा श्रेयस्कर है।

सप्तशलाकावेध साधन रीतिः—

पाथःशिवे याम्यमघे कृशानुकर्णे ऽभिजित्के वसुभद्विदैवे ।
भाग्याश्वि भे वारुणभानिलर्क्षे पौष्णार्य्यमर्क्षे ऽभुजगानुराधे ॥ ८७ ॥

तक्षाजपाद्धे करवुध्न्यधिष्ण्ये आदित्यमूले पुरुहूतभेज्ये ।
मिथो ऽत्र विद्धे नगतुल्यरेखे प्रोक्तं बुधैः सप्तशलाकचक्रम् ॥ ८८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्वाषाढा आर्द्रा का, भरणी मघा का, कृत्तिका श्रवण का, अभिजित् रोहिणी का, धनिष्ठा विशाखा का, पूर्वाफाल्गुनी अश्विनी का, शतभिषा स्वाती का, रेवती उत्तराफाल्गुनी का, आश्लेषा अनुराधा का, चित्रा पूर्वाभाद्रपदा का, हस्त उत्तराभाद्रपदा का, पुनर्वसु मूल का और ज्येष्ठा पुष्य का परस्पर वेध होता है। यह सात रेखाओं का सप्तशलाकाचक्र पण्डितजनों ने कहा है।

सप्तशलाकावेधचक्रम्।

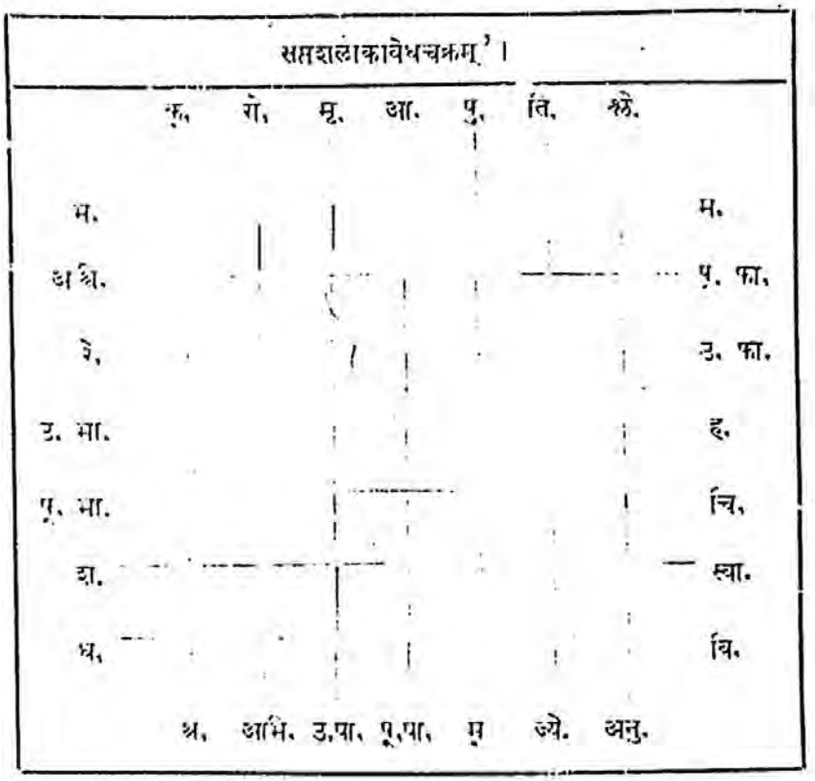

—: उदाहरण :—

यहां रेवती विवाह नक्षत्र है इसका और उत्तराफाल्गुनी का परस्पर वेध है। इष्ट दिन में उत्तराफाल्गुनी में शुभ वा पाप कोई भी ग्रह नहीं है इसलिए विवाह नक्षत्र (रेवती) सप्तशलाकावेध से शुद्ध है। इस में विवाह किया जाना सर्वथा श्रेयस्कर है।

लत्तादोष परिज्ञानः—

पूर्णेन्द्वच्छज्ञोरगा भं स्वपृष्ठे जातीष्वग्र्यङ्कोन्मितं लत्तयन्ते।
आदित्यार्किक्षोणिजेज्याः पुरस्ताद् हेलिव्यालाज्याशतर्कप्रमंभम् ॥ ८९ ॥

इष्ट दिन के नक्षत्र से पृष्ठ (पीछे) के बाईसवें नक्षत्र में पौर्णमासी हो तो 'चन्द्रलत्ता' होती है। एवं इष्ट दिन के नक्षत्र से पृष्ठ (पीछे) के पाँचवें नक्षत्र में शुक्र हो तो 'शुक्रलत्ता' होती है। इष्ट दिन के नक्षत्र से पृष्ठ के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सातवें नक्षत्र में बुध हो तो 'बुधलत्ता' होती है। इष्ट दिन के नक्षत्र से पृष्ठ के नवें नक्षत्र में राहु हो तो 'राहुलत्ता' होती है। एवं इष्ट दिनके नक्षत्र से आगे के बारह वें नक्षत्र में सूर्य हो तो 'सूर्यलत्ता' आगे के आठवें नक्षत्र में शनि हो तो 'शनिलत्ता' आगे के तीसरे नक्षत्र में मङ्गल हो तो 'मङ्गललत्ता' और आगे के छठे नक्षत्र में गुरु हो तो 'गुरुलत्ता' होती है।

'लत्तादोषबोधकचक्रम्'। वामे वा स्वपृष्ठे। दक्षिणे वा पुरस्तात्'।

ग्रहाः	सू.	पू. चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.
लत्तानक्षत्रम्	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षि.	वाम.	दक्षि.	वाम.	दक्षिण.	वाम,	दक्षि.	वाम.
फलम्	धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयम्	मरणम्

—: उदाहरणः —

यहां रेवती विवाह नक्षत्र है अतः रेवती से पीछे की ओर २२ वें नक्षत्र में पौर्णमाशी, सातवें नक्षत्र में बुध, पाँचवें नक्षत्र में शुक्र और नवें नक्षत्र में राहु नहीं है। एवं रेवती से आगे की ओर १२ वें नक्षत्र में सूर्य, तीसरे नक्षत्र में मङ्गल, छठे नक्षत्र में गुरु और आठवे नक्षत्र में शनि नहीं है अतः इष्टदिन में लत्तादोष नहीं है।

युति (ग्रहसंयोग) दोष परिज्ञानः—

आग्नेयगन्तव्यभमुग्रविद्धधिष्ण्यं खलाक्रान्तविमुक्तभं च।
उत्पातधिष्ण्यं ग्रहणर्क्षमिन्दूपभोगतः स्यादमलं शुभे सत् ॥ ९० ॥

पापगन्तव्य नक्षत्र अर्थात् पापग्रह जिस नक्षत्र पर जाने वाला हो, पापविद्ध नक्षत्र अर्थात् पापग्रह ने जिस नक्षत्र को पञ्चशलाका वा सप्तशलाका में वेध किया हो, पापाक्रान्त नक्षत्र अर्थात् पापग्रह जिस नक्षत्र पर स्थित हो, पापविमुक्त नक्षत्र अर्थात् पापग्रह ने जिस नक्षत्र को त्याग दिया हो, जिस नक्षत्र में त्रिविध (दिव्यभौमान्तरिक्ष) उत्पात हो और जिस नक्षत्रपर ग्रहण हुआ हो ये सब नक्षत्र शुभकार्य में त्याज्य हैं। उक्त दोषों से मुक्त होने के पश्चात् उक्त नक्षत्रों का यदि चन्द्रमा ने उपभोग करलिया हो तो वे विवाहादि शुभकार्यों में शुभ होते हैं।

चन्द्रोर्क्षोपरिग्रहवशतो युतिदोषफलबोधकचक्रम्'।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
फलम्	दारिद्र्यम्	शुभम्	मृत्युः	शुभम्	शुभम्	सापत्न्यम्	वैराग्यम्	नाशः	कष्टम्

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उदाहरण

यहां इष्टदिन में रेवती नक्षत्र है उस में केतु स्थित है अतः इष्टदिन के रेवती नक्षत्र पर 'युतिदोष' हुआ। यह पापग्रह की युति है इसलिए इनमें विवाह कियाजाना मङ्गल दायक नहीं है।

वज्र पञ्चक दोष परिज्ञानः—

तिथिः खेटैर्भवाराभ्यां संयुता सप्तशेषिता।
शेषे शून्ये गुणे बाणे प्रशस्तं नान्यथा शुभम् ॥ ९१ ॥

इष्टदिन की तिथि में, इष्टदिन के नक्षत्र और इष्टदिन के वार को युक्तकरे तब जो संख्या हो उसमें ९ को युक्तकर के ७ से तष्टकरे यदि शून्य, तीन और पाँच शेष बचे तो अशुभ अर्थात् वज्रपञ्चकदोष होता है। एक, दो, चार और छः शेष बचे तो शुभ अर्थात् वज्रपञ्चक दोष नहीं होता है।

—: उदाहरण :—

इष्टतिथि कृष्ण एकादशी की संख्या २६, इष्टदिन के नक्षत्र रेवती की संख्या २७ और इष्ट दिन के वार शनि की संख्या ७ इनतीनों का योग कियातो ६० हुए। इनमें ९ युक्त किये तो ६९ हुए। इनको ७ से तष्ट किया तो ६ शेष बचे। यहां शेष ६ हैं अतः इष्टदिन में 'वज्रपञ्चकदोष' न हुआ।

बाण दोष परिज्ञानः—

सङ्क्रान्तेर्यातभागा रसगुणधरणीभाब्धियुक्ता विहङ्गै-
स्तष्टा नाराचशेषा रुगनलनृपतिस्तेनसंज्ञाश्च मृत्युः।
बाणश्चेच्छेषयोगे खगविहृतमरुच्छेषिते स्यात्सशल्यो
राट्सेवागेहगोपोपनयनगमनोद्वाहकेषु क्रमेण ॥ ९२ ॥
त्याज्या नृपाग्निगदतस्करमृत्युसञ्ज्ञा
रोगं त्यजेद्दिनकरे कुटिले ऽग्निचौरौ।
भूपं यमे विदि मृतिं निशि चौररोगौ
सन्धिद्वयेमरणमह्नि महीपवह्नी ॥ ९३ ॥

इष्ट समय में सूर्य संक्राति के प्रवेश समय से सूर्य के जितने भुक्तांश हों उनको पाँचस्थान में स्थापित करे। तदनन्तर उनमें क्रमसे छः, तीन, एक, आठ और चार इनसंख्याओंको युक्तकरे तब प्रत्येक संख्या को पृथक् पृथक् ९ से तष्ट करे। यदि प्रथमस्थान में ५ शेष बचे तो रोगबाण, द्वितीयस्थान में ५ शेषबचे तो अग्निबाण, तृतीयस्थान ५ शेषबचे तो नृपतिबाण, चतुर्थ स्थान में ५ शेष बचे तो चोरबाण और पञ्चमस्थान में ५ शेषबचे तो मृत्युबाण होता है। तदनन्तर पाँचोंस्थानों की शेष संख्याओंका योग करके जो योग फल हो उस में ९ से भाग दे यदि पाँच शेषबचे तो 'सशल्यबाण' (अधिक दोषप्रद) होता है। राज सेवा में नृपतिबाण, गृह के आच्छादन में अग्निबाण, व्रतबन्ध में रोगबाण, यात्रा में चौरबाण और विवाह में मृत्युबाण को वर्जित करे। रविवार में रोग, मङ्गल वार में

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अग्नि तथा चौर, शनिवार में नृपति और बुधवार में मृत्युबाण को वर्जित करे। रात्रि में रोग तथा, चौर दोनों (प्रातः सायं) सन्ध्याओ में मृत्युबाण एवं दिनमें नृपति तथा अग्निबाण को वर्जित करे।

बाणबोधकचक्रमिदम्

बाणनामानि	रोगः	अग्निः	नृपः	चौरः	मृत्युः
रविभुक्तांशाः	८।१७।२६	२।११।२०।२९	४।१३।२२	६।१५।२४	१।१०।१९।२८
स्वशल्यताबारेषु	रवौ	भौमे	सोमे	गुरौ	शनौ
कर्मसुवर्ज्याः	उपनयने	गृहाच्छादने	नृपसेवायाम्	यात्रायाम्	विवाहे

—:उदाहरणः—

इष्ट दिन में सूर्य संक्रान्ति प्रवेश काल से सूर्य के १७ भुक्तांश (गतांश) है। इन को पाँच स्थानों में स्थापित करके क्रमसे ६।३।१।८।४ को युक्त किया तो २३।२०।१८।२५।२१ हुए। प्रत्येक में पृथक् पृथक ९ से भाग दिया तो ५।२।९।७।३ शेष बचे। यहां प्रथम स्थान में ५ शेष बचे हैं अतः इष्ट दिन में 'रोगबाण' हुआ। यहां सब शेष संख्या ५।२।९।७।३ हैं। इन सब का योग किया तो २६ हुए। इन में ९ से भाग दिया तो ८ शेष बचे। यहां शेष संख्या पाँच न होने के कारण सशल्य बाण न हुआ अर्थात् इष्ट दिनका रोगबाण अल्पदोषप्रद जानना चाहिए। यह रोगबाण व्रतबन्ध में त्याज्य है। अतः इष्ट दिन में विवाह करना शुभ है।

यामित्र दोष परिज्ञानः—

चन्द्राङ्गयोः सप्तमगे खगेन्द्रे भवेन्न पाणिग्रहणं शुभ वा।
खेटे शरेषून्मितभागयाते शुभं न जामित्रमिदं प्रदिष्टम् ॥ ९४ ॥

चन्द्रमा वा लग्न से सप्तम स्थान में यदि कोई (शुभ वा अशुभ) ग्रह हो अथवा चन्द्रमा वा लग्न से ५५ वें नवांश में कोई ग्रह हो तो 'यामित्र (जामित्र) दोष' होता है। यह विवाहादि में शुभ नहीं होता है।

जामित्रचक्रम्।

कार्यनक्षत्रम्	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रो.	मृग	~~आर्द्रा.~~ आ.	पुन.	ति.	श्ले.	म.	पू.फा	उ.फा.	ह.	
ग्रहनक्षत्रम्	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	
कार्यनक्षत्रम्	चि.	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.
ग्रहनक्षत्रम्	रे.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	ति.	श्ले.	मघा	पू. फा.	उ.फा.	ह.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

यहां 'चन्द्रमा' मीन राशि में हैं। इससे सप्तम कन्या राशि है। इस में राहु है। अतः 'यामित्र दोष' हुआ। अथवा स्पष्ट राहु ५।२४ में स्पष्ट चन्द्र ११।२९ को हीन किया तो ५।२५ राश्यादि शेष बचे। यहां शेष ५ राशि हैं इन को ९ से गुणा तो ४५ हुए। इनमें शेष अंश २५ के वर्त्तमान आठवें नवांश को युक्त किया तो ५३ हुए। ये ५५ न हुए अतः 'यामित्रदोष' न हुआ। अथवा विवाह नक्षत्र रेवती है। इस से १४ वां नक्षत्र हस्त हुआ। इस में कोई ग्रह नहीं है। अतः यामित्र दोष न हुआ।

पात दोष वा चण्डीश चण्डायुध परिज्ञानः—

गण्डस्य शूलस्य च वैधृतेश्च साध्यव्यतीपातकहर्षणानाम्।
अन्ते ऽस्ति यद्भं विनिपातनं तत्पातेन चैतन्न शुभं शुभेषु ॥ ९५ ॥

गण्ड, शूल, वैधृति, साध्य, व्यतीपात और हर्षण इन योगों के अवसान (समाप्ति) काल में जो नक्षत्र वर्त्तमान हो वह पात से पतित होता है। वह शुभ कार्यों में नहीं होता है।

—: उदाहरण :—

वर्त्तमान रेवती नक्षत्र में आयुष्मान् योग का अन्त है इसलिए 'पातदोष' न हुआ। क्योंकि विवाह नक्षत्र रेवती में गण्डादि योगों का अन्त न हुआ अतः 'पात (चण्डीशचण्डायुध) दोष' न हुआ।

प्रकारान्तर से पात दोष परिज्ञानः—

मार्त्तण्डभाद् गणितकेषु भुजङ्गमैत्र-
चित्रान्त्यपित्र्यहरिभेषु तुरङ्गभाच्च।
ग्लौसंयुतौ गणनया यदि तावतीह
पाताभिधः पतति वेति वदन्ति विज्ञाः ॥ ९६ ॥

आश्लेषा, अनुराधा, चित्रा, रेवती, मघा और श्रवण ये छः नक्षत्र पातसञ्ज्ञक हैं। इष्टदिन में सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे नक्षत्र गणना आरम्भ करके जहाँ पर उक्त पात नक्षत्र आवें वहां (ऽ) ऐसा चिन्ह करे। तदनन्तर सूर्याक्रान्त नक्षत्र को अश्विनी मानकर उससे चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिने। यदि इष्ट चन्द्र नक्षत्रपर पूर्वोक्त चिन्ह (ऽ) हो तो 'इष्ट नक्षत्रपर पातदोष' होता है। यह दोष शुभ कार्य में त्याज्य है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चण्डीशचण्डायुध (पात) दोषबोधकचक्रम् '।

सू.नक्ष.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	ति.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा.
कार्यनक्षत्राणि सपातानि	श्ले.	ति.	पुन.	आ.	मृ.	रो.	कृ.	भ.	अ.	रे.	उ. भा.	पू. भा.	शत.	ध.	श्र.
	म.	श्ले.	ति.	पुन.	आ.	मृ.	रो.	कृ.	भ.	अ.	रे.	उ. भा.	पू. भा.	श.	ध.
	चि.	ह.	उ. फा.	पू.फा.	म.	श्ले.	ति.	पुन.	आर्द्रा	मृ.	रो.	कृ.	भ.	अ.	रे.
	अनु.	वि.	स्वा.	चि.	ह.	उ.फा.	पू.फा.	भ.	श्ले.	ति.	पुन.	आ.	मृ.	रो.	कृ.
	श्र.	उ.पा.	पू.पा.	मू.	ज्ये.	अ.	वि.	स्वा.	चि.	ह.	उ.फा.	पू. पा.	म.	श्ले.	ति.
	रे.	उ.भा.	पू. भा.	श.	ध.	श्र.	उ. पा.	पू.पा.	मू.	ज्ये.	अनु.	वि.	स्वा.	चि.	ह.

सू.नक्ष.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. पा.	उ. पा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रे.	सूर्यनक्षत्राणि	
कार्यनक्षत्राणि सपातानि	उ. पा.	पू. पा.	मू.	ज्ये.	अनु.	विशा.	स्वा.	चित्रा	हस्तः	उ. फा.	पू. फा.	मघा		
	श्रव.	उ. पा.	पू. पा.	मू.	ज्ये.	अनु.	विशा.	स्वा.	चित्रा	हस्त.	उ. फा.	पू. फा.	कार्यनक्षत्राणि सपातानि	इतरनक्षत्राणि विपातानि
	उ. भा.	पू. भा.	शत.	धनि.	श्रव.	उ. पा.	पू. पा.	मू	ज्ये.	अनु.	विशा.	स्वा.		
	भ.	अ.	रे.	उ. भा.	पू भा.	शत.	धनि.	श्रव.	उ. पा.	पू. पा.	मू.	ज्ये.		
	पुन.	आ.	मृग	रो.	कृत्ति.	भ.	अ.	रे.	उ. भा.	पू. भा.	शत.	धनि.		
	उ. फा.	पू. फा.	म.	श्ले.	ति.	पुन.	आ.	मृग	रोहि.	कृति.	भ.	अश्वि.		

—: उदाहरण :—

इष्ट दिन में सूर्य रोहिणी नक्षत्र पर है इसलिए रोहिणी से गणना आरम्भ की तो रो. मृ. अ. पु. ति.

श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. पा.	उ. पा.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.	अ.	भ.	कृ.			
S	S				S			S					S					S						

इसप्रकार न्यास हुआ। सूर्याक्रान्त नक्षत्र (रोहिणी) को अश्विनी मानकर अर्थात् अश्विनी से गणना आरम्भ की तो इष्टदिन के विवाह नक्षत्र रेवती की संख्या २७ वें नक्षत्रपर (S) उक्त अशुभ चिन्ह नहीं है इसलिए इष्टदिन में ' पात दोष ' न हुआ। अथवा पात दोष बोधक चक्र में विचार किया तो इष्ट दिन में ' सूर्य ' रोहिणी पर है। उस के नीचे आर्द्रा, पुन, पू. फा, चि; मू- श; ये छः नक्षत्र पात युक्त हैं उक्त नक्षत्रों में विवाह नक्षत्र रेवती नहीं आया है अतः इष्ट दिन में ' पात दोष ' न हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

खार्जूर वेध (एकार्गल) दोष परिज्ञानः —

व्याघातशूलव्यतिपातवैधृतिगण्डेषु वज्रे परिघातिगण्डयोः ।
एकार्गलो दोष इहाभिजिद्युतश्चेदोजभस्थो हिमदीप्तिरर्कभात् ॥ ९७ ॥

व्याघात, शूल, व्यतीपात, वैधृति, गण्ड, वज्र, परिघ, और अतिगण्ड इन योगों के मध्य में कोई भी योग इष्ट दिन में हो और सूर्याक्रान्त नक्षत्र से अभिजित् सहित चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिन कर यदि वह संख्या विषम हो अर्थात् सूर्य और चन्द्रमा के अन्तरालवर्ती नक्षत्रों की संख्या विषम हो तो 'खार्जूर वेध (एकार्गल) दोष' होता है ।

खार्जूरवेधबोधकचक्रम् '।

नक्षत्रा.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	ति.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.
योगाः	विष्कम्भः	आयुः	सौभाग्यः	सुकर्मा	शूलम्	ध्रुवम्	व्याघा.	वज्रम्	व्यतीपातः	परिघः	सिद्धः	शुभः	ब्रह्मा	वैधृतिः
नक्षत्रा.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.
योगाः	प्रीतिः	सौभा.	अतिगं	धृतिः	गण्डः	वृद्धिः	ध्रुवः	सिद्धिः	वरीयान्	शिवः	साध्यः	शुक्लः	ऐन्द्रः	०

'एकार्गलवेधोदाहरणमेतत्' ।

	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.	अ.	
वि.														म.
	स्वा.	वि.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	ति.	पु.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.

—:उदाहरणः—

यहां इष्ट दिन में रेवती नक्षत्र है और 'सूर्य' रोहिणी नक्षत्र पर है अतः सूर्याधिष्ठित रोहिणी नक्षत्र से गणना आरम्भ करके अभिजित् सहित इष्ट दिन के नक्षत्र रेवती की संख्या २८ पर्यन्त गिना तो सूर्य और चन्द्रमा के अन्तरालवर्ती नक्षत्रों की संख्या २५ हुई। यह संख्या विषम है अर्थात् इष्ट दिन में सूर्याक्रान्त नक्षत्र से 'चन्द्रमा' विषम संख्या के नक्षत्र में है, यद्यपि इष्ट दिन में व्याघातादियोगों में से कोई योग नहीं है किन्तु पूर्वोक्त प्रकार से इष्ट दिन में 'खार्जूर वेध दोष' हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथवाः--

इष्ट दिन में सौभाग्य योग वर्त्तमान है इस की विष्कम्भादि संख्या ४ सम हैं अतः इस में २८ को युक्त किया तो ३२ हुए। इनका आधा किया तो १६ हुए। अश्विनी से १६ वां विशाखा नक्षत्र हुआ। इस को एकार्गलचक्र के शिर में स्थापित कर के शेष नक्षत्रों को दक्षिण परिक्रमण में स्थापित किया। इष्ट दिन में 'सूर्य' रोहिणी में और चन्द्रमा रेवती में है। ये दोनों समान (एक) रेखावाले नक्षत्र में स्थित हैं। इसलिए इष्टदिन में खर्जूर वेध (एकार्गल) दोष हुआ।

दशयोगदोष परिज्ञानः—

वियत्कुवेदाङ्गदिगीशवासराः पुराणतुल्याः खचरेन्दवो नखाः।
सुधाङ्गचण्डच्छवितारकायुतैर्भशेषिते ऽमी दशयोगसञ्ज्ञकाः ॥ ९८ ॥

इष्ट दिन के चन्द्र नक्षत्र का और सूर्याधिष्ठित नक्षत्र की संख्या का योग करके २७ से भाग दे यदि शून्य, एक, चार, छः, दश, ग्यारह, पन्द्रह, अठारह, उन्नीस, और बीस शेष बचे तो 'दशयोगसञ्ज्ञकदोष' होते हैं।

—: उदाहरण :—

इष्ट दिन में 'चन्द्रमा' रेवती नक्षत्र में है। इस की संख्या २७ है। और 'सूर्य' रोहिणी नक्षत्र में है इस की संख्या ४ है इन दोनों संख्याओंका योग किया तो ३१ हुए। इन में २७ से भाग दिया तो ४ शेष बचे। यह संख्या पूर्वोक्त शून्यादि संख्याओं में है अतः इष्ट दिन में 'दशयोगदोष' हुआ।

उपग्रहदोष परिज्ञानः—

धृत्यष्टशैलातिधृतीन्द्रदिग्दिननाराचतुल्यं प्रकृतेः शरोन्मितम्।
ग्लौभं खगर्क्षात् कुरुवाल्हिकाभिधदेशे न शस्ताः स्युरुपग्रहाभिधाः ॥ ९९ ॥

यदि सूर्याक्रान्त नक्षत्र से अठारह, आठ, सात, उन्नीस, चौदह, दश, पन्द्रह, पाँच और इकीस से पाँच अर्थात् इक्कीस, बाईस, त्रेईस, चौबीस तथा पच्चीस वां 'चन्द्र नक्षत्र' हो तो 'उपग्रह दोष' होते हैं। उक्त दोष कुरु (कुरुक्षेत्र) तथा वाल्हिक (व्यासा और सतलज के बीच के प्रदेश) में अशुभ होते हैं।

—: उदाहरण :—

इष्ट दिन में 'सूर्य' रोहिणी में है और चन्द्रमा रेवती में है अतः सूर्याक्रान्त रोहिणी नक्षत्र से चन्द्राक्रान्त रेवती नक्षत्र पर्यन्त गिना तो इष्ट दिन का रेवती नक्षत्र २४ वां हुआ। यह संख्या पूर्वोक्त अठारह इत्यादि संख्याओं में है अतएव इष्ट दिन में 'उपग्रह दोष' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्रान्ति साम्य दोष परिज्ञानः—

कर्कालिभे गोमकरौ तुलाघटौ सिंहक्रियौ मीनवशे नृयुग्मयौ ।
तत्रेन्दुभान्वोरपमस्य तुल्यता ऽन्योन्यं भवेत्सत्सु न सा शुभा मता ॥ १०० ॥

कर्क तथा वृश्चिक में, वृष तथा मकर में, तुला तथा कुम्भ में, सिंह तथा मेष में, मीन तथा कन्या में एवं मिथुन तथा धनु में यदि क्रमसे वा व्युत्क्रम से सूर्य तथा चन्द्रमा ये दोनों परस्पर स्थित हों तो 'क्रान्ति साम्य दोष' होता है। यह शुभ कार्यों में शुभ नहीं होता है।

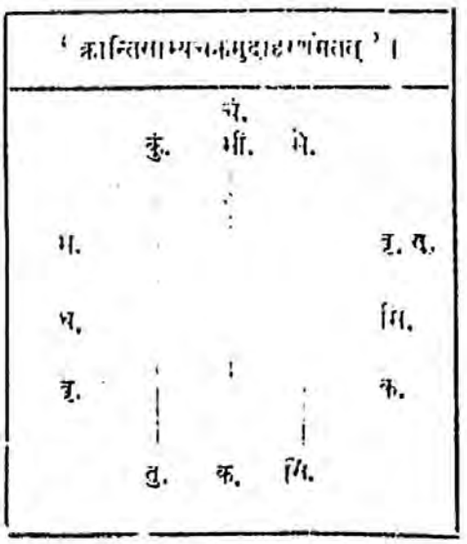

— उदाहरण :—

यहां इष्ट दिन में वृष राशि में सूर्य और मीन राशि में चन्द्रमा है ये दोनों भिन्न २ रेखाओं पर स्थित हैं अर्थात् दोनों का परस्पर वेध (एकरेखापर स्थिति) नहीं है इस लिए इष्ट दिन में 'क्रान्तिसाम्यदोष' न हुआ।

मासदग्ध दोष परिज्ञानः—

दग्धास्तिथ्यः स्युः क्रमेण द्वितीयापूर्वा युग्माश्वापमीने दिनेशे ।
गोकुम्भस्थे ऽजेन्दुभस्थे नृयुग्मस्त्रीस्थे सिंहालिस्थिते तौलिनक्रे ॥ १०१ ॥

धनु तथा मीन के सूर्य में द्वितीया, वृष तथा कुम्भ के सूर्य में चतुर्थी, मेष तथा कर्क के सूर्य में षष्ठी, मिथुन तथा कन्या के सूर्य में अष्टमी, सिंह तथा वृश्चिक के सूर्य में दशमी, एवं तुला तथा मकर के सूर्य में द्वादशी तिथि हो तो 'दग्ध' होती है। यह मासदग्ध दोष शुभ कार्य में त्याज्य है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

' मासदग्धतिथिचक्रमिदम् ' ।

सौर वैशाखे	सौरज्येष्ठे	सौराषाढे	सौरश्रावणे	सौरभाद्रे	सौराश्विने	सौरकार्त्ते	सौरमार्गे	सौरपौषे	सौरमाघे	सौरफाल्गुने	सौरचैत्रे
षष्ठी	चतुर्थी	अष्टमी	षष्ठी	दशमी	अष्टमी	द्वादशी	दशमी	द्वितीया	द्वादशी	चतुर्थी	द्वितीया

--: उदाहरण :--

यहां ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी का विवाह मुहूर्त है और सौर ज्येष्ठ में चतुर्थी के दिन मासदग्ध दोष होता है इष्ट दिन में एकादशी तिथि होने के कारण ' मासदग्ध दोष ' न हुआ ।

सर्वारम्भ शुद्धि परिज्ञानः--

सर्वारम्भः शोभनो ऽ न्त्याष्टशुद्धमूर्त्तौ स्वर्क्षात्स्वाङ्गतो वृद्धिभे ऽ ङ्गे ।
दृष्टेयुक्ते शोभनैस्तद्वदिन्दौ दुश्चिक्यायारातिमेषूणमर्थे ॥ १०२ ॥

जन्म चन्द्र राशि से अथवा जन्म लग्न राशि से वृद्धि (३।६।१०।११) राशि यदि लग्न में हो, एवं द्वादश तथा अष्टम स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हों, सामयिक लग्न यदि शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो और ' चन्द्रमा ' तृतीय एकादश षष्ठ वा दशम में हो तो सब शुभ कर्मों का आरम्भ शुभ होता है ।

सर्वकार्यारम्भ में लग्नशुद्धि परिज्ञानः--

सद्राशिलग्ने शुभराशिभागे लाभानुजारातिगतैरसौम्यैः ।
सौम्यग्रहैः केन्द्रतपःसुतस्थैः शस्तानि कर्म्माण्यखिलानि कुर्य्यात् ॥ १०३ ॥

शुभ राशि के लग्न तथा नवांश में एकादश, तृतीय तथा षष्ठ स्थान में पाप ग्रह हों एवं केन्द्र, नवम तथा पञ्चम में शुभ ग्रह हों तो सब शुभ कर्म्मों को आरम्भ करे ।

गृहारम्भादि कार्यों में सूर्यादि शुद्धि का परिज्ञानः--

गेहारम्भः शस्त उक्तो ऽ र्कशुद्धौ ताराशुद्धौ चौलकर्म्म प्रशस्तम् ।
शस्तौ शुद्धौ जीवरव्योर्विवाहमौञ्जीबन्धौ सर्वकर्म्मेन्दुशुद्धौ ॥ १०४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्य की शुद्धि होनेपर अर्थात् कर्त्ता की जन्म चन्द्र राशि से गोचर में चतुर्थ अष्टम वा द्वादश राशि में 'सूर्य' न हो तो 'नवीन गृह का आरम्भ करना शुभ' होता है। तारा की शुद्धि (३।५।७ ताराराहित तारा) में 'चौल कर्म (प्रथम मुण्डन) शुभ' होता है। गुरु तथा सूर्य की शुद्धि (स्वराशि से गोचर में ४।८।१२ राशि रहित राशि) में विवाह तथा व्रतबन्ध शुभ होते हैं। एवं चन्द्र शुद्धि (स्वराशि से गोचर में ४।८।१२ राशि रहित राशि) में सब कार्य करना शुभ होता है।

वर, बटु तथा कन्या के सूर्य, गुरु तथा चन्द्रबल परिज्ञानः—

सञ्चिन्तयेद् ब्रह्मबलं वरस्य बलं गुरोर्ज्यस्य बटोः कुमार्य्याः ।
तेषां त्रयाणां शशिनो बलं चेत्कलग्रहे ऽर्को वरजन्मराशेः ॥ १०५ ॥

रन्ध्रावसानाम्बुषु गोचरे ऽन्तप्रदो जनुःस्वस्मरकोणगः सः ।
सन्नर्चया ऽन्यत्र शुभःस्वकोणस्थितस्त्रिभूहायनतः परं सन् ॥ १०६ ॥

विवाह समय में वर की सूर्य शुद्धि अर्थात् जन्म राशि से गोचर में चतुर्थ अष्टम वा द्वादश राशि में सूर्य के न होने पर 'सूर्य बलवान्' होता है अतः बलवान् सूर्य में वर का विवाह करना शुभ होता है। एवं बटु (व्रतबन्ध योग्य बालक) का और कन्या का गुरु के बल का विचार करे अर्थात् गुरु की शुद्धि में बटु का व्रतबन्ध और कन्या का विवाह करना शुभ होता है। एवं वर तथा कन्या के विवाह में और बटु के यज्ञोपवीत में चन्द्रमा के बल का विचार करे अर्थात् चन्द्र शुद्धि में वर तथा कन्या का विवाह और बटु का व्रतबन्ध करना शुभ होता है। वर की जन्म राशि से यदि गोचर में अष्टम द्वादश वा चतुर्थ राशि में सूर्य हो तो वर की मृत्यु को करता है। यदि वर की जन्म राशि से प्रथम द्वितीय सप्तम नवम वा पञ्चम राशि में सूर्य हो तो पूजा से शुभ होता है। एवं तृतीय षष्ठ दशम वा एकादश राशि में सूर्य हो तो वर का विवाह करना शुभ होता है। किन्तु वर की राशि से द्वितीय पञ्चम वा नवम राशि में गोचर से 'सूर्य' हो तो तेरह वर्ष के पश्चात् बिना पूजा का भी शुभ होता है।

बटु तथा कन्या की जन्म राशि से गुरु के शुभाशुभत्वका परिज्ञानः —

वध्वा बटोर्जन्मभतो गिरीशो नेष्टो ऽन्त्ययाम्याम्बुषु तत्र नार्चा ।
कार्या ऽर्चया सज्जनिपद्त्रिरवस्थः सो ऽर्थायकोणास्तगतः शुभश्चेत् ॥ १०७ ॥

कन्या तथा बटु की जन्म राशि से गोचर में द्वादश अष्टम वा चतुर्थ राशि में 'गुरु' हो तो विवाह तथा व्रतबन्ध अशुभ होता है। यदि 'गुरु' उक्त स्थानों में हो तो पूजा करने से भी शुभ नहीं होता है। जन्म (आद्य) षष्ठ तृतीय वा दशम राशि गत गुरु की पूजा करे तब विवाह व्रतबन्ध करना शुभ होता है। एवं कन्या तथा बटु की जन्म राशि से यदि गोचर में द्वितीय एकादश नवम पञ्चम वा सप्तम राशि में 'गुरु' हो तो बिना पूजा के विवाह तथा व्रतबन्ध करना शुभ होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गोचर शुद्धि के अभाव में अष्टकवर्ग शुद्धि की प्रधानता का परिज्ञानः—

शुद्धिर्भवेन्नो यदि गोचरेण सुधामरीचीनबृहस्पतीनाम् ।
तच्छुद्धिमार्य्या ब्रुवते ऽष्टवर्गात्तदोपयामे व्रतबन्धने च ॥ १०८ ॥

यदि विवाह तथा व्रतबन्ध समयमें गोचर से चन्द्र, सूर्य तथा गुरु की शुद्धि न हो तो अष्टक वर्ग से चन्द्रादियों की शुद्धि का विचार करे अर्थात् उक्त ग्रहों की जिस राशि में चार से अधिक रेखा हों उस में विवाहादि कार्य करना शुभ होता है। इस प्रकार पण्डितजन कहते हैं।

गृहारम्भे विवाहे व्रते च रविगुरुचन्द्रशुद्धिबोधकचक्रमेतत् ' ।

ग्रहाः	शुभस्थानानि	पूज्यस्थानानि	अशुभस्थानानि
रविः	३, ६, १०, ११,	१, २, ५, ७, ९	४, ८, १२,
गुरुः	२, ५, ७, ९, ११,	१, ३, ६, १०,	४, ८, १२,
चन्द्रः	३, ६, १०, ११,	१, २, ५, ७ ९	४, ८, १२,

कार्य विशेष में ग्रह विशेष बल तथा सामान्यग्रहबल परिज्ञानः—

भानोर्बले भूपतिदर्शनं समकर्म्मा ऽऽहवः शास्त्रकरग्रहो गमः ।
दीक्षा ऽथ ताराबलतः शशी शुभो ऽर्को ऽब्जौजसो ऽन्ये शुभदास्तदोजसः ॥ १०९ ॥

रवि के बली होने पर राजा का दर्शन, चन्द्रमा में समस्त कर्म, मङ्गल में सङ्ग्राम, बुध में शास्त्राभ्यास, गुरु में विवाह, शुक्र में यात्रा और शनि में दीक्षा (मंत्रोपदेश) का कार्य करे। तारा के बल से चन्द्रमा शुभ, चन्द्रमाके बलसे सूर्य शुभ और सूर्य के बल से अन्य भौमादि ग्रह शुभ होते हैं।

' कस्मिन्कर्म्मणि कस्य बलं ग्राह्यं तद्बलबोधकचक्रम् ' ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
कृत्यानि	राजदर्शने विवाहे गृहकरणेच	सर्वकार्येषु	रणेभुरिकाबन्धच	विद्याभ्यासे.	विवाहे-व्रतेच	यात्रायाम्	दीक्षायाम्	पापकर्मणि	उग्रकृत्ये

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दन्तधावन का निषेध समय:—

भूते दर्शे सङ्क्रमे भास्करस्याष्टम्यां षष्ठ्यां पक्षतौ पूर्णिमायाम् ।
गौर्य्यास्तिथ्यां श्राद्धकाले व्रते च यज्ञे कुर्याद् धावनं नो रदानाम् ॥ ११० ॥

चतुर्दशी, अमावास्या, सूर्य संक्रान्ति का दिन, अष्टमी, षष्ठी, प्रतिपदा, पौर्णमासी तथा तृतीया इन तिथियों में श्राद्ध, व्रत, तथा यज्ञ में दन्तधावन न करे।

इति ज्योतिस्तत्त्वे शुभाशुभप्रकरणं षोडशमवसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

मुहूर्त्तप्रकरणं प्रारभ्यते ।

दिक् शूल परिज्ञानः—

त्यजेदवाचीं वचसामधीशे प्राचीं पपीनन्दन पाण्डरांश्वोः ।
काष्ठामुदीचीं विबुधे धराजे दिशं प्रतीचीं सितसप्तसप्त्योः ॥ १ ॥

गुरुवार में दक्षिण दिशा न जाय, शनि तथा सोमवार में पूर्व दिशा न जाय, मङ्गल तथा बुधवार में उत्तर दिशा न जाय एवं शुक्र तथा रविवार में पश्चिम दिशा न जाय।

विदिक् शूल परिज्ञानः—

ईशान आर्कौ विदि शू'मुक्तमाग्नेय इज्ये रजनीकरे तत् ।
वायव्य आरे निर्ऋतौ भगे भे न तत्र कुर्याद्गमनं शुभेप्सुः ॥ २ ॥

शनिवार तथा बुधवार में ईशान्य दिशा में शूल, गुरु तथा सोमवार में आग्नेय दिशा में शूल, मङ्गलवार में वायव्य में शूल एवं रवि तथा शुक्रवार में नैर्ऋत्यदिशा में शूल होता है। जिस दिशा में शूल हो उस में मङ्गल कामनावाला पुरुष यात्रा को न करे।

दिक् शूल परिहार परिज्ञानः—

पीत्वा घृतं व्रजतु भास्वति शूलजस्य
दोषच्छिदे पय उपाधिपतौ दधीज्ये ।
भुक्त्वा यवान्भृगुसुते विबुधे तिलांश्च
माषान्नमर्कतनये कुज इक्षुपाकम् ॥ ३ ॥

रविवार में घी पीकर, सोमवार में दूध पीकर, गुरुवार में दही पीकर शुक्रवार में जौ खाकर, बुधवार में तिल खाकर, शनिवार में उड़द खाकर एवं मङ्गलवार में गुड़ खाकर जाय तब शूलजन्य दोष नहीं होता है।

समय शूल परिज्ञानः—

शूलं प्रभाते दिशि जम्भेदिनो मध्याह्नकाले समवर्त्तिनो दिशि ।
शूलं दिनान्ते दिशि पाथसां प्रभोःशूलं निशीथे नरधर्म्मणो दिशि ॥ ४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रातः काल में पूर्व दिशा में शूल, मध्याह्न में दक्षिण दिशा में शूल, सन्ध्याकाल में पश्चिम में शूल एवं अर्द्धरात्रि में उत्तर दिशा में शूल होता है।

नक्षत्र शूल परिज्ञान :—

शूलमिन्द्रदिशि जम्भभेदिभे ऽनैकपादि समवर्त्तिनो दिशि ।
पाशिनो दिशि कभे तथोत्तर आर्य्यमे ऽत्र गमनं नकारयेत् ॥ ५ ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्वदिशा में शूल, पूर्वाभाद्रपदा में दक्षिण में शूल, रोहिणी में पश्चिम में शूल एवं उत्तराफाल्गुनी में उत्तर में शूल होता है।

कालवास परिज्ञानः—

आग्नेय्यां भे दक्षिणे देवपूज्ये पृथ्वीपुत्रे कालवासः प्रतीच्याम् ।
पङ्गौ प्राच्यामुत्तरे पद्मबन्धौ नैर्ऋत्ये ज्ञे प्रोच्यते कालवासः ॥ ६ ॥

शुक्रवार में आग्नेय में काल, गुरुवार में दक्षिण में काल, मङ्गल में पश्चिम में काल, शनि में पूर्व में काल, रवि में उत्तर में काल एवं बुधवार में नैर्ऋत्य में कालवास कहा है।

राहु वास परिज्ञानः—

प्राच्यां तमो ऽलिभधनुर्मकरार्क आस्ते
मेषे घटे झष इने यमदिग्विभागे ।
कर्के वृषे नृयुजि भास्वति पश्चिमस्यां
सिंहे स्त्रियां वणिजि भास्कर उत्तरस्याम् ॥ ७ ॥

वृश्चिक, धनु तथा मकर के सूर्य में पूर्व दिशा में राहुका वास, मेष, कुम्भ तथा मीन के सूर्य में दक्षिण में राहु का वास, कर्क, वृष तथा मिथुन के सूर्य में पश्चिम में राहु का वास एवं सिंह, कन्या तथा तुला के सूर्य में उत्तर दिशा में राहु का वास होता है।

राहु वास का फलः—

वर्जयेद्वनिता व्रज्यां दक्षिणे सम्मुखे ऽप्यहौ ।
सम्मुखे दानवे वर्ज्यौ वेश्मारम्भनिवेशनौ ॥ ८ ॥

दक्षिण (दाहिने) तथा सम्मुख राहु में स्त्रीजन यात्रा को न करे। एवं सम्मुख राहु में गृहारम्भ तथा गृह-प्रवेश को वर्जित करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दक्षिणादि शुक्र का फलः—

दक्षिणे भवति दुःखकारकः सम्मुखे नयन नाशकृत्कविः ।
शोभनो भवति पृष्ठवामयो रोधयेच्छुभफलं यदास्तगः ॥ ९ ॥

यात्रा के समय यदि 'शुक्र' दक्षिण की ओर (दाहिने) हो तो कुलकारक, सम्मुख (मुख की ओर) हो तो नेत्रनाश कारक, पृष्ठ तथा वाम हो तो शुभ फल प्रद एवं अस्तगत हो तो शुभ फल का अवरोध करता है।

रेवतीवदनतो मृगभान्तं यावदेणतिलको यदि तिष्ठेत् ।
तावदन्ध उशना ह्यपसव्ये सम्मुखेऽपि गमने शुभकृत्स्यात् ॥ १० ॥

रेवती से मृगशिरा पर्यन्त अर्थात् रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका रोहिणी तथा मृगशिरा में यदि चन्द्रमा स्थित हो तो उस समय 'शुक्र' अन्धा होता है। यात्रा के समय यदि शुक्र अन्धा हो तो दक्षिण तथा सम्मुख शुक्र भी शुभफलदायक होता है।

पूर्वादि दिशाओं में प्रस्थान के दिनादि का परिज्ञानः—

शस्तास्तुरङ्गेषुगुणाश्वितुल्याः प्रस्थान ऐन्द्र्या दिवसाः क्रमात्प्राक् ।
यात्रादिनात्क्षौरपयोरतानि त्यजेच्छराहं त्रिदिनं नगाहम् ॥ ११ ॥

पूर्व की यात्रा में ७ दिन, दक्षिण की यात्रा में ५ दिन, पश्चिम की यात्रा में ३ दिन एवं उत्तर की यात्रा में २ दिन अङ्गवस्त्रादिका प्रस्थान रखना शुभ होता है। यात्रा के दिन से ५ दिन पूर्व क्षौर (हजामत) नकरे। तीन दिन पूर्व दुग्धपान नकरे एवं सात दिन पूर्व स्त्री से सहवास (मैथुन) नकरे।

पिता पुत्रादियों की एक साथ यात्रा का निषेधः—

गन्तव्यं न समं तनूजतातैर्गन्तव्यं न सह त्रिभिः कुदेवैः ।
गच्छेतां यमलौ सहोदरौ नो गच्छेयुर्नव वामलोचना नो ॥ १२ ॥

पुत्र तथा पिता ये दोनो एक साथ न जाँय, तीन ब्राह्मण एक साथ न जाँय, दो सगे भाई एक साथ न जाँय एवं नौ स्त्री एक साथ न जाँय।

मतान्तर से पूर्वादि दिशाओं में भौमादि वारों का शुभत्व का परिज्ञानः—

पूर्वस्यां धनदो वसुन्धराजः कौबेर्य्यां भरवी सुसिद्धिदौ स्तः ।
मन्देन्दू शुभदौमतावबाच्यां शस्तौ बोधनवाक्पती प्रतीच्याम् ॥ १३ ॥

मङ्गलवार के दिन पूर्व दिशा में यात्रा करे तो धन लाभ, शुक्र तथा रविवार के दिन उत्तर दिशा में यात्रा करे तो अत्यन्त सिद्धि, शनि तथा सोमवार के दिन दक्षिण दिशा में यात्रा करे तो शुभ फल एवं बुध तथा गुरुवार के दिन पश्चिम दिशा की यात्रा शुभ होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यात्रा मुहूर्तः—

शस्ता यात्रा ऽऽदित्यदास्रश्रविष्ठामित्रेज्यार्केन्दुश्रवोरेवतीभिः ।
ज्येष्ठारक्षस्त्र्युत्तराकत्रिपूर्वापाथोनार्थैर्मध्यमा ऽन्यैर्न शस्ता ॥ १४ ॥

पुनर्वसु, अश्विनी, धनिष्ठा, अनुराधा, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, श्रवण तथा रेवती इन नक्षत्रों में यात्रा शुभ होती है। ज्येष्ठा, मूल, तीन उत्तरा अर्थात् उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा तथा उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, तीनपूर्वा अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा तथा पूर्वाभाद्रपदा एवं शतभिषा इन नक्षत्रों में यात्रा मध्यम होती है। अन्य नक्षत्रों में अर्थात् भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाती और विशाखा इन नक्षत्रों में यात्रा शुभ नहीं होती है।

यात्रा में तिथि तथा लग्नादि का परिज्ञानः—

षष्ठीरिक्ताद्वादशीपूर्णिमामाशुक्लाद्याभिः पर्वघस्रैर्नसत्सा ।
शस्ता कन्यातौलिगोयुग्मलग्नैर्यत्राङ्गे ऽब्जो वीर्य्ययुक् तत्र सत्सा ॥ १५ ॥

षष्ठी, रिक्ता (४।९।१४) तिथि, द्वादशी, पूर्णिमा, अमावास्या, शुक्ल प्रतिपदा तथा पर्वदिन इन तिथियों में यात्रा शुभ नहीं होती है। कन्या, तुला, वृष तथा मिथुन इन लग्नों में यात्रा शुभ होती है। एवं जिस लग्न में चन्द्रमा बलवान् हो उस में यात्रा शुभ होती है।

समस्त दिशाओं की यात्रा में शुभनक्षत्रादि का परिज्ञानः—

सद्भिः प्रोक्ता मैत्रपुष्याश्विहस्तैर्यात्रा शस्ता सर्वकाष्ठासु वक्री ।
खेटः केन्द्रे संस्थितश्चास्य वर्गो लग्ने वारो ऽप्यस्य यात्रासु वर्ज्यः ॥ १६ ॥

अनुराधा, पुष्य, अश्विनी तथा हस्त इन नक्षत्रों में समस्त दिशाओं की यात्रा शुभ होती है। यदि यात्रा कालीन लग्न से केन्द्र में वक्री ग्रह हो, वक्रीग्रह का वर्ग (होरादि) लग्न में हो तथा वक्री ग्रह के वार में यात्रा न करे।

स्त्री तथा पुरुषों के वस्त्रधारण तथा नवान्न भक्षणमुहूर्तः—

करात्पञ्चके वासवान्त्याश्विभेभाङ्गिरोविद्दिने गो ऽन्त्ययुग्मोङ्गनाङ्गे ।
स्त्रिया धार्य्यते नव्यवस्त्रं नरेण गुरुत्र्युत्तरादित्यकान्त्येषु वारे ॥ १७ ॥

बुधेज्यास्फुजिद्भास्वतां वस्त्रमस्त्रं कुजे धार्य्यते वासउक्तोऽपूर्वम् ।
नवान्नाशने गृह्यतेकर्णचान्द्रं विनन्दातिथिः सद्ग्रहाणां विलग्नम् ॥ १८ ॥

हस्त से पाँच नक्षत्र अर्थात् हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा तथा अनुराधा एवं धनिष्ठा, रेवती और अश्विनी नक्षत्र में शुक्र, गुरु तथा बुधवार में, वृष, मीन, मिथुन तथा कन्या लग्न में स्त्रियों का नूतन (नया)

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वस्त्र (कपडा) धारण करना शुभ होता है । एवं पुष्य, तीनों उत्तरा, पुनर्वसु, रोहिणी तथा रेवती नक्षत्र में, बुध गुरु, शुक्र तथा रविवार में पुरुष-जनों का नया वस्त्र धारण करना शुभ होता है । मङ्गलवार में रक्त (लाल) वस्त्र धारण करना शुभ होता है । वस्त्र धारणोक्त नक्षत्र अर्थात् हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी एवं श्रवण तथा मृगशिरा नक्षत्र में, नन्दा (१।६।११) तिथि रहित तिथि में और शुभग्रहों के लग्न में नवान्न भोजन करे ।

भूषण तथा शस्त्र घट्टन मुहूर्तः---

त्रिपुष्करे क्षिप्रचरध्रुवेषु धिष्ण्येषु भूषाघटनं शुभंस्यात् ।
तीक्ष्णोग्रदास्रद्विपवह्निचान्द्रे ऽस्त्रं घट्टितं शोभनमुक्तमार्यैः ॥ १९ ॥

त्रिपुष्कर योग में क्षिप्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य तथा अभिजित्) नक्षत्र, चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा) नक्षत्र और ध्रुव (तीनों उत्तरा तथा रोहिणी) नक्षत्र में भूषण (गहना) घट्टन (गढना) शुभ होता है तीक्ष्ण (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा तथा आश्लेषा) नक्षत्र, उग्र (तीनों पूर्वा, भरणी तथा मघा) नक्षत्र, अश्विनी, विशाखा, कृत्तिका तथा मृगशिरा में शस्त्र घट्टन शुभ होता है ।

स्त्रियों के केशबन्धन का मुहूर्तः---

चान्द्राच्चतुष्के ऽर्कमरुच्छ्रवो ऽश्विनीमूलान्त्यशक्रोत्तरभे ऽर्कसद्दिने ।
पक्षे बलक्षे कृतिभिः समीरितं स्वङ्गे ऽङ्गनानां कचबन्धनं शुभम् ॥ २० ॥

मृगशिरा से चार नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु तथा पुष्य एवं हस्त, स्वाती श्रवण, अश्विनी, मूल रेवती, ज्येष्ठा तथा तीनों उत्तराओं में, रवि तथा शुभवार में एवं शुभ लग्न में स्त्रियों का केश बन्धन शुभ होता है ।

सूचीकर्म तथा वस्त्रक्षालन मुहूर्तः--

स्वादित्यचित्रागुरुमित्रदास्रभे सत्कर्म्म सूच्या रविपञ्चके हये ।
स्वेज्ये ऽर्कभेज्येन्दुदिने च रिक्तिकां षष्ठीं विना क्षालनमंशुकस्य सत् ॥ २१ ॥

धनिष्ठा, पुनर्वसु, चित्रा, पुष्य, अनुराधा तथा अश्विनी नक्षत्र में सूचीकर्म्म (सीवना) शुभ होता है । हस्त से पाँच नक्षत्र अर्थात् हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा तथा अनुराधा एवं अश्विनी, धनिष्ठा तथा पुष्य नक्षत्र में, रवि, शुक्र, गुरु तथा चन्द्रवार में एवं रिक्ता (४।९।१४) तिथि तथा षष्ठी को छोडकर शेष तिथि में वस्त्र का प्रक्षालन (धोवना) शुभ होता है ।

औषधभक्षण मुहूर्तः--

चरास्रपक्षिप्रमृदूडुभिः शुभे द्विमूर्त्तिलग्ने विकुजार्किवासरे ।
विनाशगेहे ग्रहवर्जिते शुभतिथौ शुभं भेषजभक्षणं मतम् ॥ २२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा) नक्षत्र, मूल, क्षिप्र (हस्त अश्विनी, पुष्य तथा अभिजित्) नक्षत्र और मृदु मृगशिरा, रेवती, चित्रा तथा अनुराधा) नक्षत्र में एवं द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु, तथा मीन) राशि लग्न में हो और शुभग्रह से युक्त हो, मङ्गल शनिवार रहितवार में, लग्न से अष्टम स्थान ग्रह रहित होनेपर एवं शुभ तिथि में औषध सेवन शुभ होता है ।

रोगीजनों के स्नान का मुहूर्त्तः--

विव्यालवातान्त्यमघादितिध्रुवे लग्ने चरे वीन्द्रसुरेज्यवासरे ।
रिक्तातिथौ हीनबले हिमद्युतौ सन्मज्जनं रुग्रहितस्य जन्मिनः ॥ २३ ॥

आश्लेषा, स्वाती, रेवती, मघा, पुनर्वसु तथा ध्रुव (उ. ३ रो) नक्षत्र को छोड़कर शेष नक्षत्रों में, चर (१।४७।१०) लग्न में, चन्द्र तथा शुक्रवार को छोड़कर शेषवारों में, रिक्ता (४।९।१४) तिथि में और चन्द्रमा के निर्बल होनेपर रोग रहित मनुष्य का स्नान करना शुभ होता है ।

शतभिषा में स्त्रीजन के स्नान का निषेधः--

सम्प्राप्ते शतभं सुधामयूखे स्नानं पङ्कजलोचना न कुर्य्यात् ।
स्नाता चेद् भ्रमतः सुगन्धपूर्वैर्भर्त्तारं परिपूजयेत्तदानीम् ॥ २४ ॥

शतभिषा नक्षत्र में चन्द्रमा के प्राप्त होनेपर स्त्रीजन स्नान न करे । यदि भ्रम वश स्नान किया जाय तो सुगन्धादि द्रव्यों से अपने पतिका पूजन करे ।

वह्निवास परिज्ञानः--

तिथ्या युक्तः सैकवारो युगाप्तः शेषे रामे खेऽग्निवासो धरायाम् ।
प्रोक्तो होमे सौख्यदो भूद्विशेषे स्वः पाताले प्राणरायां विनाशौ ॥ २५ ॥

इष्ट दिन के वार की संख्या में १ युक्त करके तब उस में इष्टदिन की तिथि की शुक्लप्रतिपदादि संख्या को युक्तकरे तब जो संख्या हो उस में ४ से भाग दे यदि तीन अथवा शून्य शेष बचे तो पृथ्वी में अग्निका वास होता है । वह हवन के कर्म्म में सौख्य दायक (शुभ) होता है । यदि एक शेष बचे तो अग्नि का वास स्वर्ग में वह प्राणों का नाश करने वाला होता है । एवं दो शेष बचे तो पाताल में अग्नि का वास और वह धनका नाश करनेवाला होता है ।

होमाहुति परिज्ञानः--

आदित्यभात्रिविभ इन्दुभेऽर्कसौम्यास्फुजिन्मारिसुधामयूखाः ।
अङ्गार इज्यो भुजगः शिखावान् होमाहुतिः पापखगे न शस्ता ॥ २६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्यक्रान्तनक्षत्र से चन्द्राक्रान्त नक्षत्र पर्यन्त तीन तीन नक्षत्रों को गिनकर तब क्रमसे सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्रमा, मङ्गल, बृहस्पति, राहु तथा केतु इनकी होमाहुति होती हैं । पापग्रह की होमाहुति में हवनकरना अशुभ होता है ।

'सूर्यभाद् होमाहुतिचक्रम्' । 'अत्राभिजितो गणना न कार्या ।

ग्रहाः	सू.	बुध	शु.	श.	चं.	मं.	बृ.	रा.	के.
नक्षत्रा.	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलानि	अशुभा	शुभा	शुभा	अशुभा	शुभा	अशुभा	शुभा	अशुभा	अशुभा

वाणिज्य (दुकान) का मुहूर्त्तः--

विहाय लग्नं कलशं कुजाहं रिक्तां तिथिं क्षिप्रमृदुध्रुवर्क्षैः ।
भेऽब्जे तनौ सद्विपणिः पदेऽर्थे लाभे शुभैर्व्यन्त्यनिमीलनेऽर्वैः ॥ २७ ॥

कुम्भ लग्न, मङ्गलवार और रिक्ता तिथि इनको छोडकर शेष लग्न वार तिथियों में, क्षिप्र (ह. अश्वि. ति. अभि.) नक्षत्र मृदु (मृ. रे. चि. अनु.) नक्षत्र और ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्र में; शुक्र तथा चन्द्रमा ये दोनों लग्न में हों; दशम, द्वितीय, तथा लाभ में शुभग्रह हों एवं व्यय तथा अष्टम रहित स्थान में पापग्रह होंतो वाणिज्य (व्यापार) करना शुभ होता है ।

पशु ओंकी यात्रा का मुहूर्त्त—

पौष्णेज्यपूर्वात्रयमैत्रचान्द्रदास्रश्रविष्ठानिलहेलिभेषु ।
मार्त्तण्डमन्देज्यमहीजवारे यात्रा प्रशस्ता कथिता पशूनाम् ॥ २८ ॥

रेवती, पुष्य, तीनपूर्वा, अनुराधा, मृगशिरा अश्विनी, धनिष्ठा, स्वाती तथा हस्त नक्षत्र में एवं रवि, शनि, गुरु तथा मङ्गलवार में पशुओंकी यात्रा शुभ होती है ।

पशुओं के क्रय विक्रय का मुहूर्त्तः—

वातान्त्यचित्राशतकर्णदास्रे शस्तः क्रयोऽथाहियमद्विदैवे ।
पूर्वाग्निभे पद्त्रिभवेषु पापैः कल्याणखेटैर्गुरुकेन्द्रधीस्थैः ॥ २९ ॥
तिथौ शुभायां विघटोदये सन्स्याद्विक्रयो विक्रयभे क्रयो न ।
कार्यः क्रियोडावपि विक्रयो न जगुः पुराणा इति लब्धवर्णाः ॥ ३० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्वाती, रेवती, चित्रा शतभिषा, श्रवण तथा अश्विनी में क्रय (खरीदना) शुभ होता है। आश्लेषा, भरणी, विशाखा, तीनपूर्वा तथा कृतिका में; षष्ठ, तृतीय तथा एकादश में पापग्रह हों एवं नवम, केन्द्र तथा पञ्चम में शुभग्रह हों; शुभतिथि में तथा कुम्भ रहित लग्न में विक्रय (बेचना) शुभ होता है। विक्रय नक्षत्रों में क्रय न करे और क्रय नक्षत्रों में विक्रय भी न करे। इसप्रकार प्राचीन पण्डितजन कहते हैं।

हलप्रवाह मुहूर्त्तः—

राधामघाचललघुस्थिरमैत्रमूलै-
रिक्तां षडाननतिथिं शनिपिङ्गलाहम्।
हित्वा ऽलिगोयुवतियुग्महयान्त्यलग्ने
सेज्ये हलप्रवहणं शुभमब्जपुष्टे ॥ ३१ ॥

विशाखा, मघा, चल (स्वा. पुन. श्र. ध. श.) नक्षत्र, लघु (ह. अश्वि. ति. अभि.) नक्षत्र, स्थिर (उ.-३ रो.) नक्षत्र, मैत्र (मृ. रे. चि. अनु.) नक्षत्र तथा मूल नक्षत्र में; रिक्ता तथा षष्ठी रहित तिथि में; शनि तथा रवि रहित वार में; गुरु से युक्त हुआ वृश्चिक वृष कन्या मिथुन धनु वा मीन लग्न में एवं चन्द्रमा के बलवान् होनेपर हलका प्रवहण (चलाना) शुभ होता है।

बीजवपन तथा फणीचक्र परिज्ञानः—

एषु द्वीशादित्यपाशिश्रवांसि हित्वा भौमं बीजवापः शुभोऽहेः।
भान्नागाग्न्येकत्रिभूरामभूत्रिपारावारर्क्षाण्यसत्सन्ति चोक्तौ ३२ ॥

पूर्वोक्त हलप्रवाह नक्षत्रों में से विशाखा, पुनर्वसु, शतभिषा और श्रवण इन चार नक्षत्रों को छोडकर शेष नक्षत्रों में एवं भौमवार को छोडकर शेष वारों में बीज वपन (यवादि धान्यों का बीज बोना) शुभ होता है। इस दिन में राहु जिस नक्षत्र में हो उस से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिन। प्रथम के ८ नक्षत्र अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, ४ अशुभ, यह 'फणी (राहु) चक्र' बीज वपन (बोने) में विचारना चाहिए।

'बीजोतिचक्रम्'। 'राहुभादस्य गणना विधेया'।

नक्षत्राणि	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फलानि	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्

हलचक्र तथा धान्यच्छेदनादि मुहूर्त्तः—

भान्तेतभात् त्रीभखगेभभान्यसत्सन्ति सीरे कथितानि धीरैः।
धान्यच्छिदा व्यश्विभगान्त्यमैत्रादित्याम्बुपद्वीशकभे स्थिरे ऽङ्गे ॥ ३३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व्यारार्किरिक्तासु शुभा मताऽथो बीजोप्तिधिष्ण्यादिषु रोपणं सत् ।
भाग्यार्य्यमैन्द्रान्त्यकपित्र्यविष्णुमूले शुभाहे कणमर्दनं सत् ॥ ३४ ॥

सूर्य के भुक्त नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिने। प्रथम के ३ अशुभ, ८ शुभ, ९ अशुभ, ८ शुभ होते हैं। यह 'हलचक्र' हलप्रवाह में विचारना चाहिए। अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, रेवती, अनुराधा, पुनर्वसु, शतभिषा, विशाखा और रोहिणी इन नक्षत्रों को छोडकर शेष नक्षत्रों में, स्थिर (२।५।८।११) लग्न में, भौम शनिवार रहित वार में एवं रिक्ता रहित तिथि में धान्य च्छेदन (अन्न काटना) शुभ होता है। बीजवपनोक्त नक्षत्रादि में धान्यरोपण शुभ होता है। पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी, मघा, श्रवण और मूल नक्षत्र में एवं शुभ वार में धान्य मर्दन (दावना वा दाई लेना) शुभ होता है।

'हलचक्रम्' । 'सूर्यगतनक्षत्राद् गणना विधेया'।

नक्षत्राणि	३	८	९	८
फलानि	अशुभानि	शुभानि	अशुभानि	शुभानि

प्रथमरजोवती स्त्री के स्नान का मुहूर्त्तः—

मैत्रेन्दिनाश्विवसुशक्रमरुद्ध्रुवर्क्षैः
स्नायाद् वधूर्ऋतुमती यदि सत्तिथौ च ।
कल्याणखेटदिवसे द्रुतमेति गर्भं
ब्राह्माश्विनीकरसमीरणचान्द्रपौष्णे ॥ ३५ ॥

अनुराधा, मृगशिरा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, ज्येष्ठा स्वाती तथा ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्र में; शुभ (१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५) तिथि में और शुभ ग्रहों के वार में प्रथम रजोवती स्त्री स्नान करे। रोहिणी, अश्विनी, हस्त, स्वाती, मृगशिरा, तथा रेवती में ऋतुमती स्त्री यदि स्नान करे। तो शीघ्र गर्भ को धारण करती है।

गर्भाधानका मुहूर्त्त.----

त्यजेद् भद्रां षष्ठीमिनमृदुमहीजाद्यरजनी-
श्चतस्रः पर्वाहं जनकजननीश्राद्धदिवसम् ।
दिवा सन्ध्यां रिक्तामथ शुभतिथौ शस्तमुदितं
निषेकं मैत्रेन्दुध्रुववसुहरीनानिलशतैः ॥ ३६ ॥

भद्रा (विष्टि करण), षष्ठ तिथि, शनि, रवि तथा मङ्गलवार, रजोदर्शनकाल से प्रथम की चार रात्रि, पर्व-दिन पिता माता की श्राद्ध तिथि, दिन; सन्ध्या समय तथा रिक्ता तिथि इन सब को छोडकर शेष तिथि, वार तथा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

समय में एवं अनुराधा, मृगशिरा, ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्र, धनिष्ठा, श्रवण, हस्त, स्वाती, तथा शतभिषा में गर्भाधान संस्कार शुभ होता है ।

गर्भ के मासेश तथा स्त्री के चन्द्रबल का परिज्ञानः—

मासेशाः स्युर्भारचार्वर्कचन्द्रार्किज्ञाङ्गेशग्लौभगा ग्लाव ओजः ।
स्त्रीणां ग्राह्यं गर्भसंस्कारकाल उद्वाहे चान्येषु कृत्येषु भर्त्तुः ॥ ३७ ॥

शुक्र, मङ्गल, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध, आधान लग्नेश, चन्द्र तथा सूर्य ये क्रमसे गर्भाधान के समय से प्रथमादि मासों के स्वामी है । गर्भ संस्कार कर्म में तथा विवाह में स्त्रियों के चन्द्रबल को ग्रहण करे । अन्यकर्मों मे पति के चन्द्रबल को ग्रहण करे ।

सीमन्तकर्म का मुहूर्त्तः—

मूलादित्यार्केन्दुविष्णुध्रुवान्त्यपुष्यैर्व्यार्कौ पीवरे मासनाथे ।
व्यर्काष्टामातर्करिक्तातिथीषु सन्सीमन्तो मासि षष्ठेऽष्टमे वा ॥ ३८ ॥

गर्भाधानकाल से छठे वा आठवें मासमें; मूल पुनर्वसु; हस्त, मृगशिरा, श्रवण, ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्र, रेवती तथा पुष्य में; मासस्वामी के बली होनेपर; द्वादशी, अष्टमी, अमावास्या, षष्ठी तथा रिक्ता तिथि को छोडकर शेष तिथि मे 'सीमन्तकर्म शुभ' होता है ।

पुंसवनकर्म, विष्णुपूजा तथा सूतिका के स्नान का मुहूर्त्तः—

पुंभांशकेऽङ्गे सुकृतैस्त्रिकोणकेन्द्रे खलैः षट्त्रिभवे तृतीये ।
मासे शुभं पुंसवनं प्रदिष्टं प्रागुक्तभाद्यैरथ विष्णुपूजा ॥ ३९ ॥
कार्याऽष्टमे मासि कविष्णुपुष्यैः शुद्धे लये सत्युदये प्रसूत्याः ।
स्नानं शुभं मैत्रमरुद्ध्रुवान्त्यार्केन्दुध्रुवैर्भौमतपाभगाहे ॥ ४० ॥

गर्भधान से तृतीय मास में; सीमन्तकर्मोक्त नक्षत्रादियों में; पुरुष राशि के लग्न तथा नवांश मे; केन्द्र तथा त्रिकोण में शुभग्रह हों एवं षष्ठ, तृतीय तथा एकादश में पापग्रह हों तो 'पुंसवन कर्म शुभ' होता है । आठवें मास में; रोहिणी, श्रवण तथा पुष्य नक्षत्र में अष्टमस्थान शुद्ध (ग्रहरहित) होनेपर एवं शुभराशि के लग्न में गर्भवती स्त्री विष्णु की पूजाको करे । अनुराधा, स्वाती, अश्विनी, रेवती, हस्त, मृगशिरा तथा ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्र में, भौम, गुरु तथा रविवार में प्रसववती स्त्री का स्नान करना शुभ होता है ।

नाम कर्म का मुहूर्त्तः—

रिक्तां तथा पर्वदिनं विनाऽह्नि रुद्रप्रमे वेनमिते शुभाहे ।
मैत्रध्रुवाक्षिप्रचरेषु भेषु भवेच्छुभा नामकृतिः शिशूनाम ॥ ४१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रिक्ता तिथि तथा पर्व दिन छोडकर शेष तिथि में; ग्यारह वें वा बारह वें दिन में, शुभ ग्रहों के वार में मृदु, ध्रुव, क्षिप्र तथा चर नक्षत्र में बालकों का नामकरण संस्कार शुभ होता है ।

जलपूजन मुहूर्त्तः—

पौषेऽधिमासि मधुमासि सितार्तितोस्त
सूतीसमर्चयति कं नहि मासपूर्त्तौ ।
रिक्तां विहाय तिथिन्मिदुबुधेज्यवारे
मैत्रादितीज्यकरमूलमृगश्रवोभैः ॥ ४२ ॥

पौष, मलमास, चैत्र, शुक्र तथा गुरु के अस्त में एवं मास की समाप्ति में प्रसववती स्त्री जल को न पूजे। रिक्ता तिथि को छोडकर शेष तिथि में; चन्द्र, बुध, गुरुवार में; अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मूल, मृगशिरा तथा श्रवण नक्षत्र में प्रसववती स्त्री जल की पूजा को करे ।

अन्नप्राशन मुहूर्त्तः—

नन्दारिक्तार्काष्टदर्शे कुजार्किभास्त्रद्वारान्मेषमीनालिलग्नम् ।
उग्रं मिश्रं दारुणं भं जनुर्भाङ्गाभ्यामष्टर्क्षांशगाङ्गं विहाय ॥ ४३ ॥
केन्द्रे कोणे सोदरे सद्भिरभ्रशुद्धे लग्नेऽर्थैस्त्रिषड्लाभयातैः ।
चन्द्रे व्यङ्गाष्टारिगे षष्ठमासाद्युग्मे मासेऽन्नाशनं सच्छिशूनाम् ॥ ४४ ॥

नन्दा (१-६-११), रिक्ता (४-९-१४), द्वादशी, अष्टमी तथा अमावास्या; मङ्गल, शनि, तथा रवि वार; मेष, मीन तथा वृश्चिक लग्न; उग्र, मिश्र तथा दारुण नक्षत्र; जन्म चन्द्र राशि से तथा जन्मलग्न राशि से अष्टम राशि तथा अष्टम नवांश राशिका लग्न इन सब पूर्वोक्त तिथ्यादियोंको छोडकर शेष तिथ्यादि में; केन्द्र, त्रिकोण तथा तृतीय में शुभग्रह हों, तृतीय, षष्ठ तथा लाभ में पापग्रह हों दशम शुद्ध लग्न में; लग्न, अष्टम तथा व्यय स्थान को छोडकर शेष स्थान में चन्द्रमा हो एवं षष्ठ मास से सम मास में 'बालकोंका अन्नप्राशन शुभ' होता है ।

कर्णवेध मुहूर्त्तः—

रिक्ताजनुर्मासिसमाद्भजन्मताराक्षयाहा मधुतैषमासौ ।
विष्णुप्रसुत्सं निखिलान्विनैतानयुग्मवर्षेऽहनि शोभनाम् ॥ ४५ ॥
आदित्यविष्णुवसुमैत्रलघूडुभिः स-
ञ्चुद्धेऽष्टमे त्रिभवधीनवकण्टकस्थैः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सौम्यैः खलैर्गदभवानुजगैः सितेज्य-
मूर्त्तौ गुरौ घनगते श्रुतिवेधे उक्तः ॥ ४६ ॥

रिक्ता तिथि, जन्म मास, समवर्ष, जन्म नक्षत्र, क्षय दिन, चैत्र, पौषमास और हरिशयन इन सब तिथ्यादियों को छोड़कर विषम वर्ष में; शुभवार में; पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा और लघु (हस्त, अश्विनी, पुष्य तथा अभिजित्) नक्षत्र में; अष्टम शुद्ध (ग्रह वर्जित) हो; तृतीय, एकादश, पञ्चम, नवम तथा केन्द्र में शुभग्रह हों षष्ठ, एकादश, तथा तृतीय में पापग्रह हों शुक्र तथा गुरु की (२।७।९।१२) राशि के लग्न में एवं गुरु लग्न में हों तो 'बालकोंका कर्णवेध संस्कार शुभ' होता है।

चूड़ा (मुण्डन) कर्म्म मुहूर्त्तः—

आधानकालाज्जनिकालतोऽथवा चूडा तृतीयाब्दत ओजहायने ।
रिक्ताविशाखाग्निमहेशकेशवपर्वोनिताहे विमधूत्तरायणे ॥ ४७ ॥
चित्राभिजिच्चान्द्रचरैन्द्रपुष्यान्त्यार्काश्विभैः शोभनराशिभागे ।
निर्य्याणशुद्धे स्वभलग्नतोऽन्तोनाङ्गे शुभाहे त्रिभवारिगाद्यैः ॥ ४८ ॥

गर्भाधानकाल से अथवा जन्मकाल से तृतीय वर्ष से विषम वर्ष में; रिक्ता तिथि, षष्ठी, प्रतिपदा, अष्टमी, द्वादशी तथा पर्वदिन इन सब को छोड़कर शेष तिथि में चैत्र मास को छोड़कर उत्तरायण काल मे चित्रा, अभिजित्, मृगशिरा, चर, (स्वा. पुन. श्र. ध. श.) नक्षत्र, ज्येष्ठा, पुष्य, रेवती हस्त तथा अश्विनी इन नक्षत्रों में शुभ राशि के लग्न तथा नवांश में अष्टम शुद्ध (ग्रह रहित) होनेपर, जन्म राशि तथा जन्म लग्न से अष्टम लग्न रहित लग्न में शुभग्रहों के वार में तृतीय, षष्ठ तथा एकादश में पापग्रहों के होनेपर 'चौल कर्म (मुण्डन) शुभ' होता है।

सामान्य क्षौर कर्म्म परिज्ञानः—

चौलोक्तभे व्यार्किकूजार्कवारे तिथीष्वरिक्तासु भवेत्प्रशस्तम् ।
क्षौरं ततः स्नातकृताशनो यः क्षौरं न कुर्वीत शुभेप्सुरङ्गी ॥ ४९ ॥

चौलकर्म्मोक्त नक्षत्र में शनि, भौम तथा रविवार को छोड़कर शेष वारों में, रिक्ता तिथि को छोड़कर शेष तिथियों में 'क्षौर कर्म्म शुभ' होता है। किन्तु स्नान तथा भोजन करने के पश्चात् क्षौर कर्म (हजामत) न करे।

रव्यादि वारों के वश से क्षौर कर्म के शुभाशुभ फल का परिज्ञानः—

आदित्यः क्षपयेत्सदैकमासं क्षौरे भौमशनी इभागमासान् ।
यच्छेयुः शरदिङ्नगेशमासान् सौम्येज्येन्दुसिताः शुभं क्रमेण ॥ ५० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रविवार में क्षौर करने से एक मास की आयु की हानि, मङ्गल में आठ मास और शनि में सात मास की आयुर्दाय की हानि होती है। बुधवार में क्षौर (हजामत) करने से पाँच मास की आयु की वृद्धि, गुरु में दश-मास की आयु की वृद्धि, सोम सात मास की आयु की वृद्धि और शुक्र मे ग्यारह मास की आयु की वृद्धि, होती है।

अक्षरारम्भ तथा विद्यारम्भ का मुहूर्त्तः—

सम्पूज्य वाग्विघ्नपविष्णुसिन्धुजाः सौम्यायने पञ्चमवत्सरे तिथौ।
तर्काग्निदिग्द्वीशशरेनसम्मिते वारे शुभानां विचरोत्तमोदये ॥ ५१ ॥
क्षिप्रश्रवोऽदितिशिवानिलतक्षमैत्र
पौष्णैर्लिपिग्रहणमुत्तममर्भकाणाम्।
पूर्वाश्विमूलमृगपञ्चकहस्तचित्रा
कर्णत्रयेषु समरुत्सु गुरुज्ञभानाम् ॥ ५२ ॥
तीक्ष्णद्युते श्वाह्नि तिथौ द्विबाणतर्कत्रिकाष्ठाशिवभानुतुल्ये।
धीधर्म्मकेन्द्रस्थशुभैरधीतिरुक्तोत्तमा नैधनशुद्धमूर्त्तौ ॥ ५३ ॥

उत्तरायण में, पाँच वें वर्ष मे, षष्ठी, तृतीया, दशमी, द्वितीया, एकादशी, पञ्चमी तथा द्वादशी तिथि में शुभ ग्रहों के वार में चरलग्न रहित शुभ ग्रहों की राशि के लग्न में क्षिप्र (ह. अश्विनी. ति. अभि.) नक्षत्र, श्रवण, पुनर्वसु, आर्द्रा, स्वाती, चित्रा, अनुराधा तथा रेवती नक्षत्र में, सरस्वती, गणेश, विष्णु तथा लक्ष्मी को पूजकर 'बालकों का अक्षरारम्भ शुभ' होता है। तीनों पूर्वा; अश्विनी मूल, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और स्वाती में, गुरु बुध, शुक्र तथा रविवार में, द्वितीया, पञ्चमी, षष्ठी, तृतीया, दशमी, एकादशी और द्वादशी तिथि में, पञ्चम, नवम तथा केन्द्र में शुभ ग्रहों के होनेपर एवं अष्टम शुद्ध लग्न में 'बालकों का विद्यारम्भ उत्तम' होता है।

व्रतबन्ध का मुहूर्त्तः—

भूदेवराजन्यविशां क्रमेण वर्षेऽष्टमे रुद्रभितेऽर्कतुल्ये।
मैत्रध्रुवक्षिप्रचराहिपूर्वामूलेशभे भारविचारु वारे ॥ ५४ ॥
दिक्त्रिद्विरुद्रेष्विनतुल्यतिथ्यां त्र्यंशेऽसितस्य प्रथमे व्रतं सत्।
स्यान्नापराह्णेऽङ्गपसूरिसोमसिताः क्षयेऽहौ न शुभास्तथोग्राः ॥ ५५ ॥
रन्ध्राङ्गधीस्था भृगुसूनुसोमौ प्रान्त्येऽशुभौ वित्रिकगाः शुभाश्चेत्।
त्र्यायारिगाः पापखगाश्च सन्तः पूर्णो विधुः कर्कवृषाङ्गगः सन् ॥ ५६ ॥

ब्राह्मणों का आठवें वर्ष, क्षत्रियों का ग्यारह वें वर्ष और वैश्यों का बारह वें वर्ष में, मैत्र, ध्रुव, क्षिप्र चर, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, मूल तथा आर्द्रा नक्षत्र में रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार में दशमी, तृती

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

द्वितीया, एकादशी, पञ्चमी तथा द्वादशी तिथि में, कृष्णपक्ष के प्रथम तृतीयांश अर्थात् कृष्णपक्ष की पञ्चमी पर्यन्त की शुभ तिथि में 'व्रतबन्ध' शुभ होता है। अपराह्णकाल में व्रतबन्ध शुभ नहीं होता है। लग्नेश, गुरु, शुक्र तथा चन्द्रमा ये चारों लग्न से अष्टम तथा षष्ठस्थान में शुभ नहीं होते है। अष्टम, लग्न तथा पञ्चम में पापग्रह शुभ नहीं होते है। एवं चन्द्रमा तथा शुक्र व्यय स्थान में अशुभ होते हैं। षष्ठ, अष्टम और व्ययस्थान रहित स्थान में 'शुभग्रह' शुभ होते है। तृतीय एकादश तथा षष्ठस्थान में 'पापग्रह' शुभ होते है। कर्क तथा वृष राशि का 'पूर्ण चन्द्रमा' लग्न में भी शुभ होता है।

विवाह समय निरूपणः—

समास्वयुग्मासु शुभो विवाहः पुंसां षडब्दात्परतोऽबलानाम्।
स्वजन्मतोऽब्देषु समेषु वेद्यो विपर्ययेऽस्माद् गददुःखकृत्स्यात् ॥ ५७ ॥

अपने जन्म समय से विषम वर्षों में 'पुरुषों का विवाह शुभ' होता है। एवं अपने जन्म समय से छः वर्ष के पश्चात् सम वर्षों में 'कन्याओंका विवाह शुभ' होता है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो अर्थात् पुरुषों का विवाह सम वर्षों में और कन्याओंका विवाह विषम वर्षों में हो तो रोग तथा दुःख करने वाला होता है।

कन्यावरण (सगाई) का तथा वरवरण (टीका चढाने) का मुहूर्तः—

पूर्वात्रयानलवसुश्रुतिभेषु किंवा-
द्वाहोक्तभेषु वरणं कुरु कन्यकायाः
पुष्पाम्बरप्रभृतिभिर्वरणं वरस्य
पूर्वाध्रुवज्वलनभैर्विदधेहि विद्वन् ॥ ५८ ॥

तीनों पूर्वा, कृतिका, धनिष्ठा तथा श्रवण इन नक्षत्रों में अथवा विवाहोक्त नक्षत्रों में फल पुष्प तथा वस्त्रादियों से कन्याको सन्तुष्ट करके उसका वरण अर्थात् सगाई करे। कृत्तिका तीनों पूर्वा तथा ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्रों में कन्या पक्ष का ब्राह्मण वरका वरण (तिलक चढाने की विधि को) करे।

विवाह मुहूर्त्त परिज्ञानः—

वेधोनितैर्ध्रुवमघेन्द्विनमूलमैत्र-
स्वात्यन्त्यभैः शुभतिथौ सदहे शुभाङ्गे।
युग्माजगोमृगघटालिगते खरांशौ
त्र्यंशे शुचेर्मिथुनगे मकराल्यजस्थे ॥ ५९ ॥
पौषोर्ज्जचैत्रेष्वपि पाणिपीडनं शस्तं भवेज्जन्मतनोरुतेन्दुतः।
रन्ध्राङ्गभेऽसत्क्रमतोऽर्थरिःफगौ वक्रर्जुपापौ न शुभाय कर्त्तरी ॥ ६० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पञ्चशलाका वेध रहित ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्र, मघा, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा, स्वाती और रेवती इन नक्षत्रों में शुभ तिथि (२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३) में शुभ ग्रहों के (चं. बु. गु. शु.) वार में शुभग्रहों की (२।३।४।६।७।९।१२) राशि के लग्न में मिथुन, मेष, वृष, मकर, कुम्भ और वृश्चिक के सूर्य में एवं मिथुन के सूर्य होनेपर आषाढके तृतीयांश में मकर के सूर्य होनेपर चान्द्र पौष में वृश्चिक के सूर्य होनेपर चान्द्र कार्तिक में और मेष के सूर्य होनेपर चान्द्र चैत्र में भी 'विवाह शुभ' होता है। जन्म लग्न से अथवा जन्म चन्द्र से अष्टम लग्न तथा अष्टम राशि में विवाह शुभ नहीं होता है। वक्रगति पापग्रह विवाह लग्न से द्वितीय स्थान में हो और मार्गगति पापग्रह द्वादश स्थान में हो तो 'कर्त्तरीदोष' होता है। यह विवाह में त्याज्य है।

लग्न भङ्ग परिज्ञानः—

सोत्थे सितो दिवि कुजो निधने सदारा
ग्लौभाङ्गपा रुजि शनिर्व्ययगस्तनुस्थाः।
पापेन्दवो न शुभदा मदने समौ स्तो-
ऽब्जेज्यौ न तत्र शुभदा इतरे खगेन्द्राः ॥ ६१ ॥

तृतीय में शुक्र दशम में मङ्गल अष्टम में शुक्र तथा भौम षष्ठ में चन्द्र, शुक्र तथा लग्नेश व्यय में शनि एवं लग्न में पापग्रह तथा चन्द्रमा ये शुभफलदायक नहीं होते है। सप्तम में चन्द्र तथा गुरु मध्यम फलप्रद होते हैं। सप्तम में अन्यग्रह अशुभ होते है।

रव्यादि ग्रहों के विंशोपक का परिज्ञानः—

सार्द्धत्रयं तिग्मकरे विशोपकाः सार्द्धैककं केत्वगुभूसुतार्किषु।
द्वौ द्वौज्ञभृग्वोस्त्रयमिन्द्रमंत्रिणि नाराचतुल्या द्विराज ईरिताः ॥ ६२ ॥

विवाह लग्न में वक्ष्यमाण विंशोपकप्रद स्थान में 'सूर्य' हो तो उसका साढे तीन ३॥ विंशोपक बल होता है। वक्ष्यमाण विंशोपक स्थान में केतु राहु मङ्गल तथा शनि हो तो इनमें प्रत्येक का १॥ विश्वा विंशोपक बल होता है। बुध तथा शुक्र का दो दो विश्वा विंशोपक बल होता है। एवं बृहस्पति का तीन विश्वा विंशोपक बल और चन्द्रमा का पाँच विश्वा विंशोपक बल होता है।

रव्यादि ग्रहों के विंशोपकप्रद स्थानों का परिज्ञानः—

त्र्यायार्थगो विधुरसृक् त्रिभवारिगोऽर्का—
ग्वार्किध्वजास्त्रिभववैरिवधेषु शस्ताः।
ज्ञेज्यौ व्ययास्तनिधनोनगृहेषु शस्तौ
हित्वा त्रिषण्मृतिमदान्त्यगृहान् सितः सन् ॥ ६३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तृतीय, एकादश तथा द्वितीय स्थान में चन्द्रमा; तृतीय, एकादश तथा षष्ठ में भौम; तृतीय, अष्टम, षष्ठ और एकादश स्थान में सूर्य, राहु, शनि तथा केतु ये चारों ग्रह शुभ होते है अर्थात् उक्त विशोपकबल को देते है। व्यय, सप्तम तथा अष्टम इन तीनों स्थानों को छोडकर शेष (१-२-३-४-५-६-९ १० ११) स्थानों में बुध तथा गुरु ये दोनों शुभ होते है। तृतीय, षष्ठ, अष्टम, सप्तम तथा व्यय इन स्थानों को छोडकर शेष (१-२-४-५-९-१०-११) स्थानो में शुक्र शुभ होता है अर्थात् उक्त विशोपक बल को देता है।

मेषादि राशियों में तैलादिलापन संख्याका परिज्ञानः—

तैलादिलापनमजादिभसम्भवानां
कुर्यात्क्रमादिह वटोर्वरकन्ययोश्च
संख्याऽस्य कैश्चिदुदिता नगनिष्कुराशा—
क्षागाद्रिबाणशर बाणरामीरशैलाः ॥ ६४ ॥

७ मेष में, १० वृष मे, ५ मिथुन में, १० कर्क मे, ५ सिंह में, ७ कन्या में, ७ तुला में, वृश्चिक में, ५ धनु में, ५ मकर मे, ५ कुम्भ में और ७ मीन में तैलादि लापन [उबटन उगाल वा वान] व्रतबन्ध मे वटुको और विवाह में वर तथा कन्या को उनकी जन्म राशि की उक्त संख्या के तुल्य करे।

वधू प्रवेश मुहूर्तः—

मैत्रध्रुवानिलमघावसुमूलकर्ण—
क्षिप्रे व्यसृग्रविदिने च वधूप्रवेशः।
शस्तः समेन्द्रियनगाङ्कदिने विवाहा—
दोजे नृपोन्मितदिनात्परतो दिनादौ ॥ ६५ ॥

अनुराधा, ध्रुव नक्षत्र, स्वाती, मघा, धनिष्ठा, मूल, श्रवण तथा क्षिप्र नक्षत्रों में भौम तथा रविवार को छोडकर शेष वार मे; विवाह दिन से समसंख्यक (२-४-६ ८-१०-१२-१४-१६) दिन में तथा ५-७-९ दिन में 'वधूप्रवेश शुभ' होता है। यदि सोलह दिन के पश्चात् वधू प्रवेश करना इष्ट हो तो विषम दिन विषममास तथा विषम वर्ष में करे।

द्विरागमन मुहूर्तः—

रवीज्यशुद्धौ शुभमोजहायने द्विरागमं मेषघटालिगे भगे।
सतां दिने गोऽन्त्यनृयुग्वधूघटोदये मृदुक्षिप्रचरध्रुवास्रपे ॥ ६६ ॥

रवि तथा गुरु की शुद्धि में; मेष, कुम्भ तथा वृश्चिक के सूर्य में अर्थात् सौर वैशाख, सौर फाल्गुन तथा सौर मार्गशीर्ष में; शुभग्रहों के वार में; वृष, मीन, मिथुन, कन्या, तथा तुला लग्न में; मृदु, क्षिप, चर, ध्रुव नक्षत्र तथा मूल में एवं विवाह वर्ष से विषम वर्ष में 'द्विरागम शुभ होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गृहपिण्डादि साधन रीतिः—

विस्तारनिघ्नं भवनस्य दैर्घ्यमुक्तः स पिण्डो विहृतो भुजङ्गैः ।
यच्छेषमायो ध्वजधूमसिंहाः श्वा गौः खरानेकपवायसाख्याः ॥ ६७ ॥
आया इमेऽष्टौ क्रमशः स्युरेषामवस्थितिः पूर्वमुखासु दिक्षु ।
कार्यं मुखं सर्वदिशि ध्वजाख्ये सन्नौज आयो न शुभः समायः ॥ ६८ ॥

गृह के दैर्घ्य (चौड़ाई) को गृह के विस्तार (लम्बाई) से गुणकर तब जो गुणनफल हो वह ' गृह का पिण्ड ' होता है । पिण्ड को ८ से तष्ट करे शेष ध्वजादि आय (वास्तु) होता है । ध्वज १, धूम २, सिंह ३, श्वान ४, वृष ५, गर्दभ ६ गज ७ तथा ध्वांक्ष ८ ये क्रम से आठ वास्तु है । पूर्वादि आठों दिशाओं में क्रमसे ध्वजादि आठों वास्तुओंकी स्थिति अर्थात् पूर्व में ध्वज, आग्नेय में धूम, दक्षिण में सिंह, नैर्ऋत्य में श्वान, पश्चिम मे वृष, वायव्य में गर्दभ, उत्तर में गज तथा ईशान में ध्वांक्ष (काक) वास्तु का वास है । ध्वज वास्तु में गृह का मुख सब दिशाओ में करे । विषम वास्तु (ध्वज, सिंह, वृष तथा गज) शुभ होते है । सम वास्तु (धूम, श्वान, गर्दभ तथा ध्वांक्ष) अशुभ होते है ।

—: उदाहरण :—

गृह (घर) का विस्तार (लम्बाई) २७ हाथ और दैर्घ्य (चौड़ाई) ९ हाथ है । दैर्घ्य ९ को विस्तार २७ से गुणा तो २४३ ' गृह पिण्ड ' हुआ । इस में ८ से भाग दिया तो ३ शेष बचे । यहां ध्वजके क्रमसे शेष संख्या ३ पर्यन्त वास्तुओंकी गणना की तो तिसरा ' सिंह वास्तु हुआ । इस का दक्षिण दिशा में वास और यह विषम संख्यक वास्तु है अतः ' शुभ फल दायक ' हुआ ।

प्रकारान्तर से वास्तु प्रभृतियों की साधन रीतिः—

गोऽङ्काङ्गनागाग्निगजाष्टवेददन्तावलघ्ने नवधा क्रमेण ।
संस्थापिते क्षेत्रफलेऽष्टसप्ताङ्केनेभतारातिथिभैः खभूर्यैः ॥ ६९ ॥
शेषिते चायवारांशस्वर्णोडुतिथयो युतिः ।
आयुर्निकाय्यपागारभयोरैक्यं मृतिप्रदम् ॥ ७० ॥

गृह के पूर्व प्रकारानीत पिण्ड को नौ स्थान में स्थापित कर के क्रम से ९,९,६,८,३,८,८,४,८ से पृथक पृथक् गुणकर तब जो प्रत्येक गुणन फल हो उस को पृथक पृथक स्थापित करे । तदनन्तर प्रत्येक मे क्रम से ८,७,९,१२,८,२७,१५,२७,१२० से भाग दे तब जो शेष बचे वे क्रम से गृह के वास्तु, वार, अंशक, धन, ऋण, नक्षत्र तिथि, योग और आयु होती है । ग्रह के स्वामी और ग्रह का यदि एक नक्षत्र हो तो ग्रह के स्वामी की मृत्यु होती है ।

—: उदाहरण :—

यहां २४३ ग्रह पिण्ड है । इस को नौ स्थानो में स्थापित किया । तदनन्तर उस स्थापित पिण्ड को पृथक पृथक क्रम से ९,९,६,८,३,८,८,४,८ से गुणा तो २१८७।२१८७।१४५८।१९४४।७२९।१९४४।१९४४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

८७२।१९४४गुणन फल हुए। इन में क्रम से ८,७,९,१२,८,२१,१५,२७,१२० से पृथक् पृथक् भाग दिया तो ३,३,९,१२,१,२०,९,२७,२४ शेष बचे। यहां प्रथम संख्या का शेष ३ है। अतः तीसरा सिंह वास्तु। द्वितीय स्थान का शेष ३ है। अतः रवि के क्रम से भौमवार। तृतीय स्थान का शेष ९ है। यह मीन राशि का नवम नवांश अर्थात् मीनांश गुरु का नवांश 'शुभ नवांश' हुआ। चतुर्थ स्थान का शेष १२ है। यह द्रव्य संज्ञक है। पञ्चम स्थान का शेष १ है यह ऋण संज्ञक है। यहां ऋणसंज्ञक १ की अपेक्षा धनसंज्ञक १२ अधिक है अतः 'शुभ फल' हुआ। षष्ठ स्थान का शेष २७ है। अश्विनी के क्रम से गिना तो यह का रेवती नक्षत्र हुआ। सप्तम स्थान का शेष ९ है प्रतिपदा के क्रमसे नवमी तिथि हुई। अष्टम स्थान का शेष २७ है। विष्कम्भ के क्रमसे गिना तो वैधृति योग हुआ। यह योग अशुभ है अतः त्याज्य है। नवम स्थान का २४ शेष है। यह आयुर्दाय संज्ञक है अर्थात् यह की २४ वर्ष की आयु हुई। यह अल्पायु है। अतः त्याज्य है।

गृहारम्भ-मुहूर्तः—

पतङ्गभात्सप्तभरीशतुल्यैः खैकैरगत्सद् ध्रुवभास्तुचक्रे।
सितेज्ययोर्दृश्य इने कुलीरनक्रालिकुम्भक्रियगेतयाते ॥ ७१ ॥

सहोनभोराधतपस्यतेषमासे सितेन्दुज्ञशनीज्यवारे।
हस्तश्रविष्ठाम्बुपमैत्रचित्रास्वात्युत्तरर्क्षेन्द्वकान्त्यभेषु ॥ ७२ ॥

विदर्शरिक्ताद्यतिथीषु गेहारम्भः प्रशस्तो विचरे विलग्ने।
शुभाढ्यदृष्टे त्रिभवारियातैः खलैः शुभैः कण्टककोणलीनैः ॥ ७३ ॥

सूर्यान्त नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिनकर ७ नक्षत्र अशुभ, ११ नक्षत्र शुभ, १० नक्षत्र अशुभ होते है। इसप्रकार गृहारम्भ में 'ध्रुव वास्तु चक्र' होता है शुक्र तथा गुरु ये दोनों उदय हों; कर्क, मकर, वृश्चिक कुम्भ, मेष तथा सिंह राशिगत सूर्य में, मार्गशीर्ष, श्रावण, वैशाख, फाल्गुन तथा पौष मास में; शुक्र चन्द्र, बुध, शनि तथा गुरुवार में; हस्त, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, चित्रा, स्वाती, तीनों उत्तरा, पुष्य, मृगशिरा, रोहिणी तथा रेवती नक्षत्र में; अमावास्या, रिक्ता तिथि तथा प्रतिपदा इन तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में; शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हुए स्थिर तथा द्विस्वभाव राशि के लग्न में; तृतीय, एकादश तथा षष्ठ स्थान मे पापग्रह हो एवं केन्द्र तथा त्रिकोण शुभग्रह हो तो 'गृहारम्भ शुभ' होता है।

गेहे सिंहार्कात्त्रिभे देवगेहे पाठीनार्कात्काशये नक्रभानोः।
राहोरास्यं शम्भुदिक्तो विलोमात्खाते पृष्ठाऽऽस्याद् विदिग्या शुभा सा ॥ ७४ ॥

सिंहार्क से तीन तीन राशि गृहारम्भ में, मीनार्क से तीन तीन राशि देवालय के आरम्भ एवं मकरार्क से तीन तीन राशि जलाशय के आरम्भ में ईशानादि विदिशाओं में विलोम गति से राहु का मुख होता है। गृहादि के खातारम्भ (भूमीशोधन) में राहु की मुखदिशा से जो पृष्ठगामिनी विदिशा हो वह खातारम्भ के लिए शुभ होती है अर्थात् राहु की मुख तथा पुच्छ दिशा में खातारम्भ न करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वत्सचक्र तथा द्वारचक्र परिज्ञान.—

रामाब्ध्यष्टाम्भोधिवेदेपुधिष्ण्यैः शस्ताशस्तं वत्सचक्रे पपीमान् ।
वेदव्यालेभाग्निवेदैः क्रमेण शस्ताशस्तं भानुभाद् द्वारचक्रे ॥ ७५ ॥

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिनकर ३ शुभ, ४ अशुभ, ८ शुभ, ४ अशुभ, ४ शुभ, ५ अशुभ होते हैं । इसप्रकार ' वत्स [वृष] चक्र ' होता है । एवं सूर्याक्रान्त नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिनकर ४ शुभ, ८ अशुभ, ८ शुभ, ३ अशुभ, ४ शुभ होते हैं । इसप्रकार ' द्वारचक्र ' होता है ।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्तः—

चान्द्रे मासे माधवाख्ये तपस्ये माघे ज्येष्ठेऽर्केऽयने सौम्यसञ्ज्ञे ।
व्यारार्कांहेऽङ्गे स्थिरर्क्षे ध्रुवर्क्षमैत्रैः प्रोक्तः सद्मवागारवेशः ॥ ७६ ॥

सौम्यैर्व्यायुःप्रान्त्यतुर्यारियातैः पद्व्याये ऽघैर्गाम्यपातालशुद्धौ ।
बाणेभेभर्तृन्मितान्यप्रशस्तशस्तानि स्युः कुम्भचक्रे रवेर्भात् ॥ ७७ ॥

चान्द्र वैशाख, चान्द्रफाल्गुन, चान्द्र माघ तथा चान्द्र ज्येष्ठ में सूर्य के उत्तरायण होनेपर; मङ्गल तथा रविवार को छोडकर शेष वारों में; स्थिर राशि के लग्न में; ध्रुव (उ. ३ रो.) नक्षत्र तथा मैत्र (अनु. मृ. चि. रे.) नक्षत्र में; अष्टम, द्वादश, चतुर्थ तथा षष्ठस्थान को छोडकर शेष स्थानों में शुभग्रह हों; षष्ठ, तृतीय तथा एकादश में पापग्रह हों; अष्टम तथा चतुर्थ शुद्ध हों अर्थात् ग्रह रहित हों तो ' नूतन गृहप्रवेश शुभ ' होता है । सूर्याक्रान्त नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर ५ अशुभ, ८ शुभ, ८ अशुभ, ६ शुभ होते हैं । इसप्रकार नूतनगृह प्रवेश में में ' कुम्भचक्र ' होता है ।

जीर्णगृह प्रवेश मुहूर्त्तः—

सहस्तपोराधतपस्यकार्त्तिकनभस्सु वेशोऽग्निभयाद् जरद्गृहे ।
नवेऽपि शस्तः शुभलग्नवासरे मृदुध्रुवेज्यानिलवासवद्वये ॥ ७८ ॥

मार्गशीर्ष, माघ, वैशाख, फाल्गुन, कार्तिक तथा श्रावण मास में; मृदु, ध्रुव, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा तथा शतभिषा नक्षत्र में एवं शुभ ग्रहों के लग्न तथा वार में नूतनजीर्ण गृहप्रवेश शुभ ' होता है ।

इति ज्योतिस्तत्त्वे मुहूर्त्तप्रकरणं सप्तदशमवसितम् ।

———

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'वास्तुसारणीयम्'। 'उपकरणे द्वे'। दैर्घ्यम् (चौडाई) विस्तृतिश्च (लम्बाई)।

दैर्घ्यम्	५	५	५	५	५	५	७	७	७	७	७	७	७	९	९	९
विस्तृति	७	९	११	१३	१५	१७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	११	१३	१५
पिण्डः	३५	४५	५५	६५	७५	८५	६३	७७	९१	१०५	११९	१३३	१४७	११	१३७	१३५
आयः	३	५	७	१	३	५	७	५	३	१	७	५	३	३	५	७
वारः	७	३	५	४	३	२	७	७	७	७	७	७	७	२	५	४
अंशः	३	९	३	३	१	३	९	३	६	९	३	६	३	९	३	०
धनम्	४	१२	८	४	१२	८	१२	४	८	१२	४	८	४	१२	१२	१२
ऋणम्	१	७	५	३	१	७	५	७	१	३	५	७	३	१	७	५
नक्षत्रम्	१०	९	८	७	६	५	१८	२२	२६	३	७	११	१९	९	१८	२७
तिथिः	१०	१५	५	१०	१५	५	९	१	८	१५	७	१४	१३	१२	६	१५
योगः	५	१८	४	१७	३	१६	९	११	१३	१५	१७	१९	२३	१८	९	२७
आयुः	४०	१२०	८०	४०	१२०	८०	२४	१६	८१	१२०	११२	१०४	८८	७२	९६	१२०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

'वास्तुसारणीयन्'।

दैर्घ्यम्	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	९	९
विस्तृतिः	१७	१०	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९
पिण्डः	१५३	१७१	१८९	२०७	२२५	२४३	२६१	२७९	२९७	३१५	३३३	३५१	३६९	३८७	४०५	४२३	४४१
आयः	१	३	५	७	१	३	५	७	१	३	५	३	१	३	५	७	१
वारः	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	५	३	४	५	६	७
अंशः	९	९	९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	९	९
धनम्	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ऋणम्	३	१	७	५	३	१	७	५	३	१	७	१	३	१	७	५	३
नक्षत्रम्	९	१८	२७	९	१८	२७	९	१८	२७	९	१८	६	९	१८	२७	९	१८
तिथिः	९	३	१२	६	१५	९	१५	१२	६	१५	९	६	१२	६	१५	९	३
योगः	१८	९	२७	१८	९	२७	१८	९	२७	१८	९	२७	१८	९	२७	१८	९
आयुः	२४	४८	७२	९६	१२०	२४	१२०	७२	९६	१२०	२४	९६	७२	९६	१२०	२४	४८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

वास्तुसारणीयम् ' ।

दैर्घ्यम्	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१३	१३	१३	१३	१३	१५
विस्तृतिः	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	१५	१७	१९	२१	२३	१७
पिण्डः	१४३	१६५	१८७	२०९	२३१	२५३	२७५	२९७	३१९	३४१	१९५	२२१	२४७	२७३	२९९	२५५
आयः	७	५	३	१	७	५	३	१	७	५	३	५	७	१	३	७
वारः	६	१	३	५	७	२	४	५	१	३	५	१	४	७	३	६
अंशः	३	९	६	३	९	६	३	९	६	३	९	३	६	९	९	९
धनम्	४	१२	१२	८	१२	८	४	१२	८	४	१२	४	८	१२	४	१२
ऋणम्	५	७	१	३	५	७	१	३	५	७	१	७	५	३	१	५
नक्षत्रम्	१०	२४	११	२५	१२	२६	१३	२७	१४	१	२१	१३	५	२४	१६	१५
तिथिः	४	१५	११	७	३	१	१०	६	२	१३	१५	१३	११	९	७	१५
योगः	५	१२	१९	२६	६	१३	२०	२७	७	१४	२४	२०	१६	१२	८	२१
आयुः	६४	१२०	१५६	११२	४८	१०४	४०	१६	३२	८८	१२०	८८	५६	२४	११२	१२०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

वास्तुसारणीयम् ।

दैर्घ्यम्	१५	१५	१५	१५	१५	१७	१७	१७	१७	१९	१९	१९	१९	१९
विस्तृतिः	१९	२१	२३	२५	२७	१९	२१	२३	२५	२१	२३	२५	२७	२९
पिण्डः	२८५	३१५	३४५	३७५	४०५	३२३	३५७	३९१	४२५	३९९	४३७	४७५	५१३	५५१
आयः	५	३	१	७	५	३	५	७	१	७	५	३	१	७
वारः	३	७	४	१	५	२	७	५	३	७	६	५	४	३
अंशः	९	९	९	९	९	३	९	६	३	९	३	६	८	३
धनम्	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२	८	४	१२	४	८	१२	४
ऋणम्	७	१	३	५	७	१	७	५	३	५	७	१	३	५
नक्षत्रम्	१२	९	६	३	२७	१९	२१	२३	२५	६	१३	२०	२७	७
तिथिः	१५	१५	१५	१५	१५	४	६	८	१०	१२	१	५	९	१३
योगः	६	१८	३	१५	२७	२३	२४	१२	२६	३	२०	१०	२७	१७
आयुः	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	६४	९६	८	४०	७२	१६	८०	२४	८८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

वर्षप्रकरणं प्रारभ्यते ।

प्राचीनमत से वर्षप्रवेश समय साधन रीतिः—

इष्टः शाको जन्मशाकेन हीनो याताब्दाः स्युस्ते त्रिधा ऽक्षैः क्रमेण ।
द्वाभ्यां पञ्चिस्ताडिताः सागराप्ता वाराद्याढ्या जन्मनो वर्षवेशः ॥ १ ॥

इष्ट शाक में जन्म शाक हीन करे तब शेष 'गतवर्ष' होते हैं । गतवर्षों में १ को युक्त करे तब प्रवेश (वर्तमान) वर्ष होता है । गत वर्षों को क्रम से तीन स्थान में रखकर पाँच, दो तथा छः से गुणकर तब जो गुणन फल हों उन में ४से भाग दे लब्ध 'वारादि वर्ष ध्रुव' होता है। उस वारादि ध्रुव में जन्मकालीन वार की संख्या, इष्ट घटी तथा पल को युक्त करे तब वर्ष प्रवेश समय के वार, इष्ट घटी तथा पल होते हैं । यदि वार की संख्या ७ अधिक हो तो उस को ७ से तष्ट करे शेष वर्षप्रवेश समय का वार होता है ।

—: उदाहरण :—

इष्ट शाक १८६२ में जन्म शाक १८१९ हीन किया तो शेष ४३ 'गत वर्ष' हुए । इन को क्रमसे तीन स्थान में रखकर ५,२,६ से गुणा तो २१६।३०।१८ हुए । इन में ४ से भाग दिया तो लब्ध ५४ 'वार' हुए। शेष ० को ६० से गुणा तो ० हुआ । इस में ३० को युक्त किया तो ३० हुए । इन में ४ से भाग दिया तो लब्ध ७ 'घटी' हुई । शेष २ को ६० से गुणा तो १२० हुए । इन में नीचे की संख्या १८ को युक्त किया तो १३८ हुए । इन में ४ से भाग दिया तो लब्ध ३४ 'पल' हुए । शेष २ को पुनः ६० से गुणा तो १२० हुए । इन में ४ से भाग दिया तो लब्ध ३० 'विपल' हुए । इस प्रकार ५४ वार, ७ घटी, ३४ पल, ३० विपल 'गत वर्ष ४३ का वर्षध्रुव' हुआ । वर्षध्रुव ५४।७।३४।३० में जन्म वार चन्द्र की संख्या २, इष्ट घटी ४६, पल १३, विपल ० को क्रम से युक्त किया तो ५६।५३।४७।३० वारादि हुए । यहां वार की संख्या ५६ है यह ७ से अधिक है अतः वार की संख्या ५६ को ७ से तष्ट किया तो शून्य शेष बचा अर्थात् ० वार, ५३ घटी, ४७ पल, ३० विपल वर्तमान वर्ष ४४ के प्रवेश समय के वारादि हुए । श्रीमान् पण्डित उर्वीदत्तजी महोदय का जन्म आषाढ २३ प्रविष्ट का है । वर्तमान शक १८६२ के आषाढ २३ प्रविष्ट को शनिवार है अतः इसी दिन ४४ वां वर्षप्रवेश हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अर्वाचीन मत से वर्ष प्रवेश समय साधन रीतिः—

चन्द्रस्तिथ्यो जातयोऽङ्गेषवोद्विबाणाः सूर्य्या वासराद्या गताब्दैः ।
निघ्ना युक्ता जन्मनो वारपूर्वैर्वाराद्याः स्युस्तैर्भवेदब्दवेशः ॥ २ ॥

१, १५, २२, ५६, १२ इन वारादियों को गत वर्षों से गुणकर जो गुणनफल हो उस में जन्म समय के वार, इष्ट घटी, पल तथा विपल को युक्त करे तब वर्ष प्रवेश समय के वारादि ' होते हैं । अर्थात् उन वारादियों में ' वर्त्तमान वर्ष का प्रवेश ' होता है ।

—: उदाहरण :—

१, १५, २२, ५६, ५२, १२ इन वारादियों को ४३ गत वर्ष से गुणातो ५४।१।२६।४५।२४।३६ वारादि हुए । इनमें जन्म के वारादि २।४६।१३।०।०।० को युक्त कियातो ५६।४७।३९।४५।२४।३६ वर्ष प्रवेश समय के वारादि ' हुए । वार ५६ को ७ से तष्ट कियातो ० वार, ४७ घटी, ३९ पल, ४५ विपल, २४ प्रतिविपल, ३६ विप्रतिविपल में ४४ वां ' वर्षप्रवेश ' हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'वर्षध्रुव सारणीयम्' । 'उपकरणं गतवर्षम्' । 'वारादिफलम्' ।

ग. व.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
प्राचीनमतेन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०
	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७
	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४
	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
अर्वाचीनमतेन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०
	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३
	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३८	१	२४	४७
	५६	५३	५०	४७	४४	४१	३८	३४	३१	२८	२५	२२	१९	१६	१३	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८
	५२	४४	३६	२८	२१	१३	५	५८	४९	४२	३४	२६	१८	१०	३	५५	४७	३९	३१	२४	१६	८	०
	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६

ग. व.	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
प्राचीनमतेन	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१
	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४
	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
अर्वाचीनमतेन	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	१	६	१	२	३	५	६	०	१
	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७
	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५
	४४	४१	३८	३५	३२	२९	२६	२२	१९	१६	१३	१०	७	४	१	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६
	५२	४५	३७	२९	२१	१३	६	५८	५०	४२	३४	२७	१९	११	३	५५	४८	४०	३२	२४	१६	९	१
	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

'वर्षेष्टवसारणीयम्' 'उपकरणं गतवर्षम्'। 'वारादि फलम्'।

ग. व.	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
प्राचीन-मतेन	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२
	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८
	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४
	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
अर्वाचीन-मतेन	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२
	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९
	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	१०	३३	५६	१९	४२	५
	३२	२९	२६	२३	२०	१७	१४	१०	७	४	१	५८	५५	५२	४९	४५	४२
	५३	४५	३७	३०	२२	१४	६	५८	५१	४३	३५	२७	१९	१२	४	५६	४८
	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६

ग. व.	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
प्राचीन-मतेन	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
अर्वाचीन-मतेन	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२६	४९	१२	३५
	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२०	१७	१४	११	८	५	२	५८	५५	५२	४९
	४०	३३	२५	१७	९	१	५४	४६	३८	३०	२२	१५	७	५९	५१	५३	३६
	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४८	०	१२	२४	३६	४८	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

वर्षप्रवेश समय में स्थूल रीति से योग, नक्षत्र तथा तिथि का परिज्ञानः—

यातावदा दशगुणिता निजाभ्रसिद्धभागोना जनियुतिभान्विता भशेषाः ।
वर्षे स्तो युतिरुडु च क्रमाद् गताब्दाः गङ्गुण्यास्त्रियुगगुणैर्हृताः कुरामैः ॥ ३ ॥
जन्मतिथ्यान्वितं लब्धं व्योमरामावशेषितम् ।
सिताद्यातिथितो ज्ञेया गणकैर्वत्सरे तिथि ॥ ४ ॥

गतवर्षों को १० से गुणकर दोस्थान में स्थापित करे । एकस्थान में २४० से भाग दे लब्ध को द्वितीय स्थान में हीन करे तब जो बचे उसको दो स्थान में रखकर एकस्थान में जन्म के योग की संख्या को और द्वितीय स्थान में जन्म नक्षत्र की संख्या को युक्त करके २७ से भाग दे तब जो शेष बचे वे वर्ष में क्रमसे योग और नक्षत्र होते हैं । गत वर्षों को ३४३ से गुणकर ३१ से भाग दे तब जो लब्ध हो उसमें जन्म तिथि को युक्त करके ३० से तष्ट करे शेष शुक्लप्रतिपदा से वर्ष प्रवेश समय में 'तिथि' होती है ।

—: उदाहरण :—

४३ गतवर्ष को १० से गुणा तो ४३० हुए । इनको दो स्थान में रखकर एकस्थान में २४० से भाग दिया तो लब्ध १ हुआ । इसको द्वितीय स्थान में स्थित गुणनफल ४३० में हीन किया तो ४२९ शेष बचे । इनमें जन्म योग वरीयान् की संख्या १८ को युक्त किया तो ४४७ हुए । इनमें २७ से भाग दिया तो १५ शेष बचे इनके तुल्य विष्कम्भ से गणना की तो वर्ष में 'वज्रयोग' हुआ । पुनः शेष ४२९ मे जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी की संख्या १२ को युक्त किया तो ४४१ हुए । इनमें २७ से भाग दिया तो ९ शेष बचे । इनके तुल्य अश्विनी से गणना की तो वर्ष प्रवेश समय में आश्लेषा नक्षत्र हुआ । ४३ गतवर्ष को ३४३ से गुणा तो १४७४९ हुए । इन में ३१ से भाग दिया तो लब्ध ४७५ हुए । इनमें जन्म तिथि पञ्चमी की संख्या ५ को युक्त किया तो ४८० हुए । इनमें ३० से भाग दिया तो ३० शेष बचे । इनके तुल्य शुक्ल प्रतिपदा से गणना की तो वर्ष प्रवेश समय में अमावास्या तिथि हुई ।

वर्ष में लग्नसाधन रीतिः—

त्रिघ्नाद् गताब्दात्स्वखरामभागयुक्ताद् द्विचन्द्रैर्विहृतात्तु शेषे ।
स्वजन्मलग्नं परियोजनीयं वर्षप्रवेशे प्रभवेद्विलग्नम् ॥ ५ ॥

गत वर्ष की संख्या को ३ से गुणकर दो स्थान में स्थापित करे । एकस्थान में ३० से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको द्वितीय स्थान में युक्त करके १२ से भाग दे तब जो शेष बचे उसमें जन्म लग्न की संख्या को युक्त करे तब जो संख्या हो उसके तुल्य मेष के क्रमसे वर्ष में लग्न होता है ।

—: उदाहरण :—

४३ गतवर्ष को ३ से गुणा तो १२९ हुए । इन को दो स्थान में स्थापित कर के एकस्थान की संख्या १२९ में ३० से भाग दिया तो लब्ध ४ हुए । इनको द्वितीय स्थान में स्थित संख्या १२९ में युक्त किया तो १३३ हुए । इन मे जन्म लग्न मीन की संख्या १२ को युक्त किया तो १४५ हुए । इनमें १२ से भाग दिया तो १ शेष बचा । इसके तुल्य मेष से गणना की तो वर्षप्रवेश समय में 'मेषलग्न' हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'वर्षे तिथिनक्षत्रयोगलग्नबोधकसारणीयम्' । उपकरणं गतवर्षम्' ।

ग. व.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
ति.	११	२२	३	१४	१५	६	१७	१८	९	२०	१	१२	२३	४	१५	२७	८	१९	०	११
न.	१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११
यो.	१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११
ल. रा.	३	६	९	०	३	६	९	०	३	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	२
अ.	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	३७	०
ग, व.	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
ति.	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१	१२	२४	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२
न.	२१	४	१४	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१
यो.	२१	४	१४	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१
ल. रा.	५	८	११	२	५	८	११	२	५	९	०	३	६	९	०	३	६	९	०	४
अ.	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

ग. व.	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ति.	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२	३
न.	४	१४	२४	७	१७	०	१०	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१	४
यो.	४	१४	२४	७	१७	०	१०	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१	४
ल. रा.	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	६
अ.	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०
ग. व.	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
ति.	१४	२५	६	१८	२९	१०	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२	३	१५
न.	१४	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३	६	१५	२५	८	१८	१	११	२१	४	१४
यो.	१४	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३	६	१५	२५	८	१८	१	११	११	४	१४
ल. रा.	९	०	३	६	९	०	३	६	९	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	८
अ.	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहस्पष्टीकरण के लिए चालन साधन रीतिः—

* पंक्त्या निजेष्टः समयो यदाग्रे विशोधयेत्पंक्तिमभीष्टकालात् ।
तच्चालनं वासरपूर्वकं स्वं व्यत्यासतः स्यादृणसञ्ज्ञकं तत् ॥ ६ ॥

यदि 'इष्टसमय' 'पंक्ति' (अवधि) से आगे हो तब इष्ट दिनादि में पंक्ति (अवधि) के दिनादि को शोधन करे तब शेष 'दिनादि धन चालन' होता है । यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो तो 'दिनादि ऋण चालन' होता है अर्थात् 'पंक्ति' (अवधि) इष्ट समय से आगे हो तब 'पंक्ति' (अवधि) में इष्ट दिनादि को शोधन करे शेष 'दिनादि ऋण चालन' होता है ।

—: उदाहरण :—

आषाढ शुक्लप्रतिपदा शनिवार के प्रातः काल की 'पंक्ति' (प्रस्तार वा अवधि) है और आषाढ शुक्ल प्रतिपदा शनिवार, ५३ इष्ट घटी, ४७ पल, ३० विपल अभीष्ट समय है । यहां 'पंक्ति' (अवधि) के ७।०।०।० वारादि से इष्ट समय के ७।५३।४७।३० वारादि आगे के है अतः इन में पंक्ति के ७।०।०।० वारादि को हीन किया तो ०।५३।४७।३० दिनादि चालन हुआ । यहां अवधि से इष्ट समय आगे का है इस लिए 'धन चालन' हुआ । यहां दिन शून्य होने के कारण उसको त्याग दिया तो ५३।४७।३० 'घट्यादि धन चालन' हुआ ।

पञ्चाङ्गस्थ ग्रहों से स्पष्ट ग्रह साधन रीतिः—

यातष्यवासरघटीविघटीविनिघ्ना
खेटेतिरम्बररसैर्विहृताः लवाद्यम् ।
लब्धं क्रमात्तदवधिस्थखगे धनर्णं
गम्ये गते * स्फुटखगः कुटिले विलोमम् ॥ ७ ॥

पंक्ति (अवधि) स्थ स्पष्ट ग्रह की कलादि गति को दिनादि चालन से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध अंशादि होते है । यदि चालन धन हो अर्थात् इष्ट कार्य गम्य हो तो लब्ध अंशादि को अवधिस्थ स्पष्ट ग्रह में धन करे और चालन ऋण हो अर्थात् इष्टकार्यगत हो तो लब्ध अंशादिको अवधिस्थ स्पष्ट ग्रह में ऋण (हीन) करे

---

* 'इहैवं चालनानयनं केनचिदुक्तम्'—प्रस्तारस्तु यदाग्रे स्यादिष्टं संशोधयेद्धनम् । इष्टकाले यदाग्रे स्यात्प्रस्तारं शोधयेद् धनम् । इह प्रस्तारशब्देनावधिर्बोध्यः । 'अथवा'—स्वेष्टादग्रे भवेत्पंक्तिः पंक्तौ स्वेष्टं विशोधयेत् । स्वेष्टात्पृष्ठे भवेत्पंक्तिः स्वेष्टे पंक्तिं विशोधयेत् । ऋणं धनं तथा ज्ञेयं चालने विधिरेवहि, इति । इह पंक्तिशब्देनाप्यवधिर्ज्ञेयः ।

* इह प्रसङ्गवशेन मिश्रमानकालीनावधिस्थग्रहतोऽभीष्टकाले स्पष्टग्रहानयनविधिर्लिख्यते— मिश्रमानेष्ट मध्यस्था गत्या गुण्या घटीप्रमा । योज्या शोध्या ग्रहे स्पष्टेऽधिका हीनाऽन्यथा ऋजौ इति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तब 'तात्कालिक स्पष्ट ग्रह' होता है। यदि 'ग्रह वक्री' हो तो उक्त प्रकार से अर्थात् गम्य वा धन चालन में लब्ध अंशादि को अवधिस्थ ग्रह में ऋण करे। और गत वा ऋण चालन में लब्ध अंशादि को अवधिस्थ ग्रह में धन करे तब 'तात्कालिक स्पष्टग्रह' होता है।

—: उदाहरण :—

यहां ५६।५४ कलादि सूर्य स्पष्ट गति है। इसको घट्यादि चालन ५३।४७।३० से गुणा तो ३०६०।४४।४५ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ५१।१ कलादि हुए। अवधिस्थ स्पष्टसूर्य २।२०।३३।४२ मे लब्ध कलादि ५१।१ को गम्य वा धन चालन होने से युक्त किया तो २।२१।२४।४३ 'तात्कालिक स्पष्ट सूर्य' हुआ। अवधिस्थ स्पष्टभौमगति ३७।३८ कलादि को घट्यादि चालन ५३।४७।३० से गुणा तो २०२४।२१।३५ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ३३।४४ कलादि हुए। अवधिस्थ स्पष्ट भौम ३।७।४०।२३ मे लब्ध ३३।०४ कलादि को धन चालन होने के कारण धन किया तो ३।८।१८।७ 'स्पष्ट भौम' हुआ। अवधिस्थ स्पष्ट शुक्र गति २३।११ कलादि को घट्यादि चालन ५३।४७।३० से गुणा तो १२४७।१२।४ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध २०।४७ कलादि हुए। अवधिस्थ स्पष्ट शुक्र २।३।५७।४२ में लब्ध कलादि २०।४७ को शुक्र वक्री होने के कारण धन चालन को विपरीत संस्कार किया अर्थात् ऋण किया तो २।३।३६।५५ 'तात्कालिक स्पष्ट शुक्र' हुआ। एवं शेष वक्री ग्रहोंका साधन करे।

सूर्यमास गति से स्पष्ट सूर्य साधन रीतिः—

भास्वद्भुक्तिरजादिकेष्विमशराः सप्तेषवोऽगेषवः
सप्ताक्षा गजवायवोऽङ्कविषयाः षष्ठिस्त्रिधा भूरसाः।
षष्ठिर्गोमरुतोऽर्कसङ्क्रमणतो यातैर्दिनाद्यैरसौ
निघ्ना षष्ठिहृता फलांशकमुखैर्योज्यं गतर्क्षे रविः ॥ ८ ॥

सूर्य के मेषारम्भ में ५८ कला, वृष में ५७, मिथुन में ५७, कर्क में ५७, सिंह में ५८, कन्या में ५९, तुला में ६०, वृश्चिक मे ६१, धनु में ६१, मकर में ६१, कुम्भ में ६० मीन के सूर्य में ५९ कला 'सूर्यगति' होती है। इस मास की संक्रान्ति के प्रवेश समय से इष्ट समय पर्यन्त जितने दिनादि गत हो गये हों उन से सूर्य की इष्ट मास की गति को गुणकर ६० से भाग दे लब्ध अंशादि सूर्य होता है। अंशादि सूर्य के ऊपर राशिस्थान में सौर वैशाखादि गत मासों की संख्या को स्थापित करे तब 'तात्कालिक राश्यादि स्पष्ट सूर्य' होता है।

—: उदाहरण :—

मिथुन संक्रान्ति के प्रवेश दिनादि १।२१।१५ को इष्टदिनादि २३।५३।४७।३० में शोधन (हीन) किया तो २२।३२।३२।३० गत दिनादि हुए। इन को आषाढ की सूर्य गति कला ५७ से गुणा तो १३८४।५४।५२।१० हुए। एन मे ६० से भाग दिया तो लब्ध २१।२४।५५ अंशादि हुए। अंशों के ऊपर में सौर गत मास २ को स्थापित किया तो २।२१।२४।५५ 'तात्कालिक स्पष्ट सूर्य' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नक्षत्र स्पष्टभुक्त से स्पष्ट चन्द्र साधन रीतिः—

भस्पष्टभुक्तत्रिलवो नखघ्नेतर्क्षेषु योज्यः स्वगुणांशहीनः ।
भागाद्य इन्दुस्तदितिः खरवाभ्रमोतङ्गवेदाः सकलोडुभक्ताः ॥ ९ ॥

गत नक्षत्रों की अश्विन्यादि संख्या को २० से गुणकर एकान्त मे स्थापित करे । तदनन्तर वर्त्तमान नक्षत्र के घट्यादि स्पष्ट भोग्य में ३ से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को एकान्त में स्थित बीस से गुणित गतनक्षत्र की संख्या में युक्त करके दो स्थान मे स्थापित करे । एकस्थान की संख्या में ३ से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको द्वितीय स्थान में हीन करे तब अंशादि होते हैं । अंशों मे ३० से भाग दे लब्ध राशि और शेष अंश होते हैं । इसप्रकार तात्कालिक राश्यादि स्पष्ट चन्द्र होता है । ४८००० अडतालीस हजार में नक्षत्र के सर्वभोग से भाग दे अर्थात् ४८००० को ६० से गुणकर जो गुणन फल हो वह 'भाज्य' होता है । वर्त्तमान नक्षत्र की सर्वभोग घटी को ६० से गुणकर पलों को युक्त करे तब 'भाजक पिण्ड' होता है । भाज्य पिण्ड में भाजक पिण्ड से भाग दे लब्ध 'कलादि चन्द्रगति' होती है ।

—: उदाहरण :—

गतनक्षत्र पुनर्वसु की संख्या ७ को २० से गुणा तो १४० हुए । इनको एकान्त में स्थापित किया । तदनन्तर वर्त्तमान पुष्य नक्षत्र के स्पष्टभुक्त घट्यादि २६।४१।१२ में ३ से भाग दिया तो लब्ध ८।५३।४४ हुए । इनको एकान्त मे स्थित बीस से गुणित गतनक्षत्र संख्या १४० में युक्त किया तो १४८।५३।४४ हुए । इनको दो स्थान में रखकर एकस्थान की संख्या १४८।५३।४४ में ३ से भाग दियातो लब्ध ४९।३७।५५ हुए । इन को द्वितीय स्थान में स्थित संख्या १४८।५३।४४ में हीन किया तो ९९।१५।४९ अंशादि हुए । अंश ९९ में ३० से भाग दिया तो लब्ध ३ राशि हुई और शेष ९ अंश हुए । इसप्रकार ३ राशि ९ अंश १५ कला ४९ विकला 'स्पष्ट चन्द्र' हुआ । वर्त्तमान पुष्य नक्षत्र का ५८।६ घट्यादि स्पष्ट भोग्य है । ५८ घटी को ६० से गुणा तो ३४८० हुए । इनमें ६ पलको युक्त किया तो ३४८६ 'भाजक पिण्ड' हुआ । अडतालीस हजार ४८००० को ६० से गुणा तो २८८०००० 'भाज्य पिण्ड' हुआ । इसमें भाजक पिण्ड ३४८६ से भाग दिया तो लब्ध ८२६।१० 'कलादि स्पष्ट चन्द्र गति' हुई ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चन्द्रस्पष्टसारणीयम्' । 'उपकरणं वर्त्तमाननक्षत्रम्' । 'राश्यादिकं फलम्' ।

अ.	म.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रे.
०	५	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११
०	१३	२६	१०	२३	३	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	३	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	३	१०	३	१६
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

'चन्द्रस्पष्टसारणीयम्' 'उपकरणं वर्त्तमाननक्षत्रस्पष्टभुक्तघटीफलमंशादिकम्' । धनम्' ।

घ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६
क.	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०
वि.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

घ.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
अं.	६	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३		
क.	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०		
वि.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०		

'चन्द्रस्पष्टसारणीयम्' । 'उपकरणम्' 'वर्त्तमाननक्षत्रस्पष्टभुक्तफलम्' । 'कलादिकंफलम्' । धनम्' ।

प.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
क.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६
वि.	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०
प्र.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

प.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
क.	६	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३		
वि.	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५३	६	२०		
प्र.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०		

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकारान्तर से स्पष्ट चन्द्र साधन रीतिः—

सावयवाः स्फुटा यातास्तिथयो भानुभिर्हताः ।
लवादि तद्युतादित्य इष्टे काले स्फुटः शशी ॥ १० ॥

इष्ट समय में जितना सावयव स्पष्टगत तिथि हों उनको १२ से गुणकर अंशादि होते हैं । उन अंशादियों क इष्टकालीन स्पष्ट सूर्य में युक्तकरे तब 'तात्कालिक स्पष्ट चन्द्र' होता है ।

—: उदाहरण :—

इष्ट समय में 'शुक्ल प्रतिपदा गततिथि' है और वर्त्तमान द्वितीया तिथि का स्पष्ट भुक्त घट्यादि २९।१५ ३० है । इसलिए सावयव स्पष्टगत तिथि १।२९।१५।३० को १२ से गुणा तो १७।५१।६ अंशादि हुए । इनको स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ में युक्त किया तो ३।९।१५।४९ 'तात्कालिक स्पष्ट चन्द्र' हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'स्पष्टचन्द्रसारणीयम्'। उपकरणं सावयवस्पष्टगततिथिः'। राश्यादिफलम्'।

ग.ति.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
रा.	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	०
अं.	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

वर्त्तमान तिथि घटीफलम्' 'अंशादिकम्' 'अतः पलफलमपिग्राह्यम्' 'तत्कलादिकं ज्ञेयम्'।

घ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६
क.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

घ.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
क.	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
वि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

Jun Gun Aaradhak Trust

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

—: उदाहरण :—

गततिथि. प.	१	=	०,	१२,	०,	०,
वर्त्तमानति. भु. घ.	२९	= + ...	५,	४८,	०
,, प.	१५	= + ...		३,	०
,, वि. प.	३०	= + ...			६
			०,	१७,	५१,	६
स्प. सू. +			२,	२१,	२४,	४३
स्पष्ट चन्द्र =			३,	९,	१५,	४९

ग्रहों की वार्षिक मध्यम गति का परिज्ञानः—

खं शून्यं वियदभ्रमम्बरयुगाः क्षेपो गृहाद्यो रवौ
मध्येऽथो श्रुतयोऽरुणा रसकृतास्त्रिंशद् द्विवेदा विधौ ।
तुङ्गे भूः खभुवो विहायसयुगा भूपाः समीराग्नयो-
ऽगौ खं गोक्षितयः शशाङ्कयमला देवाः षडक्षाः कुजे ॥ ११ ॥

षड् रुद्रा जिनभेषवः शशिभुवः केन्द्रे कुसिद्धा मरुद्
वेदा वायुसखा दिनानि धिषणे चन्द्रो वियन्मूर्च्छनाः ।
वेदा रामगुणा अथो भृगुभवः केन्द्रे नगा वासरा
आदित्या विबुधा मृगाङ्कनयनाः प्रोक्तो बुधेन्द्रैः क्रमात् ॥ १२ ॥

मन्दे नभो-नेत्रधराः पतङ्गाः कक्षा रदा यातसमाहतोऽयम् ।
योज्यो जनेर्मध्यखगे समध्यः खगः प्रसाध्यो द्युचरः स्फुटोऽस्मात् ॥ १३ ॥

'खं शून्यम्' इत्यादि सूर्यादि ग्रहों के राश्यादि क्षेपक अर्थात् वार्षिक गति है । उक्त क्षेपकों को गत वर्षों की संख्या से गुणकर के जो गुणन फल हों उनको जन्म कालीन मध्यम ग्रहों में युक्तकरे तब वर्ष प्रवेश समय के मध्यम ग्रह होते हैं । उन मध्यम ग्रहों से स्पष्टीकरणोक्त रीति से स्पष्ट ग्रहों का साधन करें ।

'रव्यादीनां वार्षिकक्षेपकाः' (गतयः) राश्यादयः ।

ग्र.	र.	चं.	उ.	गु.	मं.	बु. कें.	बृ.	शु. कें.	श.
रा.	०	४	१	०	६	१	१	७	०
अं.	०	१२	१०	१९	११	२४	०	१५	१२
क.	०	४६	४०	२१	२४	४५	२१	१२	१२
वि.	०	३०	१६	३३	२७	३	४	३३	५१
प्र. वि.	४०	४२	३५	५६	५	१५	३३	२१	३२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरणः —

चन्द्रक्षेपक ४।१२।४६।३०।४२ को गतवर्ष ४३ से गुणा तो १९०।९।२०।०१६ हुए। राशि १९० को १२ से तष्ट किया तो १० शेषबचे। इस प्रकार १० राशि, ९ अंश, २० कला, ० विकला, ६ प्रति विकला गतवर्ष ४३ का क्षेपक हुआ। इसको जन्मकालीन मध्यमचन्द्र ५।४।४५।३९ में युक्त किया तो ३।१४।५।३९।६ वर्त्तमान वर्ष ४४ के प्रवेश समय का राश्यादि मध्यम चन्द्र हुआ। एवं शेष ग्रहों का राश्यादि मध्यम साधन करे।

स्पष्टग्रहाः सगतिकाः '। ' उदाहृतिरेषा '।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	३	३	०	२	०	५	११
२१	९	८	९	१७	३	१८	२२	२२
२४	१५	१८	५	५४	५७	३४	३५	३५
४३	४९	७	२७	४१	४२	४५	१९	१९
५६	८२६	३७	१३	९	२३	४	३	३
५४	१०	३८	८	४८	११	४०	११	११

मुन्था साधन रीतिः——

गताब्दा जनिलग्नेन समेताः शेषिता इनैः।
शेषतुल्यभ इन्था ऽजात्राशीशस्तदीश्वरः ॥ १४ ॥

गत वर्षों की संख्या में जन्म लग्न की संख्या को युक्त करके १२ से तष्टकरे तब जो शेष बचे उसके तुल्य मेष से गिनकर जो राशि हो उसमें ' मुन्था होती है। जिस राशि में मुन्था हो उस का स्वामी ' मुन्थेश ' होता है।

—: उदाहरण :—

गतवर्ष ४३ में जन्म लग्न मीन की संख्या १२ को युक्त किया तो ५५ हुए। इनको १२ से तष्ट किया तो ७ शेष बचे। मेष से संख्या ७ पर्यन्त गिनातो तुला राशि में ' मुन्था ' हुई। यहां तुला राशि में मुन्था है इ' । स्वामी शुक्र है अतः ' मुन्थेश शुक्र ' हुआ।

राहुके मुख पृष्ठांशों का परिज्ञानः——

गम्यांशका भोगिविभोर्मुखं स्यात्पृष्ठाभिधं शुक्लवास्तथास्य।
पुच्छं मतं सप्तमभं विमृश्य फलं वदन्तीति ततः सुधीन्द्राः ॥ १५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इष्ट समय में राहुके जितने भोग्यांश हों वे राहुके मुखसंज्ञक होते हैं। एवं राहुके जितने भुक्तांश हों वे राहुके पृष्ठसंज्ञक होते हैं। जिस राशि में राहु स्थित हो उस से सप्तम राशि राहु का पुच्छ होता है। इसप्रकार पण्डितजन विचार कर के उस से फलको कहते हैं।

प्रश्न लग्न द्वारा वर्षफलसाधन में जन्मलग्नेश और मुन्था साधन रीतिः—

प्रश्ने यदङ्गं शरदुद्गतं तत्कल्प्यं ततस्तुर्य्यपतिर्जनीशः
विभाङ्गलिप्ताः खशरेन्दुभक्ताः फलं गृहाद्यं सतनूभमिन्था ॥ १६ ॥

प्रश्न समय में जो लग्न हो उस को वर्ष लग्न कल्पना करे। उस कल्पित वर्ष लग्न से चतुर्थस्थान का स्वामी 'जन्मलग्नेश' होता है। प्रश्न लग्न की राशि को त्यागकर अंशों को ६० से गुणकर जो गुणन फल हो उस में कला को युक्त करे तब 'कलापिण्ड' होता है। तदनन्तर उस कला पिण्ड में १५० से भाग दे लब्ध राश्यादि होते हैं। उस राश्यादि में लग्न की गत राशि की संख्या को युक्त करे तब 'राश्यादि मुन्था' होती है।

—: उदाहरण :—

२।८।२५।१० प्रश्न लग्न हैं। यह मिथुन राशि है। इससे चतुर्थस्थान में कन्या राशि है। उस का बुध स्वामी है अतः 'जन्म लग्नेश बुध' हुआ। प्रश्नलग्न की राशि २ को त्यागकर ८ अंश को ६० से गुणा तो ४८० हुए। इन में २५ कला को युक्त किया तो ५०५।१० 'कलापिण्ड' हुआ। इस में १५० से भाग दिया तो लब्ध ३ राशि हुई। शेष ५५।१० को ३० से गुणा तो १६५५।० हुए। इन में १५० से भाग दिया तो लब्ध ११ अंश हुए। शेष ५ को ६० से गुणा तो ३०० हुए। इन में १५० से भाग दिया तो लब्ध २ कला हुई। शेष शून्य होने के कारण ० विकला हुई। इस प्रकार लब्ध राश्यादि ३।११।२।० में प्रश्न लग्न की गत राशि २ को युक्त किया तो ५।११।२।० 'राश्यादि स्पष्ट मुन्था' हुई।

तन्त्रादयो द्वादशभावाः ससन्धयः सन्ति। उदाहरणमेतत्।

भावाः	त.	.	ध.	.	स.	.	तु.	.	पु.	.	वि.	.
ग्रहाः	.	.	शु.	सू.	.	चं. मं. बु.	.	.	.	रा.	.	.
	१	१	२	२	३	३	३	४	५	५	६	६
	१६	२८	१०	२२	४	१७	२९	१७	४	२२	१०	२८
	२०	३०	३९	४९	५८	८	१८	८	५८	४९	३९	३०
	४२	१५	४८	२१	५४	२७	०	२७	५४	२१	४८	१५
भावाः	जा.	.	मृ.	.	ध.	.	क.	.	मी.	.	व्य.	.
ग्रहाः	.	.	.	.	.	.	.	.	.	के.	.	चं. श.
	७	७	८	८	९	९	९	१०	११	११	०	०
	१६	२८	१०	२२	४	१७	२९	१७	४	२२	१०	२८
	२०	३०	३९	४९	५८	८	१८	८	५८	४९	३९	३०
	४२	१५	४८	२१	५४	२७	०	२७	५४	२१	४८	१५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

द्वादश वर्गों के नामः—

गृहं च होरा त्रियुगेषुपर्णगव्यालाङ्कपंक्तीश्वरभास्करांशकाः ।
गणाः शुभानां शुभदास्तनूस्थिता अनिष्टदाः स्युर्दुरितद्युसद्गणाः ॥ १७ ॥

गृह, होरा, द्रेष्काण, चतुर्थांश, पञ्चमांश, षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशांश और द्वादशांश ये द्वादश वर्ग हैं । गृहादि द्वादश वर्गों के लग्न में यदि शुभ ग्रहों की राशि हों तो शुभफल और पापग्रहों की राशि हों तो अशुभ फल होता है ।

गृहादि षड्वर्ग साधन तथा प्रकारान्तर से द्रेष्काण साधन रीतिः—

गेहं होरा त्र्यंशसप्ताङ्कसूर्यभागा एते प्राग्वदत्रापि साध्याः ।
आद्या भौमान्मध्यमा भानुतोऽपि शुक्रादन्त्या मेषतस्त्र्यंशपात्रा ॥ १८ ॥

गृह, होरा, द्रेष्काण, सप्तांश, नवांश, और द्वादशांश इन षड्वर्गों को यहां भी पूर्वोक्त प्रकार के समान साधे । लग्न वा ग्रह प्रथम द्रेष्काण में हो तो मङ्गल से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो सूर्य से और तृतीय द्रेष्काण हो तो शुक्र से आरम्भकर मेष के क्रमसे 'द्रेष्काणेश' होते हैं । उक्त द्रेष्काणेश केवल षड्वर्गविषय साधन के लिए कहे हैं । अन्यत्र द्वादशवर्गों में कथित विधि से द्रेष्काणेशों का साधन करें ।

द्रेष्काणस्वामिबोधचक्रमिदम् ।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
१०	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
२०	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.
३०	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	श.	श.	सू.	चं.	मं.

—: उदाहरण :—

२।२१।२४।४३ स्पष्ट सूर्य है । यहां 'सूर्य' मिथुन राशि के तृतीय द्रेष्काण में है अतः 'द्रेष्काणेश' सूर्य' हुआ ।

चतुर्थांश तथा पञ्चमांश साधन रीतिः—

तुर्य्यांशकेशाः स्वगृहोत्थकेन्द्रपा अयुग्मभे भौमयमेज्यवित्सिताः ।
रसांशकैः सायकभागनायका युग्मे गृहे व्यत्ययतो बुधैः स्मृताः ॥ १९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपनी राशि से उत्पन्न केन्द्रों के स्वामी 'चतुर्थांशेश' होते हैं। अर्थात् ७ अंश ३० कला पर्यन्त प्रथम (अपनी) राशिका केन्द्र, १५ अंश पर्यन्त अपनी राशि से चतुर्थ राशिका केन्द्र, २२ अंश ३० कला पर्यन्त अपनी राशि से सप्तम राशिका केन्द्र और ३० अंश पर्यन्त अपनी राशि से दशम राशिका केन्द्र होता है। उक्त केन्द्र राशिका स्वामी चतुर्थांशेश होता है। विषम (१।३।५।७।९।११) राशि में ६ अंशों के (६,१२,१८,२४, (३०) क्रम से मङ्गल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र 'पञ्चमांशेश होते हैं। सम (२।४।६।८।१०।१२) राशि में विलोम विधि से पञ्चमांशेश होते हैं। अर्थात् ६ अंशों के (६,१२,१८,२४,३०) क्रम से शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मङ्गल ये 'पञ्चमांशेश होते हैं।

'चतुर्थांशेश बोधक चक्रमिदम्'।

प्रथम चतुर्थांशः	७,° ३०', ०"	निजराशि स्वामी
द्वितीय चतुर्थांशः	१५°, ०', ०"	चतुर्थराशिस्वामी
तृतीय चतुर्थांशः	२२°, ३०', ०"	सप्तमराशि स्वामी
चतुर्थ चतुर्थांश;	३०°, ०', ०"	दशमराशि स्वामी

'विषमभे पञ्चमांशेशाः'।				'समभे पञ्चमांशेशाः'।			
अंशाः	योगांशाः	पतयः	राशयः	अंशाः	योगांशाः	पतयः	राशयः
६	६	मं.	१	६	६	शु.	२
६	१२	श.	११	६	१२	बु.	६
६	१८	बृ.	९	६	१८	बृ.	१२
६	२४	बु.	३	६	२४	श.	१०
६	३०	शु.	७	६	३०	मं.	८

—: उदाहरण :—

२।२१।२४।४३ स्पष्ट सूर्य है। यहां सूर्य के अंशादि २१।२४।४३ तृतीय चतुर्थांश २२।३०।० के अन्तराल में है। यहां सूर्य की वर्त्तमान मिथुन राशि है। इस से सातवीं राशि धनु है। अतः 'सूर्य' गुरु के चतुर्थांश में हुआ। अर्थात् चतुर्थांश में धनु राशिका 'सूर्य हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

२।२१।२४।४३ स्पष्ट सूर्य है। यहां सूर्य की वर्तमान मिथुन राशि विषम संज्ञक है। इस के अंशादि २१।२४।४३ चतुर्थ पञ्चमांश २४ अंश के अन्तराल में है इसलिए 'सूर्य' बुध के पञ्चमांश में हुआ अर्थात् पञ्चमांश में मिथुन का 'सूर्य' हुआ।

षष्ठांश, अष्टमांश, दशमांश तथा एकादशांशेश साधन रीतिः—

कृतांशकः खेट ऋतूरगाशेशघ्नश्चतुर्धा वियदग्निभक्तः।
फलं गतास्तेऽब्जयुताः क्रमेण मेषाद्रसव्यालदिगीशभागाः ॥२०॥

राश्यादि स्पष्ट लग्न तथा स्पष्ट ग्रह को अंशादि कर के चार स्थान में स्थापित करे। तदनन्तर क्रम से ६,८, १०,११ से पृथक पृथक गुणकर ३० से भाग दे लब्ध 'गतांश' होते हैं। उन में १ को युक्त करके मेष राशि के क्रमसे षष्ठांश, अष्टमांश, दशमांश और एकादशांश होते हैं।

—: उदाहरण :—

२।२१।२४।४३ स्पष्ट सूर्य है। इस की राशि २ को ३० से गुणा तो ६० हुए। इन में २१ अंश को युक्त किया तो ८१।२४।४३ 'अंशादि सूर्य' हुआ। इस को चार स्थान में स्थापित किया। तदनन्तर प्रथम स्थान के ८१।२४।८३ अंशादि को ६ से गुणा तो ४८८।२८।१८ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध १६ हुए। इन मे १ युक्त किया तो १७ हुए। इन को १२ से तष्ट किया तो ५ शेष बचे। मेष से गिना तो षष्ठांश में 'सिंह राशि का सूर्य' हुआ। द्वितीय स्थान के अंशादि ८१।२४।४३ को ८ से गुणा तो ६५१।१७।४४ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध २१ हुए। इन में १ युक्त किया तो २२ हुए। इन को १२ से तष्ट किया तो १० शेष बचे। मेष से गिना तो अष्टमांश में 'मकर का सूर्य' हुआ। तृतीय स्थान के अंशादि ८१।२४।४३ को १० से गुणा तो ८१४।७।१० हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध २७ हुए। इन में १ युक्त किया तो २८ हुए। इन को १२ से तष्ट किया तो ४ शेष बचे। मेष से गिना तो दशमांश में कर्क राशि का सूर्य' हुआ। एवं चतुर्थ स्थान के अंशादि ८१।२४।४३ को ११ से गुणा तो ८९५।३१।५३ हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध २९ हुए। इन में १ युक्त किया तो ३० हुए। इन को १२ से तष्ट किया तो ६ शेष बचे। मेष से गिना तो एकादशांश में 'कन्या का सूर्य' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

द्वादशवर्गीचक्रमिदम्। उदाहरणमेतत्।

ग्रहः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
गृहे	बु. ३	च. ४	चं. ४	चं. ४	मं. १	बु. ३	मं. १	शु. २
होरायाम्	चं. ४	चं. ४	चं. ४	चं. ४	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू. ५
द्रेष्काणे	श. ११	चं. ४	चं. ४	चं. ४	सू. ५	बु. ३	सू. ५	बु. ६
चतु.	बृ. ९	शु. ७	शु. ७	शु. ७	शु. ७	बृ. ३	शु. ७	मं. ८
पञ्च.	बु. ३	बु. ६	बु. ६	बु. ६	बृ. ९	मं. १	बु. ३	बृ. १२
षष्ठांशे	सू. ५	मं. ८	मं. ८	मं. ८	चं. ४	मं. १	चं. ४	श. १०
सप्त.	शु. ७	बृ. १२	श. ११	बृ. १२	सू. ५	बु. ३	सू. ५	श. ११
अष्ट.	श. १०	बु. ३	बु. ३	बु. ३	सू. ५	बु. ६	सू. ५	मं. १
नव.	मं. १	बु. ६	बु. ६	बु. ६	बु. ६	मं. ८	बु. ६	शु. २
दशमां.	चं. ४	श. १०	बृ. ९	श. १०	बु. ६	श. १०	शु. ७	चं ४
एकादश.	बु. ६	मं. १०	मं. १	मं. १	शु. ७	बृ. १२	शु. ७	सू ५
द्वादशांशे	श. ११	शु. ७	शु. ७	शु. ७	मं. ८	चं. ४	मं, ८	मं. ८
शु. यो.	७	९	९	९	७	७	७	५
पा. यो.	५	३	३	३	५	५	५	७
अन्तरम्	२ शु.	६ शु.	६ शु.	६ शु.	२ शु.	२ शु.	२ शु.	२ शु.

द्वादशवर्गीफल-परिज्ञानः—

भवेदिति द्वादशवर्गिकौजसां सिध्यै खगानां स्वसदुच्चमित्रजा।
शुभा स्मृता निम्नसपत्नपापजा न शोभना स्यादिति कोविदा विदुः॥ २१॥

इस प्रकार ग्रहों के बल की सिद्धि के लिए द्वादशवर्गी का साधन करे। स्वराशिगत, शुभ राशिगत, उच्चराशिगत और मित्र राशिगत ग्रह की द्वादशवर्गी शुभ होती है। नीचराशिगत, शत्रु राशिगत तथा पाप राशिगत ग्रह की द्वादशवर्गी अशुभ होती है। इस प्रकार पण्डितजन जानें।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

द्वादशवर्गों में शुभ पाप ग्रहों के वश से शुभाशुभत्व का परिज्ञानः—

इति गगनचराणां वीक्ष्य पंक्तिद्वयारव्यं
शुभदुरितगणानां सद्गणानां बहुत्वे ।
शुभफलमिह वाच्यं भावदायादिकाना
मशुभमिति विचिन्त्यं क्रूरवर्गाधिकत्वे ॥ २२ ॥

इस प्रकार ग्रहों के शुभ और पापवर्गों की दोनों पंक्तियों को देखकर शुभ ग्रहों के वर्गों की अधिकता होने पर 'दशा तथा भावादियों का शुभ फल' होता है। एवं पापवर्गों की अधिकता होने पर दशा और भावादियों का अशुभ फल होता है।

ग्रहों के भेद से तथा शुभ पाप वर्गों के वश से फल के तारतम्य का परिज्ञानः—

पापोऽपि शोभनगणाधिकयुक्छगत्वे-
न्सौम्यग्रहो यदि तदाऽतिशुभप्रदः स्यात् ।
नेष्टः शुभोऽपि दुरिताधिकवर्गयोगा-
दत्यन्तनिन्द्य उदितो दुरितग्रहश्चेत् ॥ २३ ॥

द्वादशवर्गों में जिस पापग्रह के अधिक शुभवर्ग हों वह भी शुभ होता है। द्वादशवर्गों में शुभ ग्रह यदि 'अधिक शुभ वर्गवाला हो तो वह अत्यन्त शुभ होता है। द्वादशवर्गों में अधिक पापवर्ग वाला शुभग्रह 'अशुभ' होता है। एवं द्वादशवर्गों में अधिक पापवर्ग वाला पापग्रह अत्यन्त निन्दित होता है।

द्वादश भावों के शुभाशुभ फल का परिज्ञानः—

प्रागुक्तरीत्या वपुषः शुभाशुभं फलं विचिन्त्यं प्रथमाधिपादपि ।
मित्रोच्चशत्रुक्रमतोऽर्कवर्गिकां वीक्ष्यान्यभावेष्वपि तत्फलं वदेत् ॥ २४ ॥

पूर्वोक्त रीति से लग्नजन्य शुभाशुभ फल को भी कहे। मित्र, उच्च तथा शत्रुराशि के क्रम से लग्नेश से भी शुभाशुभ फलको कहे। इसी प्रकार अन्य सब भावों में द्वादशवर्गों को देखकर उन के शुभाशुभ फल को कहे।

वर्ष में मित्र तथा दृष्टि का परिज्ञानः—

पथे चिति त्र्यंघ्रिमिता सुहृद्दृक् षष्ठांशदृष्टिः कथिताय एषा ।
त्र्यंशोनिता सोत्थ इमाः शुभाः स्युरर्थांघ्रितुल्याऽम्बुनिधेऽरिदृक्स्यात् ॥ २५ ॥
सम्पूर्णदृष्टिर्मदनाभिधाने तथैकराशावपि पूर्णदृष्टिः ।
इमाश्चतस्रः स्युरशोभनाख्याः सर्वाः स्युरादित्यलवान्तरे ताः ॥ २६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रत्येक रव्यादि ग्रह अपनी अधिष्ठित राशि से नवम तथा पञ्चम स्थान को तीन चरण दृष्टि से, लाभस्थान को षष्ठांश दृष्टि से और तृतीय स्थान को तृतीयांश रहित दृष्टि से देखता है। ये चारों मित्रदृष्टि शुभ होती हैं। प्रत्येक रव्यादि ग्रह अपनी अधिष्ठित राशि से चतुर्थ तथा दशम स्थान को एक पाद दृष्टि से देखता है। एवं सप्तमस्थान तथा अपनी अधिष्ठित राशि को पूर्ण दृष्टि से देखता है। ये चारों शत्रु दृष्टि अशुभ होती हैं। उक्त दृष्टियों का शुभाशुभ फल १२ अंशों के अन्तराल में होता है।

गणितागतदृष्टि साधन रीतिः—

द्रष्टारमम्बरचरं परिशोध्य दृश्या-
लिप्ता ध्रुवाः क्रमत एकगृहादिशेषे।
खंखाब्धयः शरधराः शरसागराः खं
खाङ्गानि विष्णुपदमक्षयुगा दिनानि ॥२७॥

पंक्तिर्नभः शून्यरसा विशेषांशैर्तेष्यशेषाहतितो ऽत्रलोकिः।
लब्धं ध्रुवे स्वर्णमिहाधिकोनगम्ये तदा ताः स्फुटदृक्कलाः स्युः ॥ २८ ॥

जो 'ग्रह' देखता है वह 'द्रष्टा' जो 'ग्रह' किसी अन्यग्रह से देखा जाता है 'दृश्य' होता है। दृश्य ग्रह के स्पष्ट राश्यादि में द्रष्टा ग्रह के स्पष्ट राश्यादि को हीनकरे तब 'द्रष्टोन दृश्य ग्रह' होता है तदनन्तर उस द्रष्टोनदृश्य ग्रह को एकादि राशि क्षेत्र में क्रमसे वक्ष्यमाण 'खं खाब्धय' 'इत्यादि' ध्रुवकला' होती है। अर्थात् द्रष्टोन दृश्यग्रह की राशि के तुल्य खण्ड की भुक्त ध्रुव कलाओं को एकान्त में स्थापित कर। तदनन्तर द्रष्टोनदृश्य ग्रह के अंशादियोंको भुक्तभोग्य ध्रुवकलाओं के अन्तर से गुणकर ३० से भाग दे तब जो लब्ध हो उसको एकान्त में स्थापित भुक्त ध्रुवकलाओं में धन वा ऋण करे अर्थात् भुक्त ध्रुवकलाओं की अपेक्षा भोग्य (गम्य) खण्ड की कला अधिक हों तो धन और भुक्त ध्रुवकलाओं की अपेक्षा भोग्य खण्ड की कला अल्प (न्यून) हों तो लब्ध को भुक्त ध्रुव कलाओं में ऋण (हीन) करे। तब 'स्पष्ट दृष्टिकला' होती है।

'दृष्टिध्रुवाङ्काः सान्तराः'।

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ध्रुवाङ्काः	०	१०	१५	४५	०	६०	०	४५	१५	१०	०	६०
अन्तराङ्काः	४०	२५	३०	२५	६०	६०	४०	३०	५	५	६०	६४
धनर्णम्	ध	ऋ.	ध.	ऋ.	ध.	ऋ.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध.	ऋ.

—: उदाहरण :—

यहां चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि का साधन करते हैं। अतः 'सूर्य द्रष्टा' और 'चन्द्रमा दृश्य' हुआ। दृश्य के स्पष्ट राश्यादि ३।९।१५।४९ में द्रष्टा सूर्य के स्पष्ट राश्यादि ०।२१।२४।४० को हीन किया तो ०।१७।५१।६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राश्यादि शेषवचे । यहां शेष शून्य राशि है अतः शून्य को १२ मानकर अर्थात् बारह राशि शेष के तुल्य कोष्ठ के नीचे की गत (भुक्त) ध्रुवकला ६० को एकान्त में स्थापित किया । तदनन्तर गत ध्रुवकला ६० का और एक राशि के नीचे की गम्य (भोग्य) कला ० का अन्तर किया तो ६० गुणक हुआ । यहां गत ध्रुवकला ६० से गम्य ध्रुवकला ० न्यून है अतः ६० 'ऋण गुणक' हुआ । द्रष्टा रहित दृश्य के शेष अंशादि १७।५१।६ को ऋण गुणक ६० से गुणा तो १०७१।६।० हुए । इनमें ३० से भाग दिया तो लब्ध ३५।४२ कलादि हुए । यहां गुणक ऋण है । अतः एकान्त में स्थित गत ध्रुवकला ६० में लब्ध कलादि ३५।४२ को हीन किया तो २४।१८ सूर्य की चन्द्रमा पर स्पष्ट दृष्टिकला हुई । एवं सूर्य की शेष ग्रहोंपर दृष्टिकलाओं का साधन करे ।

'वर्षे ग्रहदृष्टयः सन्ति' । 'उदाहरणमेतत्' ।

दृ. ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
द्र. ग्र. सू.	०	२४	२६	५४	१०	२५	१०
	०	१८	१४	४०	३६	६	२९
चं.	२४	०	५८	५९	१३	१	१३
	१६	०	४	३९	३४	४७	२७
मं.	२६	५८	०	५८	१३	१	१३
	१३	५	०	२६	२४	२७	१८
बु.	२४	५९	५८	०	१३	१	१३
	३८	४०	२५	०	३२	४३	२६
बृ.	३७	२२	२३	२२	०	२१	५८
	२६	१३	१	२२	०	२४	४०
शु.	२५	७	५	६	५	०	५
	६	४	४७	५०	२२	०	८
श.	३७	२२	२३	२२	५८	२०	०
	३९	४६	३४	५५	३९	३०	०

वर्ष में निसर्गमैत्री का परिज्ञानः--

सख्याय इन्द्विज्यभगासृजो मिथस्तथाऽऽस्फुजिद्त्राभ्रिबुधाः परस्परम् ।
भवन्ति मित्राणि नभश्चराः परे द्विषो वयस्यौ तमसो भवोधनौ ॥ २९ ॥

चन्द्र, गुरु, सूर्य और मङ्गल ये चारों परस्पर मित्र हैं । शुक्र, शनि और बुध ये तीनों परस्पर मित्र हैं । अनुक्त ग्रह शत्रु जानने चाहिएँ । राहु के बुध शुक्र ये दोनों मित्र हैं और शेष शत्रु हैं ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'वर्षे निसर्गमैत्रीयम्'।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.
मित्राणि	चं. मं. बृ.	सू. मं. बृ.	सू. चं. बृ.	शु. श.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	बु. शु.
शत्रवः	बु. शु. श.	बु. शु. श.	बु. शु. श.	सू. चं. मं. बृ.	बु. शु. श.	सू. चं. मं. बृ.	सू. चं. मं. बृ.	सू. चं. मं. बृ. श.

वर्ष में तात्कालिक मैत्री का परिज्ञानः--

यस्य त्रिधीभाग्यभवस्थितो यो मित्रं समोऽर्थान्त्यमृतिक्षतस्थः।
एकर्क्षमेपूरणमारमित्रसम्प्राप्त आकाशचरोऽरिरब्दे ॥ ३० ॥

जिसग्रह से तृतीय, पञ्चम नवम वा लाभस्थान में जो 'ग्रह' स्थित हो वह 'मित्र' होता है। जिसग्रह से द्वितीय द्वादश षष्ठ वा अष्टमस्थान में जो 'ग्रह' हो वह 'सम' होता है। एवं जिस ग्रह से एकराशि दशम सप्तम वा चतुर्थ में जो 'ग्रह' हो वह वर्ष में 'शत्रु' होता है।

----: उदाहरण :--

यहां मिथुन राशि में 'सूर्य' है। उस से द्वितीय स्थान में चन्द्र, भौम, तथा बुध हैं। ये तीनों सूर्य के 'सम' हुए। सूर्य से एकादश में गुरु तथा शनि हैं अतः ये दोनों सूर्य के 'मित्र' हुए। एवं सूर्य और शुक्र ये दोनों एकराशि में हैं इसलिए सूर्य का शुक्र, 'शत्रु' हुआ। एवं चन्द्रादियों की तात्कालिक मैत्री का साधन करे।

वर्ष में स्त्री पुरुष ग्रहों का परिज्ञानः----

रविकुजजीवाः शरदि नराः स्युः।
युवतय आर्कीन्दुजसितसोमाः ॥ ३१ ॥

वर्ष में रवि, भौम और गुरु ये तीनों 'पुरुष' शनि, बुध, शुक्र, और चन्द्र ये चारों स्त्री ग्रह हैं।

सूर्यादि ग्रहों के दीप्तांशों का परिज्ञानः----

तिथिनिनागाद्रिनवाद्रिनन्दा दीप्तांशकाः स्युस्तपनादिकानाम्।
पश्यन्ति ते दीप्तलवैः किमर्कांशैरित्थशालप्रमुखा अमीभ्यः ॥ ३२ ॥

१५ सूर्य के, १२ चन्द्रमा के, ८ भौम के, ७ बुध के, ९ गुरु के, ७ शुक्र के, ९ शनि के दीप्तांश हैं। सूर्यादि ग्रह अपने उक्त दीप्तांशों के अन्तर्गत हों अथवा १२ अंशों के अन्तर्गत हों तो इत्थशालादि योग जन्य फल होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दीप्तांशों के प्रयोजन का परिज्ञानः—

पुरोऽथ पृष्ठे निजदीप्तभागैर्विशिष्टमालोककलं नभोगः ।
ददाति नित्यं तदतिक्रमे दृक्फलं बुधा मध्यमुदीरयन्ति ॥ ३३ ॥

प्रत्येक रव्यादि ग्रह अपने पूर्वोक्त दीप्तांशों से आगे और पीछे दृष्टि के फलको विशिष्ट (उत्कृष्ट) रूप से देता है। दीप्तांशों के उलंघन करने पर ग्रहों की दृष्टि का फल मध्यम (साधारण) होता है।

इक्कवाल तथा इन्दुवार योग के लक्षणः—

केन्द्रं प्राप्ताः प्राप्तियाम्यार्थधीस्थाः सर्वे खेटा इक्कवालःशुभोऽयम् ।
रोगप्रान्त्यव्यङ्कगाः सर्वखेटा योगोऽयं स्यादिन्दुवारो न शस्तः ॥ ३४ ॥

वर्षप्रवेशादि समय में यदि सब रव्यादि ग्रह केन्द्र में स्थित हों तथा पञ्चम, एकादश, अष्टम और द्वितीय स्थान में स्थित हों तो ' इक्कवाल योग ' होता है। एवं सब रव्यादि ग्रह यदि षष्ठ, व्यय, तृतीय, और नवम स्थान में स्थित हों तो ' इन्दुवार योग ' होता है। यह शुभफलदायक नहीं होता है।

इत्थशालादियोगलक्षण.—

शीघ्रोऽल्पांशैर्मन्दखेटेऽधिकांशैऽग्रेऽथ स्वीयां दीप्तिकां स प्रदत्ते।
एष प्रोक्तः सौम्यदृष्ट्येत्थशालो लिप्ताद्वीनो वा विलिप्तोनकोऽयम् ॥ ३५ ॥
पूर्णोऽथ चेन्मन्दगतेर्विहङ्गाच्छीघ्रोऽधिकः सन्नहि मूसरीफः ।
द्वाभ्यां ग्रहाभ्यां हिमगुर्विधत्ते सहेत्थशालं रक्वूलयोगः ॥ ३६ ॥

इत्थशाल योग कारक दोनों ग्रह एकस्थान में हों वा दोनों की परस्पर शुभ दृष्टि हो और उन दोनों ग्रहों के मध्य में जो ग्रह शीघ्र गति वाला हो उस के अंशादि अल्प हों और अग्रस्थ मन्दगतिवाले ग्रह के अंशादि अधिक हों तो शीघ्रगति वाला ग्रह अपने तेजको मन्दगति वाले ग्रह को देदेता है तब उन दोनों का ' इत्थशालयोग ' होता है। यदि मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति ग्रह आधा कला अर्थात् ३० विकला अथवा १ विकला न्यून (अल्प) हो तो ' पूर्णेत्थशालयोग ' होता है। यदि मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति ग्रह के अंशादि अधिक हों तो ' मूसरीफ (ईसराफ) योग ' होता है। यह शुभफल दायक नहीं होता है। इत्थशालयोग कारक दोनों ग्रहों के साथ यदि चन्द्रमा भी इत्थशाल योग को करे तो वह ' कम्बूलयोग ' होता है।

इत्थशाल योग भङ्ग परिज्ञानः—

नीचास्तवक्रारिभगोनदीप्तिः सुदुर्बलश्चेन्मुखशीलयोगम् ।
करोति नेतुं स महो विभुर्न कुर्य्यान्मुखेऽन्तेऽपि न कार्य्यसिद्धिम् ॥ ३७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इत्थशाल योग कारक ग्रह यदि नीच राशि में, अस्तंगत, वक्री, शत्रु राशि में, रश्मिरहित और अत्यन्त दुर्बल होकर इत्थशाल योग को करे तो वह मन्दगति ग्रह में अपने तेजको देने में समर्थ नहीं होता है इसलिए वह ग्रह कार्यारम्भ में तथा कार्य के अन्त में कार्य की सिद्धि को नहीं करता है अर्थात् इत्थशालयोगभंग हो जाता है।

नक्त योग परिज्ञानः

मिथो न दृष्टिस्तनुकार्य्यनाथयोः शीघ्रः खगो मध्यगतस्तयोर्यदा ।
नत्वा द्युतिं पृष्ठगताद् द्रुतग्रहान्मन्दे न्यसेन्नक्तमदः शुभं स्मृतम् ॥ ३८ ॥

लग्नेश तथा कार्येश इन दोनों की परस्पर दृष्टि न हो और इन दोनों के मध्य में प्राप्त हुआ कोई अन्य शीघ्रगति वाला ग्रह उन दोनों से इत्थशाल करे तो वह पृष्ठगत शीघ्रगति ग्रह से तेज को लेकर अग्रस्थ मन्द गति ग्रह को देदेता है तब 'नक्त योग' होता है। यह 'शुभ फल दायक' मानना चाहिए।

यमया योग परिज्ञानः --

दीप्तेक्षया कार्यतनूपलोकितस्तन्मध्यगो मन्दगतिर्विहङ्गमः ।
आदाय दीप्तिं द्रुतभुक्तिवेचरान्मन्दाय दद्याद्यमयाभिधः शुभः ॥ ३९ ॥

लग्नेश तथा कार्येश की परस्पर दृष्टि न हो और उन दोनों के मध्य में स्थित हुआ मन्दगति ग्रह यदि उन दोनों को दीप्तांशों से देखता हो तो वह 'मन्दगति ग्रह' शीघ्रगति ग्रह से तेज को लेकर मन्द गति ग्रह को दे देता है तब 'यमया नामक योग होता है। यह शुभ फल दायक होता है।

उच्चबल साधन रीतिः--

नीचोनःखचरः षड्भादधिकश्चक्रतश्च्युतः ।
तल्लवा गोहृता लब्धं खगस्योच्चबलं भवेत् ॥ ४० ॥

राश्यादि स्पष्ट ग्रह में अपने राश्यादि नीच को हीन करे तब शेष राश्यादि ६ राशि से न्यून (अल्प) हो तो उस के अंशादि करके ९ से भाग दे लब्ध 'ग्रह का उच्च बल' होता है। यदि नीचोन ग्रह के (शेष) राश्यादि ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में शोधन करे तब शेष राश्यादि के अंशादि करके ९ से भाग दे लब्ध 'ग्रह का उच्चबल' होता है।

-: उदाहरण :--

राश्यादि स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ में सूर्य के राश्यादि नीच ६।१०।०।० को हीन किया तो ८।११।२४।४३ शेष राश्यादि बचे। यहां शेष राश्यादि ६ राशि से अधिक हैं। अतः ८।११।२४।४३ शेष राश्यादि को १२ राशि में शोधन किया तो ३।१८।३५।१७ शेष बचे। इन को अंशादि किया तो १०८।३५।१७ हुए। इन में ९ से भाग दिया तो लब्ध १२।४ 'सूर्य का उच्चबल' हुआ। एवं चन्द्रादियों के उच्चबल को साधे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हद्देश परिज्ञानः—

मेषेरसाङ्गभुजगेषुशरेषवोंऽशा
देवेज्यभार्गववुधक्षितिजार्कजानाम् ।
गव्यष्टरागभुजगाशुगपावकांशाः
काव्येन्दुपुत्रगुरुभास्करिभूमिजानाम् ॥ ४१ ॥

युग्मेऽङ्गपट्छरतुरङ्गरसांशकेषु
हद्देश्वरा ज्ञसितजीवकुजार्कयः स्युः ।
हद्दाविभा नगरसाङ्गतुरङ्गवेद-
भागेष्वसृक्सितबुधेज्ययमाः कुलीरे ॥ ४२ ॥

सिंहे रसेषुगिरितर्करसांशकेष्वि-
ज्याच्छार्किबोधनकुजा इह हद्दनाथाः ।
गन्धर्वदिग्युगतुरङ्गयमांशकेशा-
श्चन्द्रात्मजाच्छगुरुभौमयमा युवत्याम् ॥ ४३ ॥

जुके रसेभहयपर्वतबाहुभागा
आदित्यजज्ञगुरुभार्गवमङ्गलेशाः ।
कौर्प्ये तुरङ्गकृतनागमरुत्पडंशा
भौमासुरेज्यबुधवाक्पतिमन्दगानाम् ॥ ४४ ॥

चापेऽर्कबाणयुगमारुतसागरांशा
वागीशभार्गववुधारयमेशहद्दाः ।
नक्रे हयागकरिसागरसिन्धुभागा
विद्देवमंत्रिभृगुमन्दमहीसुतानाम् ॥ ४५ ॥

कुम्भे तुरङ्गमरसाद्रिशरेन्द्रियांशाः
काणज्ञजीवरुधिरारुणजाधिनाथाः
मत्स्येऽर्कसागरगुणाङ्कयमांशकेषु
स्युर्हद्दपाः कविसुरेज्यबुधारसौराः ॥ ४६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उक्तश्लोकों का अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए।

'मेषादिराशिविभागयुक्ता हद्देशाः सन्ति'

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
बृ. ६	शु. ८	बु. ६	मं. ७	बृ. ६	बु. ७	श. ६	मं. ७	बृ. १२	बु. ७	शु. ७	शु. १२
शु. ६	बु. ६	शु. ६	शु ६	शु. ५	शु. १०	बु. ८	शु. ४	शु. ५	बृ. ७	बृ. ६	शु. ४
बु. ८	बृ. ८	शु. ५	बु. ६	श. ७	बृ. ४	बृ. ७	बु. ८	बु. ४	शु. ८	बृ. ७	बु. ३
मं. ५	श. ५	मं. ७	बृ. ७	बु. ६	मं. ७	शु. ७	बु. ५	मं. ५	श. ४	मं. ५	मं. ९
श. ५	मं. ३	श. ६	श. ४	मं. ६	श. २	मं. २	श. ६	श. ४	मं. ४	श. ५	श. २

--:उदाहरणः--

२।२१।२४।४३ स्पष्ट सूर्य है। यहां मिथुन राशि के २२ वें अंश में 'सूर्य' वर्त्तमान है और मिथुन राशि में २४ अंश पर्यन्त मङ्गल की हद्दा है इसलिए मङ्गल की हद्दा में 'सूर्य' हुआ। ३।९।१५।४९ स्पष्ट चन्द्र है। यहां कर्क राशि के १० वें अंश में 'चन्द्रमा' वर्त्तमान है और कर्क राशि के १३ अंश पर्यन्त शुक्र की हद्दा है अतः शुक्र की हद्दा में चन्द्रमा हुआ। एवं अन्य ग्रहों के हद्देशों का साधन करे।

'वर्षे हद्देशाः'। 'उदाहरणमेतत्'।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
हद्देशाः	भौमः	शुक्रः	शुक्रः	शुक्रः	बुधः	बुधः	बुधः

पञ्चवर्गबिल साधन रीतिः—

स्वर्क्षे त्रिंशत्स्वीयतुङ्गेऽम्बरोष्ठा हद्दे तिथ्योऽनन्तचन्द्रास्त्रिभागे।
नाराचांशा नन्दभागे निरुक्ता विंशोपारव्याः सागरांशैः प्रकल्प्याः ॥ ४७ ॥

ग्रह में यदि 'ग्रह' स्वराशि में हो तो ३० अंशबल, अपनी उच्च राशि में हो तो २० अंश बल, अपनी हद्दा में १५ अंश बल, अपने द्रेष्काण में १० अंश बल और अपने नवांश में ५ अंश बल होता है। बल के चतुर्थांश से विंशोपका की कल्पना करनी चाहिए।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वीर्य्यं यत्तु निजाधिकार उदितं पादोनितं मित्रभे
नेमारव्यं समभेऽथ वैरिभवने पादं बलं कीर्तितम् ।
आनीयेति तदैक्य आगमहृतेऽक्षाल्पोऽल्पवीर्यो मतो
यः खेटो विषयाधिकः समबली दिक्पुष्ट उक्तो बली ॥ ४८ ॥

अपने अपने अधिकार में 'स्वर्क्षे त्रिंशत्' इत्यादि जो पूर्वोक्त बल है 'उसका तीन पाद' मित्रराशि में 'आधा' समराशि में और 'चतुर्थांश' शत्रुराशि में होता है। इसप्रकार प्राप्त हुए बल के योग में ४ से भाग दे लब्ध 'विंशोपका' होता है। पाँच विंशोपक से अल्प बल वाला ग्रह 'अल्पबली' पाँच विंशोपक से अधिक बल वाला ग्रह 'मध्यबली' एवं दश विंशोपक से अधिकबल वाला ग्रह 'बलवान्' होता है।

—: उदाहरण :—

ग्रह में 'सूर्य' मिथुन राशि में है। मिथुन का स्वामी 'बुध' सूर्य का सम है अतः सूर्य का १५।० गृह बल हुआ। १२।४ सूर्य का उच्चबल है। 'सूर्य' भौम की हद्दा में है वह सूर्य का सम है अतः सूर्य का ७।३० हद्दा बल हुआ। द्रेष्काण में 'सूर्य' अपने द्रेष्काण में है अतः सूर्य का १०।० द्रेष्काण बल हुआ। नवांश में 'सूर्य' मेषराशि में है 'मेषका स्वामी मङ्गल' सूर्य का सम है अतः सूर्य का २।३० 'नवांश बल' हुआ। इन पूर्वागत पाँचों बलों का योग किया तो ४७।४ सूर्य का बलैक्य हुआ। इस में ४ से भाग दियातो लब्ध ११।४६ 'सूर्य का पंचवर्गी विंशोपकात्मक बल' हुआ। एवं चन्द्रादियों के बल को साधे।

'पञ्चवर्गीबलबोधकचक्रम्:'।

	स्वगृहे	मित्रगृहे	समगृहे	शत्रुगृहे
गृहे	३०	२२	१५	७
	०	३०	०	३०
हद्दायाम	१५	११	७	३
	०	१५	३०	४५
द्रेष्काणे	१०	७	५	२
	०	३०	०	३०
नवांशे	५	३	२	१
	०	४५	३०	१५

'पञ्चवर्गीबलचक्रम्'। 'उदाहरणमेतत्'।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ. च.	१५	३०	७	७	७	१५	७
	०	०	३०	३०	३०	०	३०
उ. च.	१२	१२	२	१२	११	१५	०
	४	३८	११	४१	२६	५४	०
ह. च.	७	७	७	७	३	७	३
	३०	३०	३०	३०	४५	३०	४५
द्रे. च.	१०	५	५	५	७	७	७
	०	०	०	०	३०	३०	३०
न. च.	२	१	१	५	१	२	१
	३०	१५	१५	०	०	३०	१५
योगः	४७	५६	२३	३७	३१	४८	२०
	४	२३	२६	४१	२६	२४	०
विंशोप.	११	१४	५	०	७	१२	५
	४६	६	५१	२५	५१	६	२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हर्षबल साधन रीतिः—

भाग्यानुजार्य्यङ्गभवात्मजव्यया आदित्यतो हर्षपदं स्वभोच्चभम् ।
स्त्रीणां नृणामङ्गभतस्त्रिभं त्रिभं तेषां त्रियामादिवसे क्रमात्तथा ॥ ४९ ॥

लग्न से नवम में सूर्य, तृतीय में चन्द्रमा, षष्ठ में भौम, लग्न में बुध, लाभ में गुरु, पञ्चम में शुक्र और व्यय में ' शनि ' हर्षित होता है अर्थात् ५ विंशोपक बल को देता है । प्रत्येक सूर्यादि ग्रह यदि गृह में स्वराशि में अथवा उच्चराशि में हो तो हर्षित होता है अर्थात् पाँच विंशोपक बल को देता है । लग्न से तीन (लग्न, द्वितीय तथा तृतीय) स्थान में स्त्री ग्रह (चं. बु. शु. श.) चतुर्थ से तीन (चतुर्थ, पञ्चम तथा षष्ठ) स्थान में पुरुषग्रह (र. मं, बृ.) एवं सप्तम से तीन (सप्तम, अष्टम तथा नवम) स्थान में स्त्री ग्रह और दशम से तीन (दशम, एकादश तथा द्वादश) स्थान में पुरुषग्रह हर्षित अर्थात् पाँच विंशोपक बल को देते हैं । रात्रि में प्रवेश हो तो स्त्री ग्रह (च. बु. शु. श.) और दिन में वर्ष प्रवेश हो तो पुरुषग्रह (र. मं गु.) हर्षित अर्थात् पाँच विंशोपक बल को देते हैं । इसप्रकार ग्रहों का चार प्रकार का हर्षबल होता है ।

—: उदाहरण :—

यहां वर्ष प्रवेश लग्न वृष है उससे द्वितीय में सूर्य है । अतः सूर्य का ० ' स्थान बल ' हुआ । ' सूर्य ' मिथुन में है वह उसका स्वोच्चभ नहीं है इसलिए सूर्य का ० स्वोच्चभबल ' हुआ । यहां ' सूर्य ' द्वितीय स्थान में है यह स्त्रियों का बलप्रद स्थान है अतः सूर्य का ० , स्त्रीपुरुषबल ' हुआ । एवं वर्ष प्रवेश रात्रि में है इसलिए सूर्य का ० दिवारात्रि बल ' हुआ । पूर्वागत चारों बलों का योग किया तो ० ' सूर्य का हर्षबल योग ' हुआ । एवं चन्द्रादियों के हर्षबल को साधे ।

' हर्षबलबोधकचक्रमिदम् ' ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
स्थान ब.	०	३	६	१	११	५	१२
स्वगृहो.	५, १,	४, २,	१, ८, १०,	३, ६,	९, १२, ४,	२, ७, १२,	१०, ११, ७,
स्त्रीपुरु.	४, १०, ५, ११, ६, १२,	१, ७, २, ८, ३, ९,	४, १०, ५, ११, ६, १२,	१, ७, २, ८, ३, ९,	४, १०, ५, ११, ६, १२,	१, ७, २, ८, ३, ९,	१, ७, २, ८, ३, ९,
दिवारात्रि	दिवा	नक्तम्	दिवा	नक्तम्	दिवा	नक्तम्	नक्तम्

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'हर्षबलम्'। 'उदाहरणमेतत्'

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
स्था. ब.	०	५	०	०	०	०	५
स्व. ब.	०	५	०	०	०	०	०
स्त्री. ब.	०	५	०	५	५	५	०
दि. रा.	०	५	०	५	०	५	५
योगः	०	२०	०	१०	५	१०	१०

त्रैराशिक स्वामियों का परिज्ञानः—

घस्रे त्रिराशिपतयो रविकाव्यकृष्णा--
च्छेज्येन्दुकोविदकुजार्किकुजार्य्यसोमाः।
नक्तं क्रमाद् गुरुशशिज्ञकुजार्ककाव्य-
कालाच्छकालकुजपूज्यकलाभृतोऽजात् ॥ ५० ॥

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो मेष लग्न के क्रमसे रवि, शुक्र, शनि, शुक्र, गुरु, चन्द्र, बुध, भौम, शनि, भौम, गुरु, और चन्द्रमा ये त्रैराशिक स्वामी होते हैं। रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो मेष लग्न के क्रमसे गुरु, चन्द्र, बुध, भौम, सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र, शनि, भौम, गुरु और चन्द्रमा ये त्रैराशिक स्वामी होते हैं।

'त्रैराशिकस्वामिबोधकचक्रमिदम्'।

लग्ना.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रौ	बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

—:उदाहरण:—

यहां वर्ष प्रवेश रात्रि में है और वृष लग्न है इसलिए त्रैराशिक स्वामी 'चन्द्रमा' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वर्ष में जन्मलग्नेशादि पञ्चाधिकारियों का परिज्ञानः –

जन्माङ्गनाथः शरदङ्गवल्लभो मुन्थाभपोऽथ त्रिकभेश्वरस्ततः ।
भाकोपभेशोऽह्नि निशीन्दुभाधिप एतत्समेशाय विमृश्य पञ्चकम् ॥ ५१ ॥

जन्म लग्न का स्वामी, वर्ष लग्न का स्वामी, मुन्था राशि का स्वामी, त्रैराशिक स्वामी, दिनमें वर्षप्रवेश हो तो सूर्य राशि का स्वामी और रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्र राशि का स्वामी ये पाँच वर्ष के अधिकारी हैं। उक्त पाँचों के बलाबल का विचार करके वर्षेश का निर्णय करें।

—: उदाहरण :—

जन्म लग्न मीन है उस का स्वामी गुरु है अतः 'जन्म लग्नेश गुरु' हुआ। वर्ष लग्न वृष है उस का स्वामी शुक्र है इसलिए 'वर्ष लग्नेश शुक्र' हुआ। 'मुन्था' तुलाराशि में है इसलिए 'मुन्थेश शुक्र' हुआ। रात्रि के वृष लग्न में वर्ष प्रवेश है इसलिए 'त्रिराशीश चन्द्रमा' हुआ। रात्रि में वर्ष प्रवेश है और चन्द्रमा कर्क राशि में है इसलिए 'चन्द्रराशीश चन्द्रमा' हुआ।

दृग्बल और पञ्चवर्गीबल के वश से वर्षेश निर्णयः—

एषां बली तनुगृहं परिलोकयेद्यः
सोऽब्दाधिपो भवति कोऽपि तनुं न पश्येत् ।
वीर्य्याधिको दिविचरोऽब्दविभुर्बलस्य
साम्ये यदा दृगधिकात्कथितः समेशः ॥ ५२ ॥

पूर्वोक्त जन्म लग्नेशादि पञ्चाधिकारियों के मध्य में जो ग्रह सब से अधिक बली हो और वर्ष लग्न को देखता हो तो वह 'वर्षेश' होता है। यदि उक्त पञ्चधिकारियों के मध्य में कोई भी ग्रह वर्ष लग्न को न देखता हो तो पञ्चाधिकारियों के मध्य में जिस ग्रह का पञ्चवर्गी बल सब से अधिक हो वह 'वर्षेश' होता है। यदि सर्वाधिक बली ग्रहों का बल समान हो तो उन पञ्चाधिकारियों के मध्य में जिसग्रह की लग्नपर अधिक दृष्टि हो वह 'वर्षेश' होता है।

दृष्टिसाम्य में तथा मतान्तर से वर्षेश निर्णयः—

साम्ये दृशां गतबलत्व उताब्दनाथो
मुन्थेद् ततोऽर्कगृहपोऽह्नि निशीन्दुभेशः ।
वीर्य्यादिसाम्य इति वर्षप इन्दुरब्देद्
येनेत्थशाल्य इह सोऽब्जभपोऽन्यथात्वे ॥ ५३ ॥

यदि लग्न पर पञ्चाधिकारियों की दृष्टि समान हो अथवा पञ्चाधिकारी निर्बल हों तो मुन्था राशि का स्वामी 'वर्षेश' होता है। पञ्चाधिकारियों का बल अथवा दृष्टि समान हो तो दिनमें सूर्य राशि का स्वामी और रात्रि में

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चन्द्र राशि का स्वामी ' वर्षेश ' होता है । यदि चन्द्रमा को वर्षेश होने का अधिकार प्राप्त हो तो, जिस पञ्चाधिकारी से ' चन्द्रमा ' इत्थशाल करे वह ' वर्षेश ' होता है । यदि ' चन्द्रमा ' किसी पञ्चाधिकारी से इत्थशाल योग न करे तो चन्द्र राशि का स्वामी ' वर्षेश ' होता है ।

पुण्यादि सहम साधन रीतिः—

पुण्यं दिवोदय इनोनशशाङ्कयुक्तो
वीन्द्वर्कयुङ् निशितु शोध्यखगस्य राशेः ।
शुद्ध्याश्रयर्क्षविवरे यदि नो विलग्नं
सैकर्क्षमेतदुदितं विपरीतमस्मात् ॥ ५४ ॥

विद्यागुर्व्योः साधनं पुण्यसद्मन्यूनो जीवो वासरे व्यस्तमस्मात् ।
नक्तं प्रागत्स्याद्यशोऽस्रोनपुण्यं माहात्म्यं स्यादुक्तवत्तद्विलोमम् ॥ ५५ ॥

रात्रौ शुक्रं शोधयेत्सौरितोऽह्नि व्यस्तं नक्तं पूर्ववच्छेषमत्र ।
आशाख्यं स्याच्छोधयेत्पौरपालं पृथ्वीपुत्राद्व्यस्तमस्मादुपायाम् ॥ ५६ ॥

सामर्थ्याख्यं गात्रपेऽस्रे गिरीशाच्छुद्ध्येत्प्राग्वत्सन्ततं सोदराख्यम् ।
नीलोनेज्यान्नित्यमूह्यं दिवेन्दुं शुद्ध्येत्सूरेर्नक्तमर्कं क्रमेण ॥ ५७ ॥

देयौ भास्वद्गौरगू गौरवारव्यं कार्या रीत्या प्रोक्तया सैकतेह ।
आर्केरर्कं शोधयेद्राजतातौ वामं रात्रौ मातृसद्मेन्दुतोऽच्छम् ॥ ५८ ॥

प्रोज्झ्य व्यस्तं नक्तमङ्गोद्भवारव्यं नित्यं ग्लावं गीष्पतेर्जीवितारव्यम् ।
घस्रे पूज्यं पङ्कुतोऽपास्य वामं रात्रौ मात्रा तुल्यमम्बु प्रकल्प्यम् ॥ ५९ ॥

जो ' ग्रह ' घटाया जाता है वह ' शोध्य ' और जिस ग्रह में घटाया जाता है वह ' शोधक ' होता है । दिन मे वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा में सूर्य को हीनकरे तब जो शेष बचे उस में लग्न को युक्तकरे तब ' पुण्यसहम ' होता है । एवं रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य में चन्द्रमा को हीनकरे तब जो शेष बचे उस में लग्न को युक्त करे तब ' पुण्य सहम ' होता है । यदि शोध्य ग्रह की राशि से शुद्ध्याश्रय (शोधक) ग्रह की राशि के अन्तर्गत वर्ष प्रवेश के लग्न की राशि न हो तो पूर्वोक्त विधि से साधित पुण्य सहम की राशि में १ राशि को युक्तकरे तब ' स्पष्ट पुण्य सहम ' होता है । यदि शोध्य ग्रह की राशि से शोधक ग्रह की राशि के अन्तराल में लग्न की राशि हो तो उक्त रीति से साधित पुण्यसहम की राशि में १ राशि को युक्त न करे अर्थात् पूर्वोक्त रीति से साधित पुण्य सहम ही स्पष्ट पुण्य सहम होता हैं । यह संस्कार सब वक्ष्यमाण सहमों के साधन करने में ग्रहण करना चाहिए । विद्या और गुरु सहम का साधन पुण्य सहम से विपरीत करे अर्थात् दिन में सूर्य में चन्द्रमा को हीनकरे और रात्रि में चन्द्रमा में सूर्य को हीनकरे तब जो शेष बचे उस में लग्न को युक्तकरे । तदनन्तर ' शोध्यखगस्य राशेः शुद्ध्याश्रयर्क्षविवरे यदि नो विलग्नं सैकर्क्षम्' इत्यादि संस्कार करे तब ' स्पष्ट गुरु ' तथा ' विद्यासहम ' होते हैं । दिन में गुरु में पुण्य सहम को हीनकरे और रात्रि में पुण्यसहम में गुरु को हीनकरे तब जो शेष बचे उस में लग्न को युक्त करके सैकता इत्यादि संस्कार करे तब ' यश सहम ' होता है। दिन में पुण्य सहम में मङ्गल को हीनकरे और रात्रि में मङ्गल में पुण्य सहम को हीन

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करे तब 'माहात्म्य सहम' होता है। दिन में शनि में शुक्र को शोधन करे और रात्रि में शुक्र में शनि को हीन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'आशा सहम' होता है। दिन में मङ्गल में लग्नेश को और रात्रि में लग्नेश में मङ्गल को शोधन करके लग्न को युक्तकरे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'सामर्थ्य सहम' होता है। यदि लग्नेश मङ्गल हो तो दिन तथा रात्रि में गुरु में मङ्गल को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'सामर्थ्य सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में गुरु में शनि को हीनकरे तब जो शेष बचे उस में लग्न को युक्त करके सैकता संस्कार करने से 'भ्रातृ सहम' होता है। दिन में गुरु में चन्द्रमा को शोधन करके सूर्य को युक्त करे और रात्रि में गुरु में सूर्य को शोधन करके चन्द्रमा को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'गौरव सहम' होता है। परन्तु इस सहम के साधन में सूर्य तथा चन्द्रमा को लग्न के समान युक्त किया गया है अतः शोध्य ग्रह की राशि से शोधक ग्रह की राशि के अन्तराल में सूर्य की राशि वा चन्द्रमा की राशि न हो तो सैकता संस्कार करे। जहां लग्न योग के स्थान में अन्य किसी का योग किया गया हो वहां उक्त नियम को व्यवहार में लाना चाहिए। दिन में शनि में सूर्य को और रात्रि में सूर्य में शनि को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'राजसहम' तथा 'तात-सहम' होते हैं। दिन में चन्द्रमा में शुक्र को और रात्रि में शुक्र में चन्द्रमा को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'मातृसहम' होता है। दिन वा रात्रि में गुरु में चन्द्रमा को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'पुत्रसहम' होता है। दिन में शनि में गुरु को और रात्रि में गुरु में शनि को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'जीवित सहम' होता है। मातृ सहम के समान जल सहम को भी साधे अर्थात् मातृसहम का लग्न और जल सहम का लग्न एक ही होता है।

—: उदाहरण :—

यहां वर्ष प्रवेश रात्रि में है। अतः स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ में स्पष्ट चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन कियातो ११।१२।८।५४ शेष बचे। इन में स्पष्ट लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।२८।२९।३६ राश्यादि हुए। यहां 'चन्द्रमा' 'शोध्य' और 'सूर्य' 'शोधक' है इसलिए चन्द्रमा की राशि कर्क से और सूर्य की राशि मिथुन के अन्तराल में लग्न की वृष राशि के आजाने से पूर्वागत राश्यादि ०।२८।२९।३६ में १ युक्त न किया अर्थात् वही राश्यादि ०।२८।२९।३६ 'पुण्य सहम' हुआ।

यहां रात्रि में वर्ष प्रवेश है अतः स्पष्ट चन्द्र ३।९।१५।४९ में स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ को हीन किया तो ०।१७।५१।६ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो २।४।११।४८ राश्यादि हुए। यहां शोध्य सूर्य मिथुन राशि में और शोधक चन्द्रमा कर्क राशि में है। मिथुन और कर्क के अन्तराल में वृष लग्न न होने से पूर्वागत राश्यादि २।४।११।४८ में १ राशि को युक्त किया तो ३।४।११।४८ 'विद्या' तथा 'गुरु सहम' हुए।

पुण्यसहम ०।२८।२९।३६ में स्पष्ट गुरु ०।१७।५४।४१ को किया तो ०।१०।३४।५५ शेषबचे। इनमें लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।२६।५५।३७ राश्यादि हुए। लग्न की वृष राशि शोध्यक के अन्तराल में नहीं है अतः पूर्वागत राश्यादि में १ राशि को युक्त किया तो २।२६।५५।३७ 'यशःसहम' हुआ स्पष्ट मङ्गल ३।८।१८।७ में पुण्य सहम ०।२८।२९।३६ को हीन किया तो २।९।४८।३१ शेषबचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ३।२६।९।१३ राश्यादि हुए। यहां लग्न राशि शोध्य शोधक के अन्तराल

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

में है इसलिए पूर्वागत राश्यादि ३।२६।९।१३ में १ राशि को युक्त न किया यही 'स्पष्ट माहात्म्य सहम' हुआ। स्पष्ट शुक्र २।३।५७।४२ में शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो १।१५।२२।५७ शेषवचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ३।१।४३।३९ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार के अभाव होने से ३।१।४३।३९ 'आशा सहम' हुआ।

लग्नेश शुक्र २।३।५७।४२ में मङ्गल ३।८।१८।७ को हीन किया तो १०।२५।३९।३५ शेष वचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।१२।०।१७ राश्यादि हुए। यहां सैकता का अभाव है अतः ०।१२।०।१७ 'सामर्थ्य सहम' हुआ।

स्पष्ट गुरु ०।१७।५४।४१ में शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो ११।२९।१९।५६ शेष वचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।१५।४०।३८ राश्यादि हुए। यहां सैकता का अभाव है अतः १।१५।४०।३८ 'भ्रातृ सहम' हुआ।

स्पष्ट गुरु ०।१७।५४।४१ में सूर्य २।२१।२४।४३ को हीन किया तो ९।२६।२९।५८ शेष वचे। इन में चन्द्रमा ३।९।१५।४९ को युक्त किया तो १।५।४५।४७ राश्यादि हुए। यहां सैकता का अभाव है अतः १।५।४५।४७ 'गौरव सहम' हुआ।

स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ में शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो २।२।४९।५८ शेष वचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ३।१९।१०।४० राश्यादि हुए। यहां सैकता का अभाव है अतः ३।१९।१०।४० 'राज' तथा 'तात सहम' हुए।

स्पष्ट शुक्र २।३।५७।४२ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो १०।२४।४१।५३ शेष वचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।११।२।३५ राश्यादि हुए। यहां सैकता का अभाव है अतः ०।११।२।३५ 'मातृ सहम' हुआ।

स्पष्ट गुरु ०।१७।५४।४१ में चन्द्रमा ३।९।१५।४९ को हीन किया तो ९।८।३८।५२ शेष वचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १०।२४।५९।३४ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो ११।२४।५९।३४ 'पत्रसहम' हुआ।

स्पष्ट गुरु ०।१७।५४।४१ में शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो ११।२९।१९।५६ शेष वचे इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।१५।४०।३८ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो १।१५।४०।३८ 'जीवित सहम' हुआ।

मातृ सहम ०।११।२ ३५ यही 'जलसहम' हुआ।

मित्रादि सहम साधन रीतिः—

अपास्य पुण्यं गुरुसद्मतो निशि वामं तदच्छेन युतं च सैकता।
पूर्वोक्तरीत्या ऽङ्गवदादिमा बुधा मित्रं जगुःकर्म बुधं कुजान्निशि ॥ ६० ॥

वामं स्मृतं रुक् सततं तनोर्विधुमपास्य कामो ऽङ्गपमिन्दुतो दिवा।
व्यस्तं निशीनाद्विधुमङ्गपं सदा कलिः क्षमा ऽस्त्रं गुरुतो विशोधयेत् ॥ ६१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रात्रौ विलोमं प्रथमोक्तरीतितः शास्त्रं गुरोः पङ्गुमपास्य वासरे ।
तम्यां प्रतीपं ज्ञयुतिश्च सैकता बन्ध्वाख्यमिन्दुं बुधतो दिवानिशम् ॥ ६२ ॥

संशोधयेन्नक्तमदोऽस्तु बन्दकं व्यस्तं दिवाऽदो मृतिरिन्दुमष्टमात् ।
प्रोज्झ्योक्तवत्पिङ्गलपुत्रयोगतः शुद्धे शुभेशे शुभतःसदोक्तवत् ॥ ६३ ॥

देशान्तरं स्याद् धनमर्थपं धनात्त्यजेत्सदा पूर्ववदच्छतो रविम् ।
सदाऽन्यदाराह्वयमुक्तवत्ततोऽन्यकर्म्म मन्दं हिमगोस्त्यजेन्निशि ॥ ६४ ॥

वामं वणिग्वासरबन्दकोक्तवत्सदा विवाहाभिधमार्किमच्छतः ।
विशोध्य नित्यं गुरुतो बुधं त्यजेद् भवेत्प्रसूतिर्निशि वाममीरितम् ॥ ६५ ॥

दिन में गुरु सहम में पुण्य सहम को शोधन करके शुक्र को युक्त करे और रात्रि में पुण्यसहम में गुरु सहम को हीन करके शुक्र को युक्त करे। तदन्तर सैकता संस्कार करने से 'मित्रसहम' होता है। दिन में मङ्गल में बुधं को और रात्रि में बुध में मङ्गल को हीन करके लग्न युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'कर्म सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में लग्न में चन्द्रमा को हीन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'रोग सहम' होता है। दिन में चन्द्रमा में लग्नेश को और रात्रि में लग्नेश में चन्द्रमा को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करे तब 'मन्मथ सहम' होता है। परन्तु लग्न का स्वामी चन्द्रमा हो तो दिनमें तथा रात्रि में सूर्य में लग्नेश चन्द्रमाको शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'मन्मथ सहम' होता है। दिन में गुरु में मङ्गल को और रात्रि में मङ्गल में गुरु को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'कली' तथा 'क्षमा सहम' होते हैं। दिन में गुरु में शनि को शोधन करके बुध को युक्त करे और रात्रि में शनि में गुरु को शोधन करके बुध को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'शास्त्र सहम' होता है। दिन में तथा रात्रि में बुध में चन्द्रमा को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'बन्धु सहम' होता है। रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो बन्धु सहम ही 'बन्दकसहम' होता है। यदि दिन में वर्ष प्रवेश हो तो विपरीत क्रिया करे अर्थात् चन्द्रमा में बुध को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'बन्दक सहम' होता है। दिन में तथा रात्रि में अष्टमभाव में चन्द्रमा को हीन करके शनि को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'मृत्युसहम' होता है। दिन तथा रात्रि में नवमभाव में नवमेश को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'देशान्तर सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में धन भाव में धनेश को हीन करके लग्न को युक्त करें। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'धन सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में शुक्र में सूर्य को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'अन्यदारा सहम' होता है। दिन में चन्द्रमा में शनि को और रात्रि में शनि में चन्द्रमा को हीन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'अन्य कर्म सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में बन्दक सहम के समान वणिक् सहम को साधे अर्थात् दिन तथा रात्रि में चन्द्रमा में बुध को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'वाणिज्य सहम होता है। दिन तथा रात्रि में शुक्र में शनि को हीन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'विवाह सहम' होता है। दिन में गुरु में बुध को और रात्रि में बुध में गुरु को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'प्रसूति सहम' होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

पुण्य सहम ०।२८।२९।३६ में गुरु सहम ३।४।११।४८ को हीन किया तो ९।२४।१७।४८ शेष बचे। इन में शुक्र ३।२।५७।४२ को युक्त किया तो ११।२८।१५।३० राश्यादि हुए। यहां शोध्य शोधक की राशियों के अन्तराल में शुक्र की मिथुन राशि नहीं है अतः पूर्वागत राश्यादि ११।२८।१५।३० में १ राशि को युक्त किया तो ०।२८।१५।३० 'मित्र सहम' हुआ।

स्पष्ट बुध ३।९।५।२७ में मंगल ३।८।१८।७ को हीन किया तो ०।०।४७।२० शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।१७।८।२ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो २।१७।८।२ 'कर्म्म सहम' हुआ।

स्पष्ट लग्न १।१६।२०।४२ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो १०।७।४।५३ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ११।२३।२५।३५ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव में अतः शेष राश्यादि ११।२३।२५।३५ 'रोगसहम' हुआ। लग्नेश शुक्र २।३।५७।४२ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो १०।२४।४१।५३ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।११।२।३५ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः ०।११।२।३५ 'मन्मथ सहम' हुआ।

स्पष्ट भौम ३।८।१८।७ में गुरु ०।१७।५४।४१ को हीन किया तो २।२०।२३।२६ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ४।६।४४।८ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः शेष राश्यादि ४।६।४४।८ 'कलि' तथा 'क्षमा सहम' हुए।

स्पष्ट शनि ०।१८।३४।४५ में गुरु ०।१७।५४।४१ को हीन किया तो ०।०।४०।४ शेष बचे। इन में बुध ३।९।५।२७ को युक्त किया तो ३।९।४५।३१ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो ४।९।४५।३१ 'शास्त्र सहम' हुआ।

स्पष्ट बुध ३।९।५।२७ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो ११।२९।४९।३८ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।१६।१०।२० राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः १।१६।१०।२० 'बन्धु सहम' हुआ। रात्रि में वर्ष प्रवेश होने के कारण बन्धु सहम १।१६।१०।२० ही 'बन्दक सहम' हुआ।

अष्टम भाव ८।१०।३९।४८ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो ५।१।२३।५९ शेष बचे। इन में शनि ०।१८।३४।४५ को युक्त किया तो ५।१९।५८।४४ राश्यादि हुए। इन में सैकता किया तो ६।१९।५८।४४ 'मृत्युसहम' हुआ।

नवमभाव ९।४।५८।५४ में नवमेश शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो ८।१६।२४।९ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १०।२।४४।५१ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः १०।२।४४।५१ 'देशान्तर सहम' हुआ। धनभाव २।१०।३९।४८ में धनेश बुध ३।९।५।२७ को हीन किया तो ११।१।३४।२१ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।१७।५५।३ राश्यादि हुए। यहां सैकता का अभाव है अतः ०।१७।५५।३ 'धनसहम' हुआ।

स्पष्ट शुक्र २।३।५७।४२ में सूर्य २।२१।२४।४३ को हीन किया तो ११।१२।३२।५९ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।२८।५३।४२ राश्यादि हुए यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः ०।२८।५३।४१ 'अन्यदारा सहम' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्पष्ट शनि ०।१८।३४।४५ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो ९।९।१८।५६ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १०।२५।३९।३८ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो ११।२५।३९।३८ 'अन्यकर्म सहम' हुआ।

स्पष्ट चन्द्र ३।९।१५।४९ में बुध ३।९।५।२७ को हीन किया तो ०।०।१०।२२ शेष बचे। इन में १।१६।२० लग्न को युक्त किया तो १।१६।३१।४ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो २।१६।३१।४ 'व्यय सहम' हुआ।

स्पष्ट शुक्र २।३।५७।४२ में शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो १।१५।२२।५७ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ३।१।४३।३९ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है। अतः ३।१।४३।३९ 'विवाह सहम' हुआ।

स्पष्ट बुध ३।९।५।२७ में गुरु ०।१७।५४।४१ को हीन किया तो २।२१।१०।४६ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ४।७।३१।२८ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः ४।७।३१।२८ 'प्रसूति सहम' हुआ।

कार्य सहमादियों की साधन रीतिः—

कार्यसिद्धिरिनजाद् दिवा रविं नक्तमिन्दुमिनजाद्विशोधयेत्।
सूर्यसोमभपयोगतः सदा शोधयेद्रविसुताद्विधुं क्षिपेत् ॥ ६६ ॥
द्वेष्यं सदैवोक्तदिशा समीरितं सन्तापमारं गितनस्त्यजेत्सदा।
श्रद्धा पुरावत्सततं परित्यजेत्पुण्यं तु विद्याभिधनः पुरोक्तवत् ॥ ६७ ॥
प्रीतिस्ततो गात्रबले यशःसमे जाड्यं कुजान्मंदमपास्य वामकम्।
रात्रौ ज्ञयोगाद्रिपुरस्ततोऽसितं त्यजेद्विलोमं निशि शौर्यसंज्ञकम् ॥ ६८ ॥

दिन में, शनि में सूर्य को शोधन करके सूर्य राशि स्वामी को युक्त करे और रात्रि में, शनि में चन्द्रमा को शोधन करके चन्द्र राशि स्वामी को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'कार्यसिद्धि सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में, शनि में चन्द्रमा को शोधन करके षष्ठ भाव को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'सन्ताप सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में, शुक्र में मङ्गल को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'श्रद्धा सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में, विद्या सहम में पुण्यसहम को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'प्रीति सहम' होता है। यशः सहम के समान ही बल (सैन्य) तथा 'अङ्ग' (देह) ये दोनों सहम होते हैं अर्थात् यशः सहम का लग्न ही उक्त दोनों सहमों का लग्न होता है। दिन में, मङ्गल में शनि को शोधन करके बुध को युक्त करे और रात्रि में, शनि में मङ्गल को शोधन करके बुध को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'जाड्य सहम' होता है। दिन में, मङ्गल में शनि को और रात्रि में शनि में मङ्गल को हीन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'रिपु सहम' होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्पष्ट शनि ०।१८।३४।४५ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो ९।९।१८।५६ शेष बचे। इन में चन्द्र राशि कर्क का स्वामी चन्द्र ३।९।१५।४९ को युक्त किया तो ०।१८।३४।४५ राश्यादि हुए। यहां सैकता का अभाव है अतः ०।१८।३४।४५ 'कार्यसिद्धि सहम हुआ।

स्पष्ट शनि ०।१८।३४।४५ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो ९।९।१८।५६ शेष बचे। इष्ट में षष्ठ भाव ६।१०।३९।४८ को युक्त किया तो ३।१९।५८।४४ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो ४।१९।५८।४४ 'सन्ताप सहम' हुआ।

स्पष्ट शुक्र २।३।५७।४२ में मङ्गल ३।८।१८।७ को हीन किया तो १०।२५।३९।३५ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।१२।०।१७ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः पूर्वागत राश्यादि ०।१२।०।१७ 'श्रद्धा सहम' हुआ।

विद्या सहम ३।४।११।४८ में पुण्य सहम ०।२८।२९।३६ को हीन किया तो २।५।४२।१२ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ३।२२।२।५४ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः पूर्वागत राश्यादि ३।२२।२।५४ 'प्रीति सहम' हुआ।

यशः सहम २।२६।५५।३७ है। यही 'बल' (सैन्य) तथा 'अङ्ग' (देह) सहम हुए।

स्पष्ट शनि ०।१८।३४।४५ में मङ्गल ३।८।१८।७ को हीन किया तो ९।१०।१६।३८ शेष बचे। इन में बुध ३।९।५।२७ को युक्त किया तो ०।१९।२२।५ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो १।१९।२२।५ 'जाड्य सहम' हुआ।

स्पष्ट शनि ०।१८।३४।४५ में मङ्गल ३।८।१८।७ को हीन किया तो ९।१०।१६।३८ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १०।२६।३७।२० राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो ११।२६।३७।२० 'रिपुसहम' हुआ।

शौर्यसहमादियों की साधन रीतिः—

पाप्युनपुण्यान्निशि वाममुक्तवदुपाय आर्केधिपणं त्यजेन्निशि।
व्यस्तं दरिद्रं परिशोधयेद्बुधं पुण्याद्रजन्यां बुधयुग्विपर्ययम् ॥ ६९ ॥

व्यापारं बुधमसृजस्त्यजेत्सदाम्बु—
पाताम्ब्यं रवितनयाद्विधुं विशोध्य।
व्यत्यस्तं निशितु पुरोक्तवत्त्यजार्यं!
भानूच्चादिवसमणिं विधुं रजन्याम् ॥ ७० ॥

तत्तुङ्गादिह गुरुता पुरोक्तिवत्स्यात्
कर्कार्द्धादिनतनयं त्यजेद्वसत्याम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वामं स्यात्सलिलसूतिर्यमोनपुण्यं
शर्व्वर्य्यां निगदति बन्धनं त्रिलोमम् ॥ ७१ ॥

दिन में, पुण्य सहम में मङ्गल को और रात्रि में, मङ्गल में पुण्य सहम को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'शौर्य्य सहम' होता है। दिन में, शनि में गुरु को और रात्रि में, गुरु में शनि को शोधन करके लग्न को युक्तकरे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'उपायसहम' होता है। दिन में, पुण्यसहम में बुध को और रात्रि में, बुध में पुण्य सहम को शोधन करके और बुध को ही युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'दरिद्र सहम' होता है। दिन तथा रात्रि में, मङ्गल में बुध को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'व्यापार सहम' होता है। दिन में, शनि में चन्द्रमा को और रात्रि में, चन्द्रमा में शनि को शोधन करके लग्न को युक्तकरे। तदन्तर सैकता संस्कार करने से 'जलपात सहम' होता है। दिन में सूर्य को सूर्य के राश्यादि उच्च ०।१०।०।० में शोधन करके लग्न को युक्तकरे और रात्रि में चन्द्रमा को चन्द्रमा के राश्यादि उच्च १।३।०।० में शोधन करके लग्न को युक्तकरे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'गुरुता सहम' होता है। दिन में शनि को कर्कार्द्ध ३।१५।०।० में शोधन करके लग्न को युक्तकरे और रात्रि में कर्कार्द्ध ३।१५।०।० को शनि में शोधन करके लग्न को युक्तकरे। तदनन्तर सैकता क ने से 'जलमार्ग सहम' होता है। दिन में, पुण्यसहम में शनि को और रात्रि में, शनि में पुण्य सहम को हीन के लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता करने से 'बन्धन सहम' होता है।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट मङ्गल ३।८।१८।७ में पुण्य सहम ०।२८।२९।३६ को हीन किया तो २।९।४८।३१ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ३।२६।९।१३ 'राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः ३।२६।९।१३ 'शौर्य्यसहम' हुआ।

स्पष्ट गुरु ०।१७।५४।११ में शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो ११।२९।१९।५६ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।१५।४०।३८ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः १।१५।४०।३८ 'उपाय सहम' हुआ।

स्पष्ट बुध ३।९।५।२७ में पुण्यसहम ०।२८।२९।३६ को शोधन किया तो २।१०।३५।५१ शेष बचे। इन में बुध ३।९।५।२७ को युक्त किया तो ५।१९।४१।१८ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः ५।१९।४१।१८ 'दरिद्र सहम' हुआ।

स्पष्ट मङ्गल ३।८।१८।७ में बुध ३।९।५।२७ को हीन किया तो ११।२९।१२।४० शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।१५।३३।२२ 'राश्यादि' हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः १।१५।३३।२२ 'व्यापार सहम' हुआ।

स्पष्ट चन्द्र ३।९।१५।४९ में शनि ०।१८।३४।४५ को हीन किया तो २।२०।४१।४ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ४।७।१।४६ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः ४।७।१।४६ 'जलपात सहम हुआ।

चन्द्रोच्च १।३।०।० में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो ९।२३।४४।११ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ११।१०।४।५३ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो ०।१०।४।५३ 'गुरुता सहम' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्पष्ट शनि ०।१८।३४।४५ में कर्कार्द्ध ३।१५।०।० को हीन किया तो ९।३।३४।४५ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १०।१९।५५।२७ राश्यादि हुए। इन में सैकता संस्कार किया तो ११।१९।५५।२७ 'जलमार्ग सहम' हुआ।

स्पष्ट शनि ०।१८।१४।४५ में पुण्यसहम ०।२८।२९।३६ को हीन किया तो ११।२०।५।९ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो १।६।२५।५१ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः १।६।२५।५१ 'बन्धन सहम' हुआ।

कन्या तथा अश्व सहम साधन रीतिः—

शश्वत्कलेशं परिशोधयेत्कवेः कन्याभिधं पूर्ववदश्वसञ्ज्ञकम्।
अपास्य पुण्यात्तपनं दिवा भवयोगात्तमायां विपरीतमुक्तवत् ॥ ७२

दिन तथा रात्रि में, शुक्र में चन्द्रमा को शोधन करके लग्न को युक्त करे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'कन्या सहम' होता है। दिन में, पुण्यसहम में सूर्य को शोधन करके एकादश भाव को युक्तकरे और रात्रि में, सूर्य में पुण्यसहम को शोधन करके एकादश भाव को युक्तकरे। तदनन्तर सैकता संस्कार करने से 'अश्व सहम' होता है।

— :उदाहरण :—

स्पष्ट शुक्र २।३।५७।४२ में चन्द्र ३।९।१५।४९ को हीन किया तो १०।२४।४१।४३ शेष बचे। इन में लग्न १।१६।२०।४२ को युक्त किया तो ०।११।२।३५ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः पूर्वागत राश्यादि ०।११।२।३५ 'कन्या सहम' हुआ।

स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ में पुण्यसहम ०।२८।२९।३६ को हीन किया तो १।२२।५५।७ शेष बचे। इन में एकादश भाव ११।४।५८।५४ को युक्त किया तो ०।२७।५४।१ राश्यादि हुए। यहां सैकता संस्कार का अभाव है अतः पूर्वागत राश्यादि ०।२७।५४।१ 'अश्व सहम' हुआ।

सहमों के फल पाक के समय का परिज्ञानः—

स्वेशोनितं च सहमं निहतास्तदंशाः
स्वीयोदयैर्गगनशून्यहुताशभक्ताः।
लब्धैरहोभिरिह तत्सहमस्य पाको
दायादिके निजपतेस्तदसम्भवे वा ॥ ७३ ॥

प्रत्येक राश्यादि सहम में सहम के स्वामीके राश्यादि को हीनकरे तब जो शेष बचे उसके अंशादि को सहम की राशि के स्वोदय से गुणकर ३०० से भाग दे लब्ध दिनादि होते हैं। लब्ध दिनादियों में ३० से भाग दे लब्ध राश्यादि होते हैं। उन में वर्ष प्रवेश कालीन स्पष्ट सूर्य को युक्त करके जो राश्यादि हों उनके तुल्य सूर्य होनेपर सहम का फलपाक समय होता है अथवा सहमेश की दशा अन्तर्दशा में सहम का फल होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

पुण्य सहम ०।२८।२९।३६ में पुण्य सहम के स्वामी भौम ३।८।१८।७ को हीन किया तो ९।२०।११।२९ शेष बचे। इन के अंशादि २९०।११।२९ को सहम की राशि मेष के स्वोदय २०८ से गुणातो ६०३५९।४८।३२ ६ हुए। इन में ३०० से भाग दिया तो २०१।११।५८ दिनादि हुए। दिन २०१ में ३० से भाग दिया तो लब्ध मास और शेष २१ दिन हुए। इसप्रकार ६ मास २१ दिन ११ घटी ५८ पल में स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ को युक्त किया तो ९।१२।३६।४१ सूर्य राश्यादि होनेपर पुण्य सहम का फल होगा।

सहमलग्नेश के बलाबलत्व का परिज्ञानः—

स्वोच्चादिसत्पदं प्राप्तः सहमेशोऽङ्गदर्शकः।
स्याद्बली लोकयेल्लग्नं नासौ निर्बल ईरितः ॥ ७४ ॥

सहम का स्वामी अपनी उच्चादि राशि में हो अथवा शुभ स्थान में हो और लग्न को देखता हो तो सहम स्वामी बली होता है। यदि सहमेश निजोच्चादि स्थान में स्थित होकर सहम लग्न को न देखता हो तो सहमेश बलवान् नहीं होता है।

सहमेश के बलाबल से सहम की वृद्धि ह्रास का परिज्ञानः—

युक्तेक्षितं यत्सहमं शुभेशैर्नाथो बली तत्सहमप्रपुष्टिः।
सन्नायकैर्नान्वितवीक्षितं यन्नो सम्भवस्तस्य भवेत्तदानीम् ॥ ७५ ॥

जो 'सहम' शुभग्रह तथा स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो एवं सहमेश बलवान् हो तो उस सहम की 'वृद्धि' होती है। जो 'सहम' शुभग्रह तथा स्वामी से दृष्ट और युक्त न हो तो उस का सम्भव नहीं होता है अर्थात् वह सहम नाम सदृश फल देने में असमर्थ होता है।

सहमों के फलाभाव के कारण का परिज्ञानः—

यद्युक्तदृष्टं विभुनाऽत्रसद्मना पापैः खगैर्वाथ तदित्थशालितैः।
व्रजेद्विनाशं यदि सम्भवेऽपि तत्तेनेदमादौ जनने विचार्य्यताम् ॥ ७६ ॥

जो 'सहम' अष्टमेश अथवा पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो अथवा अष्टमेश वा पापग्रह से जिस सहमेश का इत्थशाल हो उस की फल प्राप्ति की सम्भावना होने पर भी वह सहम नाश को प्राप्त होता है अर्थात् नाम सदृश फलको नहीं देता है। इस लिए जन्म समय में प्रथम सहमों के बलाबल का विचार करे।

इत्थं भवेऽब्दे सहमाभिधानि विचिन्तनीयान्यखिलानि सद्भिः।
द्विण्मृत्युदारिद्र्यरुजाकलीनां व्यस्तं फलं सच्छुभदृष्टियोगात् ॥ ७७ ॥

इस प्रकार पण्डित जन जन्म काल में तथा वर्षप्रवेश समय में सम्पूर्ण सहमों का विचार करे। शत्रु, मृत्यु, दारिद्र्य, रोग, कलि इनपाँचों सहमों का शुभाशुभफल शुभदृष्टि योग से विपरीत होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहमसारणीयम् ' ।

सहमनाम.	दिवा	रात्री	सहमनाम.	दिवा	रात्री	सहमनाम.	दिवा	रात्री	सहमनाम.	दिवा	रात्री.
पुण्यम्	चं-र+ल.	र-चं+ल.	मित्रम्	गु.स-पु.स.+ल.	पु.स-गु.स.+ल.	भ्राता	बृ.-श+ल.	बृ.-श+ल.	माता	चं-शु+ल.	शु-चं+ल.
गुरुः	र-चं+ल.	चं-र+ल.	माहात्म्यम्	पु.स-मं+ल.	मं-पु.स+ल.	गौरव	बृ.-चं+र.	बृ.-र+चं	सुतः	बृ.-चं+ल.	बृ.-चं+ल.
ज्ञानम्	र-चं+ल.	चं-र+ल.	आशा	श-शु+ल	शु-श+ल.	राजा	श-र+ल.	र.-श+ल.	जीवितम्	श-बृ+ल.	बृ-श+ल.
यशः	बृ-पु+ल.	पु-बृ+ल.	सामर्थ्यम्	मं-लग्नेश+ल.	लग्नेश-मं+ल.	तातः	श-र+ल.	र-श+ल.	अम्बु	चं-शु+ल.	चं-शु.+ल.
सह.	दिवा	रात्री	स. ना.	दिवा	रात्री	स. ना.	दिवा	रात्री	स. ना.	दिवा	रात्री
कर्म्म	मं-बु+ल.	बु-मं+ल.	ऋतुः	अ.भा.-चं+श.	अ.भा.-चं+रा.	प्रसूति	गु.-बु.+ल.	बु.-बृ+ल.	मानीयम्	श-चं+ल.	चं-श+ल.
रोगः	ल-चं+ल.	ल-चं+ल.	परदेशः	ध.भा-ध. प.+ल.	ध.भा-ध.प+ल.	सन्तापः	श-चं+प.भा.	श.-चं.+प.भा.	रिपुः	मं-श+ल.	श.-मं+ल.
मन्मथः	चं-ल.प.+ल.	चं-ल.प+ल.	धनम्	द्वि-द्वि.प.+ल.	द्वि-द्वि.प.+ल.	श्रद्धा	शु-मं+ल.	शु-मं+ल.	शौर्य्यम्	पु-मं+ल.	मं-पु+ल.
कलिः	गु-मं+ल.	मं-गु.+ल.	अन्यस्त्री	शु-र+ल.	शु-र+ल.	प्रीतिः	बि-पु+ल.	बि-पु+ल.	उपायः	श-बृ+ल.	गु.-श+ल.
क्षमा	गु-मं+ल.	मं-बृ+ल.	अन्यकर्म	चं-श+ल.	श-चं+ल.	बलम्	गु-पु+ल.	पु-बृ+ल.	दारिद्र्यम्	पु-बु+बु.	बु.-पु+बु.
शास्त्रं	गु.-श+बु.	श.-गु.+बु.	वणिक्	चं-बु+ल.	चं-बु+ल.	तनुः	गु-पु+ल.	गु-पु+ल.	गुरुता	०।१०-र+ल.	१।३-चं+ल.
बन्धु	बु-चं+ल.	बु-चं+ल.	कार्यसिद्धिः	श-र+र.प.	श.-चं+चं.प.	जाड्यम्	मं-श+बु	श-मं+बु	अम्बुपथः	३।१५-श+ल.	श-३।१५+ल.
बन्धकः	बु-चं+ल.	बु-चं+ल.	विवाहः	शु-श+ल.	शु-श+ल.	व्यापारः	मं-बु+ल.	मं-बु+ल.	बन्धनम्	पु-श+ल.	श-पु+ल.
									दुहिता	शु-चं+ल.	शु-चं+ल.
									अधः	पु-र+ला.भा.	र-पु+ला.भा.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

ग्रहों के हीनांश साधन रीतिः—

राशीन्विना स्फुटखगान् सतनून्विधाया—
त्यल्पांशकं प्रथममत्र निवेश्य तस्मात् ।
पुष्टाधिपुष्टकलवक्रमतो ऽयमब्दे
दायक्रमो भवति सूरय आहुरेवम् ॥ ७८ ॥

स्पष्ट लग्न तथा स्पष्ट ग्रहों की राशि को हटाकर उन सब के मध्य में अत्यन्त अल्प अंशवाला ग्रह हो उस को प्रथम रखकर उस से अधिक अधिक अंशवाले ग्रहों को क्रमसे स्थापित करे वर्ष में यह 'दशाक्रम' होता है। इस प्रकार पण्डित जन कहते हैं।

२।२१।२४।४३ स्पष्ट सूर्य है। राशि २ को त्यागकर शेष अंशादि २१।२४।४३ 'सूर्य के हीनांश' हुए। ३।९।१५।४९ स्पष्ट चन्द्र है। राशि ३ को त्यागकर शेष अंशादि ९।१५।४९ 'चन्द्रमा के हीनांश' हुए। एवं अन्य ग्रहों के हीनांशों को साधे। यहां सब से अल्प अंशवाला 'शुक्र' है अतः शुक्र के अंशादि ३।५७।४२ को प्रथम स्थापित किया। तदनन्तर शुक्र से अधिक अंशवाले भौम के अंशादि ८।१८।७ को स्थापित किया। एवं अन्य ग्रहों को स्थापित करे।

हीनांशाः'। 'उदाहरणमेतत्'।

शु.	मं.	बु.	चं.	ल.	सू.	श.	गु.
३	८	९	९	१६	१७	१८	२१
५७	१८	५	१५	२०	५४	३४	२४
४२	७	२७	४९	४२	४१	४५	४३

पात्यांश साधन रीतिः—

हीनं लवाद्यमधिकात्क्रमतो विशोध्य
शुद्धांशशेषकयुतिर्निखिलाभ्रगानाम् ।
मध्ये ऽधिकांश इह तत्प्रमितैव सा स्याद्
भाज्या तया ऽब्दमितिरत्र फलं ध्रुवाङ्कः ॥ ७९ ॥

अधिकांश वाले ग्रह में अल्पांश वाले ग्रहों को शोधकर जो शेष बचे वे 'अधिकांश वाले ग्रह के पात्यांश' होते हैं। इस प्रकार सब ग्रहों के पात्यांशों को साधकर उन का योग करे। लग्न सहित समस्त ग्रहों के मध्य में जो सब से अधिकांश वाला ग्रह हो उस के अंशादि के तुल्य वह योग होता है। वर्ष की मिति (३६० वा ३६५।१५३।१।३०) में उस योग से भाग दे लब्ध 'दिनादि ध्रुवाङ्क' होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

--:उदाहरणः—

सब से अल्प अंश वाला शुक्र है अतः शुक्र के अंशादि ३।५७।४२ को प्रथम स्थापित किया। तदनन्तर शुक्र से अधिक अंश वाले भौम के अंशादि ८।१८।७ में शुक्र के अंशादि ३।५७।४२ को हीन किया तो ४।२०।२५ 'भौम के पात्यांश' हुए। एवं मङ्गल से अधिक अंश वाले बुध के अंशादि ९।५।२७ में भौम के अंशादि ८।१८।७ को हीन किया तो ०।४७।२० 'बुध के पात्यांश' हुए। एवं अन्य ग्रहों के पात्यांशों को साधे।

'पात्यांशाः'। उदाहरणमेतत्'।

शु.	मं.	बु.	चं.	ल.	बृ.	श.	रा.	यो.
३	४	०	०	७	१	०	२	२१
५७	२०	४७	१०	४	३३	४०	४९	२४
४२	२५	२०	२२	५३	५९	४	५८	४३

यहां सब शुद्धांशों (पात्यांशों) का योग किया तो २१।२४।४३ 'भाजक' हुआ। अंश २१ को ६० से गुणा तो १२६० हुए। इन में २४ कला को युक्त किया तो १२८४ हुए। इन को पुनः ६० से गुणा तो ७७०४० हुए। इन में ४३ विकला को युक्त किया तो ७७०८३ 'भाजक पिण्ड' हुआ। भाज्य ३६० को ६० से गुणा तो २१६०० हुए। इन को पुनः ६० से गुणा तो १२९६००० 'भाज्य पिण्ड' हुआ। भाज्य पिण्ड १२९६००० में भाजक पिण्ड ७७०८३ से भाग दिया तो लब्ध १६।४८।४६।५७।५२ 'दिनादि ध्रुवाङ्क' हुआ।

दिनादिदशासाधन तथा दशेश निर्णयः—

ताञ्छुद्धभागान्विनिहन्तु तेन ध्रुवेण तद् व्योमसदो दशायाः।
घस्रादिमानं यदि हीनभागतुल्ये दशाऽऽद्या बलिनो ग्रहस्य ॥ ८० ॥
वीर्य्यस्य तुल्ये प्रथमाल्पभुक्तेरोजःसमत्वे यदि खेटतन्वोः।
लग्नाधिपव्योमसदोर्यदल्पभुक्तिस्तु तस्य प्रथमा दशा स्यात् ॥ ८१ ॥

प्रत्येक ग्रह के शुद्धांशों (पात्यांशों) को पृथक् पृथक् गोमूत्रिका रीति द्वारा दिनादि ध्रुव से गुणकर जो गुणन फल हो वह प्रत्येक 'ग्रह की दिनादि दशा' होती है। यहां दशाक्रम हीनांशों के क्रमसे होता है। परन्तु दो ग्रहों के हीनांश समान हों तो उन दोनों के मध्य में जिस ग्रह का पञ्चवर्गी बल अधिक हो उस ग्रह की प्रथम दशा और अल्प बल वाले ग्रह की दशा पश्चात् होती है। यदि उन दोनों ग्रहों का पञ्चवर्गीबल भी समान हो तो उन दोनों के मध्य में जिस ग्रह की अल्पगति हो उस ग्रह की प्रथम दशा होती है। यदि लग्न और ग्रह का बल समान हो तो लग्नेश और अन्य ग्रह के मध्य में जिस की अल्पगति हो उस की प्रथम दशा होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

शुक्र के शुद्धांश ३।५७।४२ को गोमूत्रिका रीति द्वारा दिनादि ध्रुव १६।४८।४६।५७।५२ से गुणा तो ६६।३६।२७।३९।२७ 'शुक्र की दिनादि दशा' हुई। एवं अन्य ग्रहों की दिनादि दशा को साधे।

'पात्यांशदशाक्रमः'। 'उदाहृतिरसौ'।

दशाधिपाः	शु.	मं.	बु.	चं.	ल.	सू.	श.	गु.	योगः
दशादिवसाः	६६	७२	१३	२	११९	२६	११	४७	३६०
	३६	५८	१५	५४	३	२०	१३	३७	०
	२७	२३	४९	१७	३४	८	३८	३९	०
	३९	५०	२	४२	५८	४५	३३	२६	०
	२७	१९	५५	५२	२५	५२	४३	२३	०
शकाब्दाः	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६३	१८६३	१८६३
दशाप्रवेशाकैः	२	४	७	७	७	११	०	१	२
	२१	२८	१०	२४	२७	२६	२२	३	२१
	२४	१	५९	१५	९	१३	३३	४७	२४
	४३	१०	३४	२३	४१	१७	२५	४	४३
	०	३९	२९	३२	१५	१४	५९	३३	०
	०	२७	४६	४५	३७	२	५४	३७	०

अन्तर्दशा साधन रीतिः—

दशाप्रमाणं परिकल्प्य हायनमानं प्रासाध्या हृतिरुक्तवर्त्मना।
प्राक्पात्यभागैर्हृतिरादिमा दशापतेस्तथा तत्क्रमतोऽपराहृतिः ॥ ८२ ॥

प्रत्येक रव्यादि ग्रह की पूर्वागत दशा के दिनादि मान को वर्षमान मानकर प्रत्येक ग्रह के पूर्वागत पात्यांशों से पूर्वोक्त विधि द्वारा अन्तर्दशा को साधे। अन्तर्दशा के दशाक्रम में दशापति की प्रथम अन्तर्दशा होती है और उसी के क्रम से अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा होती हैं।

—: उदाहरण :—

६६।३६।२८ शुक्रकी दिनादि दशा है। इसको वर्षमान मानकर दिन ६६ को ६० से गुणा तो ३९६० हुए। इन में ३६ घटी को युक्त किया तो ३९९६ हुए। इन को पुनः ६० से गुणा तो २३९७६० हुए। इन में २८ पलको युक्त किया तो २३९७८८ 'भाज्य पिण्ड' हुआ। इस में पूर्वागत भाजक पिण्ड ७७०८३ से भाग दिया तो लब्ध ३।६।३८।४८ 'दिनादि ध्रुवांक' हुआ। शुक्र के पूर्वागत पात्यांश ३।५७।४२ को दिनादि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ध्रुव ३।६।३८।४८ से गोमूत्रिका रीति द्वारा गुणा तो १२।१९।२५।५५ शुक्र की दिनादि अन्तर्दशा हुई। एवं अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा को साधे।

'शुक्रस्यान्तर्दशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

अन्तर्दशेशाः	शु.	मं.	बु.	चं.	ल.	गु.	श.	सू.	योगः
अन्तर्दशादिवसाः	१२	१३	२	०	२२	४	२	८	६६
	१९	३०	२७	३२	१	५२	४	४८	३६
	२५	५	१४	१४	४३	२१	३८	४३	२८
	५५	५३	३६	५४	२	४०	१८	४२	०
शकाब्दाः	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२
अन्तर्दशाप्रवेशार्कः	२	३	३	३	३	४	४	४	४
	२१	३	१७	१९	२०	१२	१७	१९	२८
	२४	४४	१४	४१	१३	१५	७	१२	१
	४३	८	१४	२९	४४	२७	४९	२७	११
	०	५५	४८	२४	१८	२०	०	१८	०

मुद्दादशा में दशेशों का परिज्ञानः—

हर्यैः समेता जनिभस्य संख्या युता गताब्दैः खगशेषिताऽब्दे।
इत्थं दशेशा रविचन्द्रभौमाहीज्यार्किसौम्यध्वजभार्गवाः स्युः ॥ ८३ ॥

जन्म नक्षत्र की अश्विन्यादि संख्या में ७ युक्त करे पुनः गतवर्षों की संख्या को युक्त करके ९ से तष्टकरे तब जो शेष बचे उस के तुल्य रवि, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र इस प्रकार वर्ष में 'दशेश' होते हैं।

—: उदाहरण :—

जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनी की अश्विन्यादि संख्या १२ में ७ युक्त किये तो १९ हुए। इन में ४३ गत वर्ष को युक्त किया तो ६२ हुए। इन में ९ से भाग दिया तो ८ शेष बचे। रवि से शेष संख्या ८ पर्यन्त गणना की तो 'केतु की प्रथम दशा' हुई। केतु, शुक्र, रवि, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध इस प्रकार मुद्दादशा का क्रम हुआ।

दशेशों के दिवसः—

वर्षे दिनानि स्युरिनात्पुराणा वियद्गुणा रूपदृशोऽब्धिभूताः
भुजङ्गवेदा गिरिवायुतुल्याभूभपिवो भूमियमाःखतर्काः ॥ ८४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१८ रवि के, ३० चन्द्रमा के, २१ भौम के, ५४ राहु के, ४८ गुरु के, ५७ शनि के, ५१ बुध के, २१ केतु के, ६० शुक्र के ये वर्ष में 'मुद्दादशा के दिन' हैं।

'मुद्दादशायां रव्यादीनां मासादयः'

दशेशाः	र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मासाः	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिवसाः	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

'मुद्दादशाक्रमः उदाहरणमेतत्:'

दशेशाः	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	
मासाः	०	२	०	१	०	१	१	१	१	
दिवसाः	२१	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	
शकाब्दाः	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२
स्पष्टार्कः	२	३	५	६	७	७	९	११	१	२
	२१	१२	१२	०	०	२१	१५	३	०	२१
मासाः	आषा.	श्रावणः	आश्विनः	कार्तिकः	मार्ग.	मार्ग.	माघः	चैत्रः	ज्येष्ठः	आषा.
ग. दि.	२३	१८	१३	१	१	२२	१६	४	१	२३

मुद्दादशा में मासदशा तथा दिनसाधन रीतिः—

एषां महोराशिलवेन मासजा आसां षडंशप्रमिता द्युसम्भवा।
मासप्रवेशद्युभतो दशा तथा दिनप्रवेशे दिनवेशलग्नतः ॥ ८५ ॥

प्रत्येक रव्यादि ग्रहों की अन्तर्दशा के दिनों में १२ से भाग दे लब्ध 'दिनादि मास दशा' होती है। एवं प्रत्येक ग्रह की दिनादि मास दशा में ६ से भाग दे लब्ध 'घट्यादि दिनदशा' होती है। मास प्रवेश के समय जो नक्षत्र वर्त्तमान हो कृत्तिका से उस नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उस को ९ से तष्ट करे शेष 'मासदशेश' होते हैं।

एवं दिन प्रवेश के समय जो राश्यादि लग्न हो उस राशि में जो नक्षत्र वर्त्तमान हो कृत्तिका से उस नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उस को १ से तष्ट करे शेष 'दिनदशेश' होते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'मासप्रवेशमुद्दादशादिनादिचक्रम्'।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
दि.	१	२	१	४	४	४	४	१	५
घ.	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०

'दिनप्रवेशमुद्ददशादिनादिचक्रम्।

ग्रहाः	सू.	चं	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
घ.	३	५	३	९	८	९	८	३	१०
प.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

—: उदाहरण :—

संवत् १९९७ श्रावण २३ प्रविष्ट, बुधवार, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में द्वितीय मास प्रवेश हुआ। कृत्तिका से मास प्रवेश नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी पर्यन्त गिना तो १० मिले। इन को ९ से तष्ट किया तो १ शेष बचा। सूर्य से शेष संख्या १ पर्यन्त गिना तो द्वितीय मास प्रवेश में 'सूर्य' प्रथम मास दशेश हुआ। संवत् १९९७ आषाढ २४ प्रविष्ट, रविवार, इष्ट घटी ५७ पल ४ स्पष्ट लग्न २।७।१०।० है। इस में आर्द्रा नक्षत्र वर्त्तमान है। कृत्तिका से आर्द्रा पर्यन्त गिना तो ४ मिले। सूर्य से लब्ध संख्या ४ पर्यन्त गिना तो द्वितीय दिन प्रवेश में 'राहु' प्रथम दिनदशेश हुआ।

द्वितीयमासप्रवेशे मुद्दादशाक्रमः।

ग्रहाः		सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
	दि.	१	२	१	४	४	४	४	१	५
	घ.	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०
	संवत्	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७
स्पष्टांकः	रा. २	२	२	२	३	३	३	३	३	३
	अं. २१	२२	२५	२७	१	५	१०	१४	१६	२१
	क. २४	५४	२४	९	३९	३९	२४	३९	२४	२४
	वि. ४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३

द्वितीयादिनप्रवेशे मुद्दादशाक्रमः।

	ग्र.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
	घ.	९	८	९	८	३	१०	३	५	३
	प.	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०
	संवत्	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७	१९९७
स्पष्टांकः	रा. २	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	अं. २१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	क. २४	३३	४१	५१	५९	३	१३	१६	२१	२४
	वि. ४३	४३	४३	१३	४३	१३	१३	१३	१३	४३

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मुद्दादशा में अन्तर्दशा साधन रीतिः—

वेदेभबाणागदिगङ्गगोऽक्षरसा गुणाः स्युस्तपनादिकानाम् ।
तैस्ताडिता स्वीयदशामितिर्या सान्तर्दशा स्याद् गगनाङ्गलब्धा ॥ ८६ ॥

४ सूर्य के, ८ चन्द्रमा के, ५ भौम के, ७ राहु के, १० गुरु के, ६ शनि के, ९ बुध के, ५ केतु के ६ शुक्र के गुणक हैं। प्रत्येक ग्रह के मुद्दादशा के दिनों को प्रत्येक ग्रह के गुणक से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध 'मुद्दा दशा की अन्तर्दशा के दिनादि' होते हैं।

'मुद्दादशायामन्तर्दशाचक्रमदः'

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
दिनानि	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	६०
गुणकाः	४	८	५	७	१०	६	९	५	६
सू. अं.	र. १।१२	चं. २।२४	मं. १।३०	रा. २।६	बृ. ३।०	श. १।४८	बु. २।४२	के. १।३०	शु. १।४८
चं. अं.	चं. ४।०	मं. २।३०	रा. ३।३०	बृ. ५।०	श. ३।०	बु. ४।३०	के. २।३०	शु. ३।०	र. २।०
मं. अं.	मं. १।४५	रा. २।२७	बृ. ३।३०	श. २।६	बु. ३।९	के. १।४५	शु. २।६	र. १।२४	चं. २।४८
रा. अं.	रा. ६।१८	बृ. ९।०	श. ५।२४	बु. ८।६	के. ४।३०	शु. ५।२४	र. ३।३६	चं. ७।१२	मं. ४।३०
बृ. अं.	बृ. ८।०	श. ४।४८	बु. ७।१२	के. ४।०	शु. ४।४८	र. ३।१२	चं. ६।२४	मं. ४।०	रा. ५।३६
श. अं.	श. ५।४२	बु. ८।३३	के. ४।४५	शु. ५।४२	र. ३।४८	चं. ७।३६	मं. ५।४५	रा. ६।३९	बृ. ९।३०
बु. अं.	बु. ७।३९	के. ४।१५	शु. ५।६	र. ३।२४	चं. ६।४८	मं. ४।१५	रा. ५।५७	बृ. ८।३०	श. ५।६
के. अं.	के. १।४५	शु. २।६	र. १।२४	चं. २।४८	मं. १।४५	रा. २।२७	बृ. ३।३०	श. २।६	बु. ३।९
शु. अं.	शु. ६।०	र. ४।०	चं. ८।०	मं. ५।०	रा. ७।०	बृ. १०।०	श. ६।०	बु. ९।०	के. ५।०

—: उदाहरणः —

सूर्य दशा के दिन १८ को सूर्य के गुणक ४ से गुणा तो ७२ हुए इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध १।१२ सूर्य मध्ये सूर्यान्तर्दशा के दिनादि हुए। एवं अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा के दिनादि को साधे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मुद्दादशायां केतोरन्तर्दशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

ग्रहाः	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
दि.	१	२	१	२	१	२	३	२	३
घ.	४५	६	२४	४८	४५	२७	३०	६	९
शकाब्दाः	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२
प्रवेशार्कः	२ २१ २४	२ २३ ९	२ २५ १५	२ २६ ३९	२ २९ २७	३ १ १२	३ ३ ३०	३ ७ ९	३ ९ १५

योगिनी मुद्दादशेशानयन रीति—:—

त्र्याढ्यजनुर्भं यातसमाढ्यम् ।
कुञ्जरतष्टं मङ्गलिकातः ॥ ८७ ॥

जन्म नक्षत्र की संख्या में ३ युक्त करे पुनः गतवर्षों को युक्त करके ८ से तष्ट करे तब जो शेष बचे उस के तुल्य मङ्गलासे 'योगिनी दशाकी दशेशा' होती हैं।

—: उदाहरण :—

जन्म नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी की संख्या १२ में ३ युक्त किये तो १५ हुए। इन में ४३ गतवर्ष को युक्त किया तो ५८ हुए। इन में ८ से भाग दिया तो २ शेष बचे। मङ्गला से शेष २ पर्यन्त गिना तो 'पिङ्गला की प्रथम दशा' हुई। पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, सङ्कटा, मङ्गला इसप्रकार दशाक्रम हुआ।

योगिनी मुद्दादशा के दिनों का परिज्ञानः—

काष्ठा नखाः शून्यगुणाः खवेदाः खाक्षाः खतर्कां गगनाद्रितुल्याः ।
खदन्तिनोऽमूनि दिनानि वर्षे स्युर्मङ्गलातो जगुरेवमाद्याः ॥ ८८ ॥

१० मङ्गला के, २० पिङ्गला के, ३० धान्या के, ४० भ्रामरी के, ५० भद्रिका के, ६० उल्का के, ७० सिद्धा के, ८० सङ्कटा के ये वर्ष में 'योगिनीमुद्दादशा दिन' हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'योगिनीमुद्दादशामासादिचक्रमिदम्'।

दशाः	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
मासाः	०	०	१	१	१	२	२	२
दिनानि	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

'योगिनीमुद्दादशाक्रमः'। 'उदाहरणमेतत्'।

दशाः	पिं.	धा.	आ.	अ.	उ.	सि.	सं.	मं.	
मासाः	०	१	१	१	२	२	२	०	
दिवसाः	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	
शकाब्दाः	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६२	१८६३	१८६३
प्रवेशार्कः	२ २१	३ ११	४ ११	५ २१	७ ११	९ ११	११ २१	२ ११	२ २१
मासाः	आषा.	श्रावणः	भाद्रः	आश्विनः	मार्गः	माघः	चैत्रः	आषा.	आषा.
ग. दि.	२३	१३	१३	२२	१२	१२	२२	१३	२३

त्रिपताकचक्रसाधनरीतिः—

द्विधा गताब्दाः कुयुता विभक्ता गोभिः कृतैः शेषमिते क्रमाद्धे ।
स्वराशितोऽब्जं खचरान्परांश्च लिखेयुरब्दत्रिपताकचक्रे ॥ ८९ ॥

गतवर्षों में १ युक्त करके दो स्थान में स्थापित करे। एकस्थान में ९ से भाग दे तब जो शेष बचे। उस के तुल्य जन्म चन्द्रराशि से गिनकर जो राशि आवे उस राशि में, वर्ष के त्रिपताकचक्रमें चन्द्रमा को लिखे। एवं द्वितीय स्थान में ४ से भाग दे जो शेष बचे उस के तुल्य शेष ग्रहों की जन्माधिष्ठित राशि से गिनकर जो राशि आवें उन में, वर्ष के त्रिपताकचक्र में शेष ग्रहों को लिखे। राहु की वक्र गति होने से राहु की जन्माधिष्ठित राशि से विपरीत गणना करने से शेष संख्या पर्यन्त जो राशि आवे उस में राहु को और उस से सप्तम में केतु को लिखे।

—: उदाहरण :—

गतवर्ष ४३ में १ युक्त किया तो ४४ हुए। इनको दो स्थान में स्थापित कर एकस्थान में ९ से भाग दिया तो ८ शेष बचे। जन्म कालीन चन्द्रमा सिंह राशि में है अतः सिंह से शेष संख्या ८ पर्यन्त गिना तो सिंह से आठवीं मीन राशि हुई इसलिए त्रिपताकचक्र में चन्द्रमा को मीनराशि में लिखा। एवं द्वितीय स्थान में स्थित संख्या ४४ में ४ से भाग दिया तो ० शेष बचा। यहां शून्य शेष है अतः भाजक की पूर्ण संख्या ४ शेष मानना चाहिए। जन्म कालीन सूर्य मिथुन राशि में है अतः मिथुन से चौथी कन्याराशि हुई। त्रिपताकचक्र में सूर्य को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कन्या में लिखा। जन्मसमय में राहु मकर में है। उस से विपरीत गणना करने से चौथी तुला राशि हुई अतः तुला में राहु को लिखा और उस से सप्तम मेष में केतु को लिखा। शेष ग्रहों को सूर्य के समान लिख दिया।

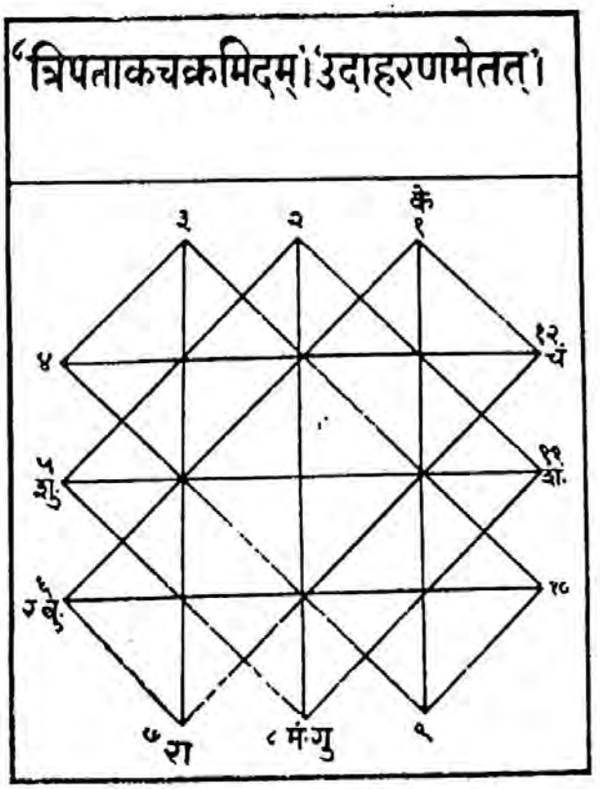

त्रिपताकचक्र में ग्रहविद्धचन्द्रफलः—

विद्धे चन्द्रे वासरेशेन ताप आरेणार्तिर्मान्द्यमर्कात्मजेन।
कष्टं प्रोक्तं लक्ष्मणे व्यालविद्धे साद्धिर्विद्धेऽब्जे जयं सौख्यमर्थम् ॥ ९० ॥

त्रिपातकचक्र में 'चन्द्रमा' सूर्य से विद्ध हो तो ज्वर, मङ्गल से विद्ध हो तो पीडा, शनि से विद्ध हो तो रोग और राहु से विद्ध हो तो कष्ट होता है। एवं 'चन्द्रमा' शुभ ग्रहोंसे विद्ध हो तो सौख्य, अर्थ, तथा जय होती है।

मास प्रवेश तथा दिनप्रवेश साधन रीतिः—

रविर्यदैकैकगृहर्द्धितःस्यात्तुल्योलवाद्यैर्यदि मासवेशः।
एकैकभागार्द्धित एवमर्को लिप्तासमश्चेद्दिवसप्रवेशः ॥ ९१ ॥

वर्ष प्रवेशकालीन सूर्य में एक एक राशि की वृद्धि करने से जिस दिन मास सूर्य के अंशादि और वर्ष प्रवेशकालीन सूर्य के अंशादि समान हों उस दिन 'मासप्रवेश' होता है। एवं वर्ष प्रवेश कालीन सूर्य में एक एक

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अंश की वृद्धि करने से जिस समय दैनिक सूर्य की कलायें और वर्ष प्रवेश कालीन सूर्य की कलायें समान हों उस समय ' दिन प्रवेश ' होता है।

मासार्कतन्निकटपङ्क्तिगतिग्मरश्मी
कार्यं तयोर्विवरमस्य कलाःखरांशोः।
भुक्त्या हृता दिनमुखं च तदूनयुक्तं
तत्पङ्क्तिगं दिवसपूर्वकमल्पपुष्टे ॥ ९२ ॥
मासप्रवेशमार्ताण्डे ज्ञेयस्तद्वासरादिके।
मासस्य सन्निवेशोऽह्नः प्रवेशोऽपि तथा भवेत् ॥ ९३ ॥

मास सूर्य और मास सूर्य के समीपवर्ती पङ्क्ति (अवधि) स्थ सूर्य उन दोनों के अन्तर की कलाओं में पङ्क्तिस्थ सूर्य की गति से भाग दे लब्ध ' दिनादि ' होते हैं। पङ्क्तिस्थ सूर्य से मासप्रवेशकालीन सूर्य के अंशादि अल्प हों तो लब्ध दिनादि को पङ्क्तिस्थ दिनादि में हीन करे। और पङ्क्तिस्थ सूर्य से मास प्रवेश सूर्य के अंशादि अधिक हो तो लब्ध दिनादि को पङ्क्तिस्थ दिनादि में युक्त करे तब जो दिनादि हों उन में ' मास प्रवेश ' होता है। एवं दिनप्रवेश को भी साधे।

—: उदाहरण :—

२।२१।२४।४३ वर्षप्रवेशकालीन सूर्य है। इस में १ राशि को युक्त किया तो ३।२१।२४।४३ ' द्वितीयमासप्रवेश सूर्य ' हुआ। पङ्क्तिस्थ सूर्य ३।२३।४९।३३ और मासप्रवेश सूर्य ३।२१।२४।४३ इन दोनों का अन्तर किया तो ०।२।२४।५० शेष बचे। इनके कलादि किये तो १४४।५० हुए। इन को ६० से गुणा तो ८६९० ' भाज्य पिण्ड ' हुआ। ५७।२५ पङ्क्तिस्थ सूर्य गति है। इस की कला ५७ को ६० से गुणा तो ३४२० हुए। इन में २५ विकला को युक्त किया तो ३४४५ ' भाजक पिण्ड ' हुआ। भाज्य पिण्ड ८६९० में भाजक पिण्ड ३४४५ से भाग दिया तो लब्ध २।३१।२१ दिनादि हुए। यहां पङ्क्तिस्थ सूर्य से मासप्रवेश सूर्य के अंशादि अल्प हैं अतः लब्ध दिनादि ऋण हुए। पङ्क्तिस्थ दिनादि २६।०।० में ऋण दिनादि २।३१।२१ को शोधन किया तो संवत् १९९७ श्रावण २३ प्रविष्ट बुधवार २८ घटी, ३९ पल में ' द्वितीय मासप्रवेश ' हुआ। मासप्रवेश कालीन २८ घटी ३९ पल से लग्न साधन किया तो ८।२०।४८।० ' मास प्रवेश कालीन स्पष्ट लग्न ' हुआ।

वर्ष प्रवेश कालीन स्पष्ट सूर्य २।२१।२४।४३ में १ अंश युक्त किया तो २।२२।२४।४३ ' द्वितीय दिन प्रवेश सूर्य ' हुआ। इस का और पङ्क्तिस्थ सूर्य २।२०।३३।४२ का अन्तर किया तो ०।१।५१।१ शेष बचे। इन की विकला की तो ६६६१ ' भाज्य पिण्ड ' हुआ। पङ्क्तिस्थ सूर्य गति ५६।५४ की विकला की तो ३४१४ ' भाजक पिण्ड ' हुआ। भाज्य पिण्ड ६६६१ में भाजक पिण्ड ३४१४ से भाग दिया तो लब्ध १।५७।४ दिनादि हुए। इन को पङ्क्तिस्थ दिनादि २३।०।० में पङ्क्तिस्थ सूर्य से दिन प्रवेश सूर्य अधिक होने के कारण धन किया तो संवत् १९९७ आषाढ २४ प्रविष्ट रविवार ५७ घटी ४ पल में ' द्वितीय दिन प्रवेश ' हुआ। दिन प्रवेश कालीन ५७ घटी, ४ पल से लग्न साधन किया तो २।७।१०।० ' दिन प्रवेश कालीन स्पष्ट लग्न ' हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

द्वितीयमासप्रवेशलग्नम् ८।२०।४८।०

द्विदिनप्रवेशलग्नम् २।७।१०।०

गतवर्ष से अग्रवर्षानयन रीतिः—

गताब्दवारादिषु योजयेद्विधुं दिनानि सार्द्धान् कुगुणांस्तिथौ युतौ ।
भेऽङ्गे शिवान्व्योमविधून् क्रमाद्दिशः सार्द्धानलानग्रशरत्प्रवेशनम् ॥ ९४ ॥

गत वर्ष के वार में १, इष्टघटी में १५ और पल में ३१½ को युक्तकरे । एवं तिथि में ११, योग में १०, नक्षत्र में १० और लग्न में ३ राशि १५ अंश को युक्तकरे तब जो वारादि मिलें उन में 'अग्रिमवर्ष प्रवेश' होता है ।

लग्न गत रवि फलः—

सूर्य्येऽङ्गगे के कफरुक् समीरपित्तं विवादः स्वजनैः सहैवम् ।
स्याद् गुप्तचिन्ता ललनाङ्गपीडा दशाऽस्य वर्षे ननु नेष्टकर्त्री ॥ ९५ ॥

यदि वर्ष प्रवेश कालीन लग्न में 'सूर्य' हो तो शिर में कफरोग, शरीर में वात पित्त से कष्ट, अपने कुटुम्बियों से विवाद, गुप्तचिन्ता, स्त्री के शरीर में पीडा तथा उस वर्ष में सूर्यदशा अशुभ होती है ।

धनगत रवि फलः—

कुनायकात्कष्टभयं कुटुम्बाद्विरोधको ऽर्थे तपने ऽर्थपीडा ।
तुन्दापदः स्युश्चतुरंघ्रिपीडा तस्मिञ्च्छुभाढ्ये द्रविणस्यलाभः ॥ ९६ ॥

धन भाव में 'सूर्य' हो तो राजा से कष्ट तथा भय, कुटुम्ब से विरोध, आर्थिक कष्ट, उदर में पीडा और पशुओं की हानि होती है । यदि 'सूर्य' शुभग्रह से युक्त हो तो धन का लाभ होता है ।

सहज गत रवि फलः—

वर्षेद्रिमे सोदरगः पतङ्गः करोति पीडां निजसोदराणाम् ।
यशोविवृद्धिं नरपानुकम्पां सपत्ननाशं कमलां च शौर्य्यम् ॥ ९७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहज भाव में 'सूर्य' हो तो सहोदर भाइयों को पीडा, यश की वृद्धि, राजकृपा, शत्रुओंका नाश, लक्ष्मी तथा पराक्रम को करता है।

सुखगत रविफलः--

पीडा पशूनां कृषिकर्म्महानिरत्यन्तपीडा जननीव्यथा च।
इलापतेः कष्टभयं च तुन्दे गुह्ये ऽपि पीडा भिहिरे हितस्थे ॥ ९८ ॥

सुख में 'सूर्य' हो तो पशुओंकी पीडा, कृषिकर्म में हानि, अत्यन्त कष्ट, मातृ कष्ट राजा से कष्ट तथा भय, एवं उदर तथा गुप्तेन्द्रिय में भी पीडा होती है।

सुत गत रवि फलः—

त्रिभे प्रबन्धे स्वजनैर्विवादः स्यान्मोहशोकादि गदः स्वदेहे।
पुत्राङ्गपीडा मतिहानिरस्य दशासु भीतिर्नरपाद्धनार्तिः ॥ ९९ ॥

पञ्चम में 'सूर्य' हो तो अपने लोगों से विवाद, मोह शोकादि, शरीर में रोग, पुत्र के शरीर में पीडा, बुद्धि की हानि और सूर्य की दशा में राजा से भय तथा धन की पीडा होती है।

षष्ठस्थ रविफलः—

स्याद् द्रव्यलाभः क्रयविक्रये ऽपि लाभो जयो मित्रमहीपपक्षात्।
पक्षे जनन्याश्च रुजो जनानां सुखाप्तिरर्के रुजि वैरिनाशः ॥ १०० ॥

षष्ठ में 'सूर्य' हो तो क्रय विक्रय से द्रव्यलाभ, मित्र तथा राजापक्ष से लाभ और जय, मातृ पक्ष में रोग, लोगों के मध्य में सुख की प्राप्ति और शत्रुओंका नाश होता है।

सप्तमगत रविफलः--

द्यूने दिनेशे दयिताङ्गपीडा ऽस्यान्तर्दशायां निजगात्रपीडा।
शिरोव्यथा भी सृतितो विवादो गुदे तथांघ्र्योः परिपीडनं स्यात् ॥ १०१ ॥

सप्तम में 'सूर्य' हो तो स्त्री के शरीर में पीडा और सूर्य की अन्तर्दशा में अपने शरीर में पीडा, शिर में पीडा, मार्ग से भय, लोगों से विवाद एवं गुदा तथा पाद में पीडा होती है।

अष्टम गत रविफलः—

हेलौ लयस्थे व्रणवातपीडे दाराङ्गपीडा तनयाङ्गरोगः।
व्याधिक्षयोपद्रवशोककष्टं भवेद्धनार्त्तिर्निजबन्धुदुःखम् ॥ १०२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अष्टम में 'सूर्य' हो तो शरीर में व्रण, वात से पीडा, स्त्री के शरीर में पीडा, पुत्र के शरीर में रोग, व्याधि, क्षय, उपद्रव, शोक, कष्ट, धन से पीडा और बन्धुजनों का दुःख होता है।

नवम गत रविफलः—

दैवोपयातो दिनकृत्करोति क्लेशस्य वृद्धिं निजसोदराणाम्।
व्यथां स्वदायं प्रगतोऽब्दमध्येश्रेयोयशोराज्यद आहुराद्याः॥ १०३॥

नवम में सूर्य हो तो कष्ट की और भाइयों के लिए पीडा को करता है। एवं वर्ष के मध्य में अपनी दशा में प्राप्त सूर्य श्रेय (कल्याण) कीर्ति तथा राज्य को देता है। इस प्रकार प्राचीन पण्डितजन कहते हैं।

दशम गत रविफलः—

मानस्य वृद्धिं कुरुतेऽशुमाली मेपूरणस्थो धनराज्यदश्च।
वसुन्धरागोकनकाप्तिकारी रुजो विवृद्धिः पशुविग्रहेषु॥ १०४॥

दशम में 'सूर्य' हो तो मान की वृद्धि को करता है। धन तथा राज्य को देता है। भूमि, गौ और सुवर्ण की प्राप्ति को करता है। एवं पशुओं के शरीर में रोग की वृद्धि को करता है।

लाभ गत रविफलः—

आदित्य आये तनुजाङ्गपीडा सौख्यं विलासादि सुवर्णवस्त्रम्।
धान्यं धनाप्तिर्नरपायकारी भवेद्विनाशः परिपन्थिनां च॥ १०५॥

लाभ में 'सूर्य' हो तो पुत्र के शरीर में पीडा, सौख्य, विलासादि, सुवर्ण, वस्त्र, धान्य, धनकी प्राप्ति, राजा से लाभ कारक एवं उस वर्ष में शत्रुओंका नाश होता है।

व्यय गत रविफलः—

सरोजिनीशे व्ययभावयाते पादामयः कोदरलोचनार्तिः।
चिन्ता व्ययो वैरिजनैर्विवादः सहस्त्रिया विग्रह उद्भ्रमं स्यात्॥ १०६॥

व्यय में 'सूर्य' हो तो पाद रोग, शिर उदर तथा नेत्रों में पीडा, चिन्ता, व्यय, शत्रुजनों से विवाद, स्त्री के साथ कलह तथा उद्भ्रम (उद्वेग) होता है।

लग्न गत चन्द्र फलः—

यदाऽब्दमध्येऽमृतदीप्तिरङ्गे वैकल्यमङ्गे प्रकरोति पीडाम्।
कफक्षयाभ्यां विपुलव्ययं चासद्दृष्टयुक्तस्तनुनाशकृत्स्यात्॥ १०७॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जब वर्षप्रवेशकालीन लग्न में ' चन्द्र ' हो तो शरीर में निकलता, कफ तथा क्षयसे पीडा को करता है एवं बहुत व्यय को करता है। यदि लग्नस्थ चन्द्र पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो शरीर का नाश करता है।

धनगत चन्द्र फलः--

जयं कुटुम्बान्नयनव्यथां च कुटुम्बसंस्थः कुरुते कलेशः।
लाभं च सौख्यं नरपाद्रिपूणां नाशं च लाभं स्वबयस्यपक्षात् ॥ १०८ ॥

द्वितीय में ' चन्द्र ' हो तो कुटुम्ब से जय, नेत्र रोग, राजा से लाभ तथा सौख्य, शत्रु का नाश और मित्र पक्ष से लाभ को करता है।

तृतीयगत चन्द्र फलः--

करोति कर्णालयगः कलावान् रायामवाप्तिं सुकृतोदयं च।
तथा प्रतिष्ठापरिवृद्धिमब्दमध्ये भवेत्सौख्यकरोऽनुजानाम् ॥ १०९ ॥

तृतीय में ' चन्द्र ' हो तो उस वर्ष में धन की प्राप्ति, पुण्योदय, प्रतिष्ठा की वृद्धि और भाइयों के सौख्य को करता है।

चतुर्थ गत चन्द्र फलः--

पीयूषगौ पाथसि भूपतो जयो यानस्य सौख्यं कृषिकर्मलाभवान्।
वित्तस्य लाभः क्रयविक्रये भवेत्सुखी मनुष्यः परिपन्थिनाशनम् ॥ ११० ॥

चतुर्थ में ' चन्द्र ' हो तो राजा से जय, वाहन का सौख्य, कृषि की क्रिया से लाभ, क्रय तथा विक्रय में धन का लाभ, सुखी और शत्रुओंका नाश होता है।

पञ्चम गत चन्द्र फलः--

सुधामयूखः सुतगो विधत्ते जयं च लाभं निजशेमुषीतः।
विपक्षपक्षाद्यदि चारुदृष्टः सुताङ्गसौख्यं परथा प्रपीडा ॥ १११ ॥

पञ्चम में ' चन्द्र ' हो तो अपनी बुद्धि के द्वारा शत्रु पक्ष से जय और लाभ को करता है। यदि वह शुभ-ग्रह से दृष्ट हो तो पुत्र को शरीर सौख्य और पाप दृष्ट हो तो पुत्र के शरीर में पीडा होती है।

षष्ठ गत चन्द्र फलः--

निशीथिनीशेऽहितगे नितम्बिनीदेहव्यथा लोचनयोर्व्यथा व्ययः।
वैरं विवादः सहवैरिभिः स्मृतिर्गुप्ता निरुक्ताऽऽकुलता विचक्षणैः ॥ ११२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

षष्ठ में 'चन्द्र' हो तो स्त्री के शरीर में पीडा, नेत्रों में पीडा, व्यय, शत्रुओंसे विवाद, विरोध, गुप्तचिन्ता एवं व्यग्रता होती है।

सप्तमगत चन्द्र फलः--

समीरपीडा क्षुरमङ्गना तनौ कष्टं कलत्रे ऽत्रिभवे ऽघलोकिते।
बाधा कफोत्था किल दारुणं भयं प्राप्तिर्धनस्योत्तमखेचरेक्षिते ॥ ११३ ॥

सप्तम गत चन्द्र यदि पाप दृष्ट हो तो वात पीडा, खई (खांसी) स्त्री के शरीर में कष्ट, कफ से बाधा और कठोर भय होता है। यदि वह शुभ दृष्ट हो तो उस वर्ष में धन की प्राप्ति होती है।

अष्टमगत चन्द्र फलः--

नेत्रामयं जलभयं परिवादमङ्ग—
भङ्गं क्षुरं वमनरोगमिहोदरे च।
गुप्तव्यथां कफरुजं द्रविणस्य नाशं
कुर्यात्कलापरिवृढो युधिकष्टवन्तम् ॥ ११४ ॥

अष्टम में 'चन्द्र' हो तो नेत्रों में रोग, जल से भय, मनुष्यों से विवाद, अङ्ग भङ्ग, क्षुर (खांसी) वमन (उलटी) उदर में गुप्त पीडा, कफ रोग, धनका नाश और कष्ट को करता है।

नवमगत चन्द्र फलः—

विधुर्यदाब्दे विधिभे स्वसद्मसौख्यं प्रकुर्यादुदयं वृषस्य।
दिष्टोदयं वैरिजनस्य नाशं व्यायामसौख्यं विभवस्य लाभम् ॥ ११५ ॥

नवम में 'चन्द्र' हो तो अपने घर का सुख, पुण्योदय, भाग्योदय, शत्रुओं का नाश, व्यायाम सुख और धन के लाभ को करता है।

दशमगत चन्द्र फलः—

कुर्यात्प्रतिष्ठां महतीं सुखं बहु व्यायामतः कीर्तिविवर्द्धनं रिपोः।
क्षयं स्वलाभो ऽरिकुलात्सुतांशुकाप्तिमाशु खेग्लौरुदयं स्वकर्म्मणः ॥ ११६ ॥

दशम में 'चन्द्र' हो तो बहुत बड़ी प्रतिष्ठा, व्यायाम (यात्रा इत्यादि) से बहुत सुख, यश की वृद्धि, शत्रु का नाश, शत्रुगण से धन का लाभ एवं पुत्र तथा वस्त्र का लाभ और शीघ्र अपने कर्म्मों का उदय होता है।

लाभगत चन्द्र फलः--

भवे भपे विक्रयके क्रये ऽपि बहुस्वलाभस्तनयागमः स्यात्।
नरेन्द्रतो लाभसुखं प्रतिष्ठावृद्धिः सपत्नक्षयमब्दमध्ये ॥ ११७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लाभ में चन्द्रमा हो तो क्रय विक्रय में बहुत द्रव्य लाभ, पुत्र प्राप्ति, राजा से लाभ तथा सुख, प्रतिष्ठा की वृद्धि और उस वर्ष में शत्रुजनों का नाश होता है।

व्यय गत चन्द्र फलः--

विधुर्विधत्ते व्ययगः कफार्त्तिमरातिपीडां बहुदुःखसाध्यम्।
जनैर्विवादं नयनामयं च गुल्मोदरं सद्व्ययमब्दमध्ये ॥ ११८ ॥

व्यय में 'चन्द्र' हो तो कफ से तथा शत्रु से पीडा बहु दुःख साध्य, लोगों से विवाद नेत्र रोग, गुल्मोदर और उत्तम व्यय को करता है।

लग्नगत भौम फलः--

भौमे ऽङ्गगे युवतिकष्टमसाध्यवात-
पीडा क्षुरं वमनरुग् वसुधेशभीतिः।
शीर्षे गदो नयनयोरपि वैरिवादो
लोहात्तथा दहनतो भयमब्दमध्ये ॥ ११९ ॥

वर्ष प्रवेश समय में 'मङ्गल' यदि लग्न में हो तो स्त्री को कष्ट, असाध्य वात पीडा, क्षुर (खांसी) वमन रोग (उलटी) राजा से भय, शिर में तथा नेत्र में रोग, शत्रुओं से विवाद एवं उस वर्ष में लोह तथा अग्नि से भय होता है।

धनगत भौम फलः--

कुटुम्बभावे कुटिलाभिधाने व्यालाग्निभीतिर्महिलाक्षिरोगः।
शोकश्च मोहः स्वजनैर्विरोधः शिरोव्यथा स्याद् द्रविणस्य नाशः ॥ १२० ॥

द्वितीय में 'मङ्गल' हो तो शत्रु तथा अग्नि से भय, स्त्री के नेत्रों में रोग, शोक, मोह, अपने लोगोंसे विरोध, शिर में रोग और धन का नाश होता है।

सहजगत भौम फलः—

भूजे भुजे बान्धवदेहकष्टं जयो मनुष्येश्वरमित्रपक्षात्।
अरातिनाशो विभवस्य लाभस्स्याद्वायने वाहनसौख्यमस्मिन् ॥ १२१ ॥

सहज में 'मङ्गल' हो तो बन्धुजनों के शरीर में कष्ट, राजा तथा मित्र पक्ष से जय, शत्रुओं का नाश, धन का नाश और उस वर्ष में वाहनों का सौख्य होता है।

चतुर्थगत भौम फलः—

क्रये तथा विक्रयके ऽपि वित्तहानिर्व्रणार्तिः पशुपीडनं च।
क्लेशं च कष्टं कृषिकर्म्महानिर्हुताशपीडा हृदि लोहितांशौ ॥ १२२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चतुर्थ में ' मङ्गल ' हो तो क्रय तथा विक्रय में भी धन की हानि, व्रण तथा पशुओं से पीडा, क्लेश, कष्ट कृषिकर्म से हानि तथा अग्नि से पीडा होती है।

पञ्चमभाव गत भौमफलः—

पृथ्वीपुत्रे पुत्रभावप्रयाते कोशे कुक्षौ गुप्तपीडा प्रवाच्या।
गुप्ता चिन्ता वैरिलोकैर्विवादो नाशो बुद्ध्याः स्वस्य पुत्राङ्गपीडा ॥ १२३ ॥

पञ्चम में ' मङ्गल ' हो तो कोश देश तथा कुक्षि देश में गुप्त पीडा, गुप्त चिन्ता, शत्रुजनों से विवाद, बुद्धि का नाश और पुत्र के शरीर में पीडा होती है।

षष्ठ गत भौमफलः—

गपत्नगोऽसृक् कुरुते सपत्ननाशं युवत्याः सुखमश्वसौख्यम्।
लाभं सुहृत्पक्षत उर्वीनाथाज्जयो भवेत्तस्य दशास्विहाब्दे ॥ १२४ ॥

षष्ठ में ' मङ्गल ' हो तो शत्रुओं का नाश, घोड़ों का सुख, स्त्री का सुख, मित्र पक्ष से लाभ और उस वर्ष में राजा से जय होती है।

सप्तम गत भौमफलः—

मारे महीजे महिलासु मान्द्यं जनैर्विवादो रिपुसाध्वसं च।
कष्टास्त्रवावात्मनि वर्त्मनि स्वस्वान्ते दशा तस्य तु नेष्टदात्री ॥ १२५ ॥

सप्तम में ' मङ्गल ' हो तो स्त्रीजनों में रोग, लोगों से विवाद, शत्रुओं से भय, मार्ग, शरीर तथा हृदय में कष्ट और क्लेश होता है। एवं उस वर्ष में मङ्गल की दशा अनिष्ट करनेवाली होती है।

अष्टम गत भौमफलः—

पुत्रे धरण्या मरणालयस्थे व्रणोदयश्चाकुलताऽङ्गकष्टम्।
शस्त्रप्रहारः प्रमदोपतापः स्याद् गूढचिन्ता विभवक्षयं च ॥ १२६ ॥

अष्टम में ' मङ्गल ' हो तो व्रण की उत्पत्ति, व्यग्रता, शरीर में कष्ट, शस्त्र से प्रहार, स्त्रियों को रोग, मानसिक चिन्ता और धनका नाश होता है।

नवमगत भौमफलः—

पुत्रे धरित्र्या यदि धर्म्मधाम्नि द्रव्यस्य लाभो महती प्रतिष्ठा।
मानस्य वृद्धिः सुकृतोदयः स्याद् दैवोदयश्चाम्बरलब्धिरब्दे ॥ १२७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नवम में 'मङ्गल' हो तो द्रव्य का लाभ, बड़ी प्रतिष्ठा, मान की वृद्धि, पुण्योदय और भाग्योदय होता है। एवं उस वर्ष में वस्त्र की प्राप्ति होती है।

दशमगत भौमफलः----

व्यापारभावोपग आवनेयो व्यायामतः सौख्यमरातिनाशम्।
कर्म्मोदयं स्वीयनिकेतसौख्यं द्युम्नस्य लाभं कुरुते ऽब्दमध्ये ॥ १२८ ॥

दशम में 'मङ्गल' हो तो व्यायाम से सुख, शत्रुओं का नाश, कर्म का उदय, अपने घर का सुख और उस वर्ष में धन का लाभ करता है।

लाभ गत भौमफल---

माहेय आये सखिपक्षतो जयं वृद्धिं सुतानां च सुखस्य वैरिणाम्।
क्षयं धनाप्तिं वसनाश्वहाटकराज्यालयाप्तिं च करोतिवत्सरे ॥ १२९ ॥

लाभ में 'मङ्गल' हो तो मित्र पक्ष से जय, पुत्र सुख की वृद्धि, शत्रुओं का नाश, धन का लाभ, वस्त्र, घोड़ा, सुवर्ण राज्य तथा गृह की प्राप्ति को करता है।

व्यय गत भौम फलः—

पीडोत्तमाङ्गे च जनैर्विरोधः श्रोत्रे विकारो नयने प्रबाधा।
व्यथा ऽङ्गनाङ्गे यदि रोहिताङ्गे प्रान्त्यं प्रयाते हि शरद्यमुष्याम् ॥ १३० ॥

व्यय में 'भौम' हो तो शिर में पीडा लोगों से विरोध, कानों में विकार, नेत्रों में बाधा, एवं उस वर्ष में स्त्री के शरीर में पीडा होती है।

लग्न गत बुध फलः—

कल्पे कलानिधिसुतो बहुवीर्य्यवृद्धिं
कान्तासुखं प्रकुरुते ऽरिविनाशमस्मिन्।
अब्दे सुखार्थजयदो विपुलेशपक्षा-
लाभो भवेदपि वयस्यजनस्य लाभः ॥ १३१ ॥

वर्ष प्रवेश समय में यदि लग्न में 'बुध' हो तो बहुत बल की वृद्धि, स्त्री का सुख, शत्रु का नाश, सुख, अर्थ तथा जय प्राप्ति, राज पक्ष से लाभ एवं मित्र जन का लाभ होता है।

धन गत बुध फलः—

ताराङ्गजाते धनधामयाते जयः कुटुम्बान्महती प्रतिष्ठा।
रिपुक्षयं मानयशोविवृद्धिः स्याद्वत्सरे ऽस्मिन् सुखमर्थलाभः ॥ १३२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन में ' बुध ' हो तो कुटुम्ब से जय, बड़ी प्रतिष्ठा, शत्रु का नाश, मान तथा यश की वृद्धि एवं उस वर्ष में सुख तथा धन का लाभ होता है।

सहजगत बुधफलः—

यदा कोविदः सोदरागारयातः सुतानां सुखं स्वापतेयस्य लाभम्।
यशोमानवृद्धिं च निःशेषतापविनाशं विधत्ते तदा वत्सरेऽस्मिन् ॥ १३३ ॥

सहज में ' बुध ' हो तो पुत्रों का सुख, धन का लाभ, कीर्ति तथा मान की वृद्धि और उस वर्ष में समस्त तापों का नाश करता है।

सुखगत बुध फलः—

सुतो हिमांशोर्हितगो हितानां समागमं काञ्चनभूमिलाभम्।
प्राप्तिं गवां वाहनवित्तलाभं करोति वर्षेऽत्र महत्सुखं च ॥ १३४ ॥

सुख में ' बुध ' हो तो मित्रजनों का समागम, सुवर्ण तथा भूमि का लाभ, गौओं की प्राप्ति, वाहन तथा धन का लाभ एवं उस वर्ष में बहुत सुख को करता है।

सुत गत बुध फलः—

हिमांशुजन्मा मतिमन्दिरस्थितो दद्याद् धनाप्तिं हितपक्षतो जयम्।
सौख्यं नृपालात्तनयप्रसूतिकृद् धान्यांशकैश्वर्यसुवर्णसौख्यकृत् ॥ १३५ ॥

सुख में ' बुध ' हो तो धन की प्राप्ति, मित्रपक्ष से जय, राजा से सौख्य, पुत्र की प्राप्ति, धान्य, वस्त्र, दास एवं सुवर्ण के सौख्य को करता है।

रिपुगत बुध फलः—

विवादः सहारातिभिर्व्यग्रता च कफार्तिर्व्ययःकामिनीदेहदुःखम्।
भवेत्कष्टमङ्गे निजस्याब्दमध्ये यदा बोधने वैरिवेश्मोपयाते ॥ १३६ ॥

षष्ठ में ' बुध ' हो तो शत्रुजनों से विवाद, व्याकुलता, कफ से पीडा, व्यय, स्त्री के शरीर में कष्ट एवं उस वर्ष में अपने शरीर में भी कष्ट होता है।

जायागत बुध फलः—

कलावतो देहभवे कलत्रे सौख्यं विलासादि वधूजनस्य।
तथाऽधिकारो विजयः प्रतिष्ठा हेमाम्बराप्तिस्त्विह तद्दशायाम् ॥ १३७ ॥

सप्तम में ' बुध ' हो तो स्त्रीजन का विलासादि तथा सौख्य, अधिकार, विजय, प्रतिष्ठा एवं उस की दशा में सुवर्ण और वस्त्र की प्राप्ति होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अष्टमगत बुध फलः----

कोविदः कलिगतः कफपीडां व्यग्रतां प्रकुरुते मृततुल्यम् ।
मानवं नयनयोरिह पीडां हायने तु भयमस्य दशायाम् ॥ १३८ ॥

अष्टम में 'बुध' हो तो कफ से पीडा, व्याकुलता और मनुष्य को मृतक समान करता है। एवं उस वर्ष में बुध की दशा में नेत्रों में पीडा तथा भय को करता है।

नवमगत बुध फलः—

धर्मे सौम्यः कीर्तिवृद्धिं जयं च पृथ्वीपालात्पुत्रलाभस्य सौख्यम् ।
शत्रोर्नाशं द्रव्यलाभं विधत्ते नित्यं भद्रं सत्वरं भाग्यवृद्धिम् ॥ १३९ ॥

नवम में 'बुध' हो तो यश की वृद्धि, राजा से जय, पुत्र लाभ का सुख, शत्रु का नाश, द्रव्य का लाभ, नित्य मङ्गल और भाग्य की वृद्धि को करता है।

दशमगत बुध फलः----

आज्ञास्थाने शर्व्वरीशप्रसूते वर्षे त्वस्मिञ्जायते वाहनानाम् ।
सौख्यं वृद्धिर्नन्दनानां विलासो वित्तस्याप्तिर्भूमिभर्त्तुर्जयः स्यात् ॥ १४० ॥

दशम में 'बुध' हो तो उस वर्ष में वाहनों का सुख, पुत्रों की वृद्धि, विलास, धन की प्राप्ति और राजा से जय होती है।

लाभगत बुध फलः----

बुधो विधत्ते भवभावयातो बहूनि धान्यानि तथाम्बराणि ।
यशोविवृद्धिं पशुवर्द्धनं च व्यथाविनाशं जयसम्पदश्च ॥ १४१ ॥

लाभ में 'बुध' हो तो बहुत धान्य, वस्त्र, कीर्ति और पशुओंकी वृद्धि, पीडा का नाश, जय और सम्पत्ति को करता है।

व्ययगत बुध फलः----

प्रान्त्यस्थाने कोविदे कर्णरोगः पीडा श्लेष्मोत्था विवादो रिपूणाम् ।
अस्मिन्नब्दे स्याद् व्ययो व्यग्रता दृक्पीडा कष्टं नेष्टकर्त्री दशाऽस्य ॥ १४२ ॥

व्यय में 'बुध' हो तो कानों में रोग, कफजन्य पीडा, शत्रुओंके साथ विवाद एवं उस वर्ष में व्यय, व्याकुलता नेत्र में पीडा और उस की दशा अशुभ फल करने वाली होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्नगत गुरु फलः----

हेमाप्तिरिज्य उदये नृपसौख्यसङ्गो
व्यापारतोऽधिकविधेरुदयोऽरिनाशः ।
मुक्ताधनं वसनवाजिवधूसुखं च
कीर्त्तेर्विवर्द्धनमुपैति परां समृद्धिम् ॥ १४१ ॥

लग्न में 'गुरु' हो तो राजा से सौख्य तथा सङ्गम, व्यापार से अधिक भाग्योदय, शत्रु का नाश, मुक्ताफल, वस्त्र, घोडा और स्त्री का सुख, कीर्त्ति की वृद्धि एवं परम समृद्धि को प्राप्त होता है।

धनगत गुरु फलः----

शय्याः प्रभोर्मन्त्रिणि वित्तवर्तिनि प्राप्नोतिभोगान्विभवादिकान्नरः ।
धनस्य लाभः प्रभवेदिलापतेश्चतुष्पदानां च समागमस्तथा ॥ १४४ ॥

धन में गुरु हो तो उस वर्ष में मनुष्य भोग तथा ऐश्वर्य को प्राप्त होता है। राजा से धन का लाभ और पशुओं की प्राप्ति होती है।

सहजगत गुरु फलः—

विक्रमे विबुधवन्दिते यशोवर्धनं वसुमतीशतो जयः ।
सन्ततं द्रविणसस्यवाससां वृद्धिमेति मनुजोऽत्र हायने ॥ १४५ ॥

सहज में 'गुरु' हो तो यश की वृद्धि, राजा से जय, नित्य धन, धान्य तथा वस्त्र की वृद्धि को प्राप्त होता है।

सुखगत गुरु फलः—

वागीश्वरो बान्धवगो नरस्य लाभे भवेद्विक्रयके क्रयेऽपि ।
लाभःप्रदः स्यात्कृषिकर्म्मणो भूनाथाज्जयो वाहनसौख्यमब्दे ॥ १४६ ॥

सुख में 'गुरु' हो तो क्रय विक्रय मे लाभ तथा कृषि कर्म से लाभ दायक राजा से जय और उस वर्ष में वाहन का सुख होता है।

सुतगत गुरु फलः—

गीष्पतिस्तनयगस्तनयाद्धिमातनोति विजयो निजबुद्ध्या ।
इष्टभोगमरिनाशनमाप्तिं गोसुवर्णवसुधावसनानाम् ॥ १४७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पञ्चम में 'गुरु' हो तो पुत्र वृद्धि को करता है। अपनी बुद्धि से विजय, अभीष्टभोग, शत्रु का नाश, गौ, सुवर्ण, भूमी और वस्त्रों की प्राप्ति को करता है।

रिपुगत गुरु फलः—

सपत्नसंस्थः सुरराजपूज्यः सपत्नकष्टं च कफार्त्तिदोषान्।
नेत्रोपतापं कुरुते ज्वरातिसारं युवत्या वपुषि व्यथां च ॥ १४८ ॥

षष्ठ, में 'गुरु' हो तो शत्रु से कष्ट, कफ से पीडा तथा दोषों को करता है। नेत्ररोग, ज्वर तथा अतिसार और स्त्री के शरीर में पीडा को करता है।

सप्तमगत गुरु फलः—

सूरिः स्मरस्थः प्रकरोति सौख्यं योषासुभूपात्कमलाप्तिमास्मिन्।
अब्दे विलासादि सपत्ननाशं यानस्य सौख्यं गतसाध्वसं च ॥ १४९ ॥

सप्तम में गुरु हो तो स्त्रियों के सुख को करता है। और उस वर्ष में राजा से लक्ष्मी की प्राप्ति, विलासादि शत्रु का नाश, वाहन का सुख और भय के नाश को करता है।

अष्टमगत गुरु फलः—

श्रुत्योर्दृशोश्च बहुला विविधामयाः स्यु-
रार्त्तिस्तथा वमनजूर्त्तिकफोद्भवा स्यात्।
कष्टं वधूवपुषि शात्रववृन्दभीतिः
पीडाऽधिका व्रणकृता मरणेऽमरेज्ये ॥ १५० ॥

अष्टम में गुरु हो तो कान तथा नेत्रों में अनेक प्रकार के बहुत रोग होते हैं। वमन, ज्वर तथा कफ से उत्पन्न पीडा स्त्री के शरीर में कष्ट, शत्रुगण से भय और व्रण से अधिक पीडा होती है।

नवमगत गुरु फलः—

आचार्य आचार्यगतः करोति सदैव तीर्थाटनतोऽतिपुण्यम्।
धनस्य लाभं विपुलं च सौख्यं धर्मं नराणामुदयं नियत्याः ॥ १५१ ॥

नवम में 'गुरु' हो तो नित्य तीर्थयात्रा से अधिक पुण्य, धन का लाभ, बहुत सौख्य, धर्म एवं मनुष्यों के भाग्य का उदय करता है।

दशम गत गुरु फलः—

कर्म्मोदयं कर्म्मगतोऽमरेज्यो दशां स्वकीयां प्रगतः प्रकुर्यात्।
तुरङ्गतुर्य्याधिरथाद्विपानां लाभं महीपाज्जयमाशु शर्म्म ॥ १५२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दशम में 'गुरु' हो तो अपनी दशा में प्राप्त होकर घोड़ा, चतुष्पद, रथ और हाथियों के लाभ को करता है। एवं राजा से जय तथा शीघ्र सुख को करता है।

लाभगत गुरु फलः----

आचार्य्य आये तनयोदयः स्याज्जयश्च सौख्यं ह्यधिका प्रतिष्ठा।
दन्तावलानां च तुरङ्गमाणां प्राप्तिर्भवेच्छात्रवसंघनाशः १५३ ॥

लाभ में 'गुरु हो तो पुत्र की उत्पत्ति, जय, सौख्य, अधिक प्रतिष्ठा, हाथी तथा घोड़ों का लाभ और शत्रु गण का नाश होता है।

व्यय गत गुरु फलः—

व्यये गुरुः शोकविकारकृन्नृपभीतिप्रदो नेत्रतनुव्यथाकरः।
बहुव्यथा शत्रुजने प्रसन्नता जनापवादक्षयभीकफार्तिकृत् ॥ १५४ ॥

व्यय में 'गुरु' हो तो शोक तथा विकार को करता है। राजा से भय दायक, नेत्र तथा शरीर में पीड़ा बहुत पीड़ा, शत्रुजन में प्रसन्नता, लोगो में अपवाद, क्षय रोग से भय और कफ से पीड़ा को करता है।

लग्नगत शुक्र फलः—

यदोदये दैत्यगुरौ प्रतिष्ठा विशेषतोऽरातिसमूहनाशः।
समृद्धिलाभो विजयस्तथा स्याद्विभूषणाप्तिर्वसुधेशमानम् ॥ १५५ ॥

लग्न में 'शुक्र' हो तो उस वर्ष में विशेष प्रतिष्ठा, शत्रुगण का नाश, समृद्धि की प्राप्ति, विजय, आभूषण की प्राप्ति और राजा से सम्मानित होता है।

धनगत शुक्र फलः

कोशे कवौ मानवनाथतुल्यो धान्यस्य लाभो द्रविणाप्तिरब्दे।
सम्पत्सुखं म्लेच्छसुखं हयानां चतुष्पदानां भवने सुखं स्यात् ॥ १५६ ॥

द्वितीय में 'शुक्र' हो तो राजा के समान कान्ति, धान्य का लाभ, धन की प्राप्ति, सम्पत्ति, सुख, म्लेच्छजनों का सुख एवं घर में घोड़े और चतुष्पदों का सुख होता है।

सहजगत शुक्र फलः--

यदाभार्गवो भ्रातृभावोपयातो विलासैरनेकैः सुखं सोदराणाम्।
यशोवर्द्धनं वित्तलाभं विधत्ते भवेच्चोपकारो जनेभ्योऽब्दमध्ये ॥ १५७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहज में 'शुक्र' हो तो अनेक विलासों से भाइयों का सुख, यश की वृद्धि और धन के लाभ को करता है और उस वर्ष में लोगों से उपकार होता है।

सुखगत शुक्र फलः----

पुरोहितो दैत्यपतेर्हितस्थः करोति सौख्यं कृषिधोरणानाम्।
समागमं सस्यसुवर्णकूनां सँव्वत्सरे ऽस्मिन्नरनाथतुल्यम् ॥ १५८ ॥

चतुर्थ में 'शुक्र' हो तो कृषि तथा वाहनों का सुख, धान्य, सुवर्ण तथा भूमि का लाभ एवं उस वर्ष में मनुष्य को राजा के समान कान्तिवाला करता है।

सुत गत शुक्र फलः----

भृगोर्नन्दनो नन्दने नन्दनानां विवृद्धिं विधत्ते बृहद्विध्युपेतम्।
क्षयं चाम्बवापत्तिचिन्ताभयानां विनाशं द्विषामब्दमध्ये स्वयुक्तम् ॥ १५९ ॥

पञ्चम में 'शुक्र' हो तो पुत्रों की विशेष वृद्धि, बहुत बड़े भाग्य से युक्त, क्लेश, आपत्ति, चिन्ता और भय का नाश एवं शत्रुओं का नाश और उस वर्ष में धन से युक्त करता है।

षष्ठगत शुक्र फलः----

करोत्यासुरेज्यो ऽरिगो वर्षमध्ये व्यथां लोचने चोदरे मस्तकाच्चिम्।
अरातेर्भयं कष्टमङ्गोपतापं विवादं जनैर्गुप्तचिन्तां व्यथांच ॥ १६० ॥

षष्ठ में 'शुक्र' हो तो उस वर्ष में नेत्र, उदर तथा शिर में पीडा, शत्रु से भय तथा कष्ट, शरीर में रोग, लोगों से विवाद एवं गुप्त चिन्ता और पीडा को करता है।

सप्तमगत शुक्र फलः---

युवत्यानिकेते यदा दानवेज्यो युवत्या विलासादि कुर्य्याच्च सौख्यम्।
तदानीमवाप्तिं सुवर्णांशुकानामरातेर्विनाशं सुखं विग्रहस्य ॥ १६१ ॥

सप्तम में 'शुक्र' हो तो स्त्री के विलासादि तथा सुख, सुवर्ण और वस्त्रों की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश और शरीर के सुख को करता है।

अष्टमगत शुक्र फलः---

कालालयस्थः प्रकरोति काव्यो जनापवादं मृतितुल्यकष्टम्।
गदं दृशोर्वैरिजनैर्विवादं कष्टं च भीतिं ज्वरपूर्वपीडाम् ॥ १६२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अष्टम में 'शुक्र' हो तो मनुष्यों से अपवाद, मृत्यु के समान कष्ट, नेत्रों में रोग, शत्रुजनों से विवाद, कष्ट, भय एवं ज्वरादि से पीडा को करता है।

नवम गत शुक्र फलः--

ज्ञानालयस्थो यदि षोडशार्चिर्भृभृत्समानं वितनोति मर्त्यम्।
अब्दे सुखं यानविभूषणानां प्राप्तिं धरागोकनकांशुकानाम् ॥ १६३ ॥

नवम में 'शुक्र' हो तो मनुष्य को राजा के समान कान्ति वाला करता है। और उस वर्ष में वाहन तथा भूषणों का सुख एवं भूमि, गौ, सुवर्ण और वस्त्रों की प्राप्ति को करता है।

दशम गत शुक्र फलः---

विधत्ते सितोऽनेकभोगान्सुखं च तथा वाससां सौख्यमाकांक्षयातः।
बहुस्वापतेयं क्रये विक्रये च जनानां निजानां सुखं वत्सरेऽस्मिन् ॥ १६४ ॥

दशम में 'शुक्र' हो तो अनेक भोग, सुख, वस्त्रों का सौख्य, क्रय विक्रय में बहुत लाभ और उस वर्ष में अपने लोगों का सुख होता है।

लाभगत शुक्र फलः--

कविर्भवे हाटकलाभकारी पृथ्वीपपक्षात्सुखमातनोति।
वयस्यवृद्धिं रिपुवर्गनाशं जयं विवृद्धिं तनुसम्भवानाम् ॥ १६५ ॥

लाभ में 'शुक्र' हो तो सुवर्ण का लाभ, राज पक्ष से सुख, मित्रों की वृद्धि, शत्रुगण का नाश, जय और पुत्र वृद्धि को करता है।

व्यय गत शुक्र फलः----

यदा द्वादशे दानवाधीशवन्द्यस्तनूलोचनार्तिं करोत्यब्दमध्ये।
विकारं श्रुतौ प्राणपीडाऽऽर्तिकृच्च स्वकीयां दशाख्यां तु नेष्टां करोति ॥ १६६ ॥

व्यय में 'शुक्र' होतो मनुष्य के शरीर तथा नेत्रों में पीडा और उस वर्ष में कानों में विकार प्राणों को पीडा तथा कष्ट और अपनी दशा में अनिष्टफल को करता है।

लग्न गत शनि फलः----

विधत्ते दिवानाथजो देहयातोऽपवादं परैः कामिनीकायकष्टम्।
ज्वराख्यामयं मन्दमस्यां समायां समीरव्रणत्रासपूर्वोत्थकष्टम् ॥ १६७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में 'शनि' हो तो शत्रुजनों से अपवाद, स्त्री के शरीर में कष्ट, ज्वर रोग, मन्दता और उस वर्ष में वायु, व्रण और भय इत्यादि से कष्ट को करता है।

धन गत शनि फलः--

संज्ञासुतः कोशनिकेतगः कफमरुन्मुखार्त्तिं परिपान्थिवर्द्धनम्।
स्थलान्तरं देहनिपीडनं क्षयं स्वबान्धवनां वितनोति वत्सरे ॥ १६८ ॥

द्वितीय में 'शनि' हो तो कफ तथा वातादि से पीडा, शत्रुओं की वृद्धि, अन्यग्राम गमन, शरीर में पीडा और उस वर्ष मे निज बन्धु जनों का नाश करता है।

सहज गत शनि फलः----

दुश्चिक्यभावे दिननायकोत्थो व्रजेदवश्यं धनपूर्वभोगान्।
शौर्य्यं रमां भूपजनानुकम्पामङ्गेऽनुजानामुपतापवृद्धिम् ॥ १६९ ॥

तृतीय में 'शनि' हो तो अवश्य धनादि भोगों को प्राप्त होता है। एवं पराक्रम, लक्ष्मी तथा राजकृपा को प्राप्त होता है और भाइयों के शरीर में रोग की वृद्धि को करता है।

सुख गत शनि फलः----

तनूपतापं चतुरांघ्रिपीडां मित्रोपघातो यदि मित्रपुत्रः।
पक्षे जनन्यास्तु रुजं विधत्ते गुप्तां स्मृतिं नेष्टकरी दशाऽस्य १७० ॥

चतुर्थ में 'शनि' हो तो शरीर में रोग, पशुओं की हानि, मातृ पक्ष में रोग, गुप्त चिन्ता और उस वर्ष में शनि की दशा अशुभ फलको करता है।

सुत गत शनि फलः----

पतङ्गपुत्रे प्रतिभां समाश्रिते द्युम्नादिषु क्षोणिपतेर्भयं भवेत्।
कुमारकष्टं जठरे प्रपीडनं कष्टं च वैकल्यमतीव तापकृत् ॥ १७१ ॥

पञ्चम में 'शनि' हो तो धनादि यों में राजा से भय, पुत्र को कष्ट, उदर में पीडा, कष्ट, विकलता और अत्यन्त ताप को करता है।

रिपुगत शनि फलः----

मान्द्यङ्गतो मन्दगतिर्यशोऽर्थभूलाभदो भूपसमं करोति।
स्वधान्यवस्त्रादिकलाभमब्दे आर्त्तेर्विनाशं च यशोविवृद्धिम् ॥ १७२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

षष्ठ में 'शनि' हो तो यश धन तथा भूमिका लाभ, राजा के समान कान्ति एवं धन, धान्य तथा वस्त्रादि का लाभ और वर्ष में पीडा की हानि तथा यश की वृद्धि को करता है।

सप्तमगत शनि फलः—

मन्दोऽस्तगः पशुमृतिं च मृषापवादं
मार्गाद्भयं वितनुतेऽङ्गकरोदरेषु।
पीडां तथा युवतिपीडनमास्त्रवाणां
वृद्धिं भयं नृपत आकुलतामिहाब्दे ॥ १७३ ॥

सप्तम में 'शनि' हो तो पशुओं की हानि मिथ्या अपवाद, मार्ग में भय, शरीर हस्त तथा उदर में पीडा, स्त्री को कष्ट, क्लेशों की वृद्धि और उस वर्ष में राजा से भय तथा व्याकुलता होती है।

अष्टमगत शनि फलः---

मन्दो मृतिस्थो मृतिमर्थहानिं परैः कफार्त्तिं च जनापवादम्।
ज्वरप्रकोपं धरणीशभीतिं वायूदयस्तापकरोऽब्दमध्ये ॥ १७४ ॥

अष्टम 'शनि' हो तो मृत्यु, शत्रुओं से धन हानि, कफ से पीडा, मनुष्यों से अपवाद, ज्वर का प्रकोप राजा से भय वात रोग की उत्पत्ति और उस वर्ष में ताप को करता है।

नवमगत शनि फलः----

भाग्योदयो भाग्यगते भगात्मजे सपत्ननाशो नरपार्थदो भवेत्।
श्रियं यशो मानमिह प्रयच्छतु स्वकीयसोदर्य्यभयार्त्तिकृत्तथा ॥ १७५ ॥

नवम में 'शनि हो तो भाग्योदय शत्रुओं का नाश, राजा से धन का लाभ, लक्ष्मी कीर्ति तथा मान को देता है और अपने भाइयों को भय तथा पीडा करनेवाला होता है।

दशमगत शनि फलः----

पङ्गुः प्रकुर्य्याद्दिवि तुर्य्यपाद्भयं रायामवाप्तिं क्रयविक्रयोरपि।
लाभं नरं भूपसमं कृषिक्षयं तथाब्दमध्ये स्वजनोदरव्यथाम् ॥ १७६ ॥

दशम में 'शनि' हो तो चतुष्पद से भय, धन की प्राप्ति, क्रय विक्रय में भी लाभ, राजा के समान कान्ति, कृषि का नाश और उस वर्ष में अपने लोगों के उदर में पीडा को करता है।

लाभगत गुरु फलः—

सुवर्णगोवाजिरथक्षमाप्तिं कीर्त्तिर्विवृद्धिं विभवागमं च।
व्यथां स्वसन्तानतनौ तनोति मनोरथस्थो मृदुनामधेयः ॥ १७७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लाभ में 'शनि हो तो सुवर्ण, गौ, घोड़ा, रथ और भूमि की प्राप्ति, कीर्तिकी वृद्धि धन का लाभ एवं पुत्र के शरीर में कष्ट को करता।

व्ययगत शनि फलः—

प्रान्त्ये पङ्गौ स्याद् व्ययो व्यग्रताब्दमध्ये पीडा शात्रवाणां विनाशः।
चिन्ता क्लेशः श्रोत्रयोः स्याद् विकार आर्त्तिः शीर्षे स्वापतेयस्य नाशः ॥ १७८ ॥

व्यय में 'शनि' हो तो द्रव्यव्यय, व्यग्रता और उस वर्ष में शरीर पीडा, शत्रुओं का नाश, चिन्ता, क्लेश, कानों में विकार, शिर में पीडा और धन का नाश होता है।

लग्नगत राहु फलः—

व्यथा वधूनां नरपादिभीतिर्मानस्य हानिर्नयनोपतापः।
स्याद् व्यग्रता मस्तक आर्त्तिरिन्दुप्रत्यर्थिनि प्राक्कुजगे ऽब्दमध्ये ॥ १७९ ॥

लग्न में 'राहु' हो तो स्त्रियों को कष्ट, राजा तथा शत्रु से भय, मान की हानि नेत्रों में रोग और उस वर्ष में व्यग्रता तथा शिर में पीडा होती है।

धनगत राहु फलः—

करोति वाक्सद्मनि सैंहिकेयो भीत्यार्त्तिदोषान् द्रविणापहारम्।
लोकापवादं जठराक्षिरोगं सँव्वत्सरे साध्वसकं क्षमेशात् ॥ १८० ॥

धन में राहु' हो तो भय, पीडा, दोष, धन का नाश नाश, लोगों से अपवाद, उदर तथा नेत्रों में रोग और उस वर्ष में राजा से भय को करता है।

सहजगत राहु फल—

भुजङ्गमेशो भुजभावयातो रिक्थैरुपेतं मनुजेन्द्रतुल्यम्।
करोति सौख्यं पशुधोरणोत्थं वर्षे स्वलोकेष्विह पीडनं च ॥ १८१ ॥

तृतीय में 'राहु' हो तो धन से युक्त, राजा से समान कान्ति, चतुष्पद तथा वाहन से सुख और उस वर्ष में अपने लोगों को कष्ट होता है।

सुख गत राहु फलः—

विधुन्तुदो बान्धववेश्मवर्त्ती दुःखं कफार्त्तिं पवनप्रपीडाम्।
दरं धरेशाद् भ्रमणं विदेशे यानस्य नाशं कुरुते ऽब्दमध्ये ॥ १८२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चतुर्थ में 'राहु' हो तो दुःख, कफ तथा वायु से पीडा, राजा से भय, विदेश में भ्रमण और उस वर्ष में वाहन का नाश करता है।

पंचम गत राहु फलः----

पातः प्रबन्धोपगतोऽब्दमध्य आदीनवं स्वीयमते विनाशम्।
सन्तानकष्टं कुरुते धनार्त्तिं स्मृतिं स्वकीयोदर वातभीतिम् ॥ १८३ ॥

पञ्चम में 'राहु' हो तो उस वर्ष में क्लेश, अपनी बुद्धि का नाश, सन्तान को कष्ट, धन की हानि, चिन्ता और अपने उदर में वात जन्य भय को करता है।

षष्ठ गत राहु फलः----

निशाकरारावरिगेऽरिनाशः स्वर्णक्षमागोवसनाप्तिकृच्च।
सर्वसहानाथसमानकीर्त्तिः स्यात्स्वाप्तिकृत्कष्टविनाशकारी ॥ १८४ ॥

षष्ठ में 'राहु' हो तो शत्रु का नाश, सुवर्ण, भूमि, गौ और वस्त्र की प्राप्ति, राजा के समान कीर्ति, धन प्राप्ति और कष्ट का नाश करता है।

सप्तम गत राहु फलः----

करोति भार्य्याभवने भुजङ्गः स्मृतिं प्रमेहादिसमीररोगम्।
गुप्तेन्द्रियाख्येषु च पीडनं तन्नितम्बिनीमन्दहुताशकष्टम् ॥ १८५ ॥

सप्तम में 'राहु' हो तो चिन्ता, प्रमेहादि वात रोग गुप्तेन्द्रियों में पीडा और उस की स्त्री को मन्दाग्नि से कष्ट करता है।

अष्टम गत राहु फलः---

काकोदरः कालगृहाश्रितो यदा विषूचिकाजूर्त्यतिसारकृन्नृपात्।
भीतिं नरं मृत्युसमं समीरणभयं प्रकुर्य्याच्च कफार्त्तिदोषकृत् ॥ १८६ ॥

अष्टम में 'राहु' हो तो विषूचिका (हैजा) ज्वर, अतिसार, राजा से भय, मृत्यु के समान कष्ट, वात जन्य भय एवं कफ से पीडा तथा दोष को करता है।

नवम गत राहु फलः---

फणी प्रकुर्य्याद्विधिभावगोऽहितक्षयं नियत्या उदयं महीपतः।
जयं च सस्यद्रविणागमं पशौ बन्धौ तु बाधां सुकृतस्य संक्षयम् ॥ १८७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नवम में 'राहु' हो तो शत्रु का नाश, भाग्योदय, राजा से जय, धान्य तथा द्रव्य का लाभ, चतुष्पद तथा बन्धुजनों में पीडा और पुण्य का नाश करता है।

दशम गत राहु फलः----

भोगी खगो भूपसमं विधत्ते मानक्षयं विक्रयके क्रयेऽपि।
लाभं जयं मर्त्यपतेः समज्ञां वित्तं द्रुतं सन्ततमेव शर्म्म ॥ १८८ ॥

दशम में 'राहु' हो तो राजा के समान कान्ति, मान का नाश, विक्रय में तथा क्रय में भी लाभ, राजा से जय, कीर्ति, शीघ्र धन का लाभ और नित्य कल्याण को करता है।

लाभ गत राहु फलः----

सिंहीपुत्रः प्राप्तिगो भूपतुल्यं मर्त्यं कुर्य्यान्नन्दनस्थानमस्मिन्।
अब्दे शत्रोः संक्षयं सञ्चयं गोगाङ्गेयानां स्वापतेयक्षमाणाम् ॥ १८९ ॥

लाभ में 'राहु' हो तो मनुष्य को राजा के समान करता है। उस वर्ष में पुत्र को भय, शत्रु का नाश, गौ, सुवर्ण, धन और भूमिके सञ्चय को करता है।

व्यय गत राहु फलः----

राहूरिःफे स्त्रीव्यथां नेत्ररोगं कुर्य्यात्पीडां कर्णयोः के च कुक्षौ।
स्थानभ्रंशं वैरिभीतिं कलिं स्वैर्लोकैर्वायोश्चोदयं श्रीविनाशम् ॥ १९० ॥

व्यय में 'राहु' हो तो स्त्री को कष्ट, नेत्रों में रोग, कानों में, शिर में तथा कुक्षि में पीडा, स्थान से भ्रष्ट शत्रु से भय, अपने लोगों से कलह, वात रोग की उत्पत्ति और लक्ष्मी की हानि को करता है।

लग्न गत मुन्था फलः----

यद्यङ्गयाता मुथहा प्रतापवृद्धिं च पुष्टिं वपुषोऽरिनाशम्।
हृत्तुष्टिलाभं वितरेदनेकोद्यमान प्रसादं नरपस्य सौख्यम् ॥ १९१ ॥

लग्न में 'मुन्था' हो तो पराक्रम की वृद्धि, शरीर की पुष्टि, शत्रु का नाश, चित्त में सन्तोष, अनेक प्रकार के उद्योग, राजा की प्रसन्नता तथा सौख्य को करती है।

धन गत मुन्था फलः----

मिष्टान्नलाभं कुरुते स्वबुद्धिसम्मानभूपाश्रयकं समज्ञाम्।
तीर्थागमं चाध्यवसायमङ्गे पुष्टिं च कान्तिं धनगेन्थिहा चेत् ॥ १९२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन में 'मुन्था' हो तो मिष्टान्न (मिठाई) भोजन, अपनी बुद्धि बल से सम्मान, राजाश्रय, कीर्ति, तीर्थाटन, उत्साह, शरीर में पुष्टि और सौन्दर्य को करती है।

सहज गत मुन्था फलः—

सहोत्थगेन्था सकलोपकारः सहः समज्ञार्थसुखानि भक्तिः।
गोदेवविप्रेषु नृपाश्रयोऽङ्गे स्यात्पुष्टिकान्ती च मनोहरत्वम् ॥ १९३ ॥

तृतीय में 'मुन्था' हो तो सब का उपकार करे। पराक्रम, यश, धन और सुख की प्राप्ति; गौ, देवता तथा ब्राह्मण में भक्ति, राजाश्रय, शरीर में पुष्टि, कान्ति तथा सुन्दरता को करती है।

सुख गत मुन्था फलः—

हृदीन्थिहायां हृदये तु तापो भ्याभीलयोर्वृद्धिररातिभीतिः।
कलेवरार्त्तिः स्वजनैर्विरोधो लोकेषु निन्देह विरोधताऽब्दे ॥ १९४ ॥

चतुर्थ में 'मुन्था' हो तो मन में ताप; भय तथा दुःख की वृद्धि, शत्रु से भय, शरीर में पीडा, अपने लोगों से विरोध और उस वर्ष में निन्दा तथा विरोधता होती है।

सुत गत मुन्था फलः—

सन्तानसंस्था मुथहा प्रतापवृद्धिर्विलासो विविधः स्वबुद्धेः।
धर्म्मार्थपुत्राप्तिरिलाधिपस्य प्रसन्नता देवमहीसुरार्चा ॥ १९५ ॥

पञ्चम में 'मुन्था' हो तो प्रताप की वृद्धि, अपनी बुद्धि से अनेक प्रकार का विलास, धर्म्म, धन तथा पुत्र की प्राप्ति, राजा की प्रसन्नता एवं देवता और ब्राह्मण में भक्ति होती है।

रिपु गत मुन्था फलः—

मुन्थाऽरिगा चेद् धिषणाविवृद्धिर्धर्म्मेऽनुतापो धनकार्य्यहानिः।
अङ्गेषु दौर्बल्यमिलाधिनाथाचौराद्भयं स्यादुदयोऽहितानाम् ॥ १९६ ॥

षष्ठ में 'मुन्था' हो तो बुद्धि की वृद्धि, धर्म्म में पश्चात्ताप, धन तथा कार्य की हानि, अङ्गो में दुर्बलता, राजा तथा चोर से भय एवं शत्रु जनों का उदय होता है।

सप्तम गत मुन्था फलः—

स्वपुण्यनाशोऽध्यवसायभङ्गो रुजा शरीरे हृदि मोहसञ्ज्ञः।
विरुद्धचेष्टा व्यसनारिबन्धुस्त्रीसाध्वसं सप्तमगेन्थिहा चेत् ॥ १९७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सप्तम में 'मुन्था' हो तो धन तथा धर्म का नाश, उत्साह भङ्ग, शरीर में रोग, हृदय में मोह, विरुद्ध चेष्टा, व्यसन, शत्रु, बान्धव तथा स्त्रीजन से भय होती है।

अष्टम गत मुन्था फलः—

मुन्थाभिधा नैधनमन्दिरस्था दूरे प्रयाणं सुकृतार्थनाशः।
बलस्य नाशः प्रतिरोधिभीतिर्भूपाद्भयं दुष्टरुजा प्रपीडा ॥ १९८ ॥

अष्टम में 'मुन्था' हो तो दूर देश की यात्रा, पुण्य तथा धन का नाश एवं पराक्रम की हानि, चोर तथा राजा से भय, दुष्ट रोग तथा पीडा होती है।

नवम गत मुन्था फलः—

भाग्ये ऽन्थिहा भूसुरदेवभक्तिः स्त्रीपुत्रसौख्यं परमा समज्ञा।
दैवोदयं तुङ्गपदं प्रभुत्वं महीपतिभ्यः सुकृतोत्सवः स्यात् ॥ १९९ ॥

नवम में 'मुन्था' हो तो ब्राह्मण तथा देवताओं में भक्ति, स्त्री तथा पुत्रों का सुख, महती कीर्ति, भाग्योदय, उच्चपद प्राप्ति, राजाओं से अधिकार की प्राप्ति एवं उस वर्ष में धर्म तथा उत्सव होता है।

दशम गत मुन्था फलः—

मुन्था खस्था भूमिनाथप्रसादं नानारूपार्थाप्तिसत्कर्म्मसिद्धी।
कीर्तेर्वृद्धिं स्वीयलोकोपकारं दद्याद्विप्रादित्यभक्तिं पदाप्तिम् ॥ २०० ॥

दशम में 'मुन्था' हो तो राजा की कृपा, अनेक प्रकार से धन का लाभ, सत्कर्म की सिद्धि कीर्ति की वृद्धि, परिजनों का उपकार, ब्राह्मण तथा देवताओं में भक्ति एवं पद की प्राप्ति को देती है।

लाभ गत मुन्था फलः—

आये ऽन्थिहायां द्रविणानि राजाश्रयाद्विलासो हृदये प्रसादः।
ऐश्वर्य्यसौभाग्यसुमित्रपुत्राभीष्टाप्तयो ऽस्मिन्प्रभवन्ति वर्षे ॥ २०१ ॥

लाभ में 'मुन्था' हो तो राजा के आश्रय से धन का लाभ, विलास, हृदय में प्रसन्नता, उस वर्ष में ऐश्वर्य, सौभाग्य, उत्तम मित्र, तथा अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

व्यय गत मुन्था फलः—

मुन्था ऽन्त्यस्था सङ्गमो दुर्जनस्य देहे रोगो विक्रमान्नैव सिद्धिः।
हानिर्धर्म्मद्रव्ययोः सज्जनश्च वैरं वर्षाख्ये ऽधिकः स्याद् व्ययो ऽस्मिन् ॥ २०२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व्यय में 'मुन्था' हो तो दुर्जन का सङ्ग, शरीर में रोग, पराक्रम करने पर कार्य की सिद्धि नहीं होती है। धर्म तथा धन की हानि, सज्जनों के साथ वैर और उस वर्ष में अधिक व्यय होता है।

वर्षेशादिनिर्णयः—

राजा भवेद्वर्षप इन्थिहाधिपो मंत्री जनुर्लग्नपतिः पुरोहितः।
होराविभुर्यः सवरूथिनीविभुस्त्रैराशिपो धान्यरसादिधातुपः ॥ २०३ ॥

वर्ष स्वामी 'राजा' मुन्थाराशिस्वामी 'मंत्री' जन्मलग्नेश 'पुरोहित' वर्षलग्नेश 'सेनापति' त्रैराशिस्वामी 'धान्य रसादि धातु का स्वामी' होता है।

राजादिग्रहोंके बलका निर्णयः—

पूर्णं बलं स्वोच्चगृहे स्वभेऽथो मध्यं स्वहद्दात्रिलवाङ्कभागे।
नष्टं बलं मूढसपत्नराशौ स्वनिम्नभेदग्धबलं ग्रहस्य ॥ २०४ ॥

'राजादि ग्रह' यदि स्वोच्चराशि में वा स्वराशि में होतो उस ग्रहका 'पूर्ण बल' अपनी हद्दा में अपने द्रेष्काण में वा अपने नवांश में 'मध्यबल' अस्तगत वा शत्रुराशि गत होनेपर 'नष्ट बल' एवं अपनी नीच राशि में ग्रह का 'दग्ध बल' होता है।

त्रिकास्तहीनः शुभमित्रवर्गगः पुष्टोऽर्थवृद्धिं विविधं सुखं हितम्।
सुतं विनष्टो विफलं समः समं करोति दग्धोऽर्थहृतिं रुजो भयम् ॥ २०५ ॥

जो 'ग्रह' त्रिक (षष्ठ, अष्टम तथा व्यय) स्थान में न हो, अस्तंगत न हो, शुभग्रहके वर्ग में वा मित्रके वर्ग में हो तो वह 'ग्रह पुष्ट' होता है। वह धनकी वृद्धि, अनेक प्रकार के सुख एवं मित्र तथा पुत्रका लाभ करता है। 'विनष्ट ग्रह' विफलता, 'समग्रह' साधारणता एवं 'दग्ध ग्रह' धनकी हानि और रोग से भय को करता है।

बली वर्षेश रवि फलः—

सूर्येऽब्दपे बलयुतेऽधिकराज्यलाभ-
श्चान्यस्थलात्स्ववसुधासखिकीर्त्तिलाभः।
शत्रुक्षयं बहुसुखं स्वकुले प्रतिष्ठा-
प्राप्तिः फले जनिविहङ्गमयुक्तितोऽत्र ॥ २०६

वर्षेश सूर्य बलवान् होतो अन्यस्थान से अधिक राज्य का लाभ; धन, भूमि, मित्र तथा कीर्त्ति की प्राप्ति शत्रु का नाश; बहुत सुख तथा अपने कुल में प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। यहां फल विचारणा में जन्मकालीन ग्रहों की युक्ति से फलादेश का निर्णय करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मध्यबली वर्षेश सूर्य फलः—

मध्यो बली दिनकरोऽल्पसुखं दशायां
भूपात्सुतात्सुजनतः प्रकरोति वर्षे ।
दारिद्र्यमामयभयं स्वजनैर्विवादं
विद्वेषमल्पमिह सार्द्धमिलाधिनाथैः ॥ २०७ ॥

वर्षेश सूर्य मध्य बली होतो वह उस वर्ष अपनी दशा में राजा, पुत्र तथा सुजनों से अल्प सुख को करता है। दारिद्र्य तथा रोग से भय, परिजनों से विवाद एवं राजाके साथ स्वल्प वैर को करता है।

नष्ट दग्ध बली वर्षेश सूर्य फलः—

भानौ विनष्टे रिपुतो विरोध उग्रं भयं स्वीयजनात्स्वमित्रात् ।
नित्यं स्वनाशः कलहोऽथ दग्धेऽपवाददौस्थ्यं गमनं तु दूरे ॥ २०८ ॥

वर्षेश सूर्य नष्ट बली होतो शत्रु से वैर, परिजन तथा मित्र से दारुण वैर, नित्य धनकी हानि तथा कलह होता है। वर्षेश सूर्य दग्ध बली हो तो अपवाद, दौस्थ्य (सरोगता) और दूर देश भ्रमण होता है।

बली वर्षेश चन्द्र फलः—

चन्द्रेऽब्दपे वीर्य्ययुते कुभृज्जनान्नृपात्स्वलाभो निजभामिनीवशात् ।
सौख्यान्यनेकानि भवन्ति वत्सरे लाभस्तदा पाण्डुर वस्तुहेतुतः ॥ २०९ ॥

वर्षेश चन्द्र बली हो तो राजपुरुष तथा राजा से लाभ, अपनी स्त्री के कारण अनेक प्रकारके सुख और उस वर्ष में श्वेत वस्तु के कारण लाभ होता है।

मध्यबली वर्षेश चन्द्र फलः —

मध्यो बली ग्लौः स्वजनाद्विरोधं वैरं नृपाद् भूपजनात्स्वनाशम् ।
स्त्रीतोऽल्पसौख्यं कृशतां करोति वैराग्यकष्टोत्थितसाध्वसोग्रम् ॥ २१० ॥

वर्षेश चन्द्र मध्यबली हो तो स्वजनों से विरोध, राजा से वैर, राज पुरुषों से धन की हानि, स्त्री से अल्प-सुख तथा दुर्बलता एवं वैराग्य (औदासीन्य) तथा कष्ट से उत्पन्न भय और उग्रता को करता है।

नष्ट दग्ध बली वर्षेश चन्द्र फलः—

नष्टेऽब्देशेऽब्जे स्ववंशेविरोधो वातश्लेष्मादेर्व्यथोर्वीपवैरम् ।
अन्यस्थानाद्वैरिभीश्चासुखं स्याद् दग्धे चन्द्रे मृत्युभीर्मानवानाम् ॥ २११ ॥

वर्षेश चन्द्र नष्ट बली होतो अपने कुल में विरोध, वात कफादि से पीडा, राजा से वैर, अन्यस्थान में शत्रु से भय तथा सुख की हानि होती है। वर्षेश चन्द्र दग्ध बली होतो मनुष्यों को मृत्यु से भय होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बली वर्षेश भौम फलः--

वक्रे सवीर्य्ये ऽब्दधवे ऽवनीशात्स्वाप्ती रणे ऽरेर्विजयो ऽध्वसौख्यम् ।
सेनाधिपत्यं विविधं सुखं स्त्रीसङ्गाच्च सेवाधनमेति मर्त्यः ॥ २१२ ॥

वर्षेश भौम बली हो तो राजा से धन की प्राप्ति, सङ्ग्राम में शत्रु से विजय, मार्ग में सुख, सेना का स्वामित्व, स्त्री के सङ्ग से अनेक प्रकार का सुख एवं सेवा से धन मिले।

मध्यबली वर्षेश भौम फलः—

मध्ये बले ऽस्त्रे कृशता ऽखिलाङ्गे बह्वामयो ऽयोभयमर्थनाशः ।
चौरात्स्वलोकाच्च भयं धरेशजनेषु वैरोदयको विवादः ॥ २१३ ॥

वर्षेश भौम मध्यबली हो तो समस्त शरीर में दुर्बलता, बहुत रोग, लोह से भय, द्रव्य की हानि चौर तथा परिजनों से भय एवं राज पुरुषों से वैर का उदय तथा विवाद होता है।

नष्ट दग्ध बली वर्षेश भौम फलः—

पित्तोदयो ऽघ्र्यक्षिमुखप्रदेशे चौराग्निभीर्दुष्टभयं स्वलोकात् ।
धान्यार्थनाशो ऽस्त्ररुजापकीर्त्तिर्नष्टे कुजे स्त्रीसखिबन्ध्वनीकः ॥ २१४ ॥

वर्षेश भौम नष्ट बली हो तो चरण, नेत्र तथा मुख प्रदेश में पित्तोदय, चौर अग्नि तथा दुष्ट जन से भय; परिजनों से धान्य तथा धन का नाश एवं रक्त विकार तथा अपयश होता है। यदि वर्षेश भौम दग्ध बली होता स्त्री, मित्र तथा तथा बान्धवों के साथ कलह होते है।

बली वर्षेश बुध फलः—

बुधे ऽब्दनाथे सबले ऽतिसौख्यं वाणिज्यसेवालिखनार्थलाभः ।
वधूसुहृत्सूनुसुखं प्रभूतं तथा विलासः पठनादिलाभः ॥ २१५ ॥

वर्षेश बुध बली हो तो अत्यन्त सुख; व्यापार, सेवाकर्म तथा लेखन कर्म से धन का लाभ; स्त्री मित्र तथा पुत्र का बहुत सुख एवं विलास तथा पठनादि का लाभ होता है।

मध्य बली वर्षेश बुध फलः--

मध्यो बुधः पुत्रसुहृद्वधूकलिं स्ववाक्यदोषादमितां महीपतः ।
सर्वार्थहानिं कुरुते कृशं सुखं वैरोदयं मर्त्यपलोकतो जनात् ॥ २१६ ॥

वर्षेश बुध मध्य बली हो तो पुत्र, मित्र तथा स्त्री से कलह, अपने वचन के दोष से असमानता, राजा से समस्त अर्थ की हानि, अल्प सुख एवं राज पुरुषों से और लोगों से वैर का उदय होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नष्ट दग्ध बली वर्षेश बुध फलः—

स्वलोकतो वित्तलयो विवादः साक्ष्यं मृषा तस्करभूपभीतिः ।
क्लेशोद्गमः कण्ठहृदोर्गदो ज्ञे नष्टे ऽक्षिपीडात्र समं तु दग्धे ॥ २१७ ॥

वर्षेश बुध नष्ट बली होतो अपने लोगों से धन का नाश, मिथ्या (झूठी) साक्षी (गवाही) चोर तथा राजा से भय; क्लेश का उदय; कण्ठ; तथा हृदय में रोग एवं नेत्रों में पीड़ा होती है। यदि वर्षेश बुध दग्ध बली हो तो उक्त फल के ही समान फल होता है।

बली वर्षेश गुरु फलः—

सोर्ज्जे सुरेज्ये ऽब्दपतौ रिपोर्जयो योषिद्विलासो विविधं सुखं सुतात् ।
मित्रात्स्वलाभो नरनायकाद्भवेद् विश्वास्यता सर्वजनेषु सन्ततम् ॥ २१८ ॥

वर्षेश गुरु बली हो तो शत्रु से जय, स्त्रियों का विलास, पुत्र से अनेक प्रकार का सुख, मित्र तथा राजा से धन का लाभ एवं सब मनुष्यों का नित्य विश्वास पात्र होता है।

मध्यबली वर्षेश गुरु फलः—

वैरोदयः स्वीयजनाद्विवादं परैः प्रकुर्य्यादशुभं महीपात् ।
जने विरोधं कृशतां सुरेज्ये मध्येबले तस्करतो भयं स्यात् ॥ २१९ ॥

वर्षेश गुरु मध्यबली होतो परिजनों से वैर का उदय, शत्रुओं से विवाद, राजा से धन हानि, लोगों में विरोध, शरीर में दुर्बलता एवं चोरों से भय होता है।

नष्ट बली वर्षेश गुरु फलः—

नष्टे सुरेज्ये सुतमित्रयोषितस्त्यजन्ति पुण्यार्थसुखक्षयं कलिः ।
सपत्नभीः श्लेष्मरुजः स्वलोकतो ऽपवादभीराकुलतातिकष्टकम् ॥ २२० ॥

वर्षेश गुरु नष्ट बली हो तो पुत्र, मित्र तथा स्त्रीजन त्याग देते हैं। पुण्य, धन तथा सुख का नाश, कलह, शत्रु से भय, कफ रोग, परिजनों से अपवाद का भय एवं व्याकुलता तथा अतिकष्ट होता है।

बली वर्षेश शुक्र फलः—

वीर्य्योपेतो भो ऽब्दपः स्त्रीविलासहास्यं कुर्य्यान्निर्गदत्वं प्रतापम् ।
लाभं सौख्यं धीवरान्नप्रसादक्षेमान्भूपादर्थसौख्यं जयं च ॥ २२१ ॥

वर्षेश शुक्र बली हो तो स्त्रीजनों के विलास तथा हास्य की प्राप्ति, आरोग्यता, प्रताप, लाभ, सौख्य; बुद्धि, उत्तमान्न, प्रसन्नता तथा कुशलता को करता है। एवं राजा से धन, सौख्य तथा जय को करता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मध्यबली वर्षेश शुक्र फलः----

वैरं रिपोर्निजजनान्नृपतः सुतस्त्री-
त्रासार्त्तिकृत्कफविकारकरो ऽर्थनाशः ।
कार्यक्षयो भवति मेहगदो दशायां
सौख्यं न दानवगुरौ यदि मध्यवीर्य्ये ॥ २२२ ॥

वर्षेश शुक्र मध्य बली होतो शत्रु, परिजन तथा राजा से वैर, पुत्र तथा स्त्री को भय तथा कष्ट एवं कफ विकार, धन तथा कार्य का नाश और शुक्र की दशा में प्रमेह रोग होता है और सुख नहीं होता है।

नष्ट दग्ध बली वर्षेश शुक्र फलः--

नष्टौजसि क्षितिपते रिपुतो ऽसुखत्वं
तीव्रं जनैः सह कलिः सुखवित्तहानिः ।
अत्यन्तसाध्वसशुचौ भृगुजे विवादो
दग्धे क्षयं निजमतेर्निजदायकाले ॥ २२३ ॥

वर्षेश शुक्र नष्ट बली होतो राजा तथा शत्रु से सुख की हानि, मनुष्यों से कलह, सुख तथा धनकी हानि, अत्यन्त भय, शोक तथा विवाद होता है। वर्षेश शुक्र दग्ध बली होतो उस की दशा में बुद्धिका नाश होता है।

बली वर्षेश शनि फलः—

ऊर्ज्जोपेते वर्षपे ब्रध्नजे ऽतिलाभो ऽरण्यात्पर्वतादर्थलाभः ।
वाणिज्यस्त्रीकृष्यवृक्षादिभिश्च म्लेच्छाद्दुष्टात्सौख्यमात्मीयलोकात् ॥ २२४ ॥

वर्षेश शनि बली हो तो वन तथा पर्वत से अत्यन्त लाभ; व्यापार, स्त्री, कृषि तथा वृक्षादि से धनका लाभ एवं म्लेच्छ (मुसलमान) दुष्टजन तथा परिजन से सुख होता है।

मध्य बली वर्षेश शनि फलः--

मध्ये वीर्य्ये वातपीडाक्षिपृष्ठकण्ठे रुक् स्याद् दुःखदारिद्र्यपीडा ।
मित्रक्षोणीपाललोकस्वलोकैर्वैरं हानिः स्वस्य वैराग्यमार्कौ ॥ २२५ ॥

वर्षेश शनि मध्य बली होतो वात जन्य पीडा, नेत्र, पृष्ठ तथा कण्ठ में रोग; दुःख तथा दारिद्र्य से पीडा, मित्र, राजा तथा परिजनों से वैर; धनकी हानि एवं वैराग्य होता है।

नष्ट दग्ध बली वर्षेश शनि फलः--

नष्टे नीलरुचौ क्रियाविफलता सर्वं निकृष्टं तथा
हानिः स्याद्धनकार्ययोः पवनतो रोगो विकारो विपत् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आभीलं सुहृदां दिवाकरसुते दग्धारव्यके दंष्ट्रितो
भीतिः पुत्रसुहृद्विपत्तिरुदिता स्यात्कालधर्म्माभिधः ॥ २२६ ॥

वर्षेश शनि नष्ट बली हो तो क्रिया में विफलता, सब प्रकार से निकृष्टता; धन तथा कार्य की हानि, वायु के कारण रोग, विकार तथा विपत्ति एवं मित्रों का दुःख होता है। यदि वर्षेश शनि दग्ध बली होतो दाढवाले जीवसे भय; पुत्र तथा मित्रकी विपत्ति एवं मृत्यु होती है।

लग्न की शुभदशा का फलः--

नाथसन्मानमारोग्यमुत्तमं धनभर्मणाम्।
प्राप्तिं करोति मुक्ताया विलग्नस्य दशा शुभा ॥ २२७ ॥

यदि लग्न की शुभ दशा हो तो स्वामी से उत्तम मान उत्तम आरोग्यता एवं धन सुवर्ण तथा मुक्ताफल (मोती) की प्राप्ति करती है।

लग्न की मध्यदशा का फलः—

चेतसो विकृतिं प्राप्तिं कष्टेन द्रविणस्य च
करोति सेवनं मानोनस्य मध्या दशा तनोः ॥ २२८ ॥

लग्न की मध्य दशा हो तो मन में विकार कष्ट से धन की प्राप्ति और नीच जन की सेवा कराती है।

लग्न की कष्ट दशा का फलः--

आदीनवो मतेर्नाशो मानहानिः भयं कलिः।
दूरयात्रा तनोः कष्टा दशा कुर्य्यादिदं फलम् ॥ २२९ ॥

लग्न की कष्ट दशा हो तो क्लेश, बुद्धि का नाश, मान की हानि, भय, कलह एवं दूर देश की यात्रा होती है।

क्रूर लग्न की मध्य दशा का फलः—

मध्या दशोग्रलग्नस्य सुखं तुच्छं धनव्ययम्।
विग्रहं मरणं कुर्यादपुष्टिं देहपीडनम् ॥ २३० ॥

क्रूर लग्न की मध्य दशा हो तो अल्प सुख, धन का व्यय, कलह, मरण, दुर्बलता और शरीर में पीडा को करती है।

पूर्ण बली सूर्य दशा का फलः---

समस्तवीर्य्यस्य दशा खरांशोर्बलस्य कान्तेः प्रकरोति वृद्धिम्।
स्वर्णेभरत्नाश्वधराम्बराणां प्राप्तिं शुचित्वं नरनायकत्वम् ॥ २३१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण बली सूर्य की दशा हो तो बल तथा कान्ति की वृद्धि को करती है। सोना, हाथी, रत्न, घोड़े और वस्त्रों की प्राप्ति को करती है। एवं पवित्रता तथा मनुष्यों के स्वामित्व को करती है।

मध्य बली सूर्य दशा का फलः—

भानोर्दशा मध्यबलस्य मानोदयं पुरे सर्वसथे च देशे।
वाणिज्यतोऽदभ्रधनस्य लाभः प्रीतिं प्रकुर्यात्सुतदारमित्रैः ॥ २३२ ॥

मध्य बली सूर्य की दशा हो तो नगर, ग्राम तथा देश में मान का उदय, व्यापार से बहुत धन का लाभ एवं पुत्र, स्त्री तथा मित्रों के साथ प्रीति को करती है।

नष्ट बली रवि दशा का फलः—

कुर्य्याद्दशा नष्टबलांशुमालिनो वैरं स्वलोकैर्निजबान्धवैः सह।
तापव्यथाकृद् द्युदयं भ्रमस्य च दीप्तिबलस्य द्रविणस्य नाशनम् ॥ २३३ ॥

नष्ट बली सूर्य की दशा हो तो परिजन तथा बान्धवों के साथ वैर; ताप तथा पीडा, भ्रम का उदय एवं कान्ति, बल तथा धन का नाश करती है।

दग्ध बली रवि दशा फलः—

दग्धौजसः पङ्कजिनीपतेर्दशा सपत्नभीतिं नरनाथसाध्वसम्।
कुर्य्याद्वधं बन्धनमर्थनाशनं शोकं च भीतिं महतीं रुजागमम् ॥ २३४ ॥

दग्ध बल सूर्य की दशा हो तो शत्रु तथा राजा से भय, वध, बन्धन; धन का नाश; बहुत भय एवं रोग की प्राप्ति को करती है।

स्थान बल से रवि दशा के विशेष फल का निर्णयः—

निन्द्योऽपि भास्वांस्त्रिभवारिखस्थः फलं तदार्द्धं वितरेत्स्व दाये।
मध्यो बलस्तत्र करोति शस्तं फलं सुशस्तं परिपूर्णवीर्य्यः ॥ २३५ ॥

यदि निन्दित सूर्य भी लग्न से तृतीय, एकादश, षष्ठ तथा दशम में हो तो अपनी दशा में आधा फल को देता है। मध्य बली सूर्य यदि उक्त स्थानों में हो तो शुभ फल और पूर्ण बली सूर्य उक्त स्थानों में हो तो अत्यन्त शुभ फल को करता है।

पूर्ण बली चन्द्र दशा का फलः—

ग्लावो दशा पूर्णबलस्य कुर्याद् भूपार्थलाभं नृपतः पदत्वम्।
मुक्ताफलस्त्रीसितवस्त्ररूप्याप्तिमद्भुतं सौख्यमरातिनाशम् ॥ २३६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण बली चन्द्रमा की दशा हो तो भूमि का स्वामित्व तथा धन का लाभ, राजा से उच्च पद की प्राप्ति, मुक्ताफल, स्त्री, श्वेत वस्त्र तथा चान्दी की प्राप्ति, अद्भुत सुख, तथा शत्रुओं का नाश करती है।

मध्य बली चन्द्र दशा का फलः—

दशा विधोर्मध्यबलस्य कुर्यात् पुण्योदयं स्वालयतोऽतिसौख्यम्।
व्यापारतोऽत्र द्रविणाप्तिमन्नवासोवयस्याप्तिभिलाषतित्वम् ॥ २३७ ॥

मध्यबली चन्द्र की दशा हो तो पुण्य का उदय अपने स्थान से अत्यन्त सुख, व्यापार से धन का लाभ; अन्न, वस्त्र तथा मित्र का लाभ एवं भूमि का स्वामी करता है।

नष्ट बली चन्द्र दशा का फलः—

शीतद्युतेर्नष्टबलस्य दीप्तिक्षयं विधत्ते सुखवित्तनाशम्।
लघूदयं श्लेष्मसमीरयोश्च वैरं सुहृद्बान्धवभामिनीभिः ॥ २३८ ॥

नष्ट बली चन्द्र की दशा हो तो कान्ति, सुख तथा धन का नाश श्लेष्म तथा वायु का शीघ्रोदय एवं मित्र बान्धव तथा स्त्री के साथ वैर को करती है।

दग्ध बली चन्द्र दशा का फलः—

राज्ञो दशा दग्धबलस्य वैरं सुतैश्च भिक्षाटनमर्थनाशम्।
चित्ते प्रमोहं कफतः प्रपीडां क्लेशं विरोधं कुरुते विवादम् ॥ २३९ ॥

दग्ध बली चन्द्र की दशा हो तो पुत्रों के साथ वैर, भिक्षाटन, धन का नाश, हृदय में मोह, कफ से पीडा; क्लेश, विरोध तथा विवाद को करती है।

स्थान वश से चन्द्र दशा के विशेष फल का निर्णयः—

रिःफारिरन्ध्रेतरगोऽत्रिजन्मा दुष्टोऽपि यच्छेत्स्वसुखं स्वदाये।
हीनः समत्वं शुभतां समान एवंविधश्चेत्स शुभोऽतिसौम्यः ॥ २४० ॥

द्वादश, षष्ठ तथा अष्टम इन स्थानों को छोडकर शेष स्थान में स्थित दुष्ट चन्द्र भी अपनी दशा में धन तथा सुख को देता है। एवं हीन बली चन्द्र उक्तेतर स्थान में सम फल, 'सम चन्द्र' शुभ फल और 'शुभ चन्द्र' अतिशुभ फल दायक होता है।

पूर्ण बली भौम दशा का फलः—

दशेश्वरोऽस्रः परिपूर्णवीर्यो महीपसङ्गं पृतनाधिनाथम्।
अनेकसौख्यं विजयं समीके दिशेत्सुवर्णं द्रविणं च ताम्रम् ॥ २४१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण बली भौम की दशा हो तो राजा का संग, सेना का स्वामित्व अनेक प्रकार का सुख युद्ध में विजय एवं सुवर्ण, धन तथा ताम्र को देती है।

मध्य बली भौम दशा का फलः----

दशाधिपो मध्यबलो महीजः कुर्य्यान्नरेशैः सह विग्रहं च।
बलक्षयं रक्तगदः शरीरे भयं रिपोः पुत्रकलत्रभीतिम् ॥ २४२ ॥

मध्य बली भौम की दशा हो तो राजा के साथ कलह, बल की हानि, शरीर में रक्त विकार, शत्रु से भय, पुत्र तथा स्त्री के लिए भय को करता है।

नष्ट बली भौम दशा का फलः----

दशाऽसृजो नष्टबलस्य कुर्य्यात्कलत्रपुत्रैः कलहं विवादम्।
उग्रं भयं दुष्टविपक्षलोकैः सर्वं विनष्टं फलमल्पसौख्यम् ॥ २४३ ॥

नष्ट बली भौमकी दशा हो तो स्त्री तथा पुत्रों के साथ कलह और विवाद; दुष्ट तथा शत्रुओं से भय, दारुण भय, समस्त विनष्ट फल एवं अल्प सौख्य को करती है।

दग्ध बली भौम दशा का फलः----

दशापतिर्दग्धबलो धराजोऽस्रार्त्तिं विरोधं भृतकैर्निजाङ्गे।
महारणे कष्टमृती बलस्य नाशं भयं शत्रुजनैः प्रकुर्य्यात् ॥ २४४ ॥

दग्ध बली भौम की दशा हो तो रक्त विकार, भृतकों के साथ विरोध, महासंग्राम में अपने शरीर के लिए कष्ट वा मृत्यु, बल की हानि एवं शत्रुजनों से भय को करती है।

स्थान वश से भौम दशा के विशेष फल का निर्णयः----

नष्टवीर्य्यः कुजो वैरिव्ययगः सद्बलप्रदः।
हीनः समोऽथ मध्यः सन् सन्नतीव शुभप्रदः ॥ २४५ ॥

नष्ट बली भौम यदि षष्ठ, तृतीय तथा एकादश स्थान में हो तो अर्द्ध शुभ फल को देता है। 'हीन बली भौम' उक्त स्थानों में हो तो सम, 'सम बली' शुभ एवं 'पूर्ण बली' अत्यन्त शुभ फल दायक होता है।

पूर्ण बली बुध दशा का फलः----

दशाधिपः पूर्णबलो बुधोयदि द्रव्यस्य लाभो निजबुद्धितः सुखम्।
राज्यं विलासं भृतकैः स्वलोकतो दत्तेऽर्थमुग्रं स्वकरार्जितं तदा ॥ २४६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण बली बुध की दशा हो तो अपनी बुद्धि से धन का लाभ, भृतक तथा परिजनों से सुख, राज्य तथा विलास की वस्तु एवं अपने हाथ से उपार्जित बहुत धन को देती है।

मध्य बली बुध दशा का फलः—

मध्यो बली राजसुतो दशेशो बुद्धिं स्वमत्या बहुलप्रपञ्चैः।
सौख्यं सुखं स्वीयजनैः प्रदद्याद्विद्याविलासं द्रविणान्मजाप्तिम् ॥ २४७ ॥

मध्य बली बुध की दशा हो तो अपनी बुद्धि से बुद्धि, बहुत प्रपञ्चों से सौख्य, परिजनों से सुख, एवं विद्या विलास, धन तथा पुत्र की प्राप्ति को करती है।

नष्ट बली बुध दशा का फलः—

दशाधिपो नष्टबलः करोति विद्वेषं स्वलोकैर्भृतकैर्विनाशनम्।
कीर्त्यास्तथोग्रां गदसाध्वसव्यथां व्यथोदयं दीर्घसुखार्थसंक्षयम् ॥ २४८ ॥

नष्ट बली बुध की दशा हो तो परिजन तथा भृतकों के साथ वैर, यश की हानि, दारुण रोग, भय तथा पीडा, पीडा का उदय एवं बल सुख तथा धन का नाश करती है।

दग्ध बली बुध दशा का फलः—

चान्द्रेर्दशा दग्धबलस्य बन्धनं स्वजातितः स्वल्पसुखं जनैः सह।
विद्वेषमुग्रं कुरुते तनूभृतां कुशेमुषीं दुर्बलतां धनक्षयम् ॥ २४९ ॥

दग्ध बली बुध दशा हो तो बन्धन, अपनी जाति के लोगों से अल्प सुख, लोगों के साथ दारुण वैर एवं दुर्बुद्धि, दुर्बलता तथा धन का नाश करती है।

स्थान वश से बुध की दशा के फल का निर्णयः—

दुष्टेतरगतश्चान्द्रिर्विनष्टः सत्फलाद्भिदः।
हीनो मध्योऽथ सन्मध्यः शोभनोऽतीव सत्प्रदः ॥ २५० ॥

त्रिकेतर स्थान में स्थित 'बुध' यदि नष्ट बल भी हो तो आधा शुभ फल को देता है। उक्त स्थानों में स्थित 'बुध' यदि हीन बली हो तो मध्यम फल प्रद, 'मध्यम' हो तो शुभ और 'शुभ' हो तो अत्यन्त शुभ फल दायक होता है।

पूर्ण बली गुरु दशा का फलः—

दायाधिपो पूर्णबलो गुरुर्नृपान्मानं प्रदत्ते कनकाम्बराप्तिकृत्।
ऐश्वर्यराज्यार्थयशःसुखाप्तिकृत्कुमारलाभं गदवैरिनाशनम् ॥ २५१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण बली गुरु की दशा हो तो राजा से सम्मान देती है। सुवर्ण तथा वस्त्र की प्राप्ति; ऐश्वर्य, राज्य, धन, कीर्ति तथा सुख की प्राप्ति एवं पुत्र का लाभ, रोग तथा शत्रु का नाश करती है।

मध्य बली गुरु दशा का फलः—

बृहस्पतेर्मध्यबलस्य दाये महीपमैत्री गुरुता स्वलाभः।
वाणिज्यतः पुण्यहिताम्बराप्तिः सौख्यं शरीरोत्थनितम्बिनीनाम् ॥ २५२ ॥

मध्य बली गुरु की दशा में राजा से मैत्री, गौरव, व्यापार से धन का लाभ; पुण्य मित्र तथा वस्त्र की प्राप्ति एवं पुत्र तथा स्त्री का सुख होता है।

नष्ट बली गुरु दशा का फलः—

दाये गुरोर्नष्टबलस्य वैरितो भयं विनष्टं सकलं विनाशनम्।
पुण्यार्थयोः पुत्रसुहृद्वधूकलिः सम्पीडिताङ्गस्तु दरिद्रदुःखतः ॥ २५३ ॥

नष्ट बली गुरु की दशा में शत्रु से भय, समस्त वस्तु ओंका नाश, पुण्य तथा धन का नाश, पुत्र स्त्री तथा मित्रों से कलह, एवं दरिद्र तथा दुःख से शरीरपीडित होता है।

दग्ध बली गुरु दशा का फलः—

दशेश्वरो दग्धबलः सुरेज्यो भयं विधत्ते ऽरिजनान्महीपात्।
सस्यार्थनाशं सुतमित्रवैरं सुखस्य हानिं च दुरामयार्त्तिम् ॥ २५४ ॥

दग्ध बली गुरु की दशा हो तो शत्रु तथा राजा से भय, धान्य तथा धन का नाश, पुत्र और मित्र से वैर, सुख की हानि एवं दुष्ट रोग से पीडित करती है।

स्थान वश से गुरु दशा के फल का निर्णयः—

दुष्टो ऽपि गीर्वाणगुरुर्गदान्त्ययाम्येतरस्थो ऽर्द्धशुभप्रदः स्यात्।
हीनः समानो ऽथ शुभस्तु मध्यश्चेच्छोभनो ऽतीवशुभप्रदो ऽत्र ॥ २५५ ॥

षष्ठ, व्यय तथा अष्टम स्थान से अतिरिक्त स्थान में स्थित 'दुष्ट गुरु' भी आधा शुभ फल देता है। त्रिकेतर स्थान में 'हीन बली गुरु हो तो समान फल दायक, 'मध्यम गुरु' शुभ फल दायक एवं 'शुभ गुरु' अत्यन्त शुभ होता है।

पूर्ण बली शुक्र दशा का फलः—

दाये ऽधिवीर्य्यस्य सितस्य पुंसां विलासराज्यप्रमदामुदाप्तिः।
धरेशमानं धनहाटकाप्तिः सख्यागमः स्यादुदयः सुतस्य ॥ २५६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण बली शुक्र की दशा में स्त्रियों का विलास, राज्य, स्त्री तथा हर्ष की प्राप्ति, राजा से सम्मान, धन, तथा सुवर्ण का लाभ एवं मित्र मिलाप और पुत्र की उत्पत्ति होती है।

मध्यबली शुक्र दशा का फलः---

दशापतिर्मध्यबलः सितोऽरं कलत्रपक्षाद् द्रविणं ददाति।
वयस्यगोवित्तहयान् सुखं च मिष्टान्नपानैर्वसनैर्मनोज्ञैः ॥ २५७ ॥

मध्य बली शुक्र की दशा हो तो स्त्री के पक्ष से शीघ्र धन को देती है और मित्र, गौ, धन तथा घोड़ों को देती है। एवं मिष्टान्नपान तथा सुन्दर वस्त्रों के सुख को देती है।

नष्टबली शुक्र दशा का फलः----

विनष्टवीर्य्यस्य सितस्यदाये बुद्धिभ्रमः कष्टमतीव पुंसाम्।
कीर्त्तिस्वविज्ञानविनाशनंस्यात् क्लेशः सुतस्त्रीसहजैः सुहृद्भिः ॥ २५८ ॥

नष्ट बली शुक्र की दशा में पुरुषों की बुद्धि में भ्रम, अत्यन्त कष्ट; यश, धन तथा विज्ञान का नाश एवं पुत्र, स्त्री, भाई तथा मित्रों से कष्ट होता है।

दग्धबली शुक्र दशा का फलः----

दैत्यर्त्विजो दग्धबलस्य दाये भृशं सुहृत्स्त्रीरिपुरोगभीतिः।
क्षतिः सुतानां सुखवित्तनाशो मन्युर्भवेत्स्वीयजनैर्विरोधः ॥ २५९ ॥

दग्ध बली शुक्र की दशा में मित्र, स्त्री, शत्रु तथा रोग से अतीव भय, पुत्रों की हानि, सुख तथा धन का नाश एवं शोक और कुटुम्बियों से विरोध होता है।

स्थान वश से शुक्र की दशा के फल का निर्णयः----

व्यापारापायदिष्टान्तरोगभावान्यगः सितः
स्वापतेयप्रदः स्यात्स चेच्छुभोऽतीव शोभनः ॥ २६० ॥

दशम, द्वादश, अष्टम तथा षष्ठ स्थान से अतिरिक्त स्थान में स्थित शुक्र यदि दुष्ट भी हो तो धन देता है और शुभ हो तो अत्यन्त शुभ होता है।

पूर्णबली शनि दशा का फलः----

आर्केर्दशा वीर्य्ययुतस्य नीचाधिनायकत्वं भ्रमणं कुधान्यम्।
सुखार्थदुर्गादिवराङ्गनानां जीर्णांशुकानां प्रकरोति लाभम् ॥ २६१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण बली शनि की दशा हो तो नीचों का स्वामित्व, विदेश भ्रमण, कुत्सित धान्य का लाभ, सुख, धन, दुर्गादि, उत्तम स्त्री और जीर्ण वस्त्रों के लाभ को करती है।

मध्य बली शनि दशा का फलः----

दशा मृदोर्मध्यबलस्य कुर्य्याद्वैरं स्वलोकैर्धनसौख्यनाशम् ।
वालेयदुर्गोष्ट्रककोशरक्षामनर्थलाभं खलतातिचिन्ते ॥ २६२ ॥

मध्य बली शनि की दशा हो तो कुटुम्बियों से वैर, धन तथा सौख्य की हानि, गर्दभ, दुर्ग, उंट और कोश की रक्षा; अनर्थ की प्राप्ति एवं अधमता और अति चिन्ता को करती है।

नष्टबली शनि दशा का फलः----

नष्टौजसो नीलरुचो दशायां स्वकीयलोकैः स्वहितैर्विरोधः ।
दरं धरित्रीविभुतः सपत्नैर्वित्तस्य नाशो नहि शर्म्म किञ्चित् ॥ २६३ ॥

नष्ट बली सूर्य की दशा में कुटुम्बियों से तथा मित्रों से विरोध, राजा तथा शत्रु से भय, धन का नाश और थोडा भी सुख नहीं होता है।

दग्धबली शनि दशा का फलः----

ऐनेर्दशा दग्धबलस्य दुःखवियोगतस्तप्ततनुं प्रकुर्य्यात् ।
दग्धं सुखं स्त्रीतनयैर्विवादं पञ्चत्वमर्थस्य हितस्य नाशम् ॥ २६४ ॥

दग्ध बली शनि की दशा हो तो दुःख और वियोग से शरीर को सन्तप्त करती है, सुख का नाश, स्त्री तथा पुत्रों से विवाद; मृत्यु एवं धन तथा मित्र की हानि करती है।

स्थान वश से शनि दशा के फल का निर्णयः----

निन्द्योऽपि नीलद्युतिरायरोगपराक्रमस्थोऽर्द्धफलप्रदः सः ।
मध्यो बलोऽसौ शुभतां विदध्यात् सम्पूर्णवीर्योऽतिशुभो दशायाम् ॥ २६५ ॥

लाभ, षष्ठ तथा तृतीय स्थान में स्थित हुआ शनि यदि दुष्ट भी हो तो आधा शुभ फल देता है। उक्त स्थानों में स्थित मध्य बली शनि शुभ फल को करता है और सम्पूर्ण बल युक्त शनि अपनी दशा में अत्यन्त शुभ फल देता है।

सूर्य मुद्दा दशा का फलः--

राज्यां पित्तभवा पीडा भयं भूपालवंशतः ।
आपदो निजबन्धूनां स्वापतेयव्ययो भवेत् ॥ २६६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्य की मुद्दा दशा में पित्त से उत्पन्न पीडा, राज कुल से भय, बन्धुजनों के लिए आपत्ति एवं धन का व्यय होता है।

चन्द्र मुद्दा दशा का फलः—

सौम्यां भूषणवस्त्राप्तिः प्राप्तिः पुत्रकलत्रयोः।
निद्रारतिः सुताजन्म विरोधः स्यात्स्वपक्षतः ॥ २६७ ॥

चन्द्रमा की मुद्दादशा में भूषण, वस्त्र, पुत्र तथा स्त्री की प्राप्ति, शयन में रुचि, पुत्री का जन्म और अपने पक्ष से विरोध होता है।

भौम मुद्दादशा का फलः—

कौज्यां बन्धुजनैः सार्द्धं कलहो रिपुमर्दनम्।
परस्त्रीसङ्गमो रक्तमायुजाता व्यथा तथा ॥ २६८ ॥

भौम की मुद्दादशा में बन्धुजनों के साथ कलह, शत्रु का नाश, परस्त्री से सहवास एवं रक्त पित्त से उत्पन्न पीडा होती है।

राहु मुद्दा दशा का फलः—

दशायां तमसो दुःखं बाधवानां रुजा तनौ।
विदेशे गमनं वित्तविनाशः कलहो भवेत् ॥ २६९ ॥

राहु की मुद्दा दशा में बान्धवों को दुःख, शरीर में रोग, विदेश यात्रा एवं धन का नाश तथा कलह होता है।

गुरु मुद्दा दशा का फलः—

जैव्यां गीर्वाणविप्रार्चा प्राप्तिः स्याद्वसुमानयोः।
विग्रहः स्वजनैः सार्द्धं विद्वेषः श्रवणामयः ॥ २७० ॥

गुरु की मुद्दा दशा में देवता तथा ब्राह्मणों की पूजा, धन और मान की प्राप्ति, परिजनों के साथ विग्रह और विद्वेष एवं कर्ण रोग होता है।

शनि मुद्दा दशा का फलः—

मान्द्यां विग्रहपीडे च कलहः कामिनीसुतैः।
परदेशे गमं प्रज्ञानाशस्तन्द्रा श्रमस्तथा ॥ २७१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शनि की मुद्दा दशा में विग्रह, पीडा; स्त्री तथा पुत्रों से कलह, परदेश यात्रा, बुद्धि का नाश, तन्द्रा (ऊंघ) और श्रम होता है।

बुध मुद्दा दशा का फल:--

बौध्यां त्रिदोषजा बाधा तनौ बान्धवसङ्गमः ।
लोकानां महती प्रीतिर्लाभः पुण्यवयस्ययोः ॥ २७२ ॥

बुध की मुद्दा दशा में, शरीर में त्रिदोष जनित पीडा, बन्धुजनों का सङ्ग, लोगों के मध्य में बडी प्रीति, पुण्य तथा मित्र का लाभ होता है।

केतु मुद्दा दशा का फल:--

दशायां शिखिनो वादः स्यादनर्थस्त्वनेकधा ।
राजवंशाद्रिपोस्त्रासं वित्तसूनुक्षतिर्भवेत् ॥ २७३ ॥

केतु की मुद्दा दशा में विवाद, अनेक प्रकार का अनर्थ, राजकुल तथा शत्रु से भय, पुत्र तथा धन की हानि होती है।

शुक्र मुद्दा दशा का फल:----

शौक्र्यां महद्यशोवित्तलाभो दाराप्तिसङ्गमः
कौशल्यं भूषणैर्वस्त्रैः संयुतो जायते नरः ॥ २७४ ॥

शुक्र की मुद्दा दशा में बड़ा यश, धन का लाभ, स्त्री की प्राप्ति और सङ्गम, कुशलता और वह मनुष्य भूषण तथा वस्त्रों से युक्त होता है।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे वर्षप्रकरणमष्टादशमवासितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

निषेकप्रकरणं प्रारभ्यते ।

ऋतु हेतु परिज्ञानः—

पयः शशाङ्को दहनो महीजः कं शोणितं पावक एव पित्तम् ।
एवं विहीने रुधिरेऽबलासु प्रवर्त्तते पित्तत आर्त्तवाख्यम् ॥ १ ॥
एवं भवत्यार्त्तवसञ्ज्ञकं यत्तदेव गर्भस्य निमित्तमुक्तम् ।
वृद्धिङ्गतेऽब्जे प्रतिमासमार्य्यैस्तस्येक्षणं चेद्विफलं प्रदिष्टम् ॥ २ ॥

'चन्द्रमा' जल और 'मङ्गल' अग्नि है। एवं 'जल' रक्त और 'अग्नि' पित्त जानना चाहिए। रक्त हीन होने पर पित्त से स्त्रियों में रज परिवर्तित होता है। इस प्रकार जो रज उत्पन्न हो वह गर्भ का कारण होता है। यदि रजोदर्शन काल में स्त्रियों की जन्म राशि से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में चन्द्रमा हो तो प्रतिमास में रजोदर्शन निष्फल कहा है अर्थात् वह रज गर्भ धारण करने में असमर्थ होता है।

चन्द्रे स्त्रियोऽनुपचये कुजवीक्ष्यमाणे
जातं रजो भवति गर्भफलप्रदं तत् ।
चेदन्यथा विफलमिष्टसितेज्यदृष्टे
पुंसां विधावुपचये महिलानृयोगः ॥ ३ ॥

रजोदर्शन समय में स्त्री की जन्म राशि से अनुपचय (१।२।४।५।७।८।९।१२) स्थान में चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से दृष्ट हो तो वह रज गर्भ फल प्रद होता है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो तो रजोदर्शन निष्फल होता है। एवं रजोदर्शन काल में पुरुष की जन्म राशि से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में चन्द्रमा हो और वह मित्र ग्रह, शुक्र तथा गुरु से दृष्ट हो तो नित्य स्त्री पुरुष का संयोग होता है।

ऋतुकाल परिज्ञानः—

ऋतूदयात्षोडश शर्व्वरीणां सीमन्तिनीनामृतुकाल आसाम् ।
आधानयोग्या न चतस्र आद्याः पराः शुभा नन्दनदाः समाः स्युः ॥ ४ ॥

रजोदर्शन के समय से १६ रात्रि पर्य्यन्त ऋतु काल होता है। उन में से प्रथम चार रात्री आधान कार्य के योग्य नहीं होती हैं। चार रात्रि से परे जो सम रात्रि हैं। उन में गर्भाधान हो तो पुत्र उत्पन्न होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पुत्र प्राप्ति काल परिज्ञानः—

धीशेज्ययोस्तद्युतभांशपानां बलान्वितस्याम्बरगस्य दाये ।
किं धीस्थतद्वीक्षकतत्पतीनां दाये च भुक्तौ तनयाप्तिमाहुः ॥ ५ ॥

पञ्चमेश तथा गुरु और इन दोनों से युक्त ग्रहों की राशि तथा नवांश राशि के स्वामियों के मध्य में जो अधिक बली हो उस की दशा वा अन्तर्दशा में पुत्र प्राप्ति को कहते हैं। अथवा पंचम में स्थित ग्रह तथा पञ्चम को देखने वाला ग्रह और उन की राशि के स्वामी इन सब में जो अधिक बली हो उस की दशा वा अन्तर्दशा में पुत्र प्राप्ति को कहते हैं।

पुत्रप्रदं पञ्चममिज्यचन्द्रविलग्नभानां नवमं च तस्मात् ।
तन्नाथदाये च हृतौ सुताप्तिं वदेद्बुधो धीमदपस्फुटैक्ये ॥ ६ ॥

यद्वा तु तद्दायहृतौ तदन्वितदर्शिग्रहाणां च दशासु भुक्तिषु ।
किं पुत्रभावाधिपकारकेक्षकयुक्ताः शुभाः स्युर्बलशालिनो यदि ॥ ७ ॥

तद्दायकाले किमु भुक्त्यनेहसि पुत्रस्य लाभं सुतसम्पदस्तथा ।
धरापतिप्रीतिमुशन्ति तद्विदो लग्नात्मजद्यूनभनाथसङ्गमे ॥ ८ ॥

पुत्रेशपुत्रस्थितदर्शिखौकसां दशा भवेन्नन्दनलाभदायका ।
वागीशपुत्रेशभभागकोणग आर्य्येऽथ पुत्रेड्यमकण्टकांशभे ॥ ९ ॥

याते सुरेज्येऽथ सुतेशगं गृहमायाति वा नन्दनभं विलग्नपः ।
पुत्राप्तिरङ्गास्तसुतेशसङ्गमो भवेद्यदा गोचरतो घनेऽनुजे ॥ १० ॥

कोणाप्तिकामेऽथ गुरौ सुताङ्गपतिस्फुटैक्यं भलवात्मभाग्ये ।
किं स्वर्क्षतुङ्गे तनुपः सहैव धीशेन योगं यदि चारगत्या ॥ ११ ॥

वदन्ति पुत्राप्तिमथो जनुर्भनाथस्य च प्रत्यरिभाधिपस्य ।
स्पष्टैक्य इन्द्रेज्य इते त्रिकोणे किं गोचरेणामरनाथपूज्ये ॥ १२ ॥

धीनाथतत्कारकदर्शियुक्तस्फुटैक्यराश्यंशगतेऽङ्गजाप्तिः ।
यद्वत्सरे भौमभयोर्मिथो दृग् गर्भस्ततब्दे गणकैः प्रदिष्टः ॥ १३ ॥

गुरु, चन्द्र और लग्न इन तीनों में जो अधिक बली हो उस से जो पञ्चम वा नवम स्थान है वह पुत्र प्रद होता है। अथवा उन के स्वामी की दशा में वा अन्तर्दशा में पुत्र की प्राप्ति को कहे। अथवा पञ्चमेश और सप्तमेश के स्पष्ट राश्यादि के योग करने से जो राशि हो उस की दशा में वा अन्तर्दशा में पुत्र प्राप्ति को कहे। अथवा उस योग राशि में जो ग्रह हो वा उस को जो ग्रह देखता हो उस की दशा में वा अन्तर्दशा में पुत्र प्राप्ति को कहे। अथवा पञ्चमेश, पञ्चम कारक, पञ्चम दर्शी तथा पञ्चमस्थ ये चारों शुभग्रह हों तथा बलवान हों तो उन की दशा में वा अन्तर्दशा में पुत्र के लाभ को कहे। अथवा लग्न, पञ्चम और सप्तम इन तीनों स्थानों के स्वामियों का जब गोचर से एक राशि में योग हो उस समय पण्डितजन पुत्रसम्पत्ति तथा राजा से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रीति को कहते हैं। अथवा पञ्चमेश, पञ्चमस्थित तथा पञ्चम दर्शी ग्रहों की दशा पुत्र देनेवाली होती है। जन्म समय में गुरु और पञ्चमेश ये दोनों जिस राशि में वा जिस नवांश राशि में अथवा उन से पञ्चम राशि में वा नवम राशि में जब गोचर से गुरु आवे तब पुत्रप्राप्ति होती है। अथवा, पञ्चमेश की तथा यमकण्टक की नवांश राशि में वा राशि में जब गोचर से गुरु आवे तब पुत्र प्राप्ति होती है। अथवा पञ्चमेश की अधिष्ठित राशि में वा पञ्चम स्थान में स्थित राशि में जब गोचर से लग्नेश आवे तब पुत्र प्राप्ति होती है। जन्म लग्न की राशि वा उस से तृतीय पञ्चम नवम लाभ वा सप्तम स्थान में जो राशि हो उस में जब गोचर से लग्नेश, सप्तमेश तथा पञ्चमेश इन तीनों का समागम हो तब पुत्र की प्राप्ति होती है। पञ्चमेश और लग्नेश के राश्यादि स्पष्ट के योग करने से जो राशि और अंश हो उन में वा उन से पञ्चम वा नवम राशि में जब गोचर से गुरु आवे तब पुत्र प्राप्ति होती है। अथवा जब गोचर से लग्नेश स्वराशि में वा स्वोच्च राशि में आवे और उस समय पञ्चमेश के साथ योग करे तो पुत्र प्राप्ति को कहते हैं। अथवा जन्म नक्षत्र के स्वामी का अर्थात् जन्म नक्षत्र में जिस ग्रह की दशा हो उस का और प्रत्यरितारा के स्वामी का अर्थात् जन्मनक्षत्र से जो पञ्चम नक्षत्र हो उसमें जिसकी दशा आवे उस का जो राश्यादि स्पष्ट हो उन दोनों का योग करे तब जो राशि हो उस से पञ्चम वा नवम राशि में जब गोचर से गुरु आवे तब पुत्र प्राप्ति होती है। पञ्चमेश, पञ्चमकारक, पञ्चमदर्शी और पञ्चम गत इन सब ग्रहों के राश्यादि स्पष्ट का योग करने से जो राशि हो उस में जब गोचर से गुरु आवे तब पुत्र की प्राप्ति होती है। जिस वर्ष में शुक्र और मङ्गल की परस्पर दृष्टि हो उस वर्ष में गर्भस्थिति होती है।

यद्धे सुरेज्यस्तत ओजहायने चैत्सम्भवे सत्यथ गोचरे गुरौ।
यद्भावतस्त्र्यस्तभवत्रिकोणभे गर्भस्य योगो गदितस्तदब्दके ॥ १४ ॥

जन्म समय में जिस राशि में गुरु हो उस से विषम वर्षों के सम्भव होने पर 'गर्भ योग' होता है। अथवा विवाह कालानन्तर जिस वर्ष सम्बन्धी भावस्थ राशि से तृतीय, सप्तम, एकादश, पञ्चम और नवम राशि में जब गोचर से गुरु आवे तब 'गर्भस्थिति' होती है अन्य वर्ष में नहीं होती है।

मूर्त्तीश्वरो मतिगतः किमु मारगो वा
मत्यस्तपावुदयगौ महिला सगर्भा।
कोणे त्रिकोण उदयाज्जनुषो धियीज्ये
चारेण गर्भ उदितो यदि तत्समायाम् ॥ १५ ॥

पञ्चम वा सप्तम गत राशि में लग्नेश एवं लग्न गत राशि में पञ्चमेश तथा सप्तमेश हों तो स्त्री गर्भवती होती है। जन्म लग्न से पञ्चम वा नवम स्थान में जो राशि हो उस में जब गोचर से शनि आवे और जन्म लग्न से पञ्चम स्थान में जो राशि हो उस में जब गोचर से गुरु आवे तब उस वर्ष में गर्भस्थिति कही है।

आचार्यलग्नात्मजयस्फुटैक्य आदित्यतष्टे परिशेषराशौ।
तस्मात्त्रिकोणर्क्षगतेऽमरेड्ये सन्तानलब्धिं निगदन्ति धीराः ॥ १६ ॥

गुरु, लग्नेश और पञ्चमेश इन तीनों के राश्यादि स्पष्ट के योग को १२ से तष्ट करे तब जो राशि शेष बचे उस में वा उस से पञ्चम वा नवम राशि में जब गोचर से गुरु आवे तब सन्तान की प्राप्ति को कहते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मतान्तर से सन्तान प्राप्ति के समय का विचारः—

सन्तानाप्त्या मुख्यमार्गं प्रवक्ष्ये दुश्चिक्यायाङ्गास्तधीभाग्यभानि ।
सन्तानाख्यानीरितानि ग्रहास्तेष्वप्यङ्गायात्मजानङ्गभानि ॥ १७ ॥

मुख्यानि स्युर्जन्मलग्नाज्जनीन्दोश्चेदम्पत्योर्गोचरेणामरेज्यः ।
आयात्यार्किश्चैषु गर्भस्य योगः स्त्रीणां वाच्यः प्राक्तनाचार्य्यवर्य्यैः ॥ १८ ॥

मतान्तर से सन्तान प्राप्ति के समय का मुख्य मार्ग कहते हैं। तृतीय, एकादश, लग्न, सप्तम, पञ्चम और नवम ये छः सन्तान सञ्ज्ञक स्थान हैं। उन में भी लग्न, एकादश, पञ्चम और सप्तम ये चार स्थान सन्तान के मुख्य हैं। स्त्री तथा पुरुष इन दोनों के जन्म लग्न और जन्म चन्द्र राशि से उक्त सन्तान स्थानों में जब गोचर से गुरु और शनि आवे तब स्त्रियों का गर्भ योग कहना चाहिए।

आदित्यजे जन्मनि गर्भसञ्ज्ञके तिष्ठेच्चदा ऽऽयात्यपि तत्र वाक्पतिः ।
गर्भाप्तिरुक्तेनजनिर्जनौ तना आयाति लाभे यदि गोचरेण सः ॥ १९ ॥

सन्तानदः स्याज्जनने पतङ्गजो यद्धे सवीर्य्यो मनुजस्य वर्त्तते ।
तद्धे यदा ऽऽयाति तथा ऽमरार्चितो ऽप्यायाति तत्रात्मजलब्धिरीरिता ॥ २० ॥

जन्म समय में जब 'शनि' गर्भोत्पादक (१।३।५।७।९।११) स्थान में हो तब उस स्थान में जब गोचर से गुरु आवे तब गर्भ की प्राप्ति कही है। यदि जन्म समय में 'शनि' लग्न में हो और वह गोचर से जब लाभ स्थान में आवे तब सन्तान को देता है। जन्म समय में बलवान् शनि जिस राशि में हो उसी में पुनः जब गोचर से शनि तथा गुरु आवें तब पुत्र की प्राप्ति कही है।

गर्भाधान के मास तथा दिन का परिज्ञानः—

यस्मिन्मासे वासरे गर्भदाब्दे स्वीयांशस्थैः सोमसूर्यारशुक्रैः ।
पुंस्त्रीभाभ्यां वृद्धिभावोपयातैर्मासे तस्मिन्नह्नि भार्या सगर्भा ॥ २१ ॥

गर्भदायक वर्ष के जिस मास के जिस दिन में चन्द्र, सूर्य, मङ्गल तथा शुक्र ये चारों अपने अपने नवांश में आवें और पुरुष तथा स्त्री की जन्म राशि से उपचयस्थान में आवें उस मास के उस दिन में मनुष्य की स्त्री गर्भवती होती है।

उपचयगृहयातौ पुञ्जनुर्भात्सवीर्यौ
दिनकरदनुजाच्यौं स्वीयभांशोपगौ वा ।
तुहिनकरकुजौ स्त्रीभात्तथा ऽऽधानलग्ना-
दुत पुरपथिधीस्थे सौजसीज्ये सगर्भा ॥ २२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बलवान् सूर्य तथा शुक्र ये दोनों अपनी राशि में वा अपने नवांश में स्थित हों और पुरुष की जन्म राशि से वे दोनों उपचय स्थान में हों तो (१) अथवा बलवान् चन्द्र तथा मङ्गल ये दोनों अपनी राशि में वा अपने नवांश में स्थित हों और स्त्री की जन्म राशि से तथा आधान लग्न से उपचय स्थान में हों तो (२) अथवा आधान लग्न से बलवान गुरु लग्न नवम वा पञ्चम में हो तो उक्त योगों में स्त्री गर्भवती होती है ।

निषेकलग्नात्स्मरपोऽथ वा सितः कोणे बुधोऽङ्के दिविजीव इन्दुयुक् ।
किं पुंवधूसम्भवलग्नतो भवकोणास्तपाश्चारवशाद्भवोपगाः ॥ २३ ॥

ग्लौदृष्टयुक्ताः किमु दारदैवपौ वास्ताङ्गनाथौ द्युनदैवदेहगौ ।
साच्छौ शशाङ्केक्षितसंयुतौ वधूर्मासे ऽह्नि तस्मिन्नुत गर्भमाप्नुयात् ॥ २४ ॥

आधान लग्न से सप्तम स्थान का स्वामी वा शुक्र त्रिकोण में हो, नवम वा दशम में बुध एवं गुरु यदि चन्द्रमा से युक्त हो तो (१) अथवा पुरुष तथा स्त्री के जन्म लग्न से एकादश, पञ्चम, नवम और सप्तम इन चारों स्थानों के स्वामी जब गोचर से लाभ भाव गत राशि में आवें और चन्द्रमा से दृष्ट हों तो (२) अथवा पुरुष तथा स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम तथा नवम भाव के स्वामी अथवा सप्तमेश और लग्नेश यदि सप्तम, नवम तथा लग्न में स्थित हो कर शुक्र से युक्त हों और जिस मास वा जिस दिन में चन्द्रमा से दृष्ट वा युक्त हों तो उस मास में वा उस दिन में स्त्री गर्भवती होती है ।

यदि पुरुषविहङ्गा मातुलोपान्त्ययाता
बलवति मतिनाथे ऽन्यैः खगैरोजभस्थैः ।
किमुदयभवनेशो मंत्रगो वा मदस्थो
वपुषि मतिमदेशौ कामिनी गर्भमेति ॥ २५ ॥

गर्भाधान समय में पुरुष ग्रह (सूर्य, भौम तथा गुरु) षष्ठ तथा लाभ में हों, एवं पञ्चमेश बलवान् हो और अन्य ग्रह विषम राशि में हों तो (१) पञ्चम वा सप्तम में लग्नेश हो एवं लग्न में पञ्चमेश तथा सप्तमेश हों तो स्त्री गर्भवती होती है ।

समन्वितौ मूर्त्तिमतीश्वरौ मिथः प्रोद्वीक्षितौ क्षेत्रगतो मिथोऽप्यथो ।
विभावरीशे विषमर्क्षभागगे स्ववर्गगैश्चन्द्रकुजामरार्चितैः ॥ २६ ॥

विलोकिते पुंखचरैस्तनावथाऽपत्यालयेशे प्रथमेऽथ वाऽऽत्मजे ।
सोमाङ्गपौ सत्वरितं तदा भवेद् गर्भो विलम्बेन तु नक्तयोगतः ॥ २७ ॥

आधान लग्नेश और पञ्चमेश ये दोनों एक राशि में हों वा दोनों परस्पर देखते हों वा परस्पर एक दूसरे की राशि में हों अर्थात 'लग्नेश' पञ्चमेश की राशि में और 'पञ्चमेश' लग्नेश की राशि में हो तो (१) विषम राशि वा विषमनवांश में चन्द्रमा हो; चन्द्र, मङ्गल तथा गुरु ये तीनों अपने वर्ग में हो एवं 'लग्न' पुरुष ग्रहोंसे दृष्ट हों तो (२) अथवा लग्न में पञ्चमेश हो तो (३) अथवा पञ्चम में चन्द्रमा और लग्नेश हों तो मनुष्य की स्त्री शीघ्र गर्भवती स्त्री होती है । यदि आधान समय में नक्त योग हो तो स्त्री विलम्ब से गर्भवती होती है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गर्भ में शीर्षादि अवयवों का परिज्ञानः—

कललं प्रथमे मासि द्वितीये ऽण्डं तृतीयके ।
शाखा चतुर्थके त्वस्थि पञ्चमे त्वक् तनूरुहम् ॥ २८ ॥
षष्ठे ऽथ सप्तमे चेतस्विता ज्ञेया ऽष्टमे क्षुधा ।
तृष्णा नवम उद्वेगो दशमे पूर्णविग्रहः ॥ २९ ॥

प्रथम मास में कलल (शुक्र शोणित घन संमिश्रीभूत), द्वितीय मास में अण्ड (कठिन्य) तृतीय मासमें शाखा (हस्ताद्यवयव जन्म), चतुर्थ मास में अस्थि (हड्डी), पञ्चम मास में त्वचा (चर्म), षष्ठ मास में तनूरुह (रोम जन्म), सप्तम मास में चेतस्विता (चेतनता वा स्वभाव), अष्टम मास में क्षुधा (भूख) तथा तृष्णा (प्यास), नवम मास में उद्वेग (व्याकुलचित्त) एवं दशम मास में पूर्ण विग्रह (पूर्णशरीर वा प्रसव) होता है ।

गर्भ मासेश परिज्ञानः—

आद्या निषेकसमयात्कथयन्ति मासा-
धीशानिमान् क्रमश आस्फुजिदारजीवाः ।
हेलीन्दुमन्दविबुधोदयपेन्दुसूरा
मासाधिनाथसदृशं सदसत्फलं स्यात् ॥ ३० ॥

शुक्र, भौम, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध, आधान लग्नेश, चन्द्र और सूर्य ये क्रम से निषेककालारम्भ से प्रथमादि दश मासोंके स्वामी हैं । मासेश के समान गर्भ का शुभा शुभ फल होता है अर्थात् आधान समय में जिस मास का स्वामी मन्दरश्मि वा विवर्ण हो उस में पीडित एवं जिस मास का स्वामी पूर्ण रश्मि सम्पन्न हो उस मास में गर्भ की पुष्टि होती है ।

मातृपितृ ग्रह परिज्ञानः—

क्रमाद्दिने ऽम्बापितरौ सितारुणौ मृगाङ्कमन्दौ निशि तद्विलोमतः ।
मातुः स्वसा तातसहोदरश्च तौ समौजभस्थौ कथितौ तयोः शुभौ ॥ ३१ ॥

दिन के निषिक्त या दिनके जन्म वाले का क्रम से 'शुक्र' माता तथा 'सूर्य' पिता होता है । एवं रात्रि के निषिक्त वा रात्रि के जन्म वाले का 'चन्द्रमा' माता और 'शनि' पिता होता है । उक्त माता पिता ग्रहों के विपरीत क्रम से मातृष्वसृ (मौसी) और तात सहोदर (ताऊ चाचा) होते हैं । अर्थात् दिन के निषिक्त या दिन के जन्म वाले का 'चन्द्रमा' मातृष्वसृ और 'शनि' पितृव्य सञ्ज्ञक होता है । एवं रात्रिके निषिक्त वा रात्रि के जन्म वाले का 'शुक्र' मातृष्वसृ और 'सूर्य' पितृव्य सञ्ज्ञक होता है दिन में विषम राशि गत सूर्य पिता को शुभ फल करने वाला एवं रात्रि में विषम राशिगत सूर्य पितृव्य को शुभ फल करने वाला होता है । दिन में सम राशि गत शुक्र माता को शुभ फल करने वाला एवं रात्रि में सम राशि गत शुक्र मातृष्वसा को शुभ करने वाला होता है । रात्रि में विषम राशि गत शनि पिता को शुभ फल करने वाला और दिन में विषम राशि गत शनि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पितृव्य को शुभ फल करने वाला होता है। रात्रि में सम राशि गत चन्द्रमा माता को शुभ फल करने वाला और दिन में सम राशि गत चन्द्रमा मातृष्वसा को शुभ फल करने वाला होता है। यदि उक्त ग्रह उक्त राशि से विपरीत राशि में हों तो पिता प्रभृतियों के लिए कष्ट दायक होते हैं।

गर्भ सौख्य के योगः—

शीतांशूदयगैः शुभैः सुतशुभास्ताम्बुस्वखस्थैः खलै-
र्धर्मोपान्त्यगतैश्च धामनिधिना दृष्टश्च गर्भः सुखी।
चेद्गर्भः परिवर्द्धते शशधरे वाङ्गे पतङ्गीक्षिते
सोर्ज्ञैः शीतगुसूनुधिष्ण्यधिपर्णैरालोक्यमाने तथा ॥ ३२ ॥

आधान कालीन चन्द्रमा तथा लग्न यदि सूर्य से दृष्ट हो और चन्द्र तथा लग्न शुभ ग्रहों से युक्त हों एवं चन्द्र तथा लग्न से पञ्चम, नवम, सप्तम, चतुर्थ, द्वितीय और दशम में शुभ ग्रह हों और तृतीय तथा लाभ में पाप ग्रह हों तो गर्भ सुखी होता है। चन्द्रमा वा लग्न यदि सूर्य से दृष्ट होकर और बलवान् बुध, शुक्र तथा गुरु से भी दृष्ट हो तो भी गर्भ की वृद्धि होती है।

गर्भ ग्रहण के अयोग्य स्त्री के लक्षणः—

पुष्पोज्झिता कर्कशभावयुक्ता स्थूलाङ्गिनी रोगयुता कृशा च
बाला च वन्ध्या स्थविरा स्त्रियोऽष्टौ सन्तानकामाय विवर्जनीयाः ॥ ३३ ॥

रजो धर्म्मरहित, कर्कश स्वभाववाली, स्थूलशरीर वाली, रोगिणी, दुर्बल शरीर, बाला (रजो धर्म्म अयोग्य), बन्ध्या (वांझ), वृद्धा ये आठ प्रकार की स्त्रियां सन्तान उत्पत्ति के लिए वर्जित करनी चाहिएँ।

गर्भाभावादि के योगः—

आधानतन्वास्तनये गतोर्ज्ञे क्रूरे सपापे सुतपेऽस्तनिम्ने।
किं क्षीणचन्द्रे चरमास्पदस्थे सौरौ सभौमे सलिले न गर्भः ॥ ३४ ॥

आधान लग्न से पञ्चम स्थान में निर्बल पापग्रह हो और पञ्चमेश पाप युक्त होकर अस्तगत वा नीच राशि में हो तो गर्भस्थिति नहीं होती है। आधान काल में व्यय वा दशम में क्षीण चन्द्रमा हो एवं चतुर्थ में शनि हो और वह मङ्गल से युक्त हो तो गर्भस्थिति नहीं होती है।

नीचाश्रितैस्त्र्यादिखगैरुतारुणेऽस्ने वा तनौ क्षीणविधावकेऽथ वा।
सेनेऽसिते वाऽसृजि काम उद्गमे नार्य्ये सिते वा नहि गर्भसम्भवः ॥ ३५ ॥

आधान समय में यदि तीन ग्रह नीच राशि में हों तो (१) आधान लग्न में सूर्य वा मङ्गल हो और व्यय में क्षीण चन्द्र हो तो (२) सूर्य से युक्त होकर शनि वा मङ्गल यदि सप्तम में वा लग्न में हो और उस में गुरु वा शुक्र न हो तो उक्त योगों में गर्भस्थिति नहीं होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जनौ जलेऽरौ यमभौमसङ्गमः किं सार्क्यरीशे रुजि राजनि स्मरे ।
बिभर्त्ति गर्भं मनुजस्य नाङ्गना मन्दे मदेऽर्के प्रथमे किमस्तभे ॥ ३६ ॥

सार्के यमे यज्वपतिं पदोपगं पश्येन्न पूज्योऽथ पपीपपीजनी ।
दृश्यार्द्धगावुग्रखगे मदे गदे जैवातृके वा जलराशिसंस्थयोः ॥ ३७ ॥

इलाजसौम्यौर्ललना न गर्भिणी गौरांश्विनारैर्मतिगैरकस्थयोः ।
स्वर्भाणुकव्योरथ भीघनद्युननारान्त्यगैः पापखगैर्वशाऽबला ॥ ३८ ॥

जिसके जन्म समय में चतुर्थ वा षष्ठ में शनि भौम का समागम होतो (१) षष्ठ स्थान में शनि युक्त षष्ठेश हो और सप्तम में चन्द्रमा होतो उस मनुष्य की स्त्री गर्भ धारण नहीं करती है। सप्तम में शनि और लग्न में सूर्य होतो (१) सप्तम में सूर्य युक्त शनि हो और दशम गत चन्द्रमा को गुरु न देखता हो तो (२) दृश्यार्द्ध में सूर्य तथा शनि हों, सप्तम में पापग्रह हो और षष्ठ में चन्द्रमा होतो (३) शनि और मङ्गल ये दोनों जल राशि में होंतो मनुष्य की स्त्री गर्भवती नहीं होती है। पञ्चम में चन्द्र, सूर्य तथा मङ्गल हों एवं व्यय में राहु और शुक्र हों तो (१) पञ्चम, लग्न, सप्तम, चतुर्थ तथा व्यय में पापग्रह हों तो मनुष्य की स्त्री वन्ध्या होती है।

मृत्यौ बली मृतिपतिर्जनने न गर्भ-
योग्यर्त्तुमेति महिला जनितस्य तस्य ।
पापास्त्रयो धियि खलैस्त्रिभिरीक्षिता वा
वैरीक्षिता यदि वधूपुरुषौ हि वन्ध्यौ ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में अष्टमस्थान का स्वामी बलवान् होकर अष्टम में होतो उसकी स्त्री गर्भ योग्य ऋतु को नहीं प्राप्त होती है। यदि पञ्चम स्थान में तीन पापग्रह हों और तीन पापग्रहों से दृष्ट हों अथवा शत्रु ग्रह से दृष्ट हों तो स्त्री और पुरुष दोनों वन्ध्य (बांझ) होते हैं।

कोणः कामेऽर्केऽङ्गगेऽथार्ककालौ कामे खस्थेऽब्जे न जीवेन दृष्टे ।
किं सार्कार्किद्वेष्यपोऽरौ ज्ञदृष्टाऽब्जेऽस्तेऽथास्तार्की सुखेऽरौ च वन्ध्या ॥ ४० ॥

सप्तम में शनि और लग्न में सूर्य हो तो (१) सप्तम में सूर्य तथा शनि हों और दशम गत चन्द्रमा यदि गुरु से दृष्ट न हो तो (२) षष्ठ में षष्ठेश हो और वह सूर्य तथा शनि से युक्त हो एवं सप्तम गत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो (३) चतुर्थ वा षष्ठ में मङ्गल तथा शनि हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष की स्त्री वन्ध्या (बांझ) होती है।

जायोदयान्त्येषु खलेषु शीतगौ क्षीणेऽधराशौ तनयेऽथ भार्गवे ।
गण्डान्तभेऽस्ते तनये न सद्युतेऽथास्ताङ्गगौ कोणकवी वशाऽबला ॥ ४१ ॥

सप्तम, लग्न तथा व्यय में पाप ग्रह हों चन्द्रमा क्षीण हो और पञ्चम में पाप राशि हो तो (१) सप्तम स्थान में गण्डान्त (१२,१।४,५।८,९) राशि हो और उस में शुक्र हो एवं पञ्चम स्थान में शुभ ग्रह न हो तो (२) सप्तम में शनि और लग्न में शुक्र हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष की स्त्री वन्ध्या होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नीचे त्रिके तनयपे सखलेऽथ निम्ने
धीशे पतङ्गजयुते ऽथ जनौ युवत्याः ।
सौम्याभ्रचारिसहिते निलयालयस्थे
लोकम्पृणे हरिणदृग् यदि काकवन्ध्या ॥ ४२ ॥

जिसके जन्म समय में पाप युक्त पञ्चमेश नीच राशि में स्थित होकर त्रिकस्थान में हो तो (१) नीच राशि गत पञ्चमेश यदि शनि से युक्त हो तो उस पुरुष की स्त्री काकवन्ध्या होती है। यदि स्त्री के जन्म समय में स्त्री के जन्म लग्न से अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो काक वन्ध्या होती है।

गर्भ पतन के योगः—

शीतद्युतेः किमुदयात्कीलालभावगस्थितैः ।
आग्नेयकैर्नभश्चरैर्गर्भस्तदा विपद्यते ॥ ४३ ॥

निषेक कालीन चन्द्र अथवा लग्न से चतुर्थ में पाप ग्रह हों तो निर्बल पाप ग्रह के मास में निषिक्त गर्भ का पतन होता है।

निषेककाले ऽङ्गगयोः कुजार्क्योस्तद्भे भपे वा तदवेक्षिते वा ।
उत्पातपापाहतखेचरस्य मासे बुधैर्गर्भनिपात उक्तः ॥ ४४ ॥

निषेकसमय में यदि लग्न में मङ्गल तथा शनि हों और मङ्गल (१।८) शनि की (१०।११) राशि में चन्द्रमा हो या मङ्गल शनि से दृष्ट हो तो उत्पातहत वा पापाक्रान्त ग्रह के मास में गर्भ पतन कहे।

मासस्य यस्याधिपतिः स्वनीचे रिक्तोऽस्तगो वाथ तदीयमासे ।
समेति गर्भः क्षयतां तदानीं किं वा निरुक्तः प्रसवः सुधीभिः ॥ ४५ ॥

जिस मास का स्वामी अपनी नीचराशि में वा निर्बल वा अस्तगत हो उस मास में गर्भ पात अथवा प्रसव कहना चाहिए।

प्रज्ञास्थाने पापयुक्तेक्षिते वा सार्किज्ञेऽब्जे भार्गवेऽहौ क्रमेण ।
प्रान्त्ये पौरे पोष्यभे पञ्चमे वा मध्ये भौमे मंत्रभे मन्दगेऽहौ ॥ ४६ ॥

पोष्ये पुत्रे प्राप्तिभेऽथो मृगाङ्के मूर्त्तौ मन्दे मन्मथे मंत्रनाथे ।
सारेऽथारौ ग्लौकुजार्काच्छयोगे गर्भे मन्दे गर्भपातो निरुक्तः ॥ ४७ ॥

पञ्चम स्थान यदि पाप ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो (१) व्यय में शनि युक्त बुध, लग्न में चन्द्रमा, द्वितीय में शुक्र और पञ्चम में राहु हो तो (२) दशम में मङ्गल, पञ्चम में शनि और द्वितीय पञ्चम वा लाभ में राहु हो तो (३) लग्न में चन्द्रमा, सप्तम में शनि और पञ्चमेश यदि शनि से युक्त हो तो (४) षष्ठ स्थान में चन्द्र, भौम, सूर्य और शुक्र का योग हो तथा पञ्चम में शनि हो तो गर्भ पात कहा है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर्कालिमीनाङ्कलवे मतिस्थले मन्देनयोर्मूर्तिगयोः सिते स्मरे ।
उग्रे खगे ऽनङ्गगते तथा भवेद्धूलौ मतौ हेलिजनौ फलोपगे ॥ ४८ ॥

पाप्यब्जयोः पोष्यगयोस्तु पञ्चमे मासे चतुर्थे किमु गर्भपातकः ।
सूनौ कुजेनोरगसौरिसङ्गमे द्वौ गर्भपातौ भवतो द्रुतं मृतिः ॥ ४९ ॥

एकस्य बालस्य ततः स्त्रिया जनौ मृतप्रजा मृत्युगयोः सितेज्ययोः ।
स्यात्काकवन्ध्या ऽब्जविदोर्मृतिस्थयोर्गर्भस्रवा तत्र कुजार्य्यभार्गवैः ॥ ५० ॥

वन्ध्या ऽऽर्किभान्वोर्निधनस्थयोस्तथा स्यद्गर्भपातारमणी मृतौ कुजे ।
सत्खेटसम्बन्धवशादुदीरिता योगा इमे स्युर्विफला जनुर्भृताम् ॥ ५१ ॥

पञ्चम में कर्क, वृश्चिक तथा मीन का नवांश हो, लग्न में शनि तथा सूर्य, सप्तम में शुक्र और पापग्रह हों तो 'गर्भ पात' होता है। पञ्चम में सूर्य, लाभ में शनि एवं द्वितीय में चन्द्र तथा मङ्गल हों तो पाँचवें वा चौथे महीने में 'गर्भ पात' होता है। यदि पञ्चम में शनि, सूर्य, राहु और मङ्गल का योग हो तो 'दो गर्भपात और एक उत्पन्न हुए बालक की शीघ्र मृत्यु' होती है। यदि स्त्री के जन्म समय में लग्न से अष्टम स्थान में शुक्र तथा गुरु हों तो 'मृतप्रजावाली' होती है। एवं अष्टम में चन्द्र तथा बुध हों तो 'काकवन्ध्या' होती है। यदि स्त्री के जन्म लग्न से अष्टम में मङ्गल, गुरु तथा शुक्र हों तो 'वन्ध्या' होती है। अथवा अष्टम में शनि तथा सूर्य हों तो भी 'वन्ध्या' होती है। एवं अष्टम में मङ्गल हो तो 'गर्भपात वाली स्त्री' होती है। यदि पूर्वोक्त योगों में शुभ ग्रहों का सम्बन्ध हो तो वे निष्फल होते हैं अर्थात् उन का उक्त दुष्ट फल नहीं होता है।

गर्भपात संख्या-परिज्ञानः—

यदुन्मितोग्रैस्तनये विलोकिते किं तत्पतिस्थर्क्षपतौ किमात्मनः ।
पत्युर्नवांशस्य गृहे तदुन्मिताः स्युर्गर्भपाता मदने मृतौ भवे ॥ ५२ ॥

दैवे ऽङ्गजे ऽस्रे बहुगर्भपाता ध्याये कुजे त्र्यस्तखगे शनेर्वा ।
ध्यस्ते ऽध आरे युधि तद्वदुग्रदृष्टे सुते नो शुभनाथदृष्टे ॥ ५३ ॥

पञ्चम भाव वा पञ्चमेश की राशिका स्वामी अथवा पञ्चमेश की नवांश राशि ये तीनों जितने पाप ग्रहों से दृष्ट हों उतने ही 'गर्भपात' होते हैं। सप्तम अष्टम एकादश नवम वा पञ्चम में मङ्गल हो तो 'बहुत गर्भ पात' होते हैं। पञ्चम वा लाभ में मङ्गल हो और वह शनि से तृतीय दशम वा सप्तम में हो तो (१) पञ्चम तथा सप्तम में पापग्रह और अष्टम में मङ्गल हो तो (२) पञ्चम स्थान पाप दृष्ट हो और वह शुभ ग्रह तथा अपने स्वामी से दृष्ट न हो तो 'गर्भ पात' होता है।

आधान लग्न से माता पिता के कष्ट और मृत्यु के योगः—

मारस्थयोर्मन्दमहीजयो रवेर्यदा निषेको जनकस्य पञ्चता ।
तथा ऽमृतांशोर्जननीमृतिर्मता पुंयोपितावेकत आमयार्दितौ ॥ ५४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मन्दासृजा स्वान्त्यगताविनाब्जयोर्विकेन दृष्टावपरेण संयुतौ ।
आदित्यचन्द्राविह योगकारकमध्ये बली तन्मृतिरस्य मासि यः ॥ ५५ ॥

यदि आधान कालीन सूर्य से सप्तम स्थान में शनि तथा मङ्गल हों तो 'पिता की मृत्यु' होती है। एवं चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शनि तथा मङ्गल हों तो 'माता की मृत्यु होती है। यदि सूर्य से सप्तम में शनि और मङ्गल के मध्य में एक ही हो तो 'पिता रोग ग्रस्त' होता है। एवं चन्द्रमा से सप्तम में शनि और मङ्गल के मध्य में एक ही हो तो 'माता रोग ग्रस्त' होती है। यदि सूर्य से द्वितीय तथा द्वादश में शनि और मङ्गल हों अर्थात् शनि मङ्गल के अन्तराल में 'सूर्य' हो तो पिता की मृत्यु होती है। एवं चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश में शनि मङ्गल हों अर्थात् शनि मङ्गल के अन्तराल में चन्द्रमा हो तो 'माता की मृत्यु' होती है। 'सूर्य' यदि शनि मङ्गल के मध्य में किसी एक से युक्त हो और अन्य से दृष्ट हो तो 'पिता की मृत्यु' होती है। एवं 'चन्द्रमा' शनि मङ्गल में से किसी एक से युक्त हो और दूसरे से दृष्ट हो तो माता की मृत्यु होती है। उक्त योग कारक ग्रहों के मध्य में जो अधिक बली ग्रह हो उस के मास में 'पिता वा माता की मृत्यु' होती है।

पीयूषगौ प्रान्त्यगते पतङ्गे निमीलने नीर इलान्मजाते ।
शस्त्रेण पित्रोर्मरणं तु तत्र स्याद्बन्धनेनेनगुलेन मृत्युः ॥ ५६ ॥

व्यय में चन्द्रमा, अष्टम में सूर्य और चतुर्थ में मङ्गल हो तो शस्त्र से माता तथा पिता की मृत्यु कहनी चाहिए। एवं व्यय में चन्द्रमा, अष्टम में सूर्य और चतुर्थ में शनि हो तो बन्धन से माता तथा पिता की मृत्यु होती है।

गर्भवती स्त्री के मृत्यु के योगः—

ब्रह्मो विधुर्वा खलखेटमध्यगस्त्वदृष्टदेहः शुभखेचरैः किमु ।
सद्भिर्न दृष्टैर्दुरितैः स्मराङ्गगैर्वाङ्गेऽर्कजे वा गलिते कलावति ॥ ५७ ॥

धराजदृष्टेऽथ रवौ व्यये विधौ कृशेऽघदृष्टे सलिलेऽचलासुते ।
वोग्रान्तराले भृगुनन्दनेऽथ वा होराद्युने साक्षितिजेऽथ विग्रहे ॥ ५८ ॥

भास्वत्समेते रजनीकरे कृशेऽथ वा कुजे किं दुरितैर्धनार्कगैः ।
चारुग्रहालोकनवर्जितैस्तदा सहाम्बया गर्भ उपैति पञ्चताम् ॥ ५९ ॥

आधान समय में सूर्य वा चन्द्रमा पाप ग्रहों के अन्तराल में हो और शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो (१) सप्तम तथा लग्न में पाप ग्रह हों और वे शुभग्रहों से दृष्ट न हों तो (२) लग्न में शनि वा क्षीण चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से दृष्ट हो तो (३) व्यय में सूर्य हो, क्षीण चन्द्रमा पाप दृष्ट हो और चतुर्थ में मङ्गल हो तो (४) शुक्र पाप ग्रहों के अन्तराल में हो तो (५) लग्न वा सप्तम में मङ्गल हो तो (६) लग्न में सूर्य युक्त क्षीण चन्द्रमा हो वा मङ्गल हो तो (७) द्वादश तथा द्वितीय में पाप ग्रह हों और वे शुभग्रह से दृष्ट न हों तो माता के साथ गर्भ मृत्यु को प्राप्त होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

निषेककालीन लग्न से पुत्र तथा कन्या जन्म योगः—

होरार्य्यात्रिजहेलयो बलयुता ओजर्क्षभागस्थिताः
पुंसां जन्म समे गृहे समलवे कुर्वन्ति ते स्त्रीजनिम् ।
आधाने सबलाः कलेन्दुकविकुजा युग्मे कुमारीप्रदाः
सोर्ज्जौ चेद्विषमे गृहे दिनकराचार्य्यौ कुमारप्रदौ ॥ ६० ॥

आधान समय में लग्न, गुरु, चन्द्र और सूर्य ये चारों बलवान् होकर विषम राशि तथा विषम नवांश में हों तो पुरुष जन्म को करते हैं । यदि उक्त चारों सम राशि तथा सम नवांश में हों तो कन्या जन्म को करते हैं । एवं आधान काल में मङ्गल, शुक्र और चन्द्रमा ये तीनों सम राशि में हों तो पुत्री को देते हैं । यदि बलवान् सूर्य तथा गुरु विषम राशि में हों तो पुत्र जन्म को करते हैं ।

विद्दृष्टौ भगगीष्पती हयतनौ युग्मे द्विपुत्रप्रदौ
कन्यायां तिमिगे कुजेन्दुकवयश्चेत्कोविदेनेक्षिताः ।
कन्यायुग्मकरा अयुग्मभवने मुक्त्वोदयं मन्दगः
कुर्यात्पुत्रजनिं तथा बलयुतो गौरस्त्रिकोणाङ्गगः ॥ ६१ ॥

सूर्य तथा गुरु ये दोनों बुध से दृष्ट होकर धनुराशि में वा मिथुन राशि में हो तो पुत्र को देते हैं । मङ्गल, चन्द्र और शुक्र ये तीनों बुध से दृष्ट होकर कन्या वा मीन में हों तो दो कन्याओं को करते हैं । लग्न को छोड़कर यदि लग्न से विषम (३।५।७।९।११) स्थान में शनि हो तो पुत्र जन्म को करता है । एवं लग्न वा त्रिकोण में बलवान् गुरु हो तो पुत्र जन्म को करता है ।

पुण्यैर्वा पुरुषैर्निषेकपुरतः कोणानने वीक्षिते
यद्वा पुत्रलवे निषेकसमये वाच्यं नृजन्माऽन्यथा ।
कन्याजन्म भगे भुजे पथि मतावाधानपौरादुत
पुंदृष्टः स्वलवे यदैकखचरः केन्द्रे स्ववर्गे बली ॥ ६२ ॥
सूते सूनुमथो चतुष्टयगतः स्त्रीरवेचरः स्वोच्चगः
स्त्रीजन्माथ शुभाः प्रचण्डकिरणाः कोणार्थयाताः क्रमात् ।
जामित्रानुजगा बुधेज्यविधुभिर्दृष्टा नृजन्मप्रदाः
स्वोच्चस्थे सचिवे त्रिकोणभवने गर्भङ्गतः पूरुषः ॥ ६३ ॥

आधान लग्न से त्रिकोण स्थान तथा द्वितीय स्थान यदि शुभ ग्रहों से वा पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो अथवा निषेक समय में निषेक लग्न से पञ्चमस्थान में जिस राशि का नवांश हो वह शुभ ग्रहों से वा पुरुषग्रहों से दृष्ट हो तो पुत्र-जन्म होता है । यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो तो कन्याजन्म होता है । आधान लग्न से तृतीय पञ्चम वा नवम

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

में 'सूर्य' हो तो 'पुत्रजन्म' होता है। यदि निषेक समय में एक भी बलवान् ग्रह केन्द्र, अपने नवांश तथा अपने वर्ग में स्थित होकर पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो तो पुत्र को उत्पन्न करता है। यदि स्त्री ग्रह उच्चराशि में स्थित होकर केन्द्र में हो तो कन्याजन्म को करता है। त्रिकोण तथा द्वितीय में शुभ ग्रह हों, सप्तम तथा तृतीय में पाप ग्रह हों और वे बुध, गुरु तथा चन्द्र से दृष्ट हों तो पुरुषजन्म को करते हैं। त्रिकोण में उच्चराशि गत गुरु हो तो गर्भ में पुरुष कहना चाहिए।

पङ्गुः प्राप्तिगतो विकर्त्तनकवी जायानुजस्थौ पुमान्
गर्भे पुंगणगे यमे ऽर्ककुजयोः काये ऽत्र गर्भे नरः।
पुंभे दैत्यपुरोहिते हिमकरे माने स्वतुङ्गे तथा
त्र्यङ्गस्थे ससिते विधौ सधिषणे कोणे समे स्त्रीजनिः॥ ६४॥

लाभ में शनि, तृतीय तथा सप्तम में सूर्य और शुक्र हों तो गर्भ में पुरुष होता है। पुरुषवर्ग में शनि, लग्न में सूर्य तथा भौम हों तो भी गर्भ में पुरुष होता है। पुरुष राशि में शुक्र और दशम में उच्चराशि गत चन्द्रमा हो तो पुरुष जन्म होता है। सम राशि के लग्न में शुक्र युक्त चन्द्रमा हो और सम राशि में गुरु युक्त शनि हो तो कन्याजन्म होता है।

काव्यज्ञौ स्वगणस्थितौ वसुमतीपुत्रेक्षितौ वाक्रिजौ।
वेज्यो युग्मगृहाश्रितो दितिसुताचार्य्येण दृष्टो ऽथ वा।
पङ्गौ पिङ्गलभागगे ऽत्र तनयाजन्माथ पुंगे ऽङ्गपे
गर्भे पुत्र उदीरितः पुरुषभे पौरान्विपाले यदा॥ ६५॥

पुंखेटेन सहेत्थशालिनि तथैणाङ्को ऽपराह्णे रवेः
पृष्ठे स्त्री कथिता कलेवरपतिः पुंखेचरः पुंगृहे।
पुत्रो गर्भगतस्ततः सबलपुंखेटेक्षिते पौरगे
पुंवर्गे पुरुषः समे हरिणदृग्दृष्टे ऽबला ज्ञान्विते॥ ६६॥

गर्भाढ्या धिषणारुणक्षितिसुताः प्रश्नोदये ऽस्ते ऽनुजे
त्र्यङ्गे गर्भगतः सुतो निगदितो ऽन्यैः खेचरैः स्त्री मता।
त्र्यङ्गे देहगते सुते सशुभदे योगो त्र्यपत्याभिधो
सोर्ज्जेपूदयविन्महीजगुरुषु त्र्यङ्गे किमोजे समे॥ ६७॥

धिष्ण्येन्द्वोः पुरुषस्त्रियौ शशभृति त्र्यङ्गोदये ज्ञे स्वभे
लाभे हेलिसुते ऽत्र युग्ममुदितं दृष्टे बुधेन स्वयम्।
चन्द्रे ऽङ्गे गृहवत्सितांशुगृहतस्तद्वन्निषेके तनू-
दुश्चिक्येशयुतौ किमुच्चभवने ऽङ्गेशे ऽनुजर्क्षे तथा॥ ६८॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शुक्र और बुध ये दोनों अपने अपने वर्ग में हों और मङ्गल से दृष्ट हों तो (१) चन्द्रमा वा गुरु समराशि में हो और शुक्र से दृष्ट हो तो (२) सूर्य के नवांश में ' शनि ' हो तो उक्त योगों में पुत्रजन्म होता है। पुरुष राशि में लग्नेश होतो पुरुषजन्म को कहे। यदि अपराह्न समय में गर्भाधान हो और सूर्य से पृष्ठगत चन्द्रमा हो तो कन्या होती है। लग्नका स्वामी पुरुष ग्रह हो और वह पुरुष राशि में हो तो गर्भ में पुत्र कहना चाहिए। लग्न में पुरुष ग्रहोंका वर्ग हो और बलवान् पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो तो पुरुष होता है। एवं आधान लग्न में सम राशि हो और स्त्री ग्रह से दृष्ट हो एवं बुध से युक्त हो तो गर्भ में कन्या कहे। प्रश्नलग्न में अथवा उस से सप्तम तृतीय पञ्चम वा नवम में सूर्य, गुरु तथा मङ्गल हों तो गर्भ में पुत्र कहना चाहिए। एवं उक्त स्थानों में स्त्री ग्रह हों तो गर्भ में कन्या जाननी चाहिए। लग्न में द्विस्वभावराशि हो और पञ्चम में शुभग्रह हों तो गर्भ में दो सन्तान कहे। बलवान् लग्न, बुध, सौम और गुरु ये सब द्विस्वभावराशि में वा विषम राशि में हों और शुक्र तथा चन्द्रमा ये दोनों समराशि में हों तो गर्भ में यमल कहे। द्विस्वभाव राशि के लग्न में चन्द्रमा हो, बुध अपनी राशि में हो और लाभ में शनि होतो गर्भ में यमल होते हैं। लग्नगत चन्द्रमा स्वयं बुध से दृष्ट हो तो राशि के समान चन्द्रमा और लग्न से यमल गर्भ कहे। निषेक समय में लग्नेश और तृतीयेश का योग हो अथवा उच्च राशिगत लग्नेश तृतीय में होतो भी गर्भ में यमल कहे।

अङ्गांशस्थान् खेचरांश्चोदयं ज्ञः पश्येद्युग्मांशस्थितः पूरुषौ द्वौ।
एका कन्या तांस्तथा स्त्र्यंशगो वित्पश्येदेको नन्दनः कन्यके द्वे ॥ ६९ ॥

द्विस्वभाव (३।६।९।१२) राशि में स्थित ग्रहों को और लग्न को मिथुनांश में स्थित बुध देखता हो तो गर्भ में दो पुरुष और एक कन्या कहे। एवं द्विस्वभाव राशि गत ग्रहों को और लग्न को कन्यांश में स्थित बुध देखता होतो गर्भ में एक पुत्र और दो कन्या कहे।

खगोदयान् द्वन्द्वभगान् हयांशगान् पश्येद्बुधो द्वन्द्वलवाश्रितस्तदा।
गर्भे त्रिपुत्रा वनितांशगो बुधो विलोकयेदित्थसिकन्यकांशगान् ॥ ७० ॥

ग्रहोद्गमान् गर्भगतास्त्रिकन्यका यमेऽङ्ग इन्दौ द्विपि विद्धयोः स्मरे।
प्रद्योतने नैधनगे विशोभने गर्भे पुमांसस्त्रिमिता उदाहृताः ॥ ७१ ॥

मिथुन गत ग्रह तथा लग्न यदि धनु के नवांश में हों और उनको मिथुनांश में स्थित बुध देखता होतो गर्भ में तीन पुरुष होते हैं। मीनांश तथा कन्यांशगत ग्रह तथा लग्न को यदि कन्यांशगत बुध देखता होतो गर्भ में तीन कन्या कहे। लग्न में शनि, षष्ठ में चन्द्रमा, सप्तम में बुध तथा शुक्र एवं अष्टम में सूर्य हो और वह शुभ ग्रह से युक्त न होतो गर्भ में तीन पुरुष कहने चाहिए।

एवं विधे भूतनये ऽबला मता नपुंसकास्त्रिग्धमरीचिमालिना।
ज्ञालोकितौ हेलिगुरू नृयुग्मयांशस्थौ पुमांसौ प्रमदाङ्गपांशगौ ॥ ७२ ॥

पुंस्त्रीयुगं स्त्रीझषभागगा विदा दृष्टाः सितास्त्रिधवो ऽबलायुगम्।
ते चेन्नृयुग्माश्चलवे नरस्त्रियौ गर्भाशयस्थाविति कीर्त्तितं बुधैः ॥ ७३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इस प्रकार लग्न में मङ्गल हो और शेष ग्रह उक्त स्थान में हों तो गर्भ में तीन कन्या कहे। एवं लग्न में सूर्य हो और शेष ग्रह उक्त स्थान में हों तो गर्भ में तीन नपुंसक कहने चाहिएं। गुरु तथा सूर्य यदि धनुर्नवांश में वा मिथुन नवांश में स्थित होकर बुध से दृष्ट हों तो गर्भ में दो पुरुष होते हैं। एवं गुरु तथा सूर्य यदि मीनांश वा कन्यांश में स्थित होकर बुध से दृष्ट हों तो गर्भ में एक पुत्र तथा एक कन्या को कहे। शुक्र, मङ्गल तथा चन्द्रमा ये तीनों कन्यांश वा मीनांश में स्थित होकर बुध से दृष्ट हों तो गर्भ में दो कन्या होती हैं। यदि शुक्र, मङ्गल तथा चन्द्रमा ये तीनों मिथुननवांश वा धनुर्नवांश में स्थित होकर बुध से दृष्ट हों तो गर्भ में एक पुरुष और एक कन्या कहनी चाहिएं।

जैवातृके समे गृहे कल्पाश्रिते विलोकिते।
खेटेन शौर्य्यशालिना गर्भे सुतासुतौ मतौ ॥ ७४ ॥

लग्न में सम राशि गत चन्द्रमा हो और वह बलवान् ग्रह से दृष्ट हो तो गर्भ में यमल होते हैं अर्थात् एक पुत्र और एक कन्या होती है।

यदोदये चापधरान्तिमांशके दृष्टे सवीर्य्येण बुधेन सौरिणा।
तदंशसंस्थैः सबलैर्विहङ्गमैः कोशङ्गताः स्युर्बहुजन्तवः स्त्रियाः ॥ ७५ ॥

लग्न में धनू राशि तथा धनु का नवांश हो और बलवान् बुध से वा शनि से दृष्ट हो एवं बलवान् ग्रह यदि धनू राशि के नवांश में हों तो स्त्री के गर्भ में बहुत जीव होते हैं।

पुंभे तमो वा मृदुगोऽथ चान्द्रिर्बली भवेऽभ्रेऽथ पतङ्गपूज्यौ।
बलान्वितौ पुंभवनाश्रितौ स्यात्सुतोऽन्यथा चेज्जननं सुतायाः ॥ ७६ ॥

(१) पुरुष (१।३।५।७।९।११) राशि में राहु वा शनि हो तो (२) बलवान् बुध यदि दशम वा एकादश में हो तो (३) बलवान् सूर्य तथा गुरु यदि पुरुष राशि में हों तो उक्त योगों में पुत्र जन्म होता है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो तो कन्याजन्म होता है।

युवत्या दक्षिणे पार्श्वे नन्दनः स्याददक्षिणे।
पार्श्वे स्त्री तुन्दमध्यस्थः पण्ढो युग्मावुभोपगौ ॥ ७७ ॥

स्त्री के गर्भ में यदि बालक दक्षिण पार्श्व में हो तो पुरुष, वाम पार्श्व में कन्या दोनों पार्श्वों में यमल और उदर के मध्य भाग में गर्भ हो तो नपुंसक होती है।

प्रश्न लग्न से पुत्र पुत्री परिज्ञानः—

प्रश्ने वारो भं तिथिस्तन्मितिर्या नाम्नो वर्णा गर्भवत्या युवत्याः।
सा तैर्युक्ता सप्तभक्ताऽवशेष ओजे पुत्रः स्त्री समे खे प्रजा नो ॥ ७८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रश्न समय में जो वार, नक्षत्र तथा तिथि हों उन की जो संख्या हों उन में गर्भवती के नाम के वर्णों को युक्त करके ७ से भाग दे यदि शेष संख्या विषम (१।३।५) हो तो पुत्र और सम (२।४।६) हो तो कन्या एवं शून्य शेष में सन्तान नहीं होती है।

किं गुर्विण्या नामवर्णैरुपेता आकाशाम्भोध्युन्मिताश्चेषुयुक्ताः।
तिथ्या युक्ताः खेचरैः संविभक्ते शेषे युग्मे कन्यकौजे पुमान् स्यात् ॥ ७९ ॥

गर्भिणी के नाम के वर्णों में ४० युक्त करे। तदनन्तर वर्तमान तिथि की संख्या को युक्त करे। पुनः पाँच को युक्त करके ९ से तष्ट करे यदि शेष संख्या सम हो तो कन्या और विषम हो तो गर्भ में पुरुष होता है।

नारीपुंसोर्वर्णमात्राङ्कपिण्डं ग्रामैर्हन्याद्धस्तिभिः संविभज्य।
युग्मे शेषे स्यात्कुमारी तथौजे शेषे पुंसस्त्वाद्यगर्भेऽबलायाः ॥ ८० ॥

स्त्री तथा पुरुष के नामाक्षर और ओं की संख्या ओं के पिण्ड को ३ से गुण कर ८ से तष्ट करे। यदि शेष संख्या सम हो तो स्त्री के आद्यगर्भ में कन्या और शेष विषम संख्या हो तो पुत्र होता है।

नखाहता खाग्निगुणा च पंक्तिः प्रश्नाक्षराणां तुरगैर्विभक्ता।
शेषे द्विषट्के तनयाऽद्रिवेदे षण्ढः कुरामाक्षमिते सुतः स्यात् ॥ ८१ ॥

प्रश्नाक्षरों की पंक्ति को २० से गुणकर जो गुणन फल हो उस में ३० युक्त करके ७ से भाग दे यदि दो वा छः शेष बचे तो कन्या, सात वा चार शेष बचे तो नपुंसक और तीन वा पाँच शेष बचें तो पुत्र होता है।

गर्भवती स्त्रीके प्रसव वा अप्रसव का परिज्ञानः --

प्रश्नोदयात्पञ्चमभावनायकतारापती एकगृहाश्रितौ यदि।
तदा सगर्भा प्रमदा प्रसूयते विपर्ययान्नेति वदन्ति कोविदाः ॥ ८२ ॥

प्रश्नकालीन लग्न से पञ्चम स्थान में जो राशि हो उस का स्वामी और प्रश्नकालीन चन्द्रमा यदि ये दोनो एक राशि में हों तो गर्भवती स्त्री का प्रसव होता है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हों तो स्त्री का प्रसव नहीं होता है। इस प्रकार पण्डितजन कहते है।

एवं मास परिज्ञानः---

प्रश्नोद्गते नन्दलवा यदुन्मिता गर्भस्य मासाः प्रभवन्ति तन्मिताः।
यावद्गृहेऽच्छः सबलोऽङ्गतः सुतान्मासोऽत्र तावत्प्रमिताः प्रकीर्तिताः ॥ ८३ ॥

प्रश्न लग्न में जितने गत नवांश हों उतने ही गर्भ के गत मास होते है। अथवा प्रश्न लग्न से जो पञ्चमस्थान हो उस से जितने स्थानपर बलवान् शुभ हो उतने ही गर्भ के गत मास कहे है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जन्म समय परिज्ञानः —

आधानदेहाद्यदि चारगत्या तृतीयराशिं गमुपैति सूर्यः ।
जनुस्तदा वा तरणौ त्रिकोणे निषेककालोद्गमतो जनिः स्यात् ॥ ८४ ॥

आधानकाल के लग्न से जो तृतीय राशि हो उस में गोचरगति से जब 'सूर्य' आवे तब प्रसव होता है। अथवा निषेककालीन लग्न से जो पञ्चम या नवम राशि हो उस में जब गोचर से सूर्य आवे तब प्रसव होता है।

जन्म राशि परिज्ञानः—

निषेकलग्नाद्दशमं जनुर्गृहं वा ऽऽधानकालाङ्ककलेशतो ऽस्तभम् ।
आधानकाले भविभुर्भगांशके यस्मिन् स्थितस्तन्मितभे सुतं वदेत् ॥ ८५ ॥

आधानकाल के लग्न से जो राशि दशमस्थान में हो वह जन्म राशि होती है। अथवा आधानकालीन चन्द्रमा और लग्न के मध्य में जो बलवान् हो उस से सप्तम स्थान में जो राशि हो वह जन्म राशि होती है। आधानकालीन चन्द्रमा जिस राशिके द्वादशांश में हो उस राशि के चन्द्रमा में १० वें वा ९ वें मास में प्रसव को कहे।

तत्कालं ग्लौसंयुतोयो ऽर्कभागस्तत्तुल्यर्क्षेणान्वितो ऽग्रे शशाङ्कः ।
अह्नस्तम्यास्तुल्यभागो ह्युदेति यावांस्तावत्सम्भवो द्युक्षपेते ॥ ८६ ॥

आधान समय की अथवा प्रश्न समय की द्वादशांश कुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि के चन्द्रमा में नवम मास में अथवा दशम मास में बालक का जन्म होता है। आधान कालीन वा प्रश्नकालीन स्पष्ट चन्द्र में जितनी संख्या का वर्त्तमान द्वादशांश हो उतनी ही संख्या द्वादशांश कुण्डली में स्थित चन्द्रमा की राशि से आगे गिन कर जो राशि आवे उस राशि के चन्द्रमा में नवम मास में वा दशम मास में प्रसव होता है। एवं आधान समय में वा प्रश्न समय में लग्न के जितने भुक्त अंशादि हों उतने ही घट्यादि दिन के वा रात्रि के व्यतीत होने पर बालक का जन्म होता है। अर्थात् आधान कालीन लग्न वा प्रश्न कालीन यदि दिन में बली हो तो दिन गत होने पर बालक का जन्म होता है। एवं उक्त समय का लग्न रात्रि में बली हो तो रात्रि गत होने पर बालक का जन्म होता है।

—: उदाहरणः —

प्रश्न समय में ३०।० दिन मान, ३०।० रात्रि मान, ४।१०।२५।३५ स्पष्ट चन्द्र एवं ३।८।१२।३० स्पष्ट लग्न है। यहां स्पष्ट चन्द्र ४।१०।२५।३५ है अतः इष्ट कालीन चन्द्रमा में द्वादशांश की गणना की तो सिंह राशि के पाँच वें द्वादशांश में चन्द्रमा हुआ अर्थात् वर्त्तमान समय में द्वादशांश कुण्डली में धनूराशि में चन्द्रमा हुआ। यहां इष्ट कालीन स्पष्ट चन्द्र में पाँचवां वर्त्तमान द्वादशांश है इस लिए चन्द्रमा के वर्त्तमान द्वादशांश धनू राशि से पाँचवीं मेष राशि है उस में जन्म होगा अर्थात् आधान समय से यथा सम्भव नवम मास में अथवा दशम मास में जब चन्द्रमा मेष राशि में आयेगा तब 'गर्भवती स्त्री का प्रसव' होगा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जन्म नक्षत्र तथा इष्ट घट्यादि की साधन रीतिः—

इन्द्वर्कभागेतलवाः कलीकृता भास्वद्धृताः खाभ्रगजोध्दृताः फलम् ।
भार्धं विलग्नेतलवा द्युयामिनीमानघ्नशून्याग्निहृता घटीमुखम् ॥ ८७ ॥

आधान समय के अथवा प्रश्न समय के राशि रहित स्पष्ट चन्द्रमा के अंशादि में गत द्वादशांश के अंशादि को हीन करे शेष वर्त्तमान द्वादशांश के अंशादि होते हैं। उस वर्त्तमान द्वादशांश के शेष अंश को ६० से गुणकर कला युक्त करे तब वर्त्तमान द्वादशांश के कलादि होते हैं। उन कलादियों को १२ से गुणकर ८०० से भाग दे लब्ध गत नक्षत्र की संख्या होती है। शेष को ६० से गुणकर ८००.से भाग दे लब्ध 'घटी' होती हैं। पुनः शेष को ६० से गुणकर ८०० से भाग दे लब्ध 'पल' होते हैं। इस प्रकार लब्ध हुए नक्षत्रादि को गत द्वादशांश के नक्षत्रादि में युक्त करे तब जन्म कालीन नक्षत्र और उस के भुक्त घट्यादि होते हैं। आधान लग्न के या प्रश्न लग्न के भुक्त अंशादि को दिन मान या रात्रि मान के घट्यादि से गुणे अर्थात् अभीष्ट लग्न दिन बली हो तो लग्न के भुक्त अंशादि को दिनमान के घट्यादि से गुणे। यदि अभीष्ट लग्न रात्रि बली हो तो लग्न के भुक्त अंशादि को रात्रि मान से गुणे। तदनन्तर उस गुणन फल में ३० से भाग दे लब्ध घट्यादि इष्ट काल होता है यदि लग्न के भुक्त अंशादि को रात्रि मान से गुणन किया हो तो ३० से विभाजित करने पर जो लब्ध घट्यादि हों उन को दिन मान में युक्त करे तब रात्रि जन्म का इष्ट काल होता है। दिन बली लग्न में लग्न के भुक्त अंशादि को दिन मान से गुणकर ३० से विभाजित करने पर दिन गत इष्ट काल होता है। उस घट्यादि इष्ट काल से लग्न साधनोक्त रीति द्वारा स्पष्ट लग्न का साधन करे तब वह जन्म कालीन स्पष्ट लग्न होता है। तदन्तर उस स्पष्ट लग्न के द्वारा यह कुण्डली बनाकर उस में पूर्वागत इष्ट समय के गोचर ग्रहों को लिखे तब वह 'गर्भ कुण्डली' होती है।

—: उदाहरण :—

यहां स्पष्ट चन्द्र ४।१०।२५।३५ की राशि ४ को त्याग कर शेष अंशादि १०।२५।३५ में गत द्वादशांश १०।०।० को हीन किया तो ०।२५।३५। वर्त्तमान द्वादशांश धनु के भुक्तांशादि हुए। इन की कला किई तो २५।-३५ हुई इन को १२ से गुणा तो ३०७।० हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध ० गत नक्षत्र हुआ अर्थात् अभीष्ट समय पर्यन्त मेष राशि का एक नक्षत्र भी पूर्ण व्यतीत न हुआ। इस लिए वर्त्तमान 'अश्विनी नक्षत्र' हुआ। शेष कलादि ३०७।० को ६० से गुणा तो १८४२० हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध २३ 'अश्विनी नक्षत्र की भुक्त घटी' हुई। शेष २० को ६० से गुणा तो १२०० हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध १ 'पल' हुआ। एवं शेष ४०० को ६० से गुणा तो २४००० हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध ३० 'विपल' हुए। इस प्रकार २३ घटी, १ पल, २३ विपल अश्विनी नक्षत्र के भुक्त घट्यादि हुए। अर्थात् अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में 'प्रसव' होगा।

राश्यादि स्पष्ट लब्ध लग्न ३।८।१२।३० की कर्क राशि है। यह रात्रि बली है अतः लग्न की ३ राशि को त्याग कर भुक्त अंशादि ८।१२।३० को इष्ट दिन के रात्रि मान ३०।० से गुणा तो २४६।१५।० हुए। इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध ८ घटी, १२ पल, ३० विपल 'रात्रि का इष्ट काल' हुआ अर्थात् ८।१२।३० रात्रि के घट्यादि व्यतीत होनेपर 'बालक का जन्म' होगा। दिन मान ३०।० में रात्रि गत घट्यादि ८।१२।३० को युक्त किया तो ३८।१२।३० जन्म कालीन घट्यादि इष्ट काल हुआ। इस इष्ट काल से स्पष्ट लग्न साधनोक्त रीति द्वारा लग्न साधन किया तो ७।१८।३७।३० यह 'गर्भ कुण्डली का राश्यादि स्पष्ट लग्न' तदनन्तर इष्ट लग्न वृश्चिक की कुण्डली बनाकर इष्टकालीन ग्रहों को लग्न कुण्डली में स्थापित किया तो 'गर्भ कुण्डली' हुई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: द्वितीया उदाहरण :—

संवत् १८७० भाद्रपद कृष्ण १३ भौम वार ९।१ घट्यादि इष्ट समय में किसी महाशय ने गर्भवती स्त्री के प्रसव के लिए प्रश्न किया, अतः प्रश्न कालीन ४।९।१२।१७ स्पष्ट सूर्य ३।१५।५२।१।५ स्पष्ट चन्द्र है और ५।२७।७।२० स्पष्ट लग्न है। यहां इष्ट कालीन ३।१५।५२।३१ स्पष्ट चन्द्र में सात वां द्वादशांश वर्तमान है अतः कर्क से गणना किई तो मकर के चन्द्रमा में नवम मास में अथवा दशम मास में गर्भवती स्त्री का प्रसव होगा। स्पष्ट चन्द्र ३।१५।५२।३१ में गत द्वादशांश १५।०।० को हीन किया तो ०।५२।३१ शेष बचे। इन की कला ५२।१।५ को एक राशि की कला १८०० से गुणा तो ९३६३२।३० हुए। इन में एक द्वादशांश की कला १५० से भाग दिया तो लब्ध ६२४।१३ नक्षत्र कला पिण्ड हुआ। इस में एक नक्षत्र कला प्रमाण ८०० न घट सका अतः नक्षत्र के तीन चरणों की कला ६०० को हीन किया तो शेष २४।१३ चतुर्थ चरण के भुक्त कलादि हुए। इस लिए मकर राशि के चन्द्रमा मे अर्थात् श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में गर्भवती स्त्री का प्रसव होगा। यहां ५।२७।७।२० स्पष्ट लग्न है। लग्न में नवम नवांश कन्या का वर्तमान है। कन्या राशि दिन बली है अतः दिन में बालक का जन्म होगा। लग्न के अंशादि २७।७।२० में गत नवांश प्रमाण २६।४०।० को हीन किया तो ०।२७।२० शेष बचे। इन की कला २७।२० को दिन मान ३१।५८ से गुणा तो ८७३।४५ हुए। इन में एक चरण कला प्रमाण २०० से भाग दिया तो लब्ध ४।२२ सूर्योदय से गत घट्यादि इष्टकाल हुआ।

संवत् १८७० मार्गशीर्ष शुक्ल पञ्चमी रविवार इष्ट घट्यादि ४।२२ स्पष्ट लग्न ८।७ वृश्चिकार्क गतांशादि १४।२२।२४ वृश्चिक में सूर्य, मकर में चन्द्रमा, कुम्भ में मङ्गल, धनु में बुध, सिंह में गुरु, धनु में शुक्र, धनु में शनि, कर्क में राहु और मकर में केतु इस प्रकार गर्भवती के प्रसव समय में ग्रहों की स्थिति होगी।

संवत् १९६८ आषाढ शुक्ल एकादशी चन्द्रवार इष्ट घट्यादि ६३।४४, दिनमान ३६।३८, ज्येष्ठा भुक्त घट्यादि ६०।५, सर्वेष्ट घट्यादि ६७।१५, ज्येष्ठा स्पष्ट भुक्त घट्यादि ५३।२१, इस से 'खखद्वंद्वं भयातं' इत्यादि रीति द्वारा स्पष्ट चन्द्र साधन किया तो ७।२८।३१।२६ 'राश्यादि स्पष्ट चन्द्र हुआ। यहां चन्द्रमा तुला के द्वादशांश में है इस लिए चित्रार्द्ध मत होनेपर तुला के चन्द्रमा में गर्भवती स्त्री का प्रसव होगा। स्पष्ट सूर्य ३।१९५।५४ है। इस से 'तत्कालार्कः सायनः' इत्यादि रीति द्वारा लग्न साधन किया तो ९।१९।५।५४ 'स्पष्ट लग्न' हुआ। यहां स्पष्ट लग्न में षष्ठ नवांश वर्तमान है, अतः आषाढ काल से इष्ट समय पर्यन्त प्रष्टा की स्त्री की गर्भ स्थिति का वर्तमान षष्ठ मास हुआ। शुक्र की अति मन्द गति होने से छठा मास वर्तमान हुआ और चार मास शेष रहे इस लिए मार्गशीर्ष में 'प्रसव' होगा।

यहां प्रश्न समय में मकर लग्न है। यह रात्रि बली है 'रात्रिद्युसंज्ञकेषु विलोम जन्म' इत्यादि रीति से दिन में 'प्रसव' होगा।

दिनमान ३३।३८ में ३० से भाग दिया तो लब्ध १ घटी, ७ पल हुए। इन को पलांकृत किया तो ६७ हुए। इन को स्पष्ट लग्न के भुक्ताश १९ से गुणा तो १२७७ पल हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध २१ घटी, १७ पल हुए। इन को रात्रिमान घट्यादि २६।२२ में शोधन किया तो ५।२ शेष घट्यादि बचे। अतः संवत् १९६८ मार्गशीर्ष कृष्ण १३ शनिवार सूर्योदयकाल से इष्ट घट्यादि ५।२ धनु लग्न, वृश्चिक में रवि, तुला में चन्द्रमा, वृष मे मङ्गल, वृश्चिक में बुध, वृश्चिक में गुरु, कन्या में शुक्र, मेष में शनि, मेष में राहु एवं तुला में केतु इस प्रकार गर्भवती के प्रसव समय में ग्रहों की स्थिति होगी।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'प्रश्नेन्दोराधानेन्दोर्वा जनुर्मतत्स्पष्टभुक्तघट्यादि स्पष्टीकरण सारणीयम्' अत्रोपकरणं स्पष्टचन्द्रः ।'

स्प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
चं.	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
नक्ष.	अश्वि	मृ.	म.	चि.	मू.	ध.	अश्वि	मृ.	म.	चि.	मृ.	ध.	कृ.	पुन.	अ.फा	वि.	अ.भा	अ.मा	कृ.	पुन.	अ.फा	वि.	अ.भा	अ.मा	मृ.	म.	चि.	मू.	ध.	अश्वि
घ.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	३०	०	३०	०	३०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वि.प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
स्प.	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
चं.	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
नक्ष.	मृ.	म.	चि.	मू.	ध.	अश्वि	पुन.	अ.फा	वि.	अ.भा	अ.मा	कृ.	पुन.	अ.फा	वि.	अ.भा	अ.मा	कृ.	म.	चि.	मृ.	ध.	अश्वि	मृ.	म.	चि.	मू.	ध.	अश्वि	प.
घ.	३०	०	३०	०	३०	०	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वि. प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
स्प.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
चं.	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

'प्रश्नेन्दोराधानेन्दोर्वा जनुर्मतत्स्पष्टभुक्तघटयादि स्पष्टीकरण सारणीयम्' अत्रोपकरणं स्पष्टचन्द्रः'।

नक्ष.	उ.फा.	वि.	उ.षा.	पू.भा.	कृ.	पुन	उ.फा.	वि.	उ.षा.	पू.भा.	कृ.	पुन.	चि.	मू.	ध.	श्रवि.	मृ.	म.	चि.	मू.	ध.	श्रवि.	मृ.	म.	वि.	उ.षा.	पू.भा.	कृ.	पुन.	उ.फा.
घ.	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	४५	१५	४५	१५	४५	१५
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वि.प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
स्प.	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
चं.	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

नक्ष.	वि.	उ.षा.	पू.भा.	कृ.	पुन.	उ.फा.	मृ.	ध.	श्रवि.	मृ.	म.	चि.	मू.	ध.	श्रवि.	मृ.	म.	चि.	उ.षा.	पू.भा.	कृ.	पुन.	उ.फा.	वि.	उ.षा.	पू.भा.	कृ.	पुन.	उ.फा.	वि.
घ.	४५	१५	४५	१५	४५	१५	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वि. प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
स्प.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११						
चं.	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७						
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०						
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०						

नक्ष.	ध.	श्रवि.	मृ.	म.	चि.	मू.	ध.	श्रवि.	मृ.	म.	चि.	मू.	उ.षा.	कृ.	पुन.	उ.फा.	वि.	उ.षा.	पू.भा.	कृ.	पुन.	उ.फा.	वि.	उ.षा.
घ.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५	४५	१५
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वि. प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

'गतद्वादशांशहीनावशिष्टचन्द्रकलाफलसारणी' 'नक्षत्रादिकम्' 'धनम्' ।

कला	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
न.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
प.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
कला	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
न.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	२७	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
प.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
कला	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
न.	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	५४	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	३	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
प.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
कला	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९
न.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
प.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५६	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
कला	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९
न.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घ.	४८	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
प.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

Jun Gun Aaradhak Trust

'गतद्वादशांशहीनावशिष्टचन्द्रविकलाफलसारणी' 'पलादिकम् धनम्'।

वि. क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
प.	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
वि. प.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६
वि. क.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
प.	२७	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
वि. प.	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

जन्मनक्षत्रादि स्पष्टीकरण सारणी प्रवेश रीतिः--

प्रश्न वा आधानकालीन स्पष्ट चन्द्र मे सारणी के आसन्न न्यून स्पष्ट चन्द्र को हीन करे तब जो शेष अंशादि हों उनको कलादि करे। तदनन्तर आसन्न न्यून स्पष्ट चन्द्र के नीचे लिखे हुए नक्षत्र की संख्या में तथा उसके नीचे लिखे हुए भुक्त घट्यादिमें कला तुल्य कलाकोष्ठ के नक्षत्रादिको युक्त करे और विकलातुल्य विकला कोष्ठ के पलादि को युक्त करे तब जन्म समय का नक्षत्र और उसके स्पष्ट भुक्त घट्यादि होते हैं।

Jun Gun Aaradhak Trust
P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.

--: उदाहरण :—

४।१०।२५।३५ प्रश्न कालीन स्पष्ट चन्द्र है। इस में इस से आसन्न न्यून स्पष्ट चन्द्र ४।१०।०।० सारणी में लिखित चन्द्र को हीन किया तो ०।०।२५।३५ शेष बचे। इन की कला किई तो २५।३५ हुई। सारणी के आसन्न न्यून स्पष्ट चन्द्र ४।१०।०।० के नीचे के अश्विनी नक्षत्र की संख्या १ में और उस के नीचे के भुक्त घट्यादि ०।०।० में शेष कला २५ तुल्य कला कोष्ठ के नक्षत्रादि ०।२२।३० और शेष विकला ३५ तुल्य विकला तुल्य कोष्ठ के ३१।३० पलादि को युक्त किया तो जन्म समय में २३।१।३० जन्म नक्षत्र अश्विनी के स्पष्ट भुक्त घट्यादि हुए।

निषेक प्रसवान्तरालवर्त्ती दिनगण परिज्ञानः—

आधानपौरे यदि पश्यतीन्दौ चरस्थिरद्वन्द्वभगे क्रमेण।
स्त्रीणां सवो ऽद्रीभयमैः कराङ्कयुग्मैर्धराद्रन्तियमैरहोभिः ॥ ८८ ॥

आधान में चर राशि गत चन्द्रमा यदि आधान लग्न को देखता हो तो २८७ दिन में गर्भवती स्त्रियों का प्रसव होता है। स्थिर राशि गत चन्द्रमा आधान लग्न को देखता हो तो २९२ दिन में गर्भवती स्त्रियों का प्रसव होता है। एवं द्विस्वभाव राशिगत चन्द्रमा आधान लग्न को देखता होतो २८१ दिन में गर्भवती स्त्रियों का प्रसव होता है।

काये किमर्के चरभे निषेके मासे प्रसूतिर्दशमे ऽङ्गनायाः
मासीशतुल्ये स्थिरभे तु तस्मिन् द्विमूर्त्तिराशौ रवितुल्यमासे ॥ ८९ ॥

आधान समय में लग्न अथवा सूर्य चरराशि में होतो दशम मास में स्त्री का प्रसव होता है। लग्न वा सूर्य स्थिर राशि में होतो एकादश मास में प्रसव होता है। एवं लग्न वा सूर्य यदि द्विस्वभाव राशि में होतो द्वादश मास में स्त्री का प्रसव होता है।

यदा निषेको ऽह्नि भवेत्तदा दिनर्त्र्यंशे क्रमाद्भूनगविश्वभे ऽर्कभात्।
तमीत्रिभागे सनृपाष्टिघस्रभे गर्भप्रसूतिः क्षितिजाश्रिते ऽत्र भे ॥ ९० ॥

यदि पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न में गर्भाधान होतो क्रमसे आधान कालीन सूर्य के नक्षत्र से १।७।१३ क्षितिजाश्रित नक्षत्र में गर्भवती स्त्री का प्रसव होता है। एवं रात्रि के पूर्व भाग, मध्यभाग और परभाग में गर्भाधान हो तो क्रम से आधान दिनके नक्षत्र में १६।१६।१५ को युक्त करे अर्थात् १७।२३।२७ क्षितिजाश्रित नक्षत्र में गर्भवती स्त्री का प्रसव होता है। परन्तु मतान्तर में सूर्य के नक्षत्र से १७।२१।२८ वें नक्षत्र में रात्रि के त्रिभाग के क्रम से प्रसव होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तीन वर्ष में अथवा बारह वें वर्ष में प्रसव के योगः—

यदा निषेकोदय आर्किभांशे गुणोन्मितेऽब्दे प्रभवेत्प्रसूतिः ।
एवं विधे चन्द्रमसि प्रसूतिः स्याद् द्वादशेऽब्दे प्रसवेऽपि युक्त्या ॥ ९१ ॥

जब निषेक समय के लग्न में शनि की (१०।११) राशि तथा शनि का नवांश हो तो तीन वर्ष में ' प्रस होता है । एवं आधान काल के लग्न में चन्द्रमा की (४) राशि तथा नवांश हो तो बारह वें वर्ष में प्रसव होता है प्रसवकाल में भी युक्ति से उक्त विचार को करना चाहिए ।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे भाषाटीकोदाहरणोपेते निषेकप्रकरणमेकोनविंशमवसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

लग्नेष्टशुद्धिप्रकरणम् प्रारभ्यते ।

आधान लग्न के द्वारा जन्म लग्न परिज्ञानः—

जन्माङ्गं मतिभे निपेकतनुतो वा मान्दिमाद् ग्लौभपाद्
ग्लौभाद्वा गुलिकाच्च मान्दिगभपात्कोणे विलग्नं भवेत् ।
तत्तत्खेचरभागराशित उतास्तर्क्षाणि तेभ्यः सुते
भाग्ये वोदयभं च मान्दिगुलिकाङ्कांशर्क्षतो दैवभे ॥ १ ॥

धीभे ऽङ्गं गुलिकर्क्षतो विधुभपाच्चास्तालयं यत्ततः ॥
कोणे ऽङ्गं विधुभेपतो विपमभे ऽङ्गं वेन्दुभं स्यात्पुरम् ।
मान्दिस्थांशपतिस्थभागगृहतो धीधर्म्मभे ऽङ्गं तनो-
र्यज्जायाभवनं ततः शुभसुते ऽब्जे शुद्धमङ्गं मतम् ॥ २ ॥

आधान कालीन लग्न से पञ्चम स्थान में जो राशि हो वह 'बालक का जन्म लग्न' होता है। मान्दि राशि से वा जन्मकालीन चन्द्र राशि के स्वामी से वा चन्द्र राशि से वा गुलिक राशि से वा मान्दि राशि के स्वामी से पञ्चम वा नवम स्थान में जो राशि हो वह 'बालक की जन्म लग्न राशि' होती है। अथवा उक्त मान्दि प्रभृति यों की नवांश राशि से वा उनकी आक्रान्त राशि से जो सप्तम राशि हों उन से पञ्चम स्थान में वा नवम स्थान में जो राशि हो वह 'बालक की जन्म लग्न राशि होती है। मान्दि अथवा गुलिक की नवांश राशि से नवम वा पञ्चम में जो राशि हो वह 'बालक की जन्म लग्न राशि' होती है। गुलिक राशि से वा चन्द्राक्रान्त राशि के स्वामी से जो सप्तम राशि हो उस से पञ्चम वा नवम में जो राशि हो वह 'जन्म लग्न राशि' होती है। अथवा चन्द्राक्रान्त राशि के स्वामी से विषम राशि में लग्न होता है। अथवा चन्द्राक्रान्त राशि ही लग्न राशि होती है। अथवा मान्दि की नवांश राशि का स्वामी नवांश में जिस राशि का हो उस से पञ्चम वा नवम में जो राशि हो वह 'जन्म लग्न' होता है। अथवा जन्म लग्न से सप्तम स्थान में जो राशि हो उस से नवम वा पञ्चम में चन्द्रमा हो तो 'जन्म लग्न शुद्ध' होता है।

किं वैक्यता प्राणपदाङ्गभागयोः शुद्धं विलग्नं गुलिकादुतेन्दुतः ।
सञ्चिन्तयेद्वीर्य्यविहीनयोर्द्वयोर्लग्नं तदा विद्गुलिकाद्विचिन्तयेत् ॥ ३ ॥

अथवा प्राणपद की राशि और लग्न के नवांश की राशि एक ही हो तो शुद्ध लग्न जानना चाहिए। अथवा गुलिक से वा चन्द्रमा से लग्न शुद्धि का विचार करे। यदि गुलिक तथा चन्द्रमा ये दोनों निर्बल हों तो पण्डित जन गुलिक से लग्न शुद्धि का विचार करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

असोः सुधांशोर्गुलिकाभिदस्य च यो वीर्य्ययुक्तोऽत्र ततो विलग्नभम् ।
विचिन्तयेद्वीर्य्ययुते पुरे वशान्मान्देर्मृगाङ्के सबले विधोः पुरम् ॥ ४ ॥

प्राणपद, चन्द्रमा और गुलिक इन तिनों में जो अधिक बली हो उस से लग्न शुद्धि का विचार करे । यदि लग्न बलवान् हो तो मान्दि से लग्न शुद्धि का विचार करे । एवं चन्द्रमा बलवान् हो तो चन्द्रमा से लग्न शुद्धि का विचार करे ।

असोर्गृहे वाऽसुभतस्त्रिकोणभे वाऽसोः स्मरे वाऽसुभतो यदस्तभम् ।
तस्मात्त्रिकोणाभिधभे जनुस्तनुर्मनूद्भवस्येतरथा पशोर्जनिः ॥ ५ ॥

अथवा प्राणपदराशि वा प्राणपद से त्रिकोण (५।९) राशि वा प्राणपद से सप्तम राशि वा प्राणपद से जो सप्तम राशि हो उस से पञ्चम वा नवम राशि मनुष्य की जन्म लग्न राशि जाननी चाहिए । यदिजन्म लग्न राशि उक्त प्रकार से विपरीत होतो पशु जन्म जानना चाहिए ।

प्राणोदयात्स्वारिपदे पशोर्जनिं सहोदरास्तायगृहेऽण्डजोद्भवम् ।
निमीलनेलातलमंत्रिमन्दिरे कीटोरगाम्भोभवसम्भवं वदेत् ॥ ६ ॥

प्राणपद के लग्न से यदि जन्म लग्न की राशि द्वितीय षष्ठ वा दशम होतो पशु जन्म, तृतीय सप्तम वा एकादश हो तो अण्डज (पक्षी) जन्म एवं अष्टम चतुर्थ वा द्वादश होतो कीट सर्प वा जलजन्यों के जन्म को कहे ।

अर्द्धयामेश तथा दण्डेश साधन रीतिः—

दिनप्रमाणेऽष्टहृतेऽर्द्धयामो लब्धं दिनेऽथाहिहृते रजन्याः ।
मानेऽर्द्धयामः फलमब्धिभक्ते पृथक् पुनस्ते इह दण्डमाने ॥ ७ ॥

दिनमान में ८ से भाग दे लब्ध दिन में घट्यादि अर्द्ध याम समय होता है । एवं रात्रिमान में ८ से भाग दे लब्ध रात्रि में घट्यादि अर्द्धयाम समय होता है । दिन के अर्द्धयाम में और रात्रि के अर्द्धयाम में पृथक् पृथक् ४ से भाग दे लब्ध दिन तथा रात्रि में दण्डमान होता है ।

—: उदाहरण :—

दिनमान ३४।३६ में ८ से भाग दिया तो लब्ध ४।१९।३० दिन में अर्द्धयाम समय हुआ । एवं रात्रिमान २५।२४ में ८ से भाग दिया तो लब्ध ३।१०।३० रात्रि में अर्द्धयाम समय हुआ । ४६।१३ जन्म कालीन इष्ट घट्यादि है । इसमें दिनमान ३४।३६ को हीन किया तो ११।३७ रात्रिगत हुआ । यहा रात्रिका अर्द्धयाम मान ३।१०।३० है अतः चतुर्थ अर्द्धयाम में जन्म हुआ । अर्द्धयाम मान ३।१०।३० को ३ से गुणा तो ९।३१।३० तीन अर्द्धयाम समय हुआ । इसमें दिनमान ३४।३६ को युक्त किया तो ४४।७।३० तृतीय अर्द्धयाम की समाप्ति काल हुआ । इसमें अर्द्धयाम मान ३।१०।३० को युक्त किया तो ४७।१८।० चतुर्थ अर्द्धयाम का समाप्ति काल

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुआ। तृतीय अर्द्धयाम की समाप्ति काल ४४।७।३० को इष्टकाल ४६।१३ में हीन किया तो २।५।३० चतुर्थ याम का भुक्त समय हुआ। अर्द्धयाम ३।१०।३० में ४ से भाग दिया तो ०।४७।३७।३० दण्डमान हुआ। इसको २ से गुणा तो १।३५।१५ द्वितीय दण्ड का समाप्ति काल हुआ। अतः तृतीय दण्ड में जन्म हुआ। यहां सोमवार की रात्रि में जन्म है इसलिए 'शनि' अर्द्धयामेश और 'मङ्गल' दण्डेश हुआ।

अर्द्धयामेष परिज्ञानः—

पष्ठःपष्ठश्चाह्नि यामार्द्धनाथा नित्यं ज्ञेयाः स्वीयवारक्रमेण।
तद्वन्नक्तंपञ्चमःपञ्चमश्च यामार्द्धेशाःस्युःक्रमाद्वारनाथात् ॥ ८ ॥

दिनमे इष्ट दिनके वार के क्रमसे छटे छटे 'अर्द्धयामेश' होते है। एवं रात्रि में इष्ट दिन के वार के क्रमसे पाँचवें पाँचवें 'अर्द्धयामेश' होते है।

—: उदाहरण :—

जन्म समय में चन्द्रवार है और रात्रि के चतुर्थ याम में जन्म है अतः 'चन्द्र' प्रथम यामेश और उस से पाँचवां 'शुक्र' उस से पाँचवा 'मङ्गल' उस से पाँचवां 'शनि' इष्ट समय में अर्द्धयामेश हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'दिनमानाधोऽर्द्धयाममानमिदम्'।

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	०	७	१५	२२
०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

'दिनमानाधोदण्डमानमिदम्'।

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
४५	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	१	३	५
०	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	५२	४५	३७
०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

'दिने रात्रौ वाऽर्द्धयाममितिः'।

दि. रा.	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
अ. या. १	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
	०	७	१५	२२	३०	२७	४५	५२	०	७	१५	२२
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
२	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८
	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१३
	०	२२	४५	७	३०	५२	१५	३७	०	२२	४५	७
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
४	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१५	१५	१६	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२०	२१	२१
	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
६	१८	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२४	२५	२६
	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	२९	३०
	०	५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	५२	४५	३७
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
८	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'दिवाऽर्द्धयामेशाः'।									'नक्तमर्द्धयामेशाः'।								
खण्डानि	आद्यखण्डे	द्वितीयखं.	तृतीयखं.	चतुर्थखं.	पञ्चमखं.	षष्ठखं.	सप्तमखं.	अष्टमखं.	खण्डानि	आद्यखण्डे	द्वितीयखं.	तृतीयखं.	चतुर्थखं.	पञ्चमखं.	षष्ठखं.	सप्तमखं.	अष्टमखं.
वाराः	१	२	३	४	५	६	७	८	वाराः	१	२	३	४	५	६	७	८
र. वा.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	र.	र. वा.	र.	बृ.	चं.	शु.	मं.	श.	बु.	र.
चं. वा.	चं.	श.	बृ.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	चं. वा.	चं.	शु.	मं.	श.	बु.	र.	बृ.	चं.
मं. वा.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	मं. वा.	मं.	श.	बु.	र.	बृ.	शं.	शु.	मं.
बु. वा.	बु	चं.	श.	बृ.	मं.	र.	शु.	बु.	बु. वा.	बु.	र.	बृ.	चं.	शु.	मं.	श.	बु.
बृ. वा.	बृ.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	बृ. वा.	बृ.	चं.	शु.	मं.	श.	बु.	र.	बृ.
शु. वा.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	र.	शु.	शु. वा.	शु.	मं.	श.	बु.	र.	बृ.	चं.	शु.
श. वा.	श.	बृ.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	श. वा.	श.	बु.	र.	बृ.	चं.	शु.	मं.	श.

दिन में दण्डेश परिज्ञानः—

दण्डेशा दिवसे विकर्त्तनतमश्चान्द्रीन्दवोऽथो विधु-
ब्रध्नाहीन्दुसुताः कुजारुणतमःसौम्याः क्रमादर्कतः।
चान्द्रीन्दूष्णकरासुराः सुरगुरुग्लौहेलिसिंहीसुताः
शुक्रारार्कतमांसि मन्दरुधिरादित्याहिनाथा ग्रहाः ॥ ९ ॥

रवि, राहु. बुध और चन्द्र ये रविवार के दिन में दण्डेश हैं। चन्द्र, रवि, राहु और बुध ये चन्द्र वार के दिन में दण्डेश हैं। मङ्गल, रवि राहु और ये मङ्गल वार के दिन में दण्डेश हैं। बुध, चन्द्र, रवि और राहु ये बुधवार के दिनमें दण्डेश हैं। गुरु, चन्द्र, रवि और राहु ये गुरु वार के दिन में दण्डेश हैं। शुक्र, मङ्गल, रवि और राहु ये शुक्रवार के दिन में दण्डेश हैं। शनि, भौम, रवि और राहु ये शनि वार के दिन में दण्डेश हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'दिनदण्डाधिपतयः'।							'दिने प्रथमयामार्द्धे दण्डेशाः'।							'दिने द्वितीययामार्द्धे दण्डेशाः'।						
वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	प्र.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.
२	रा.	र.	र.	चं.	चं.	मं.	मं.	द्वि.	रा.	र.	र.	चं.	चं.	मं.	मं	द्वि.	मं.	मं.	रा.	र.	र.	चं.	चं.
३	बु.	रा.	रा.	र.	र.	र.	र.	तृ.	बु.	रा.	रा.	र.	र.	र.	र.	तृ.	र.	र.	बु.	रा.	रा.	र.	र.
४	चं.	बु.	बु.	रा.	रा.	रा.	रा.	च.	चं.	बु.	बु.	रा.	रा.	रा.	रा.	च.	रा.	रा.	चं.	बु.	बु.	रा.	रा.

'दिने तृतीययामार्द्धे दण्डेशाः'।							'दिने चतुर्थयामार्द्धे दण्डेशाः'।							'दिने पञ्चमयामार्द्धे दण्डेशाः'।						
वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्र.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	प्र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	प्र.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
द्वि.	चं	चं.	मं.	मं.	रा.	र.	र.	द्वि.	र.	र.	चं.	चं.	मं.	मं.	रा.	द्वि.	मं.	रा.	र.	र.	चं.	चं.	म.
तृ.	र.	र.	र.	र.	बु.	रा.	रा.	तृ.	रा.	रा.	र.	र.	र.	र.	बु.	तृ.	र.	बु	रा.	रा.	र.	र.	र.
च.	रा.	रा.	रा.	रा.	चं.	बु.	बु.	च.	बु.	बु.	रा.	रा.	रा.	रा.	चं.	च.	रा.	चं.	बु.	बु.	रा.	रा.	रा.

'दिने षष्ठयामार्द्धे दण्डेशाः'।							'दिने सप्तमयामार्द्धे दण्डेशाः'।							'दिनेऽष्टमयामार्द्धे दण्डेशाः'।						
वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्र.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	प्र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	प्र.	र.	चं	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
द्वि.	चं.	मं.	मं.	रा.	र.	र.	चं.	द्वि.	र.	चं.	चं.	मं.	मं.	रा.	र.	द्वि.	रा.	र.	र.	चं.	चं.	मं.	मं.
तृ.	र.	र.	र.	बु.	रा.	रा.	र.	तृ.	रा.	र.	र.	र.	र.	बु.	रा.	तृ.	बु.	रा.	रा.	र.	र.	र.	र.
च.	रा.	रा.	रा.	चं.	बु.	बु.	रा.	च.	बु.	रा.	रा.	रा.	रा.	चं.	बु.	च.	चं.	बु.	बु.	रा.	रा.	रा.	रा

रात्रि में दण्डेश परिज्ञानः—

दण्डानां पतयो निशीनसितवित्सोमा विधूष्णांशुजे-
ज्यारा रोहितरुग्द्युकृद्भृगुविदो ज्ञेन्द्वर्कभूमंत्रिणः।
वागीशक्षितिनन्दनेनकवयो दैतेयवन्द्येन्दुज-
ग्लौमन्दा मृदुजीवमङ्गलभगा भानोरिमे स्युः क्रमात् ॥ १० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रवि, शुक्र, बुध और चन्द्रमा ये रविवारकी रात्रि में दण्डेश है। चन्द्र, शनि, गुरु और मङ्गल ये चन्द्र वार की रात्रि में दण्डेश है। मङ्गल, रवि, शुक्र और बुधमें मङ्गल वार की रात्रि में दण्डेश है। बुध, चन्द्र, शनि और गुरु ये बुधवार की रात्रि में दण्डेश है। गुरु, भौम, और रवि शुक्र ये गुरु वार की रात्रि में दण्डेश है। शुक्र, बुध, चन्द्र और शनि ये शुक्रवार की रात्रि में दण्डेश है। शनि, गुरु भौम और रवि ये शनि वार की रात्रि में क्रम से दण्डेश है।

'रात्रिदण्डाधिपतयः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
२	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
३	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.
४	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.

'रात्रौ प्रथमयामार्द्धे दण्डेशाः।'

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.
प्र.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
द्वि.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
तृ.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं
च.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.

'रात्रौ द्वितीययामार्द्धे दण्डेशाः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्र.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.
द्वि.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.
तृ.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
च.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.

'रात्रौ तृतीययामार्द्धे दण्डेशाः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
प्र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.
द्वि.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.
तृ.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.
च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.

'रात्रौ चतुर्थयामार्द्धे दण्डेशाः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
प्र.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
द्वि.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.
तृ.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.
च.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.

'रात्रौ पञ्चमयामार्द्धे दण्डेशाः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
प्र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.
द्वि.	र.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.
तृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
च.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.

'रात्रौ षष्ठयामार्द्धे दण्डेशाः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
प्र.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.
द्वि.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.
तृ.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.
च.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.

'रात्रौ सप्तमयामार्द्धे दण्डेशः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
प्र.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.
द्वि	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.
तृ.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.
च.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु

'रात्रावष्टमयामार्द्धे दण्डेशाः'।

वाराः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
प्र.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
द्वि.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
तृ.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.
च.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मतान्तर से दण्डेश परिज्ञानः—

जनुर्भसंख्या निजमानताडिता गजैर्दिवाऽगैर्निशि भाजिता क्रमात् ।
एकादिशेषे त्विह दण्डनायका भानोः खशेषेऽह्नि तमो निशि ध्वजः ॥ ११ ॥
क्वचित्सैके निरेके वा प्रकारद्वितयेन तु ।
यदैक एव दण्डेशः शुद्धमिष्टं खनेरितम् ॥ १२ ॥

जन्म नक्षत्र की संख्या की अपनी संख्या से गुणे अर्थात् जन्म नक्षत्र की संख्या का वर्ग करे । यदि दिन का जन्म हो तो वर्ग में ८ से भाग दे और रात्रि का जन्म हो तो ७ से भाग दे शेष सूर्य से दण्डेश होते हैं । दिन में शून्य शेष हो तो राहु दण्डेश होता है और रात्रि में शून्य शेष हो तो राहु दण्डेश होता है । उक्त विधि से और वक्ष्यमाण विधि से एक ही दण्डेश न मिले तो उक्त विधि से मिले दण्डेश में एक युक्त करे वा एक हीन करे जब दोनों रीतियों से एक ही दण्डेश मिले तब शुद्ध इष्ट होता है । इस प्रकार खना (वङ्गदेशवासी) आचार्य कहते हैं ।

—: उदाहरण :—

मूल जन्मनक्षत्र की संख्या १९ को १९ से गुणा तो ३६१ हुए इन को रात्रि जन्म होने के कारण ७ से तष्ट किया तो ४ शेष बचे । रवि से गिना तो बुध दण्डेश हुआ ।

पुनः प्रकारान्तर से दण्डेश परिज्ञानः—

संख्या जनुर्भस्य हता कराभ्यां विश्वान्विता भानुगृहान्विता च ।
समुद्रभक्तैकमुखावशेषे यामार्द्धदण्डाधिपतिः क्रमाद्वा ॥ १३ ॥
अत्रापि सैकं निरेकं वा क्वचित्कार्य्यम् ।

जन्म नक्षत्र की संख्या को २ से गुणे तब जो गुणन फल हो उस में १३ युक्त करे । तदनन्तर वैशाखादि सौर मास संख्या को युक्तकर के ४ से तष्ट करे तब १ शेष से यामार्द्ध का प्रथम दण्ड, २ शेष से यामार्द्ध द्वितीय दण्ड, ३ शेष से यामार्द्ध का तृतीय दण्ड एवं शून्य शेष से यामार्द्ध का चतुर्थ दण्ड होता है । कहीं दण्डेश में १ युक्त किंवा १ हीन करने से शुद्ध दण्डेश होता है ।

—: उदाहरण :—

जन्म नक्षत्र मूल की संख्या १९ को २ से गुणा तो ३८ हुए इन में १३ को युक्त किया तो ५१ हुए इन में ज्येष्ठ सौर मास की संख्या २ को युक्त किया तो ५३ हुए इन को ४ से तष्ट किया तो १ शेष बचा अतः याम के प्रथम दण्ड में जन्म हुआ । किन्तु पूर्वोक्त विधि से याम के चतुर्थ दण्ड में जन्म है इस लिए शेष संख्या १ में १ को हीन किया तो ० शेष बचा । शेष शून्य होने के कारण याम के चतुर्थ दण्ड में जन्म हुआ । यहां दोनों रीतियों से ' बुध ' ही दण्डेश हुआ अतः शुद्ध इष्ट हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मतान्तर से शुद्धि परिज्ञानः —

वेदघ्ना घटिकास्तथा विघटिका भानूदयाद्वोविह-
च्छेपं जन्मभमश्विभात्त्रिनवके वाज्यादिभूमूलतः ।
किं जन्मेष्टघटीपलानि पवनश्रोत्राक्षिहृच्छेपतो
घस्रा व्योमगुणाः समीरनिगमा व्योमर्त्तवश्चेष्वगाः ॥ १४ ॥

शुद्धास्तदा ता विघटीर्नरस्त्रीपुंस्त्र्यादिभेदः क्रमतः प्रवेद्यः ।
लग्ने तदंशे विषमे नृजन्म चेद्योपितोऽङ्गे समराशिभागे ॥ १५ ॥

सूर्योदय से इष्ट समय पर्यन्त जितनी घटी तथा पल हों उन को ४ से गुणकर नौ से भाग दे तब जो शेष बचे वह अश्विन्यादि मघादि वा मूलादि जन्म नक्षत्र होता है । अर्थात् अश्विन्यादि ९ नक्षत्रों में जन्म हो तो अश्विनी से शेष संख्या पर्यन्त गिने, मघादि नौ नक्षत्रों में जन्म हो तो मघा से शेष संख्या पर्यन्त गिने एवं मूल से नौ नक्षत्र में जन्म हो तो मूल से शेष संख्या पर्यन्त गिने । जब शेष तुल्य जन्म नक्षत्र हो तब शुद्ध इष्टकाल होता है । यदि उक्त क्रिया से जन्म नक्षत्र न मिले तो इष्ट काल की पलों मे १५।३० वा ४५ पल युक्त वा हीन करे जिससे जन्म नक्षत्र शुद्ध मिले वैसी क्रिया करे ।

प्रथम खण्डः—		द्वितीय खण्डः—		तृतीय खण्डः—	
शे.	न.	शे.	न.	शे.	न.
१=१	अश्विनी	१=१०	मघा	१=१९	मूल
२=२	भरणी	२=११	पूर्वाफाल्गुनी	२=२०	पूर्वाषाढा
३=३	कृत्तिका	३=१२	उत्तराफाल्गुनी	३=२१	उत्तराषाढा
४=४	रोहिणी	४=१३	हस्त	४=२२	श्रवण
५=५	मृगशिरा	५=१४	चित्रा	५=२३	धनिष्ठा
६=६	आर्द्रा	६=१५	स्वाती	६=२४	शतभिषा
७=७	पुनर्वसु	७=१६	विशाखा	७=२५	पूर्वाभाद्रपदा
८=८	पुष्य	८=१७	अनुराधा	८=२६	उत्तराभाद्रपदा
९=९	आश्लेषा	९=१८	ज्येष्ठा	९=२७	रेवती

अथवा जन्म कालीन षष्ट घटी को ६० से गुणकर पलों को युक्त करे तब वह पलीकृत इष्ट काल होता है । तदनन्तर उस पलीकृत इष्ट कालमें २२५ से भाग दे तब जो शेष बचे उन में १५, ३०, ४५, ६०, ७५ इन खण्डाङ्कों को क्रम से हीन करे तब खण्डाङ्क न घट सके उस से पुरुष स्त्री का जन्म जानना चाहिए अर्थात् १५ न घट सके तो पुरुष, ३० न घट सके तो स्त्री, ४५ न घट सके तो पुरुष, ६० न घट सके तो स्त्री एवं ७५ न घट सके तो पुरुष का जन्म जानना चाहिए । यदि उक्त क्रिया करने पर पुरुष स्त्री का जन्म यथार्थ न मिले तो इष्ट काल की पलों में इष्ट खण्ड से कुछ न्यून पलों को यथा सम्भव हानि वा वृद्धि करे जिस से पुरुष तथा स्त्री का जन्म यथार्थ मिल जाय तब वह शुद्ध इष्ट काल जानना चाहिए । अथवा लग्न विषम राशि तथा विषम राशि का नवांश हो तो पुरुष जन्म होता है । यदि लग्न में समराशि तथा सम राशि का नवांश हो तो स्त्री जन्म कहे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्त्रीपुरुष जन्म बोधचक्रम्

खण्डाङ्काः—	१५,	३०,	४५,	६०,	७५,
	पुरुषः,	स्त्री,	पुरुषः,	स्त्री,	पुरुषः,
योगाङ्काः—	१५,	४५,	९०,	१५०,	२२५ शोधनार्हाः ।

—: उदाहरण :—

जन्मेष्ट घटी ३१ पल १५ को ४ से गुणा तो १२५ हुए इन में ९ से भाग दिया तो ८ शेष बचे । यहां मघादि ९ नक्षत्रों में जन्म है अतः मघा से शेष संख्या ८ पर्यन्त गिना तो जन्म नक्षत्र अनुराधा हुआ ।

अथवा

जन्मेष्ट घटी ५ पल ४४ को ४ से गुणा तो २२।५६ हुए इन में ९ से भाग दिया तो ४ बचे । यहां जन्म नक्षत्र उत्तराषाढा है अतः मूल से शेष संख्या ४ पर्यन्त गिना तो श्रवण नक्षत्र हुवा । किन्तु जन्म नक्षत्र उत्तराषाढा है इसलिए इष्ट घटी ५, पल ४४ में एक नक्षत्र अधिक होने के कारण एक नक्षत्र के १५ पलो को हीन किया तो ५ घटी २९ पल ' शुद्ध इष्ट काल ' हुआ ।

यहां शुद्धेष्ट घटी ५; पल २९ को पलीकृत किया तो ३२९ पल हुए । इन में २२५ से भाग दिया तो १०४ शेष बचे। इन में १५, ३०, ४५ इनके योग ९० को हीन किया तो १४ शेष बचे इन में अग्र खण्ड ६० न घट सका अतः स्त्री का जन्म हुआ ।

अथवा इष्ट काल ४६।१३ की घटी ४६ को ६० से गुणा तो २७६० हुए इन में १३ पल युक्त किये तो २७७३ हुए । इन में २२५ से भाग दिया तो ७३ शेष बचे । इन में १५ हीन किये तो ५८ शेष बचे । पुनः इन में ३० हीन किये तो २८ शेष बचे । इन में अग्र खण्ड ४५ न घट सका इसलिए पुरुष जन्म हुआ ।

दिन में पुरुष जन्म परिज्ञानः—

दोस्तर्कपंक्तीन्द्रपुराणजातयस्तर्काश्विनो ऽर्काद् घटिकाः क्रमाद्दिने ।
घटिषु चैतासु नृजन्म यत्तदाङ्गं तन्नृभं स्त्री पुरुषस्ततः परे ॥ १६ ॥

रविवार के दिन में २ घटी, चन्द्रवार के दिन में ६ घटी, भौमवार के दिन में १० घटी, बुधवार के दिन में १४ घटी, गुरुवार के दिन में १८ घटी, शुक्रवार के दिन में २२ घटी एवं शनिवार के दिन में २६ घटी के तुल्य इष्ट घटी हों तो उक्त दिनमेंघटि यों में पुरुष जन्म होता है ।

—: उदाहरण :—

किसी कन्या का जन्म संवत् १९९० भाद्रपद २९ प्रविष्ट शनिवार को हुआ था। स्पष्ट सूर्य ४।२८।० है। इस कन्या के जन्म में सन्देह यह है सिंह है या कन्या ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उदय लग्न अर्थात् सूर्य के सिंह राशि में २८ अंश बीत चुके। अतः उदय लग्न सिंह के भोग्य मान ०।२३ १८।३२ में सिंह के आगामी कन्या तुला वृश्चिक धनु के मान का योग किया तो २३।४।३०।३२ घट्यादि हुए। इन में मकर के मान ४।१६।१८ को युक्त किया तो २७।२०।४८।३२ मकर का समाप्ति काल हुआ। जन्म दिन शनि है। उस दिन २६ घटीपर पुरुष जन्म होता है और उस दिन मकर लग्न उपर्युक्त गणित से २३।४। ३०।३२ घट्यादि के बाद २७।२०।४८।३२ घट्यादि के भीतर है इस लिए इष्ट दिन में मकर पुरुष राशि है। मकर जब पुरुष है, तो विपरीत गणना से धनु स्त्री वृश्चिक पुरुष, तुला स्त्री, कन्या पुरुष और सिंह स्त्री राशि होगी। सिंह स्त्री राशि होने के कारण इस कन्या का जन्म सिंह लग्न में हुआ। इस से यह सिद्ध हुआ कि इस कन्या का जन्म लग्न कन्या नहीं है बल्कि सिंह लग्न है।

पुरुष तथा स्त्री जन्मपत्री परिज्ञानः—

जन्माङ्गभौमाहिपतङ्गभानां योगो विधेयः स कृशानुभक्तः।
नृजन्मपत्री विषमाङ्कशेषे समाङ्कशेषे प्रमदाजनस्य ॥ १७ ॥

जन्म लग्न राशि, मङ्गल, राहु और सूर्य इन की आक्रान्त राशियों की संख्याओं का योग करके ३ से भाग दे यदि एक वा शून्य शेष बचे तो पुरुष की जन्म पत्री और २ शेष बचे तो स्त्री की जन्मपत्री जाननी चाहिए।

किं वोरगादित्यविलग्नभानां कार्या युतिः सा तुरगैर्विभक्ता।
ओजाङ्कशेषे पुरुषस्य पत्री शेषे समाङ्के हरिणेक्षणायाः ॥ १८ ॥

अथवा राहु की तथा सूर्य की आक्रान्त राशि और लग्न की राशि इन तीनों का योग करके ७ से भाग दे यदि शेष संख्या एक तीन पाँच वा शून्य बचे तो पुरुष की जन्मपत्री और शेष संख्या दो चार वा छः बचे तो स्त्री की जन्मपत्री जाननी चाहिए।

जन्मलग्न तथा जन्म चन्द्रमा से इष्ट शोधन रीतिः—

जन्माङ्गलिप्ता विहृताः खखेभैः फलं निषेकस्य गतं भपूर्वम्।
प्राग् जन्मनो वासरतोऽङ्कमासे तस्मिन्नुडौ तद्गतनाडिकान्ते ॥ १९ ॥
प्रसाधयेत्स्पष्टरविं तदेष्यकालो जनुःशीतकरेतकालः।
योगस्तयोस्तद्विवरर्क्षमानविनाडिकाभिः स युतो विधेयः ॥ २० ॥
तदा निषेकस्य भवेत्तदिष्टं तस्माद्विलग्नं जननेन्दुतुल्यम्।
तदन्तरं यत्तनुमाननिघ्नं घट्यादि खाभ्रेभकुभाजितं तत् ॥ २१ ॥

जन्म कालीन स्पष्ट लग्न की राशि को ३० से गुण कर अंश युक्त करे तब जो संख्या हो उस को ६० से गुण कर जो गुणन फल हो उस में कला युक्त करे तब 'कला पिण्ड' होता है। तदनन्तर उस कला पिण्ड में ८०० से भाग दे लब्ध आधान (गर्भ स्थिति) काल के गत नक्षत्रादि होता है अर्थात् गतनक्षत्र और वर्त्तमान नक्षत्र के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भुक्त घट्यादि होते हैं। तदनन्तर जन्म दिन से ९ मास पूर्व, पूर्वागत वर्त्तमान नक्षत्र जिस दिन मिले वह निषेक का दिन और उस वर्त्तमान नक्षत्र की पूर्वागत भुक्त घटियों का अन्त जिस समय हो वह निषेक का मध्यमेष्ट काल होता है। तदनन्तर उस निषेक के मध्यमेष्ट समय का स्पष्ट सूर्य साध कर उस से भोग्य काल को साधे। एवं जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्र को निषेककाल का लग्न मान कर उस से भुक्त काल को साधे तब उन दोनों भुक्त और भोग्य काल का योग करके उस में निषेक कालीन सायनसूर्य की राशि से आगे और जन्म कालीन सायन चन्द्र की राशि के पीछे जितनी राशि हों उन के पलात्मक स्वोदय मानों को युक्त करे तब जो पल हों उन में ६० से भाग दे लब्ध निषेककालीन मध्यम इष्ट घट्यादि होते हैं। उस मध्यम इष्ट घट्यादि से स्पष्ट लग्न को साधे तब वह निषेक के मध्यमेष्टकाल का लग्न होता है। उस मध्यमेष्टकालीन लग्न के राश्यादि और जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्र के राश्यादि आसन्न होते हैं। उस मध्यमेष्ट कालीन लग्न के राश्यादि का और जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्र के राश्यादि का अन्तर करे तब जो शेष अंशादि हों उन को लग्न के स्वोदय मान से गुण कर १८०० से भाग दे लब्ध घट्यादि काल होता है।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट लग्न १।११।४९।४५ की राशि १ को ३० से गुणा तो ३० हुए। इन में ११ अंश युक्त किये तो ४१ हुए। इन को ६० से गुणा तो २४६० हुए। इन में ४९ कला को युक्त किया तो २५०९।४५ हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध ३ 'गत नक्षत्र' हुआ। शेष कलादि १०९।४५ को ६० से गुणा तो ६५८५ हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध ८ घटी हुई। शेष १८५ को ६० से गुणा तो १११०० हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध १४ पल हुए। इस प्रकार मध्यम इष्ट काल में 'कृत्तिका गत नक्षत्र' हुआ और ८ घटी १४ पल वर्त्तमान रोहिणी नक्षत्र का भुक्त काल हुआ। यहां वैशाख कृष्णाष्टमी चन्द्रवार ५ प्रविष्ट का जन्म है इसलिए वैशाख से पूर्व नवम मास में अर्थात् संवत १९८९ श्रावण कृष्ण एकादशी गुरुवार १४ प्रविष्ट में पूर्वागत वर्त्तमान रोहिणी नक्षत्र मिला अतः श्रावण १४ प्रविष्ट में पूर्वागत वर्त्तमान रोहिणी नक्षत्र के ८ घटी १४ पल भुक्त होने पर निषेक का मध्यम इष्ट काल हुआ। तदनन्तर निषेक दिन के प्रातः काल में स्पष्ट सूर्य ३।११।४६।२९ गति ५७।२० है। एवं स्पष्ट चन्द्र १।८।३८।३८ गति ७२३।१२ है। प्रातःकालीन स्पष्ट चन्द्र १।८।३८।३८ का २३१८।३८ कलापिण्ड हुआ। इस में ८०० से भाग दिया तो लब्ध २ 'गत नक्षत्र' हुआ। शेष ७१८।३८ को ६० से गुणा तो ४३११८ हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध ५३ घटी ५४ पल वर्त्तमान कृत्तिका नक्षत्र का भुक्त हुआ। इस को निषेक कालीन रोहिणी नक्षत्र के भुक्त घट्यादि ८।१४ में हीन किया तो १४ घटी २० पल निषेक का मध्यम इष्ट काल हुआ। इस मध्यम इष्ट घट्यादि १४।२० से निषेक दिन के प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य ३।११।४६।२९ को चालित किया तो ३।१२।०।११ निषेक समय में मध्यमेष्ट कालीन स्पष्ट सूर्य हुआ। इस में अयनांश २२।५३।४५ को युक्त किया तो ४।४।५३।५६ 'सायन सूर्य' हुआ। 'तत्कालार्कःसायनः' इत्यादि रीति से सायन सूर्य का भोग्य काल साधन किया तो २९९।२८।२४ पलादि हुए। एवं जन्म कालीन चन्द्र ९।३।२७।२० को निषेक लग्न मान कर इस में अयनांश २२।५३।४५ को युक्त किया तो ९।२६।२१।५ सायन कल्पित लग्न हुआ। इससे 'तत्कालार्कः सायनः' इत्यादि रीतिसे भुक्त काल साधन किया तो २६२।९।९ पलादि हुए। इन में सूर्य के २९९।२८।२४ पलादि भोग्य काल और सायन सूर्य की सिंह राशि से आगे और कल्पित लग्न की मकर राशि के पीछे की राशियों के अर्थात् सूर्य और कल्पित लग्न के अन्तराल (मध्य) की कन्या राशि का स्वोदय ३५१।४० तुला स्वोदय ३५१।४० वृश्चिक स्वोदय ३५७।५६ धनुः स्वोदय ३४७।३३ के योग १४०८।४९।० को युक्त किया तो १९७०।२६।३३ पलादि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ३२ घटी ५० पल निषेक का मध्यमेष्ट काल हुआ। इस मध्यमेष्ट घट्यादि ३२।५० से निषेक दिन के प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य ३।११।४६।२९ को चालित किया तो ३।१२।१८।१६ निषेक का मध्यमेष्ट कालीन स्पष्ट सूर्य हुआ। इस से और निषेककाल के मध्यमेष्ट घट्यादि ३२।५० से लग्न साधन किया तो ९।३ ४६।१७ निषेक का मध्यमेष्टकालीन लग्न हुआ। इस के राश्यादि और जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्र ९।३।२७।२० के राश्यादि आसन्न हैं अतः दोनों का अन्तर किया तो ०।०।१८।५७ शेष राश्यादि हुए। इन के अंशादि ०।१८।५७ को मकर लग्न के स्वोदयमान २९८।२७ से गुणा तो ९४।१५।३८ घट्यादि हुए। इन में १८०० से भाग दिया तो लब्ध ० घटी ३ पल हुए।

निषेकलग्नं जनिचन्द्रतोऽल्पेऽधिके धनर्णं क्रमतो विधेयम्।
इष्टे निषेकस्य ततः सुधाङ्गः साध्यः स उत्पत्तितनूसमानः ॥ २२ ॥
तद्भुक्तकालो जननेनभोग्यो योगस्तयोर्मध्यगमूर्त्तिमानैः।
युक्तस्तदा स्याज्जननेष्टकालस्तस्मात्प्रसाध्यौ स्फुटलग्नचन्द्रौ ॥ २३ ॥
तं चन्द्रमाधानघनं प्रकल्प्य ततो निषेकार्कत इष्टकालः।
निषेकलग्नं जनिचन्द्रतुल्यं निषेकचन्द्रो जनुरङ्गतुल्यः ॥ २४ ॥
निषेकसूर्यौ समयोद्भवौ तौ चाल्यौ तदन्तर्घटिकाननेन।
साम्यं यथा स्यादसकृत्तथैव विधेयमुक्ता जननेष्टशुद्धिः ॥ २५ ॥

जन्म कालीन चन्द्र के राश्यादि से यदि निषेकलग्न के राश्यादि न्यून (अल्प) हों तो निषेक के मध्यमेष्ट-काल में पूर्वागत घट्यादि को धन करे और जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्र के राश्यादि से निषेक लग्न के राश्यादि अधिक हों तो निषेक के मध्यमेष्ट काल में पूर्वागत घट्यादि को ऋण (हीन) करे तब वह निषेक कालिक मध्यमेष्ट होता है। तदनन्तर उस निषेक कालिक मध्यम इष्ट घट्यादि से निषेक दिन के प्रातःकालीक स्पष्ट चन्द्रमा को चालित करे तब उस के राश्यादि जन्म लग्न के राश्यादि के आसन्न होते हैं। उस मध्यम इष्ट कालिक चन्द्रमा को जन्म लग्न मान कर उस से भुक्त काल को साधे, तब उस में जन्म कालीन सूर्य के भोग्य काल को युक्त करके जो पलादि हों उन में सायन सूर्य और सायन कल्पित लग्न के मध्य गत राशियों के पलात्मक स्वोदयों को युक्त करे तब पलादि होते हैं। तदनन्तर उन पलादियों में ६० से भाग दे। लब्ध जन्म समय का मध्यम इष्ट काल होता है। उस जन्म कालिक मध्यमेष्ट समय के स्पष्ट लग्न और स्पष्ट चन्द्रमा को साधे। तदनन्तर उस स्पष्ट चन्द्र को आधान लग्न मान कर उस से भुक्त काल को साधे। आधान कालीन सूर्य के भोग्य काल में उस भुक्त काल को युक्त करे तब जो पलादि हों उन में आधान कालीन सूर्य और कल्पित लग्न के अन्तराल (मध्य) वर्ती स्वोदयों को युक्त करके ६० से भाग दे लब्ध निषेक समय का मध्यम इष्टकाल होता है। उस मध्यम इष्ट से लग्न को साधे तब उस लग्न के राश्यादि जन्म चन्द्रमा के राश्यादि के आसन्न होते हैं। एवं उस निषेक कालीक मध्यम इष्ट समय के स्पष्ट चन्द्रमा को साधकर तब उस के राश्यादि जन्म लग्न के राश्यादि के आसन्न होते हैं। निषेक कालिक लग्न और जन्म कालिक चन्द्रमा से उन की अन्तराल वर्ती घटियों को साधकर उन से निषेक कालिक लग्न और जन्म कालिक चन्द्रमा को चालित करे। एवं जन्म कालिक लग्न और निषेक कालिक चन्द्रमा से उन की अन्तरालवर्ती घटियों को साधकर उन से जन्म कालिक लग्न और निषेक कालिक चन्द्रमा को चालित करे तब वे स्पष्ट होते हैं। तदनन्तर उस स्पष्ट लग्न और स्पष्ट चन्द्रमा से जन्म लग्न और निषेक चन्द्रमा एवं निषेक लग्न और जन्म चन्द्रमा के राश्यादियों की समता होने तक उक्त क्रिया को बार बार करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

९।३।२७।२० जन्म कालिक स्पष्ट चन्द्र है इससे ९।३।४६।१७ निषेक कालीन लग्न अधिक है अतः निषेक कालिक मध्यम इष्ट घट्यादि ३२।५० में पूर्वागत घट्यादि ०।३ को ऋण (हीन) किया तो ३२ घटी ४७ पल निषेक का मध्यम इष्ट काल हुआ। तदनन्तर आधान के मध्यमेष्ट समय ३२।४७ में स्पष्ट चन्द्रमा का साधन किया तो १।१५।१४।३७ मध्यम आधान कालिक स्पष्ट चन्द्र हुआ। मध्यम आधान कालिक स्पष्ट चन्द्र १।१५।१४।३७ के राश्यादि और जन्म लग्न १।११।४९।४५ के राश्यादि ये दोनों आसन्न हैं। मध्यम आधान कालिक स्पष्ट चन्द्र १।१५।१४।३७ को जन्म लग्न मान कर इसमें जन्म कालिक अयनांश २२।५४।३६ को युक्त किया तो २।८।९।१३ सायन कल्पित लग्न हुआ। इससे भुक्त काल साधन किया तो ८१।६।५३ पलादि हुए। इनमें जन्म कालिक स्पष्ट सूर्य ०।३।४४।१८ के भोग्य काल २२।४९।४३ को युक्त किया तो १०३।५६।३६ हुए। इनमें सायन सूर्य की मेष राशि से आगे और सायन कल्पित लग्न की मिथुन राशि के पीछे की वृष राशि के स्वोदय २४०।४ को युक्त किया तो ३४४।०।३६ पलादि हुए। इनमें ६० से भाग दिया तो लब्ध ५ घटी ४४ पल जन्म कालिक मध्यम इष्ट काल हुआ। इस से जन्म दिन के प्रातः कालिक स्पष्ट सूर्य ९।३।३९।२२ को चालित किया तो ०।३।४४।५१ जन्म कालीन मध्यम इष्ट समय का स्पष्ट सूर्य हुआ। इस से और जन्म कालिक मध्यमेष्ट ५।४४ से लग्नानयन विधि द्वारा लग्न साधन किया तो १।१५।१४।५६ जन्म कालिक मध्यमेष्ट समय का स्पष्ट लग्न हुआ। एवं जन्म दिन के प्रातः कालिक स्पष्ट चन्द्र ९।२।१५।२२ को मध्यम जन्मेष्ट घट्यादि ५।४५ से चालित किया तो ९।३।३५।६ जन्म कालिक मध्यम इष्ट समय में स्पष्ट चन्द्र हुआ। इस स्पष्ट चन्द्र ९।३।३५।६ को आधान लग्न मानकर इस से भुक्त काल साधन किया तो २६३।२६।२५ पलादि हुए। इन में आधान कालिक मध्यमेष्ट घट्यादि ३२।४७ से चालित सूर्य ३।१२।१८।१३ के भोग्य काल २९५।५३।३० को युक्त किया तो ५५९।१९।५५ पलादि हुए। इन में सायन सूर्य की सिंह राशि से आगे की राशियों के और कल्पित सायन लग्न की मकर राशि के पीछे की राशियों के स्वोदय अर्थात् कन्या, तुला, वृश्चिक और धनु के स्वोदयों के योग १४०८।४९।० को युक्त किया तो १९।६८।८।४५ पलादि हुए। इन में ६० से भाग दिया तो ३२ घटी ४८ पल निषेक का मध्यमेष्ट काल हुआ। इस से निषेक दिन के प्रातःकालिक स्पष्ट सूर्य ३।११।४६।२९ को चालित किया तो ३।१२।१८।१४ निषेक के मध्यमेष्ट समय का स्पष्ट सूर्य हुआ। एवं निषेक कालिक मध्यमेष्ट घट्यादि ३२।४८ से निषेक दिन के प्रातःकालिक स्पष्ट चन्द्रमा को चालित किया तो १।१५।१४।४९ निषेक के मध्यमेष्ट समय का स्पष्ट चन्द्र हुआ। इस निषेक के मध्यमेष्ट कालिक स्पष्ट चन्द्रमा १।१५।१४।४९ का और जन्म समय के मध्यमेष्ट कालिक लग्न १।१५।१४।४९ के राश्यादि का अन्तर किया तो ०।०।०।७ शेष बचे। इस के अंशादि ०।०।७ को वृष के स्वोदय २४०।४ से गुणा तो ०।२८।० हुए। इन में १८०० से भाग दिया तो लब्ध ० घटी ० पल हुआ। निषेक चन्द्रमा के राश्यादि से जन्म लग्न के राश्यादि अधिक होने के कारण पूर्वागत ० घटी ० पल को मध्यम जन्मेष्ट घट्यादि ५।४४ में ऋण किया तो ५।४४ जन्मकालिक मध्यमेष्ट काल हुआ। किन्तु यहां जन्म लग्न १।१५।१४।५६ और निषेक कालिक चन्द्रमा १।१५।१४।४९ के राश्यादि आसन्न हैं अतः ५ घटी ४४ पल जन्म कालिक शुद्ध इष्ट काल हुआ। एवं ३२ घटी ४८ पल आधान कालिक शुद्ध इष्ट काल हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्वागत गणित का सार निम्न लिखित प्रकार से जानना चाहिए—

संवत् १९८९ श्रावण कृष्ण एकादशी गुरुवार तदनुसार श्रावण १४ प्रविष्ट निषेक कालिक शुद्ध इष्ट घटी ३२ पल ४८ में स्पष्ट सूर्यादि निम्न लिखित है।

स्प. सू.	स्प. चं	स्प. ल.
३	१	९
१२	१५	३
१८	१४	३४
१४	४९	११

संवत् १९९० वैशाख कृष्णाष्टमी चन्द्रवार तदनुसार वैशाख ५ प्रविष्ट जन्म कालिक शुद्ध इष्ट घटी ५ पल ४४ में स्पष्ट सूर्यादि निम्न लिखित है।

स्पष्ट सूर्य,	स्पष्ट चन्द्र,	स्पष्ट लग्न
०	९	१
३	३	१५
४४	३५	१४
५१	६	५६

प्रकारान्तरसे आधान लग्न और जन्मचन्द्र द्वारा इष्ट शोधन रीतिः—

आधानर्क्षोर्जन्मलग्नेन तुल्य आधानाङ्गं जन्मतुङ्गीशतुल्यम् ।
शुद्धः कालो ज्ञेय एवं तयोश्चेत्साम्याभावे तत्र कार्य्योऽनुपातः ॥ २६ ॥

आधान चन्द्र और जन्म लग्न तुल्य होते हैं। एवं आधान लग्न और जन्म चन्द्रमा तुल्य होते हैं। इस प्रकार शुद्ध इष्ट काल जानना चाहिए। जहां आधान चन्द्र और जन्म लग्न एवं आधान लग्न और जन्म चन्द्र के राश्यादि की समता न हो वहां अनुपात (त्रैराशिक) विधि से आधान चन्द्रादियों की समता करे तब शुद्ध इष्ट काल जानना चाहिए।

—: उदाहरण :—

निषेकचन्द्र ८।२८।१९।५६ है। एवं जन्म लग्न ८।२९।४३।५१ है। इन दोनों के अंशादि समान नहीं हैं अतः दोनों का अन्तर किया तो १।२३।५५ अंशादि हुए। इन को जन्म लग्न धनु के स्वोदय ३३६ से गुण कर ६० से भाग दिया तो लब्ध ०।१५।४० घट्यादि हुए। इन को जन्मेष्ट घट्यादि ४८।५९ में हीन किया तो ४८।४३।२० जन्म समय का घट्यादि मध्यम इष्ट काल हुआ। इस से स्पष्ट लग्नादिका साधन किया तो ८।२८।२०।१९ स्पष्ट लग्न, ०।२२।५।५३ स्पष्ट चन्द्र, एवं ११।१७।२८।९ स्पष्ट सूर्य हुआ।

जन्म चन्द्र ०।२२।५।५३ है और निषेकलग्न ०।२२।३६।२६ है। इन दोनों के अंशादि समान नहीं हैं अतः दोनों का अन्तर किया तो ०।३०।३३ अंशादि हुए। इन को मेषोदय २३७ से गुणकर ६० से भाग दिया तो लब्ध ०।४।१।३५ घट्यादि हुए। यहां निषेक लग्न से जन्म चन्द्र अधिक है इस लिए निषेक कालीन इष्ट घट्यादि ४७।३८।२७।४५ में लब्ध ०।४।१।३५ घट्यादि को हीन किया तो ४७।३४।२६।७ निषेक कालीन मध्यमेष्ट काल हुआ। इस से स्पष्ट सूर्यादि चालित किये तो ३।४१६।८ स्पष्ट सूर्य, ८।२८।१९।० स्पष्ट चन्द्र एवं ०।२२।९।२६ स्पष्ट लग्न हुआ।

पुनः निषेक कालीन चन्द्र ८।२८।१९।० के राश्यादि का और जन्म कालीन लग्न ८।२८।२०।१९ के राश्यादि का अन्तर किया तो ०।१।१९ अंशादि शेष बचे। इन को धनु लग्न के स्वोदय ३३६ से गुणकर ६० से भाग दिया तो लब्ध ०।०।१४।४५ घट्यादि हुए। यहां निषेक चन्द्र से जन्म लग्न अधिक है इस लिए जन्म समय के मध्यम इष्ट घट्यादि ४८।४३।२०।० में लब्ध ०।०।१४।४५ को हीन किया तो ४८।४३।५।१५

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जन्म समय का मध्यम इष्ट काल हुआ। इस से चालित स्पष्ट सूर्य ११।१७।२८।९ स्पष्ट चन्द्र ०।२२।५।९ स्पष्ट लग्न ८।२८।१८।४५ इन को पुनः पुनः संस्कारित किया तो ०।२२।५।९ जन्म चन्द्र, ०।२२।५।९ निषेक लग्न ये दोनों समान विकलादि होने से ४८ घटी ४३ पल शुद्ध जन्मेष्टकाल हुआ।

आधान काल और जन्म काल के अन्तरालवर्ती दिनगण साधन रीतिः—

लग्नप्यांशा ग्लौगतांशैः खसिद्धैः संयुक्ता ये ते जनौ जन्मनश्च।
आधानस्यान्तर्गता वासराः स्युरेवं प्रोक्तं होरिकैरिष्टशुद्ध्यै ॥ २७ ॥

जन्म समय में जन्म लग्न के जितने भोग्यांश हों उन में जन्म कालीन चन्द्रमा के भुक्तांशों को युक्त कर के जो संख्या हो उस में २४० दिन को युक्त करे तब आधान और जन्म काल के अन्तरालवर्ती दिन होते हैं। इस प्रकार इष्ट शुद्धि के लिए होराशास्त्रवेत्ताओं ने दिनगणानयन विधि कही है।

—: उदाहरणः —

१।१५।१४।५६ जन्म लग्न है। इस के अंशादि १५।१४।५६ को ३०।०।० में हीन किया तो १४।४५।४ जन्म लग्न के भोग्यांशादि हुए। इन में जन्म चन्द्र ९।३।३५।६ के भुक्तांश ३।३५।६ को युक्त किया तो १८।२०।१० हुए। इन में २४० दिन युक्त किये तो २५८ आधान और जन्म काल का अन्तरालवर्ती दिनगण हुआ।

प्रकारान्तर से दिनगणानयन रीतिः—

विन्द्वङ्गलिप्ताः स्वयुगेभभागाढ्यास्ता गुणाद्रीपुगजैकदोर्भ्यः।
कार्य्या वियुक्ताः खखवारणाप्ता आधानकालाद्दिवसव्रजः स्यात् ॥ २८ ॥

जन्म लग्न के राश्यादि में जन्म चन्द्र के राश्यादि को हीन करे तब शेष राश्यादि का कलापिण्ड कर के दो स्थान में स्थापित करे। तदनन्तर एक स्थान में ८४ से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को द्वितीय स्थान में स्थापित कलापिण्ड में युक्त कर के जो संख्या हो उस को २१८५७३ में हीन करे तब जो शेष बचे उन में ८०० से भाग दे लब्ध गर्भाधान काल और जन्मकाल का अन्तराल (मध्य) वर्त्ती दिनगण होता है।

—: उदाहरण :—

जन्म कालिक स्पष्ट लग्न १।११।४९।४५ में जन्म कालिक स्पष्ट चन्द्र ९।३।२७।२० को हीन किया तो ४।८।२२।५ शेष राश्यादि बचे। इन का कलापिण्ड किया तो ७७०२।२५ हुआ। इस को दो स्थान में स्थापित कर के एक स्थान में ८४ से भाग दिया तो लब्ध ९१।४१ हुए। इन को द्वितीय स्थान में स्थापित कलादि ७७०२।२५ में युक्त किया तो ७७९३।४ हुए। इन को २१८५७३ में हीन किया तो २१०७७९।१९ शेष बचे इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध २६३ ' दिनगण ' हुआ।

पुनः प्रकारान्तर से दिनगण साधन रीतिः—

यद्वा विकार्येन्दुकलाः स्वसागरेभांशान्विता भूपनगाङ्गगोकुभिः।
युक्ता वियत्पूर्णगजोध्दृताः फलं निषेककालाद् दिवसव्रजो भवेत् ॥ २९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथवा जन्म कालिक स्पष्ट चन्द्र में जन्म कालिक स्पष्ट लग्न को हीन कर के शेष राश्यादि की कला करे। तदनन्तर उन कलाओं को दो स्थान में स्थापित कर के एक स्थान में ८४ से भाग दे तब जो लब्ध हो उस को द्वितीय स्थान में स्थापित कलाओं में युक्त करे तब जो संख्या हो उस में १९६७१६ को युक्त कर के ८०० से भाग दे लब्ध गर्भाधान काल के दिन से जन्म दिन पर्यन्त का 'दिनगण' होता है।

—: उदाहरण :—

जन्म कालीन स्पष्ट चन्द्र ९।३।२७।२० में जन्म कालीन स्पष्ट लग्न १।११।४९।४५ को हीन किया तो ७।२१।३७।३५ लग्नोन चन्द्र हुआ। इस की कला १३८९७।३५ को दो स्थान में स्थापित कर के एक स्थान में ८४ से भाग दिया तो १६५।२८ लब्ध हुए। इन को द्वितीय स्थान में स्थापित कलादि १३८९७।३५ में युक्त किया तो १४०६३।३ हुए। इन में १९६७१६ को युक्त किया तो २१०७७९ हुए। इन में ८०० से भाग दिया तो लब्ध २६३ गर्भाधान समय से जन्म समय पर्य्यन्त का 'दिनगण' हुआ।

'आधानजन्मान्तरालवर्त्तिदिनगणसारणी' उपकरणं लग्नोनचन्द्रभम्, 'दिनादयः'

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
दि.	२४५	२४८	२५०	२५२	२५५	२५७	२५९	२६१	२६४	२६६	२६८	२७०
घ.	५३	१०	२६	४३	०	१६	३३	४९	६	२३	३९	५६
प.	४२	१८	५४	३१	७	४४	२०	५६	३३	९	४६	२२
विप.	०	२५	५१	१८	४२	८	३४	५९	२५	५१	१७	४२
प्र.वि.	०	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	०	४२

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उपकरणं लग्नोन चन्द्रांशाः ' फलं दिनादिकम् धनम् '

अं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
घ.	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४०	४५	५०	५४	५९	३	८	१२	१७	२१	२६	३१	३५	४०	४४	४९	५३	५८	२	७	१२
प.	३३	६	३९	१२	४६	१९	५२	२५	५८	३२	५	३८	११	४४	१८	५१	२४	५७	३१	४	३७	१०	४३	१७	५०	२३	५६	२९	३
वि.प.	१२	२५	३८	५१	४	१७	२९	४२	५५	८	२१	३४	४७	५९	१२	२५	३८	५१	४	१७	२९	४२	५५	८	२१	३४	४६	५९	१२
प्र. वि.	५१	४२	३३	२४	१५	६	५७	४८	३९	३०	२१	१२	३	५४	४५	३६	२७	१८	९	०	५१	४२	३३	२४	१५	६	५७	४८	३९

उपकरणं लग्नोनचन्द्रकलाः ' घट्यादिकं फलं धनम् ' । अतोविकलफलमपि ग्राह्यं तत्फलादि ज्ञेयम् '।

क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
प.	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४०	४५	५०	५४	५९	३	८	१२	१७	२१	२६	३१	३५	४०	४४	४९	५३	५८	२	७	१२	१६
वि. प.	३३	६	३९	१२	४६	१९	५२	२५	५८	३२	५	३८	११	४५	१८	५१	२४	५७	३१	४	३७	१०	४३	१७	५०	२३	५६	३०	३	३६
प्र. वि.	१३	२६	३९	५१	४	१७	३०	४३	५६	८	२१	३४	४७	०	१३	२६	३८	५१	४	१७	३०	४३	५६	८	२१	३४	४७	०	१३	२५

क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घ.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
प.	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५३	५७	२	६	११	१५	२०	२४	२९	३४	३८	४३	४७	५२	५६	१	५	१०	१५	१९	२४	२८	३३
वि. प.	९	४२	१६	४९	२२	५५	२८	२	३५	८	४१	१५	४८	२१	५४	२७	१	३४	७	४०	१३	४७	२०	५३	२६	०	३३	६	३९	१३
प्र. वि.	३८	५१	४	१७	३०	४३	५६	८	२१	३४	४७	०	१३	२५	३८	५१	४	१७	३०	४२	५५	८	२१	३४	४७	०	१२	२५	३८	५१

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

आधान जन्मान्तरालवर्ती दिनगणसारणीप्रवेशरीतिः—

जन्म चन्द्र में जन्म लग्न को हीन करे तब जो शेष राशिप्रभृति बचें उन के तुल्य कोष्ठ के दिनादियों का योग करे तब आधान जन्मान्तरालवर्ती दिनगण होता है।

उदाहरण—

शेषराश्यादि

जन्म चन्द्र	९	३	२७	२०	७	= २६१	४९	५६	५९	५६
जन्म लग्न –	१	११	४९	४५	२१	= + १	३५	३७	२९	५१
अन्तर	७	२१	३७	३५	३७	= + ·····	२	४८	२८	५५
					३५	= + ·····		२	३९	२२
आधानजन्मान्तरवर्त्तिदिनगण						= २६३	२८	२५	३८	२

जन्म दिनगण : ६२२२
आ. ज. दि. : – २६३
आधानदिनगण : ५९५९

तिथिगणसाधनरीति :—

व्यङ्गक्षपानाथलवाः पृथग्गुणैर्निघ्ना वियद्वेदफलोनिता इनैः।
भक्ता वियत्तत्त्वयुतास्तिथिव्रजो निषेकतः स्याज्जनानावधिः स्फुटः ॥ ३० ॥

जन्मचन्द्र में जन्म लग्न को हीन करे तब जो शेष राश्यादि हों उन के अंशादि कर के दो स्थान में स्थापित करें। तदनन्तर एकस्थान के अंशादि को ३ से गुणकर ४० से भाग दे लब्ध को द्वितीय स्थान में स्थापित अंशादि में हीन करे तब जो शेष अंशादि बचे उन में १२ से भाग दे तब जो लब्ध हो उस में २५० को युक्त करे तब गर्भाधानकाल से जन्मसमयपर्यन्त का 'तिथिगण' होता है।

उदाहरण—

जन्म चन्द्र ९।३।२७।२० में जन्म लग्न १।११।४९।४५ को हीन किया तो ७।२१।३७।३५ लग्नोन चन्द्र हुआ। इस के अंशादि २३१।३७।३५ को दो स्थान में स्थापित कर के एकस्थान में स्थापित अंशादि २३१।३७।३५ को ३ से गुणा तो ६९४।५२।४५ हुए। इन में ४० से भाग दिया तो लब्ध १७।२२।१९ हुए। इन को द्वितीय स्थान में स्थापित अंशादि २३१।३७।३५ में हीन किया तो २१४।१५।१६ शेष बचे इन में १२ से भाग दिया तो लब्ध १७ हुए। इन में २५० को युक्त किया तो २६७ 'तिथिगण' हुआ।

'आधानजन्मान्तरालवर्त्तितिथिगणसारणी' 'उपकरणं लग्नोनचन्द्रभम् तिथ्यादिकं फलम्'।

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ति.	२५०	२५२	२५४	२५६	२५९	२६१	२६३	२६६	२६८	२७०	२७३	२७५
घ.	०	१८	३७	५६	१५	३३	५२	११	३०	४८	७	२६
प.	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५
विप.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'उपकरणं लग्नोन चन्द्रांशाः' 'तिथ्यादिकम् फलं' 'धनम्'।

अं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
ति.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
ध.	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५०	५५	०	४	९	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५५	०	४	९	१४
प.	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७
वि. प	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

उपकरणं लग्नोनचन्द्रकलाः 'वस्त्रादिकं फलं धनम्'। 'अतोविकलाफलमपि ग्राह्यं तत्फलादिकं ज्ञेयम्'।

क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
ध.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
प.	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५०	५५	०	४	९	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५५	०	४	९	१४
वि.प.	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७
प्र.वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
१८	२३	२८	३२	३७	४१	४६	५१	५५	०	५	९	१४	१८	२३	२८	३२	३७	४२	४६	५१	५५	०	५	९	१४	१९	२३	२८	३२
४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२
०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jun Gun Aaradhak Trust

तिथिगणसारणीप्रवेशरीतिः—

जन्मलग्न में चन्द्र को हीन करे तब जो शेष राश्यादि बचें उन के तुल्य कोष्ठ के तिथ्यादियों का योग करे तब तिथिगण होता है।

शेषराश्यादि

जन्म चन्द्र	९ । ३ । २७ । २०	७ = २६६ । ११ । १५
जन्म लग्न	− १ । ११ । ४९ । ४५	२१ = + १ । ३७ । ७ । ३०
अन्तर	७ । २१ । ३७ । ३५	३७ = + ... २ । ५१ । ७ । ३०
		३५ = + ... २ । ४१ । ५२ । ३०
		तिथिगण = २६७ । ५१ । १६ । १९ । २२ । ३०

पादच्छाया तथा त्र्यङ्गुलशङ्कुद्वारा इष्टकालसाधनरीतिः—

यावत्यः प्रतिदिनमंघ्रिदीप्तयस्ताः
संयुक्ताः क्रियमुखषट्सु तर्कपादैः।
वेदाग्निद्वियमगुणाब्धिभिस्तुलादि-
षट्स्वेव द्युदलमगैर्हतं च ताभिः॥ ३१॥
भक्तं फलं प्रागपरे दलेऽह्नो यातास्तथैष्या घटिका भवेयुः।
सोपर्वुधा त्र्यङ्गुलशङ्कुभा या हृतास्तयाऽम्भोधिपडिष्टकालः॥ ३२॥

सूर्य के सम्मुख खडा होकर जितनी दूर तक अपने शरीर की छाया गिरे उस को अपने पैरों से नापे जहां पर खडा हुआ हो वहां से और जहां तक अपने शरीर की छाया गिरी हो वहां तक अपने पैरों से नापकर जितने पैर छाया हो वह 'इष्टपादच्छाया' होती है। वैशाखादि छः मासों में प्रत्येक दिन की इष्ट पादच्छाया में ६ पाद युक्त करें तब 'भाजक' होता है। एवं तुलादि ('कार्तिकादि) छः मासों में प्रत्येक दिन की इष्ट पादच्छाया में क्रम से ४ कार्तिक में, ३ मार्गशीर्ष में, २ पौष में, २ माघ में, ३ फाल्गुन में एवं ४ पाद चैत्र में युक्त करें तब 'भाजक' होता है। इष्ट दिन के घट्यादि दिनार्द्ध को ७ से गुणकर 'भाज्य' होता है। तदनन्तर भाज्य में भाजक से भाग दें लब्ध घट्यादि होते है। यदि 'इष्ट समय' दिन के पूर्वार्ध का हो तो लब्ध सूर्योदय से 'गत घट्यादि' होते हैं और 'इष्ट समय' दिन के उत्तरार्द्ध (परार्द्ध) का हो तो लब्ध 'गम्य (दिनशेष) घट्यादि' होते हैं। यदि उक्त क्रिया से गत घट्यादि मिलें तो वे सूर्योदयकाल से इष्ट घट्यादि होते हैं और गम्य घट्यादि मिलें तो उन को घट्यादि दिनमान में हीन करे तब जो शेष बचें वे सूर्योदय से इष्ट घट्यादि होते हैं। अथवा इष्ट समय में तीन अङ्गुल शङ्कु की जो अङ्गुलादि छाया हो उस में ३ अङ्गुल युक्त करके जो संख्या हो वह 'भाजक' होता है। इस से ६४ भाज्य में भाग दे लब्ध घट्यादि दिन के पूर्वार्द्ध तथा परार्ध के क्रम से गत और गम्य इष्टकाल होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उदाहरण—

संवत् १९५७ आषाढ २३ प्रविष्ट चन्द्रवार के दिन पादच्छाया से इष्टकाल साधन करते हैं। इष्ट दिन में ३४ घटी ३६ पल दिनमान, १७ घटी १८ पल दिनार्द्ध एवं १६ पाद इष्ट पादच्छाया है। इष्ट मास आषाढ है। अतः इष्ट पादच्छाया १६ में ६ पाद युक्त किये तो २२ 'भाजक' हुआ। १७ घटी १८ पल दिनार्द्ध को ७ से गुणा तो १२१।६ 'भाज्य' हुआ। इस में भाजक २२ से भाग दिया तो लब्ध ५ घटी ३० पल हुए। यहां इष्ट समय दिन के पूर्वार्ध का है अतः ५ घटी ३० पल सूर्योदय से गत (इष्ट) काल हुआ। अथवा इष्ट समय में ३ अङ्गुल शङ्कु की छाया ९ अङ्गुल है इस में ३ अङ्गुल युक्त किये तो १२ 'भाजक' हुआ। इस से ६४ भाज्य में भाग दिया तो लब्ध ५ घटी २० पल सूर्योदयकाल से गत (इष्ट) काल हुआ।

द्वादशाङ्गुल शङ्कुच्छाया द्वारा इष्टकालसाधनरीति :—

साकाशलोका पलभा दिनोना विभावरीमानहता विभक्ता।
द्युमाननाडीभिरिहाङ्गुलाद्या फलं भवेद्वासरखण्डदीप्तिः ॥ ३३ ॥
स्वेष्टप्रभा दिक्सहिता दिनार्द्धच्छायाविहीना विहृतं तया च।
दिनार्द्धमभ्रेन्दुहतं गतैष्या नाड्यो द्युपूर्वापरभागयोः स्युः ॥ ३४ ॥

स्वदेशीय अङ्गुलादि पलभा में ३० अङ्गुल युक्त करके जो संख्या हो उस में इष्टदेशीय इष्ट दिन के दिनमान को हीन करे तब जो शेष बचे उस को इष्ट दिन के रात्रिमान से गुणकर इष्ट दिन के दिनमान से भाग दें लब्ध 'अङ्गुलादि मध्यान्हच्छाया' होती है। इष्ट समय में द्वादशाङ्गुल शङ्कु की जितनी अङ्गुलादि छाया हो वह 'इष्टच्छाया' होती है। उस में १० अङ्गुल को युक्त करके जो संख्या हो उस में अङ्गुलादि मध्यान्ह को हीन करे तब जो शेष बचे वह 'भाजक' होता है। दिनार्ध को १० से गुण कर जो गुणनफल हो वह 'भाज्य' होता है। भाज्य में भाजक से भाग दें लब्ध घट्यादि होते हैं। इष्ट समय दिन के पूर्वार्ध का हो तो लब्ध घट्यादि सूर्योदय से गत (इष्ट) काल होता है और इष्ट समय दिन के उत्तरार्ध (परार्ध) का हो तो लब्ध गम्य घट्यादि होते हैं। उनको इष्ट दिन के दिनमान में हीन करें तब जो शेष बचे वह सूर्योदय से गत (इष्ट) काल होता है।

उदाहरण—

७ अङ्गुल ० व्यङ्गुल गढदेशीय पलभा है। इसमें ३० अङ्गुल युक्त किये तो ३७।० हुए। इन में इष्ट दिन के दिनमान ३४।३६ को हीन किया तो २।२४ शेष बचे। इन को रात्रिमान २५।२४ से गुणा तो ६०।५८ हुए। इन में दिनमान ३४।३६ से भाग दिया तो २ अङ्गुल ५५ व्यङ्गुल 'मध्यान्हच्छाया' हुई। २३ अङ्गुल १५ व्यङ्गुल इष्टच्छाया है। इस में १० अङ्गुल को युक्त किया तो ३३।१५ हुए। इन में माध्यान्हच्छाया २।५५ को हीन किया तो ३०।२० 'भाजक' हुआ। भाजक अङ्गुल ३० को ६० से गुणा तो १८०० हुए इन में २० व्यङ्गुल को युक्त किया तो १८२० 'भाजकपिण्ड' हुआ। दिनार्ध १७।१८ को १० से गुणा तो १७३।० हुए। इन को ६० से गुणा तो १०३८० 'भाज्यपिण्ड' हुआ। इस में १८२० भाजकपिण्ड से भाग दिया तो लब्ध ५ घटी ४२ पल हुए। यहां इष्ट समय दिन के पूर्वार्द्ध का है। इस लिए सूर्योदयकाल से ५ घटी ४२ पल गत काल अर्थात् इष्ट काल हुआ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सप्ताङ्गुल शङ्कु के द्वारा गढदेश में इष्टकालसाधनरीतिः—

जातिस्थिरे रामयमाः खविश्वे सिद्धा नगेन्द्राः समयेन्द्रियाः स्युः ।
बाणाष्टयो व्योमशराः खगाद्रिचन्द्रा धृतिः षड्धृतयो द्विबाणाः ॥ ३५ ॥
गोऽष्टेन्दवोऽङ्का ध्रुवका नगीयास्त्रिभोनितः सायनसप्तसप्तिः ।
षड्भाधिको द्वादशभाच्च्युतश्चेत्तदीयभागा गगनाग्निभक्ताः ॥ ३६ ॥
फलं गताङ्कस्तदयुक्तभोग्याच्छेषाहतादभ्रगुणाप्तियुक् सः ।
ध्रुवः स्वकीयो भवतु स्फुटोऽतः सप्ताङ्गुलाच्छङ्कुत इष्टकालः ॥ ३७ ॥
शङ्कोर्नगाङ्गुलमितस्य च येष्टभा सा
सप्ताङ्गुलाभिधयुता स तया विभक्तः ।
लब्धं गतैष्यघटिकावदनं तदानीं
घस्रस्य पूर्वपरयोः क्रमशः प्रवेद्यम् ॥ ३८ ॥

१२२,२३।१३०,२४।१४७,५६।१६५,५०।१७९,१८।१८६,५२।१८९,९ ये क्रम से सप्ताङ्गुल शङ्कु गढदेशीय ध्रुव हैं । इष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य में अयनांश युक्त करें तब 'सायनसूर्य' होता है । उस में ३ राशि को हीन करें तब शेष राश्यादि ६ राशि से अल्प हों तो यथावत् स्थापित करें । यदि शेष राश्यादि ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में शोधन करें । तदनन्तर शेष राश्यादि के अंशों में ३० से भाग दे लब्ध 'गताङ्क' होता है । उस गताङ्क के तुल्य सप्ताङ्गुल शङ्कु के ध्रुव को ग्रहण करके एकान्त में स्थापित करें । तदनन्तर शेष अंशादियों को गत गम्य खण्ड के अन्तर से गुणकर ३० से भाग दे लब्ध को एकान्त में स्थित गत खण्ड में युक्त करें तब वह इष्ट दिन का स्पष्ट ध्रुव होता है । इस से और सप्ताङ्गुल शङ्कु की छाया से इष्ट काल साधना चाहिए । इष्ट समय में सप्ताङ्गुल शङ्कु की जो अङ्गुलादि छाया हो उस में ७ अङ्गुलयुक्त कर के जो संख्या हो उस से अपने स्पष्ट ध्रुव में भाग दे लब्ध दिन के पूर्व परके क्रम से गत गम्य घट्यादि होते हैं ।

उदाहरण—

सायनसूर्य ३।१३।५८।५२ में ३ राशि को हीन किया तो ०।१३।५८।५२ शेष राश्यादि बचे । इन को अंशादि किया तो १३।५८।५२ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध ० 'गताङ्क' हुआ । गताङ्क शून्य के तुल्य १२२।२३ गत खण्ड को ग्रहण कर के एकान्त में स्थापित किया । तदनन्तर १३।५८।५२ शेष अंशादि को गत खण्ड १२२।२३ और गम्य खण्ड १३०।२४ के अंतर ८।१ से गोमुत्रिकारीतिद्वारा गुणन किया तो ११२।४।५५ हुए । इन में ३० से भाग दिया तो लब्ध ३।४४ हुए । इन को एकान्त में स्थापित गत खण्ड १२२।२३ में युक्त किया तो १२६।७ 'स्पष्ट ध्रुव' हुआ । इष्ट समय में सप्ताङ्गुल शङ्कुकी छाया १६ अङ्गुल है । इस में ७ अङ्गुल को युक्त किया तो २३ भाजक हुआ । इस से स्पष्ट ध्रुव १२६।७ में भाग दिया तो लब्ध ५ घटी २९ पल हुए । यहां इष्ट समय दिनके पूर्वार्द्ध का है इस लिए सूर्योदय से ५ घटी २९ पल इष्ट काल हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'गतदेशे सताङ्गुलशङ्कुध्रुवाङ्काः'।

गताङ्काः	०	१	२	३	४	५	६
ध्रुवाङ्काः	१२२ २३	१३० २४	१४७ ५६	१६५ ५०	१७९ १८	१८६ ५२	१८९ ९
अन्तराङ्काः (गुणकाः)	८ १	१७ ३२	१७ ५४	१३ २८	७ १४	२ १७	

रात्रि में इष्ट काल जानने के लिए नक्षत्रतारापरिज्ञान :—

त्र्यग्न्यङ्गबाणाग्निकुरामबाणाङ्गेष्वष्टदोर्बाणधरेन्दुबाणाः ।
वेदत्रिरुद्राक्षिवसुत्रिबाणाः शताश्विनागा दशना भताराः ॥ ३९ ॥

उक्त श्लोक का अर्थ निम्नलिखित चक्र में समझना चाहिए ।

'अश्विन्यादीनां ताराचक्रम्'।

नक्षत्राः	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पु.	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
ताराः	३	३	६	५	३	१	३	५	६	५	८	२	५	१

नक्षत्राः	स्वाति.	विशा	अनु.	ज्येष्ठा.	मूलम्	पू. षा.	उ. षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रे.
ताराः	१	५	४	३	११	२	८	३	५	१००	२	८	३२

अश्विन्यादि नक्षत्रों की आकृतिपरिज्ञान :—

अश्वाननं योनिसमं क्षुरप्रभमनोनिभं चैणमुखं मणिर्गृहम् ।
नाराचचक्रे शयनं च मञ्चकपर्य्यङ्करूपे करवच्च मौक्तिकम् ॥ ४० ॥

प्रवालवत्तोरणवद्बलिप्रभं सत्कुण्डलाभं हरिविक्रमोपमम् ।
शय्याप्रभं दन्तिविलाससन्निभं शृङ्गाटकाकारमुशन्ति सूरयः ॥ ४१ ॥

त्रिविक्रमाकारमथो मृदङ्गरूपं च वृत्तं यमलद्वयाभम् ।
मञ्चोपमं मर्दलसन्निभं च क्रमेण रूपं हयपूर्वभानाम् ॥ ४२ ॥

उक्त श्लोकों का अर्थ निम्नलिखित चक्र में समझना चाहिए ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'अश्विन्यादीनां नक्षत्राणामाकारबोधकचक्रम्'।

अश्वि.	भर.	कृति.	रोहि.	मृग.	आ.	पुन.	ति.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.
अश्वमुखसदृशं रूपम्,	भगसदृशम्,	नापितक्षुरसदृशम्,	शकटसदृशम्,	हरिणमुखसदृशम्,	मणिसदृशम्,	गृहसदृशम्,	बाणसदृशम्,	चक्राकारम्,	गृहसदृशम्,	खट्वाकारम्,	शय्याकारम्,	हस्ताकारम्,	मौक्तिकाकारम्,
स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.
प्रवालसदृशम्,	तोरणाकारम्,	भक्तगुञ्जाकारम्,	कुण्डलाकृति-	निहपुच्छाकारम्,	गजदन्तसदृशम्,	मञ्चकसदृशम्,	त्रिकोणाकारम्,	त्रिचरणसदृशम्,	मृदङ्गसदृशम्,	वर्तुलसदृशम्,	मञ्चकसदृशम्,	यमलाभम्,	मृदङ्गाकारम्,

अश्विन्यादि नक्षत्रोदयकाल में मेषादि राशियों की राश्यादिसंख्यापरिज्ञान :—

खं शक्रा ऋतवोऽथ खं नवयमाः खाष्टास्ततोऽब्जो दिशः
सप्ताथो हिमगुर्नभोगशशिनौ बाणेषवोऽथो यमौ ।
रामा व्योमशरा ततो यममितौ नागास्त्रिबाणास्तत---
स्त्र्याज्याशाकृतयोऽथ पावकधृती कक्षा अथो वह्नयः ॥ ४३ ॥

त्र्योष्ठा षट्कृतयोऽथ वेदखसदोऽष्टाक्षास्ततः सागरा—
स्त्र्योष्ठाः दन्तमिता अथाक्षकुभुवोऽथाक्षाः कृशान्वश्विनः ।
बाणाज्याशमितास्ततस्तोऽङ्गदहना दन्तीषवोऽथर्त्तवो
वेदा आकृतयोऽथ सप्तकुगजाः सप्तारुणा द्वीपवः ॥ ४४ ॥

अश्वा गोशशिनः समुद्रमरुतोऽथाष्टत्रिशून्यान्यथो
नागेन्द्रा द्वियुगा अथोरगमिता व्योष्ठास्तुरङ्गाब्धयः ।
अङ्केशास्त्रिशरास्ततोऽङ्कभमिताः क्वाज्याशतुल्यास्ततो
दिक्स्वर्गा द्विकृतास्ततः शिवकराः खाम्भोधितुल्याः क्रमात् ॥ ४५ ॥

शङ्कराः श्रुतिनेत्राणि दर्शनाक्षिमितास्ततः ।
खं वियत्खं हयादीनां राशिपूर्वा ध्रुवा इमे ॥ ४६ ॥

उक्त श्लोकों का अर्थ निम्नलिखित चक्र में समझना चाहिए ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'अश्विन्यादीनां निरयणराश्यादिध्रुवाः'

न.	अश्वि.	भर.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	ति.	आश्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.
रा.	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६
अं.	१४	२९	१०	१९	३	८	३	१८	२३	९	२३	१	२३	३
क.	६	२०	७	५५	५०	५३	२२	५१	४६	५८	३२	१	३५	५८

न.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	
रा.	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	११	११	०	
अं.	४	१	१२	११	३	१४	२२	११	२७	२१	२	२४	०	
क.	२२	८	५०	५४	०	४२	४७	५३	३१	४०	४०	२६	०	

अश्विन्यादिनक्षत्रध्रुव से रात्रिगतकालसाधनरीति :—

स्वकीयशीर्षस्थिततारकाध्रुवाद्विवर्जितास्पष्टसहस्ररश्मिना ।
लवीकृतात्खाङ्गलवोनिताद्रसैर्हृते फलं स्युर्घटिकागतास्तमः ॥ ४७ ॥

अपने शिरोदेश के ठीक ऊपर आकाश के मध्य भाग में स्थित नक्षत्र के राश्यादि ध्रुव में इष्टकालीन राश्यादि स्पष्ट सूर्य को हीन करे तब जो शेष बचे उस को अंशादि कर के उस में ९० अंश हीन करे तब जो शेष अंशादि बचे उन में ६ से भाग दे लब्ध रात्रि के गत घट्यादि होते हैं ।

उदाहरण—

इष्ट समय में अपने शिरोदेश के ठीक ऊपर आकाश के मध्यभाग में स्थित पूर्वाषाढा नक्षत्र के राश्यादि ध्रुव ८।१४।४२।० में इष्टकालीन राश्यादि स्पष्ट सूर्य २।२१।२९।४९ को हीन किया तो ५।२३।१२।११ शेष राश्यादि बचे । इस को अंशादि किया तो १७३।१२।११ हुए । इन में ९० अंश को हीन किया तो ८३।१२।११ शेष बचे । इन में ६ से भाग दिया तो लब्ध १३ घटी ५२ पल रात्रि के गत घट्यादि हुए । इन को दिनमान ३४।३६ में युक्त किया तो ४८ घटी २८ पल सूर्योदय से इष्ट काल हुआ ।

श्रवणादि नक्षत्रों के आकाश के मध्यभाग में स्थित होनेपर मेषादियों के ध्रुवांकपरिज्ञान :—

खं गोऽब्जाश्वियमा इलानलघनाः शीतांशुघस्राभरा
युग्मद्वीपनगा यमौ गुणयमा वेदाग्नयोऽथानलाः ।
बाणा बाणगुणा गुणार्कधृतयो रामा अरात्यश्विनो
व्यालाक्षाः श्रुतयो रसाः कुदहना वेदा धृतिर्मूर्च्छनाः ॥ ४८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वार्णेऽहियमाः शरा धृतिमिता दन्तीन्द्रियाः षड् यमा
नाराचोदधमो रसास्तिथिमिता अर्थागमाः शात्रवाः ।
तत्तेना नगखेचरस्मृतिमिताः शैला नखा आशुगा
दिक्पालाः शिखिनो भुजङ्गदहना नागा नखा ईश्वराः ॥ ४९ ॥

नागा नागयमाः सपत्नशिखिनो गोगोदिशोऽङ्का दिवो
ऽहिग्रामा दश चक्षुषी गजगुणा दिग्गोयमा दिग्जिनाः ।
अष्टिः शम्भुखगादिवः शिवमितास्तर्काश्विनोऽगा अजा-
दे राश्यंशकलाः क्रमान्निगदिताः खान्तःस्थकर्णादिषु ॥ ५० ॥

आकाश के मध्य भाग में श्रवणादि नक्षत्रों के स्थित होने पर मेषादि राशि यों के ये राश्यादि ध्रुव हैं, उक्त श्लोकों का शेष अर्थ निम्न लिखित चक्र में समझना चाहिए।

आकाशमध्य (शिरोदेश) गतश्रवणादिषु मेषादिराशीनां राश्यादिध्रुवाः ।

नक्ष.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आ.	पुन.	ति.
रा.	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६
अं.	१९	९	१५	७	२३	५	१२	२६	६	१८	१	१८	२	१५
क.	२३	१७	३३	२०	३४	३५	१८	५८	३१	२१	२८	५८	४५	४५

नक्षत्राणि	अश्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.
रा.	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
अं.	२५	७	२०	[illegible]	२०	२८	५	१	२	९	२८	९	२६
क.	१२	१८	५	३८	११	३६	१७	१८	[illegible]	२	१६	२१	७

सूर्याक्रान्तनक्षत्र तथा आकाश के मध्य भाग में स्थित नक्षत्र से रात्रिगत परिज्ञानः—

भास्वद्भतो मूर्द्धगभं नगोनितं कृत्या हतं गोविहृतं गता तमी ।
गण्यं पपीभात्कगभं तदद्रिभिरूनं द्विनिघ्नं द्विवियुग्गता निशा ॥ ५१ ॥

इष्ट दिन में जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से अपने शिर के ऊपर के नक्षत्र पर्यन्त गिन कर जो संख्या हो उस में ७ को हीन करे तब जो शेष बचे उस को २० से गुण कर ९ से भाग दे लब्ध नक्ष्यादि स्पष्ट रात्रिगत होता है। अथवा इष्ट दिन में जिस नक्षत्र पर हो उस से शिर के ऊपर के नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उस में ७ को हीन करे तब जो शेष बचे उस को २ से गुण कर जो गुणन फल हो उस में २ को हीन करे तब जो शेष बचे वह रात्रि गत काल होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

इष्ट दिन में 'सूर्य' पुनर्वसु नक्षत्र में है और स्वशिरोदेश के ठीक ऊपर आकाश के मध्य भाग में पूर्वाषाढा नक्षत्र है अतः सूर्याधिष्ठित पुनर्वसु नक्षत्र से आकाश के मध्य में स्थित पूर्वाषाढा पर्य्यन्त गिन कर १४ मिले। इन में ७ को हीन किया तो ७ शेष बचे इन २० से गुणा तो १४० हुए। इन में ९ से भाग दिया तो लब्ध १५ घटी ३३ पल रात्रिगत काल हुआ।

अथवा सूर्याक्रान्त नक्षत्र पुनर्वसु से स्वशिरोदेश के ऊपर स्थित पूर्वाषाढा नक्षत्र पर्यन्त गिना तो १४ मिले इन में ७ को हीन किया तो ७ शेष बचे इन को २ से गुणा तो १४ हुए इन में २ को हीन किया तो १२ घटी रात्रिगत काल हुआ। इस को दिनमान ३४।३६ में युक्त किया तो ४६।३६ सूर्योदय से इष्ट काल हुआ।

शिरोगत नक्षत्र द्वारा उदय नक्षत्र परिज्ञानः—

राधात्रयान्त्याम्ब्वहिकेशतारकाः खान्तःस्थिता अष्टमतारकोदयः।
चान्द्रे च मूले नवमर्क्षकोदयस्तत्रान्यभं सप्तमतारकोदयः॥ ५२॥

विशाखा से तीन नक्षत्र अर्थात् विशाखा अनुराधा तथा ज्येष्ठा एवं रेवती, पूर्वाषाढा, आश्लेषा, रोहिणी और आर्द्रा ये आठ नक्षत्र यदि इष्ट समय में आकाश के मध्य भाग में अर्थात् शिर के ठीक ऊपर वर्त्तमान हों तो आकाश के मध्यभाग में स्थित नक्षत्र से जो आठवां नक्षत्र हो वह इष्ट समय में उदय क्षितिज दृग्गोचर होता है।

यदि मृगशिरा तथा मूल ये दो नक्षत्र आकाश के मध्यभाग में वर्त्तमान हों तो उस आकाश के मध्यभाग में स्थित नक्षत्र से जो नवम नक्षत्र हो वह उदय क्षितिज पर दृग्गोचर होता है। एवं अन्य नक्षत्र अर्थात् पूर्वोक्त नक्षत्रों से भिन्न नक्षत्र (अश्वि, भ. कृ. पुन. ति. म. पू. फा. उ. फा ह. चि. स्वा. उ. षा. श्र. ध. श. पू. भा. उ. भा.) आकाश के मध्यभाग में अर्थात् शिर के ठीक ऊपर वर्त्तमान हों तो उस आकाश के मध्यभाग में स्थित नक्षत्र से जो सातवां नक्षत्र हो वह उदय क्षितिज पर दृग्गोचर होता है।

शिरोदेश गतादि नक्षत्रों से स्पष्ट रात्रि गत घट्यादि परिज्ञानः—

खान्तःस्थतारा लयतारकोदयतारा पपीभात्क्रमतो विवर्जिता।
दन्तावलैः क्वा दिवसैः क्षपादलनिघ्ना नगाप्ता रजनीतनाडिकाः॥ ५३॥

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से आकाश के मध्यभाग (शिर के ठीक ऊपर) में स्थित नक्षत्र की संख्या पर्यन्त गिन कर जो संख्या हो उस में ८ को हीन करे तब जो शेष बचे उस को एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से अस्त क्षितिज पर स्थित नक्षत्र की संख्या पर्य्यन्त गिनकर जो संख्या हो उस में १ हीन करे तब जो शेष बचे उस को एकान्त में स्थापित करे। एवं सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से उदयक्षितिज पर स्थित नक्षत्र की संख्या पर्य्यन्त गिनकर जो संख्या हो उस में १५ हीन करे तब जो शेष बचे उस को एकान्त में स्थापित करे। यदि एकान्त में स्थित तीनों संख्यायें समान हों तो गणित की क्रिया शुद्ध जाननी चाहिए। तदनन्तर उन तीनों समान शेष संख्याओं में से दो संख्या को हटा कर एक ही शेष संख्या को रात्र्यर्द्ध से गुण कर ७ से भाग दे लब्ध रात्रि के गत घट्यादि होते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

इष्ट दिन में 'सूर्य' पुनर्वसु नक्षत्र में है अतः यह सूर्याधिष्ठित नक्षत्र हुआ। अभीष्ट समय में अस्तक्षितिज पर हस्त नक्षत्र है अतः यह अस्त क्षितिज संबद्ध नक्षत्र हुआ। तदनन्तर इष्ट समय में उदय क्षितिज पर रेवती नक्षत्र है अतः यह उदयक्षितिज संबद्ध नक्षत्र हुआ। एवं वर्तमान समय में स्वशिरोदेश के ठीक ऊपर आकाश के मध्यभाग में पूर्वाषाढा नक्षत्र स्थित है अतः पूर्वाषाढा खमध्य नक्षत्र हुआ। सूर्याधिष्ठित पुनर्वसु नक्षत्र से खमध्यस्थ पूर्वाषाढा नक्षत्र पर्य्यन्त गिना तो १४ मिले इन में ८ को हीन किया तो ६ शेष बचे इन को एकान्त में स्थापित किया तदनन्तर सूर्याधिष्ठित पुनर्वसु नक्षत्र से अस्त क्षितिजपर स्थित हस्त नक्षत्र नक्षत्र पर्यन्त गिना तो ७ मिले। इन में १ को हीन किया ६ शेष बचे इन को एकान्त में स्थापित किया। एवं सूर्याधिष्ठित पुनर्वसु नक्षत्र से उदय क्षितिज पर स्थित रेवती नक्षत्र पर्यन्त गिना तो २१ मिले इन में १५ को हीन किया तो ६ शेष बचे इन को एकान्त में स्थापित किया। तदनन्तर यहां तीनों शेष संख्या ६ समान हैं अतः दो संख्या ओं को हटाकर केवल एक ही शेष संख्या ६ को इष्टदिन के रात्र्यर्द्ध घट्यादि :१२।४२ से गुणा तो ७६।१२ हुए। इन में ७ से भाग दिया तो लब्ध १० घटी ५३ पल रात्रि गत काल हुआ। इस में इष्ट दिन के दिनमान ३४।३६ को युक्त किया तो ४५ घटी २९ पल सूर्योदय से इष्टकाल हुआ।

समय (टाइम) की परिभाषा:—

स्थानीय समय (लोकल टाइम), ८२°।३०' रेखांश स्थान का समय रेलवे टाइम वा मद्रास टाइम वा इण्डियन स्टैण्डर्ड टाइम अथवा आइ. एस. टी.), ग्रीनविच (प्रचलित रेखांशों का उद्गम स्थान वा लन्दन के समीप (एक बडी वेध शाला का स्थान), ग्रीनविच देशान्तर (रेखांश वा देशान्तर वा लांगीटयूड), ग्रीनविच समय ग्रीनविच मीन टाइम अथवा जी. एम. टी) ब्रिटिश मध्यम समय (ब्रिटिश स्टैण्डर्ड टाइम अथवा बी. एस. टी), मध्य युरोपियन समय (मिड युरोपियन टाइम वा सेण्ट्रल युरोपियन टाइम),

होरादि (घण्टादि) की परिभाषा:—

होरा (घण्टा), निमेष वा निमिष (मिनिट), विनिमेष वा विनिमिष (सेकण्ड) अंश (भाग वा डिग्री),

घट्यादि समय को होरादि बनाने की रीति:—

इष्ट समय के घटी और पल को २ से गुणकर ५ से भाग दे लब्ध होरादि होते हैं।

—: उदाहरण :—

यहां १३ घटी ३४ पल इष्ट काल है। इस को २ से गुणा तो २७।८ हुए। इन में ५ से भाग दिया तो लब्ध ५ होरा (घण्टा), २५ निमेष (मिनिट), ३६ विनिमेष (सेकण्ड) हुए।

होरादि (घण्टा प्रभृति) समय को घट्यादि बनाने की रीति:—

इष्ट समय के होरा (घण्टा), निमेष (मिनिट) विनिमेष (सेकण्ड) को ५ से गुण कर २ से भाग दे लब्ध घट्यादि होते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

इष्ट समय में ५ होरा, २५ निमेष ३६ विनिमेष हैं। इन को ५ से गुणा तो २७।८।० हुए। इन में २ से भाग दिया तो लब्ध १३ घटी ३४ पल इष्ट समय में घट्यादि समय हुआ।

चरान्तर साधन रीतिः—

अक्षांशादि (ग्रहादि स्पष्टीकरण में लिखित) सारणी से इष्ट स्थान के अक्षांशों को लेकर एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर इष्ट दिन के स्पष्ट सूर्य (पञ्चाङ्ग साधन प्रकरण में कथित रीति) से अंशादि क्रान्ति को साधकर एकान्त में स्थापित करे। इष्ट स्थान के अक्षांश और इष्ट दिन के क्रान्त्यंश कोष्ठक के समान सम सूत्र चरान्तर (पञ्चाङ्ग साधन प्रकरण में लिखित) सारणी से जो मिनिटादि संख्या मिले उस को एकान्त में स्थापित करे।) एकान्त में स्थापित संख्या और भोग्य अक्षांश के कोष्ठ में लिखित संख्या के अन्तर को इष्ट स्थान के अक्षांशों की कला से गुण कर ६० से भाग दे तब जो लब्ध निमेष (मिनिट) प्रभृति हों उन को एकान्त में स्थापित निमेष (मिनिट प्रभृति में युक्त करके जो संख्या हो उस को पुनः एकान्त में स्थापित करे। तदनन्तर इष्ट देश के अक्षांश और इष्ट दिन के क्रान्त्यंशों के तुल्य कोष्ठ की निमेष (मिनिट) प्रभृति संख्या का और क्रान्ति के भोग्यांश कोष्ठ के निमेष (मिनिट) प्रभृति यों के अन्तर को क्रान्ति के कलादि से गुण कर ६० भाग दे लब्ध निमेष (मिनिट) प्रभृति को पश्चात् के एकान्त में स्थापित निमेष (मिनिट) प्रभृति में युक्त करे तब इष्ट स्थान के इष्ट दिन का निमेष (मिनिट) प्रभृति चरान्तर होता है।

—: उदाहरण :—

३०°।१५' गढवाल का अक्षांश है। ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया सोमवार के दिन सूर्य की २०°।१५' उत्तर क्रान्ति है। व्यस्त काल समीकरण— ९ पल या ३ मिनिट ३६ सेकण्ड है। ३० अक्षांश और २० क्रान्त्यंश का चर ४८ मिनिट ३१ सेकण्ड है। एवं ३१ अक्षांश २० क्रान्त्यंश का चर ५० मिनिट ३२ सेकण्ड है। इन दोनों का अन्तर किया तो २।१ शेष बचे। इन को १५ अक्षांश कला से गुणा तो ३०।१५ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ० मिनिट ३० सेकण्ड हुए। इन को ३० अक्षांश २० क्रान्त्यंश के चर ४८ मिनिट ३१ सेकण्ड में युक्त किया तो ४९ मिनिट १ सेकण्ड हुए। तदनन्तर ३० अक्षांश २० क्रान्त्यंश के चर ४८ मिनिट ३१ सेकण्ड का और ३० अक्षांश २१ क्रान्त्यंश के चर ५१ मिनिट १३ सेकण्ड का अन्तर किया तो २।४२ शेष बचे। इन को १५ क्रान्ति कला से गुणा तो ४०।३० हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ० मिनिट ४० सेकण्ड हुए। इन को पूर्वागत चर ४९ मिनिट १ सेकण्ड में युक्त किया तो ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया सोमवार के दिन गढवाल का ४९ मिनिट ४१ सेकण्ड चर हुआ।

रेखांश परिज्ञानः—

पृथ्वी अपनी धुरीपर २४ होरा (एक दिन और एक रात) में एक बार भ्रमण (घूमा) करती है अर्थात् एक चक्कर लगाती है। अतः सुविधा के लिए पृथ्वी को ३६०° अंशों (डिग्रियों) में विभाजित किया गया है जिन्हें रेखांश (देशान्तर या लांगीटयूड) कहते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रेखांशों से समय परिज्ञानः—

३६०° रेखांशों (डिग्रियों) के परिभ्रमण (चक्कर लगाने के लिए पृथ्वी को २४घण्टे लगते हैं तो १° अंश भ्रमण (घूमने) में २४×६०=४ निमेष (मिनिट अथवा १० पल) लगते हैं।
३६०

पूर्व और पश्चिम का परिज्ञानः—

इष्ट स्थान के रेखांशों से जिस स्थान के रेखांश अधिक हों वह स्थान 'पूर्व' होता है। एवं इष्ट स्थान के रेखांशों से जिस स्थान के रेखांश अल्प (न्यून) हों वह स्थान 'पश्चिम' होता है।

—: उदाहरण :—

७९°।३०' इष्ट स्थान गढवाल के रेखांश हैं। ८२°।३०' स्टैण्डर्ड रेखांश हैं। गढवाल के रेखांशों से स्टैण्डर्ड रेखांश अधिक हैं अतः गढवाल से स्टैण्डर्ड स्थान 'पूर्व' हुआ। स्टैण्डर्ड स्थान से गढवाल 'पश्चिम' हुआ। एवं ७५°।४६' मध्य रेखा नगर उज्जैन के रेखांश अधिक हैं ७९°।३०' इष्ट स्थान गढवाल के रेखांश हैं। यहां मध्य रेखा नगर उज्जैन के अक्षांशों से इष्ट स्थान गढवाल के रेखांश अधिक हैं अतः उज्जैन से गढवाल 'पूर्व' हुआ और गढवाल के रेखांशों से उज्जैन के रेखांश अल्प (न्यून) है अतः गढवाल से उज्जैन 'पश्चिम' हुआ।

सूर्योदय परिज्ञानः—

इष्ट (अपने) स्थान (देश) से जो स्थान (देश) पूर्व की ओर हों वहां इष्ट स्थान से प्रथम (पहले वा जल्दी) सूर्योदय होता है। एवं इष्टस्थान से जो स्थान पश्चिम की ओर हों वहां इष्ट देश से पश्चात् (पीछे वा बाद) सूर्योदय होता है।

—: उदाहरण :—

इष्ट स्थान (गढवाल) स्टैण्डर्ड रेखास्थान पूर्व है इसलिए गढवाल से प्रथम (पहले) स्टैण्डर्ड स्थान में सूर्योदय हुआ। एवं इष्ट स्थान (गढवाल) से मध्य रेखा नगर उज्जैन पश्चिम है इसलिए गढवाल से पश्चात् (पीछे वा बाद) उज्जैन में सूर्योदय हुआ।

सूर्योदयास्तकाल साधन रीतिः—

इष्ट दिन की सूर्य क्रान्ति उत्तर हो तो मिनटादि चर में ६ घण्टा युक्त करे तब सूर्यास्त काल के घण्टादि होते हैं। उन को १२ घण्टे में हीन करे तब शेष सूर्योदय काल के घण्टादि होते हैं। यदि इष्ट दिन की सूर्य क्रान्ति दक्षिण हो तो मिनटादि चर में ६ घण्टा युक्त करे तब सूर्योदयकाल के घण्टादि होते हैं। उन को १२ घण्टे में हीन करे तब सूर्यास्त काल के घण्टादि होते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

इष्ट दिन ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया सोमवार को सूर्य क्रान्ति उत्तर है अतः इष्ट दिन के चर ४९ मिनिट ४१ सेकण्ड में ६ घण्टे युक्त किये तो इष्ट दिन में ६ बज कर ४९ मिनिट ४१ सेकण्ड पर इष्टस्थान (गढवाल) में सूर्यास्त हुआ। इस को १२ घण्टे में हीन किया तो इष्ट दिन में ५ बजकर १० मिनिट १९ सेकण्ड पर इष्टस्थान (गढवाल) में सूर्योदय हुआ।

प्रकारान्तर से सूर्य के उदय तथा अस्त काल साधन रीतिः—

पृथक् प्रमाणं वसतेश्च वासरप्रमाणमक्षैः परिभाजितं फलम्।
होराननं स्यादुदयास्तकालयोः पत्युर्हृषीकेशपदौकसां क्रमात् ॥ ५४ ॥

इष्ट दिन के रात्रिमान और दिनमान के पृथक् पृथक् ५ से भाग दे लब्ध क्रम से सूर्योदयकाल तथा सूर्यास्त-काल के होरा (घण्टा) प्रभृति होते हैं।

—. उदाहरणः —

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया सोमवार के दिन २५ घटी ४७ पल रात्रिमान है। इस में ५ से भाग दिया तो लब्ध ५।९।२४ सूर्योदयकाल के होरा (घण्टा) प्रभृति हुए अर्थात् ५ बजकर ९ मिनिट २४ सेकण्ड पर गढवाल में सूर्योदय हुआ। एवं दिनमान ३४।१३ में ५ से भाग दिया तो लब्ध ६।५०।३६ सूर्यास्तकाल के होरा (घण्टा) प्रभृति हुए अर्थात् इष्ट दिन मे ६ बजकर ५० मिनिट ३६ सेकण्ड पर गढवाल में सूर्यास्त हुआ।

ग्रीनविच देशान्तरानयन रीतिः—

इष्ट स्थान के रेखांशों को ४ से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध होरा (घण्टा) प्रभृति ग्रीनविच का देशान्तर होता है। यह सर्वत्र सर्वदा धन होता है।

—: उदाहरण :—

७९°।३०' गढवाल के रेखांश हैं। इन को ४ से गुणा तो ३१८।० हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ५।१८ होरादि हुए। इन को ग्रीनविच के सूर्योदय समय ६।१२।३० में युक्त किया तो ११।३०।३० गढवाल का समय हुआ अर्थात् ग्रीनविच में जिस समय सूर्योदय हुआ उस समय गढवाल में दिन के ११ बजकर ३० मिनिट ३० सेकण्ड हुए।

स्टैण्डर्डरेखा देशान्तर (रेल्वे लांगीटयूड) साधन रीतिः—

इष्ट स्थान के रेखांशों का और ८२°।३०' स्टैण्डर्ड रेखांशों का अन्तर करे तब जो शेष बचे उस को ४ से गुणकर जो गुणन फल हो उस में ६० से भाग दे लब्ध होरादि स्टैण्डर्ड रेखा देशान्तर होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

—: उदाहरण :—

८२°।३०' स्टैण्डर्ड रेखांश का और गढवाल के ७९°।३० रेखांश का अन्तर किया तो ३।० शेष बचे। इन को ४ से गुणा तो १२।० हुए इन में ६० से भाग दिया तो ०।१२ होरादि स्टैण्डर्ड देशान्तर हुआ।

विभिन्न स्थानों के देशान्तर साधन रीतिः—

जिन दो स्थानों के देशान्तर का साधन करना हो उन दोनों स्थानों के रेखांशों का अन्तर करे तब जो शेष बचे उस को ४ से गुणकर ६० से भाग दे लब्ध होरादि इष्ट स्थानों का देशान्तर होता है।

७९°।३०' गढवाल के रेखांश का और ८३°।२' काशी के रेखांश का अन्तर किया तो ३।३२ शेष बचे। इन को ४ से गुणा तो १४।८ हुए इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ०।१४।८ इष्ट स्थानों का देशान्तर हुआ।

एवं ७५°।४६' मध्यरेखा नगर उज्जैन के रेखांशों का और इष्ट स्थान गढवाल के ७९°।३०' रेखांशों का अन्तर किया तो ३।४४ शेष बचे। इन को ४ से गुणा तो १४।५६ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ०।१४।५६ उज्जैन और गढवाल का होरादि देशान्तर हुआ।

देशान्तर के धन तथा ऋण का एवं समय का परिज्ञानः—

पश्चिम में स्थित (न्यून रेखांश वाले) स्थान के समय में होरादि देशान्तर धन (युक्त) करे तब पूर्व में स्थित (अधिक रेखांश वाले) स्थान का ' समय ' होता है। एवं पूर्व में स्थित (अधिक रेखांश वाले) स्थान के समय में होरादि देशान्तर ऋण (हीन) करे तब पश्चिम में स्थित (न्यून रेखांश वाले) स्थान का ' समय ' होता है।

— : उदाहरण :—

गढवाल से स्टैण्डर्ड रेखा स्थान पूर्व है इसलिए गढवाल के सूर्योदय समय ५।१।३१ में स्टैण्डर्डरेखा देशान्तर ०।१२।० को पूर्व होने के कारण ऋण किया तो ४ बजकर ४९ मिनिट ३१ सेकण्ड पर स्टैण्डर्ड रेखास्थान में सूर्योदय हुआ। एवं गढवाल से उज्जैन पश्चिम है इसलिए गढवाल के सूर्योदय समय ५।१।३१ में उज्जैन के देशान्तर ०।१४।५६ को पश्चिम होने के कारण धन किया तो ५ बजकर १६ मिनिट २७ सेकण्ड पर उज्जैन में सूर्योदय हुआ।

रेलवे का स्पष्ट समय (स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाइम) साधन रीतिः—

स्थानीय सूर्योदयादि समय (लोकल टाइम वा धूप घड़ी के समय) में स्टैण्डर्ड के समय) में स्टैण्डर्ड देशान्तर निमेषादि को यथा गत धन ऋण करे तब जो होरादि हों उन में व्यस्त काल समीकरण निमेषादि को यथागत धन ऋण से विपरीत करे अर्थात व्यस्त काल समीकरण निमेषादि धन हों तो ऋण करे और ऋण होतो धन करे तब रेलवे घड़ी का स्पष्ट समय (स्टैण्डर्ड टाइम होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

--:उदाहरण:--

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया सोमवार के दिन ५ बजकर १० मिनिट १९ सेकण्ड पर गढवाल में सूर्योदय हुआ। इस में स्टैण्डर्ड रेखा देशान्तर ०।१२।० को स्टैण्डर्ड रेखा स्थान से इष्ट स्थान (गढवाल) पश्चिम में होने के कारण धन किया तो ५।२२।१९ घण्टादि हुए।

इष्ट दिन में व्यस्त काल समीकरण–३।३६ ऋण है इस को पूर्वागत घण्टादि ५।२२।१९ में धन किया तो ५।२५।५५ घण्टादि हुए अतः गढवाल में जिस समय सूर्योदय हुआ उस समय रेलवे की घड़ी में ५ बजकर २५ मिनिट ५५ सेकण्ड हुए।

रेलवे समय (स्टैण्डर्ड टाइम) से स्थानीय समय साधन रीतिः—

रेलवे (रिष्टवाच इत्यादि) घड़ी पर जितने बजे हों उन में स्टैण्डर्ड देशान्तर निमेषादि को विपरीत धन ऋण करे अर्थात् स्टैण्डर्ड रेखा देशान्तर धन होतो ऋण करे और ऋण होतो धन करे। तदनन्तर कालसमीकरण निमेषादि को यथागत धन ऋण करने से इष्टस्थान (स्थानीय या धूप घड़ी) के इष्ट समय में होरादि होते हैं।

—:उदाहरण:--

गढवाल में ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया सोमवार को सूर्योदय काल में रेलवे टाइम ५।२५।५५ होरादि है इस में धन स्टैण्डर्ड देशान्तर ०।१२।० को विपरीत ऋण किया तो ५।१३।५५ होरादि हुए। इन में काल समीकरण ३ मिनिट ३६ सेकण्ड ऋण को यथागत ऋण किया तो ५ बजकर १० मिनिट १९ सेकण्ड पर गढवाल में सूर्योदय हुआ।

रेलवे समय के साधन का अन्योदाहरणः--

संवत् १९९६ आषाढ शुक्ल प्रतिपदा रविवार के दिन गढवाल में किस समय सूर्योदय होगा और उस समय रेलवे की घड़ी में क्या बजा रहेगा।

३०°।१५° गढवाल का अक्षांश है। आषाढ शुक्ल प्रतिपदा के दिन २३°।२४° सूर्य की उत्तर क्रांति है। व्यस्त काल समीकरण + १ पल या २४ सेकण्ड है। ३०° अक्षांश और २३° क्रान्त्यंश का चर ५६ मिनिट ४६ सेकण्ड है और ३१° अक्षांश और २३° क्रान्त्यंश का चर ५९ मिनिट ६ सेकण्ड है। इन दोनों को अन्तर किया तो २।२० शेष बचे। इन को अक्षांश कला १५ से गुणा तो ३५।० से हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध ० मिनिट ३५ सेकण्ड हुए। इन को ३० अक्षांश २३ क्रान्त्यंश के चर ५६ मिनिट ४६ सेकण्ड में युक्त किया तो ५७ मिनिट २१ सेकण्ड हुए। तदनन्तर ३०° अक्षांश और २३ क्रान्त्यंश का चर ५६ मिनिट ४६ सेकण्ड है। एवं ३०° अक्षांश और २४° क्रान्त्यंश का चर ५९ मिनिट ३५ सेकण्ड है। इन दोनों का अन्तर किया तो २।४९ शेष बचे। इन को क्रान्ति की कला २४ से गुणा तो ६७।३६ हुए। इन में ६० से भाग दिया तो लब्ध १ मिनिट ८ सेकण्ड हुए। इन को पूर्वागत चर ५७ मिनिट २१ सेकण्ड में युक्त किया तो आषाढ शुक्ल प्रतिपदा के दिन ५८ मिनिट २९ सेकण्ड गढवाल का चर हुआ। इष्ट दिन में सूर्य की उत्तर क्रान्ति है इसलिए ६ घण्टे में ५८ मिनिट २९ सेकण्ड चर को युक्त किया तो गढवाल में आषाढ शुक्ल प्रतिपदा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

के दिन ६ बजकर ५८ मिनिट २९ सेकण्ड पर सूर्यास्त होगा। इस अस्त समय ६।५८।२९ को १२।०।० में हीन किया तो ५ घण्टा १ मिनिट ३१ सेकण्ड शेष बचे। इसलिए इष्टदिन में ५ बजकर १ मिनिट ३१ सेकण्ड पर गढवाल में सूर्योदय होगा। यह गढवाल की धूपघड़ी का समय है।

गढवाल से स्टैण्डर्ड रेखा देशान्तर १२ मिनिट पूर्व है। किन्तु स्टैण्डर्ड रेखा स्थान से इष्टस्थान (गढवाल) पश्चिम में है इसलिए गढवाल के सूर्योदय काल ५।१।३१ में स्टैण्डर्ड रेखा देशान्तर ०।१२।० को इष्ट स्थान पश्चिम होनेके कारण धन किया तो ५।१३।३१ होरा (घण्टा) प्रभुति हुए। इस दिन व्यस्त काल समीकरण +१ पल अर्थात् २४ सेकण्ड धन है। इस को पूर्वागत ५।१३।३१ होरादि में धन होने के कारण ऋण किया तो ५।१६।७ होरादि हुए। इस लिए गढवाल में जिस समय सूर्योदय होगा उस समय रेलवे की घड़ी में ५ बजकर १३ मिनिट ७ सेकण्ड होंगे।

इस से विदित है कि धूपघड़ी के अनुसार ५ बजकर १ मिनिट ३१ सेकण्ड पर गढवाल में सूर्योदय होगा और रेलवे घड़ी में ५ बजकर १३ मिनिट ७ सेकण्ड होंगे। इन दोनों का ११ मिनिट ३६ सेकण्ड का अन्तर होगा। इस लिए इस दिन गढवाल की धूप घड़ी के समय में ११ मिनिट ३६ सेकण्ड धन करने से रेलवे का समय ज्ञात होगा। एवं रेलवे का समय ज्ञात हो तो उस में ११ मिनिट ३६ सेकण्ड ऋण करने से गढवाल की धूप घड़ी का समय होगा।

भारत के विभिन्न स्थानों के समय का परिज्ञानः—

अक्षांश तथा देशान्तरों के अन्तर के अनुसार प्रत्येक स्थान का स्थानीय समय पृथक पृथक हुआ करता है अतः सुविधाके लिए समस्त भारत में एक ही समय व्यवहार किया जाता है, जो 'रेलवे (स्टैण्डर्ड) टाइम' के नाम से प्रसिद्ध है। निम्न लिखित तालिका में भारत विभिन्न स्थानों का समय दिया जाता है।

जिस समय गढवाल (श्रीनगर) दो पहर को बारह बजता है, उस समय निम्नलिखित स्थानों में कितना बजता है। यह निम्नलिखित तालिका से ज्ञात होगा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गढवालदेशीयमध्याह्न (१२ बजे) कालतो भारतीयकतिपयस्थान समयबोधकसारणीयम् ।

स्थानानि	घं.	मि.	से.	स्थानानि	घं.	मि.	से.	स्थानानि	घं.	मि.	से.
अमरावती	११	५३	०	काशी	१२	१४	८	बम्बई	११	३३	१६
अमृतसर	११	४१	२८	ग्वालीयर	१२	५४	४०	मद्रास	१२	३	८
अजमेर	११	४०	४०	जबलपूर	१२	१	४८	मैसोर	११	४८	३६
अयोध्या	१२	११	०	जयपूर	११	४५	१६	रांची	१२	२३	२४
अहमदाबाद	११	३२	२४	जोधपूर	११	३४	४	रावलपिण्डी	११	३४	१२
आगरा	११	५४	८	झांशी	११	५६	१६	लखनऊ	१२	५	४४
आरा	१२	२०	४०	दिल्ली	११	५२	५२	लाहौर	११	३९	२०
इन्दौर	११	४५	२४	नागपुर	११	५८	२०	शिकारपुर (सिंध)	११	५६	४०
इलाहबाद	१२	०	२८	पुना	११	३७	२८	शिलांग	१२	४९	३२
उज्जैन	११	४५	४	पेशावर	११	२८	१६	शिमला	११	५०	३६
उदयपुर	११	३६	५६	फैजाबाद	१२	१०	३२	श्रीनगर (काश्मीर)	११	४१	१२
कराची	११	१०	४	बडौदा	११	३४	५२	सुरत	११	३३	२०
कलकत्ता	१२	३०	२४	बाकीपुर (पटना)	१२	२२	४८	हैदराबाद (सिंध)	११	१५	२८
कानपुर	१२	३	२४	बरेली (बांस)	११	५९	३६	हैदराबाद (निजाम)	११	५५	४८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गढवालदेशीयमध्याह्न (१२ बजे) कालतो भारतेतरकतिपयनगराणां समयबोधकसारणीयम्

स्थानानि	घं.	मि.	से.	स्थानानि	घं.	मि.	से.
कोलम्बो (सिलोन)	१२	१	४४	अदन (अरब) (प्रातः)	९	२६	२४
रंगून (ब्रम्मा) (मध्याह्नपरतः)	१३	६	४८	सिंगापूर (मलाया) (मध्याह्नपरतः)	१३	३७	२४
पेकिंग (चीन) (सायं)	१४	२७	३६	पर्थ (पश्चिमी आस्ट्रेलिया) (सायं)	१४	११	२४
टोकियो (जापान) (सायं)	१६	१	२४	एडीलेड (दक्षिणी आस्ट्रेलिया) (सायं)	१५	५६	३२
बर्लिन (जर्मनी) (प्रातः)	७	३५	३६	सिडनी (आस्ट्रेलिया) (सायं)	२६	४६	४८
वार्सा (पोलिण्ड) (प्रातः)	८	६	२४	विक्टोरियाप्रपात (जेम्बेजी नदी,अफ्रिका)(प्रातः)	८	२५	२४
कान्स्टेंटिनोपल (टर्की) (प्रातः)	८	३८	०	विनीपेगझील (मनी टोबा. कनाडा) (अर्धरात्रं)	१२	१४	०
लण्डन (इङ्गलैण्ड) (प्रातः)	६	४२	२०	क्वीबेक (क्वीबेक. कनाडा पूर्वी) (अर्द्धरात्रं)	१	५७	०
ग्रीनविच (इङ्गलैण्ड) (प्रातः)	६	४२	०	डेमेरारा (अमेरिका) (अर्द्धरात्रं)	२	३५	५६
रोम (इटली) (प्रातः)	७	३१	५२	सेण्टजोन (कनाडा). न्यूब्रन्सविक पूर्वी) (अ.रा.)	२	१७	५२
पेरिस (फ्रांस) (प्रातः)	६	५१	२०	शिकागो (U.S.A.) (गतार्द्धरात्र्यनन्तरं)	१२	५१	२०
मालटा (भूमध्यसागर) (प्रातः)	७	२६	२४	न्यूयार्क (अमेरिका) (गतार्द्धरात्र्यनन्तरं)	१	४५	५६
केपटाउन (द. अफ्रिका) (प्रातः)	७	४१	२४	मास्को (योरोपीयरूस) (प्रातः)	९	१२	२८

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पाश्चात्यदेशीय घटिकायंत्र (रिष्ट वाच) द्वारा इष्ट काल साधन रीतिः—

होरादिनेनोदयकालिकेन होरामुखं स्वस्य विवर्जितं यत् ।
शेषं शरघ्नं विहृतं भुजाभ्यां घट्यादिको लब्धमिहेष्टकालः ॥ ५५ ॥

इष्ट समय की होरा (घण्टा) निमेष (मिनिट) प्रभृति में इष्ट स्थान के सूर्योदय काल की होरा (घण्टा) निमेष मिनिट) हीन करे तब जो शेष बचे उन को ५ से गुण कर २ से भाग दे लब्ध घट्यादि इष्टकाल होता है। यदि इष्ट समय मध्याह्न (१२ बजे) से पश्चात् (पीछे या बाद) का हो तो होरा (घण्टा) में १२ को युक्त करें तब सूर्योदय काल के होरादि को हीन करे। एवं इष्ट समय अर्द्धरात्र (रात्रि के १२ बजे) से पश्चात् का हो तो होरा में २४ युक्त तब सूर्योदय काल के होरादि को हीन करे तब जो शेष बचे उन को ५ से गुण कर २ भाग दे लब्ध घट्यादि इष्टकाल होता है।

—: उदाहरण :—

यहां इष्ट समय रात्रि के ११ बजकर ३४ मिनिट ११ सैकण्ड का है। यह रात्रि के १२ बजे से पूर्व का है इस लिए ११ बजे में १२ घण्टे युक्त किये तो २३।३४।१२ 'स्पष्ट इष्ट समय' हुआ। इस में सूर्योदयकाल के ५ बजे ५ मिनिट को हीन किया तो १८।२९।१२ शेष बचे। इन को ५ से गुणा तो ९२।२६।० हुए। इन में २ से भाग दिया तो लब्ध ४६ घटी १३ पल 'इष्ट काल' हुआ।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे भाषाटीकोदाहरणोपेते लग्नेष्टशुद्धिप्रकरणं विंशमवसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

सूतिकाप्रकरणं प्रारभ्यते ।

पिता के परोक्ष में बालकजन्म योगः—

ना ऽऽलोकिते चन्द्रमसोदयाचले तदा परोक्षस्य पितुः प्रजातकः ।
विदेशगस्योदय इन्द्वनीक्षिते मेपूरणाद् भ्रष्ट इने चरे गृहे ॥ १ ॥

जन्म लग्न यदि चन्द्रमा से दृष्ट न होतो पिता के परोक्ष में बालक का जन्म होता है । एवं 'लग्न' चन्द्रमा से दृष्ट न हो और लाभ व्यय भाग्य वा अष्टम में चर राशि गत सूर्य होतो पिता के पर देश रहनेपर बालक का जन्म होता है ।

मार्गस्थितस्य द्वितनुं गते रवौ भ्रष्टे खतोऽङ्गे न शशीक्षिते जनिः ।
हेलौ स्थिरेऽङ्गायवधान्त्यगे तनौ नाब्जेक्षिते जन्म शिशोः परोक्षके ॥ २ ॥
स्वदेशसंस्थस्य पितुस्ततो दिने दिवाकरे वक्रविलोकिते निशि ।
मन्दे महीनन्दनलोकिते पितुः परोक्ष आहुर्जननं शिशोर्बुधाः ॥ ३ ॥

यदि दशमस्थान से भ्रष्ट सूर्य अर्थात् लाभ व्यय नवम वा अष्टम स्थान में स्थित सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो और लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो पिता के मार्ग में रहनेपर बालक का जन्म होता है । स्थिर राशि गत सूर्य यदि नवम एकादश अष्टम वा व्यय में हो और लग्न को चन्द्रमा न देखता होतो पिता के स्वदेश रहतेपर भी पिता के परोक्ष में बालक का जन्म होता है । दिन में बालक का जन्म हो और सूर्य को मङ्गल देखता हो अथवा रात्रि मे बालक का जन्म हो और शनि को मङ्गल देखता होतो पिता के परोक्ष में बालक का जन्म होता है । इस प्रकार पण्डितजन कहते हैं ।

नारीनिकेते क्षितिनन्दने वा पतङ्गपुत्रे पुरमन्दिरे वा ।
कलानिधौ काव्यकलेशजन्योरन्तः स्थिते तातपरोक्षजन्म ॥ ४ ॥

सप्तम में मङ्गल हो अथवा लग्न में शनि हो अथवा शुक्र बुध के अन्तराल में चन्द्रमा हो तो पिता के परोक्ष में बालक का जन्म होता है ।

दृष्टाः खलैः खलखगाः खररश्मितोऽस्ते
तीर्थे मतावगगृहे सवितुः स्वदेशे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्याद्बन्धनं चरगृहे यदि तेऽन्यदेशे
ते चेद् द्विदेहभवने पथि बन्धनं स्यात् ॥ ५ ॥

सूर्य से सप्तम, नवम तथा पञ्चम में स्थिर राशि गत पाप ग्रह हों और वे पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो स्वदेश में पिता का बन्धन होता है। सूर्य से सप्तम नवम तथा पञ्चम में चर राशि गत पाप ग्रह हों और वे पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो पर देश में पिता का बन्धन होता है। एवं सूर्य से सप्तम, नवम तथा पञ्चम में द्विस्वभाव राशि गत पाप ग्रह हों और वे पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो मार्ग में पिता का बन्धन होता है।

पिता के रोग ग्रस्त योगः—

भगांशगे भगात्मजे भगेन वीक्षितेऽथवा।
कुजेक्षिते जनौ शिशोः पिताऽऽमयेन संयुतः ॥ ६ ॥

यदि शनि सूर्य के नवांश में स्थित होकर सूर्य से दृष्ट हो अथवा मङ्गल से दृष्ट होतो बालक के जन्म काल में बालक का पिता रोग ग्रस्त होता है।

पिता के मरण तथा कष्ट के योगः—

कोणारुणौ चरभगौ कुजयुक्तदृष्टौ
तज्जातकस्य जनकस्य मृतिर्विदेशे।
पापौ पयःपथिगतौ पुरपे बलोने
बालस्य जन्मसमये जनकः सकष्टः ॥ ७ ॥

यदि शनि तथा सूर्य चर राशि में स्थित होकर मङ्गल से युक्त वा दृष्ट हों तो जातक के पिता का विदेश में मरण होता है। चतुर्थ तथा नवम में दो पाप ग्रह हों और लग्नेश निर्बल होतो बालक के जन्म समय में बालक का पिता दुःखी होता है।

माता के कष्ट के योग एवं सुख तथा कष्ट से प्रसव के योगः—

याम्यान्त्यगावघखगौ घनतोऽथ चन्द्रा—
त्क्रूरे हितास्तमयगे निगदेज्जनन्याः।
केंद्रे शुभैः सुखखगैः प्रसवः सुखेन
युक्तः खलैर्मतिवधूविधिगैर्व्यथातः ॥ ८ ॥

जन्म लग्न से अष्टम तथा व्यय में पाप ग्रह हों अथवा चन्द्रमा से चतुर्थ तथा सप्तम में पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट होता है। चतुर्थ तथा दशम में शुभ ग्रह हों तो सुख से प्रसव होता है। एवं पञ्चम, सप्तम तथा नवम में पाप ग्रह हो तो कष्ट से प्रसव होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सीमन्तकर्म्मादि रहित बालक जन्म योगः—

दुःस्थौ विधिव्योमविभू तनूविभुर्बली किमाये ऽसति ऽतद्गृहे ऽथ वा।
जातस्तदा प्राथमिको ऽपि पूरुषः सीमन्तकर्मादि विनैव जायते ॥ ९ ॥

नवमेश तथा भाग्येश ये दोनों त्रिक (६।८।१२) स्थान में हों और लग्नेश बलवान हो अथवा लाभ में पाप ग्रह हो वा उस की राशि हो तो उत्पन्न बालक प्रथम होने पर भी सीमन्त कर्मादि से रहित होता है।

शीर्षादि अवयव से बाल जन्म योगः—

मस्तकोदयभैर्जन्म शिरसा जायते शिशोः।
पद्भ्यां पृष्ठोदयैर्जन्म पाणिभ्यामुभयोदये ॥ १० ॥

यदि शीर्षोदय राशि के लग्न में बालक का जन्म हो तो शिर से जन्म होता है। पृष्ठोदयराशि के लग्न में जन्म हो तो पैरों से जन्म होता है। एवं उभयोदय (मीन) राशि के लग्न में जन्म हो तो हाथों से जन्म होता है।

बालक के शिरपतन की दिशा का परिज्ञानः—

कुम्भीरभे युवतिभे गवि याम्यमूर्द्धा
प्रत्यक्छिराः कलशतौलिनृयुग्मभेषु।
पुष्पंधयानिमिषकर्किषु सौम्यमूर्द्धा
प्राचीशिरा हरिहयक्रियभेषु जातः ॥ ११ ॥

मकर कन्या वा वृष लग्न में दक्षिण दिशा में बालक का शिर गिरता है। कुम्भ तुला वा मिथुन लग्न में पश्चिम दिशा में बालक का शिर गिरता है। वृश्चिक मिन धो कर्क लग्न में उत्तर दिशा में बालक का शिर गिरता है। एवं सिंह धनु वा मेष लग्न में पूर्व दिशा में बालक का शिर गिरता है।

मार्गादि में बाल जन्म के योगः—

मार्गे जनिर्भांशसमानगोचरे चरे ऽथ गेहे ऽगृहे जनुर्भवेत्।
निजालये स्वर्क्षलवस्थिते लवभयोः फलं वीर्य्यवशाद्बुधैर्मतम् ॥ १२ ॥

जन्म लग्न की राशि वा लग्न गत नवांश राशि जिस प्रदेश में विचरे उस में बालक का जन्म होता है। लग्न में चर राशि हो तो राशि के विचरण प्रदेश के मार्ग में जन्म, लग्न में स्थिर राशि हो तो राशि के विचरण प्रदेश में घर के समीप जन्म एवं वर्गोत्तम लग्न में जन्म हो तो अपने घर में जन्म होता है। नवांश और राशि का फल उन के बल से विचारना चाहिए।

नाव में प्रसव के योगः—

पीयूषगौ पूर्णतनौ कुलीरभे तनौ ससौम्ये सलिले सशोभने।
वाङ्गे कलत्रे कुतले कलाधरे स्त्री गर्भिणी पोतगता प्रसूयते ॥ १३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर्क राशि में पूर्ण चन्द्रमा हो लग्न में बुध हो एवं चतुर्थ में शुभ (गुरु) हो तो (१) लग्न सप्तम वा चतुर्थ में चन्द्रमा हो तो नाव में गर्भवती स्त्री का प्रसव होता है।

जल में प्रसव के योगः—

तोयोदयं तोयगतस्तमीशः सम्पूर्णदेहः समवेक्षते वा।
वार्मण्डलोऽङ्गाम्बर वारियातो वार्म्युद्गमो वारिणि सूयते स्त्री ॥ १४ ॥

लग्न में स्थित जलचर राशि को पूर्ण चन्द्रमा देखता हो अथवा लग्न दशम वा चतुर्थ में चन्द्रमा हो और लग्न में जल चर राशि हों तो जल में गर्भवती स्त्री का प्रसव होता है।

कारागार (कैद) तथा अवट (गर्त्त वा खड्ड) जन्म के योगः—

संवीक्ष्यमाणे दुरितैः शनैश्चरेऽवसानगे कल्पगते कलाभृति।
गुप्त्यां प्रसूतिः सकुलीरवृश्चिकेऽङ्गे पङ्गलौ पर्वरिवीक्षिते ऽवटे ॥ १५ ॥

व्यय में शनि हो और वह पाप दृष्ट हो एवं लग्न में चन्द्रमा हो तो कारागार (कैद) में जन्म होता है। कर्क वा वृश्चिक का शनि लग्न में हो और वह चन्द्रमा से दृष्ट हो तो अवट (गर्त्त वा खड्ड) में जन्म होता है।

क्रीडा गृहादि में प्रसव परिज्ञानः—

सवारिभेऽङ्गे विबुधेक्षिते ऽसिते क्रीडागृहे जन्म वदेत्सुरालये।
विलोक्यमाने यदि लोकबन्धुना संवीक्षितेऽब्जेन तु सोखरावनौ ॥ १६ ॥

जल चर राशि गत शनि यदि लग्न में स्थित होकर बुध से दृष्ट हो तो क्रीडा (नृत्य) गृह में जन्म, और वह शनि यदि सूर्य से दृष्ट हो तो देवालय में जन्म एवं वह शनि यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो सोखरभूमि अर्थात् बालुका युक्त भूमि में जन्म होता है।

कुर्य्यात्सवं प्रेक्ष्य कुजो नराङ्गगं पङ्गु श्मशाने भविधू मनोहरे।
विच्छैल्पिके वाक्पतिरग्निहोत्रके भास्वान्सुरेलापतिगोकुलेषु च ॥ १७ ॥

लग्न में नर राशि (धनु का पूर्वार्द्ध मिथुन कन्या तुला वा कुम्भ) हो और उस में स्थित हुए शनि को मङ्गल देखता हो तो श्मशान में प्रसव को करता है। नर राशि का शनि लग्न में हो और उस को शुक्र चन्द्र देखते हों तो मनोहर गृह में प्रसव को करते हैं। यदि उस शनि को बुध देखता होतो शिल्प शाला में जन्म, गुरु देखता हो तो अग्नि शाला में जन्म एवं सूर्य देखता हो तो देवालय राजद्वार वा गोशाला में जन्म होता है।

तातप्रसूवेश्मसु तद्बलात्तरुशालादिषूत्पत्तिरिहोत्तमग्रहैः।
निम्नोपगैर्वाङ्गविधू न वीक्षितावेकर्क्षगैस्तैर्विजने सवो भवेत् ॥ १८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पितृ संज्ञक ग्रहों के बली होने पर पिता के घर में जन्म एवं मातृ संज्ञक ग्रहों के बली होने पर माता के घर में जन्म होता है। शुभ ग्रह अपनी नीच राशि में हों तो वृक्ष के नीचे वा गोशालादि में जन्म होता है। यदि नीच गत शुभ ग्रह एक राशि में स्थित होकर लग्न तथा चन्द्रमा को न देखते हों तो विजन (वन) में प्रसव होता है।

प्रसवगृह परिज्ञानः—

दग्धं कुजे दिनकरे न दृढं सकाष्ठं
नेमौ नवं प्रसववेश्म बुधे विचित्रम्।
वागीश्वरे बलयुते सुदृढं सितस्य
नाव्यं मनोज्ञमिनजे सदनं पुराणम् ॥ १९ ॥

यदि जन्म समय में सब ग्रहों की अपेक्षा मङ्गल बली हो तो दग्ध सूतिका गृह होता है। सूर्य अधिक बली हो तो काष्ठ युक्त अदृढ (कच्चा) सूतिका गृह होता है। चन्द्रमा बली हो तो नवीनप्रसवगृह, बुध बली हो तो विचित्र प्रसवगृह, गुरु बली हो तो अत्यन्त दृढ प्रसवगृह, शुक्र बली हो तो नूतन और मनोहर प्रसव गृह एवं शनि बली हो तो पुराणा प्रसव गृह होता है।

प्रसवगृह द्वार परिज्ञानः—

द्वारं प्राक्कुजभवनाच्चतुष्टयस्थ—
खेटस्यैव दिशि शिशोर्जनुर्गृहस्य।
वाऽऽशायां बलसहितस्य खौकसो वा
होराया भदिशि वदन्ति हौरिकेन्द्राः ॥ २० ॥

जन्म लग्न से केन्द्र में जो ग्रह हो उस की दिशा में प्रसव गृह का द्वार होता है। अथवा सब से अधिक बली ग्रह की दिशा में प्रसव गृह का द्वार होता है। अथवा लग्न राशि की दिशा में प्रसव गृह का द्वार होता है। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र वेत्ता कहते है।

बाल रोदन परिज्ञानः—

उच्चैः शिशू रोदति लेयचापभृच्छागत्रयेष्वर्द्धरवेन योषति।
कुम्भे मृगेऽल्पं रुदनं घटे झषे कीटे य इन्दूद्गमयोर्बली ततः ॥ २१ ॥

सिंह, धनु तथा मेष से तीन अर्थात् मेष, वृष और मिथुन मे चन्द्र वा लग्न राशि हो तो बालक उच्च स्वर से रोदन करता है। कन्या कुम्भ तथा मकर में चन्द्र वा लग्न राशि होतो बालक अर्द्धस्वर से रोदन करता है। एवं तुला, मीन तथा वृश्चिक में चन्द्र वा लग्न राशि होतो बालक अल्प रोदन करता है। चन्द्रमा और लग्न इन दोनों में जो अधिक बली हो उस से बालक के रोदन का विचार करे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नाल वेष्टित बालक जन्म के योगः--

निर्य्याणपे घनगते सखलेऽहियुक्ते
किं कण्टके प्रथमपे गुलिकाहियुक्ते ।
यद्वा विनाशपयुते ऽथ कुजत्रिभागे
नीहारगौ खलतनौ किमु सत्खगेन्द्रैः ॥ २२ ॥

प्राप्त्यर्थगैः किमगुविन्मृदुगा विलग्न—
त्र्यंशे ऽथवा निजपयुक्ततनुत्रिभागे ।
नो लोकिते शुभकरैरहिवेष्टिताङ्गः
सोग्रे पुरे बहुलपापखपान्यदृष्टे ॥ २३ ॥

किं पन्नगाकचयुते ऽथ बहूग्रदृष्टे
पापोदये भवति नालनिवेष्टिताङ्गः ।
कल्पे क्रिये गवि हरौ यदि तत्र सौरे
वारे भभागसदृशे वपुषीह तद्वत् ॥ २४ ॥

लग्न में पापयुक्त तथा राहु युक्त अष्टमेश हो तो (१) लग्नेश केन्द्र में हो और गुलिक तथा राहु से युक्त हो वा अष्टमेश से युक्त हो तो (२) मङ्गल के द्रेष्काण में चन्द्रमा हो और पाप ग्रह की राशि का लग्न हो तो (३) लाभ तथा द्वितीय में ग्रह शुभ ग्रह हों तो (४) लग्न गत द्रेष्काण राशि में राहु, बुध तथा शनि हों तो (५) लग्न गत द्रेष्काण अपने स्वामी से युक्त हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो उक्त योगों में उत्पन्न बालक नाल वेष्टित होता है। लग्न में पाप ग्रह हो और वह बहुत पाप ग्रहों से दृष्ट हो वा राहु केतु से युक्त हो तो (१) अथवा लग्न में पाप ग्रह राशि हो और वह बहुत पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो बालक नाल से वेष्टित होता है। लग्न में मेष वृष वा सिंह राशि हो और उस में शनि वा मङ्गल हो तो लग्न में जो राशि वा जिस राशि का नवांश हो वह राशि कालपुरुष के जिस अङ्ग में हो बालक का वह अङ्ग नाल वेष्टित होता है।

साहौ शरीरे दुरितान्तरस्थे वा दैत्यदृष्टे कुज उद्गमस्थे ।
वारेक्षिते ऽङ्गे मृदुगे ऽथ पापदृगाणगात्रे जनितः सनालः ॥ २५ ॥

लग्न में राहु हो और वह पाप ग्रहों के अन्तराल में हो तो (१) लग्न में मङ्गल हो और वह राहु से दृष्ट तो (२) लग्न में शनि हो और वह मङ्गल से दृष्ट हो तो (३) लग्न में पाप ग्रह का द्रेष्काण हो तो उक्त योगों में उत्पन्न बालक नालवेष्टित होता है।

तुरीयपादर्क्षगते पतङ्गे बलैर्युतैः शेषविहङ्गमेन्द्रैः ।
द्विरात्मकस्थैर्यमलौभवेतां जातौ शिशू कोशनिवेष्टितौ तौ ॥ २६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यदि चतुष्पद (धनु का परार्द्ध मकर का पूर्वार्द्ध मेष वृष वा सिंह) राशि में सूर्य हो और शेष ग्रह बल से युक्त होकर द्विस्वभाव राशि में हों तो उक्त योग में नाल से वेष्टित यमल (जोडा) बालक उत्पन्न होते हैं।

एकः खलोऽङ्गे हृदये खलः शिशुर्नालाङ्कितो वा लसुनाङ्कितः कुजे।
साच्छे विनालस्तपने स्वनिम्नभेऽब्जेऽन्त्ये यमेऽङ्गे विपरीतसम्भवः ॥ २७ ॥

लग्न में एक पाप ग्रह हो और चतुर्थ में एक पाप ग्रह हो तो बालक नाल से वेष्टित वा लसुन (लाखण) से युक्त होता है। मङ्गल यदि शुक्र से युक्त हो तो बालक नाल से रहित होता है। अपनी नीच राशि में सूर्य हो, व्यय चन्द्रमा हो और लग्न में शनि हो तो बालक का विलोम जन्म होता है।

भूम्यादि में बाल जन्म योग तथा प्रसूति शयन योगः—

नीचाश्रितैर्गगनगैर्भुवि सम्भवोऽन्त—
रिक्षेऽङ्गनानिमिषकामहयोदयेऽथो।
सोमेऽसितर्क्षलवगे सलिलेऽम्बुभांशे
यद्वैनिवीक्षितयुते शयनं तमिस्रे ॥ २८ ॥

नीच राशि में बहुत ग्रह हों तो भूमि में बालक का जन्म होता है। कन्या मीन मिथुन वा धनु लग्न में अन्तरिक्ष (दोमाजिल) में बालक का जन्म होता है। शनि की राशि वा नवांश गत चन्द्रमा चतुर्थ में हो अथवा जलचर राशिगत वा जलचर राशि के नवांशगतचन्द्रमा यदि शनि से दृष्ट हो तो अन्धकार में सूतिका का शयन होता है।

रात्रि जन्म में दीपक के स्थान का परिज्ञानः

यद्भे भगे तद्दिशि दीपकस्य स्थानं प्रसूत्याः सदनेऽथ मूर्त्तेः।
आरम्भकाले परिपूर्णवर्त्तिरर्द्धेह मध्ये चरमेऽल्पशेषा ॥ २९ ॥

बालक के जन्म समय में जिस राशि में सूर्य हो उस राशि की दिशा में प्रसूतिका के गृह में दीपक स्थान होता है। जन्म काल में यदि लग्न का आरम्भ हो तो पूर्णवर्त्तिका (बत्ती) और लग्न के मध्य में अर्द्ध वर्तिका एवं लग्न के अवसान काल में अल्प वर्त्तिका होती है।

दीपश्चरोऽशिशिरगौ चरभे द्विदेहे
स्थानद्वयेऽगभवने कथितोऽगदीपः।
दीपश्चरश्चरपुरे द्विपुरे करस्थः
स्वस्थानसंस्थ उदितो हरिजेऽगराशौ ॥ ३० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चरराशि में सूर्य हो तो चर (चञ्चल) दीपक और द्विस्वभाव राशि में सूर्य हो तो दीपक दो स्थान में स्थापित होता है। एवं स्थिर राशि में सूर्य हो तो दीपक एक ही स्थान में स्थापित होता है। अथवा लग्न में चर राशि हो तो चर दीपक, द्विस्वभाव राशि हो तो हाथ में दीपक और स्थिर राशि हो तो दीपक स्थिर होता है।

दीपक में तेल का परिज्ञानः—

आधे त्र्यंशे तैलपूर्णः प्रदीपो मध्ये त्र्यंशेऽर्द्धोऽल्प इन्दौ तृतीये।
ज्ञेया वर्त्तिर्लग्नभर्त्तुर्वशेन वर्णं रूपं तत्समं वर्त्तिकायाः ॥ ३१ ॥

'चन्द्रमा' प्रथम द्रेष्काण में हो तो दीपक तेल से परिपूर्ण, मध्य द्रेष्काण में हो तो दीपक में आधा तेल और अल्प द्रेष्काण में हो तो दीपक में स्वल्प तेल होता है। लग्नेश के वश से वर्त्ती की न्यूनाधिकता एवं वर्त्ती का वर्ण तथा रूप लग्नेश के समान होता है।

प्रसूतिका के शयन गृह का परिज्ञानः—

तद्वास्तुनीन्द्रदिशि कर्कतुलालिकुम्भा—
जाङ्घेषु पाशिदिशि गोपतिभेऽथ सौम्ये।
वागीशबोधनगृहे वसतिं प्रसूत्याः
पञ्चानने मृगमुखे प्रवदेदवाच्याम् ॥ ३२ ॥

जन्म समय में कर्क तुला वृश्चिक कुम्भ वा मेष लग्न हो वा लग्न में उक्त राशियों का नवांश हो तो गृह के वास्तु के स्थान से पूर्वदिशा में प्रसूतिका शयन स्थान होता है। वृष लग्न वा वृषांश में पश्चिम दिशा में सूतिका का शयन स्थान, गुरु राशि (मीन धनु) के लग्न में वा बुध राशि (कन्या मिथुन) के लग्न में वा उन के नवांश में उत्तर दिशा में सूतिका का शयन स्थान एवं सिंह वा मकर लग्न में वा उस के नवांश में बालक का जन्म हो तो दक्षिण दिशा में सूतिका का शयन स्थान होता है।

द्वौ द्वौ च राशी क्रियभात्पुरन्दराद्याशासु कोणोपगता द्विरात्मकाः।
यद्धं जनौ लग्नगमस्य या दिशा तस्यां प्रसूत्याः शयनं समीरयेत् ॥ ३३ ॥

मेषादि दो दो राशि पूर्वादि चार दिशाओं में अर्थात् मेष वृष पूर्व में, कर्क सिंह दक्षिण में, तुला वृश्चिक पश्चिम और मकर कुम्भ उत्तर में जानने चाहिएं। एवं मिथुनादि एक एक द्विस्वभाव राशि आग्नेयादि विदिशाओं में अर्थात मिथुन आग्नेय में, कन्या नैर्ऋत्य में, धनु वायव्य में और मीन ईशान में जानना चाहिए। लग्न गत राशि की जो दिशा हो उस में सूतिका के शयन स्थान को कहे।

सूतिका गृह स्थित वस्त्र तथा भाण्ड परिज्ञानः—

रक्तं शुभ्रं हारितं वारिदाभं पीतश्वेतं चित्रकृष्णे प्रसूत्याः।
स्वर्णारव्याभं पिङ्गलं कर्बुराभं बभ्रुः स्वच्छं छागतो वास उक्तम् ॥ ३४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रक्त (लाल), शुभ्र (सफेद), हारित (हरित) , वारिदाभ (मेघसमान वर्ण), पीत श्वेत (पीला सफेद), चित्र (विचित्र), कृष्ण (काला), (स्वर्णाभ सुवर्ण के समान), पिङ्गल (पीला), कर्बुराभ (चितकबरा), बभ्रु न्योला के समान (एवं स्वच्छ) सफेद (मेषादि लग्नों के क्रम से प्रसूतिका के वस्त्र तथा भाण्डों का वर्ण कहे ।)

अम्बाम्बरं लग्ननवांशपाद्वा पात्रं वदेत्ताम्रमणी सुवर्णम् ।
सयुक्तिशुक्ति रजतं च मुक्तां लोहं बलोपेतविकर्त्तनार्थैः ॥ ३५ ॥

जन्म लग्न में जिस राशि का नवांश हो उस के स्वामी से माता के वस्त्रों का विचार करे । जन्म समय में सूर्यादि ग्रहों के मध्य में सब से अधिक बली हो उस ग्रह की धातु के वर्त्तन प्रसव गृह में होते है । सूर्य बली हो तो ताम्बा, चन्द्रमा चन्द्रकान्त मणि, भौम से सुवर्ण, बुध से युक्ति तथा शुक्ति (लाख सीप), गुरु से रजत (चान्दी) शुक्र से मुक्ता (मोती) एवं शनि से लोह के वर्त्तन कहे ।

प्रसव से पूर्व मातृ भोजन परिज्ञानः—

जननीभोजनं पूर्वं प्रसूतेः पस्त्यपाद्वदेत् ।
मित्रेविभौ रूक्षं मधुरं कठिनं विधौ ॥ ३६ ॥

कोमलं लेह्यपेयाद्यं गोत्रापुत्रे गुडं पयः ।
शोषणाम्लं ततो हेम्नि स्वल्पं विचित्रभोजनम् ॥ ३७ ॥

वागीश्वरे बहुरसं वटकाद्यं ततः सिते ।
हिमं पेयादि मधुरं कोले कोद्रव पूर्वकम् ॥ ३८ ॥

जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में जो राशि हो उस के स्वामी से बलाबल से प्रसव के पूर्व माता का भोजन कहना चाहिए । जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान का स्वामी यदि सूर्य हो तो रूखा, मधुर और कठिन भोजन, चन्द्रमा से कोमल तथा चाटने पीने के पदार्थ, मङ्गल से गुड़ दूध, सूखा तथा खट्टा भोजन, बुध से स्वल्प विचित्र भोजन, गुरु से बहुरस तथा वटकादि भोजन, शुक्र से शीतल, पीने योग्य तथा मधुर पदार्थ एवं शनि से कोद्रव (कोदों) प्रभृति भोजन कहना चाहिए ।

उपसूतिका संख्या परिज्ञानः—

गोकुम्भयोर्वेदमिताः क्रियेऽण्डजे करोन्मिते कर्किणि कार्मुके शराः ।
युग्मैणकन्यालिमृगेन्द्रतौलिषु कृशानुतुल्या उपसूतिका मताः ॥ ३९ ॥

वृष वा कुम्भ लग्न में जन्म हो तो ४ उपसूतिका, मेष वा मीन लग्न में २ उपसूतिका, कर्क वा धनु में ५ उपसूतिका एवं मिथुन मकर कन्या वृश्चिक सिंह वा तुला में ३ उपसूतिका जाननी चाहिएँ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यद्वा ग्रहैर्मूर्त्तिमृगाङ्कमध्यगैस्तुल्या निरुक्ता उपसूतिकाह्वयाः ।
दृश्ये दले बाह्यगता अदृश्यके त्वन्तःस्थिता रूपयुताः शुभग्रहैः ॥ ४० ॥

मिश्रैर्विमिश्रा मलिना अशोभनैर्यत्रोद्गमे ऽब्जे गलिते ऽङ्गना नहि ।
बह्वङ्गनाः पूर्णविधौ पुरोपगे तस्मिन्स्मरे द्वारिगताः सुयोषितः ॥ ४१ ॥

योषा मता युग्मगुणाः खगैः स्वभे त्र्यंशे नवांशे ऽथ निजोच्चगैः खगैः ।
वक्रं प्रयातैस्त्रिगुणाः स्वनिम्नभे मूढे दलं द्वित्रिगुणे सकृत्तदा ॥ ४२ ॥

लग्न तथा चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका यें होती हैं। जितने ग्रह दृश्यार्द्ध में हों उतनी उपसूतिका सूतिका स्थान के बाहर कहे। जितने ग्रह अदृश्यार्द्ध में हों उतनी उपसूतिका सूतिका गृह के भीतर कहे। उक्त ग्रहों के मध्य में जितने शुभग्रह हो उतनी रूप युक्त उपसूतिका, मिश्र ग्रहों से मिश्र एवं पाप ग्रहों से मलिन उपसूतिका यें कहे। लग्न में क्षीण चन्द्रमा हो तो प्रसव गृह में कोई उपसूतिका नही होती है। यदि लग्न में पूर्ण चन्द्रमा हो तो बहुत उपसूतिका यें होती हैं। एवं सप्तम में पूर्ण चन्द्रमा हो तो द्वारपर उत्तम उपसूतिकायें होती हैं। लग्न तथा चन्द्रमा के अन्तराल में जितने स्वराशिगत, स्वद्रेष्काणगत तथा स्वनवांशगत ग्रह हों उन की संख्या को दो से गुणकर उपसूतिकाओं की संख्याओं को कहे। एवं लग्न तथा चन्द्रमा के अन्तराल में जितनें उच्चराशिगत तथा वक्रगत ग्रह हों उन की संख्या को ३ से गुणकर उपसूतिकाओं की संख्याओं को कहे। एवं लग्न तथा चन्द्रमा के अन्तराल में जितने नीच राशिगत तथा अस्तगत ग्रह हों उन की संख्या को आधा कर के उपसूतिकाओं की संख्या को कहे। जहां एक ही ग्रह को द्विगुणित और त्रिगुणित लक्षण मिले वहां त्रिगुणित लक्षण को ही स्वीकार कर के उपसूतिकाओं की संख्या का निर्णय करे।

कुर्याद् वृद्धां ब्रह्मजः पूर्णचन्द्रो बालां ज्ञो ऽपि क्षोणिजः कर्कशां स्त्रीम् ।
काव्यो वृद्धां कर्कशां कर्म्मसांक्षिसूरी वामां सुप्रसूतां विधत्तः ॥ ४३ ॥

जन्म काल में बालक के लग्न और चन्द्रमा के अन्तराल में शनि हो तो वृद्धा उपसूतिका, चन्द्रमा तथा बुध हों तो बाला (सोलह वर्ष से न्यूनावस्थावाली) मङ्गल हो तो कर्कशा, शुक्र हो तो वृद्धा कर्कशा एवं सूर्य तथा गुरु हो तो प्रसववती उपसूतिका को करते है।

त्रिमूर्त्तिभुव्यात्मनि कर्म्मणीन्दुभावेका कुमारी कथितार्भकोद्भवे ।
स्वान्त्याम्बुखस्थैर्व्ययवित्तबन्धुगैर्ग्रहैः किमाकाशचरैः सहाश्रितैः ॥ ४४ ॥

तद्गेहनाथैरुपसूतिकाः शनौ शूद्रा रवौ तत्र गते भुजोद्भवा ।
जात्युज्झिता केतुभुजङ्गनाथयोस्तत्र स्थितैर्ज्ञेज्यसितैर्द्विजाबलाः ॥ ४५ ॥

तासां तु रण्डा दुरितांशगेषु चेदेतेषु केतूरगसंयुतेषु च ।
योषा असौम्या यमयोगतो ऽबला रण्डा च कृष्णा किमु कुब्जिका स्मृता ॥ ४६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पञ्चम में शनि, दशम में चन्द्र तथा शुक्र हो तो एक कन्या उपसूतिका होती है। द्वितीय, द्वादश, चतुर्थ तथा दशम में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें होती है। अथवा द्वादश, द्वितीय तथा चतुर्थ में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें होती हैं। अथवा उक्त स्थानों के स्वामियों के साथ जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें होती है। यदि उक्त ग्रहों के मध्य में शनि हो तो शूद्र की स्त्री उपसूतिका, सूर्य हो तो क्षत्रिय की स्त्री उपसूतिका, राहु तथा केतु होंतो जाति हीन स्त्री उपसूतिका एवं बुध, गुरु तथा शुक्र हों तो ब्राह्मणों की स्त्री उपसूतिका होती है। यदि बुध, गुरु तथा शुक्र के मध्य में जितने पापांशक में हो उतनी रण्डा स्त्री और जितने केतु वा राहु से युक्त हो उतनी क्रूर स्त्री उपसूतिका होती है। एवं शनि के योग से रण्डा कृष्णा अथवा कुब्जा (कूबड़ी) स्त्री उपसूतिका होती है।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे भाषाटीकोदाहरणोपेते सूतिकाप्रकरणमेकविंशमवासितम्।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

कारकप्रकरणं प्रारभ्यते ।

भावकारक परिज्ञानः—

स्युः कारकाः कायगृहाद्रविर्गुरुः कुजो ज्ञचन्द्रौ गुरुरैनिरोहितौ ।
सितोऽसितः सूरिरवी सुरार्चितजसौम्येनसौरा धिषणोऽर्कनन्दनः ॥ १ ॥

लग्न कारक सूर्य, धन कारक गुरु, सहज कारक भौम चतुर्थ कारक बुध तथा चन्द्र, पुत्र कारक गुरु, षष्ठ कारक शनि तथा मङ्गल, कलत्र कारक शुक्र, आयु कारक शनि, भाग्य कारक गुरु तथा सूर्य, दशमकारक गुरु, बुध, रवि तथा शनि, लाभ कारक गुरु एवं व्यय कारक शनि होता है ।

सूर्यादि ग्रहों का कारकत्व परिज्ञानः—

सञ्चिन्तयेद्दिनकृतो विगदप्रभाव—
शक्त्यात्मसिन्धुतनयाजनकान्मृगाङ्कात् ।
सम्पत्प्रसूहृदयधीनृपतिप्रसादा—
न्भौमात्कुसत्त्वगुणसोत्थरुजारिबन्धून् ॥ २ ॥

वाक्कर्म्ममातुलविवेकसुहृत्सगोत्र—
विद्या बुधाद् द्रविणधीपुरपुष्टिपुत्रान् ।
ज्ञानं गुरोर्युवतिभूषणयानकामा—
न्व्यापारसौख्यमसुराधिपपूजितेन ॥ ३ ॥

नीरोगता, प्रभाव, शक्ति, आत्म, लक्ष्मी तथा पिता ये सब पदार्थ सूर्य से; सम्पत्ति, माता, चित्त, बुद्धि तथा राज प्रसाद ये सब पदार्थ चन्द्रमा से; पृथ्वी, पराक्रम, गुण, भ्राता, रोग, शत्रु तथा बान्धव ये सब पदार्थ मङ्गल से, वाणी का कर्म, मातुल (मामा) विवेक, मित्र, सगोत्र तथा विद्या ये सब पदार्थ बुध से; धन, बुद्धि, शरीरपुष्टि, पुत्र तथा ज्ञान ये सब पदार्थ गुरु से एवं स्त्री, भूषण, वाहन, कामदेव, व्यापार तथा सौख्य ये सब पदार्थ शुक्र से विचारने चाहिए ।

जीवनं विपदं दासानायुर्निधनकारणम् ।
पङ्गोः पितामहं राहोः केतोर्मातामहं वदेत् ॥ ४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जीवन (वृत्ति), विपत्ति, दास, आयु तथा मृत्यु के कारण ये सब पदार्थ शनि से, पितामह (दादा) राहु से एवं मातामह (नाना) केतु से विचारना चाहिए।

नित्य कारक ग्रह परिज्ञानः—

श्यालानुजाम्बाभगिनीमुखाः कुजाद्विचारमर्हन्त्यसितात्सुता गुरोः ।
पितामहो भाच्छ्वशुरौ पतिः पिता माता ऽबला ज्ञाज्जननीसमास्तथा ॥ ५ ॥

श्याल (शाला), अनुज (भ्राता), अम्बा (माता), भगिनी (बहिन) इत्यादि का भौम से विचार करे पुत्र शनि से, पितामह (दादा) गुरु से श्वशुर (ससुर), श्वश्रू (सास), पति (स्वामी), पिता, माता तथा अबला (स्त्री) ये सब शुक्र से एवं मातृ समान वर्ग (मातृष्वसृ तथा पितृष्वसृ प्रभृति) बुध से विचारना चाहिए।

चर कारक तथा कारकांश कुण्डली साधन रीतिः—

विहङ्गमो यः सकलाभ्रचारिणां मध्ये ऽधिकांशः स इहात्मकारकः ।
तस्मात्खगो न्यूनलवः प्रकीर्त्यते ऽमात्यस्ततः सोदरकारकस्ततः ॥ ६ ॥

मातुश्च तातस्य सुतस्य कारको ज्ञात्याह्वयस्याथ कलत्रकारकः ।
स्यात्कारकैक्यं तनयाम्बयोस्तनुर्यत्कारकांशे प्रथमस्य गो ऽशभम् ॥ ७ ॥

समस्त ग्रहों के मध्य में जो अधिक अंश वाला ग्रह हो वह ' आत्मकारक ' होता है। उस से अल्प (न्यून) अंशवाला ग्रह ' अमात्य कारक ' उस से न्यून अंशवाला ग्रह ' भ्रातृ कारक ' उस से न्यून अंशवाला ग्रह ' मातृ कारक ' उस से न्यून अंशवाला ग्रह ' पितृ कारक उस से न्यून अंशवाला ग्रह ' पुत्र कारक ' उस से न्यून अंशवाला ग्रह ' ज्ञाति कारक ' उस से न्यून अंश वाला ग्रह ' स्त्रीकारक ' होता है। पुत्रकारक और मातृकारक इन दोनों कारकों की एकता कोई आचार्य कहते हैं। अर्थात् मातृ कारक की कारक में गिनती न करे। आत्मकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हो वह आत्मकारक ग्रह की नवांश राशि कारकांश कुण्डली में लग्न होता है। नवांश कुण्डली में जो ग्रह जिस राशि में हो उसी राशि में उस ग्रह को कारकांश कुण्डली में लिखे।

सामान्य कारक ग्रह परिज्ञानः—

यावन्त आकाशचराखिकोणभस्वभोच्चयाता यदि कण्टकाश्रिताः ।
परस्परं ते निखिला हि कारकास्तेषां वियद्गः कथितो विशेषतः ॥ ८ ॥

जितने ग्रह अपनी मूलत्रिकोण राशि में, अपनी राशि में तथा अपनी उच्च राशि में स्थित होकर केन्द्र में हों वे सम्पूर्ण ग्रह परस्पर कारक होते हैं। उन सब कारक ग्रहों के मध्य में जो दशम स्थान में स्थित हो वह विशेष रूप से कारक कहा है।

कलानिधौ कर्किविलग्नगे यथा कालेज्यभास्वत्कुटिलाः स्वतुङ्गगाः ।
उदाहृताः कारकसञ्ज्ञिता मिथस्ते काम्बरस्थः सकलो ऽङ्गगस्य च ॥ ९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर्क राशि के लग्न में चन्द्रमा हैं एवं भौम, सूर्य, गुरु तथा शनि ये चारों अपनी अपनी उच्च राशि में स्थित हैं अत एव वे परस्पर कारक संज्ञक कहे हैं। समस्त चतुर्थ दशम गत ग्रह लग्न गत ग्रह का कारक होता है

हेतुर्निरुक्तः स्वगृहस्वमूलत्रिकोणतुङ्गोपगतो विहङ्गः ।
अन्योन्यमभ्रालयगः सुहृत्तद्गुणान्वितः सोऽपि च कारकाख्यः ॥ १० ॥

स्वराशिगत, मूलत्रिकोणराशिगत तथा उच्च राशि गत ग्रह ही कारकत्व का कारण होता है। केवल केन्द्र गत ग्रह कारकत्व का कारण नहीं होता है। लग्न के केन्द्र के अतिरिक्त अन्य केन्द्र गत ग्रह से उच्चगत्यादि गत ग्रह दशम स्थान में हो और वह उस का मित्र हो तो वह भी परस्पर कारक होता है। किन्तु जिस ग्रह से जो दशम गत ग्रह हो उस का दशमगत ग्रह कारक नहीं होता है अर्थात् वह ग्रह दशमगत ग्रह का ही कारक होता है।

सम्बन्धतः कण्टककोणपालाः परस्परं चेदितरैः प्रसक्ताः ।
न स्युर्विशेषात्फलदायकास्ते स्वयं त्रिकोणाख्यचतुष्टयेशौ ॥ ११ ॥
चेद्दोषयुक्तावपि तौ भवेतां सम्बन्धमात्राद्बलशालिनौ स्तः ।
योगस्य तौ चेद्यदि कारकाख्यौ पदाङ्कपालौ क्रमतो वसेताम् ॥ १२ ॥
तपःखयोर्वा त्रिविभावगौ तावाज्ञाश्रितौ वैकनिकेतनस्थौ ।
किं वैक एव स्वगृहे वसेच्चेत्स्तः कारकौ कीचककोणपाभ्याम् ॥ १३ ॥
सञ्चिन्त्येदेवमथात्मसम्भवभाग्येशमध्ये यदि येन केनचित् ।
सहैव सम्बन्ध इहौजसान्वितकेन्द्रस्य नेतुः स सुयोगकारकः ॥ १४ ॥

केन्द्र तथा त्रिकोण के स्वामियों का यदि परस्पर सम्बन्ध हो और तृतीय, षष्ठ, अष्टम तथा एकादश इन चार स्थानों के स्वामीयों से उन का सम्बन्ध न हो तो केन्द्रेश तथा त्रिकोणेश विशेष फल देने वाले होते हैं। यदि केन्द्र तथा त्रिकोण के स्वामी स्वयं दोष युक्त हों अर्थात् तृतीय, षष्ठ, अष्टम तथा एकादश के स्वामी भी हो तो सम्बन्ध मात्र से बलवान् होकर 'योग कारक' होते हैं। दशमेश और भाग्येश वे दोनों नवम तथा दशम में व्यत्यय से स्थित हों अर्थात् नवम में दशमेश और दशम में नवमेश हो अथवा वे दोनों दशम में हों वा नवम में हों अथवा वे दोनों दशम में वा नवम में हों अथवा वे दोनों किसी भी एक स्थान में हो अथवा एक ही अपनी राशि में हो तो 'योग कारक' होते हैं। एवं समस्त केन्द्र त्रिकोणेशों से योग कारकत्व विचारना चाहिए। नवमेश और पञ्चमेश इन दोनों के मध्य में किसी एक से बलवान् केन्द्र (दशम) के स्वामी का सम्बन्ध हो तो उत्तम योग कारक होता है।

एकत्वेऽत्र जनुषि केन्द्रकोणपत्योर्-
धीरस्तौ कथयति योगकारकाख्यौ ।
सम्बन्धोऽस्तु तदितरत्रिकोणपेन
किं श्रेष्ठं प्रभवति चेदतः परं हि ॥ १५ ॥

केन्द्रेश तथा त्रिकोणेश के एकत्व होनेपर योग कारक होते हैं यदि केन्द्रेश का त्रिकोणेश से सम्बन्ध हो और उसी केन्द्रेश का अन्य त्रिकोणेश से भी सम्बन्ध हो तो परमोत्तम भाग्य योग होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

केन्द्रेऽथ वा कोणगृहे वशेतां तमोग्रहावन्यतरेण चापि ।
नाथेन सम्बन्धवशाद्भवेतां तौ कारकावुक्तमिति ग्रहज्ञैः ॥ १६ ॥

केन्द्र वा त्रिकोण में राहु तथा केतु हों और उन का किसी अन्य केन्द्रेश का त्रिकोणेश से सम्बन्ध हो अर्थात् केन्द्र में स्थित होकर त्रिकोणेश से सम्बन्ध हो अथवा त्रिकोण में स्थित होकर केन्द्रेश से सम्बन्ध हो तो वे दोनों योगकारक होते हैं।

कारक ग्रहों के भाग्योदय कारक वर्षों का परिज्ञानः--

भानोर्जातिमिता जिना गजयमा दन्ता नृपालाः क्रमा-
न्नाराचाश्विमिताः सपत्नदहना दोस्सागरा वत्सराः ।
शुद्धो दिक्षु गणेषु यो दिविचरः त्वोच्चोपगः स्वर्क्षगो
मर्त्यानामुदयो विधेर्भवति तत्खेटस्य वर्षे ध्रुवम् ॥ १७ ॥

बाईस, चोबीस अट्ठाईस, बत्तीस, सोलह, पच्चीस, छत्तीस तथा बयालीस ये सूर्यादि ग्रहों के क्रम से भाग्योदय कारक वर्ष हैं। जो ग्रह अपनी उच्च राशि में वा स्वराशि में स्थित होकर और दशवर्ग में शुद्ध हो तो उस ग्रह के उक्त वर्ष में पुरुषों का भाग्योदय होता है।

इति श्रीमत्पण्डित मुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे भाषाटीकोदाहरणोपेते कारकप्रकरणं द्वाविंशमवसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

तनुभावचिन्तनप्रकरणं प्रारभ्यते ।

तनुभावजन्य पदार्थ परिज्ञानः—

बुधैर्देहो वर्णाकृतिगुणशिरोऽङ्गप्रकृतय—
स्तनोर्मानं जातिर्जनकजननी मातृजनकः ।
वयोमानं स्थानासुखसुखकशीलाबलबल—
प्रवासं सामर्थ्यं वपुषि परिचिन्त्यं सममदः ॥ १ ॥

शरीर, वर्ण आकृति (रूप), गुण शिर, चिन्ह, प्रकृति, देहमान, जाति, पितामही (दादी), मातामह (नाना), वयोमान, स्थान के दुःख और सुख, शील, दुर्बलत्व, सबलत्व, प्रवास एवं सामर्थ्य ये समस्त पदार्थ तनुभाव में विचारने चाहिएं।

देह तथा वर्ण परिज्ञानः—

विलग्नगोभागपतुल्यदेहो ऽथ वा सवीर्य्यग्रहतुल्यमूर्त्तिः ।
वर्णोऽब्जयुक्तांशपतेः समानः काद्येष्वजाद्यैश्च विभक्तभाङ्गम् ॥ २ ॥

जन्म लग्न में जिस राशि का नवांश हो उस के स्वामी के समान ' मनुष्य का शरीर ' होता है। अथवा जन्म समय में सब ग्रहों की अपेक्षा जो ग्रह अधिक बली हो उस के समान ' मनुष्य का शरीर ' होता है। नवांश कुण्डली में ' चन्द्रमा ' जिस राशि में हो उस के स्वामी के समान ' मनुष्य का वर्ण होता है किन्तु जाति, कुल तथा देश का विचार कर के वर्ण का विचार करे। कालपुरुष के अङ्ग के क्रम से ही पुरुष के अङ्ग में लग्नादि भावों का विभाग जानना चाहिए अर्थात् शिर लग्न मुख द्वितीय और बाहु तृतीय इत्यादि जानने। एवं मेषादि राशियों से शीर्षादि अवयवों का विचार करना चाहिए।

शरीर पुष्टि के योगः—

राशीशे सहरिजपे किमङ्गनाथे
सद्राशौ बलसहिते किमम्बुखेटे ।
लग्नेशे बलसहिते शुभान्विते वा
सत्खेटे घनभवने सहस्समेते ॥ ३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किं वार्भे ऽङ्गपलवपे तनौ शुभर्क्षे–
ऽथो सङ्गे वपुषि न दुष्कृतेक्षिते वा ।
सद्युक्ते समुदयपे ऽम्बुभे किमम्बु–
खेटेनेक्षित उत सद्युतेक्षिते ऽङ्गे ॥ ४ ॥
पाथोभे सुरपपुरोधसा युते ऽङ्गे
किं वाङ्गे जलभयुतेन्द्रपूजितेन ।
संदृष्टे किमु नरयुग्मकारकांश
आचार्यैर्विनिगदिता शरीरपुष्टिः ॥ ५ ॥

जन्म राशि का स्वामी यदि लग्नेश से युक्त हो तो (१) लग्नेश बलवान् होकर शुभग्रह की राशि में हो तो (२) लग्नेश जल ग्रह हो और शुभ ग्रह से युक्त हो तथा बलवान् हो तो (३) बली शुभ ग्रह लग्न में हो तो (४) लग्नेश के नवांश राशि का स्वामी जल राशि में हो और लग्न में शुभ ग्रह की राशि हो तो (५) लग्न में शुभ ग्रह की राशि हो और वह पापग्रह से दृष्ट न हो तो (६) लग्नेश शुभ ग्रह से युक्त होकर जल राशि में हो या जल ग्रह से दृष्ट हो तो (७) लग्न में जल राशि हो और वह शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो (८) लग्न में 'गुरु' हो तो (९) जल राशि में गुरु हो और वह लग्न को देखता हो तो (१०) कारकांश कुण्डली में मिथुन लग्न हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष शरीर से पुष्ट होता है।

शरीर दुर्बल के योगः—

दुःस्थे होरानाथयातर्क्षपे वा जन्मर्क्षेशे सोदयेशे त्रिके ऽथो ।
शुष्कर्क्षाङ्गे शुष्कखेटान्विते वा मूर्त्तेनाथे संयुते शुष्कखेटैः ॥ ६ ॥
यद्वाङ्गेशे शुष्कखेटर्क्षगे वा नाशे ऽङ्गेशे शुष्कभे वा बहूग्रैः ।
युक्ते मूर्त्तौ शुष्कभे वोदयेशे यन्नन्दांशे तद्रूपे शुष्कखेटे ॥ ७ ॥
किं वा ब्जेनारातिदृष्ट्या प्रदृष्टे चित्तोत्थे ऽर्के वोग्रखेटेसराफे ।
अङ्गे क्षीणे यामिनीनायके वा चन्द्रार्किभ्यां संयुते मेषराशौ ॥ ८ ॥
यद्वा देहे द्वादशे द्वादशात्मा काश्यप्युत्थे केन्द्रमुक्ताश्रिते वा ।
कायागारे संयुते ऽयुग्मभेन योगेष्वेषु प्रोच्यते कायकार्श्यम् ॥ ९ ॥

जिस राशि में लग्नेश हो उस का स्वामी यदि दुष्ट (६,८,१२) स्थान में हो तो (१) जन्म राशि का स्वामी लग्नेश से युक्त हो कर त्रिक (६,८,१२) स्थान में हो तो (२) लग्न में शुष्क राशि हो और वह शुष्क ग्रह से युक्त हो तो (३) 'लग्नेश' शुष्क ग्रहों से युक्त हो तो (४) शुष्क ग्रह की राशि में लग्नेश हो तो (५) शुष्क राशि गत लग्नेश अष्टमस्थान में हो तो (६) लग्न में शुष्क राशि हो और वह बहुत पाप ग्रहों से युक्त हो तो (७) लग्नेश की नवांश राशि का स्वामी शुष्क ग्रह हो तो (८) सप्तम स्थान में स्थित सूर्य को यदि चन्द्रमा शत्रु दृष्टि से देखता हो तो (९) लग्नगत क्षीण चन्द्रमा यदि पाप ग्रह से इसराफ योग करे तो (१०) मेष में चन्द्रमा तथा शनि हों तो (११) लग्न वा द्वादश में सूर्य हो और केन्द्ररहित स्थान में मङ्गल हो तो (१२) अथवा लग्न में विषम राशि हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष दुर्बल (कृश) देहवाला होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

देह वैकल्य के योगः—

वैकल्यमङ्गेऽर्कविधू चतुष्टये किं कल्मषैः कण्टकगैरथासिते ।
स्वेऽब्जे पदेऽस्ते विदि वा घटे रवौ निम्ने निशानाथ कवीनजास्तथा ॥ १० ॥

केन्द्र में सूर्य तथा चन्द्रमा हों तो (१) अथवा केन्द्र में पाप ग्रह हों तो (२) द्वितीय में शनि, दशम में चन्द्रमा एवं सप्तम में बुध हो तो (३) कुम्भ में सूर्य हो और चन्द्र, शुक्र तथा शनि ये तीनों नीच राशि में हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के शरीर में विकलता होती है ।

सदुरितचरमेशे वा खलैर्द्वादशेऽथो
गतबलचरमेशे निम्नभागे खलस्य ।
भवनलवयुते वा व्योम्नि नेमौ मदेऽस्र
इनत इनभुवि स्वेऽथान्त्यगेहे बहूग्रैः ॥ ११ ॥

सहित इह तदीशे साहिमन्दोत्थमन्दे
विनिगदति बुधो वैकल्यमङ्गे विलग्ने ।
तमसि शिखिनि किं वा देहपे दुष्टसंस्थे
भयभवनपभुक्तौ तद्दशायां तथैव ॥ १२ ॥

यदि व्ययेश पापग्रह से युक्त हो तो (१) व्यय में पाप ग्रह हों तो (२) व्ययेश निर्बल होकर नीचांश में हो वा पाप ग्रह की राशि तथा नवांश में हो तो (३) दशम में चन्द्रमा, सप्तम में भौम एवं सूर्य से द्वितीय में शनि हो तो (४) व्यय में बहुत पाप ग्रह हों और व्ययेश यदि राहु, मान्दि तथा शनि से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के शरीर में विकलता होती है । लग्न में राहु वा केतु होतो (१) त्रिकस्थान में लग्नेश होतो षष्ठेश की अन्तर्दशा में अथवा दशा में पुरुष के शरीर में विकलता होती है

अङ्ग विहीन योगः—

काले कलत्रे बलवर्जिते कुजे यद्वाहियुक्तेऽङ्गविहीनमानवः ।
क्रूरेक्षिते कोणगते कुनन्दने विहीनगात्रो मनुसम्भवो भवेत् ॥ १३ ॥

सप्तम में शनि हो और मङ्गल बलरहित हो अथवा राहु से युक्त होतो 'मनुष्य' शरीर के अवयव रहित होता । यदि 'मङ्गल' पाप ग्रह से दृष्ट होकर त्रिकोण में हो तो 'मनुष्य' गात्र रहित होता है ।

अङ्ग च्छेद योगः—

कामे कलानिधिकुजौ द्वितनौ तनुस्थे
यद्वा पुरे हिमकरेऽस्रकरे स्मरे वा
नीहाररश्मिरुधिराबुदयागयातौ
विच्छेदको भवति देहभृतां शरीरे ॥ १४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सप्तम में चन्द्रमा तथा मङ्गल हों एवं लग्न में द्विस्वभाव राशि होतो (१) लग्न में चन्द्रमा और सप्तम में मङ्गल होतो (२) लग्न में चन्द्र और मङ्गल होंतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के शरीर में छेद होता है।

देह दुर्गन्धि के योगः—

दुर्गन्धिरार्केभवने भसञ्ज्ञे नुर्विग्रहे ऽथामयपे ज्ञराशौ।
नक्रे ऽपि तद्वद्बुधभे मघोत्थे चतुष्टये चान्द्रियुते तथा स्यात् ॥ १५ ॥

शनि की (१०।११) राशि में शुक्र हो तो (१) मिथुन कन्या वा मकर में षष्ठेश हो तो (२) बुध की (३।६) राशि में शुक्र हो अथवा केन्द्र में शुक्र हो और वह बुध से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के शरीर में दुर्गन्ध होती है।

व्यापारभावोपगतौ बुधारौ दुर्गन्धता स्यान्मनुजस्य देहे।
स्वहृद्यातौ सितसूनुमन्दौ अजे विलग्ने रजनीशि तद्वत् ॥ १६ ॥

दशम में बुध तथा मङ्गल हों तो मनुष्य के शरीर में दुर्गन्धता होती है। शुक्र और शनि अपनी हृद्या अर्थात् अपने अपने त्रिंशांश में हों एवं मेषराशि गत चन्द्रमा लग्न में हों तो मनुष्य के शरीर में दुर्गन्धता होती है।

मस्तक च्छेद योगः—

काव्येज्यदृष्टे यदि कर्म्मसाक्षिणि व्यालेन कालेन कुजेन वान्विते।
क्रूरादिषष्ट्यंशसमन्विते ऽथ वा विच्छेदनं तच्छिरसो विनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥

'सूर्य' यदि शुक्र तथा गुरु से दृष्ट होकर मङ्गल शनि वा राहु से युक्त हो अथवा क्रूर षष्ट्यंश में हो तो उस पुरुष के शिर का विच्छेद कहे।

भगजभे भुजगे भगभे भपे भवति शीर्षहतिः परशुक्षतेः।
भगभपौ प्रलये शिरसश्छिदे भरमणस्तमसा सहितो मृतौ ॥ १८ ॥

तथा क्षयिक्षपाकरे पतङ्गनन्दनं यदा।
विलोकयेद्विधुन्तुदो भवेच्छिरोनिकृन्तनम् ॥ १९ ॥

शनि की (१०।११) राशि में राहु हो और सूर्य की (५) राशि में चन्द्रमा हो तो परशु के प्रहार से शिर का विच्छेदन होता है। अष्टम में सूर्य तथा चन्द्रमा ये दोनों हो तो शिर का विच्छेदन होता है। अथवा चन्द्रमा यदि राहु से युक्त होकर अष्टम में हो तो (१) अथवा चन्द्रमा क्षीण हो एवं शनि को राहु देखता हो तो उक्त योगों में शिर का विच्छेदन होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शिर के दीर्घादि योगः—

पुरे हरौ कर्किणि वाजिजंघे स्त्रियां घटेऽलौ च बृहत्कमाहुः ।
ह्रस्वं शिरोऽजे निमिषे विलग्ने समं शिरः स्यादितरेषु भेषु ॥ २० ॥

यदि लग्न में सिंह कर्क धनु कन्या तुला वा वृश्चिक राशि हो तो पुरुष का बड़ा शिर होता है। लग्न में मेष वा मीन राशि हो तो ह्रस्व (छोटा) शिर होता है। एवं लग्न में अन्य राशि हों तो समान शिर होता है।

शिरोरोग योगः—

दुश्चित्कपांशेशनवांशपे खलैर्दृष्टान्विते केन्द्र उतैकराशिगैः ।
सौरोरगैरथ पापभे पुरे सोग्रे गुरौ शीतकरे शिरोगदः ॥ २१ ॥

तृतीय भाव का स्वामी नवांश में जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो और वह ग्रह पाप ग्रहों से दृष्ट युक्त होकर केन्द्र में हो तो (१) शनि, राहु तथा मङ्गल ये तीनों एक राशि में हों तो (२) लग्न में पाप ग्रह की राशि हो एवं गुरु तथा चन्द्रमा यदि पाप ग्रह से युक्त हों तो शिर में रोग होता है।

खल्वाट योगः—

खलेक्षिते गोधनुषोस्तनौ वाऽङ्गे क्रूरभे क्रूरयुतेऽथ कल्पे ।
स्त्रीसिंहचापालिषु कर्कटस्थे कुमुद्वतीशे कुजवीक्षिते वा ॥ २२ ॥
मृगालिकर्किलेयगं यदेह पद्धतेः पतिम् ।
न शोभनो विलोकयेच्छिरोरुहेण वर्जितः ॥ २३ ॥

लग्न में वृष वा धनू राशि हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट हो तो (१) लग्न में पापराशि हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो तो (२) लग्न में कन्या सिंह धनु वा वृश्चिक राशि हो, कर्क में चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से दृष्ट होतो (३) नवमेश यदि मकर वृश्चिक कर्क वा सिंह में हो और उस को शुभग्रह न देखता हो तो उक्त योगो में उत्पन्न पुरुष खल्वाट (गंजा) होता है।

शरीर में व्रण तथा लाञ्छनादि का परिज्ञानः—

मूर्द्धेक्षणश्रवणगन्धवहाकपोल—
हन्वाननानि निगदेत्प्रथमे दृगाणे ।
कण्ठाख्यकांसभुजपार्श्वहृदः क्रमेण
क्रोडे च नाभिरुदये त्रिलवे द्वितीये ॥ २४ ॥
वस्तिश्च मेहनगुदे वृषणाभिधोरू
जानू पदौ त्रिलवके त्रितये परे प्राक् ।
पङ्गेऽङ्गमङ्गभवनादिह वामदक्षं
तत्रोत्तमः प्रकुरते तिललक्ष्ममत्स्यम् ॥ २५ ॥

ज्यो...६९...

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व्रणं खलः स्वस्ववलानुसारं सहोत्थितं स्वर्क्षलवस्थिरग्रथः ।
आगन्तुकं चेत्परथा स सौम्ययुक्तेक्षितस्तत्र तु चिह्नमेव ॥ २६ ॥

यदि लग्न में प्रथम द्रेष्काण होतो ' शिर ' लग्न, ' नेत्र ' द्वितीय तथा द्वादश, ' कर्ण ' तृतीय तथा एकादश, ' नासिका ' चतुर्थ तथा दशम, ' कपोल ' (गाल) पञ्चम तथा नवम, ' हनु ' (ठुड्डी), षष्ठ तथा अष्टम एवं ' मुख ' सप्तमभाव होता है। यदि लग्न में द्वितीय द्रेष्काण होतो ' लग्न ' कण्ठ (गल), ' स्कन्ध ' (कन्धा), द्वितीय तथा द्वादश, ' बाहु ' तृतीय तथा एकादश, ' कुक्षि ' चतुर्थ तथा दशम, ' हृदय ' पञ्चम तथा नवम एवं ' नाभि ' सप्तम भाव होता है। एवं लग्न में तृतीय द्रेष्काण हो तो ' वस्ति ' लग्न, ' शिश्न ' (लिङ्ग) द्वितीय तथा द्वादश, ' गुदा ' तृतीय तथा एकादश, वृषण, (अण्डकोश) चतुर्थ तथा दशम ' ऊरु ' पञ्चम तथा नवम, ' जानु ' षष्ठ तथा अष्टम एवं ' पद ' (पैर) सप्तम भाव होता है। उक्त प्रथमादि तीनों द्रेष्काणों में लग्न के भोग्यांश से सप्तम के भुक्तांश पर्यन्त शरीर का दक्षिण भाग होता है। एवं सप्तम के भोग्यांश से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त शरीर का वामभाग होता है। जो अङ्ग पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो उस में व्रण (घाव) और जो अङ्ग शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो उस मे तिल मशक आदि चिह्न होता है। स्वराशि वा स्वनवांश वा स्थिर (२।५।८।११) राशि में पाप ग्रह होतो स्वाभाविक व्रण होता है और स्वराशि वा स्वनवांश वा स्थिर राशि में शुभग्रह हो तो स्वाभाविक तिल मशकादि होता है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत होतो आगन्तुक व्रण होता है अर्थात् व्रण कारक ग्रह की दशा में व्रण होता है। व्रण कारण ग्रह यदि शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त होतो केवल चिन्ह मात्र होता है।

' प्रथमद्रेष्काणेऽङ्गविभागः ' ।			' द्वितीयद्रेष्काणेऽङ्गविभागः ' ।			' तृतीयद्रेष्काणेऽङ्गविभागः ' ।		
भो. अं.	१	भु. अं.	भो. अं.	१	भु. अं.	भो. अं.	१	भो. अं.
दक्षिणाङ्ग	शिर	वामाङ्ग	दक्षिणाङ्ग	कण्ठ	वामाङ्ग	दक्षिणाङ्ग	वस्ति	वामाङ्ग
२	नेत्र	१२	२	स्कन्ध	१२	२	शिश्न	१२
३	कर्ण	११	३	भुजा	११	३	गुदा	११
४	नासिका	१०	४	कुक्षि	१०	४	वृषण	१०
५	कपोल	९	५	हृदय	९	५	ऊरु	९
६	हनु	८	६	उदर	८	६	जानु	८
भु. अं.	मुख ७	भो. अं.	भु. अं.	नाभि ७	भो. अं.	भु. अं.	पाद ७	भो. अं.

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शरीर में चिह्न के योग:—

यस्मिन्नङ्गे संस्थितः सेन्दुरर्कस्तत्राङ्को ऽर्काङ्गारकौ यत्र यातौ ।
रक्तं चिह्नं तत्र यत्रार्किपुत्रव्यालौ लक्ष्म श्यामलं तत्र वेद्यम् ॥ २७ ॥

जिस अङ्ग में चन्द्रमा से युक्त सूर्य हो उस में ' चिन्ह होता है । जिस अङ्ग में सूर्य तथा मङ्गल हों उस में रक्त (लाल) चिह्न होता है । एवं जिस अङ्ग में शनि तथा राहु हों उस में श्याम (काला) चिन्ह जानना चाहिए ।

अङ्गारके ऽङ्गे ऽङ्गिरसो ऽङ्गसम्भवे ऽस्ते वा कवौ कं व्रणलाञ्छितं स्मृतम् ।
सकाव्यचन्द्रे कुटिले विलग्नगे के लक्षणं वीक्षणचन्द्रहायने ॥ २८ ॥

लग्न में भौम हो और सप्तम में गुरु वा शुक्र हो तो शिर में व्रण से चिह्न होता है । लग्न मङ्गल हो और वह शुक्र तथा चन्द्रमा से युक्त हो तो १२ वें वर्ष में शिर में चिह्न होता है ।

कल्पे कवौ कालगते विलग्ने वामश्रुतौ मूर्ध्नि किमङ्कमीरयेत् ।
भुजङ्गभे ऽनङ्गगृहे ऽङ्गिरोभवे गात्रोपगे वामतनुः सलक्षणा ॥ २९ ॥

लग्न में शुक्र और अष्टम में राहु हो तो वाम कर्ण में वा शिर चिन्ह कहे । सप्तम में राहु और लग्न में गुरु हो तो शरीर के वामभाग में चिह्न होता है ।

खले लग्ने लेखगुरौ विलग्ने किं भार्गवे वामभुजः सचिह्नः ।
सान्छे कुजे ऽकार्य्यनुजाययाते वामप्रदेशे व्रणसम्भवो ऽङ्कः ॥ ३० ॥

अष्टम में पाप ग्रह और लग्न में गुरु वा शुक्र हो तो वाम भुजा में ' चिन्ह ' होता है । द्वादश, षष्ठ, तृतीय वा एकादश में मङ्गल हो और वह शुक्र से युक्त हो तो वामाङ्ग में व्रण से चिन्ह होता है ।

लिङ्गे गुदे लक्षणमुद्गमे ऽस्ते कोणे त्रिकोणे कविलोकिते ऽथो ।
वधे बुधेज्यौ भृगुजे त्रिकोणे मैत्रो ऽङ्गमित्रे जठरं सलक्ष्म ॥ ३१ ॥

त्रिकोण में शनि हो और वह शुक्र से दृष्ट हो एवं लग्न में भौम हो तो लिङ्ग तथा गुदा में ' चिन्ह ' होता है । अष्टम में बुध तथा गुरु हों, त्रिकोण में शुक्र हो एवं लग्न वा चतुर्थ में शनि हो तो उदर (पेट) में ' चिह्न ' होता है ।

भे वाचि भानौ धननैधने ऽस्रासितौ सहोत्थे कटिरङ्कयुक्ता ।
हिते ऽहिकव्योरिनजे धने वा ऽस्रे ऽङ्कौ ऽघ्रिमूले किमु वामपादे ॥ ३२ ॥

धन में शुक्र, लग्न वा अष्टम में सूर्य एवं तृतीय में मङ्गल तथा शनि हों तो कटि (कमर में चिन्ह) होता है । चतुर्थ में राहु तथा शुक्र हों और लग्न में शनि वा मङ्गल हो तो पाद के मूल में वा वामपाद में चिन्ह होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विधौ विधौ त्र्यायगदे विदज्ये पुरे व्रणं वा गुदगोलकाङ्कः ।
भाग्ये भृगौ नाश इने ऽहिशन्योर्मेपूरणे ऽङ्कान्वितनाभिदेशः ॥ ३३ ॥

नवम में चन्द्रमा, तृतीय एकादश वा षष्ठ में बुध एवं लग्न में गुरु हो तो शरीर में व्रण वा गुदा में गोल चिन्ह होता है। नवम में शुक्र, अष्टम में सूर्य एवं दशम में राहु तथा शनि हों तो नाभिप्रदेश में 'चिन्ह' होता है।

त्र्यायारिगे ज्ञे चरमे गुरौ भे भुजे ऽङ्गिनां मानसमङ्कयुक्तम् ।
ज्ञैन्योर्विलग्ने नभसीननास्त्रि सलक्षणं दक्षिणपार्श्वमत्र ॥ ३४ ॥

तृतीय एकादश वा षष्ठ में बुध, व्यय में गुरु एवं तृतीय में शुक्र हो तो प्राणियों के हृदय में 'चिन्ह' होता है। लग्न में बुध शनि हों और दशम में सूर्य हो तो शरीर के दक्षिण पार्श्व में चिन्ह होता है।

भार्गवदृष्टे यद्गृहयाते ।
सोमसपत्ने तद्भसमो ऽङ्कः ॥ ३५ ॥

'राहु' यदि शुक्र से दृष्ट होकर जिस राशि में हो उस राशि के समान प्रदेश में 'चिन्ह' होता है।

शरीर सौख्याभाव योगः—

सोग्राङ्गपे त्रिक उत त्रिकपे स्वभे ऽथो
दुःस्थानपे वपुषि नीचसपत्नभागे ।
वोग्रे तनौ तनुविभौ विबले ऽथ मूर्त्ति-
नाथे त्रिके बलयुते न शरीरसौख्यम् ॥ ३६ ॥

त्रिक (६।८।१२) स्थान में लग्नेश हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो तो (१) दुष्ट (६।८।१२) स्थान के स्वामी अपनी अपनी राशि में हों तो (२) लग्न में त्रिकेश हो और वह नीच वा शत्रु नवांश में हो तो (३) लग्न में पाप ग्रह हो और लग्नेश निर्बल हो तो (४) बलवान् लग्नेश त्रिक स्थान में हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य को शरीर का सुख नहीं होता है।

शरीर सौख्य के योगः—

पौरे ऽङ्गपे ऽथ सुकृतैः पथिकेन्द्रधीस्थै-
र्नालोकितैरशुभदैः सबले ऽङ्गपे वा ।
स्वोच्चे सुहृन्निजलवे शुभयुक्तदृष्टे
कल्पालयाधिभुवि संहननस्य सौख्यम् ॥ ३७ ॥

लग्न में लग्नेश हो तो (१) लग्नेश बली हो एवं केन्द्र तथा त्रिकोण में शुभ ग्रह हों और वे पाप ग्रहों से दृष्ट न हों तो (२) स्वोच्चराशि में मित्रांश में वा स्वांश में लग्नेश हो और वह शुभ ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष को शरीर को सुख होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

देहमान परिज्ञानः—

दीर्घर्क्षेशे दीर्घभे दीर्घदेहो ह्रस्वर्क्षेशे ह्रस्वभे ह्रस्वदेहः ।
मध्यो देहो मिश्रितै राशिखेटैः खेटैरूने भे भतुल्यं शरीरम् ॥ ३८ ॥

दीर्घमान राशि का स्वामी यदि दीर्घमान राशि में हो तो पुरुष का वह अङ्ग दीर्घ होता है। यदि अल्प मान राशि का स्वामी अल्प मान राशि में हो तो पुरुष का वह अङ्ग ह्रस्व होता है । एवं अल्प राशि का स्वामी यदि दीर्घ राशि में हो और दीर्घ राशि का स्वामी अल्प मान राशि में हो तो वह अङ्ग मध्यम होता है। यदि एकराशि में बहुत ग्रह हों तो उन में जो सब से अधिक बली ग्रह हो उस के समान अङ्ग होता है । एवं राशि में कोई ग्रह न हो तो राशि के समान अङ्ग होता है ।

दीर्घ देह योगः—

बुधादनङ्गमन्दिरे वसुन्धराभवेऽथ वा ।
विलग्नभेशि दीर्घभे तदेह दीर्घदेहवान् ॥ ३९ ॥

बुध से सप्तम स्थान में मङ्गल हो अथवा दीर्घमानवाली राशि में लग्नेश हो तो पुरुष दीर्घशरीर वाला होता है ।

वामन योगः—

अङ्गेऽजे हेलिसुतो हितस्थितः पृष्ठोदयस्थं हिमगुं प्रपश्यति ।
हरौ भहेली हरिणेन्दुरम्बरेऽथाङ्गेऽन्तिमेशे सितगौ शनीक्षिते ॥ ४० ॥
शुभेक्षणोनेऽथ विलोकयेत्पुरं पुराधिपालः कृशमानराशिगः ।
सौरात्सुखेऽब्जेऽल्पतरर्क्षकेऽन्तिमे भागेऽथ वा पूर्वलवेऽथ पौरपे ॥ ४१ ॥
सौम्यर्क्षगे सौम्यदृशा विवर्जिते ततस्तनूनेतरि सक्रिये व्यये ।
वार्कौ घने ज्ञे निजभे किमर्कजे सरौहिणेये हृदि वामनो नरः ॥ ४२ ॥

मेष में लग्नेश हो और पृष्ठोदयराशिगत चन्द्रमा को यदि चतुर्थस्थानगत शनि देखता हो तो (१) सिंह में शुक्र तथा सूर्य हों और दशम में मकरराशिगत चन्द्रमा हो तो (२) लग्न में व्ययेश हो और चन्द्रमा शुभ ग्रहों से अदृष्ट होकर शनि से दृष्ट हो तो (३) अल्प मान राशि गत लग्नेश यदि लग्न को देखता हो और शनि से चतुर्थ में चन्द्रमा हो और वह अल्प मान वाली राशि के अन्त्य अंश वा आद्य में स्थित हो तो (४) लग्नेश अल्पमान राशि में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो (५) मेष राशि गत लग्नेश यदि व्यय भाव में हो तो (६) लग्न में शनि और स्वराशि (३।६) में बुध हो तो (७) चतुर्थ में शनि हो और वह बुध से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष वामन होता है ।

कुब्ज योगः—

भान्त्यांशके भेशि ततो द्वितीयराश्याद्यभागेऽरुणजेऽघदृष्टे ।
किं सोदरे शीतरुचौ चतुर्थे मन्दे च तस्योपरिगेऽङ्गपे वा ॥ ४३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुजे ऽङ्गपे ऽन्त्ये ऽज उतारिभे शुभैः क्रूरैः क्षये ऽस्ते ऽस्तमितैर्बलोज्झितैः ।
तद्राशिपैर्वा ऽरुणपूर्णवीक्षिते शुभांशदृक्के रजनीशि कुब्जकः ॥ ४४ ॥

यदि राशि के अन्तिम अंश में चन्द्रमा हो एवं द्वितीय राशि के प्रथम अंश में शनि हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट हो तो (१) तृतीय में चन्द्रमा, चतुर्थ में शनि और उस के उपरि भाग में लग्नेश हो तो (२) मेष वा मीनमें लग्नेश मङ्गल हो तो (३) षष्ठ में शुभ ग्रह हों एवं अष्टम तथा सप्तम में पाप ग्रह हों और भावेश अर्थात् षष्ठ, अष्टम तथा सप्तम के स्वामी अस्तंगत तथा निर्बल हों तो (४) शुभ ग्रह के नवांश तथा द्रेष्काण में चन्द्रमा हों और वह सूर्य से पूर्ण दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष कुब्ज (कूबड़ा) होता है ।

चान्द्रीज्यचन्द्रास्फुजितो ऽहितस्था अस्तङ्गतास्ते सकलाः खगाः स्युः ।
षड्ग्वारपाता अधरं प्रयाता रन्ध्रास्तगाः कुब्जमिह प्रकुर्युः ॥ ४५ ॥

बुध, गुरु, चन्द्र तथा शुक्र ये चारों अस्तङ्गत होकर षष्ठ स्थान में हों एवं शनि, मङ्गल तथा राहु ये तीनों नीच राशि में स्थित होकर सप्तम तथा अष्टम में हो तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य को कुब्ज करते हैं ।

वास स्थान परिज्ञानः—

तत्तुङ्गमित्रखचरे पुरपादकस्थे
किं तत्र तुङ्गखगमित्रविलोकिते वा ।
तद्भस्थिते सखिखगे जनिभूस्थितिः स्या-
त्पौरेशतो व्ययविभौ पुरपालशत्रौ ॥ ४६ ॥

नीचे विवीर्य्य उत नुः परदेशवासो
दृष्टे यदीष्टकविना स्थितिरेव तत्र ।
होरेशतो व्ययपतौ तपनांशुलुप्ते-
ऽल्पग्रामवास उदितो यदि शक्तियुक्ते ॥ ४७ ॥

वासो भवेद्बहुलसंवसथे ऽङ्गगेहा-
त्प्रान्त्येश्वरे ऽङ्गसुतकण्टकगे हितर्क्षे ।
स्वोच्चे शुभान्तरगते सुधराचरो ऽब्जे-
ज्याच्छेक्षिते सुभुवमेति जनुःकुवासम् ॥ ४८ ॥

उच्च राशि गत मित्र ग्रह यदि लग्नेश से व्ययस्थान में हो अथवा लग्नेश को उच्च गत ग्रह देखता हो अथवा लग्नेश की राशि (लग्न) में मित्र ग्रह हो तो जन्म भूमि में निवास होता है। लग्नेश से व्ययस्थान का स्वामी यदि लग्नेश का शत्रु हो वा नीच राशि में हो वा निर्बल होतो परदेश में पुरुष का वास होता है। लग्नेश से व्ययस्थान का स्वामी यदि मित्र शुक्र से दृष्ट हो तो भी परदेश में पुरुष का वास होता है। लग्नेश से व्ययस्थान का स्वामी बलवान् हो तो बहुत ग्रामों में पुरुष का वास होता है। लग्नेश से व्ययस्थान का स्वामी यदि लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में स्थित होकर मित्रराशि में वा स्वोच्च राशि में हो और शुभग्रहों के अन्तराल में होतो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुन्दर भूमि में पुरुष विचरण करता है। एवं लग्नेश से व्ययस्थान का स्वामी यदि गुरु, शुक्र तथा चन्द्रमा से दृष्ट होतो मनुष्य को उत्तम क्षेत्र (खेत) की प्राप्ति तथा उसका जन्म भूमि में वास होता है।

आकृति तथा गुण परिज्ञानः—

वीर्य्ये पतङ्गशशिनोः पितृमातृतुल्यः
सत्त्वादिको ऽर्कखगुणांशपतेर्गुणः सः।
सत्त्वं रजस्तम इह क्रमशो ऽर्कजीवे-
न्दूनां गुणः सितविदोरसितासृजोः स्यात् ॥ ४९ ॥

जन्म समय में 'सूर्य' अधिक बली होतो उत्पन्न पुरुष पिता के समान आकृति वाला होता है। यदि 'चन्द्रमा' अधिक बली हो तो माता के समान आकृति वाला होता है। जन्म काल में जिस ग्रह के त्रिशांश में सूर्य हो उस ग्रह का जो सत्त्वादि गुण हो वही गुण पुरुष में होता है। सूर्य, गुरु तथा चन्द्र सत्त्व गुण प्रधान है। शुक्र तथा बुध रजोगुण प्रधान है। एवं शनि तथा मङ्गल तमोगुण प्रधान है।

शील परिज्ञानः—

अङ्गारकोष्णदीधितिच्छायासुता यदा जनौ।
पश्यन्ति यामिनीश्वरं स्याच्छीतलो नरो भवेत् ॥ ५० ॥

जन्म समय में चन्द्रमा को यदि सूर्य, मङ्गल तथा शनि देखते हों तो पुरुष का शीतल स्वभाव होता है।

क्रोधी योगः—

आरे सारयुते पुरे दिवि दिवा वार्कीक्षिते ऽङ्गारके
शक्त्यूने मदने घने किमु कुजे ऽङ्गे वाङ्गपे निर्बले।
वास्ते ऽस्त्रे सबले ऽथ मान्दिसहिते ऽर्थेशे ऽथ कोणे ऽबले
राशीशे सहजे ध्वजे ऽथ तनुपे ऽन्त्यायुःस्थिते ऽमर्षभाक् ॥ ५१ ॥

दिन का जन्म हो और लग्न वा दशम में मङ्गल होतो [१] सप्तम वा लग्न में निर्बल मङ्गल हो और वह शनि से दृष्ट हो तो [२] लग्न में मङ्गल हो तो [३] लग्नेश बलरहित होतो [४] सप्तम में बलवान् मङ्गल होतो [५] द्वितीयेश यदि गुलिक से युक्त होतो [६] तृतीय में केतु और पञ्चम वा नवम में जन्म राशि का स्वामी हो और वह निर्बल हो तो [७] व्यय वा अष्टम में लग्नेश होतो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य क्रोधी होता है।

क्षमावान् योगः—

पातालपे ऽङ्गे पुरपे पयस्युत क्षेत्रे सवीर्य्ये ऽथ कुजेन लोकिते।
हेलाबलावित्थसिभे कुलीरभे यद्वा हिते चारुखगे क्षमी भवी ॥ ५२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में चतुर्थेश और चतुर्थ में लग्नेश होतो [१] चतुर्थस्थान बलवान् होतो [२] वृश्चिक मीन वा कर्क में सूर्य हो और वह मङ्गल से दृष्ट होतो [३] चतुर्थ में शुभग्रह होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष क्षमावान होता है।

लज्जायुक्त योगः—

जीवे ऽसृजेक्षिततनौ किमु जीवसव्य-
त्र्यंशेक्षणेक्षिततनौ सितगौ किमिन्दौ।
साङ्गारके स्मरग इज्यदृशा युते वा
हद्दादृगाण इनजस्य विधौ सलज्जः ॥ ५३ ॥

लग्न में गुरु हो और वह मङ्गल से दृष्ट हो तो (१) लग्नगत चन्द्रमा को गुरु यदि सव्य (वाम) त्रिभाग दृष्टि से देखता हो तो (२) सप्तम में चन्द्रमा हो और वह मंगल से युक्त होकर गुरु से दृष्ट होतो (३) शनि की हद्दा तथा द्रेष्काण मे चन्द्रमा हो तो उक्त योगों में लज्जावान होता है।

विलज्ज योगः—

कल्पस्थाने कोविदे चासुरेज्य आरे मारे वोद्गमे निर्जरेज्ये।
भूभूदृष्टे वारचित्तोत्थदृष्ट्या संदृष्टौ ज्ञश्वेतभानू विलज्जः ॥ ५४ ॥

लग्न में बुध तथा शुक्र हो और सप्तम में मङ्गल होतो (१) लग्न में गुरु हो और वह मङ्गल से दृष्ट होतो (२) बुध तथा चन्द्रमा को यदि मङ्गल सप्तम दृष्टि से देखता होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष लज्जा रहित होता है।

द्रोहि योगः—

द्रोही बुधे व्योम्नि जले जडांशौ वारे सचन्द्रे सहजे ऽथ हेम्नि।
हिमांशुयुक्ते ऽहितगे ऽथ होरानाथे हिमांशोस्तनये ऽहिते ना ॥ ५५ ॥

दशम में बुध और चतुर्थ में चन्द्रमा होतो (१) तृतीय में मङ्गल हो और वह चन्द्रमा से युक्त हो तो (२) षष्ठ में चन्द्रमा हो और वह बुध से युक्त हो तो (३) षष्ठ स्थान में लग्नेश बुध हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष द्रोहि होता है।

शिल्पी तथा दुर्जन योगः—

शिल्पी सवीर्ये विदि केन्द्रगे ऽथ वा ऽऽर्कौ केन्द्रगे सज्ञ उतेज्यविद्युतौ।
स्याद्दुर्जनो ऽङ्गे बहुलाघलोकिते वाङ्गाधिपे पाप्मनि वाङ्गपे चिति ॥ ५६ ॥

केन्द्र में बलवान् बुध हो अथवा केन्द्र में शनि हो और वह बुध से युक्त हो अथवा गुरु और बुध का योग हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष शिल्पी (कारीगर) होता है। लग्न बहुत पाप ग्रहों से दृष्ट हो अथवा लग्नेश पापग्रह हो अथवा लग्नेश पञ्चम में हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष पिशुन (चुगलखोर) होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अलस योगः—

अलसस्तनुपे विबले ऽथ तनूरमणे सयमे ऽथ खलाम्बरगैः ।
बहुलैः परिलोकित उद्गमभे किमु देवपुरांहितमन्दयुतौ ॥ ५७ ॥

लग्नेश बलरहित होतो (१) लग्नेश शनि से युक्त हो तो (२) लग्न बहुत पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो (३) गुरु और शनि का योग हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष आलसी होता है ।

कलह प्रिय योगः—

केतौ सहोत्थे किमुताधिकारहीने महीजे मदने विलग्ने ।
ऐनीक्षिते वा ऽभ्युदिते विधौ वा ज्ञे मन्ददृष्टे हृदि वा कुलीरे ॥ ५८ ॥

भौमेत्थशालितविधौ धवले क्रिये ऽलौ
कृष्णे ऽथ नीचवृषभारिभगे कुजे ऽङ्गे ।
किं पुण्मसद्मप उताङ्गप उग्रदृग्युग्-
रन्ध्रे न सद्युतदृशा कलहप्रियः स्यात् ॥ ५९ ॥

सहज में केतु हो तो [१] लग्न वा सप्तम में अधिकार रहित मङ्गल हो और वह शनि से दृष्ट हो तो [२] चतुर्थ में अभ्युदित अर्थात् सूर्य से निःसृत चन्द्रमा वा बुध हो और वह शनि से दृष्ट हो तो [३] शुक्ल पक्षीय चन्द्रमा कर्क में स्थित होकर मङ्गल से इत्थशाल करे अथवा कृष्णपक्षीय चन्द्रमा मेष वा वृश्चिक में स्थित होकर मङ्गल से इत्थशाल करे तो [४] लग्न में नीचराशि गत वा वृष राशि गत वा शत्रु राशि गत मङ्गल हो तो [५] अष्टम में पुण्य सद्म का स्वामी वा लग्न का स्वामी हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो एवं शुभग्रह से युक्त दृष्ट न हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष कलह प्रिय होता है ।

व्यसनी योगः—

नीचे ऽन्त्यपे किमु खले चरमे ऽथ सारे-
ऽङ्गेशे ऽथ निम्नभवने रिपुभे ऽङ्गपे वा ।
दृष्टे पुरे बहुखलैरुत वीर्यहीने
होराधिपे व्यसनभाग् जनितस्तदानीम् ॥ ६० ॥

नीच राशि में व्ययेश हो तो (१) व्यय में पाप ग्रह हो तो (२) लग्नेश यदि मङ्गल से युक्त हो तो (३) नीच राशि वा शत्रु राशि में लग्नेश हो तो (४) लग्न यदि बहुत पापों से दृष्ट हो तो (५) लग्नेश निर्बल हो तो उक्त योगोंमें उत्पन्न पुरुष व्यसनी होता है ।

ज्यो...७०...

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अहिफेन (अफीम) व्यसनी तथा रसायन व्यसनी योगः—

आखण्डलेज्ये हरिणे विलग्ने जातोऽहिफेनव्यसनान्वितः स्यात् ।
रसायनस्य व्यसनी कपाले पदेऽथ पातालपतौ बलोने ॥ ६१ ॥

लग्न में मकर राशि गत मङ्गल हो तो अहिफेन (अफीम) का व्यसनी होता है । दशम में चतुर्थेश हो अथवा चतुर्थेश निर्बल हो तो उक्त योगों में पुरुष रसायन का व्यसनी होता है ।

व्यसन रहित योगः—

शुभे शुभे वोदयपे चतुष्टये किमुद्गतेशे सबले किमुदये ।
आद्याधिपे वा व्ययभेऽनघग्रहसम्बन्ध आहुर्व्यसनोनसम्भवम् ॥ ६२ ॥

नवम में शुभ ग्रह हो तो (१) केन्द्र में लग्नेश हो तो (२) लग्नेश बलवान् हो तो (३) लग्न में लग्नेश हो तो (४) व्यय स्थान में शुभ ग्रह का सम्बन्ध हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष व्यसन रहित होता है ।

प्रकृति परिज्ञानः—

दोलिता प्रकृतिराङ्गिनां तमःखेटविद्विधुयमैस्तनुस्थितैः ।
स्यात्स्थिरा प्रकृतिरर्कवाक्पतिभार्गवक्षितिसुतैः पुराश्रितैः ॥ ६३ ॥

लग्न में राहु केतु बुध चन्द्र वा शनि हो तो दोलित (चर) प्रकृति होती है । एवं लग्न में सूर्य गुरु शुक्र वा मङ्गल हो तो स्थिर प्रकृति होती है ।

वयोमान तथा जाति परिज्ञानः—

होराश्रितैर्हेलिसुताहिनाथलेखेज्यसूरैः प्रवयाः प्रकृत्या ।
कोशालयस्थेऽकचनाकवासे वार्द्धक्य चिह्नोदयमाहुराशु ॥ ६४ ॥

लग्न में शनि राहु गुरु वा सूर्य हो तो प्रकृति से पुरुष वृद्ध होता है । यदि द्वितीय में केतु हो तो पुरुष में शीघ्र ही वार्द्धक्य चिन्ह का उदय होता है ।

उपान्त्यगेहे वसुधाभवे बलैर्युक्तेऽपि वृद्धस्तरुणायते नरः ।
प्रालेयभानूशनसोः पुरस्थयोर्नैवातिवृद्धो न युवा भवेत्पुमान् ॥ ६५ ॥

लग्न में बलवान् मङ्गल हो तो वृद्ध भी तरुण (युवा) होता है । लग्न में चन्द्र तथा शुक्र हों तो वह पुरुष न अति वृद्ध न युवा होता है । अर्थात् मध्यम प्रकृति वाला होता है ।

आरो लग्ने स्याद्युवा वृद्धकोऽपि चान्द्रिस्तत्र स्याद्वयःस्थोऽपि बालः ।
लग्नेशो वा लग्नगो यादृशस्तत्तुल्याचारः खेचरो वा स वर्णः ॥ ६६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में मङ्गल हो तो वृद्ध भी युवा होता है। एवं लग्न में बुध हो तो युवा भी बालक होता है। लग्नेश वा लग्नस्थग्रह की जाति तथा उस के समान आचार और वर्ण कहना चाहिए।

तनोस्तनूपादथवा त्रिके खलैर्जातिच्युतिः स्याद्विधुमन्दबोधनाः।
नीचारिभागे यदि तद्वदर्कजसोमौ सुहृत्सद्मनि जातिपोषकः ॥ ६७ ॥

लग्न से वा लग्नेश से त्रिक स्थान में पाप ग्रह हो तो जाति च्युत (जाति बाहर) होता है। नीचनवांश तथा शत्रु राशि के नवांश में चन्द्र शनि तथा बुध हों तो जातिच्युत होता है। मित्र ग्रह की राशि में शनि तथा चन्द्रमा हों तो जाति को पोषण करने वाला होता है।

पितामही तथा मातामह के सौख्यासौख्य के योगः—

युक्तेक्षिता यदा होरा केवलोत्तमखेचरैः
मातामहपितामह्योः सौख्यं स्यात्परथा नहि ॥ ६८ ॥

यदि जन्म लग्न केवल शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो तो मातामह तथा पितामही को सुख होता है। उक्त प्रकार से विपरीत हो तो उन का सुख नहीं होता है।

शुभ जन्म योगः—

वर्गोत्तमेऽङ्गे किमु रोहिणीप्रिये वर्गोत्तमे वा सबलात्मकारके।
वैकोऽपि खेटो बलवांश्चतुर्थ्येऽथ वार्कतोऽर्थे सति नुर्जनुः शुभम् ॥ ६९ ॥

लग्न में वर्गोत्तमांश हो वा वर्गोत्तमांश में चन्द्रमा हो वा आत्मकारक ग्रह बलवान् हो वा केन्द्र में एक भी बलवान् ग्रह हो वा सूर्य से द्वितीय में शुभ ग्रह हो तो मनुष्य का जन्म शुभ कहना चाहिए।

पिशाच जन्म तथा बहुस्वेद योगः—

खलैस्त्रिकोणे घनगे हिमांशौ ग्रस्ते जनुः स्यात्सपिशाचकस्य।
पीयूषभानौ धनरन्ध्रधाम्नि प्रभूतधर्मेण समन्वितः सः ॥ ७० ॥

त्रिकोण में पाप ग्रह हों और लग्न में ग्रहण कालीन चन्द्रमा हो तो पिशाच प्रकृति वाले पुरुष का जन्म होता है। यदि द्वितीय वा अष्टम में चन्द्रमा हो तो बहुत स्वेद (पसीना) से युक्त होता है।

शुभयोगः—

स्वर्क्षेऽङ्गपे ज्ञेज्यसितान्विते ऽथ वा केन्द्रे स्वतुङ्गे शुभभे सुहृद्धे।
सौम्येक्षिते वा सचिवश्चभूपतिः सम्पत्तिमाँल्लोकमतः सुलोचनः ॥ ७१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में लग्नेश हो अथवा केन्द्र में लग्नेश हो और वह बुध, गुरु तथा शुक्र से युक्त हो अथवा स्वोच्चराशि शुभ ग्रह की राशि वा मित्र राशि में लग्नेश हो अथवा लग्नेश शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष मंत्री सेनापति सम्पत्ति वाला लोगों का मान्य वा सुन्दर नेत्र वाला होता है।

सौम्यैर्मूर्त्तेर्मृत्युमारारियातैर्दृष्टोपेतैर्नोग्रखेटैरमात्यः।
दण्डाधीशो भूमिपालः प्रभूतस्त्रीणां नाथो भीतिरोगैर्विहीनः ॥ ७२ ॥

सच्छीलाढ्यः सौख्यसौन्दर्य्ययुक्तो दीर्घायुर्नो सर्वदासौ प्रसन्नः।
जीवे जूके कन्यकायां बुधेऽलौ काव्ये मेषे वा वृषे भव्यदृष्टे ॥ ७३ ॥

जातो वंशे श्रेष्ठतां यात्यपश्यं दक्षो नित्यानन्दयुक्तो गुणैश्च।
श्रेष्ठो निष्ठादार्य्यवित्तादरादिसंयुक्तोऽसौ जायते नो नितान्तम् ॥ ७४ ॥

लग्न से अष्टम, सप्तम तथा षष्ठ स्थान में शुभ ग्रह हो और वे पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट न हों तो युक्त योग में उत्पन्न पुरुष मंत्री (दीवान) दण्ड स्वामी (जज इत्यादि) भूमिपाल (राजा रईस) बहुत स्त्रियों का स्वामी, भय तथा रोग से रहित एवं उत्तम शील, सौख्य तथा सौन्दर्य से युक्त, दीर्घायु वाला तथा नित्य प्रसन्न रहने वाला होता है। तुला वा कन्या में गुरु, वृश्चिक में बुध एवं मेष वा वृष में शुक्र हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष अपने वंश में श्रेष्ठता को प्राप्त होता है। एवं चतुर, नित्य आनन्द युक्त गुणों से श्रेष्ठ, निष्ठावान्, अत्यन्त उदारता वाला, धन तथा आदरादि से युक्त होता है।

आलोकितेऽङ्गे निखिलैर्नभोगैर्भीत्या विहीनो रिपुवृन्दहर्त्ता।
नृपः स्ववंशे च विलासलीलायुक्तो बलिष्ठो जनितश्चिरायुः ॥ ७५ ॥

यदि लग्न को समस्त शुभ तथा अशुभ ग्रह देखते हों तो भय से रहित शत्रु समूह को नाश करने वाला, अपने वंश में राजा, विलास तथा लीला से युक्त, बलवान् तथा दीर्घायु वाला होता है।

प्राप्ता यदाङ्गं त्रय उत्तमाश्चेत्कुर्य्युर्महीपं मनुजं विनीतम्।
काव्येन युक्तो यदि कल्पनाथः कुर्य्यान्नरं मानवनाथवन्द्यम् ॥ ७६ ॥

लग्न में तीन शुभ ग्रह हों तो मनुष्य को राजा तथा नम्र करते हैं। यदि 'लग्नेश' शुक्र से युक्त हो तो मनुष्य राजमान्य होता है।

विलग्ननाथो विमलो वियच्चरः पुरं प्रपश्येत्किमु तत्र संस्थितः।
कल्याणखेटैः किमु कल्पधामगैः सुखी चिरायुर्व्यसनैर्विवर्जितः ॥ ७७ ॥

यदि लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह लग्न को देखता हो वा लग्न में स्थित हो अथवा लग्न में शुभ ग्रह हों तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य सुखी, दीर्घायु तथा व्यसनों से रहित होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्मरेश्वरे सभार्गवे सतां गृहे शुभग्रहैः ।
समन्विते समीक्षिते सितातपत्रभाङ्नरः ॥ ७८ ॥

सप्तमेश यदि शुक्र से युक्त होकर शुभ राशि में हो और शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो तो मनुष्य श्वेत-छत्र वाला होता है ।

अनिष्ट योगः—

क्रूरे शरीरेऽङ्गविभावसङ्गे किं वार्कचन्द्रावसदन्तराले ।
वेन्द्वर्कयोर्मन्मथगो महीजः पृष्ठोदयस्थे तमिजानिजाते ॥ ७९ ॥

अन्धो मनस्वी परदाररक्तो दुष्कर्म्मकर्त्ता तनुता शरीरे ।
खलास्त्रयोऽङ्गे यदि दीनमन्युदुःखैः समेतो बहुभक्षकश्च ॥ ८० ॥

लग्न में पाप ग्रह हो और पाप ग्रह की राशि में लग्नेश हो तो (१) सूर्य तथा चन्द्रमा पाप ग्रहों के अन्तराल में हों तो (२) सूर्य वा चन्द्रमा से सप्तम में मङ्गल हो और पृष्ठोदय राशि में बुध हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष अन्धा, मनस्वी (मनमाने कामवाला) पराई स्त्री में आसक्त, दुष्ट कर्म करने वाला और शरीर में दुर्बलता होती है । लग्न में तीन पाप ग्रह हों तो दरिद्र शोक तथा दुःखों से युक्त एवं बहुत खाना खाने वाला होता है ।

लग्नादि भावेशों के अन्योन्य राशि गत फलः—

द्रव्येऽङ्गपेऽङ्गे धनपे धनाढ्यो भोगी बली पुण्यकरः स्वमत्याः ।
आचारवित् सोदरपेऽङ्गमाप्ते शौर्य्येऽङ्गपे क्षीणबलो नृपार्च्यः ॥ ८१ ॥

पक्षेण मातुः सहितः सुबन्धुः कल्याणकृत्स्वीयकुलोद्भवानाम् ।
कल्पे जलेशे जलगेऽङ्गपाले भूपालकार्य्ये सरलोपलब्धिः ॥ ८२ ॥

तातस्य शिष्ट्या सहितः क्षमावान् स्वकीयपक्षो गुरुरुत्तमानाम् ।
मतेर्विभौ मूर्त्तिगते धनेशे मतौ मनस्वी निजवंशवृद्धः ॥ ८३ ॥

ज्ञानी च विद्याभरणश्च मानासक्तः प्रजातः प्रथमेश्वरातौ ।
कायेऽरिपे द्रोहयुतः सवित्तः सङ्ग्रहरुक् स्याद्बलवाञ्छरीरे ॥ ८४ ॥

धन में लग्नेश हो और लग्न में धनेश हो तो भोग वाला, बली, पुण्य कर्म कर्त्ता, धनी एवं बुद्धि से आचार जानने वाला होता है । सहज में लग्नेश और लग्न में सहजेश हो तो दुर्बल राजमान्य, मातृपक्ष से युक्त, उत्तम बन्धु वाला एवं वंश वालों को सुख देने वाला होता है । चतुर्थ में लग्नेश और लग्न में चतुर्थेश हो तो राजकार्य करने में सरल बुद्धि से युक्त, पिता की आज्ञा पालन करने वाला, क्षमा वाला, अपने पक्ष वाला एवं सज्जनों का मान्य होता है । पञ्चम में लग्नेश और लग्न में पञ्चमेश हो तो मनमाने काम करने वाला, अपने वंश का उत्थान करने वाला, विद्या से विभूषित, ज्ञानवान् एवं मानी होता है । षष्ठ में लग्नेश और लग्न में षष्ठेश हो तो द्रोह से युक्त बलवान्, रोगरहित, सङ्ग्रह करने वाला एवं धनवान् होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दारेऽङ्गेशे दारपे देहयाते योषालोलस्तातपादानुरागी ।
जातो जन्तुः श्यालकस्यानुजीवी कालेशेऽङ्गे कालगे कल्पपाले ॥ ८५ ॥

द्यूते बुद्धिश्चौर्य्यसक्तश्च शूरो लोकेशाद्वा लोकतः कालमेति ।
गात्राधीशे धर्म्मगे धर्म्मपेऽङ्गे धर्म्मासक्तो भूपमान्यो विदेशी ॥ ८६ ॥

सप्तम में लग्नेश और लग्न में सप्तमेश हो तो पिता की सेवा करने वाला, स्त्री में चञ्चल एवं अपने शाले का सेवक होता है। अष्टम में लग्नेश और लग्न में अष्टमेश हो तो जुआ खेलने वाला, चोरी करने में आसक्त पराक्रमी, राजा अथवा प्रजा से मृत्युदण्ड पाने वाला होता है। नवम में लग्नेश और लग्न में नवमेश हो तो धर्म में आसक्त, राजमान्य और विदेश में रहने वाला होता है।

खे कल्पेशेऽङ्गे खपे काश्यपीशो लाभे रूपे स्यात्प्रसिद्धोऽर्थनाथः ।
लाभेशेऽङ्गे लाभगे लग्नपाले भूपो दीर्घायुर्युते सद्ग्रहेण ॥ ८७ ॥

सुधीः सुकर्म्माऽथ तनौ व्ययेशे पौराधिपे प्रान्त्यगते विलोलः ।
नाशी धनानां कृपणो मनीषाविवर्जितः सर्वशरीरिशत्रुः ॥ ८८ ॥

दशम में लग्नेश और लग्न में दशमेश हो तो राजा, लाभ तथा स्वरूप में विख्यात एवं द्रव्य का स्वामी होता है। लाभ में लग्नेश और लग्न में लाभेश हो तो पृथ्वी पति तथा दीर्घायु होता है। यदि लाभेश तथा लग्नेश शुभ ग्रह से युक्त हों तो उत्तम पण्डित तथा उत्तम कर्म्म करने वाला होता है। व्यय में लग्नेश और लग्न में व्ययेश हो तो चञ्चल चित्तवाला, धन का नाश करने वाला, कृपण, बुद्धिहीन और समस्त प्राणियों का शत्रु होता है।

द्वादश योगः—

योगेऽङ्गवित्तधवयोर्बहुलाभयोगः
कोशानुजालयपयोर्नरपालभृत्यः ।
दुश्चिक्यबान्धवपयोः पृतनाधिनाथः
पातालपञ्चमपयोर्नृपतेः प्रधानः ॥ ८९ ॥

पुत्रारिपालयुजि दारुणकर्म्मकर्त्ता
द्वेष्याङ्गनागृहपयोर्युजि राजयोगः ।
चित्तोत्थनैधनपयोः प्रमदाविपत्ति-
र्दिष्टान्तविध्यधिभुवोर्युजि दिष्टहानिः ॥ ९० ॥

युज्यङ्कवंशभवनाधिभुवोर्नृपालो
व्यापारलाभधवयोर्वसुधावसु स्यात् ।
प्राप्तिव्ययेश युजि चेद्गणतो व्ययोऽस्य
योगे व्ययोदयपयोर्जननेऽर्थहानिः ॥ ९१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न तथा धन के स्वामियों का योग (सम्बन्ध) हो तो ' बहुत लाभ ' होता है। द्वितीय तथा तृतीय के स्वामियों का योग हो तो ' राजभृत्य ' होता है। तृतीय तथा चतुर्थ के स्वामियों का योग हो तो ' सेनापति ' होता है। चतुर्थ तथा पञ्चम के स्वामियों का योग हो तो ' राजमंत्री ' होता है। पञ्चम तथा षष्ठ के स्वामियों का योग हो तो ' उग्रकर्म करने वाला ' होता है। षष्ठ और सप्तम के स्वामियों का योग हो तो ' राजयोग वाला ' होता है। सप्तम तथा अष्टम के स्वामियों का योग हो तो ' स्त्री की हानि ' होती है। अष्टम तथा नवम के स्वामियों का योग हो तो ' भाग्य की हानि ' होती है। नवम तथा दशम के स्वामियों का योग हो तो ' राजा ' होता है। दशम तथा लाभ के स्वामियों का योग हो तो ' पृथ्वी धन वाला ' होता है। लाभ तथा व्यय के स्वामियों का योग हो तो ' ऋण लेकर व्यय करने वाला ' होता है। एवं व्यय तथा लग्न के स्वामियों का योग हो तो ' धन हानि होती है।

लग्नगत रवि फलः—

लग्ने हेलौ पित्तभाङ् निर्गदोऽक्षिरोगी मूर्खो निःसुतश्चोष्णतुन्दी।
मेधावी स्याद्वा सदाचारयुक्तस्तीक्ष्णप्रज्ञः स्वल्पभाषी प्रवासी ॥ ९२ ॥
सौम्येनाढ्यः स्वोच्चगे कीर्त्तियुक्तो दृष्टे प्राणिव्योमवासैर्विपश्चित्।
नीचेऽङ्गेऽर्के स्यात्प्रतापी दरिद्रो ज्ञानद्वेषी चान्धकः सौम्यदृष्टे ॥ ९३ ॥
नो दोषोऽर्के स्वांशके सिंहराशौ नाथः कर्के ज्ञानवान्बुद्बुदाक्षः।
रोगी नक्रे चित्तरोगी विसारे कान्तासेवी कन्यकायां कृतघ्नः ॥ ९४ ॥
कन्यापत्यः क्षेत्रयुग् दारहीनः सौम्यैर्युक्ते निर्गदः पापयुक्ते।
नीचेऽरातौ ज्वरपीडा तृतीये वर्षे भव्यैर्वीक्षिते नैव दोषः ॥ ९५ ॥

लग्न में ' सूर्य ' हो तो पित्त प्रकृति, रोगरहित, नेत्र रोगी, मूर्ख, पुत्ररहित, उष्णोदर वाला, मेधावी (धारणाबुद्धि वाला) सदाचारी, तीक्ष्ण बुद्धि, अल्पभाषी, परदेश में वास करने वाला और सुखी होता है। यदि लग्नगत सूर्य मेषराशि का हो तो कीर्ति से युक्त होता है। एवं लग्नगत ' सूर्य ' बलवान् ग्रहों से दृष्ट हो तो विद्वान् होता है। लग्न में तुलाराशि का सूर्य हो तो प्रतापी, दरिद्री, ज्ञानवान् जनों से वैर करनेवाला और अन्धा होता है। किन्तु वह सूर्य शुभग्रह से दृष्ट हो तो उक्त दोष नहीं होता है। लग्नगत सूर्य सिंहराशि में स्थित होकर सिंहांशक में स्थित हो तो समर्थवान् होता है। लग्न में कर्क राशि का सूर्य हो तो ज्ञानी, बुद्बुदनेत्र तथा रोगी होता है। लग्न में मकर का सूर्य हो तो हृदय रोगी होता है। लग्न में मीन का सूर्य हो तो स्त्री का सेवन करनेवाला होता है। लग्न में कन्या का सूर्य हो तो कृतघ्न, कन्यासन्तान वाला, क्षेत्रसे युक्त एवं स्त्री से रहित होता है। यदि वह सूर्य शुभग्रह से युक्त हो तो रोगरहित और पापग्रह से युक्त हो या नीचराशि में या शत्रु राशि में हो तो तीसरे वर्ष ज्वर से पीडित होता है। यदि वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो उक्त दोष नहीं होता है।

लग्नगत चन्द्रफलः—

इन्दावङ्गे रूपलावण्ययुक्तः स्याद् धस्राब्देऽदभ्रयात्रासमेतः।
व्याध्यम्बुभ्यो नो सुखी ग्लावि कर्कगोऽजाङ्गेऽर्थी शास्त्रविन्मानवेन्द्रः ॥ ९६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मृदङ्गोक्तिर्बल्यधीः सौख्यभाक् सद्दृष्टे बल्यारोग्यवान्वित्तयुक्तः ।
प्रज्ञावान्वाग्जालको वीर्य्यहीने ऽङ्गेशे रुग्भाक् पुण्यदृष्टे तथा न ॥ ९७ ॥

लग्न में 'चन्द्रमा' हों तो रूप तथा सौन्दर्य से युक्त एवं पन्द्रह वें वर्ष में बहुत यात्रा का योग, रोग तथा जल से सुखी नहीं होता है। लग्न में कर्क वृष वा मेष राशि हो और उस में चन्द्रमा हो तो धनी, शास्त्रवेत्ता मनुष्यों का स्वामी, कोमल शरीर तथा कोमल वचन वाला, बलवान् बुद्धिरहित और सुखी होता है। यदि वह शुभ दृष्ट हो तो बलवान् रोगरहित, धन से युक्त, बुद्धिमान् और वाक्पटु होता है। यदि लग्नेश निर्बल होतो रोगी और शुभ दृष्ट होतो रोग रहित होता है।

लग्नगत भौम फलः—

कल्पे कुजे रक्तकरश्च बालिशः शूरो बृहन्नाभिरिहार्थसंयुतः ।
व्रणं शरीरे दृढगात्रमोपकवुभूपकश्चापलवान् बली खलः ॥ ९८ ॥

समानशौर्य्यः किल चित्ररोगभाक् क्रोधी च कोपान्वित उच्चभे स्वभे
तस्मिन्निरोगो दृढगात्रवान्नृपसन्मानकीर्त्तिर्विपुलायुरुद्भवः ॥ ९९ ॥

तत्रारातिखलान्विते ऽल्पतनयो ऽल्पायुर्दुरास्यो ऽनिल–
शूलाद्यामयभाग् जनो ऽङ्गभवने स्वोच्चे विलासी दृशोः ।
विद्यावान् धनवान् सपापखचरे तत्राघराशौ तथा
पङ्कव्योमचरेक्षणेन सहिते चक्षूरुजा स्यात्तदा ॥ १०० ॥

लग्न में 'मङ्गल' हो तो लाल हाथ, मूर्ख, शूर वीर, बड़ी नाभि वाला, धन से युक्त, शरीर में व्रण, दृढ देह, चोर, क्षुधावान्, चञ्चल स्वभाव, बलवान्, दुष्ट, समान पराक्रम वाला, विचित्र रोग वाला क्रोधी तथा कोप से युक्त होता है। उच्चराशि (१०) गत वा स्वराशि (१।८) गत मङ्गल लग्न में हो तो रोग रहित दृढ शरीर, राजा से सम्मान तथा कीर्ति मिले एवं दीर्घायु वाला होता है। शत्रु राशि गत वा पाप युक्त मङ्गल लग्न में हो तो अल्प पुत्र वाला अल्पायु, दुर्मुख एवं वात शूलादि रोग से युक्त होता है। यदि उच्च राशि गत मङ्गल लग्न में हो तो नेत्रों के विलास वाला, विद्यावान् तथा धनी होता है। यदि लग्न गत मङ्गल पाप ग्रह से युक्त हो वा पाप राशि में हो वा पाप ग्रह से दृष्ट हो तो नेत्र रोगी होता है।

लग्न गत बुध फलः—

तनुगे तमीशतनये पाणिपीडनादिबहुश्रुतवान् स्यात् ।
विद्यावान्मृदुभाषी सार्वभौमो ऽनेकदेशे च ॥ १०१ ॥

मंत्रवादी क्षमी सन् पिशाचोच्चाटनशक्तिमान् सदयः ।
सप्तविंशतिवत्सरे तीर्थयात्रायोगः कथितः ॥ १०२ ॥

बहुविद्याप्तिसमेतः सोग्रे ऽघभे ऽपित्तपाण्डुरोगश्च ।
वपुषि व्याधिः सशुभे शुभभे स्वर्णकान्तितनुः स्यात् ॥ १०३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अगदशरीरो ज्योतिःशास्त्रवित्सज्जनद्वेषी मनुजः ।
नयनगदी तनुहीनः सप्तदशवर्षे सहजानाम् ॥ १०४ ॥

अन्योन्यकलहो भवेद्वञ्चकः स्वभोचे सहजसौख्यं च ।
उत्तमलोकं गच्छतु दुरितयुतेक्षिते ऽधरभवने ॥ १०५ ॥

परिगच्छेदधलोकं क्षुद्रदेवतोपासको जनितः ।
शय्यासुखपरिच्युतः खलार्क्यादियुते वामदृक् क्षतिश्च ॥ १०६ ॥

अरातिनायकसहिते यद्वा ऽधरभपयुते दोषो नैव ।
अघहा ऽपात्रव्ययवान् सद्युते धनधान्यादिमान्नियतम् ॥ १०७ ॥

अस्त्रविद्धार्मिकमतिर्गणितशास्त्रविज्ञायते तदानीम् ।
तथा सौख्यसमुपेतस्तर्कशास्त्रवेत्ता दृढशरीरी च ॥ १०८ ॥

लग्न में 'बुध' हो तो विवाहादि शुभ कार्य में बहुत प्रसिद्ध, विद्या युक्त कोमल वचन बोलने वाला, बहुत देशों में सार्वभौम (विश्व प्रसिद्ध) मंत्रशास्त्रवेत्ता, क्षमाशील, पण्डित, पिशाचों के उच्चाटन करने में समर्थ, दयावान्, सत्ताईसवें वर्ष में तीर्थ यात्रा का योग एवं बहुत विद्या से युक्त होता है। यदि वह पाप युक्त हो वा पाप राशि में हो तो पित्त रोग तथा पाण्डु रोग से युक्त और शरीर में रोग होता है। यदि वह शुभ ग्रह से युक्त वा शुभ राशि में हो तो सुवर्ण सदृश कान्ति वाला शरीर, रोग रहित, ज्योतिषशास्त्र वेत्ता, सज्जनों से वैर करने वाला नेत्र रोगी, शरीर से हीन, सत्रह वें वर्ष भाइयों का परस्पर कलह एवं वञ्चक होता है। लग्न में स्वराशिगत वा स्वोच्चराशि गत बुध हो तो भाइयों के सुख से युक्त तथा उत्तम लोक को प्राप्त होता है। यदि लग्न गत बुध पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो वा नीच राशि में हो तो पापलोक की प्राप्ति क्षुद्र (भैरवादि) देवताओं की उपासना और शय्या सुख से रहित होता है। शन्यादि पाप से युक्त हो तो वाम नेत्र की हानि होती है। किन्तु वह षष्ठेश से युक्त हो वा नीचराशि के स्वामी (गुरु) से युक्त हो तो उक्त दोष नहीं होता है और पाप रहित तथा अपात्रों में व्यय करने वाला होता है। एवं शुभ युक्त हो तो निश्चय से धन धान्य युक्त, अस्त्र विद्या का ज्ञाता, धर्म बुद्धि, गणित शास्त्र वेत्ता, सुख से युक्त, तर्क शास्त्र जानने वाला एवं दृढ शरीर वाला होता है।

लग्नगत गुरु फलः—

देवामात्ये ऽङ्गे स्वराशौ सुखी च स्याद् दीर्घायुः शब्दशास्त्राधिकारी ।
ज्ञानी युक्तः प्राज्यपुत्रैस्त्रिवेदी सम्पूर्णानि स्युः फलानि स्वतुङ्गे ॥ १०९ ॥

षोडशाब्दे महाराजयोगो नीचारिपापभे ।
किं तत्रोग्रयुते नीचकर्म्मवान् हृच्चलत्ववान् ॥ ११० ॥

सञ्चारवान् जनद्वेषी मध्यायुः स्वजनच्युतः ।
गर्विष्ठश्च कृतघ्नो ऽधक्लेशभोगी सुतोनितः ॥ १११ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में स्वराशि (९।१२) गत गुरु हो तो सुखी, दीर्घायु व्याकरण का ज्ञाता ज्ञानवान् बहुत पुत्रों से युक्त तथा तीनों वेदों का वेत्ता होता है। लग्न में कर्क राशि का गुरु हो तो उक्त फल परिपूर्ण होते हैं। एवं सोलह वें वर्ष में महाराजयोग होता है। यदि लग्न में नीच राशि गत शत्रु राशि गत वा पाप राशि गत गुरु हो अथवा गुरु पाप ग्रह से युक्त हो तो नीचकर्म वाला, चञ्चल हृदय, सञ्चार शील, मनुष्यों का वैरी, मध्यमायु, परिजनों से रहित, अत्यन्त गर्व वाला, कृतघ्न, पाप तथा क्लेश भोगने वाला एवं पुत्र रहित होता है।

लग्नगत शुक्र फलः—

कल्पे कवौ गणितशास्त्रविदङ्गनाया
हृद्यः सुधीर्धनयुतो गुणवांश्चिरायुः।
लावण्यरूपवसनाभरणप्रियश्च
सत्संयुते बहुलभूषणभूषिताङ्गः ॥ ११२ ॥
गाङ्गेयकान्तितनुरुग्रसमेतदृष्टे
निम्नास्तगे मलिनवञ्चनवान् समेतः।
श्लेष्मानिलादिकगदैर्गृहपे ससर्पे
पृथ्वण्डकः सुखगृहे सशुभग्रहेन्द्रे ॥ ११३ ॥
जनौ यस्य नागान्तभूत्या समेतः स्वराशौ च तस्मिन्महाराजयोगः।
क्षये ऽष्टान्त्यपे भार्गवे दुर्बले चेत्कलत्रद्वयं क्रूरधीर्लोलभाग्यः ॥ ११४ ॥

लग्न में 'शुक्र' होतो गणित शास्त्रवेत्ता, स्त्रीजनों का प्रिय, दीर्घायु, पण्डित, गुणी, धनी एवं रूप लावण्य, वस्त्र तथा भूषणों से प्रेम करने वाला होता है। यदि लग्न गत शुक्र शुभ ग्रह से युक्त होतो बहुत भूषणों से युक्त तथा सुवर्ण के कान्तिवाला शरीर होता है। यदि वह लग्न गत शुक्र पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हो वा नीच राशि में वा अस्तंगत हो तो मलिन शरीर, वञ्चन तथा श्लेष्म वातादि रोगों से युक्त होता है। लग्न का स्वामी यदि राहु से युक्त हो तो बृहद् बीज (बड़े अण्डकोशवाला) होता है। लग्न में शुक्र हो और चतुर्थ में शुभ ग्रह होतो हस्ती पर्यंत ऐश्वर्यवाला होता है। यदि चतुर्थ में स्वराशि गत शुभ ग्रह हो तो 'महाराज योग' होता है। अष्टम में अष्टमेश तथा व्ययेश हों और शुक्र निर्बल हो तो दो स्त्रियोंवाला, क्रूरबुद्धि तथा चञ्चल भाग्य वाला होता है।

लग्न गत शनि फलः—

पङ्गौ पुरे पित्तमरुत्कलेवरस्तत्रोच्चगे ग्रामपुराधिनायकः।
द्रव्यस्य धान्यस्य समृद्धिरात्मभे तातार्थवाँस्तत्र नवाम्बुखेशभे ॥ ११५ ॥
बहुदैवं महाराजयोगश्चन्द्रमसेक्षिते।
भिक्षुकी वृत्तिरादेश्या निवृत्तिः शुभलोकिते ॥ ११६ ॥

लग्न में शनि हो तो शरीर में वात तथा पित्त रोग होता है। यदि लग्नगत शनि उच्च (तुला) राशि का हो तो ग्राम (गांव) पुरों (नगरों) का स्वामी, धन तथा धान्य की वृद्धि होती है। लग्न में स्वराशि (१०।११)

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गत शनि हो तो पिता के द्रव्य से युक्त होता है। यदि लग्न में नवम चतुर्थ वा दशम इन स्थानों के स्वामी की राशि हो और उस में शनि हो तो बड़े भाग्य वाला तथा 'राजयोग होता है। यदि वह शनि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो भिक्षावृत्ति वाला होता है। परन्तु शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उक्त दोष निवृत्ति होती है। अर्थात् भिक्षा वृत्ति वाला नहीं होता है।

लग्नगत राहु फलः—

विलग्नयाते यदि सिंहिकासुते मृतप्रसूतिः क्रियगोकुलीरभम्।
प्राप्ते दयावान्बहुभोगवान्भवेत् सल्लोक्यमाने ऽसति वक्त्रलाञ्छनी ॥ ११७ ॥

लग्न में राहु हो तो मृतप्रजा वाला होता है। यदि लग्न में मेष, वृष, वा कर्क राशि का राहु हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो दयावान् तथा बहुत भोग वाला होता है। एवं लग्नगत राहु पाप ग्रह से दृष्ट हो तो मुख में लाञ्छन (लहसुन) होता है।

लग्नगत केतु फलः—

यदा प्रसूतौ तनुगे शिखावति तदा विनश्येज्जनितस्य योषिता।
व्याधिः शरीरे कररोगवान्मृषा वादी भवेदेवमुशन्ति कोविदाः ॥ ११८ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में लग्न में केतु हो तो उस स्त्री का नाश, शरीर तथा बाहु में रोग वाला एवं मिथ्याभाषी होता है। इस प्रकार पण्डितजन कहते हैं।

लग्नगत रव्यादि ग्रहों का संक्षिप्त फलः—

शरीरपीडां तिथिवत्सरे ऽङ्गगो ब्रध्नो विधत्ते भमिते ऽब्द आमयम्।
लग्नस्थ इन्दुः शरवत्सरे कुजो रिष्टं दशाब्दे किल कान्तिमिन्दुजः ॥ ११९ ॥

सिते ऽङ्गयाते घनवत्सरे परदारानुगामी धिषणः सुशेमुषीम्।
मातङ्गवर्षे ध्वजमन्दराहवो दुःखप्रदाः सायकतुल्यहायने ॥ १२० ॥

लग्न में सूर्य हो तो १५ वें वर्ष शरीर में पीडा, चन्द्रमा हो तो २७ वें वर्ष शरीर में रोग, मङ्गल हो तो ५ वें वर्ष कष्ट, बुध हो तो १० वें वर्ष शरीर की शोभा; शुक्र हो तो १७ वें वर्ष पर स्त्री गमन, गुरु हो तो ८ वें वर्ष बुद्धि की वृद्धि एवं केतु, शनि तथा राहु हों तो ५ वें वर्ष दुःख देते हैं।

रवि दृष्ट लग्न फलः—

मूर्त्तिं तिग्मकरः प्रपश्यति फलं पुण्यस्य भाग्यस्य च
क्रूरं धान्यहिरण्यमानसहितं पुण्यक्षयं पीडनम्।
विख्यातं मदविक्लवं प्रकुरुते चित्तं सरोषं जनौ
तातो ऽप्यस्य विदेशगो भ्रमति ना देशं विदेशं स्वयम् ॥ १२१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न को सूर्य देखता हो तो पुण्य तथा भाग्य का क्रूर फल होता है। एवं धान्य, सुवर्ण तथा मान से युक्त, पुण्य का नाश, पीडा, प्रसिद्ध, मद से विकलता, हृदय में रोष और उस के जन्म समय में पिता परदेश में हो और वह स्वयं देश विदेश में भ्रमण करता है।

चन्द्र दृष्ट लग्न फलः—

सश्लेष्मः सलिलोपभोगसहितो वाताधिकोऽतिस्मरी
रम्याङ्गोऽपि कठोरहृन्मनुभवः सन्मित्रपुत्रैर्युतः।
सन्दृष्टे विधुना घने विकलता देहे क्रयाजीवको
नित्यं मार्गगते जलं सरलता स्यात्सत्कलासंयुतः ॥ १२२ ॥

लग्न को चन्द्रमा देखता हो तो श्लेष्म रोगी, जल के उपभोग से युक्त, अधिक वात वाला, अति कामी सुन्दर शरीर होने पर भी कठोर हृदय वाला, उत्तम मित्र पुत्रों से युक्त, शरीर में विकलता, सर्वदा क्रय विक्रय से जीविका करने वाला वाला, मार्ग में जल की प्राप्ति, सरलता एवं उत्तमकला से युक्त होता है।

भौम दृष्ट लग्न फलः—

युक्तः सङ्ग्रहणीरुजा विकलता नेत्रे पदेऽस्रेक्षिते-
ङ्गे पित्तस्य च कोपयुक् परवधूस्वान्तापहारी रणे।
धीरो दुष्टमतिः प्रतापसहितः पीनध्वजो बुद्धिमान्
ओत्वक्षो यदि जीवितोऽपि तनयादीनां विनाशो भवेत् ॥ १२३ ॥

यदि 'लग्न' मङ्गल से दृष्ट हो तो संग्रहणी रोग से युक्त, नेत्र तथा चरण में विकलता, पित्त कोप वाला पर स्त्री के चित्त का हरण करने वाला, सङ्ग्राम में धीर, दुष्ट बुद्धि, प्रतापी, स्थूल अण्डकोश, बुद्धिमान् एवं बिडाल के समान नेत्र वाला होता है। यदि जीवित भी हो तो पुत्रादियों का नाश होता है।

बुध दृष्ट लग्न फलः—

स्यादुन्नतिर्नृपविशां च कुले विवाद्य-
ङ्गे ज्ञेक्षिते स्वजनसौख्ययुतो विनीतः।
धीमानगायनसुभोगयुतः सुशील्प-
विद्यायुतो मनुभवो वचसां विलासी ॥ १२४ ॥

यदि 'लग्न' बुध से दृष्ट हो तो क्षत्रिय तथा वैश्य वंश में उन्नति, विवाद वाला, परिजनों के सुख से युक्त, विनीत, बुद्धि, मान, गायनविद्या, उत्तमभोग तथा उत्तमशिल्पविद्या से युक्त एवं वचनों का विलासी होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गुरु दृष्ट लग्न फलः——

दृष्टे देवपुरोहितेन जनुषो पौरे प्रभूतं सुखं
गेहानां सुसुहृत्सुभोगसहितस्तीर्थादियानोद्यतः ।
वीर्य्याढ्यो विधियुग् गृहे ऽखिलधनं सन्मित्रपुत्रैर्युतो
दीर्घायुर्व्ययकृत्स्वधर्म्मनिरतो जातो विनीतो भवेत् ॥ १२५ ॥

यदि 'लग्न' गुरु से दृष्ट हो तो गृहों (मकानों) बहुत सुख, उत्तम मित्र तथा उत्तम भोग से युक्त, तीर्थादि यात्रा के लिए प्रस्तुत, बल तथा भाग्य से युक्त, गृह में पूर्णधन उत्तममित्र पुत्रों से युक्त, दीर्घायु, व्यय करने वाला, अपने धर्म्म में तत्पर एवं विनीत होता है।

शुक्र दृष्ट लग्न फलः——

दैतेयवन्द्याखिलदृष्टिदृष्टे जन्तोर्यदा यस्य जनुर्विलग्ने ।
भोगैरनेकैर्द्रविणैः कलत्रसौख्येन युक्तः सुमनोहराङ्गः ॥ १२६ ॥

प्रिया युवत्या वनिताचरित्रः स्याद्बद्धचित्तो ऽत्र विभूषणेषु ।
सन्मानयुक् सुन्दररूपशाली नित्यं नियत्या सहितः स मर्त्यः ॥ १२७ ॥

यदि 'लग्न' शुक्र से दृष्ट हो तो अनेक भोग, धन तथा स्त्री के सुख से युक्त, सुन्दर शरीर, स्त्री का प्रिय स्त्री चरित्र वाला, भूषणों में आसक्त चित्त, सन्मान से युक्त, सुन्दर रूप वाला एवं भाग्य से युक्त होता है।

शनि दृष्ट लग्न फलः——

आदित्यात्मभवेक्षिते तनुगृहे विश्वासघाती जनो
निर्द्रव्यो मलिनश्चवाश्च नयनास्यव्याधिना पीडितः ।
दर्पान्धो गृहकृत्कुरूपवदनः सौख्यं शरीरस्य नो
स्याज्जातो न गुणाधिकः पवनरुक्सम्पीडितः सर्वदा ॥ १२८ ॥

यदि 'लग्न' शनि से दृष्ट हो तो विश्वासघाती, धनरहित, मलिन वर्ण, नेत्र तथा मुखरोग से पीडित, कामान्ध, गृह करने वाला, कुत्सित रूप मुख वाला, शरीर के सुख से हीन, गुण वर्जित एवं नित्य वात रोग से पीडित होता है।

लग्नगत लग्नेश फलः——

लग्ने ऽङ्गपे ऽतिचपलः परगो द्विभार्य्यो
भूपो विरुग् दृढतनुः सधनश्चिरायुः ।
भृत्या युतश्च सचिवः सुतनुर्मनस्वी
भूलाभभाक् सुखविलासयुतो बलिष्ठः ॥ १२९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अल्पं प्रभुत्वं तनुकान्तिरल्पा स्वल्पप्रभावो विजयस्तथाल्पः ।
स्यादल्पसौख्यं न कदापि शीर्षमल्पं मुनीन्द्रैरिति सम्प्रदिष्टम् ॥ १३० ॥

लग्न में लग्नेश हो तो अत्यन्त चञ्चल, पर स्त्री गामी, दो स्त्री वाला, भूमि का स्वामी, आरोग्य, दृढ शरीर, धनी दीर्घायु, ऐश्वर्य युक्त, मंत्री, सुन्दरशरीर, मनमाने काम करने वाला, भूमि के लाभ वाला, सुख तथा विलास से युक्त एवं अत्यन्त बलवान्, अल्पप्रभुता, अल्पकान्ति, अल्पप्रभाव, अल्पविजय तथा अल्प सौख्यवाला होता है। परन्तु उसका कभी छोटा शिर नहीं होता है अर्थात् बृहत् शिर वाला होता है । इस प्रकार मुनियों ने कहा है ।

धन गत लग्नेश फलः—

मानी बुधः सुकृतकृच्चलधीः सुशीलः
स्थानप्रधान उदयेशि धने चिरायुः ।
वित्तान्वितो बहुगुणः पृथुदीर्घदेहो
भूलाभवान् बहुलदारयुतः सुतार्थी ॥ १३१ ॥

प्राप्तिं सुवर्णाम्बरपूर्वकाणां सुचञ्चलैश्वर्य्यजचञ्चलत्वम् ।
सुखं भवेत्स्वीयजनस्य नित्यं प्रभूतमैश्वर्य्यमुपैति मर्त्यः ॥ १३२ ॥

धन में लग्नेश हो तो पुण्य करने वाला, चञ्चल बुद्धि, सुशील, मान से युक्त, पण्डित, बहुत गुण वाला, स्थूल दीर्घ शरीर, स्थान के कारण प्रधान, धन से युक्त, दीर्घायु, भूमि के लाभ वाला, बहुत स्त्रियों से युक्त, पुत्र की अभिलाषा वाला, सुवर्ण तथा वस्त्र की प्राप्ति, अति चञ्चल ऐश्वर्य से उत्पन्न चञ्चलता वाला, अपने लोगों का तथा कुटुम्ब का सुख एवं बहुत ऐश्वर्य से युक्त होता है।

सहज गत लग्नेश फलः—

सद्बान्धवोत्तमसुहृन्मतियुक् च दाता
शूरः सुखी सुकृतमानयुतो द्विभार्य्यः ।
कण्ठीरवोपमपराक्रमवान्समस्त-
सम्पद्युतः सहजवान् सहजेऽङ्गनाथे ॥ १३३ ॥

सत्सोदरः सत्सखिवर्गसम्पद् वाणी शुभा दृक् च शुभा नरस्य ।
दानस्य पुष्टिर्नियतेस्तथैव प्राज्येन वित्तेन बलेन युक्तः ॥ १३४ ॥

सहज में लग्नेश होतो उत्तम बन्धु, उत्तम मित्र, बुद्धि से युक्त, दानी, शूर वीर, सुखी, पुण्य तथा मान से युक्त, दो स्त्रीवाला, सिंह के समान पराक्रम वाला, सम्पूर्ण सम्पत्ति से युक्त, भाइयों वाला, उत्तमभाई, उत्तम मित्रगण, उत्तम सम्पत्ति, उत्तमवाणी, उत्तमनेत्र, दान तथा भाग्य की अधिकता एवं अधिक धन तथा बल से युक्त होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख गत लग्नेश फलः—

भूपप्रियः सुरसभुक् पितृमातृसम्प-
त्सौख्याश्वनागरथयुक् पितृमातृभक्तः ।
सौन्दर्य्यकामबहुसोत्थगुणैः समेतो-
ल्पाश्यङ्गपे ऽम्बुनि सुभक्ष्ययुतश्चिरायुः ॥ १३५ ॥

अम्बासुखं सर्वविलाससौख्यं सुभक्ष्यभोज्यं च कृषिक्रियातः ।
अनेकलब्धिर्मनुजाधिनाथात्स्यादेवमाहुर्निखिलागमज्ञाः ॥ १३६ ॥

सुख में लग्नेश हो तो राजा का प्रिय, सुन्दर रसों का भोगी; पिता माता की सम्पत्ति वाला, सौख्य, घोड़े, हाथी तथा रथ से युक्त; पिता माता का भक्त; सुन्दरता, कामदेव, बहुत भाई तथा गुणों से युक्त; अल्पभोजन करने वाला, उत्तम भक्ष्य पदार्थों से युक्त; दीर्घायु, माता का सुख, समस्त विलासों का सुख, कृषि कार्य से उत्तम भक्ष्य भोज्य की प्राप्ति एवं राजा से अनेक प्रकार का लाभ होता है। इस प्रकार आचार्य कहते हैं।

सुत गत लग्नेश फलः—

होरेश्वरे चिति सुकर्म्मरतः सुतानां
मध्यं सुखं प्रथमसन्ततिनाशनं स्यात् ।
त्यागी प्रभुश्च विदितो बहुजीवितश्च
रुड्मानशीलसहितो जनितस्तदानीम् ॥ १३७ ॥

विश्वम्भराधीशनिकेतवासी भवेन्मनुष्यो विनयेन युक्तः ।
धृत्या च कृत्या च धिया समेतो नृपप्रियो वीर्य्ययुतः सुवेषः ॥ १३८ ॥

पञ्चम में लग्नेश हो तो उत्तम कर्मों में तत्पर, पुत्रों का मध्यम सुख, प्रथम सन्तान की हानि, त्यागी, समर्थवान्, प्रसिद्ध, दीर्घायु; रोष, मान तथा शील युक्त; राजद्वार में निवास करने वाला; विनयवान्; धृति, कृति तथा बुद्धि से युक्त, राजा का प्रिय, बलवान् एवं सुन्दर वेष वाला होता है।

षष्ठगत लग्नेश फलः—

गात्रेशे गदगे धनी गतगदः सत्कर्म्मकर्त्ता ऽङ्गभू-
सोत्थायूरिपुयुक् च मातुलचतुष्पादप्रसूसौख्यभाक् ।
वैरिघ्नः सबलो ऽभिमानरहितो जातः कदर्य्यो ऽरिज-
त्रासाढ्यो विविधार्त्तिपीडिततनुः श्रेष्ठोदरः क्षामिमान् ॥ १३९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

षष्ठ में लग्नेश हो तो धनवान्, आरोग्य, उत्तम कर्म करने वाला; पुत्र, भ्राता, आयु तथा शत्रु से युक्त; मामा, पशु तथा माता इन के सुख से युक्त; शत्रु का नाश करने वाला, बलवान, अभिमानशून्य, कृपण, शत्रुभय युक्त, अनेक कष्ट से पीडित शरीर, सुन्दर उदर एवं भूमि लाभ वाला होता है।

सप्तमगत लग्नेश फलः--

देहेशेऽस्ते विरक्तः सुतसहजवधूस्वल्पसौख्यं सुरूप-
तेजःशीलैर्विलासैर्युवतिरिह युताऽस्योद्यमी चार्त्तकोऽसौ।
तेजस्वी शीलवद्बहुर्थसुखविनययुक् स्यात्सखित्वं प्रवासी
त्वेके प्राहुर्न जीवेद्युवतिजन इलानाथजातोऽपि निःस्वः ॥ १४० ॥

सप्तम में लग्नेश हो तो वासना रहित; पुत्र, भ्राता तथा स्त्री का अल्प सुख होता है। उसकी स्त्री तेज, शील तथा विलासों से युक्त होती है और वह उद्योगी, तेजस्वी, शील, बहुत धन, सुख तथा विनययुक्त, मित्रता वाला एवं परदेश में वास करने वाला होता है। उसकी स्त्री जीवित नहीं रहती है और वह राजा का पुत्र भी हो तो दरिद्र होता है।

अष्टमगत लग्नेश फलः--

मृतिगत उदयेशे सर्वरुग्युग्विकामः
स कठिनतर उग्रो दीर्घमायुः कृशाङ्गः।
पिशुन इह धनानां सञ्चयी वञ्चकोऽस-
द्विपदि कटुजल्पी पुण्यके पीनदेहः ॥ १४१ ॥

कायेशि वान्त्ये कलहे कदर्य्यः सुकोपवानन्यकलत्रभोगी।
स्याच्छिल्पविद्यासहितः शरीरी द्यूतक्रियाभिः सहितश्च दस्युः ॥ १४२ ॥

अष्टम में लग्नेश हो तो सम्पूर्ण रोगों से युक्त, कामरहित, अतीव कठोर, उग्रस्वभाव, दीर्घायु, कृश शरीर (चुगलखोर), धन सञ्चय करने वाला तथा वञ्चक होता है। यदि लग्नेश पापग्रह हो तो कटु वचन बोलने वाला और शुभग्रह हो तो स्थूल शरीर वाला होता है। यदि व्यय या अष्टम में लग्नेश हो हो तो कृपण, अति क्रोधी, परदार गामी, शिल्पविद्या वाला, द्यूतकर्म वाला और चोर होता है।

पुण्येऽङ्गेप पूज्यतमो नृपाणां समानसत्त्वः सुकृती सुशीलः।
तेजःसमज्ञासहितः प्रवासी परोपहर्त्ता विपुलार्थयुक्तः ॥ १४३ ॥

मनोरथाढ्यः सुजनः सुखाढ्यो गीर्वाणगोत्रासुरभक्तिरक्तः।
सुबान्धवो भ्रातृसुहृद्वदान्यः सुशेमुषीमाञ्जनिमांस्तदानीम् ॥ १४४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्राप्तौ पुरेशे पथि वा जनप्रियो वाग्मी पटुः पुत्रधनाबलायुतः ।
विशेषलिप्सारहितो जनार्दनभक्त्या समेतो विधिनान्वितो भवेत् ॥ १४५ ॥

नवम मे लग्नेश हो तो राजाओंका अतीव पूज्य, समान पराक्रम वाला, पुण्यात्मा सुशील तेज तथा कीर्ति से युक्त परदेश में वास करनेवाला परोपकर्त्ता बहुत धन युक्त मनोरथ से युक्त उत्तम मनुष्य सुखी देवता तथा ब्राह्मणो का भक्त उत्तम बान्धवोंवाला भाई तथा मित्रजनों के मध्य में अति दानी एवं अति बुद्धिमान् होता है। लाभ वा नवम में लग्नेश हो तो विशेष लिप्सा (इच्छा) से रहित विष्णु भक्ति में तत्पर और भाग्यवान् होता है।

दशमगत लग्नेश फलः—

इलापलाभी गुरुमातृपूजनमतिः समृद्धः सुकविः सुशीलवान् ।
सुखं स्वपित्रोः शुभकर्म्मणा समभुद्भोगयुक् क्षोणिपतिः पदेऽङ्गपे ॥ १४६ ॥

दशम में लग्नेश हो तो राजा से लाभ वाला गुरुजन तथा माता में भक्ति रखनेवाला, सम्पत्तिमान्, उत्तम कवि सुशील, माता पिता से सुखी, शुभकर्म के साथ भोग युक्त एवं पृथ्वी का स्वामी होता है।

लाभगत लग्नेश फलः—

प्राप्त्यागारगतस्तनूपरिवृढः पुत्रादिकानां सुखं
दुर्गेलाविषयान्तरे च विदितं रोगं प्रकुर्य्याद्गले ।
दीप्त्याढ्यं बलिनं न सीदति तथा दीर्घायुषं तेजसा
युक्तं सुन्दर वाहनैश्च सहितं यस्याङ्गिनः सम्भवे ॥ १४७ ॥

लाभ में लग्नेश हो तो पुत्रादियों का सुख दुर्ग भूमि तथा परदेश में प्रसिद्ध, गल में रोग, कान्तिमान्, बली दुःख रहित दीर्घायु तेजस्वी और सुन्दर वाहनों से युक्त होता है।

व्यय गत लग्नेश फलः—

कुर्य्यात्कायविभुर्व्यये व्ययकरं गोत्रानुजानां रिपुं
धीमन्तं किल दत्तभक्तमनुजं सङ्गं खलानां तथा ।
देहं रुग्दलितं स्वबान्धवजनैः साकं विरोधं कटु-
वाणीं वादकरं नरं विगलितप्राप्तिं विदेशाटनम् ॥ १४८ ॥

व्यय में लग्नेश हो तो व्यय करनेवाला, बन्धुजन तथा भाइयों का शत्रु, बुद्धिमान्, दत्तभुक (दिया हुआ खाने वाला) दुष्ट जनों का सङ्गी, रोग ग्रस्त शरीर, बन्धुजनों के साथ वैर करनेवाला, कटु वचन बोलनेवाला, विवाद करनेवाला, क्षीण लाभवाला एवं विदेश में भ्रमण करनेवाला होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्नगत मेष राशि फल:—

मेषाङ्गे परानिर्जितोऽल्पधिषणो दुष्टैर्वियोगः कली
रक्ताङ्गः स्वजनापमानसहितः शस्त्राभिघातस्तथा ।
दुःखी बुद्धिविचक्षणः समजनैः सेव्यो हि सर्वाशनः
प्रोक्तो वित्तपरिक्षयो बुधजनैः पित्ताधिकः सर्वदा ॥ १४९ ॥

लग्न मे मेष राशि हो तो शत्रुओं से पराजित, अल्प बुद्धि, दुष्टों से वियोग तथा कलह, रक्त शरीर, परिजनों से अपमानित, शस्त्र से प्रहार, दुःखी, बुद्धि से चतुर, सब जनों का सेवनीय, सर्वभक्षी, धन का नाशक एवं नित्य अधिक पित्त वाला होता है ।

लग्नगत वृष राशि फल:—

वृषोदये श्वेततनुः कृतघ्नः पराजितः स्त्रीभृतकैर्मनुष्यः ।
श्लेष्माधिकः स्यात्स्थिरतासमेतः क्रोधी तथा मन्दगतिः प्रजातः ॥ १५० ॥

लग्न में वृष राशि हो तो श्वेत शरीर, कृतघ्न, स्त्री तथा दासों मे पराजित, अधिक कफ वाला स्थिर स्वभाव क्रोधी एवं मन्दगतिवाला होता है ।

लग्नगत मिथुन राशि फल:—

हृष्टः प्रसन्नः शुभमूर्धजोऽतिगौरो विनीतः प्रियगीर्जनुभृत् ।
स्त्रीरक्तहृद् गीतविचक्षणश्च युग्मोदये भूपतिपीडिताङ्गः ॥ १५१ ॥

लग्न में मिथुन राशि हो तो हर्षित, प्रसन्नमुख, उत्तम केश, अति गौर शरीर, नम्र, प्रियभाषी, स्त्री मे आसक्त, गायन में चतुर एवं राजा से पीडित शरीरवाला होता है ।

लग्नगत कर्क राशि फल:—

कुलीरलग्नेऽतिमतिः सुसेव्यः तोयावगाहानुरतः प्रगल्भः ।
शुचिः क्षमी धर्म्मरुचिः समर्थाङ्गो गौरदेहोऽधिकपित्तयुक्तः ॥ १५२ ॥

लग्न मे कर्क राशि हो तो अतिबुद्धिमान्, सुन्दर सेवनीय, जल क्रीडामें आसक्त, अति हृष्ट, पवित्र, क्षमावान, धर्म में रुचि रखनेवाला, समर्थ शरीर, गौर वर्ण एवं अधिक पित्त से युक्त होता है ।

लग्नगत सिंह राशि फल

स्यात्पाण्डुदेहः सुतरां निरीहः प्रियामिषोऽरण्यचरः प्रगल्भः ।
शूरः सुतीक्ष्णोऽनिलपित्तकाभ्यां सम्पीडिताङ्गो मृगराजलग्ने ॥ १५३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में सिंह राशि हो तो श्वेत वर्ण, अतीव इच्छा रहित, मांस भक्षक, वनचारी, अतिधृष्ट, शूर वीर अति तीक्ष्ण स्वभाव एवं वात पित्त से पीडित शरीरवाला होता है ।

लग्नगत कन्या राशि फल:—

कन्याविलग्ने कफपित्तयुक्तः श्लेष्माऽप्रजः करिरुचिः सुभीरुः ।
मायाधिको मारनिपीडिताङ्गः स्यादङ्गनाभिर्वियुतः सदैव ॥ ५४ ॥

लग्न में कन्या राशि हो तो कफ तथा पित्त से युक्त, श्लेष्म प्रकृति, सन्तति हीन, तोते के समान वर्ण, अतीव भयवाला, कपटी, कामदेव से पीडित शरीर एवं नित्य स्त्रीजनों से रहित होता है ।

लग्नगत तुला राशि फल:—

तुलाधराङ्गे नृपमानयुक्तो देवार्चने तत्पर एव कल्पः ।
धर्म्मप्रियः स्यादिह सत्यवक्ता श्लेष्माधिको देहधरः प्रजातः ॥ ५५ ॥

लग्न में तुला राशि हो तो राज सन्मानवाला, देव पूजन में लीन समर्थवान्, धर्म्म में रुचि रखनेवाला, सत्य बोलनेवाला एवं अधिक श्लेष्म प्रकृतिवाला होता है ।

लग्नगत वृश्चिक राशि फल:—

यस्याङ्गिनो जन्म सरीसृपाङ्गेऽरिमर्दकः शास्त्रकथानुरक्तः ।
असत्यवक्ता गुणवान् प्रकोपयुक्तो महीनाथसुपूजिताङ्गः ॥ ५६ ॥

वृश्चिक लग्न में जिस मनुष्य का जन्म हो वह शत्रुओं का नाश करनेवाला, शास्त्र कथा में आसक्त, मिथ्या भाषण करनेवाला, गुणी, क्रोधी एवं राजा से सन्मान पानेवाला होता है ।

लग्नगत धनु राशि फल:—

कोदण्डकल्पे मनुजस्य यस्य जनिर्भवद्वाडवदेवभक्तः ।
कार्य्यप्रधृष्टो नरनाथयुक्तस्तुरङ्गजंघः सखिसप्तियुक्तः ॥ ५७ ॥

धनु लग्न में जिस मनुष्य का जन्म हो वह ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, कार्य में अति धृष्ट, राजा से युक्त घोडे के समान जंघावाला एवं मित्र तथा घोडों से युक्त होता है ।

लग्नगत मकर राशि फल:—

कफानिलाभ्यां परिपीडिताङ्गः सुदीर्घदेहः परवञ्चकश्च ।
भीरुः सुवृत्तोऽधरतः सुतीव्रस्तोषेरतः पुण्यरतो मृगाङ्गे ॥ ५८ ॥

लग्न में मकर राशि हो तो कफ तथा वात से पीडित शरीर, अति लम्बा शरीर, अन्यजनों से वञ्चना करनेवाला, डरपोक, सुडौल शरीर, पापपरायण, तीव्र स्वभाव, सन्तोषी एवं पुण्य कार्य में तत्पर रहता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्नगत कुम्भ राशि फलः—

योषाप्रियः शिष्टजनानुरक्तो वाताधिकः सुस्थिरतासमेतः ।
सुहृत्सुदेहो जनवल्लभोऽम्बुनिषेवकः कुम्भधरे विलग्ने ॥ ५९ ॥

लग्न में कुम्भ राशि हो तो स्त्रीजनों का प्रिय, सज्जनों में अनुरक्त, अधिक वायुवाला, स्थिर स्वभाव, उत्तम हृदय तथा उत्तम शरीर, मनुष्यों का प्रिय एवं जल का सेवन करनेवाला होता है ।

लग्नगत मीन राशि फलः—

वैसारिणाङ्गेऽम्बुरतो विनीतः सुकोविदः स्यात् सुरतानुकूलः ।
पित्ताधिकः कीर्त्तिसमन्वितश्च योषाजनानां दयितः प्रचण्डः ॥ ६० ॥

लग्न में मीन राशि हो तो जल सेवनवाला, नम्र, उत्तम पण्डित, सुरत (स्त्री पुरुष के सङ्गम रूप) में अनुकूल, अधिक पित्तवाला, कीर्त्तियुक्त, स्त्रीजनों का प्रिय एवं प्रचण्ड स्वभाववाला होता है ।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे जोशीत्युपाह्व पण्डित चक्रधर भट्टकृत भाषाटीकोदाहरणोपेते तनुभावचिन्तनप्रकरणं त्रयोविंशमधासितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ
धनभावचिन्तनकप्रकरणं प्रारभ्यते ।

त. सं. धाम त्रि
तपोवन संस्कार
धारागिरि, कपोल
नवसारी-३९६४
५८९५९, ५८

धनभाव जन्य पदार्थों का परिज्ञानः—

वित्तं कुटुम्बं मणिदक्षिणाक्षिवाग्वक्त्रविद्याबहुभाषणानि ।
स्वर्णादिकानां क्रयविक्रयौ च रत्नादिकानामपि सञ्चयश्च ॥ १ ॥
मुक्ताफलं भुक्तिविशेषसत्यामित्राणि मित्रं निजपूर्वजार्थम् ।
दासार्थसिद्धी निधनस्य जालं विचिन्त्यमेतद् द्रविणे समस्तम् ॥ २ ॥

धन, कुटुम्ब, मणि, दक्षिणनेत्र, वाणी, मुख, विद्या, बहुत बोलना, सुवर्णादि धातुओं का खरीदना बेचना, रत्नों का सञ्चय (सङ्ग्रह) मोती, भोजनविचार, सत्य, शत्रु, मित्र, पूर्वजों का धन, दास (सेवक), द्रव्यलाभ और मृत्यु का विचार ये पूर्वोक्त समस्त पदार्थ धनभाव में विचारने चाहिएँ ।

धनगत रव्यादि ग्रहों से धन संख्या परिज्ञानः—

कोशालये कान्तिपतौ स्वतुङ्गे सहस्रपो लक्षपतिः क्षपेशे ।
सर्वसहाजे शतनायकः स्याच्चन्द्रात्मजे कोटिपतिः प्रदिष्टः ॥ ३ ॥
खर्वाधिपः शक्रपुरोहितेऽच्छे शङ्खाधिपोऽल्पार्थपतिर्घटेशे ।
स्वतुङ्गनीचास्तरगे विहङ्गे संख्या धनानामनुपाततोऽत्र ॥ ४ ॥

धनभाव में उच्चराशिगत सूर्य हो तो सहस्र (हजार) धन का स्वामी, चन्द्रमा हो तो लक्षपति, मङ्गल हो तो सौ का स्वामी, बुध हो तो कोटि (करोड़) पति, गुरु हो तो खर्वेश, शुक्र हो तो शंखेश एवं शनि हो तो अल्प धन का स्वामी होता है । यदि धनस्थ ग्रह उच्च तथा नीच के अन्तराल में हो तो त्रैराशिक विधि से धन की संख्या जाननी चाहिए ।

धन विचार में बलाबलत्व परिज्ञानः—

त्रिकोणभे त्र्यङ्घ्रिबलं स्वभेऽर्द्धमधीष्टगेहे त्रिगुणाष्टमांशम् ।
समेऽष्टमाशं सखिभेऽङ्घ्रितुल्यं नीचर्क्षगं खं रिपुभे नृपांशम् ॥ ५ ॥
दन्तांशतुल्यं त्वधिशत्रुराशावथार्थपाल्लाभनिकेतनेशात् ।
स्वकारकायार्थगृहेक्षकेतैर्नभश्चरेन्द्रैर्द्रविणस्य चिन्ता ॥ ६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मूल त्रिकोण राशि में धन दाता ग्रह हो तो तीन पाद ०।४५।० बल, स्वराशि में अर्द्ध ०।३०।० बल, अधिमित्र राशि में त्रिगुणित अष्टमांश ०।२२।३० बल, सम राशि में अष्टमांश ०।७।३० बल, मित्र राशि में एक चरण ०।१५।० बल, नीच राशि में शून्य ०।०।० बल, शत्रु राशि में षोडशांश ०।३।४५ बल एवं अधिशत्रु राशि में द्वात्रिंशदंश ०।१।५२।३०। बल होता है। धनेश, लाभेश धन कारक (गुरु) लाभ दर्शी, धन दर्शी, लाभगत एवं धन गत ग्रहों से धन का विचार करे।

महाधनी योगः—

सूनौ स्वभे भे भगजे भवस्थे वेज्ये भवेऽर्के निजभेऽङ्गजे वा।
स्वभे गुरौ शीतकरे सुते वा सशोभने केन्द्रचतुष्टयेऽथ ॥ ७ ॥
वैशेषिकांशेऽङ्गधनायपैर्वा लाभेऽसिते कर्किणि कोविदे वा।
गुरौ स्वभेऽङ्गेऽब्जकुजान्विते वा ज्ञेऽङ्गे स्वभेऽच्छार्किगुतक्षिते वा ॥ ८ ॥
गुर्वारयुक्तेऽरुण उद्गमे हरौ वेन्दौ तनौ कर्किणि सारगोऽपतौ।
वाङ्गे स्वभेऽस्रे ज्ञासितार्किसंयुते वाच्छे स्वभेऽङ्गे ज्ञयमक्षितान्विते ॥ ९ ॥
किंवा स्त्रियां राहुयमारभार्गवा वार्कौ धने बोधनवीक्षिते ततः।
भावैश्चतुर्भिर्बलिभिस्तपोधनप्राप्त्यम्बरैर्ना प्रभवेन्महाधनी ॥ १० ॥

तुला वा वृष राशि गत 'शुक्र' पञ्चम में हो और लाभ में शनि हो तो (१) लाभ में गुरु और पञ्चम में सिंह गत सूर्य हो तो (२) स्वराशि (९।१२) में गुरु हो और पञ्चम में चन्द्रमा हो तो (३) चारों केन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त हो तो (४) लग्न, धन तथा लाभ इन तीनों स्थानों के स्वामी यदि वैशेषिकांश में हों तो (५) लाभ में शनि और कर्क राशि में बुध हो तो (६) लग्न में स्वराशि (९।१२) गत गुरु हो और वह चन्द्रमा तथा मङ्गल से युक्त हो तो (७) लग्न में स्वराशि (३।६) गत बुध हो और 'शुक्र' यदि शनि से युक्त वा दृष्ट हो तो (८) लग्न में सिंह राशि गत सूर्य हो और वह गुरु तथा मङ्गल से युक्त हो तो (९) लग्न में कर्क राशि गत चन्द्रमा हो और वह मङ्गल तथा गुरु से युक्त हो तो (१०) लग्न में स्वराशि (१।८) गत मङ्गल हो और वह बुध शुक्र वा शनि से युक्त हो तो (११) लग्न में स्वराशि (२।७) गत शुक्र हो और वह बुध तथा शनि से दृष्ट वा युक्त हो तो (१२) कन्या में राहु, शनि, मङ्गल और शुक्र ये चारों हों तो (१३) धन में शनि हो और वह बुध से दृष्ट हो तो (१४) नवम, द्वितीय, लाभ तथा दशम ये चारों भाव बलवान् हों तो इन पूर्वोक्त योगों में उत्पन्न पुरुष 'महाधनी' होता है।

पङ्गावुपान्त्ये सितगौ सकर्किणि सुतेऽथ सद्धे तनये शुभान्विते।
लब्धाविलानन्दनलक्ष्मणौ ततः सद्दृष्ट आरे सगुरौ महाधनी ॥ ११ ॥

लाभ में शनि और पञ्चम में कर्क गत चन्द्रमा हो तो (१) पञ्चम में शुभ ग्रह की राशि हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो एवं लाभ में मङ्गल तथा चन्द्रमा हों तो (२) 'मङ्गल' यदि शुभ ग्रह से दृष्ट और गुरु से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष महाधनी होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बहुधन योगः—

देहेशभागपतिसंयुतराशिनाथ-
युक्तांशपे बलिनि सौम्यदृशा समेते ।
वैशेषिकांश उत वित्तगृहेशयुक्ते
प्राप्तीश्वरे पदपयुक्तलवेशदृष्टे ॥ १२ ॥
वैशेषिकांशकगते परमोच्चभागे
यद्वाऽनघैरुपचयालयगैः किमङ्गे ।
सार्थायपे पुरपतौ किमु पौरयाता-
वन्योन्यमिष्टखचरौ भववित्तपौ वा ॥ १३ ॥
केन्द्रस्थितौ द्रविणदेहनिकेतनाथौ
संवीक्षितौ यदि मिथः सुकृतांशके वा ।
कल्याणकायभवनेशविलोकितौ वा
वक्त्राधिपे बलिनि वित्तभ आयपेन ॥ १४ ॥
तत्कारकेण च समेतविलोकिते वा
नाथान्वितेषु फलपौरपरिच्छदेषु ।
वार्थायपौ भवगतौ सखिसद्मसंस्थौ
स्वोच्चादिगौ बहुधनं समुपैति मर्त्यः ॥ १५ ॥

जिस ग्रह के नवांश में लग्नेश हो उस ग्रह के नवांश का स्वामी बलवान् हो और शुभ ग्रह से दृष्ट होकर वैशेषिकांश में हो तो (१) 'लाभेश' यदि द्वितीयेश से युक्त होकर दशमेश के नवांशेश से दृष्ट हो और वैशेषिकांश में तथा परमोच्चांश में हो तो (२) उपचय (३।६।१०।११) स्थान में शुभ ग्रह हों तो (३) लग्न में लग्नेश हो और वह धनेश तथा लाभेश से युक्त हो तो (४) लग्न में लाभेश तथा धनेश हों और वे दोनों परस्पर मित्र ग्रह हों तो (५) केन्द्र मे द्वितीयेश तथा लग्नेश ये दोनों हो और वे दोनों परस्पर देखते हों तथा शुभ ग्रह के नवांश में हों वा लग्नेश धर्मेश से दृष्ट हों तो (६) धन में बलवान् धनेश हो और लाभेश तथा लाभ कारक (गुरु) से युक्त वा दृष्ट हो तो (७) लाभ लग्न तथा द्वितीय ये तीन भाव अपने अपने स्वामी यों से युक्त हों तो (८) लाभ में धनेश तथा लाभेश हो और वे दोनो मित्रराशि वा उच्च राशि में हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष बहुत धनवाला होता है ।

जीवे वित्तनिकेते सद्दृष्टे प्रचुरार्थम् ।
कल्याणा द्रविणस्था दद्युश्चेद्विविधार्थम् ॥ १६ ॥

धन में गुरु हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो बहुत धनवाला होता है । धन में बहुत शुभ ग्रह हों तो अनेक प्रकार के द्रव्य को देते है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बाल्य काल में बहु धन योगः—

केन्द्रे धर्म्मधवान्विते धनधवे सद्दृष्टियोगे तनू-
नाथांशेशपतीक्षितेऽथ विमलैः पोष्यागमाङ्गोपगैः ।
मित्रस्वोच्चभगैर्निजोच्चलवगैर्वैशेषिकांशान्वितैः
स्वेशस्थांशपलोकितैर्यदि नरो बाल्ये बहुद्रव्यभाक् ॥ ७ ॥

केन्द्र में धनेश हो तथा वह नवमेश से युक्त होकर शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो और लग्नेश के नवांश के स्वामी की राशि के स्वामी से दृष्ट हो तो (१) धन, लाभ तथा लग्न में शुभ ग्रह हों और वे अपने मित्र की राशि में अपने उच्चांश में वा वैशेषिकांश में हो और धनेश के नवांश के स्वामी से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष बाल्य काल में बहुत धनवाला होता है ।

धनवान् योगः—

स्वशाद्धनेशे धनपे च कण्टकेऽथोच्चे हितर्क्षे सबले धनीधप ।
धर्म्मायखस्थेऽथ धनाधिनायके सिंहासनांशेऽथ निजर्क्षगामिषु ॥ ८ ॥
चतुर्षु खेटेष्वथ लोहितद्युतिमांशुयोगेऽथ सदीक्षिते विदि ।
कोशेऽथ लब्धौ धनपे फलाधिपेऽर्थायेऽथ वा कण्टकगौ च च तावुभौ ॥ ९ ॥
किं केन्द्रकोणे फलपेऽथ पामरे तुङ्गादिभांशे भवगेऽथ वा क्रमात् ।
रवाङ्गायगैर्ग्लौगुरुमन्दगैर्धनेऽस्रेन्दूत्थयोर्हेलिभयोर्हिते धनी ॥ २० ॥

धनेश जिस स्थान मे हो उस से द्वितीयस्थान का स्वामी और लग्नेश ये दोनों केन्द्र में हों तो (१) बलवान् धनेश अपनी उच्च राशि में वा मित्र राशि में स्थित होकर नवम एकादश वा दशम में हो तो (२) सिंहासनांश में धनेश हो तो (३) अपनी अपनी राशि में चार ग्रह हों तो (४) मङ्गल तथा चन्द्रमा का योग हो तो (५) धन में बुध हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो (६) लाभ में धनेश और धन में वा लाभ में लग्नेश हो तो (७) केन्द्र में धनेश तथा लाभेश हों तो (८) केन्द्र वा त्रिकोण में लाभेश हो (९) यदि पापग्रह उच्चादि राशि नवांश में स्थित होकर लाभ में हो तो (१०) दशम में चन्द्रमा, लग्न में गुरु तथा लाभ में शनि, धन में मङ्गल तथा बुध एवं चतुर्थ में सूर्य तथा शुक्र हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष धनवान् होता है ।

पूज्ये पोष्ये स्वोच्चराशौ स्वराशौ वा सारेऽथायार्थपौ सारसंस्थौ ।
लेखानाथे लाभगेऽथोच्चमाप्ते सौम्ये राहौ रैगतेऽङ्गेऽङ्गपे वा ॥ २१ ॥
चान्द्रीज्याच्छैर्दृश्यदेहैः सवीर्य्यैः कल्पाधीशे वीर्य्ययुक्तेऽथ रिक्थम् ।
प्राप्त्यर्थेशौ पश्यतः पौरपोऽङ्गं पश्येद्यद्वाऽप्यर्थगश्चेद्यदैकः ॥ २२ ॥
ज्ञेज्याच्छानां शौर्य्ययुक्तेऽङ्गपे वा खेऽङ्गे भाग्ये भुक्तिपे क्रूरहीने ।
सौख्ये सौम्यैरूर्ज्जयुक्तैरथारे सार्के सिंहाल्यन्त्यकर्काजचापे ॥ २३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किं वामभागे वपुषो विरोचनो दक्षे विधुस्तौ शुभदेक्षितौ ततः ।
स्वभोच्चयाते तिमिरे चतुष्टयत्रिकोणरन्ध्रेऽथ रवौ हरौ क्रिये ॥ २४ ॥

ज्ञेज्येक्षिते सौरिसितान्विते ऽथ वा शुभैः सवीर्य्यैस्तनुपान्वितैः स्वगैः ।
किं विद्भ्रयोः कल्पगयोर्गुरौ गिरि वार्य्यज्ञकाव्यैरकक्रोशकायगैः ॥ २५ ॥

सारान्वितैः किं रमणैर्वसूदयायानां शुभैश्चेद्यदि दृश्यमूर्त्तिभिः ।
निधानगैः सारयुतैस्ततो ऽर्थपे केन्द्रे ऽत्र तस्मात्पथिपञ्चमाश्रिते ॥ २६ ॥

लब्धीश्वरे गौरकवीक्षितान्विते ऽथाये बुधे सैणघटार्कजे ऽङ्गजे ।
ततः स्वपे स्वामिसदीक्षितान्विते किं हेम्नदृष्टे भृगुजे धने धनी ॥ २७ ॥

धन में स्वोच्चराशिगत वा स्वराशिगत गुरु हों और वह मङ्गल से युक्त होतो (१) धन में लाभेश तथा धनेश हो और लाभ में लग्नेश हो तो (२) स्वोच्चराशि में शुभ ग्रह हो, द्वितीय में राहु और लग्न में लग्नेश हो तो (३) बुध, गुरु तथा शुक्र ये तीनों उदय को प्राप्त हों और बलवान् हों एवं लग्नेश भी बलवान् हों तो (४) धन को लाभेश तथा द्वितीयेश देखते हो और लग्न को लग्नेश देखता हो तो (५) धन में बुध, गुरु तथा शुक्र इन तीनो में से कोई एक भी हो तो (६) दशम लग्न वा नवम में धनेश हो और चतुर्थ में पापग्रह न हो तथा शुभग्रह बलवान् हों तो (७) सिंह वृश्चिक मीन कर्क मेष वा धनु में मङ्गल हो और वह सूर्य से युक्त हो तो (८) लग्न के वाममाग में सूर्य हो तथा दक्षिण भाग में चन्द्रमा हो और उन दोनो को शुभग्रह देखते हो तो (९) स्वराशिगत वा स्वोच्चराशि गत राहु केन्द्र त्रिकोण वा अष्टम में हो तो (१०) सिंह वा मेष में सूर्य हो और वह बुध तथा गुरु से दृष्ट हो एवं शुक्र तथा शनि से युक्त हो तो (११) धन में शुभ ग्रह हो और वहा लग्नेश से युक्त हो तो (१२) लग्न में बुध तथा शुक्र हो और द्वितीय में गुरु हो तो (१३) व्यय, लग्न तथा धन में बलवान् गुरु, शुक्र तथा बुध ये तीनों होंतो (१४) धनमें बलवान् तथा उदयी शुभग्रह हों और वे द्वितीय, लग्न तथा लाभ के स्वामी हो तो (१५) केन्द्र में द्वितीयेश हो तथा उस से त्रिकोण में लाभेश हो और वह गुरु तथा शुक्र से दृष्ट हो तो (१६) लाभ में बुध हो और पञ्चम में स्वराशि (१०।११) गत शनि हो तो (१७) द्वितीय स्थान का स्वामी यदि निजाक्रान्त राशिके स्वामी से तथा शुभग्रह से दृष्ट हो तो (१८) धनमें शुक्र हो और वह बुध से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष धनी होता है ।

धन संग्रह कर्त्ता योगः—

उतथ्यसोत्थबोधनाखिलेन्दुभार्गवा यदा ।
बलान्विता व्ययाश्रिता भवो नरो ऽर्थसङ्ग्रही ॥ २८ ॥

व्यय में बलवान् गुरु, बुध, पूर्णचन्द्र तथा शुक्र हों तो उक्त योग से उत्पन्न पुरुष द्रव्यसंग्रह करने वाला होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्वल्पधनी योगः—

कोणे केन्द्रे कोशपे कर्म्मसाक्षियुक्ते नीचे क्रूरषष्ठ्यंशगे वा ।
आयस्वामिस्थर्क्षपे क्रूरषष्ठिभागे भाचार्य्येक्षितेऽल्पार्थमेति ॥ २९ ॥

त्रिकोण वा केन्द्र में द्वितीयेश हो और वह सूर्य से युक्त हो वा नीचराशि में हो क्रूरषष्ठ्यंश में हो तो (१) लाभेश की अधिष्ठित राशि का स्वामी यदि क्रूर षष्ठ्यंश में स्थित होकर शुक्र तथा गुरु से दृष्ट होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष स्वल्पधनी होता है ।

नाम से धनी योगः—

कोशे कल्पगृहेशे व्यापारे भवनाथे ।
सौम्ये ऽर्थेशलवेशे ऽसौ नाम्नो धनवान् स्यात् ॥ ३० ॥

द्वितीय में लग्नेश हो और दशम में लाभेश हो एवं द्वितीयेश के नवांश का स्वामी यदि शुभ ग्रह हो तो नाम से धनी होता है ।

सद्योधनी योगः—

स्वपे सखेशे पथिपुत्रकेन्द्रे किं प्राप्तिपाले सखपांशपाले ।
अथेन्दुतश्चारुखगैश्चितिस्थैर्भवो भवी तत्क्षणवित्तवान् स्यात् ॥ ३१ ॥

नवम पञ्चम वा केन्द्र में धनेश हो और वह दशमेश से युक्त हो तो (१) लाभ स्थान का स्वामी यदि दशमेश के नवांश राशि के स्वामी से युक्त हो तो (२) चन्द्रमा से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में शुभ ग्रह हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष शीघ्र धनी होता है ।

आमरणान्त धनी योगः—

स्वे प्राज्यखेटैः सहिते ऽर्थकारके सहःसमेते निजतुङ्गमाश्रिते ।
मित्रालयस्थे निजमन्दिरे ऽथ वा सारं समेत्यामरणान्तमङ्गभृत् ॥ ३२ ॥

धन में बहुत ग्रह हों और स्वोच्चराशि मित्रराशि वा स्वराशि में बलवान् धनकारक (गुरु) हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष यावज्जीवन (मरणपर्यन्त) धनी होता है ।

प्रकारान्तर से धनी योगः—

प्राप्त्यास्पदाम्बुपुरपञ्चमपोष्यपाणां
पुण्याधिपेन सह योग इहार्थयोगः ।
एकादशोदयदकात्मजकोशपानां
योगे यदा सह नभोविभुनार्थयोगः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लाभ, दशम, चतुर्थ, लग्न, पञ्चम और द्वितीय इन छः स्थानों के स्वामियों का नवमेश से योग (सम्बन्ध) हो तो धनी होता है। एकादश, लग्न, चतुर्थ, पञ्चम और द्वितीय इन पाँच स्थानों के स्वामियों का दशमेश के साथ योग (सम्बन्ध) हो तो भी धनी होता है।

प्रबन्धवित्तोदयवारिपाणां योगे सहाप्तिप्रभुणार्थयोगः।
योगे सहाद्याधिभुवा प्रबन्धपातालपोष्याधिभुवां तथैव ॥ ३४ ॥

पञ्चम, द्वितीय, लग्न तथा चतुर्थ इन चार स्थानों के स्वामी यों का लाभेश के साथ सम्बन्ध हो तो धनी होता है। पञ्चम, चतुर्थ तथा द्वितीय इन तीन स्थानों के स्वामीयों का लग्नेश के साथ सम्बन्ध हो तो धनी होता है।

पाथःप्रबन्धालयनाथयोश्चेद्युतौ सहार्थाधिभुवार्थयोगः।
सहाम्बुपेनात्मजपस्य योगे तद्वत्स्युरेते ऽक्षलवान्तराले ॥ ३५ ॥

द्वितीयेश के साथ यदिचतुर्थेश तथा पञ्चमेश का सम्बन्ध हो तो धनी होता है। एवं पञ्चमेश के साथ यदि चतुर्थेश का सम्बन्ध हो तो धनी होता है। ये पूर्वोक्त समस्त योग पाँच अंशों के अन्तराल में होते हैं।

धन भाग तथा दरिद्रभाग परिज्ञानः—

धर्म्माङ्गषट्के धनभाग उक्तो दरिद्रभागः सहजाङ्गषट्के।
पूर्णं फलं त्र्यम्बुसुते स्वभागे शान्ते ऽन्तिमे ऽर्द्धं चरणं सपत्ने ॥ ३६ ॥

भाग्य से छः (भाग्य, दशम, एकादश, व्यय, तनु तथा धन) स्थान 'धनभाग' एवं सहज से छः (सहज, सुख, पुत्र, रिपु, जाया तथा मृत्यु) स्थान 'दरिद्रभाग' होता है। उक्त योग सप्तम, चतुर्थ, पञ्चम तथा अपने भाग में पूर्ण फल को देते हैं। अष्टम तथा व्यय में आधा फल एवं षष्ठ में चतुर्थांश फल को देते हैं।

सहस्र निष्क धनी योगः—

स्वाङ्गेशनन्दांशपयोः सतोर्गुरुसन्दृष्टयोर्वा विभवे ऽङ्गपे पदे।
उपान्त्यपालेन विलोकितान्विते ऽथ वा शुनासीरपुरोधसेक्षिते ॥ ३७ ॥

किं यन्नवांशे तनुभावनायके तदीश्वरे गोपुरभागसंयुते।
विलोकिते राज्यनिकेतजानिना सहस्रनिष्काधिपतिर्भवी भवः ॥ ३८ ॥

द्वितीयेश तथा लग्नेश की नवांश राशियों के स्वामी शुभग्रह हों और वे गुरु से दृष्ट हो तो (१) धन में लग्नेश हो और दशम स्थान यदि लाभेश से दृष्ट वा युक्त हो तो (२) अथवा धन में लग्नेश हो और दशम स्थान गुरु से दृष्ट हो तो (३) लग्नेश के नवांश का स्वामी यदि गोपुरांश में स्थित होकर दशमेश से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष एक सहस्र निष्क (एक हजार असर्फी) का स्वामी होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

द्विसहस्रादि निष्क धनी योगः—

आज्ञाधिपस्याङ्कनगांशनाथयोः सवीर्य्ययोर्भार्गवजीवदृष्टयोः ।
जातः सहस्रद्वयनिष्कनायकः स्वाये सवीर्य्ये विमलाभ्रषड्लवे ॥ ३९ ॥
तद्भावनाथे ऽपि तथा विधे नरो भवेत्सहस्रत्रयनिष्कसंयुतः ।
स्वेशे सुरेज्येन्दुभगे विशेषितांशके भवेशे सबले तथा विधे ॥ ४० ॥
तद्वत्स्वपत्र्यंशनवांशकेशयोरनूनकश्रेष्ठबलैरुपेतयोः ।
भवेत्पुमानष्टसहस्रनिष्कप आद्याधिनाथस्य दृगाणशायिनः ॥ ४१ ॥
तुरङ्गभागेशि विशेषितांशके भवेद्भवो ना ऽयुतनिष्कनायकः ।
धिष्ण्ये ऽन्तिमे ऽधिपणे निजांशके वैशेषिकांशे तनुपे तथा युते ॥ ४२ ॥
यद्वा ऽद्रिभृन्मंत्रिणि मूर्त्तिजानिना युते जनौ यस्य विशेषितांशके ।
चतुष्टयाचार्य्यनिधाननन्दने तदूर्ध्ववित्तं स समश्नुते नरः ॥ ४३ ॥

दशमेश के नवांश तथा सप्तांश के स्वामी बलवान् हों और वे शुक्र तथा गुरु से दृष्ट हों तो दो हजार असर्फियों का स्वामी होता है। धन तथा लाभ ये दोनों भाव बलवान् हों और उन दोनों में शुभ षष्ठ्यंश हों एवं उन दोनों भावों के स्वामी बलवान् होकर शुभ षष्ठ्यंश में हो तो तीन हजार असर्फियों का स्वामी होता है। गुरु चन्द्र वा सूर्य इन तीनों में से कोई एक भी धन भाव का स्वामी हो और वह वैशेषिकांश में हो एवं लाभेश बलवान् होकर वैशेषिकांश में हो तो भी तीन हजार असर्फियों का स्वामी होता है। धन भाव का स्वामी जिस ग्रह के द्रेष्काण तथा नवांश में हो वे दोनों सब से अधिक बली हों तो आठ हजार असर्फियों का स्वामी होता है। लग्नेश के द्रेष्काण का स्वामी जिस ग्रह के सप्तांश में हो वह वैशेषिकांश में हो तो अयुत निष्क (दश हजार असर्फी) का स्वामी होता है। व्यय में शुक्र, द्वितीय में गुरु हो और वे अपने नवांश में वा वैशेषिकांश में हो एवं लग्नेश भी अपने नवांश में वा वैशेषिकांश में हो तो दश हजार से अधिक असर्फियों का स्वामी होता है। केन्द्र नवम धन वा पञ्चम में गुरु हो और वह लग्नेश से युक्त होकर वैशेषिकांश में हो तो भी दश हजार से अधिक असर्फियों का स्वामी होता है।

लक्षाधीश योगः—

मानेशगत्र्यंशपगागभागप ऐरावतांशे ऽथ बलान्विते ऽङ्गपे ।
सायेश्वरे कण्टककोणसंश्रिते वैशेषिकांशे धनलक्षमेति ना ॥ ४४ ॥

दशमेश के द्रेष्काण का स्वामी जिस ग्रह के सप्तांश में हो वह यदि ऐरावतांश में हो तो लक्षाधीश (लखपति) होता है। केन्द्र वा त्रिकोण में बलवान् भाग्येश हो और वह लाभेश से युक्त होकर वैशेषिकांश में हो तो लक्षाधीश होता है।

दो तथा तीन लाख धन के स्वामी के योगः—

लक्षद्वयं वित्तमुपैति वित्तपे पारावतांशे ऽमलखेचरान्विते ।
सिंहासने केन्द्रनिकेतनोपगे ततो विलग्नद्रविणायनायकैः ॥ ४५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विशेषितांशे किमु कोमलांशके लक्षत्रयं द्रव्यमुपैति मानवः ।
तदूर्ध्वमर्थाधिपतिर्बलाढ्ययोः स्वायेशयोर्वृद्धिचतुष्टयस्थयोः ॥ ४६ ॥

पारावतांश में धनेश हो और वह शुभग्रह से युक्त हो वा सिंहासनांश में धनेश हो और वह केन्द्र में हो अथवा लग्न, धन तथा लाभ इन तीनों स्थानों के स्वामी वैशेषिकांश में वा मृदुंश में हों तो तीन लाख का स्वामी होता है। उपचय वा केन्द्र में बलवान् धनेश तथा लाभेश हों तो तीन लाख से अधिक द्रव्य का स्वामी होता है।

कोटि (करोड) धन के योगः—

फलाङ्गपुण्यकोष्यपैर्विशेषितांशकङ्गतैः ।
परोच्चभागसंश्रितैस्तदेह कोटिवित्तपः ॥ ४७ ॥

एकादश, लग्न, नवम तथा धन इन चारों स्थानों के स्वामी अपने अपने परमोच्चांशों में स्थित होकर वैशेषिकांश में हो तो कोटि (करोड) धन का स्वामी होता है।

सम्पत्तिमान् योगः—

गीर्वाणलोकांशगते त्विषां प्रभौ प्राणैः समेते पुरपेऽथ पौरपे ।
पदस्थले पौरगते त्रयीतनौ सल्लोकिते ऽथोदयपे चतुष्टये ॥ ४८ ॥
सज्ञाच्छगौरेऽथ खलेतरेक्षितेऽङ्गपे स्वभे स्वोच्चगते सुहृद्गगे ।
सङ्गेऽथ सौम्यैस्तनयायगैरुत सेज्याङ्गपे कोणचतुष्टयार्थगे ॥ ४९ ॥
अथाम्बुपः पश्यति मित्रमन्दिरं पुण्येश्वरः पुण्यगृहं प्रपश्यति ।
विधीश्वरेऽङ्गेऽथ बलान्विते ऽङ्गपे सकेन्द्रनाथे शुभवर्गगे किमु ॥ ५० ॥
सेज्ये स्वभे केन्द्रगते स्वभेऽथ वा पातालपालोऽपि तपोनिकेतपः ।
होराश्रितौ तौ स्वगृहं प्रपश्यतः सम्पत्तिमानेषु कलेवरी भवेत् ॥ ५१ ॥

देव लोकांश में 'सूर्य' हो और लग्नेश बलवान् हो तो (१) दशम में लग्नेश और लग्न में सूर्य हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो (२) केन्द्र में लग्नेश हो और वह बुध, शुक्र तथा गुरु से युक्त हो तो (३) स्वराशि स्वोच्चराशि मित्रराशि वा शुभ ग्रह की राशि में लग्नेश हो और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो (४) पञ्चम तथा लाभ में शुभ ग्रह हों तो (५) त्रिको केन्द्र वा धन में लग्नेश हो और वह गुरु से युक्त हो तो (६) चतुर्थ को चतुर्थेश देखता हो और नवम को नवमेश देखता हो एवं लग्न में भाग्येश हो तो (७) शुभ वर्ग में बलवान् लग्नेश हो और वह केन्द्रेश से युक्त हो तो (८) केन्द्र वा धन में धनेश हो और वह गुरु से युक्त हो तो (९) लग्न में चतुर्थेश तथा नवमेश हों और वे दोनों अपने अपने भाव को देखते हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष सम्पत्ति वाला होता है।

धन लाभ के कारणों का परिज्ञानः—

यत्कारकेण किमु यद्भवनाधिपेन
दृष्टेऽन्विते बलिनि वित्तप उद्गमे चेत् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तन्मूलतो द्रविणलाभमुदीरयन्ति
यद्भावगौ स्वतनुपौ च तदीयमूलात् ॥ ५२ ॥

लग्न में बलवान् धनेश हो और वह जिस भाव के कारक से अथवा जिस भाव के स्वामी से दृष्ट वा युक्त हो उस के द्वारा धन की प्राप्ति को कहते है। अथवा जिस जिस भाव में धनेश तथा लंग्नेश हों उस उस भाव के द्वारा धन की प्राप्ति को कहते हैं।

धन लाभ के योगः--

निधाने भार्गौ वा निधननिलये निर्मलखगा
धनायेशौ केन्द्रेऽथ विभवप आये भवविभौ।
धने वाऽवाप्तीशे गुरुतनयकेन्द्रे खलखग
उपान्त्यागारस्थे कथयतु धनाप्तिं बुधवरः ॥ ५३ ॥

धन में शुक्र तथा बुध हों तो (१) अष्टम में शुभ ग्रह और केन्द्र में धनेश तथा लाभेश हों तो (२) लाभ में धनेश और धन में लाभेश हो तो (३) त्रिकोण वा केन्द्र में लाभेश हो और एकादश में पाप ग्रह हों तो उक्त योगों में पण्डितजन धन की प्राप्ति को कहे।

लाभालये तदधिपेऽमलमध्ययाते
पारावतादिलवगे किमवाप्तिपस्य।
राशीश्वरे विमलमध्यगते प्रदृष्टे
रम्यैरथागमपयुक्तलवेशि रम्ये ॥ ५४ ॥
प्रोद्वीक्षितेऽर्थविभुना किमुपान्त्यपस्थ-
द्रेष्काणपे सुखचरे पदपेक्षिते वा
अंशे शुभान्तरगते भवपेऽथ सौम्य-
सम्बन्ध आयगृहपे द्रविणाप्तिमेति ॥ ५५ ॥

पारावतादि भाग में तथा शुभ ग्रहों के अन्तराल में लाभ भाव तथा लाभेश हों तो (१) शुभ ग्रहों के अन्तराल में लाभेश की आक्रान्त राशि का स्वामी हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो (२) लाभेश के नवांश का स्वामी यदि शुभ ग्रह हो और वह धनेश से दृष्ट हो तो (३) लाभेश के द्रेष्काण का स्वामी यदि शुभ ग्रह हो और वह दशमेश से दृष्ट हो तो (४) कारकांशकुण्डली में शुभ ग्रहों के मध्य में लाभेश हो तो (५) लाभेश का शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्ध हो तो उक्त योगों में धन की प्राप्ति होती है।

बिना परिश्रम से धन लाभ योगः—

धनाधिपेऽङ्गगेहगे कलेवरेशि कोशगे।
धनस्य लब्धिरीरिता तनूभृतामयत्नतः ॥ ५६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में धनेश और धन में लग्नेश हो तो अयत्न (बिना परिश्रम) से मनुष्यों को धन की प्राप्ति होती है।

अपने बाहु बल के द्वारा धन लाभ के योगः—

द्रव्याधिपे देहपयुक्तदृष्टे स्वबाहुवीर्य्येण समेति वित्तम्।
कुम्भे यमेऽब्जेऽजगृहे हयेऽर्के मृगे भृगौ स्वं स्वपितुर्न भुङ्क्ते ॥ ५७ ॥

धन स्थान का स्वामी यदि लग्नेश से युक्त वा दृष्ट हो तो पुरुष अपने बाहु बल से धन को पाता है। कुम्भ में शनि, मेष में चन्द्रमा, धनु में सूर्य तथा मकर में शुक्र हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष पिता के धन का उपभोग नहीं करता है अर्थात् अपने बाहु बल से धन का उपार्जन करता है।

विलग्नपेऽधिके बलेऽखिलान्तरिक्षचारितः।
सगीष्पतौ चतुष्टये विशेषितांशकेऽर्थपे ॥ ५८ ॥

समेति रिक्थं स्वबलार्जितं नरस्तनूपयुक्तांशपयुक्तभाधिपे।
स्वपस्य मित्रे सबले चतुष्टये कोणे स्वराशौ विविधार्थसंयुतः ॥ ५९ ॥

स्ववीर्य्यतोऽर्थाधिपतौ भवोदयनाथान्विते कालबलान्विते ऽमलैः।
विलोकिते कीचककोणभावगे मध्येऽर्थमेति स्वबलार्जितं पुमान् ॥ ६० ॥

लग्नेश यदि सब ग्रहों से अधिक बली होकर केन्द्र में में हो और वह गुरु से युक्त हो एवं वैशेषिकांश में धनेश हो तो (१) लग्नेश के नवांश का स्वामी जिस राशि में हो उस का स्वामी यदि द्वितीयेश का मित्र हो और वह बली होकर केन्द्र किकोण वा स्वराशि में हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष अपने बाहु बल से अनेक प्रकार के धन से युक्त होता है। द्वितीयस्थान का स्वामी यदि केन्द्र वा त्रिकोण में हो और वह लाभेश तथा लग्नेश से युक्त हो एवं कालबल से युक्त होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष मध्यावस्था में अपने बाहुबल के द्वारा धन को पाता है।

ससद्ग्रहेन्द्रेऽर्थधवेऽङ्गजानिना युक्ते तदीशे हरिजालयोपगे।
शक्तिप्रपूर्णे स्थविरे समेति ना स्वमेवमायाधिभुवोऽपि चिन्तयेत् ॥ ६१ ॥

धन स्थान का स्वामी यदि शुभ ग्रह से तथा लग्नेश से युक्त हो और धनेश की आक्रान्त राशि का स्वामी बलवान् होकर लग्न में हो तो मनुष्य अन्त्यावस्था में धन को पाता है। इस प्रकार लाभेश से भी धन का विचार करे।

भाई से धन प्राप्ति के योगः—

देहार्थपावनुजगौ नरदृष्टयुक्तौ
युक्तेक्षितौ सहजपेन विशेषितांशे।
ऊर्जान्वितौ किमुदयाधिभुवेक्षिताढ्यौ
सोत्थेशकारकखगौ द्रविणालयस्थौ ॥ ६२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वैशेषिकांश उत वित्तविभौ वपुःस्थे
सोत्थालयेशसहितेऽथ धनाधिनाथे ।
दृष्टे युतेऽनुजभपेन च कारकेण
सारं समेति मनुजो निजसोदराणाम् ॥ ६३ ॥

तृतीय में लग्नेश तथा धनेश हों और वे बलवान् हों एवं वैशेषिकांश में स्थित होकर पुरुष ग्रह तथा तृतीयेश से दृष्ट वा युक्त हों तो (१) धन में तृतीयेश तथा भ्रातृकारक ग्रह (मङ्गल) हों और वे लग्नेश से दृष्ट होकर वैशेषिकांश में हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष भाई के धन को पाता है। द्वितीयस्थान का स्वामी यदि तृतीयेश तथा तृतीय कारक ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो उत्पन्न पुरुष भाई के धन को पाता है।

माता से धन प्राप्ति के योगः—

कीलालनाथेन समेतदृष्टे कुटुम्बनाथे सहसा युते वा ।
कबन्धनाथेन युतेऽर्थनाथे लेखाङ्गते मातृधनं समेति ॥ ६४ ॥

बलवान् धनेश यदि सुखेश से युक्त वा दृष्ट हो तो (१) लग्न में धनेश हो और वह सुखेश से युक्त हो तो मनुष्य माता के धन को पाता है :

बान्धवजन तथा कृषि से धन प्राप्तिका योगः—

वसुप्रभौ बलान्विते हितेशलोकितान्विते ।
विशेषितांशके धनं समेति बन्धुतः कृषेः ॥ ६५ ॥

बलवान् धनेश यदि वैशेषिकांश में हो और वह चतुर्थेश से दृष्ट वा युक्त हो तो बन्धुजनों से वा कृषि से धन को पाता है।

पुत्र से धन प्राप्ति के योगः—

सहःसमेते वसुपे सुतेशतत्कारकाभ्यां सहितेक्षिते वा ।
विशेषितांशे पुरपाल ओजःसमन्विते सारमुपैति सूनोः ॥ ६६ ॥

बलवान् धनेश यदि पञ्चमेश तथा पुत्रकारक (गुरु) से युक्त वा दृष्ट हो तो (१) अथवा वैशेषिकांश में बलवान् लग्नेश हो तो पुत्र से धन को पाता है।

शत्रु से धन प्राप्तिका योगः—

बलैरुपेते धनधामनाथे युक्तेक्षिते वैरिपकारकाभ्याम् ।
विशेषितांशेऽङ्गविभौ सवीर्ये सपत्नतोऽर्थं समुपैति मर्त्यः ॥ ६७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बलवान् धनेश यदि षष्ठेश तथा शत्रुकारक ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो और वैशेषिकांश में बलवान् लग्नेश हो तो शत्रु से धन को पाता है।

स्त्री से धन प्राप्ति का योगः—

अनङ्गनाथकारकसमेतलोकितेऽर्थपे ।
तदाङ्गनाजनाद्धनं समाप्नुयात्कलेवरी ॥ ६८ ॥

धनभाव का स्वामी यदि सप्तमेश तथा स्त्रीकारक ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो स्त्री से धन को पाता है।

धनवती स्त्री प्राप्ति का योगः —

सतां गृहेऽर्थमन्दिरे बलान्वितैर्बहुग्रहैः ।
तदा भवेच्छरीरिणो नितम्बिनी धनान्विता ॥ ६९ ॥

धन में शुभग्रह की राशि हो और उस में बलवान् बहुत ग्रह हों तो पुरुष की स्त्री धनवती होती है।

गुरु प्रभृति से धन के योगः—

भाग्येशतत्कारकलोकितान्विते ऽर्थेशे धनाप्तिर्गुरुतश्च धर्म्मतः ।
वित्ताधिपे व्योमपकारकान्वितेक्षिते स्वदानग्रहणाच्च कीर्त्तितः ॥ ७० ॥

धनेश यदि भाग्येश तथा भाग्य कारक से दृष्ट तथा युक्त हो तो गुरु तथा धर्म से धन को पाता है। एवं धनेश यदि दशमेश तथा दशम कारक से युक्त वा दृष्ट हो तो दानग्रहण तथा कीर्ति से धन को पाता है।

पिता से धन लाभ के योगः—

दृष्टान्विते तातपकारकाभ्यां स्वेशे भसारे जनकात्सकाशात् ।
वित्तस्य लब्धिः कथिताऽहिमांशाविलातलागारगतेऽपि तद्वत् ॥ ७१ ॥

बलवान् धनेश यदि दशमेश तथा पितृकारक (सूर्य) से दृष्ट वा युक्त हो तो (१) अथवा सुख में सूर्य हो तो पिता से धन को पाता है।

पाथःपुरस्थो विधुतो विभाकरोऽम्बुपेक्षितः स्वस्य पितुर्धनप्रदः
पुराधिपेनान्वितवीक्षिते रवौ देहे सखेशे पितृकोशवान्नरः ॥ ७२ ॥

चन्द्रमा से चतुर्थ वा प्रथम स्थान में सूर्य हो और वह सुखेश से दृष्ट हो तो पिता के धन को देनेवाला होता है। लग्न में सूर्य हो और वह दशमेश से युक्त हो एवं लग्नेश से युक्त वा दृष्ट हो तो पिता के कोश (खजाने) को पाता है।

ज्यो ..७४...

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तीन पुरुष के धन लाभ का योगः—

इभारिभे बुधेऽथ वा घटे घने बृहस्पतौ ।
लभेत पूरुषत्रयोद्भवं धनं नरस्तदा ॥ ७३ ॥

सिंह में बुध हो अथवा कुम्भ राशि गत गुरु लग्न में हो तो तीन पुरुषों (तीन पीढी) का धन को पाता है ।

निधी प्राप्ति के योगः—

कोशेऽङ्गनाथे वसुपे भवस्थे भवाधिपेऽङ्गेऽथ शुभेऽङ्गपेऽर्थे ।
वार्थेऽङ्गपे वीर्य्ययुतेऽथ याम्ये कोशस्थलेशे निधिमान्मनुष्यः ॥ ७४ ॥

धन में लग्नेश, लाभ में धनेश और लग्न में लाभेश हो तो (१) लग्नेश यदि शुभग्रह हो और वह धन में हो तो (२) धन में बलवान् लग्नेश हो तो (३) अष्टम में धनेश हो तो उक्त योगों में निधिमान (गडे हुए धनवाला) होता है ।

निक्षेप धन लाभ के योगः—

स्वेशे सद्धे शेश्वरे साम्बुनाथे सद्युक्तेऽथाम्बुस्थयोः स्वायपत्योः ।
तत्पे सद्धे सद्युते वा ससौम्यायेशे बन्धावेति निक्षेपवित्तम् ॥ ७५ ॥

शुभ ग्रह की राशि में धनेश हो और भाग्य स्थान का स्वामी यदि चतुर्थेश तथा शुभ ग्रह से युक्त हो तो (१) सुख में धनेश तथा लाभेश हों और शुभ ग्रह की राशि में चतुर्थेश हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो (२) सुख में लाभेश हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो निक्षेप (अमानत या धरोहर) धनवाला होता है ।

धन लाभ दिशा परिज्ञानः—

वाच्या धनाप्तिर्विबुधैरुपान्त्याधिनाथदिग्भाग उतायराशेः ।
दिग्भागतो वाऽखिलखेटमध्ये बली ग्रहो यस्तु तदीयदिक्तः ॥ ७६ ॥

लाभ भाव के स्वामी की जो दिशा हो उस में अथवा लाभ भाव में जो राशि हो उस की दिशा में अथवा सब ग्रहों के मध्य में जो ग्रह अधिक बली हो उस की दिशा में धन की प्राप्ति कहनी चाहिए ।

धन लाभ प्रद दशा परिज्ञानः—

आद्योऽर्थस्थो वित्तदर्शी द्वितीयो वित्तस्थानेड् व्योमचारी तृतीयः ।
तत्पाके वा तद्धृतौ कारकस्य स्वस्य स्वाप्तिः प्रोच्यते वर्गमूलात् ॥ ७७ ॥

(१) धनस्थान में स्थित ग्रह (२) धन स्थान को देखने वाला ग्रह (३) धन स्थान का स्वामी इन तीनों की दशा में वा अन्तर्दशा में धन कारक ग्रह के वर्गमूल से धन की प्राप्ति कहे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रेका (दरिद्र) योग परिज्ञानः—

अस्तङ्गते ऽङ्गिरसि गात्रपतौ मृतीश-
दृष्टे गतोर्ज्ज उत सौख्यभपांशनाथे।
प्रान्त्येशदृष्ट इनभानुगते ऽथ नीर-
नाथे सनाशरमणे दरपेक्षिते वा ॥ ७८ ॥

होराविभावधरगे चिति राज्यपे वा
दुःस्थैः शुभैः खलखगैर्गुरुकेन्द्रधीस्थैः ।
वीर्य्योनिते भवधवे ऽथ गिरीशकव्यो-
रस्तङ्गयो सदुरिते पुरपे ऽथ पापैः ॥ ७९ ॥

युक्ते ऽम्बुपे ऽर्ककरगे ऽथ पुरार्थपत्यो-
र्नीचस्थयोर्नियतिपे रविरश्मिगे वा ।
दुःस्थे ऽङ्गपे गतबले त्रिभिरभ्रवासै-
र्निम्नङ्गतैर्दिनपदीधितिगैरिहैतान् ॥ ८० ॥

रेकाख्यकान्मुनिजना निगदन्ति योगान्
रम्येतरा दुरितनीचसपन्नदृष्टाः ।
प्राप्तित्रिकोणसहजार्थचतुष्टयस्था
जातायुरङ्कलवरेकफलप्रदाः स्युः ॥ ८१ ॥

'गुरु' अस्त गत हो और निर्बल लग्नेश यदि अष्टमेश से दृष्ट हो तो (१) चतुर्थेश के नवांश का स्वामी अस्तंगत होकर व्ययेश से दृष्ट हो तो (२) चतुर्थेश यदि अष्टमेश से युक्त हो और षष्ठेश से दृष्ट हो तो (३) पञ्चम में दशमेश हो और नीच में लग्नेश हो तो (४) त्रिक में शुभ ग्रह, केन्द्र वा त्रिकोण में पाप ग्रह और लाभेश निर्बल हो तो (५) गुरु तथा शुक्र ये दोनों अस्तं गत हों और लग्नेश यदि पाप ग्रह से युक्त हो तो (६) चतुर्थेश पाप ग्रहों से युक्त होकर अस्तं गत हो तो (७) नीच में धनेश तथा लग्नेश हों और भाग्येश अस्तंगत हो तो (८) त्रिक में निर्बल लग्नेश हो और नीच में तीन ग्रह हों और वे अस्तंगत हों तो (९) केन्द्र, त्रिकोण तृतीय, एकादश तथा द्वितीय में नीच राशि गत तथा शत्रु राशि गत पाप ग्रह हों और वे पाप ग्रह से दृष्ट हों तो जातक की आयु के नवमांश में रेका (दरिद्र) योग फल को देते हैं।

एको द्वौ त्रय उग्रपुष्करचरा जन्तोः प्रसूतौ यदा
होराविक्षसहोदरालयगता अग्रे ऽपि तद्वत्क्रमात् ।
संदृष्टा यदि कल्मषाम्बरचरैर्नीचारिखेटैस्तथा ।
तत्रा ऽऽदौ वयसीह मध्यवयसि प्रान्त्ये च रेकाप्रदाः ॥ ८२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में एक पापग्रह, धन में दो पापग्रह और तृतीय में तीन पापग्रह हों और वे पापग्रहों से नीच राशि गत ग्रहों से वा शत्रु राशि गत ग्रहों से दृष्ट हों तो क्रम से प्रथम, मध्य तथा अन्त्यावस्था में अर्थात् लग्नगत पापग्रह से प्रथमावस्था में द्वितीय गत पापग्रहों से मध्यावस्था में एवं तृतीयगत पापग्रहों से अन्त्यावस्था में रेका (दरिद्र) योगजन्य फल होता है। एवं चतुर्थ प्रभृति स्थान में अनुक्रम से पापग्रह हों और वे पाप नीच वा शत्रु से दृष्ट हों तो भी रेकायोगजन्य फल होता है।

रेकायोग जन्य फल परिज्ञानः—

सौभाग्यहीनोऽरुचिकृद्भवो जनः क्रोधी विविद्यो विधनोऽबलात्मजैः।
निंद्यः सुरब्राह्मणदूषकः पटुर्मात्सर्य्यरोषप्रयुतो विवादयुक् ॥ ८३ ॥

भिक्षाशनी दुःखितहृन्मलीमसो दह्येद् दरिद्रेण च रेकसम्भवः।
कुमार्गरक्तः कुनखी विलोचनविकारयुक्तो बधिरप्रमत्तहृत् ॥ ८४ ॥

कामातुरो दुष्टजनश्च रोषवान् स्वल्पायुरन्धः किमु भिक्षुको नरः।
मूकोऽथ वा बन्ध्वपकारदूषणपरश्च पङ्गुः किल रेकयोगजः ॥ ८५ ॥

रेका योगों में उत्पन्न पुरुष सौभाग्य से रहित, अरुचिकर, क्रोधी, विद्यारहित निर्धन, स्त्री तथा पुत्रों से निन्दित, देवता और ब्राह्मणों का द्वेषी, कपटी, मात्सर्य्य तथा रोष से युक्त, विवाद में तत्पर, भिक्षमंगा, दुःखित हृदय, मलिन, दरिद्र से दहित, निन्दित मार्ग में आसक्त, कुत्सित नखवाला, नेत्र विकारवाला, बधिर, उन्मत्त हृदय काम से पीड़ित, दुष्टजन, रोषवाला, अल्पायु, अन्ध, भिक्षुक, गूंगा, बन्धुजनों के अपकार द्वेष करने में तत्पर एवं पङ्गु (लंगड़ा) होता है।

प्रेष्य योग परिज्ञानः—

नक्तं कुजेऽनुज इने गगने द्युनेऽब्जे
सौरौ सुखे सुरगुरौ द्रविणे चरेऽङ्गे।
यद्वा सिते तपसि मन्मथगे मृगाङ्के
भौमे मृतौ स्वतनुपे धिषणे स्थिरेऽङ्गे ॥ ८६ ॥

किं सन्धिगैर्विधुयमेज्यसितैस्त्रिकोणे
केन्द्रे दिवा स्थिरगृहे तु विलग्न आहो।
केन्द्रे खले निशि चराङ्गपतौ च सन्धौ
वैरावतांशकगते धिषणे ससन्धौ ॥ ८७ ॥

चेत्कण्टकेतरग उत्तमवर्गगेऽब्जे
कृष्णे निशि प्रथमभे दनुजार्चिते वा।
द्वेष्यास्पदाम्बुगृहसन्धिगतैः कुजार्क-
जीवाः किमुग्रलवगेऽमलभे मृगाङ्के ॥ ८८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वाचां प्रभौ तनुपयुक्त उतोणभस्थे
शान्तान्तिमारिसदने सुरराजवन्द्ये
लग्नादिलातलगते क्षणदाधिनाथे
योगेष्वमीषु जनितः परकर्म्मजीवी ॥ ८९ ॥

रात्रि का जन्म हो, तृतीय में मङ्गल, दशम में सूर्य, सप्तम में चन्द्रमा, चतुर्थ में शनि, द्वितीय में गुरु और लग्न में चर राशि हो तो (१) नवम में शुक्र, सप्तम में चन्द्रमा, अष्टम में भौम एवं द्वितीय वा लग्न का स्वामी गुरु हो और स्थिर राशि लग्न में हो तो (२) दिन का जन्म हो, त्रिकोण वा केन्द्र में चन्द्र, शनि, गुरु तथा शुक्र हों एवं लग्न में स्थिर राशि हो तो (३) रात्रि का जन्म हो, केन्द्र में पाप ग्रह हो और चर लग्न का स्वामी सन्धि में हो तो (४) ऐरावतांश में राशि सन्धिगत गुरु हो, केन्द्रातिरिक्त गत चन्द्रमा उत्तमांश में हो एवं कृष्ण पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न में शुक्र हो तो (५) षष्ठ में भौम, दशम में सूर्य तथा चतुर्थ में गुरु हो एवं भौमादि तीनों ग्रह उक्त भावों की सन्धि में हो तो (६) पापग्रह के नवांश में शुभराशि गत चन्द्रमा हो और 'गुरु' यदि लग्नेश से युक्त हो तो (७) त्रिकस्थान में मकरराशिगत 'गुरु हो और लग्नसे चतुर्थ में चन्द्रमा हो तो उक्त योगो में उत्पन्न पुरुष दास कर्म से आजीविका वाला होता है।

प्रेष्य योग जन्य फल परिज्ञानः—

कलिप्रियः पापरतः कठोरवाणी विविद्यो रहितो नियत्या।
कोपान्वितो दुष्टरसप्रियः स्यान्मात्सर्य्ययुक्तो द्विजदूषकश्च ॥ ९० ॥
शिश्नोदरे तत्पर एव मिथ्यावादप्रियो वञ्चनकार्य्यरक्तः।
कारुण्यहीनो ऽस्थिरमानभङ्गिदक्षः परप्रेष्यकयोगजातः ॥ ९१ ॥

प्रेष्य योग में उत्पन्न पुरुष कलह में प्रीति रखनेवाला, पाप में तत्पर, कठोर वचन बोलनेवाला, विद्या तथा भाग्य से रहित, कोप से युक्त, दुष्टरसों में प्रीति रखनेवाला, मात्सर्य्य से युक्त, ब्राह्मणों का निन्दक, बुभुक्षित, मिथ्यावाद में प्रीति रखनेवाला, ठगाई करने में आसक्त, दयारहित, चञ्चलचित्तवाला और प्रतिष्ठा की हानि करने में चतुर होता है।

भिक्षुक योग परिज्ञानः—

सोत्थेशे ऽम्बरपान्विते ऽतिविबले नीचास्तगे भिक्षुको
सेन्दौ शस्तगते शनौ हरिजपे निम्नङ्गते भिक्षुकः।
नीचार्य्यंशगतैरनूनकरवर्गैर्मानेतरर्क्षे ऽङ्गभू-
विद्याधीवनितोनितश्च कुपितो दुःस्थे खपे भिक्षुकः ॥ ९२ ॥

अतीव निर्बल तृतीयेश यदि दशमेश से युक्त होकर नीचराशि में वा अस्तंगत होतो भिक्षुक होता है। भाग्य में शनि हो और वह चन्द्रमा से युक्त हो एवं नीच में लग्नेश हो तो भिक्षुक होता है। दशम के अतिरिक्त स्थान में सब ग्रह हों और वे नीच तथा शत्रु राशि के नवांश में हों तो पुत्र, विद्या, बुद्धि तथा स्त्री से रहित एवं क्रोधी होता है। यदि त्रिकस्थान में दशमेश होतो भिक्षुक होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आरेन्दू क्रिय इनवीक्षितौ न भव्यै--
दृष्टौ वान्त्य उदयपे ऽब्ज आरयुक्ते ।
दिव्युग्रे किमु मृदुगे महीजकाल-
होरायां सुखसदवीक्षिते ऽङ्गकेन्द्रे ॥ ९३ ॥

वाजे विधौ वक्रविलोकिते वा शुभेक्षणोने हिमगौ किमिज्ये ।
अपायगे मूर्तिगते मृगाङ्के केन्द्रे मृदौ भिक्षुक एषु जातः ॥ ९४ ॥

मेष मे मङ्गल तथा चन्द्रमा हो और वे सूर्य से दृष्ट होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट नहीं तो (१) व्यय में लग्नेश हो और चन्द्रमा यदि मङ्गल से युक्त हो एवं दशम में पापग्रह हो तो (२) मङ्गल की काल होरा में जन्म हो, लग्न वा केन्द्र में शनि हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट नहीं तो (३) मेष में चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से दृष्ट होतो (४) चन्द्रमा यदि शुभग्रह से दृष्ट नहीं तो (५) व्यय में गुरु, लग्न में चन्द्रमा और केन्द्र में शनि होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष भिक्षुक होता है ।

स्त्रियङ्गते स्त्रीलवगे भृगौ तथा ऽथार्के ऽतिनीचांशगते स्वनिम्नभे ।
स स्यान्नृपश्रेष्ठकुलाग्रजो ऽपि यः श्रीसूनुकान्ताशनवर्जितो जनः ॥ ९५ ॥

कन्या राशिगत शुक्र यदि कन्यांशक में हो तो भिक्षुक होता है । नीचराशि गत सूर्य यदि परम नीचांश में होतो महाराज कुमार भी लक्ष्मी, पुत्र, स्त्री और भोजन से दुःखित होता है अर्थात् भिक्षुक होता है ।

प्रकारान्तर से भिक्षुक योगः—

देवायदुष्टगृहगैर्मृदुवित्कुजेज्यै-
र्निम्नाश्रितैरिनमयूखगतैः किमार्कौ ।
क्रूरेक्षिते विधिगते विबुधे वपुःस्थे
नीचांशगे सरुचिपे ऽथ सिते शरीरे ॥ ९६ ॥

चित्यर्चिते भवगृहे कुभवे भनाथे
सोत्थे स्वनिम्नसदने ऽथ समीक्षिते च ।
मन्देन निम्नगुरुणा चरभागयाते
लग्ने चरे ऽथ गुरुकण्टकचित्सु सर्वे ॥ ९७ ॥

पङ्काः शुभा द्युनघनाभ्रहितेतरस्थाः
पौरे स्थिरे किमु चरे प्रथमे ऽघखेटैः ।
केन्द्राद्बहिर्भवनगैर्विमलैरितोर्ज्जैः
कल्याणकेन्द्रमतिगैर्निशि भिक्षुकः स्यात् ॥ ९८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पञ्चम, एकादश तथा त्रिक में शनि, बुध, भौम तथा गुरु हों और वे अपनी अपनी नीच राशि में तथा अस्तगत हों तो (१) नवम में शनि हो और वह पापग्रह से दृष्ट हो एवं लग्न में बुध हो और वह नीचांशक में स्थित होकर सूर्य से युक्त हो तो (२) लग्न में शुक्र, पञ्चम में गुरु, लाभ में मङ्गल और तृतीय में नीचराशि गत चन्द्रमा हो तो (३) चरराशि के लग्न में चर नवांश हो और वह शनि से तथा नीच राशि गत गुरु से दृष्ट हो तो (४) केन्द्र वा त्रिकोण में सब पाप ग्रह हों और केन्द्रके अतिरिक्त स्थान में शुभग्रह हो एवं लग्न में स्थिर राशि हो तो (५) रात्रिका जन्म हो और लग्न में चर राशि हो एवं केन्द्र रहित स्थान में पापग्रह हों तथा केन्द्र वा त्रिकोण में निर्बल शुभ ग्रह हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष भिक्षुक होता है।

नीचं प्राप्तैः पामरैः पङ्ककर्म्मा नीचर्क्षस्थैः शोभनैर्गूढपाप्मा।
आर्य्ये मध्ये नीचगे रक्तरश्मौ देवस्थाने नीचराशौ तथैव ॥ ९९ ॥

नीचराशि में पाप ग्रह हो तो पाप कर्म करने वाला एवं नीचराशि में शुभ ग्रह हो तो गुप्त पाप वाला होता है। दशम में नीचराशि गत गुरु हो अथवा पञ्चम में नीचराशि गत मङ्गल हो तो पूर्वोक्त पाप कर्म्म करने वाला होता है।

तुङ्गर्क्षगा नीचनवांशमाश्रिताः कुर्वन्ति नीचं फलमाशु जन्मिनाम्।
नभश्चरा नीचगृहङ्गता यदा तुङ्गांशगाश्चेद्वितरन्ति सत्फलम् ॥ १०० ॥

यदि जन्म समय में शुभ तथा पापग्रह उच्च राशि में स्थित होकर नीच राशि के नवांश में हो तो मनुष्यों के लिये शीघ्र नीच फल को करते हैं। स्वं शुभ तथा पापग्रह नीचराशि में स्थित होकर उच्चराशि के नवांश में हो तो शुभ फल को देते हैं।

दरिद्र योगः—

धर्म्माधिपादतिबली कलिपः किमङ्ग-
नाथो गुरुस्तपनदीधितिगो भवेशे।
केन्द्रेतरालयगते विबले दरिद्रः
काव्येन्दुजार्य्यभगभूरुधिराः क्रमेण ॥ १०१ ॥

प्रान्त्यारिनाशतनयास्पदगा व्ययेशो
देहाधिपादतिबली तपनांशुतप्तः।
नीचङ्गतः किमु विना धिपणाङ्गराशि-
मार्य्ये सपत्नचरमालयगे दरिद्रः ॥ १०२ ॥

भाग्येश की अपेक्षा अष्टम स्थान का स्वामी अधिक बली हो तो (१) लग्नेश गुरु, अस्तंगत हो और निर्बल लाभेश केन्द्र के अतिरिक्त स्थान में हो तो (२) व्ययमें शुक्र, षष्ठ में बुध, अष्टम में गुरु, पञ्चम में शनि और दशम में मङ्गल हो एवं लग्नेश की अपेक्षा व्ययेश बलवान् हो और वह अस्तंगत वा नीचराशि में हो तो (३) लग्न में गुरु की राशि न हो और षष्ठ वा व्ययमें गुरु हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष दरिद्र होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दरिद्र इज्यभार्गवमृगाङ्कभूभुवः पदे ।
त्रिकोणभे कलत्रभे भवे स्वनिम्नराशिगाः

दशम त्रिकोण सप्तम वा लाभ में गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा मङ्गल हो और वे नीच राशि में हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र होता है।

भिक्षुक तथा दरिद्र योग फल परिज्ञानः—

नीचो जडो विषमधीर्विकलेन्द्रियश्चा-
न्यस्त्रीरतो विषमगीर्विषमस्थितश्च ।
मात्सर्य्यवाक् कुनखरो द्विजभक्तिहीनो
वाचालकोऽन्यहितहृत्कुकलत्रयुक्तः ॥ १०४ ॥
कुष्ठी कृतघ्नः कलहप्रियश्चान्यायार्जने तत्पर एव भिक्षुः ।
मूकश्च शिश्नोदरतत्परोऽन्धः स्यात्कण्टकी नेह दरिद्रयोगे ॥ १०५ ॥

भिक्षुक तथा दरिद्र योग में उत्पन्न पुरुष नीच, जड, विषम बुद्धि (मन्दबुद्धि) विकलेन्द्रिय वाला, पराई स्त्री में आसक्त, अयोग्य शब्द बोलने वाला, दुःखितावस्था में रहने वाला, मात्सर्य वाणी बोलने वाला कुत्सित (बुरे) नखवाला, ब्राह्मणोंकी भक्ति से रहित, वाचाल, पराये हितका नाश करने वाला, दुष्ट स्त्रीसे युक्त, कुष्ठ रोग वाला उपकार न मानने वाला, कलह में प्रीति रखने वाला, अन्यायसे द्रव्योपार्जन करनेवाला, कण्टक स्वभाववाला, बुभुक्षित, अन्ध, भिक्षु तथा मूक (गूंगा) होता है।

प्रकारान्तरसे दरिद्र योगः—

नीचेक्षिते कल्मषभागयाते सार्के शशाङ्केऽथ मृतौ मृगाङ्के ।
क्षीणे रजन्यामघयुक्तदृष्टे किं पातपूर्वग्रहपीडितेऽब्जे ॥ १०६ ॥
दृष्टे खलैर्वा वपुषो विधोर्वा साधे चतुष्केन्द्रगृहेऽथ चन्द्रे ।
सपत्ननीचेक्षितसंयुते च द्विड्राशिवर्गे घटराशिगे वा ॥ १०७ ॥
इन्दोस्त्रिकेऽर्च्ये शशिनि त्रिकोणे केन्द्रे स्वनीचारिगणस्थिते वा ।
चन्द्रेऽघदृष्टेऽघलवे चरर्क्षे चरांश आर्य्येक्षणवर्जिते वा ॥ १०८ ॥
पराजितोत्तमग्रहेक्षणान्विते घने भपे ।
भुजङ्गपूर्वपीडिते दरिद्रतां समेति ना ॥ १०९ ॥

पापांशगत चन्द्रमा यदि सूर्य से युक्त होकर नीच राशिगत ग्रह से दृष्ट होतो. (१) रात्रि का जन्म हो एवं अष्टम में क्षीण चन्द्रमा हो और वह पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो (२) ' चन्द्रमा ' यदि राहु प्रभृति ग्रहों से पीडित होकर पापग्रह से दृष्ट होतो (३) लग्नवा चन्द्रमा से जो चारों केन्द्र स्थान हों वे पापग्रह से युक्त

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

होतो (४) शत्रुराशि वा शत्रुवर्ग वा तुलाराशि में चन्द्रमा हो और वह शत्रुराशिगत वा नीचराशिगत ग्रह से दृष्ट वा युक्त होतो (५) त्रिकोण वा केन्द्र में नीचराशिगत वा शत्रुवर्ग गत चन्द्रमा हो और उससे त्रिक में गुरु होतो (६) पांपाश में चन्द्रमा हो और वह शत्रुग्रह से दृष्ट हो अथवा चरराशिगत चन्द्रमा यदि चरांश में हो और वह गुरुसे दृष्ट न होतो (७) लग्न में चन्द्रमा हों और वह पराजित शुभग्रह से दृष्ट हो एवं राहु प्रभृति यों से पीडित होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष दरिद्रता को प्राप्त होता है।

स्वकारकाद्रुज्यनुजेऽमले वा पापाभिधाने धनकारकाच्च।
मित्रे मतौ राज्यथ रापि पङ्कैः पदेऽतिपुण्यैर्मनुजो दरिद्रः ॥ ११० ॥

धनकारक ग्रह से षष्ठ तथा तृतीय में शुभ ग्रहहो एवं धनकारक ग्रह से चतुर्थ, पञ्चम तथा द्वितीय में पाप ग्रह होतो (१) धन में पापग्रह और दशम मे अति शुभग्रह होतो उक्त योगों में मनुष्य दरिद्र होता है।

अन्योन्यभागोपगयोर्यदैकभस्थयो रवीन्द्वोः किमुभौमभास्वतोः।
कालार्कयोर्वार्थगयोः किमर्कजे युतेऽशुना वास्फुजिता दरिद्रकः ॥ १११ ॥

एक राशि में सूर्य तथा चन्द्रमा हों और वे दोनों परस्पर एक दूसरे के नवांश में हों अर्थात् कर्कांश में सूर्य और सिंहांश में चन्द्रमा हो तो (१) धन में मङ्गल सूर्य हों अथवा शनि सूर्य हों तो (२) अथवा सूर्य से वा शुक्र से यदि 'शनि' युक्त हो तो उक्त योगों में दरिद्र होता है।

दृष्टे युतेऽर्घर्विभवे सपामरे नभोविभौ स्वाङ्गपयोः क्षतस्थयोः।
वार्थालये किल्विपलोकितान्विते सोत्थेऽर्थनाथे कथयेद् दरिद्रताम् ॥ ११२ ॥

धनभाव यदि पापग्रहों से दृष्ट वा युक्त हो, दशमेश यदि पापग्रह से युक्त हो और द्वितीयेश तथा लग्नेश षष्ठ में हों तो (१) अथवा धनभाव यदि पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हो और सहज में धनेश हो तो उक्त योगों में दरिद्रता को कहे।

केन्द्रस्थैः कलुषैः खगैर्बलयुतैर्वाणीविभावस्तगे
देहेशे विबलेऽथ भुक्तिगृहपे सेनेऽघयुक्तेक्षिते।
स्वेऽथो कण्टकमुग्रखेचरयुतं सद्धीनमभ्रस्थलं
माहेयेन विवर्जितं यदि तदा जन्मी दरिद्रो भवेत् ॥ ११३ ॥

केन्द्र में बलवान् पापग्रह हों, धनेश अस्तंगत हो एवं लग्नेश निर्बल हो तो (१) धनेश सूर्य से युक्त हो और धन स्थान पाप ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो (२) केन्द्र में पापग्रह हों और शुभ ग्रह न हों एवं दशम में मङ्गल न हो तो उक्त योगों में दरिद्र होता है।

कुम्भे हर्य्योः शेषखेटैः स्वनिम्नेऽथारे रन्ध्रेऽर्के त्रिकोणे स्वनीचे।
यद्वा नीचेऽसृग्ज्ञसौरीन्दुभिर्भे नभे राज्ञोऽप्यात्मजः स्याद् दरिद्री ॥ ११४ ॥

ज्यो...७५...

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुम्भ में सूर्य चन्द्र हों और शेष ग्रह अपनी नीच राशि में हो तो (१) अष्टम में मङ्गल और त्रिकोण में नीचराशि गत सूर्य हो तो (२) मङ्गल, बुध, शनि तथा चन्द्र ये चारों नीच राशि में हों और मकर में शुक्र हो तो उक्त योगो में उत्पन्न राज पुत्र भी दरिद्र होता है।

पुनः प्रकारान्तर से दरिद्र योगः—

सोत्थार्थपत्नीपदपुण्यपाथःप्राप्तिप्रबन्धप्रलयाङ्गपानाम् ।
योगे सहापायनिकेतपेन प्रोक्तो बुधैरेष दरिद्रयोगः ॥ ११५ ॥

यदि व्ययेश के साथ तृतीय, द्वितीय, सप्तम, दशम, नवम, चतुर्थ, एकादश, पञ्चम, अष्टम तथा लग्न इन स्थानों के स्वामि यों का योग (सम्बन्ध) हो तो यह दरिद्र योग पण्डितजनों ने कहा है।

योगे सहारिविभुनार्थपदाम्बुपौर-
शस्तान्त्यशौर्य्यभवशान्तसुतास्तपानाम् ।
दारिद्र्ययोग उदितः स महानुभावै-
र्योगाः शरांशविवरे फलदा इमे स्युः ॥ ११६ ॥

द्वितीय, दशम, चतुर्थ, लग्न, नवम, द्वादश, तृतीय, एकादश, अष्टम, पञ्चम, तथा सप्तम इन स्थानों के स्वामि यों का यदि षष्ठेश के साथ योग (सम्बन्ध) हो तो दरिद्र योग कहा है। ये दरिद्र योग पाँच अंशों के अन्तराल में फलदायक होते हैं।

दरिद्रभागे निगदन्ति तेषां फलं सुपूर्णं व्ययभे त्रिपादम् ।
दलं फलं स्याद् भरणीय एवं बुधैर्विचिन्त्यं बलतारतम्यात् ॥ ११७ ॥

दरिद्र भाग में दरिद्र योग का फल परिपूर्ण होता है। व्यय में तीन पाद और द्वितीय में आधा फल होता है। इस प्रकार पण्डितजनोंने बलों के तारतम्य से उक्त योगों के फल का विचार करना चाहिए।

महादरिद्र योगः—

महादरिद्री व्ययपे निधाने धर्माधिपेऽन्त्ये दुरितैस्तृतीये ।
किमन्त्यधीशान्तगयोर्महीजमान्द्योश्चकेन्द्रेऽचिंतमन्दचन्द्रैः ॥ ११८ ॥

अष्टम में व्ययेश, व्यय में नवमेश और तृतीय में पाप हों तो (१) व्यय पञ्चम वा अष्टम में मङ्गल तथा मान्दि हों और केन्द्र में गुरु, शनि तथा चन्द्र हों तो उक्त योगों में महादरिद्री होता है।

अर्थेन आकाशचरा वसेयुर्निधानमानास्तपयोधनेषु ।
भयङ्करः स्वान्वयसम्भवानां जन्तुः प्रजातो नितरां दरिद्रः ॥ ११९ ॥

द्वितीय, दशम, सप्तम, चतुर्थ तथा लग्न में पापग्रह हों तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष अतीव दरिद्र तथा अपने कुल जनों के लिए भयङ्कर होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

केमद्रुम (दरिद्र) योगः—

पार्श्वद्वये शीतरुचेर्निधाने ऽपाये विनेनं न विहङ्गयुक्ते ।
किं वोदयाद्यौ मदने ऽमृतांशौ विवर्जिते गौररशा ऽथ सर्वैः ॥ १२० ॥

खसद्भिरत्यल्पकलासमन्वितैरुच्चोनितैः किं कविमन्दगामिनोः ।
निम्नार्य्यसद्वर्गगयोः परस्परसंदृष्टयोर्वैकभसंस्थयोरुत ॥ १२१ ॥

साग्रेय इन्दावघमांशगे वा नक्तं विधीर्य्ये ऽन्वयपेक्षिते वा ।
नीचांशके शुभ्रकरे सपङ्के नियत्यर्धांशेन निरीक्षिते वा ॥ १२२ ॥

कृशे निशेशे निशि नीचयुक्ते केमद्रुमान्सम्प्रवदन्ति योगान्
एतान्बुधा एषु नरेशवंश भवो ऽपि दारिद्र्यमुपैति मर्त्यः ॥ १२३ ॥

चन्द्रमा के दोनों पार्श्व अर्थात् द्वितीय तथा द्वादश में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम (दरिद्र) योग होता है। लग्न वा सप्तम में चन्द्रमा हो और वह गुरु से दृष्ट न हो तो (१) सब ग्रह अल्प रेखा से युक्त हों तथा बल रहित हो तो (२) नीचराशि गत शत्रु राशि गत वा पाप राशि गत शुक्र तथा शनि वे दोनों परस्पर देखते हों अथवा वे दोनों एक राशि में हों तो (३) 'चन्द्रमा' यदि पापग्रह से युक्त होकर पापराशि वा पापनवांश में हो तो (४) रात्रि का जन्म हो और निर्बल चन्द्रमा दशमेश से दृष्ट हो तो (५) नीचांशगत चन्द्रमा यदि पापग्रह से युक्त होकर नवमेश से दृष्ट हो तो (६) रात्रि का जन्म हो और क्षीण चन्द्रमा यदि नीच राशि गत ग्रह से युक्त हों तो उक्त केमद्रुम योगों में उत्पन्न राजवंश का पुरुष भी दरिद्रता को प्राप्त होता है।

केमद्रुम योग भङ्ग परिज्ञानः—

आर्य्येक्षिते ऽनुष्णकरे कवौ वा चतुष्टये ऽथो शुभमध्यगे ऽब्जे ।
भव्यान्विते वाङ्गिर ईक्ष्यमाणे वेन्दौ सखेटे न दरिद्रयोगः । १२४ ॥

केन्द्र में चन्द्रमा वा शुक्र हो और वह गुरु से दृष्ट होतो (१) चन्द्रमा शुभग्रहों के अन्तराल में हो वा शुभग्रह से युक्त हो और गुरु से दृष्ट होतो (२) 'चन्द्रमा' यदि ग्रह से युक्त हो तो केमद्रुम (दरिद्र) योग नहीं होता है।

स्वोच्चर्क्षभागे ऽतिहितर्क्षगे ऽब्जे गुर्वीक्षिते वा निखिले सरम्ये ।
तस्मिन्पुरे ऽथाम्बर आर्य्यदृष्टे तस्मिन्निजोच्चे न दरिद्रयोगः । १२५ ॥

स्वोच्चराशि स्वोच्चांश वा स्वाधिमित्र राशि में चन्द्रमा हो और वह गुरु से दृष्ट होतो (१) लग्न में पूर्ण चन्द्रमा हो और वह शुभग्रह से युक्त हो तो (२) दशम में उच्च राशि गत चन्द्रमा हो और वह गुरु से दृष्ट होतो केमद्रुम योग नहीं होता है।

लक्षण सहित हृदयोग फलः—

सर्वे ग्रहाश्चेज्जनने ऽधरस्था योगो ह्रदो ऽयं समुदाहृतो ज्ञैः ।
तस्मिन्भवो ना नितरां शठत्वयुग् द्विड्हृतः स्याद्विकलो ऽर्थमुक्तः ॥ १२६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जन्म समय में सबग्रह नीच राशि में हो तो ' हृद नामक योग ' कहा है। इस योग में उत्पन्न पुरुष अत्यन्त मूर्ख, शत्रु से पराजित, विकल तथा निर्धन होता है।

लक्षण सहित फणियोग फलः--

कुम्भे खरांशौ खररश्मिसूनौ क्रिये कुम्भार्य्यां भृगुजेऽलिराशौ।
प्रालेयभानौ फणिनामधेयो योगो निरुक्तो विकलोऽत्र जातः॥ १२७॥

जन्म समय में कुम्भ में सूर्य, मेष में शनि, कन्या में शुक्र एवं वृश्चिक में चन्द्रमा हो तो ' फणियोग ' होता है। इस योग में उत्पन्न पुरुष विकल होता है।

लक्षण सहित काक योग फलः—

दैतेयवन्द्येनजयोरजस्थयोर्गवांविभौ गोगृहगे बलासवे।
कर्के कलेशेऽनिमिषं समाश्रितेऽसौ काकयोगो विभवोनितो भवी॥ १२८॥

मेष में शुक्र तथा शनि हों, वृष में सूर्य, कर्क में मङ्गल एवं मीन में चन्द्रमा हो तो ' काक योग ' होता है। इस योग में उत्पन्न पुरुष विभव से रहित अर्थात् दरिद्र होता है।

मतान्तर से लक्षण सहित दरिद्र योग फलः—

सशीतलांशौ नलिनीवनेशे कुम्भे पुनः काणकुजेज्यकोणाः।
चेज्जन्मनीमेऽधरराशिमाप्ता दरिद्रतामेति नरेशजोऽपि॥ १२९॥

कुम्भ में सूर्य हो और वह चन्द्रमा से युक्त हो एवं शुक्र, भौम, गुरु तथा शनि ये चारो नीच राशि में होतो राज वंश में उत्पन्न पुरुष भी दरिद्रता को प्राप्त होता है।

लक्षण सहित हुताशन योग फलः—

माहेयमन्दामृतरश्मिरोधनाः स्वनीचराशिं समुपाश्रिता इमे।
सर्वेऽयमाद्यैर्गदितो हुताशनः करोति शं नो अतितापकृद्भवेत्॥ १३०॥

जन्म समय में मङ्गल, शनि, चन्द्र तथा बुध ये सब नीच राशि में होतो यह ' हुताशन योग ' कहा है। यह योग कल्याण कारक नहीं होता है। बल्कि अत्यन्त सन्ताप करने वाला होता है।

निर्धन योगः--

सोग्रे स्वपस्थांशपतौ त्रिकस्थे क्रूरादिपष्ठ्यंशगतेऽथ सोग्रैः।
खरस्वायपैः किं स्वपयुक्तदृष्टे नीचाधिगेऽन्त्यांशयुतांशकेशे॥ १३१॥
अघान्विते कण्टकगे बलोनितेऽप्यथार्थनाथस्थभपाश्रितांशपे।
चेत्कालदण्डादिलवेऽथ कल्मपसम्बन्ध आये भवपे च निर्धनः॥ १३२॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

त्रिक तथा क्रूरादिषष्ट्यंश में धनेश के नवांश का स्वामी हो और वह पापग्रह से युक्त हो तो (१) धन-भाव, धनेश तथा लाभेश ये तीनों पापग्रहों से युक्त होतो (२) व्ययेश के नवांश का स्वामी यदि धनेश से युक्त वा दृष्ट हो, नीच राशि में हो, अस्त गत हो, पाप ग्रह से युक्त हो, केन्द्र में हो, तथा निर्बल होतो (३) धनेश की राशी का स्वामी जिस के नवांश में हो वह ग्रह यदि कालदण्डादि क्रूरषष्ठ्यंश में होतो (४) लाभ में तथा लाभेश के साथ पाप ग्रहों का सम्बन्ध होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष निर्धन होता है।

निलिम्पराजस्य पुरोहितेऽर्थे बुधेक्षिते निर्धनतां विधत्ते ।
विभाकरो वित्तगृहे विधत्ते निर्वित्तत्तां नीलविलोकितो वा ॥ १३३ ॥

सिंहीतनूजः शयने भवेऽन्तिमे धने धरित्र्यां भ्रमते स निर्धनः ।
मृणालिनीशे च्छगले तुलाधरनवांशयुक्ते मलिनेक्षिते तथा ॥ १३४ ॥

धन में गुरु हो और वह बुध से दृष्ट हो तो निर्धनता को करता है। धन में सूर्य हो और वह शनि से दृष्ट हो तो निर्धनता को करता है। शयनावस्था में राहु हो और वह लाभ व्यय वा धन में हो तो वह पुरुष निर्धन होकर पृथ्वी में भ्रमण करता है। मेष राशि गत सूर्य यदि तुलांशक में हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट हो तो निर्धन होता है।

खलैर्युक्तौ दृष्टौ विभवभवभावौ विभवपे
सपत्ने प्राप्तीशेऽस्तमित उत खाङ्गार्थहितपाः ।
त्रिकेऽस्ते वीतोर्ज्जाः किमुदयविभौ जीवितगते
पदेशेऽस्तं प्राप्ते द्विपति धनपे प्रान्त्यभवने ॥ १३५ ॥

ततोऽर्थेशे दुःस्थे सखलखचरेऽर्थेऽथ कलुषै-
र्युते दृष्टे स्वेशे रुजि रणगृहे प्राणरहिते ।
धनेशेऽथो सोग्रे व्यय उदयपे वीर्य्यवियुते
शुभैरस्तंयातैर्द्रविणरहितः स्याज्जननवान् ॥ १३६ ॥

धन तथा लाभ ये दोनों भाव पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों और षष्ठ में धनेश हो एवं लाभेश अस्तंगत हो तो (१) त्रिक तथा सप्तम में दशम, लग्न, धन तथा चतुर्थ इन चारों भावों के स्वामी हों और वे निर्बल हों तो (२) अष्टम में लग्नेश, षष्ठ में अस्तंगत दशमेश हो और व्यय में धनेश हो तो (३) त्रिक में धनेश और धन में पाप ग्रह हो तो (४) अष्टम वा षष्ठ में धनेश हो और वह पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो, लग्नेश निर्बल हो और शुभग्रह अस्तंगत हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष धन से हीन होता है।

स्वेशेऽस्तयाते सखले ससौम्येऽर्थेऽथो शुभैः शत्रुभवेतरस्थैः ।
अस्तं प्रयातैर्धनपेज्यकाव्यैः कायाधिपेऽन्त्ये विभवेन हीनः ॥ १३७ ॥

धनेश अस्तगत होकर पाप ग्रह से युक्त हो और धन में शुभ ग्रह हो तो (१) षष्ठ तथा लाभ के अतिरिक्त स्थान में शुभ ग्रह हों, धनेश, गुरु तथा शुक्र ये तीनों अस्तगत हों एवं व्यय में लग्नेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष द्रव्य से हीन होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ओजोमहोभी रहितैः खलैश्चतुः केन्द्रङ्गतैः सद्युचरैः सगर्हितैः ।
जातो धनोनस्तपनेन्दुलोकितो दैत्येन्द्रवन्द्यो द्रविणे न वित्तदः ॥ १३८ ॥

बल तथा पराक्रम रहित पाप ग्रह यदि चारों केन्द्रों में हों और शुभ ग्रह यदि पाप ग्रहों से युक्त हों तो उक्त योग में धन से रहित होता है। धन में शुक्र हो और वह सूर्य तथा चन्द्रमा से दृष्ट हो तो धन नहीं देता है।

द्रव्यस्थयोर्दानवनाथनीलयोर्नितम्बिनीनाकगयुक्तयोर्नरः ।
वाराङ्गनाम्लेच्छनिषादपूर्वकैर्गन्धर्वनाट्यादिभिरस्वतां व्रजेत् ॥ १३९ ॥

धन में राहु तथा शनि हों और वे स्त्री ग्रह (चन्द्र वा शुक्र) से युक्त हो तो वेश्या, म्लेच्छ (मुसलमान) निषादादि (मल्लाह प्रभृति) यों से, गायन तथा नाटक इत्यादि कारणों से निर्धनता को प्राप्त होता है।

त्रिकस्थिते यद्गृहपे त्रिकेशे यद्भावगे गर्हितलोकिते वा ।
कोलेक्षिते तद्गृहहेतुनार्थोनो दुःखतप्तस्तरलो नरः स्यात् ॥ १४० ॥

त्रिक में जिस भाव का स्वामी हो और जिस भाव में त्रिकेश हो और वह पाप ग्रह वा शनि से दृष्ट हो तो उस भाव के कारण द्रव्य से हीन, दुःख से पीडित और चञ्चल होता है।

अपायपे ऽङ्गे पुरपे व्यये ऽथ वा ऽरौ कल्पपे ऽङ्गे हितपे ऽथ देहगे ।
छिद्राधिपेछिद्रगते ऽङ्गपे किमु पुरस्थयोः पुष्पवतोः किमूदये ॥ १४१ ॥
ध्वजाजयोरुद्गमपे हरे किमु सोग्रे ऽङ्गपे दुष्टगते ऽथ दैवपे ।
खे ऽरौ चिदीशे ऽथ खले तनौ विना स्वधर्मपौ वेन्दुयुतांशपे ऽथ वा ।
शरीरपस्थांशपतौ त्रिकस्थिते योगाः समग्रा इह ये समीरिताः ।
तत्कारका मारकपान्वितेक्षिताः कुर्वन्ति ते निर्धनतां शरीरिणाम् ॥ १४३ ॥

लग्न में व्ययेश और व्यय में लग्नेश हो तो (१) लग्न में षष्ठेश और षष्ठ में लग्नेश हो तो (२) लग्न में अष्टमेश और अष्टम में लग्नेश हो तो (३) लग्न में सूर्य तथा चन्द्रमा हों तो (४ लग्न में चन्द्रमा तथा केतु हों और अष्टम में लग्नेश हो तो (५) त्रिक में लग्नेश हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो तो (६) दशम में भाग्येश और षष्ठ में पञ्चमेश हो तो (७) लग्न में द्वितीयेश तथा भाग्येश को छोडकर अन्य पापग्रह हों तो (८) त्रिक में चन्द्रनवांश का स्वामी हो अथवा लग्नेश के नवांश का स्वामी हो एवं इन पूर्वोक्त समस्त योगों के कारक ग्रह यदि मारक (द्वितीय तथा सप्तम) स्थान के स्वामियों से युक्त वा दृष्ट हों तो मनुष्यों को निर्धन करते हैं।

धन तथा सम्पत्ति हीन योगः—

केन्द्रे खले ऽन्त्ये पथिपे धनोनो ऽथांगोपतौ गोपतिराशिमाप्ते ।
मत्स्ये मृगाङ्के मिहिरात्मजे ऽजे जम्बालनीडे ऽसृजि सम्पदूनः ॥ १४४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

केन्द्र में पाप ग्रह और व्यय में भाग्येश हो तो धन से रहित होता है। वृष में सूर्य, मीन में चन्द्रमा, मेष में शनि और कर्क में मङ्गल हो तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य सम्पत्ति से रहित होता है।

धन नाश के योगः—

चण्डांशुसूनौ चरमोपयाते दृष्टे युते भूजनिनार्थनाशः।
कोणेशसम्बन्धिनि खेचरे ऽर्थे रिःफारिरन्ध्रेशयुते ऽर्थनाशः॥ १४५॥

व्यय में शनि हो और वह मङ्गल से दृष्ट वा युक्त हो तो धन का नाश होता है। त्रिकोणेश ग्रहों का सम्बन्धी ग्रह यदि धन में हो और वह व्यय षष्ठ वा अष्टम के स्वामी से युक्त हो तो धन का नाश होता है।

सोमेक्षिते ज्ञे धनगे धनस्य हानिस्तुषारांशुजनीक्षिते ऽब्जे।
क्षीणे ऽर्थभे सञ्चितवित्तहानिमन्यस्य वित्तस्य निरोधमाहुः॥ १४६॥

धन में बुध हो और वह चन्द्रमा से दृष्ट हो तो धन की हानि होती है। धन में क्षीण चन्द्रमा हो और वह बुध से दृष्ट हो तो सञ्चित धन की हानि अन्य धन का प्रतिरोध (रुकावट) करता है।

त्रिके फलेशे किमु रायि रिःफपे स्वपे व्यये ऽरावुत निर्बले स्वपे।
गौरे व्यये ऽङ्गे विमलैरनीक्षिते वा ऽऽयेशयुक्तत्रिलवेश्वरे ऽसताम्॥ १४७॥
सम्बन्ध उग्रे ऽशुभभे फलालये वान्त्ये बलाजे विबुधेक्षितान्विते।
किं पापसम्बन्ध इहायपे ततः कृशे विधौ कर्कमृते कुटुम्बगे॥ १४८॥
दृष्टे ऽन्विते ऽघेन किमीक्षितान्विते रव्यारमन्दैर्द्रविणे विशेषतः।
क्षीणेन्दुदृष्टे धनहानिरर्थगे ऽब्जे ऽर्के ऽङ्गजस्थे तिथिवत्सरे तथा॥ १४९॥

त्रिक में लाभेश हो तो (१) धन में व्ययेश और व्यय वा षष्ठ में धनेश हो तो) २) धनेश निर्बल हो और व्यय में गुरु हो एवं 'लग्न' शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो (३) लाभेश के द्रेष्काणेश का पाप ग्रह से सम्बन्ध हो और लाभ में पापराशिगत पाप ग्रह हो तो (४) व्यय में मंगल हो और वह बुध से दृष्ट वा युक्त हो तो (५) पाप ग्रहों के साथ लाभेश का सम्बन्ध हो तो (६) धन में कर्क राशि के अतिरिक्त राशिगत चन्द्रमा हो और वह पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो (७) धन स्थान यदि सूर्य, मङ्गल तथा शनि से युक्त वा दृष्ट हो विशेषतया क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष की धन हानि होती है। धन में चन्द्रमा और पञ्चम में सूर्य हो तो १५ वें वर्ष में धन हानि होती है।

ये ये विहङ्गा धनदास्त्रिकोणपसम्बन्धिनो रिःफगृहेशसंयुताः।
विनाशनाथेन गदाधिपेन वा समन्वितास्ते ऽर्थविनाशकाः स्मृताः॥ १५०॥

त्रिकोणेशों के सम्बन्धी जो जो धन देने वाले ग्रह हों यदि वे व्ययेश षष्ठेश वा अष्टमेश से युक्त हों तो वे ग्रह धन नाश करने वाले जानने चाहिएँ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राज दण्ड से धन हानि के योगः—

शीतभाः कृशबलो ऽवसानगो वा पतङ्ग उत तत्र तावुभौ ।
स्वं हरेन्मनुजनायको ऽङ्गिनो ऽथोव्यये कुटिललोकितान्विते ॥ १५१ ॥

वारुणे द्रविणपान्विते व्यये नीचगे मलिनलोकिते ऽङ्गपे ।
अल्पवीर्य्यवति सोग्रखेचरे किं व्यये फलपतौ धने ऽन्त्यपे ॥ १५२ ॥

नीचगे वसुभपे त्रिके ऽथ वा राजकारकयुते ऽर्थपे व्यये ।
निम्नभे सकलुषे ऽथ रैपतौ रिःफगे ऽकरमणे कुटुम्बगे ॥ १५३ ॥

लोकिते ऽङ्गविभुना ऽङ्गपे ऽन्तिमे पापयुक्त उत साङ्गपे खपे ।
लाभवेश्मनि दुरभ्रपड्लवे वित्तनाशनमिलेशदण्डतः ॥ १५४ ॥

व्यय में क्षीणबलवाला चन्द्रमा वा सूर्य हो तो (१) व्यय में क्षीण बली चन्द्र तथा सूर्य ये दोनों हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के धन को राजा हरण करता है।

व्यय स्थान यदि मङ्गल से दृष्ट वा युक्त हो तो (१) व्यय में नीच राशिगत सूर्य हो और वह द्वितीयेश से युक्त हो तथा पाप ग्रह से दृष्ट हो एवं निर्बल लग्नेश यदि पाप ग्रह से युक्त हो तो (२) व्यय में लाभेश, धन में व्ययेश और नीच राशि में वा त्रिक स्थान में धनेश हो तो (३) व्यय में नीच राशिगत धनेश हो और वह राजकारक ग्रह से तथा पाप ग्रह से युक्त हो तो (४) व्यय में धनेश तथा धन में व्ययेश हो और वह लग्नेश से दृष्ट हो एवं व्यय में लग्नेश हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो तो (५) कुटुम्बस्थेश में दशमेश हो और वह लग्नेश से युक्त हो तो उक्त योगों में राजदण्ड से धन की हानि होती है।

ज्ञाति विवादि से धन हानि के योगः—

ज्ञात्या विवादेन धनक्षयं यदा ऽवसानगे चान्द्रमसे ऽथ भोजने ।
स्वहानिरिज्ये गुरुमंत्रगे मृषाकोशान्तकृत्सोग्रगे ऽन्तिमाधिपे ॥ १५५ ॥

व्यय में बुध हो तो बान्धवों के विवाद से धन की हानि होती है। त्रिकोण में गुरु हो तो भोजन में धन की हानि होती है। व्ययेश यदि पाप ग्रह से युक्त मिथ्या कार्य में धन का नाश करता है।

पर स्त्री की आसक्ति में तथा कुमार्ग में धन हानि के योगः—

चेत्कारकांशपुरतः पथि राहुरन्य-
स्त्र्यासक्तितः प्रकुरुते द्रविणस्य हानिम् ।
प्रालेयभानुभृगुजान्वितभेशयुक्तौ
पङ्गूरगौ गिरि धनक्षयकं कुमार्गे ॥ १५६ ॥

कारकांश वा लग्न से नवम में राहु हो तो पराई स्त्री की आसक्ति में धन का नाश होता है। जन्म लग्न से द्वितीय में राहु तथा शनि हों और वे चन्द्र तथा शुक्र की राशि के स्वामियों से युक्त हों तो कुमार्ग में धन की हानि होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा, अग्नि तथा चौर से धन हानि योगः—

स्वेशांशपस्थलवपे सखले ऽङ्गपाल-
दृष्टे त्रिके ऽथ विबलौ सखलौ खलांशे ।
चौरादिभावविभुलोहितलोकितौ स्वः-
येशौ धनक्षयमिलापतिवह्निचौरैः ॥ १५७ ॥

धनेश के नवांश का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो वह ग्रह पाप ग्रह के युक्त हो और त्रिक स्थान में स्थित होकर लग्नेश से दृष्ट हो तो (१) धनेश तथा लाभेश ये दो नों निर्बल हों, पाप युक्त हों, पापांश में हों एवं चौरादि भावेशों से तथा मङ्गल से दृष्ट हों तो युक्त योगों में राजा अग्नि वा चोरों के द्वारा धन का नाश होता है।

लोकापवाद से धन हानि का योगः—

स्वलाभपान्विते ऽरिगे खपे ऽसदभ्रपङ्लवे ।
सपामरे धनक्षयं जनापवादहेतुना ॥ १५८ ॥

षष्ठ स्थान में दशमेश हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो, क्रूरषड्वांश में द्वितीयेश तथा लाभेश से युक्त हो तो लोकापवाद के कारण धन का नाश होता है।

भ्रातादियों के सम्बन्ध से धन नाश का योगः—

मध्ये ऽनुजाम्बाङ्गजवैरिवामातातधिपानां गृहपस्य यस्य ।
सम्बन्धकश्चेद् व्ययपेन साकं तन्मूलतो द्रव्यविनाशनं स्यात् ॥ १५९ ॥

भ्रातृ, मातृ, पुत्र, शत्रु, स्त्री तथा पितृ इन के भावेशों के मध्य में जिस भाव के स्वामी का व्ययेश से सम्बन्ध हो उस के कारण धन का नाश होता है।

धन नाश दशा परिज्ञानः—

द्रव्याश्रितो दिविचरो ऽधरवैरिभस्थो-
ऽसल्लोकितो ऽर्ककरगो ऽस्य हृतौ दशायाम् ।
रैसंक्षयो भवति दुष्टसहोयुतः स
गोचारके ऽल्पफलराशिगतस्तथैव ॥ १६० ॥

धन में नीच राशिगत वा शत्रु राशिगत ग्रह हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट हो वा अस्तगत हो तो उस की अन्तर्दशा वा दशा में धन का नाश होता है। अथवा वह धन स्थान गत ग्रह यदि गोचर में दुष्टबल से युक्त हो अर्थात् जन्म राशि से चतुर्थ अष्टम वा द्वादश में हो अथवा गोचर से जब अल्परेखावाली राशि में आवे तब धन का नाश होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुटुम्बी योगः—

पुण्योपेते पोष्यपे कण्टकेऽर्थे स्वोच्चे सद्भे मित्रभे वा कुटुम्बी ।
पोष्यागाराधीश्वरे पोष्यभे वा सत्सम्बन्धे जातपुण्यः कुटुम्बी ॥ १६१ ॥

केन्द्र वा धन में धनेश हो और वह शुभग्रह से युक्त हो, स्वोच्चराशि, शुभग्रह की राशि वा मित्रराशि में हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष कुटुम्ब वाला होता है। धनेश के साथ वा धन भाव में शुभ ग्रह का सम्बन्ध हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष पुण्यात्मा तथा कुटुम्ब वाला होता है।

बीस, पचास, तीन सौ तथा सहस्र (हजार) जन पालक योगः—

चन्द्रेऽर्थेऽर्थपतौ सपुण्यखचरे पारावतांशे जना-
ञ्जातो ना परिपालयेन्नखमितान्कोणेश्वरे गोपुरे ।
वित्तेशस्थनवांशपे शुभकरे सिंहासनाख्यांशके
पञ्चाशज्जनपालको लपनपे पारावतांशे यदि ॥ १६२ ॥

किं सिंहासनभाग इन्द्रगुरुणा युक्ते किमालोकिते
सञ्जातो मनुजः शतत्रयजनान् सम्पालयेत्सर्वदा ।
पोष्येशे परमोच्चगेऽदितिसुतामात्येन वा वीक्षिते
स्वस्थानेऽपि तथाविधे मनुभवो रक्षेत्सहस्राश्रितान् ॥ १६३ ॥

धन में चन्द्रमा तथा परावतांश में द्वितीयेश हो और वह शुभग्रह से युक्त हो तो बीस मनुष्यों का पालन करनेवाला होता है। गोपुरांश में धनेश हो एवं धनेश के नवांश का स्वामी शुभग्रह हो और वह सिंहासनांश में हो तो पचास मनुष्योंका पालन करने वाला होता है। पारावतांश वा सिंहासनांश में धनेश हो और वह गुरु से युक्त वा दृष्ट होतो तीन सौ मनुष्यों का पालन करनेवाला होता है। परमोच्चांश में द्वितीयेश हो वा गुरु से दृष्ट हो एवं धन भाव भी परमोच्चगत ग्रह से युक्त हो वा गुरु से दृष्ट हो तो एक सहस्र (हजार) मनुष्योंका पालन करनेवाला होता है।

ऐरावतांशे सबलेऽर्थेपे गुरौ सिंहासने गोपुरके सिते ऽथ वा ।
स्वोच्चे शुभेऽर्थे धनपे सदीक्षिते तुङ्गे सशौर्य्येऽमितमर्त्यरक्षकः ॥ १६४ ॥

ऐरावतांश में बलवान् धनेश हो, सिंहासनांश में गुरु हो और गोपुरांश में शुक्र हो तो (१) धन में उच्चराशि गत शुभग्रह हो, एवं उच्चराशि में बलवान् लग्नेश हो और वह शुभ दृष्ट हो तो असंख्य मनुष्यों का पालन करने वाला होता है।

सोत्थेऽर्थेपे पुंशुभवीक्षिते शुभस्थिते ग्रहेशे निजतुङ्गगे किमु ।
कोणायतुङ्गे धनपेऽर्थपक्षेपे केन्द्रे सवीर्य्ये धनपेऽखिलेश्वरः ॥ १६५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तृतीय में धनेश हो और वह पुरुष शुभग्रह से दृष्ट हो तथा शुभग्रह से युक्त हो एवं अपनी उच्च राशि में सूर्य हो तो (१) त्रिकोण लाभ या उच्च राशि में धनेश हो एवं द्वितीयेश की राशि का स्वामी केन्द्र में हो और लग्नेश बलवान् हो तो उक्त योगों में सम्पूर्ण जनों का स्वामी होता है।

गिरि स्वपे गुरौ भृगौ बुधे सुहृद्ग उच्चभे ।
जलालये जनः परोपकारकृन्नृरक्षकः ॥ १६६ ॥

गुरु शुक्र या बुध धनेश हो और वह मित्रराशि या स्वोच्च राशि में स्थित होकर द्वितीय या चतुर्थ में होतो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष परोपकारी तथा मनुष्योंका रक्षक होता है।

पारिवार क्षय के योगः—

सर्वेऽथ वोग्रा वपुषि व्यये स्मरे सौम्येऽपि कोशे तत इन्द्रमंत्रिणि ।
होराङ्गतेऽहस्करनन्दने धनेऽघैः पञ्चबाणे परिवारनाशनम् ॥ १६७ ॥

लग्न, व्यय तथा सप्तम में सब ग्रह या पापग्रह हों और धन में शुभग्रह भी हो तो (१) लग्न में गुरु, धन में शनि और सप्तम में पापग्रह हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के परिवार (कुटुम्ब) का नाश होता है।

नेत्र विचार तथा उत्तम नेत्र योगः—

वामं व्ययो दक्षिणमर्थभावो विलोचने कालनरस्य वेद्ये ।
नेत्रे ससौम्ये किमु तद्गृहेशे पुण्यैः समेते सबले शुभानाम् ॥ १६८ ॥
सम्बन्धके शोभनभागयाते चेत्कारके कल्पपतीक्षिताढ्ये ।
भवो विशेषात्स विशालदृष्टिर्युक्तेक्षिते ऽघैः विपरीतमूह्यम् ॥ १६९ ॥

व्ययस्थान कालपुरुष का वाम नेत्र और द्वितीयस्थान दक्षिण नेत्र है। यदि नेत्रस्थान (द्वितीय तथा द्वादश) शुभग्रह से युक्त हो अथवा नेत्रेश (द्वितीयेश तथा व्ययेश) बलवान् हों, शुभग्रह से युक्त हो, शुभ ग्रहों के सम्बन्धी हो तथा शुभग्रह के नवांश में हो एवं नेत्र कारक ' (शुक्र) यदि लग्नेश से दृष्ट या युक्त होतो विशेष रूप से विशाल नेत्र वाला होता है। यदि नेत्र भाव पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो विपरीत फल होता है अर्थात् नेत्र विकार अथवा अल्प नेत्र वाला होता है।

जीर्णे विधुं पश्यति पङ्गुनामा चन्द्रं न पश्येद्भृगुजोऽथ कर्के ।
विधौ खलैः खस्मरगैः प्रदृष्टे स्यादल्पनेत्रः पुरुषस्तदानीम् ॥ १७० ॥

क्षीण चन्द्रमा को शनि देखता हो और उस को शुक्र न देखता हो तो (१) कर्क में चन्द्रमा हो और वह दशम गत तथा सप्तम गत पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष अल्प नेत्र वाला होता है।

विकर्त्तने वित्तगृहोपगे वा विरोचनाद्वित्तगृहे किमस्ते ।
असद्विहङ्गावथ पापदृष्टे कुमुद्वतीशे विभवे तथैव ॥ १७१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन में सूर्य हो तो (१) सूर्य से द्वितीय वा सप्तम में दो पाप ग्रह हों तो (२) धन में चन्द्रमा हो और वह पाप दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य अल्प नेत्र वाला होता है।

बुद्बुदनेत्र योगः—

नेत्रद्वयं पापयुतं च पापाक्रान्तौ तदीशौ बलसंयुतौ वा ।
अङ्गे पतङ्गे सनिशीथिनीशे सत्पापदृष्टे यदि बुद्बुदाक्षः ॥ १७२ ॥

दोनों नेत्र (द्वितीय तथा द्वादश) स्थान यदि पाप ग्रह से युक्त हो और दोनों नेत्र स्थानों के स्वामी बलवान् होकर पाप ग्रहों से आक्रान्त हों तो (१) लग्न में सूर्य हो और वह चन्द्रमा से युक्त हो तथा शुभ पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य बुद्बुदनेत्र वाला होता है।

कुलीरलग्ने सरवौ तथा भवेत्कण्ठीरवेऽङ्गे खलचारुलोकिते ।
भनाथभास्वत्सहिते स बुद्बुदविलोचनो नेति गदन्ति केचन ॥ १७३ ॥

लग्न में कर्क राशि हो और उस में सूर्य हो तो (१) लग्न में सिंह राशि हो और उस में चन्द्रमा तथा सूर्य हों और वे पाप तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो भी बुद्बुदनेत्र वाला होता है। इस प्रकार कोई आचार्य कहते हैं।

अल्पमध्य दृष्टि योगः—

अपायगैः पङ्गुपपीन्दुपण्डितैः पृथ्वीतनूजे पदगेऽल्पदृग्भवेत् ।
तिष्ठन्तु दृश्येतरभाग आस्फुजिद्भास्वद्घनेशा यदि मध्यमेक्षणः ॥ १७४ ॥

व्यय में शनि, सूर्य, चन्द्र तथा बुध हों एवं दशम में मङ्गल हो तो अल्प दृष्टि वाला होता। अदृश्य भाग में शुक्र सूर्य तथा लग्नेश हों तो मध्यम नेत्रवाला होता है।

नेत्र दोष विचार तथा विकलाक्ष योगः—

दृग्दोषकृद् ग्लौर्व्ययवित्तगोऽथो बलोज्झिते लोचनपे त्रिके वा ।
खलाढ्यदृष्टेऽन्त्यतपोऽङ्गजेऽर्के विलोचनाभ्यां विकलो नरः स्यात् ॥ १७५ ॥

व्यय वा धन में चन्द्रमा हो तो नेत्र दोष को करता है। नेत्र स्थान के स्वामी निर्बल होकर त्रिक स्थान में हो तो (१) व्यय नवम वा पञ्चम में सूर्य हो और वह पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्य नेत्रों से विकल होता है।

सूर्य तथा चन्द्रमा के अन्धांशों का परिज्ञानः—

षड्भ्यो दशान्तं वृषभेऽन्धभागा गोभ्यो दिनान्तं मिथुनेऽथ कर्के ।
सिंहे धृतिर्भानि गजाश्विनोऽलौ चन्द्रो दिशो भानि मतङ्गपक्षाः ॥ १७६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मृगानने नागयमा नभोगनासत्यतुल्याः कलशेऽष्ट काष्ठाः
धृतिर्नवैके ऽन्धलवाः प्रदिष्टा विचक्षणैश्चण्डकरामृतांश्वोः ॥ १७७ ॥

वृष में छः अंश से (६।७।८।९।१०) दशअंश पर्यन्त अन्धांश, मिथुन में नौ से (९।१०।११।१२।१३।१४।१५) पन्दरह अंश पर्यन्त अन्धांश, कर्क तथा सिंह में १८।२७।२८ अन्धांश, वृश्चिक में तथा १।१०।२७।२८ अन्धांश, मकर में २८।२९ अन्धांश एवं कुम्भ में ८।१०।१८।१९ अन्धांश होते हैं। उक्त राशियों में सूर्य तथा चन्द्रमा के अन्धांश है। अनुक्त राशियों में अन्धांश नहीं होते हैं।

क्षीण चन्द्रमा के अन्धांशों का परिज्ञानः--

क्षीणे क्षपेशे गवि मूर्च्छना दोर्युग्मा नभोगाश्विमिताः खरामाः ।
कर्के नखा गोशशिनोऽन्धभागाः सिंहे दशभ्यो नरपावसानम् ॥ १७८ ॥
स्त्रियां नवैके नखमूर्च्छनाश्च धनुर्धरेऽनन्तकराः कुयुग्माः ।
रामाश्विनः कुम्भधरे शशाङ्काश्व्यब्धीन्द्रिया अन्धलवेष्वमीषु ॥ १७९ ॥
यदीननेमी घनगौ धनान्त्यगावचारुदृष्टौ नयनक्षतिर्विदा ।
दृष्टौ निशान्धः पविपाणिमंत्रिणा काव्येन दृष्टौ कथिताल्पदोषता ॥ १८० ॥

वृष में २१।२२।२९।३० अन्धांश, कर्क में १९।२० अन्धांश एवं सिंह में दश से (१०।११।१२।१३।१४।१५।१६) सोलह पर्यन्त क्षीण चन्द्रमा के अन्धांश होते हैं। कन्या में उन्नीस से (१९।२०।२१) इक्कीस पर्यन्त अन्धांश, धनु में २०।२१।२३ अन्धांश एवं कुम्भ में १।२।४।५ क्षीण चन्द्रमा के अन्धांश होते हैं। अनुक्त राशियों में क्षीण चन्द्रमा के अन्धांश नहीं होते हैं। लग्न धन वा व्यय में सूर्य तथा चन्द्रमा हों और वे उक्त राशियों के उक्तांशों में हों एवं पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो नेत्रों का नाश होता है। यदि उक्त स्थानों में स्थित सूर्य तथा चन्द्रमा उक्त राशियों के उक्तांशों में हों और वे बुध से दृष्ट हों तो निशान्ध (रातौंधा) और गुरु तथा शुक्र से दृष्ट हों तो नेत्रों में स्वल्प दोष कहा है।

ताजिकमत से निर्बल दृष्टि योगः--

विलग्नगेन्दौ वृषभे कुलीरे छागेऽङ्कभागे हय आदिमेंऽशे ।
ग्लौभास्करौ लग्नगतौ वृषस्यान्त्यभागयोः कर्किणि गोधरासु ॥ १८१ ॥
नखेषु सिंहे दशतो घनान्तगौ कन्योदयस्थौ कृतमूर्च्छनागतौ ।
गोचन्द्रगौ खाक्षिगतौ धनुर्धरे विवस्वदिन्दू पुरगौ खगांशगौ ॥ १८२ ॥
स्वर्गाकृतिस्थौ कलशेऽङ्गगावुभौ प्रभञ्जनेलानखनाकजातिषु ।
भागेषु संस्थौ जनितस्य जन्मनि निःप्राणदृष्टिः कथिता महर्षिभिः ॥ १८३ ॥

लग्नगत चन्द्रमा वृष कर्क वा मेष के नवांश में हो वा धनु के प्रथमांश में हो अथवा वृष के २९।३० वें अंश में, कर्क के १९।२० अंश में, सिंह के १०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७ अंश में, कन्या के ४।२१।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

१९।२० अंश में, धनु के ९।२१।२२ अंश में एवं कुम्भ के ५।१।२०।२१।२० अंश में लग्नगत सूर्य चन्द्र हों तो निस्तेज दृष्टि होती है।

वक्र तथा निमीलित नेत्र योगः—

पङ्क्षिते ऽत्रिजकपी विषमोदयर्क्षे
वाकारिगौ किमु दिवा तरणौ प्रणष्टे।
वक्रेक्षितान्वित उताहनि वक्रराशौ
नष्टे रवौ शशिनि कर्कगते ऽन्धभागे ॥ १८४ ॥

किं वक्रभे वा त्रिकगावसौम्यैरालोकितौ पङ्कजबोधनाब्जौ।
वाक्षिद्वये ऽचारुवियच्चरेन्द्रैः सदीप्तदेहैः परिपूर्णवीर्य्यैः ॥ १८५ ॥

संवीक्षिते वाक्षिपयोः सपापयोः सप्राणयोश्चेदपि वक्रलोचनः।
कुटुम्बराशौ किमुतावसानभे क्रूरेषु खेटेषु निमीलितेक्षणः ॥ १८६ ॥

विषमोदय राशि में चन्द्र तथा सूर्य हों और वे पाप दृष्ट हों तो (१) व्यय वा षष्ठ में चन्द्र तथा सूर्य हों तो (२) दिन का जन्म हो और नष्ट सूर्य यदि मङ्गल से दृष्ट वा युक्त हो तो (३) दिन का जन्म हो और विषमोदय राशि में नष्ट सूर्य हो एवं कर्क राशि के अन्धांश में चन्द्रमा हो तो (४) विषमोदय राशि में वा त्रिक स्थान में सूर्य तथा चन्द्र हों और वे पाप ग्रह से दृष्ट हों तो (५) दोनों नेत्र स्थान यदि पूर्ण रश्मि तथा पूर्णबलों से युक्त पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो (६) दोनो नेत्रेश पाप ग्रहों से युक्त हों और बलवान् भी हों तो उक्त योगों में वक्र नेत्रवाला होता है। द्वितीय वा द्वादश में पाप ग्रह हों तो निमीलित नेत्रवाला होता है।

चिपोट नेत्र योगः—

चिपोटनेत्रो नयनद्वयस्थौ प्रभाकरादित्यभवौ विनष्टौ।
प्राणोज्झितौ तद्भवनाधिनाथौ संदीप्तमूर्त्तौ ससमग्रशौर्य्यौ ॥ १८७ ॥

नेत्र (२।१२) स्थान में नष्ट सूर्य तथा नष्ट शनि हों और वे निर्बल हों एवं उन के स्वामी पूर्ण रश्मि तथा पूर्ण बली हों तो चिपोट नेत्रवाला होता है।

नेत्र में चिह्न के योगः—

पप्यः पुरोभागगते कुजे नुश्छायोनदृक् स्याद् दृशि कोविदे ऽङ्कः।
हेलेरधःस्थानगते ऽसृजिज्ञे दृश्यङ्कभेतीति भणन्ति केचित् ॥ १८८ ॥

सूर्य से यदि अग्रिम भाव में मङ्गल हो तो मनुष्य की कान्तिरहित दृष्टि होती है। यदि सूर्य से अग्रिम भाव में बुध हो तो मनुष्य की आँख में चिह्न (पुष्प) होता है। एवं सूर्य से अधःस्थान अर्थात् पिछले भाव में भौम वा बुध हो तो नेत्र में चिह्न होता है। इस प्रकार कोई आचार्य्य कहते हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

एकांशके भौमभपौ भवेतां चेल्लक्षणं लोचनयोर्लपन्ति ।
चक्षुर्द्वये ऽङ्को मलिनैरुपेते ऽदृश्यार्द्ध इन्दौ क्रिमिरिप्रभौ वा ॥ १८९ ॥

एक अंश में मङ्गल तथा चन्द्रमा हों तो नेत्र में चिह्न (बिन्दु) होता है। अदृश्यार्द्ध में पाप युक्त चन्द्रमा वा पाप युक्त षष्ठेश हो तो दोनों नेत्रों में चिह्न होता है।

नेत्र प्रमाद तथा नेत्रान्तरक्त योगः—

न साधुदृष्टौ व्ययगौ सिताक्षिपौ नेत्रप्रमादो भगभौमयुक्तयोः ।
विलोचनागारपयोः प्रदृष्टयोस्ताभ्याञ्जनुष्मान्नयनान्तरक्तकः ॥ १९० ॥

व्ययमें शुक्र तथा नेत्रांश हों और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो नेत्रों में प्रमाद होता है। नेत्रस्थान के स्वामी यदि सूर्य तथा मङ्गल से युक्त वा दृष्ट हों तो नेत्रों में रक्तता (ललाई) होती है।

नेत्ररोग के योगः—

चक्षुर्नाथे काव्यतो दुष्टगे वा कोशाधीशे भार्गवेणान्विते वा ।
नेत्रेशाने मान्दिमन्दारयुक्ते वेर्ग्रेर्नेत्रे वीक्षिते पङ्गुना वा ॥ १९१ ॥
सोग्रे ऽघभे नेत्रपभागपे ऽथ सद्दृष्टे ऽर्थनाथे सखले ऽङ्गपे ऽथ वा ।
विश्वम्भराजे शयने घनाश्रिते ऽथाब्जे ऽरिपे वक्रभ उद्गमाश्रिते ॥ १९२ ॥
विलग्नपो वित्कुजभस्थ आभ्यां समीक्षितः सन्नयनामयी ना ।
वामे ऽम्बके रुक् पुरपञ्चतेशौ प्रत्यर्थिगौ भेरुजि दक्षिणे रुक् ॥ १९३ ॥

शुक्र से त्रिकस्थान में नेत्रेश हों तो (१) द्वितीयेश यदि शुक्र से युक्त हो तो (२) द्वितीयेश यदि गुलिक, शनि तथा राहु से युक्त हो तो (३) नेत्रस्थान में पापग्रह हों और वे शनि से दृष्ट हों तो (४) द्वितीयेश यदि शुभग्रह से दृष्ट हो और लग्नेश पापग्रह से युक्त हो तो (५) लग्नगत मङ्गल शयनावस्था में हो तो (६) षष्ठेश चन्द्रमा यदि लग्नगत विषमोदय राशि में हो तो (७) लग्न का स्वामी बुध तथा भौम की राशि में हो एवं बुध वा भौम से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष नेत्ररोग वाला होता है। षष्ठ में लग्नेश तथा अष्टमेश हों तो वाम नेत्र रोग होता है षष्ठ में शुक्र हो तो दक्षिण नेत्र में रोग होता है।

तिग्मद्युतौ लोहितदीधितौ वा चक्षुर्गृहेशे मृदुमान्दिदृष्टे ।
उष्णेन पित्तेन च कासजन्यैस्तथा प्रमादैर्नयनामयः स्यात् ॥ १९४ ॥

द्वितीयेश वा व्ययेश सूर्य हो वा भौम हो और वह शनि तथा गुलिक से दृष्ट हो तो उष्णता, पित्त, कासजन्यरोग वा प्रमाद से नेत्र रोग होता है।

दुःस्थे ऽक्षीशे सद्युते ऽव्याजरोगै रोगं पुंसो नेत्रयोरादिशेद्वा ।
पञ्चत्वे ऽङ्गे पामरालोकिते ऽच्छे पीडा वाच्या चक्षुषोरश्रुपातात् ॥ १९५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

त्रिकमें नेत्रेश हों और वे शुभ ग्रह से युक्त हों तो अव्याज रोग से पुरुष के नेत्र में रोग को कहे । अष्टम वा लग्न में शुक्र हो और वह पापग्रह से दृष्ट हो तो अश्रुपात (आंसू गिरने) से नेत्रों में पीडा कहनी चाहिए ।

सोमेऽवमाने किमु सोमवैरिणि कृष्णे त्रिकोणे तरणौ लयास्तगे ।
यद्वेह तैर्नीचसपत्नभागगैर्मूढेऽक्षिरोगी किमु दन्तरोगवान् ॥ १९६ ॥

व्यय में चन्द्रमा वा राहु हो, त्रिकोण में शनि और अष्टम वा सप्तम में सूर्य हो अथवा वे पूर्वोक्त ग्रह नीचांश वा शत्रुनवांश में वा अस्तंगत हों तो नेत्र रोग वाला वा दन्तरोग वाला होता है ।

निशान्ध योगः—

त्रिके सिते सोमयुते किमिन्दुभास्वत्समेते गिरि नैशिकान्धः ।
आद्येऽक्षिपे सेन्दुसिते निशान्धः स्वोच्चे सचारौ न तथा भवेत्सः ॥ १९७ ॥

त्रिक में शुक्र हो और वह चन्द्रमा से युक्त हो तो (१) धन में चन्द्र तथा सूर्य हो तो निशान्ध होता है । लग्न में नेत्रेश हो और वे चन्द्र तथा शुक्र से युक्त हो तो निशान्ध होता है । यदि लग्नगत नेत्रेश स्वोच्चराशि में वा शुभ ग्रह से युक्त हो तो निशांध नहीं होता है ।

तुलाधरे तनौ रवौ निशान्धता हरौ तनौ ।
इनेऽक्षिरोगयुक् तनौ क्रिये भगे च मध्यदृक् ॥ १९८ ॥

लग्न में तुलाराशि गत सूर्य हो तो निशान्ध होता है । लग्न में सिंहराशि गत सूर्य हो तो नेत्र रोगी होता है । एवं लग्न में मेष राशि गत सूर्य हो तो मध्यम नेत्रवाला होता है ।

काण नेत्र योगः—

रोगेशारौ कल्पगौ नेज्यकाव्यदृष्टौ यद्वा पश्यतो नात्मगेहे ।
दृष्टीशानौ साशुभौ शौर्य्ययुक्ते चक्षुःस्थाने जायते ऽक्ष्णा स काणः ॥ १९९ ॥

लग्न में षष्ठेश तथा मङ्गल हो और वे गुरु तथा शुक्र से दृष्ट न हों तो (१) नेत्रेश नेत्रस्थान को न देखते हों और वे पापग्रहों से युक्त हो एवं नेत्र स्थान बलवान् हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष आँख से काना होता है अर्थात् एकनेत्र वाला होता है ।

कुलीरगेणांशुमताऽऽवनेयो वधूभगो वा विधुनेक्षितः सः ।
कण्ठीरवस्थेन तपोगृहेशे मृगाजलेयालिगते सः काणः ॥ २०० ॥

सप्तम में मङ्गल हो और वह कर्क राशि गत सूर्य से अथवा सिंह राशिगत चन्द्रमा से दृष्ट हो एवं मकर मेष सिंह वा वृश्चिक में नवमेश होतो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य काना होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

होरास्थमिन्दुं किमु लोहिताङ्गं पश्येद्गुरुश्चेदुशना स काणः ।
कुजेक्षिते कर्किणि कामगेऽर्के वारेक्षितेऽस्ते मृगराज इन्दौ ॥ २०१ ॥
किमर्थपोऽस्तङ्गत उग्रयुक्तः पश्येन्न पोष्यं कपिपङ्गुपातैः ।
स्वगैः किमन्त्येऽगुभगौ व्ययस्य नाथेऽस्तगे संयुत आर्किणा वा ॥ २०२ ॥
भूसूनुनाथास्तमिते कवौ किमु कुजेऽङ्गजेऽथेनहिमांशुदृष्टयोः ।
इलाकुमारास्फुजितोर्यदा क्रमात्स्वान्त्यस्थयोः काण उदीर्य्यते तदा ॥ २०३ ॥

लग्न में चन्द्रमा वा मङ्गल हो और उसको गुरु वा शुक्र देखाता होतो (१) सप्तम में कर्क राशिगत सूर्य हो और वह मङ्गल से दृष्ट होतो (२) सप्तम में सिंह राशिगत चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से दृष्ट होतो (१) धन में सूर्य, शनि तथा राहु हों एवं धनेश अस्तंगत हो, पापयुक्त हो और धनस्थान को न देखता होतो (४) व्यय में राहु तथा सूर्य हों और व्ययेश अस्तंगत होकर शनि से वा मङ्गल से दृष्ट होतो (५) पञ्चम में अस्तंगत शुक्र वा भौम होतो (६) धन में भौम और व्यय में शुक्र हो और वे सूर्य तथा चन्द्रमा से दृष्ट होंतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष काना होता है ।

शुक्लेऽह्नि सासृजि विधावर्थे भव्यदृष्टि-
हीनेऽयने दहनगौ निशि नीलपक्षे ।
सोपाविभावसितरोचिषि वामकाणो
भूर्ध्वे दिने दिनकरे दहनेक्ष्यमाणे ॥ २०४ ॥

दक्षाक्षिकाणोऽमलदृग्विमुक्ते पापक्षिते ब्जे रिपुपे तथैव ।
भूजेऽरिपेऽङ्गे न शुभेक्षितेऽसन्निरीक्षिते पुष्पयुतेऽत्र काणः ॥ २०५ ॥

शुक्ल पक्ष में दिनका जन्म हो और चन्द्रमा मङ्गल से युक्त होतो (१) कृष्ण पक्ष में रात्रिका जन्म हो तथा नवम में सूर्य हो और वह शुभग्रह से दृष्ट न हो एवं शनि चन्द्रमा से युक्त होतो वाम नेत्र से काना होता है । दिनका जन्म हो तथा भूर्ध्व (चतुर्थ के भोग्यांश से दशम के भुक्तांश) में सूर्य हो और वह पाप दृष्ट होतो दक्षिण नेत्र से काना होता है । षष्ठेश चन्द्रमा यदि पापग्रह से दृष्ट हो और शुभग्रह से दृष्ट न होता भी दक्षिण नेत्र से काना होता है । लग्न में षष्ठेश मङ्गल हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो एवं पापग्रह से दृष्ट होतो पुष्प (फूल) युक्त काना होता है ।

साच्छे कलेशे चरमे स्मरे वा काणो भवेद्वामविलोचनेन ।
काणोऽक्षियातः कलुषेण युक्तः करोति काणं किमु मन्दनेत्रम् ॥ २०६ ॥

व्यय वा सप्तम में चन्द्रमा हो और वह शुक्र से युक्त होतो वामनेत्र से काना होता है । नेत्र (२।१२) स्थान में शुक्र हो और वह पापग्रह से युक्त होतो काना वा मन्द नेत्र वाला होता है ।

ज्यो ..७७...

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दम्पति के काण योगः—

अरात्यपाययातयोर्विभावरीशभास्वतोः ।
स्त्रिया सहैकलोचनजनिं बुधो विनिर्दिशेत् ॥ २७७ ॥

सूर्य तथा चन्द्रमा इन दोनों में से एक व्ययस्थान में हो और दूसरा रिपुस्थान में होतो स्त्री तथा पुरुष दोनों काने होते हैं।

अन्ध योगः—

गदान्त्ययोर्गर्हितलोकितेऽब्जे नीचेऽथ मूढे हरिजे कुजे वा ।
केन्द्रेऽम्बुभेऽन्धांश इनाब्जयोर्वा निम्ने यमेऽर्कग्रहणे विमूढे ॥ २०८ ॥
किं क्षीण इन्दौ धनुषीनजेन दृष्टे न विप्रग्रहलोकिते वा ।
कृशे मृगाङ्के मृदुसंयुतेऽर्थे नालोकिते सद्युचरैरथार्कात् ॥ २०९ ॥
कलेशि कोशे कलुषार्दिते वा खेऽब्जे न सालोकित उग्रदृष्टे ।
किं ग्लावि नक्तं तपनेऽह्नि चापाद्यांशेऽन्धभागे मृदुनेक्षिते वा ॥ २१० ॥
सार्थाकपत्योः पुरपाच्छयोस्त्रिके वार्थे विधौ साघसितेऽथ लोहिते ।
केन्द्रेऽघभेऽथान्त्य इनाब्जयोः शुभैर्नो दृष्टयोर्वा यमभे विभावसौ ॥ २११ ॥
कामेऽथ काये कलशे कुजेऽथ वा सौख्याश्रिते सूनुसुतेऽसदीक्षिते ।
अथाङ्गतोऽच्छादुत पन्नगे मतौ मार्त्ताण्डदृष्टे तत इन्दुभास्वतोः । २१२ ॥
केन्द्रेऽनुजेऽथो सहरौ पुरे यमे यद्वा सितेऽथाशुभयोर्हिते चिति ।
दृष्टे न रम्यैस्त्रिकगे तमीपतौ किं वाऽवसाने ऽसितगौ सितद्युतौ ॥ २१३ ॥
कोशालये घर्म्मघृणौ रणे ततो यथा तथा मन्दकुजेन्दुतापनाः ।
स्वान्त्यारिशान्तेषु समाश्रिता यदा वीर्य्यान्विताकाशगदोषहेतुभिः ॥ २१४ ॥
स्यादन्धता पावकलोकितैः शुभैस्त्रिकेऽथ कर्केऽब्जयमौ न साधुभिः ।
दृष्टौ किमिन्दौ द्विपि नोत्तमेक्षितेऽरिभे सपङ्के मलिनेक्षिते तथा ॥ २१५ ॥

व्यय वा षष्ठ में नीचराशिगत चन्द्रमा हो और वह पापग्रह से दृष्ट होतो (१) लग्न में अस्तंगत मङ्गल होतो होतो (२) केन्द्र में जल राशिगत सूर्य तथा चन्द्रमा हों और वे अन्धांशों में होंतो (३) सूर्य ग्रहण के दिन का जन्म हो और नीचराशि में अस्तंगत शनि होतो (४) धनु में क्षीण चन्द्रमा हो और वह शनि से दृष्ट हो एवं गुरु शुक्र से दृष्ट न होतो (५) धनु में क्षीण चन्द्रमा हो और वह शनि से युक्त हो एवं शुभग्रह से दृष्ट न होतो (६) सूर्य से द्वितीय स्थान में चन्द्रमा हो और वह पापाक्रान्त होतो (७) दशम में चन्द्रमा हो और यह शुभग्रह से दृष्ट न हो एवं पापग्रह से दृष्ट होतो (८) रात्रि के जन्म में चन्द्रमा और दिन के जन्म में सूर्य यदि धनु के प्रथमांश तथा अन्धांश में हो एवं शनि से दृष्ट होतो (९) त्रिक में लग्नेश तथा शुक्र हों और वे व्ययेश तथा द्वितीयेश से युक्त होंतो (१०) धन में चन्द्रमा हो और वह शुक्र तथा पापग्रह से युक्त होतो (११) केन्द्र में पापराशिगत

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मङ्गल होतो (१२) व्यय में सूर्य तथा चन्द्रमा हों और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न होंतो (१३) सप्तम में मकर गत वा कुम्भ गत सूर्य होतो (१४) लग्न में कुम्भ गत मङ्गल होतो (१५) मुख में शनि हो और वह पापदृष्ट होतो (१६) लग्न से वा शुक्र से पञ्चम में राहु हो और वह सूर्य से दृष्ट होतो (१७) केन्द्र वा तृतीय में चन्द्र तथा सूर्य होंतो (१८)लग्न में सिंह राशि हो और उस में शनि वा शुक्र होतो (१९) चतुर्थ तथा पञ्चम में दो पापग्रह हों और त्रिक में चन्द्रमा हो और शुभग्रह से दृष्ट न होतो (२०) व्यय में शनि धन में चन्द्रमा तथा अष्टम में सूर्य होतो (२१) शनि मङ्गल, चन्द्र तथा सूर्य ये चारों यदि द्वितीय, द्वादश, षष्ठ और अष्टम इन चारों स्थानों में जैसे तैसे स्थित हों एवं उन चारों के मध्य में जो ग्रह अधिक बली हो उस के पित्त प्रभृति दोष के कारण मनुष्यों को अन्धता होती है। त्रिक में शुभग्रह हों और पापग्रहों से दृष्ट होंतो (१) कर्क में चन्द्र तथा शनि हों और वे शुभग्रहोंसे दृष्ट न होंतो (२) षष्ठ में शत्रुराशिगत चन्द्रमाहो और वह पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष अन्धा होता है।

क्रूरान्तराले ऽर्कविधूदयत्रये किमङ्गपे ऽर्के खलपीडिते ऽङ्गगे ।
वारावधे ऽङ्गे रुधिरे ऽथ वक्रिते ऽरीशे विधुर्ध्वे पुरुषो ऽन्धतां व्रजेत् ॥ २१६ ॥

सूर्य, चन्द्र तथा लग्न ये तीनों पाप ग्रहों के अन्तराल में हों तो (१) लग्न में सिंह राशि हो और उस में पाप ग्रह से पीडित सूर्य हो तो (२) षष्ठ में पाप ग्रह हो और लग्न में मङ्गल हो तो (३) षष्ठेश वक्री हो और व्यय में चन्द्रमा हो तो उक्त योगों में पुरुष अन्धता को प्राप्त होता है।

देहे खले तनुगृहेश्यशुभोपयाते
रम्येतरान्तरगयो रजनीशरव्योः ।
वेन्द्वर्कयोर्मनसिजे ऽसृजि शीतलांशोः
पृष्ठोदिते किमुत रक्तकरे नरो ऽन्धः ॥ २१७ ॥

लग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश अशुभ स्थान में हो वा अशुभ ग्रह से युक्त हो एवं पाप ग्रहों के अन्तराल में चन्द्र तथा सूर्य हों तो (१) चन्द्रमा वा सूर्य से सप्तम में मङ्गल हो अथवा चन्द्रमा से 'मङ्गल' पृष्ठोदित (पश्चात् उदय) हो तो उक्त योगों में मनुष्य अन्धा होता है।

स्वाङ्गास्तधीनियतिपैस्त्रिकगैः शरीर-
सम्बन्धिनीन्द्रिरिपुमंत्रिणि वार्थपे ऽस्त्रे ।
रिःफारिगे मिहिरजे मरणे रवीन्द्वो-
र्वाब्जे त्रिके ऽसितयुते ऽसृजि नष्टनेत्रः ॥ २१८ ॥

धन, लग्न, सप्तम, पञ्चम तथा नवम इन पाँच स्थानों के स्वामी यदि त्रिक स्थान में हों और लग्न में शुक्र का सम्बन्ध हो तो (१) धनेश मङ्गल व्यय वा षष्ठ में हो और अष्टम में सूर्य तथा चन्द्र हों तो (२) त्रिक में चन्द्रमा हो और मङ्गल शनि से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष अन्धा होता है।

नभोमणौनिमीलने ऽहितोपगे हिमद्युतौ ।
कुटुम्बगे कुनन्दने व्यये यमे ऽन्धतां लभेत् ॥ २१९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अष्टम में सूर्य षष्ठ में चन्द्रमा, धन में मङ्गल और व्यय में शनि हो तो मनुष्य अन्धता को प्राप्त होता है ।

विलोचनद्वये खलैः प्रपीडिते तदीशयोर्विनष्टयोर्बलोनयोः ।
विलोकयन्ति पामरार्दिताः शुभा विलोचनद्वयं तदान्धको भवेत् ॥ २२० ॥

दोनों नेत्र स्थान (२।१२) पाप ग्रहों से पीडित हों और दोनों नेत्र स्थानों के स्वामी निर्बल होकर विनष्ट हों एवं नेत्र स्थानों को पापपीडित शुभ ग्रह देखते हों तो मनुष्य अन्धा होता है ।

पतङ्गभूपिङ्गलमङ्गलोरगैः समाश्रितैश्चेद्यदि लोचनद्वये ।
नष्टोऽक्षिपोऽरिष्टगृहे न लोचनं पदं स्वकीयं नहि वीक्षतेऽन्धकः ॥ २२१ ॥

यदि दोनों नेत्र (२।१२) स्थानों में शनि, सूर्य, मङ्गल तथा राहु हों एवं नेत्र स्थान का स्वामी विनष्ट होकर त्रिकस्थान में हो और अपने नेत्र स्थान को न देखता हो तो मनुष्य अन्धा होता है ।

यस्याङ्गिनो नयनभे विबलाघयुक्ते
यद्वा प्रदीप्तबलसंयुतगर्हितेन ।
आलोकिते जनुषि मन्दविलोचनो वा
पाषाणकाष्ठजनितो नयने प्रहारः ॥ २२२ ॥

जिस के नेत्र (द्वितीय वा द्वादश) स्थान में निर्बल पाप ग्रह हो अथवा बलवान् अधिक रश्मिवाले पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य मन्द दृष्टि वा उसके नेत्र में पाषाण (पत्थर) वा काष्ठ से प्रहार (घाव) होता है ।

हेतुसहित अन्ध योगः—

सेज्ये सोमेऽरिष्टगे सेकतोऽन्धः कामादन्धो दुष्टगे साच्छसोमे ।
पातादन्धः सारसोमे त्रिकस्थे दुःस्थे सज्ञे शीतगौ शास्त्रतोऽन्धः ॥ २२३ ॥

त्रिक में गुरु से युक्त चन्द्रमा हों तो सेक से अन्धता, त्रिक में शुक्र से युक्त चन्द्रमा हो तो काम से अन्धता, त्रिक में मङ्गल से युक्त चन्द्रमा हो तो पात (गिरने वा सन्निपात) से अन्धता एवं त्रिक में बुध से युक्त चन्द्रमा हो तो शास्त्र से अन्धता होती है ।

सुधामरीचावुपतापभावसम्पालके वक्रितभेऽङ्गमाप्ते ।
विलोक्यमाने तपनात्मजेन तदाऽन्धता श्लेष्मकदोषतः स्यात् ॥ २२४ ॥

लग्न में विषमोदयराशि गत षष्ठेश चन्द्रमा हो और वह शनि से दृष्ट हो तो श्लेष्म (कफ) के प्रकोप से अन्धता होती है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मधाजे मान्द्यपे मूर्त्तौ मलिनैर्लोकितेऽन्धता ।
नीरस्रावेण नारीस्थैः पङ्कैर्नेमेर्विवर्णता ॥ २२५ ॥

लग्न में षष्ठेश शुक्र हो और वह पाप दृष्ट हो तो जलस्राव (अश्रुपात) से अन्धता होती है। चन्द्रमा से सप्तम में पाप ग्रह हो तो नेत्रों में विवर्णता होती है।

जन्मान्ध योगः--

त्रिकस्थयोः सार्कभयोः कलेवरदृङ्नाथयोर्वा भभगान्विते ऽङ्गपे ।
त्रिके ऽथ कोणे कुजकोणयो रवौ ग्रस्ते ऽगुनाङ्गे जननान्धतां व्रजेत् ॥ २२६ ॥

त्रिक में नेत्रेश तथा लग्नेश हों और वे सूर्य तथा शुक्र से युक्त हों तो (१) त्रिक में लग्नेश हो और वह शुक्र तथा सूर्य से युक्त हो तो (२) लग्न में राहु से ग्रस्त सूर्य हो एवं मङ्गल तथा शनि त्रिकोण में हों तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य जन्मान्ध होता है।

पुत्रादियों का अन्ध योगः--

ताताम्बिकादारकदारसोदरभावाधिपैः सेनसुधाङ्गभार्गवैः ।
त्रिकोपगैर्नामललोकितान्वितैस्तेषां वदन्त्यन्धकतां विपश्चितः ॥ २२७ ॥

पिता, माता, पुत्र, स्त्री तथा भ्राता इन भावों के स्वामी यदि सूर्य, चन्द्र, तथा शुक्र से युक्त हों एवं त्रिकस्थान में हों और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो पिता प्रभृतियों को अन्धता को कहते हैं।

नेत्रनाश के योगः —

आग्नेयदृष्टे ऽत्रिगुते ऽहितस्थे युक्ते त्रिभिः पावकखेचरैर्वा ।
पञ्चानने ऽङ्गे सहिते हरिभ्यां यमारदृष्टे सति नेत्रनाशः ॥ २२८ ॥

षष्ठ में पाप दृष्ट चन्द्रमा हो और वह तीन पाप ग्रहों से युक्त हो तो (१) लग्न में सिंहराशिगत सूर्य चन्द्रमा हो और वे शनि तथा मङ्गल से दृष्ट हो तो नेत्रों का नाश होता है।

वासरे ऽन्धलवगे प्रभाकरे पर्वरौ कुतनये सपर्वरौ ।
सोष्णदीधितिभवे मघाभवे यस्य जन्मनि तदक्षि नाशनम् ॥ २२९ ॥

दिन का जन्म हो, सूर्य तथा चन्द्र अन्धांश में हो, मङ्गल चन्द्रमा से युक्त हो और शुक्र शनि से युक्त हो तो नेत्रों का नाश होता है।

कलेवरेशेन युते ऽर्थनाथे त्रिकाश्रिते लोचनयोः क्षतिः स्यात् ।
निधानधामाधिपतौ त्रिकस्थे तथा विधे ऽङ्गेश्यपि नेत्रनाशः ॥ २३० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

त्रिक में द्वितीयेश हो और वह लग्नेश से युक्त हो तो नेत्रों की हानि होती है। त्रिक में द्वितीयेश हो और त्रिक में लग्नेश भी हो तो नेत्रों का नाश होता है।

वाम नेत्र नाश योगः—

हिनस्ति वामं नयनं व्यये कुजस्ततः समेते कविना कलावति ।
कन्दर्पगे वाकनिकेतसंश्रिते विलोचनं वाममुपैति नाशताम् ॥ २३१ ॥

व्यय में भौम हो तो वाम नेत्र का नाश और सप्तम वा व्यय में चन्द्रमा हो और वह शुक्र से युक्त हो तो भी वाम नेत्र का नाश होता है।

द्वादशे दिनकरात्मजे यदा दक्षिणं नयनमेति नाशताम् ।
पञ्चतोदयपयोर्गदस्थयोर्दक्षिणे भवति लोचने गदः ॥ २३२ ॥

व्यय में शनि हो तो दक्षिण नेत्र नाश को प्राप्त होता है। अष्टमेश तथा लग्नेश ये दोनों षष्ठ में हों तो दक्षिण नेत्र में रोग होता है।

दिनप्रणीन्दू युगपत्पृथक्स्थितौ झषे व्यये दक्षिणवामलोचने ।
पुंसो हरेतामसितेक्षितान्वितोऽस्तेऽङ्गे भगो दक्षिणमीक्षणं हरेत् ॥ २३३ ॥

सूर्य तथा चन्द्र ये दोनों मीन में वा व्यय में एक साथ हों वा पृथक पृथक हों तो क्रम से दक्षिण और वाम नेत्र का नाश अर्थात् सूर्य से दक्षिण और चन्द्रमा से वाम नेत्र का नाश होता है। सप्तम वा लग्न में सूर्य हो और वह शनि से दृष्ट वा युक्त हो तो दक्षिण नेत्र का नाश करता है।

स एव वामाक्षि निहन्त्यसृक्तमःसमन्वितोऽथान्त्यगयोरिनाब्जयोः ।
शान्ते सपत्ने कलुषा विलोचनं हरन्ति वामं नयनं च दक्षिणम् ॥ २३४ ॥

सप्तम वा लग्न में सूर्य हो और वह मङ्गल तथा राहु से युक्त हो तो वाम नेत्र का नाश होता है। व्यय में सूर्य तथा चन्द्रमा हों एवं अष्टम तथा षष्ठ में पापग्रह हों तो क्रम से वाम तथा दक्षिण नेत्र का नाश करते हैं।

राजा के क्रोध के कारण नेत्रोत्पाटन योगः—

खारीशौ पुरगौ सदृग्दयितभौ यद्वाधरांशोपगौ
साग्नेयौ किमरातिराज्यपयुतर्क्षांशाधिपौ दुष्टगौ ।
कल्पेशेन युतौ ततः सकविभिः कोशारिकर्मेश्वरै-
र्होरास्थैर्नृपकोपतो नयनयोरुत्पाटनं कथ्यते ॥ २३५ ॥

लग्न में दशमेश तथा षष्ठेश हों और वे नेत्रेश तथा शुक्र से युक्त हों तो (१) अथवा लग्न में दशमेश षष्ठेश हों और वे पाप ग्रहों से युक्त होकर नीचांशक में हों तो (२) षष्ठेश और राज्येश की आक्रान्त राशि तथा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नवांश के स्वामी त्रिक में और वे लग्नेश से युक्त हों तो (३) लग्न में द्वितीय, षष्ठ तथा दशम के स्वामी हों और वे शुक्र से युक्त हों तो उक्त योगों में राजा के कोप के कारण नेत्र उखाड़े जाते हैं।

वाणी के शुभाशुभ योगः—

सोर्ज्ञैरसृक्पाण्डितराजभिर्मिथो दृष्टान्वितैर्वाक्स्फुरतिः स्वगाः खलाः।
कुर्वन्ति जातं बहुभाषिणं यमः कुरङ्गभस्थः कुरुते ऽपभाषिणम् ॥ २३६ ॥

भौम, बुध तथा चन्द्र ये तीनों बली हों और वे परस्परदेखते हों वा युक्त हों तो स्फुरति वाणी वाला होता है। धन में पाप ग्रह हों तो बहुत बोलने वाला होता है। मकर में शनि हो तो अप वचन बोलने वाला होता है।

वाक्सिद्धिरर्थे शुभवर्गयुक्ते ऽथो सत्त्वहीने विदि दुष्टदृष्टे।
कोशे ऽथ वा वाग्भवनेश्यसौम्यैर्निरीक्षिते धीरतया विमुक्ते ॥ २३७ ॥

जनुष्मतां वाक्चलनं निरुक्तं वीर्य्योनयोर्वाग्गृहपोडुपत्योः।
आग्नेयभागोपगयोर्नराणां वातार्दिता वाक् कथिता कृतीन्द्रैः ॥ २३८ ॥

धन में शुभग्रह का वर्ग होतो मनुष्य को वाक्सिद्धि होती है। धन में निर्बल बुध हो और वह पाप से दृष्ट होतो अथवा निर्बल द्वितीयेश यदि पापग्रहों से दृष्ट हो तो चञ्चलवाणी वाला होता है। द्वितीयेश तथा चन्द्रमा ये दोनों निर्बल हों तथा कुरांशक में होतो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष की वाणी वात से पीड़ित होती है।

कफवाक् तथा उच्चार योगः—

सौरिज्ञयोः समदृशा कफवाग् जनस्य
पश्येत्कुजो मददृशा तुहिनांशुसूनुम्।
शीतद्युतिः समदृशा रुधिरं प्रपश्ये-
दुच्चारयोग उदितो द्रकवेधसत्यैः ॥ २३९ ॥

शनि तथा बुध की परस्पर समान दृष्टि होतो कफवाणी वाला होता है। सप्तम दृष्टि से बुध को मङ्गल देखता हो और सम दृष्टि से मङ्गल को चन्द्रमा देखता होतो आचार्योंने उच्चार योग कहा है।

अस्फुटोक्ति प्रभृति योगः—

वित्ते वधूभवनपादनिले ऽस्फुटोक्ति-
र्मन्देक्षिते मृदुगृहे विदि गद्गदोक्तिः।
स्यादङ्गिनः परुषवाङ् मृदुराजयोगे-
ऽघांशे ऽबले विभवभर्त्तरि लल्लरोक्तिः ॥ २४० ॥

सप्तमेश से द्वितीय में केतु होतो अस्पष्ट वाणी वाला होता है। मकर वा कुम्भ में बुध हो और वह शनि दृष्ट होतो गद्गद वाला होता है। शनि तथा चन्द्र का योग होतो कठोर वचन वाला होता है पापांश में निर्बल द्वितीयेश होतो लल्लरोक्तिवाला होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पोष्ये सपङ्के मलिनेक्षिते वा खलांशके ऽर्थे कलुषान्विते वा ।
आज्ञानिकेते ऽमरवैरिवन्द्ये परिज्वपुत्रे पथि लल्लरोक्तिः ॥ २४१ ॥

धनभाव यदि पापयुक्त तथा पापदृष्ट होतो (१) धन में पापांश हो और वह पापयुक्त होतो (२) दशम में शुक्र और नवम में बुध होतो उक्त योगों में लल्लरोक्ति वाला होता है ।

गुङ्ग (मूक) स्वर के योगः—

वैरीशे विदि कल्मषाम्बरचरैर्दृष्टे तनौ वेन्दुजे-
ऽर्काधः स्थे शशिनेक्षिते ऽनिमिषभे कीटे कुलीरे ऽथ वा ।
वर्द्धिष्णुद्विजराज आरसहिते ऽङ्गे ऽथोग्रदृष्टे ऽरिपे
शीतांशोस्तनये ऽलिकर्क्यनिमिषे गुङ्गस्वरं प्राप्नुयात् ॥ २४२ ॥

लग्न में षष्ठेश बुध हो और वह पापदृष्ट होतो (१) मीन वृश्चिक वा कर्कराशि गत बुध सूर्य से नीचे हो और वह चन्द्रमा से दृष्ट होतो (२) लग्न में शुक्ल पक्षका चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से दृष्ट होतो (३) वृश्चिक कर्क वा मीन में षष्ठेश बुध हो और वह पापदृष्ट होतो उक्त योगों में मनुष्य गुङ्गस्वर होता है ।

मूक (गुङ्गा) योगः—

सरस्वतीशे ससरस्वतीशे दुःस्थे ऽथ चित्ते चरखेट आरे ।
अके कपे ऽरौ किमरीशगुर्व्वेराद्ये ऽथ वेन्दौ सयमे ऽघराशौ ॥ २४३ ॥
वक्रार्कदृष्टे ऽथ पुरे ऽरिपेन्दुजौ वा भान्त्यगैः कर्कझषालिगैः खलैः ।
वारीश्वरे ऽघैर्निखिलेक्षयेक्षिते वोग्रेक्षिते ऽब्जे सवि मूक उद्भवः ॥ २४४ ॥

त्रिक में धनेश हो और वह गुरु से युक्त होतो (१) चतुर्थ में चर (अधिक गतिवाला) ग्रह हो, व्यय में भौम और षष्ठ में चतुर्थेश होतो (२) लग्न में षष्ठेश तथा गुरु होतो (३) पापराशि में शनियुक्त चन्द्रमा हो और वह मङ्गल तथा सूर्य दृष्ट होतो (४) लग्न में षष्ठेश तथा बुध होतो (५) राशि के अन्त्य अंश में कर्क मीन वा वृश्चिक राशिगत पापग्रह होतो (६) षष्ठेश को पापग्रह पूर्ण दृष्टि से देखते होतो (७) वृष में चन्द्रमा हो और वह पापदृष्ट होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष मूक (गुङ्गा) होता है ।

धने द्वितीये त्रिभागे सपावके दैत्यपूज्ये ।
अवाक् तृतीये दृगाणे भवेत्तदानीं स्खलद्वीः ॥ २४५ ॥

धन में द्वितीय द्रेष्काणगत शुक्र हो और वह पापयुक्त होतोभी मूक होता है । धन में तृतीय द्रेष्काणगत शुक्र हो और वह पापयुक्त होतो स्खलद्वाणी वाला होता है ।

वाग्मी योगः—

स्वे कोणकव्योर्यमभे पतङ्गे ऽथाब्जे पदे ऽस्ते रविजे ऽथ राज्ये ।
दिवा मृगेन्द्रे निशि कर्किणि ज्ञे किं वाचि वागीशविदोः स वाग्मी ॥ २४६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन में शनि शुक्र हों और शनि की राशि में सूर्य हो तो (१) दशम में चन्द्रमा और सप्तम में शनि हो तो (२) दिन का जन्म हो, सिंह में बुध हो अथवा रात्रि का जन्म हो और कर्क में बुध हो तो (३) धन में गुरुबुध हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष वाग्मी (अच्छा बोलने वाला) होता है ।

केन्द्रेऽङ्गजाङ्के वसुपेऽथ तस्मिन् सपुंविहङ्गे शुभयुक्तदृष्टे ।
स्वोच्चेऽथ वागीशलवाधिनाथे स्वोच्चे सचारौ सति गोपुरांशे ॥ २४७ ॥
यद्वा गिरागारप उत्तमांशे सहोन्विते साधुखगैर्युते वा ।
पारावते पोष्यपतौ सपूज्ये यद्वा तदीशे सितसौम्ययुक्ते ॥ २४८ ॥
ऐरावतांशेऽर्थविभौ स्वभोच्चसुहृद्गृहेऽर्थो परमोच्चभागे ।
पोष्येशि पारावतभागयाते सकण्टके निर्जरराजपूज्ये ॥ २४९ ॥
किं भार्गवे पर्वरिपुत्रयुक्ते सिंहासने वोत्तमवर्गयाते ।
किं वा निलिम्पेश्वरपूजितांघ्रौ कल्याणभागे भव एषु वाग्मी ॥ २५० ॥

केन्द्र पञ्चम वा नवम में धनेश हो तो (१) उच्चराशिगत धनेश यदि पुरुषग्रह से युक्त एवं शुभ ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो (२) स्वोच्च राशि में तथा गोपुरांश में धनेश के नवांश का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह शुभग्रह से युक्त हो तो (३) उत्तमांश में बलवान् धनेश हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो (४) पारावतांश में धनेश हो और वह गुरु से युक्त हो तो (५) ऐरावतांश में धनेश की राशि का स्वामी हो और वह शुक्रबुध से युक्त हो एवं स्वोच्चराशि वा मित्रराशि में धनेश हो तो (६) केन्द्र में परमोच्चांशगत वा पारावतांशगत धनेश हो एवं सिंहासनांश वा वर्गोत्तमांश में गुरु वा शुक्र हो और वह बुध से युक्त हो तो (७) शुभांशक में गुरु हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष वाग्मी (उत्तम वक्ता) होता है ।

मुखरयोगः—

अनङ्गदृष्ट्या विबुधोऽङ्गगं सितं प्रेक्ष्य प्रकुर्य्यान्मुखरं तनूभृतम् ।
विराजमाने द्विजराजखेचरे कृशे त्रिके भूतनयान्विते तथा ॥ २५१ ॥

लग्न में शुक्र हो और उस को सप्तम दृष्टि से बुध देखता हो तो (१) त्रिक में क्षीण चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष मुखर (निन्दित मुख वा दुर्मुख वा अनर्गल बोलने वाला) होता है ।

जिह्वाघात के योगः—

कल्याणदृष्टैर्न खलैः कलत्रगैः किं बोधनत्रभवौ खलेक्षितौ ।
एकांशगौ वैकलवाश्रितौ खलौ वारातिपे ज्ञे रसनाविनाशनम् ॥ २५२ ॥

सप्तम में पाप ग्रह हों और वे शुभ दृष्ट न हों तो (१) एक अंश में बुध तथा शनि हों और वे पाप-दृष्ट हों तो (२) एक अंश में दो पाप ग्रह हों तो (३) षष्ठ स्थान का स्वामी बुध हो तो जिह्वानाश अर्थात् जिह्वा में दोष होता है ।

ज्यो. ...७८....

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिह्वारोगयोगः—

दुःस्थेऽर्थपेऽहिना युक्ते राहुयुक्तभपेन च ।
तत्पाके विधुभूभुक्तौ प्रवदेद्रसनामयम् ॥ २५३ ॥

त्रिक में धनेश हो और वह राहु तथा राहु की आक्रान्त राशि के स्वामी से युक्त हो तो उस की दशा में जब बुध की अन्तर्दशा आवे तब मनुष्य को जिह्वारोग कहे ।

प्रहसित मुखयोगः—

द्रविणदयित उच्चे कण्टकस्थानपाते
किमनिमिषभमाप्तौ राजहंसौ विधत्तः ।
प्रहसितवदनं नुः कण्टके कोशपाले
सगतमलखपान्थे शोभनास्यस्य जन्म ॥ २५४ ॥

केन्द्र में उच्च राशिगत धनेश हो तो (१) मीन में चन्द्र तथा सूर्य हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष प्रहसित मुख वाला होता है। (२) केन्द्र में धनेश हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो सौम्य मुख वाला होता है ।

स्वेशे स्वतुङ्गेश्वरवर्गसंस्थे दृष्टेऽमलैर्वा सुकृतेऽर्थयाते ।
तुङ्गादिवर्गे किमु साधिकारे वित्तेऽर्चिते वा विदि सौम्यवक्त्रः ॥ २५५ ॥

स्वोच्चराशि के स्वामी के वर्ग में धनेश हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो (१) धन में स्वोच्चादि वर्गगत शुभ ग्रह हो तो (२) धन में अधिकारयुक्त गुरु वा बुध हो तो सौम्य मुखवाला होता है ।

दुर्मुखयोगः—

सपावकेऽर्थे दुरितैरुपेते तन्नायके शात्रवनिम्नभस्थे ।
आहुर्बुधा दुर्मुखमर्थधाम्नि क्रूरेक्षितेऽमर्षमुखो मनुष्यः ॥ २५६ ॥

धन में पाप ग्रह हो और शत्रु वा नीच राशि गत धनेश यदि पापयुक्त हो तो दुर्मुख के जन्म को कहते । धनस्थान यदि पापग्रह से दृष्ट हो तो क्रोध मुखवाला होता है ।

दीर्घमुखयोगः—

सूतौ यस्य कुटुम्बे सोग्रव्योमखपान्थे ।
किं वा केतुसमेते दीर्घास्यो जनितः स्यात् ॥ २५७ ॥

जिस के जन्मसमय में धन में पापग्रह हो वा केतु हो तो उत्पन्न पुरुष दीर्घ मुखवाला होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मुखरोगयोगः—

शुभेऽशुभे वा निधिधामयातेऽभिघातिभस्थे रिपुणा युते वा ।
अथारभे पौरपतौ ज्ञदृष्टे वार्थे कुजार्क्योर्मुखरोगभाक् स्यात् ॥ २५८ ॥

धन में शुभ वा पाप ग्रह हो और वह शत्रु राशि में हो वा शत्रुग्रह से युक्त हो तो (१) मङ्गल की राशि में लग्नेश हो और वह बुध से दृष्ट हो तो (२) धनमें मङ्गल तथा शनि हों तो मुखरोगवाला होता है ।

मुखदुर्गन्धियोगः—

गदधवे विधुजे तनुगे विधौ किमु कवौ क्रियकार्किगतेऽथ वा ।
विधुकवी अविभे विबुधे द्विपि किमुदये गदिताऽऽननगन्धता ॥ २५९ ॥

लग्न में चन्द्रमा हो और षष्ठ स्थान का स्वामी बुध हो तो (१) मेष वा कर्क में शुक्र हो तो (२) मेष में चन्द्र तथा शुक्र हों और षष्ठ वा लग्न में बुध हो तो मुख में दुर्गन्ध होती है ।

दन्तरोगयोगः—

कोदण्डमेषोक्षतनौ खलेक्षितान्वितेऽथ गौरोरगयोर्धने ततः ।
याम्ये भमृद्वोर्मलिने क्षताश्रिते तदीश्वरे मन्मथगेऽथ मान्द्यपे ॥ २६० ॥
सर्वसहास्वनुगृहे शरीरपे व्योमोल्मुके प्राक्क्षितिजे समाश्रिते ।
तयोः सहस्रांशुसुतेन दृष्टयोस्तदा नराणां दशनामयो भवेत् ॥ २६१ ॥

लग्न में धनु मेष वा वृष राशि हो और वह पापग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो (१) लग्न में गुरु तथा राहु हों तो (२) अष्टम में शुक्र तथा शनि हों, षष्ठ में पापग्रह हो और सप्तम में षष्ठेश हो तो (३) मङ्गल की (१।८) राशि में षष्ठेश हो, लग्न में लग्नेश तथा मङ्गल हों और वे शनि से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य दन्तरोगवाला होता है ।

धनधवे सखले सविपक्षपे रदगदी जनितो जनिमान्मतः ।
फणिपतावुत मृत्युसुतेऽरिगे रदरुजा किमु रुग् दशनच्छदे ॥ २६२ ॥

पापयुक्त धनेश यदि षष्ठेश से युक्त हो तो दन्तरोगी होता है । षष्ठ में राहु वा केतु हो तो दन्तरोग वा ओष्ठों में रोग होता है ।

अङ्गेऽङ्गजेऽगौ दशनामयः स्यात्किं दन्तुरो दारविभोर्धनेऽहौ ।
स्यात्स्थूलदन्तो द्युनगैरसौम्यैर्वेनेन्दुमन्दैर्दशनाभिघातः ॥ २६३ ॥

लग्न वा पञ्चम में राहु हो तो दन्तरोग वा दन्तुर (दान्ती) होता है । सप्तमेश से द्वितीय में राहु हो तो स्थूल दन्त (मोटे दान्त) वाला होता है । सप्तम में पापग्रह अथवा सूर्य, चन्द्र तथा शनि हों तो दान्तों का पतन होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सपन्नगे पोष्यपतौ त्रिकस्थे भुजङ्गमक्रान्तभ पान्विते वा ।
भुजङ्गवित्ताधिपदायभुक्तौ स्याद्दन्तरुग्वा पतनं रदानाम् ॥ २६४ ॥

त्रिक में धनेश हो और वह राहु से वा राहु की अधिष्ठित राशि के स्वामी से युक्त हो तो राहु की तथा द्वितीयेश की दशा वा अन्तर्दशामें दन्तरोग वा दान्तों का पतन होता है ।

निधाननाथेन युतेऽरिनाथे तद्राशिपस्थांशपयुक्तभेशे ।
द्वेष्येशयुक्ते दशनामयो वा तत्पाकभुक्तौ पतनं रदानाम् ॥ २६५ ॥

षष्ठेश यदि द्वितीयेश युक्त हो और उन की राशि के स्वामी के नवांश का स्वामी जिस राशि में हो उस का स्वामी यदि षष्ठेश से युक्त हो तो उस की दशा में तथा अन्तर्दशा में दन्तरोग वा दान्तों का पतन होता है ।

तालुरोगयोगः—

वैरिवेश्मगतयोर्धननाथग्लौजयोः सभुजगध्वजयोर्वा ।
युक्तयोर्भुजगराड्गृहपेन तालुरुग्भवति भुक्तिपभुक्तौ ॥ २६६ ॥

षष्ठ में धनेश तथा बुध हों और वे राहु वा केतु से युक्त हों अथवा राहु की आक्रांत राशिके स्वामी से युक्त हों तो धनेश की अन्तर्दशा में तालुरोग होता है ।

नासाच्छेदयोगः—

दैतेयनमस्ये रोगालयसंस्थे ।
देहेऽसृजि नासाच्छेदोऽङ्गभृतां स्यात् ॥ २६७ ॥

षष्ठ में और लग्न में राहु हो तो मनुष्यों की नासिका में छेद होता है ।

पीनसरोग के योगः—

क्षतौ विधौ क्षये यमे क्षतौ खले खलांशके ।
तनूपतौ समुद्भवः समेति पीनसामयम् ॥ २६८ ॥

षष्ठ में चन्द्रमा, अष्टम में शनि, व्यय में पापग्रह और पापांशक में लग्नेश हो तो युक्त योग में उत्पन्न पुरुष पीनस (नासिका) रोग को प्राप्त होता है ।

भुक्तिसौख्ययोगः—

भव्येऽर्थगे विभवपेऽपि सदाब्यदृष्टे
किं शीतगुं च भमृते शुभदे सहोत्थे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कल्याणराशिलवगे वसुपे सवीर्य्ये
वैशेषिकांशगत इज्यसितेक्षिते वा ॥ २६९ ॥
भुक्तौ ग्रहेन्द्रे निजतुङ्गमूलत्रिकोणमाप्ते सबले तदीशे ।
तत्कारकेऽप्युत्तमखेटदृष्टे विशेषितांशेऽथ शुभे स्व उच्चे ॥ २७० ॥
सन्मित्रदृष्टेऽपि विशेषितांशे स्वेशे भवी भुक्तिसुखान्वितः स्यात् ।
विलग्ननाथेन विलोक्यमाने वित्तेशि कालोचितभुङ् मनुष्यः ॥ २७१ ॥

धन में शुभ ग्रह हो और धनेश शुभ ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो (१) तृतीय में चन्द्रमा तथा शुक्र को छोडकर शेष शुभग्रह हों एवं बलवान् धनेश वैशेषिकांश में स्थित होकर शुभ ग्रह की राशि तथा नवांश में हो और गुरु शुक्र से दृष्ट हो तो (२) स्वोच्च राशिगत वा स्वमूल त्रिकोणराशिगत ग्रह यदि धनस्थान में हो, धनेश तथा धनकारक (गुरु) बलवान् हों, शुभ ग्रह से दृष्ट हों और वैशेषिकांश में हों तो (३) धन में उच्च राशिगत शुभग्रह हो और वह शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट हो एवं वैशेषिकांश में धनेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष भुक्ति (भोजन) सुख से युक्त होता है । धनस्थान यदि लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य समयोचित भोजन करनेवाला होता है ।

बहुत भोजन के योगः—

भुक्तीश्वरे दावकृशानुकालदण्डायुधांशे खलयुक्तदृष्टे ।
नीचांशके वीतमलाभ्रपान्थैर्न युक्तदृष्टे बहुभुग् जनुष्मान् ॥ २७२ ॥

दावाग्नि कालदण्डायुधांश वा नीचांश में धनेश हो और वह पापयुक्त दृष्ट हो तो मनुष्य बहुत भोजन करने वाला होता है । द्वितीयेश यदि शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो अल्प भोजन करने वाला होता है ।

अल्प भोजन इत्यादि के योगः—

मृद्वंशके तुङ्गगते सदीक्षिते भव्यग्रहे भुक्तिधवेऽल्पभुग् जनः ।
चरग्रहेऽर्थे चरभेऽर्थपेऽथ वा स्वपे ससौम्ये सबलेऽथ सद्गृहे ॥ २७३ ॥
सदन्वितेऽर्थे द्रुतभुक् परिच्छद आग्नेयराशौ दहनेक्षितान्विते ।
वार्थे स्थिरर्क्षे चिरभुङ् महामतौ प्राक्लग्नगे भोजनशूर उद्भवी ॥ २७४ ॥

धनेश शुभ ग्रह हो और वह स्वोच्च राशि में हो, शुभ ग्रह से दृष्ट हो तथा मृद्वंशक में हो तो अल्पभोजन खानेवाला होता है । धन में चर ग्रह हो और चरराशि में धनेश हो तो (१) बलवान् धनेश यदि शुभ ग्रह से युक्त हो तो (२) धन में शुभग्रह की राशि हो और शुभ ग्रह से युक्त हो तो शीघ्रभोजन करने वाला होता है । धन में पापग्रह की राशि हो और वह पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो (१) धन में स्थिर राशि हो तो चिरकाल (देर) तक भोजन करने वाला होता है । लग्न में गुरु हो तो भोजन करने में शूर वीर होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वैवस्वते भुक्तिविभौ तदीशे निम्नेऽन्तकेनान्वितवीक्षिते च ।
श्राद्धान्नभुक् क्रूरखतर्कभागे हिरण्यनाथेऽधरवैरिभस्थे ॥ २७५ ॥

परान्नभुङ् निम्ननभोगदृष्टे द्युम्नेशि तद्दूषणतत्परः स्यात् ।
भुक्तीन उर्वीभवमन्दिमन्दोपेते दुर्हृन्नीचयमांशकादौ ॥ २७६ ॥

न साधुदृष्टेऽथ धने धराजे साहौ किमुग्राम्बरगामिदृष्टे ।
कदन्नभुक् क्रूरखगेक्षितेऽहौ कुटुम्बगे कोद्रवभुक् तदानीम् ॥ २७७ ॥

स्थूलान्नभुक् स्यात्सुकृताभ्रपान्थसम्बन्ध आयुर्भवने स जातः ।
सम्बन्ध आयुर्गृह उत्तमानां मृद्वन्नभूग् यस्य जनौ स जन्तुः ॥ २७८ ॥

द्वितीयेश शनि हो और शनिकी अधिष्ठित राशि का स्वामी यदि नीच राशि में हो एवं शनि से युक्त वा दृष्ट हो तो श्राद्धान्नभोजन करनेवाला होता है । क्रूरषष्ठेश नीचराशि वा शत्रुराशि में धनेश हो तो परान्नभोजन करने वाला होता है । द्वितीयेश नीचराशिगत ग्रह से दृष्ट हो तो अन्न में दोषलगानेवाला होता है । शत्रु नीच वा यमांशादि धनेश हो और वह मङ्गल गुलिक तथा शनि से युक्त हो एवं शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो (१) धन में भौम हो और वह राहु से युक्त हो अथवा पापग्रह से दृष्ट हो तो कदन्न (कुत्सित) भोजन करनेवाला होता है। धन में राहु हो और वह पापग्रह से दृष्ट हो तो कोद्रवान्न (कोदा) भोजन करने वाला होता है । अष्टम में पापग्रहों का सम्बन्ध हो तो स्थूलान्न (मोटा अन्न) भोजन करने वाला होता है । एवं जिस पुरुष के जन्मसमय में अष्टमस्थान में शुभग्रहों का सम्बन्ध हो तो वह कोमलान्न भोजन करने वाला होता है ।

भोजनपात्रके योगः—

स्वपेऽङ्गकेन्द्रे कविराजयुक्ते रौप्यस्य पात्रं निधिपेऽङ्गकेन्द्रे ।
सभेन्द्रगौरे कनकस्य पात्रं चतुष्टये चान्द्रियुते गिरीशे ॥ २७९ ॥

ततः स्वपे कोणचतुष्टयस्थे विशेषितांशे किमु शेवधीशे ।
सकोमलांशे परमोच्चभागे पात्रं तदा हेममयं नराणाम् ॥ २८० ॥

लग्न वा केन्द्र में धनेश हो और वह शुक्र तथा चन्द्रमा से युक्त हो तो रौप्य (चान्दी) के पात्र में भोजन करनेवाला होता है । लग्न वा केन्द्र में धनेश हो और वह शुक्र चन्द्र तथा गुरु से युक्त हो तो सुवर्ण के पात्र में भोजन करनेवाला होता है । केन्द्र में गुरु हो और वह बुध से युक्त हो तो (१) त्रिकोणकेन्द्र वा वैशेषिकांश में धनेश हो तो (२) कोमलांश में वा परमोच्चांश में धनेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य सुवर्णपात्र में भोजन करनेवाला होता है ।

यस्योद्भवे परमतुङ्गगृहे गिरीश–
गौरांशुभार्गववविदां स्वलवादिगानाम् ।
यस्मिल्लवे ससहसि स्वविभौ तदंशे
नुस्तस्य हेममयपात्रमुदीरयन्ति ॥ २८१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिस मनुष्य के जन्मसमय में स्वनवांशादिगत गुरु, चंद्र, शुक्र तथा बुध इन चारों के मध्य में कोई भी अपनी परमोच्च राशि में स्थित होकर जिस नवांश में हो उस में बलवान् धनेश हो तो उस के सुवर्ण के भोजन-पात्र होते हैं।

कांस्यस्य पात्रं सबले स्वपाले विशेषितांशे सुखगेक्षितेऽथो।
स्वपस्थभागाधिपतौ यदंशे तद्राशिपे सेतमले तथा स्यात् ॥ २८२ ॥

धनेश के नवांश का स्वामी जिस नवांश में हो उस राशिका स्वामी शुभग्रह से युक्त हो तो (१) वैशेषिकांश में बलवान् धनेश हो और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य कांस्यपात्र में भोजनकरनेवाला होता है।

लोह तथा धातुद्वयपात्रयोगः—

लोहस्य पात्रमुदयार्थपयोः सशन्यो-
स्तद्वद् धनेशि सपुरेशि दरे किमन्त्ये
पात्रं द्विधातुसहितं समयौजसोने
भुक्त्यंशराशिरमणे दुरितेन दृष्टे ॥ २८३ ॥

लग्नेश तथा धनेश ये दोनों शनि से युक्त हो तो (१) षष्ठ वा व्यय में धनेश हो और वह लग्नेश से युक्त हो तो लोह के पात्र में भोजन करनेवाला होता है। द्वितीयेश की नवांशराशि और राशि के स्वामी यदि कालबल से रहित होकर पापग्रह से दृष्ट हों तो दो धातु से युक्त पात्र अर्थात् टंकिलेबर्तन में भोजन करनेवाला होता है।

पारावतादिकलवे परिपूर्णवीर्य्ये
केन्द्रेऽर्थपे मृदुलवेऽमलमित्रदृष्टे।
मर्त्यस्य भुक्तिसमये बहुपात्रमाहुः
केन्द्रेऽर्थभेशि बलभाजि विशेषितांशे ॥ २८४ ॥
प्राणान्वितैः प्रथमदेवगुरुज्ञपूज्यैः
पात्रं विचित्रमुदितं मलिने निधाने।
तद्धेशयुक्तलवपांशकतद्धनाथे
दृष्टे न सद्भिरबलेऽदृढपात्रमुक्तम् ॥ २८५ ॥

केन्द्र में पारावतादि अंशों में तथा मृदुषष्ठ्यंश में परिपूर्ण बली द्वितीयेश हो और वह शुभ मित्र से दृष्ट हो तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य के भोजनसमय में बहुत पात्र होते हैं। केन्द्र तथा वैशेषिकांश में बलवान् द्वितीयेश हो एवं शुक्र, बुध तथा गुरु ये तीनों बलवान् हों तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य के विचित्र भोजनपात्र होते हैं। धन में पापग्रह हो और द्वितीयेश के नवांश का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो उस की राशि का स्वामी यदि निर्बल हो और शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो उक्तयोग में उत्पन्न मनुष्य अदृढपात्र (मिट्टी के पात्र वा पत्ते) में भोजन करनेवाला होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुन्दर पात्र में भोजनयोगः—

सहोदरस्थे सितगौ भृगौ वाऽधिमित्रवर्गे निजतुङ्गराशौ ।
पापेतरैः संयुतवीक्ष्यमाणे स्याच्चेतनः सुन्दरपात्रभोक्ता ॥ २८६ ॥

तृतीय में चन्द्र वा शुक्र हो और वह अपनी उच्च राशि में, अधिमित्र के वर्ग में तथा शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो उत्तम पात्र में भोजन करने वाला होता है ।

धनभावगतरविफलः—

द्रव्येऽर्के मुखरुग्युतो वसुमतीड्दण्डेन वित्तक्षयो
वर्षे बाणयमोन्मिते स्वभ उतोच्चर्क्षे न दोषो भवेत् ।
सोग्रे स्वल्पकृती सरुङ् नयनरुग्भाग्भव्यदृष्टे धनी
दोषादींश्च हरेत्सुखं नयनयोःस्वर्क्षोच्चगेऽत्यर्थयुक् ॥ २८७ ॥
वित्ते ब्रह्मे संयुते बोधनेन द्रव्यस्वामी जायते वातवाणी ।
स्वोच्चेऽर्थेऽर्के ज्ञानवान्राजयोगश्चक्षुःसौख्यं शास्त्रवेत्ता च वाग्मी ॥ २८८ ॥

धनभाव में सूर्य हो तो मुखरोग से युक्त २५ वें वर्ष में राजदण्ड से धन का नाश होता है । यदि धन में स्वराशिगत वा स्वोच्च राशिगत सूर्य हो तो उक्त दोष नहीं होता है । पापयुक्त हो तो अल्प पण्डित, रोगी, तथा नेत्ररोगयुक्त होता है । शुभ दृष्ट हो तो धनवान्, दोषादियों का नाश और नेत्रों का सुख एवं स्वराशि वा उच्च राशि में हो तो बहुत धन से युक्त होता है । यदि धनगत सूर्य बुध से युक्त हो तो धन का स्वामी तथा शीतल वचन वाला होता है । यदि वह सूर्य उच्चगत हो तो ज्ञानवान् तथा राजयोग होता है । एवं नेत्रों से सुखी, शास्त्र जानने वाला और उत्तम वक्ता है ।

धनगतचन्द्रफलः—

स्वेऽब्जेऽल्पसन्तोषकरो धनी बहुप्रतापवाञ्छोभनवान्नृपालयात् ।
वर्षे पुराणप्रमिते चमूपतेर्योगो भवेत्तत्र खलग्रहान्विते ॥ २८९ ॥
विद्याविहीनःसुकृतान्विते धनी प्रभूतविद्यो जनिमान्नरस्तदा ।
पूर्णेन्दुनैकेन समस्तवित्तवाननेकविद्यासहितः प्रजायते ॥ २९० ॥

धन में चन्द्रमा हो तो अल्प सन्तोष करनेवाला, धनवान्, बहुत प्रतापी, शोभायुक्त एवं १८ वें वर्ष में राजदरबार से सेनापति का योग होता है । यदि धनगत चन्द्र पापयुक्त हो तो विद्यारहित और शुभ ग्रह से युक्त हो तो धनवान् तथा बहुत विद्या वाला होता है । एवं धनगत चन्द्रमा पूर्ण हो तो समस्त धनवाला तथा अनेक विद्याओं से युक्त होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन गत भौम फलः—

आरे रैगृहगे ऽर्थलाभसहितो विद्याविहीनो जनो
द्वेष्येशेन युतश्च तिष्ठति तदा दृग्वैपरीत्यं शुभैः ।
दृष्टे चेत्परिहार उच्चनिजभेचक्षुर्विलासो भवेद्
विद्यावान्यदि तत्र पावकगृहे ऽर्घदृष्टयुक्ते ऽक्षिरुक् ॥ २९१ ॥

धन में भौम हो तो धन लाभ से युक्त तथा विद्या से रहित होता है। यदि धन गत भौम षष्ठेश से युक्त हो तो नेत्रों में विकार और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो उस का परिहार होता है। धन में उच्च राशि गत वा स्वराशि गत भौम हो तो नेत्रों से सुखी तथा विद्यावान् होता है। यदि वह धन गत मङ्गल पाप राशि में वा पाप ग्रह दृष्ट युक्त हो तो नेत्र रोगी होता है।

धन गत बुध फलः—

स्वे कोविदे जन्मनि कोविदः स शास्त्रश्रुतीनां तनुभूसमृद्धिः ।
सङ्कल्पसिद्ध्या सहितो ऽर्थशाली गुणान्वितः सद्गुणवान्मनुष्यः ॥ २९२ ॥
तिथिप्रमे ऽब्दे बहुविद्यया च द्युम्नैरुपेतो बहुलाभदाता ।
सपामरे पामरखेटराशौ नीचे रिपोर्वेश्मनि विद्ययोनः ॥ २९३ ॥
क्रूरत्ववान् गन्धवहोपतापी सद्दृष्टयुक्ते सधनः सविद्यः ।
भवेत्प्रजातो गणिताधिकारसम्पन्न आर्य्येण युते प्रदृष्टे ॥ २९४ ॥

धन में बुध हो तो वेद तथा शास्त्रों का पण्डित, पुत्रों की समृद्धिवाला, सङ्कल्प सिद्धि से युक्त, धनी, गुणी, सद्गुणों से युक्त १५ वें वर्ष में बहुत विद्या तथा धन से युक्त और बहुत लाभ दायक होता है। यदि धनगत बुध पाप युक्त हो पापग्रह की राशि में हो नीचराशि में हो वा शत्रु राशि में हों तो विद्या से रहित, क्रूरता युक्त तथा वात रोगी होता है। यदि वह शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो धनवान् और विद्यावान् होता है। एवं गुरु से युक्त हो तो गणित विद्या में निपुण होता है।

धन गत गुरु फलः—

पोष्यालयस्थे पविपाणिपूजिते तदेष्टभापी वसुशेमुषीयुतः ।
सँव्वत्सरे षोडशसम्मिते बहुप्राबल्यवान् धान्यधनैश्वर्यान्वितः ॥ २९५ ॥
स्वोच्चे स्वभे ऽर्थी सखले ऽनृतप्रियः स्याद्दुर्वचो वञ्चनतस्करो भवः ।
विद्यान्तरायो ऽधरराशिसंस्थिते तस्मिन्नसत्पुष्करचारिणा युते ॥ २९६ ॥
तथा कादम्बरीपायी भ्रष्टो वंशविनाशकृत् ।
कलत्रान्तरभाक् कायसमुत्थैः परिवर्जितः ॥ २९७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन में गुरु हो तो अभीष्ट वचन बोलने वाला, धन तथा बुद्धि से युक्त १६ वें वर्ष में बहुत प्रबलता धान्य तथा धन की वृद्धि से युक्त होता है। यदि धन में उच्च राशि गत वा स्वराशिगत गुरु हो तो धनी होता है। यदि धन गत गुरु पाप युक्त हो तो झूठ तथा दुष्ट वचन बोलनेवाला वञ्चक तथा चोर होता है एवं उस के विद्याध्ययन में विघ्न होता है। यदि धन गत गुरु नीचराशि में हो तथा पाप ग्रह से युक्त हो तो मद्य (शराब) पीने वाला, जातिभ्रष्ट, वंशनाश करने वाला, अन्य स्त्री से सहवास करने वाला और पुत्रों से रहित होता है।

धन गत शुक्र फलः—

धिष्ण्येऽर्थेऽर्थकुटुम्बवान्विनयवान्नेत्रे विलासार्थवा-
नन्येषामुपकारकृत्सकरुणः स्वास्यः सुभोजी भवेत्।
सुस्त्र्याप्ती रदवत्सरे सदनपे दुःस्थेऽबले नेत्ररुक्
सेन्दौ नेत्रगदी कुटुम्बरहितो जातो निशान्धोऽर्थहा ॥ २९८ ॥

धन में शुक्र हो तो धनवान् कुटुम्बवान् तथा विनयवान् होता है। एवं नेत्रों का विलासी अन्य जनों का उपकार करने वाला, दयावान्, सुन्दर मुख तथा सुन्दर भोजन करने वाला और ३२ वें वर्ष में उत्तम स्त्री की प्राप्ति होती है। यदि त्रिक में धनेश हो वा वह निर्बल हो तो नेत्र रोगी होता है। एवं धन गत शुक्र यदि चन्द्रमा से युक्त हो तो नेत्र रोगी, कुटुम्ब रहित, रातोंधा तथा धन नाश करने वाला होता है।

धन गत शनि फलः—

भाषास्थाने भास्करस्याङ्गजाते द्रव्याभावः स्त्रीद्वयं तत्र सोग्रे।
जातो योषावञ्चना स्यान्मठेशश्चक्षूरोगी स्वल्पकेदारयुक्तः ॥ २९९ ॥

धन में शनि हो तो निर्धन और दो स्त्री वाला होता है। यदि धनगत शनि पाप युक्त हो तो स्त्री वञ्चक, मठ का स्वामी, नेत्ररोगी और अल्प क्षेत्र (खेत) वाला होता है।

धन गत राहु फलः—

पाते पोष्ये श्यामवर्णः सुतानां शोको वाच्यो निर्धनो देहरोगः।
तस्मिन्पापैः संयुते स्त्रीद्वयं सद्युक्ते तज्ज्ञैश्चैबुके चिह्नमुक्तम् ॥ ३०० ॥

धन में राहु हो तो श्यामवर्ण, पुत्रों का शोक, धन रहित एवं शरीर में रोग होता है। यदि धन गत राहु पाप युक्त हो तो दो स्त्री होती हैं। यदि शुभ युक्त हो तो चिबुक (ठोडी) प्रदेश में चिह्न होता है।

धन गत केतु फलः—

कुटुम्बयातो जनने कबन्धखेटो विधत्ते द्रविणक्षतिं नुः।
नीचप्रसङ्गी प्रभवेत्स दुष्टजनश्च सौभाग्यसुखच्युतः स्यात् ॥ ३०१ ॥

धन में केतु हो तो धन की हानि को करता है। एवं वह मनुष्य नीच जनों का सङ्ग करने वाला, दुष्टजन, सौभाग्य तथा सुख से रहित होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन गत रव्यादि ग्रहों का संक्षिप्त फलः—

मेघप्रमेऽब्दे रविरर्थगो धनक्षतिं प्रकुर्यान्निधिगः कलानिधिः ।
तारोन्मितेऽब्दे द्रविणाप्तिमैन्दवो व्ययं विधत्ते रसनेत्रहायने ॥ ३०२ ॥

गोरोऽम्बराग्निप्रमवत्सरे वसुलाभं सपत्नोन्मितहायने सितः ।
वर्षेऽर्कतुल्ये धनहानिदा ध्वजासृक्पङ्कु पाता भरणीयभावगाः ॥ ३०३ ॥

धन में सूर्य हो तो १७ वें वर्ष में धन हानि, चन्द्रमा हो तो २७ वें वर्ष में धन की प्राप्ति, बुध हो तो २६ वें वर्ष में धन व्यय, गुरु हो तो ३० वें वर्ष में धनलाभ, शुक्र हो तो छठे वर्ष में धनलाभ एवं केतु, भौम, तथा शनि तथा राहु हों तो १२ वें वर्ष में धन की हानि को करते हैं।

रवि दृष्ट धन भाव फलः—

स्वागारं यदि पश्यति ग्रहपतिः कामातुरं मानवं
कुर्य्याद् द्रव्ययुतं रणाङ्गणरतं भोगैरनेकैर्युतम् ।
शम्भोर्भक्तिपरं पितुर्मृतिकरं तातार्थयुक्तं पशोः
सौख्यं गुह्यनिपीडनं रिपुहरं सौभाग्यसत्त्वान्वितम् ॥ ३०४ ॥

धन को सूर्य देखता हो तो मनुष्य को कामी, द्रव्य युक्त, रणभूमि में निरत, अनेक भोगों से युक्त, शिव की भक्ति में तत्पर, पिता की मृत्यु, पिता के धन से युक्त, चतुष्पदों का सुख, गुप्तेन्द्रिय से दुःखित, शत्रु का नाश एवं सौभाग्य तथा पराक्रम से युक्त करता है।

चन्द्र दृष्ट धन भाव फलः—

पश्येद् ग्लौर्द्रविणं च गोहययुतं मुक्ताफलालङ्कृत-
देहं वीरजनप्रियं च सुजनं राजीवनेत्रं नरम् ।
वंशार्द्धिं स्वकुटुम्बसौख्यमतुलं कुर्य्याच्छरीरव्यथां
सद्भोगान्वितमम्बुलोहजनितं वर्षाष्टके साध्वसम् ॥ ३०५ ॥

धन को चन्द्रमा देखता हो तो धन, गौ और घोड़ों से युक्त, मोतियों से अलङ्कृत शरीर, शूर वीर जनों का प्रिय, उत्तम मनुष्य, कमल के समान नेत्रवाला, वंश की वृद्धिवाला परिजनों से बहुत सुखी, शरीर में पीडा, उत्तम भोगों से युक्त एवं ८ वें वर्ष में जल और लोह से उत्पन्न भय को करता है।

भौम दृष्ट धन भाव फलः—

माहेयेन निरीक्षिते परिजने गाङ्गेयरत्नान्वितः
सुक्रूरो न कुटुम्बसौख्यसहितो गेहे सुखी विक्रमी ।
कान्तादर्शनलालसो गुदरुजा तुन्दामयेनार्दितः
प्राप्तःस्वस्य दिने दिने तु विलयःस्यादेवमाहुर्बुधाः ३०६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धन को भौम देखता हो तो सुवर्ण तथा रत्नों से युक्त, अतीव क्रूर, कुटुम्ब के सुख से रहित, घर में सुखी, अति पराक्रमी, स्त्री को देखने की इच्छा वाला, गुद रोग और उदर रोग से पीडीत और उसके धन की प्राप्ति का प्रतिदिन नाश होता है। इस प्रकार पण्डित जनोने कहा है।

बुध दृष्ट धन भाव फलः—

वाणिज्येऽतिरुचिर्विशालनयनः सम्पूर्णगात्रो धन-
धान्याढ्यो विदितो जनेषु सकलैर्भोगैर्विलासैर्युतः।
सौख्यं स्यादतुलं धनस्य विधिना युक्तश्चिरायुर्भवे
द्यस्य प्राणभृतो जनौ परिजने राज्येन संवीक्षिते ॥ ३०७ ॥

धन भाव बुध से दृष्ट हो तो व्यापार में अतीव रुचि, विशालनेत्र, समस्त अङ्गों से युक्त, धन धान्य से युक्त, मनुष्यों में प्रसिद्ध, सम्पूर्ण भोग विलासों से युक्त, धन का अतीव सुख एवं भाग्य से युक्त तथा दीर्घायु वाला होता है।

गुरु दृष्ट धन भाव फलः—

देवेषु क्षितिदेवतासु सततं लीनः सुवर्णस्य च
मुक्ताया रसनादियुग् धनचयोपेतो विपक्षोज्झितः।
अन्येषामुपकारतः सुमतिमानात्मीयलोकाखिल-
सौख्यं स्याद्बहुभागधेयसहितो गिर्भे गिरीशेक्षिते ॥ ३०८ ॥

धन स्थान गुरु से दृष्ट हो तो नित्य देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर, सुवर्ण तथा मोतियों की रसनादि (करधनी) से युक्त, धन के भण्डार से युक्त, शत्रु रहित, अन्यजनों के उपकार से अति बुद्धिमान, कुटुम्बियों का समस्त सौख्य एवं भाग्य से युक्त होता है।

शुक्र दृष्ट धन भाव फलः—

व्याध्यूनं प्रतिवासरं धनसुखं कुर्वीत काव्याभिधः
पश्येत्स्वं कविताकरं श्रमकरं नागेन्द्रयानान्वितम्।
जातं स्वीयजनारिनाशनकरं गीतप्रियं यौवनां-
गाढ्यं सौख्यकरं जनस्य सततं स्वीयस्य यस्योद्भवे ॥ ३०९ ॥

धन भाव शुक्र से दृष्ट हो तो प्रति दिन धन का सुख, कविता तथा परिश्रम करनेवाला, हाथियों के वाहन से युक्त, आत्मीयजनों के शत्रुओं का नाशक, गीतों में रुचि रखनेवाला, यौवन देहवाला और नित्य आत्मीयजनों के सुख को करता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शनि दृष्ट धन भाव फलः--

चौराद्भूविभुतश्च वीतविभवो वर्षे गुणेन्दून्मिते
वातोत्थं वनजं भय निजजनो वैरीभवेद्देहिनाम् ।
भीतेः शत्रुजनस्य सौख्यरहितोऽसौ पोष्यवर्गैर्युतः
प्राज्यैः स्याद्गतसौहृदो विभवभे भास्वद्भवेनेक्षिते ॥ ३१० ॥

धन भाव शनि से दृष्ट हो तो चौर तथा राजा से धन रहित, १३ वें वर्ष में वातजन्य तथा जलजन्य भय, अपना मनुष्य शत्रु, शत्रु भय से सुख रहित, बहुत कुटुम्बवाला एवं मित्र भाव से रहित होता है।

राहु दृष्ट धन भाव फलः—

स्वर्भाणुदृष्टे जनने निधाने ऽब्दे शक्रतुल्ये भयमम्भसो वा।
सत्यष्टमे ऽब्दे मरणं कुटुम्बसौख्यं भवेन्नैव मनुद्भवानाम् ॥ ३११ ।

धन भाव राहु से दृष्ट हो तो १८ वें वर्ष में जल से भय अथवा ८ वें वर्ष में मृत्यु एवं कुटुम्बीजनों का सुख नहीं होता है।

लग्नगत धनेश फलः—

काये ऽर्थपे सुन्दरनेत्रकामिनी व्यापारवृत्तिः कृपणो ऽतिभोगवान् ।
श्रीशः प्रसिद्धो नृपसत्कृतः सुखी धीमांश्चचञ्चन्नयनो ऽतिशक्तिता ॥ ३१२ ॥

लग्न में धनेश हो तो सुन्दर नेत्रवाली स्त्री, व्यापार से जीविका करनेवाला, कृपण (कंजूस) अत्यन्त भोगवाला, धनवान्, विख्यात, राजा से सम्मानित बुद्धिमान्, देदीप्यमान् नेत्रवाला और अति पराक्रमी होता है।

धनगत धनेश फलः—

निधाननाथे निधिगे सगर्वो मंत्री कलत्रद्वितयं त्रयं वा।
मुक्तस्तनूजैश्चतुरः कुटुम्बयुक्तः सलोभो मणिरत्नभोगी ॥ ३१३ ॥
जितेन्द्रियो भोगयुतो विभूषितः कलत्रसोत्थारुचिरङ्गिनो भवेत् ।
द्रव्यांशुकप्रीतिमुखाप्तिमान्नृपाद् धनाच्च कीर्त्तिर्वृषकर्म्मसंयुतः ॥ ३१४ ॥

धन में धनेश हो तो गर्व (अभिमान) वे युक्त, दो वा तीन स्त्रीवाला, पुत्र रहित, चतुर, कुटुम्बी, लोभी, मणि तथा रत्नों का उपभोग करनेवाला, जितेन्द्रिय, भोग युक्त, गुणों से विभूषित, स्त्री तथा भ्रातृजनों में अरुचि, राजा से धन, वस्त्र तथा प्रीति प्रभृति की प्राप्तिवाला एवं धन से कीर्ति पुण्य कर्म से युक्त होता है।

सहजगत धनेश फलः—

स्वेशे ऽनुजे सोदरसौख्यवर्जितश्चौरः कलोनः कलहस्य कारकः ।
उद्वेगयुक् चञ्चलमानसो नरो नयेन हीनो विनयेन च स्थिरः ॥ ३१५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुटुम्बरक्ताम्बरहेमरत्नयुक्तो ऽतितेजा नृपमित्रतार्थी ।
व्यापारवानर्कसुते विबन्धुश्चौरो महीजे मिहिरे विरोधी ॥ ३१६ ॥

सहज में धनेश हो तो भ्रातृजनों के सुख से रहित, चौर, कला रहित, कलह करनेवाला उद्वेग युक्त चञ्चल चित्त, नीति तथा विनय से रहित, स्थिर स्वभाव, कुटुम्ब, रक्त वस्त्र, सुवर्ण और रत्न से युक्त, तेजस्वी, राजा से मित्रता की अभिलाषावाला एवं व्यापारी होता है। यदि धनेश शनि हो तो बान्धव रहित, मङ्गल हो तो चौर एवं सूर्य हो तो विरोधी होता है।

स्यात्स्वापतेयेश्यनुजोपगे ऽथ वा पानीयगे विक्रमवान् गुणाग्रणीः
तृष्णान्वितो निर्जरनिन्दको जनः सुशेमुषीमान् परदारभोगवान् ॥ ३१७ ॥

तृतीय वा चतुर्थ में धनेश हो तो अति पराक्रमी, गुलियों में प्रधान, तृष्णायुक्त, देवताओं का निन्दक बुद्धिमान् तथा परस्त्रीगामी होता है।

सुखगत धनेश फलः—

पातालयाते विभवाधिनाथे दीर्घायुराप्तद्रविणः स्वपित्रोः ।
गुरोः सतेजा धनवान् सहान्यैरुपायकः सत्यदयासमेतः ॥ ३१८ ॥

भोगैरुपेतो ऽपि च रोगमुक्तो ज्ञातौ वरिष्ठः सुबली सुखी च ।
क्रूरे विहङ्गे जननीविनाशः प्रभूतरोगैः सहितो दरिद्रः ॥ ३१९ ॥

सुख में धनेश हो तो दीर्घायु, माता, पिता तथा गुरु से धन लाभ; अन्य जनों के साथ उपाय (उद्योग) करने से धनी, सत्य तथा दया से युक्त, बहुत भोगों से युक्त होने पर भी रोग से मुक्त, ज्ञाति में सर्वश्रेष्ठ, अतिबलवान् तथा सुखी होता है। यदि पाप ग्रह धनेश हो तो माता का नाश, अनेक रोगों से युक्त तथा दरिद्र होता है।

सुत गत धनेश फलः—

भोक्ता नन्दनगे धनेशि विदितः कष्टेतरे कर्म्मणि
कान्तामानहरस्तनूजसुखयुग् लक्ष्मीविलासी तथा ।
विद्याशौर्य्यविवर्जितस्त्वतिवरो दाता मनस्वी खलै-
र्दुःखाढ्यः कृपणः सुदुष्टतनयः सौम्यैरुदारो नरः ॥ ३२० ॥

पञ्चम में धनेश हो तो कष्टके अतिरिक्त कर्म में विख्यात, स्त्रियों का मान हरने वाला, पुत्र सुख से युक्त धन का विलास (उपभोग) करने वाला, विद्या तथा पराक्रम रहित, अतिश्रेष्ठ, दानी, मनमाने कार्य करने वाला होता है। यदि धनेश पाप ग्रह हो तो दुःख से युक्त, कृपण स्वभाव तथा अति दुष्ट पुत्र वाला होता है। एवं शुभ ग्रह धनेश हो तो उदार होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रिपु गत धनेश फलः—

भयालयस्थे भरणीयभावपे गदो गुदोर्व्वो रिपुहाऽर्थसङ्ग्रही ।
स्तैन्ये पटुत्वे नर उत्कटोऽरितोऽर्थाप्तिस्तु तस्माद् द्रविणक्षयं पुनः ॥ ३२१ ॥
ईर्ष्यायुतो जातरिपुश्च वञ्चक इज्योऽघभाक् चारुखगे कुलाभवान् ।
असद्वियद्गे विधनः सशात्रवः खलो दरिद्रो जनितस्तदा भवेत् ॥ ३२२ ॥

षष्ठ में धनेश हो तो गुदा तथा ऊरु में रोग, शत्रु नाशक, धनसंग्रह करने वाला, चोरी तथा चतुराई में अतिचतुर, शत्रु से धन का लाभ पुनः उस के द्वारा धन का नाश, ईर्ष्या युक्त, शत्रुवाला, वञ्चक, पूज्य तथा पाप कर्म करने वाला होता है। धनेश शुभग्रह हो तो भूमि लाभ वाला एवं पाप धनेश हो तो निर्धन, शत्रुयुक्त, दुष्ट तथा दरिद्र होता है।

सप्तम गत धनेश फलः—

द्यूनेऽर्थपे भूषणभूषितो भिषक् सगर्वरूपः स्मृतिमांश्च सङ्ग्रही ।
रामारतोऽर्थी सगदोऽर्थसङ्ग्रहकर्त्र्यस्य नुर्भोगविलासिनी वधूः ॥ ३२३ ॥
पाप्मग्रहे नन्दनवर्जितः परकान्ताभिगामी गणिका नितम्बिनी ।
जातस्य माताऽप्यसती विनिर्मले जायाविलासैः सहितः सुतान्वितः ॥ ३२४ ॥

सप्तम में धनेश हो तो भूषणों से विभूषित, वैद्य, गर्व तथा रूप युक्त, चिन्तावान् संग्रह करने वाला, स्त्री में निरत, धनी तथा रोगी और उस की स्त्री धन संग्रह करने वाली तथा भोगविलास वाली होती है। यदि धनेश पाप ग्रह हो तो पुत्र रहित, परस्त्री गामी तथा उसकी स्त्री वेश्या और उसकी माताभी व्यभिचारणी होती है। यदि धनेश शुभ ग्रह हो तो स्त्रीके विलासों से तथा पुत्रों से युक्त होता है।

अष्टमगत धनेश फलः—

काले ऽर्थेशे कामिनीज्येष्ठसोत्थसौख्यं न स्यादात्मघाती च वन्द्यः ।
भूमिस्थं स्वं वा धनं प्राप्नुयान्नाऽनेकार्थनां दायकोऽरातिहन्ता ॥ ३२५ ॥
उत्पन्नभुग् दैवपरो विलासवान् मनाक् कलिर्भावयुतः परार्थहा ।
योगे रतः सन्ततिजातरोपकः पाषण्डवानन्यहिते रतो धनी ॥ ३२६ ॥

अष्टम मे धनेश हो तो स्त्री तथा ज्येष्ठ भ्राता के सुख को अभाव और वह स्वयं आत्मघाती, पूज्य तथा उस को भूमिगत धन वा सामान्य धन का लाभ होता है। एवं वह अनेक अर्थों का देने वाला, शत्रुओंका नाशक, उत्पन्न भोक्ता, भाग्य में तत्पर, विलासी, अल्प कलह वाला भाव से युक्त, परद्रव्य हर्त्ता; योग में निरत, सन्तान जन्य रोष वाला, पाषण्डी, दूसरो के हित में लीन एवं धनवान् होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नवम गत धनेश फलः--

दाता त्राता विनीतः पथि परिजनपे मित्रवर्गाप्तमान्यो
मित्राढ्यो लोकनेताऽतिशयबलयुतो धर्म्मभाग् भोगसक्तः ।
सौम्ये दानप्रसिद्धोऽत्र विदितनियतिर्नो व्रती क्रूरखेटे
दुष्टो हीनो दरिद्रस्तदनु च कृपणो भिक्षुकःऽस्याद् विडम्बी ॥ ३२७ ॥

नवम में धनेश हो तो दानी, रक्षक, नम्र, मित्रवर्ग से सम्मानित, मित्रयुक्त, लोगों का नेता अति बलीष्ठ, धर्मात्मा और भोगयुक्त होता है । यदि शुभग्रह धनेश हो तो दान से प्रसिद्धि, विख्यात भाग्यवाला तथा व्रतधारी होता है । पापग्रह धनेश हो तो दुष्ट जन, हीन, दरिद्री, कृपण, भिक्षुक एवं विडम्बना करनेवाला होता है ।

भाग्यस्थिते वा भवभावर्त्तिनि द्वितीयधामाधिपतौ धनान्वितः ।
पटुस्तथा धार्म्मिक उद्यमी भवी बाल्ये सरोगः परतः सुखी भवेत् ॥ ३२८ ॥

धर्म वा लाभ में धनेश हो तो धन से युक्त, चतुर, धर्मात्मा, उद्यमी एवं बाल्यकाल में रोगी और पश्चात् सुखी होता है ।

दशमगत धनेश फलः--

भूपेऽर्थपे भूपजनाद्रमावान् प्रभूतदारार्थयुतो विपुत्रः ।
महीपमान्यः कुसुमेषुहृद्यः सन्सुप्रसङ्गी सुभगो यशस्वी ॥ ३२९ ॥
सद्भूषणैः सद्वसनैः समन्वितः पुण्ये जनन्या जनकस्य पालकः ।
अर्थिश्रितो भोगयुतोऽमलेतरे जातः सवित्र्याः सवितुर्भवेदरिः ॥ ३३० ॥

दशम में धनेश हो तो राजा से लक्ष्मीवाला, बहुत स्त्री तथा धन से युक्त, पुत्र रहित, राजमान्य, कामी, विद्वान्, सत्सङ्गी, ऐश्वर्य्यवान्, कीर्त्तिमान् एवं उत्तम भूषण तथा वस्त्र से युक्त होता है । यदि शुभग्रह धनेश हो तो माता पिता का पालन करनेवाला, अर्थियोंसे सेवित और भोग युक्त होता है । पापग्रह धनेश हो तो माता पिता का शत्रु होता है ।

लाभगत धनेश फलः--

स्वेशे भवे श्रीसुखभोगयुक्तो व्यापारतो लब्धधनो मनस्वी ।
त्यागी तथा स्वाश्रितदीनपालो महीपमंत्री विदितो यशस्वी ॥ ३३१ ॥

लाभ में धनेश हो तो लक्ष्मी, सुख तथा भोग से युक्त, व्यापार से धन प्राप्त करनेवाला, मनमाने कार्य करनेवाला, त्यागी, अपने आश्रित जनों का पालनेवाला, राजा का मंत्री, विख्यात एवं कीर्तिवाला होता है ।

व्ययगत धनेश फलः--

स्वपेऽन्तिमे ज्येष्ठसुतस्य सौख्यं न स्याज्जडात्माऽधरतो वसूनः ।
पराक्रमी साहसमानयुक्तोऽतिमेधयाढ्यो सुकृतेन हीनः ॥ ३३२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वृथाभिमानी निजजीवनं नृपप्रसादजं दुष्टमना विदेशगः ।
एकस्वभावोऽस्य चितौ क्षतौ तथा स्याद्वञ्चकः स्वश्रितदेहधारिणाम् ॥ ३३३ ॥
देशे प्राज्ये शालिनी तत्समज्ञा कल्याणे सद्ग्रामवास्युग्रखेटे ।
पापण्डाढ्यो नूनमृद्धिर्विदेशे जातो जन्तुर्भिक्षुको दुष्टकर्मा ॥ ३३४ ॥

व्यय में धनेश हो तो ज्येष्ठ पुत्र के सुख का अभाव और वह मनुष्य जड़त्मा, पाप में लीन, धन रहित, पराक्रमी, साहस तथा मान से युक्त, विशेष धारणा बुद्धिवाला, धर्म से रहित, वृथाभिमान करनेवाला, राजकृपा से जीवन यापन करनेवाला, दुष्ट हृदय, विदेश वासी, वृद्धि और हानि में समान भाववाला एवं अपने अश्रितजनों में वञ्चना करनेवाला और उस की कीर्ति देशान्तरों में व्याप्त होती है। शुभ ग्रह धनेश हो तो उत्तम ग्राम में रहनेवाला और पाप ग्रह धनेश हो तो पाषण्डी, विदेश में उन्नति प्राप्त करनेवाला, भिक्षावृत्तिवाला एवं दुष्ट कर्म करनेवाला होता है।

धनगत मेष राशि फलः—

भवेन्नरो भूरिकुटुम्बयुक्तः पूर्णः प्रभूतैर्विविधैर्हिरण्यैः ।
तुर्य्यांघ्रियुक्तो बहुकोविदज्ञो दैवाधिकः प्रीतिपरः स्वगेऽजे ॥ ३३५ ॥

धन में मेष राशि हो तो बहुत कुटुम्ब से युक्त, अनेक प्रकार के बहुत धनों से परिपूर्ण चतुष्पदों से युक्त, बहुत विद्वानों को जाननेवाला, अधिक भाग्यशाली और स्नेहवाला होता है।

धनगत वृष राशि फलः—

विन्देत वित्ते वृषभाभिधाने कृषिप्रयत्नेन जनो हिरण्यम् ।
स्वर्णान्नमुक्तामणितुर्य्यपादैर्नित्यं मनुष्यो विभवं तदानीम् ॥ ३३६ ॥

धन में वृष हो तो वह मनुष्य नित्य कृषिक्रिया से धन को पाता है। एवं सुवर्ण, अन्न, मोती, मणि तथा चतुष्पदों से ऐश्वर्य को पाता है।

धनगत मिथुन राशि फलः—

कामाभिधाने जनने निधाने नितम्बिनीजं प्रचुरं धनं नुः ।
रौप्याश्वचामीकरजं च सख्यं स्यात्साधुलोकैः करुणाधिकः सः ॥ ३३७ ॥

धन में मिथुन राशि हो तो स्त्रीजन से बहुत धन, चान्दी, घोड़ा तथा सुवर्ण से उत्पन्न धन तथा साधुजनों से मित्रता और वह मनुष्य अधिक दयावाला होता है।

ज्यो....८०...

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धनगत कर्क राशि फलः—

पाथोभवं पादपजातमृक्थं न्यायार्जितं कार्किणि कोशयाते ।
अभीष्टभोज्यं दयिताभवं सत्सुखं प्रमोदस्तनुसम्भवानाम् ॥ ३३८ ॥

धन में कर्क हो तो जल तथा वृक्ष से उत्पन्न धन, न्याय से उपार्जित धन, अभीष्ट भोज्य पदार्थ, स्त्री से उत्पन्न उत्तम सुख एवं पुत्रों का सुख होता है।

धनगत सिंह राशि फलः—

पञ्चानने पोष्यगते स्वकीयपराक्रमोपार्जितमृक्थमस्य ।
स्यात्स्वापतेयं वनजं समस्तलोकोपकारप्रवणःसदैव ॥ ३३९ ॥

धन में सिंह हो तो अपने पराक्रम से उपार्जित धन और वन से उत्पन्न धन होता है। एवं समस्त मनुष्यों के उपकार करने में तत्पर होता है।

धनगत कन्या राशि फलः—

कन्यात्मके कोशगते सकाशाद्वसुन्धरेशाद्वसुलाभमेति ।
वाजीभपूर्वैर्मणिमौक्तिकोत्थं वित्तं तथा रौप्यसुवर्णजातम् ॥ ३४० ॥

धन में कन्या हो तो राजा से धन का लाभ, घोडा, हाथी प्रभृति से धन लाभ एवं मणि, मोती, चान्दी और सुवर्ण से उत्पन्न धन को पाता है।

धनगत तुला राशि फलः—

तुलाधरे द्रव्यमुपागते धनं पुण्योद्भवं सङ्गरपूर्वसम्भवम् ।
नयार्जितं स्वं गुरुलब्धशेषकं भवेत्प्रधानःप्रतिमः कलेवरी ॥ ३४१ ॥

धन में तुला हो तो पुण्य से उत्पन्न धन, सङ्ग्रामादि से उत्पन्न धन, न्याय से उपार्जित धन एवं गुरु की प्राप्ति का अवशिष्ट धन होता है और वह पुरुष प्रधान होता है।

धनगत वृश्चिक राशि फलः—

भृङ्गे स्वगे मृन्मयमश्मजं धनं मुक्ताधरापण्यकसस्यकर्म्मजम् ।
नितम्बिनीमारपरो विचित्रकवाक्यः सुभक्तकसुरामृतान्धसाम् ॥ ३४२ ॥

धन में वृश्चिक हो तो मिट्टी तथा पत्थर से उत्पन्न धन मोती, भूमि, दुकान और अनेक कार्य से उत्पन्न धन होता है। एवं वह मनुष्य स्त्री तथा कामदेव का वशीभूत, विचित्र वचन बोलनेवाला, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धनगत धनू राशि फलः—

सारङ्गराशौ परिवारसंश्रिते पश्वादिजं धर्म्मविधानसम्भवम् ।
तथा यशस्यं विविधं स्थिरं धनं रसोद्भवं जन्मभृतामुदाहृतम् ॥ ३४३ ॥

धन में धनू राशि हो तो पशु प्रभृतियों से उत्पन्न धन, धर्म्म विधान से उत्पन्न धन, कीर्ति से उत्पन्न धन, अनेक प्रकार का स्थिर धन एवं रसों से उत्पन्न धन होता है।

धनगत मकर राशि फलः—

यदा निधाने हरिणानने नुर्जनौ प्रपञ्चैर्विविधैरुपायैः ।
सेवाभवं भूपजनस्य वित्तं विदेशसङ्गाच्च कृषिक्रियाभिः ॥ ३४४ ॥

धन में मकर हो तो प्रपञ्च तथा अनेक उपायों से, राजा की सेवा से, विदेश वास से एवं कृषि क्रिया से धन होता है।

धनगत कुम्भ राशि फलः—

हृद्रोगभे धान्यनिकेतनस्थे महाजनोत्थं द्रविणं प्रभूतम् ।
परोपकारैः फलपुष्पजातं स्यात्साधुभोज्यं सलिलोत्थितं स्वम् ॥ ३४५ ॥

धन में कुम्भ हो तो महाजनों से उत्पन्न धन, परोपकारों से से बहुत धन, फल तथा पुष्पों से उत्पन्न धन, उत्तम भक्षणीय द्रव्य एवं जल से उत्पन्न धन होता है।

धनगत मीन राशि फलः—

द्वितीयभावे पृथुरोमराशौ ताताम्बिकोपार्जितमर्थमेति ।
प्रभूतविद्यानियमोपवासैर्वित्तं निधेः सङ्गमसम्भवं च॥ ३४६ ॥

धन में मीन हो तो पिता माता के उपार्जित धन को पाता है। विद्याओं से तथा बहुत नियम उपवासों से एवं निधि के सङ्गम से धन को पाता है।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे जोशीत्युपाह्व पण्डित चक्रधरभट्टकृत भाषाटीकोदाहरणोपेते धनभावचिन्तनप्रकरणं चतुर्विंशमवसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

सहजभावचिन्तनप्रकरणं प्रारभ्यते ।

सहज भाव जन्य पदार्थों का परिज्ञानः—

भ्राता बलं साहसदक्षकर्णकरोपदेशांशुकभूषणानि ।
प्रयाणकण्ठस्वरविक्रमक्षुच्छौर्य्याख्यधैर्य्यौषधयौधवीर्य्यम् ॥ १ ॥

पित्रोर्लयं भक्ष्यविशेषमूलफलाशनं तातकमातुलादि ।
वक्षोगलस्थानसहायभृत्यदास्यादि सर्वं सहजे विलोक्यम् ॥ २ ॥

भ्राता, बल, साहस, दक्षकर्ण हस्त (हात), उपदेश, वस्त्र भूषण, प्रयाण, कण्ठस्वर, विक्रम, क्षुधा, शौर्य्य, धैर्य, औषध, यौध, वीर्य, मातृपितृ मरण, भक्ष्यविशेष, कन्दमूल फलाशन, पितृ मातुलादि, वक्षःस्थल (छाती), गल, सहाय, भृत्य दासी इत्यादि ये सब पदार्थ तृतीय भाव में विचारने चाहिएँ।

भ्रातृ सौख्य योगः—

सद्दृष्टे ऽनुजनायके निजगृहे किं कण्टके सोत्तमे
सोदर्य्येशि न पङ्कलोकितयुते वाचार्यदृष्टे सिते ।
सोत्थे वा भुजमन्दिरे तदधिभूगुर्व्वोस्ततो विक्रमे
वागीशे स्वनिकेतने बहुसुखं स्यात्सोदराणां सदा ॥ ३ ॥

सहज में सहजेश हो और वह शुभ दृष्ट हो तो (१) केन्द्र में सहजेश हो और वह पाप दृष्ट युक्त न हो तो (२) सहज में शुक्र हो और वह गुरु दृष्ट हो तो (३) सहज में सहजेश तथा गुरु हो तो (४) सहज में स्वराशि (९।१२) गत गुरु हो तो भाइयों का बहुत सुख होता है।

ज्येष्ठ भ्रातृ सौख्य योगः—

ब्रूयाज्ज्येष्ठभ्रातरं प्राप्तिभेन सत्सम्बन्धे तत्र चेद्दीर्घमायुः ।
भ्रातुः सोत्थे युक्तदृष्टे शुभेशैर्ज्येष्ठभ्रातुः सौख्यभाग् जायते ऽसौ ॥ ४ ॥

लाभ स्थान से जेष्ठ भाई के शुभाशुभ फल को कहे । लाभस्थान में शुभ ग्रह का सम्बन्ध हो तो ज्येष्ठ भ्राता की दीर्घायु होती है। तृतीय स्थान यदि शुभ ग्रह तथा स्वामी से उक्त वा दृष्ट हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष को जेष्ठ भ्राता का सुख होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भ्रातृ दीर्घायु योगः--

वीतौजसि क्षितिभवे किमु वीर्य्यभावे
भव्यान्विते ऽनुजजनस्य चिरायुराहुः ।
सद्भे ऽमलेक्षितयुते ऽनुजपे त्रिकोणे
केन्द्रे ऽनुजश्चिरसुखी च निरामयो ऽस्य ॥ ५ ॥

यदि ' मङ्गल ' निर्बल हो तो (१) अथवा तृतीय भाव शुभ ग्रह से युक्त हो तो उक्त योगों में भ्राता की दीर्घायु होती है। त्रिकोण वा केन्द्र मे शुभ राशि गत तृतीयेश हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष का भ्राता बहुत सुखी तथा रोग रहित होता है।

भ्राताओं के अल्प सौख्य योगः—

कोणे करस्थे कविकोविदाभ्यां दृष्टे ऽथ रम्यै रिपुगैररम्यैः ।
सहोदरागारगतैः सुधीन्द्राः सहोदराणां सुखमल्पमाहुः ॥ ६ ॥

तृतीय में शनि हो और वह शुक्र तथा बुध से दृष्ट हो तो (१) षष्ठ में शुभ ग्रह हों और तृतीय में पाप ग्रह हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष को भ्राताओं का अल्प सुख होता है।

सहजसुखाभाव योगः---

वसुन्धरासुताद्यदा सहोदरालयाश्रिते ।
असन्नभश्चरे तदा सहोदरस्य नो सुखम् ॥ ७ ॥

मङ्गल से तृतीय में पाप ग्रह हो तो भाईयो का सुख नहीं होता है।

भ्रातृप्राप्ति समय परिज्ञानः--

भार्यायभाग्यानुजमन्दिराणि प्रोक्तानि सोत्थस्य निकेतनानि ।
तत्तद्गृहाधीश्वरदायभुक्तौ वाच्या नराणां सहजाप्तिराख्यैः ॥ ८ ॥

सप्तम, लाभ, नवम तथा तृतीय ये चार स्थान भ्रातृसंज्ञक कहे है। उन उन भावों के स्वामि यों की दशा या अन्तर्दशा में मनुष्यों के लिए भाई की प्राप्ति कहनी चाहिए।

---

* (१) अत्र केनचिदाचार्य्येण द्वितीयस्थानमपि भ्रातृस्थानमुक्तं तच्चिन्त्यम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

* सोत्थेशतद्राशितदीयभावस्थितग्रहाणां प्रबलः खगो यः ।
तदीयदाये च हृतौ सहोत्थोत्पत्तिं वदेज्जातकशास्त्रवेत्ता ॥ ९ ॥

तृतीयेश, तृतीयभावस्थग्रह तथा तृतीयेश युक्त ग्रह इन सब के मध्य में जो अधिक बली हो उस की दशा तथा अन्तर्दशा में जातक शास्त्र जाननेवाला विद्वान् भ्राता की उत्पत्ति को कहे ।

सहोदरे साधुसमेतवीक्षिते सहोत्थनाथे सबलेऽथ कारके ।
किं वानुजेशेऽमललोकितान्विते भावे प्रपूर्णे सहसाऽथ वाऽनुजे ॥ १० ॥

मूलत्रिकोणे स्वगृहे निजोच्चभे प्राणैरुपेतेऽनुजपेऽथ बाहुपे ।
किं कारके कोणचतुष्टयस्थिते स्वोच्चे सुहृत्स्वीयगणेऽथ निर्मलैः ॥ ११ ॥

युक्तेऽमलांशे सहजे च कारके सगर्भ्यपेऽथानुगभावनायके ।
सत्खेचरे गोपुरभागसंयुते सिंहासनांशे यदि कारकग्रहे ॥ १२ ॥

किं वा बलेशे विमलेक्षितान्विते विशेषितांशे किमु कोमलांशके ।
ततोऽनुगान्नन्दनकेन्द्रदीक्षणे भव्येऽथ गेहे गलगेहभावपौ ॥ १३ ॥

सभूजनी वा भुजभे भुजङ्गमे यद्वा सहोत्पन्ननिकेतनायके ।
पुंभांशके पुंद्युचरेण लोकिते तदानुजोत्पत्तिमुदीरयेद्बुधः ॥ १४ ॥

तृतीयभाव यदि शुभग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो और तृतीयेश बलवान् हो तो (१) भ्रातृकारक (भौम) अथवा तृतीयेश शुभग्रह से दृष्ट युक्त हो और तृतीय भाव बल से परिपूर्ण हो तो (२) तृतीय में मूलत्रिकोण राशि गत स्वराशिगत वा स्वोच्चराशिगत ग्रह हो एवं तृतीयेश बलवान् हों तो (३) त्रिकोण वा केन्द्र में तृतीयेश वा भ्रातृकारक (भौम) हो और वह स्वोच्चराशि में मित्र वर्ग में वा स्ववर्ग में हो तो (४) सहज में शुभांशक हो और वह शुभग्रह से युक्त हो एवं सहजेश तथा सहजकारक ये दोनों शुभांशक में हो और शुभग्रह से युक्त हो तो (५) गोपुरांश में तृतीयेश शुभग्रह हो और सिंहासनांश मे तृतीयकारक ग्रह हो तो (६) मृद्वंशक में वा वैशेषिकांश में तृतीयेश हो और वह शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो (७) तृतीय भाव से नवम पञ्चम तथा केन्द्र में शुभ ग्रह हों तो (८) चतुर्थ में चतुर्थेश और सहजेश हों वे दोनों मङ्गल से युक्त हों तो (९) सहज में राहु हो तो(१०) पुरुष ग्रह की राशि तथा नवांश में सहजेश हो और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष को भाईयोंका लाभ होता है ।

यदाव्ययानकल्पगावशोभनाभ्रचारिणौ ।
उदीरयन्तु सम्भवं तदानुजस्य कोविदाः ॥ १५ ॥

जब व्यय तथा लग्न में पाप ग्रह हों तब पण्डितजन भाइ यों की उत्पत्ति को कहते हैं ।

---

* कैश्चित्तु सहजेशसहजस्थसहजदर्शिसहजकारकदशायां सहजोत्पत्तिरुक्ता वा सहजेशयुक्तग्रहाणां मध्ये यो बली तद्दशायां भ्रातृलाभ उक्तः सर्वमेतच्चिन्त्यमिति ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दुश्चित्कपे देहगते किमङ्गपयुक्तानुजेशे किमु कर्णमन्दिरे ।
सविग्रहेशे ऽवरजाधिनायके गर्भोभयो ऽनन्तरमस्य सम्भवः ॥ १६ ॥

लग्न में तृतीयेश हो तो (१) तृतीयेश यदि लग्नेश से युक्त हो तो (२) तृतीय में तृतीयेश हो और वह लग्नेश से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के जन्म के पश्चात् दो गर्भ के अनन्तर भाई का जन्म होता है ।

अदृश्यभागे गलपे सगर्हिते स्त्रीभे ऽथ तस्मिन् दहनग्रहान्विते ।
दृश्यस्थिते पुंग्रहवर्गसंयुते तदानुजस्योपरि नानुजो भवेत् ॥ १७ ॥

अदृश्यभाग में स्त्रीराशिगत तृतीयेश हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो तो (१) दृश्यभाग में पुरुष वर्गगत तृतीयेश हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य के भाई के ऊपर भाई नहीं होता है ।

पराक्रमेशावनिजौ नृखेटराशिस्थितौ सोदरदौ भवेताम् ।
सीमन्तिनीखेचरराशिगौ तौ सहोदरीदौ भवतां तदानीम् ॥ १८ ॥

तृतीयेश तथा मङ्गल ये दोनों पुरुष राशि में हो तो भ्राता को देते हैं । एवं तृतीयेश तथा मङ्गल ये दोनों स्त्री राशि में हों तो भगिनी (बहिन) को देते है ।

पुंखेटैर्बलवद्भिरूर्ज्जभवने पूर्णेक्षिते संयुते
पश्चात्सोत्थसमुद्भवं निगदतु प्राक्सोदरीसम्भवम् ।
सोत्थे काव्यकलावतोर्बलवतोः पश्चाद्भवेत्सोदरी
गर्भस्य क्षयमैनितो रुधिरतो ऽप्येवं तृतीये स्मृतम् ॥ १९ ॥

यदि तृतीयभाव बलवान् पुरुष ग्रहों से पूर्ण दृष्ट तथा युक्त होंतो जातक के जन्म के पश्चात भाई का जन्म और उस से प्रथम भगिनी (बहिन) का जन्म होता है । तृतीय में बलवान् शुक्र तथा चन्द्रमा हो तो जातक के जन्म के पश्चात् भगिनी होती है । एवं तृतीय में शनि वा भौम होतो जातक के जन्म के पश्चात् गर्भक्षय जानना चाहिए ।

भगिनी लाभ योगः—

कर्णस्थाने तत्पतौ कारके च युग्मर्क्षांशे सोदरीलाभमाहुः ।
शौर्य्ये तत्पे युग्मभे श्वेतकेतुदैत्यर्च्चिग्भ्यां युक्तदृष्टे तथैव ॥ २० ॥

तृतीय स्थान, तृतीयेश तथा तृतीय कारक ये तीनों सम राशि तथा सम राशि के नवांश में हों तो (१) अथवा तृतीय स्थान तथा तृतीयेश ये दोनों समराशि में हो और चन्द्र तथा शुक्र से युक्त तथा दृष्ट होतो भगिनि के लाभ को कहते है ।

सौतेले भाइयों का योगः—

प्राणान्विते परिभवे परिवारपाले
सोदर्य्यकारकखगे सखराभ्रवासे ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तन्मातृकारकमहाबिलगान्विते वा
सापत्नमातृजनिताः सहजा भयेयुः ॥ २१ ॥

अष्टम में बलवान् द्वितीयेश हो और भ्रातृकारक ग्रह (भौम) यदि पापग्रह से वा मातृकारक ग्रह से युक्त होतो सापत्नमातृज (सौतेले) भाई होते है ।

भ्रातृभगिनी संख्यापरिज्ञानः--

प्रान्त्ये विधौ सितविदोः सहजे सहोत्थाः
सप्ताथ सोत्थसदने ऽङ्गिरसीन्दुजे भे ।
सोत्थास्त्रयो ऽथ गिरि गौरविदोः फणीशे
पाथोनभे किमुत पौरुषभे तथैव ॥ २२ ॥

व्यय में चन्द्रमा और तृतीय में शुक्र तथा बुध हों तो सात भाई होते हैं। तृतीय में गुरु बुध वा शुक्र हो तो तीन भाई होते हैं। धन में गुरु तथा बुध हों और कन्या राशि में वा तृतीय में राहु होतो तीन भाई होते हैं।

ओजर्क्षभागे ऽनुजनाथकारकावसृक्पपी चित्रशिखण्डिजेक्षितौ ।
अयुग्मराशौ यदि विक्रमोपगे जातस्य पुंभ्रातर एवमीर्य्यते ॥ २३ ॥

विषम राशि तथा विषम राशि के नवांश में तृतीयेश और भ्रातृकारक हों और वे भौम, सूर्य तथा गुरु से दृष्ट हों एवं तृतीय में विषम राशि हो तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य के पुरुष भाई होते है ।

पारावतेपौरुपपस्त्यपाले पुण्यांशके पुण्यविहङ्गराशौ ।
चतुष्टये चारुविहङ्गयुक्ते सहोदराणां बहुता नराणाम् ॥ २४ ॥

पारावतांश में, शुभ ग्रह के नवांश में तथा शुभ ग्रह की राशि में तृतीयेश हो और केन्द्र में शुभ ग्रह हों तो जातक के बहुत भाई होते है ।

सहोत्थाच्छशभृद्भान्तं यावन्तो व्योमवासिनः ।
तावन्तः सहजा वेद्या इत्युक्तं गणकौत्तमै ॥ २५ ॥

तृतीय से चन्द्राधिष्ठित राशि पर्यन्त जितने ग्रह हों उन की संख्या के समान पण्डितजनों ने भाइयों की संख्या कही है ।

भृभुवः सोदरे विद्यते यावतां व्योमगानां फलं वैरिनीचर्क्षगम् ।
व्योमवासं विहायाङ्गिनस्तन्मिताः सोदराः कीर्त्तिताः कोविदैः प्राक्तनैः ॥ २६ ॥

प्रत्येक ग्रह के अष्टक वर्ग में मङ्गल से तृतीय स्थान में जितनी रेखा हों उन में से शत्रु नीच राशि गत ग्रह प्रदत्त रेखाओं को छोडकर शेष रेखाओं के तुल्य भाइयों की संख्या कही है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यदुन्मिता भ्रातृगृहे भभागाङ्काः सोदरा स्तत्प्रमिता नरस्य ।
विक्रान्तयातस्य खगस्य नन्दभागोन्मिता वा सहजा भवेयुः ॥ २७ ॥

तृतीय भाव में जो राशि तथा जिस राशि वा नवांश हो उन की संख्या के समान भाई होते हैं। अथवा तृतीय स्थान में जो ग्रह हो उस की नवांश संख्या के समान भाई होते हैं।

योषाखगौ विधिगतौ भगिनीविधत्त-
स्तत्रस्थिता नृखचराः सहजान्प्रकुर्युः ।
सोत्थेशकारकसमेतभभागतुल्याः
सोत्था उतानुजभपस्थगृहांशतुल्याः ॥ २८ ॥

नवम में स्त्रीग्रह हों तो भगिनी होती हैं। एवं नवम में पुरुष ग्रह हों तो भाई होते हैं। जिस राशि में वा जिस नवांश में तृतीयेश तथा भ्रातृकारक ग्रह हों उन की संख्या के समान भाई होते हैं। अथवा तृतीयेश की आक्रान्त राशि अथवा नवांश की संख्या के समान भाई होते हैं।

यद्वेह कारकसमन्वितभांशतुल्याः
किं तद्युताम्बरगराशिलवोन्मिता वा
किं वा तयोः किरणमानमिताः सहोत्थाः
संवादके बहुविधे प्रचुरोर्ज्जखेटात् ॥ २९ ॥

अथवा जिस राशि में वा जिस नवांश में कारकग्रह हो उस के तुल्य भाई होते हैं। अथवा तृतीयेश तथा तृतीय कारक ग्रह से युक्त राशि वा नवांश के तुल्य भाई होते हैं। अथवा तृतीयेश तथा तृतीय कारक ग्रह की राशि यों की संख्या के समान भाई होते हैं। अनेक प्रकार के मत प्राप्त होने पर अधिक बली ग्रह से भ्रातृ संख्या का विचार करे।'

यदुन्मिता व्योमसदो व्ययाययोर्ज्येष्ठाः सहोत्थाः कथितास्तदुन्मिताः ।
वीर्य्यार्थयोर्व्योमचरा यदुन्मिताः तत्सम्मिता ज्ञैरनुजा मता नृणाम् ॥ ३० ॥

व्यय तथा लाभ में जितने ग्रह हो उतने ज्येष्ठ भाई होते हैं। तृतीय तथा द्वितीय में जितने ग्रह हों उतने छोटे भाई होते हैं।

वीर्य्याधिका विक्रमनाथकारकयुक्तेक्षकास्तद्युतखेचरोन्मितान् ।
लभेत जातः सहजान्नरश्चतुर्नभश्चरास्ते बलिनो यदुद्भवे ॥ ३१ ॥

सन्तोऽनुजानां रिपुलायुराहुर्मूढाधरारातिभगा यदा ते ।
निघ्नन्ति जातानुजान् समस्तान्मिश्रं फलं चेच्छुभयुक्तदृष्टाः ॥ ३२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तृतीयेश, तृतीयकारक, तृतीयस्थ तथा तृतीय दर्शी ये चारों ग्रह बलवान् होकर जितने ग्रहों से युक्त हों उतने भाई होते हैं। जिस मनुष्य के जन्म समय में उक्त चारों ग्रह यदि बलवान् हों तो उस के भाइयों की दीर्घायु होती है। इस प्रकार पण्डितजन कहते हैं। यदि उक्त चारों ग्रह अस्तंगत नीच राशि गत वा शत्रु राशि गत हों तो उत्पन्न हुए। भाइयों का नाश करते हैं। एवं वे चारों शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो मिश्र फल होता है।

सोत्थेशपूर्वेषु चतुःखचारिषु मिश्रं फलं द्वौ बलिनौ बलान्विताः।
त्रयोऽनुजानां कृशहानिदा वधूग्रहौ त्रिकस्थौ सहजाल्पवृद्धिदौ ॥ ३३ ॥

तृतीयेश, तृतीयकारक, तृतीयस्थ तथा तृतीयवीक्षक इन चारों के मध्य में दो ग्रह बली हों मिश्रफल होता है यदि उक्त चारों के मध्य में तीन ग्रह बली हों तो भाइयों की अल्पहानि होती है। यदि त्रिक में स्त्री ग्रह हों तो भाइयों की अल्पवृद्धि होती है।

सोदर्य्यनाथादिचतुर्ग्रहेन्द्रस्फुटैक्यभागप्रमिताः सहोत्थाः।
सपत्ननीचास्तलवा विवर्ज्या निजोच्चभागा द्विगुणीकृताश्च ॥ ३४ ॥

तृतीयेश, तृतीय कारक, तृतीस्थ तथा तृतीय दर्शी इन चारों ग्रहों के स्पष्ट राश्यादियों का योग करे। तदनन्तर उस स्पष्ट योग के नवांश संख्या में शत्रु राशिगत, नीच राशि गत तथा अस्तगत ग्रहों की नवांश संख्या को हीन करे और स्वोच्च राशि गत ग्रहों की नवांश संख्या को द्विगुणित करने पर जो संख्या हो उस के तुल्य भाई होते हैं।

यावन्मिता नन्दलवाः सगर्भ्येऽब्जारेक्षितास्तत्प्रमिताः सगर्भ्याः।
आलोकिता अन्यखगैर्भगिन्यः स्वभोच्चगैर्द्वित्रिगुणं प्रकुर्य्यात् ॥ ३५ ॥

तृतीय स्थान में जितने 'नवांश' चन्द्रमा तथा भौम से दृष्ट हो उतने भाई होते हैं। एवं तृतीय स्थान में जितने नवांश अन्य ग्रहों से दृष्ट हों उतनी भगिनी होती है। यदि तृतीय स्थान स्थित नवांशों को देखने वाले ग्रह स्वराशि में हों तो उन की नवांश संख्या को द्विगुणित करे। और उच्च राशि गत ग्रहों की नवांश संख्या को त्रिगुणित करे। तब जो संख्या हो वह भाइयों की संख्या होती है।

भ्राता की उत्पत्ति के समय का परिज्ञानः—

जन्माधानाङ्गेशखेशस्फुटैक्यराशौ गौरे गोचरे सोत्थजन्म।
सम्पत्सौख्यं स्याच्चतुःस्पष्टयोगतारानाथस्यैव दाये ऽनुजानाम् ॥ ३६ ॥

जन्म लग्नेश, आधान लग्नेश तथा दशमेश इन तीनों ग्रहों के स्पष्ट राश्यादियों का योग करे तब जो राश्यादि हो उस में गोचर से जब गुरु आवे उस समय भाई की उत्पत्ति होती है। तृतीयेश, तृतीयकारक तृतीयस्थ तथा तृतीय दर्शी इन चारों के स्पष्ट राश्यादियों का योग करे तब उस राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस के स्वामी की दशा में भाइयों की सम्पत्ति तथा सौख्य को कहे।

भ्राताओं की वृद्धि के अभाव के योगः—

बन्धुस्थयोर्बान्धवसोत्थपत्योः सहोत्थवृद्धिर्न भवेन्नरस्य।
भौमेतराकाशचरान्वितौ तौ वृद्धिर्न जातस्य सहोदराणाम् ॥ ३७ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चतुर्थ में चतुर्थेश तथा तृतीयेश हों तो भाईयों कि वृद्धि नहीं होती है । अथवा चतुर्थेश तथा तृतीयेश ये दोनों मङ्गल से अतिरिक्त ग्रहों से युक्त हों तो भी भाइयों की वृद्धि नहीं होती है ।

सहजाभाव योगः—

दुःस्थौ वानुगगौ सहोत्थपकुजौ किं तावसौम्यैर्युतौ
यद्वा पङ्कनिकेतगौ विनिहतामुत्पाद्य सद्यो ऽनुजान् ।
विक्रान्ते मृदुगे ऽसृजेक्षित उतारम्ये ऽरिनीचर्क्षगे
वीर्य्ये वाघगृहे बले ऽखिलखलैः स्यात्सोदराभावभाक् ॥ ३८ ॥

त्रिक में तृतीयेश तथा मङ्गल हों अथवा वे दोनों तृतीय में हों अथवा वे दोनों पाप ग्रह से युक्त हों अथवा वे दोनों पाप ग्रह की राशि में हों तो छोटे भाइयों को उत्पन्न कर के शीघ्र मार देते हैं । तृतीय में शनि हो और वह मङ्गल से दृष्ट हो तो (१) तृतीय में शत्रु राशि गत वा नीच राशि गत पाप ग्रह हो तो (२) तृतीय में पाप राशि गत समस्त पाप ग्रह हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के भाइयों का अभाव होता है ।

यशस्वी भ्राता का योगः—

यदैकभे प्रतापपात्मकारकौ बलान्वितौ
पुरे करेशि कीर्त्तिमान्नरस्य सोदरो भवेत् ॥ ३९ ॥

तृतीयेश तथा आत्म कारक ये दोनों बलवान् होकर एक राशि में हों और तृतीयेश लग्न में हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष का भाई यशस्वी होता है ।

रोगी भ्राता का योगः—

पराक्रमस्थे रजनीशवर्गे माहेयदृष्टे सहजाः सरोगाः ।
क्रूरेक्षिते ऽस्त्रे सहजे ऽनुजस्य गले ऽस्य पित्तोत्थितगण्डमाला ॥ ४० ॥

तृतीय में चन्द्रमा के वर्ग हों और वे मङ्गल से दृष्ट हों तो 'भाई' रोग युक्त होते हैं । तृतीय में भौम हो और वह पापग्रह से दृष्ट हो तो छोटे भाई के गले में पित्तजन्य गण्डमाला होती है ।

भ्रातृस्नेहास्नेह परिज्ञानः—

सहोदरोदयेशयोः सुहृत्त्वमङ्गिनस्तदा ।
सहोदरः सखा ऽरिता तयोः सपत्नता भवेत् ॥ ४१ ॥

तृतीयेश और लग्नेश की परस्पर मित्रता हो तो भाई के साथ मित्रता होती है । यदि उन दोनों की शत्रुता हो तो भाई के साथ शत्रुता होती है ।

सविग्रहेशे बलपे परस्परं सहोदराणां प्रचुरेष्टमीरितम् ।
तौ वीर्य्यवन्तौ मिथ इष्टखेचरौ घने ऽनुजे वा ल विभागमाप्नुयात् ॥ ४२ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तृतीयेश यदि लग्नेश से युक्त हो तो भाइयों के मध्य में परस्पर घनिष्ठ प्रीति होती है। लग्न में वा तृतीय में बलवान् तृतीयेश तथा लग्नेश हो और वे दोनों परस्पर मित्र हों तो भाइयों के मध्य में विभाग (बटवारा) नहीं होता है।

भ्रातृ हानि के योगः--

ज्येष्ठं निहन्यात्सविता ऽनुजस्थो ऽसदीक्षितो ऽब्जः सकलान् ससौरिः।
राहुस्तथा हन्त्यनुजं घटेशः सर्वान्कनिष्ठान् सहजान्महीजः॥ ४३॥

तृतीय में सूर्य हो और वह पाप दृष्ट हो तो ज्येष्ठ भाई को मारता है। एवं तृतीय में चन्द्रमा हो और वह पाप दृष्ट हो तो समस्त भाइयों को मारता है। तृतीय में राहु युक्त शनि हो और वह पाप दृष्ट हो तो समस्त भाइयों को मारता है। तृतीय में पाप दृष्ट शनि हो तो छोटे भाई को मारता है। तृतीय में पाप दृष्ट भौम हो तो सब छोटे भाइयों को मारता है।

सामर्थ्यगैः किल्विषयुक्तदृष्टैः सूर्याच्छसौम्यैरुभयोर्विनाशः।
तत्र स्थितो ऽब्जस्त्रिभिरुग्रखेटैर्दृष्टो न सद्भिः सहजं निहन्ति॥ ४४॥

तृतीय में गुरु, शुक्र तथा बुध हो और वे पाप दृष्ट हों तो ज्येष्ठ कनिष्ठ भाइयों का नाश होता है। तृतीय में चन्द्रमा हो और वह तीन पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो भाई को मारता है।

नीचभे नीचभागे च सोत्थपभ्रातृकारकौ।
दुष्टषष्ठिलवे क्रूरदृष्टौ भ्रातृविनाशकौ॥ ४५॥

नीच राशि, नीचांश तथा क्रूरषष्ठ्यंश में तृतीयेश और भ्रातृकारक हों एवं वे दोनों पाप दृष्ट हो तो भाई यों को नाश करते हैं।

प्रान्त्यस्थयोः खलविलोकितयोर्बलेशा-
नन्ताभुवोः किमघभे ऽघसमेतयोर्वा।
विक्रान्तभे सहितलोकित उग्रखेटैः
पङ्क्तान्तरे सहजपे ऽथ सनिम्नराशौ॥ ४६॥

श्रोत्रे ऽसदीक्षितयुते मलिनान्तराले
दृष्टे न शोभनखगैरथ सोत्थपस्य।
राश्यंशपे व्ययगते ऽरिविमूढनिम्ने
किं नीचभे ऽनुगविभौ मृदुमान्दियुक्ते॥ ४७॥

आलोकिते ऽघखचरैरुत कारके चे-
त्सोदर्य्यभे तदधिपे ऽघविहङ्गमध्ये।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किं प्रेक्षिते श्रवणभे दहनैस्तदीशे
भावस्थिते ऽशुभखतर्कलवे ऽथ दुःस्थे ॥ ४८ ॥

तत्कारके किमनुजालयपे सपङ्के
क्रूरेक्षिते च निजतुङ्गगृहस्थिते वा ।
दुश्चित्कपस्थलवराशिपतौ यदंशे
तन्नायके ऽधरगृहे रिपुभे विमूढे ॥ ४९ ॥

किं सोत्थनाथयुतभांशविभौ यदंशे
तद्धर्त्तरि व्ययगृहे ऽथ सहोत्थनाथे ।
किं कारके सकलुपद्युचरे ऽथ पङ्कैः
स्वे ऽहौ सहोत्थ उत भाग्य इने सलेये ॥ ५० ॥

वोग्रान्वितेक्षित इलातनुजे ऽनुजे वा
विक्रान्ततः खलखगैर्गुरुमंत्रकेन्द्रे ।
वास्रे क्षते क्षयगृहे ऽहियुते ऽसिते वा
नीले ऽनुजे ऽवनिजबोधनवीक्षिते वा ॥ ५१ ॥

सांहोग्रहे शशधरे श्रुतिसञ्चयाते
दृष्टे न सद्दिविचरैः किमु मेदिनीजे ।
सौष्णांशवे द्रविणभे दनुजाधिनाथे
सामर्थ्यगे जनिमतां सहजो न जीवेत् ॥ ५२ ॥

व्यय में तृतीयेश तथा मङ्गल हों और वे पाप ग्रह से दृष्ट हो तो (१) अथवा पाप ग्रह की राशि में वे दोनों हों और वे पाप ग्रह से युक्त हों तो (२) तृतीय स्थान पाप ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त हो और पाप ग्रहों के अन्तराल में तृतीयेश हो तो (३) तृतीय स्थान नीच राशिगत ग्रह से युक्त हो, पापग्रह से दृष्ट युक्त हो पाप ग्रहों के मध्य में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो (४) तृतीयेश की नवांश राशि तथा राशि का स्वामी व्ययभाव में हो और वह शत्रुराशि में नीचराशि में वा अस्तगत हो तो (५) नीचराशि में तृतीयेश हो और वह शनि तथा गुलिक से युक्त हो एवं पाप दृष्ट हो तो (६) भ्रातृ स्थान में भ्रातृकारक हो और पापग्रहों के मध्य में भ्रातृ भावेश हो तो (७) तृतीयस्थान पापदृष्ट हो तथा तृतीय में तृतीयेश हो और वह क्रूरषड्वर्गांश में हो तो (८) त्रिक में भ्रातृकारक वा तृतीयेश हो एवं वह पाप युक्त दृष्ट हो तथा स्वोच्च राशि में हो तो (९) तृतीयेश के नवांश तथा राशि का स्वामी जिस राशि के नवांश में हो उस का स्वामी यदि अस्तगत शत्रुराशिगत वा वा नीचराशि गत हो तो (१०) तृतीयेश जिसराशि में वा जिस नवांश में हों उस का स्वामी जिस नवांश में हो उस का स्वामी व्यय भाव में हो तो (११) तृतीयेश वा भ्रातृकारक ग्रह यदि पाप ग्रह से युक्त हो तो (१२) द्वितीय में पाप ग्रह हों और तृतीय में राहु हो तो (१३) नवम में सिंह राशिगत सूर्य हो तो (१४) तृतीय में मङ्गल हो और वह पाप युक्त दृष्ट तो (१५) तृतीय से त्रिकोण तथा केन्द्र में पाप ग्रह हो तो (१६) षष्ठ में भौम हो और अष्टम में शनि हो और वह राहु से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

युक्त हो तो (१७) तृतीय में शनि हो और वह बुध तथा मङ्गल से दृष्ट हो तो (१८) तृतीय में पापयुक्त चन्द्रमा हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो (१९) द्वितीय में शनियुक्त मङ्गल हो और तृतीय में राहु हो तो उक्त योगों मे उत्पन्न मनुष्यों के भाई जीवित नहीं रहते अर्थात् भाइयों का मरण होता है।

राहौ साहौ सान्तके वा विधौ वा सारे सौरौ व्ययलग्नेऽथ सोत्थे ।
ज्ञेऽर्काराभ्यां वीक्ष्यमाणेऽथ पङ्कैः सोत्थे नो सद्वीक्षिते सोत्थनाशः ॥ ५३ ॥

तृतीय में चन्द्रमा हो और वह राहु वा शनि से युक्त हो तो (१) तृतीय लाभ वा लग्न में मङ्गल युक्त शनि हो तो (२) तृतीय में बुध हो और वह सूर्य तथा मङ्गल से दृष्ट हो तो (३) तृतीय में पाप ग्रह हों और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो उक्त योगों में भाइयों का मरण होता है।

भूजे भवे भाग्यगृहे भुजङ्गमे कान्तानिकेते यदि केणखेचरे ।
भ्रातृद्वयस्य त्रितयस्य वा क्षयः श्यामेऽनुगेऽप्युग्रनिरीक्षिते तथा ॥ ५४ ॥

लाभ में भौम, नवमे में राहु और सप्तम में शनि हो तो दो अथवा तीन भाइयों का नाश होता है। तृतीय में शनि हो और वह पाप दृष्ट हो तो भी दो वा तीन भाइयों का नाश होता है।

अतीव पङ्कैः सहिते सहोदरे तत्कारके तद्वसतीश्वरेऽथ वा ।
वदन्ति बाल्ये सहजक्षयं बुधास्तन्नाशनं स्याच्चिरकालतोऽन्यथा ॥ ५५ ॥

तृतीय भाव तृतीयकारक वा तृतीयेश अतीव पाप ग्रहों से युक्त हो तो पण्डितजन बाल्य काल में भाइयों के नाश को कहते हैं। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो अर्थात् तृतीय भावादि शुभ युक्त दृष्ट हो तो चिरकाल में भाइयों का नाश होता है।

श्वयोनिकेते सवितुः कुमारे गर्भान्वितौ द्वौ सहजौ विनष्टौ ।
सहोत्थपक्षाश्रितवित्तहानिर्वाच्या न भव्यग्रहयुक्तदृष्टे ॥ ५६ ॥

तृतीय में शनि हो तो गर्भ में दो भाई नष्ट होते हैं। यदि तृतीय गत शनि शुभ युक्त दृष्ट न हो तो भ्रातृ पक्ष के धन की हानि कहनी चाहिए।

अन्योन्यवैरिखचरौ हरिजानुजेशौ
विप्राणिनौ यदि सहोत्थपकारकाख्यौ ।
वीर्यौजसौ त्रिकगतौ च तदीयदाये
सोत्थप्रमादकलहं सहजान्वयो वा ॥ ५७ ॥

लग्नेश तथा तृतीयेश ये दोनों परस्पर शत्रु ग्रह हों और वे निर्बल हों एवं सहजेश तथा भ्रातृकारक ग्रह निर्बल होकर त्रिक स्थान में हों तो उन की दशा के परिपाक काल में भाइयों के मध्य में प्रमाद कलह अथवा भाई का मरण होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्राणाधिकैरविमलैरशुभान्तराले
बाहावधेक्षितयुते क्षतिरग्रजस्य ।
शौर्य्ये यदा स्वपतिना न युते न सद्भि-
र्दृष्टे तदान्यसहजस्य सुखं भवेन्न ॥ ५८ ॥

पाप ग्रह अधिक बली हों, तृतीय भाव पाप ग्रहों के अन्तराल में हो और पाप ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो ज्येष्ठ भाई की हानि होती है । यदि तृतीय स्थान अपने स्वामी से युक्त न हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो भाई का सुख नहीं होता है ।

नक्षत्रनाथे नवमोपयाते दोर्वेश्मनि श्याम उताहिपे वा ।
शक्तौ शुभानन्तगयुक्तदृष्टे तदा विनश्येद् भगिनीत्रयं नुः ५९ ॥

नवम में चन्द्रमा, तृतीय में शनि वा राहु हो और तृतीय स्थान शुभ ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो तीन भगिनियों का मरण होता है ।

भ्रातृ मरण काल परिज्ञानः—

विशोध्य विक्रान्तविभुस्फुटं वपुर्विभुस्फुटाच्चन्द्रमिते ऽसिताम्बरे ।
सहोदराणां मरणं वदेत्स्फुटात्तस्माद्विशोध्याभ्रपतिंकुजं यदा ॥ ६० ॥
शेषर्क्ष आयात्यसितो ऽथ वा चतुर्योगस्फुटांशे सहजात्ययं वदेत् ।
चतुः स्फुटैक्यत्रिलवर्क्षकं गते गौरे ऽनुजानां प्रलयं जगुर्बुधाः ॥ ६१ ॥

लग्नेश के स्पष्ट राश्यादि में तृतीयेश के स्पष्ट राश्यादि को हीन करे तब जो शेष राशि हो उस में जब गोचर से शनि आवे तब भाइयों के मरण को कहे । तदनन्तर उस शेष राश्यादि में दशमेश के स्पष्ट को और मङ्गल के स्पष्ट राश्यादि को हीन करे तब जो शेष राशि हो उस में जब गोचर से शनि आवे तब भाइयों के मरण को कहे । अथवा तृतीयेश, लग्नेश, दशमेश और मङ्गल इन चारों के स्पष्ट राश्यादियों का योग करे तब जो शेष राश्यादि हो उस की नवांश राशि में जब शनि आवे तब भाइयों का मरण कहे । अथवा उक्त चारों के स्पष्ट राश्यादियों के योग में जिस राशि का द्रेष्काण हो उस में जब गोचर से गुरु आवे तब भाइयों की मृत्यु को कहते हैं ।

—: उदाहरण :—

लग्नेश गुरु के स्पष्ट राश्यादि ४।१४।१३।२० में तृतीयेश शुक्र के स्पष्ट राश्यादि १।५।२५।३८ को हीन किया तो ३।८।४७।४२ शेष राश्यादि बचे । यहां कर्क शेष राशि है अतः जब गोचर से कर्क में शनि आवे तब भ्राता की मृत्यु होगी अथवा शेष राश्यादि ३।८।४७।४२ में दशमेश गुरु के स्पष्ट राश्यादि ४।१४।१३।२० को हीन किया तो १०।२४।३४।२२ शेष बचे । इन में भौम के स्पष्ट राश्यादि ४।८।९।४० को हीन किया तो ६।१६।२४।४२ शेष राश्यादि बचे । यहां शेष राशि तुला है । अतः जब गोचर से तुला में शनि आवे तब भ्राता की मृत्यु होगी ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथवा तृतीयेश शुक्र के स्पष्ट राश्यादि १।५।२५।३८।ऋणेश गुरु के स्पष्ट राश्यादि ४।१४।१३।२० दशमेश गुरु के स्पष्ट राश्यादि ४।१४।१३।२० भौम स्पष्ट राश्यादि ४।८।९।४० इन सब का योग किया तो २।१२।१।५८ राश्यादि हुए। यहां चतुर्योग राश्यादि में मकरांश है अतः मकर के शनि में भ्रातृ मरण होगा। अथवा चतुर्योग राश्यादि में तुलाका द्रेष्काण है अतः तुला के गुरु में भ्रातृ मरण होगा।

संशोध्य भौमस्फुटतो भुजङ्गमं शेषत्रिकोणे धिषणेऽनुजात्ययः।
तज्ज्येष्ठनाशोऽवनिजं भुजङ्गतो विशोध्य तद्भस्थनवांशके गुरौ ॥ ६२ ॥

अथवा भौम के स्पष्ट राश्यादि में राहु के स्पष्ट राश्यादि को हीन करे तब जो शेष राशि हो उस से जो पञ्चम वा नवम राशि हो उस में जब गोचर से गुरु आवे तब भाई की मृत्यु होती है। एवं राहु के स्पष्ट राश्यादि में मङ्गल के स्पष्ट राश्यादि को हीन करे तब जो शेष राशि हो उस के नवांश में जब गोचर से गुरु आवे तब ज्येष्ठ भ्राता की मृत्यु होती है।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट भौम ४।८।९।४० में स्पष्ट राहु ९।१४।५२।४९। को हीन किया तो ६।२३।१६।५१ शेष राश्यादि बचे। यहां शेष राशि तुला है उस से त्रिकोण राशि कुम्भ और मिथुन है इन में जब गोचर से गुरु आवे तब अनुज (छोटे भाई) की मृत्यु होगी।

स्पष्ट राहु ९।१४।५२।४९ में स्पष्ट भौम ४।८।९।४० को हीन किया तो ५।६।४३।९ शेष राश्यादि बचे। इन में मकरांश है अतः जब गोचर से मकर में गुरु आवे तब ज्येष्ठ (बड़े) भ्राता की मृत्यु होगी।

सोत्थस्थतन्नायककारकाणां सपत्ननीचत्रिकभावगानाम्।
तदीयदाये किमु भुक्तिकाले सहोत्थनाशं कथयेत्कृतीन्द्रः ॥ ६३ ॥

तृतीयस्थ, तृतीयेश तथा तृतीयकारक ये तीनों शत्रुराशि नीचराशि वा त्रिक भाव में हों तो उन की दशा में अथवा उन की अन्तर्दशा में पण्डित जन भाई की मृत्यु को कहे।

साहसी योगः—

अरिभेऽस्तमिते शुभेतरालयगे गर्हितखेचरान्विते।
निजनिश्रगृहे गलालयाधिपतौ साहसवान्नरो भवेत् ॥ ६४ ॥

तृतीयेश शत्रु राशि में हो वा अस्तगत हो वा पाप ग्रह से युक्त हो वा नीच राशि में हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष साहसी होता है।

कर्ण सौख्य योगः—

विक्रान्ताद्वाऽवस्थितः कर्णसौख्यं चिन्त्यं तज्ज्ञैस्तत्र भव्यग्रहेण।
दृष्टे युक्ते तत्पतौ शोभनानां सम्बन्धे चेत्कर्णयोः सौख्यमुक्तम् ॥ ६५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तृतीय से वा एकादश से कानों के सौख्य का विचार करना चाहिए। यदि तृतीय तथा लाभ शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हों और उन के स्वामियों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध हो तो कानों का सौख्य कहा है।

कर्ण भूषण योगः—

सोत्थे सद्धे युक्तदृष्टेऽमलेन प्राणोपेते तत्पतौ पुण्यदृष्टे ।
प्रोक्तं धीरैः कर्णयोर्भूषणं नुर्धैर्ये धिष्ण्ये मौक्तिकं वीर्य्यभाजि ॥ ६६ ॥

श्यामं हेम्ने वक्रराशौ विचित्रमानीलासृग् भास्वतीज्ये तुलस्याः ।
चन्द्रेऽदभ्रं भूषणं स्वोच्चवर्गे प्राप्ते प्राणागारपाले सुदिव्यम् ॥ ६७ ॥

तृतीय में शुभ ग्रह की राशि हो, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो एवं तृतीयेश बलवान होकर शुभग्रहों से दृष्ट हो तो युक्त योग में उत्पन्न पुरुष के कानों में भूषण होता है। तृतीय में बली शुक्र हो तो मनुष्य के कानों में मुक्ता (मोती) युक्त भूषण होता है। तृतीय में बली बुध हो तो श्याम वर्ण का भूषण एवं तृतीय में भौम राशि गत बुध हो तो विचित्र भूषण, तृतीय में बली सूर्य हो तो रक्तश्याम वर्ण भूषण, गुरु हो तो तुलसी के भूषण, चन्द्रमा हो तो बहुत भूषण और अपने वर्ग में या उच्चराशि के वर्ग में तृतीयेश हो तो जातक का उत्तम भूषण होता है।

वस्त्र तथा भूषण प्राप्ति के योगः—

विमलभेऽनुजपे विमलान्विते किमनुजे विमलेऽथ हये खगे ।
किमु बलेशसितौ बलसंयुतौ प्रकुरुतः प्रचुराम्बरभूषणम् ॥ ६८ ॥

शुभ ग्रह की राशि में तृतीयेश हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो (१) तृतीय में शुभ ग्रह हो तो (२) धनु राशि में ग्रह हो तो (३) तृतीयेश तथा शुक्र ये दोनों बलवान् हो तो बहुत वस्त्र तथा भूषण को करते हैं।

उत्तमस्वर तथा गायन सौख्य योगः—

सोज्ञे भुजे विद्गुरुदृष्टयुक्ते तत्केन्द्रगे ज्ञे धिषणे सुरम्यम् ।
कण्ठस्वरं वीर्य्यवति श्रवःपे समङ्गले गानसुखं समेति ॥ ६९ ॥

तृतीय भाव बलवान् हो और वह बुध तथा गुरु से दृष्ट वा युक्त हो अथवा तृतीय से केन्द्र में बुध वा गुरु हो तो उस के कण्ठ का स्वर अतीव सुन्दर होता है। यदि तृतीयेश बलवान् हो और वह मङ्गल से युक्त हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष गायन के सुख को प्राप्त होता है।

उत्तम कथा श्रवणादि योगः—

भोज्ञेशयोर्वीर्य्यवतोर्विदिज्यदृष्टाढ्ययोर्वा शुभभे सहोत्थे ।
सतां कथानां श्रवणं सपङ्केऽसद्धे सगर्भ्ये श्रवणं कुठारम् ॥ ७० ॥

ज्यो....८२...

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शुक्र तथा तृतीयेश ये दोनो बली हों और वे शुभ तथा शुभ से दृष्ट या युक्त हों अथवा तृतीय में शुभ ग्रह की राशि हो तो उत्तम पुरुषों की कथाओं का श्रवण होता है। यदि तृतीय में पाप राशि हो और वह पाप युक्त हो तो जातक के कर्ण (कान) कुठार (कुल्हाडा) होते है।

कर्ण रोग योगः--

भूजे भुजे प्रेतपुरीशभागगे किं मन्दमान्द्योः श्रवणे न शोभनैः।
संदृष्टयोर्वा बलभावपे ऽशुभपष्ठ्यंशके वा मलिनेक्षिते लवे ॥ ७१ ॥

केतौ किमङ्गे भरणीयपासृजोः किं भे किमस्रे विभवे व्यये ततः।
पराक्रमेशस्थभपस्थभांशपे केन्द्रे ऽघसंदृष्टयुते श्रवोगदः ॥ ७२ ॥

तृतीय में भौम हो और वह प्रेतपुरीश षष्ठ्यंश में हो तो (१) तृतीय में शनि तथा गुलिक हो और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो (३) क्रूर षष्ठ्यंश में तृतीयेश हो तो (३) कारकांश कुण्डली के लग्न में केतु हो और वह पाप दृष्ट हो तो (४) लग्न में धनेश तथा मङ्गल हों तो (५) धन में या व्यय में शुक्र या मङ्गल हो तो (६) तृतीयेश की राशि का स्वामी जिस राशि तथा नवांश में हो उस का स्वामी केन्द्र में हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो कर्ण रोग होता है।

समन्दजे महीसुते सहोदरे ऽथ सोदरे।
अशोभनैः समन्विते ऽथ वेक्षिते श्रवोगदः ॥ ७३ ॥

तृतीय में भौम हो और वह गुलिक से युक्त हो अथवा तृतीयस्थान पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो कर्ण रोग होता है।

कर्ण पीडा तथा कर्णच्छेद योगः—

सम्प्राप्तीशे ऽसाधुसंयुक्तदृष्टे कर्णस्यार्त्तिर्विक्रमायास्तकोणे।
चन्द्रारेनैर्नो सता दृष्टयुक्तैः किं भे साहौ नीचभे वेन्दुतो ऽस्ते ॥ ७४ ॥

कालो भार्की कल्पगौ वारभे ऽङ्गे तत्रार्कार्की पापदृष्टौ किमुग्रः।
युक्ते ऽरिस्थे काव्य इज्ये महीजदृष्टे तज्ज्ञैः कर्णविच्छेदमाहुः ॥ ७५ ॥

लाभेश यदि पाप ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो कानों में पीडा होती है। तृतीय, लाभ, सप्तम तथा त्रिकोण में चन्द्र, मङ्गल तथा सूर्य हों और वे शुभ से दृष्ट युक्त न हों तो (१) नीच राशिगत शुक्र यदि राहु से युक्त हो तो (२) चन्द्र से सप्तम में शनि हो और लग्न में शुक्र तथा सूर्य हों तो (३) लग्न में मङ्गल की (१।८) राशि हो और उस में पाप दृष्ट सूर्य शनि हों तो (४) षष्ठ में शुक्र हो और वह पाप युक्त हो एवं मङ्गल यदि गुरु से दृष्ट हो तो कर्ण विच्छेद (कानकटा) होता है।

महीजमन्दपुत्रयोरकस्थयोः सर्वरिपे।
स्वपे घने ऽथ सासृजि यमे ऽर्थपे तनौ तथा ॥ ७६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व्यय में भौम तथा गुलिक हों, लग्न में धनेश हो और षष्ठेश से युक्त हो तो (१) अथवा शनि यदि मङ्गल से युक्त हो और लग्न में धनेश हो तो भी कर्ण विच्छेद होता है।

बधिर योगः—

दुःस्थेऽरिपे श्यामललोकिते वा पूर्णेन्दुकव्योः सनिजद्विपोर्वा।
ज्ञारातिपत्योरघदृष्टयोर्वा सौरेः सुखे ज्ञे दरपे त्रिके वा ॥ ७७ ॥

त्र्यायत्रिकोणे दुरितैर्न चारुदृष्टैर्जनुष्मान् बधिरोऽभ्रगे भे।
नक्तं बुधेऽर्कौ किमु सज्ञकाव्येऽन्त्ये वामकर्णे श्रुतिहीनता स्यात् ॥ ७८ ॥

त्रिक में षष्ठेश हो और वह शनि से दृष्ट हो तो (१) पूर्णचन्द्रमा तथा शुक्र ये दोनों अपने अपने शत्रु से युक्त हों तो (२) बुध तथा षष्ठेश ये दोनों पाप दृष्ट हों तो (३) शनि से चतुर्थ में बुध हो और लग्नेश से त्रिक में षष्ठेश हो तो (४) तृतीय, एकादश तथा त्रिकोण में पाप ग्रह हों और वे शुभ दृष्ट न हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष बधिर (बहरा) होता है। रात्रि का जन्म हो दशम में शुक्र और षष्ठ में बुध हो अथवा व्यय में बुध युक्त शुक्र हो तो बाँये कान से कम सुनने वाला होता है।

हस्त नाशादि योगः—

काव्ये स्वान्तेऽह्नि सौम्ये सहित इनज्ञनीज्यारकैर्हस्तनाशो
माहेयाक्योस्तमास्ये गदसदनगयोः सम्भवे तद्वदेव।
शत्रुस्थाने सकाव्ये तपनतनुभवे तद्वदम्भोजिनीश-
च्छायाभूशर्व्वरीशा अहितमृतिगता बाहुबाधां प्रकुर्युः ॥ ७९ ॥

दिन का जन्म हो, चतुर्थ में शुक्र हो और बुध यदि शनि, गुरु तथा मङ्गल से युक्त हों तो हस्त (हाथ) का नाश होता है। राहु के मुख में मङ्गल तथा शनि हों और वे षष्ठ में हों अथवा षष्ठ में शुक्र युक्त शनि हो तो भी हाथ का नाश होता है। षष्ठ तथा अष्टम में सूर्य, शनि तथा चन्द्रमा हों तो हस्त पीडा को करते हैं।

हस्त च्छेद योगः—

उतव्यानुजे दोषि शस्तेऽसिते वा व्यये नैधनेऽर्केऽथ चन्द्रे लये ऽम्ने।
महीनन्दनेनाथवेन्द्रार्चितेन युते छेदनं हस्तयोर्मानुषस्य ॥ ८० ॥

तृतीय में गुरु और नवम में शनि हो तो (१) व्यय वा अष्टम में शनि हो तो (२) अष्टम वा सप्तम में चन्द्रमा हो और वह मङ्गल से वा गुरु से युक्त हो तो मनुष्य का हस्तच्छेद होता है।

महीजभेऽङ्गे सखले शनौ हरौ तथाऽरिणापूर्णदृशा विलोकिते।
मान्द्ये मृदौ वैरिगृहेऽथ मृत्युगैर्मन्दोरगारैः करपादयोश्छिदा ॥ ८१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लग्न में मङ्गल की (१।८) राशि हो और उस में पाप ग्रह हो एवं सिंह में शनि हो तो (१) षष्ठ में शत्रु राशिगत शनि हो और वह शत्रु से पूर्ण दृष्ट हो तो (२) शनि, राहु तथा मङ्गल ये तीनों अष्टम स्थान में हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष के हाथ पांव कटते हैं।

कलानिधौ कृष्णदले कलत्रगे कलेवरे कृष्णरुचौ विधुन्तुदे।
दारोपयाते दिवि दैत्यवन्दिते विच्छिन्नबाहुर्जनितः सहांघ्रिणा ॥ ८२ ॥

सप्तम में कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा हो, लग्न में शनि, सप्तम में राहु और दशम में शुक्र हो तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य के हाथ पांव कटते हैं।

विक्रमी योगः—

सांघ्रे सहोत्थे किमु सौम्यदृष्ट्याधिक्ये ऽथ वा शौर्यपतौ सशक्तौ।
किं केन्द्रकोणे ऽनुगपे ऽथ कण्ठकायेशयोगे ऽतिपराक्रमी स्यात् ॥ ८३ ॥

तृतीय में पाप ग्रह हो तो (१) तृतीय स्थान बहुत शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो (२) तृतीयेश बली हो तो (३) केन्द्र वा त्रिकोण में तृतीयेश हो तो (४) तृतीयेश तथा लग्नेश का योग हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष विक्रमी (अधिक पराक्रमवाला) होता है।

शूर योगः—

शूरो नरो यस्य जनौ रजन्यां बलाकुमारे बलभाजि खे ऽङ्गे।
वांशात्सहोत्थे दहनग्रहे ऽथो शूरो बली चास्तमये महीजे ॥ ८४ ॥

रात्रि का जन्म हो, लग्न वा दशम में बलवान् मङ्गल हो अथवा कारकांश कुण्डली के लग्न से तृतीय में पाप ग्रह हो तो शूर वीर होता है। सप्तम में मङ्गल हो तो बलवान् तथा शूर वीर होता है।

धीर योगः—

धीरः स्वभोच्चसखिभे सबले त्रिकोणे
केन्द्रे विशेषितलवे बलभेशि भव्यैः।
दृष्टे ऽथ सङ्गलवगे ऽमलदृष्टयुक्ते
सोत्थेश्यथो ससितगौ सभगे भुजेशे ॥ ८५ ॥

[illegible] में वा मित्र राशि में बलवान् तृतीयेश हो और वह केन्द्र वा त्रिकोण में हो, [illegible] से दृष्ट हो तो (१) शुभ ग्रह की राशि में तथा नवांश में तृतीयेश हो और वह (२) तृतीयेश यदि सूर्य वा चन्द्रमा से युक्त हो तो उक्त योगों में मनुष्य धैर्य

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धैर्य्यनाश योगः—

अचारुनाकचारिभिर्युतेक्षिते दयादये ।
विनाशवैरि रिःफगे नरस्य धैर्य्यनाशनम् ॥ ८६ ॥

त्रिक में नवमेश और बह प,प ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो मनुष्य के धैर्य का नाश होता है ।

कातर योगः—

स्यात्कातरोऽङ्गे विबलेन भूसुवा विलोकिते स्वीयभगेन तेन वा ।
दृष्टे घने वा दिवि मन्दगामिनि नक्तं किमंशाद्विमले बलालये ॥ ८७ ॥

यदि 'लग्न' निर्बल मङ्गल से दृष्ट हो तो (१) अथवा 'लग्न' स्वराशि (१।८) गत मङ्गल से दृष्ट हो तो (२) रात्रि का जन्म हो और दशम में शनि हो तो (३) कारकांश लग्न से तृतीय में शुभ ग्रह हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष कातर (डरपोक) होता है ।

भृतक योगः—

सद्वीक्षणोनैर्मिहिरारमन्दगैः खेवान्तिमेभेऽधरभे यमांशके ।
अस्तेऽब्जभान्वोः शनिदृष्टयोरुताभ्रेऽर्घनदृष्टे शुभदैर्भृतिं भुजः ॥ ८८ ॥

दशम में सूर्य, मङ्गल तथा शनि हों और वे शुभ दृष्ट न हो तो (१) व्यय में नीचराशि गत तथा शनि नवांश गत शुक्र हो और सप्तम में चन्द्र तथा सूर्य हों और वे शनि से दृष्ट हों तो (३) दशम में पाप ग्रह हो और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य भृतक (नौकर) होता है ।

भनाथभांशेशभपार्य्यभास्करैर्वैर्य्यंशगैर्निम्नपभागगैः किमु ।
दासाः स्युरेभ्यः क्रमशोऽल्पमध्यमादभ्रैर्भरण्यक्रयगर्भसम्भवाः ॥ ८९ ॥

चन्द्रमा, की राशि तथा नवांश का स्वामी; चन्द्रमा, गुरु तथा सूर्य ये सब शत्रु के नवांश में अथवा अपनी नीच राशि के स्वामी के नवांश में हो तो क्रम से अल्प, मध्यम तथा बहुतों से भरण्य (पोषणीय), क्रय (खरीद-किये हुए) तथा गर्भ सम्भव (दास दासी से उत्पन्न) दास (भृत्य) होते हैं ।

राजप्रेष्य योगः—

भागेऽर्कभार्गवेक्षिते किं वांशतोऽम्बरालये ।
युक्तेक्षितेऽब्जजन्मना भृत्यो वसुन्धराभृताम् ॥ ९० ॥

कारकांश लग्न यदि सूर्य तथा शुक्र से दृष्ट हो अथवा कारकांश लग्न से जो दशम स्थान हो वह बु. युक्त वा दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष राजभृत्य होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दास युक्त योगः—

चतुष्टये वा प्रतिभातपोगृहे राज्येश्वरे व्योम्नि समन्दगेऽरिपे ।
किं वाऽऽस्पदे भव्यविहङ्गवीक्षणाधिक्ये यदा किङ्करसंयुतो भवी ॥ ९१ ॥

केन्द्र पञ्चम वा नवम में दशमेश हो और दशम में शनि युक्त षष्ठेश हो अथवा दशम में शुभ ग्रहों की अधिक दृष्टि हो तो मनुष्य दासों से युक्त होता है।

बहु दास युक्त योगः—

व्यापारभेशांशविभौ पतङ्गजे वैरीशसम्बन्ध उतप्रभाकरे ।
महीपभावे नवमास्पदाधिपसंवीक्ष्यमाणे बहुदासमम्भवः ॥ ९२ ॥

दशमेश के नवांश का स्वामी यदि शनि हो और उस का षष्ठेश से सम्बन्ध हो तो (१) दशम में सूर्य हो और वह नवमेश तथा दशमेश से दृष्ट हो तो बहुत दासों से युक्त होता है।

दास स्त्री के सहयोग का योगः—

भृगोर्जनात्रपायगे सदभ्रगामिमन्दिरे ।
लवे यमस्य किङ्करावलारतः शरीरभृत् ॥ ९३ ॥

व्यय में शुभराशिगत शुक्र हो और वह शनि के नवांश में हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष दास की स्त्री के साथ सहवास करनेवाला होता है।

सहजगत रवि फलः—

शौर्य्ये सूरे ज्येष्ठनाशोऽनुजोनो वेदाक्षेभादित्यवर्षे व्यथा स्यात् ।
पापैर्युक्ते शौर्य्यवान् क्रूरकर्त्ता द्विभ्रात्राढ्यः कीर्त्तिमान् स्वार्थभोगी ॥ ९४ ॥
युद्धे शूरः सद्युते सोदरर्द्धिर्भावेशेऽघाढ्येक्षिते भ्रातृनाशः ।
सद्युक्तेऽर्थी भोगवान् सौख्यभाक् च स्याद् दीर्घायुः सोदराणां सवीर्य्ये ॥ ९५ ॥

सहज में सूर्य हो तो ज्येष्ठ भ्राता का नाश, छोटे भ्राता से रहित एवं ४।५।८।१२ वर्ष में शरीर पीडा होती है। यदि सहजगत सूर्य पाप युक्त हो तो पराक्रमी, क्रूर कर्म करनेवाला, दो भाइयों से युक्त, यशस्वी, अपने द्रव्य का उपभोग करनेवाला एवं सङ्ग्राम में शूर वीर होता है। यदि वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो भाइयों की वृद्धि होती है। तृतीयेश यदि पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो भाइयों की हानि और शुभ युक्त हो तो धनवान्, भोगवाला तथा सुखी होता है। एवं सहजेश बलवान् हो तो भाइयों की दीर्घायु को करता है।

सहजगत चन्द्र फलः—

सामान्यः स्याद् भगिन्या पवनयुततनूरन्ध्रहीनोऽल्पभाग्यो
मेधावी सोदरर्द्धिर्भवति च पिशुनो गोलुलायादिहीनः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राज्ञो दण्डेन वर्षे युगयमलमिते भाविरूपेण यस्य
विच्छेदः स्याद् धनानां शशभृति सहजे जन्मकाले जनस्य ॥ ९६ ॥

सहज में चन्द्रमा हो तो बहिनों के लिए सामान्य, वायु युक्त शरीर, अन्न से रहित, अल्प भाग्यवाला, धारणा बुद्धिवाला, भाइयों की वृद्धि, पिशुन, गौ महिषी प्रभृतियों से रहित, एवं भाविरूप से पुरुष के २४ वें वर्ष में राजदण्ड से धन का नाश होता है।

सहजगत भौम फलः—

कुजेऽनुजे नोत्तमवीक्षिते यदि तदाऽस्य कान्ता व्यभिचारिणी भवेत्।
न द्रव्यलाभः परिवर्जितोऽनुजस्तमोग्रहाढ्ये गणिकाप्रसङ्गभाक् ॥ ९७ ॥

क्लेशेन युक्तः सुभगः सहोदरद्वेषी तथाल्पानुज उग्रखेचरैः।
युक्तेक्षिते सोदरनाश उच्चभे स्वभे च तस्मिन्सुविहङ्गमान्विते ॥ ९८ ॥

स्याद् विक्रमी धैर्ययुतः सहोदरोऽस्य दीर्घजीवी युधि शूर उद्भवः।
असाधुखेटैः सहिते सुहृद्गृहे तदा मनुष्यो धृतिमानुदाहृतः ॥ ९९ ॥

सहज में भौम हो और वह शुभ दृष्ट न हो तो उस मनुष्य की स्त्री व्यभिचारिणी, उस को द्रव्य का लाभ न हो और वह भाइयों से रहित होता है। यदि वह सहज गत भौम राहु से या केतु से युक्त हो तो वेश्यागामी क्लेश युक्त, ऐश्वर्यवान्, भाइयों से वैर करनेवाला और अल्प अनुजवाला होता है। यदि सहज गत भौम पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो भाइयों का नाश होता है। एवं उच्च राशिगत या स्वराशिगत भौम सहज में हो और वह शुभग्रह से युक्त हो तो धैर्यशाली, पराक्रमी तथा उस का भाई दीर्घायुवाला और युद्ध में शूर वीर होता है। यदि मित्र राशिगत भौम सहज में हो और वह पाप युक्त हो तो धैर्यशाली होता है।

सहजगत बुध फलः—

वीर्ये ज्ञे बहुसौख्यवान् सहजवान् घस्रप्रमेऽब्दे ङ्गभू-
क्षेत्रार्थैः सहितश्च सद्गुणयुतो भावेश्वरे प्राणिनि।
दीर्घायुर्धृतिमान्नरोऽस्य सहजः स्याद्दीर्घजीवी यदि
तस्मिन्वीतबले तदा भययुतो भ्रातुर्व्यथा जायते ॥ १०० ॥

सहज में बुध हो तो बहुत सौख्यवाला, भ्रातावाला, १५ वें वर्ष में पुत्र, क्षेत्र तथा धन से युक्त एवं सद्गुणों से युक्त होता है। यदि तृतीयेश बलवान् हो तो दीर्घायु तथा धैर्यशाली और उस के भाई की भी दीर्घायु होती है। यदि तृतीयेश निर्बल हो तो भय से युक्त और भ्रातृजन्य कष्ट होता है।

सहजगत गुरु फलः—

गीर्वाणमंत्रिणि सहोभवनेऽतिलुब्धः
सङ्कल्पसिद्धिकर एष सहोत्थवृद्धिः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दाक्षिण्यवाञ्जनुपि बान्धवदोषकृत्स्याद्
वर्षेऽष्टपावक्रमिते सति यानसिद्धिः ॥ १०१ ॥
भावेश्वरे प्राणिनि सोदराणां दीर्घायुरुग्रैः सहिते तदीशे ।
सहोत्थनाशो जडशेमुषी च धर्म्मोज्झितो देहधरो दरिद्रः ॥ १०२ ॥

सहज में गुरु हो तो अति लोभी, सङ्कल्प सिद्धि वाला, भाइयों की वृद्धि, दाक्षिण्यवाला तथा बन्धुजनों को दोष करनेवाला एवं ३८ वें वर्ष में वाहन का लाभ होता है । यदि सहजेश बली हो तो भाइयों की दीर्घायु होती है । यदि वह पाप युक्त हो तो भाइयों का नाश, मूर्ख बुद्धि, धर्मरहित तथा दरिद्र होता है ।

सहजगत शुक्र फलः—

सङ्कल्पसिद्धिरनुजोपचयोऽतिलुब्धः ।
पश्चात्सहोदरजनस्य भवेदभावः ।
दाक्षिण्यवान् सहजतत्पर एव वित्त-
भोगान्वितो भृगुभवे भुजभावयाते ॥ १०३ ॥
भावपे सौजसि स्वोच्चे स्वभे सोदरसौख्यकृत् ।
दुःस्थाने दुरितोपेते सोदराणां क्षयो भवेत् ॥ १०४ ॥

सहज में शुक्र हो तो सङ्कल्प की सिद्धि, भाइयों की वृद्धि, अति लोभी, अपने जन्म के पश्चात् सहोदरों का अभाव होता है । एवं वह मनुष्य चतुर, भाइयों में प्रीति रखने वाला, धन तथा भोग से युक्त होता है । यदि सहजेश बली हो स्वोच्च राशि में वा स्वराशि में हो तो भाइयों की वृद्धि करनेवाला होता है । यदि वह पाप युक्त हो तो भाइयों का नाश होता है ।

सहजगत शनि फलः—

दुश्चिक्यस्थे सूनुसूनावहृष्टो दुर्वृत्तः स्याद्धानिकृत्सोदराणाम् ।
तस्मिन्स्वोच्चे स्वीयभे सोत्थवृद्धिः सोत्थद्वेषी संयुते पामरेण ॥ १०५ ॥

सहज में शनि होतो आनन्दरहित, दुश्चरित्र एवं भाइयों की हानि करता है । यदि सहजगत शनि स्वोच्च-राशि में वा स्वराशि में हो तो भाइयों की वृद्धि और पापयुक्त होतो भाइयों से वैर करनेवाला होता है ।

सहजगत राहु फलः—

सिंहीसुतौ सोदरस्थानसंस्थे निष्पावाणां कोद्रवाणां तिलानाम् ।
मुद्गानां वा ना समृद्ध्या समेतः सत्संयुक्ते लाञ्छनं कण्ठदेशे ॥ १०६ ॥

सहज में राहु हो तो निष्पाव (राजमाष), कोद्रव (कोदों), तिल तथा मूंग की वृद्धि से युक्त होता है । यदि शुभ युक्त हो तो कण्ठ प्रदेश में लाञ्छन (चिह्न) होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहजगत केतु फलः--

ध्वजो भुजस्थो जनयेद्विवैरिणं बाहुव्यथं बन्धुविहीनमर्थिनम् ।
ऐश्वर्य्यतेजोगुणभाजमङ्गिनं तस्मिन्नुदासीनसुखी स्वतुङ्गगे ॥ १०७ ॥

सहज में केतु हो तो शत्रुरहित, बाहुपीडा वाला, बान्धवजनों से रहित, धनी ऐश्वर्यवान् तेजस्वी तथा गुणी पुरुष को उत्पन्न करता है। यदि वह उच्च राशि में होतो उदासीन स्वभाव तथा सुखी होता है।

सहजगत रव्यादियोंका संक्षिप्तफलः—

स्वार्क्षे नखाब्दे कुरुते भगोऽनुजस्थोऽब्जोऽग्नितुल्येऽक्षमितेऽब्दके तथा ।
बुधोऽर्कवर्षेऽनुजसौख्यदो हरेत्सुतीर्थसौख्यं त्रिपणः प्रयच्छति ॥ १०८ ॥
राज्येष्टसौख्यं नखरोडुवत्सरे सुतीर्थयात्रां दशवत्सरे श्रितः ।
त्रिश्वोन्मितेऽब्दे वसुदा बलोपगा वक्राहिवैरोचनिवैजयन्तकाः ॥ १०९ ॥

सहज में सूर्य हो तो २० वे वर्ष में धनकी प्राप्ति, चन्द्रमा होंतो तीसरे वा ५ वे वर्ष में धनकी प्राप्ति, बुध हो तो १२ वें वर्ष में भ्रातृसौख्य एवं पुत्र, धन तथा सौख्यकी हानि, गुरु हो तो २० वें वा २७ वें वर्ष में राज्य इष्ट तथा सौख्य, शुक्र हो तो १० वें वर्ष में तीर्थयात्रा एवं भौम, राहु, शनि तथा केतु होंतो १३ वें वर्ष में धन को देते है।

रवि दृष्ट सहज फलः—

आदित्यः परिलोकयेत्सहजभं भ्रातुः सुखं नश्यति
सत्त्वे वाभिभवो भयं निजविधौ भूपादतीव स्मरी ।
कान्तास्वान्तहरः सुदृग्वदनतः सन्तुष्टभोगी महान्
सौख्याढ्योऽतिपराक्रमी विगतशुग्रोगः सुधीरः शठः ॥ ११० ॥

तृतीय को सूर्य देखता हो तो भाई के सुख का अभाव, पराक्रम में तिरस्कार, भाग्योदय में राजा से भय अति कामी, सुन्दर नेत्र मुख के कारण स्त्री के चित्त को मोहने वाला, अतीव सन्तोष तथा भोगवाला, सुखी अति पराक्रमी, शोक रोग रहित, अतीव धैर्यशाली और शठ (दुर्जन) होता है।

चन्द्र दृष्ट सहज फलः--

विक्रान्ते परिलोकिते सितरुचा स्कन्धे सुलक्ष्मादिका
ङ्गोपेतो वनदुर्गसेवनपरस्तन्वा विशालः स्वसुः
स्यादुत्पत्तिकरस्तथाऽऽद्ययसि प्रागर्थतोऽर्थं सुखं
पूर्णार्थप्रद उत्तरे पृथुभुजस्त्रस्तो विवादेन ना ॥ १११ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तृतीयभाव यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो स्कन्धों में लक्ष्मादि चिह्न वाला वन तथा दुर्ग (किला) में वास करने में तत्पर, विशाल शरीर वाली वहिन वाला, प्रथमावस्था में पूर्व सञ्चित धन से धन तथा सुख और उत्तरा, वस्था में सम्पूर्ण अर्थ को देता है। एवं वह मनुष्य स्थूल बाहु वाला और विवाद से त्रस्त होता है।

भौम दृष्ट सहज फलः—

माहेयेन निरीक्षितेऽनुजगृहे तीव्रस्वभावोऽन्यहृद्-
हर्त्ता सङ्गरवल्लभो नृपगृहे मान्यो विदेशे तथा।
स्कन्धेनैप निपीडितो जननवान् स्यात्सोदराणां क्षयः
सिद्धिं याति पराक्रमेण महता युक्तः प्रतापेन सः॥ ११२॥

सहज भाव यदि भौम से दृष्ट हो तो तीव्रस्वभाव, दूसरों के चित्त को आकर्षण करने वाला, सङ्ग्राम में प्रीति रखने वाला, राजदरबार में तथा विदेश में मान्य, स्कन्धसे पीडित और उस के भाइयों का नाश एवं वह मनुष्य पराक्रम से सिद्धि को पाकर प्रतापी होता है।

बुध दृष्ट सहज फलः—

दुश्चिक्ये क्षणदाधिनाथजनिना संवीक्षिते तीर्थकृद्
दीर्घायुर्वसुधाधिपः सुचतुरः प्रस्तावबाक्ये जनः।
व्यापारे निरतः सहोत्थसुखयुक् स्यादुद्यमी प्राणिषु
श्रेष्ठो रोपविनोदयुक् सुकुशलो विद्वद्विवादे तथा॥ ११३॥

सहज भाव यदि बुध से दृष्ट हो तो तीर्थ करनेवाला, दीर्घायु, भूमिका स्वामी, प्रस्तावरचना में अति चतुर, व्यापार में लीन, भाइयों के सुख से युक्त, उद्योगी, प्राणियों में श्रेष्ठ, रोष तथा विनोद से युक्त एवं विद्वज्जनों के विवाद में अति चतुर होता है।

गुरु दृष्ट सहज फलः—

वीक्षितानुजमन्दिरं मतिसखस्तातोज्झितो गर्वितः
सोत्थानां सुखसंयुतः सुबलवान् धीमान्मनस्वी पितुः।
स्वाढ्यो बन्धुकुटुम्बयुक् किल सदाचारान्वितो विक्रमी
सञ्जातो निजकर्म्मपक्षसहितो धीरैः सुधीरो मतः॥ ११४॥

सहज को गुरु देखता हो तो वह मनुष्य पिता से रहित, गर्ववाला, भ्रातृ जन्य सुख से युक्त, अतिबली, बुद्धिमान्, मनमानी करनेवाला, पिता के धन से युक्त, बान्धवजनों से तथा कुटुम्ब से युक्त, सदाचारी, अति पराक्रमी, अपने कार्य पक्ष से युक्त और अतीव धैर्यशाली होता है।

शुक्र दृष्ट सहज फलः—

दैत्यामात्यविलोकिते बलगृहे ना निम्नगानां स्पृही
भ्रातॄणां सुखयग् जितारिनिचयः स्त्रीणां विलासी तथा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कन्याजन्मकरो विदेशनिरतो भूदेवतादेवता-
भक्तः सत्सखिसंयुतो नृपजनैः सम्पूजितः पुष्टियुक् ॥ ११५ ॥

सहज यदि शुक्र से दृष्ट हो तो वह मनुष्य नदियों का अभिलाषी, भ्राताओं के सुख से युक्त, शत्रु समूह को जीतने वाला, स्त्रियों का विलासी, कन्याओं को उत्पन्न करने वाला, परदेश में वास करनेवाला, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, उत्तम मित्रों से युक्त राजाओं से पूजित एवं पुष्टि से युक्त होता है।

शनि दृष्ट सहज फलः—

दृष्टेऽनुजेऽर्कजनिना विजितारिपक्षो
मित्रोज्झितो बहुपराक्रमवान्बलिष्ठः।
तुच्छोद्यमी क्षयगदी मलिनोऽलसश्च
जातः प्रतापसहितोऽनुजसौख्यहीनः ॥ ११६ ॥

सहज यदि शनि से दृष्ट हो तो शत्रु पक्ष को जीतने वाला, मित्रों से रहित, बहुत पराक्रमी, अतिबली, अल्प उद्यम वाला, क्षय रोगवाला, मलिन, आलसी, प्रतापी एवं भाइयों के सौख्य से रहित होता है।

लग्न गत सहजेश फलः—

स्याल्लम्पटोऽतिचपलोऽतिसुखीदृढो वा-
ग्वादी जयी स्वजनभेदकरः कुमित्रः
सेवापरः कपटकूटकरः सवीर्य्यः
क्रूरात्मको हरिजगेऽनुजमन्दिरेशे ॥ ११७ ॥

लग्न में सहजेश हो तो लम्पट (व्यभिचारी), अति चञ्चल, अतिसुखी, दृढगात्र, वचन से विवाद करने वाला, विजयी, परिजनों में भेद करनेवाला, निन्दित मित्र वाला, सेवा कार्य करनेवाला, कपट कूट करनेवाला, बली तथा क्रूर स्वभाव वाला होता है।

वीर्य्याधिपे विग्रहवेश्मगामिनी यद्वा भवस्थे स्वभुजार्जितार्थवान्।
मूर्खः कृशाङ्गः परसेवको महाक्रोधी तथा साहससंयुतो भवी ॥ ११८ ॥

लग्न वा लाभ में सहजेश हो तो अपनी भुजाओं से उपार्जित धन वाला, मूर्ख, दुर्बल शरीर, दूसरों का दास,, अति क्रोधी तथा साहसी होता है।

धन गत सहजेश फलः—

स्वे सोत्थपे सुजनतो जनतोपकृन्ना
गेहार्थभाक् श्रुतिबलोऽतिबलोऽल्पकर्मा।
स्थूलोऽसुखी जनपदे न कदा पदेन
जन्तुर्व्रजेदतिपराक्रमवाननुष्णः ॥ ११९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तथा गुदाभाञ्जनिकः पराबलावित्ते रुचिः पङ्कखगेऽल्पजीवितः ।
बन्धोर्विरोधी विधितः स भिक्षुकः सत्खेचरे शौर्ययुतस्तथेश्वर ॥ १२० ॥

धन में सहजेश हो तो उत्तमजनों से जनों को सन्तुष्ट करनेवाला, गृह तथा धनवाला, वेदवेत्ता, अतिबली, अल्प कर्म करनेवाला, स्थूल शरीर तथा सुख रहित होता है। एवं वह मनुष्य कभी पैदल यात्रा को न करे। और वह अति पराक्रमी, शीतल स्वभाव गुदा इन्द्रिय को भञ्जन करनेवाला और उस की पराई स्त्री तथा धन में रुचि होती है। तृतीयेश पापग्रह हो तो अल्पायु, बन्धुजनों का विरोधी तथा भाग्यवश भिक्षुक होता है। यदि तृतीयेश शुभ ग्रह हो तो बलवान् तथा समर्थ होता है।

सहज गत सहजेश फलः--

सामर्थ्यसद्मनि पराक्रमपस्त्यपाले
विप्रप्रियः शुभजनैर्भजनैकसक्तः
भृत्यान्वितः सुवचनः सुजनाश्रितश्च
युक्तः सुतैर्नृपतिलाभपरः सुहृष्टः ॥ १२१ ॥

सुहृत्सुयोधो गुरुदेवपूजको जनः शुभस्तुल्यपराक्रमी तथा ।
नृपस्य मंत्री निपुणश्च सौहृदेऽश्नुते सुखं चाद्भुतमर्थसंयुतः ॥ १२२ ॥

सहज में सहजेश हो तो ब्राह्मणों का प्रिय, उत्तमजनों के कारण भजन में दत्तचित्त, दासों से युक्त, सुन्दर वचन बोलनेवाला, उत्तमजनों का आश्रित, पुत्रों से युक्त राजा से धन लाभ वाला, अति हर्षित, उत्तम हृदय, उत्तम योधा, गुरु तथा देवताओं का पूजक, समानपराक्रमी, राज मंत्री, मित्र भाव में चतुर, धन से युक्त एवं अद्भुत सुख को भोगता है।

सुखगत सहजेश फलः--

बन्धौ विक्रमपेऽरिहा सुकृतधीर्वैरं जनन्या समं
यानाम्बागृहसौख्ययुक् त्वतिसुखी तातानुजानां सुखम् ।
स्यात्तेषामुदयः कृती कृतमतिर्भोगैः समग्रैर्युतः
संयुक्तः सुहृदां सुखेन मनुजोऽर्थानां पितुर्भक्षकः ॥ १२३ ॥

सुख में सहजेश हो तो शत्रु नाशक, पुण्य बुद्धि, माता के साथ वैर वाहन, माता तथा गृह के सुख से युक्त अतीव सुखी, पिता के भाइयों का सुख और उन का उदय, पण्डित, कृत बुद्धि, समस्त भोगों से युक्त, मित्रों के सुख से युक्त एवं पिता के धन का उपभोग करने वाला होता है।

ओजोऽधिराजे जनके जलालये यद्वाङ्गजाते विविधाप्तिसौख्यवान् ।
धीमान्महानस्य जनस्य कामिनी सुनिष्ठुरा स्यादिति कोविदा विदुः ॥ १२४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दशम सुख वा पञ्चम में तृतीयेश हो तो अनेक प्रकार की प्राप्ति से सुखी तथा बड़ा बुद्धिमान् होता है। एवं उस की स्त्री अतिनिष्ठुर होती है। इस प्रकार पण्डितजन कहते हैं।

सुख गत सहजेश फलः--

दीर्घायुः सुकृती सुखी विषयभुक् पाल्यः सुतैर्बान्धवैः
सोदर्य्यैश्च परोपकारनिरतः सुस्वापतेयान्वितः।
साङ्गोत्थो ललिताङ्ग एष जनिमान् क्षन्ताऽङ्गजस्थे सहो-
नाथे सत्यपि पावकेतरगणे शीतांशुतुल्यच्छविः ॥ १२५ ॥

पञ्चम में तृतीयेश होतो दीर्घायु, पुण्यात्मा, सुखी, विषय भोगी पुत्र, बान्धव तथा भ्राताओं से पालित, परोपकार में लीन, उत्तम धन तथा पुत्र से युक्त, मनोहर शरीर तथा सहन शील होता है। यदि शुभग्रहों के वर्ग में सहजेश होतो चन्द्रमा के समान कान्ति वाला होता है।

रिपु गत सहजेश फलः--

भूलाभ्यक्षिगदी वशी रिपुभिया क्षुक्षमो व्रती संयमी
भ्राताऽरिः सहजः सहानुजजनैर्मित्रैर्विरोधो भवेत्।
मातुल्यां रतिमिच्छति क्षतगते वीर्याधिराजेऽम्बिका
भ्रातॄणां न सुखं सरुक् क्रययुतः स्याद् दुष्टता सज्जनात् ॥ १२६ ॥

षष्ठ में सहजेश हो तो भूमिलाभ वाला, नेत्ररोगी, वशीभूत, शत्रु के भय से दुर्बल, व्रती, संयमी और उसका भ्राता नैसर्गिक शत्रु होता है छोटे भाइयों से तथा मित्रों से वैर, मामी से संभोग की इच्छा वाला, मामाओं के सुख से वर्जित, रोग तथा क्रय से युक्त होता है। एवं उस की सज्जन से दुष्टता होती है।

जाया गत सहजेश फलः--

प्राणेश्वरे परिणये सुभगो जितारिः
स्त्रीवैरकृच्च तपसा जितवन्दितश्च।
युक्तो बलेन सुपराक्रमवानगार-
गोवित्तपञ्चशरदीप्तियुतो जनुर्भृत् ॥ १२७ ॥

भव्ये विहङ्गे युवतिः शरीरिणः सती च सौभाग्यवती च सुन्दरी।
क्रूरे वधूवैरकरोऽल्पशक्तिमानस्याङ्गना देवरमन्दिरं व्रजेत् ॥ १२८ ॥

सप्तम में सहजेश होतो ऐश्वर्य्यवान्, शत्रु को जीतने वाला, स्त्री के साथ वैर करने माला, तप के कारण अतीव पूजनीय, बलवान्, अतिपराक्रमी एवं गृह, गौ धन तथा कामदेव की कान्ति से युक्त होता है। यदि सहजेश शुभग्रह होतो उस की स्त्री पतिव्रता, सौभाग्यवती और सुन्दरी होती है। सहजेश पापग्रह हो तो स्त्री के साथ वैर करनेवाला अल्प समर्थ वाला और उस की स्त्री देवर के घर में चली जाती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चित्तोत्थेऽन्ते वोर्ज्जगेहेशि चौर इच्छेदन्यस्त्रीरतिं चान्यतंत्रः ।
बाल्ये कष्टं वासरे वासरे च राजद्वारे पञ्चता स्यान्नराणाम् ॥ १२९ ॥

सप्तम वा अष्टम में सहजेश हो तो वह मनुष्य चौर दुसरे की स्त्री से भोग की इच्छा वाला तथा परतंत्र होता है। एवं उस को बाल्य काल में प्रतिदिन कष्ट और उस की राजद्वार में मृत्यु होती है।

अष्टमगत सहजेश फलः--

रन्ध्रे धैर्य्यविभावतिश्रुतिगदी वैरं सहोत्थैः सह
प्रज्ञावानलसो लुलायधनगोसौख्यं खलेऽष्टौ समाः ।
जीवेच्चेद्यदि दोर्व्यथो मृतसुहृत्सोत्थः सरोषो जनो
जातः सव्यसनः शुभे प्रचुररुग्युक् साम्यता द्रव्ययुक् ॥ १३० ॥

अष्टम में सहजेश हो तो अधिक कर्ण रोगी, भाइयों के साथ वैर करने वाला, बुद्धिमान, आलसी, महिषी, धन तथा गौ का सुख होता है। यदि पापग्रह सहजेश होतो आठ वर्ष तक जीवित रहे। एवं वह बाहु पीडा वाला नष्ट मित्र भ्राता वाला, रोष तथा व्यसन से युक्त होता है। यदि शुभग्रह सहजेश होतो बहुत रोगों से युक्त, सौम्य स्वभाव तथा धनवान् होता है।

भाग्य गत सहजेश फलः--

श्रोत्रेश्वरे तपसि सोदरवर्गसक्तो
बन्धूज्झितोऽसति शुभे सुगतिस्तपोधीः ।
विप्रार्चकोऽवमवधूतनयालयः स-
द्वीर्विक्रमी युवतिबन्धुजितः सधर्म्मः ॥ १३१ ॥

नवम में सहजेश हो तो भ्राताओं में आसक्त होता है। यदि पापग्रह सहजेश हो तो बान्धवों से रहित और शुभग्रह सहजेश होतो उत्तम गति वाला, तपोबुद्धि, ब्राह्मणों का भक्त; स्त्री, पुत्र तथा गृह की हानिवाला; उत्तम बुद्धि; अति पराक्रमी स्त्री तथा बान्धवों से विजित एवं धर्मात्मा होता है।

यदाऽवसाने नवमेऽनुजेशे दैवोदयः स्वीयनितम्बिनीभिः ।
पिता महामोपक उद्भवस्य सुखेऽपि दुःखं स्वयमीक्षते सः ॥ १३२ ॥

व्यय वा नवम में सहजेश हो तो स्त्रीजनों से भाग्योदय होता है। उस का पिता नामी चोर और वह स्वयं सुख में भी दुःख का अनुभव करता है।

दशमगत सहजेश फलः—

नेत्रोत्सवः पितृजनैः कुलवृद्धलोक-
युक्तः सबन्धुसुतगोऽर्थ सुभाग्यमित्रः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

योधो रणे द्विजसुरातिथिमातृबन्धु-
भक्तः खगेऽनुगविभौ सुशुचिर्नृपेज्यः ॥ १३३ ॥

दशम में तृतीयेश हो तो पितृजनों के नेत्रों का उत्सव, वंश के वृद्ध मनुष्यों से युक्त, बन्धु, पुत्र, गौ, धन, उत्तम भाग्य तथा मित्रों से युक्त; सङ्ग्राम में योधा, ब्राह्मण, देवता, अतिथि, माता तथा बन्धुजनों का भक्त; अतिपवित्र एवं राजा से सम्मानित होता है।

लाभ गत सहजेश फलः--

सुबान्धवो भोगरतः पराक्रमी सुधीः सुभार्य्यः सुनयः सुमित्रवान् ।
महीपमान्योऽवगतोत्तमाध्वको बन्ध्वात्मजाढ्यः सुतपाः सुवित्तवान् ॥ १३४ ॥

इलेशलाभी निपुणः स्वबन्धुषु सेवाभिधायी विजयी सुसोदरः ।
जनुष्मतो यस्य जनौ सहोदरनिकेतपे प्राप्तिगृहं समाश्रिते ॥ १३५ ॥

लाभ में सहजेश हो तो उत्तम बन्धुवाला, भोग में लीन, पराक्रमी, पण्डित, उत्तम स्त्रीवाला, उत्तम नीतिवाला, उत्तम मित्रवाला, राजमान्य, उत्तम मार्ग वेत्ता, बन्धु तथा पुत्रों से युक्त, उत्तम तपवाला, उत्तम धनवाला, राजा से धन लाभवाला, चतुर, बान्धवों की सेवावाला, सङ्ग्राम मे विजयी तथा उत्तम भ्रातावाला होता है।

व्ययगत सहजेश फलः—

प्रान्त्योपगे भुजपतौ परदेशगामी
पापोनितः सुवदनाननपद्मचन्द्रः ।
जातः शुचिर्द्रुतविलम्बितलब्धवित्तो
मित्रव्रजाहितसमस्तनुविक्रमी स्यात् ॥ १३६ ॥

सन्तापी निजबन्धूनां व्ययवान् शोभने शुभम् ।
भूयाम्बिकाभयं पापे दूरे वासितबान्धवः ॥ १३७ ॥

व्यय में सहजेश हो तो परदेशवासी, पाप रहित, स्त्रियों के मुख कमल का चन्द्रमा, पवित्र हृदयवाला, शीघ्र तथा विलम्ब से लब्ध धनवाला, मित्र शत्रु को समान माननेवाला, शरीर से पराक्रमी, अपने बन्धुजनों को सन्ताप करनेवाला एवं धन का व्यय करनेवाला होता है। यदि सहजेश शुभ ग्रह हो तो शुभ फल और पाप हो तो राजा तथा माता से भय एवं बान्धवों से दूर वास करनेवाला होता है।

सहजगत मेष राशि फलः--

सहोदरस्थे यदि तुम्बुराख्ये तदा द्विजातेः सखिता नराणाम् ।
शुचिर्विनम्रश्च परोपकारे सम्पूजिताङ्गो मनुजाधिराजैः ॥ १३८ ॥

सहज में मेष हो तो द्विजाति का मित्र, पवित्र, परोपकार में अति नम्र एवं राजाओं से सम्मानित होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहजगत वृष राशि फलः—

प्रतापमाप्ते वृषभे प्रभूतप्रतापवान्मानवनाथमित्रः ।
विप्रानुगो भूपशुनिध्युपेतः शूरः कविः प्राज्ययशाः सुवित्तः ॥ १३९ ॥

सहज में वृष हो तो बहुत प्रतापी, राजा का मित्र, ब्राह्मणों का अनुचर; भूमि पशु तथा निधि से युक्त; शूर वीर; कवि महती कीर्तिवाला एवं अधिक धनवान् होता है ।

सहजगत मिथुन राशि फलः—

विशं सखायं लभते सतां मतो महीपपूज्यो वरयानधर्म्मयुक् ।
उदारचेष्टो युवतिप्रियः कुलाधिकः सुशीलः कृषिकृद्यमेऽनुजे ॥ १४० ।

सहज में मिथुन हो तो वैश्य मित्रवाला, सज्जनों का मान्य, राजा से पूजित, श्रेष्ठ वाहन तथा, धर्म्म युक्त, उदार चेष्टावाला, स्त्रियों का प्रिय, वंश में अधिक सुशील और कृषि क्रिया करनेवाला होता है ।

सहजगत कर्क राशि फलः—

अपत्यशत्रौ सहजोपयाते मैत्रीः प्रकुर्यात्सह भूमिदेवैः ।
विप्रामराराधनतत्परैर्ना शान्तैः कृतज्ञैः स्वनघैः सुधर्म्मैः ॥ १४१ ॥

सहज में कर्क हो तो ब्राह्मणों से, ब्राह्मण तथा देवभक्तों से, शान्त स्वभाव वालों से, कृतज्ञों से, निष्पापों से, एवं उत्तम धर्म्मात्माओं से मित्रता को करता है ।

सहजगत सिंह राशि फलः—

पञ्चास्यभे पौरुषपस्त्यमाप्ते वधात्मकः शूद्रसखः प्रचण्डः ।
वाचालकोऽन्यार्थयुतस्तथाघकथानुरक्तो जनगर्हितः स्यात् ॥ १४२ ॥

सहज में सिंह हो तो वधकार्य करनेवाला, शूद्रोंका मित्र, प्रचण्ड स्वभाव, अतिबोलने वाला, पराये धन से युक्त पाप कथामें आसक्त चित्त एवं मनुष्यों में निन्दित होता है ।

सहजगत कन्या राशि फलः—

शौर्य्ये स्त्रियां सुन्दरकामिनीजनैर्मैत्रीं लभेत्प्राज्यसुहृत्प्रियातिथिः ।
स्यादल्पकोपो गुरुशास्त्रनिर्जरधर्म्मेषु रक्तः शुभशीलयुग् जनः ॥ १४३ ॥

सहज में कन्या हो तो उत्तम स्त्रीजनों से मित्रता को प्राप्त होता है । एवं वह मनुष्य बहुत मित्रवाला, अतिथि प्रिय, अल्प कोपी; गुरुजन, शास्त्र, देवता तथा धर्म में तत्पर एवं शील युक्त होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहजगत तुला राशि फलः—

सहोदरागारगते तुलाधरे करोति मैत्रीं दुरितान्वितैः सह ।
लौल्यैस्तथा लौल्यकथानुरक्तकैः कुकर्म्मसंस्थैः सुतवित्तसंयुतैः ॥ १४४ ॥

सहज में तुला हो तो पापियों के साथ, चञ्चलों के साथ, चञ्चल कथाओं में लीन जनों के साथ, कुकर्मियों-के साथ तथा पुत्र और धनयुक्त मनुष्यों के साथ मित्रता को करता है।

सहजगत वृश्चिक राशि फलः—

व्यपेतलज्जैर्जनताविरुद्धै रौद्रैः कृतघ्नैः सह पापयुक्तैः ।
म्लेच्छैर्दरिद्रैः कलहप्रियैश्च करोति मैत्रीर्गलगेऽलिराशौ ॥ १४५ ॥

सहज में वृश्चिक हो तो जनता से विरुद्ध मनुष्यों से, दारुणस्वभाववालों से, कृतघ्नों से, पापियों से, म्लेच्छों से, दरिद्रों से तथा कलह प्रिय मनुष्यों के साथ मित्रता को करता है।

सहजगत धनु राशि फलः—

सगर्भ्यगे चापधरे सुशूरैः कृपानुरक्तै रणकोविदैश्च ।
करोति मैत्रीर्नरनाथदासैः सहाङ्गभृत्पुण्यपरैः सराभिः ॥ १४६ ॥

सहज में धनु हो तो शूरवीरों से, कृपापात्रों से, युद्धविद्या के पण्डितों से, राजभृत्यों से, पुण्यात्माओं से तथा धनियों से, मित्रता को करता है।

सहजगत मकर राशि फलः—

मृगानने विक्रममन्दिरस्थे स्यादप्रमेयो गुरुदेवभक्तः ।
सुकोविदः सौख्यसमन्वितश्च प्राज्ञो धनी मित्ररतश्च सौम्यः ॥ १४७ ॥

सहज में मकर हो तो अप्रमेय, गुरु तथा देवताओं का भक्त, उत्तम पण्डित, सौख्ययुक्त, बुद्धिमान्, धनवान्, मित्रों में निरत और सौम्य स्वभाव वाला होता है।

सहजगत कुम्भराशि फलः—

योधे घटे सत्यपरैः सुशीलैर्व्रतक्षमाकीर्तिगुणैरुपेतैः ।
गीतप्रियैः साधुकथानुरक्तैर्मैत्रीः कृताज्ञैः सह शास्त्रविद्भिः ॥ १४८ ॥

सहज में कुम्भ हो तो सत्यपरायण, सुशील, व्रत, क्षमा, कीर्ति और गुणोंसे युक्त, गीतप्रिय, उत्तम कथानुरक्त कृतज्ञ और शास्त्रवेत्ताओं के साथ मित्रता को करता है।

ज्यो....८४....

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहजगत मीनराशि फलः--

पाठीनभे पौरुषगे कुशीलैः कुभक्षकैर्हास्यपरैः करोति ।
मैत्रीः सह क्रीडनकैश्च दास्यरतैः खलैर्गेयपरैः समुग्धैः ॥ १४९ ॥

सहज में मीन हो तो निन्दित स्वभाव वालों से, कुत्सित भोजियों से, हास्य परायण मनुष्यों से नर्तकों से, दास कर्म वालों से, दुर्जनों से गन्धर्वों से और मुग्ध मनुष्यों के साथ मित्रता को करता है ।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे जोशीत्युपाह्व पण्डित चक्रधरभट्टकृत भाषाटीकोपेते सहजभावचिन्तनप्रकरणं पञ्चविंशमवसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अथ

सुखभावचिन्तनप्रकरणं प्रारभ्यते ।

सुख भाव जन्य पदार्थों का परिज्ञानः—

सौख्याम्बिकाभवनवाहनयानबन्धु-
क्षेत्रक्षमोपवनचित्तगुणेष्टभूपाः ।
मित्रं तरुर्निधिसुगन्धतडागवापी-
कूपाम्बुगोश्वशुरहर्म्यचतुष्पदादि ॥१॥
विद्याधृताङ्गनजसौख्यबहिःसुखानि
वक्षःस्थलादि जनकोद्यमपूःसमान्नम् ।
भोज्यादिकं शयनसौख्यकमात्मवृद्धिः
स्कन्धासने सममदोऽम्बुनि चिन्तनीयम् ॥२॥

सुख, माता, गृह, वाहन, यान, बान्धव, क्षेत्र (खेत), पृथ्वी, उपवन (बगीचा), चित्त, गुण, इष्ट, भूप, मित्र, वृक्ष, निधि (गढा हुआ धन), सुगन्ध, तडाग (तलाव), वापी (बावडी) कूप (कूआ), जल, गो, श्वशुर, हर्म्य (धनियों का घर),चतुष्पदादि, विद्या, धृताङ्गनज सौख्य (रखेली औरत का सुख) बाह्यसुख, वक्षःस्थलादि, पिता का उद्यम, पुर, समस्त अन्न, भोज्यादि पदार्थ, शयनसुख, आत्मवृद्धि, स्कन्ध (कन्धा) और आसन ये पूर्वोक्त समस्त पदार्थ सुख भाव में विचारने चाहिएँ ।

सुख भाव में विशेष विचारः—

गेहेज्याभ्यां सौख्यचिन्ता विधेया चिन्ताऽम्बायाश्चन्द्रतोऽम्बानिकेतात् ।
बन्धोः काव्यात्तत्सुखाद्वा सुगन्धालङ्काराणां यानवस्त्रादिकानाम् ॥३॥

चतुर्थभाव और गुरु इन दोनों से सौख्य का विचार करे । चन्द्रमा और चतुर्थभाव इन दोनों से माता के शुभाशुभ का विचार करे । एवं चतुर्थ स्थान और शुक्र से अथवा शुक्र से चतुर्थ स्थान में सुगन्धित द्रव्य, भूषण, यान तथा वस्त्रादियों का विचार करे ।

सौख्य के योगः—

स्वर्क्षेषु पञ्चसु खगेषु महासुखी स्या—
त्पातालदर्शिगतकारकनाथखेटैः ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वीर्य्यान्वितैरथ कलेवरभाग्यपत्यो--
र्बन्धुस्थयोर्भवनपे यदि भव्यराशौ ॥४॥

होराङ्गते भवति नित्यमतीव सौख्यं
सद्वीक्षिते दुरितयोगविवर्जितेऽङ्गे ।
सौम्ये सुखी शशिनि सौम्यविहङ्गमध्ये
यद्वा विनाशनिलयेऽमलयुक्तदृष्टे ॥५॥

वेज्येक्षिते सलिलपेऽथ सुखे ससौम्ये
किं सौख्यपेन सहिते सबलेऽर्चिते वा ।
भव्यान्तरे भवनपेऽथ ससद्ग्रहेन्द्रे
केन्द्रत्रिकोणभवने जलपेऽथ जीवे ॥६॥

होरेशतो बलिनि किं जननीगृहेशे
मृद्वंशके किमुत गोपुरपूर्वभागे ।
धामाधिपे च धिपणेऽथ रसातलेशे
सौम्यांशके परिजनोपचये सुखी स्यात् ॥७॥

स्वराशि में पाँच ग्रह हों तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष महा सुखी होता है। सुखदर्शी, सुखस्थ, सुखकारक तथा सुखेश ये चारों स्थानबलादि षड्बलैक्य से युक्त हो तो (१) सुख में लग्नेश तथा नवमेश हों और लग्न में शुभ राशि गत सुखेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष अत्यन्त सुखी होता है। लग्न में शुभ ग्रह हो और वह पाप युक्त न हो एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो सुखी होता है। शुभ ग्रहों के मध्य में चन्द्रमा हो तो (१) अष्टम स्थान शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो तो (२) सुखेश यदि गुरु से दृष्ट हो तो (३) सुख में शुभ ग्रह हो तो (४) बलवान् गुरु यदि सुखेश से युक्त हो तो (५) चतुर्थेश शुभ ग्रहों के अन्तराल में हो तो (६) केन्द्र वा त्रिकोण में सुखेश हो और वह शुभ ग्रहों से युक्त हो तो (७) लग्नेश की अपेक्षा गुरु अधिक बली हो तो (८) शुभ षष्ठ्यंश में सुखेश हो तो (९) गोपुरादि अंशों में सुखेश तथा गुरु हों तो (१०) धन वा उपचय में शुभांशगत सुखेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष सुखी होता है।

पुण्यधिपे प्राणयुते सभार्गवे चतुर्थयाते चिरकालभोग्यवान् ।
सौम्यौ सशौम्यौ यदि पश्यतो मिथो मेपूरणाम्बाभवनोपगौ सुखी ॥८॥

सुख में बलवान् भाग्येश हो और शुक्र से युक्त हो तो दीर्घ कालतक भोगवाला होता है। दशम तथा चतुर्थ में दो बलवान् शुभ ग्रह हो और वे परस्पर देखते हों तो युक्त योग में उत्पन्न पुरुष सुखी होता है।

सबले शुभदे सलिले शुभदृक्कलिते प्रथमे शुभदे मनुजः ।
सुखभाक् प्रभवेत्सलिलं कलितं भृगुजेन बुधेन च देवगुरौ ॥९॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उदयत्यतुलं प्रमदं जलगौ जडरश्मिजडांशुभवौ भगुरू ।
गुरुगौ किमुताङ्गपदृकलिते हितपे हितगे विबुधश्च सुखी ॥१०॥

सुख में बलवान् शुभ ग्रह हो और लग्न में शुभ ग्रह हो और वह शुभ दृष्ट हो तो सुखी होता है। सुख में शुक्र तथा बुध हों और लग्न में गुरु हो तो अत्यन्त सुख होता है। सुख में चन्द्रमा तथा बुध हों, नवम में गुरु तथा शुक्र हों अथवा सुख में सुखेश हो और उस को लग्नेश देखता हो तो पण्डित तथा सुखी होता है।

सन्नाथदृष्टसहिते सबले तुरीये
प्रोक्तं ध्रुवं सुखमथो सबलैः सुखस्थैः ।
सर्वत्र सौख्यमथ तुङ्गगतौ भवस्थौ
किं मार्गगौ गगनगेन विलोक्यमानौ ॥११॥

मित्राङ्गपावथ हिते हिमरुक्सितेज्य-
हेम्नान्विते निशि दिवा सुखसंघमाप्तः हि
राज्येश्वरो नियतिभं विधिपोऽङ्गपश्च
बन्धुं विलोकयति ते शुभतां प्रयाताः ॥१२॥

यद्वा सितामरपुरोहितविद्विधूना-
मेकोऽपि मातृगृहगः किमु मूर्त्तिगो वा ।
पातालभं पुरपतिः पदपो विशेषा-
त्तौ पश्यतः किमु युतावथ शोभनेषु ॥१३॥

कोणाम्बुखेषु तनुपो हृदयं प्रपश्ये-
त्किं कल्पपे बलवति स्वसुखायगेषु ।
स्थेटेष्वथो हृदि घने बलिनीन्द्रमंत्री
वर्गोत्तमादिशुभवर्गगतः सुखी स्यात् ॥१४॥

सुख भाव बली हो, शुभ ग्रह तथा अपने स्वामी से दृष्ट वा युक्त हो तो सुखी होता है। सुख में बली ग्रह हो तो सर्वत्र सुख होता है। एकादश वा नवम में स्वोच्चराशिगत सुखेश तथा स्वोच्चराशिगत लग्नेश हो और वे दशमगत ग्रह से दृष्ट हो अथवा सुख में बुध, चन्द्र गुरु तथा शुक्र ये चारों हों तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष सुख समूह को प्राप्त होता है। नवम को दशमेश देखता हो, सुख को नवमेश देखता हो और सुख को लग्नेश भी देखता हो एवं वे तीनों शुभत्व को प्राप्त हों तो (१) सुख वा लग्न में शुक्र, गुरु, बुध तथा चन्द्रमा इन चारों में से एक कोई भी हो तो (२) सुख को लग्नेश देखता हो विशेषतः दशमेश देखता हो अथवा वे दोनों देखते हों अथवा वे दोनों एकसाथ हों तो (३) त्रिकोण, चतुर्थ तथा दशम में शुभ ग्रह हों और सुख को लग्नेश देखता हो तो (४) लग्नेश बलवान् हो, धन सुख तथा लाभ में ग्रह हों तो (५) सुख तथा लग्न ये दोनों बलवान् हों और इनमें वर्गोत्तमादि शुभवर्गगत गुरु हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष सुखी होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बाल्य काल में सुखी योगः—

रम्ये मूर्तौ गतमलदृशा संयुतेऽथो असौम्ये
पौरे रम्ये विभवभवने देवलोकांशयाते ।
होरानाथेऽध्वनि शुभकरे वाथ पारावतांशे-
ऽङ्गेशे केन्द्रे विबुधसचिवे बाल्यकाले सुखी ना ॥१५॥

लग्नमें शुभग्रह हों और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो (१) लग्नमें पापग्रह, धनमें शुभग्रह, देवलोकांशमें लग्नेश और नवमे में शुभग्रह हो तो (२) परावतांश में बलवान् लग्नेश हो और केन्द्र में गुरु होतो बाल्य काल में सुखी होता है।

सोलह, बीस तथा तीस वर्ष से परे सुख के योगः—

सद्रेऽङ्गपे गोपुरभागगे शुभैर्दृष्टे सुखं षोडशवर्षतः परम् ।
हये ऽ ङ्गपे वा भवपे ऽ थ वा तयोरंशाधिपे विंशतिवर्षतः परम् ॥ १६ ॥

कोणायकेन्द्रोच्चगते बलान्विते ऽ ङ्गेशांशपे खाग्निशरत्परं सुखम् ।
केन्द्रे ऽ र्थ उग्रे ऽ ङ्गप उत्तमांशके सत्यङ्ग आदौ व्यथिका ततः सुखम् ॥ १७ ॥

गोपुरांश में शुभराशि गत लग्नेश हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो सोलह वर्ष के अनन्तर सुखी होता है। धनु में लग्नेश वा लाभेश हो अथवा धनुमें लग्नेश के नवांश का स्वामी वा लाभेश के नवांशका स्वामी हो तो बीस वर्ष से परे सुखी होता है। त्रिकोण, लाभ, केन्द्र वा उच्चराशि में लग्नेश के नवांश का स्वामी हो और वह बलवान् हो तो तीस वर्ष से परे सुखी होता है। केन्द्र तथा धन में पापग्रह हो, वर्गोत्तमांश में लग्नेश हो और लग्न-में शुभग्रह हो तो प्रथमावस्था में दुःख तदनन्तर सुख होता है।

प्रथमावस्था तथा यौवन में सुखी योगः—

शोभना जनन आतुरीयगा आदिमे वयसि सौख्यभाङ् नरः ।
यावदङ्गगृहतः सुतस्थलं सत्सवगा भवति नूतनं सुखम् ॥ १८ ॥

लग्न से सुख पर्यन्त शुभग्रह हों तो मनुष्य प्रथमावस्था में सुखी होता है। लग्न से पञ्चम पर्यन्त शुभग्रह हों तो नये नये सुखको प्राप्त होता है।

उद्गमे भृगुज आदिमे दले यस्य जन्मनि नरः स सौख्यभाक् ।
केन्द्रगैर्धिषणजन्मलग्नपैर्यौवने भवति मानवः सुखी ॥ १९ ॥

लग्न में शुक्र हो तो प्रथमावस्था में सुखी होता है। केन्द्र में बृहस्पति, जन्मचन्द्रराशिका स्वामी और लग्नेश हो तो यौवनावस्थामें सुखी होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मध्यावस्था में सुख के योगः—

यावदात्मजगृहात्तपोगृहं शोभनाः किमुत ते सुतालयात ।
आलयालयगताः शरीरभृन्मध्यमे वयसि सौख्यसंयुतः ॥ २० ॥

पञ्चम से नवम पर्यन्त वा अष्टम पर्यन्त शुभग्रह हों तो मध्यमावस्था में सुख होता है ।

प्रथमावस्था तथा मध्यावस्था में सौख्य के योगः—

लग्नान्त्यायगतैः शुभाम्बरचरैः सिंहासनांशे गुरौ
होरेशे सबले चतुष्टय गते किं कल्पपे शोभने ।
सद्योगेक्षण उद्गतार्थसहजे पारावतांशे यदा
दैतेयार्चित आद्यमध्यवयसोः सौख्यं भवेत्प्राणिनाम् ॥ २१ ॥

लग्न, व्यय तथा लाभ में शुभग्रह हों, सिंहासनांश में गुरु हो और केन्द्र में बलवान् लग्नेश हो तो (१) शुभग्रह लग्नेश हो, लग्न, द्वितीय तथा तृतीय ये तीनों भाव यदि शुभग्रहों के योग और दृष्टि से युक्त हों एवं शुक्र पारावतांश में हो तो प्रथम तथा मध्यमावस्था में सुख होता है ।

अन्तिम, मध्यम अवस्था में तथा आमरणान्त सौख्य के योगः—

आप्रान्त्यगैः पथिभतो विमलैर्विहङ्गैः
प्राप्तेऽन्तिमे वयसि सौख्यमुदाहरन्ति ।
कल्याणदृष्ट उदये सुरलोकभागे
दैत्यार्चिते हरिजपे यदि गोपुरांशे ॥ २२ ॥

मध्यावसानवयसोर्जनिमान् सुखी स्याद्
वर्गोत्तमे घनानिकेतनपे निजोच्चे ।
आलोकिते च सहिते सुकृतैः स्वमित्र-
द्रेष्काणगे यदि तदाऽऽमरणान्तसौख्यम् ॥ २३ ॥

नवम से व्ययपर्यन्त शुभ ग्रह हों तो अन्तिमावस्था में सुखी होता है । लग्न को शुभ ग्रह देखते हों, देवलोकांश में शुक्र हो और गोपुरांश में लग्नेश हो तो मध्यम तथा अन्तिम अवस्था में सुखी होता है । वर्गोत्तमांश में अथवा स्वोच्च राशि में लग्नेश हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त हो एवं अपने मित्र के द्रेष्काण में हो तो जीवन पर्यन्त सुखी होता है ।

शैशवादि अवस्था में सौख्य के योगः—

शोभनाः सहजशत्रुभवस्थाः शैशवे मनुभवाः सुखिनः स्युः ।
गर्हिता गगनगा यदि तत्र प्राणिनां सुखकरा वयसोऽन्त्ये ॥ २४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तृतीय, षष्ठ तथा लाभ में शुभ ग्रह हों तो बाल्य काल में सुख को देते हैं। यदि उक्त स्थानों में पापग्रह हों तो अन्तिम अवस्था में सुख को देते हैं।

तीनों अवस्थाओं में सौख्य के योगः—

बाल्ये सत्फलदाः शुभा गलफलारिस्थाः खलास्तत्र चेद्
वार्धक्ये ऽ थ खला मदार्थमतिगाः सौख्यप्रदाः शैशवे ।
सौम्यास्तत्र तदान्तिमे ऽ थ मरणाभ्रात्याङ्गभाग्याम्बुगाः
सत्क्रूराः क्रमशः शुभाशुभफलंदद्युर्वयस्सु त्रिषु ॥ २५ ॥

तृतीय, लाभ तथा षष्ठ में शुभ ग्रह हों तो बाल्य अवस्था में सौख्यप्रद होते हैं। यदि उक्त स्थानों में पाप ग्रह हों तो वृद्ध अवस्था में सौख्यप्रद होते हैं। सप्तम, द्वितीय तथा पञ्चम में पाप ग्रह हों तो बाल्य काल में सौख्यप्रद होते हैं। अष्टम, दशम, द्वादश, लग्न तथा भाग्य इन स्थानों में शुभ ग्रह हों तो तीनों अवस्थाओं में शुभ फल देते हैं। यदि उक्त स्थानों में पाप ग्रह हों तो तीनों अवस्थाओं में अशुभ फल देते हैं।

सौख्याभाव योगः—

भार्याभावविभावभव्यसहितेऽपत्यस्थित वारिगे
मूर्धेशेऽस्तमितेऽथ विप्रखचरावस्तं प्रयातौ यदि ।
पापाकाशचरैरपत्यगृहगैः प्राणैरुपेतैर्दरे
देहेशे दयितानिकेतदयिते चाङ्गीतसौख्यो भवेत् ॥ २६ ॥

पञ्चम वा षष्ठ में सप्तमेश हो और वह पाप ग्रह से युक्त हो एवं लग्नेश अस्तगत हो तो (१) गुरु तथा शुक्र अस्तगत हों, बलवान् पाप ग्रह पञ्चम स्थान में हो एवं षष्ठ में लग्नेश तथा सप्तमेश हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष सुख से रहित होता है।

मुक्तः सुखेनोग्रखगे चतुर्थे चन्द्रेक्षितेऽथो दहने दकेशे ।
बलेन हीने त्रिकगेऽथ पापैर्निपीडिते प्राक्क्षितिजेशपङ्गौ ॥ २७ ॥

सुख में पाप हो और वह पाप दृष्ट हो तो (१) त्रिक में निर्बलचतुर्थेश पाप ग्रह हो तो (२) लग्नेश शनि यदि पापाक्रान्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष सुख से रहित होता है।

दुःख के योगः—

दुःखी यमे ऽ ङ्गे रिपुभे कुजे कलावगौ किमुग्रैस्तनुगैस्तथर्क्षपे ।
पापान्तरालेऽथ परिज्ञपापिनोर्योगे खले खे व्ययगेऽङ्गपे व्यथा ॥ २८ ॥

लग्न में शनि, षष्ठ में भौम और अष्टम में राहु हो तो दुःखी होता है। लग्न में पाप ग्रह हों तो (१) पाप ग्रहों के अन्तराल में चन्द्रमा हो तो (२) चन्द्र, मङ्गल इन दोनों का योग हो, दशम में पाप ग्रह और व्यय में लग्नेश हो तो दुःखी होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धीस्थैर्हेम्नार्काद्यिभिर्बन्धुगेऽस्ते छायाग्नौ छिद्रगे दुःखभागी ।
सादित्याद्ये तुर्य्यपे क्रूरभागे सदृग्घीते चावरोहाख्यभागे ॥ २९ ॥
नित्यं दुःखी पूजिते प्राणमुक्ते स्वान्तेऽसौख्ये सारयुक्तोऽपि दुःखी ।
पापर्युक्ते साम्पु मुक्तवीर्य्ये तद्वत्पापांशे कपे नीचयाते ॥ ३० ॥
दुःखी प्राणी स्यात्ससारात्मजोऽपि नीरागारे नीचस्थेटे तदर्ये ।
सोग्रे क्रूरांशाश्रिते तद्वदेव पापैर्दृष्टे शत्रुनीचांशयाते ॥ ३१ ॥
सादित्याद्ये मातरि क्रूरभागे वेश्मद्रव्यस्त्रीविनाशश्च दुःखी ।
पङ्केऽम्भोधीस्थे परार्द्धे व्यथाऽथाऽऽद्ये याम्येशे दुःखमाप्नोति बाल्ये ॥ ३२ ॥

पञ्चम में बुध, सूर्य तथा राहु हों सुख में भौम शनि हो तो दुःखी होता है। क्रूरांशक तथा अवरोह भाग में चतुर्थेश हो और वह सूर्य तथा मङ्गल से युक्त हो एवं शुभ दृष्ट न हो तो नित्य दुःखी होता है गुरु निर्बल हो और चतुर्थ मे पाप ग्रह हो तो धनिक होनेपर भी दुःखी होता हैं। निर्बल सुखेश यदि पापयुक्त हो तो भी धनिक होने पर दुःखित होता हैं। पापांश में नीचराशिगत चतुर्थेश हो तो धन पुत्र युक्त होने पर भी दुःखित होता हैं। सुख में नीचराशिगत ग्रह हो और क्रूरांश में पाप युक्त सुखेश हो तो भी धन पुत्र युक्त होने पर दुःखी होता हैं। सुख में शत्रु नीच राशि गत सूर्य मङ्गल हों और वे पाप ग्रहों से दृष्ट हों एवं क्रूरांश में हों तो गृह, धन तथा स्त्री का नाश और दुःखी होता हैं। सुख तथा सुत में पाप ग्रह हो तो अन्तिम अवस्था में दुःखी होता हैं। लाभ में अष्टमेश हो तो बाल्यकाल में दुःखी होता हैं।

पातालपस्त्यान्वितदर्शिकारका मूढारिनीचर्क्षगता अनिष्टदाः ।
लग्नेशशत्रुस्त्रिकपोऽरिनीचभेऽम्बास्थः स्वकोपात्प्रभवेत्सुखान्तकृत् ॥ ३३ ॥

सुखस्थ, सुखदर्शी तथा सुखकारक ये तीनों अस्तमत शत्रु वा नीच राशि में हों तो अशुभ फल देते हैं। त्रिकस्थान का स्वामी यदि लग्नेश का शत्रु हो और वह शत्रु वा नीच राशि में स्थित होकर चतुर्थ में होतो अपने क्रोधसे सुखका नाश करता हैं।

दुःखप्रदाः स्युर्मृग दंशकादिकाः पञ्चननांशेऽथ शिखावतः कणाः ।
कन्यांशके तद्वदथ क्रियांशके दुःखप्रदावत्र बिडालमूषकौ ॥ ३४ ॥

कारकांश कुण्डली में मेष लग्न होतो बिडाल तथा मूषक से दुःखी होता हैं। कारकांश में सिंह लग्न होतो श्वान प्रभृति दुःख देते हैं एवं कारकांश में कन्या लग्न होतो आगके चिनगारे दुःख दायक होते हैं।

मातृदीर्घायु योगः—

केन्द्रे सदंशे सितगौ किमच्छेऽथेन्दौ सशक्रौ शुभयुक्तदृष्टे ।
यद्वाऽम्बुधे के किमु कारकाख्ये रम्यैरुपेते बलभाजि किं वा ॥ ३५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कीलालगेऽथो सुखपांशुनाथनवांशपे वीर्य्ययुते च केन्द्रे ।
तस्मिन्विधोः केन्द्रमुपागतेऽथ प्रसूगृहेशे मशुभे सवीर्य्ये ॥ ३६ ॥
सुस्थानयातैः शुभखेचरेन्द्रैः किं वा सशौर्य्ये सुकुजेक्षिते भे ।
मातुश्चिरायुर्मनसीनसूनौ सद्वीक्षितेऽम्बामरणं चिरेण ॥ ३७ ॥

केन्द्र तथा शुभांश में चन्द्रमा या शुक्र होतो (१) बली चन्द्रमा यदि शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट होतो (२) सुख में शुभग्रह हो अथवा मातृकारक ग्रह शुभग्रहों से युक्त हो वा बली होकर सुख में होतो (३) सुखेशके नवांश का स्वामी जिसके नवांश में हो यदि वहग्रह बली होकर केन्द्र में हो अथवा वहग्रह चन्द्रमासे केन्द्र में होतो (४) बलवान् सुखेश यदि शुभग्रह से युक्त हो और सुस्थान (१।२।३।४।५।७।९।१०।११) में शुभग्रह होंतो (५) बली शुक्र यदि शुभग्रह से दृष्ट होतो माताकी दीर्घायु होती है । सुख में शनि हो और वह शुभ दृष्ट होतो चिरकाल में माताकी मृत्यु होती है ।

मातृ सौख्याशौख्य योगः—

दाक्षायणांशाद् द्युनगेऽमरार्च्ये वेन्दौ सपूज्ये जननीसुखं स्यात् ।
पातालगे पूष्णि बलक्षभानुसंवीक्षिते मातृसुखोज्झितः स्यात् ॥ ३८ ॥

चन्द्रमा से सप्तम में गुरु हो अथवा चन्द्रमा गुरु से युक्त होतो माता का सुख होता है । चतुर्थ में सूर्य हो और वह चन्द्रमा से दृष्ट होतो मातृ सुख से रहित होता है ।

कामेऽब्जे खलयुतवीक्षितेऽथ गर्भे
गौरांशौ किमु धिषणे तनौ कुटुम्बे ।
छायेये भुजगविभौ द्युनेऽन्त्यगे वा
माहेये दिवि युवि दीदिवौ सपत्त्ये ॥ ३९ ॥
किं साधे सितरुचि साध्वसे सनीके
भूसूनौ द्युनभवनेऽथ रात्रिनाथे ।
काव्ये वोदवसिपे रसातले किं-
माग्नेयैः सहितयुते खलान्तरे वा ॥ ४० ॥
किं काव्ये कलुषयुते विधोरतङ्गे
किं नीले खलनिलयेऽह्नसा युतेऽथो ।
दैवे वा दिवि धवलांशुलोहितांश्वो-
र्मर्त्यानां न भवति मातृसौख्यमेषु ॥ ४१ ॥

सप्तम में चन्द्रमा हो और वह पापग्रह से युक्त वा दृष्ट होतो (१) पञ्चम में चन्द्रमा होतो (२) लग्न में गुरु, धन में शनि एवं सप्तम वा तृतीय में राहु होतो (३) दशम में मङ्गल और अष्टम में बलवान् गुरु होतो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

(४) षष्ठ वा अष्टम में पापयुक्त चन्द्रमा हो और सप्तम में मङ्गल होतो (५) चन्द्र वा शुक्र का चतुर्थेश वा चतुर्थ-भाव यदि पापग्रहों से दृष्ट वा युक्त अथवा पापग्रहों के अन्तराल में होतो (६) चन्द्रमा से सप्तम में शुक्र हो और वह पापयुक्त होतो (७) पापराशि गत शनि यदि पापयुक्त होतो (८) नवम वा दशम में चन्द्र तथा मङ्गलहोंतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष को माता का सुख नहीं होता है।

मातृ दुग्धशोष योगः—

भागे कीटाङ्गे प्रसुदुग्धशोषो राकानाथे रिःफरन्ध्रारियाते।
युक्ते वक्षोमन्दिराधीश्वरेण कुर्यादस्मिन् स्तन्यपानं परस्याः ॥ ४२ ॥

कारकांश कुण्डली में वृश्चिक में लग्न हो तो माता का दूध सुख जाता है। त्रिकस्थान गत चन्द्रमा यदि सहजेश युक्त हो तो उक्त योग मे उत्पन्न बालक पर स्त्री के स्तन्य पान करने से जीवित रहता है।

दो वा तीन माता का योगः—

द्वित्रा मातर उग्रे खेटे मित्रगते चेत्।
सौम्ये तत्र तदैका मातोक्ता फलितज्ञैः ॥ ४३ ॥

सुख में पाप ग्रह हो तो दो वा तीन माता यें होती है। सुख में शुभ ग्रह हो तो फलितवेत्ताओं ने एक माता कही है।

मातृ स्नेह योगः—

मित्रोदयेशौ यदि मित्रभूतौ परस्परं सद्युतवीक्षितौ वा।
केन्द्रे कपे सत्पुरपालदृष्टयुक्ते जनित्रीप्रियतां समेति ॥ ४४ ॥

सुखेश तथा लग्नेश ये दोनों परस्पर मित्र हो और शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो (१) केन्द्र में सुखेश हो और वह लग्नेश से दृष्ट हो एवं शुभ ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष मातृस्नेह वाला होता है।

मातृ वैर योगः—

शत्रू उपान्त्यहितपौ पुरपस्य किं वा
कीलालपे खलदृशा सहितेऽथ घाते।
पातालपे पुरपतोऽथ पुरात्पुरेशा-
त्प्रान्त्ये कपेऽथ हितपे रुजि मातृवैरम् ॥ ४५ ॥

लाभेश तथा सुखेश ये दोनों लग्नेश के शत्रु हो तो (१) चतुर्थेश यदि पाप दृष्ट हो तो (२) लग्नेश से षष्ठ में सुखेश हो तो (३) लग्न से वा लग्नेश से व्यय में सुखेश हो तो (४) षष्ठ में सुखेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य का माता के साथ वैर होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पतिव्रतामातृ योगः—

वैशेषिकांशे कविभौ शुभेक्षिते किं सत्यपीभिः परिलोकिते कपे ।
यद्वोदये बान्धवपे पतिव्रता स्याज्जननी शरीरिणाम् ॥ ४६ ॥

वैशेषिकांश में सुखेश हो और वह शुभ दृष्ट हो तो (१) चतुर्थेश यदि शुभ ग्रह तथा सूर्य से दृष्ट हो तो (२) लग्न में बलवान् सुखेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुषों की माता पतिव्रता होती है ।

जारिणी मातृ योगः—

अशोभने कनायके शुभाभ्रचारिणोर्यदा ।
मनोभवोदयेशयोस्तदाऽम्बिकान्यपूरता ॥ ४७ ॥

पापग्रह सुखेश हो और सप्तमेश तथा लग्नेश वे दोनों शुभ ग्रह हों तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष की माता व्यभिचारिणी होती है ।

साहौ हितेशे मलिनेन संयुते किं बान्धवागारविभुस्थभागपे ।
वारेऽम्बुगेऽब्जासुरनीललोकिते जातस्य माता व्यभिचारिणी खलैः ॥ ४८ ॥
दृष्टे कुजारीशयुते हितेऽब्जे तादृक्फलं स्याद्धिबुके हिमांशौ ।
साहिध्वजे नीचरता नुरम्बा सभारगौरे क्षितिदेवसक्ता ॥ ४९ ॥
राजन्यसक्ता रविणा समेते सराहिणेये यदि वैश्यसक्ता ।
मार्चण्डियुक्ते वृषलप्रसक्ता न दोषमाहुः शुभदृष्टियोगात् ॥ ५० ॥

सुखेश यदि राहु से तथा पाप ग्रह से युक्त हो तो (१) सुखेश के नवांश का स्वामी यदि राहु से तथा पाप ग्रह से युक्त हो तो (२) सुख में भौम हो और वह चन्द्र, राहु तथा शनि से दृष्ट हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष की माता व्यभिचारिणी होती है । सुख में चन्द्रमा हो और वह मङ्गल तथा षष्ठेश से युक्त हो एवं पाप ग्रह से दृष्ट हो तो भी माता व्यभिचारिणी होती है । सुख में चन्द्रमा हो और वह राहु वा केतु से युक्त हो तो उस की माता नीचजाति के पुरुष में आसक्त; शुक्र भौम वा गुरु से युक्त हो तो ब्राह्मण में आसक्त, सूर्य से युक्त हो तो क्षत्रिय में आसक्त, बुध से युक्त हो तो वैश्य में आसक्त, एवं शनि से युक्त हो तो उस की माता शूद्र में आसक्त होती है । यदि पूर्वोक्त योग कारक ग्रह शुभ ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो माता में उक्त दोष नहीं होता है अर्थात् उस की माता पतिव्रता होती है ।

माता के साथ सहवास के योगः—

केन्द्रस्थिते भयभिते भृगुनन्दने वा
युक्तेक्षितेऽथखचरैर वरोहभागे ।
क्रूरांशके किमुत केन्द्रगयो रवीन्द्वोः
कल्याणदृष्टयुतयोः किमसौम्यदृष्टैः ॥ १५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्रूरग्रहैः कभवनेऽम्बिकया सहेति
सङ्गं नरो कलुषदृष्टयुते कनाथे ।
सत्खेटदृष्टिरहिते पुरपे कृशाङ्गे
भाग्येशतो भवति मातृसमानगामी ॥ ५२ ॥

केन्द्र में चन्द्र वा शुक्र हो और वह पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो एवं अवरोह भाग में हो तथा क्रूरांशक में हो तो (१) केन्द्र में सूर्य तथा चन्द्र हो और वे शुभ ग्रह से दृष्ट वा युक्त हों तो (२) सुख में पापग्रह हो और वे पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष मातृगामी होता है। सुखेश यदि पाप ग्रह से दृष्ट युक्त हो, शुभ ग्रह से दृष्ट न हो एवं सप्तमेश की अपेक्षा लग्नेश न्यून बली हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष मातृ समान स्त्री से गमन करता है।

उग्रग्रहेक्षितयुतेऽस्तविभौ वनस्थे
क्रूरादिषष्ठिलवगेऽथ खलाढ्यदृष्टे ।
सार्की सुखेऽथ खलभे सलिलेऽशुभादि
षष्ठ्यंशके भवति तादृशपापयुक्तः ॥ ५३ ॥

क्रूरषष्ठ्यंश में सुखगत सप्तमेश हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो (१) सुख में शनि हो और वह पाप युक्त दृष्ट हो तो (२) सुख में पाप ग्रह की राशि तथा क्रूर षष्ठ्यंश हो तो भी मातृ समान स्त्री से गमन करता है।

निशाकरस्थितांशपे सखलपाखसंयुते ।
जलालये खलेक्षिते तथा फलं बुधैः स्मृतम् ॥ ५४ ॥

'चन्द्रमा' जिस ग्रह के नवांश में हो यदि वह ग्रह सुख में हो एवं षडेश तथा मङ्गल से युक्त हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो भी मातृ समान स्त्री से गमन करता है।

माता को भय तथा रोग के योगः—

विलोचनारातिसुतलोपगैः पापग्रहैर्मातृभयं बुधैर्मतम् ।
साघे हिमांशौ द्वितरेऽरिनीचगे सोग्रे सहोत्थे सगदा तदम्बिका ॥ ५५॥

द्वितीय, षष्ठ तथा सुख में पाप ग्रह हों तो माता को भय कहे। चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हो शत्रुराशि वा नीच राशि में सुखेश हो और सहज में पाप हो तो उस की माता रुग्ण होती है।

मित्रेण युक्त किमु मित्रसूनुना मित्रेऽत्रिजेऽथो कगयोः कभौमयोः
सवीर्यवोस्तज्जननीतनौ व्रणरुजं च पित्तज्वरमादिशेद्बुधः ॥ ५६ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख में चन्द्रमा हो और वह सूर्य से वा शनि से युक्त हो तो (१) चतुर्थ में बलवान् सूर्य तथा मङ्गल हो तो उस की माता के शरीर में व्रण रोग तथा पित्तज्वर को कहे।

तरोयुते तातपता तरोभिः समुज्झितेष्वङ्गवपोडुपेषु ।
गाढां विपत्तिं समुपाति माता किं गर्भहेतोर्मृतिरम्बिकायाः ॥ ५७ ॥

दशमेश बली हो, लग्नेश, सुखेश तथा चन्द्रमा ये तीनों बल रहित हों तो उस की माता अतीव विपत्ति पाती है अथवा गर्भ के कारण माता की मृत्यु होती है।

माता की मृत्यु के योगः—

पापान्तरे शशिनि वीतबलेऽथ वाऽस्मा-
त्पङ्के मनोमनसिजे मृतिपे विशेषात् ।
वास्तेऽम्बुजे दिनकरे रुधिरे पुरे वा
मित्रोपगे मिहिरजे मरणं जनन्याः ॥ ५८ ॥

पापग्रहों के अन्तराल में निर्बल चन्द्रमा हो तो (१) चन्द्रमा से सुख तथा सप्तम में पापग्रह हो विशेषतः अष्टमेश हो तो (२) सप्तम वा तृतीय में सूर्य हो और लग्न में मङ्गल होतो (३) सुख में शनि होतो माता की मृत्यु होती है।

व्यूज्जे वनागारविभौ क्षयेऽरौ खले घने किल्बिदृषाष्टियुक्ते ।
उत त्रिके क्षीणभपे सपापे पापान्विते पाथसि मातृहानिः ॥ ५९ ॥

अष्टम वा षष्ठ में निर्बल सुखेश हो एवं लग्न में पापग्रह हो और वह पाप दृष्ट होतो (१) त्रिक में पापयुक्त क्षीण चन्द्रमा हो और सुखस्थान पापयुक्त होतो मातृ हानि होती है।

अराति-भ्रे पंगते मृतीशेऽसल्लोक्यमाने हृदि हेलिजे वा ।
जले कुजेऽरौ मलिने जघन्य जैवातृके नुर्जननी न जीवेत् ॥ ६० ॥

शत्रुराशि वा नीचराशि में अष्टमेश हो और सुख में शनि हो और वह पाप दृष्ट होतो (१) सुख में मङ्गल, षष्ठ में पापग्रह और व्यय में चन्द्र होतो माता न जीवे।

अगुरुगे धिषण धनगे शनौ नयनगे किमुताह्नि भृगोः सुते ।
खलखगेन युते परिलोकित उत विधौ निशि पापदृशा युते ॥ ६१ ॥
दुरितभेऽथ विधौ दुरितेक्षिते गलगृहे नहि सौम्यनिरीक्षिते ।
अथ कुजोऽर्थगतो भुजगो भृगुः सुरगुरुः पुरगो जननीं हरेत् ॥ ६२ ॥

लग्न में निर्बल नीचमूढारिगत गुरु हो और धन में शनि होतो (१) दिन का जन्म हो और 'शुक्र' पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट होतो (२) रात्रिका जन्म हो और पापराशि गत 'चन्द्रमा' यदि पाप दृष्ट होतो (३)

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहज में पाप दृष्ट चन्द्रमा हो और वह शुभ दृष्ट न होतो (४) धन में भौम तृतीय में शुक्र और लग्न में गुरु होतो उक्त योगों में माताकी मृत्यु होती है।

युवतिगो भृगुजो हरिगः कुजो घटशनिर्मिथुनाहिविभुस्ततः
व्ययविधुः कुटिलः कगतः खलो लयगते जनने जननीं हरेत् ॥ ६३ ॥

कन्या में शुक्र, सिंह में भौम, कुम्भ में शनि और मिथुन में राहु होतो (१) व्यय में चन्द्रमा, सुख में भौम और अष्टम में पाप होतो माताकी मृत्यु करता है।

दे.पाकरे कृशतरे सखले जले वा
कन्याकुरङ्गदृषकामभगैः क्रमेण।
काव्यारकोणफणिभिः किमु सर्वथोग्राः
पश्यन्ति शीतलकरं गलितं न रम्याः ॥ ६४ ॥
आलोकयन्त्यथ ततोर्विधुतो विशेषा-
त्सोर्ज्ये खले सहचरेऽथ विभाकरेऽस्ते।
निम्नोच्चगे किमसिते हिमगोस्त्रिकोणे
नक्तं जनस्य जननी निधनं सनेति ॥ ६५ ॥

सुख में अतीव क्षीण चन्द्रमा हो और पाप युक्त होतो (१) कन्या में शुक्र, मकर में मङ्गल, वृष में शनि और मिथुन में राहु होतो (२) सर्व प्रकार से क्षीण चन्द्रमा को पाप ग्रह देखते हो और शुभग्रह न देखते होतो (३) लग्न से विशेषतः चन्द्रमा से चतुर्थ में बली पापग्रह हो तो (४) सप्तम में नीचराशि गत वा उच्चराशि गत सूर्य होतो (५) चन्द्रमा से त्रिकोण मे शनि होतो मनुष्य की माता मृत्यु को प्राप्त होती है।

पतङ्गजो जलङ्गतो विलोकितोऽघखेचरैः।
तदाऽविलम्बितं नृणां करोति मातृनाशनम् ॥ ६६ ॥

सुख में शनि हो और वह पाप दृष्ट होतो मनुष्यों की माता का शीघ्र नाश करता है।

उपेश उग्रत्रितयेन लोकिते शुभैरदृष्टे किमघाभ्रचारिणि।
वधावसाने त्रिबले विलग्नपे दुःखी से बालो जननीविनाशकृत् ॥ ६७ ॥

'चन्द्रमा' तीन पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न होतो (१) अष्टम तथा व्यय में पापग्रह हो और लग्नेश निर्बल होतो उक्त योगों में उत्पन्न बालक दुःखी होता है और माता का नाश करता है।

क्षते क्षतौ साघशशी त्रिवत्सरे वाऽष्टौ त्रिवीर्यो बलगोऽम्बिकां हरेत्।
भवेऽस्त्र इन्दुर्भयगो मृतौ मृदुर्विमातृकुभागसमासु जन्मतः ॥ ६८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

षष्ठ वा व्यय में पापयुक्त चन्द्रमा हो अथवा तृतीय में निर्बल चन्द्रमा होतो तृतीय वर्ष में माता को मारता है। लाभ में भौम, षष्ठ में चन्द्र और अष्टम में शनि होतो जन्म से अष्टम वर्ष में माता को मारता है।

साघे सोमेऽसौम्यतः कान्तशान्ते दृष्टेऽमव्यैर्वीर्य्यवद्भिः किमिन्दोः।
नीरे क्रूरेऽरातिराशौ न केन्द्रे रम्ये मातुः पञ्चतोक्ता कृतीन्द्रैः॥ ६९॥

पाप ग्रह से सप्तम वा अष्टम में पाप युक्त चन्द्रमा हो और वह बली पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो (१) चन्द्रम से चतुर्थ में शत्रु राशि गत पाप ग्रह हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो माता की मृत्यु कहे।

सारगैः सितसौम्यैर्निसैंहिकेयाम्बुतस्करैः।
मृत्युमाप्नोति माताऽस्य मृते तातें प्रसूयते॥ ७०॥

धन में शुक्र, बुध, शनि, राहु तथा सूर्य हो तो पिता के मरने पर बालक का जन्म और पश्चात् उस की माता मृत्यु को प्राप्त होती है।

योऽम्बाभेशः कारकस्तत्समेता येऽम्बाभावस्थेक्षकाकाशवासाः।
तन्मध्ये योऽनिष्टकृत्तद्दशायां तद्भुक्तौ वा मृत्युमाहुः सवित्र्याः॥ ७१॥

मातृ (सुख) भाव का स्वामी, मातृ कारक (चन्द्र) उन दोनों से युक्त ग्रह, मातृ भाव में स्थित तथा मातृ भाव दर्शी इन सब ग्रहों के मध्य में जो ग्रह अत्यन्त अशुभ फल कारक हो उस की दशा में वा अन्तर्दशा में माता की मृत्यु को कहते है।

संशोध्य सूरस्फुटतः सुधाङ्गं तच्छेषराश्यंशगतेऽर्चिते च।
वैवस्वते वाऽथ ततस्त्रिकोणं प्राप्ते जनन्या निधनं वदन्ति॥ ७२॥

सूर्य के स्पष्टराश्यादि में चन्द्रमा के स्पष्टराश्यादि को हीन करे तब जो शेष राशि हो उस में वा उस की नवांश राशि में जब गोचर से गुरु वा शनि आवे तब माता की मृत्यु होती है। अथवा शेष राशि से पञ्चम वा नवम राशि में जब गुरु वा शनि आवे तब माता की मृत्यु होती है।

—: उदाहरण :—

स्पष्ट सूर्य २।२१।३४।२५ में स्पष्ट चन्द्र ४।२९।३४।४६ को हीन किया तो ९।२१।५९।३९ शेष राश्यादि बचे। यहां शेष राशि मकर है और उस में कर्कांश है अन्तः मकर वा कर्क में गुरु तथा शनि के आने पर मातृ मरण होगा। अथवा शेष राशि मकर से त्रिकोण (वृष तथा कन्या) राशि में जब गोचर से गुरु तथा शनि आवे तब माता की मृत्यु कहनी चाहिए।

प्रालेयभानोर्मृतिमन्दिरेशस्फुटे विशोध्यो यमकण्टकाख्यः
तदाशियातें तपनस्य सूनौ तदंशगेऽर्के मृतिमेति माता॥ ७३॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चन्द्राक्रान्तराशि से जो अष्टम राशि हो उस के स्वामी के स्पष्ट राश्यादि में यमकण्टक को हीन करे तब जो शेष राशि हो उस में जब गोचर से शनि आवे और शेष राशि में जिस राशि का नवांश हो उस में जब गोचर से सूर्य आवे तब माता की मृत्यु होती है।

—: उदाहरण :—

यहां 'चन्द्रमा' सिंह राशि में है इस से अष्टम कुम्भ राशि है इस का स्वामी शनि है अतः शनि के स्पष्ट राश्यादि ७।१।५९।३३ में यमकण्टक के स्पष्ट राश्यादि ०।२।४।३२ को हीन किया तो ६।२९।५५।१ शेष राश्यादि बचे। यहां शेष तुला राशि है इस में शनि के आने पर और शेष राशि तुला में मिथुन का नवांश है अतः मिथुन राशि में सूर्य के आने पर माता की मृत्यु होगी।

सुधांशुसंस्थांशभयोर्बलाच्च त्रिकोणगेऽर्के निधनं जनन्याः।
भानुस्थभागाधिपरूढभागे याते विधौ मृत्युमुपैति माता ॥ ७४ ॥

जन्म समय में जिस राशि में तथा जिस राशि के नवांश में चन्द्रमा हो उन दोनों राशियों के मध्य में जो राशि अधिक बली हो उस से जो पञ्चम वा नवम राशि हो उस में जब गोचर से सूर्य आवे तब माता की मृत्यु होती है। सूर्य की नवांश राशि का स्वामी जिस राशि के नवांश में हो उस में जब गोचर से चन्द्रमा आवे तब माता की मृत्यु होती है।

सुखेशयुक्तांशभपो यदंशे तदंशपांशोः कथयेज्जनित्र्याः।
पञ्चत्वकालं गृहकारकेशमध्ये बली यो लवको ऽत्र यावान् ॥ ७५ ॥

तदंशके मेषमुखे च तत्रान्तदो ऽनृजौ युग्मगुणं त्रिनिघ्नम्।
यदा ऽतिवक्रे ऽब्धिगुणं शुभेक्षायुजीरयेत्कालमथाम्बुयातैः ॥ ७६ ॥

खेटैश्च तस्मिन्नयने ऽम्बिकाया मृतिर्न चेत्तत्पतियुग्मकाले।
तथैव तस्मिन्नयने ऽथ तत्र द्वित्र्यादियोगादयनं प्रतीपात् ॥ ७७ ॥

जिस राशि के नवांश में वा जिस राशि में सुखेश हो उस का स्वामी जिस राशि के नवांश में हो उस के स्वामी के रश्मियों से माता की मृत्यु के काल को कहे। चतुर्थ भाव, चतुर्थ कारक तथा चतुर्थेश इन तीनों के मध्य में जो अधिक बली हो वह जितने अंश में हो और मेषादि गणना से जितनवां हो उस संख्या के तुल्य वर्ष में मृत्यु होती है यदि वह बली ग्रह वक्रगति वाला होतो उस की नवांश संख्या को द्विगुणित करे और वह अति-वक्र होतो त्रिगुणित करे एवं शुभ दृष्ट हो तो नवांश संख्या को चतुर्गुणित करने पर जो संख्या हो उस के तुल्य काल में मृत्यु को कहे। अथवा चतुर्थ गत ग्रहों के मध्य में जो अधिक बली हो उस के अयनादि काल में माता की मृत्यु को कहे। यदि उक्त काल में मातृमरण न होतो चतुर्थेश की आक्रान्त राशि के स्वामी के अयनादि काल में माता की मृत्यु को कहे। यदि मृत्यु काल के दो वा तीन योग हों तो उस अयनादि काल को विलोम रीति से कहे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अकस्मात् गृह लाभ के योगः--

सौख्याङ्गपत्योः सलिलस्थयोर्यदा ऽकस्माद्गृहाप्तिं निगदन्ति सूरयः ।
गेहे तदर्ये ऽप्यतिशक्तिसंयुत आगारलाभं कथयेदयत्नतः ॥ ७८ ॥

सुखेश और लग्नेश ये दोनों सुख में हो तो अकस्मात् (बिना यत्न से) गृह (घर) का लाभ होता है। गृहस्थान तथा गृहेश ये दोनों अतीव बली हों तो बिना परिश्रम से गृह लाभ होता है।

प्राणोपपन्ने पुरभं प्रयाते हितेशयुक्ते हरिजाधिनाथे ।
स्वकीयतुङ्गे सखिभे स्वराशावयत्नतो मन्दिरमेति मर्त्यः ॥ ७९ ॥

लग्न में बलवान् लग्नेश हो और वह सुखेश से युक्त हो एवं स्वोच्च राशि मित्र राशि वा स्वराशि में हो तो भी बिना परिश्रम से गृह का लाभ होता है।

गृह लाभ के योगः--

गात्रे गृहेशे धनपे वने ऽथ वा केन्द्रे कपे सच्चयुते सदीक्षिते ।
ततो गृहेशे परमोच्चभागगे वैशेषिकांशे भवनाप्तिरीर्य्यते ॥ ८० ॥

लग्न में सुखेश और सुख में लग्नेश हो तो (१) केन्द्र में बलवान् सुखेश हो और वह शुभ दृष्ट हो तो (२) परमोच्चांश वा वैशेषिकांश में सुखेश हो तो गृह का लाभ होता है।

वेश्मेशयुक्तांशपयुक्तभेशस्तदंशपे कण्टकगे गृहाप्तिः ।
सपोष्यपे प्राप्तिपतौ पयःस्थे निशान्तनाथे ऽपि च कारके वा ॥ ८१ ॥
सद्दृक्समेते च विशेषितांशे बह्वर्थयुक्तां वसतिं समेति ।
स्वस्वामिनाङ्गाधिभुवा ऽपि युक्ते निकेतने ऽथोदककेन्द्रकोणे ॥ ८२ ॥
सदारनाथोदकपे नराणां वदन्त्यवाप्तिं वसतेर्महान्तः ।
निकाय्यनाथो निजमुच्चमाप्तः पश्येन्मदं मन्दिरमाप्तिमाहुः ॥ ८३ ॥

सुखेश के नवांश का स्वामी जिस राशि में हो उस के स्वामी के नवांश का स्वामी यदि केन्द्र में हो तो गृह की प्राप्ति होती है। सुख गत लाभेश यदि धनेश से युक्त हो तथा चतुर्थेश और गृहकारक शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर वैशेषिकांश में हो तो बहुत धन से युक्त गृह की प्राप्ति होती है। सुख में सुखेश हो और लग्नेश से भी युक्त हो अथवा सुख केन्द्र वा त्रिकोण में सप्तमेश युक्त सुखेश हो तो गृह की प्राप्ति होती है। उच्चराशिगत सुखेश यदि सप्तम को देखता हो तो भी गृह की प्राप्ति होती है।

यावन्तो बलसहिता अनन्तपान्थाः
केन्द्रस्थाः किमु सुकृतोपलब्धियाताः
गेहानां कथयति तावतां बुधेन्द्रः
सौंदर्य्यं ध्रुवमिह नित्यमुद्भवानाम् ॥ ८४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

केन्द्र में अथवा त्रिकोण में जितने बलवान ग्रह हों मनुष्यों के उतने ही सुन्दर गृह होते हैं।

किं वा ऽवसानाननगीरभावपाः केन्द्रत्रिकोणोच्चसुहृत्स्वगेहगाः।
कुर्वन्ति गेहानि मनोरमाणि ते तावन्ति तज्ज्ञा भुवने वृथा इति ॥ ८६ ॥

अथवा व्यय, द्वितीय तथा चतुर्थ इन चारों भावों के स्वामी केन्द्र, त्रिकोण, उच्चराशि, मित्रराशि तथा स्वराशि में हों तो वे उतने ही मनोहर गृहों को करते हैं। इस प्रकार होरा शास्त्र वेत्ता कहते हैं।

तृणालयं कारकभागकायतः कगे भगे तत्र सुरेन्द्रयाजके।
निकेतनं दारुमयं ध्वजासृजोस्तत्रस्थयोश्चेद्गृहमिष्टिकामयम् ॥ ८७ ॥

कारकांशलग्न से सुख में सूर्य हो तो तृणाच्छादित गृह, सुख हो तो काष्ठमय गृह एवं केतु तथा मङ्गल हो तो इष्टिका (ईटका) गृह होता है।

विचित्रहर्म्यप्राकारादियुक्त गृह योग:—

पुण्यपे केन्द्रगे मित्रपे मित्रभे स्वोच्चभे तुङ्गगाकायगे मित्रगे।
किं नभःकेशयोः सैनिसिन्धूत्थयोर्मन्दिरं सुन्दरं चित्रितं जन्मिनाम् ॥ ८७ ॥

केन्द्र में भाग्येश, मित्रराशि वा स्वोच्चराशि में सुखेश और उच्चराशि गत ग्रह युक्त हो तो (१) दशम तथा चतुर्थ के स्वामी ये दोनों शनि तथा चन्द्रमा से युक्त हों तो मनुष्यों के सुन्दर विचित्र गृह होते हैं।

केन्द्रत्रिकोणे बलपे बलिष्ठे गदन्ति गेहं रुचिरं विचित्रम्।
वीर्य्याश्रिते भव्यखगे बलेशे वीर्य्यान्विते बन्धुपराशिगेऽपि ॥ ८८ ॥

वीर्य्येण पूर्णेऽथ निशान्तनाथे सिंहासनाद्ये किमु गोपुराद्ये।
मृदंशके वा मनुजस्य हर्म्यं प्राकारयुक्तं प्रवदन्त्युदीन्द्राः ॥ ८९ ॥

केन्द्र वा त्रिकोण में बली सुखेश हो तो विचित्र रमणीय गृह होता है। लग्न में शुभ ग्रह हो एवं सुखेश तथा उस की आक्रान्त राशि का स्वामी ये दोनों परिपूर्ण बली हों तो (२) सिंहासनाद्य गोपुरांश वा मृदंश में सुखेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य के प्राकार युक्त हर्म्य को कहे।

गेहपे गगनपार्किसंयुते कण्टके जनुषि सौधमण्डितम्।
तद्गृहं वनदये व्ययालये जीर्णमन्दिरमुदैति जातकः ॥ ९० ॥

केन्द्र में सुखेश हो और वह दशमेश तथा शनि से युक्त हो तो उक्त योगों उत्पन्न पुरुष का सौध मण्डित (चूना कलि से सुसज्जित) गृह होता है। व्यय में सुखेश हो तो मनुष्य का जीर्ण गृह होता है।

यदि पारावतांश वा गोपुरांश में सुखेश हो और वह चन्द्र तथा शुक्र से दृष्ट हो तो देव सम्बन्धी गृह होता है।

यदा पारावते भागे गोपुरे वा सुहृदाश्रिते।
सिन्धूत्थयोर्दृशा युक्ते दैविके मन्दिरं भवेत् ॥ ९१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दत्तकके गृह लाभ के योगः—

साघे हरौ कर्किणि वा खरांशौ वेन्दौ सपापे किमघेक्षितेऽथो।
गृहे किमभ्रे सखलेऽथ धन्विमृगाजलेयेषु हितेऽम्बरे वा ॥ ९२ ॥

अथेन्दुतोऽघे हिबुकेऽथ भानोर्भाग्येऽम्बरेऽघेऽथ विधाविने वा।
वैरीक्षिते वैरिगृहे गृहाप्ति भूत्वा भवो दत्तक एति मर्त्यः ॥ ९३ ॥

सिंह वा कर्क में पाप ग्रह हो तो (१) सूर्य वा चन्द्र पापयुक्त वा पाप दृष्ट हो तो (२) चतुर्थ वा दशम पाप युक्त होतो (३) धनु, मकर मेष तथा सिंह इन चारोंके मध्य मे कोई एक राशि चतुर्थ वा दशम में होतो (४) चन्द्रमा से चतुर्थ में पाप होतो (५) सूर्य से नवम वा दशम में पाप होतो (६) चन्द्र वा सूर्य शत्रु राशि में हो और शत्रु ग्रह से दृष्ट होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष दत्तक होकर गृह को पाता है :

गृह नाश के योगः—

दुःस्थेषु साघस्वखकान्त्यभर्तृषु यावत्सु तावन्ति निकेतनानि नुः।
दह्यन्त उर्वीधरभानुना तथा लवे भगाह्योः कुजमात्रदृष्टयोः ॥ ९४ ॥

द्वितीय, दशम, चतुर्थ तथा द्वादश इन चार स्थानों के स्वामी जितने पापग्रहों से युक्त होकर त्रिकस्थान में हों मनुष्य के उतने ही घर अग्नि से जल जाते है। एवं कारकांश लग्न में सूर्य तथा राहु हों और वे केवल मङ्गल से दृष्ट हों तो भी अग्नि से घर जल जाता है।

सखिगतः सविता कुटिलोऽथ वेन्दुसितदृग्रहितो गृहदाहकृत्।
क्षितिजनिर्जलगोऽहितराशिपो हितपतिः सहितोऽरिदृशा तथा ॥ ९५ ॥

सुख में सूर्य वा मङ्गल हो और वह चन्द्र तथा शुक्र से दृष्ट न हो तो घर जलाने वाला होता है। सुख में शत्रुराशि गत भौम हो और सुखेश यदि शुभग्रह से दृष्ट होतो भी घर जलाने वाला होता है।

निकेतनेशे मलिनेक्षिते त्रिकस्थलेऽथ वा तत्र कनाथभागपे।
निशान्तनाशो न शुभेक्षितान्विता यावद्भिरुग्रैः सहिताः स्वकाकपाः ॥ ९६ ॥

वदेद् गृहाणां प्रलयं च तावतां लये जलेशे खललोकितेऽथ वा।
वस्त्याधिभूयुक्तलवेश्वरे लये कल्पेऽङ्गपारिद्युचरेऽत्र तद्धृतौ ॥ ९७ ॥

दाये धरावेश्मविनाशनं वदेत्पञ्चत्वगाः प्रान्त्यकपोष्यपालकाः।
यदुन्मितैः पावकरवेचरैर्युतास्तदुन्मिताः स्युर्बलसत्वदा गृहाः ॥ ९८ ॥

त्रिक में पाप दृष्ट सुखेश होतो (१) त्रिक में सुखेश के नवांश का स्वामी होतो उक्त योगों में गृह का नाश होता है। द्वितीय, चतुर्थ तथा द्वादश इन तीनों भावों के स्वामी शुभ दृष्ट न हों और जितने पापग्रहों से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

युक्त हों उतनेही घरोंका नाश होता है। अष्टम में पाप ग्रह दृष्ट सुखेश हो तो (२) अष्टम में सुखेश के नवांश का स्वामी हो और लग्न में लग्नेश का शत्रु ग्रह होतो उसकी अन्तर्दशा या दशामें भूमि तथा गृह का नाश करे। द्वादश, चतुर्थ तथा द्वितीय इन तीन स्थानों के स्वामी अष्टम में स्थित होकर जितने पापग्रहों से युक्त हों उतने ही गृह आलस्य दायक होते हैं।

व्ययेशसंयुता अघा यदुन्मिताः खमित्रगाः।
त्रिकस्थितास्तदुन्मिता गृहा अनिष्टकारकाः ॥ ९९ ॥

दशम, चतुर्थ तथा त्रिकमें व्ययेश से युक्त होकर जितने पापग्रह हों उतने ही घर अनिष्ट करने वाले होते हैं

ज्ञात्यादिसान्मन्दिरमम्बुपेऽरिगे कर्मे कर्मे पातयति स्वयं गृहम्।
तस्मिंस्त्रिके दुष्टबलैः समन्वित आलस्यवेश्म ग्रहपीडनं किमु ॥ १०० ॥

हिते खलेऽहौ किमु पामरेक्षिते तदा नरः सद्मसुखार्त्तिभाग्भवेत्।
निम्नेऽरिभेऽर्के रुधिरे रसातले जातः पुमान्यस्य विवर्जितो भवेत् ॥ १०१ ॥

षष्ठ में सुखेश होतो उसका घर जाति बिरादरी के अधिकार में होता है। एवं अष्टम में सुखेश होतो वह मनुष्य अपने घरका स्वयं पतन करता है। त्रिकमें दुष्टबल युक्त सुखेश होतो मनुष्य का आलस्यगृह वा ग्रहपीडित गृह होता है। सुख में पाप ग्रह वा राहु हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट होतो मनुष्य गृह के सुख से रहित होता है। नीच राशिवा शत्रुराशि में सूर्य हो तथा सुख में भौम होतो मनुष्य गृह रहित होता है।

बहुगृह तथा स्थिर गृह वास योगः—

पाताले चरभे चरे तदधिपे तत्कारके वा चरे
मर्त्यानां बहुषु स्थलेषु भवनं तत्र स्थिरर्क्षे स्थिरः।
वासः स्याद्यदि तत्पतौ स्थिरगृहे तत्कारकाख्ये तथा
षष्ठ्यंशे शुभभागगे तदधिपे वासो व्रजेत्स्थैर्य्यकम् ॥ १०२ ॥

सुख में चर राशि हो और चरराशि में सुखेश भी होतो (१) चरराशि में चतुर्थ कारक (चन्द्र तथा बुध) होंतो मनुष्य बहुत घरों में रहने वाला होता है। सुख में स्थिर राशि हो और स्थिरराशि में सुखेश वा सुख कारक होंतो मनुष्य का स्थिर वास होता है। एवं शुभ षष्ठ्यंश में सुखेश हो तो भी स्थिर वास होता है।

वाहन चिन्ता परिज्ञानः—

प्रोक्ता हितात्प्राप्तिगृहात्तदीशतो यानस्य चिन्ता व्ययतोऽपि केनचित्।
काव्येज्यसौम्याः सबलाः शुभावगास्तैर्वाहनानां सुखमादिशेत्कृती ॥ १०३ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चतुर्थ, लाभ तथा उनके स्वामियों से वाहन का विचार करे। व्ययभाव से भी वाहन का विचार करे। इस प्रकार कोई आचार्य कहता है। बलवान् शुक्र, गुरु तथा बुध यदि शुभभावों में स्थित होंतो उन से वाहन के सुख को कहे।

वाहन सौख्य योगः—

तुङ्गस्थखेटे द्रविणे गुरूदयनाथेक्षिते ऽथाम्बरपुण्यलाभपैः।
पातालगैर्वा सखिपे सहोयुते सद्युक्तदृष्टे ऽथ हिताम्बरेशयोः ॥ १०४ ॥

सिंहासने ऽङ्गेश्वरदृष्टयोः किमु कल्पे कपे काव्ययुते किमम्बुपे।
कलेवरे गौरयुते ऽथ तुर्य्यपयुक्तेस्तनौ काव्यमृगाङ्कमंत्रिभिः ॥ १०५ ॥

किं पस्त्यपाले पथिपान्विते ऽचिंतदृष्टान्विते प्राणयुते ऽथ पुण्यपात्।
प्राप्तौ पुरेशे ऽध्वनि नीरपे किमु केन्द्रे कपाले तदिने तनौ ततः ॥ १०६ ॥

पानीये गगनचरे स्वतुङ्गयाते
सारेशे शिरसि मुखे वियद्विभौ वा।
पौरेशे पदसदने पदाधिपाले
पौरस्थे प्रभवति यानसौख्यभाङ् ना ॥ १०७ ॥

धन में उच्चराशिगतग्रह हो और वह भाग्येश तथा लग्नेश से दृष्ट होतो (१) सुख में दशम, नवम तथ लाभ इन तीनों भावों के स्वामी हों तो (२) बली चतुर्थेश यदि शुभ युक्त दृष्ट होतो (३) सिंहासनांश में सुखेश तथा दशमेश हों और वे लग्नेश से दृष्ट होंतो (४) लग्न में शुक्र युक्त चतुर्थेश हो वा लग्नगत सुखेश गुरु से युक्त होंतो (५) लग्न में शुक्र, चन्द्र तथा गुरु हों और वे सुखेश से युक्त होंतो (६) बली सुखेश यदि भाग्येश से युक्त हो और गुरु से दृष्ट वा युक्त होतो (७) नवमेश से लाभ में लग्नेश हो और नवम में सुखेश होतो (८) केन्द्र में सुखेश हो और लग्न में उस केन्द्र का स्वामी होतो (९) सुख में उच्चराशिगत ग्रह हो, लग्न में धनेश हो और धन में दशमेश हो तो (१०) दशम में लग्नेश और लग्न में दशमेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष वाहन सौख्य वाला होता है।

मनुष्य वाहन के योगः—

सूरौ सङ्गे सौख्यपे सौम्यखेटे मार्गे मर्त्यो मर्त्ययानं समेति।
होराधीशे शोभने क्षेत्रनाथे लब्धौ तुङ्गे कारके प्रान्त्यभावे ॥ १०८ ॥

भास्वत्तुल्ये वत्सरे मर्त्ययानं कीलालस्थे लब्धिभावाधिनाथे।
प्राप्तिस्थाने नीरनाथे ऽर्कतुल्ये वर्षे जातः प्राप्नुयान्मर्त्ययानम् ॥ १०९ ॥

शुभग्रह की राशि में गुरु हो तथा भाग्य में सुखेश शुभग्रह हो तो मनुष्य को मनुष्य वाहन की प्राप्ति होती है। लग्नेश शुभ ग्रह हो, लाभ में उच्चराशि गत सुखेश हो और व्यय में चतुर्थ कारक हो तो (१) सुख में

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लाभेश हो और लाभ में सुखेश हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष को बारह वर्ष में मनुष्य वाहन की प्राप्ति होती है।

गज वाहन के योगः—

ऐरावतांशे सखिसद्मभर्त्तरि वावाप्तिपे गोपुरभागगे ऽथ वा।
वैशेषिकांशे वसतीशि कण्टके जातो जनः कुञ्जरयानभाग्भवेत्॥ ११० ॥

ऐरावतांश में सुखेश हो तो (१) गोपुरांश में लाभेश हो तो (२) वैशेषिकांश में केन्द्रगत सुखेश होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष गजवाहन वाला होता है।

अश्व वाहन के योगः—

सेन्द्वङ्गपे धोरणपे पुरे वा सोमे सुखे स्वे शुभभे ससौम्ये।
किं बन्धुनाथेन युते विलग्नसम्बन्धिनीन्दौ हययानभाक्सः॥ १११ ॥

लग्नगत सुखेश यदि लग्नेश तथा चन्द्रमा से युक्त हो अथवा शुभराशिगत चन्द्रमा शुभग्रहों से युक्त होकर चतुर्थ वा धन में हो अथवा चतुर्थेश युक्त चन्द्रमा लग्न में हो वा लग्नको देखता हो वा लग्नेश होतो अश्ववाहन से युक्त होता है।

वाहन युक्त योगः—

त्रिकोणकेन्द्रायगतौ सितेज्यौ सवाहनेशा उत धिष्ण्यगौरौ।
सपुण्यपौ के नवमे विधत्तो मनुद्भवं वाहनवृन्दनाथम्॥ ११२ ॥

त्रिकोण केन्द्र वा लाभ में शुक्र तथा गुरु हों और वे सुखेश युक्त हों अथवा चतुर्थ वा नवम में शुक्र तथा गुरु हों और वे नवमेश से युक्त होंतो मनुष्य को वाहनों के समूह का स्वामी करते हैं।

सार्थाधिपे तुङ्गगते व्ययेशे ऽङ्केशेक्षिते यानसमूहनाथः।
साङ्केशि सौख्येशि भवे ऽथ पश्येत्स्वभं सवीर्य्यः स विशेषितांशे॥ ११३ ॥
वा ऽऽये पयःपे गुरुणेक्षिते वा सिते ऽनुजायास्तमये विधोर्वा।
वागीशदृष्टाम्बुपवीक्ष्यमाणे क्षीरे नरो धोरणसंघनाथः॥ ११४ ॥

उच्चराशिगत व्ययेश यदि द्वितीयेश से युक्त हो और नवमेश से दृष्ट होतो वाहनों के समूह का स्वामी होता है। लाभ में भाग्येश युक्त सुखेश हो तो (१) वैशेषिकांश में बलवान् सुखेश हो और वह सुखस्थान को देखता होतो (२) लाभ में सुखेश हो और वह गुरु से दृष्ट होतो (३) चन्द्रमा से तृतीय लाभ वा सप्तम में शुक्र होतो (४) गुरु से दृष्ट सुखेश यदि सुखस्थान को देखता होतो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य वाहनों के समूह का स्वामी होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उच्चग्रहे राशि पुराङ्कपेक्षिते प्राणान्विते पौरपतौ परस्परम् ।
केन्द्राश्रितैर्धोरणधर्म्मदेहपैः कलेवरी वाहनवृन्दनायकः ॥ ११५ ॥

दशम में उच्च राशिगत ग्रह हो और वह लग्नेश तथा नवमेश से दृष्ट हो एवं लग्नेश बलवान् हो और सुख, नवम तथा लग्न इन तीनों स्थानों के स्वामी परस्पर केन्द्र में हो तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष वाहनों के समूह का स्वामी होता है ।

यानेशे सबले बलेन सहिते सौख्येऽपि सद्वीक्षिते
युक्ते वा सबुधेऽम्बुपे शुभदृशा युक्ते शुभर्क्षांशगे ।
सौख्यस्थेऽथ खपे स्वतुङ्गनवधीकेन्द्रस्थितेऽथाम्बुपे
दृष्टे खाङ्कफलाधिपैर्बलयुते चेद्गोपुराद्यंशके ॥ ११६ ॥

यानाढ्यो विधिमन्दिरेशि परमोच्चांशे विहङ्गद्वये
सस्वोच्चेऽथ पदाधिपे सलिलगे पुण्यायपाभ्यां युते ।
किं लब्धौ जलपे जले जनकपे सल्लोकितेऽङ्गेऽथ वा
पुण्येशे परमोच्चगे भुवि शुभे तत्पे त्रिकोणोच्चगे ॥ ११७ ॥

केन्द्रे वा बहुयानपुञ्जसहितो भाग्याम्बुपौ सद्ग्रहैः
संयुक्तौ सबलौ चमूपतिरिह श्रीसंयुतो मानवः ।
पातालोदयवित्तवेश्मपतयः स्वर्क्षस्थिता मूर्त्तिगे
कल्याणालयपे भवेद्यदि नरो सिंहासनेभाधिपः ॥ ११८ ॥

सुखेश बली हो और सुखस्थान भी बलवान् हो एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त हो तो (१) सुख में शुभ राशि के नवांश में प्राप्त सुखेश हो और वह बुध से युक्त हो एवं शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो (२) त्रिकोण वा केन्द्र में उच्च राशिगत दशमेश हो तो (३) गोपुरादि भाग में बली चतुर्थेश हो एवं दशम, एकादश तथा नवम इन तीनों भावों के स्वामियों से दृष्ट हो तो वाहन से युक्त होता है । परमोच्चांश में नवमेश हो और कोई भी दो ग्रह अपने उच्च में हो तो (१) सुख में दशमेश हो और वह नवमेश तथा लाभेश से युक्त हो तो (२) लाभ में सुखेश हो और सुख में दशमेश हो एवं लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो (३) सुख वा नवम में परमोच्चगत नवमेश हो और नवमेश की राशि का स्वामी मूलत्रिकोण राशि वा उच्च राशि में हो एवं केन्द्र में हो तो बहुत वाहन वाला होता है । भाग्येश तथा सुखेश ये दोनों बली हों और शुभ ग्रहों से युक्त हों तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष लक्ष्मी से युक्त तथा सेनापति होता है । सुख, लग्न तथा धन इन तीनों स्थानों के स्वामी स्वराशि में हो और लग्न में भाग्येश हो तो सिंहासन तथा हाथियों का स्वामी होता है ।

क्षेत्राधीशे प्राप्तिगे प्राणयुक्ते वाऽऽये बन्धौ वक्रयुक्ते च तस्मिन् ।
यद्वा भूमिस्थानपे भौमराशा भूपाराज्यद्रव्यसौख्यादियानम् ॥ ११९ ॥

लाभ में बलवान् सुखेश हो अथवा लाभ वा सुख में बलवान् सुखेश हो और वह भौम से युक्त हो अथवा मंगल की राशि में सुखेश हो तो भूषण, राज्य, धन, सौख्य तथा वाहन से युक्त होता है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हेलौ जले तदधिपे निजतुङ्गयाते
काव्यान्विते दशनसम्मितवत्सरे ना ।
यानं लभेत जलपे सरवपे निजोच्चां-
शे यानभाग्भवति पक्षकृतोन्मिते ऽब्दे ॥ १२० ॥

सुख में सूर्य हो और स्वोच्चराशि में शुक्र से युक्त सुखेश हो तो ३२ वें वर्ष में वाहन की प्राप्ति होती है। स्वोच्चांश में दशमेश युक्त सुखेश हो तो ४२ वें वर्ष में वाहन की प्राप्ति होती है।

जायानुजारिनवमान्त्यजलोदयेशाः
पुत्राधिपेन सहिताबहुयानदेशान् ।
यच्छन्ति केन्द्रगुरुनन्दनगो विधीशः
प्राणी गुरुः शुभ उतास्फुजिदेति यानम् ॥ १२१ ॥

सप्तम, तृतीय, षष्ठ, नवम, व्यय, सुख तथा लग्न इन सातों स्थानों के स्वामी सुतेश से युक्त हों तो बहुत देश तथा बहुत वाहनों को देते है। केन्द्र वा त्रिकोण में नवमेश हो और नवम में बलवान् गुरु वा शुक्र हो तो वाहन की प्राप्ति होती है।

पूर्णेन्द्वच्छौ प्राणिनौ चेत्त्रिकोणे केन्द्रे भूपान्दोलिकादौ भवेताम् ।
प्रालेयांशुर्जीवभे जीवयुक्तदृष्टो भूपारक्तवस्त्रप्रदाता ॥ १२२ ॥

त्रिकोण वा केन्द्र में बली पूर्ण चन्द्र तथा बली शुक्र हों तो भूषण तथा आन्दोलिका (पालकी) को देते है। गुरु की (९।१२) राशि में चन्द्रमा हो और वह गुरु से युक्त वा दृष्ट हो तो भूषण तथा रक्तवस्त्र को देता है।

पातालेशाच्छेन्दवः साङ्गपालाः पुंसां वाहान्दोलिकादा भवंति ।
एकत्रेज्याच्छेन्दुपानीयपालाः केन्द्रे कोणे चेच्चतुर्यानदाः स्युः ॥ १२३ ॥

चतुर्थेश, शुक्र तथा चन्द्र ये तीनों लग्नेश से युक्त हो तो घोडा तथा पालकी को देते है। केन्द्र वा त्रिकोण में गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा सुखेश ये चारों एक साथ हो तो चारप्रकार के वाहन को देते हैं।

तद्वज्जीवे साम्बुपे ऽथाम्बरे सद्युक्ते ऽम्बेशे चामरच्छत्रयुक्तः ।
गोविन्देशे ऽवाप्तिगेहे तदीशे विष्णौ भूपावाहनान्येति जातः ॥ १२४ ॥

यदि गुरु सुखेश से युक्त हो तो भी उक्त फल को करता है। दशम में शुभ युक्त सुखेश हो तो चामर तथा छत्र से युक्त होता है। लाभ में दशमेश हो और दशम में लाभेश हो तो भूषण तथा वाहनों की प्राप्ति होती है।

दुर्वाहनादि योगः—

मूढारिनिम्नगृहगे गृहपे त्रिकस्थे
दृष्टे तपःसदनपेन किमायपेन ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दुर्वाहिनी भवति चञ्चलवाहिनी वा
सौम्येषु खाङ्कतनुगेषु निजोच्चभेषु ॥ १२५ ॥
दृष्टेषु देहदयितेन स वाहनान्ते
दुःखं समेति सुखपे धिषणे सपापे ।
निम्नास्तशात्रवभगे त्रिकभावयाते
जातस्य नो भवति वाहनपूर्वभाग्यम् ॥ १२६ ॥

त्रिक में अस्तगत नीचराशिगत वा शत्रु राशि गत सुखेश हो नवमेश वा लाभेश से दृष्ट हो तो मनुष्य दुष्टवाहन वाला अथवा चञ्चलवाहन वाला होता है। दशम, नवम तथा लग्न में उच्चराशिगत शुभग्रह हों और उन को लग्नेश देखता हो तो वाहन के अन्त्य में दुःख पाता है। त्रिक में नीचराशिगत अस्तगत वा शत्रु राशि गत सुखेश गुरु हो और वह पाप युक्त हो तो मनुष्य को वाहनादि की प्राप्ति नहीं होती है।

वाहन प्राप्ति समय परिज्ञानः--

एषां पूर्वोक्तयोगानां यो बली योगकारकः ।
तस्य दाये च तद्भुक्तौ वाहनाप्तिं वदेद्बुधः ॥ १२७ ॥

इन पूर्वोक्त वाहन लाभ के योगों के मध्य में जो योगकारक ग्रह अधिक बली हो उस की दशा में तथा अन्तर्दशा में वाहन की प्राप्ति को कहे।

यानस्य सौख्यप्रदखेचरस्य वाङ्गाम्बुपत्योः परिपाककाले ।
सम्बन्धकर्त्तृद्युसदस्तयोर्वा दाये हृतौ वाहनलब्धिरुक्ता ॥ १२८ ॥

वाहन सौख्यप्रद ग्रह की लग्नेश की सुखेश की वा लग्नेश सुखेश के सबन्धी ग्रह की दशा वा अन्तर्दशा में वाहन की प्राप्ति होती है।

वाहन नाश के योगः—

यावन्तो यानगाः पापा नेक्षिताः शोभनग्रहैः ।
किमन्त्यायुर्गताः क्रूरा यावन्तो वाहनालयम् ॥ १२९ ॥
पश्येयुस्तावतां नाशं वाहनानां वदेत्कृती ।
सत्करणं समादेश्यं यानानां शान्तिकं तदा ॥ १३० ॥

सुख में जितने पापग्रह हों और वे शुभग्रहों से दृष्ट न हों अथवा व्यय तथा अष्टम में जितने पापग्रह हों और वे चतुर्थ भाव को देखते हों उतने ही वाहनों का नाश होता है। अतएव वाहनों के लिए शुभफलप्रद शान्ति करे।

वाद्यादिघोषयुक्त पुरुष जन्म के योगः—

प्राग्देवतेज्ये परमोच्चभागगे गेहेऽभ्रपे तादृशयोगसम्भवः ।
वाद्यादिघोषैः सहितश्चतुष्टये सार्कौ खपे चोपचये सशोभने ॥ १३१ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पौराधिपाले पणवस्वनान्वितश्चेद्राजयोगोऽस्ति जनौ खपेऽम्बुगे ।
मृदङ्गभेरीस्वनसंयुतः सुखे भाग्याधिपे नाऽम्बुकवोपसंयुतः ॥ १३२ ॥

सुख में परमोच्चांश गत शुक्र हो एवं दशमेश भी परमोच्चांश में स्थित होकर सुख में हो तो वाद्यादि घोषों से युक्त होता है। केन्द्र में शनि युक्त दशमेश हो और उपचय में शुभ ग्रह युक्त लग्नेश हो तो पणव (ढोलविशेष) शब्द से युक्त होता है। यदि जन्म समय में राजयोग हो और सुख में दशमेश हो तो मृदङ्ग तथा भेरी के शब्द से युक्त होता है। एवं सुख में भाग्येश हो तो शङ्ख के शब्द से युक्त होता है।

बन्धु पूज्य के योगः—

मित्रालये निर्मलवीक्षितान्विते तत्कारके वीर्य्ययुते किमम्भसि ।
आर्य्ये गृहेशे सशुभे सुरार्च्चितदृष्टेऽथ तुर्य्ये द्युचरे निजोच्चभे ॥ १३३ ॥

स्वमित्रभे जीवदृशा युतेऽथ वा त्रिभिः स्वभस्थैरथ गोपुरांशके ।
मृद्वंशके केन्द्रगते कनायके तदा जनो बन्धुजनैः प्रपूजितः ॥ १३४ ॥

यदि सुख भाव शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो और चतुर्थ कारक बलवान् हो तो (१) सुख में गुरु हो और शुभ ग्रह युक्त सुखेश यदि गुरु से दृष्ट हो तो (२) सुख में उच्चराशिगत वा मित्र राशिगत ग्रह हो और वह गुरु से दृष्ट हों तो (३) स्वराशि में तीन ग्रह हो तो (४) केन्द्र में गोपुरांश गत तथा मृद्वंशगत सुखेश हो तो बन्धुजनों से पूजित होता है।

शातेश्वरे शोभनखेटलोकिते शुभे शरीरे रजनीशजेऽथ वा ।
प्राणप्रपूर्णे सुखकारकग्रहे प्रपूजितो बन्धुजनैः स मानवः ॥ १३५ ॥

सुखेश यदि शुभग्रह से दृष्ट हो और नवम वा लग्न में बुध हो अथवा सुखकारक ग्रह पूर्ण बली हो तो बन्धुजनों से पूजित होता है।

बन्धुजनों का उपकार कर्त्ता योगः—

पानीयपे प्राप्तिचिदङ्ककेन्द्रे वैशेषिकांशे रहिते खलानाम् ।
ईक्षान्वयाभ्यामुत नीर आर्यास्फुजिद्विदस्तत्र तदीयभे वा ॥ १३६ ॥

तैर्लोकिते वा मृदुभागयुक्तेऽथौकोऽधिपे पोष्यफल त्रिकोणे ।
शुभेक्षिते शोभनभागगे वा धनाधिपे धीविधि लाभगेहे ॥ १३७ ॥

कल्याणदृष्टे वसुधातलेऽथो चतुष्टये क्षीरपतौ शुभांशे ।
बन्धूपकारी जनितो मनुष्यश्चतुर्षु खेटेषु सुहृद्गृहेषु ॥ १३८ ॥

यातेषु ना बन्धुजनप्रपोष्यको बन्धूपभोगी दकपे चतुष्टये ।
निरीक्ष्यमाणे सदनन्तचारिभिर्मृद्वंशकादौ यदि गोपुरांशके ॥ १३९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लाभ पञ्चम नवम वा केन्द्र में वैशेषिकांशगत सुखेश हो और अशुभग्रहों से युक्त दृष्ट न हो तो (१) सुख में बुध, गुरु तथा शुक्र हों वा उन की राशि हो वा उन से दृष्ट हो वा सुख में मृद्वंशक हो तो (२) धन लाभ वा त्रिकोण में शुभांशगत सुखेश हो और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो (३) त्रिकोण वा लाभ में धनेश हो और सुख स्थान शुभ दृष्ट हो तो (४) केन्द्र में शुभांशगत सुखेश हो तो बन्धुजनों का उपकार करनेवाला होता है। जन्म समय में यदि मित्र राशि में चार ग्रह हों तो बन्धुजनों का पालन करनेवाला होता है। केन्द्र में गोपुरांशगत तथा मृद्वंशगत सुखेश हो और वह शुभग्रहों से दृष्ट हो तो बन्धुजनों का उपकार करनेवाला होता है।

बन्धु त्याज्यादि योगः—

धामाधीशे क्रूरषष्ठ्यंशयाते साकल्याणे स्वल्पशक्तौ च यस्य ।
सूतौ मर्त्यो बान्धवैस्त्यज्यते स शातस्थानाधीश्वरे कारके च ॥ १४० ॥

पापैः खेटैः संयुते बन्धुमध्ये निन्द्यो नारे रम्यवीक्षान्वयोने ।
क्रूराक्रान्ते नीचमूढद्युवासैर्युक्ते जातो मानुषो बन्धुवैरी ॥ १४१ ॥

क्रूरषष्ठ्यंश में निर्बल सुखेश हो और वह पाप युक्त हो तो वह मनुष्य बन्धुजनों से त्याग दिया जाता है। चतुर्थेश तथा चतुर्थ कारक ये दोनों पाप ग्रहों से युक्त हों तो बन्धुजनों के मध्य में निन्दनीय होता है। सुख स्थान पापाक्रांत हो और शुभग्रहों की दृष्टि तथा योग से रहित हो एवं नीचराशिगत तथा अस्तगत ग्रह से युक्त हो तो बन्धुजनों का वैरी होता है।

निकाय्यभावाधिपकारकाख्यसंयुक्तभागाधिपभागनाथः ।
अस्तंगतो नीचभगोऽत्र बन्धुवर्गादिकानां भयकर्म्मकृन्ना ॥ १४२ ॥

चतुर्थेश तथा चतुर्थ कारक जिस के नवांश में हों उस ग्रह के नवांश का स्वामी यदि अस्तगत हो वा नीच राशि में हो तो बान्धव गणों के लिए भय प्रद कर्म्म करनेवाला होता है।

बहुक्षेत्र युक्त योगः—

शातेशे यशसि क्रियेशि कुतले भूनन्दने प्राणिनि
यद्वा शौर्य्यवतोर्नभोवनपयोः सख्योर्मिथोऽत्राथ वा ।
हृत्तन्नायकयोः ससौम्यखगयोः किं नन्दने नीरपे
मृद्वंशे यदि गोपुरांशवदने मर्त्यो बहुक्षेत्रवान् ॥ १४३ ॥

दशम में सुखेश, सुख में दशमेश और मङ्गल बली हो तो (१) दशमेश तथा सुखेश ये दोनों बली हों और परस्पर मित्र हों तो (२) सुखस्थान तथा सुखेश ये दोनों शुभग्रह से युक्त हों तो (३) पञ्चम में मृद्वंशगत तथा गोपुरांशादिगत सुखेश हो तो मनुष्य बहुत क्षेत्र (खेत) वाला होता है।

सद्धे सौम्ये तत्पतौ कारकेऽपि कल्याणानामन्वयेक्षासमेते ।
स्वोच्चे स्वर्क्षे स्वत्रिभागे सुहृद्धे याते पुंसां स्याद्बहुक्षेत्रवित्तम् ॥ १४४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख में शुभग्रह की राशि हो, स्वोच्चराशि स्वराशि स्वद्रेष्काण वा मित्र राशि में चतुर्थेश तथा चतुर्थकारक हों तो उक्त योग में उत्पन्न पुरुषों के बहुत क्षेत्र धन होता है।

क्षेत्र प्राप्ति के योगः—

क्षेत्रेशे सबले तनौ तनुपतौ वीर्य्यान्विते क्षेत्रगे
कल्याणैः कलितेक्षिते स्वबलतः क्षेत्राप्तिमाहुर्बुधाः :
चेत्पारावतभागगे बलयुते चारोहभागे शुभैः
संदृष्टे सुखपे स्वभोपचयगे क्षेत्रस्य बाहुल्यकम् ॥ १४५ ॥

लग्न में बली सुखेश हो, सुख में बली लग्नेश हो और वे शुभग्रहों से दृष्ट तथा युक्त होतो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष को अपने बाहुबल से क्षेत्र की प्राप्ति होती है। स्वाराशि में तथा उपचय स्थान में पारावतांशगत तथा आरोह-भागगत बली सुखेश हो और वह शुभ दृष्ट हो तो उक्त योग में क्षेत्र की अधिकता होती है।

भ्राता तथा स्त्री से क्षेत्र प्राप्ति के योगः—

केदारे तदिने सहोत्थविभुना तत्कारकेणान्विते
यद्वा वप्रपसंयुतांशरमणे केन्द्रे सुहृल्लोकिते।
गौत्रेयान्वितवीक्षिते सहजतः क्षेत्रं लभेत् क्षेत्रपे-
ऽस्ते स्त्रीकारक आलये च सखिता तन्नाथयोः स्त्रीजनात्

चतुर्थ भाव तथा चतुर्थेश ये दोनों तृतीयेश तथा तृतीय कारक से युक्त हों तो (१) केन्द्र में सुखेश के नवांश का स्वामी और वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो एवं मङ्गल से युक्त वा दृष्ट हो तो भाई से क्षेत्र की प्राप्ति होती है। सप्तम में सुखेश हो तथा सुख में स्त्रीकारकग्रह हो और सुखेश सप्तमेश की परस्पर मित्रता हो तो स्त्री से क्षेत्र की प्राप्ति होती है।

शत्रु से क्षेत्र प्राप्ति के योगः—

बलान्विते ऽरिपे वने ऽम्बुपे ऽरिगे ऽथ वा ऽरिपात्।
जलाधिपे बलाधिके सपत्नतो लभेत कुम् ॥ १४७ ॥

सुख में बली षष्ठेश हो तथा षष्ठ में सुखेश हो अथवा षष्ठेश की अपेक्षा सुखेश अधिक बली हो तो शत्रु से क्षेत्र की प्राप्ति होती है।

क्षेत्र नाश के योगः—

अस्ताधरारिगृहगे खलभे जलेशे
दुष्टान्तरे दुरितदृष्ट उत क्षमाजे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उग्राभ्रगेक्षितयुते मलिनान्तराले
क्रूरांशके खलगृहे क्षितिनाशमाहुः ॥ १४८ ॥

पापग्रहों के अन्तराल में अस्तगत शत्रुराशिगत नीचराशिगत वा पाप राशि गत सुखेश हो और वह पाप दृष्ट हो तो अथवा पाप ग्रहों के अन्तराल में पापराशिगत वा पापः नवांश गत मङ्गल हो और वह पाप ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो भूमि का नाश होता है।

केदारेशे पावकाकाशवासैर्युक्ते नीचारातिभे वक्त्रभे वा।
नीरे क्रूरैः संयुते क्रूरषष्ठिभागे तत्पे वास्पदागारनाथे ॥ १४९ ॥

कीलालस्थे क्रूरयुक्तेऽथ मृत्युकालक्रूराद्यंशके कर्म्मनाथे
स्वान्ते यद्वा सद्मपे नीचशत्रुराशौ दुःस्थे क्षेत्रनाशं समेति ॥ १५० ॥

धन में नीच राशिगत वा शत्रुराशि गत सुखेश हो और वह पाप युक्त होतो (१) सुखस्थान पाप युक्त हो और क्रूरशष्ट्यंश में सुखेश होतो (२) सुख में पाप युक्त दशमेश होतो (३) सुख में कर्मेश हो और वह मृत्यु काल क्रूरादि षष्ट्यंश में होतो (४) त्रिक में नीच राशिगत वा शत्रुराशिगत सुखेश होतो क्षेत्र का नाश होता है।

राजाज्ञा से क्षेत्र नाश के योगः—

मानाधिपे मृत्युकरादिभागे क्रूरांशके सादनगे सपापे।
शान्ताधिनाथेन समन्वितेऽपि केदारनाशो वसुधेशशिष्ट्या ॥ १५१ ॥

सुख में क्रूरांशगत, मृत्युकरादि भाग गत पाप युक्त तथा अष्टमेश युक्त दशमेश होतो राजाकी आज्ञा से क्षेत्र (खेत) का नाश होता है।

भर्त्तव्यपस्थांशपसंयुतांशकनाथेन युक्ते जलपे सपावके।
वेने वनेशेन युते स्वनिम्नगे किं नारनाथे दिवि सारुणे तथा ॥ १५२ ॥

द्वितियेश के नवांश का स्वामी जिसके नवांश मे हो उस ग्रह से युक्त चतुर्थेश यदि पाप युक्त भी होतो (१) नीच राशिगत सूर्य यदि चतुर्थेश से युक्त होतो (२) दशम में सूर्य युक्त चतुर्थेश होतो राजा की आज्ञा से क्षेत्र का नाश होता है।

पञ्चत्वगे पदपतावरोहभागे
क्रूरांशके भवति मृत्युकरादिभागे।
तत्कारकेऽपि च तथा वसुधागृहेशे।
राजाज्ञया जनिमतां वसुधाविनाशः ॥ १५३ ॥

अष्टम में अवरोह भागगत, क्रूरांशगत तथा मृत्युकरादि भागगत दशमेश दशम कारक वा चतुर्थेश होतो राजा की आज्ञा से भूमिका नाश होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्वोच्चस्थे सुहृदीश आग्नेये नयनेशे ।
नीचारातिभयाते ना भूविक्रयमेति ॥ १५४ ॥

स्वोच्चराशि में सुखेश हो और नीच राशि वा शत्रु राशि में द्वितीयेश पाप ग्रह होतो उक्त योग में उत्पन्न पुरुष भूमिको बेचने वाला होता है ।

विशुद्धहृदय योगः—

वीर्य्यान्विते मानसमन्दिरेशे मृद्वंशके गोपुरसञ्ज्ञभागे ।
यद्वा सभे धीमति देहगेहे विशुद्धचित्तो जनितश्च शान्तः ॥ १५५ ॥

मृद्वंशक में तथा गोपुरांश में बली सुखेश हो अथवा लग्न में शुक्र युक्त गुरु होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष शान्त स्वभाव तथा विशुद्ध हृदयवाला होता है ।

निष्कपटी योगः—

स्वर्क्षोच्चगे सुविहगे सदनेऽथ नीर-
नाथे बलेन सहिते किमु रम्यराशौ ।
स्वान्ते सुहृत्सहितदृष्ट उताम्बुधाम्नि
मृद्वंशकादिसहिते किमु गोपुरादौ ॥ १५६ ॥

चित्ताधिपेऽथ घनपे शुभयुक्तदृष्टे
स्वान्तेऽथ संहननपे सबलेऽथ सूरौ ।
शुक्रेक्षिते शिरसि निष्कपटी मनुष्यः
पारावतादिलवगे हरिजेशि तद्वत् ॥ १५७ ॥

सुख में स्वराशिगत वा स्वोच्च राशि गत शुभ ग्रह होतो (१) सुखेश बली होतो (२) सुख में शुभग्रह की राशि हो और वह मित्रग्रह से युक्त वा दृष्ट होतो (३) सुख में मृदु षष्ट्यंश होतो (४) गोपुरादि भागों में सुखेश होतो (५) सुख में लग्नेश हो और वह शुभ दृष्ट युक्त होतो (६) लग्नेश बलवान् होतो (७) लग्न में गुरु हो और वह शुक्र से दृष्ट होतो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष निष्कपटी होता है पारावतादि भाग में लग्नेश होतो भी निष्कपटी (कपट रहित) होता है ।

मिश्रित हृदय योगः—

नीहारांशुरवी नीरे कपटी क्षणमात्रकम् ।
ऊर्ध्वे निष्कपटी क्षीरे सप्राज्योग्रक्षणान्वये ॥ १५८ ॥

नरोऽन्तःकपटी वेद्यो बहिःशुद्धस्ततो हिते ।
स्वर्भाणौ लोकिते युक्ते पावकैर्यदि पूर्ववत् ॥ १५९ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख में चन्द्र तथा सूर्य होंतो मनुष्य क्षण (मुहूर्त) मात्र कपटी और उपरान्त निष्कपटी होता है। सुखस्थान यदि बहुत पाप ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त होतो मनुष्य अन्तःकपटी बाहर शुद्ध होता है। एवं सुख में राहु हो और वह पाप ग्रहों से दृष्ट वा युक्त होतो भी मनुष्य अन्तःकपटी और बाहर शुद्ध होता है।

कपटी योगः—

इलातले खेशि खले सपामरेक्षणान्वये वायुरिने सगर्हिते।
हिताश्रिते वा हृदये ऽशुभान्तरे ऽर्यैर्युक्तदृष्टे ऽथ विदि क्रिये ऽथ वा ॥ १६० ॥
अङ्गारके सोदरगे सतां दृशा मुक्ते ऽथ घाते गुरुपे किमम्बुपे।
ततो ऽध्वनि ज्ञे बलवत्यघान्विते किं ज्ञारयोगे कपटी नरो भवेत् ॥ १६१ ॥

सुख में दशमेश पाप ग्रह हो और वह पाप ग्रह की दृष्टि तथा योग से युक्त हो तो (१) सुख में पाप युक्त अष्टमेश हो तो (२) पापग्रहों के अन्तराल में सुख भाव हो और वह पापग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो (३) मेष में बुध हो तो (४) तृतीय मे भौम हो और वह शुभ दृष्ट न हो तो (५) पष्ठ में नवमेश वा सुखेश हों तो (६) नवम में पाप युक्त बली बुध हो तो (७) किसी भी स्थान में बुध मङ्गल का योग हो तो पुरुष कपटी होता है।

हृत्कपटी योगः—

दृष्टे ऽन्विते ऽर्यैर्हृदये तदीश्वरे पङ्क्तान्तरे वा हृदये ऽथ हृद्गृहे।
सास्राहिमन्दे शुभदोनिते तथा तद्भावपे हृत्कपटी जनो मतः ॥ १६२ ॥

सुख स्थान पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो एवं चतुर्थेश वा चतुर्थ भाव पाप ग्रहों के अन्तराल में हो तो (१) सुख में मङ्गल, राहु तथा शनि हों, शुभ ग्रह न हो, चतुर्थेश भी चतुर्थ भाव के समान शुभ ग्रह रहित एवं मङ्गल, राहु तथा शनि युक्त हो तो उक्त योगों में उत्पन्न पुरुष हृदयकपटी होता है।

कठिन विरुद्ध चित्त योगः—

कठोरचित्तः स्थिरराशियातैः शाशाङ्किविप्रद्युचरैर्विनाशे।
विरुद्धचेताः पुरुषः सपङ्के चित्तस्थले तद्रमणे सपापे ॥ १६३ ॥

अष्टम में स्थिर राशि गत बुध, गुरु तथा शुक्र हों तो मनुष्य कठोर हृदय वाला होता है। सुख स्थान पाप युक्त हो और सुखेश भी पाप युक्त हो तो विरुद्ध हृदय होता है।

हृदय रोग योगः—

कीलालपाले मलिनान्तराले सपामरे मातरि पापयुक्ते।
किं मानसेशे मरणे मृतीशयुक्ते ऽस्तनीचारिनिकेतने वा ॥ १६४ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पङ्के चिति स्वान्तगृहे ऽपि पङ्के क्रूरादिकाकाशरसांश युक्ते ।
सद्योगहीने ऽथ यमेज्यभौमैर्हृद्भावयातैर्हृदयोपतापः ॥ १६५ ॥

पाप ग्रहों के अन्तराल में सुखेश हो तथा पाप युक्त हो एवं सुख स्थान भी पाप युक्त हो तो (१) अष्टम में अस्तगत नीचराशिगत वा शत्रुराशिगत सुखेश हो और वह अष्टमेश से युक्त हो तो (२) पञ्चम में तथा सुख में पाप ग्रह हों और वे क्रूरादि षष्ट्यंश में हो एवं शुभ योग से रहित हों तो (३) सुख में शनि, गुरु तथा मङ्गल हो तो हृदय में रोग होता है।

कृष्ण पित्त विकार से हृदय में व्रण का योगः—

दिवा जनौ जीवपतङ्ग पुत्रवक्रैर्वयःस्थै र्मलिन प्रदृष्टैः ।
निम्नारिभस्थैर्यदि कृष्णपित्त विकारतो ऽरुर्हृदये नराणाम् ॥ १६६ ॥

दिन का जन्म हो, सुख में नीच राशि गत वा शत्रु राशिगत गुरु, शनि तथा मङ्गल हो और वे पाप दृष्ट हों तो कृष्ण पित्त के विकार से मनुष्यों के हृदय में व्रण होता है।

हृदय शूल योगः—

अहौ हिते पापदृशा समेते प्राणोज्झिते पौरपतौ किमिन्दौ ।
साहौ स्मरे कीचगे ऽकि कृशाङ्गे तेनेक्षिते जीव इने विधौ वा ॥ १६७ ॥

हृच्छूल माहुर्गणकाग्रगण्याश्चित्तेशसंयुक्त भभाग नाथे ।
विलोक्यमाने मलिनै र्नभौगै रसत्खतर्कांशगते तथा स्यात् ॥ १६८ ॥

सुख में पाप दृष्ट राहु हो और लग्नेश निर्बल हो तो (१) सप्तम में राहु युक्त चन्द्रमा हो और केन्द्र गत शनि यदि गुरु रवि वा चन्द्रमा को देखता हो तो हृदय में शूल होता है। सुखेश की राशि तथा नवांश का स्वामी यदि पाप ग्रहों से दृष्ट हो और क्रूर षष्ट्यंश में हो तो भी हृदय में शूल होती है।

हेलावलिस्थे विमलैः खलैश्च युक्ते ऽथ पुण्यैः पतितोपयातैः ।
चेत्क्रूरिते कालकृति क्षतेशे स्वान्तप्रदेशे जठरे च शूलम् ॥ १६९ ॥

वृश्चिक राशिगत सूर्य यदि शुभ और पाप ग्रहों से युक्त हो अथवा पतित (६।१२) स्थान में शुभ ग्रह हों और षष्ठेश सूर्य पापाक्रान्त हो तो हृदय तथा उदर में शूल होती है।

बहुजन मैत्री तथा मित्र पोष्य योगः—

मित्रालये निर्मल खेचरे क्षणाधिक्ये ऽथ मैत्री मन उद्गमेशयोः ।
मैत्री निरुक्ता बहुभिर्जनैः सह सुहृद्भगौ द्वौ यदि मित्र पोषकः ॥ १७० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख में शुभग्रहों की दृष्टि अधिक हो अथवा सुखेश और लग्नेश की मित्रता होतो बहुतजनों से मित्रता होती है। यदि जन्म समय में सुखेश तथा लग्नेश ये दोनों मित्रराशि में होतो मित्रजनों को आश्रय देने वाला होता है।

सुखभाव गत राशि फलः—

तुर्य्ये ऽर्के ऽहङ्कारवानुष्णदेही हृत्पीडावान् स्याद्विरोधी जनानाम्।
हीनाङ्गो ऽथो सर्वकर्म्मानुकूलभाग् दन्ताब्दे सुप्रतिष्ठश्च हीनः॥ १७१॥

सत्ताशौर्य्यज्ञानयुक्तः पदव्या युक्तो धान्यद्रव्यहीनो जनुष्मान्।
भावाधीशे वीर्ययुक्ते त्रिकोणे केन्द्रे स्वर्क्षे लक्षणापेक्षया च॥ १७२॥

आन्दोल्याप्तिर्भावपे दुष्टयाते दृष्टे युक्ते कल्मषैर्व्योमवासैः।
दुर्यानाप्तिः क्षेत्रहीनः परेषां वासे वासः सम्भवे यस्य जन्तोः॥ १७३॥

जिस के जन्म समय में सुखमें सूर्य हो तो वह अहङ्कारी, पित्तप्रकृति हृदयपीडा वाला, लोगोंका विरोधी, हीनगात्र तथा सर्व कर्मों की अनुकूलता वाला एवं ३२ वें वर्ष में उत्तम प्रतिष्ठा, हीन स्वभाव; सत्ता, शौर्य्य, ज्ञान तथा पदवी से युक्त और धन धान्य से हीन होता है। त्रिकोण केन्द्र वा स्वराशि में बली सुखेश होतो लक्षणापेक्षा से आन्दोलिका (पालकी) की प्राप्ति, होती है। त्रिक में सुखेश हो और वह पापग्रहों से दृष्ट वा युक्त होतो दुष्टवाहन की प्राप्ति, क्षेत्र से रहित तथा पराये घर में वास होता है।

सुख गत चन्द्र फलः—

वन्ध्यो विधौ धान्यधनाधिकर्द्धी राज्याभिषेकः परदारलोलः।
जातः परस्त्रीस्तनपानकारी स्यान्मातृरोगी हयसौख्ययुक्तः॥ १७४॥

मिष्टान्नभाक् क्षीरसमृद्धिरिन्दौ पूर्णे स्वराशौ बलभाजि मातुः।
दीर्घायुरुग्राम्बरचारियुक्ते क्षीणे क्षपेशे जननीविनाशः॥ १७५॥

यानेन हीनः सबले च तस्मिन् यानस्य सिद्धिः कथिता सुधीभिः।
भावाधिपे तुङ्गगते च सिद्धिरनेकवाज्यादिकवाहनानाम्॥ १७६॥

सुख में चन्द्रमा हो तो धन धान्य की बहुत वृद्धि, राज्याभिषेक, पराई स्त्री के विषय में अचलता, पराई स्त्री के स्तनपान वाला, माता को रोग कारक, घोडों के सुख से युक्त, मिष्टान्न भोजी एवं दूध की वृद्धि होती है। यदि सुख भावगत चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब वाला हो वा स्वराशि में हो तथा बली होतो माता की दीर्घायु होती है। एवं सुख गत चन्द्रमा पाप युक्त हो तथा क्षीण होतो माता की मृत्यु तथा वाहन से रहित होता है यदि चन्द्रमा बली होतो वाहन की प्राप्ति होती है यदि सुखेश स्वोच्च राशि में होतो अनेक अश्वादि वाहनों की प्राप्ति होती है।

सुखगत भौम फलः—

सौख्ये ऽस्रे पित्ररिष्टं भवति गजमिते हायने मातृरोगी
गेहच्छिद्रे ससौम्ये परगृहवसतिर्व्यामयाङ्गो विवप्रः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

धान्यार्थोनः पुराणोदवसितवसतिस्तत्र तुङ्गे स्वगेहे
मित्रागारे ससौम्ये यदि भवति नरो वाहनक्षेत्रयुक्तः ॥ १७७ ॥

अम्बाचिरायुः खलशत्रुयुक्ते नीचे जनन्या मरणं ससौम्यैः ।
त्यजेत्स्वदेशं स तु यानसौख्यं द्वेषी स्वबन्धोर्वसनैर्विहीनः ॥ १७८ ॥

सुख में मङ्गल होतो ८ वें वर्ष पिताको कष्ट, माताको रोग और घर में छिद्र (दोष) होता है। सुख गत भौम यदि शुभ युक्त हो तो पराये घर में वास; रोग, क्षेत्र धान्य तथा द्रव्य से रहित और पुराने गृह में वास होता है। सुख गत भौम स्वोच्चराशि स्वराशि वा मित्र राशि में वा शुभ युक्त हो तो वाहन तथा क्षेत्र से युक्त एवं माता की दीर्घायु होती है। यदि सुख गत भौम् पाप तथा शत्रु से युक्त एवं नीच राशि में हो तो माता का मरण होता है। यदि शुभ युक्त हो तो अपने देश को त्याग दे, वाहन सौख्य, बन्धुजनों से विरोध तथा वस्त्र से रहित होता है।

सुखगत बुध फलः—

मित्रे ज्ञे जनकाम्बिकासुखयुतः स्यात्पाणिचापल्यवान्
धैर्याढ्यश्च सुखी विशालनयनो ज्ञान्यष्टिसँव्वत्सरे ।
जातो वस्त्रपहाररूपत इहाद्भ्राप्तिभाक् संयुते–
ऽच्छार्कीज्यैर्बहुयानभाग् बलयुते भावाधिनाथे यदा ॥ १७९ ॥

आन्दोलिकाप्तिः शिखिसैंहिकेयपातङ्गियुक्ते कुलबान्धवानाम् ।
विद्वेषिको वाहनरिष्टवांश्च विवर्जितः क्षेत्रसुखेन दम्भी ॥ १८० ॥

सुख में बुध हो तो पिता माता के सुख से युक्त, हाथ की सफाई वाला, धैर्यवान्, सुखी, विशालनेत्र, ज्ञानवान्, १६ वें वर्ष में द्रव्य के अपहार रूप से बहुत धन वाला होता है। सुख गत 'बुध' यदि शुक्र, शनि तथा गुरु से युक्त हो तो बहुत वाहन एवं आन्दोलिका की प्राप्ति होती है। सुख गत बुध यदि केतु राहु वा शनि से युक्त हो तो वंश के बन्धुजनों का वैरी, वाहनों को पीडा करने वाला, क्षेत्र के सुख से रहित तथा दम्भी होता है।

सुख गत गुरु फलः—

जीवे जीवनगे सुखी सधिषणः केदारवान्सन्मना
मेधावी च पयोऽधिकर्द्धिसहितो वीर्य्यान्विते भावपे ।
सद्वर्गामृतभानुभार्गवयुते मर्त्याश्वयानाधिपो
भूरिक्षेत्रगृहान्वितः सदितरैः संवीक्षिते संयुते ॥ १८१ ॥

केदारैर्धोरणैर्हीनो मातृनाशः परालये ।
वासो बन्धुजनद्वेषी जनिमाञ्जायते भुवि ॥ १८२ ॥

सुख में गुरु हो तो सुखी, बुद्धिमान्, क्षेत्र वाला उत्तम हृदय, धारणा बुद्धि वाला और अधिक दुग्ध वाला होता है। 'बली सुखेश' शुभ वर्ग में हो तथा चन्द्र शुक्र से युक्त हो तो मनुष्य वाहन तथा अश्व वाहन

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

का स्वामी, बहुत क्षेत्र तथा गृह से युक्त होता है। यदि वह सुखेश पापग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो क्षेत्र तथा वाहन से रहित एवं माता का नाश, पराये घर में वास तथा बन्धु जनों से वैर करने वाला होता है।

सुखगत शुक्र फलः—

सुखी क्षमावान्मतिमान्सहोदरसौख्यं तथा शोभनवांश्च हायने।
खत्र्युन्मिते स्वाप्तिरगारगे भृगौ पयःसमृद्धिर्बलिनि प्रसम्भवे ॥ १८३ ॥

आन्दोलिकाश्वचतुरङ्गसुवर्णवृद्धि-
स्तत्रोग्रखेटसहितेऽशुभभे विसत्त्वे।
नीचारिगे भवति वाहनवप्रवर्ज्यो-
ऽम्बाक्लेशवान्सुनयनान्तरभाङ् मनुष्यः ॥ १८४ ॥

सुख में शुक्र हो तो सुखी, क्षमा युक्त, बुद्धिमान्, भ्रातृ सौख्य तथा शोभायुक्त, २० वें वर्ष में अश्व लाभ एवं दुग्ध की वृद्धि होती है। यदि सुखेश बली हो तो आन्दोलिका, अश्व, चतुरङ्गसेना और सुवर्ण की वृद्धि होती है। सुख गत शुक्र यदि पाप युक्त हो पापराशि में हो बलरहित हो नीचराशि में हो वा शत्रु राशि में हो तो वाहन तथा क्षेत्र से रहित, मातृकष्टप्रद एवं अन्य स्त्री वाला होता है।

सुख गत शनि फल :—

मन्दे मित्रे मातृहानिर्द्विमातृसंयुक्तः स्यात्सौख्यहानिर्धनोनः।
स्वक्षेत्रे वा स्वोच्चभे नैव दोषोऽश्वान्दोल्याद्यारोहवानत्र जातः ॥ १८५ ॥

मूर्तीशे मन्दगे मातृदीर्घायुः सौख्यसंयुतः।
तस्मिन्मृत्युगृहाधीशे मात्ररिष्टं सुखक्षयम् ॥ १८६ ॥

सुख में शनि हो तो माता की हानि, दो माता से युक्त, सौख्य की हानि तथा धन से रहित होता है। सुखगत शनि यदि स्वराशि वा स्वोच्चराशि में हो तो उक्त दोष नहीं होता है। एवं अश्व तथा आन्दोलिकादि वाहन से युक्त होता है। यदि वह शनि लग्नेश हो तो माता की दीर्घायु तथा सौख्य से युक्त होता है। यदि वह शनि अष्टमेश हो तो माता को कष्ट तथा सुख का नाश होता है।

सुख गत राहु फलः—

नागाधिराजे यदि नागलोके जातस्त्वनेकाभरणैः समृद्धः।
जायाद्वयं सेवक उग्रयुक्ते मात्रास्रवो नोत्तमवीक्ष्यमाणे ॥ १८७ ॥

सुख में राहु हो तो अनेक प्रकार के भूषणों से समृद्धशाली, दो स्त्री वाला तथा सेवक होता है। यदि वह राहु पाप युक्त हो और शुभ दृष्ट न हो तो माता को कष्टदायक होता है।

सुख गत केतु फलः—

मित्रोपगे मृत्युसुते मनुष्यस्तातप्रसूकष्टकरोऽतिचिन्ता।
कष्टं महत्स्यात्सखिसौख्यहीन एवं पुराणैः कथितं सुधीभिः ॥ १८८ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख में केतु हो तो माता पिता को कष्ट, बहुत चिन्ता, अधिक कष्ट एवं मित्र सुख से रहित होता है। इस प्रकार पण्डितजनों ने कहा है।

सुखगत रव्यादियों का संक्षिप्त फलः—

वर्षेऽष्टमे बान्धवहानिमम्बुगाः कुर्युस्तमः केतुयमासृजोऽम्बुगौ।
यूपध्वजाच्छौ नखभानुहायने स्वबन्धुसौख्यं वसुलब्धिमर्यमा ॥ १८९ ॥

कुर्याद्विरोधं मनुहायने बुधो यमाश्विवर्षे द्रविणक्षयं किमु।
पुत्रस्य लब्धिं सुखगः सुधाकरः सुतप्रदो लोचनयुग्मवत्सरे ॥ १९० ॥

सुख में राहु, केतु, शनि तथा मङ्गल हों तो ८ वें वर्ष में बन्धुजनों की हानि को करते हैं। सुख में गुरु शुक्र हों तो २० वें अथवा १२ वें वर्ष में अपने बन्धुजनों का सौख्य तथा धन लब्धि को करते हैं। सुखगत 'सूर्य' १४ वें वर्ष में वैर, 'बुध', २२ वें वर्ष धन का नाश वा पुत्र की प्राप्ति एवं 'चन्द्रमा' २२ वें वर्ष में पुत्र को देता है।

रवि दृष्ट सुखभाव फलः—

पातालं परिलोकयेद्दिनकरश्चेज्जन्मकाले यशः
सौख्यं पुण्ययशः करोति सततं बन्धुक्षयं हृद्रुजा।
युक्तं शङ्करभक्तिसक्तहृदयं शूरं प्रसूपीडन-
मुद्यानस्य निषेवणं बहुसुहृद्युक्तं धनस्यागमम् ॥ १९१ ॥

सुख भाव को सूर्य देखता हो तो नित्य यश से सौख्य, पुण्य से यश को करता है। एवं बन्धुजनों का नाश हृदय रोग, शङ्कर की भक्ति में लीन, शूर वीर, मातृ कष्ट, उद्यान का सेवन, बहुत मित्रों से युक्त और धन की प्राप्ति को करता है।

चन्द्र दृष्ट सुख भाव फलः—

लाभार्थं प्रद ईक्षते तुहिनगुः पानीयपस्त्यं यदि
पित्रोः सौख्ययुतं महीपतिजनैर्मान्यं सुमानं तथा।
सौन्दर्यं मदविह्वलं वृषयशः श्लेष्माधिकं स्त्रीधनं
कुर्यान्नो जनतः सुखं सपवनं बन्धुक्षयं सर्वदा ॥ १९२ ॥

सुख भाव को चन्द्रमा देखता हो तो लाभ तथा धन दायक होता है। एवं मातृ पितृ सौख्य से युक्त, राजा से सम्मान, लोगों से उत्तम मान, सुन्दरता, मद से विह्वल, पुण्य से यश अधिक श्लेष्म, स्त्री धन और लोगों से सुख नहीं करता है। एवं वात रोग तथा नित्य बन्धुजनों का नाश करता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भौम दृष्ट सुख भाव फलः—

ऐलेयेन विलोकिते क्षितितले वर्षे चतुर्थे प्रसू-
कष्टं दर्शनतोऽस्य वैरिनिचयो नश्येत्सुखं भूपतः।
भूमेः पद्मविलोचनः सतु हृदीम्मार्त्तोऽतिधूर्त्तःखलः
क्रूरः शूरतरः प्रसूजनवियुग् युद्धङ्गराजी सदा॥ १९३॥

सुख भाव यदि मङ्गल से दृष्ट हो तो चौथे वर्ष माता को कष्ट और उस के दर्शन से वैरियों का समूह नष्ट होता है। राजा तथा भूमि से सुख, कमल के समान नेत्र, व्रण से पीडित हृदय, अत्यन्त धूर्त्त, दुष्ट, क्रूरस्वभाव अत्यन्त शूर, माता से रहित और नित्य रणाङ्गण में शोभायमान होता है।

बुध दृष्ट सुखभाव फलः—

सश्लेष्मो हृदयो धनं निजपितू राज्यादि सौख्यं स्मर-
लुब्धः स्याद्धनवर्द्धनं स्वजननीसौख्यं प्रभूतं तथा।
सद्धीयुक् पुरकर्म्म सक्तहृदयो मातुः प्रियः सत्सुहृद्-
युक्तो लक्षणपूर्वयुक् सुहितभे संवीक्ष्यमाणे विदा॥ १९४॥

सुख भाव यदि बुध से दृष्ट हो तो हृदय में श्लेष्म रोग, पिता के धन का लाभ, राज्यादि का सौख्य, कामलोभी, धन की वृद्धि, माता का बहुत सुख, उत्तम बुद्धियुक्त, नगर के कार्य में दत्तचित्त, माता का प्यारा, उत्तम मित्र तथा उत्तम लक्षणों से युक्त होता है।

गुरु दृष्ट सुख भाव फलः—

वागीशेन विलोकिते कमलभे रामाभिरामः पितु-
र्मातुर्मित्रजनस्य सौख्य सहितो धीरो रथाश्वेभयुक्।
गौरोऽतीव महाप्रतापसहितो दुर्हृत्समूहात्सदा
शूरो भूरियशः स्ववर्गजनितं काले जनेर्जन्मिनाम्॥ १९५॥

सुख भाव यदि गुरु से दृष्ट हो तो स्त्री सौख्य से युक्त, पिता, माता तथा मित्र के सौख्य से युक्त, धैर्यशाली, रथ, घोडे तथा हाथी से युक्त, अत्यन्त गौर शरीर, शत्रु गण से प्रताप युक्त, शूर वीर एवं अपने जाति के लोगों से बहुत यश मिलता है।

शुक्र दृष्ट सुखभाव फलः—

द्विण्मुक्तो जननीप्रियो द्विजसुहृद्युक्तो हिरण्यान्वितः
सावित्रीबहुवाहनोत्थसुखभाक् कर्म्माधिकः सद्यशाः।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वातश्लेष्मनिपीडितः सुमनसां भक्तो गुरूणां पर-
कान्ताकामरतिप्रसक्तकमनाः काव्येन कं वीक्ष्यते ॥ १९६ ॥

सुख भाव यदि शुक्र से दृष्ट हो तो शत्रु से रहित, माता का प्यारा, ब्राह्मण, मित्र तथा धन से युक्त, माता का तथा बहुत वाहनों के सुख वाला, अधिक कर्म करने वाला, उत्तम यश वाला; वात तथा श्लेष्म रोग से पीड़ित देवता तथा ब्राह्मणों का भक्त एवं पराई स्त्री से कामवासना युक्त हृदय वाला होता है।

शनि दृष्ट सुखभाव फलः--

सौरीक्षिते ऽर्णसि महद्भयमामयेना-
ब्दे षोडशे युगमिते मरणं च पित्रोः।
लीनः सदा परवधूरमणे विहीन
आचारतो ऽतिगददो निजमातुलेषु ॥ १९७ ॥

सुख भाव शनि से दृष्ट हो तो सोलह वें तथा चौथे वर्ष रोग से महत् भय, मातापिता का मरण, पराई स्त्री में आसक्त आचार वर्जित तथा मातुलपक्ष को कष्टप्रद होता है।

राहु दृष्ट सुख भाव फलः--

कबन्धभावे यदि सिंहिकाभुवा संवीक्ष्यमाणे जननीसुखं नहि।
कर्म्मोदयस्तस्य तु दारुणव्यथा तुन्दे जयो म्लेच्छकुलात्तनूभृतः ॥ १९८ ॥

सुख भाव राहु से दृष्ट हो तो माता का सुख नहीं होता है। एवं पूर्व संचित कर्मों का उदय, उस के उदर में भयानक पीड़ा और म्लेच्छकुल से विजय होती है।

लग्न गत सुखेश फलः—

तोयाधिपस्तनुगतः सुततातयोश्चे-
त्स्नेहं मिथः प्रकुरुते निजतातनाम्ना।
ख्यातं यशश्च धवलं सुभगाप्तियुक्तं
ताताम्बिकासुखसमूहयुतं विरोगम् ॥ १९९ ॥

भूदेवविचार्पणमानसं शुभपरिच्छदं शोभनभाजनं तथा।
सद्यानयुक्तं सुजनश्रियं शुभभोगैः समेतं सुखिनं च जन्मिनम् ॥ २०० ॥

लग्न में सुखेश हो तो पिता पुत्र का परस्पर स्नेह, पिता के नाम से विख्यात, उत्तम यशस्वी, ऐश्वर्यवान् माता पिता का सौख्य वाला, आरोग्य शरीर, ब्राह्मणों को दानदेने में उदार हृदय, उत्तम वस्त्र, भाजन, वाहन, जयलक्ष्मी तथा भोगों से युक्त एवं सुखी करता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कायङ्गते कुशविमौ किमु कान्तयाते
बह्वङ्गनाजनकृताभिभवाद् विविक्तः ।
मूकः सदा सदसि रिक्त इह स्वपूर्व-
सम्पादितैर्धनमुखैश्च सभूरिविद्यः ॥ २०१ ॥

लग्न वा सप्तम में सुखेश हो तो बहुत स्त्रीजनों के किए हुए अभिभव से एकान्त वास, सभा में मूक, पूर्व सञ्चित धनादि से रिक्त एवं बहुत विद्या से युक्त होता है।

धनगत सुखेश फलः—

कोशे कपे विभवभुग् नितरांसुखी च
भूपाललब्धविभवः सकलोपकर्त्ता ।
भोगी शुचिः सधनपोष्यगणः कदर्य्यः
स्यात्साहसी कुहकयुक्छ्रुतिशास्त्रवेत्ता ॥ २०२ ॥

समस्तसम्पत्सहितश्च मानयुक् पाप्मग्रहे तातविरोधकृच्छुभे ।
स्वतातपाली जनकोऽस्य तद्रमां भुङ्क्ते प्रसिद्धः पितृभक्तिभागसौ ॥ २०३ ॥

धन में सुखेश हो तो धन का उपभोग करनेवाला, अतीव सुखी, राजा से धन लाभ वाला, समस्त जनों का उपकार करनेवाला, भोग वाला, पवित्र शरीर, धन तथा कुटुम्ब युक्त, कृपण, साहसी, मारणोच्चाटन मंत्र वाला, वेदशास्त्रज्ञाता एवं समस्त सम्पत्ति तथा मान युक्त होता है। सुखेश पापग्रह हो तो पिता से वैर करने वाला और शुभ ग्रह हो तो पिता का पालन करने वाला एवं उस का पिता उस के धन का उपभोग करने वाला और वह स्वयं विख्यात तथा पितृ भक्ति वाला होता है।

सहजगत सुखेश फलः—

दुश्चिक्येऽमृतपे लुलायरथगोऽदभ्रार्थलाभो नृपा-
त्तातामा कलिकृत्प्रसिद्ध जनकः सस्वः कृषेः कर्म्मणा ।
बन्धूनां परिपालको निजपितुः क्षन्ताऽल्पकीर्त्या युतः
स्याज्जातः श्रुतिसारदाः सुविहगे सादभ्रमित्रो भवी ॥ २०४ ॥

सहज में सुखेश हो तो राजा से महिषी, रथ, गौ, तथा बहुत धन का लाभ एवं जाता पिता के साथ कलह, विख्यात पिता वाला, कृषि कर्म से धनी, पिता के बान्धवों का पालने वाला, सहन शील, अल्प कीर्ति से युक्त तथा वेद वेत्ता होता है। यदि सुखेश शुभ ग्रह हो तो बहुत मित्रों वाला होता है।

वयस्य भावाधिभुवि प्रभावे मनोरथे किं सततं सरोगः ।
गुणी वदान्यः स्वभुजार्जितार्थयुक्तस्तथोदार तनुश्च शूरः ॥ २०५ ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सहज वा लाभ में सुखेश हो तो नित्य रोग युक्त, गुणवान् अतिदानी अपने बाहुबल से उपार्जित धन से युक्त, उदार शरीर एवं शूर वीर होता है।

सुख गत सुखेश फलः—

वारीशेऽम्बुनि नागरो जनकतो लाभोऽभिमानी धनी
शीलाढ्यो नृपविक्रमोऽपि सचिवः ख्यातो जनेशः सुखी।
धर्म्मी तातनृपेशमाननिरतो मान्यः स्वलोकैर्बहु-
भृत्याम्बानिधियानकुञ्जररथाश्वानन्दभाक् स्त्रीप्रियः ॥ २०६ ॥

सुख में सुखेश हो तो वह मनुष्य चतुर, पितृ धन लाभ वाला, अभिमानी, धनवान्, शीलयुक्त, राजा के समान पराक्रम वाला, मंत्री, प्रसिद्ध, मनुष्यों का स्वामी, सुखी, धर्मात्मा; पिता, राजा तथा स्वामी के सम्मान करने में तत्पर, अपने लोगों से मान्य; बहुत सेवक, माता, निधी, वाहन, हाथी, रथ तथा घोड़ों के सुख वाला एवं स्त्री का प्रिय होता है।

सुत गत सुखेश फलः—

हृन्नायके सन्ततिभावमागते सुखी चिरायुः शुभवाक् सुकीर्तिमान्।
स्वतातलाभान्ननु भोगवान्नरः सत्सन्ततिः शोभनधीः सुधीर्भवेत् ॥ २०७ ॥

सुतैः समेतः सुतपालकस्तथा राजप्रसिद्धः सदनन्तचारिणि।
आम्नायधृद् भूपतिलेखकः सुखसुभोगवित्तैः सहितो भवी शुचिः ॥ २०८ ॥

सुत में सुखेश हो तो सुखी; दीर्घायु, उत्तम वचन, उत्तम कीर्ति, पिता के धन से भोग वाला, उत्तम सन्तान, उत्तम बुद्धि, पण्डित, पुत्र युक्त, पुत्रों का पालन करने वाला एवं राजद्वार में विख्यात होता है। यदि सुखेश शुभ ग्रह हो तो वेदवेत्ता राजा का लेखक, सुख, उत्तम-भोग तथा धन से युक्त एवं पवित्र हृदय वाला होता है।

सुहृद्रूपे दारकसद्मसंश्रिते किं देशिके सर्वजनप्रियः सुखी।
मानी यशोदातनयांघ्रिभक्तिमान् स्वकीयबाहुर्जितवित्तयुङ्नरः ॥ २०९ ॥

पञ्चम वा नवम में सुखेश हो तो सर्व मनुष्यों का प्रिय, सुखी, मानी, श्रीकृष्णचन्द्रजी के चरणारविन्दों की भक्ति वाला एवं अपने पराक्रम से उपार्जित धन वाला होता है।

रिपु गत सुखेश फलः—

केदारनाथे दरगेऽरिहन्ता क्रोधी मनस्वी बहुलाम्बिकाभाक्।
स्तेनोऽभिचारी गतमातुलः स्याददभ्रमित्रो मनुजः कलङ्की ॥ २१० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तुर्य्यांघ्रिवित्तरहितो निजमुद्विरोध-
शीलोऽम्बुयानरतहृत्खलचित्तवृत्तिः ।
क्रूरे पितुर्द्रविणनाशकरोऽरियुक्त-
स्तातेऽरिता शुभकरे धनसञ्चयी स्यात् ॥ २११ ॥

षष्ठ में सुखेश हो तो शत्रुनाशकर्ता, क्रोधी, मनमाने काम करने वाला, बहुत माता वाला, चोर, मांत्रिक, मामा से रहित बहुत मित्र वाला तथा कलङ्क वाला, चतुष्पद धन से रहित, अपनी प्रीति से विरोध शील वाला, जल के वाहन वाला तथा दुष्ट चित्तवृत्ति वाला होता है। सुखेश पापग्रह हो तो पिता के धन का नाश करने वाला, शत्रु से युक्त एवं उस की पिता के साथ शत्रुता होती है। यदि सुखेश शुभग्रह हो तो धन सञ्चय करने वाला होता है।

सप्तम गत सुखेश फलः—

द्यूने दकेशि सुभगः श्वशुराप्तजीवा-
र्थाढ्यः प्रभूतवनितो जगतीशपूज्यः ।
मार्गे च शस्तरमतिर्विषयान्तराप्त-
वासास्तथाघविहगे कठिनः खलश्च ॥ २१२ ॥
नो पालयेत्सुतवधूः श्वशुरं स्वकीय
पुण्ये तु पालयति सा कुलटां विधत्तः ।
तां भूमिनन्दनभृगू शुभदे सकामो
देवाकृतिः सविभवः प्रमदाप्रियः स्यात् ॥ २१३ ॥

सप्तम में सुखेश हो तो ऐश्वर्य्यवान्, श्वशुर से पशु धन के लाभवाला, बहुत स्त्री वाला, राजा से सम्मानित मार्ग में उत्तम प्रकार से विचारने वाला एवं परदेश से वस्त्र लाभवाला होता है। सुखेश पापग्रह हो तो कठोर स्वभाववला, दुष्ट हृदयवाला और उस की स्त्री श्वशुर का पालन नहीं करती है। यदि सुखेश शुभग्रह हो तो वह श्वशुर का पालन करती है। सुखेश मङ्गल तथा शुक्र हों तो वे स्त्री को कुलटा (व्याभिचारिणी) करते है। एवं सुखेश शुभग्रह हो तो वह मनुष्य काम युक्त, देवता सदृश शरीर तथा स्त्री का प्रिय होता है।

अष्टम गत सुखेश फलः—

नीरेशे निधने स्वतातजननीसौख्येन हीनोऽनिल-
रुग्युक्तो गमनोत्सुको जलविपत्ख्यातोऽभिमानी युतः ।
दन्तिस्यन्दनवाहनैर्व्यसनयुक् क्रूरग्रहे दुर्गतः
स्याद्दुष्कर्म्मपरो गदेन सहितः यस्योद्भवे जन्मिनः ॥ २१४ ॥

अष्टम में सुखेश हो तो माता पिता के सुख से रहित, वात रोगी, यात्रा के लिए उत्सुक, जल से भय, प्रसिद्ध, अभिमानी; हाथी, रथ तथा वाहन से युक्त एवं व्यसन युक्त होता है। यदि सुखेश पापग्रह हो तो दरिद्र, दुष्ट कर्म करने में तत्पर एवं रोग से युक्त होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

याम्योपगे यानधवेऽवसानेऽथ वा नितान्तं रहितः सुखेन ।
सौख्यं कनीयो जनकस्य वाच्यं नपुंसको वान्यभवश्चिरायुः ॥ २१५ ॥

अष्टम वा व्यय में सुखेश हो तो अत्यन्त सुख रहित एवं पिता का अल्प सुख कहना चाहिए। वह मनुष्य नपुंसक तथा जारज और उस की दीर्घायु होती है।

नवमगत सुखेश फलः--

बाह्येश्वरेऽङ्के बहुभाग्यवान् क्षमी व्रती विदेशे सुखयुक् च तीर्थकृत् ।
सुलोचनो मानवनायकोऽखिलविद्यान्वितोऽद्भ्रसुहृत्समन्वितः ॥ २१६ ॥

स्वकीयतातात् द्रविणं लभेत जातो जनुर्भूद्बहुशीलयुक्तः ।
पितर्व्यसङ्गी निजतातधर्म्मसुसङ्ग्रही दैवविदेति गीतम् ॥ २१७ ॥

नवम में सुखेश हो तो बहुत भाग्यशाली, क्षमावान्, व्रती, परदेश में सुखी, तीर्थ करनेवाला, सुन्दर नेत्र, मनुष्यों का स्वामी, सम्पूर्ण विद्या तथा बहुत मित्रों से युक्त, पिता से धन का लाभ, बहुत शील युक्त, पिता के साथ न रहनेवाला एवं पिता के धर्म का पालक होता है। इस प्रकार पण्डितजनों ने कहा है।

दशमगत सुखेश फलः--

काण्डेशे दिवि कौ भुनक्ति विविधं सौख्यं स्वतातम्बिका-
स्त्रीसौख्यं सुखितोऽनृणी च विजितद्विट्सञ्चयोभृभुजाम् ।
मान्यो भूपसमस्तथा श्रुतिबलः स्यादार्य्यवृत्तिर्जनः
सुप्रीतो हि रसायनी च निरपेक्ष्यः शोभनेऽर्थे पितुः ॥ २१८ ॥

भूङ्के क्षमी मानवनायसम्मतः सेवावतोऽन्यस्य सुलोचनस्ततः ।
तातो द्वितीयं कुरुते करग्रहं कृतग्रहेऽम्बां जनकः परित्यजेत् ॥ २१९ ॥

जिस के जन्म काल में दशम में सुखेश हो वह पृथिवी में अनेक प्रकार के सौख्य का उपभोग करता है और उस को पिता माता तथा स्त्री का सुख होता है। एवं वह सुखी ऋण रहित, शत्रु समूह को जीतनेवाला राजाओं का मान्य, राजा के समान, वेदबल वाला, आर्यवृत्तिवाला, उत्तमप्रीतिवाला, रसायन व्यसनी और निरपेक्ष होता है। सुखेश शुभग्रह हो तो पिता के द्रव्य का उपभोग करनेवाला, क्षमावान् राजा से मान्य, पराई सेवा करनेवाला, सुन्दर नेत्र और उस का पिता द्वितीय विवाह को करता है। यदि सुखेश पापग्रह हो तो उस का पिता उस की माता को त्याग देता है।

लाभगत सुखेश फलः--

भुवनेप भवेत् शुभकर्म्मकृद् गतगदो जननीपितृभक्तिमान् ।
विविधलाभयुतो बहुजीवितो बहुलसन्ततिमान् जनपालकः ॥ २२० ॥

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लाभ में सुखेश हो तो शुभ कार्य करनेवाला, रोग रहित, मातृ पितृ भक्ति वाला, अनेक लाभ से युक्त; दीर्घायुवाला, बहुत सन्ततिवाला और मनुष्यों का पालक होता है।

व्यय गत सुखेश फलः—

गोविन्दसेवी निजमित्रसञ्चयकासारकादम्ब इहाम्बिकाव्यथः।
व्ययैरुपेतो विषयान्तराश्रितबुद्धिः पितुः स्वस्य सुभोगविच्युतः ॥ २२१ ॥

नदीनिकेतेश्यकगे वधूजनमानापहारी सति तातसौख्यकृत्।
क्रूरे विहङ्गे मृततातकः पिता विदेशगो वा परसम्भवो जनः ॥ २२२ ॥

व्यय में सुखेश हो तो गोविन्दपूजक, मित्रमण्डल रूपी सरोवर का हंस पक्षी, मातृ कष्ट कर्त्ता, व्यय से युक्त, परदेश निवास शील, पिता के धन के उपभोग से रहित तथा स्त्री जनों के मान का अपहरण करने वाला होता है। सुखेश शुभ ग्रह हो तो पिता के सौख्य को करने वाला होता है। यदि सुखेश पाप ग्रह हो तो पिता की मृत्यु करने वाला वा परदेश में पिता का वास अथवा जारज होता है।

सुख गत मेष राशि फलः—

भूर्य्यन्नपानैश्चतुरंघ्रिभिः सुखं लभेत राभिर्निजदोरुपार्जितैः।
विचित्रभोगैश्च विलासिनीजनैर्मेषेऽमृतस्थानगते कलेवरी ॥ २२३ ॥

सुख में मेष हो तो चतुष्पदों से, अपने बाहु बल से उपार्जित धनों से, विचित्र भोगों से तथा स्त्रीजनों से सुख को पाता है!

सुख गत वृष राशि फलः—

सरिन्निकेते वृषभेऽतिमान्यैर्नरैरनेकैर्नियमैर्व्रतैश्च।
शौर्य्येण भूनाथनिषेवणेन द्विजोपचारैर्लभते सुखानि ॥ २२४ ॥

सुख में वृष हो तो अनेक बहु मान्य मनुष्यों से, नियम से, व्रत से, पराक्रम से राजा के सेवन से तथा ब्राह्मणों की पूजा से सुख को पाता है।

सुख गत मिथुन राशि फलः—

वीणाधरे तोयनिकेतनस्थे तोयावगाहैः प्रमदाकृतानि।
सुखानि चाप्नोति नरः प्रभूतपुष्पाम्बरैर्वा वनसेवया च ॥ २२५ ॥

सुख में मिथुन हो तो जल के अवगाह (स्नान) से स्त्रीजनों के किए हुए सुख को पाता है। एवं बहुत पुष्प, वस्त्र तथा वन की सेवा से सुख को पाता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख गत कर्क राशि फलः—

कर्के कगे कूपतडागजं धरारामास्पदाद्युद्भवमम्बुजैर्जलैः ।
लभेत कं शीलसुरूपयुग् जनप्रियः सविद्यः सुभगो गुणान्वितः ॥ २२६ ॥

सुख में कर्क हो तो कुआ, तलाव, भूमि, उद्यान तथा गृह इत्यादि से उत्पन्न, जलजन्य वस्तु तथा जल से सुख को पाता है। एवं वह मनुष्य शील तथा सुरुप युक्त, लोगों का प्रिय, विद्यावान्, सज्जन तथा गुणी होता है।

सुख गत सिंह राशि फलः—

नारे हरौ भूरिरुपः सुखं नहि दरिद्रतः शीलविपर्य्यतस्तथा ।
कुमित्रतो वा तनयाप्रसूतितो लभेत सौख्यं हठतो वनाश्रयात् ॥ २२७ ॥

सुख में सिंह हो तो बहुत क्रोध से, दरिद्र से, स्वभाव की विपरीतता से, कुमित्र से और कन्याओं की उत्पत्ति से सुख नहीं होता है। एवं हठ तथा वन के आश्रय से सुख को पाता है।

सुख गत कन्या राशि फलः—

कन्यात्मके काण्डगृहं समागते सुखं लभेतोद्यमतोऽबलाजनात् ।
तथान्नपानाद् धनसेवनात्सदा सर्वसहापालनिषेवणेन च ॥ २२८ ॥

सुख में कन्या हो तो उद्यम से, स्त्री से, अन्नपान से, धन के सेवन से एवं राजा के सेवन से सुख को पाता है

सुख गत तुलाराशि फलः—

पैशुन्यजातं सुखमाप्नुयाद् धटेऽम्बुगे रणैर्मोहनहास्यकीर्त्तनैः ।
चौर्य्यैस्तथाऽसौ शुभकर्म्मपेशलः सुखी सविद्यः सधनः प्रसादहृत् ॥ २२९ ॥

सुख में तुला हो तो पैशुन्यकृत्य (आपस की भेदनीति) से उत्पन्न, सङ्ग्राम, मोहन, हास्य, कीर्त्तन तथा चोरी के कार्य से सुख को पाता है। एवं वह मनुष्य शुभ कर्म्म में चतुर, सुखी, विद्यायुक्त, धनी तथा प्रसन्न हृदय होता है।

सुख गत वृश्चिक राशि फलः—

अलाविलास्थेऽम्बुविषास्त्रशस्त्रजैः सुखं तथा नीचनिषेवणाद् धनम् ।
दृढं सुतीक्ष्णो गतधैर्य्यधीः परैर्विवीर्य्यदर्पः परभीतहृत्पटुः ॥ २३० ॥

सुख में वृश्चिक हो तो जल, विष, आस्त्र तथा शस्त्र से उत्पन्न सुख को पाता है। और नीचजन के सेवन से दृढ धन होता है। तीक्ष्ण स्वभाव, धैर्य तथा बुद्धि से हीन, शत्रुओं से बल तथा मद रहित एवं शत्रुओं से भय भीत तथा चतुर होता है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुख गत धनू राशि फलः—

महीशसेवानुरतैर्विचित्रैर्हयैर्वचोभी रणकीर्त्तनैश्च ।
धनं लभेत स्वनिबन्धनेनैं सेवासुखं चापधरे चतुर्थे ॥ २३१ ॥

सुख में धनु हो तो राज सेवकों से, विचित्र घोड़ों से, तथा रणकीर्त्तन वचनों से तथा अपने निबन्ध से धन एवं सेवा से सुख को पाता है।

सुख गत मकर राशि फलः—

मृगेऽमृतस्थे जलतो जलाशयादारामवापीतटसेवनात्सुखम् ।
हिरण्यमाप्नोति हितोपचारतस्तथा मनुष्यः सुरतप्रधानतः ॥ २३२ ॥

सुख में मकर हो तो जल से, जलाशय से, उद्यान से, बावड़ी के तट सेवन से, मित्र के उपचार से एवं सुरत (स्त्री पुरुष सङ्गम रूप) की प्रधानता से धन तथा सुख को पाता है।

सुख गत कुम्भ राशि फलः—

कुशोपगे कुम्भधरे सुवाक्यतो मिष्टान्नपानैर्विविधंसुखं धनम् ।
पुष्पादिभिर्वा फलशाकपत्रतः स्त्रीसङ्गतो वा कुहकानुकारतः ॥ २३३ ॥

सुख में कुम्भ हो तो सुवचन से, मिष्टान्नपान से, पुष्पदियों से, फल तथा शाक पत्र से, स्त्री के सङ्ग से वा मंत्र विद्या से अनेक प्रकार के सुख तथा धन को पाता है।

सुख गत मीन राशि फलः—

वैसारिणे बान्धवभावयाते सुखं समेत्यम्बुनिषेवणेन ।
स्थानैर्दिवौकःप्रभवैर्विचित्रैः सत्स्वापतेयैर्जनिमान् सुचैलैः ॥ २३४ ॥

सुख में मीन हो तो जल के सेवन से, देवजन्य स्थान से, विचित्र उत्तम द्रव्य से तथा उत्तम वस्त्रों से मनुष्य सुख को पाता है।

इति श्रीमत्पण्डितमुकुन्दरामविरचिते ज्योतिस्तत्त्वे जोशीत्युपाह्व पं. चक्रधरभट्टकृत भाषाटिकोदाहरणोपेते सुखभावचिन्तनप्रकरणं षड्विंशमवसितम् ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ज्योतिस्तत्त्व पूर्वार्द्धस्य शुद्धिपत्रम्

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
संयक्त	संयुक्तं	७	५
निसृष्ट	निसृष्टं	७	२०
वग	वर्ग	१५	२
१९, ४६, ४१"	१६°, ४६', ४५"	१९	२१
चक्रमतो	चक्रभतो	३६	१२
८०°।३०°	८०°।३०'	८५	२७
कारका	कारुया	८५	३१
कत	कृत	१२४।५९	२०
सक्त	स्कत	१२४।६७	३३
मपा	गेपा	१२५	३
कका	कर्की	१२६	११
कोर्प्य	कोर्प्यः	१२७	९
कामुक	कार्मुक	१२७	१४
ऽग्रि	ऽग्नि	१२८	१८
र्द्धं	र्द्धं	१२८	२६
क	क्	१३०	१३
स्पा	स्या	१३१	२
र्ध्वं	र्द्धं	१३१	११
सुमू	सुभूः	१३१	१३
शीतष्णोः	शीतोष्ण	१३१	१४
र्ध्वं	र्द्धं	१३१	२०
र्द्ध	र्द्ध	१३१	२२
×	उ	१३१	२८
कुम्भभवालि	कुम्भझषालि	१३२	८
क्रमण	क्रमेण	१३२	२०
प ड्ङ्गहाणां	पड्ग्रहाणां	१३२	२१
ङ्	ङ्	१३३	२९
मूक्तं	मुक्तं	१३३	२९
पङ्ग	पङ्ग	१३४	१२
तुरङ्ग	तुरंङ्ग	१३४	२१
सिध्द	सिद्ध	१३५	७
श	शः	१३६	१०
ध्द	द्ध	१४९	१५
ति	ति	१४९	२७
बन्धा	बन्धाः	१५०	१२
लाथ	लाय	१५१	१५
कटयां	कटयां	१५३	५
स्तू	स्तु	१५३	२७
मित्रो	मित्रौ	१५४	८
चि	चि	१५६	१९
विद्यु	विधु	१५७	१६
ज्योतींरथो	चूडयाह्निकौ	१५७	२३
ज्योतीरथ	चूडिन्, आह्निक	१५७	२४

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
पुष्प	पुष्प	१५८	२
युवति	युवती	१५८	२१
ग	गं	१५८	२४
द्व	व्द	१६०	४
प्रचन्डो	प्रचण्डो	१६२	२२
लांश	लांस	१६२	९
कृष्णा	कृष्ण	१६२	२७
प्रदः	प्रदाः	१६४	६
मेघ	मेघ	१६६	३
नरवाः	नस्राः	१६६	२५
रवे	रेव	१६७	२६
पाताङ्गिः	पातङ्गि	१६८	५
घ्रि	घ्रि	१६८	१३
छिकि	छिखि	१६८	१४
व्दुध	द्बुध	१६९	१९
शावत	शात्रव	१७०	१३
तद्दी	तद्वी	१७०	२४
र्ध्वं	र्द्धं	१७०	२४
ली	लि	१७१	१७
सू	सु	१७२	१९
दि	दि	१७२	२३
धी	धां	१७३	३
स्त	स्त	१७४	१८
र्ध्वं	र्द्धं	१७५	७
न्मतः	भतः	१७६	३
र्ध्वं	र्द्धं	१७६	१५
दधु	दधुः	१७६	१६
ष	प	१७६	१६
द्वतवेटो	द्वत्खेटो	१७७	२०
भ्वं	र्द्धं	१७७	२३
भो	यो	१७७	२५
ल्पाः	ल्याः	१८०	८
दान	दाना	१८४	२
न्त	न्नं	१८४	१४
क्य	यप	१८७	१७
क्रू	क	१८७	२०
पुन्नाग	पुन्नागक	१८८	१७
वा	वा	१८९	४
रक्त	रक्तं	१८९	२०
निधा	निभा	१९९	७
धं	ष	१९९	१५
×	निदश	१९९	२०
त्	कः	१९९	२६

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
वेर्भ	भंवे	१९९	२७
मासं	भास	२००	५
संक्रान्ति	संक्रान्ती	२००	२
चेम्मू	चेन्ण्णू	२००	२
मध्यं	मध्यं	२००	३
ऽद्वं	ऽन्द	२००	३
साघा	स्तथा	२००	२७
यस्थतः	यत्नतः	२००	२८
दिष्टा	दि	२०१	२०
नम	नभ	२०१	१०
पूर्वा	पूर्वा	२०६	१५
यमाभ्यां	यमाभ्यां	२०६	१५
यातेरर्भूहिते	तयोर्भूरहिते	२०६	२६
भुक्ता	भुक्त्य	२०७	१९
क्रा	क्ता	२०७	२१
ध्दा	द्धा	२११	८
ध्दं	द्धं	२१२	१०
घत्रैः	घत्रैः	२२०	२२
यु ग्याभ्यां	युग्माभ्यां	२२३	२१
सार्द्धं	सार्द्धं	२२३	२२
सिध्दि	सिद्धि	२३०	५
र्थं	र्थं	२३०	१५
दुःख	दुःखं	२३०	१६
वस्त्र	वस्त्र	२३०	२३
त्प्रा	त्प्र	२३१	१८
त्रि	श्रि	२४१	४
पट्	षट्	२४४	२
प	पि	२४६	७
काणे	कोणे	२४६	१८
घस्रा	घस्रा	२४८	२६
दाया	दाया	२५९	२२
रुपाः	रूपाः	२६९	४
स्वव्द	स्वाब्द	२७६	६
शाला	शीला	२८३	४
यत्का	युक्ता	२८३	१०
रति	रात्रि	२९०	१९
षृचं	पृयं	२९०	२२
ऽङ्गो	ऽङ्गं	२९२	१६
ढघाता	ढघा	२९२	२०
लाढघा	ढघता	२९२	२१
द्युन	द्यून	२९२	२८
स्त्न	स्त	२९३	१७
द्र	द्व	२९३	२१
म्या	भ्या	२९५	१२
रना	रनी	२९७	२६
युत्के	युक्ते	२९८	५
युत्क	युक्त	२९८	१०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
तुयो	तूभो	३०६	५
द्वयर्क	द्व्यर्क	३०६	१८
तृण	तृण	३२६	१२
त्प	त्य	३२७	५
तू	तृ	३२७	१२
वटी	घटी	३२७	२५
ब्छु	च्छु	३२९	७
क्षमा	क्षया	३२९	२६
ध्यौ	ध्यो	३३०	२६
माणि	पाणि	३३२	२८
शुभ	शुभं	३३८	११
शू	शूल	३४८	९
जम	जम्म	३४८	२२
यघ्या	मध्या	३४८	२२
युग्मो	युग्मा	३५१	२२
श्रम	भ्रम	३५३	१४
मनाम्	भनानाम्	३५८	२४
षद्	षट्	३६६	१०
त्रिध्रा	त्रिध्ना	३७५	२२
यात	यातै	३७८	१५
मोत	मात	३८०	३
भवः	भुवः	३८४	९
पूर्णा	पूर्णं	३९१	२९
पुवं	पूर्व	४०३	११
दू	द्	४१४	१७
भपिवो	भीपवो	४१७	१६
त्केश	क्लेश	४२७	४
वरि	वैरि	४२८	२५
उर्वी	भूमि	४३१	१०
शके	शुक्ं	४३३	१५
वृद्धि	वृद्धि	४३४	७
कम्म	कम्मं	४३६	२६
कष्ट	कष्टं	४३८	२५
भीति	भीतिं	४३८	२५
श्रुतौ	श्रुतौ	४३९	२०
पान्थि	पन्थि	४४०	४
पादि	पारि	४४२	९
वाध	बाध	४६०	१३
सृजा	सृजौ	४७२	१
...ओ	मात्राओं	४७७	१०
पङ्ग	पङ्गु	५२८	१९
द्धा	ऽद्धौ	५३२	५
मित्रे	मित्रेमित्र	५३३	१२
रूप	रुप	५३४	२५
धम्मे	धम्मे	५५५	२०
कोधी	क्रोधी	५७०	११
रस्तङ्गयो	रस्तङ्गयोः	५८७	९

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
मस्त्रे	मस्ते	६०३	२८	यासे	याते	६४७	८
२७७	२०७	६१०	३	यग्	युग्	६५८	३०
सृक	सृक्	६१४	१७	मुख	पञ्चम	६६१	३
भुग	भुग्	६२२	८	षाडप	षोडश	६७०	१०
न्नित:	न्वित:	६२७	२६	यगि	यदि	६७१	२८
भय	भयं	६२९	३	पौप	पापं	६७२	२१
र्थनां	र्थानां	६३१	२१	कि	किमु	६७८	२३
कसुरा	कुसुरा	६३४	२३	रशा	राशौ	६८८	२९
वित्तं	वित्तं	६३५	१८	मगं:	भग:	७०६	११
कण	कोण	६४६	९	सोख्य	सौख्यं	७०७	१४

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust